अनुक्रमणिका

अ..... 2

आ..... 57

इ..... 91

ई..... 129

उ..... 130

ऊ..... 136

ए..... 140

ऐ..... 256

ओ..... 263

औ..... 265

अं..... 279

क..... 284

ख..... 393

ग..... 410

घ..... 422

च..... 426

छ..... 446

ज..... 451

झ..... 538

ट..... 541

ठ..... 542

ड..... 542

ढ..... 543

त..... 544

SPJIN

थ..... 600
द..... 601
ध..... 641
न..... 650
प..... 689
फ..... 731
ब..... 743
भ..... 786
म..... 798
य..... 864
र..... 878
ल..... 907
व..... 924
श/श्र..... 956
स..... 959
ह..... 1049

SPJIN

अ

- अउठ कोट सूरज फरे, फरे रात ने प्रभात । एकवीस ब्रह्मांड इंडा मधे, एके मांहें न थाय अजवास || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -21
- अकल अगम बैकुंठ का धनी, ए थोड़ी अजूं करे घनी । इन करते सब कछू होए, पर ए अर्थ ना देवे कोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -15
- अकीन है पास तुमारे, और कायम हो साथ कलमे हक के || ग्रं - सनंध, प्र -34, चौ -15
- अक्स के जो असल, ताए खेलावत सूरत । सो हिंमत अपनी क्यों छोड़हीं, जामें अर्स की बरकत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -83
- अखंड आराम सब में, चल विचल इत नाहें । सब सुख हैं अर्स में, रहें याद हक के माहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -17

- अखंड तणां दरवाजा आडी, सुन्य मंडल विस्तार जी । एणे ठेकाणे बेठी अछती, बांधी ने हथियार जी || ग्रं - किरन्तन, प्र -69, चौ -6
- अखंड थयो कालमाया तणों, अंदेस भाजवाने आपणो । केटलीकने उत्कंठा रही, ते माटे सर्वने आगना थई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -18
- अखंड दंडवत करूं परणाम, हैडे भीडी ने भाजूं हाम । प्रेमे दउं प्रदखिणा, फरी फरी वली अति घणा || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -1
- अखंड दंडवत करूं परनाम, हैड़े भीड़के भान हाम । प्रेमें देऊं प्रदखिना, बेर बेर अनेक अति घना || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -1
- अखंड धनी फल छोड़ के, निरफल माया झूठ लई । ए सिर गुनाह हुआ जीव के, तोको सिखापन ना दई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -101
- अखंड पार सुख अति घणूं, जेने सब्द न लागे कोय । ए जाणी सुख केम मूकिए, ए साध संगते सुख होय || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -29
- अखंड भिस्त इत जाहेरी, होए रोसन सबमें विस्तरी । दुनियां दौड़ मिली सब धाए, छूट गए वरन भेख ताए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -38
- अखंड लीला अति भली, नित नित नवले रंग । इन जोतें सब जाहेर किया, हम सखियां पिया के संग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -51
- अखंड लीला अहनिस, नित नित नवले रंग । एणी जोतें सहुए द्रढ थy, सखियों वालाजी ने संग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -40
- अखंड लीला अहनिस, हम खेलें पिया के संग। पूरे पिउजी मनोरथ, ए सदा नवले रंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -44
- अखंड लीला रमूं अहनिस, अमें सखियों वालाजीने संग । पूरे मनोरथ अमतणां, ए सदा नवले रंग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -33
- अखंड सरूपनी अस्थिर आकारे, सोभा कहूं घणवे करीने सनेह । जोई जोई वचन आणू कै ऊंचा, पण न आवे वाणी मांहें तेह ।सोभा सिणगार, स्यामाजीनो निरखूजी || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -1
- अखंड सुख कोई रखे मूकता, जेणे द्दढ कीधं छे घर । अधखिण ना सुपनातर माटे, रखे निगमता ए अवसर || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -21
- अखंड सुख छोड़या अपना, जो मेरा मूल मुकाम । इस्क न आया धनीय का, जाए लगी हराम || ग्रं - किरन्तन, प्र -99, चौ -5
- अखंड सुख जाहेर कियो, मूल बुध प्रकासी । देत देखाई जैसे दुनियां, पर अछरातीत के वासी || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -20
- अखंड सुख लीधानी आ वेला, कां न करो सवला साधन । परमेश्वर ने परा करी रे, मा करो रे एवा करम अधम || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -8

- अखंड सुख सबन को, होसी चौदे तबक । सो बरकत ब्रह्मसृष्ट की, पावें दीदार सब हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -2, चौ -17
- अखडियूं भरे असांसे, बांह झल्ले केयाऊं गाल । फिट फिट रे मूंजा जिंदुआ, अजां जेहेजो उही हाल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -7, चौ -6
- अखण्ड में याद देने, ए जो खेल बनायो । बृज रास जागनी में, ए जो खेल खेलायो || ग्रं - किरन्तन, प्र -83, चौ -2
- अखण्ड वतन इत जाहेर, और जाहेर सुख ब्रह्म । बुध विजिया-अभिनंद जाहेर, जाहेर काटे दुनी के करम || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -61
- अखर एक बारे गमां बोले, एवा श्लोक मांहें बत्रीस । ए छल आंणी अर्थ आडो, खोले छे जगदीस || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -9
- अखोड़ अंजीर बन अमृत, ऊपर छाया अंगूर । एक छाया पात दिवाल लो, क्यों कर बरनों ए नूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -23
- अगम के पार जो अलख कहावे, मैं तिनसों जाए जध लिया । इहाँ लग और सब्द नहीं सीधा, सो प्रगट पकड़ के किया || ग्रं - किरन्तन, प्र -15, चौ -9
- अगिन ईसान लाल नूर, पीत नीर रंग दखिन । नैरित खीर नीला रंग, दधि सेत पछिम रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -56
- अगिनडी न उठी रे, कालजडे रे झाल । ए विरह लई अंग कां, ऊभो रहयो रे चंडाल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -14
- अगे सुन्दरबाई हल्लई, रोंदी कर-करंदी । हाणे मूंसे ई को कस्यो, करे हेडी मेहेरबानगी || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -38
- अगेतां अकरमी थेओ भंडा, हांणे तूं पाण संभार । पिरी पले पले तोके थका, भंडा अजां न वरे तोके सार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -14, चौ -7
- अगेनी अंखियूं फूटियूं, भंडा हाणें तूं कींक सांगाए । ही जोगवाई हथ न रेहेंदी, पोय पर न थिंदिए कांए || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -14, चौ -6
- अगेनी तू कुरो केओ, जडे पिरी हल्या साणे । से अजां न उथिए अकरमी, मूंडा सुते हित केही सांगायसे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -14, चौ -2
- अगेनी तो भुछी केई, जीव हाणे तूं पाण संभाल । सजण तोके साणे कोठीन था, खिल्ली करीन था गाल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -15, चौ -6
- अग्नान सत सख्पने, तमे केहेसो थाय केम । ते विध कहूं सर्वे तमने, उपनूं छे एम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -115
- अग्यां अर्स बागमें, करे कोइलडी टहंकार । ढ़ेली मोर कणकियां, जमुना जोए किनार || ग्रं - सिंधी, प्र -2, चौ -9
- अग्यार वरस लगे लीला करी, कालमाया इहां ज परहरी । जोगमाया करी रमिया रास, आनंद मन आंणी उलास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -10

- अग्यारहीं बारही जिल्हज करे, सो गुनाह कछू ना धरे । बाजे हैं जाहिल आरब, बातें करें सिताबी तब || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -19, चौ -6
- अग्यारे वरस लगे लीला करी, कालमाया इहांज परहरी । जोगमाया करी रमियां रास, आनंद मन आणी उलास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -25
- अग्यारे सदी दस साल कम, तो लों खोल्या न पट कुरान । पाक बिना मत छुइयो, ए दिल दे करो बयान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -46
- अग्यारे सै साल का, आए साखें लिखी आगम । मांहें अनुभव लिख्या अपना, सो पोहोंचाया खसम || ग्रं - किरन्तन, प्र -104, चौ -4
- अग्यारे सै साल का, बंध बांध्या मजबूत कर। हुकम ऐसा कर छोड्या, काहूं करनी न पड़े फिकर || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -79
- अग्यारै सदी जाने आरिफ, लिखी हदीसों बीच सरत । इस राह पोहोंचावे हकीकत, होसी फजर दिन मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -66
- अग्यारै सदी लग अमल, चल्या सरीयत का । सो फरदा रोज सदी बारहीं, कोल पोहोंच्या फजर का || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -5
- अचके वा वाए, उछले वन वेलडी रे। हूं तो वालाजी विना रे वदेस, झुरूं छू एकली रे || ग्रं - खटरुती, प्र -1, चौ -9
- अचरज अदभुत देखत, वस्तर या भूखन । नरम खूबी खुसबोए, भस्या आसमान में रोसन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -113
- अचरज एक बड़ो सखी, देखो दिल मांहें । वस्त खरी को ले गई, जो कछुए नांहें || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -155
- अचरज एक साथ जी, सुनो कहूं अपनी बीतक । धनिएँ मोको मेहेर कर, ले पोहोंचाई हक || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -2
- अचरज बन इन घाट का, सोभित ज्यों मंदिर । बेल पात फूल फल छांहें, ए सोभित अति सुन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -10
- अचरा पकर पिउ देखलावसी, एक दूजी को प्रेम सिखलावसी । ए लीला बढ़सी विस्तार, साथ अंग होसी करार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -87
- अची आंऊं पेरे लगी, तडे मूंके चेयाऊं ई। रूह तोहिजी रोए थी, आंऊं पेया अर्समें कीं || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -15
- अची विठो हिंद में, जुठो चोडे तबक । थेयूं सुहाग सिंधडी, जिन कलमें यकीन हक || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -6
- अचेत अबूझ साथने, कोण सुधारी लेसे । जीवना सगां जाणी करी, ए निध बीजो कोण देसे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -63
- अचेत कहे हूं सागरनो, ते जाऊं छू सागर मांहें । निध तमारी तमे पामो, ग्रहूं तिवरता बांहें || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -105

- अचेत गुण तूं आव्यो अकरमी, धाख थावा नव दीधी । जीवने जे निध हाथ लागी, भूडा ते ते जुई कीधी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -103
- अछता बंध छूटे नहीं, पेरे पेरे छोडे तोहे । ए स्वांग सहु मायातणो, साथ बांध्यो रामत जोए || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -11, चौ -17
- अछर अछरातीत कहावहीं, सो भी कहियत इत सब्द । सब्दातीत क्यों पावहीं, ए जो दुनियां हद || ग्रं - किरन्तन, प्र -107, चौ -7
- अछर के दोए चसमें, नहासी नूर नजर । बीसा सौ बरसों कायम, होसी वैराट सचराचर || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -24
- अछर केरी वासना, कहे जो पांच रतन । कागद ल्याया बेहद का, सुकदेव मुनी धंन धंन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -93
- अछर केरी वासना, कह्या जे पांच रतन । कागल लाव्यो अमतणो, सुकदेव मुनी धन धंन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -88
- अछर खेल इछाए कर, छर रच के उड़ात । वासना पांचों पोहोंचे इत, ए सत मंडल साख्यात || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -99
- अछर चितमें ऐसो भयो, ताको नाम सदा सिव कह्यो । बृज रास दोऊ ब्रह्मांड, ए ब्रह्म लीला भई अखंड || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -43
- अछर पार द्वार जो हुते, सो ए दिए सब खोल । ऐसी कुन्जी दई कृपा की, जो किनहूं न पाया मोल || ग्रं - किरन्तन, प्र -97, चौ -9
- अछर मन उपजी ए आस, देखों धनीजी को प्रेम विलास । तब सखियों मन उपजी एह, खेल देखें अछर का जेह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -12
- अछर सरूप के पल में, ऐसे कई कोट इंड उपजे । पल में पैदा करके, फेर वाही पल में खपे || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -26
- अछर हिरदे रास अखंड कह्यो, ए प्रतिबिंब साथ तहां पोहोंचयो । ए प्रतिबिंब लीला भई जो इत, सो कारन ब्रह्मसृष्ट के सत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -49
- अछरब्रह्म जाहेर किया, जित उतपत फरिस्तों नूर । घर जबराईल जबरूत, जो नेहेचल सदा हजूर || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -106
- अछरातीत के मोहोल में, प्रेम इस्क बरतत । सो सुध अछर को नहीं, जो किन विध केलि करत || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -29
- अछरातीत नूरजमाल, ए तरफ जानें अछर नूर । एक या बिना त्रैलोक को, इन तरफ की न काहू सहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -54
- अजब रंग आसमानी का, जुड़ी जामें मिहीं चादर । ए भूखन बेल कटाव जामें, सब आवत माहें नजर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -71
- अजमावने अरवाहों को, हकें दिया वास्ते इन । अव्वल फरामोसी देय के, इलमें खोले दीदे बातन || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -52

- अजवालूं अखंड थy, हवे किरणा क्यांहें न झलाय । जोत चाली पोते घर भणी, बुध अछर मांहें समाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -120
- अजवाले वालो ओलख्या, त्यारे पाछल रहयं सूं । जाणी बूझीने मूढ थयो, भंडा एम थयो कां तूं || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -19
- अजवास अखंड अम कने, नहीं अंतराय पाव रती । रास रमी गोकुल आव्या, प्रतिबिंब लीला इहां थकी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -44
- अजहूं ना तुम टालो भरम, क्यों ना करत हो जीव नरम । ए नौतनपुरी जो कही नगरी, श्री देवचंदजीऐं लीला करी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -65
- अंजा न जागे जोर करे, जे हेडी मथां थेई । पिरी वभेरकां आइया, तोजी सिध को ई वेई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -27, चौ -6
- अजाजील असराफील, इन दोऊ की असल एक । पैदा अजाजील से, सो भी कहूं विवेक || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -6
- अजाजील और काफर, तिनों भी सुख नेहेचल । बरकत इन मोमिन की, साफ किए सब दिल || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -74
- अजाजील काना तो रानियां, जो बातून नजर करी रद । देख्या उपली आंखसों, आदम वजूद गलद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -2
- अजाजील को गफलतें, हकमें दिया उलटाए । ले तखत बैठाया छल के, सब फरेब जुगत बनाए || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -13
- अजाजील खेल खावंद, ए भी न्यारा रहया सबन । ए खेल कुफार इन भांत का, तो ऐसा किया इन || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -37
- अजाजील जीव दुनी का, ए जो कहया माहें सब । किया भूल पत्थर पर सिजदा, कहे हम किया ऊपर रब || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -27
- अजाजील दम सब दिलों, बैठा अबलीस ले लानत । बीच तौहीद राह छुड़ाए के, दाएं बाएं बतावत || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -49
- अजाजील दम सबन में, फरिस्ता जो बजरक । सारी जिमी पर सिजदा, किया ऊपर हक || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -9
- अजाजील दम सबन में, लगी लानत दम तिन । लोक जाने लगी अजाजील को, वह तो हुकमें कही सबन || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -52
- अजाजील भूल्या नहीं, पर हुकमें भुलाया ताए । ओ तो सिर ले हुकम, खड़ा है एक पाए || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -33
- अजाजील से फरिस्ते, उपजे बिना हिसाब । सो दम सबों में इनका, ए जो खेलें मिने ख्वाब || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -14
- अजाजीले देख्या वजूद, तो आदम को न किया सजूद । सिजदे किए तिनें बेहद, सो सारे ही हुए रद || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -15

- अजाण थके दिए एवडी उपमा, त्यारे जाण्यानो कीहो प्रमाण । एक वचन जो पडे मुख प्रवाही, ते तां नव जाण्यूं निरवाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -6
- अजूं केहेती सकुचों, पर बोहोत बड़ी है बात । सोभा पाई तुम याथें बड़ी, जो पिया वतन साख्यात || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -7
- अजूं खड़ियां इनोंकी उमतें, पूजें पानी आग पत्थर । सो तो कही सब रानियां, मांगे माजजे किया कुफर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -93
- अजूं चाहे दुनियां माजजा, देखे ना खड़ा झण्डा नूर । तब उतथे अक्स पुकारिया, कहे हुए इसलाम से दूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -16
- अजूं तें पाओ न कातिया, इत चाहिएगा सेर भर । जब उठेगी आतन से, तब बहरि चाहेगी अवसर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -27, चौ -3
- अजूं देखाऊं नीके कर, ए जो खेंचा खेंच करत । ए झूठे झूठा राचहीं, पर सुध न काहूं परत || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -1
- अजूं न जागे जोर कर, जो ऐसी तुझ पर भई । धनी आए बेर दूसरी, तेरी सुध ऐसी क्यों गई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -27, चौ -6
- अजूं राह देखे गजब की, जानें हुआ नहीं फरमाया । इसलाम मता सब से गया, तो भी नजरों किनहूं न आया || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -12
- अजूं सुध तोको न होत, तेरी क्यों हुई ऐसी रसम । याद कर अपना वतन, जो तें सुनी बात खसम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -11
- अटक रहे थे इतहीं, बीच आवने मोमिनों दिल । इन अर्स रूहों वास्ते एता कया, विचार करें सब मिल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -21
- अटक रहे सब इतहीं, आगे सब्द न पावे सेर । ए इंड गोलक बीच में, याके मोह तत्व चौफेर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -34
- अटक रहे सब इतहीं, आगे सब्द न पावे सेर । ए खोजें सब द्वैत में, ओतो अद्वैत लों अंधेर || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -33
- अटक रह्या साथ आधा, जिन खेल देखन का प्यार । ए किया मूल इन खातिर, जो हैं तामसियां नार || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -6
- अटक रह्या साथ आधा, जिनो खेल देखन का प्यार । ए किया मूल इन खातिर, जो हैं तामसियां नार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -6
- अटकलें ए केम पांमिए, ए तो नहीं पंथ प्रपंच मारा संमंधी । एणे पगले न पोहोंचाय, जिहां चोकस न कीजे चित मारा संमंधी || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -1
- अठारहें सिपारे लिख्या हरफ, बिना मगज न पावें आरिफ । बिना मगज न महंमद पेहेचान, बिना मगज ना पढ़या कुरान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -29
- अठारे बरन नर नारी आए, साजे सकल सिनगार । प्रेम मगन होए गावें पिया जी के, धवल मंगल चार || ग्रं - किरन्तन, प्र -57, चौ -5

- अठारे वर्ण एणी विधे, लोभे लागा करे उपाय । विना अगनी पर जले, अंग काम क्रोध न माय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -16
- अठावीसे दस सुरिता थाय, वीस नव करूं जेम पती गुण ग्रहाय । दसपती गुण हूं त्रीसज करूं, ए गुण गणी मारा चितमां धरूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -24
- अठोतर सौ पख का, कौन काढ देसी सार रे । सुख अछर अछरातीत के, कौन देसी बिना आधार रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -46
- अढार करीने दस करूं पदम, मूने वाला लागे धणीना गुण एम । खोईण करूं करीने नव दस, गुणने बंधाई वालो आव्यो मारे बस || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -20
- अण ने जाण्या रे दुख अनंत सहया, पण जाण्यूं दुख केम खमाय । वालाजी विना रे हवे जे घडी, ते ता जीवने कठण घणूं जाय || ग्रं - खटरुती, प्र -3, चौ -10
- अणची कां करो रे सखियो, हूं जाणू डूं तमारू जोर । जीत्या विना एवडी उलट, कां करो एवडो सोर || ग्रं - रास, प्र -41, चौ -15
- अणजाण्यूं धन गयूं रे अनंत, पण जाण्यूं ते धन केम जाए। जे निध गई अचेत थकी, हूं दाझू ते तेणी दाहे || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -20
- अणी हारे झीलण रंग सोहामणां रे, आपण झीलसूं वालाजीने साथ । रामत रमीने सहु आवियां, कांई पूरण थयो रंग रास || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -1
- अणू चोंच पात्र एह विना, बीजा कोणे न देवाणी । दोड कीधी मोटे घणी, कोणे न लेवाणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -9
- अतंत जोत इन धात में, इन नंग में जोत अतंत । अतंत जोत रंग रेसम, तीनों नरमाई एक सिफत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -88
- अतंत जोत नखन की, ताको क्यों कर कहूं प्रकास । केहे केहे मुख एता कहे, जोत पोहोंची जाए आकास || ग्रं - सिनगार, प्र -5, चौ -9
- अतंत नाड़ी फुन्दन, जोत को नाहीं पार । एही जानों भूल अपनी, सोभा ल्याइए माहें सुमार || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -45
- अतंत सुख इन बखत को, जो कदी आवे रूह माहें । तो नींद निज अंग असल की, उड़ जावे कहूं काहे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -121
- अतंत सोभा इन घाट की, छाया चली जल पर । ए बट या और बिरिख, जल छाए लिया बराबर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -49
- अतंत सोभा इन बन की, ए जो आए मिल्या फूलबाग । फूलबाग हिंडोले ए बन, तूं देख खूबी कछू जाग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -47
- अतंत सोभा लेत हैं, कबं ना बैठियां यों कर । यों बैठियां भर चबूतरे, दूजा सोभा अति सागर || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -14
- अतंत सोभा सुन्दर, चढ़ती चढ़ती तरफ चार । जित देखू तित अधिक, सोभा न आवे मांहे सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -30

- अतन्त नंग अर्स के, और नरम जवेर अतन्त । अतन्त अर्स रसायन, खूबी खुसबोए अति बेहेकत || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -13
- अति उछरंगे वाध्यो संगे, उमंग अंग न माय । वालाजीनी बांहे कंठ वलाय, रमतां तानी जाय || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -12
- अति उज्जल मुख निलवट, सुन्दर तिलक दिए । अति सोभित है नासिका, सब अंग प्रेम पिए || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -17
- अति कोमल अंग किसोर, कायम अंग उनमद । ए छबि अंग अर्स के, पोहोंचत नहीं सब्द || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -125
- अति खूबी आगू कठेड़े, हांसो चालीसों सोभित । देखत अर्स आंखन सों, खूबी उत जुबां बोलत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -76
- अति खूबी बाग ऊपर, तले तिनसे अधिकाए । वह खूबी इन मुख से, मोपे कही न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -66
- अति गौर पापण नैन की, पल वालत देखत सरम । गुन गरभित मेहेरें पाइए, रूह हुकमें देखे ए मरम || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -37
- अति गौर सुन्दर हरवटी, और अतंत सोभा सलूक । बड़ा अचरज ए देखिया, जीवरा सुनत न होए टूक टूक || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -57
- अति गौर हस्त कमल, अति नरम अति सलूक । ए हस्त चकलाई देखके, जीवरा होत नहीं टूक टूक || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -10
- अति बड़े चार द्वार चांदनी, कई हाथी हलकों आवत । चरन छूटे ना इन खावंद के, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -55
- अति बड़े सुभट सूरमें, सेन्यापति सिरदार । मेला होत है इन मोहोलों, कई जातें जिनसें अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -22
- अति मीठी जुबां मासूक की, देत आसिक को सुख । कछू अर्स सहूरें सुख लीजिए, पर कह्यो न जाए या मुख || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -3
- अति मीठे रसीले रंग भरे, जा को ए चरन मेहेर करत । सुख सोई जाने रूह अर्स की, जिन दिल दोऊ पाउं धरत || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -52
- अति सुख बड़ी रूह को, इस्क तरंग अतंत । मुख मीठी अपनी रूह को, रस रसना पिलावत || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -3
- अति सुन्दर सूरत अर्स की, ताके क्यों कहूं वस्तर भूखन । जामा पटुका इजार, माहे सिफत न आवे सुकन || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -51
- अति सोभा अति नरमाई, नंग सोभित नरम पसम । अर्स चीज न आवे सब्द में, ए नेक केहेत हुकम || ग्रं - सिनगार, प्र -10, चौ -4
- अति सोभा सुन्दर ऊपर की, कई नकस बेल फूल । कई जिनसे कहा कहूं, होत परआतम सनकूल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -58

- अथाह थाह नहीं ऊंचा नीचा, गेहेरा गिरदवाए मोह जल । लोक चौदे खेलें जीव याके, याकी सूझे न याकी कल || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -2
- अदभुत एक जुओ सखी, ए अचरज मोटो । वस्त खरी ने लई गयो, जेहेनो मूल छे खोटो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -133
- अदभुत सलूकी इन समें, आसिक पावत आराम । आठों जाम हिरदे रूह के, जानों नकस चुभ्या चित्राम || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -47
- अदभुत सोभा ए बनी, कहूं जो होवे और काहें । ए देखे ही बनत है, केहेनी में आवत नाहें || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -51
- अदयूं रसूल पाहिजो, कोठे आयो इमाम । आलम सभे उलट्यो, अची करे सलाम || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -4
- अदा हुए सब फरज, तब सिर से छूट्या करज । खुसालियां इनों होसी घनी, भिस्त खजाना पाया अपनी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -16
- अदी तूं धणी गिंनी बेठी मूहजो, बेओ न पसे कोय । पस तूं गिना धणी पाहिजो, अदी त तूं भाइज जोय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -28, चौ -9
- अदी रे पिरिए पांणसे जा केई, आऊंसे जे संभारियां साथ । पांणजे काजे हिन मायामें, कीय विधाऊं आप || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -7, चौ -2
- अदी रे सजण सांणे हलया, घj धायडियूं पाए । खुई मुंहजो जिंदुओं जे, अजां अख न उघाडे रे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -7, चौ -4
- अदी रे संनो थूलो अघयो, जे की कत्याऊं। पण किंनी विचथी विसस्यो, पई हथ न छुताऊं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -18
- अदीबाईनी सुणो गालडी, मंके रूअण रातो डीह रे । पाणीनी पिरी गिनी बेयां, हाणे फडकां मछी जीह रे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -7, चौ -8
- अधखिण एक नथी थईवार, मायाए विछोडो पाड्यो आधार । मारकंड माया दृष्टांत, धणी कने मांगी करी खांत || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -9, चौ -11
- अधखिण एक म लावो वार, लखमीजी तेडो तत्काल । चरण ग्रया तिहां खीर सागरे, वली वली ब्रहमा विनती करे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -43
- अधबीच आरोगते, मेवा काढ़ देत मुख थे । सरस मेवा केहे देत है, आप हाथ मेरे मुख में || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -49
- अधबीच आरोगते, वचन केहेत रसाल । नैन बान चलावत सेहेजे, छाती छेद निकसत भाल || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -27
- अधबीच में कुंड जो, जित चादरों जल गिरत । रूहें छोड़ें न कदम सुपने, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -67
- अधिक चित्रामन अन्दर, क्या क्या देखों इत । जिनको देखों निरख के, जानों एही अधिक सोभित || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -63

- अधुर अमृत पीवतां, कठण कुच खंचता । स्याम संगे सुख लेवतां, ए लीला अति सवली || ग्रं - रास, प्र -34, चौ -7
- अधुर लई मुख मांहें मारे वाले, आयत कीधी अपार जी । भूखण उठ्या उठ्या अंगों अंगे, रहो रहो समरथ सार आधार जी || ग्रं - रास, प्र -43, चौ -4
- अधुर हरवटी नासिका, दंत जुबां और गाल । जो अंग आया हक का दिल में, उठे रूह अंग उसी मिसाल || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -24
- अधुर हरवटी बीच में, क्यों कहूं लांक सलूक । एही अचरज मोहे होत है, दिल देख न होत भूक भूक || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -30
- अनके विध ना फूलज दीसे, मांहें जवेर तणां झलकार जी । नाडी तो अति सोभा धरे, जेमां रंग दीसे अग्यार जी || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -17
- अनजानत को इलमें, बेसक दिए देखाए । कदमों नूरजमाल के, हम सब रूहें लई बैठाए || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -78
- अनहोनी ए हमें करी, करके ऐसी फिकर । परदे में झूठ देखाइया, बीच कायम बका नजर || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -41
- अनी चार दोऊ कमल की, दो बंकी चढ़ती ऊपर । अति स्याह टेढ़ी पांखड़ी, कछू अधिक दोऊ बराबर || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -155
- अनेक अंधेर दई ते जीव को, ज्यों मीन बांधे मांहें जाल । जिन नैनों निध निरखू निरमल, तिन नैनों आड़ी भई पाल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -25
- अनेक अवगुन किए मैं साथ सों, सो ए प्रकासू सब । छोड़ अहंकार रहूं चरनों तले, तोबा खेचत हों अब || ग्रं - किरन्तन, प्र -101, चौ -5
- अनेक अवगुन मैं किए तुमसों, जिनको नाहीं सुमार । घर घर के किए में तुमको, छुड़ाए फिराए राज द्वार || ग्रं - किरन्तन, प्र -120, चौ -3
- अनेक अवतार तीर्थंकर, कई देव दानव बड़े बल । बुजरक नाम धराइया, पर छोड़े न काहूं छल || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -19
- अनेक आगे होएसी, इन बानी को विस्तार । ए नेक कहया मैं करने, अखंड ए संसार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -85
- अनेक आपणसं कीधा विचार, कही कही वांक टाल्यो आधार । अनेक पखे समझाव्यां सही, आपणने टांकी लागी नहीं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -51
- अनेक आपणसुं कीधां उपाय, तोहे आपणो सुभाव न जाय । त्यारे अनेक विधे कयूं तारतम, तोहे आपणो न गयो भरम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -50
- अनेक उपाय कीधा घणे, केमे न कलाणी । कोणे न ओलखांणी ए निध, बुध विना कोणे न जाणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -2
- अनेक कड़ियां जंजीर में, गिनती होए न ताए । कई रंग नंग एक कड़ीय में, बेल जंजीर गिनी न जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -51

- अनेक करहीं बंदगी, अनेक विरहा लेत । ए सुख तिन सुपने नहीं, जो हमको जगाए देत || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -31
- अनेक करहीं बंदगी, अनेक विरहा लेत । पर ए सुख तिन सुपने नहीं, जो हमको जगाए के देत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -28
- अनेक किव इत उपजे, वैराट सचराचर । ए छल मोहोरे छल के, खेलत हैं सत कर || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -25
- अनेक किव इत उपजे, वैराट सचराचर । ए छल मोहोरे छल को, खेलत हैं सत कर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -23
- अनेक किव इहां उपजे, वैराट मुख वखाण । वचन कही माहें थाय मोटा, पण पामे नहीं निरवाण || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -1
- अनेक खेल किए आपन, पूरन मनोरथ सब किए तिन । अग्यारे बरस लो लीला करी, कालमाया इतही परहरी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -10
- अनेक गुन इन नैन में, गिनती न होवे ताए । सुख देत अलेखे सब अंगों, नैना गुन क्यों ए ना गिनाए || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -69
- अनेक गुन नंग इनमें, रूह दिल चाह्या जब । जिन जैसा दिल उपजे, सो होत आगू से सब || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -3
- अनेक जानवर जल के, सो केते लेऊं नाम । जल किनारे रटत हैं, पिउ जस आठों जाम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -26
- अनेक थासे आगल, आ वाणीनो विस्तार । लवलेस काईक कहूं थावा, अखंड आ संसार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -80
- अनेक देरा परबो ने परवा, धन खरचे मोटाई । प्रसिद्ध प्रगट थाय पाखंडे, जेम मांहे भांड भवाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -26
- अनेक देह दमे पंच अगनी, तोहे न बले करम । अनाद काल ना जे बंध बांध्या, ते थाय नहीं जीव नरम || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -85
- अनेक देहरा अपासरा, मांहें मुनारा मसीत । तलाब कुआ कुंड वावरी, मांहें विसामा" कई रीत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -3, चौ -4
- अनेक पगथी परव परवा, दया दान देवाय । देखाई सहु करी सागर, महेंना मांहें समाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -3, चौ -3
- अनेक पसु इन बन में, अनेक हैं जानवर । खेलत बोलत गून्जत, करत चकोसर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -13
- अनेक पहाड़ कई हिंडोले, जुदी जुदी कई जगत । जो सुख हिंडोले पहाड़ के, जुबां कर ना सके सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -24, चौ -3
- अनेक पेरे अमने, एम कोण रे प्रीछवसे । देखाडवा आ रामत, एणी पेरे देह कोण धरसे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -49

- अनेक प्रकार करो रे बेहेनी, हूं नहीं मूकू प्राणनो नाथ । बीजी रामत जई करो रे बेहेनी, आतां ऊभो छे एवडो साथ || ग्रं - रास, प्र -39, चौ -5
- अनेक बाजंत्र नाटारंभ, धन खरचे अहीर उमंग । साथ सहु सिणगार करी, अमें आवं ते अति उछरंग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -45
- अनेक बानी मुख बोलहीं, अनेक अलापें गाए । ऐसे बचन कई बोलहीं, किसी आवे न औरों जुबाएं || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -36
- अनेक बार मैं लेऊ वारने, तुम अपनी जान गुन किए घने । मैं वार डारूं आतम अपनी, पर सालत सोई जो करी दुस्मनी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -16
- अनेक बुध इहां आछटी, अनेक फरवया मन । अनेक क्रोधी काल क्रांत थईने, भाज्या ते हाथ रतन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -36
- अनेक मांहें धर्म पाले, पंथ प्रगट थाय । आंधला जेम संग चाले, ए पाखंड एम रचाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -3, चौ -17
- अनेक मेवे कई भांत के, सो ए कहं क्यों कर । नाम भी अनेक मेवन के, और स्वाद भी अनेक पर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -21
- अनेक रंग इन ठौर के, क्यों कहूं इतका नूर । रोसन जिमी प्रफुलित, क्यों कहूं जुबां जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -32
- अनेक रंग थंभन में, अनेक सीढ़ियां पड़साल । कई रंग भोम चबूतरे, कई रंग द्वार दिवाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -17
- अनेक रंगे रमाडियां, केटलां लऊं तेना नाम । सखी सखी प्रते जुजवा, सहुना पूरण कीधां मन काम || ग्रं - रास, प्र -41, चौ -2
- अनेक रंगों के जवेर, जो जिन संग सोभित । तिन ठौर बने तिन मिसलें, कई हुए कटाव जुगत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -25
- अनेक रंगों साड़ियां, माहें कई बिरिख बेली पात । फल फूल नकस कटाव कई, ताथें बरन्यो न जात || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -26
- अनेक रामत कीधी आपणे, पूरण मनोरथ कीधां समे तेणे । अग्यारे बरसनी लीला करी, कालमाया तिहांज परहरी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -10
- अनेक रामत बीजी हती अति घणी, सुपने अग्राह ठेले संसार । उघड़ी आंख दिन उगते एणे छले, जागतां जनम रूडा खोया आवार || ग्रं - किरन्तन, प्र -39, चौ -2
- अनेक रामत रेतीय में, बविध इन ठौर होत । ए बन स्याम स्यामाजी को, है हाँसी को उद्दोत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -44
- अनेक लिखी निसानियां, करावने हमारी पेहेचान । जाने सब कोई सेवें इनको, कई किए साख निसान || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -19
- अनेक वचन तूने कह्या, मान एकनो करे विचार । अर्ध लवे तारो अर्थ सरे, भुंडा एवडो तू कां केहेवराव || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -21

- अनेक वार जाऊं वारणे, तमे जे कीबूं ते आपोपणे । भामणाउपर लऊंभामणा, पण दोष साले जे में कीधा घणा || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -16
- अनेक वार तरफडी मरीने, दुख देखी आव्या छो पार । लाख चोरासी भमीने आव्या, आहीं मध्य देस वेपार || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -4
- अनेक वासनाओं तमे ओलखिओ, पण में ओलख्यो धाम धणी । तें मोसूं टाला घणुंए कीधां, पण में जीत्यो विध घणी || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -38
- अनेक विध कही मैं तुमको, ढील करो अब जिन जी । पांउ भरो ए वचन देखके, पेहेले बृज रास चलन जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -3, चौ -6
- अनेक विध में घणुंए कह , हवे रखे खिण विहिला थाओ जी । रासतणी रामतडी जो जो, जे भरियां आपण पांडे जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -3, चौ -6
- अनेक विध हैं अर्स में, केती विध कहूं जुबान । कया न जाए एक नकस, मुख कहा करे बयान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -110
- अनेक विधे कयूं प्रबोध, हवे रखे रूदे राखो निरोधी । सुणजो ए अध्याय पांत्रीस, जुआ वली कीधां मांथी त्रीस || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -11
- अनेक विधे रे साथ हूं विलखती, पण मेलो न थाए एक खिण । ए अचरज तमे जुओ साथजी, करम तणां रे ए छे गुण || ग्रं - खटरुती, प्र -3, चौ -16
- अनेक विलास कीधां वनमां, मली सहुए एकांत । ए सुखनी वातो सी कहूं, कांई रमियां अनेक भांत || ग्रं - रास, प्र -41, चौ -7
- अनेक सखियो चरणे वलगी, खसवा नहीं दीजे रे । वालो सखियो सहु थाजो सावचेत, ओलियो ऊपर सामी हांसी कीजे || ग्रं - रास, प्र -27, चौ -6
- अनेक संघवी संघज काढे, धन खरचे थाय मोटा । बांधी करम करावे जात्रा, जाणे करम सुं करसे ए खोटा || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -21
- अनेक सिनगार एक खिन में, चित्त चाह्या सब होत । दिल में पीछे उपजे, ओ आगे धरे अंग जोत || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -47
- अनेक सुख दिए अर्स में, सुख फरामोसी नाहीं कब । हँस हँस गिर गिर पड़सी, ए सुख ऐसा देखाया अब || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -70
- अनेक सुख देने को, साहेबें दई फरामोसी । जगावते भी जागे नहीं, एही हाँसी बड़ी होसी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -69
- अनेक सेहेर बाजार चौटा, चोक चोवटा अनेक । अनेक कसवी कसव करतां, हाट पीठ विसेक || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -17
- अनेक सेहेर बाजार चौहटे, चौक चौवटे अनेक । अनेक कसबी कसब करते, हाट पीठ वसेक || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -8
- अनेक स्वरों बाजे बाजें, पड़छंदे भोम सब गाजें । सुंदरियां सोभा साजें, सो तो धनीजी के आगे बिराजे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -148

- अनेक स्वांग रमे जुजवा, असत ने अप्रमाण । मूल विना जे पिंड पोते, ते केम पामे निरवाण || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -21
- अनेक हकें हिकमत करी, जो इन जुबां कही न जाए। होसी हाँसी सबों अर्स में, जब करसी बातें बनाए || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -27
- अनेक हाँसी होएसी, अनेक उपजसी सुख । इस्क तरंग कई बढ़सी, ऐसा देखाया फरामोसी दुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -74
- अन्तर माहे बाहेर की, सब जानत हो तुम । ए इलमें बेसक करी, अब कहा कहूं खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -47
- अन्तरगत में रेहे गए, धनी के दो एक सकन । ए दरद न काहूं बाँटिया, सो मैं कया न आगे किन || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -15
- अन्तस्करन आतम के, जब ए रहयो समाए । तब आतम परआतम के, रहे न कछु अन्तराए || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -44
- अन्तस्करन इस्क के, इस्कै चित्त चितवन । बातां करें इस्क की, कछू देखें ना इस्क बिन || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -36
- अन्तस्करन निसान आए, ले आतम को पोहोंचाए । इन चोटें ऐसे चुभाए, नींद दई उड़ाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -83, चौ -12
- अन्दर कई वस्तां धरी, कई सेज्या चौकी सन्दूक । जित सोभा जो लेत है, तित देखिए तिन सलूक || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -64
- अन्दर की वस्तां क्यों कहूं, और क्यों कहं चित्रामन । जो मन्दिरों अन्दर देखिए, तो दिल होवे रोसन || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -66
- अन्दर नूर पड़साल के, नूर द्वार मन्दिर दोए दोए । नूर सीढ़ियां आगू इन माहें, दोऊ तरफ मेहेराव नूर सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -38
- अन्दर बाहेर किनार सब, देख सब ठौरों खूबी देत । ए सोभा सांच सोई देखेगा, जाको हक नजर में लेत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -14
- अन्दर मुरग जो कहया, बैठा हुकम के दरखत । इत ना पोहोंच्या जबराईल, सो मोमिन खोले मारफत || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -59
- अन्दर मेरे बैठ के, कई विध कियो विस्तार । सो रोसनी जुबां क्यों कहे, वाको वाही जाने सुमार || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -17
- अन्दर मेरे बैठ के, खोले पट द्वार । ल्याए किल्ली अर्स अजीम से, ले बैठाए नूर के पार || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -47
- अन्धेर सब उड़ाए के, सब छल करूं जाहेर । खोलूं कमाड़ कल कुलफ, अन्तर मांहे बाहेर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -20
- अपना अपना इस्क, बड़ा जानत सब कोए । बीच बका के बेवरा, इस्क का न होए || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -22

SPJIN

- अपना इलम जिन देत हैं, सो भी मेहेर से बेसक । मेहेर सब विध ल्यावत, जित हुकम जोस मेहेर हक || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -13
- अपनायत केती कहूं, जो करी हमसों तुम । नींद उड़ाई बुलावने, पोहोंचाया कौल हुकम || ग्रं - किरन्तन, प्र -75, चौ -3
- अपनी अपनी खोजिया, पर आया नहीं खुदाए । थके सब नासूत में, पोहोंचे नहीं इप्तदाए || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -5
- अपनी अपनी जात ले, ठाड़े हैं सकल । करने खुसाल धनीय को, करत हैं अति बल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -24
- अपनी गिरो आसिक, कहावत हैं मिने इन । चलना देख के केहेत हों, ए अकल दई तुम किन || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -5
- अपनी छायासों आप बिगूती, बल खोए चली हार । आग बिना जलत अंग में, जल बल होत अंगार || ग्रं - किरन्तन, प्र -22, चौ -2
- अपनी जुदाई दुनी से, किया चाहिए जहूर । दोऊ एक राह क्यों चलें, वह अंधेरी एह नूर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -112
- अपनी बड़ाई आप मुख होए, ताको मूरख कहे सब कोए । पर जैसी बात तैसा बरनन, करसी विचार चतुर अति घन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -5
- अपनी मत ले ले साधू बोले, सब्द भए अपार । बोहोत सबद को अर्थ न उपजे, या बल सुपन धुतार || ग्रं - किरन्तन, प्र -22, चौ -6
- अपनी रूहों वास्ते, कई कोट काम किए । ए जाने अरवाहें अर्स की, जिन नाम निसान लिए || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -13
- अपनी सुरतें हुकम, खेलावत हुकम । खेलत सामी हुकमें, ए देखावत तले कदम || ग्रं - सिंधी, प्र -16, चौ -4
- अपनी सूरत देखी अर्स की, जो रूहें तले हक कदम । जब सूर ऊग्या हक मारफत, तब सब आए तले हुकम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -26
- अपने अपने इस्क का, सबों देखाया भार । तोलों किया रब्द, दिन पीछला घड़ी चार || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -20
- अपने अपने ताएफें, अखाहें मिली सब धाए । महंमद मेंहेदी की मेहेर से, भिस्त में बैठे आए || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -67
- अपने घर इत नाहीं साथजी, चौदे भवन में कित जी । ता कारन पिउजी करें रे पुकार, तुम क्यों सूते इत जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -16
- अपने घर की इसारतें, और न समझे कोए । और कोई तो समझे, जो कोई दूसरा होए || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -3
- अपने घरों लिए बुलाए, सेवा करी बोहोत चित ल्याए । सनेहसों सेवा करी जो घनी, पेहेचान के अपना धाम धनी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -75

- अपने जमाने था उस्तुवार, कुतब औलियों का सिरदार । बंदगी मांहें था बड़ा, सफ तलेकी रेहेता खड़ा || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -3
- अपने हाथ मुंह अपना, मोहोर करे क्यों कर । स्याह मुंह भी कहे हाथ इन, क्यों सब मुद्दा कह्या इन पर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -8, चौ -17
- अपार सूरत साहेब की, अपार साहेब के अंग । अपार वस्तर भूखन, जो रेहेत सदा अंगों संग || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -197
- अब अंग मेरे अपंग भए, बल बुध फिरी तमाम । गए अवसर कहा रोइए, छूट गई वह ताम || ग्रं - किरन्तन, प्र -99, चौ -8
- अब अछर के पार में जुध बनाऊँ, सकल आउध अंग साजु । प्रेम की सैन्या प्रगट चलाऊँ, कंठ अछरातीत मिलाऊँ || ग्रं - किरन्तन, प्र -15, चौ -11
- अब अंधेर कछू ना रह्या, जाहेर हुआ उजास । तबक चौदे खसम का, प्रगट भया प्रकास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -7
- अब अपना तूं संभार श्रवना, हो वचिखिन वीर । वानी जो वल्लभ की, सो लीजो द्रढ़ कर धीर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -20
- अब अबूझ टाल सुबुध देय के, कौन करसी चतुर वचिखिन रे । नेहेचल निध धनी धाम की, सो कहूं पाइए न चौदे भवन रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -50
- अब अस्तुत ऊपर एक विनती कहूं, चरन तुमारे जीव में ग्रहूं । इन चरनों मोहे सुध भई, पेहेली निध श्री सुंदरबाईऐं दई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -1
- अब आई तूं अरुचड़ी, जब मिले मोहे श्री राज । ऐसी अंधी अकरमन, तूं सरजी किस काज || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -29
- अब आई बात हद की, हिसाब चौदे भवन । सब बात इत याही की, कहे अटकलें और वचन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -20
- अब आई बेर तीसरी, तिनका सनो विचार । पेहेचान बिना गिरो क्या करे, या यार या सिरदार || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -13
- अब आओ तूं वालाजी में, मायासों कर विछोह । देखू जोर करे तूं कैसा, सांचे सिपाही मेरे मोह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -43
- अब आओ रे इस्क भानूं हाम, देखें वतन अपना निज धाम । करूं चरन तले विश्राम, विलसों पियाजी सों प्रेम काम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -1
- अब आप जगाए के धनी, हाँसी करसी मिनों मिने घनी । अब केहेती हों साथ सबन, घर जागोगे इन वचन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -187
- अब आया बखत रेहेनीय का, रात मेट हुई फजर । अब केहेनी रेहेनी हुआ चाहे, छोड़ दुनी ले अर्स नजर || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -4
- अब इन उजाले जो न पेहेचानो, तो आपन बड़े गुन्हेगार जी । चरने लाग कहे इंद्रावती, पिउजी के गुन अपार जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -16

- अब इन ऊपर क्या बोलना, आगू मेहेबूब तुम । जिन विध जानो त्यों करो, दोऊ तन तले कदम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -37
- अब इन जुबां में क्यों कहूं, निज वतन विस्तार । सब्द ना कोई पोहोंचहीं, मोह मिने हुआ आकार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -39
- अब इन तारतम के उजाले, करूं तारतम रोसन । नेहेचल सुख लेओ तुम सांचे, और भी देऊँ सबन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -95
- अब इन बीच में खतरा, हक न आवन दे । जिन दिल अर्स खावंद, तित क्यों कर कोई मूसे || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -33
- अब इनके अंग की क्यों कहं, ठौर नहीं बोलन । क्यों कहूं सोभा अखण्ड की, बीच बैठ के अंग सुपन || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -20
- अब इहां से लीला हद की, सोतो सारे केहेसी । पर बेहद वानी हम बिना, दूजा कौन देसी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -54
- अब ए केते कहूं प्रकार, निजधाम लीला नित बड़ो विहार । अछरातीत लीला किसोर, इत सैयां सुख लेवें अति जोर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -70
- अब ए चरचा कहां सुनसी, मूल वचन तारतम रे । ए सुने बिना हम क्यों गलसी, बिना बानी इन खसम रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -54
- अब ए बानी तूं कहां सुनसी, मेरे धाम धनी के वचन रे । बरनन करते जो श्रीमुख, सो अब काहूं न पाइए ठौर किन रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -39
- अब ए मैं जो हक की, खड़ी इलम हक का ले । चौदे तबक किए कायम, सो भी मैं है ए || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -14
- अब ए लीला कहूं केती, अलेखे अति सुख । बरस अग्यारे खेले प्रेमें, सखियनसों सनमुख || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -61
- अब ए लीला क्यों छानी रहे, सखियां मिली सब टोले । पल पल प्रकास पसरे, आगम ही आगम बोले || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -24
- अब ए वचन विचारो मन, साख दई सुकजी के वचन । भी वचन कहूं सुन मेरे जिउ, जिन छोड़े चरन खिन पिउ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -16
- अब ए विचार तुम देखो साथ, ना वली जुबां बैकुंठनाथ । ग्रही वस्त भारी कर जान, तो भी वचन ना कहे निरवान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -50
- अब ए सुध किनको नहीं, पर रोसी हुए रोसन । ए सब होसी जाहेर, ऊगे कायम सूरज दिन || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -57
- अब एता तो मैं किया निरमान, और बाकी कहूंगी मांहें फरमान । एक खिन के मैं बांटे किए, गुन जेते भाग विचार के लिए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -42
- अब एह वचन कहूं केते, देसी दुनियां को उद्धार । मेरे संग आए बड़ी निध पाई, सो निराकार के पार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -34

- अब ऐसा दिल में आवत, जेता कोई थिर चर। सब केहेसी प्रेम धनीय का, कछू बोले ना इन बिगर || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -29
- अब और कहूं सो सुनो, महंमद को क्यों औरों में गिनो । गिरो महंमद तो होए पेहेचान, जो मगज माएने पाओ कुरान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -22
- अब और जातकी क्यों कहूं, जो है फीलों से बुजरक । ए बुजरक साहेबी देखाई रूहों, पावने पटतर हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -61
- अब और देऊँ एक नमूना, इनको न पोहोंचे सोए। पर कहे बिना रूहन के, दिल रोसन क्यों होए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -34
- अब औरन की मैं क्या कहूं, जो बड़कों का ए हाल । जल जैसे तरंग तैसे, उठे माया मोह अहंकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -30, चौ -5
- अब कछुक मैं अपनी करूं, ना तो तुमे बोहोतक ओचरूं । भी एक कहूं वचन, तुमको संसे रेहेवे जिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -35, चौ -1
- अब करमन तूं हो कल्पना, कर सेवा मांहें विचार । धाम धनी मोहे मिले माया में, लाभ लेऊं मांहें संसार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -65
- अब करूं अस्तुत आधार, वल्लभ सुनो विनती । एते दिन मैं ना पेहेचाने, मोहे लेहेर माया जोर हुती || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -1
- अब करूं बका जाहेर, वास्ते अर्स उमत के । कहूं अर्स और खेल की, ज्यों बेवरा समझें ए || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -8
- अब करेंगे जाए वतन बात, माया अमल चढ्यो निघात । पिउ कई विध तारतम कियो रोसन, तो भी क्योंए न भैयां चेतन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -48
- अब कहा करूं कहां जाऊं, ए बानी धनी ढूंढों कित रे । पिउ पोहोंचाए मैं पीछे रही, करने विलाप रही इत रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -38
- अब कहा करूं कहां जाऊं, टूट गई मेरी आस । कहां वचन कौन बतावे, पिउ ना देखू पास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -13
- अब कहा कहूं निसबत की, दिया न निमूना जात । और सब्द ना इन ऊपर, अब कहा कहूं मुख बात || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -33
- अब कहा कहूं मैं इन पर, कोई ऐसी बनी जो आए। ए जान बूझ तो भूलहीं, जो इनका कछू न बसाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -19
- अब कहूं अर्स अजीम की, और बन का विस्तार । नहीं इंतहाए जिमी जंगल का, ना पसु पंखी सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -5
- अब कहूं अर्स रूहन को, अर्स हक खिलवत बात । गोसे अपनी रूहोंसों, बैठ करूं अपन्यात || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -8
- अब कहूं आगू अर्स के, और जोए किनार । बन मोहोल नूर मकान, सोहे जोए के पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -67

SPJN

- अब कहूं इन रास को सार, जो तारतम वचन है निरधार । तारतम सार जागनी विचार, सबको अर्थ करसी निरवार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -26
- अब कहूं इन रूहन को, जो खड़ियां तले कदम । तुम क्यों न विचारो रूहसों, ऐसा अपना खसम || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -21
- अब कहूँ इनका बेवरा, ए सब मोहोलात नंग एक । ए लीजो नीके दिल में, केहेती हों विवेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -79
- अब कहूं कण्ठ सोभा मुख की, और इस्क सबों अंग । आसिक दिल छबि चुभ रही, मासूक रूप रस रंग || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -14
- अब कहूं कुरान की, सब विध हकीकत । मगज मायने खोले बिना, क्यों पाइए मारफत || ग्रं - खुलासा, प्र -14, चौ -1
- अब कहूं कोहेड़ा वेद का, जाकी मिहीं गंथी जाल । याकी भी नेक केहे के, देऊं सो आंकड़ी टाल || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -3
- अब कहूं कोहेड़ा वेद का, जाकी मिहीं गूंथी जाल । याकी भी नेक केहेके, देऊ सो आंकड़ी टाल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -1
- अब कहूं चरन कमल की, जो अर्स रूहों के जीवन । बसत हमेसा चरन तले, जो अरवाह अर्स के तन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -97
- अब कहूं ताल के मोहोल की, जल गिरदवाए गेहेरा गंभीर । लेहेरें लगे बीच गुरज के, जल खलकत उज्जल खीर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -2
- अब कहूं तोको लोभ लालची, फिट फिट मूरख अजान । लोभ न लाग्या चरन धनी के, जासों पाईए घर निरवान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -36
- अब कहूं तोको श्रवना, तोको धनिए कहे वचन । क्यों न लई बानी वचिखिन, फिट फिट मूंडे करन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -18
- अब कहूं दरिया सातमा, जो निसबत भरपूर । याको वार न पार काहूं, जो नूर के नूर को नूर || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -1
- अब कहूं नेक अंकूर की, जाए कहिए सोहागिन । सो विरहिन ब्रह्मांड में, हुती ना एते दिन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -24
- अब कहूं बिध नूरियों, जो जहां जिन ठौर । ए माएने इमाम बिना, कोई करे जो होवे और || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -1
- अब कहूं बेवरा खेल का, हुआ जिन कारन । सो वास्ता कहूं इन भांत सों, ज्यों होए सबे रोसन || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -10
- अब कहूं भूखन चरन के, कांबी कड़ली धूघरी । झलके नंग जुदे जुदे, इन पर झन बाजे झांझरी || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -122
- अब कहूं मलकूत की, बल की हकीकत । लोक जिमी आसमान के, ऐ देखो तफावत || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -25

- अब कहूं मैं ताल की, अन्दर आए सको सो आओ। जो होवे रूह अर्स की, फेर ऐसा न पावे दाओ || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -1
- अब कहूं मैं तिन को, अर्स खावंद की बात । खड़ियां तले कदम के, जो हैं हक की जात || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -91
- अब कहूं मोमिन की, जाए कहिए सोहागिन । ए विरहिन ब्रह्मांड में, हुती ना एते दिन || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -27
- अब कहूं या समें की बात, सो तो अति बड़ी विख्यात । कोई होसी सनमन्धी इन घर, सो लेसी वचन चित धर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -159
- अब कहूं रंग कांबीय के, पेहेरी जंजीर ज्यों जगत । जुदे जुदे रंग हर कड़ी, नैना देख न होंए तृपित || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -50
- अब कहूं रास जहूर की, इन खेल से न्यारा इंड । सो नूर नजर ऐसा हुआ, नूर सारा ब्रह्मांड || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -12
- अब कहूं रूहअल्लाह की, जिन दई महंमद साहेदी । मेरा दिल उनसे रोसन हुआ, पाई न्यामत बका दोऊ की || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -15
- अब कहूं रे इस्क की बात, इस्क सब्दातीत साख्यात । जो की आवे मिने सब्द, तो चौदे तबक करे रद || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -1
- अब कहूं लीला प्रथम की, सुनियो तुम साथ । जो कबूं कानों ना सुनी, सो पकड़ देऊं हाथ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -30
- अब कहूं विध निगम, देऊँ महंमद की गम । जाथें मिटे दुनी हम तुम, करूं जाहेर रसम खसम || ग्रं - खुलासा, प्र -11, चौ -1
- अब कहूं सरीयत मोमिनों, जिन लई हकीकत हक । हक के दिल की मारफत, ए तिन में हुए बेसक || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -46
- अब कहूं सागर तीसरा, मूल मेला बिराजत । रूह की आंखों देखिए, तो पाइए इनों सिफत || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -1
- अब कहूँ सिफायत की, जो आखिर महंमद की चाहे । नेक सुनो सो बेवरा, देऊँ रूहों को बताए || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -20
- अब कहूं सो हिरदे रख, अठोत्तर सौ जो है पख । एक विचार सुनियो प्रवान, याको सार काढ़ूं निरवान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -1
- अब कहूं हुकम की, जिन से सब उतपत । खेल फरिस्ते हुकमें हुए, हुकमें हुई कयामत || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -104
- अब कहूंगी तारतम रोसन कर, ए लीजो साथ नेहेचे चित धर । कहे इंद्रावती अब ऐसा होए, साथ को संसे न रहेवे कोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -21
- अब कहो काके छुए, अंग लागे छोत । अधम तम विप्र अंगे, चंडाल अंग उद्दोत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -20

- अब कहो काके छुए, अंग लागे छोत । अधम तम विप्र अंगे, चंडाल अंग उद्दोत || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -23
- अब कहो क्यों फरिस्ते, क्यों फना आखिरत । भिस्त क्यों कर होएसी, क्यों होसी कयामत || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -69
- अब कहो जी बाकी क्या रह्या, निसान कयामत का जाहेर कह्या। पातसाही ईसा बरस चालीस, लिख्या सिपारे अठाईस || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -5
- अब किन बिध करूं मैं अस्तुत, मेरे जीव को ना कछू बल । जीव जोगवाई सब अस्थिर की, क्यों बरनों सोभा नेहेचल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -4
- अब कुण्ड से पुल आयूँ चल्या, ढाँपिल दोऊ किनार । दोऊ तरफों बैठकें, थंभ चले दोऊ हार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -8
- अब केता कहूं तुमकों जाहेर, ए अर्थ प्रगट कह्यो न जाए। निघात डारे छोड़ लज्या अहंकार, नेहेचल सुख दीजे रे ताए || ग्रं - किरन्तन, प्र -13, चौ -19
- अब केता कहूं तुमको विस्तार, एक एह सब्द लीजो निरधार । फेर फेर कहूं मेरे साथ, नीके पेहेचानो प्राण को नाथ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -35, चौ -13
- अब केहेती हों खसम को, तुम से कैसी चतुराए । ए भी जानो त्यों करो, ऐसी बनी खेल में आए || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -28
- अब केहेती हों साथ सबन, घर जागोगे इन वचन । जित मिल कर बैठियां तुम, याद करो आप खसम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -163
- अब केहेना तो भी तुमको, ठौर तो भी तुम । अंगना तो भी धनी की, तुम हो धनी खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -37
- अब केहेनी आई असल की, नैन जुबां असल । बातें करूं असलू, असल की अकल || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -7
- अब कैसा पाया हक इलम, कैसे हुए बेसक । कैसा पाया बका वतन, कैसा पाया धनी हक || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -89
- अब कैसा बल समूह का, पसु और जानवर । देखो साहेबी अर्स की, ले ब्रह्मांड बल नजर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -87
- अब कैसा सहूर है तुम पे, पाई कौन सोहोबत । किन कबीले में थे, अब कैसी राखत हो निसबत || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -85
- अब कैसी मैं बीच खेल के, जो खेलत कबूतर । ए जो नाबूद कछूए नहीं, तो मैं केहेत क्यों कर || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -20
- अब कैसी विध करूं तुमसों, कछु ना पेहेचाने सजन । सोर हुआ एता तुम पर, क्यों आवे नींद आंखन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -11
- अब को मनसूख और को कही हक, जाहेरी कोई न हुआ बेसक । और भी तुमको कहूं हक, बिना पाए मगज न छूटे सक || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -17

- अब कौन मनसूख को हक, ए दुनी सिफली क्यों समझाए । एक हरफ बिना लदुन्नी, बिन वारस न बूझा जाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -16
- अब कौन रे करसी ऐसा वरनन, नेहेचल बृज रास धाम रे । ए कौन सुख सैयों को देय के, कौन मिलावे स्यामाजी स्याम रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -61
- अब क्या करूं किन सों कहूं, कोई रया न केहेवे ठौर । ए भी कहावत तुमहीं, कोई नाहीं तुम बिना और || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -16
- अब क्यों कर राखू जीव हटाए, कलेजा मेरा कटाए। कंपमान होए कलकले, उठी आह अंतस्करन जले || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -30
- अब क्यों करूंगी मैं बातड़ी, सामी क्यों उठाऊंगी मह । मेरे हाथ ऐसी भई, खलड़ी उतारूं सिर नोंह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -15
- अब क्यों कहूं इन सुख की, लिया ऐसा परहेज हक । जैसा बुजरक साहेब, सुख भी तिन माफक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -60
- अब क्यों कहूं जोत सरूपों की, और सुन्दरता सिनगार । वस्तर भूखन इन जिमी के, हुआ आकास उद्दोतकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -34
- अब क्यों कहूं पाल अंदर की, कई थंभ कई मोहोलात । कई देहेलाने कई मंदिर, ए खूबी कही न जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -87
- अब क्यों कहूँ भूखन की, और क्यों कहूँ बानी मिठास । क्यों कहूँ रेहेस जो पिउ को, जो अंग अंग में उलास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -43
- अब क्यों झण्डा छिपा रहे, हुआ जाहेर तजल्ला नूर । जाहेर किया नूर अर्स का, अर्स दिल महंमद जहूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -31
- अब क्यों देऊं कसनी, मुख करमाने न सहूं । तिन कारन सब्द कठन, मेरे प्यारों को मैं क्यों कहूं || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -34
- अब क्यों रे कहूं प्रेम इतको, सुख लेवें चायो चितको । सुख लेवें सारी रात, तीसरी भोम आवें उठ प्रात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -158
- अब क्रोध तूं कमल फिराओ, उलटाए दे संसार । जोधा जोरावर अब क्या देखे, कर दे जय जय कार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -79
- अब खसम ख्वाब की सुध परी, और सुध परी हुकम । तब मैं में जरा ना रही, में बैठी तले कदम || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -44
- अब खेल उपजे के कहूं कारन, ए दोऊ इछा भई उतपन । बिना कारन कारज नहीं होए, सो कहूं याके कारन दोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -6
- अब गली मैं दया मिने, सागर सख्पी खीर । दया सागर भर पूरन, एक बूंद नहीं मिने नीर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -2
- अब गालू ताओ दिए बिना, करूं सो रस कंचन । कस चढ़ाऊं अति रंगे, दोऊ पेर करूं धंन धंन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -7

- अब गिन देखो थंभ चौसठ, बीच चारों हिस्सों चार द्वार । नाम रंग नंग तो कहिए, जो कित खाली देखू झलकार || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -34
- अब गुझ बताऊं खेल का, झूठे खेले कर सांच । ए नीके देखो मोमिनों, ए जो रहे मजहबों रांच || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -1
- अब घाट छोड़ आगे चले, क्यों कहूं खूबी ए। एक छाया सब पाल पर, और छाया पाल से उतरती जे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -50
- अब चरन कमल चित्त देय के, बैठ बीच खिलवत । देख रूह नैन खोल के, ज्यों आवे अर्स लज्जत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -210
- अब चरनों चारों भूखन, चारों में जुदे जुदे रंग । जानो के रस जवेर के, जैसे जोत अर्स के नंग || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -39
- अब छल को बल क्या करे, जब देखाऊं बका बतन । निकाल देऊं जड़ पेड़ से, ल्याए नूर अर्स रोसन || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -3
- अब छल में कैसे कर रहिए, छोड़ देओ सब झूठ हराम । सुरत धनी सों बांध के चलिए, ले विरहा रस प्रेम काम || ग्रं - किरन्तन, प्र -89, चौ -9
- अब छोड़ो रे मान गुमान ग्यान को, एही खाड़ बड़ी भाई । एक डारी त्यों दूजी भी डारो, जलाए देओ चतुराई || ग्रं - किरन्तन, प्र -5, चौ -6
- अब जगाऊं जुगत सों, उड़ाऊं सब विकार । रंगे रास रमाए के, सुफल करूं अवतार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -3
- अब जल की सोभा क्यों कहूं, हम करती इत झीलन । चित्त चाहे करें सिनगार, ए सुख कब लेसी मोमिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -22, चौ -8
- अब जल तले जो आइया, उतर कुंड से जे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -2
- अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सोहागिन जोग । तीन लीला चौथी घर की, इन चारों को यामें भोग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -1
- अब जागी बुध कहूं मैं तोको, तूं है बुध को अवतार । कर निरने तूं माया ब्रह्म को, खोल तूं पार द्वार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -11
- अब जाहेर लीजो दृष्टांत, जीव जगाए करो एकांत । चौद भवन का कहिए धनी, लीला करे बैकुंठ विखे घनी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -14
- अब जाहेर हुई सृष्ट ब्रह्म की, और जाहेर वतन ब्रह्म । अर्स उमत जाहेर हुई, हुई जाहेर सूरत खसम || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -44
- अब जिन जाओ तरफ माया के, मेरे लोभ लालच दोऊ जोड़ । जोर पकड़ो दोऊ पाउं पिउ के, करो रात दिन दौड़ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -37
- अब जिन माया मन धरो, तुम देखी अनेक जुगत जी । कई कई विध कह्या मैं तुमको, अजहूँ ना हुए त्रपत जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -3, चौ -4

- अब जिमी फना के, और जिमी बका पटंतर । पसु पंखी देखो फना के, देखो अर्स जानवर || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -101
- अब जो असल उमत का, ताए देऊँ अर्स निसान । इन विध देऊँ साहेदी, ज्यों होए हक पेहेचान || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -97
- अब जो आपन होइए सनमुख, तो धनी बोहोत विध पावें सुख । कई विध दया साथ पर कर, सब विध के सुख देवें फेर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -3
- अब जो कछुए हम में, होसी मूल अंकूर । जो नींद उड़ाए तुम निध दई, सो क्योंए ना छोडूं पिया नूर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -4
- अब जो केहेती हों अर्स की, सो दिल में यों आवत । बिना देखे केहेत हों, जित रूह जो चाहत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -11
- अब जो कोई होवे खास उमत, देवे ग्वाही सो होए साबित । उड़ाए गफलत हो सावधान, छोड़ो पढ़ों का गुमान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -39
- अब जो घड़ी रहो साथ चरने, होए रहियो तुम रेनु समान । इत जागे को फल एही है, चेत लीजो कोई चतुर सुजान || ग्रं - किरन्तन, प्र -89, चौ -11
- अब जो दिन राखो खेल में, सो याही के कारन । इस्क दे बोलाओगे, ऐसा हुकमें देखें मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -18
- अब जो धनी करो मेरी सार, तो ए लीला केहेनी निरधार । बोहोत बेर मने किया सही, अनेक विध सिखापन दई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -31
- अब जो बन है केल का, सो आगू पोहोंच्या जाए। तिन परे बन पहाड़ का, सब दोरी बंध सोभाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -64
- अब जो भूखन चरन के, हेम झांझर धुंधर कड़ी । अनेक रंग नंग झलकें, जानों के जवेर जड़ी || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -81
- अब जो वस्तर भूखन की, क्यों कर होए बरनन । इत अकल ना पोहोंचत, और ठौर नहीं बोलन || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -84
- अब जो साइत इत होत है, सो पिउ बिना लगत अगिन । ए हम सहयो न जावहीं, जो साथ में कहे कोई कटुक वचन || ग्रं - किरन्तन, प्र -89, चौ -13
- अब जो सुनो खास उमत, खड़े रहो दोजख एक बखत । जिन भागो गोसे रहो खड़े, देखो दोजखियों खजाने बढ़े || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -36
- अब जो हिंमत हक देवहीं, तो उठ मिलिए हक सों धाए । सब रूहें हक सहूर करें, तो जामें तबहीं देवें उड़ाए || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -27
- अब जोत पकरी न रहे, दूजा बेधिया आकास । जाए लिया इंड तीसरा, जहां अखंड रजनी रास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -1
- अब जोत पकरी ना रहे, बीच में बिना ठौर । पसरके देखाइया, बृज अखंड जो और || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -10

- अब जोर कर जाओ माया में, इनके संग होए तुम । उजाले तारतम के पेहेचान, ज्यों मूल सरूप देखें हम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -92
- अब ज्यों जानो त्यों करो, कछू रहया न हमपना हम । इन झूठी जिमी में बैठ के, कहा कहूं तुमें खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -46
- अब ढील ना कीजे एक पल, इत नाहीं बैठन का लाग । एक पलक के कोटमें हिसे, हो जासी बड़ा अभाग || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -15
- अब ढूंढ़ों रूहें अर्स की, जो हैं मूल अंकूर । सो निज वतनी मोमिन, खसम अंग निज नूर || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -1
- अब तरफ दसो दिस देखिए, तो गेहेरे मोह के जल । मेर जैसी लेहेरां मिने, माहें मछ गलागल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -8
- अब तारतम कौन केहेसी, कौन विचार कर देसी हेत । चौदे भवन में इन धनी बिना, ए बानी कोई ना देत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -40
- अब तारूं तुमें या बिध, ज्यों लगे न लेहेर लगार । सुखपाल में बैठाए सुखें, घर पोहोंचाऊं निरधार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -35
- अब ताल पाल की क्यों कहूं, बन पांच हार गिरदवाए । फिरती क्योहरी चबूतरे, सोभा इन मुख कही न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -22, चौ -1
- अब तिन गून को कहा दीजे उपमा, धिक धिक पड़ो ए बुध । आगे तूं सिरदार सबन के, तें क्यों न लई ए निध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -10
- अब तुम आओ नेहेचल सुख में, जिन भूलो अवसर । माया में लाहा लेऊ धनी का, हरख ले जागो घर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -48
- अब तुम निकसो नींद से, आए पोहोंची सरत । कौल किया था हक ने, सो आई कयामत || ग्रं - खुलासा, प्र -18, चौ -1
- अब तुम बिध मेरी देखियो, सब बिध करूं रोसन । धाम धनी आन देऊ अंगमें, तो कहियो सिरदार सबन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -88
- अब तुम संगी हूजो मेरे, धनिएं कियो मोसों मिलाप । सिर ल्यो सोभा धनी धामकी, दूर हो मायाथें आप || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -53
- अब तुम सुनियो मोमिनों, अर्स बिने तुमारी बात । वाहेदत तो कहे मोमिन, जो रूहें असल हक जात || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -102
- अब तुम सुनियों मोमिनों, सुनते होइयो श्रवन । पीछे विचार होए विचारियो, तब मगज पाइए वचन || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -34
- अब तुमको कहूं खीज के, तुम हूजो सावधान । प्रेमें पिउ रूदे लपटाओ, जिन करो किन की कान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -58
- अब तूं जिन भूल आतम मेरी, पेहेचान के खसम । वतन देखाया अपना, जिन छोड़े पिउ कदम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -27, चौ -1

- अब तूं स्वाद हो सोहागी, ले धनी की मिठास । इन रंग रस आयो जब स्वाद, तब जेहेर होसी सब नास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -75
- अब तेहेकीक एही होत है, तोहे बोलावत हुकम । हुकमें वजूद रेहेत है, और हुकमें दिया इलम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -10
- अब तो आतम ने ए दृढ़ किया, देह उड़े ना बिना इस्क । जोस इस्क दोऊ मिलें, तब उड़े देह बेसक || ग्रं - किरन्तन, प्र -85, चौ -14
- अब तो उमत मिली खासी, और उमत दूसरी । तीसरी भी कायम हुई, अब काहे को ढील करी || ग्रं - किरन्तन, प्र -62, चौ -18
- अब तो कछुए न देखत मद में, पर ए मद है पल मात्र । महामत दिवाने को कह्यो न माने, सो पीछे करसी पछताप || ग्रं - किरन्तन, प्र -19, चौ -11
- अब तो किए धनिएँ जाग्रत, दई भांत भांत पेहेचान । तोड़ दई आसा छल की, क्यों सकुचें करत कुरबान || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -21
- अब तो केहेना कछू ना रया, ऐसी अंतराए करी खसम । जब तुम जगाए बैठाओगे, तब केहेसी आए हम || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -49
- अब तो धनी बल जाहेर, आयो अलेखे अंग। ए जिन दिया सो जानहीं, या जिन लिया रस रंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -22
- अब तो लगे सब बंदगी, आया भला आकीन । नर नारी हक कलमें, कायम खड़े हैं दीन || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -31
- अब तो सब ही करोगे, टालने हमारे दाग । तुम रखियां ऐसा जान के, ना तो क्यों रहें पीछे हम जाग || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -22
- अब तोको कहा देऊं रे गाल, तूं भली अवसर अपनो इन हाल । फिट फिट रे भूडें तूं मन, तें अधरम कियो अति घन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -28
- अब तोको कहूं चाक चकरड़ा, तूं चढ़ बैठा जीव के सिर । तें खाली ऐसा फिराया, रेहे ना सके क्योंऐ थिर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -81
- अब तोको क्यों काढ़ूं रे तृष्णा, तोसों बड़ा मोहे काम । तृष्णा लाग तूं पूरन पिउसों, ज्यों बस करूं धनी श्रीधाम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -40
- अब दया गुन मैं तो कहूं, जो कछू अंतर होए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -4
- अब दरिया हुआ हक, इन में न रहे किसी की सक । दरिया हक बीच मजकूर, कह्या जाहेर खुसाली नूर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -11
- अब दिखाऊं इन विध, जासों समझ सब होए। भेले हैं सत असत, सो जुदे कर देऊं दोए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -1
- अब दिन कायम जाहेर हुआ, सबों रोसनी पोहोंची बका हक । कायम किए सब हुकमें, बरस्या बका इस्क मुतलक || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -29

- अब दिन बाकी कछू ना रहे, सो भी देखाए दई तुम सरत । क्यों मुख उठाऊं आगूं तुम, चरनों लागू जिन बखत || ग्रं - किरन्तन, प्र -100, चौ -7
- अब दिल में ऐसा आवत, ए सब करत चतुराए । फेर देखू इन चतुराई को, तो हक बिन हरफ न काढ्यो जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -50
- अब दुख आवे तुमको, तहां आड़ा देऊं मेरा अंग । सुख देऊ भली भांतसों, ज्यों होए न बीच में भंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -39
- अब दुख ना देऊं फूल पांखड़ी, देखू सीतल नैन । उपजाऊं सुख सब अंगों, बोलाऊं मीठे बैन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -4
- अब दुनियां पीछी क्यों रहे, जब हुई हक कजाए। हुआ सब पर हुकम महंमदी, सो सब लेसी सिर चढ़ाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -26
- अब दूर करूं असत को, जाहेर करूं सत जोत । गोप रही थी एते दिन, सो अब होत उद्दोत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -8
- अब देऊं दरवाजे खोल, कहूं हकीकत बातून बोल । जासों जाहेर होवे मारफत, दिन पाइए रोज कयामत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -33
- अब देखसी सब नजरों, दोऊ झण्डों करी पुकार । बातून झण्डा नूर का, पोहोंच्या बिलंद नूर पार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -95
- अब देखियो जीव जोर हमारा, पिउ पकड़ देवें एकांत । पूरा पास देऊ रंग लाखी, सो क्योंए ना उचटे भांत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -60
- अब देखो अंतर विचार के, कैसा सुन्दर सरूप रूहन । किन विध खूबी रूहन की, क्यों वस्तर क्यों भूखन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -48
- अब देखो अन्दर अर्स के, रूहें बैठी बारे हजार । उतरी लैलत-कदर में, खेल देखन तीन तकरार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -1
- अब देखो इन छल को, जो देखन आइयां तुम । नूर जोस देऊ अंग में, जो कोई मोमिन मुस्लिम || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -19
- अब देखो कुरान वारसी, लिख्या आखिर बोझ सिर इन । ए कौन करे मसी बिना, रात उड़ाए के दिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -63
- अब देखो दिल विचार के, कैसा बीच पड्या इनमें । ऐसी दुनी दोस्ती भी न करे, जैसी हुई जमात से || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -17
- अब देखो दिल विचार के, कैसी बुजरक बात है तुम । कैसा खेल तुम देखिया, कई विध देखाई हुकम || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -14
- अब देखो दुनियां जाहेरी, करम कांड सरीयत । इनके इस्क ईमान की, कहूं सो हकीकत || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -23
- अब देखो पेट पांसली, और लांक चलत लेहेकत । ए सोभा सलूकी लेऊं रूह में, तो भी उड़े न जीवरा सखत || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -68

- अब देखो बल महंमद का, दई दुनियां को सरीयत || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -41
- अब देखो माजजा रख आखिरी, सब उठाए सिजदे ठौर । रोसन हुआ दिन अर्स बका, कोई ठौर रही ना सिजदे और || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -36
- अब देखो या छल को, जो देखन आइयां एह । प्रकास करूं इन भांत का, ज्यों रहेवे नहीं संदेह || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -19
- अब देखो ले माएने, खेल बिना हिसाव । आप अकलें देखिए, ए रच्यो खसमें ख्वाब || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -32
- अब दौड़े जोस इस्क को, याद कर साथ धनी धाम । ए धनी बिना ना आवहीं, जोस इस्क प्रेम काम || ग्रं - किरन्तन, प्र -85, चौ -16
- अब धनी जानो त्यों करो, पर इत कहूं कहूं रूह तरसत । कोई कोई चाह जो उठत है, सो हकै उपजावत || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -14
- अब नबी प्यारा लग्या, लगे प्यारे सब्द रसूल । इमाम हुए जाहेर, कदमों सब सनकूल || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -2
- अब निरखो नीके कर, ए जो देखन आइयां तुम । मांग्या खेल हिरस का, सो देखलावें खसम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -1
- अब निरखो नीके कर, जो देखन आइयां तम । मांग्या खेल हिरस का, सो देखावें खसम || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -1
- अब निस दिन रूह को चाहिए, फेर सब अंग देखे नजर । सूरत छबि सलूकी, देखों भूखन अंग वस्तर || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -4
- अब नींद उड़ी सबन की, आई जो हिरदे बुध । समझे सब कुरान को, भई रसूल की सुध || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -1
- अब नींद करे जिन तूं, ए नींद देवे दुहाग । उठ तूं जाग जोर कर, दौड़ ले पिउ सोहाग || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -27, चौ -11
- अब नींद किए की नाहीं ए बेर, पिउ आए बुलावन उड़ाए अंधेर । पेहेले कह्या पिउ प्रगट पुकार, अंतर रहे केहेलाया आधार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -8
- अब नींद हमारी क्यों रहे, इन बखत दिए जगाए । जागे पीछे झूठी भोम में, क्यों कर रहयो जाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -92, चौ -6
- अब नूर कहूं अंदर का, नूर मोहोल मंदिरों नहीं पार । एही भूल है अपनी, सोभा ल्याइए मांहें सुमार || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -47
- अब नूर बिलंद जो हक का, ले उठ्या सबका नूर । बन जिमी आकास सब, ए देखो एक जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -26
- अब नेक कहूं आखिर की, जो होसी सब जाहेर । बांधे दज्जालें मोमिन, अंतर मांहें बाहेर || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -2

- अब नेक कहूं इन नूर की, इन नूर से पैदा नूर । पेहेले कहूं तिन नूर की, जित रूहें खेली माहे जहूर || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -11
- अब नेक तो भी कहूं, सुन्य मंडल की सुध । जाको कोई ना उलंघे, अगम अगाध या बिध || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -42
- अब नेहेरें बरनन तो करूं, जो कछू होए हिसाब । मोहोल मोहोल बीच कई कुंड बने, कई कारंजे छूटे ऊंचे आब || ग्रं - परिक्रमा, प्र -23, चौ -6
- अब पांचों तत्व पुकारहीं, आई रोड़े बीच आवाज । सो सब किए तुम कायम, वास्ते तुमारे राज || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -89
- अब पार सुख क्यों प्रकासिए, ए है अपनों विलास । महामत मनसा मिट गई, सब सुपन केरी आस || ग्रं - किरन्तन, प्र -7, चौ -9
- अब पूछो दिल अपना, इत कहां रया आकीन । मुख से कहें हम महंमद के, कायम खड़े बीच दीन || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -22
- अब फरामोसी क्यों रहे, जब खुल्या बका द्वार । रूबरू किए हमको, तन असल नूर के पार || ग्रं - सागर, प्र -3, चौ -11
- अब फिटकार देऊं कल्पना, उलटी तूं अकरमन । फिराए खाली करी फजीत, आतम को अति घन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -64
- अब फेर आए दूजा देह धर, दया आपन ऊपर अति कर । अब ए चेतन कर दिया अवसर, ज्यों हंसते बैठ जागिए घर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -72
- अब फेर सब सीधा फिरे, सत आया सबों दृष्ट । पेहेचान भई प्रकास थे, सुपन की जाहेर सृष्ट || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -11
- अब फौज गिनों दिल अपने, पीछे गिनो सिरदार । सो सिरदार कई एक फौज में, तिन फौज करो निरवार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -56
- अब बताऊं या बिध, देखो दिल में आन । जाहेर मैं देखाऊंगी, मेरे इमाम की पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -13
- अब बल बल जाऊं मेरे धनी, मेरे मन में हाम है घनी । असत मंडल में हासल अति बड़ी, मैं पिउजी की उमेद ले खड़ी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -19
- अब बातें अंदर की, पूछसी सब मोमिन । जाहेर देऊ निसानियां, ज्यों देखो अर्स वतन || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -62
- अब बांधनी पाल खरी करनी, ज्यों ना खसे लगार । पीछे जल जोर बढ़ा ऊपर अपने, तब सामी सोभा होसी अपार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -112
- अब बानी अद्वैत में गाऊं, निज सरूप की नींद उड़ाऊं। सब सैयों को भेली जगाऊं, पीछे अछर को भी उठाऊं || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -2
- अब बेत अल्ला पुकारत, भेजी साहेदी नामे वसीयत । तो भी दुनी ना देखहीं, जो ऐसे सौं खाय लिखे सखत || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -39

- अब बेवरा तीन निमाज का, खोले भेद की हकीकत । करत निमाज जबरूत में, बीच बका फरिस्ते पोहोंचत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -41
- अब बोहोत कहूं मैं केता, करी है इसारत । दिल आवे तो लीजो सलूक, सुख पाए कहे महामत || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -36
- अब भली बुरी इन दुनीय की, ए जिन लेओ चित ल्याए । सुरत पकी करो धाम की, परआतम धनी मिलाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -86, चौ -14
- अब भूखन की मैं क्यों कहूं, जो इत हैं हेम मनी । कई विध की इत धात है, नंग जात नाहीं गिनी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -38
- अब भूल हमारी जरा नहीं, और हक कर थके हांसी । बात आई सिर हुकम के, अब काहे बिलखे रूह खासी || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -14
- अब भेले तो सब चलिए, जो अंग न काहूं अटकाए । तो तुम होवे जागनी, जो सांचवटी बटाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -38
- अब मनसा वाचा करमना कर, क्योंए ना छोडूं अखंड घर । नैनों निरखू करी निरमल चित, रूदे राखू पिउ प्रेम हित || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -24
- अब ममता आओ मेरे पिउ में, तोको पेहेले दई धिकार । अब संघातन हूजो मेरी, मोहे मिले पिउ सिरदार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -62
- अब मांगूं सिर हुकम, हुज्जत लिए खसम । अब क्यों न होए सो उमेद, दिया हाथ हुकम || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -14
- अब मिल रही महामती, पिउ सों अंगों अंग । अछरातीत घर अपने, ले चले हैं संग || ग्रं - किरन्तन, प्र -46, चौ -7
- अब में क्यों कर कहुं, एक बोल बिना इमाम मेंहदी || ग्रं - सनंध, प्र -2, चौ -10
- अब मेरा केहेना ना कछु, तुमहीं केहेलावत ए। मेरे कहे मैं रेहेत है, पर सब बस हुकम के || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -39
- अब मैं काहू में नहीं, ए जो लेत सिर मैं । ए हाँसी होसी ज्यों कर, जो करत हैं मैं तें || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -47
- अब मैं चेरी हुई तुमारी, ले देऊं सांची निध । अब के ए निध क्योंए ना छूटे, करो कारज तुम सिध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -63
- अब मैं दिल विचारिया, लिया न सिर सब्द । तो झूठी देह लग रही, जो बांधी मांहे हद || ग्रं - किरन्तन, प्र -86, चौ -8
- अब मैं पोहोंच्या उमेद एती, बजरकी पाइए इनसेती । ना कछू एती थी खबर, ना देहेसत लई दिल धर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -18
- अब मैं मरत है इन विध, और न कोई उपाए । खुदाई इलम सों मारिए, जो हके दिया बताए || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -3

- अब या पर एक कहूं दृष्टांत, देखो आप में वृतांत । सुकजी के कहे प्रवान, सात सागर को काढ्यो निरमान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -22
- अब याकी कहूं समझन, जुदे कर देऊं जीव और मन । समझ के पेहेचानों जिउ, निज वतन जो अपना पिउ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -13
- अब याद करो खसम को, छोड़ो नींद विकार । पेहेचान कराए इमाम सों, सुफल करूं अवतार || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -24
- अब याही रट लगाऊं, ए प्रेम सबों को पिलाऊं। अब ऐसी छाक छकाऊं, अंग असलू इस्क बढ़ाऊं || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -4
- अब यों हक को याद कर, ले हुकम सिर चढ़ाए। ए हक बिना मैं दुनीय की, सो सब मैं देऊं उड़ाए || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -34
- अब रसूल की सुध परी, और सुध परी फुरमान । ए सबे सुध तब परी, जब आए बैठे सुलतान || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -3
- अब रह्यो न जाए नेक न्यारे, यों किए जागनी ले । अहंमेव जाग्या धाम का, हम मिने आया जे || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -13
- अब राजा पूछत मोहे कहा, तझ सरीखा में हो रह्या । तब परीछित चरन पकड़ के कहे, स्वामी ए दाझ जिन अंगमें रहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -19
- अब रूहें जो अर्स मोमिन, तिन कहा चाहियत है और । रसूल कहे जानो हक, काजी कजा होसी इन ठौर || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -7
- अब लग जानती अर्स के, हेम नंग लेत मिलाए। पैदास भूखन इन विध, वे पेहेनत हैं चित्त चाहे || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -84
- अब लग दुनी यों जानिया, माएने न पाए किनने । तो बोले जुदे जुदे आरिफ, जो सक है सबों में || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -48
- अब लछन देखो मोमिन के, जो अरवाहें अर्स घर । ए वतनी वचन सुन के, आवत हैं तत्पर || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -5
- अब लिखती हूं साथ देखियो उजास, मैं गजे माफक करूं प्रकास । मैं बोहोत सकोर्दू आंक लिखते ए, जिन जानों मींडे होए बड़े || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -10
- अब लीजो ए रोसनी, जो अरवा अर्स के। ए निमूना देखिए, ज्यों सुध होए हिरदे || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -9
- अब लीला हम जाहेर करें, ज्यों सुख सैयां हिरदे धरें। पीछे सुख होसी सबन, पसरसी चौदे भवन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -1
- अब ले स्याबासी सैयन में, कर तूं ऐसी भांत । एह मिहीं सूत सोहाग का, सो रात दिन ले कात || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -27, चौ -13
- अब लेने अर्स अजीम में, बोलसी जुबां इमाम । सो तो अपने आप को, केहेने हैं कलाम || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -61

- अब लों तारीख आखिर की, न पाई कुरानथें किन । सो रूहअल्ला के इलम से, जाहेर हुई सबन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -9, चौ -2
- अब लोक चौदे तरफ चारों, प्रकास होसी साथ जोग । जीव सबको जगाए के, टालूं सो निद्रा रोग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -77
- अब ल्योरे मेरे साथ जी, इन जिमी ए सुख । मैं तुमारे न सेहे सकों, जो देखे तुम दुख || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -32
- अब वचन लेऊं सब सार के, भी यों कहे श्रवन । इन बिध बानी ग्रहूं मैं प्यारी,ज्यों सब कोई कहे धंन धंन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -22
- अब विछोहा खिन एक साथ को, सो मैं सहयो न जाए। अब नेक वाओ इन माया की, जानों जिन आवे ताए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -15
- अब संग कीजे तिन गुर की, खोज के पुरुख पूरन । सेवा कीजे सब अंगसों, मन कर करम वचन || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -17
- अब सब के मन में ए रहे, इत दिल चाया होए । तो पाइए खेल खुसाली, हक जानत सब सोए || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -40
- अब सब में जाहेर हुए, बड़े रसूल के सब्द । इमाम आए फजर हुई, उड़ गई अंधेरी हद || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -38
- अब सब यह समझेंगे, आया वचन महम्मद साहेब का || ग्रं - सनंध, प्र -34, चौ -16
- अब सबमें जाहेर हुई कयामत, खुले कलाम जब पोहोंची सरत । लिख्या सिपारे सोलमें मिने, आगे राह न पाई किने || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -5
- अब सब्दातीत की सब्दमें, सोभा बरनी न जाए । जो कछू कहूं सो सब्द में, बोलूं कौन जुबांए || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -2
- अब सब्दातीत निध धाम की, ए कौन केहेसी मुख बान रे । श्री धामके सुख की रे बीतक, कौन केहेसी वर्तमान रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -74
- अब समया आया रेहेनीय का, रूह फैल को चाहे । जो होवे असल अर्स की, सो फैल ले हाल देखाए || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -5
- अब सरमिंदी कहूं मैं तोको, तूं देख परआतम सगाई । बड़ा अवसर पेहेले तूं चूकी, अब फेर आई जोगवाई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -98
- अब सरीर मेरा क्यों रहे, ए अगनी जीव न सहे । अब अग्या मांगू मेरे धनी, करूं तपस्या देह कसनी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -35
- अब सांचा तो जो करे रोसन, जोत पोहोंची जाए चौदे भवन । ए समया तो ऐसा मिल्या आए, चौदे भवन में जोत न समाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -22
- अब साथ न छोडूं एकला, साथ मुझे छोड़े क्यों । कहया मेरा साथ न लोपे, साथ कहे करूं मैं त्यों || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -17

- अब सिर ले हुकम हक का, बैठी धनी की मैं । जरा इन में सक नहीं, इलम हक के सें || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -22
- अब सुकजी की केती कहूं बान, सार काढ़ने ग्रह्यो पुरान । सबको सार कह्यो ए जो रास, ए जो इंद्रावती मुख हुओ प्रकास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -25
- अब सुख रास कहा कहूं, जाने निज सुख होए । ए सुख साथ पिउ बिना, न जाने कोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -111
- अब सुध होसी सबन को, खुली बातून हकीकत । इमाम रूहों पे लुदंनी, जित अर्स हक मारफत || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -29
- अब सुनियो तुम मोमिनों, ए खेल तो कछुएं नांहें । पर कछुक तो देखत हो, जिन रहे संसे दिल मांहें || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -6
- अब सुनियो ब्रह्मसृष्ट विचार, जो कोई निज वतनी सिरदार । अपनों धनी श्री स्यामा स्याम, अपना वासा है निज धाम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -2
- अब सुनियो मूल वचन प्रकार, जब नहीं उपज्यो मोह अहंकार । नाहीं निराकार नाहीं सुन्य, ना निरगुन ना निरंजन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -8
- अब सुनियो साथ सुनाऊं, पीछे निज नैनों देख देखाऊं । जोत जवेर चबूतरे दोए, ताकी उपमा मुख न होए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -9
- अब सुनो इन खेल की, रूहें उतरी जिन वास्ते । फुरमान ल्याया रसूल, और उतरे फरिस्ते || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -16
- अब सुनो प्यारे साथजी, पिया प्रगट होत सबन । सारों को सुख देय के, उड़ावत एह सुपन || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -73
- अब सुनो रे तुम सैंयां, कहूं सो बीतक बात । पानी तो पिउजी ले चले, अब तलफूं मछली न्यात || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -8
- अब सो आखिर आइया, उठ खड़े रहो मुस्लिम । पाक करूं नूर अकलें, खबर देऊं खसम || ग्रं - सनंध, प्र -1, चौ -12
- अब सो इमाम आइया, याही दिन आखिर । सब्द रसूल के जाहेर, फिरवलसी सब पर || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -35
- अब सो कहां है महंमद, तुम उठ क्यों न देखो जाग। कह्या कौल सो आए मिल्या, अब नहीं नींद को लाग || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -1
- अब सो क्योंए आप को, काढ़ न सकें तिलसम । फुरमान ले पोहोंच्या रसूल, तो भी न आवे सरम || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -41
- अब सो क्योंए याद न आवहीं, जो रूहअल्ला आया तबीब । दारू न लगे तिनका, जाए हके कह्या हबीब || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -111
- अब सो समया आए पोहोंचिया, मेरे तो लेना सिर । धनिएँ बानी करता मुझे किया, सो मैं मुख फेरों क्यों कर || ग्रं - किरन्तन, प्र -86, चौ -4

- अब सो साहेब आइया, सब सृष्ट करी निरमल । मोह अहंकार उड़ाए के, देसी सुख नेहेचल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -2, चौ -12
- अब हके हुकम चलाइया, खुदी फरेबी गई गल । रास खेल रस जागनी, हुआ रूहों सुख असल || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -69
- अब हम चले धाम को, साथ अपना ले । लिख्या कौल फुरमान में, आए पोहोंच्या ए || ग्रं - किरन्तन, प्र -93, चौ -1
- अब हम धाम चलत हैं, तुम हूजो सबे हुसियार । एक खिन की बिलम न कीजिए, जाए घरों करें करार || ग्रं - किरन्तन, प्र -92, चौ -1
- अब हम मिने थें ए रस, इत आए छलकाना । छोल आई ज्यों सागर, अंग थें उभराना || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -90
- अब हम रहयो न जावहीं, मूल मिलावे बिन । हिरदे चढ़ चढ़ आवहीं, संसार लगत अगिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -93, चौ -4
- अब हिंमत करके कात तूं, दिल बांध सूत के साथ । ए मिहीं सूत सोहाग का, सो होसी तेरे हाथ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -27, चौ -10
- अब हुई पेहेचान हुकम की, एक जरा न रही सक । बोझ हम सिर ना रह्या, हक इलमें देखाया मुतलक || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -13
- अब हुए सब जाहेर, कुफर करामात कल । महंमद मेंहेंदी के प्रताप से, जासी बंध सब जल || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -42
- अब हुकम चढ़ाऊं सिर साथ को, बकसो मेरी भूल । भी दीजो सिखापन मुझको, ज्यों होऊं सनकूल || ग्रं - किरन्तन, प्र -101, चौ -9
- अब हुकम धनीय के, सब बिध दई पोहोंचाए । चेत सको सो चेतियो, लीजो आतम जगाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -86, चौ -13
- अब हुकम होए धनी सो करूं, मेरा बल ना चले कछू इत । सुरखरू तुम करोगे, पुकार कहे महामत || ग्रं - किरन्तन, प्र -100, चौ -10
- अब हुकमें द्वारा खोलिया, लिया अपने हाथ हुकम । दिल मोमिन के आए के, अर्स कर बैठे खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -1
- अबलीस कया दुनी दुस्मन, तो किया मोमिनों मता का दावा । सो समझे न इसारतें, जिन ताले अबलीस हवा || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -84
- अबलीस लिख्या दुनी नसले, पातसाही करे दिलों पर । ऐसा लिख्या तो भी ना समझे, ए देखें ना रूह की नजर || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -23
- अबलीस सोई बतावसी, जिन सों होसी दोजक । बोली चाली मोमिन अर्स की, जासों पाइए बका हक || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -143
- अबलों काहूं ना जाहेर, श्री धाम के धनी । खेले आप इच्छा कर, अर्धांग जो अपनी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -13

- अबलों बेवरा ना हुआ, कई चली गई जहान । एक दीन जब होवहीं, तब होसी सबों पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -11
- अबलों बेसुध हुकमें, खेली सकल जहान । तिनों सुध हुई हुकमें, यों खुली इसारते फुरमान || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -51
- अबहीं जो सिर लीजिए, एक वचन जाग्रत । तो तबहीं जाग के बैठिए, उड़ जाए सुपन सुरत || ग्रं - किरन्तन, प्र -85, चौ -5
- अबही रात आई देखोगे, उठसी अनेक अंधेर जी। जीव अंधेर जब देख उरझसी, तब आवसी विख के फेर जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -30
- अबीर गुलाल उछालती आवे, छाया ना सूझे सूर । चाल चरण छवे नहीं भोमें, जाणे उमडयो सागर पूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -51, चौ -4
- अबूझ टालीने हवे, कोण करसे वचिखिण । नेहेचल निध निज धामनी, कोण देसे ततखिण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -47
- अब्दुल्ला बिन उमरें, छोड़ कजा दिया जवाब । सोए लिख्या बीच हदीसों, सुनो तिनों का सवाब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -8
- अभागी तोके ते चुआं अकरमी, जे न पसां तोमें हाल । सत दाण तोके चुआं सुहागी, जे करिए की की भाल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -15, चौ -11
- अम मांहें कांई अमपणूं, जो होसे आ वार । तो वचन एवां तमतणां, अमे नहीं रे सांभलूं निरधार || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -48
- अमने लागी हती जेहेनी रढ, ते तमे पूरण कीधी आंही आवी द्रढ़ । तमे अमने रामत देखाडवाने काज, अम पेहेलाने पधास्या श्रीराज || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -18, चौ -6
- अमने वेण वजाडी देखाडो, जेवो पेहेलो वायो रसाल रे । वेण सांभलतां ततखिण वालैया, अमे जीव नाख्या तत्काल || ग्रं - रास, प्र -31, चौ -2
- अमल ऐसा इन मद का, अर्स रूहें रही छकाए । छाके ऐसे नींद सुपन में, जानों अर्स में दिए जगाए || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -25
- अमल चढ़या क्यों जानिए, कोई फिसलत कोई गिरत । कोई सावचेत होए के, हाथ पकर सीढ़ी चढ़त || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -9
- अमल चढ़या क्यों जानिए, कोई फिसले कोई गिरे । कोई मिने जाग के, कर पकर सीढ़ी चढ़े || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -6
- अमल चढ़यूं केम जाणिए, कोई आथडे कोई पडे । कोई मांहें जागी करी, बांहें ग्रही पगथी चढे || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -11, चौ -6
- अमलक देखो खड़ियां, हाथ बिना हथियार । नींद बड़ी है जागते, पिंड बिना आकार || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -14
- अमृत खसम रूहन पर, नूर नजरों सींचत । सो रस रूहें रख का, सनमुख रोसन पीवत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -29

- अमृत पीजे ने चुमन दीजे, कंठडे वालाने वलाइए । हमचडीमां त्रण रस लीजे, रेहेस रामतडी गाइए || ग्रं - रास, प्र -14, चौ -6
- अमृत बन अति सोभित, घाट पाट का जे । आगू दरवाजे निकट, बन बन्या जो सुन्दर ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -21
- अमृत बन-घाट पाट का दोऊ पुलों के बीच में, सोभित सातों घाट । तीन बाएं तीन दाहिने, बीच थंभ चांदनी पाट || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -20
- अमृत वा वाए वसंतनो, लेहेरो लिए बनराय । ए रूत देखी जीवन विना, ते मारे जीवे न खमाय || ग्रं - खटरुती, प्र -5, चौ -7
- अमें अमारे धाम आव्या, अछर पोताने घेरजी । अखंड रजनी रास रमाय, रामत एणी पेरजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -22
- अमे अवसर देखी उलासियो, कांई अंगडे अति उमंग । कहे इंद्रावती अमने, तमे सहुने रमाडो संग || ग्रं - रास, प्र -11, चौ -14
- अमें उपाई आनंद माटे, रामत तो तमे मांगी । रामतना सुख दऊं साचा, चालतूं आंहीं जागी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -20
- अमे किहां रे पाछां वली जाइए, अमने नथी बीजो कोई ठाम जी । कहो जी अवगुण अमतणां, तमे कां कहो अमने एम जी || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -39
- अमे घर आंहींथी जोइया, आंही अजवायूँ अपार । विविध पेरे एणे तारतमें, देखाड्या दरबार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -123
- अमे जेम कयूं वाले तेम, कीधी रामत घणी । हाम हुती हैडा माहें, वाले टाली अमतणी || ग्रं - रास, प्र -44, चौ -3
- अमें जोऊं वृंदावन इहां थकी, रमू वालाजी साथ जी । करूं ते रामत नित नवी, वन मांहें विलासजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -3
- अमे ठाम सघला जोया रे वाला, क्यांहें न दीठो कोय । जो तमे हुता वनमां, तो विरह केणी पेरे होय || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -26
- अमे तम विना नव ओलखं, बीजा संसार केरा सल जी । चरणे तमारे वालैया, कांई अमारा छे मूलजी || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -40
- अमे तूंने जोपे जाणू, बीजो न जाणे जंन । अमसूं छेडा छोडीने ऊभा, जाणिए नेह निसंन || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -19
- अमे तो आव्या आनंद भरे, काई तमसुं रमवा रात जी । एवा बोल न बोलिए, अमने दुख लागे निघात जी || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -38
- अमे निकुंज वनथी निसस्यां, आवी थवकला खाधां । वाले वनमां चीमी चीमी, श्री ठकुराणीजी ने लाधां || ग्रं - रास, प्र -15, चौ -10
- अमे परसपर कीधां परियाण, सखियो ते सर्वे सुजाण । आपण लीधा बेख अनेक, जे कीधां वालैए वसेक || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -4

- अमे पीहर पख नव ओलखू, नव जाणू सासर वेड । एक जाणूं मारो वालैयो, नव मूकू तेहेनो केड || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -33
- अमें पेहेला नव ओलख्या राज, अमने भरम गेहेने आण्या वाज । भवसागरना जल छे अपार, तेतां तमे सेहेजे उतारया पार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -18, चौ -2
- अमें प्रगट थईने पाधरा, चालसू सहुए घेर । वैराट वली ने थासे सवलो, एक रस एणी पेर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -77
- अमें बुधने प्रकासी करी, जासूं अमारे घर । वैकुंठ विष्णु ने जगवसे, बुध देसे सर्वे खबर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -92
- अमें मनोरथ कीधां हता जेह, तमे परण कीधां सर्वे तेह । तमे अमने मनोरथ करतां वास्या, तोहे कारज अमारा लई सास्या || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -18, चौ -5
- अमें मांगी रामत राज कनें, ते तां पेहेली दाण देखाडी । कांईक मनोरथ रहयो मन माहें, ते रंग भर आहीं रमाडी || ग्रं - किरन्तन, प्र -124, चौ -10
- अमे रंग भर रमवा आवियां, काई करवा विनोद हाँस । उत्कंठा अमने घणी, तमे पूरो सकलनी आस || ग्रं - रास, प्र -11, चौ -13
- अमे रामत खरी तो जोई, जो अखंड करूं आवार । बुधने सोभा दऊं, सत करी प्रगट पार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -10
- अमे रामत जाणी घरतणी, जेम रमूं छू सदाय । अमें ऊभा जोइसूं, रामत एणी अदाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -24
- अमे वह धणीनो खम्या, जे दिन वृथा निगम्या । अमे भरम मांहें भम्या, जो अगनी व्रह न दम्या || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -61
- अमे विलास कीधां घर मधे, वालासों अनेक प्रकार । मूने दीधी निध दया करी, श्री देवचंदजी दातार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -124
- अमेतसालून में कहया ए, ए जाए देखो दीदे दिल के । ए जाहेर कहया बयान, पर दिल के अंधे न सके पेहेचान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -12
- अरट फेर उतावरो, तन के डेई ता । तूं तां गिनंदी सुहाग धणीयजो, तोजे संने हिन सुत्रा || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -27, चौ -8
- अरणी ऊमर वेहेडा दीसे, जांब ने वली जाल । गूंदी गूदा गुंगल गंगोटी, गहुला ने गिरमाल || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -9
- अरवा असां जी आमर, गुण अंग इंद्री आमर । असी डिसू सभ आमर के, रांद डिखारे पट कर || ग्रं - सिंधी, प्र -12, चौ -6
- अरवा इनों की ना छूटे, पर ऊपर होए बेहोस । अंग अरवा क्यों छूटहीं, अन्दर धनी को जोस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -6
- अरवा चौदे तबकों, जो कोई नारी नर । इन तखत इमाम के कदमों, हुई सारों की नजर || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -15

- अरवा हमारी आमर, गुन अंग इंद्री आमर । हम देखें सब आमर, खेल देखावत पट कर || ग्रं - सिंधी, प्र -16, चौ -6
- अरवाहें जा हिन अर्स जी, की छडे खिलवत हक । जा डेखारिए रूहके, ते में जरो न सक || ग्रं - सिंधी, प्र -2, चौ -2
- अरवाहें जो अर्स की, सो उरझियां माहें फरेब । सो सुरझाइयां पट खोल के, केहे हकीकत वेद कतेब || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -2
- अरवाहें जो कोई अर्स की, सो सब हक आमर । हम हुज्जत लई सिर अर्स की, बैठी आगू हक नजर || ग्रं - सिंधी, प्र -16, चौ -5
- अरवाहें जो सुपन की, देखें न जाग्रत को । जो होए जाग्रत में असल, सो आवे जाग्रत मों || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -137
- अरवाहें हमेसा अर्स की, कहावें खास उमत । पर कछू बल चल्या नहीं, ना तो रखते हक निसबत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -16
- अरस-परस यों हक सों, आराम लेवें सब कोए । अति सुख पावें बड़ी रूह, ए तिनके अंग सब सोए || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -11
- अरस-परस सुख देवहीं, नाहीं इन सुख को पार । ए रस इस्क सागर को, अर्स रूहें पीवें बारंबार || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -14
- अरस-परस हैं हक सों, आसिक हक के जोर । आवें दीदार को दरिया लेहेर ज्यों, कई पदमों लाख करोर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -18
- अरुचड़ी कहे मैं बलवंती, मोको न जाने कोए । छानी होए के बैठू जीव में, भानूं सो साजा न होए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -31
- अरूचडी कहे हूं बलवंती, मूने न लखे कोय । छानी थईने आवू जीवमां, भाजूं ते साजूं नव होय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -31
- अरूचडी तूं त्यारे आवी, ज्यारे मल्या मूने श्री राज । फिट फिट भुंडी ऊहन अकरमण, तूं सरजी स्या ने काज || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -29
- अर्ज पाहिजी रूहनजी, सभी तूं ही कराइए । बाहेर मंझ अंतर, सभ तूं ही आइए || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -51
- अर्थ अंदर का लेवहीं, समझें इसारत सेन । बैंच उनकी भी ना गई, वे भी लगे दुख देन || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -13
- अर्थ आड़े कई छल किए, तिन अर्थों में कई छल । अखरा अर्थ ना होवहीं, कियो भावा अर्थ अटकल || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -12
- अर्थ आड़े कई छल किए, तिन अर्थों में कई छल । अखरा अर्थ भी ना होवहीं, किया भाव अर्थ अटकल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -10
- अर्थ को डालने उलटा, अनेक तरफों ताने । मूढ़ों को समझावने, रेहेस बीच में आने || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -6

- अर्थ को डालने उलटा, अनेक तरफों ताने । मूढ़ों को समझावने, रेहेस बीच में आने || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -8
- अर्थ जुए सहू उपली वाटनो, मांहेलो ते मांहें नव संभारे । वैराट पूर वहे वेहेवटे, दुख सुख कोई न विचारे || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -98
- अर्थ टीका का जो तुम पाया होता, तो अंधेर को होत नास । अनेक ब्रह्मांड जाके पलथें उपजे, ताको देखत इत उजास || ग्रं - किरन्तन, प्र -13, चौ -14
- अर्थ लई सास्त्र तणो, तमे ओलखजो आ ठाम । बीहो छो छाया थकी, जुओ करे छे कोण संग्राम || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -40
- अर्थने नाखवा अवलो, गमोगमा ताणे । मूढोने समझाववा, रेहेस वचमां आंणे || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -7
- अर्थी होय ते आवी ने पूछे, मोटी मत तेहेने दाखू । ए निध देवा जोग नहीं, तेथीं अंतर राखू || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -12
- अर्ध साथ रहयो अटकी, जेणे जोयानो हरख अपार । स्वांग देखाडी विध विधना, पछे दऊं ते सतनो सार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -4
- अर्स अग्यां चांदनी, चई चोतरन । हिन मुक्युं मीह संदियूं, दोडे चढ़ें ठेकन || ग्रं - सिंधी, प्र -2, चौ -8
- अर्स अजीम का खावंद, रमूज करे दिल दे । अपने अर्स अरवाहों सों, क्यों कहे जुबां इन देह || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -65
- अर्स अजीम की जो रूहें, तिनकी ए पेहेचान । जो कदी भूली वतन, तो भी नजर तहां निदान || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -19
- अर्स अजीम के बाग जो, हौज जोए जानवर । इत सक जरा न काहू में, मोहोलात या अन्दर || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -51
- अर्स अजीम नूर बिलंद से, रूहें उतरीं जब । ए माएने आयत हदीस में, लिख भेज्या है तब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -101
- अर्स अंदर निसबत चरन अर्स अंदर सुख देवहीं, जो रूहों दिल उपजत । सो रूहें कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -1
- अर्स अरवा चाहे दिल में, सो होए माहें पल एक । जिन अंग जैसा वस्तर, होए खिन में कई अनेक || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -8
- अर्स अरवाहें जो वाहेदत में, सो सब तले हक नजर । इस्क सुराही हाथ हक के, रूहों पिलावें भर भर || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -6
- अर्स अरवाहें भोम खिलवत, नूर दसों दिस लरत । सो क्यों छोड़ें इन कदम को, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -2
- अर्स अरवाहें मेरी बोहोत हैं, नेक तिनके कहूं लछन । वतन हक आप भूलियां, तो भी मोमिन एही चलन || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -18

SRJN

- अर्स अरवाहों को चाहिए, खोलें रूह की नजर । तब देखें आम खलक को, ज्यों खेल के कबूतर || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -51
- अर्स अरवाहों मुख की, जुबां कहा करे बरनन । नैन श्रवन मुख नासिका, सोभा सुन्दर अति घन || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -17
- अर्स अल्ला दिल मोमिन, और दूनी दिल सैतान । दे साहेदी महंमद हदीसें, और हक फुरमान || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -48
- अर्स असांके विसस्यो, अने विसस्या तो कदम । पण तो को संग विसारियो, की विसारियां खसम || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -24
- अर्स आए लग्या आकासे, उठ्या जोत अपनी ले । चांद सितारे अंबर, आए मुकाबिल अर्स के || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -158
- अर्स आणू खुली चांदनी, माहें चबूतरे चार । दोए तले बीच बन के, दो ऊपर लगते द्वार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -8
- अर्स इलम हुआ जाहेर, जब सब हुए रोसन । तब अंधेरी और उजाला, जुदे हुए रात दिन || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -103
- अर्स इस्क हक हादी रूहें, याकी दुनी न जाने कोए । इस्क अर्स सो जानहीं, जो कायम वतनी होए || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -117
- अर्स उमत होसी जाहेर, और जाहेर हक जात । करसी दुनियां कायम, ए महंमद की सिफात || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -19
- अर्स कया दिल मोमिन, अर्स में सब बिसात । निमख न्यारी क्यों होए सके, रूह निसबत हक जात || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -2
- अर्स कया दिल मोमिन, कोई एता न करे सहूर । आए वजूद बीच आदम, इनों दिल क्यों हुआ रोसन नूर || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -37
- अर्स कया दिल मोमिन, सब अर्स में न्यामत । कया और दिलों पर अबलीस, अब देखो तफावत || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -86
- अर्स कहिए दिल तिन का, जित है हक सहूर । इलम इस्क दोऊ हक के, दोऊ हक रोसनी नूर || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -42
- अर्स कहया दिल मोमिन, जो मोमिन दिल आसिक । सो मोमिन कछुए न राखहीं, बिना अर्स बका हक । || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -29
- अर्स कहया दिल मोमिन, दिया अपना इलम सहूर । सक ना खिलवत निसबत, ताए काहे न होवे जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -90
- अर्स कहया दिल मोमिन, ले दिल अर्स गलियों खेलत । सो पावें रूहें लाहूती, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -51
- अर्स की अरवाहें जेती, जुदी होए ना सकें एक खिन । ए माहें क्यों होएं जुदियां, असल रूहें एक तन || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -2

- अर्स की खिलवतमें, हककी वाहेदतः । बैठ के बातें जो करी, सो कहां गई मारफत || ग्रं - किरन्तन, प्र -111, चौ -2
- अर्स की रूहों को सुपना, देखो कैसे ए आया । ए भी हमें जान्या त्यों किया, अपने दिल का चाह्या || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -15
- अर्स के बरनन की, कही हादियों इसारत । सो दोऊ साहेदी लेयके, जाहेर करूं सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -12
- अर्स के सुख तो हमेसा, घट बढ़ इत नाहें । पर ए नया सुख नई साहेबी, कायम कर दिया भिस्त मांहें || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -50
- अर्स खावंद एक मासूक, दूसरा नाहीं कोए। और खेल सब नूरियों किया, यामें भी विध दोए || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -69
- अर्स खावंद है एकला, आपै हक जात । बिना कुदरत कादर की, क्यों पाइए सिफात || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -12
- अर्स चीज न आवे इन अकलें, तो क्यों आवे रूह मूरत । जो ए भी न आवे सहूर में, तो क्यों आवे हक सूरत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -41
- अर्स चीज भी लीजे सहूर में, जिन अर्स खावंद हक । इन अर्स की एक कंकरी, उड़ावे चौदे तबक || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -39
- अर्स चौदे तबकों, नजर न आवत किन । सो सेहेरग से नजीक, देखाया बका वतन || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -7
- अर्स जरे की सिफत को, पोहोचत नहीं जबान । तो अर्स रूहें सिरदार की, क्यों होवे सिफत बयान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -52
- अर्स जवेर की क्यों कहूं, देखे बाजू बंध के नंग। जिमी से आसमान लग, हाए हाए जीव कतल न हुआ देख जंग || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -108
- अर्स जिमी जरे की रोसनी, मावत नहीं आकास । कब देखें सुख इन जिमी, जित बरसत नूर प्रकास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -36
- अर्स जिमी नूर अपार है, इतके वासी बड़े-बखत । महामत रूहें हक जात हैं, जाकी हक कदमों निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -84
- अर्स जिमी सब वाहेदत, दजा रहे ना इनों नजर । ज्यों रात होए काली अंधेरी, त्यों मिटाए देवे फजर || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -97
- अर्स ठौर हमेसगी, हमेसा हक सूरत । सिनगार सबे हमेसगी, ना चल विचल इत || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -15
- अर्स तन का दिल जो, सो दिल देखत है हम को । प्रतिबिंब हमारे तो कहे, जो दिल हमारे उन दिल मों || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -93
- अर्स तन की एह बैठक, ए जोत के सींचेल । ए अरवा तन सब अर्स के, इनों नजरों रहे ना खेल || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -214

- अर्स तन दिल में ए दिल, दिल अन्तर पट कछू नाहें । सुख लज्जत अर्स तन खेंचहीं, तब क्यों रहे अन्तर मांहें || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -79
- अर्स तन देखें तन नासूती, तन नासूत में जो हुकम । सो सुध दई अर्स अवाहों को, इने सेहेरग से नजीक हम || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -33
- अर्स तन रूह मोमिन, लोभ न झूठा ताए । मोमिन जुदागी न सहें, ज्यों दूध मिसरी मिल जाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -118, चौ -15
- अर्स तन रूहें आतमा, तरफ सबों बराबर । पूरन कहावें याही बात से, सब विधों ए कादर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -32
- अर्स तन हाथ अर्स तने, एक दूजे परस होए । हाथ वस्तर या भूखन, दूजा अर्स तने लगे न कोए || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -64
- अर्स तरफ दाहिनी, तरफ सामी ताल जोए । बांई तरफ और पीछली, ए कही सीढ़ियां दोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -78
- अर्स तुमारा मुझ दिल, माहे अर्स की सब बिसात । खाना पीना सुख सिनगार, माहें सब न्यामत हक जात || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -28
- अर्स तुमारा मुझ दिल, माहें अर्स की सब बिसात । सब न्यामतें इनमें, अर्स बका हक जात || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -38
- अर्स तुमारा मेरा दिल है, तुम आए करो आराम । सेज बिछाई रूच रूच के, एही तुमारा विश्राम || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -1
- अर्स तो दूर है नहीं, कहें दोऊ कतेब वेद । अर्स में रूहें दुनी फना जिमी, ए इलम लदुन्नी जानें भेद || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -104
- अर्स दिल इनका कया, और कया हकीकी दिल || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -64
- अर्स दिल एही हकीकी, अर्स रूहें मोमिन । रहें दरगाह बीच असल, सूरत अर्स तन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -14
- अर्स दिल मोमिन कहे, सो दिल हकीकी जेता । रूहें फरिस्ते अर्स से, इजने उतरे तेता || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -96
- अर्स दिल मोमिन कहया, ठौर बड़ी कुसाद । हक हादी रूहें माहे बसें, असल अर्स जो आद || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -62
- अर्स दिल मोमिन कहया, दुनी दिल पर अबलीस । ए सैतान दोस्त न किसी का, जो काट देवे कोई सीस || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -101
- अर्स दिल मोमिन जो, जो पसे अर्स मोमिन । चाहिए कोठियां हक अर्समें, त तो पेरो न्हाए ए तन || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -22
- अर्स दिल मोमिन तो कहया, अर्स बका सुध मोमिनों में । चौदे तबकों गम नहीं, मोमिन आए हक कदमों से || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -19

- अर्स दिल मोमिन तो कहया, जो हक सों रूह निसबत । ना तो अर्स दिल आदमी का, क्यों कहया जाए ख्वाब में इत || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -12
- अर्स देखाया चढ़ उतर, हुआ मेयराज महंमद पर । क्यों दुनी देखे दिल मजाजी, बिन खोले रूह नजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -22
- अर्स देख्या रूहअल्ला, हक सूरत किसोर सुन्दर । कही वाहेदत की मारफत, जो अर्स के अंदर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -3
- अर्स धात ना रंग नंग रेसम, जित नया न पुराना होए । जित पैदा कछू नया नहीं, तित क्यों नाम धरे जाएं सोए || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -20
- अर्स न छूटे खिन एक, तो क्यों देखें मेरा इस्क । तो क्यों पाइए इस्क बेवरा, आप अपने माफक || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -27
- अर्स ना चौदे तबक में, सो लिए इलम ईसा के । नजीक देखाया सेहेरग से, बीच अर्स बैठाए ले || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -40
- अर्स नासूत दोऊ इतहीं, होसी जाहेर अपनी सरत । देखें मोमिन दुनी जलती, बीच बैठे अपनी भिस्त || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -124
- अर्स नाहीं सुमार में, सो हक ल्याए माहे दिल मोमिन । बेसुमार ल्याए सुमार में, माहें आवने दिल रूहन || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -57
- अर्स निसबत हक की, खेल में आए बिना लेत सुख । हिकमत देखन हक हुकम की, कही न जाए या मुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -24
- अर्स नूर जरा जुबां कहे, असं मता नूर अपार । सो नूर बरनन क्यों होवहीं, जिन नूर को न कहूं सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -114
- अर्स न्यामत जाहेर हुई, जोए कौसर अर्स हौज । हक इलमें कछू ना छिपे, किया जाहेर फरदा रोज || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -73
- अर्स पसु या जानवर, रोम होत तिन अंग । रोम न रूहों अंग पर, रूहें अंग जाने अर्स नंग || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -14
- अर्स फूल सुगन्ध अनगिनती, हिसाब नहीं कहूं कोए। रसांग चीज सब अर्स की, कोई जरा न बिना खुसबोए || ग्रं - सिनगार, प्र -15, चौ -7
- अर्स बका की हकीकत, मांहें लिखी कतेब वेद । खोले जमाने का खावंद, और खोल न सके कोई भेद || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -50
- अर्स बका के बयान की, हुती न काहूं सुध सान । सो जरे जरा जाहेर करी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -40
- अर्स बका जाहेर हुआ, तब हुई फजर । अर्स देखाया इलमें, खुली बातून सबों नजर || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -62
- अर्स बका तन मोमिन, दुनियां फना जिमी तन । ताकी केहेनी रेहेनी क्यों होवे, क्यों होए एक चलन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -90

- अर्स बका तीर त्रगुड़ा, रहया अर्स रूहों हिरदे साल । ना पांच तत्व तीर त्रिगुन, ए नैन बान नूरजमाल || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -44
- अर्स बका देखाए के, करसी सबों हैयात । असराफील खोल मुसाफ, करसी सिफात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -68
- अर्स बका द्वार खोल के, करी जाहेर हक सूरत । अंग मेरा रहया अचरजें, द्वार खोलते वाहेदत || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -137
- अर्स बका द्वार न खोलते, तो क्यों होती सिफायत महंमद । हक के कौल सबे मिले, जो काफर करत थे रद || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -15
- अर्स बका पट खोलसी, आखिर बखत मोमिन । साहेब जमाने की मेहेर से, दिन करसी बका रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -33
- अर्स बका बीच ब्रहमांड के, सुध चौदे तबकों नाहें । सो हम को नजीक सेहेरग से, पट खोल लिए बका मांहें || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -2
- अर्स बका बीच ब्रहमांड में, चौदे तबकों में सुध नाहें । किया सेहेरग से नजीक, गिरो बैठी बका माहें || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -54
- अर्स बका में जुदागी, सुपने कबूं न होए । तो हक इस्क का बेवरा, क्यों पावे मोमिन कोए || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -16
- अर्स बका वाहेदत में, सुध इस्क न होवे इत । जुदे जुदे हो रहिए, इस्क सुध पाइए तित || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -29
- अर्स बका हक बरनन, सो बीच फना जिमी क्यों होए । अव्वल से आज दिन लगे, बका सब्द न बोल्या कोए || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -5
- अर्स बका हमेसगी, हक हादी रूहें वाहेदत । ए तीन खेल हुए जो लैल में, ऐसा हुआ न कोई कबूं कित || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -17
- अर्स बका हौज जोए, पानी बाग जिमी जानवर । और देखी अरवाहें अर्स की, कहे मैं हक का पैगंमर || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -6
- अर्स बताए दिया तुमको, और बताए दई वाहेदत । सहूर इलम कुंजी सब दई, बैठाए मांहें खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -122
- अर्स बाग जे मोहोल में, झरोखे झांखन । तो डिंने असां जे दिल में, हे सुख याद अचन || ग्रं - सिंधी, प्र -2, चौ -5
- अर्स बाग हौज जोए के, करो याद हक के सुख । ज्यों पेड़ झूठे ख्वाब का, उड़ जाए सब दुख || ग्रं - खुलासा, प्र -18, चौ -8
- अर्स बातें सुख बारीक, सुपन बानी न आवे सोए। कछुक जाने रूह अर्स की, जो बेसक जागी होए || ग्रं - सिनगार, प्र -5, चौ -14
- अर्स भोम की एक कंकरी, तिन आगे ए कछुए नाहें । तो क्यों दीजे बका सुभान को, सिफत इन जुबाएँ || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -96

SPJIN

- अर्स भोम सब नूर की, नूरै के थंभ दिवाल । द्वार बार कमाड़ी नूर के, नूर गोख जाली पड़साल || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -52
- अर्स मता अपार है, दिल में न आवे बिना समार । ता) ल्याऊं बीच हिसाब के, ज्यों रूहें करें विचार || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -56
- अर्स मता जेता हुता, किया जाहेर नजर में ले । हमें न आया इस्क सुपने, ए किया वास्ते जिन के || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -53
- अर्स मिलावा ले चली, अपने संग सुभान । किया चाया सब दिल का, आगूं आए लिए मेहेरबान || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -129
- अर्स मिसाल कोई है नहीं, तौल देखो तुम इत । ए झूठा पसु बल देख के, तौलो जिमी बल सत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -68
- अर्स में नकल है नहीं, ज्यों अंग त्यों बस्तर भूखन । जब जिन अंग जो चाहिए, तिन सौ बेर होए मिने खिन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -114
- अर्स में भी रूहें लेत हैं, जैसी खाहिस जिन । रूह जैसा देख्या चाहे, तिन तैसा होत दरसन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -195
- अर्स में सदा एक रस, करें पल में कोट सिनगार । चित्त चाहे अंगों सब देखत, नया पेहेन्या न जूना उतार || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -35
- अर्स में सूरत मोमिनों, जो कही हैं असल । तिन पाया बीच नासूत के, बका हाहूती फल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -49
- अर्स मोहोल दिल को किया, आए बैठी हक सूरत । ए अर्स मेहेर तो भई, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -13
- अर्स रूहें आसिक इनकी, जिन पायो पूरन दाव । ठौर ना और रूहन को, जाको लगे कलेजे घाव || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -71
- अर्स रूहें पेहेचान जाहेर, इनों कौल फैल हाल पार । सोई जाने पार वतनी, जा को बातून रूहसों विचार || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -40
- अर्स रूहें बंदे हमेसगी, इनों बिने सब इस्क । हकीकत मारफत मुतलक, इन उरफान मेहेर हक || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -68
- अर्स रूहें भूली नासूत में, इनसों हक हादी निसवत । ताए लिख भेज्या फुरमान में, अजूं सोई है साइत || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -9
- अर्स रूहें मोमिन, ए सब रूहें सोहागिन । क्यों बरनू मैं इस्क इन का, ए जो रूह अल्ला के तन || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -98
- अर्स रूहें मोमिनों, लई महंमद हिदायत । चौदे तबक को पीठ दे, आए मांहें हक खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -46
- अर्स रूहें सब बिध जानहीं, हौज जोए जिमी जानवर । महंमद की सिफायत से, मोमिनों सब खबर || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -37

- अर्स रूहें सुख नौमी भोमें, सुख सिंघासन समस्त । सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -14
- अर्स रूहें हक बिना न रहें, विरहा न सहें एक खिन । जब इलमें हुई अर्स बेसकी, रूहें रहें न बिना वतन || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -20
- अर्स रूहें होए सो मानियो, अंदर आन आकीन । ए कलमा जो समझहीं, सोई महंमद दीन || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -23
- अर्स ल्यो या दुनियां, दोऊ पाइए ना एक ठौर । हक खोया झूठ बदले, सुन्या न महंमद सोर || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -24
- अर्स सख्प जो अखंड, ताको होए कैसे बरनन । एक उतार दूजा पेहेरना, ए होए सुपन के तन || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -38
- अर्स सब जाहेर हुआ, नूर तजल्ला हक । रूहअल्ला महंमद मेहेंदी ने, उड़ाए दई सब सक || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -58
- अर्स सबे है चेतन, हर चीज में सब गुन । सब न्यामतें एक चीज में, कमी न मांहें किन || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -13
- अर्स साहेबी जानी नहीं, तो ना देख्या हक इस्क । तो रूहों हक सों कह्या, इस्क अपना बुजरक || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -28
- अर्स साहेबी बुजरक, तिनको नाहीं पार । ए नूर के एक पलथे, कई उपजे कोट संसार || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -188
- अर्स सुख और भिस्तका सुख, ए खेल में दिए सुख दोए । इन दोऊ में दिए सुख खेलके, ए हक रसना बिना क्यों होए || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -51
- अर्स सुख जो बारीक, सो जानत अरवा अर्स के। ए झूठी जिमी जो दुनियां, सो क्यों कर समझे ए || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -45
- अर्स सूर कई एक मोहोल में, तैसे मोहोल टापू अपार किनार । एक मोहोल अम्बर कई बीच में, जुबां क्यों कहे गिनती सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -37
- अर्स सूरत पर सिजदा, करसी मेंहेंदी इमामत । कदम ग्रहे देखावहीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -49
- अर्स से आया असराफील, दिया कई बिध सूर बजाए । सो सोर पड्या ब्रह्मांड में, पाक किए काजी कजाए || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -86
- अर्स से जुदे होए के, ए देखे जो कोए । इस्क साहेबी हक की, बुजरक देखे सोए || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -36
- अर्स हक की बेसकी, पाई जरे जरे जेती । ज्यों जाग के केहे हकीकत, और देह बोलत सुपने की || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -12
- अर्स हक की लज्जत, दई खेल में हम को । हक साहेवी हक इस्क, हमारे लाड़ पाले कुंजीसों || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -65

- अर्स हमेसा कायम, ए दुनी न तीनों काल । हुआ है ना होएसी, तो क्यों दीजे अर्स मिसाल || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -10
- अर्स हमेसा कायम, जो हक का हुआ तखत । सो कायम दिल मोमिन का, जित है हक खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -43
- अर्स हौज दोऊ बीच में, मोहोल मानिक पखराज । जेता नजीक हौज के, तासों मोहोल मानिक रहे बिराज || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -17
- अर्स-अजीम की कंकरी, उड़ावे चौदे तबक । तो तिन को है क्यों कहिए, जो देख ना सके हक || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -38
- अर्स-अजीम तेरा वतन, खसम नूर-जमाल । ए इलम पाया तैं बेसक, देख कौल फैल हाल || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -14
- अर्से सब्द न पोहोंचे त्रैलोकका, सो दिल मोमिन अर्स कहावत । इन कदमों बड़ाई दिल को दई, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -80
- अलख जो अगम कहावहीं, ताकी कर कर थके फिकर । सो सक सुभे सब उड़ गई, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -22
- अलप अहारी निद्रा निवारी, सब्द सत विचारी । आचारीने नेम धारी, पण मूके नहीं अंधारी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -3, चौ -12
- अलस्तो बे रख कह्या हक ने, तब जवाब दिया रूहन । कोई और होवे तो देवहीं, ए फुरमान कहे सुकन || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -26
- अलिफ लाम मीम हरफ ए कहे, ए भेद ना किन समझाए। सो छीले गए कुरान से, ए भेद जानें एक खुदाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -17
- अली आए खड़ा कबर पर, काढ़ के जुल्फिकार । कह्या न छोड़ोंगा किनको, आइयो होए हुसियार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -15
- अली रस्सी ल्याया ऊपर, गिरह अग्यारै सदी हुई नजर । अग्यारे आयत आई तत्पर, भेजी खुदा ने जबराईल खबर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -17, चौ -4
- अली वली सेर दरगाह का, जो दरगाह बड़ी खुदाए। अवल से किन पाई नहीं, सो आखिर प्रगटी आए || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -9
- अलेखे बल अकल, अलेखे हिकमत । अलेखे पेहेचान है, इस्क अलेखे इत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -64
- अलेखे बल इन का, क्यों देऊं निमूना इन । झूठे दम कहे ख्वाब के, जाको पेड़ ला मकान सुन || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -59
- अल्लफ कया महंमद को, रूह अल्ला ईसा लाम । मीम मेंहेदी पाक से, ए तीनों एक कहे अल्ला कलाम || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -22
- अल्ला आसिक मासूक महंमद, इस्क दीजे हम । हम आसिक नाम धराए के, मासूक करे हैं तुम || ग्रं - किरन्तन, प्र -62, चौ -16

- अल्ला मुहबा मासूक, सो खासी खसम दिल । तो नाम धराया रसूलें, आसिक अपना असल || ग्रं - सनंध, प्र -1, चौ -1
- अवगुण एवडा अमतणां, किहां हुता वालम । एम अमने एकलां, मूकी गया वृंदावन || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -2
- अवगुण पति नव मूकवो, तो गुण धणी मूकिए केम जी । तममा अवगुण किहां छे, तमे कां कहो अमने एम जी || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -36
- अवगुण मारा रे वाला अति घणा, धणी विना केहेने कहूं मारा श्रीराज । वालाजी विना रे अंग अगनी बले, देह मांहें उपजे रे दाझ || ग्रं - खटरुती, प्र -3, चौ -7
- अवगुन अलेखें हम किए पिउसों, तापर ऐसे धनी के गुन । कई विध सुख ऐसे धनीय के, क्यों कर कहूं जुबां इन || ग्रं - किरन्तन, प्र -81, चौ -10
- अवतार आ बुधना पछी, हवे बीजो ते थाय केम । विकार काढी सहु विस्वना, सहु कीधां अवतारना जेम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -36
- अवतार एक श्रीकृष्ण का, मूल मथुरा प्रगट्या जेह । दीदार देवकी वसुदेव को, दिया चतुरभुज एह || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -12
- अवतार एक श्रीकृष्णनों, मूल मथुरा प्रगट्यो जेह । वसुदेवने वायक कही, वैकुंठ वलियो तेह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -13
- अवतार एकवीस ए मधे, ते आडो थयो कल्पांत । बीजा त्रण जे मोटा कया, तेहेनी कहूं जुजवी भांत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -12
- अवतार एकैस इनमें, तिन आड़ा हुआ कल्पांत । और कहावें तीन बड़े, भी कहूं तिनकी भांत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -11
- अवतार चौबीस विष्णु के, बैकुंठ थें आवें जाएँ। ए बिध जाहेर त्यों करूं, ज्यों सनंध सब समझाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -10
- अवतार चौवीस विष्णुना, वैकुंठ थी आवे जाय । ते विध सर्वे कहूं विगते, जेम सनंध सहु समझाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -11
- अवतार जे नेहेकलंकनो, ते अस्व अधुरो रह्यो । पुरख दीठो नहीं नैने, तुरीने कलंकी तो कह्यो || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -35
- अवतार जो नेहेकलंक को, सो अश्व अधूरो रह्यो । पुरुख देख्यो नहीं नैनों, तुरी को कलंकी तो कह्यो || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -36
- अवतार तले विष्णु के, विष्णु करे स्याम की सिफत । इन बिध लिख्या वेद में, सो आए स्याम बुध जी इत || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -36
- अवतार तीर्थंकर बड़े हुए, बड़े कहावें पैगंमर । पट बका किन खोल्या नहीं, सबों कया खुले आखिर || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -49
- अवतार या बुध के पीछे, अब दूसरा क्यों कर होए । विकार काढ़े विश्व के, सब किए अवतार से सोए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -37

- अवतार से उत्तम हुए, तहां अवतार का क्या काम । जहां जमे हुआ सब का, दूजा नेक न राख्या नाम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -38
- अवतारथी उत्तम थया, तिहां अवतारनों सं काम । कीधो सरवालो सहुनो, इहां बीजो न राख्यूं नाम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -37
- अवतारों इत क्या किया, जो दई न बका की सुध । तो लो द्वार मूंदे रहे, आए खोले विजया-अभिनंद-बुध || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -39
- अवलूं देखी हूं न सकू, त्यारे सं करूं में न रेहेवाय । वेख धरी लजवो साधने, एम ते माटे केहेवाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -6
- अव्वल आए कही महंमदें, कह्या आगू होसी बड़े निसान । सो भी वास्ते रूह मोमिनों, देख के ल्यावें ईमान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -12
- अव्वल आखिर कयामत लग, कह्या नूर चढ़ता नबी का । खाली न जमाना महंमद बिना, ए बीच मुसाफ हदीस लिख्या || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -47
- अव्वल आखिर नाबूद, बीच फरेब सो भी नाबूद । सो बरकत महंमद मोमिनों, पाए कायम भिस्त वजूद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -59
- अव्वल आखिर बीच महंमद, इत सब जाने दुनी कलाम । हकें मासूक कह्या महमद को, सो क्यों समझे दुनी आम || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -32
- अव्वल आखिर सब तुम, बीच में भी तुम । में खेली ज्यों तुम खेलाई, खसम के हुकम || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -11
- अव्वल इलमें देखाइया, आखिर बेसक इलम । चौदे तबक देखे नूर लग, ठौर नहीं बिना तेरे तले कदम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -56
- अव्वल इस्क जिनों आइया, सोई अर्स अरवाहें । नाहीं मुतलक मोमिन, जिनों लगे न बेसक घाए || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -102
- अव्वल एही है निमाज, जो गुजरे साहेब सिरताज । मिले वाही के तालिब, हुआ चाहिए दोस्त साहेब || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -15
- अव्वल करी बातें अर्स में, वास्ते मोमिनों न्यामत । कुन्जी खिताब सबे ल्याए, सोई फुरमान ल्याए इत || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -76
- अव्वल कह्या इलम ल्यावसी, आया तिनसे ज्यादा बेसक । सो नीके लिया मोमिनों, पाई अर्स मारफत हक || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -43
- अव्वल कह्या फुरमान में, इत काजी होसी हक । करसी कायम संबन को, ऐसी मेहेर होसी मुतलक || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -17
- अव्वल कह्या महंमद, और बीच आखिर । खाली नहीं बिना खलीफे, महंमद के बिगर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -79
- अव्वल कह्या रसूलें, कजा होसी इत । दीदार तब तिन होएसी, खोले हक मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -114

- अव्वल कौल इनके बेसक, जिनमें राजी होवे हक । पीछे इस के सिजदे सिर, द्वा करे जारी कर कर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -7
- अव्वल खासल खास रूहन की, गिरो फरिस्तों की खास कही । और कुन्न की तीसरी, ए जो आम खलक भई || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -26
- अव्वल खूबी अल्ला कलाम, दूजी खूबी गिरो इसलाम । तीसरी खूबी तीन हादी वजूद, आखिर आए बीच जहूद || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -36
- अव्वल जमाने के सैयद, और बड़े केहेलाए पैगंमर । पर सो बराबरी कर ना सके, जो आई उमत महंमद की आखिर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -42
- अव्वल जो रसूलें कह्या, आखिर सोई प्रवान । इस्क सांचा हक का, और आग सब जान || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -15
- अव्वल झण्डा कह्या सरीयत, जाके तले दुनी पाक होए । जो रहे तले फुरमाए के, ताकी सिफत करे सब कोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -13
- अव्वल देखाया लैल में, निसबत जान इस्क । दूसरी बेर देखाइया, गुझ इस्क मुतलक || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -8
- अव्वल दोस्ती हक की, लिखी माहें फरमान । पीछे दोस्ती बंदन की, क्यों करी न पेहेचान || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -20
- अव्वल पैदा होए के, दनी हो जात फना । तिनमें कछुए ना रहे, ज्यों उड़ जात सुपना || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -14
- अव्वल फुरमाया रसूल को, कहो हरफ तीस हजार । राह रात की चलाओ सरीयत, बका फजरें रखो करार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -63
- अव्वल बातें जो अर्स की, जाए कहियो तुम । फुरमान पेहेले भेजिया, लिखी हकीकत हम || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -42
- अव्वल बीच और अब लों, ऐसा हुआ न दुनी में कोए । कायम ठौर हक सूरत, इत देखावे सोए || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -50
- अव्वल बीच और अबलों, सबों ढूंढ्या बनी आदम । एती सुध किन न परी, कहाँ खुदा कौन हम || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -2
- अव्वल बीच और आखिर, लिखे तीनों ठौर निसान । ए बीतक हम तुम जानहीं, भेजी तुमको पेहेचान || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -3
- अव्वल भी महंमद कह्या, बीच और आखिर । वेद कतेब सबों कौलों, केहेवत योही कर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -120
- अव्वल मध और आखिर, यामें तीनों की हकीकत । पर ए पावें एक इमाम, जित हुकम नूर महामत || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -24
- अव्वल रोसन रसूल, रूहअल्ला आखिर । गिरो पाक करी बीच इमामें, दुनी सचराचर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -114

- अव्वल ल्याया एहिया, ईसे पर आकीन । कहें पढ़े सो हो गया, जिने दई जिंदगानी दीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -77
- अव्वल सब सोहागनी, एक ठौर पिया पास । सबों सुख होसी सोहागनी, रंग रस प्रेम विलास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -81
- अव्वल सूरत एक बसरी, पीछे सूरत मलकी । कही तीसरी आखिर, सूरत जो हकी || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -18
- अव्वल से आखिर लग, इत जरा न कहूं सक । रूहअल्ला के इलम से, हुए कायम चौदे तबक || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -4
- अव्वल से आखिर लग, किया कुंजिएं सब का काम । हैयाती चौदे तबकों, दई कायम भिस्त तमाम || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -47
- अव्वल से बीच अब लग, तरफ पाई न बका की। महंमद एता ही बोलिया, जासों ईसा पावें साहेदी || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -50
- अव्वल हादी रूहन सों, कौल हैं हक के । सो ए लिखी रदबदलें, कहें आयतें हदीसें ए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -99
- अव्वल हार केसरिन की, दूजी हार बाघन । हार तीसरी सियाहगोस की, चौथी हार चीतन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -28
- असत तिन को भरम कहिए, होत है जिनको नास । ए तो चौदे चुटकी में चल जासी, यों कहत सुकजी व्यास || ग्रं - किरन्तन, प्र -24, चौ -7
- असत पण कर अखंड, करी सतनो प्रकास । सनंध सतनी समझावी, अंधेर नो करूं नास || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -9
- असत भी करना अखंड, करके सत प्रकास । सनंध सब समझाए के, करूं तिमर सब नास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -9
- असत मंडल में सब कोई भूल्या, पर अखंड किने न बताया । नींद का खेल खेलत सब नींद में, जाग के किने न देखाया || ग्रं - किरन्तन, प्र -2, चौ -3
- असतथी अलगां करूं, सतसं करावं संग । परआतमासूं बंध बांधूं, जेम प्रले न थाय कहिए भंग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -43
- असतसों उलटाए के, सतसों कराऊं संग । परआतम सों बंध बांधू, ज्यों होए ना कबहूं भंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -43
- असराफील इत बीच इमाम, ए नुसखे इलम की किताबें कलाम । एक रोज आए खाने किताब, कहया पोहोंचाओ नुसखा सिताब || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -15
- असराफील के अमल में, सकसुभे नहीं कोए । कयामत फल पाया इतहीं, मगज मुसाफी सोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -35
- असराफील गावे फुरकान, जाहेर करे निसान । मगज मुसाफ के बातून, कर देवे पेहेचान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -9

- असराफील चिन्हाए सों, मगज मुसाफी गाए । चौदे तबक एक सूर से, करके साफ उड़ाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -83
- असराफील जबराईल, भेज दिया आमर । निगहबानी कीजियो, मेरे खासे बंदों पर || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -60
- असराफील फिरवल्या, अर्स अजीम के मांहें । और जबराईल जबरूत की, हद छोड़ी नाहे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -30
- असराफील बुध नूर की, ए जो आई काजी हजूर । सो नूर में जाए झिल मिली, ऐसी हुई कजा के नूर || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -82
- असराफील ले उतस्या, जागृत बुध नूर । सो बैठ बजाए इमाम में, मगज मुसाफी सूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -11
- असराफीले बीच अर्स के, सब हकीकत लई । सो ए मगज मुसाफ के, गाए के जाहेर कही || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -26
- असराफीलें मुसाफ का, किया जाहेर खुलासा । तो हुआ ए नजीकी, खासों में खासा || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -73
- असल अरवाहें असं की, जो हैं रूह मोमिन । एक निसबत जाने हक की, जिनों मासूक प्यारे चरन || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -9
- असल आदम रसूल, कह्या सिजदा इन पर । चीन्हया न नबी को लानती, तो दनी रही सिजदे बिगर || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -55
- असल आदिमयों मिने, कोई पाइए उमत का एक । ए देखो पटंतर दिल में, दोऊ का विवेक || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -90
- असल आराम हिरदे मिने, अर्स को अखंड । तब ए झूठे ख्वाब को, रहे न पिंड ब्रह्मांड || ग्रं - खुलासा, प्र -18, चौ -9
- असल इजार एक पाच की, एकै रस सब ए। कई बेल पात फूल बूटियां, रंग केते कहूं इनके || ग्रं - सिनगार, प्र -10, चौ -1
- असल खुलासा इसलाम का, सब राह करत रोसन । झूठ से सांच जुदा कर, देसी आखिर सुख सबन || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -1
- असल जाकी अर्स में, सो सेहेरग से नजीक होए । जो पैदा तारीकी हवा से, क्यों हक नजीक आवे सोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -37
- असल जुदागी अर्स में, सो तो कबूं न होए । वाहेदत इस्क घट बढ़, क्यों कर होवे दोए || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -12
- असल तन इनों अर्स में, ठौर ठौर लिखी इसारत । बीच जंजीरों मुसाफ की, करें आयतें इनों सिफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -61
- असल तन जिनों अर्स में, सो कर लीजो दिल विचार । हक के सिर का मुकट, सो सोभा क्यों आवे मांहें सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -47

SPJIN

- असल दुनी की ए भई, जो लिखी माहें फरमान । पातसाही अबलीस दिल पर, जो करत है सैतान || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -21
- असल दुनी जिन गफलत, ताए इलमें करो पेहेचान । ताको नजीक सेहेरग से, सुन्य हवा ला-मकान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -28
- असल नंग पाच एक है, असल रंग तामें दस । दस दस रंग हर दिसें, सोभा क्यों कहूं जवेर अर्स || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -161
- असल नींद सो फरामोसी, फरामोसी सोई अंतर । जो अर्स लज्जत आवहीं, तो इलमें तबहीं जुड़े नजर || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -77
- असल पांच नाम रंग के, नीला पीला लाल सेत स्याम । एक एक रंग में कई रंग, सो क्यों कहे जाए बिना नाम || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -15
- असल बात वाहेदत की, अर्स अरवाहें जानें मोमिन । इत हक सुध मोमिनों, जाके असल अर्स में तन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -101
- असल मुरदा वजूद, भी हक इलमें दिया मार । जगाए दिए बीच अर्स के, बातें मुरदा करे समार || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -25
- असल हमारी अर्स में, ताए ख्वाब देखावत तुम । जैसा उत ओ देखत, तैसा करत हैं हम || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -42
- असल होए जित अकेला, और होए नाहीं नकल । सो नकल देखे बिना, क्यों पाइए असल || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -56
- असलू जुथ रूहें चालीस, तिनमें बारे हजार । बारे भेलियां रास में, इत चौबीस सहस्त्र कुमार || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -17
- असलें आतम न पाहोंचही, क्यों पोहोंचे जीव ग्यान । जो मन देत जुबांन को, सो जुबां करत बयान || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -16
- असां अर्स न छड्यो, धारा थेयासी बेसक । रूहें न आयूं रांदमें, असां चई गाल मुतलक || ग्रं - सिंधी, प्र -12, चौ -14
- असां जा डिठी रांदडी, आंई पसी तेहजो सूल । मूंके असां के फरमान, हथ पाहिजे नूरी रसूल || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -10
- असां दिलज्यूं गालियूं, से करो आं डिठ्यूं न्हाए । से की आई सहोथा, जे विलखण थिए असाए || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -7
- असां न छड्यो अर्स के, रांद में पण आयूं । थेयो विछोडो अर्समें, रांदमें पण न आयूं || ग्रं - सिंधी, प्र -12, चौ -17
- असीं आया आंजे हुकमें, मंझ लैलत कदर । सौ साल रख्या ढंकई, जाहेर केयां आखिर || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -9
- असीं आयासी रांद में, त लाड मंगं मय हिंन । असीं की की डिसूं हिनके, आई ईनी पसेजा जिन || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -92

- असीं उथी बेठां अर्समें, असां के हुकमें डिनों याद । हुकमें हुकम खेल डिखारियो, हुकमें हुकम आयो स्वाद || ग्रं - सिंधी, प्र -12, चौ -12
- असी पण बेठा आं अगियां, निद्रडी डिंनी आं असां । हे जा डिसो था निद्रमें, से कुरो खबर न्हाए आं" || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -5
- असी हथ हुकम जे, तो केयूं फरामोस । जी नचाए ती नचियूं, की करियूं रे होस || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -13
- असुभ करम जेम लिए निंद्या, सुभ करम नामना लई जाय । गोप साधन कीजे ते माटे, जेम सुख जीवने पोहोंतू थाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -14
- असुर केते कहूं पीर कई, केते कहूं पैगंमर । आए मिले इत सब कोई, जेता कोई भेख धर || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -18
- असुर थकी सम खाधा भभीखणे, आगल श्री रघुनाथ । तमसूं कपट करूं तो कुली मांहे, ब्राह्मण थांउं आप || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -39
- असुर सत रे धरम जुध मांगहीं, सुर केहेलाए जो न दीजे । पूछो ने पंडितो रे जुध दिए बिना, धरम राज कैसे कहीजे || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -7
- असुरें लगाया रे हिंदुओं पर जजिया, वाको मिले नहीं खान पान । जो गरीब न दे सके जजिया, ताए मार करे मुसलमान || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -16
- अस्कंध दूजा मुनिऐं कह्या, चत्रश्लोकी जित । ब्रह्मांड की जहां उतपन, अर्थ देखो तित || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -79
- अस्नान करी छापा तिलक देओ, कंठ आरोपो तुलसी माल । गिनानी कहावो साध मंडली, पण चालो छो केही चाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -12
- अस्व आगू अति बड़े, अस्वारी के सिरदार । सिर ऊंचे गरदन थांभत, थंभक थंभक थेई कार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -37
- अस्वारी को रूहन को, जिन पर हुआ दिल । तिन आगूं ही जानिया, सो आए खड़े सब मिल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -2
- अस्वारी पसु पंखियन पर, धनी करत हैं जब । जो जहां बसत हैं, सो आए मिलत हैं सब || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -1
- अस्वारी सबे सोभावत, मिसल आपनी जान । हर जातें फौज अपनी बांधके, चले सब समान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -50
- अस्सां इस्क निद्रडी विसारियो, अची मय हिन रांद । इसक तोहिजो डिखारियो, पस मुंहजा कांध || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -18
- अस्सां मथें आइयो, पिरियन जो फरमान । मूक्यो आं रसूल के, डियन रूहन जाण || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -3
- अहंकार मन चित्त बुध, इन किए सब जेर । अब हारे सब जिताए के, फेरूं सो सुलटे फेर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -25

- अहंकारें कई जुलम करो, ना त्रास सील संतोख । गुन अंग इंद्री के बस परे, ना देखो नजरों दोख || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -12
- अहनिस अर्थ करे समझावे, केहनो रंग न पलटो थाय । बेहेराने कालो संभलावे, बांध्या ते माटे जाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -116
- अहनिस आवेस हुअडा अंग में, जैसे मद चढ्यो महामत । वाकों आसा और न उपजे तृष्णा, वह एकै सों एक चित || ग्रं - किरन्तन, प्र -8, चौ -5
- अहनिस आवेस हुअा अंग में, फिस्या दिलड़ा हुआ दिवाना । महामत प्रेमें खेले पिया सों, ए मद है मस्ताना || ग्रं - किरन्तन, प्र -23, चौ -6
- अहनिस डर आया मेरे अंग में, फिरया दिलडा भया दिवाना । भली बुरी कहे सो मैं कछू न देखू, भागवे को में स्याना || ग्रं - किरन्तन, प्र -19, चौ -5
- अहनिस तूं भेली रहे, अपने पिउ के संग । पीठ दे तिन पिउ को, करे ऊपर के रंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -132, चौ -3
- अहंब्रह्म अस्मी होए के बैठे, तत्वमसी और कहावें । स्वामी सिष्य न क्रिया करनी, यों महा वाक्य दृढ़ावें || ग्रं - किरन्तन, प्र -31, चौ -3
- अहीर किए धन धंन, और आरव कुर्रेस । मारू भी धंन धंन हुए, है सोई हमारा भेस || ग्रं - किरन्तन, प्र -110, चौ -6
- अहीरों की कोम में, जित महत्तर नन्द कल्यान । सुख लिया बृज वधुएं, औरों न हुई पेहेचान || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -5
- अहेल किताब एही कहे, एही पावें हक मारफत । एही आसिक होवें मासूक की, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -53
- अहेल किताब जानें आपको, और सब जाने कुफरान । फजर होसी माएने खुले, तब होसी पेहेचान || ग्रं - खुलासा, प्र -14, चौ -10

आ

- आ अजवायूँ जो जोइए, जीव तारतम मोटो सार । वालाजीने ओलखे", तो तू नव मूके निरधार || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -14
- आ आकार मांहें जीव बंधाणों, ते पण नव ओलखाय । तो पारब्रह्म जे पार थयो, ते केणी पेरे खोलाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -75
- आ कीहे अस्थानक तमे आवियां, जागीने करो विचार । नार तूं कोण पिउ तणी, कहो एह तणो विस्तार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -9
- आ कोहेडा मां साध सं करे, जेणे बांध्यो चरण सं चित । रात दिवस रमे रिदे मां, तेने सुं करे प्रपंच || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -2
- आ जुओ तमे स्याम, करे केवा काम । भाजे भूसी हाम, राखे नहीं माम, हरवे घणे हितसूं || ग्रं - रास, प्र -26, चौ -3

SPJIN

- आ जुओं रे आ जुओ रे आ जुओ रे हो साथ जी, गोकल लीला आपणी हो साथ जी। विध सर्वे कहूं विगते, वृज बस्यो जेणी पेर । अग्यारे वरस लीला करी, रास स्मीने आव्या घेर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -1
- आ जोई जे तमे रामत, कहो रामत केही पर। आ भोम केही तमे कोण छो, किहां तमारा घर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -8
- आ जोगवाई छे खिण पाणीवल, केटलू तूने केहेवाय । पण अचरज मूने एह थाय छे, जे जाण्यूं धन केम जाय || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -16
- आ जोगवाई छे जाग्या तणी, अने विचार माहें समझण । जे समझो ते जागजो, पण आ अवसर अरधो खिण || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -51
- आ जोगवाई छे जो आपणी, नहीं आवे बीजी वार । हाथ ताली दीधे जाय छे, भूडा कां न करे हजी सार || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -3
- आ जोगवाई छे जो घणी, सहाय आपणने थया धणी । बेठ्या आपण माहें कहे, पण साथ माहें कोई विरलो लहे || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -19
- आ जोगवाई सघली सनंधे, कां न करो वस्त हाथ । आ वेला वली वली नहीं आवे, जीती कां जाओ रे निरास || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -63
- आ तां केहेर मोटो जुलम थयो, अने जाणिए तो केम जाय सहयो । ते तां में मारी मीटे जोयूं, धरम अमारूं कांई नव रहयूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -80
- आ तां व्यासजी नो कयूं कहूं छु, तमे मानजो साधो संत || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -100
- आ तिमर घोर अंधेर मांहें, वेख धरे बहु जन । एणे सहु ने सत भास्यो, ए साध ने थयो सुपन || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -19
- आ तेह घडी ने तेहज ताल, माया दृष्ट पडी विचाल । आपणने नव अलगां करे, विना आपण नव डगलूं भरे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -9, चौ -10
- आ देखीती बाजी मायानी, प्रगट पोकार करे छे साध । मांहें रही आप अलगा थाजो, जेमने छूटो ए बंध अगाध || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -22
- आ देखो छो दैत जोरावर, व्यापी रह्यो वैराट । काम क्रोध उनमद अहंकार, चाले आपोपणी वाट || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -27
- आ पांचे तणूं मूल कोय न प्रीछे, अनेक करे छे उपाय । साध मोटा पोहोंचे सुन्य लगे, पण सत सुख केणे न लेवाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -17
- आ पाधरी वाणी मांहें प्रगट, एक अर्थ नव दाखे । वचन वलाके त्यारे आणे, ज्यारे छलमां नाखे || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -16
- आ पोहोरो छे कठण एवो, तमे थई बेठा अलगां अवल । कलकल्यानूं इहां काम नहीं, जीतिए पोताने बल || ग्रं - खटरुती, प्र -7, चौ -17

- आ प्रगट जे प्राकृत, जेमां छल कांई न चाले । एमां अर्थ न थाय अवलो, ते पंडित हाथ न झाले || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -15
- आ प्रगट वचन कीधां अपार, तोहे न वली तमने सार । अमल उतारो तमे जोपे करी, अने जीव जगाओ वचन चित धरी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -61
- आ फेरो छे एणी सनंधनो, जो कोई रूदे विचारो । साध साहुकारो कहूं छू पुकारी, तमें जीती अखंड का हारो || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -22
- आ बेख अमने गमे रे वालैया, लीधो कोई मोहन वेल रे । नेणे पल न आवे रे वालैया, रूप दीसे रंग रेल रे || ग्रं - रास, प्र -25, चौ -4
- आ ब्रह्मांड विखे कोई एम मा केहेसो, जे अमने सूं करे बंध । ब्रह्मांड धणी पोते आप बंधावी, देखाडे छे सनंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -87
- आ ब्रह्मांडने रामत, बीजो कोण केहेसे । ए रामत देखाडी ए थकी, अलगां राखी कोण लेसे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -50
- आ भोम अंधेर मांहें आमला, जीव वेध्यो सघली ब्राध । जेने ते जई ने पूछिए, ते मुख थी कहे अमें साध || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -5
- आ भोम अंधेरी मांहें आमला, आंकडियों कोहेडा अनंत । वस्त खरी माहें अखंड छे, तमें जो जो जवेरी बुधवंत || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -9
- आ भोम नी गत सुणो रे साधो, प्रगट कहूं छू प्रकासी । आंखें देखी आप बंधाय, पछे खाय सहु जम फांसी || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -23
- आ भोम मूकतां जे आडी करे रे, घेर जातां जे कोई वारे जी । ए वेरीडा तमारा प्रगट पाधरा, ते तां जुओने विचारी जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -22
- आ भोम विस्मी सत माटे, वस्त आडी छे पाल । अनेक रखोपा करी वस्तना, वीटया छे जमजाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -10
- आ भोमने नव ओलखू, नव ओलखू मारूं आप । घर तणी मूने सुध नहीं, सांभरे नहीं मारो नाथ || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -12
- आ भोमनो रंग उजलो, कांई तेज तणो अंबार । वस्तर भूखण आपना, सूं कहूं सरूप सिणगार || ग्रं - रास, प्र -41, चौ -3
- आ मंडल तां तमे जोइयूं, कहो वीतकनी जे वात। आ भोमनो विचार कही, ए सुपन के साख्यात || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -7
- आ मंडल दीसे छे पाधरा, एतां मूल विना विस्तार । रामतनो कोई कोहेडो, न आवे ते केमें पार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -13
- आ मंडल मोटो रामत घणी, जुओ ऊभो केम अचंभ । एणे पाइए पगथी जिहां जोइए, तिहां दीसे ते पांचे थंभ || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -14
- आ माया कीधी ते तम माट, तारतम मांहें पाडी वाट । एणी वाटे चालिए सही, श्री बालाजीने चरण ज ग्रही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -28

- आ माया घर्ष्या जोरावर हती, पण हलवी थई मारा धणी तम थकी । मायाने तजारकर थई, ते ऊपर आ विनती कही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -15
- आ माया पूर वहे नितात, नख मूक्यो लई जाय तत्काल । लेहेर ऊपर आवे छे लेहेर, माहे दीसे भमरीना फेर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -38
- आ मायानो मेलो दुर्लभ, जओने विचारी मन । लऊ लाभ मलीने तमने, जेम सहु कोई कहे धंन धंन || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -19
- आ मेलो दुर्लभ ते माटे, नहीं आवे बीजी वार । ते माटे जीव कलपे मारो, नौतनपुरी मलवा आधार || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -14
- आ रामतना तमने, प्रगट कहं प्रकार । आ भोमना बंध छोडी दऊं, जेम जुओ जोपे करार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -1
- आ रूतें अगनी जोर बले, वाएने अगिन टाढी वाए । हेमने पडे रे बले सर्व वनस्पति, वलीने वसेके दाझे दाहे || ग्रं - खटरुती, प्र -4, चौ -8
- आ रे वेला एवी नहीं आवे, साध ना सके पुकारी । वचन ते अवला विचारसे, केहेसे निंदया करे छे अमारी || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -24
- आ लीला थासे विस्तार, सूरज ढांक्यो न रहे लगार । आ लीला केम छानी रहे, जेहेने रास धणी एम वचन कहे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -12
- आ लीलानी वातडी, जिभ्याए कही न जाय । सुख जागतां माणिए, मनोरथ पुराय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -109
- आ वचन कया में निद्रा मंझार, जा जोपे करी जोऊं मारा जीवना आधार । नहीं तो एह वचन केम कहूं मारा धणी, पण काईक तासीर दीसे अस्थानक तणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -9
- आ वचन बोले वेलडी, सखी मांहोंमांहें करे विचार । ए खबर न दिए कोणे कामनी, पोते राची रही भरतार || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -32
- आ वस्ती वसे रे सुंदर सोहामणी, धणी बेठा नौतनपुरी मांहें । एहज पुरी मांहें अमें रहूं, पण करमे न दिए मेलो क्यांहें || ग्रं - खटरुती, प्र -3, चौ -15
- आ वाणी कही में विगते, ते विस्तरसे विवेक । मारा साथने कही में छानी , पण ए छे घणूं विसेक || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -81
- आ वालो ते आविया, ए सुखतणा दातार । आपण माहें तेहज बेठा, जोई अजवालुं संभार || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -11
- आ वेख अमने वालो घणु लागे, वेख रसाल अति रंग । दृष्ट थकी अलगां म थाजो, दीठडे ठरे सर्वा अंग || ग्रं - रास, प्र -25, चौ -3
- आ वेख केम करी ल्याव्या रे वालैया, अमने थयो अति मोह रे । खिण एक अमथी अलगां म थाजो, अमे नहीं खमाय विछोह रे || ग्रं - रास, प्र -25, चौ -2

- आ वेराट माहें दीसे नहीं, पार वचन सुध जेह । लवो मुख बोलाय नहीं, तो केम पार पामे तेह || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -40
- आ समेनो वृन्दावन, जुओ रे आ सोभा चन्द । फूलडे अनेक रंग, रमे साथ परवरी || ग्रं - रास, प्र -19, चौ -4
- आ सुपन तणां सुख सहु को वांछे, ओल्या साख्यात दुख कोई न जाणे । संजमपुरी नी वाट छे वस्ती, ते माटे सहु कोई ताणे || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -8
- आइयां आस कातन की, करके उमेद दूनी। किनहूं कात्या बारीक, किन रूईथे न करी पूनी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -5
- आइयां कातन वालियां, मिनो मिने रब्द कर । किन किन मिहीं कातिया, सांचा सनेह धर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -6
- आइयां किताबें जिन पर, बजरक जो मेहेत्तर । मुसलमान आए संग, हुई बधाइयां घर घर || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -9
- आइयां झूठे कबीले में, भूल गईयां बका वतन । सुख अर्स अजीम के, हाए हाए फरेब दिया दुनी इन || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -37
- आइयां तिन आलम में, जित हक को न जानत कोए । पूजें खाहिस हवाए को, जो कोई इनमें बुजरक होए || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -18
- आई कुंजी इलम ईमाम पे, जिन सिर आखिरी खिताब । कजा महंमद जुबांए, सब पीवसी सरबत आब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -54
- आई चोदां तूं की घरे, हिन न्हाए में लाड । आंऊ त घुरां तो लगाई, हिनमें हुकमें डे स्वाड || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -91
- आई जो कदी खुसबोए, ए जो अर्स की सराब । इन मद के चढ़ाव से, देवे तबहीं उड़ाए ख्वाब || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -101
- आई डुखोजा दिलमें, जडे चुआं धुंडी जो वैण । पण की करियां की चुआं, मूं अडां न्हास्यो न खणी नैण || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -46
- आई नजीक जागनी, पीछे तो उठ बैठत । हाँसी होसी भूली पर, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -18
- आई नूखुध वैराट माहीं, विश्व करी सो निरविकार । छोटे बड़े नर नार सबे मिल, रंगे गाऐं सो मंगल चार || ग्रं - किरन्तन, प्र -54, चौ -4
- आई बुध वतन की, तब खुले माएने कुरान । भी नेक बताऊं खेल या बिध, ज्यों होवे सब पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -3
- आई बेठा सुणो गालियूं, असां के को विधे दिल ल्हाए । को न करिए मूं दिलजी, आंजे दिलमें केही आए || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -8
- आई लज कंदा इनजी, त आं पण लगी ए। आंके पण ए न छुटी, गिंनी वेई असां के जे || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -93

- आंऊं अव्वल न आखिर, सभनी हंदे तूं । ए मुराई भली भत्ते, ए तो डेखारई मूं || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -50
- आंऊं आइस आंके कोठण, उपटे बका दर । आसमान जिमी जे विच में, जा के के न्हाए खबर || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -12
- आऊं खीजी आंके की चुआं, सा न वरे मूंजी जिभ । पण अंईं हिन माया मंझां, केही कढंदा निध || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -17
- आंऊं चुआं बे केहके, तूं मुंजो धणी आइए । तूं सुणी ई को करिए, ई वार वार को चाइए || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -21
- आऊं जोए इमाम जी, सिंधाणी सिरदार । डिन्यो धणी सभ पाहिजो, मूंही हथ मुदार || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -8
- आंऊ झल्ले ऊभी नियाके, हल्लण न ड्यां अहक । मूं कंने जोर सरे इलम जो, मूं तोके खट्यो बेसक || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -77
- आंऊं धणियांणी तोहिजी, डे तूं मूं जी रे अंग । मूं मुए पुठी जे डिए, हे केडी निसबत संग || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -85
- आऊं धणियांणी तोहिजी, मुं घर अर्स अजीम । मूं कोडयूं उमेदूं वडियूं, तूं तेयां कोड गण्यूं को न डियम || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -38
- आंऊं पण द्रजंही, न डियां आंके डोह । बंग पाहिजो पांणई, मूं मोहां चाइए थो || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -54
- आंऊ पण हुइस डुखमें, पण न सांगाएम आंसे । मूं बेखबरी न जाणयो, से तो हांणे हिये चढ़ाया जे || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -27
- आंऊं पाहिजी परमें, की की पांणके भाइयां । वडी थीयन विचमें, छेडो छडाइयां || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -37
- आंऊं पुकारियां इंनी कारण, पण इंनी केहो डो । आंऊ पण बंधिस रांदमें, करियां कुजाडो || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -16
- आंऊं बी बटी भाइयां तिनके, जा उपटे अर्स दर । कांध लाड पारनज्यूं, मूंके डे खबर || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -51
- आंऊं बेठिस हिनजे घर में, मूंके रख्याई भली भत्त । केयांई सभे बंदगी, जांणी तोहिजी निसबत || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -23
- आंऊं हुइस कबीले के घर, ही गंदो वजूद धरे । थेयम धणी नूरजमाल घर, जे दर नूर अचे मुजरे || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -47
- आंऊं हुईस धणी जे कदमों, तडे संग न सांगाए । चेआंऊं घणी भत्तिएं, पण थीयम न सांजाए || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -11
- आंऊं हेकली की थियां, बी लगाई तो । तो रे आए को कित्तई, जे हिनके पल्ले सो || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -43

SPJIN

- आए आगम बानी इत मिली, विश्व मुख करत बखान । कौल सबन के पूरन भए, आए सो पोहोंचे निसान || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -1
- आए इमाम बाजे बजे, सो केते कहूं विचित्र । बिना हिसाबें बाजहीं, हिसाब बिना बाजंत्र || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -21
- आए इलम हक बका के, तब देह रहे क्यों कर । बेसक हुए हक अर्स सों, सो दम रहे न हक बिगर || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -11
- आए ईसा महंमद और इमाम, सब कोई आए करो सलाम । पर न देखो आंखों जाहेरी, दिल दीदे देखो चित्त धरी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -14
- आए ईसा मेंहेंदी महंमद, मोमिन आवसी कदम । हनोज लों कबूं ना हुई, सो होसी नई रसम || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -3
- आए ईसा रूहअल्ला पैगंमर, गिरो जहूदों बनी असराईल पर । जो गिरो बनी असराईल की भई, सो औलाद याकूब की कही || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -17
- आए एक साइत लैलत कदर में, उसी साइत में दूजी बेर । उसी साइत में तीसरे इन इंड, महंमद आए इत फेर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -19
- आए कदम दिल मोमिन, जा को सब्द न पोहोंचे सिफत । हके अर्स दिल तो कह्या, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -10
- आए के मेहदी कहेगा, जुबान बोल बदल कर || ग्रं - सनंध, प्र -2, चौ -7
- आए खट दरसन खट सास्त्र भेदी, बहत्तर फिरके आए अथर बेदी । आए सकल कैदी और बे कैदी, भई नई रे नवों खंडों आरती || ग्रं - किरन्तन, प्र -56, चौ -14
- आए गछ चौरासी जो अरहंती, दत्तजी दसनामी जो महंती । आए करम उपासनी वेदांती, भई नई रे नवों खंडों आरती || ग्रं - किरन्तन, प्र -56, चौ -13
- आए चारों संप्रदा के साधूजन, चार आश्रम और चार वरन । चारों खूटों के आए गावते गुन, भई नई रे नवों खंडों आरती || ग्रं - किरन्तन, प्र -56, चौ -12
- आए दरवाजे आगे खड़े, खेलोने अति घन । स्याम स्यामाजी साथ को, पसु पंखी लेवें दरसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -14
- आए देव फुरमाए हक के, बीच हिंदुस्तान । करो सबों पर अदल, मार दूर करो सैतान || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -43
- आए धरमराए और इंद्र वरून, नारद मुन गंधर्व चौदे भवन । सुर असूरों सबों लई सरन, भई नई रे नवों खंडों आरती || ग्रं - किरन्तन, प्र -56, चौ -8
- आए नवनाथ चौरासी सिध, बरस्या नूर सकल या बिध । इत आए बुधजी ऐसी किध, भई नई रे नवों खंडों आरती || ग्रं - किरन्तन, प्र -56, चौ -11
- आए नूर भोम सुख सातमी, नूर सुख हिंडोले दोए दोए । ए सुख नूर रूहें बिना, नूर सुख लेवे जो होवे कोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -127

- आए पड़े तिन फरेब में, चौदे तबकों न बका तरफ । फना बीच सब खेलत, कोई बोल्या न बका हरफ || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -11
- आए फरिस्ते नूर मकान से, अर्स अजीम मकान रूहन । कलाम अल्ला हक इलम, ए आए ऊपर रूह मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -41
- आए फंसे तिन फरेब में, पानी पत्थर आग पुजात । अर्स साहेब कायम की, कहूं सुपने न पाइए बात || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -17
- आए फिरते नूर द्वार लग, सोभा फिरती नूर लेत । नूर द्वार सामी नूर द्वारने, सामी हवेली नूर सोभा देत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -42
- आए मिलो रे वैष्णव पारखी, तुम देखियो विचारी सब अंग । टीका वल्लभी बानी सुकदेव की, ताके एक अखर को न कीजे भंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -13, चौ -5
- आए मोमिन नूर बिलंद से, और दुनियां कही जुलमत । यों जाहेर लिख्या फुरमान में, किन पाई न तफावत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -56
- आए रसूलें यों कहया, काजी आवेगा खुद सोए । पर फुरमान यों केहेवहीं, जिन कोई केहेवे दोए || ग्रं - सनंध, प्र -1, चौ -3
- आए रसूलें हक जाहेर किया, किया अ ो ं का बयान । हौज जोए बाग कई बैठकें, सब हकीकत ल्याया फुरमान || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -68
- आए रहेसी सब सोहागनी, तब लेसी सुख अखंड । पीछे तो जाहेर होएसी, तब उलटसी ब्रहमांड || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -15
- आए लखमीजी ठाढ़े रहे, भगवानजी तब जाग्रत भए । करी विनती लखमीजी ताहें, तुम बिन हम और कोई सुन्या नाहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -21
- आए लिखे बड़ी दरगाह से, इसलाम के खलीफों पर । उठी बरकत मुसाफ सफकत, दुनी हुई ईमान बिगर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -8, चौ -1
- आए लैल के खेलमें, लेने अर्स लज्जत । सुख सांचे झूठे दुख में, लेने को एह बखत || ग्रं - खुलासा, प्र -18, चौ -4
- आए वतन से पिउ अपना, देखाए के चले राह । आधा गुन जो याद आवे, तो तबहीं उड़े अरवाह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -3
- आए वसीयत नामें मक्के से, उठ्या कुरान दुनी से बरकत । सो अग्यारे सदी अंत उठसी, रूहें हादी कुरान सोहोबत || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -30
- आए वस्तर हिरदे हक के, रूह अपने पेहेने बनाए । तेती खड़ी रूह होत है, जेता दिल में हक अंग आए || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -47
- आए सदी बीच आखिरी, जो रसूलें करी थी सरत । बखत हुआ बीच बारहीं, भई फरदा रोज कयामत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -4
- आए सनकादिक चारों थंभ, लिए खड़े संग विष्णु ब्रहमांड । जो ब्रहम अनभवी भए अखंड, भई नई रे नवों खंडों आरती || ग्रं - किरन्तन, प्र -56, चौ -9

- आए स्यामाजीएँ मोहे यों कहया, ए खेल किया तुम कारन । तुम आए खेल देखने, मैं आई तुमें बुलावन || ग्रं - किरन्तन, प्र -104, चौ -2
- आए हुआ इत रोसन, ऊपर अपनी सरत । अव्वल आखिरी इलमें, जाहेर करी कयामत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -13
- आओ हंस या और कोए, पर कोई जुदे कर ना देवे दोए। दोऊ के जुदे बासन, यों कबहूं ना किए किन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -12
- आंकडियो माहें छे विस्मी, झीणी गंथण जाली । जेनो कागल जे पर हुतो, तेणे चूंटी सर्वे टाली || ग्रं - किरन्तन, प्र -124, चौ -3
- आंकड़ी अंतरजामी की, कबहूँ न खोली किन । आद करके अब लों, खोज थके सब जन || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -24
- आंकड़ी अंतरध्यान की, सो ए कहूं सनंध । कोई न जाने हम बिना, इन तारतम के बंध || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -14
- आंकडी अंतरध्याननी, साथ तमने कहूं सनंधजी । अम विना ए कोण जाणे, तारतमना बंधजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -10
- आंकड़ी एक इन भांत की, बांधी जोर सों ले । आतम झूठी देखहीं, सांची देखें देह || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -6
- आंकड़ी एक इन भांत की, बांधी जोर सों ले । रूह झूठी देखहीं, सांची देखे देह || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -9
- आंकडी कोई न जुए रे उकेली, वचन तणां जे विवेक । गुरगम टाली खबर न पड़े, ए अर्थ भारे छे विसेक || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -117
- आकार को निराकार कहें, निराकार को आकार । आप फिरे सब देखें फिरते, असत यों निरधार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -24
- आकार को निराकार कहे, निराकार को आकार । आप फिरे सब देखे फिरते, ए असत यों निरधार || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -27
- आकार न कहिए तिनको, काल को जो ग्रास । काल सो निराकार है, आकार सदा अविनास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -26
- आकार न कहिए तिनको, काल को जो ग्रास । काल सो निराकार है, आकार सदा अविनास || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -29
- आकार न कहिए तेहेने, जेहेनो ते थाय भंग । काल ते निराकार पोते, आकार सच्चिदानंद || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -30
- आकार ने निराकार कहे, निराकारने आकार । आप फरे सहु देखे फरता, असतने ए निरधार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -28
- आकारतां अंई भले पसो था, पण पसो मंझियो तेज । पिरी पांहिंजा पाण पाणसे, घणूं करीन था हेज || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -10

SPJIN

- आकास जिमी जड़ मूल से, पहाड़ आग जल वाए। फिस्या कतरा नूर का, और दिया सब उड़ाए || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -63
- आकास भरयो खुसबोय सों, वाए तेज खुसबोए । जित तित सब खुसबोए, बोए चांद सूर दोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -47
- आकास रोया सब अंगों, मोह अहं गल्यो चहुंओर । निराकार निरंजन गलया, जाए रहया अंतर ठौर || ग्रं - किरन्तन, प्र -75, चौ -12
- आकीन जिन आया नहीं, सुनके महंमद बैन । और विचार सबे जलो, हाए हाए जलो सो चातुरी चैन || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -15
- आकीन न रहे ऊपर का, जो होए जरा समया सखत । तो आकीन उठ्या सबन से, जो आए पोहोंची सरत || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -31
- आकीन ना छूटे सोहागनी, जो परे अनेक विघन । प्यारी पिउ के कारने, जीव को ना करे जतन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -5
- आंके धांऊं सुणंदे धणीज्यूं, जमारो सभे वेई । अंई अगियां थींदियूं अणसरयूं, अंई कतो को न बेही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -20
- आंके निद्र उडाणके अदियूं मूजियू, आंके डियां हिकमी साख । अंई अगईं पर पसी करे, हांणे मान सांगायो रे साथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -2
- आंख उघाडी जो जुए, जीव लीजे ते लाभ अनेक । आंही पण सुख घणां माणिए, अने आगल थाय वसेक || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -13
- आंखडली अणियाली सोभे, मध्य रेखा छे लाल । निरखत नेण कोडामणा, जीवने ताणी ग्रहे तत्काल || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -34
- आंखडिए आंसू ढालियां, तमे कां करो चितनो भंग । आंसूडां लोऊं तमतणां, आपण करतूं अति घणू रंग || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -55
- आखल पाखल सुन्दरी, केटलीक कंठे बांह धरी । एक ठेकती फरती भमरी, एम रमत सकल साथ री || ग्रं - रास, प्र -16, चौ -8
- आंखां क्यों उठाऊंगी, मुझे मारेगी बड़ी सरम । ऐसी कबूं किन न करी, सो मैं किए चंडाल करम || ग्रं - किरन्तन, प्र -41, चौ -9
- आंखां खोल के ढांपिए, जिन चूके एती बेर । रात दिन तेरे राज का, सूत कात सवा सेर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -28, चौ -4
- आंखां खोल तूं आप अपनी, निरख धनी श्रीधाम । ले खुसवास याद कर, बांध गोली प्रेम काम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -1
- आंखां तोहे न उघड़ी, वाले कही अनेक विध । अंध अमे एवां थयां, निगमी बेठा निध || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -66
- आंखां पानी भर के, हाथ पकड़ किया सोर । आग परो मेरे जीव को, जाको अजहूं एही मरोर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -6

- आंखां होसी खुलियां, मेरी बातां करो माहों-माहें । ढूंढ़ोगे माहें बाहेर, और पावे ना कोई क्याहे || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -7
- आखिर अपने काम मजबूत, ए अरस परस नाम कहया मेहेमूद । आखिर बुजरकी महंमद पर आई, खासी उमत महंमदें सराही || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -15
- आखिर आए असराफील, उड़ावसी बजाए सूर । फेर करसी कायम, बजाए खुदाए का नूर || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -44
- आखिर आए असराफीलें, खोले मुसाफ मारफत द्वार । दिन बका किया जाहेर, खोले अर्स अजीम नूर पार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -60
- आखिर आए रूहअल्ला, सो लीजो कर आकीन । ए समझेगा बेवरा, सोई महंमद दीन || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -19
- आखिर खिताब सिर रसूल, दूजा सिर मेंहेंदी इमाम । इन विध खावंदी रूहअल्लाह की, ए तीनों एक दीन करसी तमाम || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -82
- आखिर गिरो जो रूहन, सब मेयराज में आराम । याको दई इमामें हुकमें, वाहेदत की अर्स ताम || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -5
- आखिर फल जो पावहीं, कहे सोई कुरान । दिन होवे तिन मारफत, हक अर्स पेहेचान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -36
- आखिर भिस्तों का बेवरा, जो नैयां होसी चार । जो होसी बखत कयामत के, तिनका कहूं निरवार || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -13
- आखिर भी इस्क बिना, हुआ न काहूं सुख । सो इस्क क्यों छोड़िए, जो रसूलें कहया आप मुख || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -14
- आखिर महंमद छुड़ावसी, और आग न छूटे किन से । सब जलें आग दोजख की, ए लिख्या जाहेर फुरमान में || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -38
- आखिर मिलावा साहेब इत, रूहें फरिस्ते पैगंमर जित । याही सिपारे छत्तीसमी सूरत, नीके कर तुम देखो तित || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -27
- आखिर मोमिन आकिल, कहया जिनका दिल अर्स । तो हक दिल का जो इस्क, सो मोमिन पीवें रस || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -14
- आखिर रूहों नसीहत, ए तो हमें देखाया ख्याल । रूहों हक को देखाइया, कौल फैल या हाल || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -113
- आखिर वेरा उथणजी, आई रूहें छडे जा रांद । उथी विच अर्स जे, कोड करे मिडूं कांध || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -1
- आखिर हुई इन जिमी, इन जिमी आया कागद । जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सब्द || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -90
- आंखें दई हकें इन को, और दिए कान अकल । ज्यों दुनियां मुद्दा वजूद पर, त्यों कहे मोमिन साहेब दिल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -38

- आग इस्क ऐसी उठी, लोहू रोया वैराट । खाक हुआ जल बल के, उड़ गया सब ठाट || ग्रं - किरन्तन, प्र -75, चौ -14
- आग इस्कें जलें ना मोमिन, आसिकों इस्क घर । इनों लगे जुदागी आग ज्यों, रूहें भागें देख कुफर || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -96
- आग जिमी पानी आग का, आग बीज आग अंकूर । फल फूल बिरिख आग का, आग मजकूर आग सहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -6
- आग दुनी को एक है, अगओं को आग दोए। एक आग दुनी की, दूजे अपने दुख को रोए || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -10
- आग पड़ो तिन तेज बल को, आग पड़ो रूप रंग । धिक धिक पड़ो तिन ग्यान को, जिन पाया नही प्रसंग || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -8
- आग पड़ो तिन देसड़े, जित पिउ की नहीं पेहेचान । तो भी सुध मोहे न भई, जो हुई एती हान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -11
- आग परो तिन कायरों, जो धाम की राह न लेत । सरफा करे जो सिर का, और सकुचे जीव देत || ग्रं - किरन्तन, प्र -87, चौ -1
- आग पानी पूजोगे, या सूरत बनाए पत्थर । कहोगे हमारा हक है, सब की एह नजर || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -55
- आग बिना सब दुनियां, अगिन हुई जर बर । सो सारे ठंढ़े किए, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -14
- आग लगी झाला उठियां, जीवरा जले रे मांहें । तलफ तलफ मैं तलफूं, पर ठंडक न दारू क्यांहें || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -13
- आग सबों को विरह की, देकर करसी साफ । जिन जैसी तैसी तिनों, आखिर ए इंसाफ || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -12
- आगम की बानी कहे, पिया आवेंगे तेहेकीक । तिन आसा मेरी बंधी, पूरन आई परतीत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -54
- आगम निगम सब लिख्या, हुआ है होसी जेह । ए बानी तो बोहोत है, पर नेक कहूं तुमें एह || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -5
- आगम भाखो मन की परखो, सूझे चौदे भवन । मृतक को जीवत करो, पर घर की न होवे गम || ग्रं - किरन्तन, प्र -14, चौ -10
- आगमी सब खड़े हुए, दिन बोहोत रहे थे गोप । आए धनी मेले मिने, प्रगटी है सत जोत || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -3
- आगल आपणे सूं कस्यूं, ज्यारे अजवाले थई रात । आ तां वालेजीए वली कृपा करी, त्यारे तरत थयो प्रभात || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -17
- आगल एम का छे, जे आंधलो चाले सही । ज्यारे भटके भीत निलाटमां, तिहां लगे देखे नहीं || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -64

- आगल कान्हजी उजाय, जसोदाजी ते वांसे धाय । माताने श्रम अति थयो, तिहां कान्हजी ऊभो थई रह्यो || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -14
- आगल जीवे कीधी अस्तुत, भगवानजीनी भली भांत । पंडिताई चतुराई ने प्रवीणाई, किवता मांडे छे करी खांत || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -4
- आगल तिमर घोर अंधारूं, बूडसे जीव जल मांहें । लेहेरा मारे अवला पछाडे, मछ गलागल तांहें || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -68
- आगू अपनी दानाई के, और न काहूं देखत । इनका एही किबला, अपनी तरफ बचत || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -32
- आगू अरवाहें अर्स की, करी बातें हक जुबान । हाए हाए तन मेरा क्यों रह्या, करते खिलवत बयान || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -85
- आगू अर्स चबूतरे, हम सखियां बैठत मिलकर । ए सुख हमारे कहां गए, खेलत नाचत बांदर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -15
- आगूं आए खबर दई, आखिर आवेगा साहेब । रूहअल्ला इमाम उमत, होसी नाजी-मजहब || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -65
- आगूं आए जाहेर किया, आवने को ईमान । खासी गिरो के वास्ते, कई कहे निसान || ग्रं - किरन्तन, प्र -111, चौ -11
- आगू आसिक ऐसे कहे, जो माया थें उतपन । कोट बेर मासूक पर, उड़ाए देवें अपना तन || ग्रं - किरन्तन, प्र -91, चौ -1
- आगू इतथे हिंडोले, जित चौकी बट पीपल । चार चौकी बट हिंडोलें, इतथे ना सकिए निकल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -23
- आगू इन दरबार के, दायम विलास है बन । कई विध खेल करें जानवर, हक हँसावें रूहन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -22
- आगू इन नख जोत के, होवें सूर कई कोट । सो सूर न आवे नजरों, एक नख अनी की ओट || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -108
- आगू इन मोहोलों खेलौने, खेल करत कला अपार । नाम जुदे जुदे तो कहूं, जो कहूं आवे माहे सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -10
- आगू इस के ऐसा नहीं नाम, ना माफक इस के कोई काम । बोहोत हुए कह्या इन रसम, कोई हुआ न आदमी इन इस्म || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -11
- आगू कई मारे बुजरकिएँ, जिन दृढ़ कर लई विश्वास । सो देखे मैं अपनी नजरों, निकस चले निरास || ग्रं - किरन्तन, प्र -102, चौ -2
- आगू कायम अर्स के, है चौदे तबक यों कर । ज्यों आगू नासूत दुनीय के, ए खेल के कबूतर || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -15
- आगू केसरी कोतल, अति खूबी ले खेलत । बाघ चीते घोड़े हाथी, नट ज्यों नाचत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -27

- आगू चलते तिन यों कह्या, जल जाए मेरे पर । सो ए बीच जाए न सक्या, ए जो अर्स अकबर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -72
- आगू जबराईल जाए ना सक्या, वाकी हद जबरूत । पोहोंच्या न ठौर रूहन के, जित नूर बिलंद लाहूत || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -46
- आगू जरे घास अर्स के, ख्वाब हैवान इन्सान । क्यों दीजे निमूना झूठ का, कायम जिमी जरा रेहेमान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -41
- आगू जल अति सोभित, तले गिरदवाए पाल । तिन पर बन बिराजत, क्यों कहूँ खूबी इन ताल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -84
- आगू जाग्रत वचन के, क्यों रहे देह सुपन । मोहे अचरज आणू सांच के, देह झूठी राखी किन || ग्रं - किरन्तन, प्र -86, चौ -10
- आगू जिन बंदगी करी, ए सोई जमाना बुजरक । सो देखो इत हक कदमों, कोई पीछा रहे न मांहें खलक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -25
- आगू तले चौक चांदनी, उतर जाइए सीढ़ियन । आगूं दोए चबूतरे चौक के, उपर हरा लाल दोऊ बन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -127
- आगू दोए नूर चबूतरे, दोऊ पर नूर दरखत । लाल हरे रंग नूर के, ए नूर जाने हक सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -29
- आगू द्वार अर्स के, चौक बन्या चबूतर । कबूं हक तखत बैठहीं, आगे खेलें जानवर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -43
- आगू द्वार नूर चांदनी, रेती रोसन नूर आसमान । नूर जंग होत सबों बीचों, कोई सके न नूर काहूं भान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -28
- आगू नव सदीय के, कह्या होसी रूहों मिलाप । बुजरक मिलावा होएसी, देवें दीदार खुदा आप || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -9, चौ -4
- आगू नूर-मकान की कंकरी, देखत ना कोट सूर । तिन जिमी नंग रोसनी, सो कैसो होसी नूर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -26
- आगू पांच थंभ ऊपर चबूतरा, इसी भांत झरोखों पर । सोभा लेत चारों झरोखे, थंभ तले ऊपर बराबर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -62
- आगूँ पाट घाट मोहोल सुन्दर, जल पर अति सोभाए । तले घड़नाले तिनमें, बीच तीन नेहेरें चली जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -40
- आगू पीछू सैन्या चले, खूबी देत बराबर । जो दाएं बाएं मिसलें, कोई छोड़े ना क्यों ए कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -49
- आगूं पुल इत आइया, ऊपर बड़ी मोहोलात । कई देहेलान झरोखे जल पर, जल चल्या घड़नाले जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -29
- आगूँ बड़ा चौगान बन बिना, दूब कई दुलीचों जुगत । मोमिन दौड़ के कदम पकड़ें, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -38

SPJIN

- आगू बड़ा बन नूर का, आए नूर मधुबन । कई हिंडोले नूर के, हुआ आसमान नूर रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -11
- आगू बड़े द्वार के, बीस थंभ तरफ दोए । रंग पांचों नूर जहूर के, ए सिफत किन मुख होए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -59
- आगू बन इन घाट के, अतंत सोभा लेत । तीसरे झुंड के घाट में, खेलें खावंद रहें समेत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -69
- आगू बेसक बड़े अर्स के, नूर रोसन जोए" किनार । दोऊ तरफों जरी जोए के, नूर रोसन अति झलकार || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -31
- आगू भोम चबूतरे, चारों तरफों चौगान । गिरदवाए परे पुखराज के, जिमी रोसन खेलें रेहेमान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -81
- आगू रूह सूरत सूर के, जवेर गए लँपाए । तो सोभा हक जात की, क्यों कर कही जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -37
- आगू वाहेदत जिमी के, कहूं नाम न जरा एक । आणू जरे वाहेदत के, उड़ें ब्रह्मांड अनेक || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -26
- आगू सबन के फुहारे, और आगू सबों के फूल । देख देख ए चेहेबच्चे, सबे होत सनकूल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -7
- आगू से चेतन करी, एती करी मजकूर । रूहें सुन ए सुकन, क्यों याद न आवे जहूर || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -13
- आगे असराफीले कायम किए, तेरही में नूर नजर तले लिए । नूर नजर तले हुए सुध, आए मांहें जाग्रत बुध || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -43
- आगे आए मिली इत नदियां, चक्राव ज्यों पानी चलत । तिन पीछे नदियां मोहोल बन की, जाए सागरों बीच मिलत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -23
- आगे आपण विहिला थया, तो श्री देवचन्दजीए वंचया । नहीं तो केम वंचे आपणने एह, जो राख्यो होत काई आपणे सनेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -66
- आगे आवेस मूकने धणीतणो, वली निध बीजी दीधी । निसंक निद्रा उडाडी, साख्यात बेठी कीधी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -12
- आगे आवेस मोपे पिया को, दे अंग लई जगाए । निसंक निद्रा उड़ाए के, साख्यात लई बैठाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -12
- आगे उलटा हुआ अकरमी, अजहूं ना करे कछु सुध । जागत नहीं क्यों जोर कर, ले हिरदे मूल बुध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -6
- आगे एम वचन केहेवाय, जे कीडी पग कंजर बंधाय । डूंगरतां त्रणे ढांकियो, पाधरो प्रगट कोणे नव थयो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -2
- आगे कलकली कलकलाए, तोहे ना गयो विकार । कठिन सही तुम खंडनी, वचन खांडा धार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -5

- आगे कलकलीने कयूं रे सखियो, तोहे न गयो विकार । कठण सही तमे खंडनी, वचन खांडा धार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -5
- आगे खड़ा असराफील, और जबराईल हुकम । जोस सब रूहन पर, वतन बका खसम || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -5
- आगे गुमटियों चढ़ाय के, नजरों नूर मकान । कौन देवे अंगुरी बताए के, बिना मेहेबूब मेहेरबान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -19, चौ -18
- आगे चल न सक्या क्योंहीं कर, नूर तजल्ली जलावे पर । तहां पोहोंचे रसूल एक, तित अनेक इसारतें कही विवेक || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -10
- आगे चलने की निसानी, पातसाह नजीक दरगाह पेहेचानी । मिल्या कह्या मुलक पातसाही, सो खासी गिरो रूहें दरगाही || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -8
- आगे तो अमे नव ओलख्या, ते साले छे मन । चरचा ते करी करी प्रीछव्यारे, अने कया ते विविध वचन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -5
- आगे धणी पधारया अममां, अमे करी न सक्या ओलखांण । ए निखरपणे निध निगमी , थई ते अति घणी हांण || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -52
- आगे निद्रा थई निबल मोसू, घारण हुती घणी पर । हवे तूं जीवने म आवीस टूकडी, कर संसार मांहें घर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -27
- आगे नूर फुरमान के, खड़ा हक नूर का नूर । जिन से पैदा मलायक, चुआ कतरा जिनों अंकूर || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -10
- आगे पीछे थंभोंकी हार, दाएं बाएं दोऊ पार । जोत चारों तरफों जवेर, झलकार छाई चौफेर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -165
- आगे पीछे फौज के, चोपदार बड़े बांदर । दाएं बाएं मिसल अपनी, फौज रखें बराबर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -15
- आगे प्रगट कीधूं रे जनके, दाधो पग अगिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -28
- आगे बारे सहस्त्र बैठियां हिल मिल, जानों एकै अंग हआ भिल । याको क्यों कहूं सरूप सिनगार, जाने आतम देखनहार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -181
- आगे भी तें कहा कियो, चल गए पिउ जब । अवगुन ना देखे अपने, पिउ मेहेर करी फेर अब || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -2
- आगे सैर विध विध की, जब करें ऊपर सागर । कई विध के रस पूरन, सब पैरत हैं जानवर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -68
- आगे हुई ना होसी कबहूं, हमें धनिएँ ऐसी सोभा दई । सब पूजें प्रतिबिंब हमारे, सो भी अखंड में ऐसी भई || ग्रं - किरन्तन, प्र -81, चौ -3
- आज राज पूरण काज, मन मनोरथ सुन्दरी । मन मनोरथ सुन्दरी, सखी मन मनोरथ सुन्दरी || ग्रं - रास, प्र -19, चौ -1

SPJIN

- आज लगे झंप्या रया, हके मोहोर करी तिन पर । सो अछूत प्याला फूल का, हकें खोल दिया मेहेर कर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -102
- आज वधाई वृज घर घर, प्रगट्या श्री नंद कुमार । दूध दधी ऊमर धोए, तोरण बांधे वृजनार || ग्रं - किरन्तन, प्र -51, चौ -1
- आज सांच केहेना सो तो काहू ना रूचे, तो भी कछुक प्रकासू सत । सत के साथी को सत के बान चूभसी, दुष्ट दुखासी दुरमत । अखंड सुख लागियो || ग्रं - किरन्तन, प्र -13, चौ -1
- आंजी मंगाई मंगा थी, या कुफर या भूल । हे डोरी आंजे हथ में, असां दिल अकल || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -28
- आजूज माजूज जाहेर हुए, जो नाती नह पैगंमर । खात जात हैं दुनी को, क्यों देखें बातून बिगर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -9
- आजूज माजूज जुफ्त, गिनती लाख चार । सब पी जासी दुनी पानी ज्यों, टूटे दिवाल न रहे लगार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -3
- आजूज माजूज लेसी सबों, ऊगे सूरज मगरब । ईसा मारे दज्जाल को, एक दीन करसी सब || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -9
- आजूज माजूज हुए जाहेर, केता किया दुनी पर मार । अजूं न देखे दुनी स्याह दिल, जो पड़ी आलम में एती पुकार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -31
- आंझो आणो तमे धणी तणो, हाकली चित करो ठाम । रामत करतां आवसे, सुंदरबाई झाले. बांहें || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -44
- आंझो आवे मूने धणीतणो, एम वालोजी करसे केम । वली रामतडी कीजिए, आपण पेहेली करतां जेम || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -39
- आटला ते दिन अमें घर मधे, लीला ते राखी गोप" । हवे बुध तांणे पोते घर भणी, तेणे प्रगट थाय सत जोत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -6
- आटला दिवस में नव ओलख्या मारा वालैया, में कीधूं अधम नूं काम । महाचंडाल अकरमी अबूझ, में न ओलख्या धणी श्री धाम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -22, चौ -6
- आटलू पण हूं तोज कहूं छू, रखे केणे अजाण्यूं जाय । आ दुनियां भेला साध तणाय, त्यारे सूं करूं में न रेहेवाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -108
- आंटी आन के फांसी लगाई, वे भी उलटीऐं दई उलटाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -5, चौ -2
- आठ तरफ जुदी जुदी जिमी, नूर एक से दूजी सरस । नूर बीच जिमी बीच सागर, जिमी सिफत न पार अरस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -10
- आठ तरफ नूर जिमी के, तरफ आठ नूर सागर । ए गिन देख द्वार दिल अर्स में, पार न आवे क्यों ए कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -21
- आठ पहाड़ तले मोहोल के, ऊपर ताल पुखराज । कई मोहोलातें आठों पर, ऊंचे रहे मोहोल बिराज || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -2

- आठ भोम इन ऊपर, तिन आठों भोम पड़साल । जाए पोहोंच्या लग चांदनी, ऊपर गुमटियां लाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -125
- आठ मंदिर नंदजी तणा, मांडवे एक मंडाण । पाछल वाडा गौतणा, मांहें आथ सर्वे जाण || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -10
- आठ रंग के नंग की, पेहेरी जो मुंदरी || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -93
- आठों खाँचों के गुरज जो, छ्यानब्बे गुरज कहे । बारे गुरज अव्वल कहे, सब एक सौ आठ भए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -65
- आठों जाम जब विरहनी, स्वांस लियो हूक हूक । पत्थर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक || ग्रं - सनंध, प्र -7, चौ -11
- आठों जाम विरहनी, स्वांस लिए हूक हूक । पत्थर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -11
- आठों भिस्त कायम करी, कर रोसन जहूर । पेहेचानो ए फरिस्ता, ले हक इलम सहूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -89
- आठों भिस्त कायम करी, बजाए दूजा सूर । बरस्या आब सबन पर, अर्स अजीम का नूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -87
- आडा ऊभा वेहेवट घणां, अने विकराल जीव माहें जलतणा । ऊंचो आडो ऊभो ऊंडोरे अतांग, पोहोरो कठिण नथी केहेनो लाग || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -39
- आड़ा पट दे झूठ देखाइया, पट न आड़े हक । सो हक को हक देखत, हुई फरामोसी रंचक || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -29
- आड़ा पट भी हकें दिया, पेहेले ऐसा खेल सहूर में ले । जो खेल आया हक सहूर में, तो क्यों न होए कायम ए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -87
- आड़ा ब्रह्मांड देय के, ऐसी जुदागी कर । करत गुफ्तगोए हजूर, खेल ऐसा किया जोरावर || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -89
- आड़ी आवत नूर गलियां, नूर चौक होत तिन से । नूर गली दोए दाएँ बाएँ, गली चली नूर हवेलियों में || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -51
- आडी ने आडी रे अगनी जोने पर जले, वैराट माहें न समाय । ब्रह्मांड फोडीने झालों जोने नीसरी, ओलाडी ते केहेने न जाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -67, चौ -2
- आडीका जे तमे कीधां मारा वाला, साथ मलवाने जेह । तेह तणो विचार करी रे, मूने जुगते प्रीछवो वली एह || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -6
- आड़े ऊंचे याके तले, चार चार थंभ तीन तीन घड़नाले । याकी जोत आकास न मावे, किरना फेर फेर जिमी पर आवें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -21
- आड़े चौदे तबक मोह, निराकार निरंजन । याके पार पोहोंचना, इन पार पिउ वतन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -16

- आड़े टेढ़े मांहें बेहेवट, विक्राल जीव मांहें विकट । दुखरूपी सागर निपट, किनार बेट न काहूं निकट || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -80
- आंणी जोगवाईए तो एम थाय, चौद भवनमा जोत न समाय । एम अमें न करूं तो बीजो कोण करे, धणी अमारे काजे बीजी दाण देह धरे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -19
- आणी भोमे तमने भूलव्या, सुध गई सरीर । पड्या ते फंद अंधेर मांहे, तेणे चितडू न आवे धीर || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -30
- आणू इन चबूतरों, खेलावत जानवर । नए नए रूप रंग ल्यावहीं, अनेक विध हुनर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -21
- आणू दोऊ सिरे गुरज दोए, माहें छज्जे कई किनार । दोऊ बीच में पानी उतरत, गिरत चादरें चार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -10
- आणू धाम के बन भला, जमुना जी सातों घाट । तीन बाएं तीन दाहिने, बीच जल कठेड़ा पाट || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -16
- आणू नूह तोफान के, दो तकरार भए लैल । दोए पीछे ए तीसरा, जो भया फजर का खेल || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -20
- आणू मन्दिर चबूतरा, थंभ सोभित तरफ चार । इत आवत रूहें नहाए के, बैठ करत सिनगार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -9
- आणे आकारे जो नव छूटो, तो छूटसो केही पर । साधो साध नी संगत करजो, खिण खिण जाय अवसर || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -78
- आणे फेरे अमे केम करी आव्या, अने तमे आव्या छो केम । तमे कोण ने तम माहे कोण, मूने कहीने प्रीछवो वली एम || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -8
- आणे रे आकार का नथी देखता, जेवडो लाभ तेवडो जोखम । आंणे रे समें अखंड सुख भूल्या, बलसो रे लाख चोरासी अगिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -7
- आणे वचने खरे बपोरे, बोध तमारे पास । भरथ खंड माहे जनम मानखे, कां न करो प्रकास || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -62
- आतण मंझे जे आवयो, जेडियूं हेरे मिडी । किंनीनी कींझो कत्तयो, किन न भगी रे भीडी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -3
- आतम अन्तस्करन विचारिए, अपने अनुभव का जो सुख । बढ़त बढ़त प्रेम आवहीं, परआतम सनमुख || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -41
- आतम एक हुई निसंक, ना रही जुदागी रंचक । प्रेम दिल भर हुई दिल, पिया प्रेमे रहे हिल मिल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -50
- आतम एक्यासी पख ले, सब दुनियां में खेलत । मोह अहं मूल इनको, सब याही बीच फिरत || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -6

- आतम को रे जगाए के, कौन खोले आतम के श्रवन रे । अंतर पट उड़ाए के, कौन केहेसी मूल वचन रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -62
- आतम चाहे बरनन करूं, जुगल किसोर विध दोए । ए दोए बरनन कैसे करूं, दोऊ एक कहावत सोए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -10
- आतम टले ज्यारे अंगथी, त्यारे अंग हाथे बाले । सेवा करतां जे वालपणे, ते सनमंध ऐवो पाले || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -13
- आतम तो फरामोस में, भई आड़ी नींद हुकम । सो फेर खड़ी तब होवहीं, रूह दिल याद आवे खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -17
- आतम धनी पेहेचानिए, निरमल एही उपाए । महामत कहे समझ धनी के, ग्रहिए सो प्रेमें पाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -106, चौ -16
- आतम नारायन नाचत बुध ब्रह्मा, निस दिन फिरे नारद मन । वैराट नटवा नाचत विध विध सों, नचवत व्यास करम || ग्रं - किरन्तन, प्र -6, चौ -5
- आतम ने परआतमा, भेला कोण करसे । आ भवसागर माहेथी, बीजो कोण लई तरसे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -56
- आतम ने सत परचे पाए, तो भी झूठा दुख छोड़या न जाए। जब सत सुख पाया रस, जीवरा तबहीं चल्या निकस || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -19
- आतम बंधी आस पिया, मन तन लगे वचन । कहे महामती कौन आवहीं, इत हुकम खसम के बिन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -18
- आतम मेरी हद में, जीव कहे बुधे उतर । बुध मन में कहावे जुबान सों, सो जुबां कहे क्यों कर || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -15
- आतम रूह न चीन्ह ही, ले माएने इलम ग्यान । आप खुदा हो बैठहीं, ए अबलीसें फूके कान || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -11
- आतम रोग कासों कहिए, जिन पीठ दई परआतम । ए रोग क्यों ए ना मिटे, जो लों देखे ना मुख ब्रह्म || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -2
- आतम रोग मिटावने, ए सुख, कहों मांहें सब्द । बेहद के पार के पार सुख, सो नेक बताऊं मांहें हद || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -18
- आतम विष्णु नाचत बुध सनतजी, गोकुल ग्रह्यो सिव मन । करम सुकदेव नाचत नचवत, गावत प्रगट वचन || ग्रं - किरन्तन, प्र -6, चौ -13
- आतम सदीवे एक छ, वासना एकै अंगजी । मूल आवेस जोगमाया पर, सुख अखंडना रंगजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -8
- आतम सदीवे एक है, वासना एकै अंग । मूल आवेस जोगमाया पर, सुख अखंड के रंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -12
- आतम सों न्यारे न कीजे, आतम बिन काहू न कहीजे । फेर फेर कीजे दरसन, आतम से न्यारे न कीजे अधखिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -176

- आतमना आधार छो मारा, जीवसूं जीव सनेह । करूं वात जीवन सखी, मुख माहेथी कहो जेह || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -16
- आतां अनुमाने बाण नाख्या उडाडी, बीजा भारी उडाडया न जाय । सनमुख मले नहीं जिहां सूरो, ते हथू का विना न चोडाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -128
- आतुर करी सर्वे जन, मीठडां बोले वचन । हेतरां हरतो मन, एवो अलवेलरी || ग्रं - रास, प्र -36, चौ -6
- आद अंत याको नहीं, नहीं रूप रंग रेख । अंग न इंद्री तेज न जोत, ऐसी आप अलेख || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -5
- आद आदम के छपन सै, बीते जब सैंतीस । तबहीं दस सदी पर, होसी नब्बे बरीस || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -11
- आद करके अबलों, परदा न खोल्या किन । सो बरकत मेंहेंदी महमद, खुल जासी सब जन || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -59
- आद के द्वार ना खुले आज दिन, ऐसा हुआ ना कोई खोले हम बिन । सो कुंजी दई मेरे हाथ, तूं खोल कारन अपने साथ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -93
- आद मध और अबलों, कोई न पोहोंच्या कद । खुद खबर किन न दई, बिना एक महमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -22
- आद मध और अबलों, सब बोले या विध । केवल विदेही हो गए, तिन भी ना कही सुध || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -11
- आद मध्य और अबलों, सब बोले या विध । केवल विदेही होए गए, तिन भी न कही ए सुध || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -11
- आदम औलाद दिल अबलीस, बैठा पातसाह दुस्मन होए । कया हवा खुदाए इन का, उलंघ जाए क्यों सोए || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -43
- आदम नसल हवा बिना, ज्यों मछली जल बिन । यों असल न छूटे अपनी, कही जुलमत दुनी वतन || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -53
- आदम नूह तोफान लग, एक गिरोह थी नूह अमल । सो पार हुई किस्ती चढ़, और काफर डूबे सब जल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -98
- आदम नूह मूसा इभराम, और अली भेला मांहें इमाम । महंमद ईसा पेहेले कहे, ए सातों कलमा आए इत भेले भए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -38
- आदम मिलो कई औलिए, अंबिए बड़े आकीन । नूरी कहावें फरिस्ते, पर किन रसूल को ना चीन || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -20
- आदम रूप वैराट, अनेक विध खेलत । झूठ कुफर कुली पसरया, सब सचराचर पसु मत || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -49
- आदमी छोड़ वजूद को, ले न सके रूह की चाल । दुनियां बंदी हवाए की, मोमिन बंदे नूरजमाल || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -63

- आंधी आई विरह की, तिन दियो ब्रह्मांड उड़ाए । विरहिन गिरी सो ना उठ सकी, रही मूल अंकूर भराए || ग्रं - सनंध, प्र -8, चौ -6
- आंधी आई विरह की, तिन दियो ब्रह्मांड उड़ाए। विरहिन गिरी सो उठ ना सकी, मूल अंकूर रही भराए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -6
- आधी जुए दुख अनेक उपजसे, ते माटे उठो तत्काल जी । जलना जीवनो घर जल मांहे, जेम रहे करोलियो माहें जाल जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -12
- आधे अखर का पाओ लगा, कबूं ना बाहेर । श्री धाम थे ल्याए धनी, तो हुए जाहेर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -146
- आधों आध हुइयां डारें, बन रंग सोभित दोऊ पारें । आगे बन के जो मन्दिर, ताको बरनन करूं क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -26
- आनंद घणो इंद्रावती, बांहोंडी कंठ मिलावती । लटकती चाले आवती, वालाजी जोडे जास री || ग्रं - रास, प्र -16, चौ -12
- आनंद घणो इंद्रावती, वालाजीने लागे पाए । अवसर छे काई अति घणो, वाला रासनी रामत मांहें || ग्रं - रास, प्र -29, चौ -11
- आनंद वतनी आइयो, लीजो उमंग कर । हँसते खेलते चलिए, देखिए अपनों घर || ग्रं - किरन्तन, प्र -80, चौ -7
- आनंदे रोतां रमिए एम, जेने कहिए ते लछण प्रेम । तेना उडी गया सर्वे नेम, रमतां कीधां कई चेहेन || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -1
- आनन्द मांहें सहुए सखियो, पैए जाय उजाणी । भूखण न दिए बाजवा, एणी चंचलाई जाय न बखाणी || ग्रं - रास, प्र -15, चौ -14
- आप अपने अर्स में, जाए ना सके बिना इलम । तो फुरमान इलम भेजिया, रूहें दरगाही जान खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -43
- आप अपने वतन पोहोंचते, अटकाव न होवे किन । जो जहां से आइया, धनी तहां पोहोंचावे तिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -25
- आप अर्स देखाइया, ज्यों देखिए नींद उड़ाए । जरा सक दिल ना रही, यों अर्स दिया बताए || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -17
- आप आगू रूहें बैठाए के, दिल से उपजाई हक । सुख देने देखाइया, अपने दिल का इस्क || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -65
- आप इमाम अजूं गोप है, होत आगे रोसन नूर । रात अंधेरी क्यों रहे, जब ऊग्या कायम सूर || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -18
- आप ओलखावे आप में, आप पुरावे साख । आतम को परआतमा, नजरों आवे साख्यात || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -52
- आप कहियो अपने साथ को, जो तुझे खुले वचन । सुध तो नहीं कछू साथ को, पर तो भी अपने सजन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -6

- आप खसम अजूं गोप है, आगे होत प्रकास । उदया सूर छिपे नहीं, गयो तिमर सब नास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -45
- आप छिपाया तुम हम से, झठे खेल में डार । फेर कर तुम खड़ी करी, करके गुन्हेगार || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -45
- आप जैसी कर बैठाई, तो भी प्रेम न उपज्या इत । सो रोवत हों अन्दर, फेर फेर जीव बिलखत || ग्रं - किरन्तन, प्र -97, चौ -18
- आप तणी पण खबर पडे, घर पर आतम रूदे चढे । ए अजवायूँ ज्यारे थयूं, त्यारे वली पाडूं सूं रयूं || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -14
- आप तणी सुध वीसरी, कोई ओलखाय नहीं पर । तेमां सगा समधी थईने बेठा, कहे आ अमारो घर || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -26
- आप दे फरामोसी, और जगावें भी आप । देखाई जुदाई फरामोस में, देने इस्क मिलाप || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -66
- आप न ओलखे दुनियां पोते, सूझे नहीं भोम गत । ए फेर भोम अंधेर तणो, तेणे रदे न आवे मत || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -7
- आप न ओलखे बंध न सूझे, करम तणी जे जाली । खोलतां खोलतां जे गुरगम पांम्यो, तो ते नाखे बंध बाली || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -60
- आप पकड़ तूं अपना, बल कर आंखां खोल । दूध पानी दोऊ जाहेर, देख नीके तारतम बोल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -4
- आप पछाडी ल्याओ छो धन, ऊंचा थावा रब्दे करो छो दान । नहीं रे आवे ते अरथ जीवने, लई जाय छे वचे अभिमान || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -13
- आप पेहेचान कराई अपनी, लई अपने पास जगाए जी। बड़ी बड़ाई दई आपथे, लई इंद्रावती कंठ लगाए जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -36, चौ -7
- आप फरामोसी ऐसी दई, जो भूलियां आप हक घर । ऊपर कई विध केहे केहे थके, पर जाग न सके क्योंए कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -10
- आप फरामोसी देय के, ऊपर से जगावत । तरंग हक इस्क के, हाए हाए दिल में न आवत || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -26
- आप फरामोसी देयके, ऊपर से जगावत । क्यों जागें बिना हुकमें, हक इन विध हाँसी करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -67
- आप बंधाणा आपसू, एणे कोहेडे अंधेर । चढ्यूं अमल जाणे जेहेरनूं, फरे ते माहे फेर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -11, चौ -5
- आप बंधाने आप से, इन कोहेड़े अंधेर । चढ्या अमल जानों जेहेर का, फिरत वाही के फेर || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -8
- आप बंधाने आप सों, इन कोहेड़े अंधेर । अमल चढ्या जानों जेहेर का, फिरत वाही में फेर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -5

- आप बैठे दिल देय के, ऊपर बारे हजार । फरामोसी हांसी होएसी, जिनको नहीं सुमार || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -51
- आप बैठे दिल देय के, ऊपर बारे हजार । होसी हाँसी सब मेयराज में, जिन को नहीं सुमार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -78
- आप बैठे बीच में, ले अपनी तीन सूरत । ला मकान उलंघ के, नूर पार पोहोचत || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -47
- आप भी ना खोले दरबार, सो मझ से खोलाए कियो विस्तार । मोहे दई तारतम की करनवार, सो काहूं न अटको निरधार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -97
- आप भी भेख बदल के, आए अपना दिया इलम । सब बातें कही वतन की, पर पेहेचान न सकें हम || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -47
- आप भूले बेसक, बेसक भूले खसम । बेसक भूले बुध वतन, पर हकें बेसक दिया इलम || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -94
- आप भूलें या हक कदम, या भूलें अर्स घर । ऐसी निपट नादानी, हम करें क्यों कर || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -34
- आप मंगावें आप देवहीं, ए सब हाँसी को । ए सब जानें मोमिन, सक नहीं इनमों || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -16
- आप रसूल नहीं हद का, इनों अर्सअजीम असल । दुनी सुरिया उलंघ ना सके, पूरी हद की भी नहीं अकल || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -9
- आप राह अपनी मिने, ढूंढ्या सब फिरकन । कायम ठौर पाई नहीं, यों कया सबन || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -7
- आप हमें दिल उठाए के, खेल किया फरामोस । एती पुकारें हक की, आवत नाहीं होस || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -81
- आप हुकम आया इत, चलाया हुकम । हुकमें छलतें छोड़ाए के, जाहेर किए खोल इलम || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -47
- आप होए के नंगे पाए, तले की सफ में खड़ा आए । आजिज होए नमाया सीस, कहे मोको करो बकसीस || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -7
- आप होत फूल गगन, बढ़त जात गुमान । देखीतां छल छेतरे, हाए हाए ऐसी नार सुजान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -32
- आप होत फूल गगन, बढ़त जात गुमान । देखीतां छल छेतरे, हाए हाए ऐसी नार सुजान || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -31
- आपको पृथीपति कहावे, ऐसे केते गए बजाए । अमरपुर सिरदार कहिए, काल न छोड़त ताए || ग्रं - किरन्तन, प्र -48, चौ -3
- आपण ऊपर अति घणी रे, दया करे छे आधार । आपणे काजे देह धस्या, भंडा हजीए तूं कां न विचार || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -9

- आपण निद्रा केम करूं, निद्रानो नथी लाग । भरमनी निद्रा जे करे, काई तेहेनो ते मोटो अभाग || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -2
- आपण ने तेडवा आविया, आ दुस्तर माया मांहें । ओलखी ने कां ओसरे, भंडा एम थयो तू कांए || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -6
- आपण पेहेला पगला भरियां जेह, वली जे कीधा प्रेम सनेह । ते प्रगट कीधां आपण माट, धोक मारग ए आपणी वाट || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -4
- आपण पेहेला पगला भरियां सार, एम चालो म लावो वार । वली जो जो आ पेहेलां वचन, प्रेम सेवा एम राखो मन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -20
- आपण माया नी होसज कीधी, अने माया तो दुख निधान जी । ते संभारवाने काजे रे सखियो, वालो पाम्या ते अंतरध्यान जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -2, चौ -10
- आपण मांहें आंही आरोगसे, साथतणी द्रष्टे आवसे । थासे छेडा ग्रया लगण, मानसे मन त्यारे अति घण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -42
- आपण माहें बेठा छे सही, चरण कमल रेहेजो चित ग्रही । भरम भाजी ओलखजो धणी, दया आपण ऊपर अति घणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -24
- आपण रंग भर रमतां, बिरिख आडो आव्यो खिण एक । तमे प्रेमे जाण्यूं कई जुग वीत्या, एम दीठां दुख अनेक || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -36
- आपण रंग भर रमिए रास, वालोजी वली आविया रे । कांई उपनू अंग उलास, सुंदर सुख लाविया रे || ग्रं - रास, प्र -35, चौ -1
- आपण हजी नथी ओलख्या, जुओ विचारी मन । विविध पेरे समझावियां, अने कही निध तारतम || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -47
- आपणने ए प्रगट करी, साथ सकल लेजो चित धरी । तमे रखे हलवी करो ए वाण, पूरण दयाए कयूं निरवाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -5
- आपणने तेडवा आविया, साथ ऊपर छे पूरण दया । अनेक वचन आपणने कहया, पण भरम आडे कांई ख्दे नव रया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -48
- आपणने सिखामण कहे, पण भरम आडे कांई रूदे नव रहे । ते भरम उडाडो तमे जोई रास, जेम ओलखिए आपणो प्राणनाथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -7
- आपणमा कोइक कामनी वेख, एक वेख वालोजी वसेख । वालो पूरे कामनीनां काम, भाजे हैडा केरी हाम || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -23
- आपणमां थई वेख एक स्याम, जेणे निरखे पोहोंचे मन काम । वली थई वेख एक नंद, ते कान्हजी लडावे उछरंग || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -5
- आपणां घर तां नहीं एणे ठामे, चौद भवनमा क्यांहे जी । ते माटे वालोजी करे रे पुकार, केहे स्या ने सूता छो आहे जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -15
- आपणां घरनी वातज थई, अने तमने थाकी हूं कही कही । ए घर केम हूं प्रगट करूं, तम थकी नथी कांईए परं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -7

- आपणी मीटे दीठां सही, पण आणी जिभ्याए केहेवाय नहीं । भोम कणका जो गणाए, सायर लेहेरे उठे जल महे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -11, चौ -8
- आपणू धन तां एह छे, जे दिए छे आधार । रखे अधखिण तमें मूकता, वालो कहे छे वारंवार || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -80
- आपन आए वास्ते मजकूर, अर्स से उतर । तो ए दुनियां जो तिलसम की, सो माने क्यों कर || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -67
- आपन करी जो पेहेले चाल, प्रेम मगन बीते ज्यों हाल । ए सब किया अपने कारन, एही पैंडा अपना चलन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -4
- आपन को फरामोस की, नींद आई निहायत । अर्स अजीम में कूदते, कछू चल्या न हकसों इत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -15
- आपन बैठे बीच अर्स के, अर्स को नाहीं सुमार । दसों दिस मन दौड़ाइए, काहूं न आवे पार || ग्रं - खुलासा, प्र -18, चौ -5
- आपन माया की होस जो करी, और माया तो दुख निधान जी । सो याद देने को रे साथ जी, पिउ भए अंतरध्यान जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -10
- आपन में बैठे आधार, खेल देखाया खोल के द्वार । अब माया कोटान कोट करे प्रकार, तो इत साथ को न छोडूं निरधार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -1
- आपन सामी हाँसी करें हकसों, चले ना खेल को बल । आपन आणू चेतन हुइयाँ, रहिए एक दूजी हिल मिल || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -21
- आपन सोए हैं अर्स में, तले हक कदम । ए जो खेल खेलावे खेलमें, कोई है बिना हक हुकम || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -6
- आपने नव ओलखे, नव ओलखे परमेस्वर । तो पार ते केम पामे, जिहां सुध न पोते घर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -3, चौ -8
- आपा में पेहेचानिया, सनमंध हुआ सत । ए मेहेर कही न जावहीं, सब सुध परी उतपत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -7
- आपा मैं पेहेचानिया, सनमंध हुआ सत । ए मेहेर जुबां क्यों कर कहूं, गई मूल से गफलत || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -7
- आपे नाम जुदे जुदे, खुदा के धरे अनेक । अनेक रंगे संगे टुंगे, बादे करे विवेक || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -36
- आपोपूं ओलखावी करी रे, मूने दीधो वदेस । अवगुण जे में कीधां मारा वाला, तेणी तमे हजी न मूको रीस || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -12
- आपोपूं ओलखावी मारा वाला, दरपण दाखो छो प्राणनाथ । दरपणनूं सूं काम पडे, ज्यारे पेहेस्यूं ते कंकण हाथ || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -10
- आपोपूं तिहां बांधीने आपे, सर्वा अंगे दृढ़ मन । रात दिवस सेवा करे, एम बंधाणां सहु जन || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -27

- आपोषू ओलखावी करी, आप रह्या अंत्रीख । पडदा पाछा कीधां पछी, न जाणूं जीव राख्यो केही रीत || ग्रं - खटरुती, प्र -7, चौ -5
- आपोषू ओलखावी करीने, पोताने पासे तेडी लीधी जी । इंद्रावती ने एकांत सुख दीधां, आप सरीखडी कीधी जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -36, चौ -7
- आब ऊपर जो चबूतरा, फिरते देखिए छोटे द्वार । दे परिकरमा आइए, देख आइए घाट चार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -100
- आब हैयाती इन विध, अर्स से रूहें ल्यावत । ए बरकत रूह अल्लाह की, यों अर्स मता आया इत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -98
- आब हैयाती न पाइया, दौड़या सिकंदर । काहूँ न पाया ठौर कायम, यों कहे सब पैगंमर || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -6
- आब हैयाती बका मिने, झूठी जिमी आवे क्यों कर । दिल आवे अर्स मोमिन के, और न कोई कादर || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -94
- आंबा आंबलियो ने आसोपालव, अंजीर ने अखोड । अननास ने आंबलियो दीसे, चारोली चंपा छोड || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -2
- आंबों बोए जल सींचियो, तबहीं फूले फलियो । बिध बिध की रंग बेलियां, बन ऊपर चढ़ियो || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -151
- आंबो वावी जल सीचियो, खिणमां फूले फलियो । विध विधनी रंग वेलडी, वन ऊपर चढियो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -129
- आभ्रण पेहेरी अस्व चढे, कोई करे छाया छत्र । कोई नाटारंभ करे, कोई बजाडे वाजंत्र || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -23
- आम खलक जो तीसरी, पैदा जो जुलमात । सो अटके वजूद में, पकड़े पुल-सरात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -51
- आमला अवला अति घणा, कालमायाना छे जोर । बांक चूक विसमा टालीने, करी दऊं ते पाधरा दोर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -24
- आमलिया अलेखे दीसे, लेहेरों मेर- समान । मछ जोरावर मांहें छे मोटा, पाल करवी एणे ठाम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -111
- आमले उलटे मोह के, और मोह तो तिमर घोर । ए घोर रैन टालूं या बिध, ज्यों सब कोई कहे भयो भोर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -23
- आय जरासिंध मथुरा घेरी सही, तब श्रीकृष्णजी को अति चिंता भई । यों याद करते आया विचार, तब कृष्ण विष्णु मय भए निरधार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -55
- आयतें हदीसें रसूल, और किताबें सब । खोलसी इसारतें रमूजें, होसी पेहेचान तब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -62
- आयतें हदीसें सब कहे, खुदा एक महंमद बरहक । और न कोई आगे पीछे, बिना महंमद बुजरक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -88

- आयतों हदीसों माएने, जो देखो हक इलम ले । तो खासलखास खासे आम की, तीनों जाहेर देखाई दे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -96
- आया असराफील आखिर, महंमद मेंहेंदी साथ । मुसाफ असराफील को, दिया अपने हाथ || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -8
- आया असराफील आखिर, साथ आखिरी इमाम । माएने मगज मुसाफ के, किए जाहेर सब तमाम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -85
- आया इमाम आलम का, तब कफर रेहेवे कित । पर कहूं मोमिन दज्जाल की, नेक हुई लड़ाई इत || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -3
- आया इलम लदुन्नी, कहे साहेदी एक खुदाए । तरफ पाई हक इलमें, मैं बका पोहोंची इन राह || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -2
- आया दरवाजा धाम का, सांचों बाढ़या बल । आए गए छाया मिने, धनी छाया निरमल || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -16
- आया नजीक बखत मोमिनों, क्यों भूलिए हादी नसीहत । जो सुपने कदम न भूलिए, हँसिए हकसों ले निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -20
- आया नहीं माया के आड़े, तें किया न मेरा काम । अवसर आए चूक्या चंडाल, रेहे गई हैड़े में हाम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -78
- आया फरमान खेल देखावने, और आया हक इलम । ए खेल नीके तब देखिया, जब देख्या बैठे तले कदम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -73
- आया फुरमान रूहअल्ला पर, करसी एही कयामत के काम । मार दज्जाल एक दीन कर, देसी हैयाती तमाम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -76
- आया बीच हिंदुअन के, मुसाफ हक हुकम । सो खलक रानी गई, जिन छोड़े हक हादी कदम || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -44
- आया रसूल पुकारता, राह सीधी बका वतन । ए माएने कौन लेवहीं, बिना अर्स रूह मोमिन || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -41
- आया सख्प कर नए सिनगार, भजनानंद सुख लिए अपार । दोऊ आतम खेले मिने खांत, सुख जोस दियो कई भात || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -40
- आया सबका खसम, सब सब्दों का उस्ताद । महंमद मेंहेंदी आए बिना, कौन मिटावे वाद || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -41
- आयो मिठडो मेहेबूब, आऊं पण पिरन सांण । अची बिठासी हिंद में, डिजां सिंधडी जाण || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -9
- आरबों सों ऐसा कया, कागद ए परवान । आवसी रब आलम का, तब खोलसी कुरान || ग्रं - खुलासा, प्र -14, चौ -3
- आराम अर्स बका मिने, हक दिल दे देवें सुख । ए सुख इन आकार से, क्यों कर कहूं इन मुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -62

- आराम इस्क इन वतन का, हक का सुन्या आपन । अजहूँ न विरहा आवत, सुन के एह वचन || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -23
- आराम तो इन विध लेवें, सबे भरी अहंकार । पूरन हित पिउसों चित्त, जिनको नहीं सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -3
- आरिफ कहावें आपको, होए बजरक मांहें दीन । कया हादी का रद करें, यों खोवत हैं आकीन || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -35
- आरोग्या अति हेतसों, राज साथ संघाते । प्रीसंतां प्रेम जो में दीठो, ते न केहेवाय भाते || ग्रं - रास, प्र -46, चौ -12
- आरोग्या आनंद सों, जेणे जे भाव्यां । दूध दधी ते ऊपर, लाडबाई लई आव्यां || ग्रं - रास, प्र -46, चौ -15
- आरोग्यां वन फल स्वादे, जल जमुना त्रट सार । वृंदावन वाले जुगतें देखाड्यूं, आगल रही आधार || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -35
- आरोग्या सहु अति रंगे, बीडी लीधी श्री मुख । बेठा मली वातो करवा, वाणी लेवा सुख || ग्रं - रास, प्र -46, चौ -19
- आलम सब अल्लाह की, तामें छोड़ी ना काहूं हद । दौड़ के कोई न पोहोंचिया, बिना एक महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -4
- आलिंघण लिए, रंग रस पिए । बंने सुख लिए, लथबथ थिए, आ भीनी स्यामा पतसूं || ग्रं - रास, प्र -26, चौ -7
- आलिंघण लेता अमृत पीतां, विनोद कीधा घणां हाँस रे । कठण भीडाभीड न कीजे रे वालैया, मुंझाय अमारा स्वांस रे || ग्रं - रास, प्र -25, चौ -9
- आलोटे दुख पामे मन, अंग मांहें लागी अगिन । त्यारे वली सुकजी ओचरया, आंसू लोवरावी बेठा करया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -17
- आवत जात जो खबरें, सो परदे से देखत । बैठी तले कदम के, लेवत एह लज्जत || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -61
- आवत मोहोलें मुजरे, इतका जो लसकर । ताके एक बाल के नूरसों, रही भराए जिमी अंबर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -11
- आवत संदेसे परदे से, बीच गिरो मोमिन । क्यों ना विचारो अकल सों, कर पाक दिल रोसन || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -57
- आवसी उमत अर्स से, ए खेल को देखन । करें हक को जाहेर, सब का एह कारन || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -42
- आवसी धनी धनी रे सब कोई केहेते, आगमी करते पुकार । सो सत बानी सबों की करी, अब आए करो दीदार || ग्रं - किरन्तन, प्र -53, चौ -7
- आवसी साथ ए देख प्रकास, अंधकार सब कियो नास । एह वचन अब केते कहूं, इन लीला को पार ना लहूं || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -21

SRJN

- आवसे साथ उछाह अति घणां, पण तमे वचन को रखे तारतम तणां । बेहेर दृष्टतणो जोई अजवास, आनंद मन उपजसे साथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -43
- आवसे साथ सकल परवरी, रासतणा वचन चित धरी । एह वचन हवे केटला कहूं, आ लीलानो पार नव लहूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -18
- आवाज उनकी थी इन पर, चाहे आप कोई लेवे खबर । ए सुनियो दूजी विख्यात, दूजे जामें की कहूं बात || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -15, चौ -5
- आवी केसरबाई कहे रे बेहेनी, सुणो वात कहूं तमसूं । भली रामत वालातूं रंगे करी, हवे मूको रमे अमसूं || ग्रं - रास, प्र -39, चौ -1
- आवी लखमीजी ऊभा रया, श्री भगवानजी तिहां जाग्रत थया । लखमीजी करे विनती, अमे बीजो कोई देखतां नथी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -21
- आवे अर्स आकीन हक महंमद पर, जो देखो हकीकत मारफत । इलम लदुन्नी हक के, होए हक हिदायत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -38
- आवे अर्स से हुकम, तिन हकमें चले हुकम । फिरे सो मतलब करके, जाए मिले खसम || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -14
- आवे जब उजालियां, हम खेलें लेकर ढ़ोल । पिया करें विनोद हांसियां, सो कहे न जाए बोल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -52
- आवे जाए मांहें खेलहीं, अपने बल उमर । ढूंढ्या फेर न पाइए, ए मुआ क्यों कर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -46
- आवेग यकीन तुमारे ताई, पनाह मांगो हिन्दके मुसलमानों से || ग्रं - सनंध, प्र -34, चौ -11
- आवेगा बरसात ज्यों, छोड़े ना कोई घर । मैं केहेता हों तुम देखियो, ऐसा होसी मुझ बिगर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -7
- आवेस अंग आपी आधार, दई तारतम उघाड्या बार । घर थकी वचन लई आव्या, ते तां सुंदरबाईने कहया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -20
- आवेस को नहीं अटकल, पर जागनी अति भारी । आवेस जागनी तारतमें, जो देखो जाग विचारी || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -48
- आवेस जाको मैं देखे पूरे, जोगमाया की नींद होए । पर जो सुख दीसे जागनी, हम बिना न जाने कोए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -46
- आवेस जेहेने मैं दीठां पूरा, जोगमायानी निद्रा तोहे । पण जे सुख दीसे जागतां, अम विना न जाणे कोय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -46
- आवेस मुझपे पिया को, तिन भेली करूं सोहागिन । सब सोहागिन मिल के, सुख लेसी मूल वतन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -13
- आवेस मू कने धणी तणों, तेणे करूं भेलो साथ । साथ मली सहु एकठो, विनोद थासे विलास || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -13

- आवेस लइने जगवया, त्यारे पाम्या अंतरध्यानजी । विलास विरह चित चोकस करवा, संभारवा घर श्री धामजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -11
- आवेसने नहीं अटकल, पण जागवं अति भारी । आवेस जागवू बंने तारतमें, जो जुओ जुगत विचारी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -48
- आवेसे धणी ओलखाय, ओलखे खिण जुआ न रेहेवाय । ते माटे जो एम न थाय, तो आ वाणी केम केहेवाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -68
- आवो अवसर केम भूलिए, कारण एक कोलिया अंन । एटला माटे आप मुझाई, केटला करो छो कई कोट विघन || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -1
- आवो रे वाला हूं आंखडी मीचूं, आंखडी ते मीचजो गाढो । अमे जईने वनमा छपिए, पछे तमे खोलीने काढो || ग्रं - रास, प्र -15, चौ -4
- आवो रे सखियो आपण हमची खंदिए, वालाजीने भेला लीजे रे । रामत करतां गीतज गाइए, हांस विनोद रंगडा कीजे रे || ग्रं - रास, प्र -14, चौ -1
- आवो वली बाथो बीजी लीजिए, एक पूठीने अनेक । हमणां हरा, तमने, वली हंसावू वसेक || ग्रं - रास, प्र -41, चौ -17
- आवो वाला रामत रासनी कीजे, आपण कंठडे बाहोंडी कां न लीजे रे || ग्रं - रास, प्र -25, चौ -1
- आवोजी वाला म्हारे घेर, आवो जी वाला । एकलडी परदेसमां, मूने मूकीने कां चाल्या || ग्रं - किरन्तन, प्र -45, चौ -1
- आव्या ते बुधना सागर, बुध रूदे भराणी । भगवानजी ने महादेवजी, पूछे बेहद वाणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -3
- आव्या धणी न ओलख्या, अमे भूल्या एणी भांत । विना विचारे न समझ्या, निगमी निध साख्यात || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -53
- आस बंधाई हुकमें, हुकमें कराई उमेद । आप इस्क की बुजरकी, कर मेहेर देखाए कई भेद || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -9
- आसंका न रहे किसी की, जो कीजे तारतम विचार जी । सो रोसनाई ले तारतम की, आए आपन में आधार जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -15
- आसमान छाया पंखियों, सब खुबी देखावत । आप अपनी साधना, सब खेल की साधत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -45
- आसमान जिमी की दुनियां, कथे इलम करे कसब । किन एक न बका पाइया, दौड़ दौड़ थके सब || ग्रं - खुलासा, प्र -6, चौ -8
- आसमान जिमी की दुनियां, करी सबों ने दौर । तरफ न पाई हक सूरत, पाई ना अर्स बका ठौर || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -2
- आसमान जिमी के बीच में, बातें बिना हिसाब । तिनमें बातें जो हक की, सो लिखी मिने किताब || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -45

- आसमान जिमी के बीच में, बेसक हुता न कोए । जब लग सक दुनियां मिने, तो कायम क्यों कर होए || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -3
- आसमान जिमी के बीच में, भरी जोत उठें कई रंग । घट बढ़ काहूं है नहीं, करें दिल चाही कई जंग || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -34
- आसमान जिमी के लोक का, सब्द छोड़े ना सुरिया को । बिन मोमिन सब दुनियां, खात गोते फना मों || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -17
- आसमान जिमी के लोक को, अर्स बका नाहीं खबर । तो तिनका कासिद महंमद, होए अर्स से आवे क्यों कर || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -11
- आसमान जिमी जड़ मूल से, एक फूंके देवे उड़ाए। कायम करे सब दूजी फूंकें, बका भिस्त में उठाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -90
- आसमान जिमी जे विचमें, के चेयो न बका जो हरफ । एहेडो कोए न थेयो, जे तो बका डेखारे तरफ || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -19
- आसमान जिमी जे विचमें, व्यो कोए न चाए हक । से हंद सभे उडी वेयां, जे सिजदा कंदी हुई खलक || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -13
- आसमान जिमी तारे नूर के, नूर चांद और सूर । रंग रूत नूर वाए बादल, गाजे बीज नूर भरपूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -17
- आसमान जिमी पाताल लग, सब झूठे झूठ मन्डल । ऐसे झूठे खेल में, तुम जाओगे सब रल || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -56
- आसमान जिमी बीच फना के, ए सबमें सब्द पुकार । फेर याही को दूजा कहें, जो हक इलमें न खबरदार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -20
- आसमान जिमी बीच फना के, हवा लग ला-मकान । ला लग पोहोंचे तरीकत, मुसाफ हकीकत बका बयान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -17
- आसवाई कमलावती, कांई फूलबाई मल्या । चंपावती चारे मली, सिणगार कीधां भेला || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -19
- आसा उमेद धनी की, बल बुध ठौर धनी। पिंड न रह्यो ब्रह्मांड, तुम ही में रही करनी || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -38
- आसां उमेदूं जे हुज्जतूं, सभ तूंहीं उपाइए । मुंजे महें तेतरी निकरे, जेतरी तूं चाइए || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -62
- आसा पूरो सुख देओ, नए नए कराऊं सिनगार । यो पूरी मस्ती ना बेहोसी, सुख लेऊं सब अंग समार || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -27
- आसिक अटके सब अंगों, देख देख रूप सलूक । एक नेक अंग के सुख में, रूह हो जात टूक टूक || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -19
- आसिक अपने सौक को, विध विध सुख चहे । सोई विध विध रूप सरूप के, नई नई लज्जत लहे || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -31

- आसिक अरवा कहावहीं, तिन मुख विरहा ना निकसत । जब दिल विरहा जानिया, तब आह अंग चीर चलत || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -13
- आसिक अर्स अजीम की, चाहे मिलना हमेसगी । चाहे साहेब और उमत, उनकी एही बंदगी || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -23
- आसिक आवत मासूक की, ताको छिपो राखों उजास । राह देखों और रूहन की, सब मिल होसी विलास || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -49
- आसिक इन चरन की, अर्स मेला रूहन । ए खिलवत खाना गैब का, जिन इत किया रोसन || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -86
- आसिक इन चरन की, आसिक की रूह चरन । एह जुदागी क्यों सहे, रूह बिना अपने तन || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -1
- आसिक इन मासूक की, नए सुख चाहे अनेक । निरखे नए नए सिनगार, जानें एक से दूजा विसेक || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -4
- आसिक एक अंग अटके, तिनको एह कारन । दोऊ अंग मासूक के, किन छोड़े लेवें किन || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -36
- आसिक एही विचार हीं, तब याही में रहे लपटाए । अंदर हक पेचन से, क्यों कर निकस्यो जाए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -31
- आसिक कबूं ना अटके, करत अंग कुरबान । ना जीव अंग आसिक के, जीव पिउ अंग में जान || ग्रं - किरन्तन, प्र -91, चौ -11
- आसिक कबूं ना करे, ऐसी उलटी बात । केहेने सुख लोकन को, पाए विछोहा हक जात || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -15
- आसिक कहावे आपको, फेरे बोलावना भरतार । जाए न बोलाई खसम की, सो औरत बे-एतबार || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -18
- आसिक कहिए तिन को, जो हक पर होए कुरबान । सौ भांतें मासूक के, सुख गुझ लेवे सुभान || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -8
- आसिक कहिए हक की, जो लग रहे एकै ठौर । आसिक ऐसी चाहिए, जो ले न सके अंग और || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -132
- आसिक कहीं न करे, हेडी अवरी गाल । चोणों गुझ लोकन के, पाए विछोडो नूरजमाल || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -15
- आसिक कहया अल्लाह को, मासूक कहया महंमद । न जाए खोले मायने, बिना इमाम एक सब्द || ग्रं - सनंध, प्र -1, चौ -2
- आसिक की एही बंदगी, जाहेर न जाने कोए। और आसिक भी न बूझहीं, एक होत दोऊ से सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -68
- आसिक क्यों बरनन करे, इस्क लिए रेहेमान । एक अंग को देखन लगी, सो तित ही भई गलतान || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -23

- आसिक खुद खसम की, कोई प्रेम कहो विरहिन । ताए कोई दरदन कहो, ए बिध अर्स रूहन || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -20
- आसिक गुझ मासूक का, सो लेवत है रोए रोए । ऐसी उलटी अकल आसिक की, सुख कहे औरों को सोए || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -16
- आसिक गुझ मासूक जो, गिने थी रोए रोए । डिसो उंधी अकल आसिक जी, बिंजी बियन के चोए || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -16
- आसिक चाए पांण के, हेडी करे न कोए । कोठी न वंजे कांधजी, सा निखर भाईजा जोए || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -18
- आसिक चाहे मैं देखों, हक यों पेच लेत हाथ माहें । कई विध फेरें पेच को, कोई इन सुख निमूना नाहे || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -39
- आसिक चोंजे तिनके, थिए पिरी उतां कुरबान । सए भते मासूक जा, सुख गुझां गिने पांण || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -8
- आसिक जाए कहूं ना सके, छोड़ सुख हक श्रवन । हिसाब नहीं गुन कानों के, कोई सके न ए गुन गिन || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -17
- आसिक तो भी एह है, और मासूक तो भी एह । खूबी सोभा सब इनकी, प्यारा प्रेम सनेह || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -19
- आसिक न लेवे दानाई, पर ए दानाई हक । इस्क आपे पीवहीं, और पिलावें बेसक || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -135
- आसिक नाचे अर्स अजीम में, दूजा नाच न सके इन तान । और राहै में जलें आवते, बिना दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -33
- आसिक नाम अल्लाह का, तो लिख्या इप्तदाए । इस्क न पाइए और कहूं, बिना एक खुदाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -7
- आसिक न्हारे नजरे, मासूक बेठो रोए । हेडी कडे उलटी, आसिक से न होए || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -25
- आसिक पकड़े जो दावन, तो छटे नहीं क्योंए कर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -93
- आसिक प्यारी पिउ की, कोई प्रेम कहो विरहिन । ताए कोई दरदन कहो, ए लछन सोहागिन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -2
- आसिक बसत अर्स तले, या बसे अर्स के माहें । ए खुसबोए मस्ती अर्स की, निसदिन पीवे ताहे || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -19
- आसिक मासूक दो अंग, दोऊ इस्के होत एक । तो आसिक मासूक के दिल को, क्यों ना कहे गुझ विवेक || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -103
- आसिक मासूक दो लिखे, दोऊ एक केहेलाए। दो कहे कुफर होत है, अब काजी क्या फुरमाए || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -51

SPJIN

- आसिक मेरा नाम, रूह-अल्ला आसिक मेरा नाम । इस्क मेरा रूहन सों, मेरा उमत में आराम || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -1
- आसिक रूह जित अटकी, अंग भूखन या वस्तर । यासों लगी गुफ्तगोएरे में, सो छूटे नहीं क्यौंए कर || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -58
- आसिक सबे इस्क में, या चांद या सूर । या तारा या आकास, सब इस्कै का जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -33
- आहीं अछर, विलस्यो मन, पांच तत्व चौद भवन । एमां विष्णु मन बीजो मननो विलास, रच्यो एह स्वांस नो स्वांस || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -7
- आंही अम माथी अदृष्ट थया, अमे सारा साजा बेसी रया । जो काई जीवने आवे भाय, तो आ वचन केम काने संभलाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -63
- आंहीं तेजनो अंबार पूरा, जोत क्यांहें न झलाय । एणे प्रकासे सहु प्रगट कीबूं, जिहांथी उतपन ब्रहमांड थाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -101
- आंही सोहेली थई तम थकी, एहेने ओलखतूं कोय नथी । सुकदेवें तो कांईक कथी, बीजा रह्या मथी मथी || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -35

इ

- इखडा न डिसे आकार, दिलडा डुख पसंन । से डुख डिसे दिल रांदमें, डुख न बकामें तन || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -20
- इछा हुती जोयातणी, ते तां पूरण न थई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -104
- इजार जो नीली लाहि की, नेफा लाल अतलस । नेफे बेल मोहोरी कांगरी, क्यों कहूं नंग जरी अर्स || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -41
- इजार देखत पाउं में, लेत झांई जामें पर । हाए हाए खूबी इन चाल की, ए जुबां कहे क्यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -59
- इजार बंध नंग कई रंग, और कई कांगरी बेल माहें । फूल पात कई नकस, सब्द न पोहोंचे ताहें || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -43
- इजार बंध नंग कई रंग, कई बूटी कई नकस । निरमान न होए इन जुबां, ए वस्तर अजीम अर्स || ग्रं - सिनगार, प्र -10, चौ -3
- इजार बंध याही रस का, भांत भांत झलकत । देख लटकते कुंदन, हाए हाए अरवा क्यों न कढ़त || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -30
- इजार रंग जो केसरी, झांईं जामें में लेत । दावन जड़ाव अति जगमगे, रंग सोभे केसरी पर सेत || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -57
- इंड अखंड भी जाहेर, किए जागनी जोत । अब सुन्य फोड़ आगे चली, जहां थे इंड पैदा होत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -8

- इत अंगद बाल सुग्रीव, गरूड़ जाबू हनुमान । ए उठावें पहाड़ को, ऐसे कहे बलवान || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -23
- इत अछर आवे नित्याने, मेरे धनी के दीदार । ए निसबत भई हम गिरोह की, क्यों कहूं इन सुख को पार || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -11
- इत अछर को विलस्यो मन, पांच तत्व चौदे भवन । यामें महाविष्णु मन मन थें त्रैगुन, ताथें थिर चर सब उतपन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -18
- इत अनेक वनस्पति, कई पसु पंखी करें जिकर । हम इत सुख लेती हक सों, जानों बैठक एही खूबतर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -18
- इत अनेक विधों के जो नंग, ताकी किरना देखावें कई रंग । आवत साम सामी अभंग, सो मैं क्यों कहूं नूर तरंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -167
- इत असलू रूह विष्णु की, दूजी रूह कुफरान । इन दोऊ से न्यारे मोमिन, सो आगे कहूंगी पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -3
- इत आए करी जो रसूलें, सो नेक कहूं प्रकास । तबक चौदे उजाला, किया तिमर सब नास || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -1
- इत आँखें चाहिए हक इलम की, तो हक देखिए नैना बातन । नैना बातून खुलें हक इलमें, ए सहूर है बीच मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -109
- इत आगू लाल चबूतरे, भोम क्यों कहूं बन विस्तार । खेल पसु पंखियन को, जुबां कहे जो होवे कहूं पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -98
- इत आद अंत ना थिर चर, नर ना कोई नार । अंधेर ना कछू उजाला, ना निराकार आकार || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -44
- इत आवत झरोखे मुजरे, हमारे मेहेबूब के । ए सुख धनी हमको, फेर कब देखाओगे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -19, चौ -9
- इत इमाम करें इमामत, हक बका सूरत देखाए । करें मोमिनात मोमिन सिजदा, कराए इस्कें खुदी उड़ाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -4
- इत इस्क कहां पाइए, आग पानी पत्थर पूजत । ए खेल देख्या एक निमख का, जानों हो गई कई मुद्दत || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -146
- इत इस्क बिना पोहोंचे नहीं, बिना हक हादी निसबत । इलम लदुन्नी फुरमाए से, पोहोंचे अर्स बका खिलवत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -31
- इत ईसा मसी आए के, पेहेले किया सरंजाम । काटे आउध दज्जाल के, पीछे आए रसूल इमाम || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -1
- इत और न कोई पोहोंचिया, ए हक हादी मोमिनों वतन । तो असराफील आइया, करने बका सबन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -20
- इत और बिरिख कई बड़े, निपट बड़े हैं बन । बन पर बन अति विस्तरे, कहां लग करूं रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -47

- इत कई चौक छाया मिने, कहूं चांदनी चौक । स्याम स्यामाजी सखियनसों, खेल करें कई जौक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -26
- इत कई नूर सिंघासन, बीच नूर तखत बैठक । हादी रूहें नूर मिलाए के, बैठत नूर ले हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -117
- इत कई रंग जवेरन के, तिन कई रंगों कई नूर । ए मिसाल इनकी, आकास न माए जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -17
- इत कई विध पसु खेलत, कई खेलत हैं जानवर । खेल बोल नाच देखावहीं, कई हँसावत लड़कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -21
- इत कई विध मेवा आरोगें, बनहीं को लेवें विभोगें । इत नित विलास विसाल, पीछे आए बैठे सुखपाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -138
- इत कजा जो करने बैठसी, तब हम काजी संग । वरन बदलसी दुनियां, पर ए दीन कायम रंग || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -28
- इत कठेड़ा चारों तरफों, बीच कठेड़ा ओर । इन बीच चारों हांसों कुंड बन्या, जल जात चल्या इन ठौर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -57
- इत कबूं न होए पुराना, ना पैदा कबूं नया । दीदार करें रूहें खिन में, खिन खिन दिल चाहया || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -199
- इत केतेक बन में हिंडोले, ए जो रूहें लेत इत सुख । लिबोई घाट इत आए मिल्या, सो सोभा क्यों कहूं या मुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -62
- इत क्यों कहूं खूबी हिंडोले, जित हींचें रूहें हादी हक । बयान न होए एक जंजीर, जो उमर जाए मुतलक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -30
- इत खडोकली जल हिलोले, धनी साथ झीलें-झकोले । इत सिनगार करके खेलें, ठौर जुदे जुदे जुत्थ मिलें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -76
- इत खावंद तो न पाइए, बीच आप के ऐब । पीछे कहें हम पाया बातून, हम ही हैं साहेब || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -10
- इत खिन का है जो लटका, जीत चलो भांवें हार । महामत हेत कर कहें साथ को, बिध बिध की करत पुकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -89, चौ -15
- इत खुदी न गुनाह किन सिर, या ढांप खोल तेरे हाथ || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -20
- इत खुली भोम जल ऊपर, चारों तरफों बराबर । चारों हिस्से हर तरफों, आधी खुली जिमी जल पर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -58
- इत खेल के आए चेहेबच्चे, अन्हाए के कियो सिनगार । पीछे चरनों लागें जुगल के, माहें माए ना मंदिरों झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -23
- इत खेलत कई जानवर, मृग मोर बांदर । कई मुरग तीतर लवा लरें, कई विध कबूतर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -12

- इत खेलत जुत्थ सैयन, सदा आनन्द इन वतन । मिनें राज स्यामाजी दोए, सुख याही आतम सब कोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -30
- इत खेलत रूहें अर्स की, जो स्यामें उतारी किस्ती पर । सो रूहें पोहोंची इन बाग में, और तोफाने डूबे काफर || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -26
- इत खेलत स्याम गोपियां, ए जो किया अर्स रूहों विलास । है ना कोई दूसरा, जो खेले मेहेबूब बिना रास || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -13
- इत घाट नारंगी पोहोंचिया, दोऊ तरफों इत । बट घाट निकुन्ज ले, इन हद से आगू चलत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -44
- इत चल तूं हस्ती होए के, पेहेन पाखर गज घंट बजाए । पैठ सकोड़ सुई नाके मिने, जिन कहूं अंग अटकाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -13
- इत चार घड़ी लों बैठे, मेवा मिठाई आरोग के उठे । दाहिनी तरफ दूजा जो मंदिर, आए बैठे ताके अंदर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -92
- इत जरा छोटा बड़ा नूर का, या हौज जोए मोहोलात । अर्स जरे की इन जुबां, सिफत न कही जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -42
- इत जल वाए के चलत जो पूर, सो मैं क्या कहूं ताको नूर । जल के जो उठत तरंग, ताकी किरना देखावे कई रंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -18
- इत जुध किए कई सूरमें, पेहेन टोप सिल्हे पाखर । बचन बड़ें रन बोल के, सो भी उलट पड़े आखिर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -31
- इत जुध किए कई सूरमों, पेहेन टोप सिल्हे पाखर । वचन बड़े रण बोलके, उलट पड़े आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -35
- इत जो करी मजकूर, अजूं सोई है साइत । चार घड़ी दिन पीछला, तुम जानो हुई मुद्दत || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -46
- इत जोत जिमी की क्यों कहूं, हओ आकास जिमी एक । सोभा क्यों कहूं आगू अर्स के, जानों सबसे एह विसेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -14
- इत तखत कदेले कुरसियां, बैठें रूहें बारे हजार । सुख इतके हमारे कहां गए, मोर नचावनहार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -16
- इत ताल तले बन छाया मिने, रूहें बीच बगीचों मलपत । ए सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -74
- इत तीन सूरत आए मिली, भांत भांत साहेदी ले । सो लगाए देखो तुम रूह सों, ए इलम लदुन्नी जे || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -43
- इत थें अमल भयो इमाम, चालीस बरसों फजर तमाम । जोड़ा पर जोड़ा गुजरे, दुनियां उमर इत लों करे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -45
- इत थें आए महंमद, ल्याए फरमान हकीकत । देखाए खोल माएने, अर्स हक सूरत || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -4

- इत दाहिनी तरफ जो मन्दिर, गिनती बारे हजार । इन मन्दिरों खेलें भुलवनी, हर मन्दिर द्वार चार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -10
- इत दिवाल तले दस खिड़कियां, जित रूहें आ जाए । ए खूबी आवे तो नजरों, जो विचार कीजे रूह माहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -53
- इत दुनियां चौदे तबक में, एक दम उठत है जे । जो हक सहूर कर देखिए, तो सब वास्ते इस्क के || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -20
- इत दूर लों बन है नहीं, बोहोत बड़ो मैदान । अस्वारी होए इसही तरफ, जब कबूं करें सुभान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -66
- इत दूसरा कोई कहूं नहीं, सब देख्या हुकम इलम । जो ए उड़े नाबूद हुकमें, तो देखो बैठे आगे खसम || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -11
- इत देख फेर फेर तूं, अपनी रूह की आंखां खोल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -24
- इत दोऊ तरफों कठेड़ा, ऊपर सोभित जल निरमल । जहां लग जल ढांप्या चल्या, जुबां कहा कहे इन अकल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -10
- इत धरया जो सिंघासन, राज स्यामा जी के दोऊ आसन । ताको रंग सोभित कंचन, जड़े मानिक मोती रतन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -170
- इत नया न पुराना, न कम ज्यादा होए। इत वाहेदत में दूसरा, कबहूं न कहिए कोए || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -48
- इत नहीं तत्व गुन निरगुन, पख नहीं परमान । अंग ना इंद्री जान ना आवन, लख नहीं निरमान || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -43
- इत ना मैं आई ना फिरी, ए तो हकमें किया पसार । ए मैं हुकमें में करी, अब हुकम देत मैं मार || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -42
- इत निमूना तो कहिए, जो कोई छोटा होवे और । कायम जिमी में दूसरा, काहूं न पाइए ठौर || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -106
- इत नूर खिलवत हक की, रूहें नूर मोमिनों न्यामत । नूर मेला मूल मोमिनों, बीच हक का नूर तखत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -134
- इत पंथ पैंडे कई चलहीं, कई भेख दरसन । ता बीच अंधेरी ग्यान की, पावे न कोई निकसन || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -29
- इत परीछा प्रगट, उठावें अपना भार । बोझ निबाहें साथ को, और बोझ मसनंद भरतार || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -11
- इत पोहोंच्या ईसा रूहअल्ला, सो भी महंमद की सूरत । ताको हकें कही रूह अपनी, जाको खावंद खिताब आखिरत || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -22
- इत फिरते साठ मन्दिर, तिन बीच गलियां चार । चारों तरफों देखिए, जानों जोत का अंबार || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -58

- इत फेर उठे जो प्रतिबिंब, यामें साथ पिउ । खेल आए जाने हम नहीं, धोखा रया जिउ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -47
- इत बंगले बगीचे नूर के, नूर कारंजें कई उछलत । खूब खुसाली नूर भरी, नूर हँसें खेलें रमत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -17
- इत बड़ा मिलावा होई, जुदी रहे न या समें कोई । कोई छज्जों कोई जालिएं, कोई मोहोलों कोई मालिएं || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -91
- इत बड़े चौक मिलावे, धनी साथको बैठे खेलावें । जो खेल मांग्या है सैयन, सो देखाया फिराए के मन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -183
- इत बड़े जानवर खेलत, आगू बड़े दरबार । ए सुख कब हम लेयसी, मोमिन इत इंतजार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -5
- इत बड़े जानवर नूर में, नूर खेलत रूहें खुसाल । इत निपट बड़ा खेल नूर का, हँसे रूहें हादी नूरजमाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -14
- इत बात बड़ी है समझ की, और ईमान का काम । साथजी समझ ऐसी चाहिए, जैसा कया अल्ला कलाम || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -18
- इत बिछौने दुलीचे, ऊपर सोभित सिंघासन । सोभे कई भांतों छत्रियां, कब हक देवें हादी रूहन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -33
- इत बीच सिंघासन नूर का, नूरै का बिछौना । बैठे जुगल किसोर नूर में, कछू नाहीं न नूर बिना || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -9
- इत बैठ झूठी जिमी में, झूठी अकल झूठी जुबान । अर्स चीज मुकरर क्यों होवहीं, जो कायम अर्स सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -40
- इत बैठ निरख चरन को, देख चकलाई चित्त दे । नरम तली अति उज्जल, रूह तेरा सुख दायक ए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -211
- इत बोए बिरिख होत है, ताको फल पावे सब कोए । बीज जैसा फल तैसा, किया जो अपना सोए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -3
- इत बोए बिरिख होत है, ताको फल पावे सब कोए । बीज जैसा फल तैसा, किया जो अपना सोए || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -3
- इत बोहोत ठौर खेलन के, कई जिनसें तले ऊपर । बैठत दौड़त कूदत, खेलत कई हुनर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -46
- इत बोहोत रेतीमें सखियां, दौड़ दौड़ देत गलाटें । कूदें दौड़े ठेकत है, रेत उड़ावें पाउँ छांटें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -42
- इत ब्रहम लीला को बड़ो विस्तार, या मुखथें कहा कहूं प्रकार । ए तारतम को बड़ो उजास, धनी आएके कियो प्रकास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -28
- इत भी उजाला अखंड, पर किरना न इत पकराए। ए नूर सब एक होए चल्या, आगू अछरातीत समाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -33

- इत भी गुनाह सिर पर हुआ, याद न आया असल । तुम रोए लरखीज कया, तो भी रही न मूल अकल || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -48
- इत भी चारों तरफों बैठक, सोभा लेत अति सोए । तीनों तरफों कठेड़ा, जल उज्जल खुसबोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -6
- इत भेले रूह नूर बुध, और अग्या दया प्रकास । पूरों आस अछर की, मेरा सुख देखाए साख्यात || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -32
- इत मिलावा रूहन का, जो कही बारे हजार । उतरे लैलत-कदर में, एह तीसरा तकरार || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -13
- इत मुनाफक खतरा ल्यावते, जो कुराने कही कयामत । सो खास रूहें मोमिन आए, जाके दिल अर्स न्यामत || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -12
- इत में नेक न आवहीं, खड़े हकम तले जे । ए मैं हक की मेहेर लेय के, कर निसंक हिदायत ए || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -35
- इत मैं चलो जो अव्वल, कर यारों सों सहूर । तो खूबी होए तेहेकीक, नूर पर नूर सिर नूर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -38
- इत याही चौक के बीच, बिछाया है दुलीच । दुलीचा भी वाही रसम, ताकी अति जोत नरम पसम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -168
- इत रात अखण्ड सो तो टाली न टले, भी कह्या आगे ऊग्या रे दिन । सखियां पिउ उठे सब घर से, ए घर कौन रे उतपन || ग्रं - किरन्तन, प्र -13, चौ -7
- इत लगते जो मंदिर, हारें भुलवनी । केहे केहे मुख कहा कहे, सोभा अतंत घनी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -107
- इत लता चढ़ियां अति घन, ऊपर फूलों के फूले हैं बन । जानों जवेर रंग अनेक, कुंदन में जड़े विवेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -28
- इत लंबा बन आए मिल्या, जमना भर किनार । इतथे छत्री ले चल्या, पोहोंच्या पहाड़ के पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -17
- इत वाहेदत कबूं न जाहेर, झूठे हक को जानें क्यों कर। सुध वाहेदत क्यों ले सकें, जो उड़ें देखें नजर || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -100
- इत वृन्दावन रासलीला रातडी अखंड, खेलें पिउ गोपी जन । तो ऊधव संदेसे किन पर लाइया, कहो किनने किए रूदन || ग्रं - किरन्तन, प्र -13, चौ -6
- इत सक मोहे जरा नहीं, बन गलियों पसु खेलत । गिरदवाए गून्जे अर्स के, कई विध जिकर करत || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -36
- इत सब मुतलकियाँ चाहिए, बरनन करना मुतलक । लिख्या आखिर जाहेर होएसी, सूरत बका जात हक || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -53
- इत सब्द न पोहोंचे दुनी का, नेक इन की देऊ खबर । कायम हुआ साइत में, जो आया नूर नजर || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -15

- इत सहूर दुनी का ना चले, सुरिया छोड़े ना इनों अकल । सरभर करे मोमिन की, जिनकी अर्स असल || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -43
- इत सास्त्र सब्द कई पसरे, ताको खोज करे संसार । वाचा निवृत्ति मोह में, आड़ी भई निराकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -3
- इत सिखरें सब पहाड़ की, जानों जवेर सब नूर । सिखरें सब आसमान लों, जानों के गंज जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -24
- इत सुख लेवें सब मिलके, रूहें बड़ी रूह हकसों । सों फेर सुख कब हम देखसी, लेसी बैठके हिंडोलों || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -35
- इत सोभा चौक चांदनी, इन मोहोलों मुजरा जानवर । इन जुबां खूबी क्यों कहूं, ए जो बन में करें जिकर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -128
- इत सोभित नूर कांगरी, और सोभित नूर कलस । ए कलस कांगरी नूर के, सोभित नूर पर सरस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -122
- इत सोभित बन अमृत, और कई बिध बन अनेक । ए जाए मिल्या लग चांदनी, अर्स आगू बन विवेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -43
- इत हक कहावें हुकम कहे, वास्ते हादी रूहन । अर्स में केहेसी सुख खेल के, सिर ले कहे महामत मोमिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -38
- इत हमेसा होत है, इन कादर की कुदरत । ए खेल इन खावंद के, देखो नूर सिफत || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -13
- इत हुई पोहोर एक रात, सुखपाल चलावें चित चाहत । घरों आए सुखपाल सारे, राज स्यामाजी पांचमी भोम पधारे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -139
- इत हुकम एक हक का, और हकै का इलम । हुकम इलम या खेल को, देखो सोइयां तले कदम || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -7
- इत हुज्जत न रही काहू की, तुम देखो एह सुकन । एह खिताब महंमद मेंहेंदी पें, जिन रोसन किए मोमिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -18
- इतथे अर्ज भेजत हैं, सो पोहोचत हैं हक को । जो असल अकलें विचारिए, तो आवे दिल मों || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -58
- इतथे अली के जुदे हुए, बैठ फितने किया पसार । कई हुइयां लड़ाइयां जमातसे, कई कतल किए तरवार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -19
- इतथें आगू सीढ़ियां, दोऊ चबूतरों बराबर । इत चौक होए सीढ़ी उतरी, तले आए मिली चबूतर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -77
- इतथें उतरती सीढ़ियां, दाएं बाएं दो क्योहरी । हुए तीनों चौक बराबर, सीढ़ियां इतथें तले उतरी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -48
- इतथें कोई उठी नहीं, बैठा मिलावा मिल । बेर साइत एक ना हुई, यों इलमें बेसक किए दिल || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -38

SRJN

- इतथें चलके जाइए, ऊपर दोऊ पुलन । ए खूबी मैं क्यों कहूं, जो नूरजमाल मोहोलन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -17
- इतथें चली तरफ ताल के, एक मोहोल एक चबूतर । दोऊ किनारे कुसादी होए चली, इत सोभा लेत यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -28
- इतथें चली ताल लों, एक मोहोल एक चबूतर । दोऊ तरफों ढांपी चली, जोए हौज मिली यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -25
- इतथें चले खेलन को, आगू मंदिर जहां भुलवन । जब जात चेहेबच्चे झीलने, तब खेलें ठौर इन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -13
- इतथें चले ताल लों, एक योहरी एक चबूतर । दोऊ तरफ या विध, जोए हौज मिली यों कर । || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -20
- इतथें नजर न फेरिए, पलक न दीजे नैन । नीके सरूप जो निरखिए, ज्यों आतम होए सुख चैन || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -42
- इतथे रसूलें करी सफर, इनके आगे की करों जिकर । अग्यारहीं के जब बाकी दस, तब दुनियां उमर सात हजार बरस || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -44
- इतथें रूह क्यों निकसे, जो इन मासूक की आसिक । छोड़ छाती आगे जाए ना सके, मार डारत मुतलक || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -79
- इतथें सीढ़ियां चढ़ती, ऊपर आए पोहोंची किनार । दोऊ तरफ दोए चबूतरे, बीच चौक बूंटों चार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -5
- इतने मनोरथ होंए पूरन, तब जानों दया हुई अति घन । फेर फेर दया को तो कहया घना, जो कर न सकी कछू बस आप अपना || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -23
- इंतहाए नहीं अर्स भोम का, सब चीजों नहीं सुमार । ऊपर तले मांहें बाहेर, दसों दिसा नहीं पार || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -79
- इंतहाए नहीं जिन चीज को, ताकी सिफत न होए जुबाए । सहूर इत सो क्या करे, जो सिफत न सब्द माहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -17
- इतहीं कजा होएसी, इतहीं होसी भिस्त । दोजख इतहीं होएसी, दुनी तले नूर नजर कयामत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -118
- इतहीं जगात इत जारत, इत बंदगी परहेजी जान । और आसिक न रखे या बिना, इतहीं होवे कुरबान || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -89
- इतहीं न्यामत मोमिनों, सब खली जो इसारत । इतहीं मेला रूहों असल, इतहीं रूहों कयामत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -85
- इतहीं बैठे घर जागे धाम, पूरन मनोरथ हुए सब काम । धनी महामत हँस ताली दे, साथ उठा हँसता सुख ले || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -112
- इतहीं बैठे जागे घर धाम, पूरन मनोरथ हुए सब काम । उड्यो अग्यान सबों खुली नजर, उठ बैठे सब घर के घर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -33

SRJN

- इतहीं बैठे देखें रूहें, कोई आया नहीं गया । तुम जानो घर दूर है, सेहेरग से नजीक कया || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -44
- इतहीं बैठे देखोगे, खेल हांसी का फरामोस । सहूर करोगे बोहोतक, पर आए न सको माहें होस || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -9
- इतहीं रोजा इत बन्दगी, इतहीं जकातज्यारत । साथ हकी सूरत के, मोमिनों सब न्यामत || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -58
- इतहीं सिजदा बंदगी, इतहीं जारत जगात । इतहीं जिकर हक दोस्ती, इतहीं रोजा खोलात || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -46
- इतहीं हक मेहेरबानगी, इतहीं हुकम इलम । तो इत जोस इस्क क्यों न आवहीं, जो हमें दिल में धरे कदम || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -28
- इंद्रावती अंगे आप, वालाजीसं करे विख्यात । मुखतो मेले संघात, अमृत पिए अघात, सुख तो लिए रे सुन्दर || ग्रं - रास, प्र -13, चौ -13
- इंद्रावती अरधांग तमारी, कलपे विना धणी धाम । एणे वचने ततखिण मूने तेडसे, मलीने भाजीस मारी हाम || ग्रं - खटरुती, प्र -5, चौ -18
- इंद्रावती आयत करे, मलवाने उलास । एणे वचने वालोजी तेडसे , जइ करतूं वालाजी सों विलास || ग्रं - खटरुती, प्र -4, चौ -19
- इंद्रावती करे रंग, रामत न करे भंग । रमती फरती वाला संग, छबके चुमन देत री || ग्रं - रास, प्र -22, चौ -9
- इंद्रावती कहे अति उछरंगे, तमे लाड अमारा घणा पाल्या जी । निरमल नेत्र करी जीवना, तमे पडदा पाछा टाल्या जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -36, चौ -6
- इंद्रावती कहे अमने वाला, भला रमाइयां रास । पछे ते घर मूलगे, वालो तेडी चाल्या सहु साथ || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -46
- इंद्रावती कहे अमसूं रमतां, केसरबाई करो एम काए । तमे हाथ आवी वालाजीने वलगो, पण हूं नव मूकू बांहें || ग्रं - रास, प्र -39, चौ -3
- इंद्रावती कहे अवगुण, विसारो अमतणा रे । में जे कीधां रे अपार, वालाजीतूं अति घणा रे || ग्रं - खटरुती, प्र -1, चौ -11
- इंद्रावती कहे आयतकरी, एक वार तेडो अमने । जेम उलट करूं अति घणो, आवीने जीतूं तमने || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -21
- इंद्रावती कहे ओलखो आधार, तारतम जीवसू करो विचार । सुफल फेरो थाय संसार, वली वली नहीं आवे आवार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -25
- इंद्रावती कहे खरूं, मूलनो संघाती वरूं । ए धन रूदयामां धरूं, अंगथी अलगो न करूं, खरी मूने खांत || ग्रं - रास, प्र -38, चौ -4
- इंद्रावती कहे तूं सई मेरी, धनी मिले मुझे इत । पिउ ने सब पूरन करी, जो मैं करी उमेदा तित || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -28, चौ -10

- इंद्रावती कहे वली मनोरथ पूरजो, जो तमे राखो पोतानी लाज || ग्रं - खटरुती, प्र -7, चौ -19
- इंद्रावती कहे साथ ने तेडो तत्काल, ए माया कठण छे निताल । आ दुस्तर मांहें दुख देखे घj, नव ओलखाय कांई आपोपणुं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -13
- इंद्रावती कहे साथ, हवे न कीजे विस्वास । खिण न मूकिए पास, एवी बांधो वेल री || ग्रं - रास, प्र -36, चौ -8
- इंद्रावती कहे सुणजो साथ, वचन विचारे थासे प्रकास । प्रकास करीने लेजो धन, जे हूं तमने कया वचन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -22
- इंद्रावती के मैं अंगे संगे, इंद्रावती मेरा अंग । जो अंग सौंपे इंद्रावती को, ताए प्रेमें खेलाऊं रंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -66
- इंद्रावती केसरबाई मलियो, बंने कहे एम । ओसियाली थैयो मन माहें, जुओ आपण कीबूं छे केम || ग्रं - रास, प्र -39, चौ -14
- इंद्रावती चोए अदी मूंहजी, मुंके मिड्या मूजा पिरी । जिंनी कोडे आऊं आवई, से पूरण केआं उनी" || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -28, चौ -10
- इंद्रावती चोएनी अदियूं, अंई को कस्यो ईय । कोड करे अंई आवयूं, अदी हाणे को अंई हीय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -14
- इंद्रावती धनी के पास, रास को कियो प्रकास । धनिऐं दई मोहे जाग्रत बुध, तो प्रकास करूं तारतम की निध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -21
- इंद्रावती पिया संगे, उदर फल उतपन । एक निज बुध अवतरी, दूजा नूर तारतम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -91
- इंद्रावती प्रगट भई पिउ पास, एक भई करे प्रकास । अखंड धाम धनी उजास, जाग जागनी खेलें रास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -26
- इंद्रावती लागे पाए, सुनो प्यारे साथ जी। तुम चेतो इन अवसर, आयो है हाथ जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -5
- इंद्रावती लागे पाय, सुणो तमे साथ जी । कांई आपणने अवसर, आव्यो छे हाथ जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -1, चौ -4
- इंद्रावती लिए भामणा गुण जेटला, तमे आंही सुख दीधा अमने एटला । घरना सुखनी आंही केही कहूं वात, हवे सुख घरना नी घेर करतूं विख्यात || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -52
- इंद्रावती वात, सुणो तमे साथ । जुओ अख्यात, बंने रलियात, रमतां इजतसूं || ग्रं - रास, प्र -26, चौ -8
- इंद्रावती वाला संगे, उदर फल उतपन । एक बुध मोटी अवतरी, बीजी ते जोत तारतम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -86

- इंद्रावती सुंदरबाईने चरणे, श्रीवालाजी नी सेवा करीस वालपण घणे । सेवा जेहेवो बीजो पदारथ नथी, जाण जोई लेसे वचनज थकी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -25
- इंद्रावतीने आनंद थाय, उमंग अंग न माय । वली रमे नाना विध रंग, कांई वाध्यो अति उछरंग || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -34
- इंद्रावतीने एकांत हाथ आव्या, हवे जो जो अमारो बल । ते वसीकरण करूं रे तमने, जेणे अलगां न थाओ नेहेचल || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -35
- इंद्रावतीने हूं अंगे संगे, इंद्रावती मारूं अंग । जे अंग सोंपे इंद्रावतीने, तेने प्रेमें रमाई रंग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -66
- इंद्रावतीसों अतंत रंगे, स्याम समागम थयो । साथ भेलो जगववा, इंद्रावतीने में कयो || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -135
- इन अंदर नूर कई जुगतें, नूर कई मंदिर मोहोलात । नूर जिनसें कई जुगतें, नूर अर्स गंज कयो न जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -56
- इन अंदर नूर कई बिध का, नूर बैठक मोहोल खेलन । जुदी जुदी विध नूर जुगते, हक सुख देत नूर रूहन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -99
- इन अंदर मोहोल कई नूर के, कई जुदी जुदी नूर जिनस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -55
- इन अनिएँ और अनी मिली, तिन उतर अनी हुई दोए । किनार तले दो छेद्र के, सोभा लेत अति सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -131
- इन अन्दर नूर हवेलियां, नूर मोहोल फिरते लग तिन । साम सामी मोहोल नूर के, दो दो चौक आगू नूर इन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -39
- इन अन्दर मोहोल कई नूर के, कई जुदी जुदी नूर जिनस । कई मोहोल मन्दिर नूर गलियां, नूर देखू सोई सरस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -86
- इन अन्दर हवेलियां नूर की, नूर हवेलियों दोए हार । नूर चौक बीच तिन हारों, नूर चौक आगू दोए द्वार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -40
- इन अमल को बड़ो विस्तार, सो ए देखना नहीं निरधार । पेहेले आपन को बरजे सही, श्री मुख बानी धनिएँ कही || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -2
- इन अर्स का खावंद, ताकी सिफत होवे क्यों कर । एह जुबां क्यों केहेवहीं, इन अकल की फिकर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -53
- इन अर्स का खावंद, सो धनी अपना हक । ए देखो साहेबी अर्स की, ए मोमिनों बुजरक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -94
- इन अर्स नूरजमाल के, हादी रूहें इन दरगाह माहें । रूहें इन कदम तले, और ठौर ना कोई क्याहे || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -62
- इन अर्सों की भी क्या कहूं, इन कुंजी अतन्त बूझ । और बात इत कहां रही, काढ़या हक के दिल का गुझ || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -52

- इन अवसर दुख पाइए, और कहा चाहियत है तोहे । दुख बिना चरन कमल को, सखी कबहूं न मिलिया कोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -16, चौ -2
- इन अवसर में भई अजान, मोहे फजीत करी गिनान । ना तो मोहे बुलाए के दई निध, पर या समें न गई मोहजल बुध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -16
- इन आखिर दिनों इमाम, बानी बोले न बका बिन । सो सिर ले सुकन गिरोहने, कायम किए सबन || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -53
- इन आगू लाल चबूतरा, ले चल्या अर्स दिवाल । खूबी देख बन छाया, ए बैठक बड़ी विसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -54
- इन आठों बीच चार द्वार ने, कई सोभा लेत अपार । कठेड़ा आठों चबूतरे, तरफ चारों चार द्वार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -63
- इन आणू घाट लिबोई का, लग्या हिंडोलों जाए । क्यों कहूं छब छत्रियन की, ए घाट अति सोभाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -34
- इन आणू घाट सोभित, अति बिराजे जोए किनार । काहूं काहूं बीच मोहोल है, बन सोभे हार अनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -36
- इन आतम को घर एही अछर है, ए तो पारब्रहम परखाया । ए जुध जीत्या मैं सेहेजे, सतगुर जी की दया || ग्रं - किरन्तन, प्र -15, चौ -10
- इन आदम की औलाद, मारी अजाजीलें लानत ले । तिन सब दिलों पातसाह, हुआ अजाजील ए || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -15
- इन आसिक की नजरों, दिल एकै हुआ सागर । सो झीले याही सुख में, निकसे नहीं क्योंए कर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -133
- इन इत आए करी बड़ी खोज, चाहे धनी को मूल संजोग । अंग मूल उपजी ए दृष्ट, सास्त्र सब्द खोजे कई कष्ट || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -62
- इन इंद्रियन की मैं क्या कहूं, ए तो अवगुन ही की काया । इन से देखू क्यों साहेब, एही भई आड़ी माया || ग्रं - किरन्तन, प्र -41, चौ -4
- इन इलम नुकते की रोसनी, नहीं कोट ब्रहमांडों कित । सो दिया मोहे सुपने दिल में, जो नहीं नूर अछर जाग्रत || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -43
- इन इस्कें हमारे ऐसा किया, ए जो झूठे चौदे तबक । तिन सबों कायम किए, ऐसे हमारे इस्क || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -149
- इन उजाले जेहेर उतरसी, तब बढ़ते बल नहीं बेर जी । परआतम को आतम देखसी, तब उतर जासी सब फेर जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -44
- इन उमत भाइयों वास्ते, महंमद आए तीन बेर । दुनी क्या जाने बिना निसबत, बिना इलम रात अंधेर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -35
- इन ऊपर और कहा कहूं, मैं श्रीधनीजी के चरने रहूं । कर जोड़ करूं विनती, दूर ना होऊं बेर पाओ पल जेती || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -4

- इन ऊपर छज्जे बिराजत, सिरे लगे एकै हार । ऊपर खूबी इन विध, सोभा लेत किनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -11
- इन ऊपर जो भूखन, नेक इनकी कहूं विगत । क्यों नूर कहूं अर्स अंग का, पर तो भी कहूं नेक मत || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -33
- इन ऊपर पख है एक, सुनियो ताको कहूं विवेक । पुरुख प्रकृती उलंघ के गए, जाए अखंड सुख माहे रहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -11
- इन एक एक में अनेक रस, रस रस में अनेक स्वाद । इन विध मेवे अनेक रस, सो कहां लों बरनों आद || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -23
- इन एक दिली रूहन की, ए क्यों कर कही जाए। एक रूह कहे गुझ हक का, दूजी अंग न उमंग समाए || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -7
- इन कड़ी के रूप रंग, मिहीं बेली गिनी न जाए । मानों पुतली वाही की कांगरी, ए जुगत अति सोभाए || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -49
- इन कदमों मेहेर मुझ पर करी, देखाए दई वाहेदत । तो इलम दिया बेसक, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -14
- इन कलमें के माएने, लेकर भरसी पाए । तिन मोमिन को खसम, सुख जो देसी ताए || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -33
- इन कलमें के सब्द से, सब छूटेगा संसार । तो कहा कहूं मैं तिनको, जिन पेहेचान कह्या नर नार || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -48
- इन कलमों की मैं देखी अनी, कछु कर न सकी बारीक घनी । ए गुन गिन मैं एकठे किए, सो अपने हिरदे में लिए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -30
- इन कहे से ऐसा होत है, पीछे आवत फैल हाल । तो ख्वाब में कायम अर्स का, सुख लीजे नूरजमाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -70
- इन कहे होत है रोसनी, रूह पावत है सुख । और इस्क अंग उपजे, हक सों होत सनमुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -66
- इन का बिछोहा सुन के, आपन रहत क्यों कर । फिराक न आवत हमको, याद कर ऐसा घर || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -22
- इन किल्ली रूहअल्ला अर्स के, पट खोल करे रोसन । खोली हकीकत मारफत, किया अर्स बका हक दिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -3
- इन कुरान के माएने, जो खोलत रसूल तब । तो इत आखिर इमाम, काहे को आवत अब || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -61
- इन खसम के नाम पर, कई कोट बेर वारों तन । टूक टूक कर डार हूँ, कर मन वाचा करमन || ग्रं - किरन्तन, प्र -91, चौ -7
- इन खेल में जो खेल हैं, सो केहेत न आवे पार । इन भेखों में भेख सोभहीं, सो कहूं नेक विचार || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -3

- इन खेलमें जो खेल है, सो केहेत न आवे पार । इन भेखोंमें भेख सोभहीं, सो कहूं नेक विचार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -2
- इन ख्वाब जिमी में बैठे के, अर्स सुख लीजे इत । हक याद देत तिन वास्ते, सब बका न्यामत || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -86
- इन गफलत के घर में, पड़ेगी बड़ी अगिन । पीछे लाख चौरासी देह में, जलसी रात और दिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -33, चौ -16
- इन गुलजारी की खुसबोए, रोसन होवे दिल रूह दोए । सब दुनियां में अकल इन, करे पसारा एक रोसन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -13
- इन घर बुलावे ए धनी, ब्रह्मसृष्ट जो है अपनी । खेल किया सो तुम कारन, ए विचार देखो प्रकास वचन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -31
- इन घाट आगूं पुल जोए पर, जाए पार पोहोंच्या पुल । ए भी तिन बराबर, जो पेहेले कया अव्वल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -17
- इन घाट के ऊपर, रोसन पाँच सै झरोखे । इन बन मोहोलों मासूक संग, सुख कब लेसी हम ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -38
- इन घाव के पड़घाव से, उड़सी चौदे तबक । और आवाज के नूर से, बैठे भिस्त में कर हक || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -64
- इन चरनों किया अर्स दिल को, दिल बोलें सुध परत । रूहें तो लेवें महंमद सिफायत, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -16
- इन चरनों विध क्यों कहूं, नाजुक निपट नरम । ए बरनन करतें इन जुबां, हाए हाए उड़त न अंग बेसरम || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -17
- इन चौक खुली जो चांदनी, आगू बड़े दरबार । उज्जल रेती झलकत, जोत को नाहीं पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -23
- इन चौक बिछाई गिलम, ता पर सिंघासन । चारों तरफों झलकत, जोत लेहेरी उठत किरन || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -21
- इन चौक में साथजी, बोहोत बेर बैठत । आवत जात बनथें, बैठत इत अलबत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -4
- इन जड़ थे तब मैं निकसी, जब आकीन दिया आप । सकें सारी भान के, तुम साहेब किया मिलाप || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -9
- इन जिमी आसिक क्यों रहे, बिना किए अपनों आहार । खाना पीना एही आसिकों, अर्स रूहों एही आधार || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -8
- इन जिमी आसिक क्यों रहे, वह खिन में डारत मार । तो लों रहे सहूर में, जो लों रखे रखनहार || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -69
- इन जिमी इन बन में, करें खेल सरूप जो एह || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -44

SPJIN

- इन जिमी की क्यों कहूं, जिनको नाहीं पार । उत पार जो बसत हैं, इन मन बल को नहीं सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -39
- इन जिमी के जानवर, ताए देखत हक नजर । ए दिल में तो आवहीं, जो रूह देखे विचार कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -32
- इन जिमी जरे की रोसनी, मावत नहीं आसमान । तो ए बरनन क्यों होवहीं, अर्स साहेब सुभान || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -22
- इन जिमी में महंमद, होए आया कासद । जिन कोई हिसबो खेल में, याको न लगे सब्द || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -91
- इन जिमी में साथ में, जिनों करी सिरदारी । पुकार पुकार पछताए चले, जीत के बाजी हारी || ग्रं - किरन्तन, प्र -101, चौ -10
- इन जुबां इन आसिक का, क्यों कर कहूं सो बल । धाम धनी आसिक सों, जुदा होए न सकें एक पल || ग्रं - किरन्तन, प्र -91, चौ -18
- इन जुबां क्यों कहूं बड़ाई, तुमें सब्द ना पोहोंचे कोए । जो कछू कहूं सो उरे रहे, ताथे दुख लागत है मोहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -19
- इन जुबां मैं क्यों कहूं, मुसाफ मगज नूर । कुफर चौदे तबक का, किया इमामें दूर || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -26
- इन जुबां मैं क्यों कहूं, मोमिन अर्स अंकूर । आया इमाम सबन का, किया जो परदा दूर || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -84
- इन जेहेर जिमी से कोई न उबरया, तुम सूते तिन ठाम जी । इन जेहेर जिमी अगिन उजाड़ रे, नहीं वसती इन गाम जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -5
- इन जेहेर जिमी से कोई ना निकस्या, अमल चढ़यो अति भारी । मुझ देखते सैयल मेरी, कैयों जीत के बाजी हारी || ग्रं - किरन्तन, प्र -119, चौ -3
- इन झूठी जिमी में केहेत हों, सांच झूठ हैं दोए। जब आगू अर्स के देखिए, तब इनमें न सांचा कोए || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -9
- इन झूठी जिमी में बरनन, सत सरूप को कहयो न जाए । कबूं किन कानों ना सुनी, सो क्यों जीव हिरदे समाए || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -14
- इन झूठी जिमी में बैठाए के, देखाई हक बका निसबत । मेहेर करी रूहों पर, देने अर्स लज्जत || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -85
- इन ठौर ए मिलावा, जिन जुदी जाने आप । इतहीं तेरी कयामत, याही ठौर मिलाप || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -21
- इन ठौर खेल रूह के, बोहोत भई भूलवन । होत हॉसी इत खेलते, रंग रस बढ़त रूहन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -20
- इन ठौर बैठे देखाइया, साहेबी हक बुजरक । पैठ हक दिल बीच में, पी प्याले इस्क || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -17

- इन ठौर रेती नहीं, एक जवेर को बन्ध । खुसबोए नूर अतंत, क्यों कहूं सोभा सनन्ध || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -32
- इन ठौर विलास बोहोत है, सो इन जुबां कयो न जाए । ए लीला अर्स खावंद की, केहे केहे रूह पछताए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -128
- इन ठौर सोभा जो अलेखे, चित सोई जाने जो देखे । मध्य बन धाम के गिरदवाए, सोभा एक दूजी पे सिवाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -44
- इन तले गौर हरवटी, जानें मुख सदा हँसत । ए सोभा जाने अरवा अर्स की, जिन दिल में हक बसत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -135
- इन तीनों पर कांगरी, बनी सेथे बराबर । पांन कटाव सेंथे पर, ए जुगत कहूं क्यों कर || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -46
- इन दरगाह की रूहन सों, दोस्ती हक की हमेसगी । इन जुबां सों सिफत, क्यों होवे इनकी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -45
- इन दरवाजे नरसैयां, प्रेमें लपटाना । लीला पीछले साथ में, सुख ले समाना || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -59
- इन दसों उमत खासी चली, दुनी चली तीस भए जब । पुल-सरात सत्तर कहे, पोहोंची आखिर फरिस्तों तब || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -9, चौ -17
- इन दिल को अर्स तो कह्या, जो खोल दिए बका द्वार । ताथें फेर फेर बरनवू, हक वाहेदत का सिनगार || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -112
- इन दुख जिमी में बैठके, मेहेरें देखें दुख दूर । कायम सुख जो हक के, सो मेहेर करत हजूर || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -11
- इन दुख से कोई जिन डरो, इन दुख में पिउ को सुख । जो चाहत हैं सुख को, आखिर तिन में दुख || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -13
- इन दोऊ थें न्यारा मंडल, जाको कहियत हैं रास । तहां खेल स्याम सखियन का, ए लीला अविनास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -2
- इन धनी के बान मोको ना लगे । मोको ना लगे, कहा कियो करम अधम । तो भी इस्क न आया मोको, ए कैसा हुआ जुलम || ग्रं - किरन्तन, प्र -97, चौ -1
- इन धाम की लीला मिने, इन धनी की अरधांग । तो भी प्रेम ना उपज्या, कोई आतम भई ऐसी अंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -35
- इन धाम के जो धनी, तिन अंगों का सनेह । हेत चित्त आनन्द इनका, क्यों कहूं जुबां इन देह || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -32
- इन नंगों जोत तब पाइए, जब नजर दीजे आसमान । सब जोत जंग करत हैं, कोई सके न काहू भान || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -86
- इन नूर थंभ की रोसनी, पड़ी ताल पर जाए। जल थंभ कियो आसमान लों, घेख्यो चंद गिरदवाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -45

- इन नूर भोम की सिफत, कही जाए ना नूर मुख इन । ए नूर मंदिर नूर झरोखे, कई नूर फिरते सिंघासन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -105
- इन नूर रांग की रोसनी, क्यों कहूं जुबां इन मुख । द्वार द्वारी कलस कंगूरे, ए लें हक हुकमें मोमिन सुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -42
- इन नूर-मकान का खावंद, जाको नामै नूर-जलाल । आवत दायम दीदार को, जित अर्स नूर-जमाल || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -60
- इन नैनों सुख बका न देख्या, सुन्या हादियों के मुख । सुनी बानी जुबां केहे ना सके, जुबां कहे देख्या सुख || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -19
- इन पड़ उत्तर वास्ते, बाईजीऐं किए उपाए । विलख विलख वचन लिखे, सो ले ले रूहें पोहोंचाए || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -21
- इन पढ़ने रसूल खबर भई, हर आयत हर गिरह खुल गई । उमर रजीअल्ला करी नकल, अजब आयत आई सकल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -17, चौ -5
- इन पर भी दोरी बनी, ता पर बेल और जिनस । तिन पर दोरी और कांगरी, जानों उनथें एह सरस || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -167
- इन परन का नूर क्यों कहूं, देख देख रूह अटकत । और न्यारी जोत नंगन की, ए जो दुगदुगी लटकत || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -34
- इन पहाड़ ऊपर मोहोलात जो, ऊँचा बड़ा विस्तार । गिरद झरोखे ऊपर तले, याको क्यों कर होए निरवार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -59
- इन पांउं तले पड़ी रहूं, धनी नजर खोलो बातन । पल न वालूं निरखू नेत्रे, मेरे जीव के एही जीवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -5
- इन पागै में है दुगद्गी, बनी पारी में कलंगी । ए जंग करे जोत जोत सों, ए बनायल हक दिल की || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -43
- इन पांचों हार के फुमक, तिन फमक पांचों रंग । रंग पांचों सोभे जुदे जुदे, जरी सोभित धागे संग || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -64
- इन पिंड में ब्रह्म दृढ़ किया, नेहेचल सुख परवान । अब खिन में घर देखिए, ऐसा समे न दीजे जान || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -11
- इन पुल दोऊ के बीच में, बीच बने सातों घाट । तीन बाएं तीन दाहिने, बीच बनी चांदनी पाट || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -74
- इन पेड़ो खूबी क्यों कहूं, देख बन होइए खुसाल । ए रेत रोसन खुसबोए बन, ए निरखत बदले हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -28
- इन पेड़ों खूबी क्यों कहूं, देख बन होइए खुसाल । रोसन रेत खुसबोए बन, आए लग्या दिवाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -19
- इन फरमान में इसारतें, लिखियां जो खसम । निसान अर्स अजीम के, पाए हमारे हम || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -46

- इन फरमान में ऐसा लिख्या, करे पातसाही दीन । बड़ी बड़ाई होएसी, पर उमराओं के आधीन || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -20
- इन फरिस्ते के कई सिर, तिन सिर सिर कई मोंहों । मोह मोह कई जुबान, ए देखो इसारत फरिस्तों || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -52
- इन फूल ऊपर आई नासिका, सो आए बीच अनी सोभाए । तिन पर रेखा दोऊ तिलक की, रंग खिन में कई देखाए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -150
- इन बड़े मोहोल सुख नेहेरों के, हमें कब देओगे खसम । मांगे मंगाए जो देओ, सब हुआ हाथ हुकम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -23, चौ -10
- इन बन की और मोहोल की, और पहाड़ हिंडोले जे । जिमी सब बराबर, अर्स लग देखिए ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -25, चौ -6
- इन बन की सोभा अति बड़ी, आवत आतम में जोए । इन नैन श्रवन के बल थे, मुखसे न निकसे सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -39
- इन बन की सोभा क्यों कहूँ, पेड़ चले आए बराबर । दोऊ तरफों जुगतें, मोहोल आए ऊपर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -19
- इन बन की हद धामलों, और झरोखों दिवाल । इन बन में कई हिंडोले, होत रंग रसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -28
- इन बन जिमी की रोसनी, मावत नहीं आकास । इन रोसन हिंडोलों हींचत, क्यों कहूं खूबी खास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -26
- इन बन बोहोतक बेलियां, सोभा अति सुन्दर । फल फूल पात कई रंगों, या बाहेर या अन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -14
- इन बन में जो हिंडोले, छप्पर-खटों की जिनस । सांकरें जंजीरां झनझने, जानों सबथें एह सरस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -43
- इन बन सोभा अपार है, कछु आतम उपजत सुख । तिनको हिस्सो लाखमों, कयो न जाए या मुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -40
- इन बाग तले जो बाग है, ए क्यों कहे जुबां सिफत । ए मोमिन कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -43
- इन बात की हाँसियां, अक्स नाम भी क्यों सहे । हक विरहा बात सुन के, झूठी देह पकड़ क्यों रहे || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -25
- इन बातों सक जरा नहीं, तो दिल अर्स कह्या मोमिन । तो भी टले ना बेहोसी, वास्ते हाँसी बीच वतन || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -48
- इन बानिऐं ब्रह्मांड जो गले, तो वासना वानी से क्यों पीछी टले । वासना कारन बांधे बंध, कई भांते अनेक सनंध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -4
- इन बिध कई रंग साथ में, यों बीते कई बीतक । सब पर मेहेर मेहेबूब की, पर पावे करनी माफक || ग्रं - किरन्तन, प्र -78, चौ -13

SPJIN

- इन बिध कहूं बेवरा, ज्यों रूहें जानें बुजरकी । देखाए बिना जानें नहीं, हक कैसी है साहेबी || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -65
- इन बिध खेल देखाइया, ना तो रूहें झूठ देखें क्यों कर । अपने तन हके जान के, करी हाँसी रूहों ऊपर || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -30
- इन बिध बन विस्तार है, उपरा ऊपर अतंत । सोभा अमान पसु पंखी, इन मंदिरों में बसत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -54
- इन बिध बोलें किताबें, देखो दिल के दीदों माहें । कानों सुन्या सो कछुए नहीं, ए देख्या सो भी नाहें || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -53
- इन बिध लगी लानत, अजाजील की दनी को । जैसी हुई सिरदार से, हुई तैसी ताबे हुए सों || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -11
- इन बिध लिख्या जाहेर, तो भी देखे न खुलासा । सब बोले फना में रात को, किया उमतें फजर बका || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -45
- इन बिध सहूर जो कीजिए, कछु तब आवे रूह लज्जत । और भांत निमूना ना बनें, ए तो अर्स अजीम खिलवत || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -25
- इन बिध साथजी जागिए, बताए देऊ रे जीवन । स्याम स्यामाजी साथजी, जित बैठे चौक वतन || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -1
- इन बिध सोर हुआ साथ में, ठौर ठौर पड़ी पकार । एक आए एक आवत हैं, एक होत हैं तैयार || ग्रं - किरन्तन, प्र -92, चौ -12
- इन बिध हक का इलम, हमको जगावत । इलम किल्ली हमको दई, तिनसे बका द्वार खोलत || ग्रं - सागर, प्र -3, चौ -5
- इन बिध हांस थंभन की, माहें नकस कई कटाव । जुदी जुदी जुगतों चित्रामन, माहे जुदे जुदे कई भाव || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -80
- इन बीच जो गुजरे, तिन बरसों की तफसीर । दस अग्यारहीं तीस बारहीं, और सत्तर की जंजीर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -9, चौ -16
- इन बृज रैन को ब्रह्मा बोहोत तलफया, पर पाई नहीं रे निरवान । सो सुखें तुम कैसे पाओगे, देखो अपनी चाल के निसान || ग्रं - किरन्तन, प्र -13, चौ -17
- इन बेर के भी कहे न जाए, तो और बेर के क्यों कहूं जुबाए । पेहेले फेरे की क्यों कहूं बात, गुन जो किए धनी साख्यात || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -10
- इन बेल फूल कई पांखड़ी, तिन हर पाखंडी कई नंग । तिन नंग नंग कई रंग उठे, तिन रंग रंग कई तरंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -36
- इन भवसागर के जीवों में, वासना ढूंढ़ काढे छुड़ाए के फंद रे । आतम अपनी पेहेचान के, कौन पावे आनंद रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -60
- इन भांत किया दिल धीर, उपजे नहीं कोई तकसीर । इन भांत की जो है औरत, तिन पाया रोज सरत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -27

- इन भांत केती कहूं, कई खूबी बिना हिसाब । ले खुलासा इन का, छोड़ दीजे झूठा ख्वाब || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -67
- इन भांत निमूना लीजिए, करियो हक सहूर मोमिन । तुम ताले आया लदुन्नी, तुम देखो अर्स रोसन || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -32
- इन भोम की रेती क्यों कहूं, उज्जल जोत अपार । भोम बन आसमान लो, झलकारों झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -2
- इन भोम भोम कई मंदिर, पेड़ डारी कई दिवाल । छाया बनी पात फूल की, कई बन मंदिर इन हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -49
- इन भोम रंचक रेत की, तेज न माए आकास । जो नंग इन जिमी के, क्यों कहे जुबां प्रकास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -4
- इन मजाजी-जमात ने, छोड़े हक हादी कदम । सो टूक टूक जमात जुदी हुई, हाए हाए ऐसा किया जुलम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -87
- इन मंदिरों सेज्या सिंघासन, छोटे चेहेबच्चे हिंडोले । कई फुहारें नेहेरें चलें, धनी हमें कब सुख देओगे ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -15
- इन मसलें साफई इमाम, माफक दूजे साहेब का नाम । सिताबी फिरे जो कोई, तो रोज मिलावा लेवे सोई || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -19, चौ -5
- इन महंमद के दीन में, जो ल्यावेगा ईमान । छत्रसाल तिन ऊपर, तन मन धन कुरबान || ग्रं - किरन्तन, प्र -118, चौ -19
- इन महंमद के दीन में, सक सभे जरा नाहें। सो हकें दिया इलम अपना, ए सिफत होए न इन जुबांए || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -10
- इन माया में कोई बुजरकी, छूट खुदा जो लेवे । सो तेहेकीक आपे अपना, पाया फल सो भी खोवे || ग्रं - किरन्तन, प्र -102, चौ -5
- इन मुख नख जोत क्यों कहूं, कई कोट सूरज ढंपाए । ए सुखकारी तेज सीतल, ए सिफत न कही जाए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -70
- इन मुख सागर में कई सागर, सुख आनंद अपार । कई सागर सुख सलूकियां, मांहें कई गंज अपार अंबार || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -23
- इन मुख सोभा क्यों कहूं, और क्यों कहूं सोभा जिकर । सोभा पर चित्रामन, ए जुबां फना कहे क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -86
- इन में जो कोई परहेज करे, पीछे अदा के हज गुनाह से डरे । जो कोई खतरों से फिरया होए, परहेज करे आराम वास्ते सोए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -19, चौ -9
- इन में भी मैं है नहीं, जो ए समझें मूल इलम । फैल हाल इस्क लेवहीं, तब हक की मैं आतम || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -23
- इन में में डूव्या सब कोई, याको पार न पावे कोए । याको पार सो पावहीं, जाको मुतलक बकसीस होए || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -30

SRJN

- इन मैं को तो तुम किया, आद मध्य और अब । और मैं तो नेहेचे नहीं, कितहूं न देखी कब || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -12
- इन मैं को हक बिना, कबहूं न काढ़ी जाए। सो मुझ पर मेहेर हकें करी, मैं जरे को देत उड़ाए || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -27
- इन मोती को मोल कह्यो न जाए, ना किनहूं कानों सुनाए । सोई जले जो मोल करे, और सुनने वाला भी जल मरे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -55
- इन मोहोल आगू घाट केल का, इस तरफ आगू बट घाट । तीन बाएं तीन दाहिने, बीच घाट चांदनी पाट || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -5
- इन मोहोल ऊपर जो चांदनी, तिन पर जो मोहोलात । सो विस्तार है अति बड़ा, या मुख कयो न जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -58
- इन मोहोल सुख रूहों के, और सुख घाटों चार । हाए हाए क्यों जाए हमें रात दिन, ए सुख बैठी रूहें हार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -22, चौ -13
- इन मोहोलों इन बंगलों, इन चेहेबच्चों बगीचों । ए सुख छाया बन की, कब देओगे हमकों || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -12
- इन मोहोलों बीच इमारतें, हिस्सा कोटमा कया न जाए। ए खूबी सब्दातीत की, लीजो रूह के दिल लगाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -83
- इन मोहोलों में देखिए, अतंत सोभा थंभन । उपरा ऊपर देखिए, जुबां कहा करे बरनन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -25
- इन मोहोलों सुख क्यों कहूं, आगू बड़े दरबार । हक हादी सुख इन कठेड़े, देत बैठाए बारे हजार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -9
- इन मोहोलों हक आवत, सुख देने रूहों सबन । सुख इत के दिए जो ख्वाब में, सो जानें रूह मोमिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -74
- इन रस को ए सागर, पूरन जुगल किसोर । ए दरिया सुख पांचमा, लेहेरी आवत अति जोर || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -2
- इन रेत रंचक की रोसनी, आकास न मावे नूर । तो रोसनी सब बन की, क्यों कर कहूं जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -6
- इन लीला की जो आतमा, सो करसी सबे पेहेचान । आवत दौड़े अंकूरी, ए ताए मिलसी निसान || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -19
- इन लीला को करसी विचार, क्या करसी ताको संसार । प्रगट नीउ बांधी है एह, बड़ी इमारत होसी जेह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -9
- इन लोकों की मैं क्या कहूं, जो जाए पड़े मुख काल । जो साथ केहेलाए सामिल भए, सो भी कहूं नेक हाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -4
- इन वचनों में अछरातीत, श्री धाम धनी साथ सहीत । ए देखो तारतम को उजास, धनी ल्याए कारन साथ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -17

SPJIN

- इन वास्ते भेजी रूह अपनी, अर्स कंजी हाथ दे । दे खिताब इमाम को, अर्स पट खोले इन वास्ते || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -59
- इन विध एक दूजी सों, करी सबों मसलहत । आपन मोमिन सब एक तन, बीच कहां पैठे गफलत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -67
- इन विध एक दूजी सों, मसलहत करी सबन । क्या करसी खेल फरेब का, आपन मोमिन सब एक तन || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -45
- इन विध कई रंग वस्तरों, ए बरन्यो क्यों जाए । तिन में भी जुदियां नहीं, सब बैठियां अंग मिलाए || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -25
- इन विध कहे संसार में, धनी रंचक दिलासा दे । टूक टूक होए जाए फना, सब अंग आसिक के || ग्रं - किरन्तन, प्र -87, चौ -3
- इन विध के रंग इन जुबां, क्यों कर आवे सुमार । न आवे सुमार रंग को, ना कछू जोत को पार || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -100
- इन विध केहेवें हदीसें, और हक फुरमान । ले मगज माएने मोमिन, सब विध करें पेहेचान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -77
- इन विध गुन केते कहूं, कई देखे मैं नजर || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -56
- इन विध गुनाह हम पर, लागत नाहीं कोए । मैं तो इत नाहीं कितहूं, इत उत किया हक का होए || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -43
- इन विध चले जात हैं, आखिर अव्वल से । यों सिफत कर कर गए, पर नूर न पाया किन ने || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -40
- इन विध चार दोरी भई, और दोए भई कांगरी । दोए बेली कई रंगों की, ए गिनती जाए न करी || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -171
- इन विध छाती न छूटहीं, रूहों सों निस दिन । असल सुख हक हैड़े के, ए लज्जत लगे अर्स तन || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -75
- इन विध जाहेर कर लिख्या, सास्त्रों के दरम्यान । तीन सृष्ट आई जुदी जुदी, पोहोंचे अपने ठौर निदान || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -4
- इन विध झण्डा खड़ा किया, हादी मोमिनों इत आए । औलिए अंबिए पैगंमर, गोस कुतब मिले सब धाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -24
- इन विध झण्डा महंमदी, खड़ा हुआ बीच हिंदुस्तान । चौदे तबक जुलमत परे, नूर पोहोंच्या लाहूत आसमान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -39
- इन विध देखो निमूना, ए झठी जिमी का विचार । तो कौन विध होसी अर्स में, जो सोभा वार न पार सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -71
- इन विध देने ईमान, उपजावने इस्क । सो इस्क बिना न पाइए, ए जो नूर तजल्ला हक || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -37

- इन विध नरक जो छोड़िए, और उपाय कोई नाहें । भजन बिना सब नरक है, पच पच मरिए मांहें || ग्रं - किरन्तन, प्र -106, चौ -3
- इन विध नूर केता कहूं, नूर समें खेलन । नूर बिना कछू न देखिए, नूर के नूर रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -32
- इन विध नूर गलियां, बीच नूर हवेलियों निकसत । ए नूर गली दोऊ तरफों, आखिर नूर मोहोलों पोहोंचत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -52
- इन विध फरमान फुरमावहीं, जाहेर देत बताए । अन्दर बैठा जो दुस्मन, सो देत माएने उलटाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -34
- इन विध में केते कहूं, बोलें जुबां अनेक । पर सबों एही जिकर, कहें मुख वाहेदत एक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -38
- इन विध मैं केती कहूं, रंग खूबी खुसबोए । परों फूलों चित्रामन, कही प्रीत इनों की सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -70
- इन विध मैं मरत है, बैठे तले कदम । जोस इस्क आवे हाल में, लेय के हक इलम || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -25
- इन विध लाहा लीजिए, अनमिलती का रे यों । सुखड़ा दिया धुतारिए, याको बुरी कहिए क्यों || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -30
- इन विध लिख्या जाहेर, पर किने न किया बयान । ए होए तिनहीं से जाहेर, हकें जिन पर भेज्या फुरमान || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -72
- इन विध सब सिनगार, कहियत इन जुबांए । तो कया फना का सब्द, बका को पोहोचत नाहे || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -50
- इन विध सब हकमें कर, खेल देखाया खिलवत अंदर । बातें खिलवत की करी खेलमें, जो गझ हक के दिल भीतर || ग्रं - सिंधी, प्र -16, चौ -15
- इन विध समझो अर्स को, एक जवेर कई रंग । द्वार दिवालें पड़सालें, और थंभों उठत तरंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -18
- इन विध सुख केते कहूं, अर्स अरवा मोमिन । तो आए वाहेदत में, जो हक कदम तले इनों तन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -109
- इन विध सुख केते कहूँ, झूठी इन जुबान । मेरी रूह जाने या मोमिन, या दिए जिन रेहेमान || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -54
- इन विध सुख दिए अलेखें, ऐसे गुन मेरे पिउ । तामें एक गुन जो याद आवे, तो तबहीं निकस जाए जिउ || ग्रं - किरन्तन, प्र -81, चौ -11
- इन विध सेवें स्याम को, कहे जो मुनाफक । कहावें बराबर बुजरक, पर गई न आखिर लों सक || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -16
- इन विध सोभा मुकट की, ए जुबां क्यों करे बरनन । सिर सोभे नूरजमाल के, नीके देखें रूह मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -44

- इन विध हाँसी न जाए कही, कई कोट विधों जगावत । कई दारू उपाय कर कर थके, दिल ठौर क्योंए न आवत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -12
- इन विध हांसें फिरतियां, चारों तरफों सौ दोए । चारों तरफ का बेवरा, नेक केहेत हुकम सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -38
- इन विध हुआ है अव्वल, दई रूह साहेदी तेहेकीक । जो कही बानी जोस में, सो साहेब दई तौफीक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -3
- इन सब फीलों को पाखरे, और सिरिए जड़ाव रतन । सो जवेर है अर्सके, और अर्से का कुंदन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -59
- इन सबन की एक अकल, एक दिल एक चित्त । एक इस्क इनों का, सनेह कायम हित || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -3
- इन समें उतच्या आजूज, और संग इनके माजूज । पीछे उतस्या जबराईल, लेवे सबको न करे ढील || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -73
- इन समें खिन को मोल नहीं, तो क्यों कहूं दिन मास बरस । सो जनम खोया झूठ बदले, पिउसों भई ना रंग रस || ग्रं - किरन्तन, प्र -78, चौ -4
- इन समे तारतम की समझन, क्योंकर कहिए सोए जी । अनेक विध का तारतम इत, तब घर लीला प्रगट होए जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -12
- इन समें विरह कियो अति जोर, बड़ो दुख पाए कियो अति सोर । एक ठौर बैठे जाए दमे देह, भगवानजी सों पूरन सनेह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -38
- इन समें हुती माया की लेहेर, तो न आया आतम को वेहेर । तब मेरी निध गई मेरे हाथ, श्री धाम तरफ मुख कियो प्राणनाथ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -17
- इन सरूप को बरनन, सो याही की चतुराए । याको आसिक जानिए, जो इतहीं रहे लपटाए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -137
- इन सरूप पर खुदाए का प्यार, दोनों जहान का खबरदार । पाया साहेब थें नेक बखत, दोऊ जहान बुजरकी पावे इत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -17
- इन सामी द्वार पीछल, थंभ दोए नीलवी के । दो थंभ जो इनों लगते, नूर पाच के थंभ ए || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -9
- इन सार में कई सत सुख, सो मैं निरने करूं निरधार । ए सुख देऊं ब्रह्मसृष्ट को, तो मैं अंगना नार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -37, चौ -5
- इन साहेदिएँ सब मिलसी, हिंदू या मुसलमीन । मुआ दज्जाल सब का कुफर, यों सब पाक हुए एक दीन || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -21
- इन सिंघासन ऊपर, बैठे जुगल किसोर । वस्तर भूखन सिनगार, सुन्दर जोत अति जोर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -118
- इन सुख बातां बोहोत हैं, सो नेक कह्यो प्रकास । पर ए भी जोगमाया मिने, जो कहियत हैं अविनास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -24

- इन सुपन जिमी में बैठ के, क्यों कहूं ठकराई अर्स । ए गिरो विचारें सुख पावसी, जो होसी अरस-परस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -89
- इन सुपन देह माफक, हके दिल में किया प्रवेस । ए हुकम जैसा कहावत, तैसा बोले हमारा भेस || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -92
- इन सुपने के दुख से जिन डरो, दुख बदले सत सुख । अपने मासूक सों नेहड़ा, तोको देयगो बनाए के दुख || ग्रं - किरन्तन, प्र -16, चौ -10
- इन सुपने में सब कोई भूल्या, किनहूं न देख्या पार । बिध बिध सों भवसागर थाया, सुकदेव व्यास पुकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -32, चौ -8
- इन सौ बगीचों चेहेबच्चे, जुदी जुदी जिनस जुगत । ए बाग नेहेरें देखते, नैना क्योंए ना होंए तृपित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -57
- इन हक का इस्क दुनी मिने, न पाइए लदुन्नी बिन । बिना इस्क न इलम आवहीं, दोऊ तौले अरस परस बजन || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -42
- इन हारों बीच दुगदुगी, नूर नंग कयो न जाए । जोत अम्बर लों उठ के, अवकास रहयो भराए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -63
- इन हाल जो दुनियां, ए गईयां तिन में मिल । मोहे इस्क बिना पावें नहीं, रूहों ऐसी भई मुस्किल || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -25
- इन हांस चेहेबच्चे से चलिए, दूसरे पोहोचिए जाए । मोहोल मेहेरावों देखिए, बाग इतथें और सोभाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -70
- इन हुकम की इसारतें, कई फरिस्ते उपजत । कई समावें सुन्य में, कई डारें ले गफलत || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -31
- इनकी औलाद की मारों राह, सबके दिल पर होऊ पातसाह । आदम अजाजीलसों ऐसी भई, आठमें सिपारें में जाहेर कही || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -17
- इनकी किल्ली तेरा दिल, खुले क्लफ जब आओ मिल । सब हकीकत बीच किताब, पर पावे सोई जिन पर होए खिताब || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -13
- इनकी जो करे उमेद, मुराद इसलाम पावे भेद । जो कहे दोस्त साहेब मोहोल, नजीक खुदाए के खासे फैल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -14
- इनके आठ चबूतरे, तिन आठों पर आठ गुरज । आकास में जाए जगमगे, करें जंग जोत सूरज || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -62
- इनके बीच चबूतरा, इत कठेड़ा गिरदवाए। ए खूबी इन चबूतरे, इन जुबां कही न जाए || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -82
- इनके साथ बीच हक, कोई बांधे कौल खलक । निगाह रखे खड़ा रहे आप, सूरत आयत करे मिलाप || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -32
- इनमें इसारतें रमूजें, सो खोल न सके कोए। कुंजी भेजी हाथ रूहअल्ला, इमाम हाथ खोलाया सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -32

- इनमें कोई कायम करें, जो दिल आए चढ़त । सो इंड सारा नूर में, जो दिल दीदों देखत || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -7
- इनमें जो ठौर अच्छी, जाको नाम नौतन । जहां आए उदै हुई, नेहेचल बात वतन || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -4
- इनमें जो ठौर अव्वल, जाको नाम नौतन । जहां आए उदय हुई, नेहेचल बात वतन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -4
- इनमें फुरमान ल्याया रसूल, देने अपनी खबर आप । फुरमान कोई ना खोल सके, जाथें होए हक मिलाप || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -9
- इनमें भी है आंकड़ी, बिना तारतम समझी न जाए। सो तुम दिल दे समझियो, नीके देऊं बताए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -17
- इनमें रूह होए जो अर्स की, सो क्यों रहे दुनी सों मिल । कौल फैल हाल तीनों जुदे, यामें होए ना चल विचल || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -21
- इनमें लिखी आखिर, सो सुध ना परी काहू जन । पढ़ पढ़ गए कई वेद को, पर उनों पाया न कयामत दिन || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -47
- इनमें लिखी इसारतें, निसान पाइए नजर बातन । लिए ऊपर के माएने, क्यों पाइए कयामत दिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -18
- इनमें से नाठ्या में निसंक कायर होए, फेर न देख्या ब्रह्मांड । सुन्य निरंजन छोड़ में न्यारा, जाए पइ्या पार अखण्ड || ग्रं - किरन्तन, प्र -19, चौ -10
- इनसें सुध मोहे सब भई, संसे रह्यो न कोए । बुधजी बिना इन मोह में, प्रकास जो कैसे होए || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -11
- इनसेती जो उपजे, तिन सिर दिया भार । आप तिन से न्यारा रख्या, ए दोए भए सिरदार || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -17
- इनहीं बात की हाँसी है, उड़त ना फरामोस । ना तो जब बेसक हुए, हाए हाए क्यों न आवत होस || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -97
- इनहीं में ढूंढें हासिल, इस दिन उमत की फसल । इनके तले सातों आसमान, ए सारों के ऊपर जान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -14
- इनहूं बीच चबूतरा, हक हादी मध बैठत आए । ए सोभा इन बखत की, इन मुख कही न जाए । || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -21
- इनों का होसी सिताब, नजीक खुदाए के हिसाब । सब बंदगी एही मोमिन, जो अंदर के मारे दुस्मन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -17
- इनों की तो एह सनंध, पीछे फेर पकड्या प्रतिबिंब । और साध अलेख केते कहूं, निसंक दौड़ करी जिनहूं || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -8
- इनों के साथ उतरया बादल, सो नूर बादलियां रोसन जल । तिन की पैदास कही दाना घास, ए कही इसारत तीनों पैदास || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -16

- इनों तन असल अर्स में, इनों दिल में जो आवत । सोई इनों के अक्स में, सुकन सोई निकसत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -89
- इनों तन असल अर्स में, तीन बेर उतरे मांहें लैल । ए जाहेर लिख्या फुस्मान में, ए हकें देखाया खेल || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -18
- इनों दिल सागर तीसरा, एक सागर सबों दिल । देखो इनों दिल पैठ के, किन विध बैठियां मिल || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -4
- इनों धोखा कैसा अर्स का, जिन सूरतें खेलावें असल । खेलाए के बैंचें आपमें, तब असले में नकल || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -90
- इनों बोहोत लाड़ किए मुझसों, मैं एक किया इनों सों। सो एक मेरे लाड़ में, सब बेहे गैयां तिनमों || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -92
- इनों रब्द किया इस्क का, हम जैसा हक का नाहें । दई फरामोसी इन वास्ते, देखों कैसा इस्क इनों माहे || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -34
- इनो रोम की जो रोसनी, सो उठत माहें आसमान । जंग करें जवेरों सों, कोई सके न काहू भान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -19
- इनों हक बका देखाए के, करसी सबों एक दीन । हक सूरत दृढ़ कर दई, देसी सबों आकीन || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -79
- इन्द्री करें निग्रह, मन ल्याए कष्ट मोह । कई उर्ध ठाड़ेश्वरी, कई बैठे खुद होए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -23
- इन्साअल्लाताला जो लों ना कहे, तो लों तोड़ न सके दिवाल । इन्साअल्लाताला केहेसी आखिर, तब टूटसी कागद मिसाल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -8
- इबराहीम के अमल में, ना इसलाम गिरो दीन । कही एक लड़की निमरूद की, कछू ल्याई थी आकीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -100
- इबराहीम सिर ए लानत कही, सो पढ़ों संनत बड़ी कर लई । जिन दई लानत ऊपर तकसीर, सो सोभा लई मुल्लां मीर पीर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -10
- इमाम आए तब जानिए, जब खुले माएने कुरान । तब जानों आखिर हुई, सुख दिया सब जहान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -58
- इमाम इत आवसी, सो भी मोमिनों के कारन । देसी सुख मोमिन को, कजा होसी सबन || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -29
- इमाम इमामत उमत की, करसी अर्स अजीम ऊपर । ए होसी हैयाती सिजदा, तब हुई तमाम फजर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -70
- इमाम जाफर सादिक, उनोंने मांग्या हकपे । मुझे उठाइयो आखिरत, मेहेंदी के यारों में || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -35
- इमाम तो मारे इनको, जो ए आपे होए वजूद । इमाम के आवाज से, होए गया नाबूद || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -44

SPJIN

- इमाम नूर है अति बड़ो, पर सो अब कह्यो न जाए। मेला होसी जब मोमिनों, तब देऊंगी नीके बताए || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -46
- इमाम मसी मिल रसूल, मार दज्जाल करसी फजर । रोज फरदा सदी बारहीं, खोली बातून उमत नजर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -96
- इमाम मोमिन इस्क, सब मुख एही सब्द । सब्द ना कोई दूसरा, बिना एक महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -3
- इमाम सालवी नकल आई, आगू इस थें नकल फरमाई । पीछे उसके ऐसा चहावे, बुजरकी बीच जहूरके ल्यावे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -13
- इमामें कह्या यों कर, पेसकसी ल्यावें हम घर । बस्ती कोस पांच हजार, मुलक मदीने कई सेहेर बाजार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -5
- इमामें मोहे सब दियो, राख्यो न कछुए बीच । गुन अंग सोभा देय के, आप हुए नेहेचित || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -6
- इलम आतम संग बुध के, ए जो आवत जुबांए । फेर श्रवना देवें आतम को, एही परदा नाम खुदाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -62, चौ -7
- इलम इस्क तो भी हुकम, सहूर समझ सो हुकम । जोस होस सो भी हुकम, आद अंत हुकम तले हम || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -35
- इलम कह्या जो लदुन्नी, सो तो हक का मुतलक । इत मोमिन मिल पूछसी, क्यों रही रूहों को सक || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -129
- इलम खुदाई ना होता, तो क्यों संदेसा पोहोचत । नूर-तजल्ला के अन्दर की, कौन इसारतें खोलत || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -45
- इलम खुदाई लदुन्नी, बकसीस असल रोसन । जोस इस्क ले बंदगी, निसबत असल वतन || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -33
- इलम खुदाई लदुन्नी, रूह अल्ला ल्याए इत । उमियों पट खोल बका मिने, बैठाए कर निसबत || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -28
- इलम खुदाई लदुन्नी, सब अ◌ोंं की सुध तिन । एक जरे की सक नहीं, लई सिफायत हादी जिन || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -36
- इलम चातुरी खूबी अंग की, मोहे एही पट लिख्या अंकूर । एही न देवे देखने, मेरे दुलहे के मुख का नूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -62, चौ -4
- इलम डिंनाऊं पाहिजो, मय निपट वडो विचार । बका न चौडे तबकें, से डिनो उपटे द्वार || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -40
- इलम डिंने पाहिजो, जेमें सक न काए । डिनिए संग साहेबी, हित जाणजे की न सांजाए || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -4
- इलम दिया आए अपना, भेजी साहेदी अल्ला कलाम । रूहें त्रिखावंती हक की, सो चाहे धनी प्रेम काम || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -4

- इलम दिया तुमें खुदाई, तब बदले कौल चाल । फैल होवे वाहेदत का, तब बेर न लगे हाल || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -62
- इलम दिया मोहे लदुन्नी, आई असल अकल । सेहेरग से नजीक, पाया अर्स असल || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -5
- इलम दिया याही वास्ते, कहूं जरा न रही सक । अव्वल से आज लगे, ऐसा कराया हक || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -3
- इलम दिया सब असलं का, कहूं जरा न रही सक । हम हादी मोमिन सब मिल, करें जारी वास्ते इस्क || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -6
- इलम दिया सबन को, किया अर्स दिल मोमिन । दूर कर सब हिजाब, आप आए अर्स दिल इन || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -20
- इलम दिया हमें अपना, और दई असल अकल । जोस इस्क सब हक के, सब उमत करी निरमल || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -8
- इलम नुकते की साहेदी, हक सूरत अर्स मारफत । सो सब बातें फुरमान में, खोले हकी सूरत हकीकत || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -18
- इलम पाहिजो डेई करे, मंके रोसन तो केई । ते झोडो करियां कांध से, विच रांद में बेही || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -59
- इलम पोहोंच्या होए तमको, हमारा बेसक । तो संदेसे तुमारे इत के, क्यों ना पोहोंचे बका में हक || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -56
- इलम भी ताबे कानों के, जो इलम कहया बेसक । ए झूठी जिमिएं सेहेरग से नजीक, इन इलमें पाइए इत हक || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -23
- इलम भी पूरा दिया, जित जरा न मैं को सक । सुख देखे बेसक अर्स के, तो क्यों न आवे हक इस्क || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -10
- इलम भी हमें दिया, इनमें जरा न सक । सो क्यों न करें फैल वतनी, करें कायम चौदे तबक || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -85
- इलम मेरा उनों में, जाए करो जाहेर । मैं सेहेरग से नजीक, नहीं बका थे बाहेर || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -44
- इलम मेरा लेय के, निसंक दुनी से तोड़ । सोई भला इस्क, जो मुझ पे आवे दौड़ || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -62
- इलम लदुन्नी काहूं ना हुता, कर जाहेर मिटावे कुफर । दिया सुख कायम सब को, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -44
- इलम लदुन्नी तुमपे, जिन पेहेले पाई खबर । और न कोई वाहेदत बिना, तो इत आवेंगे क्यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -36
- इलम लदुन्नी देय के, खोल दई हकीकत । सदर-तुल-मुंतहा अर्स-अजीम, कही कायम की मारफत || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -40

- इलम लदुन्नी पाए के, अर्स रूहें हुई बेसक । जगाए खड़े किए अर्स में, बीच खिलवत खासी हक || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -63
- इलम लदुन्नी भेजिया, सब करने बका पेहेचान । आप काजी हुए इन वास्ते, करी खिलवत जाहेर सुभान || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -61
- इलम लदुन्नी भेजिया, सो मोमिन ए परखत । परख चरन ग्रहें हक के, जा की असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -42
- इलम लदुन्नी हक का, कुन्जी बका की जे । मेहेर करी मुझ ऊपर, खोल दिए पट ए || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -3
- इलम ले चलो अर्स का, खोल क्यो हकीकत । भूल गईयां आप अर्स को, याद देओ निसबत || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -2
- इलम ले ले अपना, सब जुदे हुए झगर । सो सारे एक दीन हुए, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -12
- इलम सहूर मेहेर हुकम, ए चारों चीजें होंए एक ठौर । तिन खेंच लिया मता अर्स का, पट नहीं कोई और || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -78
- इलम हक और दुनी का, कही जाए ना तफावत । ए सुकन सुन रूह मोमिन, आवसी अर्स लज्जत || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -23
- इलम हक का सुनत ही, इस्क न आया जिन । तिनको नसीहत जिन करो, वह मुतलक नहीं मोमिन || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -106
- इलम हक के बेसकी, बेसक आवे सहूर । बेसक पेहेचान हक की, बरस्या बेसक बका नूर || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -55
- इलम होवे हक का, और हुकम देवे सहूर । होए जाग्रत रूह वाहेदत, कछू तब पाइए नूर जहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -24
- इलमें अंदर जगाइया, तिन में जरा न सक । कहे हुई है होसी अौं की, रूहें बैठी कदम तले हक || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -47
- इलमें ऐसे बेसक किए, इत बैठे पाइए सुध । हम इत आए बिना, देखी खेल की सब विध || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -15
- इलमें न रखी कां सक, मुंजो हल्ले न सोंणे में । संगडो डेखारे बेसक, आंऊं लाड करियां के से || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -4
- इलहाम आवत परदे से, सो नाहीं चौदे तबक । सो मोमिन इन ख्वाब में, लेत सुख बेसक || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -55
- इस तरफ चबूतरा धाम का, आए मिल्या बन इत । महामत कहे इन अकलें, क्यों कर करूं सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -27
- इस दुनियां के बीच में, कोई भला बुरा केहेवत । तूं जिन देखे तिन को, ले अपनी अर्स खिलवत || ग्रं - किरन्तन, प्र -103, चौ -3

- इस मनुए को कोई न पेहेचाने, जो तुम सकल मिलो संसार । सब कोई देखे यामें मनुआ, या मनुआ में सब विस्तार || ग्रं - किरन्तन, प्र -6, चौ -15
- इस रोज फूंके करनाए, असराफील सूर कुरान के गाए । एक सूरें आखिर हुई सबन, दूजे सूरे उठे सब तन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -21
- इस वास्ते खेल देखाइया, वास्ते बेवरे इस्क के । कोई आया न गया हम में, बैठे अर्स में देखें ए || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -152
- इस वास्ते निमूना, ए जो करी कुदरत । साहेबी अपनी जान के, करी बकसीस ऊपर उमत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -79
- इसलाम बड़ा मरातबा, जो करे अपनी पेहेचान । जुलमत नूर उलंघ के, पोहोंचे नूर बिलंद मकान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -37
- इसलाम बिने हक मारफत, पोहोचावे तजल्ला नूर । ए मकान आसिक रूहों, गिरो खासलखास हजूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -30
- इसहाक एलिया इद्रीस, आए बोहोना सलेमान । मुलक हुआ नबियन का, मार दिया सैतान || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -15
- इसारतें और रमूजें, लिखे कई किस्से निसान । सो ए पाओ तुम हदीसों, और आयतों कुरान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -9
- इसारतें मेयराज में, जो लिख भेजियां हक । सो खोलें हम इसारतें, पढ़ायल रूह अल्ला के बेसक || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -57
- इसारतें रमूजें अल्लाह की, सो लेकर हक इलम । सो खोले रूहअल्लाह की, जिन दिल पर लिख्या बिना कलम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -35
- इसारतें रमूजें इत की, लिखी माहें फरमान । सो भेज्या हाथ रसूल के, मिलाए देओ निसान || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -3
- इसी भांत दोऊ चबूतरे, चारों खूटों पेड़ दिवाल । जब देखिए बीच चबूतरे, चार द्वार इसी मिसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -16
- इसी भांत भोम तीसरी, ऊपर चढ़ती चढ़ती जे । खूबी लेत अति अधिक, चौक ऊपर चौक ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -9
- इसी भांत है चांदनी, ऐसी कांगरी ऊपर । इतथे जब देखिए, तब आवत धाम नजर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -7
- इस्क आगू न आवे माया, इस्कें पिंड ब्रह्मांड उड़ाया । इस्कें अर्स वतन बताया, इस्कें सुख पेड़ का पाया || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -26
- इस्क आयो पिउ को, प्रेम सनेही सुध । विविध विलास जो देखिए, आई जागनी बुध || ग्रं - किरन्तन, प्र -80, चौ -6
- इस्क आवे धनी का चाया, इस्क पिया जी ने सिखाया । पिया इस्क सरूप बताया, इस्कें पिंड ही को पलटाया || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -28

- इस्क इनों के क्यों कहूं, जो हक के पिलायल । कोई केहे न सके इनों बड़ाई, ए अर्स जिमी असल || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -88
- इस्क इलम बारीकियां, दिल जाने अर्स मोमिन । जो जागी होए रूह हुकमें, ताए लज्जत आवे अर्स तन || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -43
- इस्क ईमान धनी धाम को, और जोस जाग्रत पेहेचान । तोले धनी धन धाम का, यों कहे कुरान निसान || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -8
- इस्क का अर्स अजीम में, रब्द हुआ बिलंद । तो फरामोसी में इस्क का, बेवरा देखाया खावंद || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -50
- इस्क का अर्स अजीममें, रब्द हुआ बिलंद । तो बेवरा देखाया इस्क का, मांहें फरेबी फंद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -77
- इस्क का बल भान के, क्या फरेब होसी जोर । निसबत अपनी हकसों, क्यों देसी मरोर || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -23
- इस्क का हक हादी रूहें, रब्द किया माहों-माहें । सो हक से बीच अर्स के, घट बढ़ होवे नाहें || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -23
- इस्क काहूं ना हुता, तो नाम आसिक कहया हक । सो बल इन कुंजीय के, पाया इस्क चौदे तबक || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -5
- इस्क की बात बड़ी रोसन, जासों सुख लेसी चौदे भवन । सो भी सुख नेहेचल, इस्क दृष्टं न रहे जरा मैल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -23
- इस्क की सोभा कहूं मैं केती, ए भी याही जुबां कहे एती । याको जाने सृष्ट ब्रहम, जाको इस्कै करम धरम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -30
- इस्क को ए लछन, जो नैनों पलक ना ले । दौड़े फिरे न मिल सके, अन्दर नजर पिया में दे || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -9
- इस्क को एह लछन, जो नैनों पलक ना ले । दौड़े फिरे ना मिल सके, अंदर नजर पिया में दे || ग्रं - सनंध, प्र -9, चौ -9
- इस्क को सुख और है, और सुख इलम । पर न्यारी बात आसिक की, जिन जो देवें खसम || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -139
- इस्क क्यों ना उपजे, पर रूहों करना सोई उद्दम । राह सोई लीजिए, जो आगू हादिएँ भरे कदम || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -42
- इस्क खसम बतावहीं, उड़ाए दिया सब डर । कायम सुख सब लेवहीं, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -29
- इस्क खेल हाँसी इस्क, इस्क फरामोस मोमिन । इस्के रसूल होए आइया, वास्ते इस्क न पाया किन || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -43
- इस्क गुझ दिल हक का, सो करे जाहेर माहें खिलवत । सो खिलवत ल्याए इत आसिक, करी इस्कें जाहेर न्यामत || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -19

- इस्क घाए करे टूक टूक, अंग होए जाए सब भूक । लोहू मांस गया सब सूक, चित चल न सके कहूं चूक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -25
- इस्क जाने सृष्ट ब्रह्म, जाके नजीक न काहूं भरम । जब इस्क रहया भराए, तब धाम हिरदे चढ़ आए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -10
- इस्क जिन विध उपजे, मैं सोई देऊं जिनस । तब इस्क आया जानियो, जब इन रंग लाग्यो रस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -2
- इस्क जुबां बानी गावहीं, खूब सोभित अति नैन । मगन होत हक सिफत में, मुख मीठी बानी बैन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -13
- इस्क जोस और इलम, ए हक हुकम के हाथ । तब हक हैड़ा ना छूटहीं, ए सब सुख हैड़े साथ || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -72
- इस्क ज्यादा आपे अपना, सबों किया रब्द । फरामोसी तिलसम देखाइया, तिन किया सब रद || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -40
- इस्क डिंने तूं, तो रे इस्क न अचे । घणुएं करियां आंऊ, कूड न उडे रे सचे || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -3
- इस्क तरंग उपजत है, दूर जाए मिलिए आए। वास्ते इस्क हक के दिल का, खेल फरामोसी देखाए || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -68
- इस्क तुमारा तो सांचा, मोहे याद करो बखत इन । रब्द किया तुम मुझसों, बीच बका वतन || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -60
- इस्क तो कया सब्दातीत, जो पिउजी की इस्क सों प्रीत । देखी इस्क की ऐसी रीत, बिना इस्क नाहीं प्रतीत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -11
- इस्क देखावें चढ़ता, सब कलाओं सुखदाए । घट बढ़ अर्स में है नहीं, पर इस्के देत देखाए || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -79
- इस्क देवें लेवें इस्क, और ऊपर देखावें इस्क । अर्स इस्क जरे जरा, ए जो सूरत इस्क अंग हक || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -63
- इस्क धणी जे दिल जो, पेरी न लधों पांण । त डेखारयाई रांदमें, इस्कजी पेहेचान || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -20
- इस्क धनी को आवहीं, याही याद के माहें । इस्क जोस सुख धनी बिना, और पैदा कहूं नाहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -8
- इस्क न आवे पेहेचान बिना, सो मोको दई पेहेचान । दई बातें हक के दिल की, हक की निसबत जान || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -33
- इस्क नाम अर्स से, खेल में ल्याए महंमद । ए क्या जाने नसल आदम, जो खाकीबुत सब रद || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -115
- इस्क नाहीं मिने सृष्ट सुपन, जो ढूंढ्या चौदे भवन । इस्क धनिएँ बताया, इस्क बिना पिउ न पाया || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -5

- इस्क निसानी हक की, सो पाइए सांच के मांहें । सांच अर्स आणू वाहेदत के, ए झूठ जरा भी नाहें || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -113
- इस्क नूर-जमाल बिना, और जरा न कछुए चाहे । इस्क लज्जत ना सुख दुख, देवे वाहेदत बीच डुबाए || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -45
- इस्क नेहेचे मिलावे पिउ, बिना इस्क न रहे याको जिउ । ब्रह्मसृष्टी की एही पेहेचान, आतम इस्कै की गलतान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -12
- इस्क पाइए जुदागिएं, सो तुम पाई इत । वतन हकीकत सब दई, ऐसा दाव न पाइए कित || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -33
- इस्क पिया को बतावे विलास, इस्क ले चले पिउ के पास । इस्क मिने दरसन, इस्क होए न बिना सोहागिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -14
- इस्क पूरा इनों अंगों, और पेहेचान पूरन । सब वजूदों एही रोसनी, कछू जाने ना हक बिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -16
- इस्क पेहेचान ना निसबत, सब फरेबें दिया भलाए । हकें इस्क अपना, आखिर लो निबाहे || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -35
- इस्क पेहेले अनुभवी, निज सरूप निजधाम । तिन खिन बेर ना होवहीं, धनी लेत असल आराम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -13
- इस्क प्याला रंग रस का, जब देत नैन मरोर । फूल पोहोंचे तालू रूह के, कायम चढ़ाव होत जोर || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -10
- इस्क बड़ा रे सबन में, ना कोई इस्क समान । एक तेरे इस्क बिना, उड़ गई सब जहान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -1
- इस्क बड़ा रे सबन में, ना कोई इस्क समान । एक तेरे इस्क बिना, उड़ गई सब जहान || ग्रं - सनंध, प्र -9, चौ -1
- इस्क बतावे पार के पार, इस्क नेहेचल घर दातार । इस्क होए न नया पुराना, नई ठौर न आवत आना || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -20
- इस्क बंदगी अल्लाह की, सो होत है हजूर । फरज बंदगी जाहेरी, सो लिखी हक से दूर || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -58
- इस्क बंदगी या गुणा, से सभ हथ हुकम । रांद कारिए निद्रमें, हित केहो डोह अस्सां खसम || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -28
- इस्क बसे पिया के अंग, इस्क रहे पिउ के संग । प्रेम बसत पिया के चित, इस्क अखंड हमेसा नित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -19
- इस्क बसे सब अंग में, सब बिध देत हैं सुख । कई सुख हर एक अंग में, सो कयो न जाए या मुख || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -59
- इस्क बिछुरे से जानिए, आए दूर थे मिलिए जब । ए दोऊ बातें अर्स में ना थीं, इस्क चिन्हार देखाई अब || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -69

- इस्क बिना रूह के दिल, चुभे ना सूरत हक । मेहेर जोस निसबतें, हक हुकमें चुभे मुतलक || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -22
- इस्क बेवरा देखने, एक तुमें देखाऊ ख्याल । इस्क तअल्लुक रूह के, छूटे ना बदले हाल || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -36
- इस्क बोले सुनें इस्क, सब इस्कै की बिसात । जो गुझ दिल मासूक की, सो आसिक से जानी जात || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -101
- इस्क ब्रह्मसृष्टी जाने, ब्रह्मसृष्ट एही बात माने । खास रूहों का एही खान, इन अरवाहों का एही पान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -15
- इस्क मंगां त गुणो, खुदी पण गनेगार । हुकम इलम जे न्हारियां, त आंऊ बंधिस बिनी पार || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -17
- इस्क मांगू तो भी गुना, और खुदी ए भी गुनाह होए। जो देखों हुकम इलम को, मोहे बांध लई बिध दोए || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -17
- इस्क मिलावा और है, और मिलावा मारफत । इलमें लई कई लज्जतें, इस्क गरक वाहेदत || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -39
- इस्क मोमिन और दुनी का, कछू देखत हो फरक । अब इस्क ल्यो दिल अपने, तुम दिल अर्स बुजरक || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -106
- इस्क याही धनिएँ बताया, इस्क याही सृष्टें गाया । इस्क याही में समाया, इस्क याही सृष्टें चित ल्याया || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -13
- इस्क रब्द खिलवत में, हुआ हक हादी रूहों सों । सबों ज्यादा इस्क कहया अपना, तो तिलसम देखाया रूहों कों || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -1
- इस्क रब्द हुआ अर्स में, तो रूहें इत देह धरत । रूहें चरन तो पकड़े, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -9
- इस्क राखे नहीं संसार, इस्क अखंड घर दातार । इस्क खोल देवे सब द्वार, पार के पार जो पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -24
- इस्क रूह दोऊ कायम, और कायम अर्स के माहें । क्यों इस्क खोवे आवे क्यों, उत कमी कोई आवत नाहे || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -23
- इस्क रूहों कम बेसक, हादी ज्यादा इस्क बेसक । सब थें इस्क बढ़या, बेसक इस्क जो हक || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -63
- इस्क लगाए पिया सों पूरा, खेले अबला होए अहनिस । ओ अंधे अग्यानी भरम में भूले, पर या ठौर प्रेम को रस || ग्रं - किरन्तन, प्र -8, चौ -2
- इस्क लगावें तिन सों, जो दुख रूपी दिन रात । कायम सुख अर्स का, कहूँ सुपने न पाइए बात || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -55
- इस्क सबों में अति बड़ा, बका भोम चेतन । दायम नजर तले नूर के, पेहेचान सबों पूरन || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -90

- इस्क सबों रूहों पूरन, वाहेदत का मतलक । क्यों जरा पेठे जुदागी, बीच रूहों हादी हक || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -48
- इस्क साहेब सों नहीं अंतर, जो अरस-परस भीतर । ए सुगम है सोहागिन, जाको अंकूर याही वतन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -21
- इस्क सुख अर्स बिना, कहूं पैदा दुनी में नाहें । तो हके नाम धराया आसिक, जो इस्क आप के माहे || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -106
- इस्क सुराही ले हाथ में, पिलाओ आठों जाम । अपनी अंगना जो अर्स की, ताए दीजे अपनों ताम || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -3
- इस्क सुराही लेय के, आए बैठे दिल पर । इस्क प्याले आसिकों, हक देत आप भर भर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -98
- इस्क सेती हारिए, जितावे इस्क । इस्कें इस्क न आवहीं, इस्क करे बेसक || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -55
- इस्क सोभा बड़ी है अत, इस्क दृष्टं न पाइए असत । जो कदी पेड़ होवे असत, इस्क ताको भी करे सत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -29
- इस्क हक का सो कहिए, जो इस्क है कायम । एक जरा कम न होवहीं, बढ़ता बढ़े दायम || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -97
- इस्क हक के दिल का, क्यों आवे माहें बूझ । हक देवें तो इस्क आवहीं, ए हक के इस्क का गुझ || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -59
- इस्क हक के दिल में, सो दिल पूरन गंज अपार । असल तन इत जिनों, सो ए रस पीवनहार || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -7
- इस्क हमसे जुदा किया, दिया दुनी को सुख कायम । वचन गवाए हम पे, जो हमेसगी दायम || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -4
- इस्क हमारा कहां गया, जो दिल बीच था असल । तिन दिलें सहूर क्यों छोड़िया, जो विरहा न सेहेता एक पल || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -11
- इस्क हमारा हक सों, दिया हुकमें आड़ा पट । हक का इस्क हम सों, किया दुनियां में प्रगट || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -11
- इस्क है तित सदा अखंड, नाहीं दुनियां बीच ब्रहमांड । और इस्क का नहीं निमूना, दूजा उपजे न होवे जूना || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -6
- इस्क है याको आहार, और इस्कै याको वेहेवार । इस्क है याकी दृष्ट, ए इस्कै की है सृष्ट || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -31
- इस्क है वाहेदत में, कहूं पाइए न दूजे ठौर । दूजे ठौर तो पाइए, जो होवे कोई और || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -112
- इस्क है हमारी निसानी, बिना इस्क दुलहा मैं रानी । इस्क बिना मैं भई वीरानी, बिना इस्क न सकी पेहेचानी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -7

- इस्कें आग फूंक दई, लाग्यो सब ब्रह्मांड । जब पोहोंची झालां अंतर लों, तब क्यों रहे ए पिंड || ग्रं - किरन्तन, प्र -75, चौ -13
- इस्कें ऊपर पुकारहीं, आवत नाहीं होस । सो भी वास्ते इस्क के, जो टलत नहीं फरामोस || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -49
- इस्कें कुंजी ल्याइया, इस्के ल्याया खिताब । इस्कें आए मोमिन, इस्कें खुले ना सिताब || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -45
- इस्कें फुरमान आइया, वास्ते इस्क न खुल्या किन । वास्ते इस्क के गैब हुआ, इस्कें खुले ना खुदा बिन || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -44
- इस्कै में पोहोंचाया, इस्के धाम में ले बैठाया । इस्कें अंतर आंखें खुलाई, धनी साथ मिलावा देखाई || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -65
- इस्म धरे का माएना एह, ऐसी सबी कोई और न देह । ए तिस वास्ते ऐसा कह्या, गुनाह कस्त कोई जाहेर न भया || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -16
- इहां अनेक बुधे बल कीधां, अने अनेक फराया मन । फल थयूं अगाध अगोचर, साथ रहया जोई जोई अनू दिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -54
- इहां आद अंत नहीं थावर जंगम, अजवास न कांई अंधार जी । निराकार आकार नहीं, नर न केहेवाय काई नार जी || ग्रं - किरन्तन, प्र -69, चौ -2
- इहां आवी जसोदा उजाणी, कान्हजी भीडी रही भुज ताणी । स्वांस मांहें न माय स्वांस, मुख चुमती आस ने पास || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -20
- इहां मंदिर मोदी तेजपालनो, चरी चूला पास । कोइक दिन आवी रहे, एनों मथुरा माहें वास || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -12
- इहां रस न धात नहीं कोई तत्व, गिनान नहीं बल गंध जी । फूल न फल नहीं मूल बिरिख, भंग न कांई अभंग जी || ग्रं - किरन्तन, प्र -69, चौ -5
- इहां रूप न रंग नहीं तेज जोत, दिवस न कांई रात जी । भोम न अगिन नहीं जल वाए, न सब्द सोहं आकास जी || ग्रं - किरन्तन, प्र -69, चौ -4
- इहां लग साथ जबराईल, पोहोंच्या इन मकान । कहे आगे मेरे पर जलें, चढ़ सक्या न चौथे आसमान || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -10
- इहां सर्व ने साख पुराविए, गुण अंग इंद्री ने पख । आउध सर्वे संभारिए, ए तो अलख नी करवी छे लख || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -4
- इहां साथने थयो उलास, कयो न जाय तेह विलास । ए जागणीना सुख केणी पेरे कहिए, जाणे श्री धाममां बेठा छैए || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -25
- इहां हस्ती थई ने एणी वाटे हीडवू, पेसवू सईना नाका मांहें । आल न देवी रे भाई आकार ने, झांप तो भैरव खाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -67, चौ -3

ई

- ई अरब रसूलजी, बलही सिंध सुजाण । यकीने पण अगरी, इस्क सिंधी खांण || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -7
- ई करे विहारयां, हितरी पण न सहां । त की घुरंदिस लाडडा, की पारीने असां || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -30
- ई चुआं आंऊ केतरो, अलेखे आईन । विनी कौल मिडी करे, डिंनाऊं दृढ़ आकीन || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -14
- ईं थीयस आंऊं हेकली, भोणा डोरींदी बेई । धणिएं जा मूंके चई, तांजे न्हारे कढ़यं सेई || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -19
- ई हाल डिंने धणी मुंहके, जी गभराणी मत । जां तो इस्क न आइयो, तां कुछां थी सो भत || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -36
- ईमान बिना देखे नहीं, रही या गई न्यामत । नफा नुकसान तो देखहीं, जो होए इसलाम लज्जत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -14
- ईमान ल्याओ सो ल्याइओ, मैं केहेती हों बीतक । पीछे तो सब ल्यावसी, ऐसा कया मोहे हक || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -36
- ईमान ल्याओ सो ल्याइयो, कहूं अनुभव की बात । मोको मिले इन बिधसों, श्री धाम धनी साख्यात || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -3
- ईश्वर फिरे न रहें त्रिगुन, त्रिगन चलें जीव भेले । ए कहावें ब्रह्म सब पैदास यार्थें, और जात हैं आप अकेले || ग्रं - किरन्तन, प्र -31, चौ -5
- ईसा अल्ला आवसी, कहे किताब फिरंगान । किल्ली भिस्त जो याही पे, खोल देसी नसरान || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -82
- ईसा आदम महंमद नाम, ए तीनों एक मिल भए इमाम । और जो कहे मुरदों की भांत, साकी प्याले होसी कल्पांत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -60
- ईसा इमाम उमत को कहे, चलो हुकम माफक । दे साहेदी महंमद की, दूर करे सब सक || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -29
- ईसा के पीछे फिरके, पूछा रसूलें जानिक को । कहे फिरके पैतालीस, जानिके रसूल सों || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -26
- ईसा को कर गाया खसम, कलाम अल्ला ताए कही हुरम । कुरान किताबें जिकर किया, नाम लिख्या ताको जिकरिया || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -4
- ईसा महंमद मेंहेदीय की, जो लों ना पेहेचान तुम । तो लों तुममें कजाए का, क्योंकर चलसी हुकम || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -37
- ईसा मेंहेदी जबराईल, और असराफील इमाम । मार दज्जाल एक दीन करसी, खोलसी अल्लाकलाम || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -15

- ईसे आब हैयाती पिलाइया, काढ़या कुफर जिमी आसमान । दीन एक किया सब इसलाम, ए दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -49
- ईसे के इलम से, होसी सबे एक दीन । ए दज्जाल को मार के, देसी सबों आकीन || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -54
- ईसे महंमद मेंहेदी का, इन तीनों का एक इलम । हक नहीं ब्रह्मांड में, ए हुआ पैदा जिनके हुकम || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -24

उ

- उच्छव करो अनकूट का, विविध करो प्रसाद । पर निकट न आवे नाथ जी, पीछे सब मिल करो स्वाद || ग्रं - किरन्तन, प्र -14, चौ -7
- उछरंग अंग सुंदरी, हेत चित मन धरी । सुख ल्याावियां वालो वली, सुख ल्याावियां वालो वली || ग्रं - रास, प्र -34, चौ -1
- उजास सूर को कहावहीं, सो तो अंधेरी के तिमर । तिनथें कछू न सूझहीं, जिमी आप ना घर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -15
- उजास सूर को कहावहीं, सो तो अंधेरी के तिमर । तिनथें कछू ना सूझहीं, जिमी आप ना घर || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -15
- उज्जड मारग वैकुंठ केरो, ते माटे कोई न चाले । बेहेतल नहीं माहें चोर मले, दूथा मां पग कोई न घाले || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -9
- उज्जल निलाट तिन पर, आए मिली केस किनार । सोहे रेखा बीच तिलक, जुबां कहा कहे सोभा अपार || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -156
- उज्जल निलाट लाल तिलक, क्यों कहूं सोभा असल । सुन्दर सलूकी सरूप की, मांहें आवत ना अकल || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -71
- उज्जल भोम को कहा कहूं तेज, जानो बीज चमके रेजा रेज । ए जोत आसमान लो करत, जोत आसमान सामी लरत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -14
- उज्जल मुख मोमिन कहे, स्याह मुख कहे काफर । या भिस्ती या दोजखी, जाहेर होसी आखिर || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -32
- उज्जल रेती मोती निरमल, जोत को नाहीं पार । आकास न मावे रोसनी, झलकारों झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -9
- उज्जल लाल तली पाउं की, रंग रस भरे कदम । छब सलूकी अंग अर्स की, रूह से छूटे क्यों दम || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -11
- उज्जल हस्त कमल सों, कोमल नरम अतंत । बांधी हिरदे विचार के, दोऊ क्यों कर करूं सिफत || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -29
- उठके आप खड़ी रहो, ल्यो अंग में आनंद । इस्क देखाओ अपना, मासूक करो परसंद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -32

- उठके गिर गिर पड़सी, फरामोसी हाँसी के खेल । ए जो तीनों तकरार, हमें देखाए माहें लैल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -5
- उठके नहाइए जमुना जी, कीजे सकल सिनगार । साथ सनमंधी मिल के, खेलिए संग भरतार || ग्रं - किरन्तन, प्र -80, चौ -14
- उठतां बेसतां रमतां, खबर कोण देसे । वन पधारया रे सखी, सिणगार कोण वरणवसे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -74
- उठतां बेसतां रमतां, वालो चितथी ते अलगो न थाय । ज्यारे वन पधारतां, त्यारे खिण वरसां सो थाय || ग्रं - रास, प्र -4, चौ -5
- उठते बैठते खेलन की, सुध कौन कहे एह सुकन रे । बन जाए अन्हाए के, कौन केहेसी सिनगार बरनन रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -75
- उठाई गिरो एक अदल से, कयामत बखत रेहेमान । देसी महंमद की साहेदी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -15
- उठी कही जेती न्यामतें, सो आई बीच हिंदुस्तान । जो झण्डा महंमदी नूर का, नूर रोसन ईमान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -27
- उठी छे वाणी अनेक आगम, एहेनो गोप छे अजवास । वैराट आखो एक मुख बोले, बुधने प्रकास || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -31
- उठी है बानी अनेक आगम, याको गोप है उजास । वैराट सनमुख होयसी, बुध नूर के प्रकास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -32
- उठे दीन सखत बखत में, पसख्या सबों में कुफर । करें रूहें कुरबानी इन समें, ए क्यों होए रसूल रब बिगर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -109
- उड़त पर के वाउसे, कोट ब्रह्मांड देवे उड़ाए । एक छोटी चिड़िया अर्स की, ताकी लड़ाई क्यों कही जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -72
- उड़ाए अंधेर किया मिलावा, प्रकास कियो सब अंग। काढ़यो मोह अहंकार मूल थे, जो करता सबन सों जंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -23
- उड़ाया कतरा नूर का, सो जाए रह्या मिने नूर । फेर नजर करी भिस्त पर, हुई रोसन भर पूर || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -83
- उड़ावे कोट ब्रह्मांड को, एक जरे सा जानवर । उड़ जाएँ इन के वाउ सों, जब ए उठावें पर || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -74
- उड़ी जो नींद अंदर की, पड़त न क्यों ही चैन । प्यारी पिउ के दरस की, कब देखू मुख नैन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -5
- उडी वेई मारकंड के, निद्रडी कंदे विचार । तोहे सुध असां न थिए, जे डिंनाऊं उपटे द्वार || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -17
- उड्यो अंधेर काढ्यो विकार, निरमल सब होसी संसार । ए प्रकास ले धनी आए इत, साथ लीजो तुम मांहें चित || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -30

- उत कमी क्यों आवहीं, और रूहें आवें क्यों इत । और इस्क जाए क्यों इनों का, जिन की एती बड़ी सिफत || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -24
- उतच्या पानी ऊपर ले जाए, सब कर सके जो कछू ए चाहे । इन वीरजमें होवे आप, और दूर दुनी संग नहीं मिलाप || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -72
- उतथे उठाए जबराईल, ल्याया बीच हिंद । गिरो सितारे महंमदी, कहे जो सूरज चंद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -110
- उतपन अपनी बड़ी दौलत, औलाद यार दोऊ बाजू उमत । बड़े साहेब की ए पातसाही, जाहेर हुआ खंभ खुदाई || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -9
- उतपन देखी इंड की, न अंतर रत्ती रेख । सत वासना असत जीव, सब विध कही विवेक || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -17
- उतपन प्रेम पारब्रह्म संग, वाको सुपन हो गयो संसार । प्रेम बिना सुख पार को नाहीं, जो तुम अनेक करो आचार || ग्रं - किरन्तन, प्र -8, चौ -6
- उतर आए कही रूहअल्ला, सुख सब अौं हकीकत । पाई हक सूरत की अनुभव, दई निसबत मारफत || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -111
- उतर आए नासूत में, भूल गए अर्स की । इत पैदा फना के बीच में, जाने हम हमेसगी || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -8
- उतर जब तुम देखोगे, लैलत कदर के मांहें । और जिमी औरै आसमान, देखो प्रतिबिम्ब तांहें || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -37
- उतर झरोखों से जाइए, दूजी भोम बन माहें । बन सोभे पसु पंखियों, कई हक जस गावें जुबाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -11
- उतरती कांगरी जो हार, बने आसमानी नंग तरफ चार । कई बेल फूल जड़े माहीं, ताकी उठत अनेक रंग झांई || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -172
- उतरती दोए क्योहरी, तिन तले दोए चबूतर । बीच उतरती सीढ़ियां, तले चौक पानी भीतर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -44
- उतरते अवाहों सों, कया अलस्तो-बे-रब-कम । मैं लिखूगा रमूजें, सो जिन भूलो तुम || ग्रं - किरन्तन, प्र -111, चौ -4
- उतरियां सरूप पांच चसमें, रहियां एक झिरने सच में । हिंद बलख और कही मिसर, कौल पाया करार पत्थर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -69
- उतरी अरवाहें अर्स से, रूहें बारे हजार । और उतरी गिरो फरिस्ते, और कुंन से हुआ संसार || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -6
- उतरी किताबें हम पे, गिरो नसली न माने सोए। तब आया पैगंमर हममें, अब कया महंमद का होए || ग्रं - किरन्तन, प्र -122, चौ -4
- उतरी जडाव सर बे सोभंती, चुंनी राती नीली जुगत । निरखी निरखी ने नेत्र ठरे, पण केमे न पामिए तृपत || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -20

- उतरी त्रण सर सोभंती, कांई दोरो जडित अचंभ । हूं केणी पेरे वरणवू, मारी जिभ्या आणे अंग || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -34
- उतरी रूहें फरिस्ते लैल में, अपने रब के इजन । दे हुकमें सबों सलामती, आप पोहोंचे फजर वतन || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -10
- उतरी सीढ़ियां पड़साल से, चौक हुआ बीच इत । दोऊ चौक दाएं बाएं बने, बीच दोए योहरी जित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -76
- उतरे खेल देखन को, रूहें जिन के इजन । सो ढूंढे हक सहूर से, अर्स रूहें मोमिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -6
- उतरे नर बिलंद से, मोमिन बड़ा मरातब । हक के दिल का इस्क, हाए हाए मोमिन लेसी कब || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -40
- उतरे हैं अर्स से, वे कहे महंमद मेरे भाई । सो आखिर को आवसी, ए जो अहेल इलाही || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -31
- उताइयां आलम में, मूं जेडी केई न काए । अजां तरसे मूं जिंदुओ, हे केही पर तोहिजी आए || ग्रं - सिंधी, प्र -13, चौ -3
- उत्कंठा नव रहे रे केहेनी, जो कीजे तारतम नो विचार जी। तारतमतणूं अजवायूँ लईने, आव्या आपणमां आधार जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -2, चौ -15
- उत्तम आगल वाट देखाड़े, मधम अधम सहु वासे । भार करम नूं लेखू रे अलेखे, मनमां विचारी कोई नव त्रासे || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -4
- उत्तम आडीका नें, वली उत्तम दृष्टांत । कोण ने विचारसे, धणी विना करी खांत || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -40
- उत्तम कहावो आपने, अने नाम धरावो साध । साध मल्यो नव ओलखो, मांहें अवगुण ए अगाध || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -9
- उत्तम कहूं वली ए मधे, जिहां तारतमनो विस्तार । वासनाओ पांचे बुधे करी, साख पूरसे संसार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -97
- उत्तम जनम एवो पामी रे मानखो, कां रे पडो पसुना जेम पास । बीजा पसु सहुए बंधावे, पण केसरी केम बंधावे रे आप || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -20
- उत्तम भी कहूं इनमें, जहां तारतम को विस्तार । वासना पांचों बुध ले, साख पूरसी संसार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -102
- उत्तम भेख धरो वैष्णव के, और वैष्णव आप कहावो । जो वैष्णव बस करे नव अंग, सो वैष्णव क्यों न जगावो || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -6
- उत्तम विचार उत्तम बंधेज, और कई विध के द्रष्टांत रे । इन धनी बिना ए दया कर, कौन देसी कर खांत रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -43
- उत्तम होए खट करम करो, आचार करो विधोगत । ब्रह्म चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्म सों निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -29

- उदयो अखण्ड सूर निज वतनी, भई जोत कोटान कोट । कहे महामत रात टली सबन को, आए सब धनी की ओट || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -24
- उदयो लोभ विखे रस विखया, सैन्या पति सैतान । दसो दिस आग लगाई दुनियां, सुध बुध खोई सान || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -9
- उदर कारन बेचें हरी, मूढ़ों एही पायो रोजगार । मारते मुख ऊपर, वाको ले जासी जम द्वार || ग्रं - किरन्तन, प्र -26, चौ -5
- उदर कुटम कारणे, उत्तमाई देखाडे अंग । व्याकरण वाद विवादना, अर्थ करे कई रंग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -23
- उदर कुटम कारने, उतमाई देखावे अंग । व्याकरण वाद विवाद के, अर्थ करें कई रंग || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -22
- उदर कुटम कारने, उत्तमाई देखावे अंग। व्याकरण वाद विवाद के, अर्थ करें कई रंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -19
- उदर सुकजी उपना, अने आंहीं उपनूं भागवत । व्यासे वचन कही प्रीछव्या, ग्रही परसव्या संत || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -111
- उनको जो लगे रहे, सो मतकी बूंदों मिले कहे । जिनों इनों की दोस्ती लई, साहेबें पातसाही तिनको दई || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -31
- उनमद उत्तम असार जाग्या रे मांहें थी, साध आपने कहावे । कुकरम मांहें कहिए जे कुकरम, बंध वज्र में बंधावे || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -37
- उनमाने फल जोवा जाय, सामां वीटे करमना जाल । मनमां जाणें हूं बंध छोडूं छू, पण बंधाई पड़े तत्काल || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -52
- उनसों ज्यादा मिल्या है जित, बोहोतक सवाब लेना है तित । बोहोतायत बीच यों नबिएँ, सो मिसल गाजियों बीच जाहेर किए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -11, चौ -3
- उनों अंतर आंखें तब खुलें, जब हम देखें वह नजर । अंदर चुभे जब रूह के, तब इतहीं बैठे बका घर || ग्रं - सागर, प्र -3, चौ -3
- उनों करी बेफुरमानी, ताथें गिरो सबों की रानी । अमेत सालून जो सूरत, तामें लिखी यों हकीकत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -24
- उपजत रूहों के दिल से, राखत ऐसा बल । कई कोट ब्रह्मांड के खावंद, चले जात मांहें एक पल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -84
- उपजाए देऊं अंग थे, रस प्रेम के प्रकार । प्रकास पूरन करके, सब टालूं रोग विकार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -36
- उपजे उपजावे सब हक, हक देवें दिलावें । मैं जो करत गुन्हेगारी, सो बीच काहे को आवे || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -19
- उपज्या याको केहेवही, कहे प्रले होसी ए। ब्रह्म बतावें याही में, कहे ए सब माया के || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -3

- उपरा ऊपर भोम अनेक, अति विराजे सोए । खूबी इन मोहोलन की, देख देख मन मोहे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -14
- उपली भोम चढ़न को, सीढ़ियां अति सोभित । नई नई तरह नए रंगों, सामी जोतें जोत उठत || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -74
- उपाय किए अनेको, पर काहूं ना लखानी । ए वानी निज बुध बिना, न जाए पेहेचानी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -2
- उपासनी निरगुन या निरंजन, किन उलंघ्यो न जाय विष्णु को कारन । या सास्त्र या साधू जन, द्वैत सबे समानी सुंन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -10
- उमंग अंग में रोसनी, अलेखे उपजत । इन कहे अरवाहें अर्स की, अनेक सुख पावत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -67
- उमंग उदयो साथ, रंगे तो रमवा रास । रासमां करूं विलास, सखियो सुख लेत री || ग्रं - रास, प्र -22, चौ -1
- उमत को देखलावने, बनाए चौदे तबक । देने पेहेचान गिरो को, यासे जाने हक || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -76
- उमत मेला महंमद का, इनकी काहूँ ना पेहेचान । ना होए खुले बातून बिना, मारफत हक फुरमान || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -8
- उमत लाहूती कही अंगूर, दूजी जबरूती कही खजूर । मलकूती को खेती कही, इनको बड़ाई उनथें भई || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -78
- उमर अव्वल से आखिर लग, गुजरी सांई संग । मैं पेहेले ना पेहेचाने, हक के इस्क तरंग || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -41
- उमर खोई अमोलक, मोह मद क्रोध ने काम । विखया विखे रस भेदिया, गल गया लोहू मांस चाम || ग्रं - किरन्तन, प्र -99, चौ -7
- उमर खोवें नुकसान में, पर करें नाहीं सहूर । याद न करें तिनको, जिनका एता बड़ा जहूर || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -42
- उमर जात प्यारी सुपने, निस दिन पिउ जपत । लाल कदम न छोड़ें मोमिन, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -1
- उमर तो सब चल गई, आया उठने का दिन । या तो उठाओ हँसते, ज्यों जानो त्यों करो रूहन || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -31
- उमी आप पढ़ें कुरान, सुनो जाहेरियों दिल के कान । काजी कजा पर आया आखिर, खोल दिल दीदे देखो नजर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -25
- उमेद करी जो सैयन, सो इत आए करी पूरन । तुम उमेद करते मने किए, तो भी खेल देखाए सुख दिए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -5
- उमेदां तामसियां रही तिन बेर, सो देखन को हम आइयां फेर । इन ब्रह्मांड को एह कारन, सुनियो आतम के श्रवन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -59

- उमेदां न हुइयां पूरन, धाख मन में रही । तब धनीजीऐं अंतरगत, हुकम कियो सही || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -2
- उरझे सब याही में, पार सब्द न काढ़े एक । कथ कथ ग्यान जुदे पड़े, द्वैतै में देख देख || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -4
- उलंघ जात कई चेहेबच्चों, जल साम सामी जात आवत । इत कदम सुख मोमिन लेवहीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -71
- उलट अंग न माय रे वालैया, कीजे रंग रसाल रे । पल एक अमथी म थाओ जुआ, रखे कंठ बांहोंडी टाल रे || ग्रं - रास, प्र -25, चौ -6
- उलट तमने अति घणो वाध्यो, वली रंग उपजावं निरधार । जेटली रामत कहो रे सखियो, ते रमाई आवार || ग्रं - रास, प्र -31, चौ -5
- उलट पलट दुनियां भई, तो भी देखत नाहीं कोए । काढ़ ईमान कुफर दिया, ए जो सबे दुनी दीन दोए || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -97
- उलटा एक चलत हों यामें, मैं छोड़ी दुनियां की राह । तोड़ी मरजाद बिगड़या विश्व थें, मैं तो पतितन को पातसाह || ग्रं - किरन्तन, प्र -15, चौ -4
- उलट्यो आं कागर में, लिख्यो संदरबाई जो डो । ते कागर न वांचयो, पण मूं पाहिजे कंने सुओ || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -28
- उलसे गोकुल गाम आखू, हरख हेत अपार । धन धान वस्तर भूखण, द्रव्य अखूट भंडार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -43
- उलसे गोकुल गाम सारा, हेत हरख अपार । धन धान वस्तर भूखन, द्रव्य अखूट भंडार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -53
- उलास दीसे अंगो अंगे, श्रीस्यामाजी ने आज । ठेक दई ठकुराणीजीए, जईने झाल्या श्री राज || ग्रं - रास, प्र -15, चौ -15
- उल्लू न चाहे ऊग्या सूर, जिन अंधों का दुस्मन नूर । ए सुन वाका जो न ल्यावे ईमान, सोई चमगीदड़ उल्लू जान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -20
- उवरी एक रूहें उमत, दूजी गिरो फरिस्तों की इत । जिनमें इमाम हुआ आखिरी, हिंदू फकीरों में पातसाही करी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -2, चौ -7
- उंवरो अगथिया ने आंबलियो, अकलकरो अमृत जी । करमदी ने कगर करंजी, कदम छे अदभुत जी || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -10
- उस्तुवार न पाई सुनत, ए जो हुए बदबखत । सुपेत मुंह कहे मोमिन, पाई राह जमात से तिन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -10, चौ -7

ऊ

- ऊँचा निपट क्योहर ज्यों, तले हाथों डारी लगत । डारों डारी अति विस्तरी, सुमार न इन सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -42

- ऊंचा नीचा गेहेरा गिरदवाए, कठन समया इत पोहोंच्या आए । हाथ ना सूझे सिर ना पाए, इन अंधेरी से निकस्यो न जाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -81
- ऊंचा वस्तर पेहेरी आकासे, अंत्रीख राखे छे आकार । भोम ऊपर पग भरता नथी, एणी पेरे बांध्यो ए संसार || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -12
- ऊधव तारे डापणिए घणू रे संतापी, रे मूरख तूंने ए मत कोंणे आपी । अमें तूंने जाण्यो नहीं एवो पापी, तें तो नाख्या अमारा अंगडा कापी || ग्रं - खटरुती, प्र -15, चौ -7
- ऊपर कलंगी लटकत, झलकत है अति जोत । याको नूर आसमान में, भराए रहयो उद्दोत || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -32
- ऊपर काहूं ना देखावहीं, जो दम न ले सके खिन । सो आसिक जाने मासूक की, एही मोमिन विरहिन || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -22
- ऊपर काहूं ना देखावहीं, जो दम ना ले सके खिन । सो प्यारी जाने या पिया, या विध अनेक लछन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -4
- ऊपर किनार साड़ी सोभित, लाल नीली पीली जर । छब फब बनी कोई भांत की, सेथे लवने झाल ऊपर || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -68
- ऊपर क्योहरियां झलकत, जवेर अति सुन्दर । ए खूबी कही न जावहीं, जल खलकत चल्या अन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -12
- ऊपर क्योहरी तले चबूतरे, तिन तले सब मेहेराब । परकोटे तले छोटे द्वारने, फिरता बन सोभे तले आब || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -99
- ऊपर खजूरा कड़ियन का, और कई बेल कड़ियों मांहें । तिन बेलों रंग बेली कड़ियों, ए खूबी क्यों कर कहे जुबाएँ || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -53
- ऊपर चंद्रवा थंभों लगता, तले जेता चबूतर । जड़ाव ज्यों अति झलकत, एता ही इन पर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -91
- ऊपर चंद्रवा नूर का, और नूरै की झालर । ऊपर तले सब नूर में, सब नूरै रूह नजर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -4
- ऊपर चांदनी कठेड़ा, बीच जोड़ सिंघासन । राज स्यामाजी बीच में, फिरती बैठक रूहन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -22
- ऊपर चांदनी बैठक, देखिए नूर द्वार । जोत नूर दोऊ सनमुख, अम्बर न माए झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -160
- ऊपर चादरों मोहोल जो, बीच बड़े देहेलान देखत । दोऊ तरफों कदम सुख लेवहीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -66
- ऊपर चोली के कांठले, बेल लगत कांगरी । ऊपर चंपकलीय के, मोती मानिक पाने जरी || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -82
- ऊपर चौक लग चाँदनी, अतंत है विसाल । नजर न पीछी फिर सके, देख देख होइए खुसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -19

- ऊपर चौड़ा तले सकड़ा, दोरीबंध देखत । तले से ऊपर लग देखिए, गिरदवाए सब सोभित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -36
- ऊपर छत्रियां क्यों कहूं, कई रंग नंग जोत किनार । कई दोरी बेली कांगरी, सोभा फिरती तरफ चार || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -108
- ऊपर जल नूर चेहेबच्चे, नूर कारंजे उछलत । ऊपर नूर इत बगीचे, नूर क्यों कहूं हक न्यामत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -116
- ऊपर झरोखे धाम के, बन आए लग्या दिवाल । वाही छाया तले रेती रोसन, जैसा आगे कहया बन हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -4
- ऊपर झरोखे मोहोल के, जल पर बने जो आए । इन चेहेबच्चे की सिफत, मुख थे कही न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -3
- ऊपर झरोखे मोहोल के, जल पर बने जो आए । इन चेहेबच्चे की सिफत, या मुख कही न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -60
- ऊपर ढांपियां सारी सनन्ध, सोभा बनी जो दोरी बंध । तले भोम नजर आवे जेती, उज्जल कहा कहूं जोत सुपेती || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -33
- ऊपर ढांप्या पुल ज्यों, सोभा लेत सुन्दर । ऊपर क्योहरी जड़ाव ज्यों, जल खलकत चल्या अन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -11
- ऊपर तमाम चबूतरे, बिछाया है दुलीच । दोऊ तरफों बैठी रूहें, हक हादी सिंघासन बीच || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -8
- ऊपर तले अर्स ना कहया, अर्स कहया मोमिन कलूब । ए जानें रूहें अर्स की, जिन का हक मेहेबूब || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -76
- ऊपर तले की रोसनी, और वस्तर भूखन की जोत । और जोत सरूपों की क्यों कहूं, ए जो ठौर ठौर उद्दोत || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -24
- ऊपर तले थम्भ दिवालों, सब जोत रही भराए । बीच समूह जोत साथ की, बनी जुगल जोत बीच ताए || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -25
- ऊपर तले बीच नूर में, जानें भस्या सागर नूर । दसों दिसा देखों नूर नजरों, जानों तीखे आवें नूर के पूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -52
- ऊपर तले माहें बाहेर, ए उड़ जासी ज्यों गरद । सो फेर कायम कौन करावहीं, बिना एक महमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -24
- ऊपर तले माहें बाहेर, ए जो कादर की कुदरत । सो कादर काहू न पाइया, जिनके हुकमें ए होवत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -4
- ऊपर तले मांहें बाहेर, खोज्या कैयों जन । नेहेचल न्यारा सबन से, ए ठौर न पाई किन || ग्रं - किरन्तन, प्र -21, चौ -5
- ऊपर तले मांहे बाहेर, दसो दिसा सब एह । छोड़ याको कोई ना कहे, ठौर खसम का जेह || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -19

- ऊपर तले मांहे बाहेर, दसो दिसा सब एह । छोड़ याको कोई ना कहे, ठौर खसम का जेह || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -19
- ऊपर तले माहें बाहेर, दसो दिसा सब एह । सो सब्द काहूं न पाइए, कया ठौर अखण्ड घर जेह || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -17
- ऊपर तले मांहे बाहेर, दसों दिसा सब माया । खट प्रमानथें ब्रहम रहित है, सो क्यों कर दृढ़ाया || ग्रं - किरन्तन, प्र -29, चौ -9
- ऊपर थंभ झलकत, और तले भोम झलकार । सामग्री सब झलकत, और थंभ दिवालों द्वार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -16
- ऊपर दरखत छाया बराबर, सब रही चबूतरे भर । चारों तरफों तीन तीन चरनी, किनारे की सोभा जाए न बरनी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -13
- ऊपर दुगदुगी जो मानिक, आसमान भस्यो ताके तेज । आसमान जिमी के बीच में, जोत पोहोंची रेजा रेज || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -35
- ऊपर देख तरफ बन के, फल फूल बेली रंग रस । कहूं जड़ाव ज्यों चंद्रवा, कई कटाव कई नकस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -60
- ऊपर दोऊ तरफों सीढ़ियां, दोऊ तरफ उतरते द्वार । इत आया तले का चबूतरा, परकोटे सोभे दोऊ पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -63
- ऊपर परकोटे कांगरी, ऊपर हर द्वार नों। कांगरी पाल किनार पर, सिफत आवे ना जुबां मों || ग्रं - परिक्रमा, प्र -22, चौ -6
- ऊपर पहाड़ के ताल जो, बोहोत बड़ो विस्तार । तले बड़े मोहोलात के, सो नेक कहूं विचार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -2
- ऊपर पाट चौक चांदनी, चारों खूटों अति सोभाए । नंग जंग करें रंग पांच के, बारे थंभ गिरदवाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -131
- ऊपर पाल जो योहरी, फिरती आगू गिरदवाए । तिन सबों आणू चबूतरा, तिन दोऊ तरफों उतराए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -36
- ऊपर पाल तलाव के, ऊंचा बन अमोल । जिनकी लम्बी डारियां, तिनमें बने हिंडोल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -81
- ऊपर फिरते फूल कटाव कई, कई बूटियां नकस। तिन पर कहीं जो कांगरी, फिरती अति सरस || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -172
- ऊपर बंध बालन के, जलस गुदा अंतर छाल । चले नदी मल मूत्र की, कहूं केतो नरक को हाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -106, चौ -8
- ऊपर बन बुजरक, कई हिंडोलों हींचत । कई डारी बन झूमत, कई विध खेल करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -83
- ऊपर बनी नव योहरी, फिरते आए तले आठ थंभ । अदभुत बन्या है कठेड़ा, ए बैठक अति अचंभ || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -43

- ऊपर बाड़े वाट धाम की, कौन बतावे और रे । इन भेदी बिना भोम क्यों छूटहीं, क्यों पोहोचिए अखंड ठौर रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -64
- ऊपर बैठक तले जल, ए जो कया कठेड़ा गिरदवाए । इत आए जब बैठिए, तले जल अति सोभाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -59
- ऊपर माएने न होए पेहेचान, ए तुम सुनियो दिल के कान । हमेसां आवत है ज्यों, अब भी फेर आए हैं त्यों || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -19
- ऊपर माएने ले भूले जाहेरी, कलाम अल्ला की सुध न परी । पेहेले कही जो तुम दिल में आनी, तुम जो जानी मुसलमानी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -6
- ऊपर मोहोल तले मोहोल, बीच बीच मोहोल गिरदवाए। इन विध मोहोल भस्यो अम्बर, फेर बिध कही न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -11
- ऊपर राखड़ी जो मानिक, क्यों देऊं इनकी मिसाल । आसमान जिमी के बीच में, होए गयो सब लाल || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -45
- ऊपर ला मकान के, राह न मौत की तित । नूर-मकान नूस्तजल्ला, अर्स हमेसगी जित || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -60
- ऊपर लाल चबूतरे, सब दरवाजे मेहेराब । एही झरोखे इन भोम के, खूबी आवे न माहें हिसाब || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -56
- ऊपर वन रंग छाइयो, जाणे मंडप रचियो । प्रीसणे साथ जे हुतो, ते तो रंग मांहें मचियो || ग्रं - रास, प्र -46, चौ -5
- ऊपर विराजत हिंडोले, तरफ चारों सोभित । ऊपर जल पुल लगते, ए सुख कहां गए अतंत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -8
- ऊपर सारंगी दुगदुगी, करे जो झलझलाट । ए देखे अंतर आंखें खुले, ए जो हैड़े के कपाट || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -33
- ऊपर से तले आए के, सब बैठियाँ खेल देखन । भेली रूह भगवान की, हुकम हुआ सबन || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -10
- ऊपर सोबन सिखर तले, सोभित जल उतरत । खूबी खुसबोए बन में, आए मिल्या ताल जित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -10
- ऊपरवाडे वाट खिण मां, ए घर केम रे लेवासे । ए भोइया विना रे आ भोम, केम रे मेलासे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -62

ए

- ए अकथ केहेनी खसम की, काहूं ना कथियल कोए। जो किनका कथियल कहूं, तो पिया वतन सुध क्यों होए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -11
- ए अंग अर्स सरूप के, क्यों होए बरनन जिमी इन । ए अचरज अदभुत हकें किया, वास्ते अरवा अर्स के तन || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -66

- ए अंग जेते मैं कहे, आवें रूह के हिरदे हक । तेते अंग रूह के, उठ खड़े होए बेसक || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -28
- ए अंग मेरे मासूक के, मीठे अति मुतलक । ए लज्जत असल याद कर, ए लें अरवा आसिक || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -59
- ए अंग लगे प्याला जिनके, सब खलड़ी जाए उतर । ना तो ए प्याला हजम क्यों होवहीं, पर हक राखत पनाह नजर || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -89
- ए अंग सब अर्स के, अर्स वस्तर भूखन । अर्स जरे जवेर को, सिफत न पोहोंचे सुकन || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -81
- ए अंग सारे रस भरे, सब संधों संध इस्क । सहूर किए जीवरा उड़े, अर्स अंग वाहेदत हक || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -12
- ए अगम अकथ अलख, सो जाहेर करें हम । पर नेक नेक प्रकासहीं, जिन सेहे न सको तुम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -3
- ए अग्यारहीं बीच बड़ो विस्तार, प्रगटे बिलंद सब सिरदार । सब न्यामतें सिफतें दई सितार, उतरियां आयतें जो उस्तवार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -24, चौ -2
- ए अजवालू जीवने करे, जे जीव घर भणी पगला भरे । पोते पोतानी पूरे साख, ए तारतम तणो अजवास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -25
- ए अजवालू साथने, रामत जोवा लाव्या । बीजा बंधाणा बंधसूं, विध विधनी माया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -139
- ए अजाडी बंध उथमें, बांधी नाखे तत्काल । द्रष्ट दीठे बंध पडे, एहेवी देखीती जमजाल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -18
- ए अति ऊंचे मोहोल बीच के, हक सुख आकासी देवत । रूहें ए कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -60
- ए अति बड़े मोहोल किनारे, और कंगूरे अति सोभित । सोभा इन मोहोलन की, जुबां कहा करसी सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -56
- ए अंधेरी इन भांत की, काहूं सांध न सूझे सल । ए सुध काहूं न परी, कई गए कर कर बल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -22
- ए अंधेरी इन भांत की, काहूं सांध ना सूझे सल । ए सुध काहूं ना परी, कई गए कर कर बल || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -22
- ए अंधेरी है विकट, जाहेर रची जम जाल । ए पेहेले देखावे सुख सीतल, पीछे जाले अगिन की झाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -33, चौ -18
- ए अनमिलती सों न मिलिए, जाको सांचो नाहीं संग । नाहीं भरोसो खिन को, ज्यों रैनी को पतंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -33, चौ -9
- ए अनहोनी क्यों होवहीं, झूठ न आवे बका माहें । और रूहें बका की झूठ को, सो कबूं देखें नाहे || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -39

- ए अपना नूरी तहां भेजिए, जो होवे अर्स मोमिन । सो ए रूहें हम मोमिन, हक मासूक के तन || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -48
- ए अब्बल कह्या रसूलें, पर क्यों पावे मजाजी दिल । ना बूझे हक हादी रूहों की, जो चौदे तबक मथें मिल || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -83
- ए अब्बल से आखिर लग, दुनी मई मरेगी जे। कर कजा इन मुसाफ सों, कौन उठावसी मुरदे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -49
- ए अमल तणो फेर जिंहा नव जाय, सिंहा फरे छे विकलना जेम । ए अटकलें वन वन जई वलगे, ते फल पांमे केम || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -50
- ए अमल तुमको क्यों रे उतरसी, जो जेहेर चढ्या अति भारी जी । पिउजी के बान तो तोड़े संधान, पर तुमको केहे केहे हारी जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -41
- ए अमलतणो मोटो विस्तार, ते नेठ नव जोवो निरधार । आगे आपणने वास्या सही, श्री मुख वाणी धणिए कही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -2
- ए अमारी वीतकनी विध, मूने मरडी कीधी बेसुध । अमने छेतरया एणी बुध, तो गई अखंड अमारी निध || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -58
- ए अर्स गुझ बिना लदुन्नी, क्यों कर बूझ्या जाए। हक खिलवत बातें गैब की, दें अर्स दिल मोमिन बताए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -6
- ए अर्स जिमी के जवेर, ए जवेर मोहोल नूर तिन । जोत बीच आसमान में, मावत नहीं रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -16, चौ -15
- ए अर्स देखें रूह मोमिन, जो उतरे नूर बिलन्द से । नाहीं क्यों देखे है को, ए तो जाहेर लिख्या किताबों में || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -24
- ए अर्स नूरजमाल का, तिन अर्स बड़ा दरबार । एह जोत आकास में, मावत नहीं झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -124
- ए अर्स बका बातें सुन के, एक पलक न रहें अरवाहें । रूहों हुकम राखे आड़ा पट दे, हक इत लज्जत देखाया चाहें || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -25
- ए अर्स बड़ा रूहों का, जो कया तजल्ला नूर || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -65
- ए अर्स भोम आठमी, साम सामी हिंडोलें खटकत । ए रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -13
- ए अलख किनहूं ना लखी, आदै थे अकल । ऐसी निराकार निरंजन, व्याप रही सकल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -17
- ए अलख किने ना लखी, आदै थे अवल । ऐसी निराकार निरंजन, व्याप रही सकल || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -17
- ए अलगो थाय केम, आपण कहूं करे वालो तेम । अमे आतम सखियो एक, रमतां दीसे अनेक || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -3

- ए अवतारनी उपमा, काई लीला अखंड थासे । वचन एहेना विधे विधे, कांई वाणी ब्रह्मांड गासे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -17
- ए अवसर क्यों भूलिए, जित पाइए सुख अखंड । या घर बिना सो ना मिले, जो ढूंढ़ फिरो ब्रह्मांड || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -10
- ए अव्वल कया रसूलें, होसी जाहेर बखत कयामत । मता सब मेयराज का, करी जाहेर गझ खिलवत || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -8
- ए अव्वल कहया महंमद ने, आए ईसा मारसी दज्जाल । साफ दिल होसी सबों, कराए दीदार नूरजमाल || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -69
- ए अव्वल का हुकम, आखिर होसी जाहेर । करसी साफ सबन को, अंतर माहें बाहेर || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -46
- ए असल नूर मकान की, ए नूर सागर साबित । देखे नूर के तरंग, रास भिस्त कही तित || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -38
- ए अहमद अल्ला के हुकमें, महंमद कया समझाए । अब क्या कहिए तिनको, जो ए सुनके फेर उरझाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -27
- ए आकार धरी अम मांहें, बेठा छो अंतरीख । पण केम छाना रहो तमे अम थी, अमे तमारा सरीख || ग्रं - खटरुती, प्र -5, चौ -13
- ए आगे फुरमाया रसूलें, कौल तोड़ होसी तफरका । एक नाजी बहत्तर नारी लिखे, पर किन पाया न खुलासा || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -75
- ए आडीको कीधो उत्तम, पण घरनी निध ते कही तारतम । जेथी ओलखिए आधार, वली जीवने टले अंधकार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -45
- ए आतम को नेहेचे भयो, संसे दियो सब छोड़ । परआतम मेरी धाम में, तो कही सनमंध संग जोड़ || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -12
- ए आद के संसे अबलों, किनहूं न खोले कब । सो साहेब इत आए के, खोल दिए मोहे सब || ग्रं - किरन्तन, प्र -65, चौ -8
- ए आदम औलाद सब जानत, इन बदला मांग लिया हक में । क्यों छूटे बंध दुस्मन के, तो किन चल्या ना इनसे || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -30
- ए आपण खमीने रया, त्यारे वली धणीजीए कीधी दया । बाई रतनबाईनी वासना, श्री लीलबाईने उदर उपना || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -9, चौ -2
- ए आम खलक जो आदमी, या देव या जिन । सो राह चलें ले वजूद को, पावें नहीं बातन || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -6
- ए आयत देख्या चाहे, ताए देखाऊं बेसक । इनमें जो सक ल्यावहीं, सो जलसी आग दोजक || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -45
- ए आवेस लईने करी, प्रगट्या गोकुल नंद घरी । साथ सपन एम लावू सही, जे गोकुल रमिया भेला थई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -24

- ए आसिक रूहें गिरो खानी, बीच नूर तजल्ला माहें । दई साहेदी महंमदें मेयराज में, जो हकें केहेलाई मसी जुबाएँ || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -43
- ए इंड जो पैदा किया, ए जो विश्व चौदे भवन । इनमें सुध न काहू को, ए उपजाए किन || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -10
- ए इंड सारा कोहेड़ा, खेल चौदे भवन । सुर असुर कई अनेक भाते, हुआ छल उतपन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -27
- ए इनायत पेहेले भई, आए महंमद आप । रूह अल्ला पेहेले दिल मिने, अहमद कियो मिलाप || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -65
- ए इन्साफ सरा न करे, दुरस्त माएने बातन । उपले माएने ले आप सिर, सिफत जो मोमिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -56
- ए इलम अन्दर यों केहेत है, ए जो निसबत देखत दुख । इन दुख में बका अर्स के, हैं हक दिल के कई सुख || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -11
- ए इलम आए पीछे, नींद आवत क्यों कर । जब सक जरा ना रही, रूहों क्यों न आवे याद घर || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -81
- ए इलम आया जब रूह को, तब पेहेचान आई मुतलक । जो हरफ निकसे दुनी का, सो सब देखे इस्क हक || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -32
- ए इलम इन वाहेदत का, हकें सो बेसकी दई मुझ । नूर के पार द्वार बका के, सो खोले अर्स के गुझ || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -1
- ए इलम ए इस्क, दोऊ इन हक को चाहें । पर जिनको हक जो देत हैं, सो लेवे सिर चढ़ाए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -140
- ए इलम कहे खेल उड़ जावे, बका कंकरी के देखे । तो अर्स रूहों की नजरों, ख्वाब रेहेवे क्यों ए || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -7
- ए इलम कुंजी अर्स की, रूह अल्ला ल्याए हकपें । माहें कई गुझ हक दिल की, सो सब देखी इन कुंजी सें || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -44
- ए इलम जानें रूहें अर्स की, और न काहूं खबर । खेल मोहोरे तो कछू हैं नहीं, एक जरे भी बराबर || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -100
- ए इलम नूर जमाल बिना, दूजा कौन बकसत । मुझ बिना किने ना पाइया, मेरी बेसक रूह जानत || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -34
- ए इलम लिए ऐसा होत है, आप बेसक होत हैयात । और कायम हुए देखे सब को, पावे दीदार बातून हक जात || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -44
- ए इलम लिए ऐसा होत है, रूह अपनी साहेदी देत । बैठ बीच ब्रह्मांड के, अर्स बका में लेत || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -49
- ए इलम हकें दिया, किया नाहीं थें मुकरर हक । रूहअल्ला महंमद मेहेर थे, कहूं जरा न रही सक || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -11

- ए इलम-इलाही देत हों, तो भी छूटत नहीं तिलसम । हकें पेहेले कह्या भूलोगे, न मानोगे हुकम || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -77
- ए इलमें सब विध समझे, सांचा इलम जो हक । सब मर मर जाते हुते, किए इलमें बका मुतलक || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -21
- ए इलमें सुनो अर्स बारीकियां, जो सहें अर्स हक रोसन । ताए भी दूजा क्यों कहिए, कहे कुल्ल मोमिन वाहिद तन || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -116
- ए इसारत खोले निज बुध, बिना हादी ना पाइए सुध । घोड़े को लिख्या कलंकी कर, ताकी किन को नहीं खबर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -27
- ए इसारतें कोई न समझया, ना तो जाहेर दई बताए । कह्या गुनाह किया अजाजीलें, सो सब दिलों करी खताए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -11
- ए इसारतें हक मुसाफ की, पाइए खुले हकीकत मारफत । ए हक इलमें पाइए मेहेर से, जो होए मूल निसबत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -5
- ए इस्क तो पाइए, जो पेहेले मोको जाओ भूल । तुम ले बैठो जुदागी, मैं भेजों तुम पर रसूल || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -19
- ए इस्क तो पाइए, जो पेहेले मोकों जाओ भूल । तुम ले बैठो जुदागी, मैं भेजों तुम पर रसूल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -53
- ए इस्क रमूज रहे हमेसा, हक हादी रूहन । ए बेवरा क्योंए न होवहीं, बीच वाहेदत इस्क पूरन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -29
- ए इस्क सब हक का, अर्स हादी रूहों सों। ए अर्स दिल जाने मोमिन, जो हक की वाहेदत मों || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -21
- ए इस्क सागर अपार है, वार न पाइए पार । ए लेहेरी इस्क सागर की, हक देवें सोहागिन नार || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -23
- ए उजाला इंड न समाए, सो इन जुबां कह्यो न जाए। या मन को नाहीं कछू मूल, याथे बड़ा कहिए आक का तूल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -19
- ए उजास इन भांत का, जो कबूं निकसी किरन । तो पसरसी एक पल में, चारों तरफों सब धरन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -19
- ए उज्जल रंग अंग अर्स का, माहें गेहेरी लालक ले । मुख चौक छबि इनकी, किन विध कहूं मैं ए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -37
- ए उपजाई हमारे धनी, सो तो बातें हैं अति घनी । नेक तामें करूं रोसन, संसे भान देऊं सबन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -7
- ए उपजावत तुमहीं, तुमहीं दिखलावत । तुमहीं खेल खेलावत, तुमहीं समें बदलत || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -30
- ए उपजे पांचो मोह थे, और मोह को तो नाहीं पार । नेत नेत कहे निगम फिरे, आगे सुध ना परी निराकार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -27

- ए उपजे पांचो मोह थे, और मोह को तो नाहीं पार । नेत नेत केहे निगम फिरे, आगे सुध ना परी निराकार || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -27
- ए उपले पानी उजूसे, हुआ न कोई पाक । ए पानी न पोहोंचे दिल को, क्या होए ऊपर धोए खाक || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -51
- ए उपले माएने तीन कहे, और चौथा नूर मकान । ए बातें मारफत की, सब मिल एक सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -23
- ए ऊपर जवदाणा नी सोभा, एह जुगत अदभूत । ते ऊपर वली फूलोनी जडतर, तेना केम करी वरणवू रूप || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -38
- ए ऊपर जे सोभा धरे, काई तेहेनो न लाभे पार । अंग चरणियो प्रगट दीसे, साडी मांहें सिणगार || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -21
- ए ऊपर वली निरखी ने जोइए, तो कंठसरी भली गई अंग। कंठसरी केरी कली जुजवी, कांई जुजवा छे तेहेना नंग || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -38
- ए ऊपर वली पख छे एक, सांभलो तेहेनें कहूं विवेक । त्रासिमो पख प्रमाण, जे वासना पांचो ग्रहयो निरवाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -7
- ए ऊपर हवे तूं कहूं, बीजा नाम ते केहेना लऊ । एणे वचने सरवालो थयो, ब्रह्मांडनो धन सर्वे आवयो || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -6
- ए ऊपर हवे सूं कहूं, श्री बालाजीना चरण ज ग्रहूं । कर जोडी करूं विनती, अने अलगी न थाऊं चरण थकी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -13, चौ -4
- ए ऐसा इलम है लदुन्नी, जो देत बका की बूझ । बेसकी सब देत है, और देत हक के दिल का गूझ || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -68
- ए ऐसा खेल अंधेर का, सब कहें हम बुजरक । पर हक सुध काहू में नहीं, छूटी न सुभे सक || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -62
- ए ऐसा था छल अंधेर, काहूं हाथ ना सूझे हाथ । बंध पड़े दृष्ट देखते, तामें आया सारा साथ || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -1
- ए और कोई बूझे नहीं, बिना अर्स के तन । जो नूर बिलंद से उतरी, दरगाही रूहें मोमिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -11
- ए औरों नाहीं दृष्ट, औरों छूटे न मोह अहं भ्रष्ट । याको जाने ब्रह्मसृष्ट, जाको एही है इष्ट || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -22
- ए कजा हुई दुनियां मिने, खोले हकीकत मारफत । तिन मता बका अर्स का, जाहेर करी न्यामत || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -55
- ए कठन वचन में तो केहेती हों, ना तो क्यों कहूं वासना को जीव जी । जिन दुख देखे गुन्हेगार होत हो, आग्या ना मानो पिउ जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -50
- ए कतेब यों कहत है, हादी सोई हक । बिना साहेब साहेब वतन की, कोई और न मेटे सक || ग्रं - किरन्तन, प्र -65, चौ -14

- ए कदम आए जिन दिल में, तित आई हक सूरत । ए चौदे तबक पावें नहीं, बिना असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -45
- ए कदम तली की जोत से, आसमान जिमी रोसन । दिल मोमिन कदम बिना, अंग हो जाए सब अगिन || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -32
- ए कदम ताले मोमिन के, लिखी जो निसबत । तो आठों जाम रूह अटकी, बीच अर्स खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -9
- ए कदम ताले मोमिन के, सो मोमिन हक चरन । तो अर्स कहया दिल मोमिन, जो रूहें असल अर्स में तन || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -49
- ए कदम दिल कछू आवहीं, जब करे विचार दिल ए । हाए हाए ए समया क्यों ना रहया, इन हाँसी फरामोसी के || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -23
- ए कदम देखे रूह फेर फेर, तली लांक या ऊपर । दिल मोमिन अर्स कहया, सो या कदमों की खातिर || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -44
- ए कदम नूरजमाल के, आई दिल मोमिन लज्जत । सो मोमिन अरवा अर्स के, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -82
- ए कदम पावें रूहें लाहूती, नहीं औरों की किसमत । ए सोई पावें हक बारिकियां, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -52
- ए कदम रूहें दिल लेयके, देह झूठी उड़ावत । कोई दिन रखें वास्ते लज्जत, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -73
- ए कदम ले दिल मोमिन, अर्स से ना निकसत । ए रूहें जानें अर्स बारीकियां, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -18
- ए कबूं न जाहेर दुनी में, अर्स बका हक जात । सो इन जुबां इत क्या कहूं, जो इन सरूप को सोभात || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -192
- ए कया कौल थोड़े मिने, रूहें समझेंगी बोहोतात । दिल मोमिन से ना निकसे, चुभ रेहेसी दिन रात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -19
- ए करत है सब इस्क, जो खेल में कोई जीतत । सो भी करत इस्क, जो कोई काहूं भूलत || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -52
- ए करमना बंध जोरावर, छूटे नहीं केणी पर । बलिया बल करी करी थाक्या, निगमिया अवसर || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -57
- ए करो तेहेकीक विचार के, जो होए अर्स उमत । यों असल में हक जगावत, तैसा बदलत बखत || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -38
- ए कलमा इन दुनी का, सब दुख करसी दूर । तिनको भी भिस्त होएसी, जिनके नहीं अंकूर || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -49
- ए कलमा जिन कानो सुन्या, ताए भी देसी सुख । तो मुस्लिम का क्या केहेना, जो हक कर केहेवे मुख || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -45

- ए कलमा जिन जिमिएँ, किया होए पसार । तिन जिमी के लोक को, जिन कोई कहो कुफार || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -46
- ए कलमा मुख लाखों कहे, पर माएने न समझे कोए । इन कलमें मगज सो समझहीं, जो अर्स अजीम की होए || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -24
- ए कलाम अल्ला में पेहेले लिख्या, सब छोड़ेंगे सक। बरकत खास उमत की, सब लेसी इस्क || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -71
- ए कलाम आए हक से, ए नुकता कहया जे । ए जाने विचारें मोमिन, जिन वास्ते हुआ ए || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -6
- ए कलाम नजूम और बातून, मांहें हक हकीकत । हक इलमें खोले रूह नजर, तब दिन ऊगे बका मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -52
- ए कही ईसे की आखिर, अब कहूं इप्तदाए । तिन वाएदे रसूलें, फुरमान दिया पोहोंचाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -66
- ए कही औलाद याफिस की, बेटा नूह नबी का जे । जो बाप कहया तुरकस्थान का, देखो मिलाए कबीला ए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -7
- ए कही न जाए एक जिनस, सो जिनस अखंड अलेखे । सत सरूप सुख लेत हैं, देख देख के देखें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -57
- ए कही सब तुम समझने, भानने मनकी भ्रांत । बेहद विस्तार है अति बड़ा, या ठौर आड़ा कल्पांत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -15
- ए कहूं फना पेहेले जिन विध, होसी इन आखिरत || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -54
- ए कहे जाए न वस्तर भूखन, ए चीज दुनियां के। जो सोभा देत हक अंग को, ताए क्यों नाम धरिए ए || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -53
- ए कहे दोऊ भिंन भिंन, खेल देखन के दोऊ कारन । उपज्यो मोह सुरत संचरी, खेल हुआ माया विस्तरी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -17
- ए कहया आयतों हदीसों, जिन सिर आखिरी खिताब । जाहेर देखावें दिन कर, खोल माएने मगज किताब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -8
- ए कहया था अव्वल, रसूलें इत आए। सो रूहें रूहअल्ला इमाम, फजर करी बनाए || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -42
- ए कहया रसूलें अव्वल, ए जो चौदे तबक । इनमें काजी आखिर दिनों, इत कजा जो करसी हक || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -14
- ए कहया रसूलें इसारतों, ऐसा होसी बखत आखिर । मता ले जासी जबराईल, तब रेहेसी अंधेर दिलों पर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -10, चौ -4
- ए कागद उमत ब्रहमसृष्ट को, सोभा आई तिन पास । माएने इन रोसन किए, तब झूठे भए निरास || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -98

- ए कागद नहीं फरेब का, और कागद सब छल । अबहीं इमाम देखावहीं, रसूल किताब का बल || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -61
- ए कागद यों पूरन भया सही, स्याही कलमें कछू बाकी न रही । अब ए गुन गिनूं मैं नीके कर, आतम के अंदर ले धर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -27
- ए कागल एम रह्यो भराई, कोरमेर सघली रही समाई । कीडी पग मूकवानो नथी क्याहे ठाम, किहां ने मूकू मींडू जेहेनूं नाम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -32
- ए कागल तां अम तणो, तम साथे आव्यो । रामत जोवा ब्रह्मांडनी, विध सघली लाव्यो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -59
- ए काम किया सब हुकमें, अव्वल बीच आखिरत । हक बका द्वार खोलिया, महामत ले आए निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -88
- ए कायम अर्स अपार है, जो कहावत है वाहेदत । कोई पोहोंचे न अर्स रूहों बिना, जिनकी ए निसबत || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -30
- ए कायम नूर नजर की, सिफत या जुबां कही न जाए । पाक हुए सब खेलहीं, जरा खतरा न पाइए ताए || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -70
- ए कायम सब आगे ही किए, तुम हादी रूहों वास्ते । जो देखो अन्दर विचार के, तो रूह साहेदी देवे ए || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -92
- ए कायम सुख हक तरफ के, हक इलम इस्क हुकम । सुख लाड़ लज्जत हुज्जत के, दिए कायम मेरे खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -59
- ए काल माया में विलास जो करे, सो पूरी नींद में सब बिसरे । पूरी नींद को जो सुपन, काल माया नाम धराया तिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -26
- ए काली किन पाई नहीं, सब छाया में रहे उरझाए । उपजे मोह अहंकार थे, सो मोहै में भरमाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -15
- ए किताबें जो आखिरी, आखिरी रसूल ल्याए । सो मगज मुसाफ जाहेर कर, असराफीले गाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -12
- ए किन भेज्या कौन आइया, ए सो कौन कारन । अब कहे कौन कासों कहे, तुम उठ देखो वतन || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -22
- ए किन भेज्या कौन आइया, ल्याया फरमान किन ऊपर । साल हजार नब्बे लग, ए पाई ना किन खबर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -60
- ए किया एतेही वास्ते, तुमारे दिल उपजाया एह । ए खेल में देखे जुदे होए, लेने मेरा इस्क सनेह || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -22
- ए किया जिन खातिर, आदम और हैवान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -25
- ए किया तुम खातिर, समझ लीजो दिल माहें । रूहें मोमिन कदम तले, तित दूजा कोई नाहे || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -91

SPJIN

- ए किया तुमारे वास्ते, जो धनी खोले नजर एह । तो कई देखो माहें बातून, हक का प्रेम सनेह || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -37
- ए किया वास्ते इस्क बेवरे, सो इस्क न आया किन । काहूं जोस जरा आइया, काहूं जरा न किस तन || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -18
- ए किरने कौन पकरे, इन नूरै के आवाज । करत ए सब खसम, अर्स अरवाहों काज || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -59
- ए किव प्रवाही जब देखिए, तामे कोई कोई भारी वचन । ए तो देवें सोभा अचेत में, पर मोहे सालत है मन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -6
- ए किस्से आखिरत के, पढ़े डारें गुजरों में । काम कयामत का रोसन, होसी इन किस्सों से || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -32
- ए कुंजी बल अपार है, जिनसों पाया अपार । लिया हक दिल गुझ इस्क, जिनको काहूं न सुमार || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -43
- ए केके साथ को सुनाई, ए इसारत तब हम न पाई । आप भी इत विरह कियो, पर मैं हिरदे में कछू न लियो || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -19
- ए केहेती हों प्रगट, ज्यों रहे न संसे किन । खोल माएने मगज मुसाफ के, सब भाने विकल्प मन || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -74
- ए केहेती हों मैं तिन को, कोई संसे ल्यावे जिन । ए अनहोनी हकें करी, वास्ते हाँसी ऊपर रूहन || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -26
- ए केहेती हो मोमिन को, जिन अर्स बका में तन । सो कैसे ढांपी रहें, सुन के एह वचन || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -39
- ए कैसा था दुख वजूद, दुख में थे रात दिन । अब पाया सुख अर्स ठौर में, और कैसे अर्स तुम तन || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -96
- ए को जाने रस सबन के, को जाने भोग सबन । ए सब भोगी हक नासिका, हक सुख लेत देत रूहन || ग्रं - सिनगार, प्र -15, चौ -9
- ए कोहेड़ा काली रैन का, कोई न पावे कल मूल । कहां कल किल्ली कुलफ, जो द्वार न पाइए सूल || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -20
- ए कोहेड़ा काली रैन का, कोई न पावे कल मूल । कहां कल किल्ली कुलफ, जो द्वार पाइए सूल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -20
- ए क्या जाने फरजंद पैगंमरी, ए खिताब दिया एहिया नजरी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -27
- ए क्या जानें मजाजी दुनियां, जो तारीकी से पैदास । वाके दाखले मिलावे आपमें, जो अर्स रूहें खासलखास || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -95
- ए क्यों आवे जुगत जुबां मिने, क्यों कहूं एह सलूक । जो ए तरह आवे रूह दिल में, तो तबहीं होवे टूक टूक || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -42

- ए क्यों उपज्या है क्या, क्यों कयामत संग सुभान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -7
- ए क्यों छोड़े चरन मोमिन, जो हक की वाहेदत । आए दुनी में जाहेर करी, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -1
- ए क्यों रहे पट अर्स में, पूछ देखो हक इलम । ओ उड़ाए देसी पट बीच का, जब रूह हुकमें आई कदम || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -65
- ए क्यों होए बिना निसबतें, इतहीं हुई वाहेदत । निसबत वाहेदत एकै, तो क्यों जुदी कहिए खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -27
- ए खाकीबुत सब नाबूद, इनको कायम किए मोमिन । आब हैयाती अर्स की, पिलाए के सबन || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -101
- ए खाली जो तिन ऊपर, ला हवा जो संन । ए जुलमत तिन बीच में, चौदे तबक पलन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -44
- ए खावंद काहूँ न पाइया, खोज खोज थके सब मिल । चौदे तबक की दुनी की, पोहोंचे ना फहम अकल || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -33
- ए खावंद सिर अपने, आपन इन के अंग । अर्स वतन अपना, कायम हमेसा संग || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -104
- ए खावंद है अर्स अजीम का, हादी हमारा सोए । इस मानंद चौदे तबक में, हुआ न होसी कोए || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -8
- ए खिताब महंमद मेंहदी पे, जाकी करे मुसाफ सिफत । सो महंमद मेंहेदी खोलसी, आखिर अपनी बीच उमत || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -35
- ए खिलवत हक नूर की, नूर आला नूर मकान || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -44
- ए खूबी इन अर्स की, क्यों कहूं इन जुबान । कायम सुख साहेबी, ए होए रूहों बीच बयान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -68
- ए खूबी इन बखत की, हकें दई देखाए । ए ख्वाब में प्यारी लगी, अर्स की ठकुराए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -77
- ए खेल किनने किया, तम रूहें भेजी किन । कुंजी कुलफ गिरो आपको, दिल दे देखो रोसन || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -19
- ए खेल किया किन वास्ते, और हुआ किनके हुकम । ए सुध काहूं ना परी, कहां अर्स बका खसम || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -18
- ए खेल किया जिन खातिर, सो तूं कहियो सोहागिन । पेहेले खेल दिखाए के, पीछे मूल वतन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -40
- ए खेल किया जिन खातिर, सो तो कोई हैं सिरदार । जो लों न होवें जाहेर, तो लो उड़े न माया मोह अहंकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -30, चौ -13

- ए खेल किया तुम खातिर, तुम देखन आइयां जेह || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -3
- ए खेल किया रूहों वास्ते, ए जो मोमिन आइयां जेह || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -4
- ए खेल किया वास्ते इस्क, वास्ते इस्क पेहेचान । जुदे किए इस्क वास्ते, देने इस्क सुख रेहेमान || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -27
- ए खेल किया हम वास्ते, हम देखन आइयां एह । दोऊ के मनोरथ पूरने, ए रच्या तमासा ले || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -30
- ए खेल किया हुकमें, हकमें आए रसूल । हुकमें मोमिन आए के, गए खेल में भूल || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -46
- ए खेल को कौन देखावहीं, कौन कहे याकी सुध । इमाम आप आए बिना, क्यों आवे वतनी बुध || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -2
- ए खेल खावंद जो त्रैगुन, कहें हम ही हैं परमपद । और खावंद कोई ना हुआ, बिना एक महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -19
- ए खेल जाको सोई जाने, दूजा खेल सारा छल । ए छल के जीव न छूटे छल थे, जो देखो करते बल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -18
- ए खेल झूठा जो देखहीं, सो तो सांचे हैं साबित । तो कहा बड़ों की बुजरकी, जो झूठ न करहीं सत || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -8
- ए खेल झूठा तो छोड़या जाए, जो सत सुख अंग में भराए । जब सत सुख देखो केलि, तब झूठा दुख देओगे ठेलि || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -13
- ए खेल तुम मांगिया, सो किया तुम कारन । ए विध सब देखाए के, देखाऊं खसम वतन || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -7
- ए खेल तो जरा है नहीं, सब है अर्स खसम । बैठे इतही जागिए, उठो अर्स में तुम || ग्रं - खुलासा, प्र -18, चौ -7
- ए खेल देखो हांसी का, आसमान लों पाताल । फल फूल पात ना दरखत, काष्ट तुचा मूल न डाल || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -21
- ए खेल देख्या ख्वाब का, ए जो लरे लोक विवाद । पर लराए इनको जिने, नेक कहूं तिनकी आद || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -1
- ए खेल देख्या छल का, बैकुंठ लो पाताल । फल फूल पात ना दरखत, काष्ट तुचा मूल ना डाल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -17
- ए खेल देख्या तो सांचा, जो अखंड करूं इन बेर । पार वतन देखाय के, सब उड़ाऊं अंधेर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -5
- ए खेल फरामोसीय का, इस्कें किया जो अब । तुम कायम दायम इस्क में, पर ऐसा इस्क न कब || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -61

- ए खेल मोहोरे कथ कथ गए, सो जले खुदी बेखबर । आप लेहेरें माहें अपनी, गोते खात फेर फेर || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -18
- ए खेल रच्यो हम खातिर, सो देखन आइयां हम । ए जो प्यारे मेंहदी महमद, जेती रूह मुस्लिम || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -1
- ए खेल सब हुकमें हुआ, सब खेलें हुकम मांहे । हुकमें सब होसी फना, हुकम बिना कछू नांहें || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -9
- ए खेल सांचा तो देख्या, जो अखंड करूं फेर । पार वतन देखाय के, उड़ाऊं सब अंधेर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -5
- ए खेल सारा कुदरती, फिराया फिरस्तों फेर । ए इंड गोलक बीच में, गिरद गफलत की अंधेर || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -35
- ए खेल सारा सुन्य का, फिरे मने मन फेर । ए इंड गोलक बीच में, याके मोह तत्व चौफेर || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -37
- ए खेल सोई हाँसी सोई, और सोई हक का इस्क । सो सब वास्ते हाँसीय के, जो इत तुमें किए बेसक || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -41
- ए खेल सोहागनियों को, देखाया भली भांत । तारतम बुध प्रकास के, पूरी सबों की खांत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -32
- ए खेल हुआ जिन खातिर, सो गए खेल में मिल । जब जाहेर साहेब हुआ, तब सबों नजर आवे दिल || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -19
- ए खेल हुआ तिन वास्ते, हक के हुकम । महंमद आया रूहों वास्ते, ले फुरमान खसम || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -62
- ए खेल हुआ महंमद वास्ते, और अर्स उमत । आखिर जाहेर होए के, खोलसी हकीकत || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -18
- ए खेल हुआ मेहेर वास्ते, माहें खेलाए सब मेहेर । जाथें मेहेर जुदी हुई, तब होत सब जेहेर || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -5
- ए खेल हुआ वास्ते महंमद, महंमद आया वास्ते रूहन । रूहअल्ला इलम ल्याए इनों पर, ए सब हुआ वास्ते मोमिन || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -17
- ए खेल हुआ सैयों खातिर, और खातिर अछर । सबके मनोरथ पूरने, देखाए तीनों अवसर || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -15
- ए खेल हुकम इलम का, हमें नींदमें देखावत । करने हाँसी अर्स में, खेल में भुलावत || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -10
- ए खेल है इन भांत का, क्यों ए न खुले मूल नैन । निज नजर खुले बिना, कोई न देवे सुख चैन || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -16
- ए खेल है जो नींद का, तामें आधी दई उड़ाए। बाकी उड़ाए देत हों, तुम साथ को लीजो बुलाए || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -6

- ए खेल है जोरावर, बड़ो ते रचियो छल । ए तब जाहेर होएसी, जब काढ़ देखाऊँ बल || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -9
- ए खेल है जोरावर, बड़ो सो रचियो छल । ए तब जाहेर होएसी, जब काढ़ देखाऊं बल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -9
- ए खेलौने खावन्द के, सब विध के सुखकार । कोई विद्या छिपी ना रहे, जानें खेल अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -16
- ए खेलौने सुख हक के, ए सुख दिए रूहन । खूबी इनके परन की, आकास न माए रोसन || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -18
- ए खोले बड़ा सुख होत है, मेरी रूह और रूहन । इनसे हैयाती पावहीं, चौदे तबक त्रैगुन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -137
- ए ख्वाब देखे सो झूठ है, सत सोई जो मांहें वतन । सांच बैठी कदम पकड़के, झूठ में न आए आपन || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -28
- ए ख्वाबी दम सब नींद लों, ए दम नींद के आधार । जो कदी आगे बल करे, तो गले नींद में निराकार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -36
- ए ख्वाबी दम सब नींद लो, दम नींद के आधार । जो कदी आगे बल करे, तो गले नींद में निराकार || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -49
- ए गन गिने में हिरदे विचार, गन जेते भंडार गिने निरधार । गिनते गिनते बाकी देखे अपार, तिनका भी मैं करना निरवार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -39
- ए गिनती बेसुमार है, और बोलत मिलकर जब । गरजत अर्स अंबर जिमी, बल देत देखाई तब || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -32
- ए गिरो कई बेर बचाई तोफान से, और डुबाई कुफरान । एही उमत खास महंमदी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -7
- ए गुझ थीं अर्स बारीकियां, कोई न जाने बका बात । सो रूहें आए दुनी में प्रगटी, अर्स बका हक जात || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -63
- ए गुझ भेद जो गैब का, पाया न चौदे तबक । कथ कथ सब खाली गए, पर छूटी न काहू सक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -5
- ए गुझ भेद हक रूहन के, हक दिल की भी और । ए जाने हक निसबती, जाको हक कदम तले ठौर || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -23
- ए गुण गणतां मारा कारज सख्या, भलेरे मायामां आपण देह धरया । आखा अवतारनी केही कहूं वात, काईक प्रेमल रदे मूने आवी प्राणनाथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -47
- ए गुण गणिया में निद्रा मंझार, नहीं तो एम केम गणू मारा जीवना आधार । हवे वातडियो करतूं इछा तमतणी, आंही जाग्यानी मूने हाम छे घणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -48

- ए गुण मारा जीवमा ग्रहाय, पण बीहती लखू जाणं रखे कागले न समाय । लेखणोनी मूने चिंता थाय, जाणूं घडतां घडतां रखे उतरी जाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -30
- ए गुन गिन किए जीवें अपने हाथ, पल पल पसरे गुन प्राणनाथ । ए सब तो कहूं जो गुन ठाढ़े रहे, ए गुन मन की न्यात दौड़े जाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -41
- ए गुन गिने में अस्थिर आकार, ना तो यों क्यों गिनूं मेरे प्राण के आधार । अब बात करसी तुम अग्या केरी, मुझे आसा इत जाग उड़ाऊं अंधेरी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -45
- ए गुन तूं याद कर, जो किए अनेक सजन । तूं क्यों सूता जीव अभागी, देकर साहेबी मन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -2
- ए गुन मिल जमें भए जेते, या बिध ऐसे कागद लिखे एते । ऐसे कागद ऐसी स्याही कलम, मांहें बारीक आंक लिखे हैं हम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -29
- ए गुन सब कानन के, कई गुझ सुख रूह परवान । रूहें कई सुख कानों लेत हैं, रेहेमत इन रेहेमान || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -15
- ए गुनाह देखे अपने, जब देख्या दिल धर । ए भी गुनाह खुदीय का, जब फेर देख्या सहूर कर || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -29
- ए गुसा किया मेरे जीव के सिर, ना तो और किवकी भांत कहूं क्यों कर । आतम मेरी है अति सुजान,अछरातीत निध करी पेहेचान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -21
- ए गौर रंग लाल उज्जल, छाती कई विध देत तरंग । नाहीं निमूना जोत जवेर, जो दीजे अर्स के नंग || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -39
- ए घर जाणो छो अखंड अमारू, ऊपर ऊभो न देखो रे काल । तमारी दृष्टे कई रे जाय छे, तो तमें रेहेसो केटलीक ताल || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -11
- ए घाट अति सोहना, चबूतरे बुजरक । अति विराज्या झुन्ड तले, ऊपर छातें इन माफक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -28
- ए घाट पोहोंच्या बड़े वन को, जित हिंडोलों हींचत । उत चल्या किनारे जमुना, हद लिबोई से इत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -6
- ए चतुराई हक की, और हकै का इलम । ए सुख इन सरूप के, देवें एही खसम || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -136
- ए चरन अंग अर्स के, सब्द न पोहोंचे इत । लाल उज्जल रंग सलूकी, मुख कही न जाए सिफत || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -116
- ए चरन आवें जिन दिल में, सो दिल अर्स मुतलक । कई मुतलक बातें अर्स की, दिल सब विध हुआ बेसक || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -114
- ए चरन कमल अर्स के, इनसे खुसबोए आवे वतन । ए तन बका अर्स अजीम, मेरे जीव के एही जीवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -10

- ए चरन दिल आवें निसबतें, ए मता अर्स रूहन । ए धनी के दिए क्यों छूटहीं, मेरे जीव के एही जीवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -19
- ए चरन दिल का जीव है, तिन बिन जीव क्यों जीवत । तो हकें अर्स कह्या दिल को, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -83
- ए चरन दोऊ हक के, आए धरे मेरे दिल मांहें । तो अर्स कह्या दिल मोमिन, आई न्यामत हक हैं जांहें || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -4
- ए चरन नख अति सोभित, जानो तेज पुंज भर पूर । लेहेरें लगें आकास को, नेहेरे चलत तेज नूर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -80
- ए चरन निमख न छोड़िए, राखिए माहें नैनन । ए निसबत हक अर्स की, मेरे जीव के एही जीवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -11
- ए चरन पुतलियां नैन की, सो मैं राखू बीच तारन । पकड़ राखू पल ढांप के, मेरे जीव के एही जीवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -8
- ए चरन पेहेचान होए मोमिनों, वाही को प्यारे लगत । ना तो बुरा न चाहे कोई आपको, पर क्या करे बिना हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -76
- ए चरन राखू दिल में, और ऊपर हैड़े । लेके फिरों नैनन पर, और सिर पर राखों ए || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -147
- ए चरन हुए अर्स मासूक, हुआ अर्स चरन दिल एक । ए वाहेदत जुदागी क्यों होए, जो ताले लिखी ए नेक || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -5
- ए चार नाम कहे धात के, हेम कंचन चांदी नूर । ए चार रंग का बेवरा, लिए खड़े जहूर || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -9
- ए चारों तरफ कहे पहाड़ के, बीच गुरज बड़े थंभ चार । ए आठ निसान गिरद के, लीजो रूहें दिल विचार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -80
- ए चारों हुए दोरी बन्ध, सामी अछर नूर सोभित । ए हक हुकम बोलावत, इत और न पोहोंचे सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -18
- ए चित में विचारो रही, ए इसारत सुकें कही। ए लीला सुकें नीके कर गाई, जो लखमीजी को भगवाने देखाई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -58
- ए चीजें कही सब अर्स की, लीजे मांहें सहूर कर । ए खेलोने रूहन के, नहीं खावंद बराबर || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -38
- ए चेतन कहावे झूठी जिमी, सो सब जड़ तूं जान । जो थिर कहावे अर्स में, सो चेतन सदा परवान || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -6
- ए चौक बने चारों तरफों, और पाल ऊपर चार घाट । चारों द्वार टापूअके, बने सनमुख ठाट || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -5
- ए चौदे चुटकी में चल जासी, गुन निरगुन सुन्य तत्व । निराकार निरंजन सामिल, उड़ जासी ज्यों असत || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -8

- ए चौदे तबक कछुए नहीं, वेदों कह्या आकास फूल । झूठा देखाई देत है, याको अंकूर ना मूल || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -99
- ए चौदे पल में पैदा किए, पांच तत्व गन निरगन । याही पल में फना हुए, निराकार सुन्य निरंजन || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -7
- ए छठा पहाड़ हौज जोए का, ताके तले बड़ो विस्तार । आए पोहोंच्या अधिक ऊपर, इत मिल गया इनके पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -48
- ए छब फब कोई भांत की, निलाट तिलक बीच नैन । ए आसिक नासिका देख के, पावत हैं सुख चैन || ग्रं - सिनगार, प्र -15, चौ -5
- ए छब फब सब देख के, इन चरन तले बसत । ए सुख अर्स रूहें जानहीं, जिनकी ए निसबत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -101
- ए छबि अंग अर्स के, जोत अंग हक मूरत । ए केहेनी में आवे क्यों कर, जो कही अमरद सूरत || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -4
- ए छबि छोड़ के आसिक, क्यों कर आगे जाए । मोहि लेत मुख मासूक, सो चित्त रह्यो चुभाए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -129
- ए छबि पीठ की क्यों कहूं, रंग गौर लांक सलूक । ए सोभा केहेत सखत जीवरा, हुआ नहीं टूक टूक || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -54
- ए छल ऐसा तो रच्या, जो तुम मांग्या देखन । जिन तुम बांधो आप को, अर्स के मोमिन || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -3
- ए छल जिमी करम करावहीं, आपको बुरा न चाहे कोए। तो भी मेहेर न छोड़े मेहेबूब, पर करनी छल बस होए || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -24
- ए छल झूठा देख के, तुम लई जो तिनकी बुध । तो नजर बाहेर पड़ गई, जो भूले अर्स की सुध || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -4
- ए छल देखो मोमिनों, और है सब छल । रूह छल न छूटे छल थे, जो देखो करते बल || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -20
- ए छल पंडित पढ़हीं, ताए मान देवें मूढ़ । बड़े होए करे माएने, एह चली छल रूढ़ || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -17
- ए छल पंडित पढ़हीं, ताए मान देवें मूढ़ । बड़े होए खोले माएने, एह चली छल रूढ़ || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -15
- ए छल पंडित भणीने, मान मुढोमां पामे । ए मूढ पंडित सहु छलना, भूलव्या एणी भोमे || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -14
- ए छल पेड़ थें देखाए बिना, ना छूटे याको बल । उड़ाए देऊं जड़ पेड़ से, ज्यों उतर जाए अमल || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -18
- ए छल फरेब तो कह्या, राह न सूझे रात । ए गुम हुए ढूंढें फना बीच, आड़ी हुई जुलमात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -47

- ए छल बनज छोड़ के, करे बैकंठ वेपार । ए सत लोक इनका, कोई गले निराकार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -33
- ए छल बनज छोड़ के, करें बैकुंठ को बेपार । ए सत लोक याही को, कोई गले निराकार || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -35
- ए छल बल देखिया, धखत आग को कूप । ए नख सिख लो देखिया, बड़ा दज्जाल का रूप || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -39
- ए छल महंमद गिरो को, हमें देखाया । सो ए खेल कुंन हुकमें, याही वास्ते बनाया || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -46
- ए छल मोहोरे झूठ के, तिन पर क्यों आवे नूर जात । ए दिल के फूटे यों तो कहें, जो पाई न नबी की बात || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -43
- ए छल रामत जेहेनी ते जाणे, बीजी रामत सह छल । ए छलना जीव न छूटे छलथी, जो देखो करता बल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -17
- ए छवि अंग अर्स के, जो अंग हक मूरत । ए केहेनी में आवे क्यों कर, जो कही अमरद सूरत || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -38
- ए छे नूर द्वार दाएँ बाएँ, नूर दोऊ तरफों तीन तीन । ए रूहें देखें नूर विवेक, जो देवे हुकम नूर आकीन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -42
- ए जंग रूह देख्या चाहे, मिल जोतें जोत लरत । कई नंग रंग अवकास में, मिनों मिने जंग करत || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -46
- ए जंजीर सिपारे सोलमें माहें, बरस सौ की मजल है जाहें । याद किया मांहें कुरान, किस्से इद्रीस की पेहेचान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -16, चौ -1
- ए जंजीरें जल की, अदभुत सोभा लेवत । क्यों छोड़ें ए कदम मोमिन, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -70
- ए जड़े घड़े किन ने नहीं, ना पेहेर उतारत । दिल चाहे रंग खिन में, मन पर सोभा फिरत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -183
- ए जल तरफ ताल के, इतथें चल्या मरोर । एक मोहोल एक चबूतरा, ए सोभा अति जोर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -18
- ए जल तरफ ताल के, इतथें चल्या मरोर । एक योहरी एक चबूतरा, ए सोभा अति जोर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -15
- ए जवेर अर्स जिमी के, सब्द में न आवत । ए मोमिन देखो रूहसों, जुबां न पोहोंचे सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -85
- ए जवेर कई भांत के, सोभित भांत रूप कई । सो पल पल रूप प्रकासहीं, यों सकल जोत एक मई || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -38
- ए जाए न उलंघी देखीती, ना कछू होए पेहेचान । तो दुलहा कैसे पाइए, जाको नेक ना सुन्यो निसान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -22

- ए जाने अरवाहें अर्स की, जिनकी इस्क बिलात । ए क्या जाने पैदा कुंन की, हक आसिक मासूक की बात || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -116
- ए जानें हरम के मेहेरम, जिनों तेहेकीक करी सूरत । मुख ना फेरें सूरत सों, सोई बंदगी हकीकत || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -20
- ए जाहेर करे सोई बुजरकी, कहया जिनका दिल अर्स || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -48
- ए जाहेर कही हक वाहेदत, हक हादी उमत बातन । सो करूं जाहेर बरकत हादियों, पर अव्वल नफा लेसी मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -41
- ए जाहेर तुमारा माजजा, पढ़े हरफ कर पढ़ते थे । ए भेद हक हादी रूहों, बीच खिलवत का जे || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -66
- ए जाहेर दुनी जो ख्वाब की, करे मोमिनों की सरभर । हक देखे जो ना टिके, ताए दूजा कहिए क्यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -114
- ए जाहेर देखावें दोस्ती, जाए रूह न अंदर पेहेचान । ए मोमिन रूहें जानहीं, जाको अर्स दिल कहयो सुभान || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -46
- ए जाहेर लिख्या फुरमान में, रूहें उतरी लाहूत से । अहेल अल्ला तो कहे, जो इस्क है इनों में || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -111
- ए जाहेर लिख्या फुस्मान में, खुलें ना बिना खिताब || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -84
- ए जाहेर है तफावत, जो कर देखो सहर । दुनियां सहूर भी ना कर सके, क्या करे बिना जहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -69
- ए जिन कारन किया है कारज, सो ढूंढ़ों सैयां जो पिया ने कही। न तो अब हीं मगन होए खेलों प्रेम में, तब तो देखन कहन सुनन तें रही || ग्रं - किरन्तन, प्र -9, चौ -6
- ए जिन बांधे सो खोलहीं, तोलों ना छूटे बंध । या बिध खेल खावंद की, तो औरों कहा सनंध || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -40
- ए जिन बांधे सो खोलहीं, तोलों ना छूटे बंध । या विध खेल खावंद की, तो औरों कहा सनंध || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -35
- ए जिन बिध हक बोलावत, तिन बिध रूह बोलत । हम बैठे तले कदम के, ए हम पे हक कहावत || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -77
- ए जिन भेज्या सो जानही, या जाने आया जिन पर । ए गुझ खसम मोमिन की, बिना रसूल न कोई कादर || ग्रं - सनंध, प्र -1, चौ -7
- ए जिमी तुम क्यों न छोड़ो, अजूं नाहीं नींद बाढ़ी जी । इन जिमी नींद दुखड़े घने रे, पीछे क्योंए न जाए काढ़ी जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -12
- ए जिमी बाग पांचों चीजें, ए जो पैदा किए नूर । एक पल लेहेरें कायम किए, नूर का ऐसा जहूर || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -25

- ए जिमी लगसी आग ज्यों, जब धनी चले घर । वचन पिउके लेयके, इत क्यों न जागो मोहे अवसर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -19
- ए जिमी हांसी देख के, मोमिन हूजो सावचेत । इमाम को सुख महामती, तुमको जगाए के देत || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -28
- ए जुओ अचरज अदभुत, चाल चाले संसार । ए प्रगट दीसे अवलो, जो जुओ करी विचार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -26
- ए जुगत जामें की क्यों कहूं, झलकत है चहुं ओर । बाहें चोली और दावन, सोभा देत सब ठौर || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -82
- ए जुदे नीके जानहीं, मोमिन मुस्लिम कुफरान । पेहेचान जुदी सब रूहों की, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -24
- ए जुध करे सबनसों, आप नजर न आवे किन । दज्जाल जोर करामत, सब किए आप से तन || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -16
- ए जुबां ना केहे सकत है, एक पात की रोसन । तो इन डार की क्यों कहूं, जो प्रफुलित सब बन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -8
- ए जुबां मैं हक की, और बोलत है हुकम । हक अर्स बरनन तो हुआ, जो वाहेदत बका खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -3
- ए जेणे बांध्या तेणे छूटे, तिहां लगे न आवे पार । पार सुध पामे नहीं, कोई कोहेडो अंधार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -41
- ए जेती हुई रद-बदलें, त्यों त्यों खेल दिल चाहे । फेर फेर मांगे खेल को, कोई ऐसी बनी जो आए || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -36
- ए जो अंदर अर्स अजीम के, खिलवत मासूक या आसिक । नूरतजल्ला क्यों कहूं, बका वाहेदत हक || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -31
- ए जो अमल चलते थे रात के, ले राह सरीयत । सो हुए सब मनसूख, खोले हकीकत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -77
- ए जो अरवाहें अर्स की, पड़ी रहें तले कदम || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -144
- ए जो अर्स बारीकियाँ, अर्स सहरें रूह जानत । जिन पट खुल्या सो न जानहीं, बिना हक सिफत || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -14
- ए जो आलम जात खुदाई, गरीबी परेसानी बंदों पर आई। आगे हुसेन किया बयान, वास्ते रसूल हाथ फुरमान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -24
- ए जो इमाम गजनवी का मजकूर, लिख्या आखिरत को होसी जहूर । सो मजकूर कहें हो गया, जो जाहेर कयामत में कह्या || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -24
- ए जो उरझी दुनी रात की, न पावे तौहीद राह । तो लिख्या सिपारे उनईसमें, बनी-आदम पूजे सब हवाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -63

- ए जो एक एक लीजे दिल में, तो हर हांसे तीस तीस । कहूं एक झरोखा तीस का, कहूं दस कहूं बीस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -92
- ए जो औलाद आदम की, दिल मजाजी ऐसा दुस्मन । पूजत सब हवा को, सो क्यों सुनी जाए फुरकान इन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -27
- ए जो औलाद आदम की, सब पूजत हैं हवा । सो जाहेर लिख्या फुरमान में, क्या तुम पाया न खुलासा || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -27
- ए जो कलंगी सिर पर, लटक रही सुखदाए । जो भूखन रूह नजर भरे, तो जानों अरवा देवे उड़ाए || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -49
- ए जो कही किताबें तीन, तिन पर है हक का आकीन । सिफत जमाने पैगंमर, रखना बीच खुदाए का डर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -12
- ए जो कही गिरो मलकूती, पैदा जुलमत से दुनी फान । रूहें फिरस्ते उतरे अर्स से, ए दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -19
- ए जो कही जागन, सखी री जाग चलो || ग्रं - किरन्तन, प्र -85, चौ -1
- ए जो कही जुगत जामे की, हक अंग का रोसन । और भांत सुख आसिकों, पेहेने तन वस्तर भूखन || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -13
- ए जो कही दो क्योहरी, तिन बीच पौरी दोए । एक आगू चबूतरा, दूजी आगूं क्योहरी सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -4
- ए जो कही दोए क्योहरी, बीच ऊपर दोए मेहेराब । तीनों घाट इन विध, सोभित बिना हिसाब || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -25
- ए जो कहे आठ मेहेराव, दोऊ चबूतरों पर । ए बैठक हक हादी रूहें, भरया नूर जिमी अंबर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -4
- ए जो कहे बनी-आदम, सब पूजत डाली हवा । कहया निकाह अबलीस से, दुनियां जो दाभा || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -4
- ए जो कहे भिस्त वारस, रेहेने वाले भिस्त हमेस । इन आदम की पैदास, किया बीच खलक के खास || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -41
- ए जो कहे मेहेराव, घाटों ऊपर सोभित । हक कदम हिरदे रूह के, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -29
- ए जो कहे मैं सरूप, जुगल किसोर अनूप । दई साहेदी महंमद रूह अल्ला, किए जाहेर अर्स सख्प || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -139
- ए जो कहे लाखों हो गए, रात में पैगंमर । पैगाम ल्यावे कोई हक का, तो क्यों न करे फजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -89
- ए जो कागद वेद कतेब के, तामें जरा न हुकम बिन । दुनियां सब तिन पर खड़ी, ए जो अठारे बरन || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -9

- ए जो कांगरी इन नंग की, सोभित माहें किनार । गौर निलवट स्याम केसों पर, जाए अंबर लगी झलकार || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -69
- ए जो काजी कजा करी, सो भी मोमिनों की खातिर । औरों पाया मोमिन बरकतें, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -36
- ए जो किया है तुम कारन, धनी धाम सैयां बरनन । जित मिलकर बैठियां तुम, याद करो आप खसम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -188
- ए जो कुदरत गफलती, चौदे तबक की जहान । ए फरेब नीके समझहीं, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -19
- ए जो केहेनी इन भांत की, किए कायम चौदे तबक । सो छुड़ाई केहेनीय को, जासों पाया दुनियां हक || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -15
- ए जो कोमलता कण्ठ की, क्यों कहं चकलाई गौर || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -15
- ए जो कौल तोड़ बहत्तर हुए, कहें हम संनत-जमात । दिन मारफत हुए पछताएसी, सिर पटकें जिमी सों हाथ || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -10
- ए जो खावंद मलकूत के, सो ढूंढ़े हक को अटकल । रात दिन करें सिफतें, पर पावें नहीं असल || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -36
- ए जो खुदी बीच दुनी के, मैं तें करत । ए वेद कतेबों देखिया, जरा न काहूं कित || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -108
- ए जो खूब खुसाली सूरतें, सो सब रूहों के दिल । ए जो हर रूहों के आगे खड़ी, बांध अपनी मिसल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -79
- ए जो खेल कबूतर, कहे अर्स से आया रसूल । सो कहे हमारा रसूल, दोजख में जले इन भूल || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -19
- ए जो खेल था कुदरती, काहूं खोल न देखी नजर । सो उड़ाए दई पेड़ जुलमत, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -6
- ए जो खेल देखाया रूहन को, ताके हुए तीन तकरार । सो ए कहूं मैं बेवरा, ए जो फजर कार गुजार || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -24
- ए जो खेल पैदा की सब कही, इनों सिर अर्स मलकूत । ला मकान जिमी तहेतसरा, ए सब फना तले जबरूत || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -30
- ए जो गमाए दिनड़े, गफलत में जो गल । अब तोको उठन के, आए सो दिनड़े चल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -27, चौ -4
- ए जो गिरदवाए मोहोल चांदनी, बीच मोहोल गुरज हजार । जोत बीच आसमान के, मावत नहीं झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -55
- ए जो गिरो अर्स अजीम की, तिन पे हकीकत मारफत । बड़ी बड़ाई रूहन की, बीच लाहूत बका वाहेदत || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -10

- ए जो गिरो फरिस्तन की, जाको नूर मकान । रूहें बीच नूरतजल्ला , सूरत रेहेमान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -39
- ए जो गुमटियां गिरदवाए की, नगीने एक अगले सौ दोए । बारे हजार गुमटियां, सोभा लेत अति सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -148
- ए जो घाट अनार का, आए मिल्या दिवाल । ए खूबी क्यों कहूं इन जुबां, रूह देखत बदले हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -110
- ए जो चले रातों के यार, मैं इन बंदे पाकों की जाऊं बलिहार । कह्या जो साहेब का दिन, ओ बखत तलब करें मोमिन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -13
- ए जो चल्या बीच रात के, अमल सरीयत । सो कहे दिल मजाजी, जो पैदा जुलमत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -95
- ए जो चेहेबच्चे फूल बाग के, इत कारंजे उछलत । ए सुख कब हम पावेंगे, कहां जाए पुकारूं कित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -29
- ए जो चौदे तबक का बातून, तिन बातून का बातून नूर । ताको भी बातून नूर बिलंद, केहेना तिन बिलंद का बातून जहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -56
- ए जो चौदे तबक की जहान, इनकी फिकर लग आसमान । जब लग आए रसूल महंमद, किने न छोड़ी अक्सा मसजिद || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -6
- ए जो चौसठ हवेलियां, तिन हर एक के थंभ चालीस । तिनके सब जमा कहे, साठ अगले सौ पचीस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -90
- ए जो जाग्रत वचन, सुपन रहे ना आगू जाग । पर लिया ना सिर अपने, तो रही सुपन देह लाग || ग्रं - किरन्तन, प्र -85, चौ -4
- ए जो जिमी अर्स हक की, सो वीरान क्यों कर होए । अबादान हमेसगी, आराम बिना नहीं कोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -16
- ए जो जीती दज्जालें दुनियां, कर लई थी निरखल । सो बल सबको देय के, दिए सुख नेहेचल || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -40
- ए जो ठौर दोऊ कायम, कहें अर्स हक । सो ल्यावे फना बीच वजूद, ए जो फानी खलक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -69
- ए जो ढूंढ़त दुनियां, सो सब तिलसम के। ए क्यों पावें हक बका, तन असल नाहीं जे || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -69
- ए जो तले ला हवा के, जो खेल कह्या फना । इनों सुध ना जबरूत लाहूतरे, ए बका वह सुपना || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -31
- ए जो तुमको रसूलें, दिए माएने खोल । जाहेर किए न ले सके, कहूं सो दो एक बोल || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -10
- ए जो दरिया मेहेर का, बातून जाहेर देखत । सब सुख देखत तहां, मेहेर जित बसत || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -19

- ए जो दुनियां खेल कबूतर, तित भी दिए कुलफ दिल पर । पावे हकीकत कलाम अल्लाह की, सो खुले ना लदुन्नी बिगर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -28
- ए जो दुनियां खेल कबूतर, साहेबी आगू रूहन । ए खरगोस रूहों के दिल का, लड़े साथ अर्स फीलन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -82
- ए जो दुनियां खेल की, सो चीन्हत हक को नांहें । ना तो क्यों कहे छल को दूसरा, जो होत पैदा फनाए || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -86
- ए जो दुनियां चौदे तबक, ताए जबराईल जोस देत । ए झूठों इस्क देखाए के, कायम सबों कर लेत || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -53
- ए जो दुनियां चौदे तबक, हक के खेलौने । ऐसे कई पैदा होत हैं, कोई कायम न इनों में || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -92
- ए जो दुनियां दिल मजाजी, या उनके सिरदार । ना पोहोंचे फना बका मिने, ए हक कौल परवरदिगार || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -98
- ए जो दुनियां बरकत, सो तो कह्या ईमान । और फकीरो की सफकत, सो आखिर मेहेर मेहेरबान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -109
- ए जो दुनियां ला इलाह की, ताए क्यों होए चिन्हार । सो ला ही लिए जात हैं, ज्यों चले चींटी हार || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -87
- ए जो दुनी देखो खेलती, आवे जाए हुकम । झूठा वजूद ना रेहेवहीं, चले कर गिनती दम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -45
- ए जो दुनी पैदा जुलमत, सो इनों की करे सरभर । मजाजी क्यों होए सके, रूहें हक बराबर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -74
- ए जो देखो सहूर करके, भई आड़ी हक आमर । ना तो बल करते धनी बेसक, ए देह ख्वाब रहे क्यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -20
- ए जो देत देखाई वजूद, रूह मोमिन बीच नासूत । ए दुनी जाने इत बोलत, ए बैठे बोलें मांहें लाहूत || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -15
- ए जो दो सै एक नगीने, कलस बने इन पर । इन विध की ए रोसनी, ए जुबां कहे क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -97
- ए जो दोए दिल राखत हैं, ए तो दुनियां की रीत । मांहें मैले बाहेर उजले, ए जीव सृष्ट की प्रीत || ग्रं - किरन्तन, प्र -105, चौ -7
- ए जो द्वार अर्स अजीम का, किन खोल्या कुंजी ल्याए । इलम लदुन्नी मसी बिना, और काहू न खोल्या जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -107
- ए जो नसीब मोमिन का, सो लिख्या मिने फरमान । पर जहान में गुझ जाहेर हुई, अब मोमिनों की पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -85
- ए जो नींद उड़ाई कौल में, जो कदी फैलने में उड़त । तो निसबत इन की हक सों, आवत अर्स लज्जत || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -20

- ए जो नूर मकान आगू अर्स के, नूर बका असल । ए रूहें असलू कानो सुनियो, असल तनों के दिल || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -37
- ए जो न्यारा पारब्रहम, इनकी भी करी रोसन । ए जो अछर अद्वैत, भी कहे तिनके पार वचन || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -27
- ए जो पसु पंखी नजीकी, हक हादी खेलौने अतंत । बोल खेल सोभा सुंदर, सो इन मोहोलों बसत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -77
- ए जो पाक दिले विचारिए, देखो आवत इलहाम ए। पर उपली नजरों न देखिए, ए जो पोहोचत हकीकत जे || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -60
- ए जो पाट घाट अमृत का, सो आया आगू चबूतर । चौक चौड़ा हिस्से तीसरे, इत दीदार होत जानवर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -82
- ए जो पावड़ियां घाटों पर, जड़ाव ज्यों झलकत । अनेक रंगों किरनें उठें, नूर आसमान लेहेरां लेवत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -26
- ए जो पीर मुरीद दोऊ कहे, कुफरान या दज्जाल । अर्स रूहों को देखाए के, उड़ाए देसी ए ताल || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -2
- ए जो पूछे माएने, खोल दिए कदी सोए । तो इनसे चौदे तबक में, क्यों कर कजा जो होए || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -51
- ए जो पैदा जुलमत से, सो कुंन केहेते उपजे । मगज मुसाफ न पावत, लेत माएने ऊपर के || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -26
- ए जो पैदा मोह तत्व, कही तारीकी जुलमात । कौल दूजा हवा ला मकान, जहां से पैदा रात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -62
- ए जो फजर सूर असराफील, नुकता हुकम बजावत । ले कुफर बैठे पहाड़ से, सो जरे ज्यों उड़ावत || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -32
- ए जो फना मोहोरे खेल के, मैं मेरी कर खेलत । याही को देखें सुनें, सुध ना बका वाहेदत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -56
- ए जो फना सब झूठ है, जो ऊपर से देखाया । सो क्यों भेदे हक को, जो नाहीं असत माया || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -24
- ए जो फरज मजाजी बंदगी, बीच नासूत हक से दूर । होए मासूक बंदगी अर्स में, कही बका हक हजूर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -18
- ए जो फरिस्ते नूर से, खेल तिने किया पसर । ए गुझ सारों ने पाइया, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -9
- ए जो फरेब तुम देखिया, और देखे फरेब के मजहब । ए तो सब तुम समझे, गुझ जाहेर करहूं अब || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -1
- ए जो फिरती नूर हवेलियां, नूर लग लग बराबर । आणू नूर द्वार चबूतरे, नूर सिफत अति सुन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -41

SRJN

- ए जो फौज रूहों के दिल की, सो आवत सांच समान । तिन आगे त्रैगुन यों कर, ज्यों चली जात खेल की जहान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -83
- ए जो बका किए हम वास्ते, जाने कायम होए सिफत । सिफत फना की ना रहे, ए हुकमें हम को दई न्यामत || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -47
- ए जो बड़ा चबूतरा, लगता चल्या दिवाल । इत छाया बड़े बन की, ए बैठक बड़ी विसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -1
- ए जो बड़ी कही पड़साल, ऊपर बड़े द्वार । दोऊ तरफों तले दस थंभ, एक एक रंग के चार चार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -114
- ए जो बरस ईसा की कही, तिन की तफसीर कर देऊं सही । दस अग्यारहीं बारही के तीस, ईसा पातसाही बरस चालीस || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -9
- ए जो बात कुराने कही, सो मैं जाहेर करी सही । इनका बयान करे आलम, बिना फुरमाया करे जालम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -22
- ए जो बात खुदाए की, सुनेंगे भी सोए। एही हकुल्यकीन, जो अर्स दरगाह के होए || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -93
- ए जो बात बका अर्स नूर की, सो केहेनी या जिमी मांहें । क्यों सुनसी दुनी इन कानों, जो कबहूं ना सुनी क्यांहें || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -16
- ए जो बातून गुन हक दिल में, सो क्यों आवे मिने हिसाब । ए दृष्ट मन जुबां क्या कहे, ए जो मसाला ख्वाब || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -34
- ए जो बीच दुनी के, जाहेर परस्त जेता । तिन फिरकों सबों का, खुलासा एता || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -8
- ए जो बुजरकी महंमद की, मेयराज हुआ इन पर । महंमद साहेदी ईसे मेंहेंदी बिना, कोई दूजा देवे क्यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -108
- ए जो बेसक महंमदी, सुंनत जमात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -102
- ए जो बैठा मांहें सबन, एही खुदाए का है दुस्मन । काफर करे बोहोतक सोर, तो मोमिनों सों न चले जोर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -19
- ए जो बोले साधू सास्त्र, जिनकी जैसी मत । ए मोहोरे उपजे मोहके, तिनको ए सब सत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -22
- ए जो ब्रहमांड उपज्या, जिनमें राख्या सेर । साथ घरों सब पोहोंचिया, और इत आए फेर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -39
- ए जो भिस्त हमों करी, फेर एही भानसी दुख । बुध असराफील पोहोंचहीं, तब ताए भी देसी सुख || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -68
- ए जो भोम चबूतरा, बन आगू बिराजत । इत केतेक जिमी में जानवर, रूहें हक हादी खेलावत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -55

- ए जो मजाजी दुनियां, क्या करसी विचार । तो क्यों देखे बिना मारफत, बीच राह अंधार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -93
- ए जो मन्दिर नूर किनार के, दो हारें नूर मन्दिर । साम सामी नूर हिंडोले, नूर झलकत है अन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -87
- ए जो माएने मुसाफ के, सो मेंहेदी बिना न होए। सो साहेब ने ऐसा लिख्या, और क्यों कर सके कोए || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -47
- ए जो मांगी तुम माया, सो देखे तीन संसार । अब साथ पिउ संग चलिए, ज्यों पिउ पावें करार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -8
- ए जो माया लोक चौदे, सब त्रिगुन को विस्तार । ए मोह अहंतें उपजें, ताथें छूटत नहीं विकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -2
- ए जो मिलाइयां हैं जंजीर, सो जुदे कर देऊं खीर और नीर । एही अगली फेर और बिध लिखी, सोई समझी चाहिए दिल में रखी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -2
- ए जो मुरग मेयराज में अंदर, हर साइत यों केहेता था । जो छोडूं खाक चोंच से, तो दरिया होए जाए अंधेरा || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -63
- ए जो मैं खुदाए की, क्यों रहे दीदार बिन । क्यों रहे सुने बिना, मीठे पिउ के वचन || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -24
- ए जो मैं लिखी बजरकियाँ, सो है कोई तुम बिन । जित भेजों मासूक अपना, जो चीन्हे मेरे सुकन || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -25
- ए जो मैं हक की, सो भी निकसे हक हुकम । इन मैं में बंधन नहीं, बंधाए जो होवे हम || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -20
- ए जो मोमिन अक्स कहे, जानों आए दुनियां मांहें । हक अर्स कर बैठे दिल को, जुदे इत भी छोड़े नाहें || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -82
- ए जो मोमिन उतरे अर्स से, अर्स कह्या दिल जिन । हक कदम हमेसा अर्स में, ए कदम छोड़े ना मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -13
- ए जो मोमिन नूर बिलंद के, दिल जिनों अर्स हक । सरभर इनों की दुनी करे, हुआ सिर गुनाह बुजरक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -75
- ए जो मोमिन हकीकी, सो कहे अर्स दिल । सो तो पाक हमेसगी, रूहे अर्स निरमल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -47
- ए जो मोहोरे खेल के, धरें भेख विवाद । एक भान दूजा धरें, कहें हमें होत सवाब || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -7
- ए जो रसूले कानों सुने, पर लिखे नहीं फरमान । सो गुझ मोमिनों को देऊंगी, अर्स अजीम के निसान || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -101
- ए जो रस्ता बन का, जोए जमुना लग किनार । सात घाट दोए पुल बीच में, कई चौक बने कई हार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -129

- ए जो लज्जत लाड़ की, सोभी हुई हाथ इजन । जिन निसबतें बेसक करी, ताए क्यों न आवे लज्जत तन || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -18
- ए जो ले खड़े खेल को, और कहे जो चार । ए असल कतरा नूर का, जिनको एह विस्तार || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -4
- ए जो विरहा बीतक कही, इमाम मिले जिन सूल । अब फेर कहूं निज नूर की, जासों पाइए माएने मूल || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -14
- ए जो विरहा बीतक कही, पिया मिले जिन सूल । अब फेर कहूं प्रकास थे, जासों पाइए माएने मूल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -13
- ए जो व्यापक आतमा, परआतम के संग । क्यों ब्रह्म नेहेचल पाइए, इत बीच नार को फंद || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -21
- ए जो सख्प निसबत के, काहूं न देवें देखाए । बदले आप देखावत, प्यारी निसबत रखें छिपाए || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -27
- ए जो सदरतुल-मुंतहा, ए है कायम अर्स । ए जात सिफात एकै, ए हैं अरस-परस || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -5
- ए जो सब कहियत है, हक बिना कछु ए बात । सो सब नूर की कुदरत, जो उपज फना हो जात || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -17
- ए जो सब्द खसम के, जिन तुम समझो और । आद करके अबलों, किन कह्या ना पिया ठौर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -10
- ए जो सरूप सुपन के, असल नजर बीच इन । वह देखें हमको ख्वाब में, वह असल हमारे तन || ग्रं - सागर, प्र -3, चौ -2
- ए जो सलूकी चरन की, निपट सोभा सुन्दर । जो कोई अरवा अर्स की, चुभ रेहेत हैड़े अन्दर || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -99
- ए जो साधू सास्त्र पुकारहीं, सो तो सुनता है संसार । पर गुझ किनहूं न पाइया, सोई सबद हैं पार || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -59
- ए जो सुकन हक के मैं कहे, तामें जरा न रही सक । ए सुन के विरहा न आवत, सो ना इन घर माफक || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -26
- ए जो सुनंत-जमात, होए सके न जुदे खिन । ए गिरो फोड़ क्यों जुदे पड़े, जिनों असल अर्स में तन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -16
- ए जो सूते तुम देखत हो, खसम देखावत ख्याल । सो अब ही देत उड़ाए के, होसी हाँसी बड़ी खुसाल || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -46
- ए जो हक वस्तर की खूबियां, सो हक अंग परदा जहूर । बारीक ए सुख जानें रूहें, जिनपे अर्स सहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -8
- ए जो हक हैड़े की खूबियां, सो क्या केहेसी बुध माफक । पर ए कहे हक हुकम, और हक इलम बेसक || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -84

SPJIN

- ए जो हिरदे आए हक भूखन, जाहेर स्यामाजी के जान । कलंगी दुगदुगी राखड़ी, होत दोऊ परवान || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -52
- ए जो हुई पैदा कुंन से, सबों सिर फरज सरीयत । पोहोंचे मलकूत हवा लग, जो लेवे राह तरीकत || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -4
- ए जोत जोसे रे सखी, सकल मलीने साथ । वचन ए प्रगट थासे, रास ने प्रकास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -18
- ए जोत धरत हैं झरोखे, करें साम सामी जंग । जोत कही न जाए एक तिनका, ए तो मोहोल अर्स के नंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -69
- ए जोत पकड़ी ना रहे, चली इंड फोड सुन्य निराकार । सदासिव महाविष्णु निरंजन, सब प्रकृत को कियो निरवार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -16
- ए जोत में सोभा सुन्दर, और सख्पों की सुखदाए । देख देख के देखिए, ज्यों नख सिख रहे भराए || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -26
- ए जोत में सोभा सुन्दर, देखिए हिरदे में आन । भर भर प्याले पीजिए, देख केहे सुन कान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -51
- ए जोत सब जुदी जदी, देखिए मांहें आसमान । सब जोत जोत सो लड़त है, कोई सके न काहूं भान || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -23
- ए झंडा किने खड़ा किया, ए जो हकीकी दीन । ए लाखों लोक हिंदुअन के, इनको किनने दिया आकीन || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -106
- ए झरोखे एक भोम के, यों भोम झरोखे नवों ठौर । तिन ऊपर चाँदनी कांगरी, तापर बैठक विध और || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -39
- ए झुठी रवेसें और हैं, और अर्स में और न्यामत । ए किया निमूना अर्स जानने, पर बने ना तफावत || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -7
- ए झूठ न आवे अर्स में, ना कछू रहे रूहों नजर । ताथें दोऊ काम इन विध, हकें किए हिकमत कर || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -61
- ए झूठ निमूना इत का, हक को दिया न जाए । चुप किए भी ना बने, केहे केहे रूह पछताए || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -109
- ए झूठ हक को न पोहोंचहीं, तो क्यों देऊं निमूना ए। कछुक तो कहया चाहिए, गिरो समझावने के || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -36
- ए झूठा अंग झूठी जिमी में, झूठी इन अकल । पूछ देखो याही झूठ को, कोई अर्स की है मिसल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -67
- ए झूठा खेल देखाइया, ए जो चौदे तबक । हम जानें आए खेल बीच में, जित तरफ न पाइए हक || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -145
- ए झूठा छल कठन, कांहूं न किसी की गम । कहां वतन कहां खसम, कौन जिमी कौन हम || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -5

- ए झूठा फरेब कछुए नहीं, जामें आए अहमद मोमिन । एह निसानी इस्क की, जाके असल अर्स में तन || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -114
- ए झूठा भवजल अथाह कह्या, ताको पार न पायो किन क्यांहें । याको गौपद बच्छ गोपी कर निकसी, सो पार जाए मिलियां अखंड मांहें || ग्रं - किरन्तन, प्र -13, चौ -18
- ए झूठी अबलों न जानती, क्या है क्यों उतपत । सो अब सब विध समझी, यों होसी फना कुदरत || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -8
- ए झूठी जिमी जो ख्वाब की, खाकी बुत सब रद । ताए भी मद ऐसा चढ़या, जो लगे न काहू को सब्द || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -99
- ए झूठी तुम को लग रही, तुम रहे झूठी लाग । ए झूठी अब उड़ जाएसी, दे जासी झूठा दाग || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -12
- ए झूठी तुमको लग रही, तुम रहे झूठी लाग । ए झूठी अब उड़ जाएसी, दे जासी जूठा दाग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -12
- ए झूठे झूठा खेलहीं, नहीं सांच की सुध । ए पीर मुरीद देखिए, कही दोऊ की बिध || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -41
- ए झूले भोम नंग नूर के, गंज जाहेर नूर अम्बार । जब नूर मोहोलों इत खेलत, अर्स नूर न आवत पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -98
- ए टापू जिमी जवेर की, बीच बीच बन्या बन । दोनों तरफों छज्जे बने, ऊपर बन रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -12
- ए ठौर ऐसा विखम, नास होए मिने खिन । स्याने हो तुम साथजी, सब चतुर वचिखिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -20
- ए ठौर नजर में लीजिए, लगने न दीजे पल । कौल फैल या हाल सों, देख हक हाँसी असल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -23
- ए ठौर सोभा अति बड़ी, और बन विस्तार । ए ठौर बैठक बड़ी, पसु पंखी खेलें अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -75
- ए तन नैन अर्स के, नहीं और कोई देह । ए निरखो नैनों रूह के, भीगल प्रेम सनेह || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -59
- ए तरफ आठों नूर सागर, अंग आवत नूर मुतलक । ए देखतहीं सुख सागर, ए सहूर इलम नूर हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -9
- ए तलबे तुम वास्ते, मैं नेक देखी किताब । ए दिन दिलमें आन के, तुम साथ मिलाओ सिताब || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -25
- ए तले ला मकान के, चार चीजें जिमी आसमान । ज्यों कबूतर खेल के, आखिर फना निदान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -6
- ए तले ला मकान के, दोऊ फना के महे । ए बल मलकूत नासूत, पर जरा कायम नांहें || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -32

- ए तिलसम क्योंए ना छूटहीं, जहां साफ न होवे दिल । अर्स दिल अपना करके, चलिए रसूल सामिल || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -43
- ए तिलसम खेल फना से, खेलत फना माहें। आखिर सब फना होवहीं, इत कायम जरा नाहें || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -73
- ए तीन ब्रह्मांड हुए जो अब, ऐसे हुए ना होसी कब । इन तीनों में ब्रह्मलीला भई, बृज रास और जागनी कही || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -108
- ए तीनों अर्स मुख थे कहें, पर बेवरा न पासे किन । ए दुनियां क्यों समझे, हकीकत खोले बिन || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -22
- ए तीनों उठाए दुनी से, जबराईल ले आया अपने मकान । खड़ा किया झंडा दीन का, ल्याए लाखों खलक ईमान || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -47
- ए तीनों गिरो कही जाहेर, पर ए बीच मारफत राह । ए कलाम अल्ला में बेवरा, योंही कह्या रूह अल्लाह || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -16
- ए तीनों गिरो का बेवरा, एक रूहें और फरिस्ते । तीसरी खलक आम जो, कुन्न केहेते उपजे || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -24
- ए तीनों गिरो का बेवरा, देखो दाखले मिलाए । एक कुंन दूजे पाक फरिस्ते, तीसरी असल खुदाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -109
- ए तीनों फरिस्ते नूर से, हुए पैदा तीनों तालब । जिन जैसा चीन्हा महंमद को, तिन तैसा पाया मरातब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -53
- ए तीनों बातून में एक हैं, जो देखिए हकीकत । तब सबे सुध पाइए, होए बका मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -19
- ए तीनों भाइयों की पेहेचान, दनी को होसी हक इलमें । एक दीन होसी सबे, जब लई बूझ सबों दिलमें || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -33
- ए तीनों मिल किया जहूर, अव्वल आखिर रोसन । हक बैठे इन इलम में, तो दिल अर्स हुआ मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -2
- ए तीनों लोक तिमर के, लिए जो तिनहं घेर । ए निरखे मैं नीके कर, पर पाइए न काहूं सेर || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -21
- ए तीनों लोक तिमर के, लिए जो तीनों ही घेर । ए निरखे मैं नीके कर, पर पाईए ना काहूं सेर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -21
- ए तीनों सूरत दोऊ गिरो मिने, कहे जो सिरदार । ए सब हक इलमें, कर देखो विचार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -87
- ए तीनों सूरत महंमद की, करें सब पर हिदायत । तो लिख भेज्या हक ने, क्यों हलाक होए उमत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -103
- ए तीनों सूरत हादीय की, आई जुदी जुदी हम कारन । आखिर खेल देखाए के, सब समझाई रूहन || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -64

- ए तीनों सूरत हैं एक, सो रसूल तीनों सरूप विसेक । सब नामों बुजरकी लिखी जित, मगज खुलें सब देखोगे तित || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -2
- ए तुम ताले तो आइया, जो तुम असल खिलवत । निसदिन सहूर एही चाहिए, हक बैठे तुमें खेलावत || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -33
- ए तुम नेहेचे करो सोए, ए वचन महामती से प्रगट न होए । अपने घर की नहीं ए बात, जो किव कर लिखिए विख्यात || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -14
- ए तुम सुनियो बेवरा, सात घाटों का इत । ए नेक नेक केहेत हों, सोभा अति अर्स सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -75
- ए तूं देख नाटक निमख को, अब करे कहा विचार । पाउ पल में उलंघ ले, ब्रह्मांड सुन्य निराकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -7, चौ -7
- ए तेरे खुदाए ने कह्या, पैदा करने काम फरजंद का भया । कह्या बीच इस सिनसे, आसान खुदा के दो सकसों से || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -21
- ए तेहेकीक किने ना किया, कहावें सब बुजरक । जेती बात ल्यावें इलम की, तिन सबों में सक || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -45
- ए तेहेकीक किया हक इलमें, इनमें जरा न सक । यों नजीक जान पेहेचान के, हम बोलत ना साथ हक || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -5
- ए तेहेकीक तुम कर दिया, मैं तो बैठी बीच नाहें। इन विध खेल खेलावत, हक नाहीं के माहे || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -13
- ए तेहेकीक हकें कर दिया, हकें लई कदम । बुलाई अपना इलम दे, कर विध विध रोसन हुकम || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -28
- ए तेहेकीकरे तुम कर दिया, तुम बिना कछुए नाहें । ए भी तुम कहावत, इत मैं न आवत मुझ माहें || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -76
- ए तो अछरातीत की, लीला हमारी जेह । पेहेले संसा सबका भान के, पीछे भी नेक कहूं बिध एह || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -3
- ए तो अछरातीतनी, लीला अमारी जेह । पेहेले संसा सहु भाजीने, वली कहीस काईक तेह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -42
- ए तो आग है जलती, ताए लई सुख मान । देखाए भी अंधे न देखहीं, कहें हम मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -31
- ए तो आगे थें कई उड़हीं, नरै की नजर । तो नूस्तजल्ला की नजरों, ए रेहेसी क्यों कर || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -11
- ए तो करी इसारत, पर बोहोत बड़ी है बात । नूर बड़ो इमाम को, सो या मुख कह्यो न जात || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -56
- ए तो कही इन इंड की, पिया पछ्यो जो प्रश्न । कहूं और अजूं बोहोत है, वे भी सुनो वचन || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -42

- ए तो कही इन इंड की, पिया पूछ्यो जो प्रश्न । कहूँ और अजूं बोहोत है, वे भी सुनो वचन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -37
- ए तो केहेती हों खेल का, और कहा कहूं अर्स की इत । अर्स का इस्क तो कहों, जो ठौर जरे की पाऊं कित || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -46
- ए तो केहेर बड़ा हुआ जुलम, जान्या विरह क्यों सहे खसम । सो मैं अपनी नजरों देख्या, धरम हमारा कछू ना रह्या || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -37
- ए तो कोहेड़ा हद का, बेहदी समाचार । ए देखावें हम जाहेर, साथ को खोल द्वार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -77
- ए तो गत संसार की, जो खेचा खेच करत । आपन तो साथी धाम के, है हम में तो नूर मत || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -33
- ए तो गिनती कही दिनन की, आखिरत बड़े निसान । माएने मगज मुसाफ के, और करे सो कौन बयान || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -28
- ए तो गुन गिने में चित ल्याए, पर इन धनी के गुन या न समाए । भी करूं दूजे लिखने के ठाम, गुन लिखने मेरे धनी श्रीधाम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -28
- ए तो जाहेर की कही, अब गुझ कहूंगी तुम । जो बयान रसूलें ना किए, मोमिन वतन खसम || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -52
- ए तो जाहेर कुरान पुकारहीं, और महंमद हदीस । ए बेवरा क्या जानहीं, जिन नसलें लिख्या अबलीस || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -57
- ए तो देख्या बड़ा अचरज, पाए सुख बका अपार । भी बेसक हुए हक इलमें, तो भी छूटे ना नींद विकार || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -2
- ए तो नहीं अटकलनी ओलखांण, जे ततखिण रंग पलटाओ । सनमंधीनों रंग नेहेचल साचो, जिहां हूं तिहां तमें आवो || ग्रं - किरन्तन, प्र -44, चौ -2
- ए तो पातसाही दीन की, सो गरीबी से होए । और स्वांत सबूरी बिना, कबहूं न पावे कोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -12
- ए तो प्रेम के हैं पात्र, याके प्रेम है दिन रात्र । याके प्रेम के अंकूर, याके प्रेम अंग निज नूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -32
- ए तो बड़ी हाँसी कोई खेल में, जो ऐसी होए हमसे । मोमिन रहियो साहेद, ए हक कौल करत हममें || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -59
- ए तो मन्दिर कहे मध के, गिरद मन्दिरों हार । नेक नेक कही अंदर की, और कई विध मोहोल किनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -102
- ए तो मोती लाल कुन्दन, वाहेदत खावंद श्रवन । आकास जिमी भरे जोत सों, तो कहा अचरज है इन || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -14
- ए तो विरहा उपज्या ख्वाब में, चढ़ते चढ़ते पाए । जब विरहा तामस बढ़्या, तब नींद दई उड़ाए || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -25

SPJN

- ए तो सिखाई मूं सिखई, को न घुरां धणी गरे । मूं थेयूं हजारूं हुजतूं, जडे तो डिनो संग करे || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -20
- ए तो हद नहीं आ तो वेहद, इहां अनेक अटकलो तणाय । अनेक सूरा संग्राम करे, अनेक उथडतां जाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -10
- ए तो हाथ में वस्त कहूं दूर न देखाऊं, तुम देखो खोज विचारी । सांच झूठ को प्रगट पारखो, कोई निकसो इन अंधारी || ग्रं - किरन्तन, प्र -10, चौ -8
- ए तो है ऐसा समरथ, सेवक के सब सारे अरथ । अब तुम याको देखो ग्यान, बड़ी मत का धनी भगवान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -18
- ए त्रिगुन की पैदास जो, सो समझे क्यों कर । त्रिगुन उपजे अहं थे, और हिजाब अहं के पर || ग्रं - किरन्तन, प्र -65, चौ -7
- ए थाय सहु अम कारणे, वालो पूरे मनोरथ मन । ए समे नी हूं सी कहूं, साथ सहु धंन धंन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -48
- ए दज्जाल बड़ा जोरावर, मूल गफलत याके साथ । मनसा वाचा करमना, ए सब इनके हाथ || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -11
- ए दया धनी मैं जानूं सही, पर इन जुबां ना जाए कही । जो जीव वचन विचारे प्रकास, तो अंग उपजे धाम धनी उलास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -24
- ए दयानी विध हूं जाणूं सही, पण आणी जिभ्याए केहेवाय नहीं । जो जीवसू बचन विचार सो प्रकास, तो ततखिण जीवने थासे अजवास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -24
- ए दरखत नेहेरें चेहेबच्चे, बीच खेलन ठौर कमाल । याही विध बड़े पहाड़ लग, सुख रूहें नूरजमाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -43
- ए दरद जाने सोई, जिन लगे कलेजे घाए । ना दारू इन दरद का, फेर फेर करे फैलाए || ग्रं - सनंध, प्र -7, चौ -5
- ए दरद जाने सोई, जिन लगे कलेजे घाव । ना दारू इन दरद का, फेर फेर करे फैलाव || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -5
- ए दरद तेरा कठिन, भूखन लगे ज्यों दाग । हेम हीरा सेज पसमी, अंग लगावे आग || ग्रं - सनंध, प्र -7, चौ -6
- ए दरद तेरा कठिन, भूखन लगे ज्यों दाग। हेम हीरा सेज पसमी, अंग लगावे आग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -6
- ए दस भांत की कही दोजक, जो बे फरमान हुए हक । जिनहू फैल जैसे किए, तिनको बदले तैसे दिए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -29
- ए दस रंग के मनके दस, ऊपर एक रंग तले दोए। दोए रंग तले तीन हैं, तीन रंग तले चार सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -170
- ए दस रंग नंग तिनों में, फिरते बने तीन फूल । तले डांड़ियां रंग अनेक हैं, ए सोभा देख हूजे सनकूल || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -176

- ए दसे अंगुरियों मुंदरी, नूर नख अंगुरी पतलियां । पोहोंचे हथेली उज्जल लीके, प्रेम पूरन रस भरियाँ || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -38
- ए दसों दिस लोक चौद के, विचार देखे वचन । मोह सागर मथ के, काढ़े सो पांच रतन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -6
- ए दिन देखो हक के, जो कहे हैं बातन । कह्या हक अर्स दिल मोमिनों, देखो कलाम अल्ला रोसन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -32
- ए दिल की बातें कासों कहं, रूह की जानो सब । बोलन की कछू ना रही, जो कहो सो करूं में अब || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -14
- ए दिल जाने रूहसों, मुख जबां पोहोंचे नाहें । ए मोमिन होए सो विचारसी, अपने हिरदे माहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -21
- ए दिल में ले देखिए, अर्स धागा और नंग। जोत न माए आकास में, जो सोभे पेहेने हक अंग || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -11
- ए दुख की बातें हैं जो घनी, पर रह्यो जीव कछू अग्या धनी । इन समें जो निध न जाए, तो क्यों आवेस सरूप सहे अंतराए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -24
- ए दुख तो नेहेचे बुरा, मेरी सैयोंपे सह्यो न जाय । जो कदी हांसी ना करे, पर जिन हिरदे चढ़ आए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -31
- ए दुख बातें सोई जानहीं, जाको आई वतन खुसबोए । ए दुख जानें अर्स अंकूरी, माया जीव न जाने कोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -24
- ए दुख लाग्यूं मूने सही, ए उत्कंठा मारा मनमा रही । एणी दाझे ते मूने दही, निध हाथथी निसरी गई || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -29
- ए दुखतां में सहयो न जाय, अने कालजडूं मारूं कपाय । कंपमान थई कलकले, करे निस्वास अंतस्करन गले || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -30
- ए दुखनी वातो केही कहूं, जीव जाणे मन मांहें । जे अम ऊपर थई एवडी, त्यारे तमे हुता क्यांहें || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -5
- ए दुखनी वातो छ अति घणी, पण ए अग्या मारा वालाजी तणी । एणे समे जो निध नव जाय, तो आवेस सरूप केम मुकाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -67
- ए दुनियां इन विध की, ताए एती सुध सबन । हम सब बीच फना मिने, ठौर बका न पाया किन || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -46
- ए दुनियाँ किन पैदा करी, कौन ल्याया हद तोफान । किन राखी गिरो कोहतूर तले, किन डुबाई सब जहान || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -14
- ए दुनियां चौदे तबक में, किन जान्यो न मैं को बल । किन मैं को पार न पाइया, कई दौड़ाए थके अकल || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -29
- ए दुनियां जो खेल की, छोड़ सूरिया आगे ना चलत । सो कायम फना क्या जानहीं, जाकी पैदास कही जुलमत || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -97

- ए दुनियां पूजे त्रिगुन को, करके परमेस्वर । सास्त्र अर्थ ऐसा लेत है, कहे कोई नहीं इन ऊपर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -3
- ए दुनियां पैदा किन करी, हती न काहूं खबर । सो सक मेटी सबन की, इलम खुदाई आखिर || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -6
- ए दुनी चले चाल वजूद की, उमत चले रूह चाल । लिख्या एता फरक कुरान में, दुनी उमत इन मिसाल || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -19
- ए दुनी दिल अंधी दिवानी, और बंधी संधों संध । हाथों हाथ न सूझहीं, तिमर तो या सनंध || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -10
- ए दुनी न जाने सुपन की, न जाने मलकूती फरिस्तन । ए अछर को भी सुध नहीं, जाने स्याम स्यामा मोमिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -23
- ए दुस्तर भोम घणूं रे दोहेली, वली ने वसेखे दुख रात जी । ते माटे हूं करूं रे पुकार, मारो भली गयो मायामां साथ जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -28
- ए दुस्तरनों क्यांहें छेह नहीं आवे, कलकलसो करसो पुकार । त्रास पामीने जीव कां न जगवो, आ विस घणु संसार || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -70
- ए दुस्मन तेरे विख भरे, जिन लियो संसार घेर जी । ओ भुलावत तुमको जुदी भांतें, तुम जिन भूलो इन बेर जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -24
- ए दुस्मन देखाया रसूलें, पर इनसों चल्या न किन । आप जैसा होए के, राह मारी सबन || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -10
- ए दूजा खेल जो दुनियां, बीच जिमी आसमान । ए तो नाहीं कछुए, एक जरे भी समान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -88
- ए दूजी भोम जो अर्स की, इत बोहोत बड़ो विस्तार । ए नेक नेक केहेत हो, जुबां कहा केहे सिफत सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -25
- ए दूजे जामे की कही, तहां पांच बुजरकी भेली भई । आगे दिन केहेने कयामत, सोई खोलों मैं हकीकत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -25
- ए देख के नींद टालो भरम, इन वचनों जीव करो नरम । वचन जीवसो करो विचार, तब सुख अखंड होए आधार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -12
- ए देखत अचरज भूखन, बैठे अंग को लाग । ए सोभा कही न जावहीं, कोई देखे जिन सिर भाग || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -58
- ए देखाओ अपनी साहेबी, और कैसा इस्क है तुम । राजी करो देखाए के, हम बैठे पकड़ कदम || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -37
- ए देखी अजाड़ी आँखां खोल के, याकी तो उलटी सनंध । ए मोहड़ा लगावे मीठड़ा, पीछे पड़िए बड़े फंद || ग्रं - किरन्तन, प्र -33, चौ -17
- ए देखी बाजी छल की, छल की तो उलटी रीत । इनमें सीधा दौड़ के, कोई ना निकस्या जीत || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -6

- ए देखी बाजी छल की, छल की तो उलटी रीत । इनमें सीधा दौड़के, कोई ना निकस्या जीत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -6
- ए देखें दिल अर्स मोमिन, अर्स हक बिना होए क्यों कर । एह विचार तो न करे, जो कुलफ कहे दिलों पर || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -39
- ए देखे ही परिए दुख में, कोई वाध को रचियो रोग । छुटकायो छूटे नहीं, नाहीं ना देखन जोग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -24
- ए देखे ही परिए दुख में, कोई व्याध को रचियो रोग । छुटकायो छूटे नहीं, नहीं न देखन जोग || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -24
- ए देखे ही बनत है, केहेनी में आवत नाहें । अकल में न आवत, तो क्यों आवे बानी माहे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -28
- ए देखो खुलासा गिरो दीन का, कहूं फुरमाया फुरमान । हक हादी गिरो अर्स की, सक भान कराऊँ पेहेचान || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -1
- ए देखो खुलासा फुरमान का, मोमिन करें विचार । रूहें हक सूरत दिल में लई, छोड़ी दुनियाँ कर मुरदार || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -2
- ए देखो तुम जाहेर, पांचों उपजे तत्व । ए मोह मिने मन खेलहीं, सब मन की उतपत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -24
- ए देखो तुम बेवरा, कहावें बंदे महंमद । सहूर ना करें बातून, कोई न देखे छोड़ हद || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -13
- ए देखो तुम मोमिनों, खेल बिना हिसाब । ए खेल तुम खातिर, खसमें रचिया ख्वाब || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -38
- ए देखो तुम मोमिनों, पांचो उपजे तत्व । ए गफलत में रूह खेलहीं, सब रूहों की उतपत || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -26
- ए देखो तुम रोसनी, हक अर्स इन हाल । जित पर जले जबराईल, कोई फरिस्ता न इन मिसाल || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -28
- ए देखो नेक नीके कर, इनमें जरा सक नाहें । क्यों न होए इस्क के अंबार, तुम विचार देखो दिल माहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -27
- ए देखो भोम तले की, बैठा हक मिलावा जित । आप अर्स में अरवाहों को, खेल मेहेर का दिखावत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -3
- ए देखो सहूर खुदी मांगना, ए दोऊ तले हुकम । तो खोल दरवाजा अपना, क्यों न मिलों अपने खसम || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -18
- ए देख्या बैठे वतन में, हक सुख लिए हम इत । सो इन देह इन जिमिऐं, लिए सुख हक निसबत || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -72
- ए देत अर्स निसानियां, याद आवसी तिन । सरत करी खावंद ने, उतरते अर्स रूहन || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -96

SPJIN

- ए देत देखाई दुनी फना, ए जो बीच नासूत । ऊपर फना सब फरिस्ते, ए जो कह्या मलकूत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -43
- ए देत देखाई रंग जवेर, नकस कटाव बेली जर । लगत नाहीं हाथ को, रंग नंग धागा बराबर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -56
- ए देह मेरी हद की, इसी देह की अकल । धाम धनी सुख बरनन, केहेने चाहे असल || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -14
- ए दोऊ जो पैदा हुए, सो ले खड़े सब छल । नूर की नजरों चढ़े, तिनों आया सबों बल || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -8
- ए दोऊ द्वार के बीच में, भरी जोत जिमी अंबर । और उठत जोत बन की, नूर अर्स कहूं क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -136
- ए दोऊ विध मैं तो कही, सुपन हरखें उड़ाऊं । कहे इंद्रावती उछरंगे, साथ जुगतें जगाऊं || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -166
- ए दौड़ें रूहों के मन ज्यों, खड़ियां हकम बरदार । एक रूह मन में चितवे, वह जी जी करें हजार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -63
- ए द्वार किने ना खोलिया, ए जो कुरान किताब । पाई ना हकीकत किनहूं, हाए हाए एकै ठौर खिताब || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -32
- ए द्वार कोई खोल के, कबहूं ना निकस्या कोए । ए बुजरक जो छल के, बैठे देखे बेसुध होए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -34
- ए द्वार कोई खोलके, कबहूं न निकस्या कोए । ए बुजरक जो छल के, बैठे देखे बेसुध होए || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -39
- ए द्वार दुनी में क्यों खोलिए, ए जो गैब हक खिलवत । सो द्वार खोले में हुकमें, अर्स बका हक मारफत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -135
- ए द्वार देखोगे जाहेर, होसी माया पेहेचान । ए माएना नीके लीजियो, हिरदे में आन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -80
- ए धणी रे विछडतां, केम रहयो रे अंग पास । कांय न समाणो रे तूं, तेज जोत प्रकास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -36
- ए धन जाते मेरे धनी का, सो तूं देख के कैसे रही रे । फिट फिट भुंडी पापनी, ते एती पुकार क्यों सही रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -68
- ए धन मेरे धनीय का, आया था मुझ कारन रे । सो धन खोया मैं नींद में, धनी देते कर कर जतन रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -67
- ए धन वोहोरसे ते गोप रेहेसे, तेने करसे सहुजन हाँस । वस्त लई ज्यारे थासे वेगला, त्यारे सहू कोई केहेसे स्यावास || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -12
- ए धननो ते लेजो अर्थ, त्यारे प्रगट थासे प्रकास जी । एणे अजवाले जीव जागसे, त्यारे वृथा न जाए एक स्वांस जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -51

SPJIN

- ए धरम नहीं नारी तणोजी, हूं कहूं डूं वारंवार । हवे घरडे तमारे सिधाविए जी, घेर वाटडी जुए भरतार || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -20
- ए धुतारी को न धीरिए, जो पलटे रंग परवान । ए विश्व बधे वैराट को, सो भी निगलसी निरवान || ग्रं - किरन्तन, प्र -33, चौ -19
- ए धोखे गुर सर्वग्यन भानें, जिन पाया सब विवेक । बाहेर उजाला करके, आखिर देखावें एक || ग्रं - किरन्तन, प्र -28, चौ -17
- ए न आवे ख्वाबी दम पर, अपना नूरी जेह । देखो आंखें दिल खोल के, कोई मतलब बड़ा है एह || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -8
- ए न आवे ख्वाबी बुत पर, जाको नहीं हक सों अंतर । पर जिन आंख कान न अकल, सोए समझे क्यों कर || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -45
- ए नकस सो जानहीं, नैनों देखें जो होए निसबत । ए देखें याद आवहीं, पेहेले बातें हुई खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -35
- ए नंग जवेर केहेत हों, सो सब्द सुपन जिमी ले । ए अर्स जवेर भी क्यों कहिए, जो सिनगार हक बका के || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -45
- ए नजर तुमें तब खुले, जो परन करें हक मेहेर । तो एक हक के इस्क बिना, और देखो सब जेहेर || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -38
- ए नजरों नंग तो आवहीं, जो आवे निसबत प्यार । ना तो भूखन हाथ हक के, दिल करसी कहा विचार || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -35
- ए नट विद्या कई नाचत, बाजे दिल चाहे बजावत । ए खेल अचम्भा देख के, हादी रूहें राचत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -97
- ए नबिएँ जाहेर कहया, मैं पार से आया रसूल । खुद की सुध सब ल्याइया, निद्रा न मेरा मूल || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -64
- ए नबिऐं जाहेर कहया, मैं हक पे आया रसूल । दीन मुस्लिम जो होएसी, सो लेसी सब्द घर मूल || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -31
- ए नरक निरमल क्यों होवहीं, जो ऊपर से अंग धोए । अंग धोए मन निरमल, कबहूं न हुआ कोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -106, चौ -11
- ए नरम अंगुरियां अतन्त, नख सोभित तेज अपार । ए देखो भूल अकल की, सोभा ल्याइए माहे सुमार || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -100
- ए ना कछू पेहेले हुते, ना होसी आखिर । खेल ऐसा देखो बीच, मांहें लैलत कदर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -43
- ए ना खबर नूरजलाल को, सुख नूरजमाल कदम । इन बातों सब बेसक करी, मोहे रूह-अल्ला इलम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -64
- ए नाबूद वजूद जो नासूती, अर्स उमत धरे आकार । लिख्या हकें कुरान में, ए तन मेरे यार || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -35

- ए नाम निसान सब लिखे, खुसबोए जिमी उज्जल । और कया पानी दूध सा, ताल जोए का जल || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -25
- ए नाहीं अवगुन और ज्यों, मेरे तो लेप बजर । ए बिध सोई जानहीं, जिनकी अंतर खुली नजर || ग्रं - किरन्तन, प्र -41, चौ -14
- ए निकुंज बन सब लेयके, जाए पोहोंच्या ताल । जमुना धाम के बीच में, ए बन है इन हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -40
- ए नित लीला बुध जी, करसी बड़ो विलास । दया भई दुनियां पर, होसी सबे अविनास || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -27
- ए निद्रा उडाडीने कया वचन, श्री धाम धणी जीव जाणी मन । वली जां जोऊं तमने जोपे करी, तां हजीमें निद्रा नथी मूकी परहरी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -8
- ए निद्रा तमे केम रे उडाडसो, जिहां नहीं करो कोई पर जी। ओलखी धणी तमे आप संभारी, जागी जुओ तमे घर जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -39
- ए निध अपने घर की, इन यों तो बिलसी । अनूं चोंच पात्र या बिना, नाहीं काहूं कैसी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -12
- ए निध आवे केम स्वांत कीजे, केम बेसिए करार । दोड कीजे सघला अंगराँ, स्वांत कीजे संसार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -34
- ए निध निरमल अति घणी, दिए साथने सार । कोमल चित करी लीजिए, जेम रूदे रहे निरधार || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -78
- ए निध पोताना घरतणी, एम बोले वाणी । श्री धाम धणी सूं रामत, रमे धणियाणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -8
- ए निध बीजे कोणे न अपाय, धणी विना केहेने सामून जोवाय । एणें अजवाले थए सूं थाय, आ पोहोरा मां धणी ओलखाय || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -13
- ए निध बेहेनी रे हूं, बेठी रे खोई । भरम मूने गेहेन हुतो, तेणे हूं रही रे जोई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -65
- ए निध लई मैं कसनी कर, श्री धाम धनी चरणों चित धर । मैं बोहोतक करूं अंतर, पर सागर पूर प्रगट करे घर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -4
- ए निधनी केही वात करूं, भंडा फिट फिट गुण अचेत । तुझ बेठा तिवरता न आवी, नहीं तो ए निध हूं लेत || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -104
- ए निपट बड़े मोहोल चांदनी, इत कई मिलावे मिलत । रूहें न छोड़ें हक कदम को, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -58
- ए निपट बात बारीक है, अर्स रूहें करना विचार । और कोई होवे तो करे, बात अलेखे अपार || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -50
- ए निपट बातें रिजालियां, सो आपन करी दिल धर । जैसी हुई हमसे खेल में, तैसी हुई न किनके सिर || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -17

- ए निमूना अर्स ख्वाब का, देखो तफावत । देखो अकल असल की, जो होवे अर्स उमत || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -75
- ए निमूना इन वास्ते, देखलाया रूहन । झूठ कौन आणू सांच के, पर बल न पाइए या बिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -88
- ए निमूना देखाइया, करने पेहेचान तुम । पेहेले चीन्हो आप को, पीछे हादी और खसम || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -103
- ए निरने करना अर्स का, तिन में भी हक जात । इत नूर अकल भी क्या करे, जित लदुन्नी गोते खात || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -124
- ए निस दिन बातें विचार ही, सोई हुकम हुज्जत मोमिन । पाक हुआ सो जो अर्स दिल, जाके हक कदम तले तन || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -9
- ए निसबत असल अर्स की, हकें जाहेर तो करी । दिल मोमिन अर्स तो कह्या, जो रूहें दरगाह से उतरी || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -23
- ए निसबत जो सागर, जानें निसबती मोमिन । कहूं थाह न गेहेरा सागर, कोई पावे न निसबत बिन || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -18
- ए निसबत नूरजमाल से, जो रूह को पोहोंचे रंचक । तो लाड़ अर्स अजीम के, क्यों भूलें मुतलक || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -10
- ए निसबत बिना होए नहीं, मासूक सों मजकूर । ए मजकूर इन बिध होवहीं, यों कहे हक सहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -75
- ए निसान बातून अव्वल कहे, सो मिले सब आए । पर मुसाफ हकीकत जो खुले, तो आंखों देख्या जाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -8, चौ -4
- ए नीके दिल विचारियो, माएना हदीसों आखिरत । फसल आई असों भिस्तों की, हुआ दिन हक बका मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -23
- ए नीके मैं जानत हों, करी है तम पेहेचान । तुममें विरला कोई पीछे पड़े, आखिर ल्योगे सिर निदान || ग्रं - किरन्तन, प्र -86, चौ -6
- ए नींद अमल कासों कहिए, क्योंए ना छोड़े आतम । तो भी बेसुधी ना टली, जो जल बल हुई भसम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -2
- ए नींद उड़ाए के कहे वचन, श्री धाम धनी जीव जानी मन । जब देख्या धनी नीके फिकर कर, तो अजू न गई नींद है अंदर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -8
- ए नींद तिनको ले गई रे, जो नाहीं साथी आपन जी । इन ठगनी जिमिएँ बोहोतक ठगे रे, तुम जिन सोओ इत खिन जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -2
- ए नींद तुम को क्यों कर उड़सी, जोलों न उठो बल कर जी। सेवा करो समें पिउ पेहेचान, याद करो आप घर जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -40
- ए नूर आगे थें आइया, अछर ठौर के पार । ए सब जाहेर कर चल्या, आया निज दरबार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -34

- ए नूर कजा का या बिध, जिन टाली फेर अंधेर । जो न राखू ले हुकम, तो भोर होत केती बेर || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -57
- ए नूर के चौक चबूतरे, माहें नूर के मोहोल मन्दिर । नूर सख्प लेहेरें लेवहीं, माहें नूर बाहेर अन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -59
- ए नूर के पार के माएने, सो सारों को अगम । एक लुगा बिना इमाम, निकसे ना मुख दम || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -53
- ए नूर खुद वतनी, सो क्यों कर सहयो जाए। नूर मत आगे तो करी, जाने जिन कोई गोते खाए || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -57
- ए नूर खूबी इतकी इतहीं, इनका निमूना सोए । और सब्द तो निकसे, जो और ठौर कोई होए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -42
- ए नूर चौकी भोम चार की, नूर पुल से आए तीन घाट । अति सोभा आगू छत्री नूर की, ऊपर जल नूर पाट || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -23
- ए नूर जाहेर तो हुआ, जब कुराने खोली हकीकत । रात मेट के दिन किया, सो दिल महमद सूर मारफत || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -69
- ए नूर जिमी बन लसकर, कहा कहूं रूहों रोसन । और तखत जो हक का, तुम विचार देखो मोमिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -25
- ए नूर बका किने ना पाइया, कर कर गए सिफत । ए सुध नूर बका को नहीं, जो तैं पाई न्यामत || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -10
- ए नूर भोम फेर देखिए, नूर झरोखे नूर बन । नूर द्वार आए फेर, नूर नूरै नूर रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -63
- ए नूर मकान कया रसूलें, आगू जाए ना सके क्योंए कर । तिन लाहूत में क्यों पोहोंचहीं, जित जले जबराईल पर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -27
- ए नूर सुख बैठक देख के, नूर भोम आठमी आए। लिए नूर सुख हिंडोले, ए चारों नूर सुखदाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -126
- ए नूरी तीनों फरिस्ते, इनों की असल एक । ए किया महंमद मोमिनों वास्ते, हक इलमें पाइए विवेक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -25
- ए नूह तोफान कहया रसूलें, और गुझ रहया रूहों रोसन । किस्ती पार उतारी सबों सुनी, सुध ना परी पोहोंची बाग किन || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -27
- ए नेक करी मैं इसारत, याको आगे होसी बड़ो विस्तार । थोड़े से दिन में देखोगे, वरतसी जय जयकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -25
- ए नेक करूं इसारत, तुम सुनियो आखिर दिन । पेहेले मिलसी रूह मोमिन, पीछे तो सब जन || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -2
- ए नेक कही इन ठौर की, इत हिसाब बिना बैठक । सुख देत इत कायम, जैसा बुजरक हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -24

- ए नेक कह्या बीच खेल के, हक रसना के गुन । ए सब बातें मिल करसी, आगू हक बका वतन || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -66
- ए नेक रखी रात बैंच के, सो भी वास्ते तुम । ना तो लेते अंदर, केती बेर है हम || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -66
- ए नेक हकीकत केहेत हों, है बात बिना हिसाब । सो जाने जो लेवे कुन्जी, खोले माएने मगज किताब || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -9
- ए नेत्र रसीले निरखते, उपजत है सुख चैन । ए क्यों न्यारे होए नैन रूह के, सामी छोड़ नैन की सैन || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -121
- ए नेहेरें अति दूर लग, अति दूर देखे सागर । सागर नेहेरें मोहोल जो, अति बड़े देखे सुन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -25, चौ -8
- ए नैन देख मासूक के, आसिक के सब अंग। सुख सीतल यों चुभत, सब अंग बढ़त रस रंग || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -25
- ए नैन बान सुभान के, क्यों छोड़ें रूह मोमिन । ए नैन रस छोड़ आगे चले, रूहें नाम धरत हैं तिन || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -118
- ए नैना नूरजमाल के, देख सलोंने सलूक । ए सुन नैन बिछोड़ा मोमिन, हाए हाए हो न गए भूक भूक || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -67
- ए न्यामत वाहेदत की, हक के दिल की बात । और कोई ना ले सके, बिना बका हक जात || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -27
- ए न्यामत हक के दिल की, सोई जाने दई जिन । या दिल जाने मेरी रूह का, सो कहूँ आगे मोमिन || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -26
- ए न्यारे को क्यों पावहीं, पैदास सारी इन । सत सब्द ब्रह्मांड में आया, पर ए ना छोड़े कोई सुंन || ग्रं - किरन्तन, प्र -107, चौ -4
- ए पंखी प्रीत दुनीय की, होसी अर्स के कैसे जानवर । ए निमूना इत ना बने, और बताइए क्यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -83
- ए पगले एणे पंथडे, प्रेम विना न पोहोचाय । वैकुण्ठ सुन्य ने मारगे, बीजी अनेक कथनी कथाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -9
- ए पंच अध्याई होवे क्यों कर, मेरे मुनीजी की बान । पर सार समें बीच अटक्या, रस आए सुजान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -69
- ए पट खोल करें जाहेर, तब हुई तौहीद मदत । दिल पाक करो इन आब सें, मुसाफ तब मोह देखावत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -57
- ए पट नीके पाइया, जो मैं को उड़ावे कोए । ए दृढ़ हकें कर दिया, अब जुदा हक से होए || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -29
- ए पढ़े सब जानत हैं, दिल पर दुस्मन पातसाह । ले लानत बैठा दिल पर, ए अबलीस मारत राह || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -66

- ए पर नहीं समझे कुरान, मैं इनमें से सब लिए साथ सिरके || ग्रं - सनंध, प्र -34, चौ -3
- ए पर्वत इन भांत का, नैनों निमख न छोड्या जाए। क्यों कहूं खूबी इन जुबां, देखत रया हिरदे भराए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -9
- ए पहाड़ जरे ज्यों क्यों हुए, क्यों देखे बिना दिल विचार । पहाड़ कहे कुफर खुदी के, सो हुए पाक जरे ज्यों निरवार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -26
- ए पहाड़ निसान आखिरी, जिन देखाई बका बिसात । दुनी पहाड़ पूजे जाहेरी निसान, कर बैठे बका बीच रात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -93
- ए पांच रंग एक कंचन, ताके बने जो बाजूबन्ध । इन जुबां सोभा क्यों कहूं, झूलें फुन्दन भली सनन्ध || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -65
- ए पांचे थकी जे उपना, दीसे ते चौद भवन । जीवन मांहें लाधे नहीं, जेनी इछाए उतपन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -27
- ए पांचों उत पोहोंचे नहीं, जो कर देखो सहूर । क्यों पोहोंचे फना जड़ निमूना, ए हक बका चेतन नूर || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -6
- ए पांचो देखे विध विध, ए तो नहीं थिर ठाम । या सो कैसे रहे, नेहेचल जाको नाम || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -21
- ए पांचों नेक अमल जो करें, सो भिस्ती फरमान से ना टरें । और झूठा काम बदफैली करे, सो दोजख की आग में परे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -23, चौ -3
- ए पांचों नेहेरें कही जो पानी, जिनसे दुनियां भई जिंदगानी । बागोंने ताजगियां पाई, सो भी पानी हादी ने पिलाई || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -76
- ए पांचों फेर के देखिए, खोल के रूह नजर । ले भोम से लग चांदनी, खूब ऊपर खूबतर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -46
- ए पातसाही अर्स की, केहेनी में आवत नाहें । ए कया वास्ते मोमिन के, जानों दिल दौड़ावें तांहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -53
- ए पाल आड़े जिमी सागर, नूर लगी रांग आसमान । इंतहाए नहीं गिरद फिरवली, नूर सिफत कहा कहे जुबान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -15
- ए पाल सारी इन भांतकी, कई विध खेल होत इत । या घाटों या पाल पर, हक रूहें खेल करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -79
- ए पावें नहीं अल्ला कहानी, इन याही में कर लई मुसलमानी । लानत करी ऊपर की बानी, इनों सोई भली कर मानी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -11
- ए पिउ सख्य नौतन, नौतन सिनगार । नेह हमारा नौतन, नौतन आकार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -112
- ए पिएँ प्याले मोमिन, हक सुराही सराब । लाड़ लज्जत लें अर्स की, ए मस्ती मांहें आब || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -23

- ए पुकार खोजी सुनके, हट रहे पीछे पाए । पार सुध किन ना परी, सब इतहीं रहे उरझाए || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -51
- ए पुकार साधू सुनके, हट रहे पीछे पाए। पार सुध किन ना परी, सब इतहीं रहे उरझाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -39
- ए पूरन के प्रकास थे, खुल गया अंतर सब । सो क्यों रेहेवे ढांपिया, प्रगट होसी अब || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -25
- ए पेहेचान काहूं ना परी, क्या बेचून बेचगून । ना पेहेचान ला मकान की, ना बेसबी बेनिमून || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -41
- ए पेहेचाने सुख उपजे, सनमंध धनी अंकूर । महामत सो गुर कीजिए, जो यों बरसावे नूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -14, चौ -12
- ए पेहेले दिन की कही दसमी रात, दसमी सदी बीच आए साख्यात । इन दसमी से अग्यारमी भई प्रभात, मिले दोस्तों सों करी विख्यात || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -18, चौ -4
- ए पैए बतावे पार के, नहीं तारतम को अटकल । आवेस जागनी हाथ पिया के, एह हमारा बल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -49
- ए पैदा बनी-आदम की, ए जो सकल जहान । सो क्यों कर आवे अर्स में, बिना अपने मकान || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -13
- ए पैदास अमानत हक, इत रोजा रबानी बेसक । याही बीच निमाज असल, रखे आपा कर गुसल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -31
- ए पोहोंच्या मता सब रूहों को, जब पोहोंचाया इलम हक । इत सक जरा ना रही, पोहोंच्या हक बका मुतलक || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -80
- ए प्याला कबूं किन ना पिआ, हम रूहें आइयां तीन बेर । ए प्याले पेहेले तो पिए, जो हम थे बीच अंधेर || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -81
- ए प्याला कोई न पी सके, जुबां लगते मुरदा होए। पर हक राखत हैं जीव को, ना तो याकी बैंच काढ़े खुसबोए || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -90
- ए प्याले कर मेहेरबानगी, कई रूहों पिलावत । सुख देने बका नजीक का, प्यार कर निसबत || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -6
- ए प्याले पिए जाए क्यों जागते, तन तबहीं जाए चिराए । बोए भी ना सेहे सके, तो प्याला क्यों पिआ जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -82
- ए प्रकास खसम का, सो कैसे कर ढंपाए । छल बल वल जो उलटे, सो देवे सब उड़ाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -4
- ए प्रकास जो पिउ का, टाले अंदर का फेर । याही सब्द के सोर से, उड़ जासी सब अंधेर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -21

- ए प्रकास विचार तुम देख्या नाहीं, तुम वैभवें लगे रे विलास । अब महामत कहे जोत उद्दोत भई, ताको इत आए देखो रे उजास || ग्रं - किरन्तन, प्र -13, चौ -20
- ए प्रकास है अति बड़ा, सो राखत हों अजूं गोप । जिन कोई ना सहे सके, ताथैं हलके करूं उद्दोत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -9
- ए प्रगट बानी कही प्रकास की, इंद्रावती चरने लागे जी । सो लाभ लेवे दोनों ठौर को, जाकी वासना इत जागे जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -53
- ए प्रगट वचन किए अपार, तो भी ना हुई तुमें सुध सार । छोड़ो अमल माया जोर कर, जीव जगाओ वचन चित धर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -66
- ए प्रीछो तो पारब्रह्म चित आवे, समझे सुपन परूं थाय । अखंड तणां सुख एणी पेरे लीजे, लाहो मायामां लेवाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -10
- ए फरमान तब बांचसी, इमाम आवसी जब । लिखिया जो इसारतें, सब जाहेर होसी तब || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -67
- ए फरमान पढ़े पीछे, पाई जब हकीकत । तब फरामोसी क्यों कर रहे, क्यों भूलें ए निसबत || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -14
- ए फरमान रूहअल्ला पर, ल्याया हक का रसूल । इमाम खिताब खोले किताब, परे न मारफत भूल || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -94
- ए फरामोसी फरेबी, हम जान के भूलत । हक छिपे हमसों हाँसीय को, हाए हाए ए भूल दिल में भी न आवत || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -6
- ए फूलबाग चौड़ा चबूतरा, निपट बड़ा निहायत । फूलबाग बगीचे चेहेबच्चे, विस्तार बड़ो है इत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -50
- ए बखत हुआ कही कयामत, दोस्त खाना दाना पोहोंची सरत । गुनाह सुलतान के किए सब माफ, लिया नुसखा हुआ साफ || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -19
- ए बड़ा घाट तरफ अर्स के, फिरते तीन घाट तरफ और । बने गिरदवाए पाल पर, जुदी जिनसों चारों ठौर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -6
- ए बड़ा चेहेबच्चा बाहेर, एक हांस को लगत । बड़ी कारंज पानी पूरन, कई नेहेरें चलत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -49
- ए बड़ा बाग ऊपर चबूतरे, तापर बन की दिवाल । ए नूर फूलन का क्यों कहूं, सेत स्याम नीले पीले लाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -55
- ए बड़ी बैठक नूर पड़सालें, नूर भोम आरोगें बेर दोए । पूर नूर होए रूहें असं की, ए नूर बेवरा देखें सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -43
- ए बड़े खेल की खुसाली, बड़े बन कबूं करत । अस्वारी पसु पंखियन पर, कई कूदत उड़ावत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -57
- ए बंदगी कही सरीयत, याको फल पावें खुले हकीकत । जब खोले दरवाजे मारफत, पोहोंची सरत आई कयामत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -6

- ए बंदगी ना होए कई करोरों, ऐसी हक पर करी बेसुमार । तिन बंदगी बदला ए पाया, राह देत सबों की मार || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -24
- ए बंध धनिएँ पेहेले बांधे, सो लिखे मांहें फरमान । इन जिमी साहेब आवसी, दीदार होसी सब जहान || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -23
- ए बंधेज कियो अति जोर, रात मेट के करसी भोर । प्रतछ प्रमान देसी दरसन, ए लीला चित धरसी जिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -85
- ए बंधेज कियो उत्तम, पर धामकी निध सो कही तारतम । जिन सेती होवे पेहेचान, नजरों आवे सब निसान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -89
- ए बन की सोभा क्यों कहूं, पेड़ चले आए बराबर । दोऊ तरफों जुगते, आए क्योहरियां ऊपर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -16
- ए बन गिरद पुखराज के, बड़ा बन खूबी लेत। ए फेर मिल्या बन जोए के, नूर आकास भस्यो जिमी सेत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -17
- ए बन गेहेरा दूर लग, इत आए मिल्या केल घाट । जमुना जल किनार लों, छाया चली दोरीबंध ठाट || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -5
- ए बन जड़ाव जानों चंद्रवा, कई रंग बने इन हाल । जाए पोहोंच्या लग झरोखों, अर्स की हद दिवाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -3
- ए बन जवेर अर्स के, खूबी कहा कहे जुबान । बीच बैठक चबूतरे, सुख रूहें संग सुभान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -37
- ए बन जाए बड़े बन मिल्या, चल गया पुखराज पार । अर्स बन सोभा क्यों कहूं, और बन दोऊ किनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -23
- ए बन जोत इन भांत की, रोसन करत आसमान । आप अपना रंग ले उठत, कोई सके न काहूं भान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -26
- ए बन नेहेरें दूर लों, जहां लो नजर फिरत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -25, चौ -5
- ए बन बांई तरफ का, बन्या दोऊ भर पाल । देत नूर आकास को, सोभा लेत अति ताल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -34
- ए बन मोहोल कई विध के, बड़े बड़े कई बड़े रे । मोहोल मंदिरों हिसाब नहीं, चौड़े चौड़े कई चौड़े रे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -19
- ए बन सुंदर नौतन, नौतन वाओ वाए । जल जमुना नौतन, लेहेरां लेवें बनराए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -113
- ए बन हांस पचास लो, सेत हरे पीले लाल । ए बन खूबी देख के, मेरी रूह होत खुसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -36
- ए बने सरूपमा जोतज एक, ते में जोयूं करी विवेक । इंद्रावती करे विनती, तमे निध दीधी मूने तारतम थकी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -2

- ए बयान पुकारे जाहेर, इत पोहोंचे ना दुनी सहूर । ए हादी जाने या अर्स रूहें, हक खिलवत का मजकूर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -69
- ए बयान होसी बीच अर्स के, हम रूहें मिल जासी जब । हक जुबान का बेवरा, हम लेसी अर्स में तब || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -21
- ए बरकत हक अर्स में, तो दिल अर्स कया मोमिन । तो बरनन होए अर्स का, जो यों दिल होए रोसन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -18
- ए बरनन अर्स अंग होत है, ले मसाला इतका । ताथें किन बिध रूह कहे, ना जुबा पोहोंचे सब्द बका || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -15
- ए बरनन हकमें तो किया, जो जाहेर करनी खिलवत । ए कदम रूहें तो पकड़े, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -11
- ए बरनन होत सब हुकमें, आया हकमें बेसक इलम । हुकमें जोस इस्क सबे, जित हुकम तित खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -64
- ए बल आ लीलातणो, सर्वे वचन केहेसे । रास प्रकास सुणी करी, बेहद वाणी लेहेसे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -110
- ए बल इन कुंजीय का, काहूं हुता न एते दिन । रूहअल्ला पैगाम उमत को, द्वार खोल्या बका वतन || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -29
- ए बल जोजो बलवंती नं, एहनो कोई न काढे पार जी । अनेक उपाय कीधां घणे, पण कोए न पोहोंता दरबार जी || ग्रं - किरन्तन, प्र -69, चौ -7
- ए बल देखो इन कुंजीय का, बातें छिपी हक दिल की। सो सब समझी जात हैं, हैं अर्स की गुझ जेती || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -36
- ए बल देखो कंजीय का, जिन बेवरा किया बेसक । ए भी बेवरा देखाइया, जो गैब खिलवत का इस्क || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -31
- ए बल देखो कुंजी का, जिन देखाई निसवत । ए जो रूहें जात हक की, जिन बेसक देखी वाहेदत || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -32
- ए बल देखो कुंजीय का, खूब देखी हक सूरत । हक के दिल के भेद जो, सो इलमें देखी मारफत || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -33
- ए बल देखो कुंजीय का, नीके देख्या हक इस्क । जुदे बैठाए लिखी इसारतें, जासों समझे रूह बेसक || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -35
- ए बल देखो कुंजीय का, रूहें बीच चौदे तबक के आए । सो इलमें देखाया झूठ कर, बीच अर्स के बैठाए || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -41
- ए बल देखो कुंजीय का, रूहें बैठाई जुदी कर । आप केहे संदेसे कहावहीं, आप ल्यावें जुदे नाम धर || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -38
- ए बल नूरजलाल को, जिन की एह कुदरत । एह जुबां ना केहे सके, बुजरक बल सिफत || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -10

- ए बल सब्दातीत को, सो सांचे हैं सूर। और बल फना मिने, इत तिन की क्या मजकूर || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -60
- ए बलवान सेहेज के, जो कदी मारे दिल में ले । न जानों तिन आसिक का, कौन हाल होवे ए || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -45
- ए बाग गिरद अर्स के, और एही गिरदवाए जोए । एही बाग गिरद हौज के, सब नूर पूर खुसबोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -76
- ए बाग चौड़ा लंबा सोहना, माहें ज्दी जुदी कई जिनस । कई एक रंगों बगीचे, जानों एक से और सरस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -49
- ए बाग मेहेराव देखके, आए बड़े चेहेबच्चे । आया आगूं लाल चबूतरा, खूबी किन विध कहूं मैं ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -72
- ए बात तो कारज कारन, हक जानत त्यों करत । असल रूह तन मिलावा, निसबत है वाहेदत || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -11
- ए बात तो सिवजी जाहेर, इत है कई भांत । ठौर ठौर कहे वचन, ए जो भेद कल्पांत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -7
- ए बात नहीं अटकल की, होए साबित खलं हकीकत । बूझे दीन महमद का, हक हादी रूहे निसबत || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -9
- ए बात ना नींद सुपन की, जो तूं बात करे जाग्रत । तो कौल फैल ना हाल कोई, रहे ना देह गत मत || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -7
- ए बात ना होए कबूं नींद में, और सुपने भी ना एह । जो तूं बात करे जागते, तो तेरी क्यों रहे झूठी देह || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -6
- ए बात नीके विचारियों, ज्यों में साख देवे आतम । पीछे साख दुनी सब देयसी, ऐसा किया खसम || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -5
- ए बात पसरी दुनी में, जो कोई ल्याया आकीन । सो नाम धराए मुस्लिम, माहें आए महंमद दीन || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -15
- ए बात पोहोंची जाए वैकुंठ, बुधजीऐं उड़ायो उनमान । सुक सिव सन ब्रह्मा नमे, नमे विष्णु लखमी नारायन || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -23
- ए बात बड़ी हक निसबत, सो झूठे खेल में नाहें । ए बात होत बका मिने, हक खिलवत के माहें || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -36
- ए बात बारीक अति बुजरक, दोऊ सरूपों सुख बातन । करी परीछा इस्क साहेबी, सुख होसी नूर रूहन || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -64
- ए बात में पेहेले कही, रूहें होसी फरामोस । मेरे इलम बिना तुम कबहूं, आए न सको माहे होस || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -7
- ए बात मैं दिल में लई, तब महंमद हुए मेहेरबान । हकीकत मारफत के, पट खोल दिए फुरमान || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -43

- ए बात सुने जो खेल में, बड़ा अचरज होवे तिन । किन पाई ना तरफ हक की, ए तो हक मासूक वतन || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -38
- ए बात सुनो तुम मोमिनों, अपनी कहूं बीतक । मेहेर करी मुझ ऊपर, ए इलम खुदाई बेसक || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -20
- ए बात हकें करनी, सुध देने सबन । इस्क और पातसाही की, खबर न थी रूहन || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -32
- ए बात हैं विचार की, कई जातें जानवर । कई जातें पसुअन की, याको बल कहूं क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -85
- ए बातून अर्स बारीकियां, सो होए मुतलकियों इलम । अर्स बका करें जाहेर, सबों भिस्त देवें हुकम || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -57
- ए बातून जो मेरे अर्स का, सो सुध नूर को भी नाहें । मेरी गुझ अर्स जो खिलवत, तुम इन खिलवत के मांहें || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -10
- ए बातून माएने हक के, जानें हादी मोमिन । होए ना और किन को, बिना अर्स के तन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -106
- ए बातें केती कहूं, अर्स के जो सुख । साहेवी इन रूहन की, इत बरनन याही मुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -69
- ए बातें तें क्योंकर सही, के या समें घर छोड़ के गई । के तूं विकल भई पापनी, बिना खबर निध गई आपनी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -26
- ए बातें नूरजमाल की, इनमें कैसा तअजुब । जनम लाख देखावें पल में, जानों ढ़ांप के खोली अब || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -20
- ए बातें बका अर्स की, बिना रूहें न जाने कोए । ए बातें खुदाए की, और तो जाने जो दूसरा होए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -92
- ए बातें बीच अर्स के, अव्वल जो मजकूर । सो याद देने लिखी रमूजें, जो हुई हक हजूर || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -25
- ए बातें बोहोत बारीक हैं, और हैं बुजरक । ए सुध तब तुमें होएसी, जब आवसी इस्क || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -82
- ए बातें सब अर्स की, जब याद आवे तुम । तब इस्क तुमें आवसी, उड़जासी तिलसम || ग्रं - किरन्तन, प्र -111, चौ -12
- ए बातें सब असल की, जब याद दई तुम । तब इस्क वाली रूहों को, क्यों न उड़े तिलसम || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -81
- ए बातें सब मेयराज की, रखें जाहेर तीन सुरत । और कोई न केहे सके, ए अर्स हक न्यामत || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -77
- ए बातें हक के दिल की, निपट बारीक हैं सोए । बिना इस्क दिए हक के, क्यों कर समझे कोए || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -58

- ए बातें हुई सब अर्स में, रूहें बड़ी रूह हक साथ । सो ए खेल पैदा हुआ, काहूं हाथ न सूझे हाथ || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -58
- ए बातें होसी सब अर्स में, हँस हँस पड़सी सब । ए हुकमें करी कई हिकमते, सब वास्ते हमारे रब || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -76
- ए बान टेढ़े अव्वल के, और टेढ़े लिए चढ़ाए । बैंच टेढ़े मारें मरोर के, सो क्यों न आसिक टेढ़ाए || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -46
- ए बानी उत्तम चढ़ावे ऊंचे, ए उलटे अधम स्वादे । कठिन पंथ चढ़ाए नहीं ऊंचे, पीछे नीचे दौड़े नीच वादे || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -16
- ए बानी ए वाटड़ी, कबूं ना जाहेर । धनी ब्रह्मांड के खोजिया, सब मांहें बाहेर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -26
- ए बानी कथें सब अगम, माहे गुझ सब्द हैं पार । सो ए कैसे कर समझहीं, मोहोरे माया मोह अहंकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -30, चौ -11
- ए बानी कही मैं जाहेर, सो विस्तरसी विवेक । मैं गुझ कही है साथ को, पर सो है अति विसेक || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -86
- ए बानी को टेढ़ा कहावो, ए कौन तुमारा धरम । वैष्णव कहाए के उलटे चलिए, ए नहीं तिनके करम || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -3
- ए बानी गरजत मांझ संसार, खोजी खोज मिटावे अंधार । मूढ़मती न जाने विचार, महामत कहें पुकार पुकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -3, चौ -9
- ए बानी चित दे सुनियो साथ, कृपा करके कहें प्राणनाथ । ए किव कर जिन जानो मन, श्री धनीजी ल्याए धामथे वचन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -4
- ए बानी तिछन अति सार, सो निकसेगी वार के पार । सनमन्धियों की एही पेहेचान, वाके सालसी सकल संधान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -160
- ए बानी तुम नाहीं पेहेचानी, यामें बिध बिध के प्रकास । इन प्रकास में खेलें श्रीकृष्णजी, रमें अखंड लीला रास || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -19
- ए बानी तो अपरस करे आतम, तुम अपरस करो बाहेर अंग । आकार अपरस किए कहा होए, इने आतम सों कैसो सनमंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -8
- ए बानी तो करूं जाहेर, जो करना सबों एक रस । वस्त देखाए बिना, वैराट न होवे बस || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -83
- ए बानी धनी अंतरगत कही, केहेने की सोभा कालबुत को भई । ना तो एह वचन क्यों कहे जाएं, अंदर कलेजे ज्यों लगे घाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -5
- ए बानी धनी मुखथें कहे, सो ए दुनियां क्यों कर लहे । गांगजी भाई मिले इन अवसर, तिन ए वचन लिए चित धर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -73
- ए बानी नीके विचारियो, अंतर मांहे बाहेर । तुमें जगाऊं कर जागनी, देखाए देऊ जाहेर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -5

- ए बानी बेहद प्रगटी, इंद्रावती मुख । बोहोत विधे हम रस पिए, बेहद के सुख || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -94
- ए बानी में मारेय की, सुनी होए मोमिन । दुनी तरफ की जीवती, कबहूं न रेहेवे इन || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -31
- ए बानी ले बड़ी कीनी, दियो सो छल को मान । सो खेंचा खेंच ना छूटहीं, लिए क्रोध गुमान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -14
- ए बानी सब सुपन में, और सुपने में करी सिफत । सो क्यों पोहोंचे सोभा जुगल को, सुपन कौन निसबत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -132
- ए बानी सबमें पसरी, पर किया न साथे विचार । पीछे दया कर दई धनिएँ, अंग इंद्रावती विस्तार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -53
- ए बानी सुनते जिनको, आवेस न आया अंग । सो नहीं नेहेचे वासना, ताको करूं जीव भेलो संग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -60
- ए बारीक बातें अर्स की, इन दिल जुबां पोहोंचे नाहें । ए हुकम कहावे हक का, इलम हुकम के महे || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -11
- ए बारीक बातें अर्स की, ए मोमिन जानें सहूर । तो हक कदम दिल अर्स में, हक सहूरसे नाहीं दूर || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -27
- ए बारीक बातें अर्स की, जो गुजरी मांहें वाहेदत । हक हादी और मोमिन, सो जाहेर हुई खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -91
- ए बारीक बातें अर्स की, बिन मोमिन न जाने कोए। मोमिन भी सो जानहीं, जा को आई फजर खुसबोए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -34
- ए बारीक बातें अर्स की, सो जानें अरवा अरसे के। नया पुराना घट बढ़, सो कबूं न अर्स में ए || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -34
- ए बारीक बातें इस्क की, ए कोई समझत नाहें। सो भी करत है इस्क, जानत बल जुबाए || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -53
- ए बारीक बातें मारफत की, तिन बारीक का बातन । ए बातें होंए हक हिंमते, हक सहूर करें मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -33
- ए बारीक बातें रूह मोमिनों, सो समझें रूह मोमिन । सो आदमी कहे हैवान, जो इस्क इमान बिन || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -86
- ए बारीक बातें हक की, क्यों कर जानी जाए। इस्क हक के दिल का, बिना हुकमें क्यों समझाए || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -56
- ए बारीक सुख अर्स के, हक जुबाएँ दई न्यामत । और न कोई पावहीं, बिना हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -23
- ए बारे थंभों चांदनी, सोभित जल ऊपर । साथ बैठा सब फिरता, चारों तरफों पसर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -20

- ए बिध मोहे तुम दई, अपनी अंगना जान । परदा बीच का टालने, तार्थे विरहा प्रवान || ग्रं - सनंध, प्र -7, चौ -12
- ए बिन मोमिन कदम न पाइए, जो करे कई कोट मेहेनत । ए मोमिन अर्स अजीम के, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -70
- ए बिरिख जो अर्स भोम के, सो अर्से के हैं नंग । ए जोत कहूं क्यों इन जुबां, और किन विध कहूं तरंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -59
- ए बिरिख तो या बिध का, ताको फल चाहे सब कोए। फेर फेर लेने दौड़हीं, ए हांसी या बिध होए || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -22
- ए बीच फना के सब कहे, हवा समेत पलना । ए दिन रात आजूज माजूज, खाए सब करसी फना || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -57
- ए बीच ला मकान के, खेल जिमी आसमान । चौदे तबक भई दुनियां, आखिर फना निदान || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -17
- ए बीच हमेसा खिलवत के, इनको हक मारफत । वाहेदत एही केहेलावहीं, बीच अर्स अजीम उमत || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -49
- ए बीज वचन दो एक, पिया बोए कियो प्रकास । अंकूर ऐसा उठिया, सब किए हाँस विलास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -37
- ए बीतक कहूं सैयन को, जाहेर देऊं बताए। मोहे जगाई पिया ने, मैं देऊं सबे जगाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -14
- ए बीस थंभों का बेवरा, इनों क्यों कहूं रोसन नूर । कटाव किनारे कांगरियों, क्यों कहूं इन द्वार जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -119
- ए बुजरक बुनियाद नबुवत, बीच कौल दरगाह बड़ी सिफत । कोई कहे पैगंमर है, कोई सायर दिवाना कहे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -4
- ए बुजरकी इस्क की, अबलों न जानी किन । और मोहोरे सब खेल के, क्यों जाने बिना मोमिन || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -79
- ए बुध ना चौदे तबक में, सो अपनी दई अकल । समझी सब मैं अर्स की, जो सिफत तेरी असल || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -24
- ए बुध रही हमारे आसरे, जो सब थें बड़ा अवतार । बुधजी बिना माया ब्रह्म को, कोई कर न सके निरवार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -13
- ए बृज लीला जो अपनी, जाकी अस्तुति करत हैं धनी । पेहेले जो लीला तुम बृज में करी, अछर सदासिव चित में धरी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -59
- ए बेटे नसली की जंजीर, ए पावें गिरो वचिखिन वीर । लैलत कदर के तीन तकरार, दिन फजर का खबरदार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -26
- ए बेली फूल रूह मोमिन, सो बेल भई हक चरन । बेल जुदागी फूल क्यों सहे, यों कदम बिना रहें ना मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -46

- ए बेवरा जाने रूहें अर्स की, जा को हुआ हक दीदार । जाए सिफायत हुई महंमद की, याको जाने सोई विचार || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -36
- ए बेवरा तित होवहीं, जित बिछोहा होए । सो तो वाहेदत में है नहीं, होए बिछोहा मांहें दोए || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -142
- ए बेवरा पाइए बीच खेल के, कम ज्यादा अर्स में नाहें । समान अंग सब हक के, ए विचार नहीं अर्स मांहें || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -8
- ए बेवरा बीच बका मिने, इस्क का न होए । दई जुदागी तिन वास्ते, बात करी बका में सोए || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -14
- ए बेवरा वेद कतेब का, दोनों की हकीकत । इलम एकै बिध का, दोऊ की एक सरत || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -23
- ए बेवरा सिपारे आम में, इन्ना इन्जुलना सूरत । रूहें फरिस्ते दे सलामती, करें हुकम फजर बखत || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -12
- ए बेसुधी कैसी आई, कछू पाई न सुध मूल सगाई । देखो रे सई ऐसी क्यों भई, ए सुख छोड़ मैं अकेली रही || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -23
- ए बैठक कही जो नूर की, सो नूरै नूर गिरदवाए। बीच चौक गली सब नूर की, रहे द्वार मन्दिर नूर भराए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -36
- ए बोलावत है हुकम, खुदी भी हुकम की। तो हमेसा पाक होए, हक इस्क प्याले पी || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -3
- ए बोहोत भांत है बेवरा, मोमिन और दुनियां । मोमिन नजर बका मिने, दुनी नजर बीच फना || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -145
- ए बोहोत भांत है भारी वचन, जो कदी देखो आप होए चेतन । इन वचन पर एक कहूं विचार, सुनो साथ मेरे धाम के आधार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -8
- ए बोहोत रब्द बीच अर्स के, रूहों हक सों हुआ मजकूर । अर्स बका के हजूरी, ए क्यों होवें हक सों दूर || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -49
- ए बोहोत विध मैं जानूं घना, जो किव नहीं ए काम अपना । पर ए तो नहीं कछू किव की बात, केहेलाया बैठ हिरदे साख्यात || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -15
- ए ब्रह्म लीला भई जो दोए, बृज लीला रास लीला सोए । तामे तीस अध्याय जो बाल चरित्र, ए ब्रह्म लीला उत्तम पवित्र || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -8
- ए ब्रह्मलीला भई जो इत, सो कबहूं हुई ना होसी कित । ना तो कई उपज गए इंड, भी आगे होसी कई ब्रह्मांड || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -107
- ए ब्रह्मांड कह्यो न जावहीं, पर समझाए न निमूने बिन । सब्दातीत के पार की, बात केहेनी झूठी जिमी इन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -30
- ए ब्रह्मांडनो कोई कोहेडो, रामत चौद भवन । सुर असुर कई अनेक भाते, छलवा छल उतपन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -26

- ए भरम बाजी रची रामत, बहु विधे संसार । ए जो नैन देखे श्रवन सुने, सब मूल बिना विस्तार || ग्रं - किरन्तन, प्र -7, चौ -5
- ए भी इलम तुम दिया, जासों तुम हुए मुकरर । दिल सों रूहों विचारिया, कछू है ना वाहेदत बिगर || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -75
- ए भी इलम हकें दिया, मैं कहा कहूं खसम । ठौर ना कोई बोलन की, बैठी हों तले कदम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -43
- ए भी कहें हक की सूरत नहीं, जो कहावें महंमद के । सोई सब्द सुन पकड्या, आगूं काफर केहेते थे जे || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -61
- ए भी तुम केहेलावत, कारन उमत के। अर्स वजूद के अंतर में, तुम पेहेले उपजावत ए || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -41
- ए भी दृढ़ तुम कर दिया, सब कछू हाथ हुकम । कछू मेरा मुझ में ना रया, ताथें कहा कहूं खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -47
- ए भी धनिएँ श्रीमुख कया, और दई साख फरमान । ए दोऊ मिल नेहेचे कियो, यों भई दृढ़ परवान || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -14
- ए भी पाँच सरूप का, है बेवरा मांहें कुरान । जो कछू लिख्या भागवत में, सोई साख फुरमान || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -77
- ए भी फेर विचारिया, सांच आगे न रहे अनित । एह बल हुकम के, देह सुपन रही इत || ग्रं - किरन्तन, प्र -86, चौ -11
- ए भी बड़ाई मुझ को दई, जो सबों देख्या नूर पार । सबों सेहेरग से नजीक, कुंजिएँ देखाया निरधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -13
- ए भी वास्ते इस्क के, फुरमाया यों कर । तो कही कुँआरी फुरकान, हाए हाए गिरो न लई दिल धर || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -39
- ए भुलवनी ऐसी भई, देखी चारों किनार । द्वार सबों बराबर, भए मंदिर बारे हजार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -15
- ए भूखन अर्स जवेर के, हक सूरत के अंग । कहा कहे रूह इन जुबां, रंग रेसम सोब्रन नंग || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -85
- ए भेले हुए हैं आद, के भेले हैं सदा अनाद । कहे ब्रह्मा भेले नाही तित, ए आए मिले हैं इत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -5
- ए भोम इन विध की, पांउ न खूचत रेत । खेलत हैं इत रूहें, नए नए सुख लेत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -68
- ए भोम तले की दिवाल में, मेहेराव आवे न सिफत मों । देख देख के देखिए, फेर चलिए फूल बाग लों || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -31
- ए भोम देखे जिन फेर के, एही जान महामत । ढील होत तरफ धाम की, जहां तेरी है निसबत || ग्रं - किरन्तन, प्र -103, चौ -5

SPJIN

- ए भोम हांसी देख के, आप होत सावचेत । मूल सुख कहे महामती, तुमको जगाए के देत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -21
- ए भोमनी रेत रंचकने, समान नहीं सुर कोटजी । द्रष्टे कांई आवे नहीं, एक रंचक केरी ओटजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -17
- ए भोमलडी तमे कांय न मूको, हजी नथी घारण जाती जी । एणी भोमे दुखडा दीसे घणा रे, ते तमे जुओ कां आधी जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -11
- ए मगज खोल्या कुरान, सुनो हिंदू या मुसलमान । जो उठ खड़ा होसी सावचेत, साहेब ताए बुजरकी देत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -41
- ए मजकूर अब्बल का, हँसते करें सब कोए । पर कम ज्यादा वाहेदत में, बेवरा क्योंए न होए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -32
- ए मजकूर भई रूहन सों, मुझ सों किया रब्द । और कछुए न ल्यावे दिल में, आप इस्क के मद || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -28
- ए मंडप जानों चंद्रवा, कहूं ऊँचा नीचा नाहें । ए सोभा जुबां ना केहे सके, होंस रेहेत दिल माहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -31
- ए मंडल अखंड सदा, अछर श्री भगवान । प्रगट दीसे पाधरा, आंहीं थकी सहु ठाम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -104
- ए मंडल धणी त्रैगुण कहावे, जाणूं इहांथी टलसे अंधेर । पार वाणी बोले अटकलें, तेणे उतरे नहीं फेर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -38
- ए मंडल है सदा, जाए कहिए अछर । जाहेर इत थें देखिए, मिने बाहेर थें अंतर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -16
- ए मत वेद वेदांत की, सास्त्र सबों ए ग्यान । सो साधू लेकर दौड़हीं, आगे मोह न देवे जान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -24
- ए मत वेद वेदांत की, सास्त्र सबों ए ग्यान । सो साधू लेकर दौड़हीं, आगे मोह न देवे जान || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -34
- ए मंदिर झरोखे नूर एकै, फिरती नूर पड़साल । तो कहूं नूर रोसन की, जो होवे नूर इन मिसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -106
- ए मंदिर झरोखे नूर के, भोम नूर बराबर । नूर द्वार ज्यों और मंदिर, नूर रूहें आवें सीढ़ियों उतर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -107
- ए मंदिर झरोखे बन पर, झलकत हैं कई नंग । बन फूल फल बेलियां, लगत झरोखों संग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -6
- ए मंदिर रंग-परखाली, सो मैं क्या कहूं ताकी लाली । माहे अनेक रंगों की जोत, सो मैं कही न जाए उद्दोत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -156
- ए मधे जे पुरी कहावे, नौतन जेहेनूं नाम । उत्तम चौद भवनमां, जिहां वालानो विश्राम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -10

- ए मनुए की बाजी बाजी में मनुआ, जुदे जुदे खेल खेलावे । बरना बरन खेलत सब ऐसे, नए नए स्वांग बनाने || ग्रं - किरन्तन, प्र -6, चौ -6
- ए मसनंद मलकूत की, फरिस्ता एक पातसाह । कोई बुजरक पोहोंचे इन लों, और पाउं कटे पुल सरात राह || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -54
- ए महंमद पर दिया खिताब, माएने खोले सब किताब । सो माएने रूजू उमतसें होए, खासी उमत कहिए सोए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -14
- ए माएने इमाम बिना, कोई कर ना सके और । अब देखोगे इन माएनों, सुख लेसी सब ठौर || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -24
- ए माएने मुसाफ सोई करे, हमें भेज्या जिन ऊपर । कुंजी इलम आई जिनपे, सोई खोल दे खुसखबर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -52
- ए माएने ले रसूलें, आए केता किया पुकार । ए सो किन खातिर किया, रूहें अजूं न करें विचार || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -21
- ए माएने सो लेवे सब्द के, जो रूह अर्स की होए । एक रसूल आया नूर पार से, और ख्वाब दुनी सब कोए || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -37
- ए माएने सो समझहीं, जो नूरजमाल से होए। ए वतनी रूहें मोमिन, और ख्वाबी दम सब कोए || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -50
- ए मांग्या अलिए हकपे, मुझे उठाइयो आखिरत । मेहेंदी के यारों मिने, मैं पाउं निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -34
- ए मांथी रखे नीसरे, पल मात्र अलगो एक । मनना मनोरथ पूरण थासे, उपजसे सुख अनेक || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -23
- ए माथे लेसे तेने कहूं छु, बीजा मां करजो दुख। तमें तमारी माया माहें, सेहेजे भोगवजो सुख || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -31
- ए माया आद अनादकी, चली जात अंधेर । निरगुन सरगुन होए के व्यापक, आए फिरत है फेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -65, चौ -1
- ए माया करे बल, फेरवे कल करे विकल । अजवालामां ना रहे चोर, जागतां नव चाले जोर || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -15
- ए माया छे अति बलवंती, उपनी छे मूल धणी थकी। मुनिजन ने मनाव्या हार, सिव ब्रह्मादिक न लहे पार || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -4
- ए माया जाकी सोई जाने, क्यों कर समझे और । बुधजी के रोसन थे, प्रकास होसी सब ठौर || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -7
- ए माया देखो न्यारे होए, भई तारतम की रोसनाई दोए। जो बानी श्री धनिएँ दई, सो आतम के अंदर तुम क्यों ना लई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -67
- ए माया बोहोत जोरावर हती, दूर करी मेरे प्राणपति । माया को तजारक भई, तिन कारन ए विनती कही || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -15

- ए माया हमारियां, याके हमपे विचार । और उपजे सब इनथैं, ए हमारी आग्या-कार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -9
- ए मायाओ अमतणी, ऐहेना अमकने विचारजी । बीजा सहुए एहेना उपायल, ए अमारी अग्याकारजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -5
- ए मिलके मरद चलें ज्यों महीपत, जानो पड़ता अंबर पकड़सी । मोहे अचंभा ए डरें नहीं किनसो, पर ए खेल केते दिन रेहसी || ग्रं - किरन्तन, प्र -19, चौ -8
- ए मिहीं बातें अर्स सुखकी, सो जानें अर्स अरवाए। इन जिमी सो जानहीं, जिन मोमिन कलेजे घाए || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -68
- ए मुख अचरज अदभुत, गुन केते कहूं गालन । ए रूहें जाने सुख बारीक, हर गुन अनेक रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -63
- ए मुख अधुर लांक छोड़ के, क्यों कर दन्त लग जाए । देत नाम निमूना इत का, सों इन सरूपें क्यों सोभाए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -112
- ए मुख देख सुख पाइए, उपजत है अति प्यार । देख देख जो देखिए, तो रूह पावे करार || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -51
- ए मुरसद कामिल बिना, और न काहूं खोलाए । अब हादिएँ ए पट तो खोल्या, जो गिरो सरतें पोहोंची आए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -64
- ए मुसलमान सारे जो हैं, किए अली ने मोहों मार के || ग्रं - सनंध, प्र -34, चौ -5
- ए मूल मिलावा अपना, नजर दीजे इत । पलक न पीछी फेरिए, ज्यों इस्क अंग उपजत || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -40
- ए मेला बैठा एक होए के, रूहें एक दूजी को लाग । आवे ना निकसे इतथैं, बीच हाथ न अंगुरी माग || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -9
- ए मेला हुआ आखिर दिन, तब नफा मसलहत पाया सबन । दजला फिरात जुदी कही, जाहेरी माएने भेली न भई || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -70
- ए मेहेर अलेखे असल, मेरे ताले अर्स के तन । क्यों न होए मोहे बुजरकियां, मेरे जीव के एही जीवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -14
- ए मेहेर करत सब जाहेर, सब का मता तोलत । जो किन कानों ना सुन्या, सो मेहेर मगज खोलत || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -22
- ए मेहेर करें चरन जिन पर, देत हिरदे पूरन सरूप । जुगल किसोर चित्त चुभत, सुख सुन्दर रूप अनूप || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -227
- ए मेहेर करें जो मासूक, तो रूह हुकमें बांधे कमर । तब फरामोसी दूर दिलसे, हक हैड़े चुभी नजर || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -73
- ए मेहेर देखो मेहेबूब की, बड़ी रूह भेजी इत । इन जिमी रूहें जगाए के, कर दई ए निसबत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -71

- ए मेहेर भई मोमिनों पर, समझत नाहीं कोए । सो कोई तो समझे, जो पेहेचान हक की होए || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -2
- ए मेहेर मोमिन जानहीं, जिन ऊपर है मेहेर । ताको हक की मेहेर बिना, और देखें सब जेहेर || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -44
- ए मेहेर मोमिनों पर, एही खासल खास उमत । दई मेहेरें भिस्त सबन को, सो मेहेर मोमिनों बरकत || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -35
- ए मैं इन गिरोह की, काढ़े एक धनी धाम । ए मरे पेड़ से हुकमें, ले साहेब के कलाम || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -32
- ए मैं इन विध की, सो मैं मरे क्योंकर । पोहोंचे पोहोंचावे कदमों, जाग जगावे घर || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -16
- ए मैं कही तुम समझने, ए है बड़ो विस्तार । बोहोत कया मेरे धनी ने, तुम करोगे केता विचार || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -22
- ए मैं काढ़ी तुम इन विध, इन मैं में न आवे सक । यों काढ़ी खुदी मैं साथ की, हकें किए आप माफक || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -10
- ए मैं क्यों कर करूं बरनन, तम लीजो कर चितवन । नव भोम सबों के मंदिर, देखो वस्तां अपनी चित्त धर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -70
- ए मैं तें सब हक की, ए इलम अकल धनी । नूर जोस हुकम हक का, या विध है अपनी || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -38
- ए मैं देख दुख पावत, दिल में विचारत यों । जो कदी यों जान बोलों नहीं, तो कहे बिना बने क्यों || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -65
- ए मैं बोले जो कछु, सो संदेसा रूहअल्ला जान । ए इलम हकीकत वतनी, कहूं हक बिना न पेहेचान || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -51
- ए मैं मैं क्यों ए मरत नहीं, और कहावत है मुरदा । आड़े नूर-जमाल के, एही है परदा || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -28
- ए मैं लुगा कहया माया सनमंध, मैं देखीतां न देखं अंध । ए ताए कहिए जो होए बेसुध, तुम खिन खिन खबर लई कई विध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -14
- ए मैं है हक की, ए है हक का नूर । खास गिरो जगाए के, पोहोंचत हक हजूर || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -15
- ए मोमिनों की सरीयत, छोड़ें ना हकको दम । अर्स वतन अपना जानके, छोड़ें ना हक कदम || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -53
- ए मोहोरे जो खेल के, झठे खाकी नाबूद । आब हैयाती पीय के, क्यों होसी बका बूद || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -95
- ए मोहोरे पैदा जो खेल के, हक मोमिनों देखावत । याही बराबर अक्स, मोमिनों के बका बोलत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -96

- ए मोहोल नूरजमाल के, दोए नूर पुल जोए ऊपर । नूर नेहेरें दस घड़नाले, ए खूबी नूर जुबां कहे क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -21
- ए मोहोल फिरते बन ऊपर, ए जो सोभा लेत हैं इत । बन झरोखे सोभा तो कहूं, जो होए निमूना कहूं कित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -109
- ए मोहोल बड़े अति सुन्दर, एक दूजे थें चड़त । ज्यों ज्यों ऊपर चढ़िए, त्यों त्यों खूबी बढ़त || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -17
- ए मोहोल बैठन के, अति बड़ियाँ पड़साल । बोहोत देखी मैं बैठकें, पर ए सोभा अति कमाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -18
- ए मोहोल रच्यो जो मंडप, सो अटक रह्यो अंत्रीख । कर कर फिकर कई थके, पर पाई न काहूं रीत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -11
- ए मोहोल रच्यो जो मंडप, सो अटक रह्यो अंत्रीख । कर कर फिकर कई थके, पर पाई न काहूं रीत || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -12
- ए याद किए हक रसना, आवत है इस्क । जिन इस्के अर्स देखिए, सुख पाइए हक मुतलक || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -4
- ए याद नीके दीजियो, तुम देखो सहूर कर । मेरे इलम से रूहों को, देवे साहेदी अंतर || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -54
- ए रंग कहे मैं इन मुख, पर किन विध कहूं सलूक । ए करते मुख बरनन, दिल होत नहीं टूक टूक || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -136
- ए रंग जोत किन विध कहूं, जो ले देखो अर्स सहूर । सोभा रंग सलूकी सुख, देखो रूह की आंखों जहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -60
- ए रब्द अर्स खिलवत का, रूहें इस्क अंग गलित । सो क्यों छोड़ें पांउं पकड़े, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -58
- ए रस आज के दिन लों, कित काहू न लखाना । आवसी साथ इन विध, ए रस लपटाना || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -92
- ए रस आजना दिन लगे, क्यांहे न कलाणो । लीला राखवा पाछल, जाण होय ते जाणो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -77
- ए रस आंहीं उभस्यो, आवी अम मांहें । नौतनपुरीमा जे निध, एहेवी नहीं क्यांहें || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -87
- ए रस काजे दोड्यो नरसैयो, वाणी करे रे पुकार । रस थयो मांहेली गमां, आडा दरवाजा चार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -45
- ए रस भरे नैन मासूक के, आसिक छोड़े क्यों कर। कई कोट गुन कटाख्य में, रूह छोड़ी न जाए नजर || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -21
- ए रस रंग उपले केते कहूं, कई विध जिनस जुगत । फेर फेर देख देख देखहीं, रूह क्योंए न होए तृपित || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -32

- ए रस वरस ऐंसी लगे, सारी परे सचवाणो । लीधो पीधो साथमां, वखतो वखत वेहेचाणो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -73
- ए रस वाणी अमतणी, आंही आवी छलकाणो । छोल आवी जेम सागर, रस तो प्रगटाणो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -75
- ए रस श्रवणें जेहेने झरे, तेणे सूं करे जेहेर । जागतां सुपन न उपजे, जोता वेर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -118
- ए रस श्रवनों जाके झरे, ताए कहा करे जेहेर । सुपन ना होवे जागते, देखी तां वैर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -140
- ए रस सनमुख साध लई ने, वैकण्ठ सुन्य समाय । बीजा काष्ट भखी जन जे हेठां उतस्या, तेतां जल विना लहेरे पछटाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -23
- ए रसनी जे वासना, केहेने न अपाणी । ते वृज सुन्दरी सुखमां, अणजाणे माणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -7
- ए रसूल अर्स अजीम से, ले आया फुरमान । मैं जो कह्या तुमें लदुन्नी, सो जोड़ देखो निसान || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -41
- ए रसूलें पेहेले कह्या, खोलसी माएने इमाम । उमेदां मोमिन दुनी की, होसी जाहेर हुए कलाम || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -29
- ए रात दिन काल दुनी के, एही काटें दायम उमर । एही खासी सब सय को, दिन पूरे कर फजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -30
- ए रामत अमे रब्दीने रमसू, साथ सकल तमे रेहेजो रे जोई । हूं हारूं तो मोपर हंसजो, मारो वालोजी हारे तो हँसजो मा कोई || ग्रं - रास, प्र -23, चौ -4
- ए रामत करी तम माटे, तमे जोवा आव्या जेह । रामत जोई घर चालतूं, वातो ते करतूं एह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -3
- ए रामत घणूं रूडी थई, मारा वालाजीने संग । कहे इंद्रावती निकुंज वन, घणूं रमतां सोहे रंग || ग्रं - रास, प्र -15, चौ -16
- ए रामत मायातणी, मुकाय नहीं । ब्रह्मांडनी कारीगरी, सारी कीधी सही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -126
- ए रामत मांहें जे रामतो, तेनो न लाभे पार । ए बेखों मांहें वली बेख सोभे, स्वांग सहु संसार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -3, चौ -1
- ए रामत रची अम कारणे, अमे कारज एणे आव्याजी । बनेना मनोरथ पूरवा, अमें रचावी आ मायाजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -26
- ए रामत रास रमी करी, अमे आव्या सह घर धामजी । ब्रह्मांडनो कल्पांत करी, रूदे कीधो अखंड ठामजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -21
- ए रामतडी जोई करीने, सह साथने वाध्यो उमंग । सहु कोई कहे अमे एणी पेरे, रमसू वालाजीने संग || ग्रं - रास, प्र -21, चौ -5

- ए रामतडी जोई करीने, हवे निरतनी रामत कीजे रे । रूडी रामत इंद्रावती केरी, जेमां साथ वालो मन रीझे रे || ग्रं - रास, प्र -28, चौ -8
- ए रामतडी जोई कहे सखियो, इंद्रावती ए राखी रेख । साथ सहुने वाली घणूं लागी, मारा वालाजीने वली वसेख || ग्रं - रास, प्र -23, चौ -8
- ए रामतडी जोरावर रे, दीजे ठेक अंग वाली । रमतां सोभा अनेक धरिए, गाइए वचन कर चाली || ग्रं - रास, प्र -24, चौ -2
- ए रामतना रस कहूं केटला, थाय निरतना रंग । हस्त चरणनां भूखण सर्वे, बोले बनेना एक बंग || ग्रं - रास, प्र -24, चौ -6
- ए रामतनी लेव देव मेली, करे वैकुंठनों वेपार । ए जीवोंनी मोच्छ, सतलोक, कोई पार निराकार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -32
- ए रामतनो वेपार करे, तेहेने माथे जमनो दंड । कोइक दिन स्वर्ग सोपी, पछे नरक ने कुंड || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -30
- ए रामतमा विलास जे कीधा, ते केहेवाय नहीं मुख वाणी रे । सर्वे सुखडा लई करीने, रह्या रूदयामां जाणी रे || ग्रं - रास, प्र -14, चौ -7
- ए रास लीला को छोड़ के सुख, आधा लुगा न निकसे मुख । पर ए केहेवाए धनी के जोस, सो उतर गया वचन के रोस || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -22
- ए राह इसलाम मोमिनों, चढ़ उतर देखाई रसूल । आई तीन सूरतें इन वास्ते, जाने रूहें जावें जिन भूल || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -58
- ए रूत वाला मूने एम थई, हजी दया तमने न थाय । नौतनपुरी मेलो केम थासे, ज्यारे जीव निसरीने जाय || ग्रं - खटरुती, प्र -4, चौ -10
- ए रूह की आंखों देखिए, असल बका के तन । तो देखो चित्रामन धाम की, करत निरत सबन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -72
- ए रूह के नैनों देखिए, नाजुक कमर निपट । अति देखी सुन्दर चढ़ती, कही जाए न सोभा कटि || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -37
- ए रूह सरूप नहीं तत्व को, इनको अस्वारी मन । खान पान सुख सिनगार, ए होए रूह के चितवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -22
- ए रूहें फरिस्ते दो गिरो, जो बीच उतरी लैलत कदर । और दुनी फूंकें उड़ावे असराफील, दूजी फूंके उठावे बका कर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -31
- ए रूहें हक हादी संग, विध विध बन विलसत । ए क्यों छोड़ें कदम मोमिन, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -17
- ए रे अमल तमने केम रे उतरसे, जे जेहेर चढ्यूं अति भारी जी । जिहां लगे जीवने वाण न लाग्यो, थाक्या ते धणी पुकारी जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -40
- ए रे अर्थ मांहें छे अजवालू, जे कोई जोसे रे विचारी । रूदया मांहें थासे प्रकास, ज्यारे जागसे जीव संभारी || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -118

- ए रे कोहेडो हद तणो, बेहदी समाचार । अमे देखाईं पाधरा, बेहदना बार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -64
- ए रे घुमडले हाँसी रे साथने, रहे नहीं केमे झाली । लडथडे पडे भोम आलोटे, हँसी हँसी पेट आवे रे खाली || ग्रं - रास, प्र -23, चौ -7
- ए रे धनी मेरे चलते, ना टूटी रगां क्यों रही खाल रे । रूप रंग रस लेयके, क्यों ना पड़ी आग झाल रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -20
- ए रे निमूना भान का, मेरे पिउजी को दिया न जाए रे । ए जोत धनी इन भांत की, कोट ब्रह्मांड में न समाए रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -15
- ए रे पिउजी सिधावते, क्यों ना लग्या कलेजे घाय । काल मेरा कहां चल गया, क्यों न काढी खेंच अरवाय || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -24
- ए रे पिउजी सिधावते, वाचा क्यों रही तूं अंग । उजड़ ना पड़े दंतड़े, घन घाय मुख भंग रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -4
- ए रे लवो सुणतां, तूंने दाझ न आवी । एणे रे लवे अगिन नी, झालमां कां न झंपावी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -6
- ए रे लोभ घणों दोहेलो लागसे, पण लाग्या स्वादे चित न आवे । नीला बंध बांधता सुख उपजे छे, पण सूकया पछी रोवरावे || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -36
- ए रे वल्लभसू वालपणे, कर दिए साध संग । ए रे संगत केम मूकिए, मारा मूल तणो सनमंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -31
- ए रेहेसी अधबीच कातना, दिन आए समें करे भंग । तुझ देखत सैयां चलियां, जो हुती तेरे संग || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -27, चौ -9
- ए रोज कहे बंदगीय के, आए पोहोंचे सावचेत होए । ए दिन समझ रोजे रखे, कह्या तिन पर गुनाह न कोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -26
- ए रोज नाहीं खिलाफ, होसी नव सदी आगू मिलाप । कलाम अल्ला का जाहेर नूर, अग्यारे सिपारे का जहूर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -11, चौ -1
- ए रोज है निपट सखत, यों जुलजला होसी कयामत बखत । बीच हवा के पहाड़ उड़ाए, ए जो दुनियां में बुजरक केहेलाए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -33
- ए रोसन करत कौन नूर की, नूर केहेत आगे किन । केहेत है नूर किनका, नूर रूह केहे चली मोमिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -11
- ए लकब दिया है सांच कारन, मालूम हुआ वास्ते इन । अव्वल खत यों लिख्या कलाम, नजूम दरजी पना किया इसलाम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -16, चौ -3
- ए लखतां मूने केटली थई छे वार, हवे एहेनो निरमाण काढवो निरधार । गुण जेतमों भाग एक खिणनो आधार, एटली थई छे मूने लखतां वार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -39

- ए लगे दोऊ सुन्य को, निराकार सामिल । निरंजन या निरगुन, सो भी रहे इन भिल || ग्रं - किरन्तन, प्र -107, चौ -2
- ए लछन तेरे दरद के, ताए गृह आँगन न सुहाए । रतन जड़ित जो मंदिर, सो उठ उठ खाने धाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -8
- ए लछन तेरे दरद के, ताए गृह आँगन न सोहाए । रतन जड़ित जो मंदिर, सो उठ उठ खाने धाए || ग्रं - सनंध, प्र -7, चौ -8
- ए लछन सैयां अंकूरी, जो होसी इन घर । ए वचन वतनी सुनके, आवत हैं तत्पर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -5
- ए लंबे बन को जाए मिल्या, जमुना भर किनार । इतथे छत्री ले चल्या, जाए पोहोंच्या नूर के पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -20
- ए लसकर सारा दिल का, सो दिलबरी सब चाहे । दिल अपना दे उनका लीजिए, इन विध चरनों पोहोंचाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -13
- ए लिखते मोहे केती बेर भई, तिनका निरमान काढ़ना सही। जेते मिल के भए ए गुन, तेते बांटे किए एक खिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -34
- ए लिखे जाहेर माएने, सूरज ऊगसी दिलों पर । पहाड़ पूजें हम निसान, बैत बका देखावें फजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -13
- ए लिख्या दूसरे सिपारे, आयत करान के मांहें । सक सुभे होवे जिन को, सो देखे जाए ताहे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -45
- ए लिख्या वास्ते सबब इन, बदले नेक खूब कारन । बीच राह हक के एक, तिन नेकों का बदला नेक || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -11, चौ -2
- ए लिख्या सिपारे आममें, करी बातें हक महंमद । सो मोमिन आयत देख के, सक सुभे करें रद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -18
- ए लीला करूं इन भातें, तो रास रंग खेलाए । बिध बिध के सुख विलसिए, विरह जागनी सह्यो न जाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -40
- ए लीला करूं एणी भांते, तो रास रंग रमाय । विध विधना सुख दऊं विगते, विरह वासनाओंनो न खमाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -40
- ए लीला क्यों सही जाए, बैकुंठ को अधिकारी राए । सुक के अंग हुओ उलास, जानूं बरनन करूंगो रास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -11
- ए लीला छे अति भली, द्रष्टे उपजे ब्रह्मांड । ए रमे ते रामत नित नवी, एहेनी इछा छे अखंड || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -103
- ए लीला जाने सृष्ट ब्रह्म की, जाए पोहोंच्या होए तारतम । ए दृष्ट पूरन तब खुले, जाए अब्बल आखिर इलम || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -15
- ए लीला जे जोसे विचार, सं करसे तेहेने संसार । प्रगट पाइयो कीधो एह, अंबारत थासे हवे तेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -9

- ए लीला यामें एते दिन, कालमाया को ब्रह्मांड । एह कल्पांत करके, फेर उपज्यो अखंड || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -63
- ए लीला रे अखंड थई, एहनो आगल थासे विस्तार । ए प्रगट्या पूरण पार ब्रह्म, महामती तणों आधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -51, चौ -10
- ए लीला सब प्रगट करी, महंमद ईसा बुधजी आए। ए तीनों सरूपों मिल के, सबको दिए जगाए || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -108
- ए लीला सेवे कर सार, सेवतां न पावें पार । पेहेले सेवा करी है घनें, सो देखियो सुकव्यास वचनें || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -17
- ए लीला है अति बड़ी, आई या इंड मांहें । कई हुए कई होएसी, पर किन ब्रह्मांडों नाहे || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -2
- ए लीला है अति बड़ी, दृष्टं उपजे ब्रह्मांड । ए खेल खेले नित नए, याकी इछा है अखंड || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -15
- ए लीला होसी विस्तार, सूरज ढांप्या ना रहे लगार । ए लीला क्यों ढांपी रहे, जाकी रास धनी एती अस्तुत कहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -12
- ए ले खुलासा मोमिन, बका राह इसलाम । ए मेहेर मुतलक हक से, करत जाहेर अल्ला कलाम || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -24
- ए लेप बज्र की मैं क्या कहूं, ए अवगुन सब्दातीत । धनी आप दे करी आपसी, एही पिया की रीत || ग्रं - किरन्तन, प्र -41, चौ -15
- ए लोक राह न पावहीं, क्योंए न सुनें पुकार । ए चले चींटी हार ज्यों, बांधे ऊंट कतार || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -3
- ए वचन आगम छे प्रगट, ते तां सह कोई जाणे । उत्तम करे असुराई ते माटे, ए कुली व्यापक एधाणे || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -41
- ए वचन आंही छे अपार, पण साथ केटलो करसे विचार । ते माटे कांई घणूं नव केहेवाय, आ तां पूरतणों दरियाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -19
- ए वचन ऐसे जाग्रत, जगावत ततखिन । जो न लीजे सिर अपने, तो कहा करे वचन || ग्रं - किरन्तन, प्र -85, चौ -6
- ए वचन कहे मैं नींदज मांहें, जब नीके देखें धनी धाम के तांहें । न तो क्यों कहूं धनी को एह वचन, पर कछुक तासीर है भोम इन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -9
- ए वचन कांई एम न केहेवाय, जीव मारो मांहें दुखाय । मूने घणूं विमासण थाय, पण जाक्यो मारो नव जकाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -2
- ए वचन तणी तूंने नासिका, न आवी प्रेमल । वालयो रे विछडतां, तें नव दाख्यू बल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -9
- ए वचन तो आंहीं केहेवाय, जे अमे न बंधाऊं मायाय । एहना बंध पडया सहु कायाय, अमे छूट्या धणीनी दयाय || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -37

- ए वचन पाधरा प्रगट कहे, जाण होय ते जोईने लहे । पख पचवीस ए ऊपर जेह, तारतमना वचन छे तेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -12
- ए वचन प्रगट पाधरा, हूं ता बाहेर पाड्या । दरवाजा बेहदतणा, अनेक उघाड्या || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -123
- ए वचन मारे मुखथी नव पडे, न कांई तारे श्रवणा संचरे । आ जोग आपण नथी बेहू, तो ए लीला सुख केणी पेरे सहूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -14
- ए वचन यों कहे न जाए, जीव दुख पावे ना कहे जुबांए। एह फिकर मैं बोहोतक करूं, पर देह ना पकड़े जो हिरदे धरूं || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -2
- ए वचन विलास जो पेड़ के, आए हिरदे आतम के अंग । तब खिन बेर न लागहीं, असल चित्त एक रंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -15
- ए वचन श्रवणे सुणी, काई मनडां थयां अति भंग । वाला एम तमे अमन का कहो, अमे नहीं रे खमाय अंग || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -53
- ए वचन सबे आवेस में कहे, उत्तमबाईऐं भली विध ग्रहे । यों कर कह्या आवेस दे, प्रगट लीला सबमें होसी ए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -16
- ए वचन सर्वे आवेसमां कह्या, उत्तमबाईए जोपे करी ग्रया । एम कर्दा दई आवेस, जे प्रगट लीला कीधी बसेस || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -16
- ए वचन साथ के कारने, मैं तो बाहेर पाड़े। दरवाजे बेहद के, अनेक उघाड़े || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -145
- ए वचन सुनते बाढ़े बल, सोई लेसी तारतम को फल । तारतम फल जागिए इन घर, कहे महामती ए हिरदे धर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -24
- ए वचनों माहें छे निध घणी, आगल प्रगट थासे धणी । हरखे साथ जागसे एह, रेहेसे नहीं कोई संदेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -9, चौ -5
- ए वजूद न खूबी ख्वाब की, ए कदम हक बका के । ढूंढ्या बुजरकों इप्तदाए से, इत जाहेर न हुए कबूं ए || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -10
- ए वतनी सों गुझ कीजिए, जो बैंचे तरफ वतन । प्रेम में भीगे रहिए, पिउ सों आनंद घन || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -32
- ए वस्तर भूखन भांत और हैं, अर्स अंग का नूर । जो सोभा देत इन अंग को, सो क्यों आवे माहें सहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -48
- ए वस्तर भूखन हक के, सो सारे ही चेतन । सब जवाब लिया चाहिए, आसिक एही लछन || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -57
- ए वाट वाणी जोई घणे, केहेने हाथ न आवी । नाम ब्रह्मांडना धणी कया, बीजा सूं करूं सुणावी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -19
- ए वाणी ए वाटडी, कहींए प्रगट न थई । धणी ब्रह्मांडने खप करया, रया जोई जोई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -18

- ए वाणी चित धरजो साथ, दया करी कहे प्राणनाथ । ए किव करी रखे जाणो मन, श्री धणी लाव्या धामथी वचन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -2
- ए वाणी बेहद प्रगटी, इंद्रावती मुख । घणी विधे ए रस पिए, बेहदने सुख || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -79
- ए वाणी साथ मांहें केहेवाणी, पण केने न कीधो विचार । पछे दया करीने दीधूं वाले, अंग इंद्रावतीने आ वार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -53
- ए वाणी सांभलतां जेहने, आवेस न आव्यो अंग । ते नहीं नेहेचे वासना, तेनो करूं जीव भेलो संग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -60
- ए वाणीने कारणे, अनेक दुख देखे । एणी विधे ए रसने, केटला कहूं रे अलेखे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -84
- ए वाणीने कारणे, घणा भैरव झंपावे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -82
- ए वाणीने कारणे, घणे तपस्या कीधी । ए वाणीने कारणे, घणे अगन ज पीधी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -80
- ए वात अमे श्री राजने कही, त्यारे अम बेहू पर इछा थई । उपनूं मोह सुरत संचरी, तेणे माया रचना करी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -6
- ए वाद बानी सिर लेवहीं, सुध बुध जावे सान । त्रास स्वांत न होवे सुपने, ऐसा व्याकरण ग्यान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -13
- ए वाद बानी सिर लेवहीं, सुध बुध जावे सान । स्वांत त्रास न आवे सुपने, ऐसा व्याकरण ग्यान || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -15
- ए वानी इत हम बिना, और काहूं न होवे । आधा लुगा ना पाइए, जो जीव अपना खोवे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -15
- ए वानी कही मेरे धनी, आगे कृपा होसी घनी । हरखें साथ जागसे एह, रेहेसे नहीं कोई संदेह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -5
- ए वानी मेरे मुख थैं ना परे, ना तेरे श्रवना संचरे । ए जोग आपन नाहीं दोए, तो इन लीला को सुख क्यों होए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -14
- ए वानी ले बड़ी कीनी, दियो सो छल को मान । सो बैंचा बैंच ना छुटही, लिए क्रोध गुमान || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -16
- ए वालो रे चालतां, गुण हता अंग मांहें । काम न आव्या रे तमे, मारे अवसर क्याहे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -27
- ए विख की जिमी और विख के बिछौने, विखै की आकार जी । अष्ट धात मिने सब विख के, विखै का विस्तार जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -6
- ए विखम भोम छोड़ते जो आड़ी करे, सो जानियों तेहेकीक दुस्मन जी । जो लेने न देवे सुख अखंड, सो क्यों न देखो सुन वचन जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -23

- ए विचार कीजे जब दिल से, रूह की खोल नजर । कड़ी कड़ी के रंग देखिए, गिनते होए जाए फजर || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -52
- ए विचार तमे जो जो रही, ए लीला सकजीए कही। जे लीला कीधी जगदीस, ते माहे आपण हुता सरीख || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -55
- ए विचार देखो मोमिनों, हक देखावें अपने सहर । इन दिल को अर्स तो कह्या, जो कदम नहीं आपन से दूर || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -29
- ए विचार विचार विचारिए, तो पाइए लसकर बल । सुमार तो भी न पाइए, जिमी अपार नेहेचल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -90
- ए विचारे क्या करें, सब आदम की नसल । तो फुरमाया ना करें, वे बँचे पेड़ असल || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -13
- ए विचारे क्या करें, सुख ताले लिख्या नाहें । ना तो जान बूझ पढ़े आरिफ, क्यों पड़े दोजख मांहें || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -23
- ए विध अर्स में हैं नहीं, जो करत है नकल । ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, अर्स में एक असल || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -39
- ए विध कहूं मैं केती, सो होए न याकी गिनती । बन फूल फूले बहु रंग, झलूब रहे बोए सुगंध || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -36
- ए विध रूहें देखी जिनों, सो केहेनी में आवत नाहें । कछू वास्ते हम रूहनके, हुकम कहावत जुबांए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -21
- ए विध सब हुकम की, हुकमें किए बनाए । वास्ते इस्क रब्द के, दोऊ ठौर दिए देखाए || ग्रं - सिंधी, प्र -16, चौ -18
- ए विनती सुनियो तुम सार, माया दुख पायो निरधार । ए माया बातें हैं अति घनी, मोहे मुखथे काढ़ी मेरे धनी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -16
- ए विरहा लछन में कहे, पर नाहीं विरहा ताए । या विध विरहा उद्दम की, जो कोई किया चाहे || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -16
- ए विरहा लछन मैं कहे, पर नाहीं विरहा ताए । या विध विरह उदम की, जो कोई किया चाहे || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -14
- ए विरहा सुन श्रवन रहे, लगी न सीखां कान । हाए हाए वजूद न गल गया, सुन विरहा हादी सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -150
- ए वेण न न्हारिए, फिट फिट रे भुंडा जीव । तो जो ओठो° पण वेओ को न्हारे, हिन गाले वेओ घणूं लही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -15, चौ -8
- ए वेद कतेब पुकारहीं, कोई पोहोंच्या न अपनी अकल । बिना हादी गोते खावहीं, जो तन मोमिन अर्स असल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -87
- ए वेरीडा घणूं विख भरियां रे, जेणे खाधो ते सर्व संसार जी । ते तमने भूलवे छे जुई भांते, पण तमे रखे लेवाओ आवार जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -23

- ए सक हमको तो मिटी, जो हम बैठे तले कदम । फरामोसी हम को मिटावने, भेज्या तुम अपना इलम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -72
- ए सब इच्छा सों मंगावें, पर सखियों को सेवा भावे । सैयां सेवा करन बेल ल्यावें, लेवें एक दूजी पे छिनावें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -102
- ए सब उमत कारने, आखिर करी सरत । देसी भिस्त सबन को, सो रूहअल्ला की बरकत || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -20
- ए सब एक जवेर का अर्स है, तामें कई तरंग उठत । जुदे जुदे रंगों झरोखे, अनेक भांत झलकत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -16
- ए सब एक तरफ हैं, के जुदे जुदे दौड़त । देखो सहूर करके, है कौन तरफ निसबत || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -60
- ए सब किताबें इन पे, तामें किल्ली कुरान । रूह अल्ला महंमद मेंहेदी, एही इमाम पेहेचान || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -6
- ए सब किया महंमद वास्ते, चौदे तबक की जहान । सो महंमद आए उमत वास्ते, ए दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -13
- ए सब किया हक ने, वास्ते इस्क के । एक जरे जरा जो दुनीय में, जो विचार देखो तुम ए || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -48
- ए सब खेल करत है मनुआ, भाँत भाँत रिझावे । ब्रह्मवासना कोई पारथीं पेखे, सो भी दृष्ट मुरछावे || ग्रं - किरन्तन, प्र -6, चौ -14
- ए सब खेल खसम का, बनिआदम हैवान । एक नजरों देखहीं, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -20
- ए सब निसबत वास्ते, जो कछू सब्द उठत । ए जो नजरों देखत, या जो कानों सुनत || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -31
- ए सब नूर एक होए रह्या, रोसनी न काहूं पकराए । बिना नूर कछू ना देखिए, रह्या बाहेर मांहें भराए || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -44
- ए सब नूर महंमद के, महंमद नूर खुदाए । तो आखिर आए सबन को, दई हैयाती पोहोंचाए || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -45
- ए सब पैदा महंमद के नूर से, अव्वल आखिर सोई नूर । एक साइत न खाली नूर बिना, तब दुनी देखे जब होसी जहूर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -29
- ए सब फुरमाया हुआ, देखो आयतों हदीसों विचार । सो आए सदी लग आखिरी, आई किबले से पुकार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -22
- ए सब बरकत कानों की, सो सुन सुन रूहकी बान । दिल भी हक तहां देत हैं, मेहेर करत मेहेरबान || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -14
- ए सब बातें याद राखियो, फल बखत आखिरत । चलते फरक जो ना होवे, तो रूहों की क्यों करे हक सिफत || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -93

- ए सब बातें ले दिल में, और दिलको लिख्या अर्स । भिस्त करी तुम कायम, होसी तामें बड़ा तुमें जस || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -128
- ए सब बुजरकी इनों की, क्यों जुदे कहिए वाहेदत । इने कुन्नकी दुनी क्या जानही, रूहें अर्स हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -134
- ए सब मुखथें कहें महंमद को, ए अव्वल ए आखिर । बड़े काम नजीकी हक के, ए किन किया महंमद बिगर || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -19
- ए सब मोहे इन मोहनी रे, पर इन बांध्यो न कासों मन । जीव को यातें बिछड़ते, बड़ी लागी दाझ अगिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -33, चौ -20
- ए सब लेवे रोसनी, पेहेचान के निसबत । ए मैं बका हक की, करे हिदायत महामत || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -50
- ए सब विध दिल देखत, करे जुबां अकल बरनन । तो भी अरवा ना उड़ी, कोई सखत अंतस्करन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -35
- ए सब सींग ससिक, बंझा पूत वैराट । फूल गगन नाम धर के, उड़ाए देवें सब ठाट || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -31
- ए सब हक करत हैं, कौल फैल या हाल । और मुझ में जरा न देखिया, बिना नूर जमाल || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -32
- ए सब हक रसनाएं किया, इलम प्यारा लग्या सबन । सो इलमें आरिफ पूजें मोहे, असल अर्स में हमारे तन || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -54
- ए सब हुआ मोमिनों खातिर, पेहेले भेज्या कागद । ए तमासा देखाए के, उड़ाए देसी ज्यों गरद || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -82
- ए सबद तो जाहेर कहे, पर आया न किनो आकीन । तो लगे सब छल को, हिंदू या मुसलमीन || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -70
- ए सबद मैं दृढ़ किए, पिया ना करें निरास । रूह मेरी यों कहे, होसी दुलहे सों विलास || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -71
- ए सबे बीच अंधेरी, किन तरफ न पाई हक । काहूं न पाया अर्स बका, कई हुए रात बीच बुजरक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -67
- ए सबे बीच अर्स के, कहावें वाहेदत । एक तन रूहें अर्स की, हक हादी सूरत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -20
- ए सबे समझाए के, पाक करो हम दिल । पीछे बात वतन की, हम पूछसी मोमिन मिल || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -70
- ए सबे सींग ससक, बंझा पूत वैराट । फूल गगन नाम धराए के, उड़ाए देवे सब ठाट || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -30
- ए सब्द कहे ते नींद में, के सुपने करत स्वाल । के जवाब तेरे जागते, कछू देखे ना अपना हाल || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -4

- ए सब्द जो कहती हों, सो कारन सब सैयन । सोहागिन ढांपी ना रहे, सुनते एह वचन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -21
- ए सब्द तो लों कहे, जो लों आए जुबांए । सब्द न अब आगे चले, आवे नहीं कजाए || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -89
- ए सब्द धनी फरमान के, भी ले अनुभव आतम । तिनसे उड़ाऊं सुपना, पर कोई साइत हाथ हुकम || ग्रं - किरन्तन, प्र -85, चौ -13
- ए सब्द पार बेहद के, ताके माएने करसी सोए । सब्द महंमद जानें मेंहेंदी, दूजा हद का न जाने कोए || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -10
- ए सब्द सारे महंमदें, आए पेहेले किया पुकार । महंमद मेंहेदी रूहअल्ला, आखिर वाही सिर मुद्दार || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -35
- ए सब्द सुन मोमिन, रेहे न सकें पल । तामें मूल अंकूर को, रहे न पकस्यो बल || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -40
- ए सब्द सुन सोहागनी, रहे ना सके एक पल । तामें मूल अंकूर को, रहे ना पकड्यो बल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -22
- ए समझ मुझसे ना होए, क्यों कर करों जुदे मैं दोए । तब सरन विष्णु के गए, अंतरगतें वचन कहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -7
- ए समझे कहिए तिन को, जो कोई दूसरा होए । ए बारीक बातें वाहेदत की, केहेते बंधाए सोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -104
- ए सरत सोई जो आगे करी, हक इलम होसी जाहेर । लिख्या है कुरान में, आया सो आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -3
- ए सरीयत अपनी मोमिनों, और है हकीकत । क्यों न विचार के लेवहीं, हक हादी बैठे तखत || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -62
- ए सवे तुम समझियो, वासना जीव विगत । झूठा जीव नींद न उलंघे, नींद उलंघे वासना सत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -22
- ए सवें सिफतें करें, पर पोहोंचें न नूरजलाल । ए पैदा ला मकान की, याको पोहोंचे ना फैल हाल || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -39
- ए संसार बड़ा है कोहेड़ा, और कोहेड़ा भागवत । ए दोऊ एक कुंजी से खोलूं, जो कोई देखू आगे संत || ग्रं - किरन्तन, प्र -10, चौ -10
- ए संसे सब समझाए के, कोई अंग करे उजास । सो गुर मेरा मैं सेवों ताए, सुध चित होए दास || ग्रं - किरन्तन, प्र -28, चौ -14
- ए सहूर करो तुम मोमिनों, जब फैल से आया हाल । तब रूह फरामोसी ना रहे, बोए हाल में नूरजमाल || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -69
- ए सहूर तो करे, जो होए अर्स अरवाहें । जिन उमत के खातिर, आवसी इत खुदाए || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -21

- ए साखें सब पुकारहीं, निपट निकट कयामत । आए गई सिर ऊपर, तुम क्यों न अजूं चेतत || ग्रं - किरन्तन, प्र -104, चौ -12
- ए सागर भर पूरन, तेज जोत को गंज । कई इन सागर लेहेंरें उठे, पूरन नूर को पुंज || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -121
- ए सागर सरूपी मुख मासूक, कई खूबी खुसाली अनेक । कई रंग तरंग किरने उठे, ए वेही जानें गिनती विवेक || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -22
- ए सांच सन्देसा हक को, तोलों ना पोहोंचत । गेहेरा जल है मैंय का, आड़ा जो असत || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -26
- ए सांचा नूरी सांई का, इनके सब्द अगम । फरिस्ते आदम जो मिलो, किन निकसे ना मुख दम || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -8
- ए सातों भए इन विध, पोहोंचे बका में जब । आप उठ खड़े हुए, पीछे खेल कायम किया सब || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -25
- ए साथ की चिन्हार को कहे वचन, ना तो धनी दया जीव जाने मन । साथ चरने हैं सो तो वचिखिन वीर, ए भी वचन विचारे द्रढ़ धीर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -22
- ए साथ महंमद मेंहेंदी के, फरिस्ता आया आखिर । क्यों न चीन्हो तुम इन को, जो करसी दिन फजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -91
- ए सार पाए सुख उपजे, धंन धंन ए बुध अवतार । अबलों किन ब्रह्मांड में, किन खोल्या न ए दरबार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -16
- ए सारों में व्यापक, थावर और जंगम । सबन थे एक है न्यारा, याको जाने सृष्टब्रह्म || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -25
- ए साहेदी आई इन विध की, कहे खुदा एक महंमद बरहक । सो क्यों सुध परे बिना इलम, हक इलमें करी बेसक || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -7
- ए साहेदी जाहेर सुनो, जो लिखी माहें फरमान । अर्स कह्या दिल मोमिन, अर्स में सब पेहेचान || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -3
- ए साहेदी नामें मेयराज में, बीच लिखे माएने बातन । हक इसारते रमूजें, सो बूझे हादी या मोमिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -70
- ए साहेदी लिखी जाहेर, मेयराज नामें मांहें । सरहद जबरूत की, फरिस्ते छोड़ी नाहे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -73
- ए साहेदी सिपारे सूरत, जो उतरियां अल्ला आयत । या तो हदीसे कहूं महंमद, या बिन और न कहूं सब्द || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -4
- ए साहेब किने न देखिया, ना किन सुनिया कान । ढूंढ गए त्रैगुन, पर पाया न काहूं निदान || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -4

- ए साहेब हाँसी करे, अर्स की अरवाहों सों। हाए हाए विचार न आवहीं, ऐसी सखती हिरदे मों || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -3
- ए साहेवियां देखाइयां, ख्वाब में उमत । और देखाई साहेबी अपनी, सुख देने को इत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -81
- ए सिणगार जोइए ज्यारे निरखी, त्यारे सूं करे मायानो पास । साथ सकल तमे जो जो विचारी, वली स्यामा ते आव्या साख्यात || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -70
- ए सिपारे उनईस में, लिखी हकीकत । सो आए देखो नीके कर, जो कह्या दिन मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -93
- ए सिपारे उनतीसमें, सब लिखे हैं सुकन । ए बेवरा करे लदुन्नी, वारस जो अर्स तन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -42
- ए सिपारे पेहेले की कही, जंजीर सोलमें की मिलाऊं सही । तहां लिख्या है इन अदाए, बिना देखाए समझी न जाए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -13, चौ -1
- ए सिफत न जिभ चई सगे, सोई जांणे गिडां जिन । सुख की चुआं हिन भूअ जा, सुख डिंना महें बका वतन || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -25
- ए सिरदार कदीम रूहन के, हक जात का नूर । तिन नूर को नूर सबे रूहें, ए वाहेदत एकै जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -51
- ए सुकजी के कहे वचन, नीके फिकर कर देखो मन । बोहोत फिकर की नहीं ए बात, ए समया हाथ ताली दिए जात || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -12
- ए सुकन पेहेले लिखे, बीच कतैब वेद । सो ए करत हो जाहेर, जो दिया दोऊ हादियों भेद || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -45
- ए सुकन बातून जिन को, दिल बीच सोहाए । सो सुनके तबहीं, एक दीन में आए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -39
- ए सुकन बिना समझे, केहेते होए मुसरक । ए बारीक बातें खिलवत की, अर्स की गुझ हक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -105
- ए सुकन हकें अव्वल कहे, अर्स में महंमद को । केतक जाहेर कीजियो, बाकी गुझ रखियो दिल मों || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -30
- ए सुख आनंद फरामोस को, कयो जाए ना अलेखे ए। ए सुख जागे पीछे चाहे नहीं, सुख दिए फरामोसी जे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -72
- ए सुख आनन्द अति बड़ो, रंग रस बढ़त अति जोर । भूखन हाँसी कड़े हिंडोले, ए क्यों कहूं अर्स सुख सोर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -120
- ए सुख इन केहेनीय में, क्योंए किए न आवत । देखो दिल विचार के, कछू तब पाओ लज्जत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -61
- ए सुख इन मन्दिरन में, वाही सरूपों सुध । विध विध विलास इन धाम को, कहा कहे जुबां इन बुध || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -18

- ए सुख इन सरूप को, और आसिक एही आराम । जोलों इस्क न आवहीं, तोलों इलम एही विश्राम || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -138
- ए सुख कह्यो न जावहीं, रह्यो न कछु अंतर । मोमिन रूहें जाहेर हुए, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -32
- ए सुख कायम हक के , जिन दिल एह कदम । सोई रूह जाने ए जिन लिया, या जानत है खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -54
- ए सुख की सागर सत बानी प्रगटी, सो लई साधों विचार । अधिक अमृत सुकें सींचिया, तिन देखाए दरवाजे पार || ग्रं - किरन्तन, प्र -13, चौ -3
- ए सुख केम प्रकासूं प्रगट, वेहद सुख केहेवाए। ए ब्रह्मांड सर्वे रामत, उपनी छे एनी इछाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -30
- ए सुख केरी वातडी, जीव रूदे जाणे । ए सुख साथ धणी विना, बीजो कोण माणे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -98
- ए सुख क्या जाने खेल कबूतर, कह्या हक का अर्स दिल । ए जाहेर हुए सुख जानसी, मोमिन मिलावा मिल || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -57
- ए सुख जरा याद न आवहीं, याद न एक एहेसान । हक देत याद कई विध सों, हाए हाए ऐसी लगी नींद निदान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -28
- ए सुख जानें नूरजमाल, या जाने नूर अछर । या हम रूहें जानहीं, कहे महामत हुकमें यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -66
- ए सुख देत अर्स के, कोई नाहीं निमूना इन । ए सुख जानें अरवा अर्स की, निसबत हक सों जिन || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -21
- ए सुख न आवे जुबां मिने, तो भी केहेना अर्स बन सुख । रूहें बैठत उठत सुख सनेह सो, कई गिरो को देत श्रीमुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -15
- ए सुख बातें अर्स की, अलेखे अखंड । क्यों बरनों मैं इन जुबां, बीच बैठ इन इंड || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -16
- ए सुख बिना हिसाब के, ए जानें मोमिन दिल अर्स । ए रस जिन रूहों पिया, सोई जाने दिल अरस-परस || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -41
- ए सुख बिसरे धनीय के, इन सुपन भोममें आए । सो फेर फेर याद देत हों, जो गया तुमें बिसराए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -3
- ए सुख माण्यां सुपनमां, साथ राज संघाते । घर दीठे भाजे सुपना, जोईए केणी भाते || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -89
- ए सुख या मुख कह्यो न जाए, याको अनुभवी जाने ताए । ए कुमत कहिए तिनसे कहा होए, अंधकूप में पड़िया सोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -9
- ए सुख रूह कछू जानहीं, पर केहेनी में आवत नाहें । ख्वाब वजूद की अकलें, क्यों कर आवे जुबाएं || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -64

SPJIN

- ए सुख लें अरवा अर्स की, हक हादी संग निस दिन । ए जाहेर किया इत हुकमें, वास्ते हम मोमिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -11
- ए सुख संग सरूप के, जो अन्तर अंदर इस्क । आतम अन्तस्करन विचारिए, तो कछू बोए आवे रंचक || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -38
- ए सुख सब्दातीत के, क्यों कर आवें जुबान । बाले थे बुड़ापन लग, मेरे सिर पर खड़े सुभान || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -36
- ए सुख सरूपों की मुसकनी, रंग रस गत मुख बान । ए भोम बन धनी धाम को, रेहेस लीला नित्यान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -42
- ए सुख सागर निसबत का, तिनका सुमार न आवे क्यांहें । सब हकें मपाए सागर, पर निसबत तौल कोई नाहे || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -12
- ए सुख सागर पांचमा, इस्क सागर दिल हक । पेहेले चार देखें सागर, कोई ना हक दिल माफक || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -15
- ए सुख सुपने बिलसिया, साथ पिउ संघाते । घर देखे भागे सुपना, ना देखाय ताथे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -107
- ए सुख हमारे कहां गए, ए जो खेल होत दिन रात । हक के साथ हम सब रूहें, हँस हँस करती बात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -24, चौ -13
- ए सुख हमारे कहां गए, कहां जाए करूं पुकार । तुम कोई न देखाया तुम बिना, अजूं क्यों न करो विचार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -19, चौ -5
- ए सुच कैसे होवहीं, तुम देखो याकी विध । अनेक आचार कर कर थके, पर हुआ न कोई सुध || ग्रं - किरन्तन, प्र -106, चौ -1
- ए सुच क्योंए न होवहीं, जो सौ बेर अन्हाए । ए तो पिंड नरकै भस्यो, देखो अन्तर नजर फिराए || ग्रं - किरन्तन, प्र -106, चौ -13
- ए सुध अजूं किन ना परी, बढ़त जात विवाद । ए खेल तो है एक खिन का, पर जाने सदा अनाद || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -32
- ए सुध अजूं किन ना परी, बढ़त जात विवाद । खेल तो है एक खिन का, पर ए जाने सदा अनाद || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -37
- ए सुध अर्स में रूहों को नहीं, देखी खेल में बड़ाई रूहन । तो खेल हकें देखाइया, ऊपर मेहेर करी मोमिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -85
- ए सुध किन पाई नहीं, जो लिखी माहे कागद । ए सब खेलें ख्वाब में, कोई न छोड़े हद || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -3
- ए सुध तुमको ना हुती, तो तुम थोड़ा मांग्या निपट । कोट गुना दिया तुमको, खोल देखो अंतर पट || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -140
- ए सुध दई इमा, मोहे गुझ कियो प्रकास । तो ए जाहेर होत है, गयो तिमर सब नास || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -29

SPJIN

- ए सुध न पाई काहूं ने, क्यों है कहां ठौर विध किन । खोज खोज चौदे तबक का, दिल हुआ न किन रोसन || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -15
- ए सुध नहीं अजूं मोमिनों, जो सुख दिए हक रसनाएँ । हके सुख दिए आप माफक, सो कह्या जाए न इन जुबाएँ || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -56
- ए सुध पाए पीछे, हुआ बेवरा बुजरक । ज्यों जाहेर मांहें दुनियां, त्यों बातून माहें हक || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -54
- ए सुध पिया मुझे दई, अन्दर कियो प्रकास । तो ए जाहेर होत है, जो गयो तिमर सब नास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -26
- ए सुध सघली लई करी, वाले कयो सर्व सार । बीजाने ए कोहेडा, नव लाधे बार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -61
- ए सुध सब बिध ल्याइया, रसूल हाथ फुरमान । काजी कजा भिस्त पार की, ले माएने करो पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -28
- ए सुध हुई त्रैलोक को, सबों जान्या इनों घर धाम । मोहे बैठाए बीच दुनी के, दिया ऐसा सुख आराम || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -27
- ए सुनके दौड़ी नहीं, तो हांसी है तिन पर । जैसा इस्क जिनपें, सो अब होसी जाहेर || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -55
- ए सुनियो आतम के श्रवन, सो नाहीं जो सुनिए ऊपर के मन । वेद को सार कह्यो भागवत, ए फल उपज्यो सास्त्रों के अंत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -4
- ए सुनियो खास उमत, इन मैं को काढ़ो जड़ मूल । ले साहेदी लदुन्नीयरे से, कौल ईसा इमाम रसूल || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -36
- ए सुन्या सीख्या पढ़या, कह्या विचारया विवेक । अब जो इस्क लेत है, सो भी और उड़ाए पावने एक || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -33
- ए सुपन देह पांच तत्व की, वस्तर भूखन उपले ऐसे हैं । अर्स रूह सूरत को, मुहकक पेहेनावा क्या कहे || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -25
- ए सुपनतणी जे रामत, रची ते अति अख्यात । मूलबुध बिसरी गई, जाणे सुपन नहीं साख्यात || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -2
- ए सुपना नींद सुरत का, खेले अछर आतम । हम भी आए देखने, खसम के हुकम || ग्रं - किरन्तन, प्र -107, चौ -9
- ए सूत है अति सोहना, मोल मोहोंगा होसी एह । तूं पेहेचान पिउ अपना, वार फेर जीव देह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -27, चौ -12
- ए सूरे पांऊं धरें क्यों पीछे, इनको तो लज्या लागे । देवें सीस सकल सुख खोवें, पर भाइयों को छोड़ न भागे || ग्रं - किरन्तन, प्र -19, चौ -7
- ए सोई हमारा साहेब, जो बड़को दिया बताए । ए पत्थर पानी आग है, पर हमसों छोड़्या न जाए || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -21

SPJIN

- ए सोई हुआ जो फुरमाया, आगू भी फुरमाया होए । सो जरा न छूटे फुरमाए से, तुम देखोगे सब कोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -46
- ए सोभा अचरज अदभुत, जानें अर्स अवाए। इन भोम रूह सो जान हीं, जिन मोमिन कलेजे घाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -126
- ए सोभा जुगल किसोर की, चौथा सागर सुख । जो हक तोहे हिंमत देवहीं, तो पी प्याले हो सनमुख || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -130
- ए सोभा देख सुख उपजे, हक वस्तर या भूखन । और इनकी में क्यों कहूं, जो रेहेत ऊपर इन तन || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -25
- ए सोभा न आवे वाणी माहें, पण साथ माटे कहेवाणी । ए लीला साथना रूदेमा रमाडवा, तो में सबदमां आणी || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -2
- ए सोभा सब साज के, रूहें ले बैठी अपना नूर । सो आगू हक बनी रूह नूर के, ए क्यों कर करूं मजकूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -42
- ए सोभा सब्दातीत छे घणी, अने सब्द मांहें जिभ्या आपणी । ए सुख विलसी निरदोष थाऊं, तम दयाए फेरो सुफल करी जाऊं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -22
- ए सोभा सब्दातीत है घनी, और सब्द में जुबां आपनी । ए सुख विलसूं होए निरदोस, होए फेरा सुफल दया तुम जोस || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -22
- ए सोले थंभों का बेवरा, थंभ चार चार एक रंग के । सो चारों तरफों साम सामी, बने मिसल चौसठ ए || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -18
- ए स्वाद आतम तो आवहीं, जो पलक न दीजे भंग । अरस-परस एक होवहीं, परआतम आतम संग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -37
- ए हक का दिया पाइए, कौल फैल या हाल । ए साहेब कायम देवहीं, केहेनी अर्स कमाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -72
- ए हक का बातून इस्क, तिन इस्क का बारीक बातन । बिना पाए इस्क हक के, इस्क न आवे किन || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -60
- ए हक की मैं हुकम ले, कई विध बका द्वार खोलत । याद देने अर्स अजीम में, होत सब वास्ते उमत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -22
- ए हक कौल कहे रसूलें, जो रूहों सों किए इप्तदाए । सो कुंजी दई दिल मसिएँ, क्यों औरों खोल्या जाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -70
- ए हक देखावें इस्क, तो बेर न पल एक होए। सौ साल सोहोबत कीजिए, बिना हुकम न समझे कोए || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -57
- ए हक बातन की बारीकियाँ, सो हक के दिए आवत । ना सीखे सिखाए ना सोहोबतें, हक मेहेरे पावत || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -12
- ए हक मता रूह मोमिन, इनों ताले लिखी न्यामत । सो क्यों कर दुनियां समझै, कही असल जाकी जुलमत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -93

- ए हकीकत जिनकी, अपनी खोले सोए । सो खोले हक जाहेर हुआ, तब क्यों कर रेहेवे दोए || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -67
- ए हकीकत मोमिनों, और ले न सके कोए । बेसक होए बातें करें, तो मजकूर हजूर होए || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -64
- ए हमारी अर्स न्यामते, याके हमपे सहूर । कह्या कतरा नूर का, चुआ है अंकूर || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -14
- ए हमें अव्वल कह्या, भूल जाओगे तुम । ना मानोगे फुरमान को, ना कछू रसूल हुकम || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -34
- ए हमें किया इस्क सों, कई बंध बांधे जहूर । सो जानत हैं निसबती, जो खिलवत हुई मजकूर || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -6
- ए हमें हिकमत करी, खेल देखाया झूठ रूहन । पट दे झूठ देखाइया, नैनों देखें बका वतन || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -28
- ए हमेसा रूहन में, रहे भीगे बीच इस्क । पर इस्क ए फरामोसीय का, जो हक के दिल माफक || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -62
- ए हमेसां हैं भिस्तके, नहीं बराबर कोई इनके । सुपेत मुंह रहें मस्त, खुदाए की राह पर करी है कस्त || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -10, चौ -10
- ए हवा सुन्य जुलमत कही, एही हिजाब रात अंधेर । ऊपर तले बीच दुनियां, फिरवली गिरदवाए फेर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -66
- ए हँसे छे आपण ऊपर, जो न देखे आपणमां सनेह । जुओ वीटी रही छे वरने, अधखिण न मूके एह || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -30
- ए हादी रूहें इन कदम तले, जिनको कहे मोमिन । फुरमान इसारतें रमूजें, आई कुन्जी ऊपर इन || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -69
- ए हादी हमेसगी, अर्स बका हक जात । नूर रूहें वाहेदत, इत और न कछूए समात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -21
- ए हाँसी कराई हुकमें, इस्क दिया उड़ाए। मुरदा ज्यों इस्क बिना, गावत विरहा लड़ाए || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -14
- ए हाँसी करी हक ने, फरामोसी की दे । क्यों न विचारें आपन, ए तरंग इस्क के || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -25
- ए हाँसी फरामोसीय की, होसी बड़ो विलास । जागे पीछे आनंद को, अंग न मावत हाँस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -68
- ए हुकम तिन मासूक का, जो आप उलट हुआ आसिक । सो हुकम विरहा ना सहे, बिना मासूक एक पलक || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -24
- ए हुकम सो भी मासूक का, सो क्यों जुदागी सहे । खिलवत वाहेदत सुध सुन, पल एक ना रहे || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -23

- ए हुकमें कजा करी, अव्वल से आखिर । हक अर्स मता मोमिन का, लिया सब फिरकों दावा कर || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -53
- ए हुज्जत जाहेर किन ना करी, हम रूहें अर्स से आई उतर । कौल किया हके हमसों, बोलावें बखत फजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -45
- ए हुती पिया चरने, दिन एते गोप । वचन कोई कोई सत उठे, सोए करूं क्यों लोप || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -89
- ए होए हक निसबतें, रूहों हुकम देवे हिंमत । तब फरामोसी रेहे ना सके, दे हक छाती लाड़ लज्जत || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -74
- ए होत किया सब हुकम का, ना तो इन विध क्यों होए। जाग सुपना मूल तन का, जगाए हुकम मिलावे सोए || ग्रं - सागर, प्र -3, चौ -15
- ए होत फुरमाया हक का, जो किया खुलासा ए । किए हादी ने जाहेर, याही मगज मुसाफ के || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -1
- ए होत है हम कारने, पिया परे मनोरथ मन । इन समें की मैं क्यों कहूं, साथ सबे धंन धंन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -58
- ए-साफ अगिन पूर उज्जल, दखिन नीर रंग लाल । नैरित खीर पीत रंग, दधि पछिम नीला कमाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -58
- एक अखरनो पारे लवो, कहीं ए प्रगट न थाय । श्री धाम धणी पधारिया, वाणी तो केहेवाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -124
- एक अंग अनंगे, भांत पतंगे, क्यों कहूं ए मनुहार । अति उछरंगें, होत न भंगे, सत सुख संग भरतार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -10
- एक अंग अभिलाखी देवें साखी, कहे वचन विसाल । एक कर कंठ बांहें मिल लपटाए, खेलतियां करें ख्याल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -41, चौ -1
- एक अंग छोड़ दूजे अंग को, क्यों आसिक लेने जाए । ए कदम छोड़े मासूक के, सो आसिक क्यों केहेलाए || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -28
- एक अंग जिन देख्या होए, सो पल रहे न देखे बिगर । हुई बेसकी इन सरूप की, रूह अंग न्यारी रहे क्यों कर || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -64
- एक अंग जो निरखिए, तो निकस जाए उमर । एक अंग बरनन ना होवहीं, तो होए सरूप बरनन क्यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -9
- एक अंग मासूक के कई रंग, तिन रंग रंग कई तरंग । एक लेहेर पोहोचावे उमर लग, यों छूटे न आसिक से अंग || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -38
- एक अंगमें कई खूबियां, सो एक खूबी कही न जाए। तिन खूबी में कई खूबियां, गिनती होए न ताए || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -31
- एक अंगूठी आठमी, सो सोभा लेत सब पर । सो ए एक मानिक की, जुड़ बैठी अंगूठे भर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -69

- एक अंगे रंगे संगे, तो अंतरध्यान थाय केमजी । ए सब्द मा छे आंकडी, ते करी दऊं सर्वे गमजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -9
- एक अंगे रंगे संगे, तो क्यों हुई अंतराए । इन सब्द में है आंकड़ी, बिना तारतम समझी ना जाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -13
- एक अचरज ए देख्या बड़ा, कहे बेचून बेचगून । कुरान देखें पढ़ें यों कहें, बेसबी बेनिमून || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -17
- एक अटपटी हालें तिरछी चालें, हाथ में छड़ियां लाल । एक नेत्र अनियाले प्रेम रसालें, रंग लिए नूरजमाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -41, चौ -10
- एक अनेक सब इनमें, इत सांच झूठ विस्तार । अछर ब्रहम क्यों पावहीं, भई आड़ी निराकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -107, चौ -6
- एक अनेक हिसाब में, और निराकार निरगन । न्यारा इस्क हिसाब थे, जो कछू ना देखे तुम बिन || ग्रं - सनंध, प्र -9, चौ -4
- एक अनेक हिसाब में, और निराकार निरगुन । न्यारा इस्क हिसाब थे, जो कछू ना देखे तुम बिन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -4
- एक अर्थ न कहें सीधा, ए जाहेर हिंदुस्तान । अर्थ को डालने उलटा, जाए पढ़ें छल बान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -17
- एक अर्थ न कहे सीधा, ए जाहेर हिंदुस्तान । अर्थ को डालने उलटा, जाए पढ़े छल बान || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -19
- एक अर्ध लवो पोहोंचे नहीं, मारा घर तणे दरबार । जोगमाया लगे वचन न आवे, ते पार ने वली पार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -129
- एक अलंग सारी हिंडोले, सो सिफत न कही जाए । अधिकारी इन सुख के, सो काहे को रूह बिलखाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -26
- एक आइयां सघन में, धाए चढ़ी बन में, खेल करें अपार । एक झूलें डारी चढ़ के, और पकड़ के, क्यों कहूं खेल सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -15
- एक आवें दौड़ कर, गिरें उपरा ऊपर, किन विध कहूं ए रंग । एक लरें पानी सें, जुत्थ जुत्थ सें, देखो इनको जंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -21
- एक आवे नाचतियां भमरी फिरतियां, दे भूखन पांउ पड़ताल । एक गावती आवें तान मिलावें, कोई स्वर पूरे तिन नाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -41, चौ -3
- एक आवें लटकतियां बोलें मीठी बतियां, चलें चमकती चाल । एक आवें मलपतियां रंग रस रतियां, रहें आठों जाम खुसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -41, चौ -2
- एक आह स्वांस क्यों ना उड़े, सो भी हुआ हाथ धनी । बात कही सो भी एक है, जो कहूं इन थें कोट गुनी || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -53
- एक इन वचन का बसबसा, तबका रेहेता था मेरे मन । लखमीजी का गुजरान, होत है विध किन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -87

SPJIN

- एक इनसे बड़े कहे, ऐसे जाएँ जाकी नाक में । तो भी उने सुध ना पड़े, अंदर फिरके मोह निकसें || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -53
- एक इलम ले दौड़हीं, और ले दौड़े ग्यान । तित बुध न पोहोंचे सब्द, ए भी थके इन मकान || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -5
- एक इस्क दूजा इलम, ए दोऊ मोमिनों हक न्यामत । इस्क गरक वाहेदत में, इलमें हक अर्स लज्जत || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -77
- एक इस्क दूजी साहेबी, रूहों देखलावना जरूर । तो हमेसा अर्स में, होता एह मजकूर || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -31
- एक इस्क धनी बिना, और कछू जानत नाहें । खेलें बोलें गाएं लरे, सो सब इस्क माहे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -10
- एक ईमान दूजा इस्क, ए पर मोमिन बाजू दोए । पट खोल पोहोचावे लदुन्नी, इन तीनों में दुनी पे न कोए || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -18
- एक उरझन वैराट की, दूजी वेद की उरझन । ए नेक कही मैं तुमको, पर ए छल है अति घन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -19
- एक उरझन वैराट की, दूजी वेद की उरझन । ए नेक कही मैं तुमको, पर ए छल है अति घन || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -21
- एक ए भी रसूलें कहया, करी आगे की सरत । साथ आवसी इमाम के, रूह मोमिन बड़ी मत || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -26
- एक एक चौकी देखिए, रूहें बैठत बारे हजार । बीच बीच सिंघासन हक का, ए सोभा अति अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -35
- एक एक जाहेर सब में, एक एक में चार बातन । इन बिध रूहें मुतलक, असल अर्स के तन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -31
- एक एक दरखत में कई रंग, यों कई बगीचे विवेक । कई बगीचे चेहेबच्चे, जानों जो देखों सोई विसेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -50
- एक एक नंग नाम लेत हों, रंग रंग में रंग अनेक । एक इजार बंध में, क्यों कहूं रंग नंग विवेक || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -76
- एक एक नंगमें कई रंग, रंग रंग में तरंग अपार । तरंग तरंग किरने कई, हर किरने रंग न सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -58
- एक एक पेड़ पर कई भोमें, भोम भोम कई जुगत । पसु पंखी एक बिरिख पर, कई जुगतें बास बसत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -21
- एक एक बाजू चबूतरे के, तिनके हिस्से चार । दो हिस्से बूंट दो दिवालों, और दो हिस्सों बीच द्वार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -14
- एक एक मन्दिर में आएके, फेर देखिए गिरदवाए । इन विध रूहें देखिए, उलट अंग न समाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -71

- एक एक मोमिन के, अलेखे सेवक । बड़ी साहेबी बका मिने, बंदे तिन माफक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -55
- एक एक रंग का जवेर, उसी जवेर में नकस । जुदे जुदे कई कटाव, एक दूजे पे सरस || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -81
- एक एक लिए आलिंघण, एक एक दिए चुमण । बांहोंडी वाली जीवन, खेवना भाजे मली || ग्रं - रास, प्र -34, चौ -3
- एक एक सीढ़ियों पर, तरफ दूसरी पेड़ दिवाल । तरफ तीसरी पाल पर, चौथी तरफ मोहोल ताल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -22
- एक औरों को उलटावहीं, कहा बिध होसी तिन । कातना उन पीछा पड़या, सामी धके दिए औरन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -5
- एक कण्ठ हाथ छोड़ें, आगू दौड़ें, कहे आइयो मुझ लार । एक चढ़ें गोखें, झांकत झरोखें, देखत बन विस्तार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -8
- एक कया वेद कतेब ने, जो जदा रया सबन । तिनको सारों ढूंढ़िया, सो एक न पाया किन || ग्रं - खुलासा, प्र -6, चौ -2
- एक करी किताबें मनसूख, वाही नाम की करी हक । तिन उमतें सब रानी गई, अब कहो क्यों भागे सक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -13
- एक कह्या अर्स-अजीम, दूजा सदरतुल-मुंतहा । तीसरा कह्या मलकूत, जो अर्स फरिस्तों का || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -21
- एक कह्या न जावहीं, दो भी कहिए क्यों कर । भेले जुदे जुदे भेले, माएने मुसाफ इन पर || ग्रं - सनंध, प्र -1, चौ -4
- एक काते माहें चुपकतियां, सो ताने सहे औरन । तांत चढ़ावे तलबें, नजर ना चूके खिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -8
- एक किया इसकी नकल, दूजा पाक कह्या असल । आया इन तरफ बहार, जिनों पकड़्या पाक करार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -43
- एक कुरान का माजजा, और नबीकी नबुवत । अव्वल फुरमाया सब हुआ, तब होए साबित || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -87
- एक कुरान का माजजा, दूजी नबी की नबुवत । एक दीन जब होएसी, कया तब होसी साबित || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -32
- एक कौल में कहे तीन दिन, सो भी बीच साइत इन । इन रोज रख कर ज्यारत, पोहोंचे अपने वतन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -21
- एक खस-खस के दाने मिने, देखाए चौदे तबक । तो कौन बात का अचरज, ऐसे देखावें हक || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -21
- एक खसखस के दाने जेता, नंग रोसन अंबर भराए । क्यों कहूं नंग मुरलीय के, ए जुबां इत क्यों पोहोंचाए || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -73

- एक खाई ग्रहतें काढ़के, ले डारें दूजी खाड़ । ज़ब्हे करें जोरावरी, कहें हमें होत सवाब || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -9
- एक खासी उमत रूहन की, सो गिनती बारे हजार । ए आरब तो अनगिनती, नहीं करोरों पार || ग्रं - खुलासा, प्र -14, चौ -11
- एक खिण में वहेच्यू मारा श्री राज, ए गण जेटला कीधां तेहेना भाग । तेहेवा एक भागना में ए गुण कया, ए सर्वे मारा जीवमां ग्रया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -46
- एक खिणमां कई वार आवे जाय, त्यारे कात्यू वीछयूँ कपासिया थाय । ते माटे सुणजे रे जीव सही, मोटी मत में तुझने कही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -11
- एक खिन न पाइए सिर साटें, कई मोहोरों पदमों लाख करोड़ । पल एक जाए इन समें की, कछू न आवे इन की जोड़ || ग्रं - किरन्तन, प्र -78, चौ -3
- एक खुदा हक महंमद, अर्स बका हौज जोए । उतरी अरवाहें अर्स की, चीन्हो गिरो नाजी सोए || ग्रं - खुलासा, प्र -6, चौ -13
- एक खुदा हक महंमद, हर जातें पूजें धर नाऊँ । सो दुनियां में या बिना, कोई नहीं कित काऊँ || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -20
- एक खुदी थी दुनी में, दूजी सुभे सक । करते फैल तरफ हवा के, पीठ दिए तरफ हक || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -71
- एक खूबी और खुसबोए, याकी किन जुबां कहूं मैं दोए । एक सुगंध दूजा नूर, रहया सब ठौरों भर पूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -37
- एक खूबी चाहें साहेब की, और न कछुए चाहें । उनकी एही बंदगी, जो सांचे आरिफ अरवाहे || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -21
- एक खेल छोड़ें, दूजे पर दौड़ें, अंग न माए उछरंग । एक खिन में अर्स परे, खेल जाए करें, इन विध अंग उमंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -23
- एक खेल दूजा देखहीं, थिर चर चारों खान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -24
- एक गली घर में दे परिकरमें, उमंग अंग न माए । एक का कपड्न धाए के पकड्या, बैंच चली चित्त चाहे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -40, चौ -2
- एक गादी दोए चाकले, पीछल वाही जिनस । चौखूने कटाव कई पसमी, जो देखों सोई सरस || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -116
- एक गिरे पगथी बिना, वाको दूजी पकरे कर । सो खाए दोनों गड़थले, ए हांसी है या पर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -7
- एक गिरो आई मूलथें कही, सो मौजूद रूहें दरगाह की सही । दूजी गिरो कही खिलकत और, सो मलायक मुतकी नूर ठौर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -25
- एक गिरो इप्तदाए से, मौजूद से ले आए। दूजी गिरो खिलकत और से, इनो वास्ते करी पैदाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -108

- एक गिरो रूहें अर्स से, हकमें आई जो इत । जिन ऊपर रसूल, ल्याए किताबत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -31
- एक घूमे घूमरडे कोइक दौडे, वचन गाए रसाल । एक लिए ताली दिए वाली, साम सामी पडताल || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -15
- एक घोर अंधेरी आंखां नहीं, और ठौर नहीं बध मन । विखम जल ऐसे मिने, पिउ आए मुझ कारन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -10
- एक चढे वने इछा गमे, हींचे हिचोले डाल । एक कोणियां रमे गाए गमे, प्रेमतणी दिए गाल || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -16
- एक चलाए पांउसों, एक उड़ाए पर । पेटें हुकम चलावहीं, एक खड़े रखे जड़ कर || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -12
- एक चित्रामन दिवाले बन, चढ़िए तिन पर धाए । एक चुटकी लेके भागी ताली देके, कहे दौड़ मिलियो आए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -40, चौ -1
- एक छोटी बड़ी बूंद पानी की, सो भी फरिस्ता सब ल्यावत । या जड़ों दरखतों फरिस्ते, या पर पेट पाउं चलत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -36
- एक छोटे नख की रोसनी, ऐसा तिन का नूर । आसमान जिमी के बीच में, जिमी जरे जरा भई सब सूर || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -14
- एक जबराईल फरिस्ता, और महंमद पैगंमर । राह देखाई मोमिनों, अर्स चढ़ उतर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -14
- एक जरा इन जिमी का, जोत न माए आसमान । जोत जवेरों पहाड़ों की, इत कहा कहे जुबान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -24, चौ -6
- एक जरा इन जिमी का, ताके नूर आगे सूर कोट । सो सूर न आवे नजरों, इन जिमी जरे की ओट || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -18
- एक जरा इन जिमी का, ताको नूर न माए आकास । तिन जिमी के जवेर को, होसी कौन प्रकास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -35
- एक जरा कह्या जुबां माफक, इत अलेखे विवेक । रूहें अर्स का बल अर्स के, जो हक जात है एक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -44
- एक जरा कायम देखिए, उड़े चौदे तबक वजूद । सिफत अर्स की क्यों करे, ए जुबां जो नाबूद || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -63
- एक जरा किनहूं न पाइया, इत अनेक जो धाए । नाम ब्रह्मांड के धनी कहे, दूजे कहा करूं सुनाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -27
- एक जरा कोई वाहेदत का, ना सके जुदा होए । तोलों न चीन्हे कोई हक की, इस्क साहेबी दोए || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -35
- एक जरा जुलम न रेहेवहीं, सुबुध सबों में धरम । बरत्यो सुख संसार में, विकार काटे सब करम || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -20

- एक जरा जो इन जिमी का, सो सब इस्क की सूरत । आसमान जिमी जड़ चेतन, पेहेचान इस्क दोऊ इत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -19
- एक जरा तिन जिमी का, ताके तेज आगे सुर कोट । सो सूरज दृष्टं न आवहीं, इन जिमी जरे की ओट || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -18
- एक जरे जिमी की रोसनी, सो ढांपे कई कोट सूर । तो जिमी पहाड़ मोहोलन को, सब कैसा होसी नूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -23
- एक जवेर इन जिमी पर, बीच अर्स एक नंग । बोहोत नाम जवेरों के, जुदे नाम जुदे रंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -3
- एक जाए गड़ें रेती, निकस न सकती, देवें एक दूजी को ताल । एक काढ़े घसीटें, और ऊपर लेटें, कहा कहूं इनकी चाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -18
- एक जाणे जसोदा होय, कान्हजी माखण मांगे रोय । उहां दूध चूल्हे उभराय, मातानूं मन कलपाय || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -9
- एक जात बाघन की, कहूं केते रंग तिन माहें । इन रंग सुमार ना आवहीं, क्यों होवे हिसाब जुबांए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -86
- एक जानवर अर्स का, मैं तौल्या तिन का बल । क्यों कहूं तफावत, ओ फना ए नेहेचल || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -11
- एक जामा हजरत ईसे का, मिल दोए भए तिन । मुद्दतें एक जुदा हुआ, साल सतानवें पोहोंचे इन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -9, चौ -8
- एक जाहेर आम खास ज्यों, और अंदर खिलवत । ए सोई जाने हक अर्स की, जाए खुली मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -32
- एक जाहेर किए बसरिएँ, दूजे रखे मलकी पर । तीसरे सूरत हकी पे, सो गुझ खोल करसी फजर || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -5
- एक जिमी जरे की रोसनी, मावत नहीं अकास । तिन जिमी के जवेर को, क्यों कर कहूं प्रकास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -26
- एक जिमी सिफत जो देखिए, तो जाए निकस नूर उमर । अपार जिमी इंतहाए सिफत, ए आवत नहीं क्योंए कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -29
- एक जीवने आहार देवरावे, तेमां अनेक जीव संघारे । एणी पेरे दान करे रे दयासों, ए धरम ते कां नव तारे || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -20
- एक जुत्थ सहेली, मिल बैठी भेली, सुख केहेत न आवे पार । कोई छज्जे ऊपर, सखियां मिलकर, कहें पिउ को विहार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -4
- एक जोत जुगल की, और बीच बैठे सिंघासन । बल बल जाऊं मुखारबिंद की, और बलि बलि जाऊं चरन || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -119
- एक जोत सागर सब हो रहया, और ऊपर तले सब जोत । कई सूर उड़ें आगू कंकरी, तिन भोम की जोत उहोत || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -35

- एक झगड़ा लगावे और को, सामी तकले डाले वल । ए बातें होसी वतन में, जब उतर जासी अमल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -4
- एक झलकार मुख केहेत हों, मांहें कई सलूकी सुखदाए । सो गुन गरभित इन जुबां, रंग रोसन क्यों कहे जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -42
- एक टापू बन्यो बीच जल के, मोहोल गुरज तिन पर । क्योहरियां ताल किनार पर, फिरती पाल बराबर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -4
- एक टीपू ते कोय न पामियो, एहेना रस तणी । नाथ चौद भवनना, जे ब्रह्मांडना धणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -85
- एक टीपू ते बाहेर न निकल्यं, साथ मांहें समाणो । जेनो हतो तेणे माणियो, माहोमांहें गंठाणो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -74
- एक ठेक देती, बनसें रेती, कहा कहूं इनको हाल । एक आइयां दौड़ रेती, इतथे जेती, खेलें एक दूजीके नाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -17
- एक डार जरे की रोसनी, भराए रही आसमान । तो कौन निमूना इनका, जो दीजिए इनके मान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -6
- एक तकरार हूद के घर, दूजे तकरार नूह किस्ती पर । तीसरा तकरार ए जो फजर, जित रूहें फरिस्ते पैगंमर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -25
- एक तकला भाने ताओ में, फोकट फेरा खाए । झगड़ा लगावे आप में, हिरदे रस न जुबाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -2
- एक तकले समारे और के, लर लर कतावे। कहे अपनायत जान के, समया बतावे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -3
- एक तन मोमिन अर्स में, दूजा तन सुपन । लैल फरामोसी बीच में, भूल गए अर्स तन । || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -23
- एक तन हमारा लाहूत में, नासूत में और तन । असल तन रूहें अर्स बीच में, तन नासूत में आया इजन || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -32
- एक तरफ अर्स हौज के, तरफ दूजी हौज जोए । और दोए तरफ दोए चरनियां, ज्यों जड़ित जगमगे सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -47
- एक तरफ आगू द्वारने, तरफ दूजी चौकी हिंडोले । फूल बाग तरफ तीसरी, चौथी चबूतरे चेहेबच्चे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -39
- एक तरफ एक सीढ़ियों, सामी दूजी के मुकाबिल । इसी भांत तरफ दूसरी, सोभा कहा कहे इन अकल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -21
- एक तरफ देखत एक रंग, तरफ दूजी दूजा रंग । यों दसो दिस रंग देखत, तिन रंग रंग कई तरंग || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -29
- एक तिनका हमारे अर्स का, उड़ावे चौदे तबक । तो क्यों न उड़े रूह अक्से, बल इलम लिए हक || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -19

- एक तीर खेंच के छोड़िए, तिन बेधाए कई पात । सो पात सब एक चोटें, पाव पल में बेधात || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -29
- एक तीर ताणी मूकिए, तेणे पत्र कई वेधाय । ते पत्र सर्वे वेधतां, वार पाओ पल न थाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -116
- एक तो कहे अल्ला कलाम, जाहेरी माएनों का नाहीं काम । दूजे तो इसारत कही, इत हुज्जत काहू की ना रही || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -2, चौ -1
- एक तो गुझ जाहेर किया, और गैयां न बोलावते सोए । ऐसी एक भी कोई न करे, सो आपन करी दोए || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -20
- एक तोफान हूद के, और किस्ती बयान । प्रले दोऊ जाहेर लिखे, मिने रसूल फुरमान || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -26
- एक तौरेत और अंजील, तीसरी जो जंबूर । सो ए किया सब जाहेर, छिपा था जो नूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -10
- एक थंभ कई चित्रामन, हर चित्रामन कई नकस । नकस नकस कई पांखड़ी, जो देखों सोई सरस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -32
- एक थंभ की एह विध कही, ऐसे कई थंभ दिवाले द्वार । फेर देखों एक भोम को, तो अतंत बड़ो विस्तार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -51
- एक दाणलीला वेख नार, मही माथे मटुकी भार । वालो करे तेतूं हांस, लिए माखण ढोले छास || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -24
- एक दाना पानी घास सबको, मेकाईल बुध बल । ठौर बैठा आप देवहीं, कर पसारा अकल || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -18
- एक दिन कह्या रब का, दुनी के साल हजार । इत थें आगे लैलत कदर, ए जो फजर तीसरा तकरार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -20
- एक दिन गौ चारने, पिउ पोहोंचे वृन्दावन । गोवाल गौ सब ले वले, पीछे जोग माया उतपन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -62
- एक दिन गौ चारवा, वालो पोहोंता ते वृंदावन । गोवाला गौ लई वल्या, पछे जोगमाया उतपन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -51
- एक दिन रात मांहें साठ घडी, एक घडी मांहें साठ पाणीवल । एक पाणीवल माहें साठ पल थाय, तमे एवडा रूसणा कीधां सवल || ग्रं - खटरुती, प्र -7, चौ -9
- एक दीन तब होवहीं, जब साफ होवें सब दिल । ए हक बिना न होवहीं, जो चौदे तबक आवें मिल || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -24
- एक दीन होसी याही से, द्वार खोले हकीकत । दिन देख सिपारे तीसरे, डूबी खुदी रात जुलमत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -44
- एक दूजी आपुस में, रहे ना रूह चिन्हार । ना चीन्हो बड़ी रूह को, ना कछू परवरदिगार || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -19

- एक दूजी कहे रूहन को, तुम हूजो खबरदार । खेल देखावें फरामोस का, जिन भूलो परवरदिगार || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -43
- एक दूजी को अंक भर, लग रहियां अंगों अंग । दिल में खेल देखन का, है सबों अंगों उछरंग || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -12
- एक दूजी को ठेलें तीसरी हड़सेले, यों पड़ियां तीनों गिर । कई और आए गिरें उपरा ऊपरें, उठ न सकें क्यों ए कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -40, चौ -5
- एक दूजी को मनसूख, करे आयत आयत को । तिस वास्ते लेऊ चुन चुन, जो सिरे रखी सब मों || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -3
- एक दूजे के गुमास्ते, वजीर वकील दिवान । एक फरिस्ता सबका खावंद, यों खेल बन्या सब जहान || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -24
- एक दूजे के चित्त पर, चाल चले माहों मांहें । पात्र प्रेम प्रीत के, हाँस विनोद बिना कछू नाहे || ग्रं - किरन्तन, प्र -93, चौ -18
- एक देऊं निमूना दुनी का, जो पैदा दुनी में होत । धागा होत है रूई का, और जवेरों जोत || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -2
- एक देखी जात फीलन की, तिन फीलों जात अनेक । कई रंगो कई रूप हैं, सो कहां लों कहूं विवेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -54
- एक देखी विध संसार की, और विध कही अर्स । सांच आगे झूठ कछू नहीं, कर देखो दिल दुरूस्त || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -72
- एक देखें धनी रूप अदभुत सख्प, कहा कहूं नूर जमाल । एक पिउ सों बातें करें अख्यातें, रंग रस भरियां रसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -41, चौ -8
- एक देखो अचरज, चाल चले संसार । जाहेर है ए उलटा, जो देखिए दिल विचार || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -25
- एक देखो ए अचंभा, चाल चले संसार । जाहेर है ए उलटा, जो देखिए कर विचार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -22
- एक देख्या मोहोल मानिक का, ताए बड़े द्वार बारे हजार । हिसाब न छोटे द्वारों का, सोभा सिफत न आवे पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -2
- एक देख्या हार हीरन का, कई कोट सूरज उजास । इन उजास तेज बड़ा फरक, ए सुख सीतल जोत मिठास || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -16
- एक दोरी रंग नंग दस की, ऐसी मूल मुकट दोरी चार । गिरदवाए निलवट पर, सुख क्यों कहूं सोभा अपार || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -165
- एक दौड़ियां जाए दई हाँसिएं गिराए, हुओ ढेर उपरा ऊपर । एक खेलते हारी जाए पड़ी न्यारी, खेल होत इन पर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -40, चौ -6
- एक धरे ते गोवरधन, हरख उपजावे मन । इंद्रनो कीधो मान भंग, एम रमे ते जुजवे रंग || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -21

SPJIN

- एक नई कोई आए मिले, सो कहावे आप अजान । बड़ी होए दूजी मिने, समझावत सुजान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -11
- एक नई कोई आवत, सो कहावत आप अबूझ । दूजी ताए समझावने, ले बैठत सब सूझ || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -15
- एक नकस बरनन ना कर सकों, ए अति बड़ो बयान । ए मोहोल पहाड़ अर्स के, कहा कहे एह जुबान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -39
- एक नख के तेज सों, ढांपत कई कोट सूर । जो कहूं कोटान कोटक, तो न आवे एक नख के नूर || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -109
- एक नखतणी जो जोत तमे जुओ, तेमां कई ने सूरज ढंपाए । केम करी सोभा वरणवू रे सखियो, मारो सब्द न पोहोंचे त्यांहे || ग्रं - रास, प्र -7, चौ -4
- एक नंग एक रंग का, एक रंगे नंग अनेक । इन विध के अर्स भूखन, सो कहां लो कहूं विवेक || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -105
- एक नंग के कई रंग, सोभे झन बाजे झांझर । पांच नंग रंग एक के, अति मीठी बोले घूघर || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -93
- एक नंग बारीक इत देखिए, ताकी जोत न माए आसमान । अपार जरे अर्स की, ना आवे माहे जुबान || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -106
- एक नजर मोमिन की, हक सुख दिया चाहें दोए । रूहें अर्स सुख लेवें खेल में, और खेल सुख अर्स में होए || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -47
- एक नवी कोई आवी मले, ते कहावे आप अजाण । कोई मांहें मोटी थई, समझावे सुजाण || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -11, चौ -11
- एक नाचे गावें स्वर पूरें, एक बोलत बानी रसाल । नए नए रूप रंग ल्यावहीं, किन विध कहूं इन हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -14
- एक निमाज की हजार, एही करसी कबूल । कई कही महंमद आखिर सिफत, सो भी इन बीच होसी रसूल || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -11
- एक निरत करे फेरी फरे, छेक वाले तेणे ताय । एक दिए ठेक वली वसेक, रेत उडाडे पाय || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -14
- एक निस्वासे जीव निसरे, पण दुख खमूं छू ते जुए विचार । ते विनती करूं रे वाला, सुणो इंद्रावतीना आधार || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -11
- एक नुकता इलम हक दिल से, आया मेरे दिल मांहें । इन नूर नुकते की सिफत, केहे न सके कोई क्यांह || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -41
- एक नुकते इलम अपने, दुनी बका कराई मुझसे । तो गंज अंबार जो सागर, कैसे होसी हक दिल में || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -44
- एक नूर और नूरतजल्ला, कहे ठौर दोए। ए नाही जुदे वाहेदत से, हैं बका बीच सोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -31

SPJIN

- एक नूर मन्दिर से आवत, नूर निकसे परली हार । नूर हँसें खेलें गिरें नूर में, नूर झलकारों झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -29
- एक नेहेर से कई नेहेरें, जदी जदी फिरत । कई जुदी जुदी नेहेरें होए के, कई एक में अनेक मिलत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -23, चौ -13
- एक नैणे रे अंजन करियं, अने बीजो रह्यं रे एम । वेणनो स्वर सांभल्या पछी, राजसियो रहे रे केम || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -20
- एक पंखी जिमी पर, एक बसत इन मोहोलन । एक बसत बल परन के, आकास में आसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -56
- एक पड़त झरोखे जल पर, और तरफ सब बन । ऊपर भोम धाम देखिए, दसों दिसा नूर रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -45
- एक पड़त बिना पावड़ी, वाको दूजी पकड़े कर । सो खाए दोनों गड़थले, ए हांसी है इन पर || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -11
- एक पड़ी जिमी जान के, वाको दूजी उठावन जाए । उलट पड़ी सो उलटी, ए हांसी यों हँसाए || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -12
- एक पड़ी जिमी जान के, वाको दूजी उठावन जात । उलट पड़ी सो उलटी, ए खेल है या भांत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -8
- एक पडे एक लडथडे, एक आंसूडा ढाले अपार । केम चाले काया बापडी, मारा जीवन विना आधार || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -26
- एक पडे पगथी थकी, तेहेनों बीजी ते साहे. हाथ । खाए ते बंने गडथला, कांई रामत ए अख्यात || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -11, चौ -7
- एक पत्रनी वरणव सोभा, आणी जिभ्याए कही न जायजी । कै कोट ससि जो सूर कहूं, तो एक पत्र हेठे ढंकाय जी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -16
- एक पल जात पिउ दीदार बिना, बड़ा जो अचरज ए। ए जो मैं है हक की, सो क्यों खड़ी बिछोहा ले || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -25
- एक पल थे पैदा फना, कोट ब्रह्मांड नूर के। सो नूर नूरजमाल के, मुजरे आवत इत ए || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -5
- एक पल माहे रे सखियो, कलप अनेक वितीत । ए दुख मारो जीव जाणे, सखी प्रेमतणी ए रीत || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -38
- एक पात कई बेल कांगरी, बेल फूल पात कटाव । तिन बेलों पात कई बेलें, ऐसे बारीक अति जड़ाव || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -105
- एक पात कांगरी नूर देखिए, नूर देखत उमर जाए । तो सोभा देखत नूर कांगरी, रूहें नूर क्योंए न तृपिताए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -78
- एक पात न गिरे अर्स बन का, ना खिरे पंखी का पर। अपार जिमी की रूह कोई, कहूं जाए न सके क्योंए कर || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -25

SPJIN

- एक पात न गिरे बन का, ना खिरे पंखी का पर। एक जरा जाया न होवहीं, ए अर्स जिमी यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -54
- एक पात ना खिरे बन का, ना गिरे पंखी का पर। नया पुराना न होवहीं, जंगल या जानवर || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -42
- एक पात बिरिख को ना गिरे, ना खिरे पंखी का पर । ना होए नया कछू अर्स में, जंगल या जानवर || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -9
- एक पातसाही अर्स की, और वाहेदत का इस्क । सो देखलावने रूहन को, पेहेले दिल में लिया हक || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -17
- एक पातसाही अर्स की, और वाहेदत का इस्क । सो देखलावने रूहों को, पेहेले दिल में लिया हक || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -43
- एक पिउ मद मतियां, आवे ठेकतियां, कंठ खलकते हार । एक जुदी जुदी आवें, स्वांत देखलावें, करें नूर रोसन झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -6
- एक पुरीमां आपण बेठा, मूने कीधी परदेस । विरह तणी जे वातो मारा वाला, हूं तमने आवी कहेस || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -19
- एक पूरे स्वर सारे हुनर, छेक बाले तिन ताल । एक पिउसों हँस हँस बातें करे रंग रस, करें होए निहाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -41, चौ -7
- एक पेड़ दरखत का, कई दरखत तिन पर । तिन पर कई मंदिर रचे, कई रेहेत अंदर जानवर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -52
- एक पेड़ लम्बी डारियां, तिन डारों पर पेड़ अपार । पेड़ डारों कई भोम रची, जुबां कहा कहे ए विस्तार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -48
- एक पेहेर दूजा उतारना, तब तो घट बढ़ होए । जब जैसा जित चित्त चाहे, तब तित तैसा बनत सोए || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -7
- एक पैंडे चले दुनियां, रसूल सामी बल । नवी नजर देखे चलें, दुनियां चले अटकल || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -30
- एक पैदा कर वजूद खेलावहीं, दूजा पाले तिन । तीसरा किन किन लेवहीं, चौथा उड़ावे सबन || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -10
- एक पैदा हुए एक होत हैं, एक होने की उमेद । एक गए जात जाएंगे, इन विध को छल भेद || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -23
- एक पोहोंची एक दुगद्गी, और सात सात दूजी को । सो सातों जिनस जुदी जुदी, आवत ना अकल मों || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -67
- एक पोहोर आनंद भरी, कांई रंग भर रमिया एह । साथ सकलमां वालेजी ए, रमतां कीधां सनेह || ग्रं - रास, प्र -29, चौ -10
- एक पौरी चौरे नूर से, आइए और चौरे नूर किनार । दोऊ चौरे नूर गली पर, नूर बनी पारी चार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -47

- एक प्रेम तरंगें, मद मछरंगें, बांहोंड़ी कण्ठ आधार । एक अंग मकरंदे, काढ़त निकंदें, आवत नाही पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -11
- एक फरे फेरी कर धरी, बांहोंडी कंठ आधार । एक फूदडी फरे रामत करे, रंग थाय रसाल || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -17
- एक फिरका नाजी कया, जित लिखी हक हिदायत । एक दीन किया चाहे, एही मोमिन वाहेदत || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -77
- एक फेरे चरखा उतावला, दिल बांध तांत के साथ । रातों भी करे उजागरा, सूत होवे तिनके हाथ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -16
- एक बका नूर-मकान, आगू नूरतजल्ला । रह्या जबराईल हद नूर की, आणू पोहोंचे रसूल अल्ला || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -10
- एक बका सब कोई कहे, पर कोई कहे न बका ठौर। सब कहें हमों न पाइया, कर कर थके दौर || ग्रं - खुलासा, प्र -6, चौ -3
- एक बंद बाहेर न निकस्या, साथ मिने समाना । जिन का था तिन बिलसिया, मिनो मिने बटाना || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -89
- एक बात ब्रह्म सृष्ट की, दोए दिल में नाहें । सोई करें धनीसों जाहेर, जैसी होए दिल माहें || ग्रं - किरन्तन, प्र -105, चौ -8
- एक बाल टूटे दुख पावते, तिन जारी ले खोरने हाथ । मनुऐं उतारे या बिध, मेरे सोई संगी साथ || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -3
- एक बाल दूजा किसोर, तीसरा बुह्मपन । सुंदरता सुग्यान की, बढ़त जात अति घन || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -72
- एक बाल न खिरे पसुअन का, न गिरे पंखी का पर । कोई मोहोल न कबूं पुराना, दिन दिन खूबतर || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -47
- एक बाल ना गिरे पसुअन का, ना खिरे पंखी का पर। पात पुराना ना होवहीं, अर्स जंगल या जानवर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -31
- एक बांहें सों बांहें, संग मिलाए, आवें लिए अहंकार । एक दूजी के साथे, लिए कण्ठ बाथें, भूखन उद्दोतकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -7
- एक बीजीने करावियां, सिणगार ते सर्वे एम । चितडू दईने में जोइयूं, कांई साथनो अतंत प्रेम || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -21
- एक बीजीने छांटे नांचे, उमंग अंग न माय । अनेक विधना बाजा रस बाजे, गृह गृह उछव थाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -51, चौ -2
- एक बूंद आया हक दिल से, तिन कायम किए थिर चर । इन बूंद की सिफत देखियो, ऐसे हक दिल में कई सागर || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -45
- एक बूंद ने बका किए, तो होसी सागरों कैसा बल । तो काहूं न पाई तरफ किने, कई चौदे तबक गए चल || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -46

- एक बृज दूजो रास को, दूजे दोए इन वैराट । चारों थंभों चौरी रची, रच्यो सो नेहेचल ठाट || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -8
- एक बेखज विप्रनो, बीजो बेख चंडाल । छवे छेडे छोत लागे, संग बोले तत्काल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -19
- एक बेर एक मांडवे, मौर बांधियो सीस । व्याही बारे हजार को, और हजार चौबीस || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -9
- एक बेर गिरो ह्रद घर, बेर दजी किस्ती पर । तीसरी बेर मास हजार लों, सदी अग्यारहीं हिसाब फजर || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -24
- एक बेर भूले आदमी, ताए और बेर आवे बुध । ए चोटां सहियां सिर एतियां, तो भी ना हुई तुमें सुध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -14
- एक बेसर ऊपर लालज दीसे, ते लालक नो न लाभे पार । जेटला माहें मीट फरी वले, एटले दीसे झलकार || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -56
- एक बैठत पलंगें, पिउजीके संगें, खेलत प्रेम खुमार । आप अपने अंगें, करत हैं जंगें, कोई न देवे हार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -9
- एक बैन रसालें गावें गुन लालें, सोभित मद मछराल । एक बाजे बजावें मिलकर गावें, सुन्दर कंठ रसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -41, चौ -6
- एक भगवानजी बैकुंठ को नाथ, महादेवजी भी इनके साथ । सुकजी और सनकादिक दोए, कबीर भी इत पोहोंच्या सोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -14
- एक भांत बांदर की, ठेक दे चढ़ती, करती रंग रसाल । एक दौड़ें पातों पर, करें चढ़ उतर, खेलत माहें खुसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -16
- एक भी कहे ना बने, दो भी कहे न जाए। ना भेले ना जुदे कहे, अब फरमान क्या फुरमाए || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -52
- एक भेख जो विप्र का, दूजा भेख चंडाल । जाके छुए छूत लागे, ताके संग कौन हवाल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -15
- एक भेख जो विप्र का, दूजा भेख चंडाल । जाके छुए छूत लागे, ताके संग कौन हवाल || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -18
- एक मक्के का काला पत्थर, कुरान और खुदाए का घर । और ठौर कहया इभराम, और यार महंमद आराम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -74
- एक मध्य चौक भस्या नूर का, और फिरते मोहोल नूर तिन । तिन गिरद नूर हवेलियां, ए नूर गिनती करूं जुबां किन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -71
- एक माहें धाम निरखें चित्राम, देखतियां थंभ दिवाल । एक निरखें नंग नूर भूखन जहूर, माहें देखें अपने मिसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -41, चौ -4
- एक मिल कर दौड़े बांध के होड़ें, लंबी जहां पड़साल । एक पिउ को देखें सुख विसेखे, कहें आनन्द कमाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -41, चौ -5

- एक मींडे थाय परार्ध गणां, एणी सनंधे वाधे बीजे एह तणां । एम करतां ए जेटला थाय, वली एहेना एटला गुण गणाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -29
- एक मुख के सुख में कई सुख, और कई सुख मांहें नैन । सुख केते कहूं नैन अंग के, मुख गिनती न आवे बैन || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -124
- एक मूसा और रूहअल्ला, तीसरा जो दाऊद । ए तीनों पैगंमर, आए बीच जहूद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -11
- एक में उपज्या तारतम, दूजे मिने उजास । सब विध जाहेर होएसी, जागनी प्रकास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -127
- एक मोहोल एक चबूतरा, जाए जोए पुल तले मिलत । रूहें ए कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -79
- एक रंग को नंग कहावहीं, तामें कई रंग उठत । ताको एक रंग कयो न जावहीं, आगे कहा कहूं विध इत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -42
- एक रस आतम करके, आप हुए अन्तराए । अनुभव कराए जुदे हुए, पर लग्या न कलेजे घाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -14
- एक रस रीत उपजावें प्रीत, देखावें अपनों हाल । एक अंग अलबेली आवे अकेली, हाथ में फूल गुलाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -41, चौ -9
- एक रस होइए इस्क सों, चलें प्रेम रस पूर । फेर फेर प्याले लेत हैं, स्याम स्यामाजी हजूर || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -29
- एक राह थी अव्वल, तित भी दिए फिराए। कई इलम देखाए जुदे डारे, बल सैतान कह्यो न जाए || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -8
- एक रूह बात करे हक सों, सुख दूजी को होए। जब देखिए मुख बोलते, तब सुख पावें दोए || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -10
- एक रूह बात करे हक सों, सुख लेवे रस रसनाएं । सो सुख रूहों आवत, दिल बारे हजार के मांहें || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -105
- एक रूह लगी एक अंग को, सो क्यों पकड़े अंग दोए || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -29
- एक रूह सुख लेत है, सुख पावत बारे हजार । तो कही जो चीज अर्स की, सो चीजें चीज अपार || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -19
- एक रूहें और खेलौने, देख इत भी तफावत । सूरत हक हादी रूहें, देख जो कहावें वाहेदत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -42
- एक रोम जोत आसमान में, रही रोसनी भराए । तो जो एते पसु पंखी, सो जोत क्यों कही जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -20
- एक रोम न गिरे इनों का, हक नजर सींचेल । आठों पोहोर अंग में, करत धनी सो केलि || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -7

SRJIN

- एक रोम रोम हक अंग के, सब सुखै के अम्बार । तो सुख सरूप नख सिखलों, रूहें कहा करें दिल विचार || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -12
- एक रोसी एक हँससी, होसी खूबी बड़ी खुसाल । बिना इस्क बीच अर्स के, कोई देखे न नूरजमाल" || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -28
- एक लम्बे हिंडोलें, मिल बैठी झूलें, लेवें सीतल सुगंध बयार । एक झरोखे माहें, मिल बैठत जाहें, करें रती रेहेस विचार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -5
- एक लवा सुने जो वासना, सो संग न छोड़े खिन मात्र । होसी सब अंगों गलित गात्र, प्रगट देखाए प्रेम पात्र || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -59
- एक लवाने कारणे, लखमी जी राणी । सात कल्पांत लगे तप करया, तोहे न केहेवाणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -6
- एक लवो मारी बुधे न निसरे, पण धणी आपोपूंप्रगट करे । हवे जो साथ करो काई बल, तो पूरण सोभा लेओ नेहेचल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -7
- एक लवो याद आवे सही, तो जीव रहे क्यों काया ग्रही । अब सुनियो साथ कहूं विचार, भूले आपन समें निरधार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -1
- एक लवो सुणे जो वासना, ते संग न मूके खिण मात्र । ते थाय गलितगात्र अंगे, प्रगट दीसे प्रेम पात्र || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -59
- एक लाख भए बीस हजार, जिनों पैगाम दिए सिरदार । सात कलमें वाले पैगंमर, गिरो सबों की कही काफर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -23
- एक लाल माहें कई रंग, और कई रंग नीली माहें । कई रंग पीली कई सेत में, कई रंग क्यों कहूं जुबांए || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -23
- एक लालक तंबोल की, क्यों कहूं अधुर दोऊ लाल । दंत सोभित मुख मोरत, खूबी ना इन मिसाल || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -43
- एक लीक भी रूहथें न छूटहीं, तो क्यों छूटे तली कोमल । अर्स रूहें इन लीक बिना, तबहीं जाए जल बल || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -31
- एक लुगा झूठ ना होवहीं, जो बोले हजरत । आगे ही थे सब कहया, पर क्यों समझे रूह गफलत || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -34
- एक ले चली साक कटोरी, तापे छीन ले चली दूसरी । तिनथे झोंट ले चली तीसरी, चौथी वापे भी ले दौरी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -111
- एक ले दूजा मिलावहीं, तब तो घट बढ़ होए । सो तो अर्स में हैं नहीं, वाहेदत में नहीं दोए || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -85
- एक लेटतियां जाए सूल उभराए, उठावें कर पकर । आई तिन हॉसी मावे न स्वांसी, गिरी पकरे कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -40, चौ -8
- एक लेसी सोहाग सुलतान का, सोई सोहागिन । सो बातां सिर उठाए के, करसी बीच सैयन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -25

- एक वचन इत यों सुनाए, चींटी पांउ कुंजर बंधाए । तिनके पर्वत ढांपिया, सो तो काहूं न देखिया || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -3
- एक वचन का न किया विचार, न कछू पेहेचान भई आधार । सुनो हो रतनबाई ए कैसा फेर, कौन बुध ऐसी हिरदे अंधेर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -22
- एक वचन तणो नव कीधो विचार, न कांई ओलखिया आधार । सांभलो रतनबाई ए कीहू प्रकार, एवी बुध केम आवी आवार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -65
- एक वचन न आवे अस्तुत, सोभा दीधी जेम कालबुत । अस्तुतनी आंहीं केही वात, प्रगट थावा कीधी विख्यात || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -9
- एक वचने मारी दाझ भाजे छे, ज्यारे कहूं छू धणी श्री धाम । एक एणे वचने मारो जीव करास्योरे, भाजी हैडानी हाम" || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -20
- एक वजूद होए बैठियां, खेलें ऐसी दई भुलाए । कौल फैल हाल सब जुदे, दिल ऐसे दिए फिराए || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -31
- एक वलाका मांहें रे सखियो, वालो भूल्या ते प्रथम मूल । दिए सखी ताली पडी आलोटे, हँसी हँसी आवे पेट सूल || ग्रं - रास, प्र -18, चौ -7
- एक विध कही गोकुल तणी, आगल जोगमायानूं सुपन । बंने सुख केम उपजे, विचारजो मन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -100
- एक विरिख को बरनन, ऐसे कई बिरिख तिन बन माहें । तिन पर विस्तार अति बड़ो, सेहेर बसत जानों ताहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -51
- एक वेख वाले वेण वायो, साथ सह जोवाने धायो । जाणे वेण वालानो थयो, सोक रूदया मांथी गयो । || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -28
- एक सख्प कह्या एक हाथ, दो हाथ सख्प मिले दो साथ । रसूल रूहअल्ला और इमाम, एक सरूप तीनों बिध नाम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -24
- एक सख्प के नख की, सोभा बरनी न जाए । देख देख के देखिए, तो नेत्र क्योंए न तृपिताए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -46
- एक सब्द के उठते, उठे सब्द अनेक । पसु पंखी जो चित्रामन के, कई विध बोलें विवेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -35
- एक सब्द के कारने, लखमी जी आप । नेक भी जाहेर ना हुई, अंग दिए कई ताप || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -9
- एक सब्द जो जाग्रत, अंतर आतम चुभाए । तो ए देह झूठी सुपन की, तबहीं देवे उड़ाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -86, चौ -9
- एक सब्द सखी बोलते, कई ठौरों उठे जी जी कार । मन सरूप कई सोहागनी, कई एक पॉउं खड़ियां हजार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -14
- एक समे करि बेठा ध्यान, विसरी सरीर तणी सुध सान । ए सदीवे चितवणी करे, पण बाहेर केहेने खबर न पडे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -19

- एक समें बैठे धर ध्यान, बिसरी सुध सरीर की सान । ए हमेसा करे चितवन, अंदर काहूं न लखावे किन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -19
- एक समे हक हादी रूहें, मिल किया मजकूर । रब्द किया इस्क का, सबों आप अपना जहूर || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -7
- एक सरूप होए बैठियां, माहें वस्तरों कई रंग । क्यों ए बरनन होवहीं, रंग रंग में कई तरंग || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -6
- एक सलूकी में कई चकलाइयां, एक चकलाइएँ कई सलूक । ए सरूप केहेते आगे मोमिन, दिल होत नहीं टूक टूक || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -40
- एक साइत वृथा न गई, धनी किए सनकूल । चले चित्त पर होए आधीन, परी ना कबहूं भूल || ग्रं - किरन्तन, प्र -78, चौ -9
- एक साखें आवे ईमान, कई साखें देने बांधे बंध । तो भी ईमान न आया हमको, कोई हिरदे भया ऐसा अंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -98, चौ -11
- एक सागर कयो तेज जोत को, दूजो सोभा सुन्दर । कई तरंग उठे इन रंगों के, खोल देखो आँख अंदर || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -8
- एक सात जने ईमानसों, मुए मुसलमान । आए पोहोंच्या सोई बखत, जो कह्या था नुकसान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -89
- एक साम सामी आवें, अंग न मिलावें, कहा कहूं चंचल आकार । एक दौड़ के धसियां, बन में निकसियां, मस्त हुइयां देख मलार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -14
- एक साहेबी अर्स की, और कोई काहूं नाहें । आराम देने उमत को, देखाया ख्वाब के माहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -3
- एक साहेबी नूर हक की, और खेल कछुए नाहें । न सरीक न निमूना, ए लिख्या वेद कतेबों महे || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -74
- एक साहेबी हक की, और इस्क हक का । ए दोऊ कोई न चीन्है, बीच अर्स बका || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -34
- एक सीत जूठ को ब्रह्मा जैसा, जल में मीन होए आया । ए जूठ को महामत बानी देखावे, ग्वालों को चल्लू न कराया || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -14
- एक सुख कहे गोकुल के, और सुख रास सुपन । सुख दोऊ क्यों होवहीं, विचारियो मन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -120
- एक सुख नेहेचल धाम को, और सुख अखंड अछर । तीसरो बैकुंठ सुपनों, ए त्रिधा सृष्ट यों कर || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -13
- एक सुख सुपनके, दूजे जागते ज्यों होए । तीन लीला पेहेले ए चौथी, फरक एता इन दोए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -75
- एक सुख सुपनना, बीजा जागतां जे थाय । पेहेली त्रण लीला आ चौथी कही, सुख अधिक एणी अदाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -74

- एक सुरत दो बीच में, ए जो फिरे दरम्यान । तिनको कहिए फरिस्ता, नूर जोस अंग का जान || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -61
- एक सूत देखे और के, उमर सब गई। फेरा देवें रूपवंतियां, कबूं पूनी हाथ न लई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -10
- एक सूरें उड़ाएके दिए, दूसरे तेरहीं में कायम किए । यों कयामत हुई जाहेर दिन, महंमदें करी उमत रोसन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -24, चौ -6
- एक सृष्ट धनी भजन एकै, एक गान एक आहार । छोड़ के वैर मिले सब प्यार सों, भया सकल में जय जयकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -54, चौ -12
- एक से इसारत दूसरे, बिलंद अस्थाने खुसखबरे । इन देहरी की सब चूमसी खाक, सिरदार मेहेरबान दिल पाक || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -7
- एक सेत रंग जामा कह्या, मांहें जवेर जुगत कई रंग । इन जुबां रोसनी क्यों कहूं, जो झलकत अर्स के नंग || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -40
- एक सो ने आठ रे, कहिए जे पख । ते जुजवा वरणवी, अमने कोण देसे रे सुख || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -43
- एक सोए हिंडोले लेवहीं, एक बैठके हींचत । एक उठे एक बैठत हैं, यों जुगल केलि करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -25
- एक सौ आठ गुरज कहे, जो करत ऊपर रोसन । कंगूरे कलस ऊपर कई, देख होत खुसाल मोमिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -82
- एक सौ आठ गुरज जो, ऊपर जाए लगे आसमान । कलस रोसन कई तिन पर, सो जाए न कहे जुबान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -69
- एक सौ दस छेल्ली हार के, ए जो मोहोल भुलवनी के । एक सौ दस चारों तरफों, ए जो बारे हजार कहे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -104
- एक सौ दस हारें नूर की, नूर ऐसे ही गिरदवाए । ए बारे हजार मोहोल नूर के, बीच नूर चौक रह्या भराए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -16
- एक स्याम नूर केसन की, चली रोसन बांध किनार । दूजी गौर निलाट संग, करे जंग जोत अपार || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -119
- एक स्वाद दिल देखे तुमको, सुने तुमारी बानी की मिठास । लेऊ खुसबोए बोलूं तुम सों, और क्यों कहूं दुलहा विलास || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -33
- एक हक अर्स के नजीक हैं, कोई दूर दूर से दूर । आवत सब दीदार को, जानो आगे खड़े हजूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -22
- एक हक को हंसावें खेलके, कई हंसावें मुख बोल । कोई नाहीं निमूना इनका, जो दीजे इनकी तौल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -35
- एक हक बिना कछू न रखें, दुनी करी मुरदार । अर्स किया दिल मोमिन, पोहोंचे नूर के पार || ग्रं - किरन्तन, प्र -118, चौ -17

SPJIN

- एक हजार सात से हाथी, लाख घोड़े सूरमें साथी । एती आए के पेसकसी करी, ओढ़ के पुरानी कमरी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -6
- एक हवेली चौरस, दूजा मोहोल गिरदवाए। ए खूबी मोमिन देखसी, नजरों आवसी ताए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -16
- एक हाथ सूरत महंमद की, दूजे दो हाथ सूरत दोए । ए तीनों कही हाथ से, ए दोए तीन एक सोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -110
- एक हार मोती एक नीलवी, और हार हीरों का एक । एक हार लाल मानिक का, एक लसनियां विसेक || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -62
- एक हार मोती निरमल, और मानिक जोत धरत । तीसरा हार लसनियां, सो सोभा लेत अतंत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -77
- एक हार हीरन का, दूजा हेम कंचन । तीजो हार मानिक को, चौथा हार मोतियन || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -7
- एक हार हीरा तणो, बीजो पाच वरण रतन । त्रीजो हार मोती निरमल नो, कांई चौथो हेम कंचन || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -32
- एक हीरे की झांझरी, दिल रूचती रंग अनेक । नकस कटाव बूटी ले, ए किन विध कहूं विवेक || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -123
- एक हीरे की पाल है, तिनमें कई मोहोलात । गिरद क्योहरी कई बन हैं, क्यों कहूं फल फूल पात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -2
- एक हुकम जुबां के सब हुआ, तिन हुकमें चले कई हुकम । सो जेता सब्द दुनीय में, ए सब हम वास्ते किया खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -16
- एक हुकमें बुजरक, दूजे न खाक समान । बेसुध कर सब हुकमें, खेलावत है जहान || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -10
- एकड़ा ऊपर तेईस मींडे धरूं, प्रारध करके लेखा मेरा करूं । लौकिक लेखे गुन न गिनाए, मेरे धनी के गुन यों गिने न जाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -22
- एकत्रीसे एम अंत केहेवाय, वली लेखणो कागल स्याहीनी चिंता थाय । जाणूं रखे खपी जाय अध विच, त्यारे केम गुण गणीने ग्रहीस मारे चित || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -25
- एकल छत्री सब बनकी, भांत चंद्रवा जे । फेर फेर उमंग होत है, ठौर छोड़ी न जाए ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -46
- एकल छाया बन की, जहां लों नजर देखत । तोलों फेर सब देखिया, सोभा सब में अतंत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -9
- एकल छाया रेती रोसन, पूरन सिफत कमाल । और अनेक बन आगू भला, ए हद छोड़ चल्या दिवाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -38

- एकी गमां सुख वैकुंठ गरजे, बीजीए दुख गरजे जमपुर । ए बने मांहें थी एक लई वलसो", रखे भूलता तमे आ अवसर || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -4
- एकीगमां साथ स्यामाजी, कांई बीजी गमां प्राणनाथ । क्रीडा कीजिए जलमां, विलसिए वालाजीने साथ || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -9
- एके बंध एणी पेरे बांध्या, बीजा नी ते केटली कहं रे सनंध । साध वाणी सांभलीने सहु कोय, देखीने बंधाणा रे अंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -15
- एके वोहोरया भगवान जी, ते जाय नहीं जमपुर । संगत कीधी तेणे साध तणी, जई बैकुंठ कीधां घर || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -39
- एकै बात के वास्ते, सुख दजी को उपज्या यों। यों सबन की एक दिली, जुदा बरनन होवे क्यों || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -9
- एकै रस के सब रंग, करें जुदे जुदे झलकार । रंग नंग धात तो कहिए, जो आवे कहूं सुमार || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -18
- एकै साइत पैदा हुए, और फना होसी एक बेर । ए क्यों पावें अद्वैत को, जो ढूंढे मांहें अन्धेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -107, चौ -3
- एकों को हुकम हुआ, तिन लई राह मुस्लिम । पीछे जुदी जुदी जिनसों, ए सब खेलें खेल हुकम || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -15
- एको क्यों कर मानिया, क्यों लिया न दूजे मान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -33
- एकों पिया एक पीवत हैं, एक प्याले पीवेंगे। खोल्या दरवाजा अर्स का, वास्ते अर्स अरवाहों के || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -103
- एटला ते लगे मन पोहोंचे, बुध तुरिया वचन । उनमान आगल कही करी, वली पडे ते महे सुंन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -109
- एटला दिवस थया अमने रमतां, पण कोणे न की– एम । भोला ढालनी वात जुई छे, जोइए जोर करी जीतो केम || ग्रं - रास, प्र -39, चौ -10
- एटला दुख तें केम करी सया, अनेक विध तूंने धणीए कया । निर्बल जीव नीच तूं थयो निरधार, ते नव कीधी धणीनी सार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -76
- एटला माटे आ अजवालू, वालेजीए कीबूं आ वार । नरसैयां वचन प्रगट कीधां, काई वृज तणा विचार || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -28
- एटलूं तमे जाणो निरधार, आ वचन मेहेराजे प्रगट न थाय । आपण घरनी नहीं ए वात, जे किव करी मांडिए विख्यात || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -14
- एटलू पण हूं तो बोलूं, जो साथने भरम नो घेन । वचन कही विधोगते, टालूं ते दुतिया चेन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -134
- एटले पूरण थयो रास, इंद्रावती धणीने पास । मूने मारे धणिए दीधी बुध, हवे प्रकास करूं तारतमनी निध || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -21

- एटले मनोरथ पूरण थया, जे थाय ते वालाजीनी दया । दयानो तो कहूं छू घणूं, जे करी न सकी बस आपोपणूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -23
- एटलो पण नथी द्रष्टे पड्यो, पग थोभ माटे पुस्तक चढ्यो । जीव तणो जोजो ए बल, खरी वस्त जे कही नेहेचल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -21
- एणी केमे नव थाय सरम, एणी द्रष्टे केम न थाय नरम । जीव छे मारो खरी वस्त, ते कां न करे अजवालूं अत || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -20
- एणी निद्राए जे कोई लेवाणा, नहीं ते आपणा साथी जी । एणी रे भोमे घणां छेतरिया, तमे उठो इहां थकी जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -2
- एणी पेरे अमने रहयो अंदेस, ते राखे नहीं धणी लवलेस । ते माटे वली आ सुपन, इछाए कीबूं उतपन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -17
- एणी पेरे करूं रामत, मनडा थया महामत । खंत खरी लागी चित, वालाजीतूं हेत री || ग्रं - रास, प्र -22, चौ -7
- एणी पेरे तमे जीव जगवसो, त्यारे थासे ते जोत प्रकास जी । प्रेमतणा पूर प्रघल आवसे, थासे ते अंधकारनो नास जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -44
- एणी पेरे तमे प्रीछजो, अवतार न थाय अंन । पुरख तां पेहेलो न कहयो, विचारी जुओ वचन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -39
- एणी पेरे बंध बांध्या रे वज्र में, चसकावी न सके पाय । हौंस करे सुख वैकुंठ केरी, एणी सिखरे एम केम चढाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -17
- एणी पेरे भाज्यो संदेह, समझ्या सहुए वात ज एह । वचन विस्तरिया विवेक, तेणे मली रस थयो एक || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -23
- एणी पेरे वेपार थाय, हाट पीठ बाजार । आ भोमनी अनेक आंकड़ी, तेनो केटलो कहूं विस्तार || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -40
- एणी पेरे सेव्या तमें स्वामीने, चितसूं जुओ विचारी । दुष्टपणे तमें धणी ने दुखवया, हवे केही पेर थासे तमारी || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -21
- एणी बाजारे कूड कपट, छल छे भेद अपार । चौद भवन नी खरीद आंहीनूं, मांहें कोई कोई छे साहूकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -6
- एणी रूते अमने नव तेडो, तो जीव घj दुखी थाय । दिन दोहेला घणुए निगमू, पण रैणी ते केमे न जाय || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -8
- एणी रूते एकलडी मूने, केम मूको छो प्राणनाथ । जीव सकोमल कूपल मेले, रमवा स्यामलियाने साथ || ग्रं - खटरुती, प्र -5, चौ -6
- एणी वाटे ऊभो नरसैयो, लीला बेहद गाय । जोर करे बलियो घणो, रासमां ना पेसाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -43
- एणी विधे लीला बंने करी, घेर रे सिधाव्या । आ त्रीजो ब्रह्मांड मायातणो, आपण लई आव्या || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -103

- एणी विधे साथ प्रीछजो, सुख घणुए आण्यूं । सुख सुपने गोकुल तणूं, अणजाणे माण्यूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -92
- एणे अजवाले जेहेर उतरसे, त्यारे जीव ते करसे जोर जी । परआतम ने आतम जोसे, त्यारे टलसे ते तिमर घोर जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -43
- एणे अजवाले जो न ओलख्या, तो आपणमां अति मणां जी । चरणे लागी कहे इंद्रावती, वालो नव मूके गुण आपणां जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -2, चौ -16
- एणे अंधेर कोहेडे अनेक बांध्या, वस्त खरी नव जुए । बंध बंधावी बाजार मांहे, पछे वारो वछूटे घणू रूए || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -16
- एणे कोहेडे ते अवला फेरा, सह फरे छे एणी भांत । सुध बुध सर्वे विसरी, ए रच्यो माया दृष्टांत || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -23
- एणे ठेकाणे तां कोई न उगरियो, तमे सूता तेणे ठाम जी । ए ठाम घणूं विखम लागसे, प्रगट कहूं गत भोम जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -5
- एणे द्रष्टांते प्रीछजो, वासना जीवनी विगत । असत जीव न बोले निद्रा, निद्रा बोले वासना सत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -111
- एणे द्रष्टांते प्रीछजो, सेर राख्यो ए भांते । माया तणो ए बल जुओ, केवो रच्यो छे खांते || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -32
- एणे पगले आपण चालिए, काई पगलां ए रे प्रमाण, सुंदरसाथजी । पेहेले फेरे आपण जेम नीसरियां, तमे जाण थाओ ते चित आण । चित आणीने रंग माणो, सुंदरसाथजी || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -1
- एणे बारणे नरसैयो, घj टाढक पाम्यो । लीला पाछला साथमां, सुख लई ने जाम्यो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -47
- एणे भीडिए अंगों अंग, कुचो वचे आणिए रे । एना विलास अनेक भांत, मोहन वेल माणिए रे || ग्रं - रास, प्र -35, चौ -6
- एणे लेखे काई गणती न थाय, मारा धणीतणां गुण एम न गणाय । हवे लेखो करूं साथ जोजो विचार, लखवा गुण मारा प्राणना आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -28
- एणे संघारसे एक सब्दसों, वार न लागे लगार । लोक चौदे पसरसे, ए बुध सब्दनों मार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -29
- एणे समे अबीर गुलाल उछलियां, चोवा चंदन केसर कचोले भरिया । नाहो नारी रमे रे फागणिऐ मलिया, एणे समे अमें तो घणूं कलकलिया । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -9.4, चौ -2
- एणे समे अमने सूं थy, सगाईतणों सुख कांई नव लयूं । जुओ रे बेहेनी अमे एम कां थया, एवडा दुख अमे खमीने रया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -66
- एणे समें आप झलावी, अने साध थया मांहें सन्त । संगत कीजे तेह तणी, जेणे चोकस कीधुं छे चित || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -12

- एणे समे इंद्रावतीबाई ए, तामसियो भेली करी । पड़े राजसियो स्वांतसियो, करे ऊभियो अंक भरी || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -43
- एणे समे जे अममां वीती, केटली कहूं तेह फजीती। में तो ख्डी रीते ग्रहीती, पण मूने लीधी जीती || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -12
- एणे समे जे सुख, थया जे साथमा । कां जाणे वल्लभ, कां जाणे मारी आतमा || ग्रं - रास, प्र -44, चौ -4
- एणे समे तारतमनी समझण, ते में केम केहेवाय जी । अनेक विधनूं तारतम इहां, तेणे घर लीला प्रगट थाय जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -2, चौ -12
- एणे समे ध्यान थयो अति जोर, प्रेम तणी चंपाणी कोर । लखमीजी आव्या एणे समे, मन अचरज पाम्या विस्मे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -20
- एणे समे भेला सह घर वारी, अधखिण अलगां न थाए नर नारी । परदेस होय ते पण आवेरे संभारी, पिउजी एवी केही अप्राप्त अमारी || ग्रं - खटरुती, प्र -9.6, चौ -2
- एणे समे मही सखी ऊभी रही, कहे सांभलो धणी ना वचन । सखियो कुलाहल तमे कां करो जी, कांई ऊभा रहो द्रढ़ करी मन || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -12
- एणे समे मूल वैकुंठ नाथ, इछा दरसन करवा साथ । साथ तणे मन मनोरथ एह, माया रामत जोइए तेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -5
- एणे समे रामत गमे, वालो विलसी लिए सोसी । अधुरी मधुरी, अमृत घूटें, छोले छूटे, लिए लूटे || ग्रं - रास, प्र -42, चौ -1
- एणे समे वली फेरवी लीधी, मायाए सिखामण दीधी । धणी थकी विमुख कीधी, पाणीना जेम पीधी || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -31
- एणे समे विरह कीधो अति जोर, ते हूं केटलो कहूं बको । एक ठामे बेठा दमे देह, श्री भगवानजीसुं पूरण सनेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -38
- एणे समे हवे जे थयूं, बाई इंद्रावतीनूं काम । विध विध विलसी वरतूं, भाजी हैडानी हाम || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -13
- एणे सर्वे वज्रलेपणा, दुखने दीठा रे अनेक । हवे ने वालाजी रे दया करो, तो टले मारा वज्रलेप || ग्रं - खटरुती, प्र -3, चौ -18
- एणे सुकजी पण सुपनांतर कहे, कोई एहनो जीव एणे नव लहे । ए सुपन मूलतां छे समरथ, एहेना मूलनो जुओ अर्थ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -35, चौ -9
- एणे स्वांगे संसार बांध्यो, कोई कपट कारण रूप । बीजा तो आमला अनेक छे, पण आंकडी आ अदभूत || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -25
- एता इन कलंगी मिने, एक हीरे का नूर । आसमान जिमी के बीच में, मानों कोटक ऊगे बका सूर || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -116
- एता दिल मजाजी न बूझहीं, जो नाती नूह नबी के || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -14

- एता दिल मजाजी न बूझहीं, सोई खोले रमूजें किताब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -48
- एता देखाया जाहेर कर, दई नूरी को लानत । दुनी तो न खोले आंख दिल, जो असल पैदा जुलमत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -45
- एता न जाने दुनियां, कहां से आए कौन हम । आए कौन फरेब में, ए हुआ किन के हुकम || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -47
- एता फरक कहया जाहेर, तो भी करें इन की सरभर । वह फरक मुरदे ज्यों जीवते, पर क्या करें अकल बिगर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -63
- एता भी न विचारहीं, होए खावंद बैठे सब । फैल न देखें अपने, लिया मोमिनों का मरातब || ग्रं - खुलासा, प्र -14, चौ -12
- एता भी मैं तो कहया, जो साथ को भरम का घेन । वचन दो एक केहेके, टालूं सो दुतिया चैन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -46
- एता भी रसूलें कहया, मोमिनों में आकीन । बिना आकीन सब उड़सी, एक रेहेसी हमारा दीन || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -30
- एता भी रसूलें कहया, रूहें मेरे ना कोई संग। एक हुकम अली बिना, ना मोमिन वतनी अंग || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -64
- एता मता जिन दिया, तिन आप देखावत केती बेर । पर तुमें राखत दोऊ के दरम्यान, ना तो क्यों रहे मोह अंधेर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -123
- एता मता तुम को दिया, सो जानत है तुम दिल । बेसक इलमें ना समझे, तो सहूर करो सब मिल || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -1
- एता मता रूह का, हुकम के दरम्यान । तिन का जोरा चाहिए, जो हक आगू होसी बयान || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -14
- एता मासूक पुकारिया, पर तो भी न छूटा फंद । दंत बीच जुबां काटही, हाए हाए हुए बड़े अंध || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -10
- एता रोष तुम ना धरो, लखमीजी पर दया करो। तुम स्वामी बड़े दयाल, लखमीजी दुख पावे बाल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -42
- एता लिख्या बेवरा, सब किताबों मिने । नुकसान नफा दोऊ देखत, तो भी छोड़े न हठ अपने || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -57
- एता हम जानत हैं, जो सौ फरेब करो तुम । ऐसा इस्क क्यों होवहीं, तुमको भूलें हम || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -16
- एती अगनी तें क्योंकर सही, अनेक विध तोको धनिएँ कही । निपट जीव तूं हुआ निठोर, झूठी प्रीत न सक्या तोर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -33
- एती जिमी सब छोड़के, जित आए मेंहेदी महंमद । सो भली जिमी भाखा भली, इत हद मेट होसी बेहद || ग्रं - सनंध, प्र -3, चौ -6

- एती जोगवाई ले तूं आकार, धनी चलते पीछे क्यों रह्या रे । अब जलो रे उड़ो खाखड़े, इन समें गल पिघल न गया रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -12
- एती बातें कुरान में, बिध बिध करी रोसन । कई नाम धर दई बुजरकियां, सो बल महंमद और मोमिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -121, चौ -14
- एती साखें लेय के, कहा लगत झूठे अंग । अजूं न लगे तोकों धाम को, सांचो सनमंध संग || ग्रं - किरन्तन, प्र -87, चौ -11
- एती सुध ना हमको, खोलसी कौन हकीकत । कौन करसी कयामत जाहेर, कौन केहेसी हक मारफत || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -35
- एते दिन इन हुकमें, जुदे जुदे खेलाए । सो ए हुकम इमाम का, अब लेत सबों मिलाए || ग्रं - सनंध, प्र -3, चौ -7
- एते दिन किन ना कह्या, के रसूल आया इन पर । ना किन फुरमान सिर लिया, ना किन लई खबर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -41
- एते दिन गए कई बक, सो तो अपनी बुध माफक । अब कथनी कयूं इस्क, जाथें छूट जाए सब सक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -3
- एते दिन ढांपे रहे, किन कही ना हकीकत । जो अजूं न बोलत दुनी में, तो जाहेर होए ना हक सूरत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -134
- एते दिन ढांपे हते, मगज माएने बातन । आए इमाम बखत बदल्या, सैतान मारया सबन || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -39
- एते दिन ढांपे हते, सब्द सत असत । सो अब जाहेर हुए, आई सबों की सरत || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -15
- एते दिन त्रैलोक में, हुती बुध सुपन । सो बुध जी बुध जाग्रत ले, प्रगटे पुरी नौतन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -2, चौ -11
- एते दिन धनी धाम छोड़ के, दई साथ को सिखापन । अब साथें मोको समझाई, तिन थें हुई चेतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -101, चौ -6
- एते दिन मैं यों जान्या, मैं बैठी नाहीं के माहें । तो इत का संदेसा, हक को पोहोचत नाहें || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -6
- एते दिन वृथा गमाए, किया अधम का काम । करम चंडालन हुई मैं ऐसी, ना पेहेचाने धनी श्रीधाम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -6
- एते दिन हम घर मिने, गोप राखी सत जोत । अब बुध खेंचे तरफ अपनी, तो जाहेर सत होत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -6
- एतो हमारा कागद, तुम साथे आया । खबर हद बेहद की, देकर पठाया || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -72
- एन एक वचन विचारसे रही, ते ततखिण घर ओलखसे सही । घरनी जे होसे वासना, नहीं मूके ते वचन रासना || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -20

- एन रूदे अति कठोर, ए थकी विहीजिए रे । हवे ए अलगो एक पल, आपण न पतीजिए रे || ग्रं - रास, प्र -35, चौ -4
- एनो अर्थ कहूं पाधरो, सणजो तमे साथ । रात एवी मोटी तो कही, जो लीला मोटी छे रास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -55
- एनो तमे जवाब दीधो, केम रोतां मूक्यां वन । नहीं विसरे दुख ते विरहना, अमने जे उतपन || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -22
- एनों बार उघाडी पाधरू, चाली न सके कोय । ब्रह्मांडना जे धणी कहावे, ते बांध्या रामत जोय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -39
- एम अंग वालीने रमजो रे सखियो, तो कहूं तमने स्याबास । एम लटके रंग लेजो वचमां, तो हूं तमारडी दास || ग्रं - रास, प्र -17, चौ -7
- एम अवलो अनेक भांते, वैराट नेत्रों अंध । चेतन विना कहे छोत लागे, वली तेसूं करे सनमंध || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -18
- एम आंखडी न चढाविए तेने, जे होय पोतानो तन । जाणिए मेलो नथी जनमनो, उथले रास वचन || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -18
- एम करता ए दसज थया, मींडूं मूकीने एक सो गणया । वली एक मूकू नव करूं वार, जेम गुण गणूं मारा धणीना हजार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -11
- एम केटलीक भांते रमियां खांते, रामत रंग अपार । कहे इंद्रावती एणी पेरे लीजे, वालो सुख तणो सिरदार || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -23
- एम चौद लोकमां कोई नव कहे, जे पार मायानों आ लहे । मोटी मत धणीमां रहे, बीजा भार पुस्तक केरा वहे || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -38
- एम जल क्रीडा करी, पछे नाह्या ते पिउजी । घणां रस लीधां अंग चोलतां, वालैयाने विलसी || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -14
- एम जाणी ने आव्या अम माहें, आवी बेठा प्रगट्या तम जाहें । आपण जेम पेहेलां वृजमा हता, नित प्रते वालाजीतूं रंगे रमतां || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -9
- एम ने अखंड सुख उदे थयूं, ज्यारे समझया सुपन मरम । जागी साख्यात बेठा थैए, त्यारे आगल पूरण पारब्रह्म || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -7
- एम बाजी मायातणी, ब्रह्मांडज रचियो । देखी बाजी पारेवडा, साथ माहे मचियो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -128
- एम रस तारतम तणो, चढ्यूं जेहेर उतारे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -120
- एम रामत कीधी वन मांहें, रमीने आवियां । ए सुख आ वन माहें, भला भमाडियां || ग्रं - रास, प्र -44, चौ -6
- एम रे सखियो तमे कां करो, ए छे आपणो आधार । नेहेचे आपणने नहीं रे मूके, तमे जीवसूं करो रे करार || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -28

- एम रे सखियो तमे कां करो, ए छे आपणो आधार । मूल रामतडी कीजिए, ए नहीं रे मूके निरधार || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -41
- एम रे सखियो तमे कां करो, बेहेनी द्रढ़ करो कां न मन । आपणने मूके नहीं, जेहेनूं नाम श्रीकृष्ण || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -22
- एम लखी लखीने में गणया गुण, पण मारा धणी तणा गुण छे अतिघण । ए गुण मलीने जेटला थया, ते तां में मारा जीवमां ग्रहया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -38
- एम लखी लखीने में लख्या अपार, हवे वली जोऊ केटली थई मूने वार । गुण जेटला महाप्रले थाय, एम लख्या में तेणें ताय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -40
- एम लीधां दामणां अपार, तसू घटे ते चारना चार । वली देखी मातानूं श्रम, कान्हें मूक्या दामणां नरम || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -16
- एम सुख सुपने माणिया, अणजाणे एह । बंने लीलामां घर तणी, खबर नहीं तेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -102
- एम सोयतणां नाका मंझार, ब्रह्मांड कई निकले हजार । हवे एह तणो जो जो अर्थ, गुण लखवा वालो समरथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -35, चौ -12
- एमां जेम जेम जोई जोई जोइए, तेम तेम बंध पडता जाय । अनेक उपाय जो कीजिए, प्रकास केमे नव थाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -35
- एमां पग पंथज जोवंतां, बंध पड्या ते जाण सुजाण । अनेक वचन विचार कही, नेठ लेवाणा निवाण || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -34
- एमा प्रेमें पारब्रह्म पांमिए, ए वाणी बोले रे एम । अनेक कसोटी आवे जो आड़ी, तो ए निध मूकिए केम || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -5
- एमां वासना आवी अम तणी, मन इछे पोतानू धणी । अछर वासना लई आवेस, नंद घेर कीधो प्रवेस || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -8
- एवं सुणीने साथ सहु हरख्यो, ए छे रामतडी सारी । पेहेलो दाव आपणमा कोण देसे, ते तमे कहोने विचारी || ग्रं - रास, प्र -15, चौ -2
- एवडा दुख ते कां करो, हूं दऊं एम केम छेह । तमे मारा प्राणनां प्रीतम, बांध्या जे मूल सनेह || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -13
- एवडी वात तें केम करी सही, के तूं घर मूकीने गई । के तूं विकल थई पापनी, विना खबर निध गई आपनी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -70
- एवडी वात तें केम सही, अंग ऊभो केम रह्यो । रोम रोम हेठे कां, गली नव पडियो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -13
- एवडी वात देखी करी, ते तां जोयूं तारी द्रष्ट । हजी तू भरममां भूलियो, तूने केटलूं कहूं पापिष्ट || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -18
- एवडी वात वालो करे रे आपणसू, पण नथी कांई साथने सार जी । भरम उडाडी जो आपण जोइए, तो बेठा छे आपणमां आधार जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -2, चौ -4

- एवडू अंधारूं थातां, तूं केम रही रे जोई । फिट फिट रे तूं पापनी, ए निध केम रही खोई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -66
- एवडो तेहेनो स्यो वृतांत, तेहेनं कांइक कहूं द्रष्टांत । सांभल परीछित कहूं वली तेह, एक मोटी मतनो धणी छे जेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -7
- एवडो रोष तमे मां धरो, लखमीजी पर दया करो। तमे स्वामी मोटा दयाल, लखमीजी दुख पामे बाल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -42
- एवा कागल एवी स्याही लेखण, माहे झीणा आंक लख्या अतिघण । एलेखणोनी में जोई अणी, पण हजी काई करी न सकी झीणी अतंत घणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -35
- एवा छल अनेक अर्थ आडो, ते अर्थ मांहें कई छल । अखरा अर्थ छल भावा अर्थ आडो, पछे करे भावा अर्थ अटकल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -10
- एवा मारा लाड पूरण कोण करे, बीजी दाण देह मायामां कोण धरे । तमे मोसूं गुण कीधा छे अनेक, तेता लख्या मारा रूदयामा लेख || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -18, चौ -7
- एवा हलवा बोल न बोलिए, हूं वारू छु तमने । ए वचन केहेवा नव घटे, कांई एम केहे, अमने || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -37
- एवी आंकडियो अनेक मांहें, ते ताणे गमां बार । रंचक रेहेस आणी मधे, बांध्या बुधे विचार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -8
- एवी टाढी रूते रे दंतडा खडखडे, अंग चामी चरमाय । एकने पिउजी तम विना, कई कई आवटणी थाय || ग्रं - खटरुती, प्र -4, चौ -6
- एवी वात सांभलतां वालेजी अमारे, आवीने ग्रही मारी बांहें । कहो सखी पेहेली रामत केही कीजे, जे होय तमारा चित मांहें || ग्रं - रास, प्र -11, चौ -9
- एवो अबूझ अकरमी थयो तूं कांए, काई न विमास्यूं रूदया माहें । बुध मन सारूं बेठो थई, निध जातां तोहे घारण न गई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -77
- एवो कठण कोरडू तूं कां थयो, आवडी अगने हजी नव चड्यो । पांच वरसनो होय जे बाल, ते पण काईक करे संभाल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -78
- एवो विरह खमी रह्यो, में जाणू जीवनी नाल । आसा अमने नव मूके, नहीं तो देह छाई तत्काल || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -33
- एह इलम ए इस्क, और निसबत कही जो ए। ए तीनों सिफत माहें मोमिनों, निसबत हक की जे || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -21
- एह इलम जिन आइया, सेहेरग से नजीक ताए । ए पट नजरों खोल के, लिए अर्स में बैठाए || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -8
- एह करत सब हुकम, ले अव्वल से आखिर । इत मैं बीच काहू में नहीं, मैं ल्यावे सो काफर || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -44

- एह करता सर्वे थाय, पण ओल्यूं अर्थ ते तणाण्यूं जाय । अर्थ उत्कंठा रहे मन माहें, समझ कोणे नव पडे क्याहे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -11
- एह कहूं मैं साथ कारन, अधखिन साथ विसारो जिन । जिन करो तुमारी पाओखिन, तो कई कल्पांत जाए मिने तिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -15
- एह कायम न्यामतें, दोऊ से जुदी जुदी । नूर-जमाल और नूर की, दई दोऊ की साहेदी || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -69
- एह किताबत पढ़ के, रूहें रेहे न सकें एक खिन । झूठी सों लग न रहे, जो रूह होए मोमिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -118, चौ -12
- एह खेल एक पोहोर लग, होत हमेसां इत । पंद्रा दिन जब घर रहे, तब देखें दुलहा निरत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -73
- एह खेल ऐसा है, तुम अपना कबीला कर । कोई न किसी को पेहेचाने, बैठो जुदे जुदे कर घर || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -52
- एह खेल तुम मांगिया, सो किया तुम खातिर । ए विध सब देखाए के, पीछे कहूं वतन आखिर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -5
- एह खेल हकें किया, आप भी संग इत आए । अर्स में बैठे देखाइया, ऐसा खेल बनाए || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -39
- एह चंद्रवा बन का, नूर रोसन गिरदवाए । तले जिमी अति रोसनी, ऊपर बन सोभाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -27
- एह चरन छे प्रमाण, इंद्रावती कहे थाओ जाण । तमे वचनतणा लेजो अर्थ, आपण जीवनो ए छे ग्रथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -29
- एह छल तां एवो हुतो, जेमां हाथ न सूझे हाथ । द्रष्ट दीठे बंध पडे, तेमां आव्यो ते सघलो साथ || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -1
- एह छे एवो समरथ, एहेना बलनो कहीस अर्थ । नहीं राखू संदेह लगार, जाणी साथ घरनो आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -14
- एह छे एवो समरथ, सेवकना सारे अरथ । हवे एह तणो जो जो गिनांन, मोटी मतनो धणी भगवान || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -18
- एह जमें मैं गुन की कही, श्रीसंदरबाईऐं सिखापन दई । साथ जाने लेखा जोर किया अपार, पर मेरे जीव के दरद की न दबी किनार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -37
- एह जुगत सब पाल में, गिनती न होए हिसाब । थंभ द्वार जो झलकत, सो कहा कहे जुबां ख्वाब || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -89
- एह जुबां केती कहूं, अलेखे विस्तार । एक जात की फौज ना गिन सकों, तिन हर फौजों कई सिरदार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -12
- एह जोईने टालो भरम, जीव काईक हवे करो नरम । वचन जीवसू करो विचार, त्यारे ततखिण जीव ओलखसे आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -12

- एह जोत जो जोत में, बैठियां ज्यों सब मिल । क्यों कहूं सोभा इन जुबां, बीच सुन्दर जोत जुगल || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -4
- एह झुन्ड है घाट पर, और पाल ऊपर सब बन । फिरता आया झुन्ड लो, पोहोंच्या पावड़ियों रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -10
- एह ठौर है निरत की, सो केता कहूं मजकूर । चारों तरफों ऊपर तले, कहूं मावत नहीं जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -50
- एह दज्जाल जो अजाजील, सबमें दम इनका कमसील । न करे सिजदा ऊपर आखिरी आदम, फेस्या जाहेर कलाम अल्ला का हुकम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -31
- एह दृष्टांते समझियो, राह राख्या इन विध । ए बल माया देखियो, और ऐसी किध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -42
- एह देख चित भरमिया, सुध नहीं सरीर । विकल भई रंग बेलियां, चित नाहीं धीर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -152
- एह धनी एह घर सुख, सनमंध दियो भुलाए । लगाव न रह्यो एक रंचक, ताथे मेरो कछू न बसाए || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -33
- एह न पावें अर्स को, ना कछू पावें हक । ना कछू समझें इलम को, ए आप नहीं मुतलक || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -68
- एह निमूना ख्वाब का, किया कारन उमत । कायम अर्स ख्वाब में, देखाया लेने लज्जत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -1
- एह निमूना देत हों, सो रूहें जानें जो सिफत करत । जथार्थ सब्द न पोहोंचहीं, तो जुबां पोहोंचे क्यों हक सिफत || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -35
- एह न्यामत जब आई, तब खुले सब द्वार । जो पट कानों ना सुने, सो खोले नूर के पार || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -11
- एह पट जिनको खुले, सो आए बीच इसलाम । लिया दावा हकीकी दीन का, सिर ले अल्ला कलाम || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -76
- एह पाल हम बांधी जीवजी, पर तुम जाग करो सावचेत । फेर नहीं आवे ऐसा समया, सोभा ल्यो साथ में इत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -113
- एह फल तें मूकी करीने, नीच वस्त कां लीधी । ए दोष सर्वे जीवने बेठो, तूंने सिखामण नव दीधी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -101
- एह बन देखे पीछे, उपज्यो सुख अनंत । ए ठौर रूह से न छूटहीं, जानों कहां देखू में अंत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -38
- एह बल जब तुम किया, तब अलबत बल सुख धाम । अरस परस जब यों हुआ, तब सुख देवें स्यामा स्याम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -17
- एह बल महंमद के, जानवर का जान । दूजी गिरो फरिस्ते, पोहोंचाई नूर मकान || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -49

SRJN

- एह बात ए पैदास कही, सो सिफत सब महंमद पर भई । ए तीनों सिफतों भया रसूल, ए सजीवन मोती कह्या अमोल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -54
- एह बात तेहेकीक है, मोमिनों दिल साबित । सब्द जो सारे मुझ पें, एक जरा नहीं असत || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -38
- एह बात धनी चितसों ल्याए, आधी नींद दई उड़ाए । अग्यारे बरस और बावन दिन, ता पीछे पोहोंचे वृन्दावन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -28
- एह बात मैं तो कहूं, जो कहने की होए । पर ए खसमें रीझ के, दया करी अति मोहे || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -1
- एह बात मैं तो कहूं, जो केहने की होए। एह इमामें रीझ के, दया करी अति मोहे || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -1
- एह बात रही हुकम पर, करें हक सांची सोए। या राजी या दलगीर, ए हाथ खसम के दोए || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -30
- एह बातें असल की, करते इस्क सों प्यार । हँसते खेलते बोलते, एही चलत बारंबार || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -21
- एह ब्रह्मांड तीसरा, हुआ उतपन । धाख रही कछू अपनी, तो फेर आए देखन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -37
- एह भोम एह चबूतरा, लगते पेड़ दरखत । ए ठौर बरनन करते, हाए हाए छाती नाहीं फटत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -80
- एह मरातबा रूहन का, जिन का हादी अहमद । मीम गांठ जब खुली, तब सोई हक अहद || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -81
- एह मीरास कही मिलकत, इलम की लेवे हिकमत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -13, चौ -8
- एह मुकट इन भांत का, पल में करे कई रूप । जो रूह जैसा देख्या चाहे, सो तैसा ही देखे सरूप || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -179
- एह रब्द हमेसा रहे, बड़ी रूह रूहें और हक । अब घट बढ़ क्यों कर जानिए, वाहेदत पूरा इस्क || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -11
- एह वचन जिन करो उचार, न तो दुख होसी अपार । और इतका जो करो प्रस्न, सो चौदे लोक की करूं रोसन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -26
- एह वचन सुणीने राय, पडयो भोम खाय मुरछाय । कम्पमान थई कलकल्यो, रूदन करे रूदे अंतर गल्यो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -16
- एह वचन सुनके राए, पड़यो भोम खाए मुरछाए। कंपमान होए कलकल्या, रोवे बोहोत अंतस्करन गल्या || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -16
- एह वचन स्यामाजीएँ, सब साथ को कहे सुनाए । इंद्रावती आए बिना, हम धाम चल्यो न जाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -13

- एह वचनो मांहें श्री धाम, धणी आपणा ने साथ सर्वेस्थान । ए तारतम तणो अजवास, धणी बेठा मांहें लई साथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -13
- एह विचार किए बिना, जो करत हैं फैल हाल । जब होसी मिलावा जाहेर, तब तिनका कौन हवाल || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -20
- एह विध कर कर आतम जगाई, तब होसी सब सुध जी । सुध हुए पूर चलसी प्रेम के, होसी जाग्रत हिरदे बुध जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -45
- एह विध मैं केती कहूं, कौन अचरज इन । कई बातें ऐसी हक की, जो विचार देखो रूह तन || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -27
- एह विध मोहे तुम दई, अपनी अंगना जान । परदा बीच टालने, ताथे विरहा परवान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -12
- एह विध साख कुरान में, जाहेर लिखी हकीकत । सो धनी आए जहूदों मिने, ओ आरबों में ढूंढ़त || ग्रं - खुलासा, प्र -14, चौ -16
- एह विना जे बीजी मत, ते तूं सर्वे जाणे कुमत । कुमत ते केही केहेवाय, नीछारा थी नीची थाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -6
- एह सरूपने एह वृंदावन, ए जमुना त्रट सार । घरथी तीत ब्रह्मांडथी अलगो, ते तारतमे कीधो निरधार || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -36
- एह सिपारे दूसरे, या बिध कर लिखे बयान । बीच हवा के पलना, चौदे तबक झुलान || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -13
- एह सिफत न जाए कही, जिन बन कबूं न जवाल । ए जुबां खूबी तो कहे, जो कोई होवे इन मिसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -33
- एहडो वडो मुं धणी, को न न्हारिए संभारे । वैण सुणाइए वलहा, मूं सामों न्हारे || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -34
- एहना आउध अमृत रूप रस, छल बल वल अकल । अगिन कुटिल ने कोमल, चंचल चतुर चपल || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -9
- एहनूं मूल डाल लाधे नहीं, ऊभो ते केणी अदाए । मांहें संघ कोई सूझे नहीं, एमां दिवस न देखू क्यांहें || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -28
- एहने सरणे सोप्या वैष्णवने, जिहां बिध बिध ना विलास । हवे नेहेचल रंग कीजे ते पुरुख सों, दई प्रेमनो पास || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -8
- एहमां वासना पांचे प्रगट थई, रची रामत देखाडी रूडी पेर । कारज करीने अखंडमां भलसे, अछर सरूप एहनूं घेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -70, चौ -2
- एही अंकूर साथ कारने, करत मिलाप अंतराए । न तो एकै आह इन पिया की, देवे सब उड़ाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -62, चौ -5
- एही अपनी जागनी, जो याद आवे निज सुख । इस्क याही सों आवहीं, याही सों होइए सनमुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -7

- एही आतम को पूछ के, नवों भोम करो विचार । ले भोम से लग चांदनी, ए भी हारें छे हजार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -89
- एही आसिक करे बरनन, और आसिकै सुने इत । ए केहेवे लेवें मोमिन, या रसूल तीन सूरत || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -57
- एही आहार आसिकन का, एही सोभा सिनगार । झीलें सागर वाहेदत में, मेहेर सागर अपार || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -71
- एही औलिया अंबिया, एही कहे हैयात । दूजा हैयात जरा नहीं, बिना वाहेदत हक जात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -15
- एही कबीला एही घर, एही पूजें पानी आग पत्थर । जानें एही फना नासूत को, कछू नाहीं इन बिगर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -19
- एही करें खिलवत जाहेर, दूर करें तारीकी रात । क्यों फना रहे बका नजरों, ऊग्या सूर बका हक जात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -72
- एही कलाम अल्लाह के, अपनी देत खबर । काजी ईसा मेंहेदी महंमद, ए जुदे होए क्यों कर || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -29
- एही कही तुम हकीकत, ए कबूल करो हुकम सरीयत । आप रखो पाउं उस्तुवार, मैदान लड़ाई हो हुसियार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -18
- एही काम आसिकन का, हक इलम एही काम । नूरजमाल का जमाल, छोड़ें न आठों जाम || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -2
- एही काम आसिकन के, फेर फेर करे बरनन । विध विध सुख सख्य के, सुख लेवें सिनगार भिन भिन || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -70
- एही किताब बोहोतन पे, पर माएने न पाए किन । अब देखो आलम में, इन किताब नूर रोसन || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -12
- एही कुंजी कलाम हक इलम, खोले सब मगज किताब । आगू अर्स दिल मोमिनों, सो खोले जिन हादी खिताब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -44
- एही खासलखास गिरो महंमदी, जाकी बंदगी इस्क ईमान । इनों फैल ऊपर का ना रहे, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -35
- एही खासी गिरो हादी संग, एही फरदा कयामत । जाहेर देखावे नामे वसीयत, कछू छिपी न रही हकीकत || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -50
- एही खुलासा सब बात का, हकें किया हाँसी को । रेहेता रब्द रूहों इस्क का, सब केहेतियां बड़ा हम मों || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -30
- एही खूबी मेरे अंग को, देत नाहीं दरद । एही हांसी बुजरकी, करत इस्क को रद || ग्रं - किरन्तन, प्र -62, चौ -6
- एही खोले हकीकत मारफत, करे माएना जाहेर बातन । करे अर्स बका हक जाहेर, एही फजर कही हक दिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -48

- एही गिरो इसलाम की, खड़ियां तले अर्स । या दुनियां या दीन में, सब में इनको जस || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -7
- एही गिरो खासी कही, जिनमें महंमद पैगंमर । हकीकत मारफत खोल के, जाहेर करी आखिर || ग्रं - किरन्तन, प्र -121, चौ -12
- एही गिरो पैगंमरों आखिरी, कही जो खासल खास । जाकी सिफत हदीसों आयतों, पेड़ नूर बिलंद से पैदास || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -117
- एही गिरो पैगंमरों आखिरी, जिन लई महंमद बूंदें नूर । ए सोई उतरे अर्स से, जिन किए कौल हजूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -78
- एही गिरो रबानी, रूहें बीच दरगाह । कई हजारों सिफतें इन की, माहे बुजरक रूहअल्लाह || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -12
- एही चाल तुम चलियो साथजी, एही पांउ परवान जी । प्रगट मैं तुमको पेहेले कह्या, भी कहूं निरवान जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -3, चौ -3
- एही जिमी नूरजलाल की, जिन जानो बाग और । याही जवेर को मन्दिर, ताथें एक रस सब ठौर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -80
- एही झरोखे एही चबूतरा, दोऊ तरफ चेहेबच्चे दोए । एक पीछल जो छोड़िया, आगू दूजी भोम का सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -58
- एही ठौर आसिकन की, अर्स की जो अरवाहें । सो चरन तली छोड़ें नहीं, पड़ी रहे तले पाए || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -70
- एही तमाम जो पैदाइस कही, तिनका खुलासा कर देऊं सही । जिन सेती होवे मकसूद, इन नाबूद सेती ल्याया बूद || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -20, चौ -3
- एही तुमारी भूल है, तमें बंधन याही बात । एही फरामोसी तुम को, जो भूल गए हक जात || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -64
- एही दाभा दुनी सिफली, सब केहेसी अपने मुख । जो जैसा तैसा तिनों, छिपे न आखिर दुख सुख || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -8, चौ -19
- एही नाजी फिरका तेहत्तरमा, जिनमें लुदंनी पेहेचान । खोलें हक इसारतें रमूजें, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -8
- एही पट आड़े तेरे, और जरा भी नाहें । तो सुख जीवत अर्स का, लेवे ख्वाब के माहें || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -32
- एही पट फरामोस का, दिल में रही अंतर । जब हुकमें बंधाई हिम्मत, तब होस में न आवे क्योंकर || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -66
- एही फजर दिन मारफत, सब आवें मांहें दीन । तबहीं मुआ दज्जाल, आया सबों आकीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -86
- एही फरदा रोज कयामत, जो कही हजरत । सो ए हुए सबे जाहेर, जिनको दुनी ढूंढ़त || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -51

SRJIN

- एही फिरका नाजी कया, दे साहेदी फरमान । एक नाजी नारी बहत्तर, एही नाजी की पेहेचान || ग्रं - किरन्तन, प्र -121, चौ -11
- एही फौज दुनी अजाजील की, याही अकलें लगी लानत । पेहेचान हुई सब हुकमें, पीछे छूटी बखत कयामत || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -54
- एही बका अर्स की, हक करें हिदायत । खोली खिलवत गैब की, हक की वाहेदत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -14
- एही बड़ा अचरज, कहावत हैं बंदे । जानों पेहेचान कबूं ना हुती, ऐसे हो गए दिल के अंधे || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -24
- एही बड़ी इसारत, इमाम की पेहेचान । सबको सब समझावहीं, यों केहेवत है कुरान || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -78
- एही बड़े पहाड़ दो निसान, बका बतावें बैत-अल्ला । दे मुसाफ मगज साहेदियां, दिन देखावें नूरतजल्ला || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -81
- एही बीच वाहेदत के, खिलवत खुदाई । जो हक हादी रूहन की, नूर बका पातसाई || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -98
- एही बुजरकी साथ जी, भया गले में तौक । धनी को न देवे देखने, एही खूबी इन लोक || ग्रं - किरन्तन, प्र -62, चौ -9
- एही भांत महंमद उमत की, कही सिफत रसूल समान । धरे बोहोत नाम उमत के, ए जाने दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -11
- एही भूल फना दुनी की, डाले बीच निजस अल्ला कलाम । तरफ न पावे जिनकी, कहे सो हम बका इसलाम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -27
- एही मैं है हुकम, एही मैं नूर जोस । एही मैं इलम हक का, एही मैं हक करे बेहोस || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -17
- एही रस तारतम का, चढ्या जेहेर उतारे । निरविख काया करे, जीव जागे करारे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -142
- एही रूहों की बंदगी, जो कही खास उमत । एही अहेल किताब है, लिख्या दूसरे सिपारे जित || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -24
- एही लछन आसिक के, सब चढ़ते देखे रंग । तेज जोत रस धात गुन, और सब पख इंद्री अंग || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -38
- एही लदुन्नी हक इलम, करसी फजर । देखसी मोमिन अर्स को, रूह की खोल नजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -92
- एही लैलत-कदर की फजर, जया बका दिन रोसन । हक खिलवत जाहेर करी, अर्स पोहोंचे हादी मोमिन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -140
- एही शब्द एक उठे अवनी में, नहीं कोई नेह समाना । पेहेचान पिउ तूं अछरातीत, ताही से रहो लपटाना || ग्रं - किरन्तन, प्र -23, चौ -5

- एही सब्द सुन जागसी, बड़ी बुध होसी विचार । याही सदी आखिर की, हक सुख देसी पार || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -25
- एही सुनत-जमात, महंमद बेसक दीन । सकसुभे ना इनमें, जित असराफील अमीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -15
- एही सृष्ट ईश्वरी जाग्रत, आई अछर नूर से जे । मेहेर ले मेहेबूब की, रहे तुरी अवस्था ए || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -11
- एही हक इलम को लछन, आसिकों एही लछन । एही इलम इस्क के आरिफ, सोई अर्स रूह मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -6
- एही हमारा आकीन, हम लिया हक कर । आकीन कह्या रसूल का, सब देखावे नजर || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -15
- एहेडी हिन अदालत, आंऊं करण की डियां । हे दावो तो मूं विच जो, सचडो मूंजो मियां || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -71
- एहेडी हुई तो दिलमें, त मूंके जाहेर को केइए। इलम डेई मूं मंझ बेही, वैण वडा को कढे || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -19
- एहेडो संग करे मुंहसे, अची डिनिए सांजाए। इलम डिनिए बेसक जो, त आंऊं को बेठिस हीं पाए || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -3
- एहेना पात्र हसे ए जोग, आ लीलानो ते लेसे भोग । केसरी दूध न रहे रज मात्र, उत्तम कनक विना जेम पात्र || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -15
- एहेनी दयाए जोत एम करीस, चरण धणीना चितमां धरीस । इंद्रावती चरणे लागे आधार, सुफल फेरो करूं आवार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -22
- एहेने निरमूल करी नाखी तमे, हजी जोपे जाणी नथी अमे । एहेना रमाड्यां सहु रमे, मांहें बंधाणां सहु को भमे || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -36
- एहेने लाग्यो कोई एवो खार, मारो केड न मूके नार । में बांध्यां सामां हथियार, तो जाण्यो जोपे एहेनो मार || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -11
- एहेनो जे जोतां अर्थ, तेहेने जवाब एम देता ग्रन्थ । अकल अगम वैकुंठनो धणी, ए थोडी हजी करे घणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -10
- एहेवो छल करी छेतरी, मन मूल माहेंथी फेरी । एणे तो आप सरीखी करी, चित्त चितवणी बहुविध धरी || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -32
- एहेवो पकव प्रवीण नथी काई हूं, तो सिखामण तमने केम दऊं। हूं घणुए एम जाणूं सही, जे जीव मारूं समझाईं रही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -11

ऐ

- ऐता सुख तेरे सूल में, तो विलास होसी कैसा सुख । पर मैं ना पेहेचाने पिउ को, मोहे मारत हैं वे दुख || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -20

- ऐते दिन हाँसी खुसाली, करी रूहों दिल चाही जे । पर ए हाँसी हक दिल चाही, ताथे बड़ी हाँसी हुई ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -19
- ऐना मनोरथ अनेक पेर, उपाया अमने घणां रे । सनेह उपाईने आण्यां, सागर सुख तणां रे || ग्रं - रास, प्र -35, चौ -9
- ऐसा अब लग कबहूं, हुआ नहीं रोसन । सो हक हादी जानत, या जाने रूहें मोमिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -37
- ऐसा अबूझ अकरमी हुआ इन बेर, कछू न विचास्या न छोड़ी अंधेर । ऐसी आपसे ना करे कोए, खोया अपना परवस होए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -34
- ऐसा आगू होएसी, आतम नजरों भी आवत । जानों बात सुनों में धनीय की, पर मोहे अजूं बिलखावत || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -30
- ऐसा आवत दिल हुकमें, यों इस्कें आतम खड़ी होए। जब हक सूरत दिल में चुभे, तब रूह जागी देखो सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -1
- ऐसा इलम हकें दिया, हुआ इस्क चौदे भवन । मूल डार पात पसरया, नजरों आया सबन || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -35
- ऐसा इलम हकें भेजिया, आंखें खोल दई बातन । एक जरा सक ना रही, देखे बका वतन || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -52
- ऐसा इलम हादीय पे, देखावे हक वतन । आप पाओ पल में जगावहीं, इन इलम आधे सुकन || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -12
- ऐसा इस्क तुम पे, रूह से क्यों ए ना छूटत । पर ए खेल इन भांत का, जगाए भी न जागत || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -38
- ऐसा ईमान इन दुनी का, कहे महंमद को बरहक । और महंमद के फुरमाए में, फेर तिन में ल्यावें सक || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -31
- ऐसा ए जानत हैं, तो भी जाहेर चाहें दज्जाल । जब ए दज्जाल मारिया, तब दुनी रेहेसी किन हाल || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -43
- ऐसा कदीमीरे वतन, ऐसा इस्क आराम । ऐसी मेहेरबानगी गिरो को, सुख देत हैं आठों जाम || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -24
- ऐसा किया हकें सुपन में, जानों जागे में सक नाहें । ऐसी हुई दिल रोसनी, फेर बोलत सुपने माहे || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -20
- ऐसा खेल इन भांत का, यामें गई ना कबूं किन सक । ताको साफ किए हम हुकमें, सब जले बीच इस्क || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -10
- ऐसा खेल किया हुकमें, हमारी उमेदां पूरन । हम सुख लिए अर्स के, दुनी में आए बिन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -94
- ऐसा खेल छल का, छोड़ाए नहीं । ब्रह्मांड की कारीगरी, सारी करी सही || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -148

- ऐसा खेल देखाइया, जानें हम आए मांहें इन । इस्क हम में जरा नहीं, सुध हक न आप वतन || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -148
- ऐसा खेल देखाइया, जो मांग लिया है हम । अब कैसे अर्ज करूं, कहोगे मांग्या तुम || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -1
- ऐसा खेल पैदा हुआ, और सोई आए मोमिन । सोई खेल देखे पीछे, भूल गए आप वतन || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -67
- ऐसा चौदे तबक का निमूना, क्यों हक को दिया जाए । ए सब्द झूठी जिमी का, क्यों सकिए अर्स पोहोंचाए || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -18
- ऐसा जब दिल में आइया, दिया जोस हकें बल । उतरी किताबें कादर से, पोहोंच्या हुकम असल || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -64
- ऐसा जाहेर कर लिख्या, पर जिनको नहीं आकीन । सो कैसे कर मानहीं, जिनकी मत मलीन || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -33
- ऐसा जोस बल महंमद का, जबराईल जानवर || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -48
- ऐसा तो कोई न मिल्या, जो दोनों पार प्रकास । मगन पिया के प्रेम में, उधर भी उजास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -49
- ऐसा तो कोई ना मिल्या, जो दोनों पार प्रकास । मगन पिया के प्रेम में, भी स्यानप ग्यान उजास || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -61
- ऐसा था फरेब अंधेर का, कहूं हाथ न सूझे हाथ । बंध पड़े नजर देखते, तामें आई रूहें जमात || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -2
- ऐसा ना कोई उमराह, जो भाने दिल का दुख । जब करसी तब होएसी, दिया साहेब का सुख || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -23
- ऐसा नूर-जमाल जो, रूहें रहें इन दरगाह । ए किस्सा सुनते विचारते, हाए हाए उड़त नहीं अरवाह || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -41
- ऐसा पकव प्रवीन ना कछू हूं, तो सिखापन तुमको क्यों देऊं। मैं मन में यों जान्या सही, जीव अपना समझाऊं रही || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -11
- ऐसा पहले कह्या रसूलने, मेरा नेक हैं हिंद स्थान || ग्रं - सनंध, प्र -34, चौ -9
- ऐसा फरमान भेजसी, और याद देसी रसूल । जिन अंग इस्क तिनका, क्यों होसी ऐसा सूल || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -17
- ऐसा फरेब देखावसी, तुम हूजो खबरदार । तुम जिन भूलो आप अर्स मुझे, मैं तुमारा परवरदिगार || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -56
- ऐसा बल रूह अर्स के, तो बल हक होसी किन विध । ए बेवरा जाने पाक मोमिन, जिन हक अर्स दिल सुध || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -127
- ऐसा बुजरक खेल देखाया, ऐसा न देख्या कब । ए बातें हाँसी फरामोसी की, करसी इस्क ले अब || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -56

- ऐसा बेसक चौदे तबक में, कोई न हुआ कबूं कित । इन नुकते सब बेसक हुए, ऐसी बेसकी आई इत || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -12
- ऐसा मता मोमिन, अर्स सेती ल्यावत । बुतखाकी सरभर रूहों की, समझे बिना करत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -102
- ऐसा मौत अपना जान के, लेत हैं नुकसान । जाग के नफा न लेवहीं, सुन ऐसा हक फुरमान || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -41
- ऐसा रसूल भेजिया, और भेज्या फरमान । और संदेसे रूहअल्ला, तो भी हुई नहीं पेहेचान || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -43
- ऐसा समया इत हुआ, आए पोहोंचे इन मजल । कोई कोई लाभ जो लेवहीं, जिन जाग देखाया चल || ग्रं - किरन्तन, प्र -92, चौ -13
- ऐसा समे जान आए बुध जी, कर कोट सूर समसेर । सुनते सोर सब्द बानन को, होए गए सब जेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -59, चौ -1
- ऐसा सास्त्रों में लिख्या, ब्रह्म ब्रह्मसृष्टी सों । इत आए करसी अदल, दे दीदार सब को || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -29
- ऐसा साहेब इस्क, करत निसबत जान । हाए हाए भूली अरवाहें असल, परत नहीं पेहेचान || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -73
- ऐसा साहेब बुजरक, जो हमेसा कायम । सो तले झांकत नूरजमाल के, आवे दीदारें दायम || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -81
- ऐसा सुच्छम सरूप देखाए के, दे धाम करी चेतन । इत विलास कई बिध के, मांहें सिरदारी सैयन || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -32
- ऐसा हक जो कादर, सब विध काम पूरन । ए सुन इस्क न आवत, तो कैसे हम मोमिन || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -25
- ऐसा हक है सिर पर, कर दई हक पेहेचान । ऐसी हक की मैं जोरावर, क्यों रहे दीदार बिन प्रान || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -23
- ऐसा हकें जाहेर किया, ऊपर रूहों मेहेर मुतलक । कई बिध बताई रसूलें, पर क्या करे हवाई खलक || ग्रं - किरन्तन, प्र -118, चौ -10
- ऐसा हलका कहे रसूल को, सो सुन होत मोहे ताब । पर दोस देऊं मैं किनको, आगे तो दुनियां ख्वाब || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -46
- ऐसा हुआ न कोई होएसी, जो जावे छोड़ सरहद । फुरमान ल्यावे नूर पार का, बिना एक महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -28
- ऐसा हेत देख्या हक का, तो भी लगे न कलेजे घाए । ऐसी रब रमूजें सुन के, हाए हाए उड़त नहीं अरवाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -27
- ऐसा होए खांगडू जुदा पड़्या, एती अगनिएँ अजू न चुड़या। पांच बरस का होए जो बाल, सो भी कछुक करे संभाल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -35

- ऐसी अचरज बातें हक की, क्यों कहूं झूठी जुबान || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -25
- ऐसी अनेक आंकड़ियों मिने, बोले बारे तरफ । रेहेस रंचक धरे बीच में, समझाए ना किने हरफ || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -9
- ऐसी आसिक कबूं ना करे, पीछे रहे बुलावते हक । दुख कुफर में पड़ के, सुख बका छोड़े इस्क || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -13
- ऐसी कई आंकड़ियों मिने, बोलें बारे तरफ । रेहेस रंचक धरें बीचमें, समझाए ना किन हरफ || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -7
- ऐसी करी बीच आलम, रूहअल्ला के इलम । मास्या कुली दज्जाल को, जो करता था जुलम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -26
- ऐसी कुंजी हमें दई, जो सहरें कुलफ लगाए । तो फरामोसी क्यों रहे, पर हाथ हुकम जगाए || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -69
- ऐसी क्यों होवे हमसे, ऐसे क्यों होवें बेसुध हम । खेल फरेब लाख देखिए, पर क्यों भूलिए इन खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -42
- ऐसी खूबी सोभा सुन्दर, जो सांची सूरत हक । नामै आसिक इन का, सब पर ए बुजरक || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -16
- ऐसी गिरो जो दरगाही, ताए रखना आप दृढ़ाई । जेती बातें हैं हराम, ए नजीक नाही तिन काम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -24
- ऐसी चारों तरफों कई बैठकें, अंदर या गिरदवाए । ए सुख अखंड अर्स के, क्यों कर कहे जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -77
- ऐसी छोड़ साहेबी अजाजील, पीठ दई आप बचाए। ए खेल ऐसा कुफार का, बिना काजी कौन बताए || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -38
- ऐसी जगाए खड़ी करी मुझे, और सब पर मेरी बुध । खबर न अछर ब्रह्म को, सो ए भई मुझे सुध || ग्रं - किरन्तन, प्र -97, चौ -17
- ऐसी तमें देखाऊं दुनियां, और पनाह में राखों छिपाए । ओ तुम ना चीन्ह ही, ना तुमें ओ चिन्हाए || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -4
- ऐसी तो कोई ना हुई, बिना इलम होवे हुसियार । हाँसी बिना कोई ना रही, छोड़ ना सके अंधार || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -61
- ऐसी दई उलटाय के, बैठी हों कदम के पास । दरद न कयो जाय दिल को, उमेद न रही कछू आस || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -11
- ऐसी दारू ल्याए रूहअल्ला, जासों मुरदा जीवता होए । पर फरामोसी इन हाँसी की, उठ न सके कोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -11
- ऐसी देखाई दुनियां, जानें सांच है हमेसगी । सांचो विचार जब कर दिया, तब झूठों भी झूठ लगी || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -56

- ऐसी देखाई दुनियां, जित कोई हक को जानत नाहें । काहूँ तरफ न पाइए अर्स की, बैठे बका बैत के माहें || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -35
- ऐसी देखोगे दुनियां, हक न काहूं खबर । ना सुध अर्स न आपकी, कई ढूंढ़त सहूर कर || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -14
- ऐसी प्रीत जीव सृष्ट की, जाके पिउ विष्णु सेखसाई । वाको रटत जात अहनिस, ब्रह्म अछर सुध न पाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -97, चौ -4
- ऐसी बड़ाई औलियों, हक अपने मुख दें। कोई याको न जाने मुझ बिना, मैं छिपाए तले कबाए के || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -30
- ऐसी बड़ाई कई सिर मेरे, दे दे लई जो दाब । सब दुनियां के दिल में आनी, दे साहेदी सब किताब || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -27
- ऐसी बड़ाई केती कहूं, जो करी अलेखे अपार । सो नेक कही में गिरो समझने, समझेगी रूह सिरदार || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -26
- ऐसी बड़ाई दई हम गिरो को, और किए औरों के अधीन । फेर कहे इन पिउ पेहेचाने, याही में आकीन || ग्रं - किरन्तन, प्र -81, चौ -5
- ऐसी बंदगी खोए के, हक क्यों दे फल नुकसान । ए माएने जाहेर तो कहे, जो अजाजीलसों नहीं पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -25
- ऐसी बाजी इन छल की, ब्रह्मांड जो रचियो । देख बाजी कबूतर, साथ मांहें मचियो || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -150
- ऐसी बात करे रे पिउजी, पर ना कछू साथ को सुध जी । नींद उड़ाए जो देखिए आपन, तो आए हैं आप ले निध जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -4
- ऐसी बातें हक की, इत कोई सक ल्याओ जिन । देख दिन में ल्यावें रात को, और रात में ल्यावे दिन || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -22
- ऐसी रूहें वाहेदत की, ताए फरेब पोहोंचे क्यों कर । ए बड़ा रूहों का तअजुब, जो बांधी झूठ सों नजर || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -78
- ऐसी साख देवाई कर सनमंध, आतम करी जाग्रत । सो आए धनी मेरे धाम से, कही विवेके कयामत || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -33
- ऐसी हिंदुओं की कही सिफत, आखिर हिंदुओं में मुलक नबुवत । और आप हजरत रिसालत-पनाह, जहूद फकीरों में पातसाह || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -24
- ऐसी हुई न होसी कबहूं, जो तुम को दई साहेबी । ए सुध अजूं तुमें ना परी, सुध आणू तुम होएगी || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -125
- ऐसे अति जोरावर, जो रेहेत हक हजूर । तो मुख से सब्द ना केहे सकों, इन बल हक जहूर || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -68
- ऐसे कई उजाड़े मंदिर, ए सब को देवे छेह । मिलापै में रंग बदले, अधबीच तोड़े नेह || ग्रं - किरन्तन, प्र -33, चौ -11

- ऐसे कई सुख परआतम के, अनुभव कराए अंग । तो भी इस्क न आइया, नेहेचल धनी सों रंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -34
- ऐसे कई सुख हक हैड़े मिने, सो ए जुबां कहें क्योंकर । हैड़े बल तो नेक कहया, जो इत बूंद आई उतर || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -47
- ऐसे कायम सुख के जो धनी, किन विध दई भुलाए । इन दुख में देखावत ए सुख, हिरदे तुम ही चढ़ाए || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -40
- ऐसे किए हमें इलमें, कोई छिपी न रही हकीकत । जाहेर गुझ सब असों की, ऐसी पाई हक मारफत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -12
- ऐसे कोट ब्रहमांड को, एक फूंके देवे तोड़। तो भी निमूना इन का, कहया न जावे जोड़ || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -73
- ऐसे कोट ब्रहमांड होवें पल में, अद्वैत के हकम । ए कहावें ब्रहम सुध नहीं ब्रहम घर की, द्वैत अद्वैत नहीं गम || ग्रं - किरन्तन, प्र -31, चौ -9
- ऐसे खेल अनेक एक खिन में, करे अग्याएँ करतार । सो करतार ठौर क्यों पाइए, जो लों उड़े न माया मोह अहंकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -30, चौ -14
- ऐसे खेल कई हक के, बैठे देखावें अर्स माहें । रूह बकाएँ लई देह नासूती, जो मुतलक कछुए नाहें || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -23
- ऐसे खेल कई हुए, सो फना ही हो जात । एक जरा बाकी ना रहे, कोई करे न बका की बात || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -15
- ऐसे तो पाइए बीच फजर, जो अर्स दिल कहे मोमिन । करें कजा मुसाफ ले, सो भी बीच गिरो इन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -39
- ऐसे परदेस में बैठाए के, इन बिध लिखी गुहाए । इन धनी की गुहाई ले ले, हाए हाए उड़त ना अरवाए || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -87
- ऐसे पल में पैदा करे, पल में करे फनाए । ऐसा बल रखे कुदरत, नूरजलाल के || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -6
- ऐसे बड़े हाथी अर्स के, और बड़े कई पसुअन । जेता पसु पंखी अर्स का, तिन सबों अस्वारी मन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -51
- ऐसे बिना हिसाबें मलकूत, सो तीनों फरिस्ते समेत । सिफत कर कर आखिर, कहे नेत नेत नेत || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -37
- ऐसे बेसक होए के, तुम अजूं न अर्स लज्जत । एता मता ले दिल में, हाए हाए तुम दरदा भी न आवत || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -118
- ऐसे ब्रहमांड अलेखें अछरथें, पलथें पैदा फना होत । ऐसे इंड में चींटी बराबर, हम गिरो हुई उद्दोत || ग्रं - किरन्तन, प्र -81, चौ -8
- ऐसे माएने गुझ कई, तिन गुझोंमें भी गुझ । ए माएने अपने आप बिना, और न काहूं सुझ || ग्रं - सनंध, प्र -1, चौ -5

- ऐसे में आए रसूल, हाथ लिए फरमान । फैलाया नूर आलम में, वास्ते मोमिनों पेहेचान || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -64
- ऐसे सबे लसकर, सुमार नाहीं बल । चिन्हार इस्क सबों को, बंदे कायम कदम तल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -53
- ऐसे सुख अलेखे अखंड, भुलाए दिए माहें खिन । सुख देखत उनथें अधिक, पर आवे अग्याएं अंतस्करन || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -41
- ऐसे सुख कहूं मैं केते, घर बड़े बड़ो विस्तार । सो सारे अगिन होए लागे, जब मैं कहे सब्द दोए चार || ग्रं - किरन्तन, प्र -120, चौ -9
- ऐसे ही असल के, ना कछू बुने वस्तर । ऐसे ही भूखन बने, किन घड़े न घाट घड़तर || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -35
- ऐसे ही थंभ तिन पर, चौड़ा अति विस्तार । या विध चढ़ता चढ़या, गिरदवाए बनी किनार । || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -27
- ऐसे ही प्रतिबिंब इनके, मोहोल बोलें कई और । बानी बाजे निरत अवाजे, होत निरत कई ठौर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -69
- ऐसे ही सागरों रांग के, बारे हजार द्वार । और खूबी खुसाली ज्यों खिड़कियां, कहूं गिनती न आवे पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -19
- ऐसो तिन को कहा वृतांत, सो भी राजा तोको कहूं द्रष्टांत । सुन राजा कहूं सो जुगत, जासों पेहेचान होवे दोऊ मत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -7
- ऐही सुरत अब लीजो साथ जी, भुलाए देओ सब पिंड ब्रह्मांड । जागे पीछे दुख काहे को देखें, लीजे अपना सुख अखंड || ग्रं - किरन्तन, प्र -89, चौ -5
- ऐही हाँसी इसही बात की, फरामोसी में जाग्रत । जागे में भी सक नहीं, कोई ऐसी इस्के करी जो इत || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -98

ओ

- ओ उतरे कहे अर्स से, ए कुंन केहेते पैदास । जाहेर देखी तफावत, ए आम वे खासलखास || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -60
- ओ उरझे जुदे नाम धर, ख आलम का आया आखिर । अपनी अपनी में समझे सब, जुदा न रह्या कोई अब || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -30
- ओ खासी गिरो और महंमद, आए दो बेर माहे जहूदन । गिरो बचाई काफर डुबाए, ए काम होए ना महंमद बिन || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -21
- ओ खोजे अपने आप को, और खोजे अपनो घर । और खोजे अपने खसम को, और खोजे दिन आखिर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -7
- ओ जाने हम कदीम के, आद हैं असल । कई चले जात हैं मलकूत, नूरजलाल के एक पल || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -64

SPJIN

- ओ जाने हम सीधा चलें, इन बिध राह मारत । तो कही पुल-सरात, तरवार धार है इत || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -29
- ओ तो भए नासूत में, मलकूत है तिन पर । ए तो दोऊ फना मिने, ज्यों लेहेरें उठे मिटें सागर || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -28
- ओ तो ले ले माएने मगज, लिखे बड़े निसान । सो ए धरे सरत पर, करने अपनी पेहेचान || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -14
- ओ दुख के घर सो भी ना छोड़े, तुम याद ना करो सुख के घर जी । सास्त्र सबों पे साख देवाई, तुम अजहूं ना देखो चित धर जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -17
- ओ राजी एक भेख में, ताए मार छुड़ावें दाब । ओ रोवे सिर पीटहीं, ए कहें हमें होत सवाब || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -8
- ओ हांसी ठठोली करे हरामी, ताए ले बैठो मंडली मुख । ए नीच करम डबोवे नरक में, पीछे छूट पाओगे कब सुख || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -15
- ओगन-पचास चौपड़े, ताके कहूं मंदिर । हर एक के एक सौ चौबीस, जमे छे हजार छेहत्तर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -82
- ओगन-पचास चौपड़े, ताके जमे कियो थंभन । एक सौ चवालीस हर एको, जमे सात हजार छप्पन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -87
- ओगन-पचास चौपड़े, तिन गली गिनों यों कर । हर एक की चौबीस कही, जमे अग्यारे सै छेहत्तर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -92
- ओठा लेवे जिमी बिना, पांव बिना दोड़ी जाए। जल बिना भवसागर, यामें गलचुए खाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -9
- ओठा लेवे जिमी बिना, पांव बिना दौड़ी जाए । जल बिना भवसागर, तिनमें गोते यों खाए || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -13
- ओतड दीसे रे अति घणूं दोहेली, हाथ न थोभे रे पाय । काम नहीं रे इहां कायर तणूं, सूरे पूरे घायलें लेवाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -67, चौ -4
- ओतो आगे अंदर उजली, खिन खिन होत उजास । देह भरोसा ना करे, पिया मिलन की आस || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -11
- ओरो आव वाला आपण घूमडले घूमिए, वाणी विविध पेरे गाऊं । अनेक रंगे रस उपजावीने, मारा वालैया तूने वालेरी थाऊं || ग्रं - रास, प्र -23, चौ -1
- ओरो आव वाला आपण फूंदडी फरिए, फरिए ते फेर अपार । फरतां फरतां जो फेर आवे, तो बांहोंडी म मूकसो आधार || ग्रं - रास, प्र -17, चौ -1
- ओलखवाने धणी आपणो, कहूं तारतम विचार जी । साथ सकल तमे ग्रहजो चितसूं, नहीं राखू संदेह लगार जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -2, चौ -13
- ओलखाण सहुने अंगनी, आतमनी नहीं द्रष्ट । वैराटनो फेर अवलो, एणी विधे सहु सृष्ट || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -25

- ओलखी इंद्रावती, वाले प्रगट कयूं मारू नाम । आ भोम भरम भाजी करी, देखाड्या घर श्री धाम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -44
- ओलखी तमने अमें जुध कीधा तमसू, मन चित बुध मोह ग्रही अहंकार । ए विमुख वातों मोटे मेले वंचासे, मलसे जुथ जहां बारे हजार || ग्रं - किरन्तन, प्र -40, चौ -3
- ओलखी साथ भेलो करूं, द्रढ करी दऊं मन । रामत देखाडी जगवू, कही ते प्रगट वचन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -53
- ओलखीने टालो अंतर, आपोपूं संभारो घर । हवे घर तणी केही कहूं वात, वचन विचारी जो जो प्रकास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -13
- ओलख्या नहीं तमें आचारज जी ने, तो भरम मांहें भमया । वैष्णव सकलने तमें वांकू कहावो, तो तमें नीचा नमया || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -18
- ओलिया लिल्ला दोस्त, मोमिन बीच खिलवत । ए अरवाहें अर्स की, इनों दिल में हक सूरत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -51
- ओलिया वालोलिया ने पखालिया, इसक फाग वेल सार । आरिया तो अति उत्तम दीसे, जाणे कलंगे रंग प्रतकाल || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -21
- ओली कुमत कहिए तेणे सूं थाए, अंध कूप पड्यो पचे माहें । ए सुकजीना कया वचन, जीव विमासी जुए जोपे मन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -9
- ओल्या दुखना घर ते पण मेले नहीं, तमे सुखना घर न संभारजी । सघला ग्रन्थ पाए साख पुरावी, साथ हवे तो दोष तमारो जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -16
- ओसीकल वचन वाले कह्या, कांई ते में न कहेवाय । सुकजीए निरधारियूं छे, पण ते में लख्यूं न जाय || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -52
- ओहि ओहि करती फिरों, और करों हाए हाए रे । पिउजी बिछोहा क्यों सहूं, जीवरा टूक टूक होए न जाए रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -1
- ओही उनों का किबला, छोड़ें नाहीं ख्याल । मैं मैं करत मरत नहीं, इनके एही फैल हाल || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -19

औ

- और अंगुरियों बिछिए, करे स्वर रसाल । हीरे और लसनिएं, मानिक रंग अति लाल || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -130
- और आई सदी बारहीं, इनमें फजर भई । लिख्या मुसाफ बीच आयतों, और हदीसों में कही || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -8
- और आए इमाम, ऊपर अपनी सरत । दे साहेदी महंमद की, करे इमामत || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -28
- और आग सब सोहेली, पर ए आग सही न जाए। अब देखोगे आपहीं, रेहेसी सब तलफाए || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -11

- और आगे नूह तोफान के, बीच लैलत कदर । गिरो उतरी अर्स से, जो चढ़ी किस्ती पर || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -34
- और आगे बुत बोले हुते, सांचा आखिरी पैगंमर । फुरमान ल्याया हक का, तुम झूठे हो काफर || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -38
- और आरोगें भी इतहीं, इत बैठे नूरजमाल । दौड़त रूहें निहायत, ए क्यों कहूं खुसाली ख्याल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -37
- और आसा उमेद कछू ना रही, और रख्या ना कोई ठौर । एता दृढ तुम कर दिया, कोई नाहीं तुम बिना और || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -18
- और आसिक बड़ी रूह के, इनमें नाहीं सक । इस्क हमारे रूहन के, जानत हैं सब हक || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -9
- और आसिक वाहेदत के, इनहूं बड़ी पेहेचान । एही खूब खेलौने हक के, मुख मीठी सुनावे बान || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -86
- और इनोंके नहीं है कान, और इनोको नहीं है अकल || ग्रं - सनंध, प्र -34, चौ -6
- और इलाज जो कई करो, पर पावे ना बिना किसमत । सो हक कदम ताले मोमिन, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -69
- और इस्क कोई जिन कथो, इस्के ना पोहोंच्या कोए । इस्क तहां जाए पोहोंचिया, जहां सुन्य सब्द ना होए || ग्रं - सनंध, प्र -9, चौ -5
- और इस्क कोई जिन कथो, इस्कें ना पोहोंच्या कोए। इस्क तहां जाए पोहोंचिया, जहां सुन्य सब्द ना होए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -5
- और इस्क भी जोरावर, तिनकी एह चिन्हार । जिन घट सुनत आवहीं, सोई जानो सिरदार || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -93
- और इस्क माहें रूहन, हके अर्स कह्यो जा को दिल । हकें दिल दे रूहों दिल लिया, यों एक हुए हिल मिल || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -109
- और उपाय कई करो, पर पाइए न या घर बिन । अंदर जागके चेतिए, ए अवसर अधखिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -12
- और उमत जो लाहूती, ब्रह्मसृष्टी घर धाम । इन को सुख देखाए के, पूरन किए मन काम || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -111
- और एक कागद काढ़िया, सुकदेवजी का सार । हदियों का कोहेड़ा, बेहदी समाचार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -9
- और एक मता रूहन का, देखो अर्स वाहेदत । लीजो मोमिन दिल में, ए हक अर्स न्यामत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -103
- और एतो लीला किसोर, सैयां सुख लेवें अति जोर । ए लीला सुख केता कहूं, याको पार परमान न लहूं || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -100

- और कई इनाएतें तुम से, सो कहाँ लो कहूं वचन । सो कई आवत हैं नजरों, पर कयो न जाए सुकन || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -36
- और कई बातें खुदाए से करी, लिए नब्बे हजार हरफ दिल धरी । तीस हजार का हुआ हुकम, जाहेर करो दुनियाँ में तुम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -14
- और कई रंग दोऊ कमल में, टेढ़े चढ़ते निपट कटाव । मेहेर भरे नूर बरसत, हक सींचत सदा सुभाव || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -153
- और कछुए दिल है नहीं, बिना हक वाहेदत । और जरा कित कहूं नहीं, वाहेदत इस्क निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -93
- और करी मेहेर महंमदें, अन्दर बैठे आए। कई विध करी बका रोसनी, सो इन जुबां कही न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -11
- और कलस ऊपर गुमटियों, ए जो कहे कंगूरे बारे हजार । ए जोत जुबां ना केहे सके, झलकारों झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -98
- और कही जो विध रांग की, कलस कंगूरे बीच आसमान । द्वार द्वारी कही गिनती, ए क्यों होए सिफत बयान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -63
- और कहूं जाए छिपोगे, के हमको करोगे दूर । के इतहीं बैठे देखाओगे, धनी अपने हजूर || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -40
- और कहूं मैं अर्स की, ज्यों खबर उमत को होए। सब विध कहूं कायम की, ज्यों समझे सब कोए || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -2
- और कहूं लैलत कदर की, जो कहे तकरार तीन । हादी हुकमें रूहें फरिस्ते, बीच नाजल इसलाम दीन || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -33
- और कहे जो तीस हजार, ए तुम पर रख्या अखत्यार । बाकी रहे जो तीस हजार, आखिर इन पर है मुद्दार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -15
- और कहे नासूत मलकूत, और तिन पर ला-मकान । पढ़ के वेद कतेब को, करत माएने एह निदान || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -42
- और कहया देख दाहिनी तरफ, मोतिन के मुंह पर कुलफ । पूछा रसूलें कुलफ क्यों किया, तेरी उमतें गुनाह कर लिया || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -12
- और कहया बीच हदीस के, मेरे पीछे होसी इमाम । मैं डरता हो तिन से, गुम करसी गिरो तमाम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -9
- और कागद सब उड़ गए, उड्यो सबों को अग्यान । पसरयो प्रकास जो पिउ को, ब्रहम सृष्ट प्रगट भई पेहेचान || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -11
- और काम हक को कोई नहीं, देत रूहों सुख बनाए । वाहेदत बिना हक दिल में, और न कछुए आए || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -51
- और किए मुहककों माएने, जुदे जूदे दिल ल्याए । तिन सबों से तेहेकीक, माएने गुझ क्यों समझाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -49

- और कुफर दुनी जो पहाड़ सी, सूर दूजे कायम करत । हमें मेहेर कर मोमिनों पर, बातून माएने लिखत || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -33
- और कुमारका बृज वधू संग जेह, सुरत सबे अछर की एह । जो व्रत करके मिली संग स्याम, मूल अंग याके नाहीं धाम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -30
- और केते कहूं जानवर, छोटे बड़े करें खेलि । ए खुसाली खावन्द की, रूहों करावें इस्क केलि || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -15
- और कोई अर्स अजीममें, पोहोंच ना सकत । जित हक हादी रूहें, महंमद तीन सूरत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -41
- और कोई ढील करे जो तांहीं, तीन रात रहे मजल माहीं । तिनको कछुए नहीं आजार, तेहेकीक यों ही है निरधार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -19, चौ -8
- और कोई ना खोल सके, तीन सूरत का हाल । फैल हाल दोऊ उमत के, तोको लिखिया नूरजमाल || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -52
- और क्या चीज ऐसी अर्स में, जो सोभा देवे सरूप को । हक सरभर कछू न आवहीं, रूह देखे विचार दिल मों || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -49
- और खलक जो इनके तले, तिन खलकों को होए जुलजुले । पैदा किया आफताब रोसन, ए दिन हुआ वास्ते मोमिन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -15
- और खावंद जो खेल के, जाको दुनियां सब पूजत । सो कहे हमों न पाइया, हक क्यों कर है कित || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -7
- और खूबी इन कलंगी, और दुगदुगी सलूक । और पाग छबि रूह देख के, होए जात नहीं भूक भूक || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -11
- और खेल की बातें सब, होसी बीच खिलवत । लेसी खेलका सुख खिलवत में, लिया खेलमें सुख निसबत || ग्रं - सिंधी, प्र -16, चौ -16
- और खेलौने जो हक के, सो दसरा क्यों केहेलाए । एक जरा कहिए तो दूसरा, जो हक बिना होए इप्तदाए || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -84
- और गत पसुअन की, खेल बोल इनों और । क्यों कहूं सिफत इनों की, जो बसत सबे इन ठौर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -41
- और गिरो फरिस्तन की, जिनका कायम वतन । दुनियां कायम होएसी, सो बरकत गिरो इन || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -59
- और गिरो फरिस्तन की, मतकी परहेजगार । ए भी आए लैलत कदर में, तीनों तकरार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -50
- और गिरो महंमद मोमिनों, ए उन पर हुए मेहेरबान । तो दोस्त कहे दुस्मनों, ए मोमिनों बड़ी पेहेचान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -14
- और गिरो रूहें फरिस्ते, दोऊ कही रबानी । माहें तीन सूरत महंमद की, जिन मुरग बूंदें लई पेहेचानी || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -86

- और घाट बिना गले, क्यों जीव टल होसी आतम रे । तीन दिवाल आड़ी भई, सो उड़े ना बिना खसम रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -55
- और चाहे कोई खोलने, क्योंकर खोले सोए । सो कौल खोले हक हुकमें, फैल हाल जिनों के होए || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -74
- और चोली जो चरनियां, सब अंग में रहे समाए । बरनन न होए एक अंग को, तामें बैठियां सब लपटाए || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -30
- और चौक बड़ा जो बीच का, सीढ़ी सनमुख आणू द्वार । सोए बराबर द्वार के, सोभा कहूं जो होए सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -35
- और जरा न हक बका बिना, खेल सदा होत नूर से । एक पल में कई पैदा करे, इंड उड़ावे पल में || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -55
- और जाहेर दिल जो मजाजी, सो भी कहे गोस्त टुकड़े । सो क्यों सुनसी केहेसी क्या, जो कहे अंधे बेहेरे मुरदे || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -34
- और जित आया हक इलम, अर्स दिल कहया सोए। हक न आवें इस्क बिना, और हक बिना इस्क न होए || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -41
- और जिद कर आम खलक सों, वे तेरे सामी ल्यावें हुज्जत । ताए समझाओ जिदसों, जो जाहेरी चले सरीयत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -100
- और जिन छुओ कुरान को, यों हकें लिखी हकीकत । वाको नापाकी ना टरे, बिना तौहीद मदत || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -28
- और जेती किताबें दुनी में, तिन सबों पोहोंची सरत । सो सब खोली किताबें हुकमें, केहे दई सबों कयामत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -7
- और जेती कोई वारसी नाम, सो ना पकड़ें हाथ हराम । जिनों किया साहेब तेहेकीक, लई मिरास अल्ला नजीक || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -36
- और जो अंधेरी से पैदा भए, काफर नाम तिनोंके कहे । फिरे मन के फिराए उलटे फेर, काम हाल उनों के अंधेर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -20
- और जो इनके तले, ठकुराइयां कहावत । देखाए दुनी को साहेबी, अपने तले ल्यावत || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -23
- और जो उपजे कुंन से, जो आदम की नसल । दावा किया मोमिन का, जो दुस्मन अबलीस असल || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -60
- और जो कोई पाक गिरो आकीन, किया अमानत बीच अमीन । इत कही जो इसारत, ए जो पाक कही उमत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -30
- और जो कोई साहेब सों फिरे, काम दुनी का दिल में धरे । याही में पावे आराम, सोए रहे छल बाजी काम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -21
- और जो चौसठ हवेलियां, एक एक गली गिरदवाए। एक एक द्वार दो दो पौरी, इन बिध ए सोभाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -95

- और जो जाहेरी उमत रही, दस बिध तिनको दोजख कही । पुल-सरात कही खाँडे की धार, गिरे कटे नहीं पावे पार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -11
- और जो झरोखे गिरदवाए के, तिनही के सरभर । एता ऊंचा जिमी से, देखें हुकमें रूहें नजर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -33
- और जो टेढ़ा कहे रसूल को, मैं तिनका निकालूं बल । पर गुस्सा करूं मैं किन पर, आगे तो सब मृग जल || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -47
- और जो पैदा जुलमत से, सो तुम जानत हो सब । ए क्यों छोड़ें हवा को, जिनों असल देख्या एही रब || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -35
- और जो मजकूर हुई अंदर, कौल कहे इसारत । ए साहेदी हादी मोमिन बिना, तो ए किनकी को खोलत || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -18
- और जो हक के दिल में, बाकी होसी अब । जो तुम देखाओगे, सो रूहें देखें हम सब || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -39
- और जोत जो बिरिख की, सो भी बीच आकास और बन । पार नहीं इन जोत की, पर एह रंग और रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -25
- और झुन्ड जो दूसरा, तरफ दाहिनी सोए । छे छाते सीढ़ियों पर, बांधी मिल कर दोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -11
- और ठौर न काहूं अर्स बिना, अर्स न कहं इंतहाए । जो आप कछुए है नहीं, तिन क्यों अर्स नजरों आए || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -23
- और ठौर हुकमें खड़ा किया, सो जाए लग्या नूर आसमान । जो एक ठौर कदी न देखिए, तो और ठौर बिलंद हुआ जान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -11
- और तफरका भए, चले कौल तोड़ कर । दाएं बाएं चलाए दुस्मनें, मारे गए हक बिगर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -39
- और तले जो अधुर, दोऊ जोड़ सोभित जो मुख । रेखा लाल दोऊ सोभित, रूह देख पावे अति सुख || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -133
- और तिन दिन होसी अंधाधुंध, द्वार तोबा के होसी बंध । कहया होसी और खेस, तब कोई किसी का नाहीं खेस || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -4
- और तीन दिन कहे रसूल लों, चौथे रूहअल्ला आए इत । रोज पांचमें इमामें जमा किए, सो पाई जुमां बीच साइत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -22
- और तीनों सूरत, रूहें फरिस्ते उमत || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -78
- और तीस गुझ रखो, वे आखिर पर मुद्दार । सो हम आए के खोलसी, अर्स बका के द्वार || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -28
- और तो कोई है नहीं, बिना एक हक जात । जात मांहें हक वाहेदत, हक हादी गिरो केहेलात || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -3

- और थंभ दोए पाच के, दोऊ तरफों नीलवी संग । द्वार नीलवी संग दोए पाच के, करें साम सामी जंग || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -13
- और दिल हकीकी अर्स मोमिन, हके दिल अर्स कया इन । दिल मजाजी गोस्त टुकड़ा, और ऊपर कया दुस्मन || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -40
- और दिल हकीकी मोमिन, सो कह्या है अर्स हक । तरफ नहीं दिल पाक की, जित साहेब की बैठक || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -105
- और दुनियां ने सब फसल पाई, उमत बाग हासिल आई । एह खुदाए का बरस्या नूर, देखो छत्ते का जहूर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -80
- और दूनी के दिल पर, किया अबलीस पातसाह । सो गुम हुए बीच रात के, क्यों ए न पावें राह || ग्रं - किरन्तन, प्र -118, चौ -9
- और देखो गुन कानन के, जब हक देत रूहों कान । वाको ले अपने नजर में, देखें सनकूल दृष्ट सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -12
- और देखो दुनी की बंदगी, ए भी सयकूल में लिखे । सो भी देखाऊं बेवरा, जो कर बैठे किबले || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -25
- और देवें साहेदी रसूल, दे याद बातें असल । तब क्यों रेहेवे फरामोसी, कहां जाए मूल अकल || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -10
- और धाम अछरातीत, नूरतजल्ला अर्स । रूह बड़ी ब्रह्मसृष्ट की, जो है अरस-परस || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -107
- और न कोई पोहोंचिया, बड़े अर्स में इत । आगे जाए जबराईल ना सक्या, कहे पर मेरे जलत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -21
- और न कोई बुध मुझ जैसी, मैं ही बुध अवतार । धाम धनी ग्रहूं इन विध, और अखंड करूं संसार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -12
- और न पावे पैठने, इत बका बीच खिलवत । बका अर्स अजीम में, कौन आवे बिना निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -2
- और नई पैदास अर्स में नहीं, ना पुरानी कबूं होए। या रसांग या जवेर, जिन जानों अर्स में दोए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -187
- और नजीक न कोई फरिस्ता, कोई नाहीं इन्सान और । हादी रूहें तेरे कदम तले, कोई और न पोहोंचे इन ठौर || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -57
- और नाम धरया हक का, बेचून बेचगून । कहे हक को सूरत नहीं, बेसबी बेनिमून || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -3
- और निरमल मांहें दुगदुगी, तामें नंग करत अति बल । बीच हीरा छे गिरदवाए, जोत आकास किया उज्जल || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -109
- और नूर मन्दिर छे द्वार ने, नूर दोऊ तरफों के । ए दसे भोम नूर मन्दिर, नूर पड़साल बराबर ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -40

- और नूर मोहोल कई अन्दर, सो नूर बड़ो विस्तार । कई नूर भांत बिध जुगतें, नूर अलेखे बेसुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -112
- और पहाड़ जोए जित के, कई विध की मोहोलात । ताल कुण्ड कई चादरें, इन जुबां कही न जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -140
- और पातसाही मेरे अर्स की, तुमको नहीं खबर । इस्क सबों को अपने, तो बड़े आए नजर || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -13
- और पीछल पाल तलाव के, कई बन सोभा लेत । ए बन आगू फिरवल्या, परे धाम लों देखाई देत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -1
- और पेट पांसली हक की, ए कौन भांत कहूं रंग । रूह देखे सहूर अर्स के, और कौन केहेवे हक अंग || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -12
- और पेहेले छिपे रखाए हक ने, ए जो हरफ तीस हजार । सो दिल बीच रखे महंमदें, कह्या तुमहीं पर अखत्यार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -68
- और पेहेले सिपारेमें जो लिखी, सो तुम क्या नहीं देखी। साहेदी कुंन की देवे जोए, खास उमत का कहिए सोए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -38
- और पैदा फना जो होत है, क्यों दूसरा कहिए ताए । ए खेल है खावंद के, ए जो चली कतारें जाए || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -85
- और प्रले प्रकृत कही, और प्रले सब उतपन । ना सुध ब्रह्म अद्वैत की, ए कबहूं न कही किन || ग्रं - किरन्तन, प्र -65, चौ -6
- और फरमान में ऐसा लिख्या, ओ केहेसी मेरे माफक । आवसी मेरी उमत में, करने कायम दीन हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -7
- और फिरके सब आवसी, और सब पैगंमर । होसी हिसाब सबन का, हाथ हकी सूरत फजर || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -83
- और फिरवल्या पुखराज को, सो पोहोंच्या जाए लग दूर । चढ़ पुखराज जब देखिए, आए तले रया हजूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -81
- और बरकत महंमद की, साहेदी देत फरमान । तिन साहेदी से ईमान, पोहोंच्या सकल जहान || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -99
- और बहत्तर नारी कहे, करी एक को हकें हिदायत । कुरान माजजा नबी नबुवत, सो नाजी करसी साबित || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -13
- और बात बारीक ए सुनो, अर्स छोड़ न आए मोमिन । और बातें मुतलक खेल की, करसी अर्स में देखे बिन || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -59
- और बारे जवेरों का बेवरा, पाच पाने हीरे पुखराज । मानिक मोती गोमादिक, रहे पिरोजे बिराज || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -10
- और बुजरक फरिस्ता आखिरी, कह्या जो असराफील । किए जाहेर मगज मुसाफ के, सकसुभे न आड़ी खील || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -25

- और बेर अब कछू नहीं, गयो तिमर सब नास । होसी सब में आनंद, चौदे तबक प्रकास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -22
- और बेली कई नकस, मिहीं मिहीं जुगत जिनस । जब नीके कर देखिए, जानों सब थें एह सरस || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -42
- और बेवरा कया जाहेर, दुनियां और मोमिन । दुनी पैदा जुलमत से, मोमिन असल अर्स तन || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -91
- और ब्रह्मांड जोगमाया को, कियो खेलने रास । खेल करे श्री राजसों, साथ सकल उलास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -34
- और भी इनों मुसलमानी करी, सो भी देखो चलन जाहेरी । ए लानत लिखी माहे फुरमान, सो बड़ी कर पकड़ी मुसलमान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -8
- और भी ए रूहों कह्या, हक प्यारे हैं हमको । और प्यारी बड़ी रूह, जरा सक नहीं इनमों || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -9
- और भी करी बेसक, ए जो कही संनत जमात । इनों लई सब दिलमें, बेसक अर्स बिसात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -111
- और भी कहूं सो सुनो, जाहेर महंमद बात । और सबे उड़ाए के, एक रखी कदर की रात || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -40
- और भी कहूं सो सुनो, मोमिन अर्स से आए उतर । इलम दिया हकें अपना, अब इनों जुदे कहिए क्यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -132
- और भी केतक सुने रसूलें, पर सो चढ़े नहीं फरमान । सो मेंहेंदी अब खोलसी, इमाम एही पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -3
- और भी खूबी कानन की, दिल दरदां देवे भान । जाको केहे लेऊ पड़ उत्तर, कोई न सुख इन समान || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -116
- और भी खूबी रूह नैन की, चीज दसों दिसा की सब देखत । पाताल या आसमान की, रूह नजरों सब आवत || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -7
- और भी देखो विचार के, तो हकमें सब कछू होए । बिना हुकम जरा नहीं, हार जीत देखावे दोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -78, चौ -15
- और भी देखो साहेदी, ए जो लिखी आयत । ए जो किस्से कुरान के, आयतें सूरत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -117
- और भी देखो साहेदी, जो रसूलें फुरमाए । जब हक ईमान तरफ देखिए, तो अब क्यों कजा करी जाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -15
- और भी नाम अनेक हैं, पर लेऊं कहा के। ब्रह्मांड के धनियों ऊपर, लिए जाए न ताके || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -102
- और भी नाम केते कहूं, इंड वानी अलेखे । सब साख देवे बेहद की, जो कोई दिल दे देखे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -25

- और भी पेहेचान इस्क की, जो बढ़ के घट जाए। इस्क रूहों का हक सों, क्यों कहिए बका ताए || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -96
- और भी फरमान में लिख्या, कोई खोल ना सके किताब । सोई साहेब खोलसी, जिन पर धनी खिताब || ग्रं - किरन्तन, प्र -104, चौ -8
- और भी बेवरा इस्क का, जिनका होए बुजरक । ताए याद दिए क्यों न आवहीं, ऐसा क्यों जाए मुतलक || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -94
- और भी लिख्या महंमद को, आसमान से तेहेतसरा । ए बहुविध बेहेरूल हैवान, जल सिर लग कुफर भस्या || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -13
- और भी लिख्या मैं तुमको, मैं करत तुमारी जिकर । मेरी तुम पीछे करत हों, क्यों कर ना देखी फिकर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -24
- और भी लिख्या समनून को, हक दोस्ती में पातसाह । सो कौल पालो अपना, मैं देखू मेहेबूब की राह || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -8
- और भी साख नीके देऊँ, कर देखो विचार । आखिर अथर्वन वेद पर, सब सृष्टों का मुद्दार || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -31
- और भी साहेदी फुरमान में, तबक चौदे जरा नाहें । खेल नाम धस्या सब केहेने को, ए जरा नहीं अर्स मांहें || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -22
- और भी सुनो दूजी जंजीर, दिल दे देखो खीर और नीर । ए जो दुनियां का कह्या आसमान, दो टुकड़े दिल कह्या जहान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -32
- और भी हक सरूप की, इन विध है बरनन । रूह देखें नए नए सिनगार, जिन जैसी चितवन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -21
- और भी हकमें ए किया, लिया रूह अल्ला का भेस । पेहेचान दई सब असलं की, मांहें बैठे दे आवेस || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -5
- और भी हकीकत मैय की, जिन विध मरे जो ए। सो ए खसम बतावत, बल अपने इलम के || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -2
- और भूखन जो चरन के, सो अति धरत हैं जोत । नरम खुसबोए स्वर माधुरी, आसमान जिमी उहोत || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -75
- और भूले खसम को, गए खेल में रल । कोई सुध बका की न देवहीं, जो कायम अर्स असल || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -68
- और भेजत हों तुमको, कहियो मूल संदेसे । इलम ऐसा दिया तुमको, जासों उठे मुरदे || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -4
- और भेजोंगा फरमान, सब इत की हकीकत । और इसारतें रमूजें, मासूक देसी तुमें मारफत || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -50
- और माएने सो ढूंढ़हीं, ठौर ना जाको दिल । रसूल रहीम मिलावहीं, और ढूंढ़े कहा बेअकल || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -13

- और माया देखाई हम को, करी वास्ते हमारे ए। होसी पूरन हमारी अर्स में, रूहें उमेद करी दिल जे || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -61
- और मिले गिरदवाए लोक, हुआ बुजरकी का गले में तोक । ए बकसीस और से रोसन, उन सुने गैब के सुकन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -53
- और मुकट सिर हक के, केहेनी सोभा तिन । सो न आवे सोभा सब्द में, मुकट क्यों कहूं जुबां इन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -162
- और मेहेर ए देखियो, ऐसा कर दिया सुगम । बिन कसनी बिन भजन, दियो धाम धनी खसम || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -15
- और मेहेर ए देखियो, कर दियो धाम वतन । साख पुराई सब अंगों, यों कई विध कृपा रोसन || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -7
- और मेहेर करी मोहे रूहअल्ला, दिया खुदाई इलम । तूं रूह हैं अर्स अजीम की, तुझ को दिया हुकम || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -41
- और मेहेर महंमद की, खुली हकीकत । पाई साहेदी दूसरी, हक की मारफत || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -6
- और मोमिन बोल ना बोलहीं, एक मेयराज बिन । जिनपे इलम हक का, लदुन्नी रोसन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -42
- और मोहोल घाट केल के, सो भी जिनस इन । ए दोऊ मोहोल अति सुन्दर, करत साम सामी रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -16, चौ -9
- और मोहोलात इन ऊपर, सो नूर ऊपर जो नूर । देत खूबी बीच अकास के, अवकास सबे जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -81
- और राह जो तरीकत, गिरो फरिस्तों बंदगी कही । सो समझे मीठी जुबांन सों, समझ पोहोंचे जबरूत सही || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -64
- और रूहों की सूरतें, जो असल अर्स में तन । सो सहूर कीजे हक इलमें, देखो अपना तन मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -51
- और लिख्या अठारमें सिपारे, नूर बिलंद से उतारे । काम हाल करें नूर भरे, नूर ले दुनियां में विस्तरे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -19
- और लिख्या अठारमें सिपारे, महंमद नाम पैगंमर सारे । सब पैगंमरों को जो सिफत दई, सो सिफत सब रसूल की कही || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -40
- और लिख्या जो पीछे रहे, तिन दिलों नहीं आकीन । सो ए लिख्या सौं खाए के, अब लग था झण्डा दीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -90
- और लिख्या मेयराजनामें माहीं, जब हुआ मेयराज रसूल के ताई । रसूल चले पाउं सिर दे, संग एक जबराईल ले || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -7
- और लिख्या वाही सिपारे, ए करान से न होए न्यारे । फरिस्ते उतरे वास्ते कुरान, फरिस्तों पर आया फुरमान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -21

- और लिख्या सिपारे पांचमें, सो नीके कर देखो तमें । कृपा भई हिंदुओं पर घनी, जित आखिर को आए धनी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -7
- और लिख्या हदीसों आयतों, ले माएने मुसाफ बातन । सोई होसी हक नजीकी, जो दिल मोमिन अर्स तन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -21
- और लिख्या हदीसों आयतों, ले माएने मुसाफ बातन । सोई होसी हक नजीकी, जो दिल मोमिन अर्स तन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -9
- और लिख्या है बीच कुरान, दूसरे सिपारे में एह बयान । इनका जित खुल्या है द्वार, तिनका दिल दे करो विचार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -13
- और लिया ए दिल में, जो अरवाहें अर्स की । दूजी बिना जाने नहीं, हक कैसी है साहेबी || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -54
- और विचारे क्या जानहीं, जाने जाको होए । हम बिना द्वार बेहद के, खोल ना सके कोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -75
- और विध केती कहूं, भोम भोम ठौर अनेक । ए कोट जुबां ना केहे सके, तो कहा कहे रसना एक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -11
- और विध बीच हवेलियों, जदी जदी कई जिनस । देख देख के देखिए, एक पे और सरस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -125
- और विध मुकट में, रूहें आवें सब मिल । सब रूप रंग देखे इनमें, जो चाहे जैसा दिल || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -181
- और संदेसे रूहअल्ला, सुने जो अलेखे । तो भी आंखें खुली नहीं, आए बका से हक के || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -51
- और सबन की क्यों कहूं, ए एक कही मैं जात । ए कैसी सोभा लेत हैं, दे दिल देखो साख्यात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -60
- और सबन सों चित भंग, एक पिया जी सों रस रंग । प्रेम पिया जी के अंग भावे, पिया बिना आपको भी उड़ावे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -43
- और सबे गौचारने, गोप गोवाला जाए बन । भोर के बन संझा लो, यों होत बृज वरतन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -34
- और सबे ताबे कहे, जबराईल के । जिंन देव या आदमी, या बुजरक फरिस्ते || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -23
- और सब्द भी हैं सही, पिया करसी परदा दूर । सब मिल कदमों आवसी, तब हम पिया हजूर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -53
- और सराब मेरी सुराही का, सो रख्या था मोहोर कर । सो खोलने बोहोतों किया, पर क्यों खोलें कबूतर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -56
- और सागर जो मेहेर का, सो सोभा अति लेत । लेहेरें आवें मेहेर सागर, खूबी सुख समेत || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -1

- और साहेद किए फरिस्ते, जिन जाओ तुम भूल । फुरमान भेजोंगा तुम पर, हाथ मासूक रसूल || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -5
- और साहेद किए हैं फरिस्ते, सो भी देवेंगे साहेदी । सो रसूल याद देसी तुमें, जो मेरे आगू हुई इतकी || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -29
- और साहेदी देऊं तीसरी, अहेल किताबें दिल में धरी । दस और एक सिपारा जित, एह सब्द लिखे हैं तित || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -11
- और साहेबी अपनी, देखाई नीके कर । क्यों कहूं बड़ाई हक की, मेरा खसम बड़ा कादर || ग्रं - सिंधी, प्र -16, चौ -19
- और सीढ़ियां चारों घाट की, इत दरवाजे नाहें । तित मोहोलात है अंदर, बिना हिसाबें माहे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -90
- और सीढ़ियां जो बाहेर की, छात आई लग तिन । बने छज्जे उपरा ऊपर, ठौर खुसाली खेलन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -27
- और सुकन बोलों नहीं, बिना हक फरमाए । सोई देखेगा मोमिन, जो दिल अर्स केहेलाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -118
- और सुख इन भोम के, बोहोत बड़ो विस्तार । सो मुख बानी क्यों कहूं, जिनको नहीं सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -31
- और सुख इन लेहेरन को, आवत खिलवत याद । इन हक इस्क सागर की, कई नेहेरें सुख स्वाद || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -26
- और सुख कई विध के, कई विध किए प्यार । सुन्दरबाई के संगतें, कई औरों पाए दीदार || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -17
- और सुख ना नफसों आराम, और रहया न चाहें बेकाम । और जेता कोई बद काम, सो नफसानी हिरस हराम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -28
- और सुख पहाड़ ताल के, तीनों तरफों मोहोलात । पहाड़ सुख मोहोल अंदर, जो कई नेहेरें चली जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -8
- और सुख बारीक ए सुनो, कहे नूर नूरतजल्ला दोए । नूरतजल्ला के अंदर की, सुध नहीं नूर को सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -58
- और सुख सब मेयराज में, केते कहूं जबान । जुदी जुदी जंजीरों, लिखे मांहें फुरमान || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -22
- और सुख सातों घाट के, और सुख दोऊ पुल । ए सुख सब अर्स के, कब लेसी हम मिल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -1
- और सुख हक दिल में, जाहेर होत रसनाए । एह सिफत किन बिध कहूं, जो रेहेत हक मुख माहें || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -5
- और सुरिया जो सितारा, कहया उलंघा न किन । सो देखो सिपारे सोलमें, काहूं छोड़ी न सरे सुंन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -49

- और सृष्ट जो ईश्वरी, कही जाग्रत सृष्ट आतम । सुबुध अंग करनी सुध, चले फुरमान हुकम || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -10
- और सैताने पीछी फिराई, सो सब दोजख को चलाई । ऐसे उलमा सबही कहें, पर माएना बातून कोई न लहे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -28
- और सोभा जुगल किसोर की, रूह अल्ला ने कही इत । उसी इलम से मैं केहेत हों, जो कहावत हुकम सिफत || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -73
- और हक कदम अति कोमल, पांउं तली जोत अतंत । सो रहें रूह नैनों बीच में, सो क्या करे जुबां सिफत || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -17
- और हदीस में यों कहया, दुनी राह देखे जाहिर दज्जाल । माएना न पावें ढूंढ़े जाहेर, कहे हम लड़सी तिन नाल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -17
- और हदीसों में कई साखें, कई वसीयत नामे साख । कई किताबें हिंदुअन की, देत भाख भाख कई लाख || ग्रं - किरन्तन, प्र -98, चौ -9
- और हाथ कोई है नहीं, कहया वास्ते भूखन के । और वस्तर ना कछू भूखन, जो इत निमूना लगे || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -65
- और हार दोऊ उतरती, लगती तीसरी तले बन । इन विध पेड़ बराबर, गिरदवाए सबन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -51
- और हाँसी सब सोहेली, पर ए हाँसी सही न जाए। अक्स भी ना सेहे सकें, जब इलमें दिए पढ़ाए || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -27
- और हांसें पचास जो, आगू बड़े दरबार । सोभित झरोखे मेहेराव, आणू चौक सोभे बन हार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -113
- और हुए कई फरिस्ते, और कई पैगंमर । जिन किनों पाई बुजरकी, ना जबराईल बिगर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -22
- और हुज्जत न रखी किनकी, चौदे तबक की जहान । मोमिनों ऊपर अहमद, ल्याया एह फुरमान || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -34
- औलाद कही याफिस की, जाके भाई स्याम हाम । ए तीनों से पैदा सब दुनी, ए लिख्या बीच अल्ला कलाम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -32
- औलाद याकूब कहया इस्हाक, इनों का कबीला है पाक । पेहेले कही एही मजकूर, और बिध लिखी कर रोसन नूर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -1
- औलिए अंबिए आसिक, जो खास बंदे सिरदार । हक बिना कछू ना रखें, इनों दुनी करी मुरदार || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -20
- औलिए अंबिए गोस कुतब, सब आए बीच उमत । रूहें पैगंमर फरिस्ते, सब मिले आखिरत || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -13
- औलिए अंबिए फिरस्ते, जेता कोई पैद । पर अलहा किनहूं न लहया, बिना एक महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -21

- औलिया लिल्ला दोस्त कर, नूर जमाल लिखत । ऐसे निजस तन नासूती, कहे यासों मेरी निसबत || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -37
- औलिया लिल्ला दोस्त, जाके हिरदे हक सूरत । बंदगी खुदा और इनकी, बीच नाहीं तफावत || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -6
- औलिया लिल्ला दोस्त, हकसों रखें निसवत । फरामोसी दई हाँसीय को, कछू चल्या न हकसों इत || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -75
- औलिया लिल्ला रूहें मोमिन, बोहोत नाम धरे उमत । ए सब बड़ाई गिरो एक की, जो अर्स रूहें हक निसबत || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -36

अं

- अंई कितेई छुटी न सगे, आंऊं किएं न छडियां आं । महामत चोए मूं दुलहा, पार सघरा लाड असां || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -96
- अंई गाल सुणेजा जेडियूं, मं चरई ज्यूं चंगी भत । गाल कंदे फटी न मरां, जे कांध से निसबत || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -35
- अंई विचारे न्हारजा, आंहिजे मूंहजा वैण । तांजे असी विसरयां, त पण आंहिजा सैण || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -15
- अंई सुणेजा जेडियूं, चुआं इस्क जी गाल । हे सुध न अस्सां अर्स में, धणी केहडी साहेबी कमाल || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -27
- अंक करूं गुण लखीने त्रेवीस, दस अंक करूंमींडा मूकीने चोवीस । हवे पचवीस कीधे गुण एक संख थाय, रदे रे मोटो गुण घणा समाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -22
- अंख उघाडे ढकजे, भोरी जिन चूके हितरी वेर । रातो डीहा राजजो, सुत्र संनो कत सवा सेर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -28, चौ -4
- अंख भुसींदी जा उथींदी, केही गाल कंदीसा । कोड करे घणवे आवई, पण निद्र न कढई नेण मंझा || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -13
- अंग अंग उछरंग, सखी सखी मन उमंग । अलबेली अति अभंग, भामनी रस भरे || ग्रं - किरन्तन, प्र -123, चौ -2
- अंग अंग सब उलसत, कुरबानी कारन । जरे जरे पर वार हूं, ए जो बीच जरे राह इन || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -25
- अंग अनुभवी असल के, सुखकारी सनेह । अरस परस सबमें भया, कछु प्रेमें पलटी देह || ग्रं - किरन्तन, प्र -80, चौ -9
- अंग आपी अंगनाने, अंगना भेलूं अंग । पास दऊं पूरो प्रेमनो, करूं ते अविचल रंग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -42
- अंग आप्या विना आवेस, प्रेम प्रगट केम थाय । आवेस दई करूं जागणी, जेम मारा अंगमां समाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -37

- अंग आसिक आगूंहीं फना, जीवत मासूक के मांहें । डोरी हाथ मेहेबूब के, या राखे या फनाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -91, चौ -12
- अंग आसिक उपले देख के, इतहीं रहे ललचाए। जो कदी पैठे गंज में, तो क्यों कर निकस्यो जाए । || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -104
- अंग इस्क इन भोम के, अलेखे अंग असल । कई रंग रस सख्प सों, जुदे जुदे या सामिल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -49
- अंग उत्कण्ठा उपजी, मेरे करना एह विचार । ए सत वानी मथ के, लेऊं जो इनको सार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -37, चौ -4
- अंग उमंग न माय रे वाला, हवे तोसं करूं केही पर । पहेलूं अंग भीडीने दाझ भाजूं, पछे तेडी जाऊं मारे मंदिर || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -22
- अंग ऊपर आणी बंने चौकडी, छेडा बंने पासे लटकंत । नवल वेख लीधो एक भांतनो, जोई जोई ने जीव अटकंत || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -22
- अंग जुदे ना हो सकें, तो क्यों होए जुदे दिल । एक जरा जुदे ना होए सकें, अंग यों रहें हिल मिल || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -28
- अंग जो बांधे या बिध, पेहेले पेड़ से फिराई बध । उलटाए सबों या बिध, परी न काहूं सुध || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -5
- अंग तोहे विरह अगिन की, न लगी कलेजे झाल रे । ए विरहा ले अंग खड़ा रहया, फिट फिट करम चंडाल रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -13
- अंग दिए बिना आवेस, नाहीं प्रेम उपाए । आवेस दे करूं जागनी, लेऊं अंग में मिलाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -37
- अंग देखे जेते सूरत के, सो तो सारे इस्क सागर । गुन हक बाहेर देखावत, इन बातों मोमिन कादर || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -78
- अंग न इंद्री अंतस्करन वाचा, ब्रह्म न पोहोंचे कोए । यों कहें साख पुरावें श्रुती, फेर कहें अनुभव होए || ग्रं - किरन्तन, प्र -31, चौ -2
- अंग नूर बुध देय के, कहे तूं प्यारी मुझ। देने सुख सबन को, हुकम करत हूं तुझ || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -33
- अंग बुध आवेस देए के, कहे तूं प्यारी मुझ । देने सुख सबन को, हुकम करत हों तुझ || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -30
- अंग मरोडे न उथिए, पासे फजर पसी हीए मंझ । पोए कारी रात में की न सुझे, से तां डुखे संदानी डंझ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -14, चौ -9
- अंग मार जार उड़ावहीं, जो हते जोर जलद । पर ए सुध काहू ना परी, बिना एक महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -16
- अंग मारा रे अभागी, तमे कां भको नव थयो । ए धणी रे चालतां, अधरमी कां ऊभो रहयो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -22

- अंग मारे संग पामी, मैं दीवू तारतम बल । ते बल लई वैराट पसरी, ब्रह्मांड थासे निरमल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -25
- अंग मूहीं जे अडाए तरारी, झक करे करियां झोरो । घोरे बंजां आंजी डिस मथां, त को लाईम सजणे थोरो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -8, चौ -11
- अंग मेरे आकार के, सातों धात ना गई क्यों सुक रे । एहेरन घन के बीच में, क्यों ना हुई भूक भूक रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -22
- अंग मेरे संग पाई, मैं दिया तारतम बल । सो बल ले वैराट पसरी, ब्रह्मांड कियो निरमल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -26
- अंग रंग सलूकी सुभान की, चकलाई उज्जल गौर । नाम सुनत इन अंग के, जीवरा न होत चूर चूर || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -3
- अंग रूह अर्स की नासिका, ए बल जानत रूह को कोए। चौदे तबक सुन्य फोड़ के, इत लेत अर्स खुसबोए || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -126
- अंग वस्तर या भूखन, सब सुख दिया चाहे । कई सुख जाहेर कई बातन, सब मिल प्रेम पिलाए || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -62
- अंग संग भूखन सदा, दिलके तअल्लुक असल । ए सरूप सिनगार दिल चाहे, अर्स में नाहीं नकल || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -26
- अंग समागम धनी के, हिरदे लियो सो सब विचार । साके सोले तोड़ी गुझ रहे, या दिन से कियो सो प्रगट पसार || ग्रं - किरन्तन, प्र -54, चौ -3
- अंग सर्वे वाला लागे, विछोडो खिण न खमाय । चेतन चाल्या पछी ते अंग, उठ उठ खावा धाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -15
- अंग सारे नूर के, नूरै का नूर आहार । कौल फैल हाल नूर का, हाल-चाल नूर वेहेवार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -13
- अंग सारे प्यारे लगते, खिन एक रहयो न जाए । चेतन चले पीछे सो अंग, उठ उठ खाने धाए || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -14
- अंग सारे प्यारे लगते, खिन एक रहयो न जाए । चेतन चले पीछे सो अंग, उठ उठ खाने धाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -11
- अंग हादी मेरे नूर से, तुम रूहें अंग हादी नूर । तो अर्स कहया तुम दिल को, जो रूहें वाहिद तन हजूर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -12
- अंगडा वाले नेणां चाले, उपजावे रंग रेल । बोले बंगे आवे रंगे, जाणे पेहेले भणियों पेस || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -11
- अंगथी आपी उपजावू, रस प्रेमना प्रकार । प्रकास पूरण करी सेहेजे, टालूं ते सर्वे विकार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -36
- अंगना को अंग दीजिए, अंगना लीजे अंग । पास देऊ पूरा प्रेम का, नेहेचल का जो रंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -42

SPJIN

- अंगने तरसे रे वालाजीने भेटवा , जीव तरसे जोवा मांहेली जोत । जो पेहेलू ने जाणूं रे मोसूं थासे एवडी, तो निध हाथ आवी केम खोत || ग्रं - खटरुती, प्र -3, चौ -5
- अंगनो रंग अजवास धरे, तिहां स्याम चोली सोभावे । सुंदर सर्व सिणगार सोहावे, तिहां लेहेर भूखण क्रण आवे || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -27
- अंगनो रंग कह्यो न जाय, जाणे तेज तणो अंबार । पेट पासा उरकंठ निरखता, इंद्रावती पामे करार || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -18
- अंगनो रंग निरख्यो न जाय, क्यांहें न माय क्रण क्रांत । पेट पांसा उर कंठ निरखतां, इंद्रावती पामे स्वांत || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -26
- अंगुरिएं अनवट बिछिया, पाने मानिक मोती सार || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -107
- अंगुरियां हस्त कमल की, याको दिया न निमूना जाए। वचन कहूं विचार के, तो भी रूह पीछे जाए पछताए || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -63
- अंगूठिए लाल चुन्नी जडतर, बे वीटी हीरा रतन । एक वीटी ने नीलू पानू, बीजा वाकडा वेलिया कंचन || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -25
- अंगूठे हीरे की आरसी, दसमी जड़ित अति सार । ए जो दरपन माहें देखत, अंबर न माए झलकार || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -95
- अंगे उमंग उपाइने, भेला नाहिए ते भली भांत । झीलणां कीजे मन गमतां, खरी पूरूं तमारी खांत || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -3
- अंगे सहु अलवेल, करे रे रंगना रेल । विलास विनोद हाँस खेल, लोपी रमे लाज री || ग्रं - रास, प्र -12, चौ -4
- अंजील जंबूर तौरेत, चौथी जो फुरकान । ए माएने मगज गुझ थे, सो जाहेर किए बयान || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -97
- अंजील तौरेत और कुरान, इन पर होए आया फुरमान । जो हवसेका पातसाह, पाई इन किताबों से राह || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -13
- अंत आहार सूकर कूकर को, या कौआ कीरा खाए । या तो अगिन जलाए के, करके खाक उड़ाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -106, चौ -10
- अंतर भ्रांत कहे तुम फेर फेर, मार मार देखाओ डर । नींद कर बैठे इन जिमी में, सो आप न करो खबर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -93
- अंतर रूहोंसों जिन करो, जो मोमिन हैं अर्स घर । पीछे चौदे तबक में, जाहेर होसी आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -44
- अंतर सैयों से जिन करे, जो सैयां हैं इन घर । पीछे चौदे तबक में, जाहिर होसी आखिर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -41
- अंतरगत आरोगते, तीन बेर पिया आएँ । आप भी मेवे मिठाइयाँ, कई हम को आन खिलाएं || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -18

- अंतरगत आवी मारा वाला, बेठा छो आकार माहें । आकार देह धस्युं मायानूं, ते माटे कोणे न ओलखाए || ग्रं - खटरुती, प्र -5, चौ -12
- अंतरगत बैठे हैं सही, अंतर उड़ावने बानी कही । विचार देखो तो इतहीं पिउ, सागर तबहीं तूल करे जिउ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -29
- अंतरध्यान समें दुख दिए, ए आसंका उपजत जी । तिन समें संसार न किया भारी, साथै दुख देखे क्यों तित जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -7
- अंतरध्यान समे दुख दीधां, ए आसंका मन मांहें जी । एणे समे संसार भारी नव कीचूं, साथै दुख दीठां एम कांए जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -2, चौ -7
- अंतराए नहीं एक खिन की, अखंड हम पे उजास । रास लीला श्रीकृष्ण गोपी, खेले सदा अविनास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -6
- अंतराए नहीं खिन की, सनेह सांचे रंग । अहनिस दृष्ट आतम की, नहीं देहसों संग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -17
- अंतराए नहीं खिन की, सनेह सांचो रंग । रात दिन नजर रूह की, नहीं वजूद सों संग || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -20
- अंतराय नहीं एक खिणनी, सनेह साचे रंग । अहनिस द्रष्ट आतमनी, नहीं देहतूं संग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -21
- अंतस्करन में रोसनी, और रोसन करी आतम । गुन पख इंद्री रोसन, ऐसा बरस्या नूर खसम || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -15
- अंत्रीख जुओ ऊभियो, हाथ विना हथियार । निद्रा छे अति जागते, पिंड विना आकार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -11, चौ -10
- अंत्रीख मिने गुलाटियां, देत जात फिरत । इन विध लेत भमरियां, यों कई विध केलि करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -95
- अंदर आओ नूर द्वार के, फेर देख नूर अर्स । नूर मंदिर चौक चबूतरे, नूर एक पे और सरस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -33
- अंदर का जब लिया अर्थ, तब नेहेचे होसी प्रकास जी । जब इन अर्थे जागी वासना, तब वृथा ना जाए एक स्वांस जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -52
- अंदर किनारे पाल पर, योहरियां बराबर । सोभित किनारे गिरदवाए, अति सोभा सुन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -82
- अंदर चौड़ाई चौक की, और भी हैं कई ठौर । जुदे जुदे सुख लेत हैं, रंग रस कई और और || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -42
- अंदर जो बांधे या बिध, कही न जाए करामत । सत असत कर देखहीं, असत लग्या होए सत || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -7
- अंदर ज्वानी है रोसन, काह ज्यों पकड़े अगिन । उसही झलकार थे मकबूल, बूढ़े रोसनी न गई भूल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -15, चौ -8

- अंदर दयोहरियां पाल पर, ऊपर बन बिराज्या आए । ए सोभा बन लेत है, ए खूबी कही न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -35
- अंदर धनी के देखिए, एक चित्त हेत रस रीत । क्यों कहूं रंग हाँस विनोद की, सुख सनेह प्रेम प्रीत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -22
- अंदर नाहीं निरमल, फेर फेर नहावे बाहेर । कर देखाई कोट बेर, तोहे ना मिलो करतार || ग्रं - किरन्तन, प्र -132, चौ -1
- अंदर परदा उड़ाइया, तो भी न बदल्या हाल । नकस न मिट्यो मोह मूल को, ताथें नजरों न नूरजमाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -41, चौ -3
- अंदर बाहेर उजले, दोष देखें सब ऐन । ताए भी बैंच छूटी नहीं, ए भी लगे दुख देन || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -14
- अंदर मोहोल नेहेरें चलें, चारों तरफों फिरत । इन सबमें सोभा देय के, पुखराज पोहोचत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -6
- अंदर सब मेरे यों कहें, धाम से आए मांहें सुपन । है सनमंध धनी धामसों, ए साख मेहेर से उतपन || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -8
- अंध अभागी क्यों हुआ ऐसा, तें क्या सुने न धनी के वचन । धनी मिले तूं थिर ना हुआ, फिट फिट मुंडे मन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -82
- अंध एवो कां थयो रे अभागी, तें नव सुण्यो आटलो पुकार । फिट फिट भंडा फेर न राख्यो, ज्यारे मलिया मूने आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -82
- अंध थके तमें ए निध खोई, जे तमने सत स्वामिएँ दीधी। कठण वचन तो कहूं धूं तमने, जो तमें दुष्टाई कीधी || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -16
- अंधने आंख रूदे तणी, पण अमने मांहें न बाहेर । तो निध खोई हाथथी, जो कीधो नहीं विचार || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -67
- अंधेर भागी असत उड्यू, उपनूं तत्व तेज। जनम जोत एवी थई, जे सुझे रेजा रेज || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -47
- अंन उदक वाए कीट पतंगमां, सकल कहे छे ब्रह्म । देखीतां आंधला थाय, पछे बांधे अनेक पेरे करम || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -16
- अंबर धरा के बीच में, केस लवने नूर झलकत । ए सोभा मुख क्यों कहूं, कानों मोती लाल लटकत || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -68
- अंबरियो ने थयो रे वालाजी निरमलो, वादलियो गयो पोताने घेर ठाम । हजी न संभारो रे वाला तमे विरहिणी, कां न भाजो रे रूदयानी हाम || ग्रं - खटरुती, प्र -3, चौ -2

क

- कई अंग ताबे कान के, कान अंग सिरदार । कोई होसी रूह अर्स की, सो जानेगी जाननहार || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -22

- कई अंदर नेहेरें फिरें, माहें हवेलियों चेहेबच्चे । खुसबोए फूल मेवे कई, माहें बैठक कई बगीचे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -71
- कई अंन नीर सबीले, कई करें दया दान । कई तरपन तीरथ, कई करे नित अस्नान || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -7
- कई अंन नीर सबीले, कई करें दया दान । तरपन तीरथ, कई करे नित अस्नान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -5
- कई अवगुन लेवें धनीय का, करें आप भी अवगुन । नाहीं सनेह सुख साथ सों, यों वृथा खोवें रात दिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -77, चौ -7
- कई अवतार किताबाँ कर, बहु ग्यानी कहावें तीर्थंकर । औलिए अंबिए पैगमर, हक की नाहीं काहूं खबर || ग्रं - खुलासा, प्र -11, चौ -11
- कई अवतार तीर्थंकर, कई देव दानव बड़े बल । बुजरक नाम धराइया, पर छोड़े न काहू छल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -15
- कई अवतारों बल किए, कई बल किए तीर्थकर । द्वेष अद्यापी ना मिट्या, कई फरिस्ते पैगंमर || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -88
- कई आए अनुभव लेयके, सो पीछे दिए पटकाए । धनी दया अंकूर बिना, किन सत सुख लियो न जाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -28
- कई आचारी अप्रसी, कई करे कीरंतन । यों खेलें जुदे जुदे, बस परे सब मन || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -25
- कई आचारी अप्रसी, कई करें कीरतन । यों खेलें जुदे जुदे, सब परे बस मन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -21
- कई आलम पल में पैदा फना, करें हक कादर । सो देखाए दुनी कायम करी, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -39
- कई आवत बीच आड़ियां, कई सिधियां कई टेढ़ियां । बन गलियों में बराबर, न कहूं अधिक न छेदर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -32
- कई आवत हैं ठेलतियां, जुत्थ जल लेहेरां ज्यों लेवतियां । कई आवें भमरी फिरतियां, एक दूजी पर गिरतियां || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -89
- कई इंड अछर की नजरों, पल में होय पैदास । ऐसे ही उड़ जात हैं, एकै निमख में नास || ग्रं - किरन्तन, प्र -65, चौ -11
- कई इंड पलथें पैदा फना, जिन कादर ए कुदरत । ए आवें मुजरे इन सरूप के, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -6
- कई इंद्री करें निग्रह, मन ल्याए कष्ट मोह । कई ऊर्ध ठाड़ेश्वरी, कई बैठे खुद होए || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -27
- कई उदर कारने, फिरत होत फजीत । कई पवाड़े करें कोटल, ए होत खेल या रीत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -31

- कई उदर कारने, फिरत होत फजीत । पवाड़े कई बिना हिसाबें, खेल होत या रीत || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -33
- कई एक ठौरों हिंडोले, कई सेज बिछोने पलंग । कई जुदे जुदे जवेर, करत मिनो मिने जंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -32
- कई ऐसे खेल पैदा फना, होए नूरजलाल के एक पल । इन कादर की कुदरत, ऐसा रखत है बल || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -40
- कई औलिए कई अंबिए, कई फरिस्ते पैगंमर । सो सब आगे आए खड़े, हुई बधाइयां घर घर || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -8
- कई कई लाड़ रूहन के, लेत देत अरस-परस । नित नए सुख देत सनेह सों, जानों नया दूजा लिया सरस || ग्रं - सिनगार, प्र -15, चौ -12
- कई कटाव नकस जवेर, सोभित नंग चौक चौफेर । फिरते द्वारने जो मनी, ताकी जोत प्रकास अति घनी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -61
- कई कदेलें कुरसियां, ऊपर रूहें बैठत । सुमार नहीं पसु पंखियों, कई विध खेल करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -44
- कई करड़े कई बूटियां, नकस नाके रंग और । ए सोभा कहूँ मैं किन मुख, जा को इन चरनों है ठौर || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -47
- कई करत ले कैद में, बांधत उलटे बंध । मारते अरवाह काढ़हीं, ए खेल या सनंध || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -30
- कई करामात कोटल, औलिया आलम । बोदला बेकैद सोफी, जाणी करे जुलम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -3, चौ -16
- कई करे रांदज्यूं गालियूं, फिरी फिरी फना डुख । पाहिजा कायम अर्सजा, कई कोडी डेखारयाई सुख || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -14
- कई करोर करनाइयां, कई करोर निसानों घोर । यों गरज्या आलम में, सो कहया न जाए सोर || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -61
- कई कलस कई कंगूरे, आसमान में रोसन । खूबी हक के अर्स की, इत क्यों कहूँ जुबां इन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -76
- कई कसनी कसी अति अंग, प्रेम सेवा में ना कियो भंग । कई कसौटी करी दुलहिन, सो कारन हम सब सैयन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -64
- कई कहावें खावंद कलमें, कई साहेब सहीफे किताब । होए न काम महंमद बिना, जिन सिर आखिरी खिताब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -81
- कई कहावें दरसनी, धरें जुदे जुदे भेख । सुध आप ना पार की, हिरदे अंधेरी विसेख || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -6
- कई किताबें कई कलमें, कई जो नामें और । जो कोई कहावे बुजरक, सब आए मिले इन ठौर || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -16

- कई किताबें करी साथ कारने, सो भी गाई जगावन । ए सुन के जो न दौड़िया, जिमी ताबा होसी तिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -88, चौ -11
- कई किताबें या बानियां, कही मैं साथ कारन । इनमें से मैं मेरे सिर, लिया ना एक वचन || ग्रं - किरन्तन, प्र -85, चौ -3
- कई किताबें हिंदुअन की, साखें लिखी मांहें इन । आए धनी झूठ उड़ावने, करसी सत रोसन || ग्रं - किरन्तन, प्र -98, चौ -7
- कई किरने उठे कंचन की, कई किरने हीरन । पाच पाने मोती मानिक, किरने जाए न कही जवेरन || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -28
- कई कीरंतन करें बैठे, कई जाग जगन । कई कथें ब्रह्म ग्यान, कई तपे पंच अगिन || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -26
- कई कीरतन करें बैठे, कई जाग जगन । कई कथें ब्रह्मग्यान, कई तपें पंच अगिन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -22
- कई केयांऊं रांदज्यूं गालियूं, समझन के सौ भत । कांधे मूकी मूंके कोठण, जांणी आंजी निसबत || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -10
- कई कोट अलेखे पदमों, सेहेर बसे पसुअन । कई सेहेर हैं जानवर, सबों इस्क अकल चेतन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -23, चौ -4
- कई कोट इंड ऐसे पल में, करके पैदा उड़ाए। बल जरा इन हुकम का, इन जुबां कहयो न जाए || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -29
- कई कोट कहूं जो अपार, जुबां क्या कहेगी झलकार । जैसे भूखन तैसे वस्तर, तैसी सोभा सरूप सुन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -182
- कई कोट गुना बढ़त है, बड़ा नफा रूह जान । बढ़त बढ़त हक अर्स की, आवत इस्क पेहेचान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -69
- कई कोट मलकूत जात हैं, जबरूत के एक पलक । ए सब पातसाही फना मिने, इनों का खुदा नूर हक || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -137
- कई कोट राज बैकुंठ के, न आवे इतके खिन समान । सो जनम वृथा जात है, कोई चेतो सुबुध सुजान || ग्रं - किरन्तन, प्र -78, चौ -2
- कई खट चक्र नाड़ी पवन, कई अजपा अनहद । कई त्रिवेनी त्रिकुटी, जोती सोहं राते सब्द || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -23
- कई खट चक्र नाड़ी पवन, कई अजपा अनहद । कई त्रिवेनी त्रिकुटी, जोती सोहरे राते सब्द || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -19
- कई खुसबोई मांहें पंखियों, कई खुसबोए मांहें फूलन । कई सोभा पसु पंखियों, कई नरमाई परन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -63
- कई खुसबोए अर्स की, लेवत है नासिका । दोऊ नैनों के बीच में, सोभा क्यों कहूं सुन्दरता || ग्रं - सिनगार, प्र -15, चौ -3

- कई खूबी पसु केसन की, कई खूबी जानवर पर । कई सुन्दर सोभा नकस, ए जुबां कहे क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -14
- कई खेल किए ब्रहमसृष्ट कारन, धनी दया पूरन अति घन । अनेक वचन सैयन को कहे, पर नींद आड़े कछू हिरदे ना रहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -2
- कई खेल डेखारे रांद में, इलम डिंने बेसक । भिस्त डियारी असां हथां, दुनियां चौडे तबक || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -22
- कई खेलत करत लड़ाइया, कई कूदत कई फांदत । उड़के कई देखावहीं, कई बानी बोल रिझावत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -16
- कई खोज करी निगम, पर पाई नाहीं गम । ए पैदा जिनके हुकम, सो पाया न किन खसम || ग्रं - खुलासा, प्र -11, चौ -6
- कई गत भांत रंग ल्यावत, ए तो कामिल निरत कमाल । इन छेक बालन की क्यों कहूं, जो देखत नूर जमाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -61
- कई गंधर्व गुन गावें बजावें, कई नट नाचन हार । कई रिखि मुनी वेद पढ़त हैं, बरतत जय जयकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -57, चौ -6
- कई गरूड़ गरजें लड़ें, कई मोर मुरग कुलंग । लड़े चढ़ें ऊंचे आसमान लों, फेर के लड़ें जंग बंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -13
- कई गलियां नूर चरनियां, कई नूर मेहेराव झरोखे । कई नूर अर्स की रोसनी, क्यों सिफत कहूं नूर ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -92
- कई गलियां नूर पौरियां, कई नूर चौक चौबट । नूर बसे जो इन दिलों, तो नूर खुल जावे पट || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -25
- कई गुन केते कहूं, गुन को न आवे पार । ए भूल देखो अपनी, ए सोभा गुन गिनूं मांहें सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -30
- कई गुन देखे छब फब में, कई गुन मांहें सलूक । गुन गिनते इन नैनों के, हाए हाए अजूं न होए दिल भूक || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -21
- कई गुन नेत्र सुभान के, सो क्यों कहूं चतुराई इन । इत जुबां बल न पोहोंचहीं, हिस्सा कोटमा एक गुन || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -31
- कई गुन नैनों के नूर में, कई गुन नैनों के हेत । कई गुन तीखे कई सील में, गुन मीठे कई सुख देत || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -29
- कई गुन बड़े नैनके, और कई गुन नैन टेढ़ाए । कई गुन तेज तारन में, कई गुन हैं चंचलाए || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -26
- कई गुन सोभा सुन्दर, कई गुन प्रेम इस्क । कई गुन नैन रंग में, कई गुन नैन रस हक || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -28
- कई गुन हक कदम में, सब गुन खेंचें रूह को । मासूक गुझ सोई जानहीं, आए लगी जिन सों || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -40

- कई गुन हैं तिरछाई में, कई गुन पाँपण पल । कई गुन सीतल कई मेहेर में, कई तीखे गुन नेहेचल || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -27
- कई गून हैं कानन के, जाके ताबे दिल खसम । क्यों सिफत कहूं इन दिलकी, जिन दिल ताबें हुकम || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -24
- कई चलत चक्राव ज्यों, कई आड़ी ऊंची चलत । कई चलत मोहोलों पर, कई मोहोलों से उतरत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -23, चौ -12
- कई चाकले चित्रकारी, ता पर बैठे श्री जुगल बिहारी । दोऊ सरूप चित में लीजे, फेर फेर आतम को दीजे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -175
- कई चालें बोली जुदियां, माहें मजहब भेख अपार । पूजें आग पानी पत्थर, इनमें खुदा हजार || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -20
- कई चौक कई गलियां, कई हवेलियां अनेक । देख देख के देखिए, जानों एही विध विसेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -108
- कई चौक चबूतरे अंदर, कई विध गलियां मंदिर । कई जड़ाव दिवाल द्वार जोत धरे, ए जुबां बरनन कैसे करे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -67
- कई चौक ठौर खेलन के, छाया पात सीतल । खूबी जुबां ना केहे सके, रेत मोती निरमल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -3
- कई चौक देखिए नूर के, कई सीढ़ियां नूर दिवाल । कई थंभ गलियां नूर की, कई मोहोल नूर पड़साल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -64
- कई चौखून चबूतरे, चारों तरफों मंदिर । थंभ फिरते चारों तरफों, ए सोभा अति सुन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -13
- कई चौखूने चबूतरे, मन्दिर आठों हार । चली चार गलियां चौक थे, हार आठ थंभ गली बार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -14
- कई छज्जे ताल ऊपर, पड़त जल में झांई । मोहोल सबे माहें देखत, खूबी आवे न जुबां माहीं || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -5
- कई छलकत जल चेहेबच्चों, करत झीलना जाए । अतन्त खूबी इन बन की, क्यों कहूँ इन जुबांए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -15
- कई छापे बूटी नकस, नंग साड़ी बीच अपार । कई नंग रंग झलके बीच में, सोभा न आवे माहें सुमार || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -56
- कई छिपे रहे माहे दुस्मन, और मारें राह औरन । चाल उलटी चल देखावहीं, तो भी धनी ना तजें तिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -78, चौ -11
- कई छूटक मन्दिर नूर के, कई मन्दिरों नूर मोहोलात । कई फिरते मन्दिर नूर के, बीच बैठक नूर बिसात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -84
- कई जल मोहोलों चढ़े, कई माहोलों से उपरा ऊपर । कई लाखों हजारों बैठकें, सुख इत के कहूं क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -23, चौ -7

- कई जातें कई जिनसें, कई फिरके मजहब । भेख भाखा सब जुदियां, हक को ढूंढें सब || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -59
- कई जातें देखे जवेर, अर्स के भूखन । जंग करें जानवरों, जो परों पर चित्रामन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -17
- कई जातें दौड़ी जहान में, पर आया न काहूं दरद । तो किनहूं न पाइया, बिना एक महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -5
- कई जातें नूर पंखियन की, कई जातें नूर जानवर । जैसा रंग नूर जिमी का, पसु पंखी रंग सरभर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -26
- कई जातें पसुअन की, और कई जातें जानवर । हिसाब न आवे गिनती, ए खेल कहूं क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -17
- कई जातें पसुअन में, हर जातें गिनती अपार । यों जातें जानवरों में, हर जातें नहीं सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -9
- कई जातें हैं जानवर, चलते आगूं उड़त । कई लेवें गुलाटियां, अनेक खेल खेलत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -41
- कई जिकर करें जानवर, मीठे स्वर बयान । इस्क खूबी अति बड़ी, सिफत बका सुभान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -29
- कई जिंदे गोस कुतब, कई मलंग मीर पीर । कई औलिए कई अंबिए, कई मिने फकीर || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -13
- कई जिंदे मलंग मुल्ला, कई बांग दे मन धीर । कई जावें पाक होए, कई मीर पीर फकीर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -9
- कई जिनस जुगत थंभन में, कई जिनस जुगत दिवाल । कई जिनसे द्वार क्यों कहूं, ए जो जिनस जुगत पड़साल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -59
- कई जिनस जुगत रंग फूल में, कई जिनस जगत पात रंग । नूर बाग खासी हक हादी रूहें, खूबी क्यों कहूं जुबां इन अंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -48
- कई जिनसें कई जुगतें, कई तरह भांत सलूकी ए। कई रंग नंग तेज रोसनी, नूर छायो अंबर जिमी जे || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -44
- कई जिनसे जुगत सीढ़ियां, कई जुगतें जिनसें मंदिर । कई जिनस झरोखे जालियां, कई जिनस जुगत अंदर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -60
- कई जिनसे वस्तर भरे, कई विध विध के विवेक । वस्तर भूखन किन विध कहूं, कई विध जुगत अनेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -62
- कई जुगतें कई जिनसें, कई सामग्री सनंध । क्यों करूं बरनन धाम को, ए झूठी देह मत मंद || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -20
- कई जुगतें खूबियां, कई जुगतें सनकूल । कई जुगतें सलूकियां, कई जुगतें रस फूल || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -75

- कई जुगतें चित्रामन, ऊपर पर केसन । कई मुख मीठी बानियां, स्वर जिकर करें रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -76
- कई जुगते जगन करतां, कई जुगते उपचार । कई जुगते धरम पालें, पण हिरदे घोर अंधार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -3, चौ -5
- कई जुगते जोगी जंगम, कई जुगते सन्यास । कई जुगते देह दमें, पर छूटे नहीं जम फांस || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -16
- कई जुगते जोगी जंगम, कई जुगते सन्यास । कई जुगते देह दमे, पर छूटे नहीं जमफांस || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -12
- कई जुगते वैराग वरते, कई जोग पाले सिध । मठवाले पिंड पाले, पण नहीं परम नी निध || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -3, चौ -7
- कई जुगते सिध साधक, कई जगते सन्यास । कई जुगते देह दमे, पण छूटे नहीं जमफांस || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -3, चौ -6
- कई जुगतें सिध साधक, कई व्रत धारी मुन । कई मठ वाले पिंड पालें, कई फिरें होए नगिन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -18
- कई जुगतें हिंडोलों मंदिरों, कई जंजीरां झलकत । माहें डब्बे पुतलियां झनझनें, कई विध झूलत बाजत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -64
- कई जुदी जुदी जिनसों खोजिया, सबों आप अपने मद । तिनसे कछुए न सरया, बिना एक महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -9
- कई जुदी जुदी विद्या जानवर, कई चढ़ें ऊंचे कूदें फांदें । टेढ़े आड़े सीधे उलटे, कई विध गत साधे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -38
- कई जुदे जुदे बोलें भूखन, सब बाजे मिलावत संग । एक रस सब गावत, नवरंग-बाई के रंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -59
- कई जुदे जुदे रंगों पुतली, कई बने चित्रामन । कई विध खेल जो खेलहीं, मुख मीठी बान रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -36
- कई जोर किया जबराईलें, आया एक कदम महंमद खातिर । तो भी आगूं आए न सक्या, कहे जलें मेरे पर || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -55
- कई झीले चाकले दुलीचे बिछोनें, कई बिध तलाई सिराने । कई रंग ओछाड़ गाल मसूरे, कई सिरख सोड़ मन पूरे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -74
- कई डिंभ करामात, कई जंत्र मंत्र मसान । कई जड़ी मूली औखदी, कई गुटका धात रसान || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -21
- कई डिम्भ करामात, कई जंत्र मंत्र मसान । कई जड़ी मूली औखदी, कई गुटका धात रसान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -17
- कई ताल नेहेरें मानिक पर, ढ़िग हिंडोलों चादरें गिरत । ए कदम मोमिन क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -35

- कई तेज जोत प्रकास में, अवकास भस्यो ताके नूर । जिमी मोहोल बन पसु पंखी, ए कब देखें अर्स जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -22
- कई थंभ हैं मानिक के, कई पाच कई पुखराज । नूर रोसन एक दूसरे, मिल जोतें जोत बिराज || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -86
- कई दयोहरे अपासरे, कई मुनारे मसीत । तलाव कुआ कुंड बावरी, मांहें विसामां कई रीत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -3
- कई दरवाजे खोजे कबीरें, बैकुंठ सुन्य सब देख्या । आखिर जाए के प्रेम पुकास्या, तब जाए पाया अलेखा || ग्रं - किरन्तन, प्र -32, चौ -10
- कई दिन सुनाई मुझ को, श्री मुख की चरचा । और सबे विध समझी, पर लग्या न कलेजे घा || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -21
- कई दिवालें कई चौक थम्भ, कई मन्दिर कमाड़ी द्वार । एक भोम को बरनन ना केहे सकों, एतो नवों भोम विस्तार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -80
- कई दीन फिरके मजहब, खेल फरिस्ते दम । ए खेल किया हुकमें देखने, सब पर एक हुकम || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -13
- कई दुकान बाजार सेहेर, चौक चौवटे अनेक । अनेक कसबी कसब करते, हाट पीठ बसेक || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -10
- कई दुनियां में बुजरक हुए, किन बका तरफ पाई नाहें । सो इलम नुकता ईसे का, बैठावे बका माहें || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -3
- कई दुनी हुई कई होएसी, पर कबूं न जाहेर उमत । दे भिस्त चौदे तबकों, करें बखत रोज कयामत || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -64
- कई देत गुलाटियां, कई अनेक करें फैल हाल । सौ सौ गत देखावहीं, ज्यों हक हादी रूहें होत खुसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -43
- कई देत गुलाटियां, कई साधत स्वर समान । कई खेलें चलें टेढ़े उलटे, कई नई नई मुख बान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -19
- कई देव दानव हो गए, कई तीर्थंकर अवतार । किन सुपने ना श्रवनों, सो इत मिल्या नर नार || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -3
- कई धारा गुफा झापा, कई जो गाले तन । कई सूके बिना खाए, कई करे पिंड पतन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -27
- कई नकस कई कटाव, इन भोम में देखत । दिन पंद्रा खेलें बन में, पंद्रा आरोगें इत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -3
- कई नकस पुतली चित्रामन, कई बेल पसु पंखी बन । कंचन कड़े जंजीरां जड़ियां, कई झलके थंभ सीढ़ियां || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -68
- कई नाचत नट बांदर, कई बाजे बजावत । ए खेलौने हक हादीय के, केहेनी जुबां क्यों पोहोचत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -88

- कई नाचत हैं पाउं सों, कई नचावें पर । कई नाचत हैं उड़ते, कई हाथ चोंच सिर लर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -20
- कई नाम इमाम धर धर गए, बोल बोल गए बेरद । ठौर कायम किने न पाइया, बिना एक महमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -13
- कई नूर चौक चबूतरे, कई नूर के थंभ दिवाल । कई बार साखे ताके नूर के, क्यों कहूं नूर बिना मिसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -90
- कई नेक छेदें कई न छेदें, कई बहुत फारें कान । कई माला तिलक धोती, कई धरे बैठे ध्यान || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -11
- कई नेक छेदें कई न छेदें, कई बोहोत फारें कान । कई माला तिलक धोती, कई धरे बैठे ध्यान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -8
- कई नेहेरें कई चादरें, कई फल फूल बन सोभित । ऊपर झरोखे सब बिध तालों, कहूं गिनती न सोभा सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -4
- कई नेहेरें कई चेहेबच्चे, कई कारंजें जल उछलत । कई मोहोल माहे बैठकें, हक हादी रूहें खेलत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -62
- कई नेहेरें फिरें माहें फिरतियां, कई आड़ियां आवत । एक बड़ी नेहेर बाहेर निकसी, सो पानी पूर ज्यों चलत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -21
- कई नेहेरें मोहोलों मिने, चारों तरफों फिरत । कई मोहोल नेहेरें कई, कई विध विध सों विचरत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -23, चौ -14
- कई पढ़ पढ़ काजी हुए, कई आलम आरिफ । माएने मगज मुसाफ के, किन खोल्या ना एक हरफ || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -2
- कई पढ़े किताबें सहीफे, पर हुआ न काहूं मकसद । बका तरफ किन पाई नहीं, बिना एक महमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -10
- कई पवन दूध आहारी, कई ले बैठत हैं नेम । कई कैद ना करे कछुए, ए सब छल के चेन || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -29
- कई पसु पंखी जवेरन के, कई रंग बिरंग कई विध । जानों के खेल पर सब खड़े, ए क्यों कही जाए सनंध || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -27
- कई पहाड़ झिरने झिरें, कई ऊपर नेहेरें चली जाएं । कई उतरें ऊपर से चादरें, कई तालों बीच आए समाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -24, चौ -11
- कई पिउ पिउ कर पुकारहीं, कई करें खसम खसम । कई धनी धनी मुख बोलहीं, कई कहें भी तुम भी तुम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -37
- कई पुतलियां जवेरन की, खड़ियां तले इजन । हजार दौड़ें एक हुकमें, आगू इन रूहन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -60
- कई पुरे इन बन में, तिनके बड़े द्वार । तिन द्वार द्वार कई गलियां, तिन गली गली मंदिर अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -10

- कई पुरे कई छूटक, कई गलियाँ बने हुनर । या गलियों या मंदिरों, सब छाया बराबर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -13
- कई पेहेलवान कहावें दुनी में, ढूंढ़ ढूंढ़ हुए सरद । सुन्य सुरिया पार न ले सके, बिना एक महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -12
- कई पैगंमर आदम, कई फिरे फिरस्ते फेर । तबक चौदे देखिए, किन ठौर न छोड़ी अन्धेर || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -14
- कई पोथी पढ़ पढ़ पढ़हीं, पर न सुध हद बेहद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -8
- कई फल फूल पत्र भखी, कई आहार अलप । करें काल की साधना, जिया चाहें कलप || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -26
- कई फल फूल पत्र भखी, कई आहार अलप । करें काल की साधना, जिया चाहें कलप || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -30
- कई फलंग दे उछलतियां, कई फूल लता जो फेरतियां । कई हलके हलके हालतियां, कई मालतियां मचकतियां || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -88
- कई फिरत हैं रोगिए, कई लूले टूटे अपंग । कई मिने आंधले, यों होत खेलमें रंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -30
- कई फिरत हैं रोगिए, कई लूले टूटे अपंग । कई मिने आंधले, यों होत खेलमें रंग || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -32
- कई फिरते चबूतरे, फिरते मन्दिर गिरदवाए । थंभ तिन आगू फिरते, बीच फिरता चौक सोभाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -12
- कई फिरें देस देसांतर, कई करें काओस । कई कपाली अघोरी, कई लेवें ठंढ पाओस || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -28
- कई फिरें देस देसांतर, कई करें काओस । कपाली अघोरी, कई लेवें ठंड पाओस || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -24
- कई फुहारे मुख जानवरों, जल तीर ज्यों छटत । क्यों भूलें इत सुख कदम के, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -69
- कई फौजें कई जिनस रंग, हर फौजें कई सिरदार । तिन सिरदार तले कई फौजें, तिन एक फौज को नाहीं सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -55
- कई फौजें तिन सिरदार की, हर फौजों कई जमातदार । गिनती तिन जमात की, होवे नहीं सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -13
- कई फौजे पसअन की, कई फौजें जानवर । जिमी खाली कहूं न पाइए, बसत अर्स लसकर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -51
- कई फौजें पसुअन की, और कई फौजें जानवर । सुआ मैना नकीब तिनमें, फौज रखें मिसल पर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -16

- कई बड़े कहावे पीर फकीर, कई आरिफ उलमा । यार असहाब कई खलीफे, हादी महंमद है सब का || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -79
- कई बड़े कहे पैगंमर, पर एक महंमद पर खतम । कई फिरके हर पैगंमरों, गिरो सब कहे नाजी हम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -20
- कई बड़े पसु पंखी अर्स के, कई उड़ें खेलें कूदत । रूहें क्यों रहें हक चरन बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -49
- कई बड़े मोहोल किनारे सागरों, कई मोहोल टापू झलकत । ए मोमिन कदमों सुख लेवहीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -37
- कई बंदे एक हादी के, जुदे पड़े कर जिद । पर हक किने न पाइया, बिना एक महमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -11
- कई बन आगू आए मिल्या, जो बन बड़ा कहियत । ऊंचे विरिख अति सुन्दर, जित हिंडोलों हींचत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -21
- कई बन बेली नूर की, कई नूर पसु जानवर । कई नूर कटाव तिन बीच में, नूर कहां लग कहूं क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -76
- कई बन स्याह सुपेत हैं, कई बन हैं नीले । कई बन लाल गुलाल हैं, कई बन हैं पीले || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -18
- कई बन हैं इत ताड़ के, कई खजूरी नारियर । और नाम केते लेऊ, बट पीपर सर ऊमर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -4
- कई बन हैं इत ताड़ के, कई खजूरी नारियल । और नाम केते लेऊ, बट पीपल सर ऊमर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -61
- कई बन हैं एक रंग के, कई एक एक में रंग दस । इन विध कई अनेक हैं, कई जुदे जुदे रंगों कई रस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -19
- कई बन हैं फूलन के, इन बन को नाहीं सुमार । कई भातें रंग कई जुगतें, कई कांगरियां किनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -18
- कई बाघ चीते दीपे केसरी, बोलें कदें गरजत । रूहें क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -47
- कई बातें या सुख की, जीव हिरदे जाने । ए सुख पेहेले थें अलेखे, अति अधिकाने || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -117
- कई बांदर बाजे बजावहीं, आगू अर्स के नाचत । ए सुख हमारे कहां गए, हम देख देख राचत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -20
- कई बानी इस्कें उपजी, कई इस्कें पड़ी पुकार । ए रूहें भी वास्ते इस्क के, हाए हाए हुइयां न खबरदार || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -46
- कई बिध अस्वारी होत है, बुजरक जो जानवर। जीन जुगत क्यों केहे सकों, जो असल बने इन पर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -4

- कई बिध खेल रूहन के, मन वेगी जानवर । तिन पर अस्वारी करके, चढ़त आसमान पर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -6
- कई बिध खेलें यों प्रकृत, आप अपनी इछासों खेलत । या समें श्री बैकुंठ नाथ, इछा दरसन करने साथ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -11
- कई बिध धनिएँ ऐसा लिख्या, देने चौदे तबकों ईमान । सो धाम धनी इत आए के, कराई सबों पेहेचान || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -39
- कई बिध नूर सिंघासन, कई बिध बिछौने नूर । कछू नजरों न आवे नूर बिना, सब दिसा नूर जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -10
- कई बिध यों उलटा, वैराट नेत्रों अंध । चेतन बिना कहे छूत लागे, फेर तासों करे सनमंध || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -14
- कई बिध सोभा भोम की, कई रंग नंग नकस अनेक । कई ठौर अलेखे जड़ित में, जो देखो सोई नेक से नेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -56
- कई बिना हिसाबे दयोहरे, जुदे जुदे अपने मजहब । कई भांतों कई जिनसों, करत बंदगी सब || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -4
- कई बिरिख कई हिंडोले, कई जुदी जुदी जिनस । स्याम स्यामाजी साथजी, सुख लेवें अरस-परस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -22
- कई बुजरक कहावते रातमें, बैठे बैतअल्ला ले । हक हम में बैठ करें हिसाब, जानें हमहीं सिर सब के || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -32
- कई बेल कड़ी में पात फूल, सब नंग नकस कटाव । मानो हेम मिलाए के, कियो सो मिहीं जड़ाव || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -126
- कई बेली एक दिवाल में, कई बेल फूल तिन पात । तिन पात पात कई नंग हैं, एक नंग रंग कयो न जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -21
- कई बेली किनार में, और कई विध बेली चीन । बीच बूटी छापे कई नकस, इन जल की जाने जल मीन || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -21
- कई बैठक तले ऊपर, कई ठौर तले कराड़ । सोभा जल बन सोभित, अतंत खूबी इन पहाड़ || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -13
- कई बैठक मोहोल चांदनी, हक हादी इत आवत । साथ सब रूहन को, सुख मन चाहे देवत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -146
- कई बैठत छज्जों जाए, बैठे अंगसों अंग मिलाए। मुख बानीसों हेत उपजावें, एक दूजी को प्रेम बढ़ावें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -122
- कई बैठत जाए हिंडोले, अनेक करत कलोलें । कई बैठत जाए पलंगे, बातां करत मिनों मिने रंगें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -126
- कई बैठत मिलावे आए, बैठे अंगसों अंग लगाए। सुख एक दूजीको उपजावें, मुख बानी सों प्रीत बढ़ावें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -124

- कई बैठे सुखपाल में, कई दौड़े उचाए । जलेब आगे जोर चले, ए खेल यों खेलाए || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -25
- कई भांतें कई खेलौने, कई खेल खसाली करत । कई विधों निरत नाच के, मासूक को हँसावत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -35
- कई भांतों नेहेरें बन में, सागरों निकस मिलत । मोमिन खेलें कदम पकड़ के, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -36
- कई भेख जो साध कहावहीं, कई पंडित पुरान । भेख जो जालिम, कई मूरख अजान || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -8
- कई भेख जो साध कहावें, कई पंडित पुरान । कई भेख जो जालिम, कई मूरख अजान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -4
- कई भोजन मेवे मिठाइयां, तकिए सेज जवेर । सेवक सेवा दुनियां, करसी ब्याह सुंदर || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -57
- कई मंदिर इत फिरते, कई चारों तरफों मंदिर । तिनमें कई विध गलियां, निकुंज बन यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -11
- कई मलकूत वारू तिन खाक पर, जिन दिल ए कदम आवत । और दिल अर्स न होवहीं, बिना असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -25
- कई महंमद के कहावहीं, पर पूरे न लगे दिल दे । तो मुसाफ न पाया मगज, हाए हाए जान बूझ जले ए || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -29
- कई मारे कई मारत है, ऐसी बुजरकी एह । न देत देखाई इन माया में, बिना बुजरकी जेह || ग्रं - किरन्तन, प्र -102, चौ -3
- कई मिनो मिने काल क्रोध सों, लड़ाई करते दिन जाए । सेवा धनी न प्रीत सैयन सों, सो डारी आसमान से पटकाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -77, चौ -5
- कई मिलावे साथ के, सुन्दर झरोखे झांकत । सोभा देखत बन की, मोहोल इन समें सोभित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -65
- कई मिलावे सोहने, धनी सैयों के खेलौने । पसु पंखी जुत्थ मिलत, आगे बड़े दरवाजे खेलत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -59
- कई मीठे मीठे मीठरड़े, कई फरसे फरसे मुख पर । कई तीखे तीखे तीखरड़े, कई खट्टे खट्टे खटूबर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -22
- कई मुख बानी उचरें, तान मान गुन गान । आठों जाम करत हैं, सुन्दर ध्यान बयान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -43
- कई मुख बानी बोलत, अतंत मीठी जुबान । अति सुन्दर हैं सोहने, क्यों कर कीजे बयान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -15
- कई मुरग सुतर कुलंग, खेल करें लड़ाई अभंग । सीनाकस गुलाटें खावें, कबूतर अपनी गत देखावें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -53

- कई मेवे इन बन में, केती कहूं जिनस । जुदे जुदे स्वाद कई विध के, जानो एक से और सरस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -27
- कई मेवे फलन के, कई मेवे हैं फूल । कई मेवे डार पात के, कई मेवे कन्दमूल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -20
- कई मेवे हैं जिमी में, कई बेलियों दरखत । कई मेवे फल की खलड़ी, कई रस बीज में उपजत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -24
- कई मोहोल ऊंचे अति बड़े, जैसे हक दिल चाहे । हर मोहोलों बीच नेहेरें चलें, ए सुख बैठक कही न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -23, चौ -8
- कई मोहोल कई मालिए, सोई झरोखे सुन्दर । द्वार बार सीढ़ी खिड़कियां, अति सोभा लेत मन्दिर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -114
- कई मोहोल ढिग सागरों, और कई मोहोल बनराए । तिनों में नेहेरें चलें, हम सुख लेती इत आए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -25, चौ -4
- कई मोहोल नेहेरें किनारें, कई बन में बिराजत । भांत भांत कई विध के, ए किन विध करूं सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -39
- कई मोहोल पहाड़ों मिने, कई मोहोल पहाड़ों ऊपर । जो बन पहाड़ या जिमिएं, सो इन जुबां कहूं क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -24, चौ -9
- कई मोहोल बराबर सागरों, मोहोल ऊंचे चढ़े अनेक । कई जुगतें सोभा सुन्दर, ए क्यों कहे जुबां विवेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -25, चौ -10
- कई मोहोल मन्दिरों चबूतरे, इत बने हैं बनके । इत हक हादी रूहें बैठक, अति ठौर खुसाली ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -52
- कई मोहोल मानिक पहाड़ में, हिसाब में न आवत । ए मोमिन कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -34
- कई मोहोल मानिक बन पहाड़ के, कई नेहेरें मोहोल बन । मोहोल पहाड़ कई सागरों, फेर आए दूब बन अंन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -46
- कई मोहोल सुख सागरों, कई सुख टापू मोहोल । ए सुख अपार अलेखे, सो क्यों कहूं इनकी तौल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -25, चौ -11
- कई मोहोलातें इत नूर की, कई टापू नूर मोहोलात । ए निपट बड़े मोहोल नूर के, मोहोल नूर आकास में न समात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -8
- कई मोहोलों में नूर थंभ, तिन कई थंभों नूर नकस । नेक नकस नूर देखिए, जानों ए नूर सबथें सरस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -75
- कई रंग इजार बंध में, अनेक विध के नंग । सारी उमर बरनन करूं, तो होए ना सुपन के अंग || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -75
- कई रंग इजार मासूक की, दावन में झांई लेत । छेड़े पटुके दावन पर, हाए हाए दिल अजूं न घाव देत || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -112

- कई रंग इन दरखतों, अनेक रंग इन पात । अनेक रंग फल फूल में, याकी इतहीं होवे बात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -31
- कई रंग कड़ी में देखत, जानों के हेम नंग जड़ित । सो सोभित सब दिल चाहे, नित नए रूप धरत || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -125
- कई रंग करे एक खिन में, नई नई जगत देखाए । सोहे हमेसा सब अंगों, पेहेने सोभित चित्त चाहे || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -75
- कई रंग कहूं वस्तरों, के कहूं जवेरों रंग । इन विध रंग अनेक हैं, ताके उठे कई तरंग || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -27
- कई रंग के इत बिरिख हैं, नीले पीले सेत लाल । क्यों कहूं सोभा इन मुख, जाकी पूरन सिफत कमाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -22
- कई रंग के नकस, कई भांत बेल फूल माहें । कई रंग इनमें जवेर, इन जुबां में आवत नाहे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -35
- कई रंग जवेर चबूतरों, कई दिवालें रंग नंग। ऊपर तले का नूर मिल, करत अंबर में जंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -123
- कई रंग जिमी केती कहूं, और कई रंग नूर दरखत । सोई जिमी रंग पसु पंखियों, कर तुहीं तुहीं जिकर करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -31
- कई रंग नंग कठेड़े, परत जल में झांई । तेज जोत जो उठत, तले मावे न आकास माहीं || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -24
- कई रंग नंग कहूं केते, हर एक तरंग कई देते । बांई बगलों तकिए दोए, बेला बारीक बरनन कैसे होए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -173
- कई रंग नंग झलकत, जिमी झलके दिवालों बन । सो छाए रही जोत आसमान में, पसु पंखी नूर रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -7
- कई रंग नंग फूल पात में, ए जिनस न आवे जुबांए । न आवे मुख केहेनी मिने, जो रूह देखे हिरदे माहें || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -56
- कई रंग नंग माहें रेसम, रंग नंग धागा न सूझत । हाथ को कछू लगे नहीं, नरम जोत अतंत || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -44
- कई रंग नंग वस्तर भूखन, चढ़ी आकास जोत लेहेर । जो जोत नख चरन की, मानों चीर निकसी नेहेर || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -72
- कई रंग बन छत्रियां, सुन्दर अति सोभाए । करत अंबर में रोसनी, पोहोंची अर्स हिंडोलों जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -6
- कई रंग रस नरमाई, कई सुख बानी जोत खुसबोए । ए अर्स वस्तर भूखन की, क्यों कहूं सोभा सलूकी सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -48
- कई रंग रेहेस संग धनी के, केते कहूँ विलास । प्रेम प्रीत सनेह कई रीत, मीठी मुसकनी कई हाँस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -45

- कई रंग सोभित साड़ियां, रंग रंग में कई नंग सार । भिन्न भिन्न झलके एक जोत, कई किरनें उठे बेसुमार || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -17
- कई रंग हैं इजार में, उठत जामें में झांई || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -33
- कई रंग हैं एक पात में, कई रंग हैं फल फल । अब क्यों बरनों में इन जुबां, कई बन हैं सामिल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -24
- कई रंगों कई विध खेलत, पहाड़ से सेत फील । दम न रहें मासूक बिना, धनी क्यों डारी बीच ढील || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -6
- कई रंगों के जवेर, करत जोत अपार । कई बेल फूल पात नकस, ए सिफत न आवे सुमार || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -92
- कई रंगों गुन गावते, सब स्वर बांधे रसाल । जस धनी को गावहीं, जिकर करें माहें हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -24
- कई रंगों जरी पसमी, कई दुलीचे रंग केते । सोभित हैं सबों बैठकें, कई नकस बेल फूल जेते || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -29
- कई रंगों जिमी कई आकासें, पस पंखी बन कई रंग । सब चीजों सोभा सब आसमान, सोभा नूर सबों में जंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -55
- कई रंगों नूर झलकत, कई नूर रंग तले ऊपर । सब तरफों नूर जगमगे, ए नूर जोत कहूं क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -91
- कई रंगों बन सोभित, चौक सोभित चबूतर । ए खूबी आगू अर्सके, इन जुबां कहूं क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -34
- कई रद बदलें करी साहेब सों, अपनी उमत के वास्ते । या विध कलाम कई लिखें, सो पढ़े न माने ए || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -14
- कई रस इन सराब में, ए जो पिलावत सुभान । मस्ती पिलावत कायम, मेहेर कर मेहेरबान || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -4
- कई रस रंग एक गौर में, एक रंग मांहें कई रस । क्यों बरनों आगे मोमिनों, ए मुख मासूक अजीम अर्स || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -39
- कई राए राने पातसाह, छत्रपति चक्रवर्त । ताए हक सुपने नहीं, सो गए लिए गफलत || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -2
- कई रिझावें लड़ के, कई नाच मिलावें तान । कई उड़ें कूदें फांदहीं, कई बोलत मीठी बान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -18
- कई रेहेत अंदर जानवर, कई विध बोलें बान । ए खूबी खुसाली हक की, जुदी जुदी कई जुबान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -50
- कई रोते फिरे रात दिन, पर हुआ न दीदार खुद । कौन सुख देवे तिनको, बिना एक महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -17

- कई लंगरी बोदले, कई आलम पढ़े इलम । कई ओलिए बेकैद सोफी, पर छोड़े नहीं जुलम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -10
- कई लंगरी बोदले, कई सेख दुरवेस । कई इलम कई आलम, कई पढ़े हुए पेस || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -12
- कई लड़ के देखावहीं, कई उड़ देखावें कूद । क्यों कहूं सिफत कायम की, इन जुबां जो नाबूदरे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -42
- कई लसनियां नीलवी, एक थंभ एक रंग । यों फिरते थंभ नंगन के, जुदे जुदे सब नंग || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -87
- कई लाल लाल कहावते, सो हो गए सब जरद । और लाल कोई ना हुआ, बिना एक महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -18
- कई लिखी इसारतें अर्स की, कई रमूजें अनेक । पेहेले पढ़ाई मुझ को, मैं ही खोलूं एही एक || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -57
- कई ले खड़ियां रूमाल, कई ले खड़ियां पान डब्बे । बंदियां बारे हजार की, आगू अलेखे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -66
- कई लेहेरें आवत हैं, जो नाहीं जिमी को पार । पीछे आवें दरिया पसुअन के, तिन दरियाव नहीं सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -19
- कई लोचें कई मूझें, कई बढ़ावें केस । कई काले कई उजले, कई धरें भगुए भेस || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -10
- कई लोभे लिए लज्या लिए, कई लिए अहंकार । यों छलें पीछे कई पटके, जो केहेते हम सिरदार || ग्रं - किरन्तन, प्र -88, चौ -12
- कई वली पैगंमर आदम, ए कहावें सब मुरसद । और मुरसद कोई न हुआ, बिना एक महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -20
- कई वस्तां आगू ले खड़ियां, वस्तर भूखन कई साज । ए साहेबी अर्स अजीम की, ए नाहीं ख्वाब के राज || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -67
- कई विध उठत मीठी बानी, मुख बरनी न जाए बखानी । इन समें की जो आवाज, सोभा धाममें रही बिराज || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -115
- कई विध करें लड़ाइयां, कई विध नाचे मोर । कई विध हँसावें धनी को, खेल करें अति जोर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -39
- कई विध कहूं बाजंत्र की, कई विध नट नाचत । कई विध की फेरी कहूं, कई रंग रस गावत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -62
- कई विध कह्या मोहे पिउजी, पर मैं कछू न कियो सनेह रे । अब तो बैठी धन खोए के, हाथ आया था जेह रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -72
- कई विध की इत बैठक, जदी जदी जिनस । चारों तरफों अर्स के, देखी और पे और सरस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -156

- कई विध की इत बैठकें, जुदे जुदे कई ठौर । चारों तरफों अर्स के, देखी एक पे एक और || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -94
- कई विध की निसानियां, जिन विध हुई जागन । हँसते हरखे जागसी, सुख देसी सब सैयन || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -30
- कई विध के इत मोहोल हैं, सब रंग के इत बन । कई जल धारें फुहारे, रस मेवे स्वाद सबन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -8
- कई विध के कटाव, कई बिरिख बेल नकस । पात फूल बीच फिरते, और पे और सरस || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -96
- कई विध के फल लटकत, जल पर बनी जो हार । लटके जवेर जड़ाव ज्यों, ऐसी बन की रची किनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -8
- कई विध के बाजे बजे, नवरंग बाई नाचत । हाथ पांउ अंग बालत, कही न जाए सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -52
- कई विध के माहें हैवान, कई जिन देव इन्सान । बीच मरजिया होए काढ़ी सीप, मिने मोती महंमद पेहेचान || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -14
- कई विध के सुख कदम में, मेहेर कर देत मेहेरबान । तो अर्स कह्या दिल मोमिन, इन पर कहा कहे सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -55
- कई विध के सुख जोत में, और कई सुख सुन्दरता । कई सुख तरह सलूकियां, सिफत पोहोंचे न हक बका || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -10
- कई विध के सुख हुकमें, दोऊ तरफों आड़ा पट दे । अर्स दुनी बीच रूहों को, दिए सुख दोऊ तरफों के || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -60
- कई विध देत गुलाटियां, कई उलटे टेढ़े चलत । कई कूदें फांदें उड़ें लड़ें, कई विध खेल करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -13
- कई विध नूर चबूतरे, कई विध नूर मंदिर । कई विध रोसन नूर किनारे, कई बिध नूर अंदर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -100
- कई विध प्याले सीसे सीकियां, कई डब्बे तबके दिवाल । सोभित सुन्दर मंदिरन में, कई लटकत रंग रसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -63
- कई विध बाजे बजावहीं, इत बांदर नट नाचत । रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -48
- कई विध बानी बोलहीं, कई विध जिकर सुभान । कई दिन रातों रटत है, मुख मीठी कई जुबान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -11
- कई विध मेहेर करत हैं, मासूक जो मेहेरबान । उलट आप आसिक हुआ, जो वाहेदत में सुभान || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -7
- कई विध यों उलटा, वैराट नेत्रों अंध । चेतन बिना कहे छूत लागे, फेर तासों करे सनमंध || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -17

- कई विध यों मधुबन में, सुख लेवें चित्त चाहत । सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -50
- कई विध विध के कलस कई, कई किनारे कई जिनस । झलकार न माए आकास, कई कटाव कई नकस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -13
- कई विध विध के सुख धाम के, जो हमको दिए इत जी । तारतम करके रोसनी, कई बिध करी प्राप्त जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -36, चौ -4
- कई विध सुख तारतम के, जो कहे वचन सुख मूल रे । या विध हमें कौन कहे बरनन, सनमंध होए सनकूल रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -80
- कई विरह विलास लिए मिने रात, अंग आनंद भयो जोलों प्रात । रास खेल के फिरे सब एह, साथ सकल मन अधिक सनेह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -41
- कई श्रीपात ब्रहमचारी, कई वेदिए वेदांत । कई गए पुस्तक पढ़ते, परमहंस सिधांत || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -18
- कई श्रीपात ब्रहमचारी, कई वेदिए वेदान्त । कई गए पुस्तक पढ़ते, परमहंस सिद्धांत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -14
- कई संत जो महंत, कई देखीते दिगंमर । पर छल ना छोड़े काहूं को, कई कापड़ी कलंदर || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -24
- कई संत जो महंत, कई देखीते दिगम्बर । पर छल ना छोड़े काहू को, कई कापड़ी कलंदर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -20
- कई सती सीलवंती, कई आरजा अरधांग । जती बरती पोसांगरी, ए अति सोभावे स्वांग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -11
- कई सराए अपासरे, कई ताल कुंड बिरबाव । कई बिध बांधे बेरखे, कई साल पोसाल टिकाव || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -6
- कई सरे अमल बीच रात के, चली जो सभे सक । सो फजर हक इलमें, बेसक करी खलक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -17
- कई साखें गुन मुख केहे केहे, उमर खोई मैं सब । अजूं आतम खड़ी ना हुई, क्यों पुकारूं मैं अब || ग्रं - किरन्तन, प्र -100, चौ -6
- कई साखें गुन विचार विचार, बिध बिध करी पुकार । तो भी घाव कलेजे न लग्या, यों गया जनम अकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -100, चौ -5
- कई साखें धनिएँ दई मुझे, श्री स्यामा जी आए इत । सो तारतम कया मैं तुमें, देखो साख देत है चित || ग्रं - किरन्तन, प्र -98, चौ -2
- कई साखें बीच कागदों, मुझ पर आया फुरमान । इनमें इसारतें रमूजें, सो मैं ही पाऊं पेहेचान || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -25
- कई साखें लई धनी की, कई साखें लई फरमान । कई साखें लई सास्त्रन की, अंतस्करन में आन || ग्रं - किरन्तन, प्र -100, चौ -2

- कई साखें साधुन की, कई साखें सब्द ब्रहमांड । आतम मेरी अनुभव से, लगाए देखी अखंड || ग्रं - किरन्तन, प्र -100, चौ -3
- कई साखें साधो संतो, बोले बानी आगम । कहे ना सकू तुमको साथ जी, दोष देख अपना हम || ग्रं - किरन्तन, प्र -98, चौ -10
- कई साखें सास्त्र साधुन की, दे दे कराई पेहेचान । मूल सरूप देखाए धाम के, कर सनमंध दियो ईमान || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -14
- कई साखें सास्त्रन की, कई साखें साधों की बान । ए ले ले रूह को दृढ़ करी, आखिर वसीयत नामें निदान || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -2
- कई साड़ी रंग सेत की, कई साड़ी रंग नीली । कई साड़ी रंग लाल हैं, कई साड़ी रंग पीली || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -22
- कई सादे सिंघासन, कैयों ऊपर छत्र । कई ठौर कदेले कुरसियां, कई तखत खूबतर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -31
- कई सिधियां सलकतियां, कई विध आवें जो चलतियां । सखी एक दूजी के आगे, आए आए के चरनों लागे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -90
- कई सिवी कई वैष्णवी, कई साखी समरथ । लिए जो सारे गुमाने, सब खेलें छल अनरथ || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -17
- कई सिवी कई वैष्नवी, कई साखी समरथ । लिए जो सारे गुमाने, सब खेलें छल अनरथ || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -13
- कई सीढ़ियां सोब्रन की, कई हीरा मानिक पुखराज । उपली भोमे चौकी पर, कई धरे संदूकें साज || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -34
- कई सीलवंती सती कहावहीं, कई आरजा अरधांग । जती वरती पोसांगरी, ए अति सोभावें स्वांग || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -15
- कई सीसे प्याले डब्बे, कई अन्दर गिरद देखत । कई तबके छोटी बड़ियां, कई सीकियां लटकत || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -65
- कई सुख अंग सरूप के, कई सुख रंग रसाल । कई सुख मीठी जुबांन के, कै प्याले देत रस लाल || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -11
- कई सुख अनुभव बन के, कई सुख सातों त्रट रे । सुख ताल मंदिर मोहोलन के, कौन देवे उड़ाए अंतर पट रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -77
- कई सुख अमृत सींचत, ज्यों रोप सींचत बनमाली । इन विध नैनों सींचत, रूह क्यों न लेवे गुलाली || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -12
- कई सुख ऊपर बैठक के, कई सुख दरखतों छात । कई सुख तले बड़े बिरिख के, झूमत हैं ऊपर मोहोलात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -77
- कई सुख कायम इन इलम में, आवें न मांहें हिसाब । हक सुराही बका खिलवत में, ए इलम पिलावे सराब || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -47

- कई सुख चबूतर के, कई कठेड़े गिलम । कई सुख बीच तखत के, कई सुख देत बैठ खसम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -76
- कई सुख जोए बाग के, कई सुख कुंज गलियन । कई सुख पसु पंखियन के, मुख बानी मीठी बोलन || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -17
- कई सुख दिए अर्स के, कई सुख दिए निसवत । कई सुख दिए इलम के, बेसक जो नसीहत || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -11
- कई सुख दिए निसबत कर, ए झूठा तन कर यार । क्यों कहूं सुख मेहेबूब के, जाके कायम सुख अपार || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -21
- कई सुख दिए रूहन में, ए मेला बैठा विध जिन । हक ऊपर आप बैठके, सुख देवें सबन || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -12
- कई सुख दिए लैलत कदर में, जो अब्बल दो तकरार । सुख दिए फजर तीसरे, कई सुख परवरदिगार || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -20
- कई सुख बड़े अर्स के, बन गिरद मोहोलात । ए कायम सुख हक अर्स के, सुख हमेसा दिन रात || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -16
- कई सुख बीच बंगलों, कई सुख खूब खुसाली खास । सो दिल कब हम देखसी, हकसों विविध विलास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -13
- कई सुख मीठी बान के, हक देत कर प्यार । ज्यों मासूक देत आसिक को, एक तन यार को यार || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -8
- कई सुख रास में खेले रंग, सो हिरदे में भए अभंग । या विध रास भयो अखंड, थिरचर जोगमाया को ब्रहमांड || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -37
- कई सुख लें मीठे पहाड़ के, कई विध हींचे हिंडोले । कई सुख हिंडोले बाहेर, बीच पहाड़ के खुले || ग्रं - परिक्रमा, प्र -24, चौ -5
- कई सुख लें हक के खेल में, फेर हकम पोहोंचावे खिलवत । कई अनहोनी कर सुख दिए, हुकमें जान हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -59
- कई सुख सलूकी इन पाग में, मैं तो कहूं बिध एक । दिल चाही रूह देखत, एक खिन में रूप अनेक || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -46
- कई सुख सातमी भोम के, कई हिंडोले हजार । रूहें आप मन चाहते, अर्स आराम नहीं पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -115
- कई सुख हमको अर्स के, भांत भांत दिए अपार । तो भी नींद हमारी न गई, इत भी हुए गुन्हेगार || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -50
- कई सुख हाँसी फरामोस के, कई हजूर सुख खिलवत । कई सुख पसु पंखियन के, कई सुख मोहोलों बैठत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -75
- कई सेवें धनीय को, करके प्रेम सनेह । हम सैयों को पेहेचान पेड़ की, होसी धाम में धंन धंन एह || ग्रं - किरन्तन, प्र -77, चौ -6

- कई सोभित साखें कमाड़ियां, जोर जवेर झलकार । घोड़े कड़े बेनी जंजीरां, रोसन करत अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -35
- कई सोभित हैं सांकलें, माहें डब्बे पुतलियां तबक । इत रूहें संग स्यामाजी, बीच बिराजत हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -33
- कई सोवें सोने के पलंग, कई ऊपर ढोलें वाए । रहे खड़े आगे जी जी करें, ए खेल यों सोभाए || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -24
- कई हजारों लाखों दिवालें, जंग करत आसमान । कई सागर मोहोलों माहें, गिनती नाहीं मान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -10
- कई हंस गरूड़ केसरी, कई बाघ चीते घोड़े। ए ऐसे कहे जानवर, उड़ आकास में दौड़ें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -44
- कई हँसावत हक को, भांत भांत खेल कर । कोई हिकमत छिपी ना रहे, ए ऐसे पसु जानवर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -21
- कई हाथों फिरावत छड़ियां, कई हाथों फिरावत फूल । कई आवत गेंद उछालती, कई आवत हैं इन सूल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -75
- कई हाँसी खुसाली अर्स में, करी मिनो मिने रूहन । पर ए हाँसी ऐसी होएसी, जो हुई नहीं कोई दिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -18
- कई हिंडोले एक छातें, छातें छातें खट अनेक । चारों तरफों हार देखिए, जानों एक एक थें विसेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -33
- कई हिंडोले पहाड़ में, ऊपर से बंपेल । सुख लेवें कई विध के, रूहें करें कई खेल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -24, चौ -4
- कई हुए ब्रह्मांड कई होएसी, पर ए लीला न हुई कब । विलास बड़ो ब्रह्मसृष्ट में, सुख नयो पसरसी अब || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -63
- कई हुती देस परदेस में, ए बातें सुनियां तिन । तिनकी सुरतें इत बांधियां, तित रहे न सके एक खिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -92, चौ -9
- कई होदी बोदी पादरी, कई चंडिका चामंड । बिना हिसाबें खेलही, जाहेर छल पाखंड || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -16
- कई होदी बोदी पादरी, कई चंडिका चामंड । बिना हिसाबे खेलहीं, जाहेर छल पाखंड || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -20
- कंचन जड़ित जो कन्कनी, माहें बाजत झनझनकार । बेल फूल नकस जड़े, झलकत चूड़ किनार || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -89
- कंचन रंग झारी भरी, जल विच मांहें लीधो । श्री इंद्रावतीजी ने कोलियो, श्री राजे मुख मांहें दीधो || ग्रं - रास, प्र -46, चौ -13
- कंचुकी जडाव छ जुगत जुजवी, ऊपर आभ्रण भली भांत । सुंदर सरूप जोई जोईने, मारो जीव थाय निरांत || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -30

- कंचुकीना कांठला ऊपर कोरे, काई दोरे तेज अपार । सात रंगना नंग पाधरा, जोत करे झलकार || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -35
- कच्चे पक्के केलों कतरे, एक खूबी और खुसबोए । जुदी जुदी जिनसों सोभित, सुन्दर चौक में सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -4
- कछु आस न राखी आसरो, ए झूठी जिमी देखाए। ऐसी जुदागी कर दई, कछू कयो सुन्यो न जाए || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -2
- कछु इन विध कियो रास, खेल फिरे घर । खेल देखन के कारने, आइयां उमेदां कर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -1
- कछु कछू दिल में उपजत, सो भी तुमहीं उपजावत । दिल बाहेर भीतर अंतर, सब तुम ही हक जानत || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -2
- कछुए न चले फरामोस का, हम आगू हुए चेतन । इस्क हमारे रूह के, असल है एक तन || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -48
- कछुक करके आकीन, कलमा सुनसी कान । तिनभी सिर कजा समें, लगसी जाए आसमान || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -37
- कछुक नबिऐं जाहेर किए, ए जो बंदगी सरियान । केतक हरफ रखे गुझ, सो करसी मेहेंदी बयान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -2
- कछुक नींद कछुक सुध, रास को सुख लियो या विध । जागनी को जागते सुख, ए लीला सुख क्यों कहूं या मुख || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -110
- कछुक रखे रसूलें, माएने सब थें गुझ । सो इमाम मुख खोलाए के, करत काजीकी सुझ || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -24
- कछुक सुख तो उपजे, हिस्सा कोटमां पोहोंचे तित । एक जरा न पोहोंचे हक को, मैं ताथें दुख पावत || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -18
- कछुक हमको रह्यो अंदेस, सो राखे नहीं धनी लवलेस । ता कारन ए भयो सुपन, हुए हुकमें चौदे भवन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -45
- कछू कयो तो जावहीं, जो कछू जरा कहावे कित । ब्रह्मांड तो खेल कबूतर, एक जरा न पाइए इत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -17
- कछू थोड़े ही पड़ताल से, धाम सद धमकार । बोले पसु पंखी बानी नई नई, जुबां जुदी जुदी अनेक अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -29
- कछू नींद कछू जाग्रत भए, जोग माया के सिनगार जो कहे । जोगमाया में खेले जो रास, आनन्द मन आनी उलास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -33
- कछू मास हजार से बेहेतर, ए जो कही लैलत कदर । ए फरदा रोज कयामत, ए जो कही फजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -5
- कजा अदल कही हक की, सो इत चली एते दिन । कही साहेदी इन भांत की, आगे क्यों चले रसूल बिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -14

- कजा करते उमर को, कदी सूझत नाहीं सुकन । तब पूछत जाए रसूल को, सो सब करत रोसन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -11
- कजा करे फजर कर, हकीकी अदालत । सबों दिलों करे अदल, दिल सूर महंमद मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -28
- कजा कही तीन सकस की, एक भिस्ती दोए दोजख । भिस्ती हक को चीन्ह के, अदल कजा करी हक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -3
- कजा हुई तब जानिए, जब खुले माएने कुरान । तब आगे तें उड़ गई, जाने हती नहीं कुफरान || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -22
- कजा हुई सबन की, पर मोमिन बड़े अंकूर । इन को खेल देखाए के, लिए कदमों अपने हजूर || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -84
- कट चीन झलके दावन, बैठ गई अंग पर । कई रंग नंग इजार में, सो आवत जाहेर नजर || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -74
- कट दामणिए न बंधाय, तसू चार ते ओछ् थाय । वली दामणूं बीजूं लिए, गांठों अनेक विधे दिए || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -15
- कटम सगा कीधा कई समधी, अने घोलीका ने करी बेठा घर । आपोपूं तिहां बांधीने आपे, वृथा निगम्या आ अवसर || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -10
- कटाव कोतकी कांध पीछे, ऊपर फूंदन हारों के । रूह जो जाग्रत अर्स की, सुख लेसी बका इत ए || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -45
- कटि कमर सलूकी देख के, नैना क्यों रहे अंग को लाग । ए बातें दिल से विचारते, हाए हाए लगी न दिल को आग || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -38
- कटि कोमल अति पतली, सुन्दर छाती गौर । देख देख सुख पाइए, जो होवे अर्स सहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -10
- कटि कोमल अति पेट पांसली, पीठ गौर सोभे सरस । गरदन केस पेच पाग के, छबि क्यों कहूं अंग अर्स || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -47
- कटि कोमल कही जो पतली, कछु ए सलूकी और । ए जुबां सोभा तो कहे, जो कहूं देखी होए और ठौर || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -11
- कटि कोमल दिल हैयड़ा, अति उज्जल छाती सुन्दर । चढ़ते इस्क अंग अधिक, ऐसा चुभ्या रूह के अन्दर || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -78
- कटि पेट पांसे कहे हक के, ले दिल के बीच नजर । हाए हाए ख्वाबी तन क्यों रह्या, ए दिल को लेकर || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -106
- कटि पेट पांसे हक के, पीठ खभे कांध केस । ए दिल में जब दृढ़ हुए, तब रूह आया देखो आवेस || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -33
- कंठ कंठ में बांहों धरतियां, चित्त एक दूजी को हरतियां । सुन्दरियां रे सोभतियां, एक दूजी को हाँस हँसतिया || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -87

- कंठ करीने राग अलापिए, काई स्वर पूरे सकल साथ । वेण वेणा रबाब सों, कांई ताल बाजे पखाज || ग्रं - रास, प्र -29, चौ -6
- कंठ केणी पेरे वरण, मारा जीवने नथी कांई बल । पांच हार तिहां प्रगट दीसे, सोभित दोरे बल || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -31
- कंठ केलबाई अलापत, स्वर पूरत बाईसेंन । सब मिल गावें एक रस, मुख बानी मीठी बैन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -65
- कंठ खभे बंध बंध का, नख सिख किया बरनन । हाए हाए जीवरा मेरा क्यों रह्या, टूट्या न अन्तस्करन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -102
- कंठ बाहों वली वली, अनेक विधे रंग रली । लिए अमृत मुख मेली, पिए रस भरी भरी || ग्रं - रास, प्र -19, चौ -9
- कंठ हार सजे सिनगार, नैन समार सोभे मुखार । संग आधार करे विहार, महामती काज सरे || ग्रं - किरन्तन, प्र -123, चौ -4
- कठण वचन हूं तोज कहूं डूं, नहीं तो केम कहूं वासनाने जीव जी । रखे दुख देखे वासना ते माटे, ए प्रगट वाणी हूं कही जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -49
- कठण वेला मूने जाय रे बेहेनी, जेम रे निसरतां प्राण । काया एम थरहरे, अमें नहीं रे गोताय" निरवाण || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -27
- कठणाई एवी का करो वाला, हजी दया तमने न थाय । बीजा दुख अनेक खमू, पण धणीनो विरह न खमाय || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -9
- कठणाई में जोई जीव तारी, अति घणो निखर अपार । धणी धमी धमीने थाक्या, पण नेठ नव गलियो निरधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -115
- कठनाई मैं देखी तेरी, तूं निठुर निपट अपार । थके धनी तोहे धम धमके, पर ते गल्या नहीं निरधार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -115
- कंठसरी जडाव जुगतनी, माहें राती नीली जवेरो नी हार । सकल सिणगार स्यामाजीने सोभे, कुन्दन मां मोती झलकार || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -39
- कठिन निपट विकट घाटी प्रेम की, त्रबंक बंको सूरों किने न अगमाए । धार तरवार पर सचर सिनगार कर, सामी अंग सांगा रोम रोम भराए || ग्रं - सनंध, प्र -6, चौ -2
- कठिन निपट विकट घाटी प्रेम की, त्रबंक बंको सूरो किनों न अगमाए । धार तरवार पर सचर सिनगार कर, सामी अंग सांगा रोम रोम भराए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -3, चौ -2
- कठिन हाल है रूहों का, पर तुम विरचो जिन । भूल गईयां उनें सुध नहीं, हाँसी एही मोमिन || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -26
- कठेड़ा किनार पर, चबूतरे गिरदवाए। सोले थंभों लगता, ए जुगत अति सोभाए || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -5

- कठेड़ा रंग कंचन, जानों के मीना माहें । सोभा लेत थंभ कठेड़े, ए केहे न सके जुबाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -122
- कड़ियां कांडों सोभित, तिनकी और जगत । बल ल्याए कई दोरी नंग, रूह निरखें पाइए विगत || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -34
- कड़ियां दोऊ काड़ो सोहे, सोभा तेज धरत । लाल नंग नीले आसमानी, जोत अवकास भरत || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -102
- कडी आसिक हेडी न करे, कांध कोठींदे पांहीं रहे । सुख छडे बका धणीयजा, डुख कुफरमें पए || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -13
- कडी न लाधे केहेने, ए जालोनी जिनस । त्रगुणने लाधे नहीं, तो सूं करे मूढ मनिस || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -8
- कड़ी बतावे मूल की, सास्त्र निकाले बल । ठौर खसम सब केहेवहीं, जो है सदा नेहेचल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -51
- कडे कंदासो डीहडो, अस्सां रूहें जो संग । हे हुज्जतूं करियां लाड में, जी साफ थिए मूं अंग || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -45
- कण्ठ कान मुख नासिका, ए जो पेहेनत हैं भूखन । ए दुनियां ज्यों पेहेनत है, जिन जानो बिध इन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -24
- कण्ठ खभे दोऊ बांहोंडी, पेट पांसली बीच हैड़ा। रूह मेरी इत अटके, देख छबि रंग रस भरया || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -61
- कण्ठ गौर कई सुख देवहीं, जो कछू खोले रूह नजर । सो होत हक के हुकमें, जिन ने करी नजीक फजर || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -17
- कण्ठ तले हार दुगद्गी, कई विध विध के विवेक । कई रंग जंग जोतें करे, देखत अलेखे रस एक || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -201
- कण्ठ हार नंग सब चेतन, देख सोभा सब चढ़ती देत || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -45
- कण्ठ-सरी इन ऊपर, रही कण्ठ को मिल । न आवे निमूना इनका, जाने आसिक रूह का दिल || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -93
- कतण के उतावस्यूं, अंई आतण आवयूं । कतण निद्रडी विसास्यो, हाणे लूडो लाड गेहेलियूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -16
- कतण रेहेंदो अधविच, आए डीह मथां । कतण वास्यूं हलयूं, डिसे न तूं पासां || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -27, चौ -9
- कतरे कई केलन के, लटक रहे जल पर । आगे पीछे कोई नहीं, सब सोभित बराबर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -1
- कतरे से पैदा हुआ, इन से उपजे दोए । तामें एक सबों को पालहीं, एक करत कबज रूह सोए || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -7

- कतेब कहे तले ला के, सो खेल है सब ला । ए कुंन केहेते हो गया, सो कयामत को फना || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -71
- कतेबे भी यों कहया, चौदे तबक ए जोए। एक जरा नजरों न आवहीं, जाके टूक न होवें दोए || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -17
- कथता सांभलता ए गिनान रे, जम वारो आवसे रे । अध वचे सर्व मुकावी, तरत बांधीने जासे रे || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -4
- कथियल तो कही सुनी, पर अकथ न एते दिन । सो तो अब जाहेर भई, जो अग्या थें उतपन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -3
- कथियल तो कही सुनी, पर अकथ न एते दिन । सो तो अब जाहेर हुई, जो मेंहेदी महंमद थें उतपन || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -3
- कथुआना पगनो गुण जेटलो भाग, लेखणोंनी टांको में चीरियों जोई लाग । एणी टांके आंक लख्या एम करी, एटली दाण एहवा कागल फरी फरी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -37
- कथुए के पांउ का गुन जेता भाग, कलमों की टांक में देखी चीर लाग । इन अनियों आंक लिखे यों कर, ए जेता कागद एती बेर फेर फेर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -32
- कदम तली अति उज्जल, निपट नरम रंग लाल । रूहें आसिक इन मासूक की, ए कदम छोड़ें ना नूरजमाल || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -4
- कदम मेहेबूब के मोमिन, क्यों सहें जुदागी खिन । तो हमें कहया अर्स दिल को, कर बैठे अपना वतन || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -58
- कदम हादी मेरे सिर पर, जो सब दीनों का पैगंमर । हजरत ईसा रूहअल्ला नाम, कहूंगी जो कहया अल्ला कलाम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -2
- कदमों लाग करूं सिजदा, पकड़ के दोऊ पाए । हुकम करत हैं मासूक, बीच आसिक के दिल आए || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -44
- कदी केहेनी कहे मुख से, बिन रेहेनी न होवे काम । रेहेनी रूह पोहोंचावहीं, केहेनी लग रहे चाम || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -55
- कदी न जावे इनमें से एक बोल, किए इमाम ने सब काल || ग्रं - सनंध, प्र -2, चौ -11
- कदी सौ बरस रहो साथ में, धनी अनुभव सौ बेर । मूल अंकूर दया बिना, ले करमें डाले अंधेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -29
- कंधी पस्सी म कोडजा, सेहेर बजारी हट । नेई घर कां वंजे, विकण दमड़ी वट || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -18
- कनक तणां वाला माहें गठिया, निरमल नाका झलकंत । झांझरियांमां जुगते जडियां, भली पेरे मांहें भलंत || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -9

- कंपमान होए कलप्या, रस गया याथें । सोए दुख क्यों सेहें सके, रस जाए जाथें || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -64
- कपाइतियूं आवयूं, कतण कोड करे । केहे केहे संनो कत्तयो, घणो नेह धरे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -4
- कब सुख लेसी फूल बाग के, बाग ऊपर झरोखे । कहां जाऊं किनसों कहूं, कब हम सुख लेवें ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -28
- कब सुख लेसी बंगलों, जित नेहेरें चलें चक्राव । बीच बीच बगीचे चेहेबच्चे, कई जल उतरे तले तलाव || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -11
- कबहूं किनहूं न किए, ऐसे काम अधम । देख गुनाह अपने, फेर किए जुलम || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -25
- कबीर साख जो पूरने, ल्याया सो वचन विसाल । प्रगट पांचो ए भए, दूजे सागर आड़ी पाल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -96
- कबीर साखज पूरवा, लाव्यो ते वचन विसाल । प्रगट पांचे ए थया, बीजा सागर आडी पाल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -7
- कबीर साखज पूरवा, ल्याव्यो ते वचन विसाल । प्रगट पांचे ए थया, बीजा सागर आडी पाल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -91
- कबूं अर्स में न होए जुदागी, ना जुदागी ए न्यामत । ए बातें दोऊ अनहोनिया, सो हक हम वास्ते करत || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -32
- कबूं अर्स रूहें ऐसी ना करें, जैसी हमसे हुई इन बेर । अर्स रूहों को विरहा रसे, हुए बेसक न लैयां घेर || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -15
- कबूं एक एक पसु खेलत, कबूं एक एक जानवर । ए सुख अर्स अजीम के, सुपन जुबां कहे क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -19
- कबूं कबूं बैठियां कुरसियों, रूहें बारे हजार । कबूं दो दो एक कुरसी पर, कबूं हर कुरसी चार चार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -24
- कबूं कबूं राज रूहन सों, मनवेगी सुखपाल । बड़े बन मोहोलन में, करत खेल खुसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -46
- कबूं कोई न बोलिया, बका बातें हक मारफत । दे मुरदों को इलम अपना, सो बातें हुकम बोलावत || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -23
- कबूं दन्त रंग उज्जल, कबूं रंग लालक । दोऊ खूबी दन्तन में, माहे रोसन ज्यों ऐनक || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -146
- कबूं दो दो से एक कुरसियों, बैठे साठों गुरजों गिरदवाए । सो कुरसी दिवालों लगती, यों बैठक कठेड़े भराए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -25
- कबूं दौड़त राज सखियां, सब मिलके जेती। हाँसी करत जमुना त्रट, जित बोहोत गड़त पाउँ रेती || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -43

- कबूं न जुदागी बीच वाहेदत, ए इलमें किए बेसक । तेहेकीक बैठे तले कदमों, न जुदे रहें हादी हक || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -32
- कबूं मिलावा नजीक, मिल बैठे गिरदवाए। छोटा तखत दुलीचे पर, बैठी रूहें अंग सों अंग लगाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -23
- कबूं मूढ़ दरदे मिले, पर दरद ना कबूं सैतान । बीज अंकूर दोऊ जुदे, वैर सदाई जान || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -33
- कबूं राज आगू दौड़त, ताली स्यामाजी को दे । पीछे साथ सब दौड़त, करत खेल हाँसी का ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -20
- कबूं रूहें निकट, बैठे मिलावा कर। हाँसी रमूज सनमुख, पिएं प्याले भर भर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -155
- कबूं सैर इन खेल को, ऊपर चढ़े आसमान । दिल चाहे सुख सबन को, देत रूहें प्यारी जान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -72
- कबूं हीरा कबूं मानिक, इन रंग सोभा कई लेत । दोऊ निरमल ऐनक ज्यों, परे होए सो देखाई देत || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -96
- कबूतर बाजीगर के, जैसे कंडिया भरिया । तबहीं देखे फूंक देए के, तुरत खाली करिया || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -149
- कबूल करी हम हाँसी को, और अपनी मानी भूल । सब सुध पाई कुंजी से, और फुरमान रसूल || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -12
- कम ज्यादा सब इस्कें, इस्कें दोऊ दरम्यान । इस्कें बंदगी या कुफर, सब वास्ते इस्क सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -29
- कमर बांधे देखा देखी, जाने हम भी लगे तिन लार । ले कबीला कांध पर, हंसते चले नर नार || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -2
- कमलकाकडी ने झाड चीभडी, बोरडी ने वली बहेडा । हिरवण हीमज हरडे मोटी, मोहोला ने वली महूडा || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -12
- कमाड छाड्या कोहेडे, उघाड्या सर्व बार । रामत थई सर्व पाधरी, ए अजवालूं अपार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -48
- कमी जो कछुए होवहीं, तो कहिए कला अधिकाए । ए तो बढ़े तरंग रंग रस के, यों प्रेमे देत देखाए || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -48
- कया अर्स दिल महंमद का, ए पूजें सब पत्थर । माएने मुसाफ सब बातून, और ए लेत सब ऊपर || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -29
- कया इतथे आगे सुन, निराकार निरगुन । भी कया निरंजन, तातें अगम रहया सबन || ग्रं - खुलासा, प्र -11, चौ -12
- कया ऐसा ही बन नूर का, रेत ऐसे ही रोसन । तो नूर मोहोल की क्यों कहूँ, जाको नामै नूर वतन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -11

- कया कुराने बंद करसी, इन के जो उमराह । आधीन होसी तिनके, जो होवेगा पातसाह || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -15
- कया कुलफ आड़े ईमान के, हवाई का देख । दुनी का लिख्या बेवरा, सो ए कहूं विवेक || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -18
- कया खाक वजूद नासूती, हादी बैठा वजूद धर । दुनी दरिया अंधेरी, हादी चले ना होए क्यों कर || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -65
- कया खेल किया तुम कारने, ए जो मांग्या खेल तुम । खेल देख के घर चलो, आए बुलावन हम || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -12
- कया गधा बड़ा दज्जाल का, ऊंचा लग आसमान । पानी सात दरियाव का, पोहोंच्या नहीं लग रानः || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -20
- कया जाए ना नूर इन बाग जिमी, हुआ सब रोसन भरपूर । जिन ऐसा रोसन किया पल में, सिफत क्यों कहूं असल नूर || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -29
- कया दावा सब का तोड़्या, दिया मता मोमिनों को । लिए अर्स वाहेदत में, और कोई आए न सके इनमों || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -70
- कया दिल दुनी का मजाजी, जो पैदा हुआ केहेते कुंन । सो छोड़ ना सके मलकूत को, आड़ी जुलमत हवा ला सुंन || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -41
- कया न जाय सुख जागणीना, सत ठोरना सनेह । आ भोमना जेहे, केहेवाय, काइक प्रकासूं तेह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -2
- कया फिरके नाजीय को, होसी हक की हिदायत । सब फिरके इनमें आवसी, होसी एक दीन आखिरत || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -19
- कया महंमद का सब हुआ, जो काफर करते थे रद । फिरवले सबन पर, महंमद के सब्द || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -11
- कया मीठा दरिया उजला, जो देख्या नबी नजर । तिन किनारे दरखत, जित बैठा जानवर || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -58
- कया वेदें कृष्ण अवतार की, पेहेले आए बृज के माहें । रहे रात पीछली लग, फजर इंड तीसरा इहाँए || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -19
- कया साहेब इत आवसी, सो झूठ न होए फरमान । सब का हिसाब लेय के, कायम करसी जहान || ग्रं - किरन्तन, प्र -98, चौ -3
- कया सिजदा आदम पर, अजाजीले फेल्या फरमान । सो लिखी लानत सबन को, जो औलाद आदम जहान || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -20
- कया सुभाने मुझको, हरफ नब्बे हजार । कया तीस जाहेर कीजियो, और तीस तुम पर अखत्यार || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -11
- कया स्याम बाप उन लोकों का, रूम फारस आरबन । सब तुरकों बाप याफिस, हाम बाप हिंदुस्तान सबन || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -17

- कयामत आई रे साथजी, कयामत आई । वेद कतेब पुकारत आगम, सो क्यों न देखो मेरे भाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -104, चौ -1
- कयामत काजी मोमिनों, पेहेले होसी जब । फैलसी नूर आलम में, काजी कजा का सब || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -58
- कयामत फल जिन सों गया, उलट बलाए लगी आए। आग नजर आई दोजख, रही बदफैल देहेसत भराए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -19
- कयामत सरत पोहोंचे बिना, तो ढांप रहे एते दिन । हकें आखिर अपने कौल पर, किए जाहेर आगू रूहन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -138
- कयो क्यों ए न जावहीं, इन अंगों के इस्क । कई कोट जुबां ले कहूं, तो कह्यो न जाए रंचक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -13
- कयो न जाए नूर पात को, कई नूर कांगरी पात माहें । कई नूर बेली एक पात में, सो कब लग कहूं नूर कांहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -77
- कर कबीला पार का, अंकूर बल सूर धीर । एक धनी नजर में लेय के, उड़ाए दे सरीर || ग्रं - किरन्तन, प्र -87, चौ -8
- कर कर जोडी जोडी कहूं कहूं वाला वाला, वली वली मानज मांगू जी । मेलो मेलो मुखथी वात कहूं, नमी नमी चरणे लागू जी || ग्रं - रास, प्र -43, चौ -9
- कर कर सोर जो वल्लभा, फिरे जो आप वतन । चले जो मेरे देखते, केहे केहे अनेक वचन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -9
- कर कायम हक रसना रस, सचराचर दिए पोहोंचाए । यों रसना के रस हम को, सुख कई विध दिए बनाए || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -57
- कर जोरे कुच मरोरे, अंगिया नखन विडार । अधुर न छोड़े दंत सों, करेगो कहा अब रार || ग्रं - किरन्तन, प्र -46, चौ -4
- कर पकर बैठाए के, आवेस दियो मोहे अंग । ता दिन थे पसरी दया, पल पल चढ़ते रंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -4
- कर पकर बैठाए के, आवेस दियो मोहे अंग । ता दिन थें मेहेर पसरी, पल पल चढ़ते रंग || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -4
- कर परनाम लागू चरने, करूं सेवा प्यार अति घने । करूं दंडवत जीव के मन, देऊं प्रदखिना रात ने दिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -25
- कर भूखन बाजे चरन, ताकी पड़ताल परे सब धरन । पांऊं ऐसी कला कोई साजे, सब में एक घूघरी बाजे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -143
- कर मनसा वाचा करमना, सब अंगों कर हेत । केहे केहे हारे हमसों, पर मैं न हुई सावचेत || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -51
- कर मांहें कर करी, सकल मली हरवरी । बांहें न मूके स्यामतणी, अलगी न जाय कोय टली || ग्रं - रास, प्र -34, चौ -2

- कर मेलीने कोणियां रमिए, कोणी मेलीने करे । अंगडा वाले नेणा चाले, मनडां सकलनां हरे || ग्रं - रास, प्र -24, चौ -5
- कर विचार पूछे वचन, नीके अर्थ लिए जो इन । जब समझाई पार की बान, तब धनी की भई पेहेचान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -74
- कर सिनगार इत खेलत, ए जो मन्दिर हैं भुलवन । दौड़ें खेलें हँसें रूहें, देख अपनी आभा रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -11
- कर सीधा समार तकला, कस कर बांध अदवान । दे गांठ माल मरोर के, पूनी लगाए के तान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -27, चौ -7
- कर हिंमत बांध कमर, ले हुकम सब हाथ । पिउ पास हो पेहेचान के, और छोड़ सब साथ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -5
- करके साफ सबन को, भिस्त देसी सबन । पर रूहों सुख हमेसगी, जहां मौला महंमद मोमिन || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -75
- करण लवने जे सोभा धरे, ऊपर साडी नी कोरे । सणगटडा मांहें पिउजीने पेखे, आडी द्रष्टे हेरे || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -58
- करणफूल छे अति घणूं ऊंचा, राती नीली चुन्नी सार । निरखी निरखी जीव निरांते, मांहें मोतीडा करे झलकार || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -32
- करत कुरबानी सकुचें, मोमिन करे न कोए। तीन गिरो की परीछा, अब सो जाहेर होए || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -7
- करत चरन पूरी मेहेर, तिन सरूप आवत पूरन । प्यार पूरा ताए आवत, मेरे जीव के एही जीवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -18
- करत मानिक माहें लालक, हीरे मोती सेत उजास । और पाच करत है नीलक, लेत लेहेरी जोत आकास || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -113
- करत सबे साहेबियां, जिमी जुगत भरपूर । दोऊ बखत आवत हैं, देखन हक का नूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -27
- करत हो कृपा कई विध की, मीठी अति मेहेरबानी । सांचे लाड़ लड़ाए सुंदर, ल्याए वतन की वानी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -15
- करतब चितवनी और सेवा करे, माया गुन उलटे परहरे । मनसा वाचा कर करमना, करे दौड़ प्यार अति घना || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -4
- करताल ताल, बाजे विसाल, वेण रसाल, रमत रास सुंदरी || ग्रं - रास, प्र -30, चौ -2
- करताल मां बाजे झरमरी, काई श्रीमंडल हाथ । चंग तंबूरे रंग मले, वालो नाचे सकल साथ || ग्रं - रास, प्र -29, चौ -7
- करते बातें प्यारी मासूक, हाथ करें चलवन । नेत्र भी वाही तरह, चूभ रेहेत रूह के तन || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -24

- करन फूल की क्यों कहूं, उठत किरन कई रंग । तिन नंग रंग कई भासत, रंग रंग में कई तरंग || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -112
- करना दीदार हक का, एही मोमिनों ताम । पानी पीवना दोस्ती हक की, इनों एही सुख आराम || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -66
- करना सारा एक रस, हिंदू मुसलमान । धोखा सबका भान के, सब का कहूंगी ग्यान || ग्रं - सनंध, प्र -3, चौ -3
- करनी कजा चौदे तबक, देना सबों आकीन । कुरान माजजा नबी नबुवत, होए साबित हुए एक दीन || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -48
- करनी करम कछू ना रया, धनी बड़े कृपाल । सो बुधजीएँ मारया, जो त्रैलोकी का काल || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -113
- करनी को देखे नहीं, जो हम चलत भांत किन । वह दुनियां को छोड़े नहीं, जो मुरदार करी मोमिन || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -54
- करनी छिपी ना रहे, न कछू छिपे अंकूर । मेहेर भी माफक अंकूर के, उदे होत सत सूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -20
- करनी तुमारी मेरी मैं तौली, जैसे सत असत । हो धनी मेरे, एती है तफावत || ग्रं - किरन्तन, प्र -41, चौ -1
- करनी देखाई अंकूर की, हुई तीनों की तफावत । सो तीनों रोसन भए, चढ़ते तराजू बखत || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -19
- करने दीदार हक का, आए मिली सब जहान । साफ हुए दिल सबन के, उड़ गई कुफरान || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -18
- करने हैयात सबन को, देवें हक इलम बेसक । सो पोहोंचे बका बीच भिस्त के, नूर नजर तले हक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -24
- करम कांड और सरीयत, ए तब मानें महंमद । जब ईसा और इमाम, होवें दोऊ साहेद || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -26
- करम काल सब हुकमें, बांधे खोले हुकम । भिस्त दोजख हुकमें, हुकमें देवे कदम || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -18
- करम खुदाए का साहेब सिजदे, पोहोंच्या कौल मोह वायदे । इन समें सब कबूल करे, एह द्वा दिल सारी धरे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -8
- करम तणां बंध छे रे वज्र में, वेद पुराण एम बोले । दया नहीं जीव हिंसा करे, ते करम चंडाल नहीं तोले || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -14
- करम-कांड और सरीयत, किन किन लई तरीकत । दुनियां चौदे तबक में, किन खोली ना हकीकत || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -13
- करमाणा मुखडा मनना, ते तमारा हूं नव सहूं । ए दुख सुखनों स्वाद देसे, तोहे दुख हूं नव दऊं || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -18

- करवट लेते सूते नींदमें, नाला मारत जे । याद बिगर किए अंग आवहीं, स्वाद आसिक मासूक के || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -43
- करसी कतल दज्जाल को, ईसे का इलम । साफ दिल सब होएसी, जिनको पोहोंच्या दम || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -72
- करसी कायम खाकीबुत को, करके नूर सनमुख । इन से अछर और मोमिन, लेसी कायम अर्स के सुख || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -65
- करसी पाक चौदे तबक को, लाहूती उमत । देसी भिस्त सबन को, ऐसी कुरान में सिफत || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -56
- करसी बका अर्स जाहेर, ताके निसान पहाड़ बिलंद || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -19
- करसी राज चालीस बरस, सब जहान होसी एक रस । साहेबी उमत की साल दस, पीछे चौदे तबकों बाढ्यो जस || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -37
- करामात कलाम अल्लाह की, सांची कहियत हैं सोए । लिख्या है कुरान में, सो बिना इमाम न होए || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -4
- करियां गुस्तांगी वडियूं, पण हियडो चायो तोहिजो चए । जे मूं जगाए सामों न्हारियो, त मूं रूहडी की रहे || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -27
- करी अगली किताबें मनसख, कहे जमाने रद । ना नूह तोफान पीछे मोमिन, जो लों आए महंमद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -105
- करी अगली किताबें मनसूख, आखिर सोई पैगंमर ल्याए । नफा पाया तासों खलकों, आखिर चारों किताब पढ़ाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -14
- करी अनेकों बंदगी, इस्क लिया कई जन । तिन काहूं ना नजीक, सो इत मिल्या सबन || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -4
- करी अव्वल लिख इसारतें, दूजे लिख्या केहेर देखाए । तीसरे उठाया झण्डा आकीन, चौथे हिंद में खड़ा किया आए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -8
- करी कजा चौदे तबकों, उड़ाए दई सब हद । जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सब्द || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -93
- करी किताबें मनसूख, हुए जमाने रद । ना मोमिन पीछे तोफान के, जो लो आखिर आए महंमद || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -42
- करी कुरबानी तिन कारने, परीछा सबकी होए । करे कुरबानी जुदे जुदे, सांच झूठ ए दोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -4
- करी परणाम लागू चरणे, सेवा करीस हूं वालपण घणे । दंडवत करूं जीव ने मन, दऊं प्रदखिणा रात ने दिन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -25
- करी बाजी चौदे तबकों, रूहों देखलावने खसम । सो रूहें तब ना हुती, पेहेले तो न हुआ हुकम || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -58

- करी महंमदें मजकूर तिनसे, सुने हरफ नब्बे हजार । जहूद तिन साहेब को, कहे सुन्य निराकार || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -60
- करी रूहों मसलहत मिलके, कहे हमको प्यारे हक । और बड़ी रूह प्यारी हमको, ए बात जानो मुतलक || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -5
- करी हकें हिदायत नाजी को, ए लिख्या माहें फरमान । इन बीच फिरके सब आवसी, एक दीन होसी सब जहान || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -37
- करी हाँसी हकें रूहों पर, जिन वास्ते किया खेल । रूहों बहस किया इस्क का, बेर तीन देखाया मांहें लेल || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -22
- करी हांसी हकें हम पर, ता विधसों चले न किन । अब सो क्योंए न बनि आवहीं, जो रोऊ पछताऊं रात दिन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -155
- करे आकास मोती उज्जल, जोत लटके लेवे तरंग । आसिक रूह क्यों निकसे, क्योंए न छूटे लग्यो दिल रंग || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -61
- करें इमारत भिस्त की, कोसिस सिफत कामिल । देवें खुसखबरी खुदा तिनको, जिनके नेक अमल || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -10
- करे कडाका कपरी, गजे गोकाणी । तीखोनी ताणिए तेहडा, तूं सारिए न सुखाणी || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -17
- करें किताबें जाहेर, और खुलासे पुकार । बिन मोमिन बिन लदुन्नी, करे सो कौन विचार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -10
- करें कोट मलकूती सिफतें, देख नूरजलाल कुदरत । तो पट आड़ा ना टरे, कई कर कर गए सिफत || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -38
- करें खुसाल धनीय को, होंए आप खुसाली हाल । ए सोभा इन मुख क्यों कहूं, ए देखे सब मछराल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -26
- करें जुलम गरीब पर, कोई न काहूं फरियाद । कर सुनत गोस्त खिलावहीं, कहें हमें होत सवाब || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -13
- करे जो बातां बीच में, सो तांत न निकसे तिन । पूनी रही तिन हाथ में, बैठी फिरावे मन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -17
- करे जोत लड़ाई जोत सों, तेज तेज के संग । किरन किरन सों लड़त हैं, आठों जाम अभंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -39
- करें दिल चाही सब बंदगी, चित चाह्या चलत । दिल चाहे बल तेज जोत, सब दिल चाही सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -76
- करें धनी सों चोरियां, चोरों सों तेहेदिल । यों जनम खोवें फितुए मिने, रात दिन हिल मिल || ग्रं - किरन्तन, प्र -105, चौ -11
- करे पाक जिमी आसमान को, ऐसी बुजरक गिरो सोए । होसी रूजू माएने सब इनसे, इन जैसी दूजी न कोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -20

- करे पातसाही खेल में, ऐसी कर बंदोबस्त । देत काफरों दोजख, बंदों कदमों चार भिस्त || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -27
- करे मेडो चेयांऊं मीठी भत्ते, पण आंऊं निद्र मंझ । पण मूं की न परूडयो, सर छडे उड्या हंज || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -18
- करे मोअलिम नकल अपनी जुबांए, सांची जिकर जो कही खुदाए । जब मगज माएने लीजे खोल, तब पाइए इसारत बातून बोल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -39
- करे रमिए कोणियां रमिए, चरण रामतडी कीजे । वली रामतमा विलास विलसी, प्रेम तणां सुख लीजे || ग्रं - रास, प्र -24, चौ -3
- करें लड़ाइयां आपमें, कहें हम हैं धाम के । क्यों ना विचारों चितमें, कैसा जुलम है ए || ग्रं - किरन्तन, प्र -105, चौ -12
- करें सगाई देह सों, नहीं आतमसों पेहेचान । सनमंध पाले इनसों, ए लई सबो मान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -7
- करे सगाई देहसों, नहीं आतम नी ओलखांण । सनमंध पाले देहसों, ए मोहजल अवलो तांण || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -11
- करे सगाई देहसों, नहीं रूहसों पेहेचान । सनमंध पालें इनसों, एह लई सबों मान || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -10
- करें सुपने में कुरबानियां, ऐसे मोमिन अलमस्त । सूते भी कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -7
- करें हिंदू लड़ाई मुझ से, दूजे सरीयत मुसलमान । पाया अहमद मासूक हक का, अब छोड़ो नहीं फुरकान || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -100
- करें हुसियारी आपुस में, हम देखें खेल जुदागी। देखें हक डारें क्यों जुदागी, हम बैठे सब अंग लागी || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -66
- करे हेकली गडजे, सभ तोहिजे हथ धणी । मूं चेयूं उमेदूं वडियूं, जे तूं न्हारिए नैण खणी || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -57
- करो अंतरगत गम, ए जो जाहेर देखाया हम । याद करो वतन सोई, और न जाने तुम बिना कोई || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -189
- कलकलती कंपमान थैयो, कांई ततखिण पडियो तेह । आवीने उछरंगे लीधियो, कांई तरत वाध्यो सनेह || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -54
- कलकली कम्पमान थयो, रस टलियो एथी। केम ते ए दुख खमी सके, ए रस जाय जेथी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -51
- कलकली कामनी वदन विलखाविया, विश्वमा वरतियो हा हा कार । उदमाद अटपटा अंग थी टालीने, माननी सहुए मनावियो हार || ग्रं - किरन्तन, प्र -35, चौ -2
- कलकली दुख कीधो घणो, पण सूं करे जाण । पात्र विना पामे नहीं, रस बेहद वाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -57

- कलकली ने कहूं तमनें, आवजो आणे खिणे । म्हारा मनना मनोरथ पूरजो, इंद्रावती लागे चरणे || ग्रं - किरन्तन, प्र -45, चौ -3
- कलकले जीवने कांपे काया, करे निस्वासा निसदिन । नेणे जल आवे निझरणां, कोई अखूट थया उतपन || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -10
- कलकले मांहें कालजू, चाली न सके देह । प्राण जीवनजी लई गया, जे बांध्या मूल सनेह || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -37
- कलंगी दुगदुगी तो कहूं, जो पगरी होए और रस । वस्तर भूखन या अंग तीनों, हर एक पे एक सरस || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -73
- कलंगी दुगद्गी पगड़ी, देख नीके फेर कर । बैठ खिलवत बीच में, खोल रूह की नजर || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -8
- कलमा निमाज दोऊ दिल से, और दिल सों रोजे रमजान । दे जगात हिस्सा उन्तालीसमा, हज करे रसूल मकान || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -40
- कलमा निमाज रोजा दिल से, दे जगात आप करबान । करे हज बका हमेसगी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -45
- कलमा निमाज रोजा हकीकी, करे दिल सों रूह पेहेचान । हुआ बंदा बूझ जगात में, दिल दीदार नूर सुभान || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -47
- कलमें दीन रसूल की, सुध मुस्लिम फरमान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -30
- कलमें समारी जोस बुध बल, घडूं रास कर काढ़ के बल । एक जीव कहियत है कथुआ, ए जो जिमी पर पैदा हुआ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -31
- कलसों पर जो बेरखे, सो क्यों कहूं रोसन नूर । ए जो बनी बराबर गिरदवाए, हुओ बीच आसमान जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -99
- कलाम अल्ला आया हाथ में, पर मारफत न पाई किन । सो भी आग छोड़े नहीं, हाए हाए तांबा जिमी हुई तिन || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -30
- कलाम अल्ला का बातून, देखो हक इलम ले । महंमद सिफायत रूहों को, इनों करसी विध ए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -69
- कलाम अल्ला काजी पढ़े, पर होत नहीं आकीन । कैसा डर कौन आवहीं, तो हलका किया दीन || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -48
- कलाम अल्ला की इसारतें, खोल दैयां खसम । महामत पर मेहेर मेहेबूबे, करी ईसे के इलम || ग्रं - किरन्तन, प्र -72, चौ -3
- कलाम अल्ला की तो एह नकल, देखो दुनियां की अकल । महंमद को करहीं औरों समान, इन दुनियां की ए पेहेचान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -4
- कलाम अल्ला की साहेदी, और हदीसें महंमद । तुम कहूं तौहीद की, ले रूह अल्ला साहेद || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -98

- कलाम अल्ला कुरान में, दिल दे करे प्रवान । अंदर आकीन उजले, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -18
- कलाम अल्ला के माएने, कबूं ना खोले किन । एही कलाम यों केहेवहीं, ना खुले मेंहेंदी बिन || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -31
- कलाम अल्ला के माएने, सो भी कही इसारत । ए नसल आदम हवाई, क्यों पावे दिन आखिरत || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -17
- कलाम अल्ला जो फुरमान, सो इन सबसे न्यारा जान । ल्याया पैगंमर आखिरी, हक के कौल परवान || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -10
- कलाम अल्ला या हदीसें, सास्त्र पुरान या वेद । ए सब सुख लेवे मोमिन, हक रसना के भेद || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -19
- कलाम अल्ला ल्याया रसूल, इन मुस्लिम में आकीन । हुकम सिर चढ़ाइया, जो सबसे बड़ा दीन || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -33
- कलाम हक जुबान के, तिनका कहूं विवेक । इन केहेनी से कायम हुए, दुनी पाया हक एक || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -13
- कलि में देख्या ग्यान अचंभा । बातन मोहोल रचे अति सुंदर, चेजा जिमी न थंभा || ग्रं - किरन्तन, प्र -31, चौ -1
- कलिजुगें चेहेन रे अंत के सब किए, लोक बता अजूं दूर अंत । अर्थ अन्दर का कोई न पावे, बारे अर्थ बाहेर के ले डूबत || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -19
- कलीम अल्ला कह्या मूसे को, फुरमाया सब कहे । सो कलाम अल्ला की रोसनी, ताबे हादी के रहे || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -7
- कल्प विरिख तिहां वेद थयो, तेहेर्ने फल निपनूं भागवत । बन पकव रस ग्रही मुनि थया, एम सुकें परसव्या संत || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -22
- कल्पांत भेद आंही थकी, तमे भाजो मनना संदेह । अवतार ते अक्रूर संगे, जई लीधी मथुरा ततखेव || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -16
- कल्पांत सात छियासी जुग, कियो मायाऐं बेसुध एते लग । कछुए ना भई खबर, अति दुख पायो रिखीस्वर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -13
- कल्पांत सात ने छियासी जुग, माया आडी आवी बुध । नव पडी खबर लगार, रिखीश्वर दुख पाम्यो निरधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -9, चौ -13
- कल्याण बाई नारी सुदामा, अंग धरत अति बड़ाई । करत हांसी कई भातें, याकी स्यामसों सगाई || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -29
- कस न पाइए कसौटी बिना, रंग देखावे कसौटी । कच्ची पक्की सब पाइए, मत छोटी या मोटी || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -5
- कसकसती चोली ने कठण पयोधर, पीला खडपा सोभंत । कस ठामे जे कांगरी, तिहां नीला जवेर झलकंत || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -28

- कसनी लेवे आप सिर, साफ रोजे रमजान । रात दिन याही जोस में, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -13
- कंसे काला-गृह में, किए वसुदेव देवकी बन्ध । भानेज मारे आपने, ऐसा राज मद अन्ध || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -1
- कसे साधू रे काहू भजन ना रया, कुली बरस्या जलते अंगार । धखयो दावानल दसो दिसा, ऐसा भवड़ा हुआ भयंकर || ग्रं - किरन्तन, प्र -53, चौ -5
- कसौटी कस देखावहीं, कसनी के बखत । अबहीं प्रगट होएसी, जुदे झूठ से निकस के सत || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -6
- कहां अर्स कहां हक बका, कहां है नूर मकान । क्यों पावे महंमद तीन सूरत, जो लों ना ए पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -49
- कहां इनों की असल, दृढ़ करो सोई निसान । पार अर्स जो कायम, तुम तासों करो पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -26
- कहा करूं किन सों कहूं, ना जागा कित जाऊं। एता भी तुम दृढ़ कर दिया, तुम बिना ना कित ठांऊ || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -34
- कहा करूं तिन सुख को, जिन से होइए निरास । ए झूठा सुख है छल का, सो देत माया की फांस || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -9
- कहा कहं वतन सैयां, जो मगज लगे अर्थ । कुरबानी समे देख्या चाहिए, सांचे सूर समर्थ || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -8
- कहा कहूं इन कलमें की, मोमिनों में पेहेचान । जब ए कलमा पसरया, तब साफ हुई सब जहान || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -34
- कहा कहूं क्यों कर कहूं, एक जुबां मोहोल अनेक । इन झूठी जिमीके साजसों, क्यों कहूं अर्स विवेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -44
- कहा कहूं जात लसकर, एक जात को नाहीं पार । तिन जात में अनेक फौजें, एक फौज को नाहीं सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -63
- कहा कहूं जोत रूहन की, और समूह भूखन वस्तर । ए कही जोत पूरन सिंध की, जो अव्वल नूर सागर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -120
- कहा कहूं ठकुराई की, और क्यों कहूं बुध बल । क्यों कहूं इस्क पेहेचान की, और क्यों कहूं सुख नेहेचल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -83
- कहा कहूं नूर तारन का, सेत लालक लिए । काजल रेखा अनियों पर, अंग असल ही दिए || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -62
- कहा कहूं नूर नवे भोम का, नूर क्यों कहूं नूर बिसात । नूर वस्तर कहे न जावहीं, तो क्यों कहूं नूर हक जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -21
- कहा कहूं बल कुंजीय का, रूहें बड़ी रूह निसवत । और हक बड़ी रूह रूहन की, इन इलमें देखी खिलवत || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -34

- कहा कहूं बल दज्जाल को, जोर बड़ा जालिम । पेहेले पढ़े सब लिए, पीछे छोड्या न कोई आलम || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -25
- कहा कहूं बाग अर्स का, जित कई रंगों फूल फूलत । रूहें क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -40
- कहा कहूं वस्तर भूखन की, नूर रोसन जोत उजास । स्याम स्यामाजी साथ की, अंग अंग पूरत आस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -50
- कहा कहूं सुख साथ को, देखें भृकुटी भौंह चढ़ाए। सुखकारी सीतल सदा, सुख कहा केहेसी जुबांए || ग्रं - किरन्तन, प्र -93, चौ -16
- कहा कहूं हिंडोले नूर के, नूर रूहें झूलें बारे हजार । इन बिध नूर हिंडोले, नाहीं न नूर सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -6
- कहा कियो तें दुष्ट पापनी, ऐसी न करे कोए । घर धाम धनी के आगे, करी सरमिंदी मोहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -97
- कहां गए सुख आपके, हम कहां पुकारें जाए । तुम बिना नहीं कोई कितहूं, मोमिन बेसक किए बनाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -7
- कहां गए सुख जोए के, जमना जरी किनार । कहां सुख जल कहां झीलना, कहां नित नए सिनगार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -20
- कहां थे फनारे के खेल में, कैसा था अर्स घर दूर । किन बुजरकों न पाइया, सो क्यों कर लिए तुमें हजूर || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -77
- कहां बन कहां खेलना, कहां सुख मेले सखियन । कहां नाचे मोर बांदर, कहां सुख पसु पंखियन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -35
- कहा भयो जो मुखथें कह्यो, जब लग चोट न निकसी फूट । प्रेम बान तो ऐसे लगत हैं, अंग होत हैं टूक टूक || ग्रं - किरन्तन, प्र -9, चौ -1
- कहां भिस्त कहां दोजख, क्यों जलसी कुफरान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -28
- कहां रात दिन गुजरानते, अब पाया अर्स रात दिन । देखो दिल विचार के, कछू फरक है उन इन || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -98
- कहां सुख कोकिला मोर के, बन में करें टहूंकार । बादल अंबर छाइया, सुख बीजलियां चमकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -19, चौ -3
- कहां सुख गलियां अर्स की, माहों माहे बांध के होड़। रूहें रेती में ठेकतियां, दौतियां कर जोड़ || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -16
- कहां सुख झरोखे अर्स के, कहां सुख सीतल बयार । कहां सुख बन कहां खेलना, कहां सुख बखत मलार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -19, चौ -2
- कहां सुख सातों घाट के, कहां सुख पुल मोहोलात । कहां सुख झरोखे जल पर, जो तले नेहेरें चली जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -11

- कहां है हमारा खसम, और वतन हमारा कित । चौदे तबकों में नहीं, ए किनकी किताबत || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -66
- कहां है हमारा वतन, कौन जिमी ए ठौर । क्यों कर हम आए इत, बिना मलकूत है कोई और || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -22
- कहांतें अछरातीत की, जो सुध ना अछर छर । सो सारे जाहेर हुए, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -28
- कहांतें नूर-तजल्ला की, जो नर की भी नहीं खबर । सो परदे उड़े सबन के, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -27
- कहावत हैं ब्रहम सृष्ट में, धनीसों छिपावें बात । दिल की करें औरन सों, ए कौन सृष्ट की जात || ग्रं - किरन्तन, प्र -105, चौ -6
- कहावें दरसनी, धरें जुदे जुदे भेख । आप ना पार की, हिरदे अन्धेरी विसेख || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -9
- कहावें धरम पंथ रे लड़ें मांहें वैरें, अंग असुराई को अधिकार । पसु पंखी साधू न छूटे काहूं, पुकार न काहूं बहार || ग्रं - किरन्तन, प्र -53, चौ -3
- कहावें फिरके बुजरक, हुए आप में दुस्मन । महंमद मता अर्स बका, लिया जाए न हवा के जन || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -69
- कहिए सारी उमर लग, तो सिफत न आवे सुमार । ए दरिया निसबत का, याकी लेहेरें अखंड अपार || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -35
- कहियत नेहेचल नाम, सदा सुखदाई धाम । साथजी स्यामाजी स्याम, विलसत आठों जाम री || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -1
- कहियत सदा प्रबोध वचन, पर कबूं न बानी ए उतपन । तिन कारन तुम सुनियो साथ, आपन में आए प्राणनाथ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -6
- कही अदल यों साहेदी, कहां साहेद पाइए सोए। इन जमाने नुकसानमें, अदल कजा क्यों होए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -7
- कही आई उपनिषद इन पे, पूर्व रिखी कहे जित । धाम बका पाया इनोंने, जाकी ब्रहम सों निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -37
- कही एक गिरो पैदा जुलमत से, तिन के फैल हाल जुलमत । सो दुनी बिन कछू न देखहीं, दुस्मन दिल पर सखत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -75
- कही एक ठौर के चौक की, जित बैठत धनी आए । चौक चबूतरे इन भोम के, कई जुगत क्यों कही जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -15
- कही कजा जो रसूलें, सो नेक सुनाई हम । पर कहे कोई ना समझया, अब कर देखाऊं तुम || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -1
- कही कजा दूजे सकस की, हक से करी चिन्हार । पर अदल कजा तो भी ना हुई, तो लिख्या बीच नार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -4

- कहीं कुरान देखियो अंदर, पट उड़ाऊं आड़ा अंतर । उस ईसे पीछे जो उस्तुवारी, सो तो कायदे खुदा के सिफत सारी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -5
- कही कोमलता कमलन की, और जोत जबेरन । रंग सुरंग जानवरों, कई स्वर मीठी जुबां इन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -62
- कही गरीबी बुजरक, पढ़ कर सो ना ले । कई बंध फंद कर मारहीं, लई मुल्लां गरीबी ए || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -40
- कही गौर हरवटी हक की, लांक पर लाल अधुर । कही दंत जुबां बीड़ी मुख, हाए हाए रूह क्यों रही सुन मधुर || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -100
- कही जाए न सोभा इन मुख, ना कछू दई जाए साख । एक जरा हरफ न पोहोंचहीं, जो सब्द कहिए कई लाख || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -19
- कही थी बरकत दुनी में, सो दुनियां माफक ईमान । सो भी जाहेर ठौर सबे उठे, हिन्दू या मुसलमान || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -32
- कही दाभा वास्ते वह जिमी, पेहेले ती सबै कुफरान । जोलों स्याम बरारब ना हते, ना रसूल खबर फुरमान || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -33
- कही दुनियां हुई कुंन सों, सो जुलमत उड़ें उड़त । ताको भिस्त देसी हादी हुकमें, गिरो मोमिनों की बरकत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -138
- कही न आवे बोली और मानिंद, हिंद के नहीं तो बस है || ग्रं - सनंध, प्र -2, चौ -12
- कही न जाए झूठमें, हक हैड़े की सिफत । हक सोभा छल में तो होए, जो सांच जरा होए इत || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -50
- कही निमाज करे छे विध की, दो सरीयत एक तरीकत । आणू एक हकीकत, दोए बका मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -38
- कही पाँच बिने मुस्लिम की, सोई पाँच बिने मोमिन । वे करें बीच फना के, ए पांच बका बातन || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -67
- कही फिरती हार थंभन की, द्वार द्वार आगं दोए । हर मन्दिर दो द्वारने, सोभा लेत अति सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -20
- कही बड़ी मेहेर रसूलें, जो हुई माहें रात मेयराज । फजर होसी जाहेर, सो रोज कयामत है आज || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -80
- कही बरकत हिन्द के मुसलमानों को, लिए सिर कलाम आकीन करके || ग्रं - सनंध, प्र -34, चौ -8
- कही रूहें नूर बिलंद से, मांहें उतरी लैलत कदर । कौल किया हकें इनों सों, मासूक आया इनों खातिर || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -57
- कही लानत अजाजील को, सो लगी सब दुनियां को । एती फरिस्ते की पाक बंदगी, क्यों दुनी मारी जाए इनसों || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -48

- कही सुछम सूरत अमरद की, ए कदम भी तिन माफक । रस रंग सोभा सलूकी, देख अर्स सहूरें हक || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -5
- कही सूरत तीन रसूल की, हुई तीनों पर इनायत हक । किया तीनों का बेवरा, हरफ नब्बे हजार बेसक || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -6
- कही सूरत महंमद की, खावंद जमाने तीन । इन तीनों सिर खिताब, गिरो खानी हकीकी दीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -84
- कहूं अंगों का बेवरा, जुदे जुदे भूखन । ए जो जवेर अर्स के, कहूं पेहेले भूखन चरन || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -90
- कहूं अनवट पाच के, माहे करत आंभलिया तेज । निरखत नखसिख सिनगार, झलकत रेजा रेज || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -129
- कहूं अबलों जाहेर ना हुई, अर्स बका हक सूरत । हिरदे आओ तो कहूं, इत बैठो बीच तखत || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -9
- कहूं अर्स अरवाहों को, रूह अल्ला के इलम । जासों पाइए हकीकत हक की, मुझे हुआ ज्यों हुकम || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -1
- कहूं इनका बेवरा, सिर हुकम लेसी मोमिन । सो हुकमें समझ जागसी, मिले हुकमें हक वतन || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -59
- कहूँ ईसे के इलम की, जो है हकीकत । हक बका अर्स उमत, जाहेर करी मारफत || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -37
- कहूं कहूं लम्बे हिंडोले, कहूं तिनसें बड़े अतंत । कहूं कहूं छोटे बने, कई जुदी जुदी जुगत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -23
- कहूं कहूं सखियां ठेकत, माहें रेती रब्द कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -45
- कहूं कहूं सेज्या हिंडोले, कहूं हिंडोले सिंघासन । कहूं कहूं खड़ियां हींचत, यों खेल होत इन बन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -24
- कहूं कारंज एक बीच में, एक ठौर उछलत । सो चारों फुहारे होए के, चारों खूटों गिरत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -42
- कहूं केती बातें हक रसना, निपट बड़ो विस्तार । क्यों कहूं जो किए रूहों सों, हक जुबां के प्यार || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -34
- कहूं केते नाम जवेरन के, रसायन नाम अनेक । कई नाम भूखन एक अंग, सो कहां लग कहूं विवेक || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -14
- कहूं केते भूखन कंठ के, तेज तेज में तेज । आसमान जिमी के बीच में, हो गई रोसन रेजा-रेज || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -56
- कहूँ केते सुख हक रसना, जैसे आप अलेखे अपार । सो सब सुख बका में रूहों, जा को होए न काहूं सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -65

- कहूं गुसा कर वचन, सो ना वले मेरी जुबांए । पर इत नफा क्या होएसी, तुम रहे माया लगाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -16
- कहूं चार नेहेरें मिली चली, कहूं चार से सोले निकसत । कई नेहेरें सुख इन मोहोलों, धनी कब करसी प्राप्त || ग्रं - परिक्रमा, प्र -23, चौ -15
- कहूं चौसठ थंभों का बेवरा, चार धात बारे नंग। बने चारों तरफों जुदे जुदे, भए सोले जिनसों रंग || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -7
- कहूं डोरे कहूं बादले, कहूं खजूरे हार । कहा कहूं जवेर अर्स के, झलकारों झलकार || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -8
- कहूं तमने सांभलो मारी वात, ए वचन रखे मुखथी करो प्रकास । लखमीजी तमे कहो तेम करूं, म्हारू आप नथी कांई तमथी परूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -25
- कहूं तिनका बेवरा, सुनियो कानों दोए । ए देख्या में सहूर कर, तुम भी सहूर कीजो सोए || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -2
- कहूं दुनियां चौदे तबक में, कह्या न हक का एक हरफ । तो हक सूरत क्यों केहेवहीं, किन पाई न बका तरफ || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -48
- कहूं नूर तेज रोसनी, याकी जोत गई अंबर लों चल । मांहें गुन गरभित कई सागर, क्यों कहे बिना अंतर बल || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -20
- कहूँ नेक दुनी का बेवरा, जो हमें दई पेहेचान । रूह अल्ला महंमद मेहेर थे, कहूँ ले माएने फुरमान || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -3
- कहूं नेहेरें जाहेर चली, कई पहाड़ों के माहें । नेहेरें पहाड़ों या सागरों, सोभा क्यों कहूं इन जुबाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -23, चौ -16
- कहूं पटुके की सलूकी, के ए भूखन कहूं कमर । ए छब फब दिल देख के, न जानों रूह रेहेत क्यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -52
- कहूं पेहेले जंगल जरी जवेर, रोसन नूर झलकत । जोए किनारें दरखत, पाक खुसबोए बेहेकत || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -8
- कहूँ प्यार कर मोमिनों, दिल दे सुनियो तुम । अरवा क्यों न उड़ावत, समझ हक इलम || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -30
- कहूं फूल कहूं फल बने, कहूं पात रहे अति बन । जुदी जुदी जुगते मंडप, जानों बहु रंग मनी कंचन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -18
- कहूं बेवरा आदम औलाद, तिनमें कही विध तीन । सोई समझें हक इलमें, जिनमें इस्क आकीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -74
- कहूं बेवरा मोमिन दुनी का, जो फरमाया फरमान । सक सुभे इनमें नहीं, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -16
- कहूं बेसक तिनका बेवरा, नासूती मलकूत । ना सक आसमान जबरूत, ना सक आसमान लाहूत || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -20

- कहूं माएने मगज विवेक, जाथें दीन होए सब एक । छूट जाए छल भेख, ए बुध इमाम को विसेख || ग्रं - खुलासा, प्र -11, चौ -2
- कहूँ विध वाहेदत की, बात करनी हकें जे । सो अपने दिल पेहेले लेय के, पीछे आवे दिल वाहेदत के || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -18
- कहूं सज्जनता के सनकूली, दोस्ती कहूं के प्यार । जो जो देखू नजर भर, सों सब सागर अपार || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -13
- कहूं सागर मुख जोत का, के कहूं मेहेर सागर । के कहूं सागर कलाओं का, जुबां केहे न सके क्योंए कर || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -10
- कहूं सुन्दर सोभा सलूकी, कहूं केते गुन उपले । ए सुख न आवे हिसाब में, ए जो गिरो देखत है जे || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -52
- कहूं हकीकत फरिस्तों, मोमिनों करो पेहेचान । तबक चौदे फरिस्ते, तिल जेता न खाली मकान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -34
- कहूं हारें कहूं चौक गुल, कहूं नकस कटाव । जाए न कही इन जुबां, ज्यों चंद्रवा जुगत जड़ाव || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -27
- कहूं हुकम हक के, जो बैठे कदमों मोमिन । सो हमेसा अर्स में, ताए मेहेर बड़ी बातन || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -4
- कहूं हुकमें साहेदी, जो हमें फुरमाई । सो देखो आयतों हदीसों, ज्यों दिल होवे रोसनाई || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -16
- कहूं हुकमें साहेदी, जो हमें फुरमाई । सो देखो आयतों हदीसों, ज्यों दिल होवे रोसनाई || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -28
- कहे अंग तो काम क्रोध के, गोस्त खान मद पान । हक हराम न जानहीं, कहें हम मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -39
- कहे अबलीस मैं घेरोंगा, राह मारों तरफ चार । वह जाने लई राह दीन की, इन बिध देऊं राह मार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -21
- कहे अब्दुल्ला उस्मान को, कजा न मुझ से होए । मैं पाई खबर रसूल से, कर सकसी ना अदल कोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -10
- कहे अव्वल उतरते रूहों को, रदबदल है जेह । सो लिखी हदीसों आयतों, सूरतें देत साहेदियां एह || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -12
- कहे अव्वल उतरते रूहों को, रदबदल है जेह । सो लिखी हदीसों आयतों, सूरतें देत साहेदियां एह || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -24
- कहे आकीन महंमद पर, ऊपर कयामत और फरमान । और कया न माने महंमद का, बड़ा देख्या ए ईमान || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -40
- कहे आजूज माजूज, जाहेर होसी आखिर । खाए जासी सब सय को, ऐसा होसी बखत फजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -1

- कहे आमर नूर अर्स का, ए जो अर्स नूरजमाल । दिल अर्स मोमिन नूर का, नूर सुनके बदले हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -1
- कहे आयतें हदीसें जाहेर, नूर झण्डा महंमदी जे । दिन दिन घड़ी घड़ी पल पल, नूर बढताई देखोगे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -4
- कहे आसा मोहे दई जगाए, निकट न जाऊं मोहजल । इन बल मांहें कमी न राखू, लागी आतम आसा सुफल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -102
- कहे इंद्रावती अति उछरंगे, फोड़ ब्रह्मांड करूं रोसन । सीधी राह देखाऊं जाहेर, ज्यों साथ सुखे आवे वतन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -21
- कहे इंद्रावती अति उछरंगे, फोडी ब्रह्मांड करूं प्रकास । विगते वाट देखाई घरनी, जेम सोहेलो आवे मारो साथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -21
- कहे इंद्रावती अति उछरंगे, हमको लाड़ लड़ाए जी । निरमल नेत्र किए जो आतम के, परदे दिए उड़ाए जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -36, चौ -6
- कहे इंद्रावती आनंद, वालोजी रंगे गाए छे । हजी रामतडी वृध, वसेके थाय छे रे || ग्रं - रास, प्र -35, चौ -12
- कहे इंद्रावती ए रामतडी, मारा वालाजी थई अति सारी । दोड करता तमे पाडू नव जोयु, अमे बांहोंडी न मूकी तमारी || ग्रं - रास, प्र -20, चौ -8
- कहे इंद्रावती ए रामतडी, मारा वालाजी थई अति सारी । सघली संगे रमिया रंगे, एक पिउ एक नारी || ग्रं - रास, प्र -21, चौ -8
- कहे इंद्रावती नरसैयां वचन, जो जोइए करीने चित । धणिए जे धन आपियूं, कांई करी आपणने हित || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -29
- कहे इंद्रावती वचन पिउके, जिन देखाया धाम वतन जी । अब कोटक छल करे जो माया, तो भी ना छूटे धनी के चरन जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -3, चौ -8
- कहे इंद्रावती वचन वालाना, जे सुणया आपण सार जी । हवे लाख वातो जो करे रे माया, तोहे नहीं मूकू चरण निरधार जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -3, चौ -8
- कहे इंद्रावती साथ, एणी वातो जेटली । न केहेवाय कोटमों भाग, मारे अंग एटली || ग्रं - रास, प्र -44, चौ -7
- कहे इंद्रावती साथजी, वाले विलास जो कीधा । चढ़ी आव्या अंग अधिका, वचे व्रह जो दीधा || ग्रं - रास, प्र -46, चौ -20
- कहे इंद्रावती सुणो रे साथजी, इहां विलंब कीधांनी नहीं वार । ए अजवायूँ सर्वे कीबूं मारे वाले, आपणने आ वार || ग्रं - रास, प्र -4, चौ -12
- कहे इंद्रावती सुणो रे साथजी, वाले सुख दीधा घणां घणां रे । नवलो नेह वधास्यो रमतां, गुण किहां कहूं वालातणा रे || ग्रं - रास, प्र -37, चौ -11
- कहे इंद्रावती सुंदरबाई चरने, सेवा पिउ की प्यार अति घने । और कछू ना इन सेवा समान, जो दिल सनकूल करे पेहेचान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -25

- कहे इंद्रावती हूं बलवंती, सणजो सखियो वात । नेहेचे तमने ऊंचूं जोवरावं, वली रामत करूं अख्यात || ग्रं - रास, प्र -41, चौ -18
- कहे इलम तुमहीं पट, त्महीं कंजी पट की। कुल्ल अकल दई तुम को, देखो उलटी या सीधी || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -8
- कहे इलम रूहें इत हैं नहीं, है हुकम तो हक का । हुए बेसक हुकम क्यों रहे, ले हुज्जत रूह बका || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -147
- कहे उस्मान सुन अब्दुल्ला, कजा करता था उमर । सो तो तेरी वारसी, तूं छोड़े क्यों कर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -9
- कहे एक कौल में दोए दिन, बीच कही जो रात । ए हिसाब दे सब फजर, सो कही कयामत बीच साइत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -31
- कहे एही चालीस तूबे पर, जो दरखत जिमी बीच स्याम । यामें न होए कोई कम, जाकी सिफत लिखी अल्ला कलाम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -97
- कहे कतेब साहेदी साहेब की, दे न सके कोई और । खुदाए की खुदाए बिना, किन पाया नाहीं ठौर || ग्रं - किरन्तन, प्र -65, चौ -13
- कहे कबूतर खेल के, खेल सरीक हक का । हक हमेसा वेद कतेब में, खेल तीनों काल फना || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -73
- कहे कयामत में सबे उठाए, दस बिध फैल पूछे जाए । बांदर सूरत होसी सुकन चीन, जिनों हिरदे में नहीं आकीन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -23
- कहे कलपना ए काम म्हारो, हूं करूं विध विधना विचार । अंग एके नव राखू पाछो, सेवानी सेवा दाखू सार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -66
- कहे कल्पना ए काम मेरा, करूं नए नए अंग उतपन । बिध बिध की सेवा देखाऊं, धनी विलसो होए धंन धंन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -66
- कहे काफर असुर एक दूसरे, करते लड़ाई मिल । फुरमान जब रोसन भया, तब पाक हुए सब दिल || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -100
- कहे किताब लोक नासूत के, और मलकूती अकल । छोड़ सुरिया सितारा, कोई आगू न सके चल || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -8
- कहे कुरान इन जिमी से, तरफ न पाई अर्स हक । ए तेहेकीक किन ना किया, कई ढूंढ थके बुजरक || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -22
- कहे कुरान डूबे काफर, नूह नबी तोफान । मोमिन सवे किस्ती चढ़े, ए नई हुई जहान || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -18
- कहे कुरान दूजा कछुए नहीं, एक हक न्यामत वाहेदत । और हराम सब जानियो, जो कछू दुनी लज्जत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -49
- कहे कुरान बंद करसी, इनके जो उमराह । एक तो करसी बन्दगी, और जो कहे गुमराह || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -21

- कहे केसरबाई अमसूं इंद्रावती, कां करो एवडूं बल । एटला लगे तमे रामत कीधी, हवे नहीं मूकू पाणीवल || ग्रं - रास, प्र -39, चौ -8
- कहे गरीबी मैं माया की, मैं बैठों माया मांहें । लीजो लाहा सुख नेहेचल का, श्री धाम धनी हैं जाहें || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -105
- कहे गुन महामत मोमिनों, नैना रस भरे मासूक के । अपार गुन गिनती मिने, क्यों कर आवें ए || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -47
- कहे गौर गलस्थल हक के, कई छब नाजुक कोमलता । हाए हाए रूह इत क्यों रही, मुख देख मासूक बका || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -92
- कहे छत्ता तिनका अंकूर, नूर तजल्ला माहे जहूर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -42
- कहे छत्ता मगज मुसाफ के, जिनस जंजीरां जोर । सब सिफत खास गिरोह की, ए समझें एही मरोर || ग्रं - किरन्तन, प्र -72, चौ -5
- कहे जाए न गौर गलस्थल, और अधुर लालक । मुख चकलाई हक की, सब रस भरे नूर इस्क || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -28
- कहे जिकरिया साहेब मेरे, किन बिध वाका होसी तेरे । मेरी निसानी की खबर जेह, मोहे नहीं परत मालूम एह || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -24
- कहे जुबां जोत आकास लों, जोतें सोभा कई करोर । सो बोल न सके जुबां बेवरा, इन अकल के जोर || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -13
- कहे तिहत्तर फिरके महंमद के, एक नाजी नारी बहत्तर । नाजी को हिदायत हक की, खड़ा बीच राह के पर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -38
- कहे तीन रोज तीन तकरार के, चौथे फरदा रोज फजर । दे दीन दुनी सबों सलामती, पाक हुए खोल रूह नजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -24
- कहे दुनियां ला मकान को, बेचून बेचगून । खुदा याही को बूझहीं, बेसबी बेनिमून || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -25
- कहे ध्यान बड़ा, कोई कहे धारन । कोई कहे सेवा बड़ी, कोई कहे अरपन || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -9
- कहे नूर-जमाल कुरान में, छोड़ के एह अंधेर । एक साद करो मुझको, मैं तुमें जी जी कहूं दस बेर || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -38
- कहे पर इस्क ईमान के, सो मोमिन छोड़ें न पल । सो दुनी को है नहीं, उत पाँउं न सके चल || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -73
- कहे परमेश्वर मुख थे, दिल चोरावें जे । दगा देवें मांहे दुस्मन, क्या नहीं देखत हो ए || ग्रं - किरन्तन, प्र -105, चौ -5
- कहे पहाड़ कुफर खुदी के, बिन हक इलमें जाहेर बढ़े। तब हमें मता छीन ले, पहाड़ किए हलके || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -33

- कहे पांच तत्व ख्वाब के, तामें बजरक केहेलाए कई लाख । पर अर्स बका हक ठौर की, कहूं जरा न पाइए साख || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -111
- कहें पैगंमर हम सरमिंदे, हक सों होए न बात । तुम जाओ महंमद पे, वे करसी सबों सिफात || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -14
- कहे फरमान इलम मूसे का, और बड़ा इलम खिजर । इलम खुदाई बूंद के, न आवे बराबर || ग्रं - खुलासा, प्र -6, चौ -15
- कहे फरिस्ते खुदा के हुकम, ए जिकरिया कह्या जो तुम । ए बात यों ही कर है, बुढ़ापा नातवानी कहे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -20
- कहे फुरमान नूर बिलंद से, खेल में उतरे मोमिन । खेल तीन देखे तीन रात में, चले फजर इनका इजन || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -10
- कहे बड़े सबन से, सौ गज का आजूज । और तंग चसम कया, एक गज का माजूज || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -26
- कहे बारे हजार मोहोल फिरते, कही हकमें तिनकी बात । तिन हर मोहोलों बीच बीच में, बारे बारे हजार मोहोलात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -20
- कहे बिगर ना रेहे सकों, जो हक हादी फुरमाए । हक बका के असों के, पट महंमद मसी खोलाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -10
- कहें महंमद अर्स रूहें, तुम मछली हौज कौसर । जो जीव दुनी मुरदार के, सो रहे ना तिन बिगर || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -47
- कहे महंमद करूं मैं एक दीन, जिन कोई जुदे परत । कुरान माजजा मेरी नबुवत, हुए एक दीन होए साबित || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -65
- कहे महंमद खबर जो मुझको, सो खबर मेरे भाई । धरे आवें कदमों कदम, जिनकी पेसानी में रोसनाई || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -32
- कहे महंमद दिन खुदाए का, दुनियां के साल हजार । लैलत कदर की फजर को, पावे दुनियां सब दीदार || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -21
- कहे महंमद पेहेले जब मैं चलों, यार आए मिलें खिन मांहें । ए बाहेदत की साहेदी, जाग्या जुदा रेहेवे नाहे || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -36
- कहे महंमद मसी आवसी, ले कुंजी लाहूत से । एक दीन सब करसी, सब कायम होसी कुंजिएँ || ग्रं - किरन्तन, प्र -111, चौ -9
- कहे महंमद मिस्कात में, दुनी दिल पर सैतान । वजूद होसी आदमी, होसी फिरकों ए ईमान || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -34
- कहे महंमद मैं अव्वल, रूहअल्ला आवसी आखिर । अहेलबेती मेंहदी बीचमें, गिरो राखी पनाह कर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -74
- कहे महंमद सिफत उमत की, करें अपने मुख मेहेरबान । सोई जाने जामें हक इलम, ए दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -51

- कहे महंमद सुनो मोमिनों, ए उमी मेरे यार । छोड़ दुनी ल्यो अर्स को, जो अपना वतन नूर पार || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -73
- कहे महामत अरवा अर्स से, जो कोई आई होए उतर । सो इन सरूप के चरन लेय के, चलिए अपने घर || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -118
- कहे महामत अर्स अरवाहें, किया पेहेलें बेवरा फरमान । जिन हुई हक हिदायत, सोई बातून करे बयान || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -146
- कहे महामत ए सो खेल, जो तुम मांग्या था चित दे । देख खेल हंस चलसी, घर बातां करसी ए || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -27
- कहे महामत तुम पर मोमिनों, दम दम जो बरतत । सो सब इस्क हक का, पल पल मेहेर करत || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -100
- कहे महामत परीछा तिनकी, जो पेहेलें हुए निरमल । छूटे विकार सब अंग के, आए पोहोंचे इस्क अव्वल || ग्रं - किरन्तन, प्र -92, चौ -16
- कहे महामत प्रेम समान, तुम दूजा जिन कोई जान । ले उछरंग ते घर आए, पिया प्रेमें कंठ लगाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -66
- कहे महामत मुसाफ उमत की, सिफत न आवे जुबान । तीनों अर्स अजीम के, ईसे किए बयान || ग्रं - किरन्तन, प्र -121, चौ -15
- कहे महामत हुकमें देखाइया, ऐसी कर हिकमत । हम देख्या इस्क बेवरा, बैठे बीच खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -153
- कहे महामती इन रंग रती, उठी सो हँस दे ताल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -41, चौ -11
- कहे महामती हूं गांऊ मोहोरे थई, पण विमुख विधो वीती सहु मांहें नर नार । धाम मांहें धणी अमें ऊंचूं केम जोईतूं, पोहोंचसे पवाड़ा परआतम मोंझार || ग्रं - किरन्तन, प्र -40, चौ -4
- कहे मुखथें हम मोमिन, और हमहीं पढ़े सरे-दीन । हमहीं अहेल किताब हैं, हमहीं में आकीन || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -42
- कहे मोको सबूरी देओ, फकीरों के मिलावे में लेओ । दुनियां थे आजाद किया, फकीरों के मिलावे में लिया || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -8
- कहे मोमिन उतरे अर्स से, इनों दिल में हक सूरत । ए अर्स में अर्स इन दिल में, यों हिल मिल बीच खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -83
- कहे मोमिन नूर सूरतमें, जो बीच अर्स हमेसगी । एक तन मोमिन अर्स में, दूजी सूरत सुपन की || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -78
- कहे मोहे अकेली छोड़ के, तुम धाम चलो क्यों कर । पीछे मैं दुनियाँ मिने, क्यों रहूंगी तुम बिगर || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -12
- कहे रसूल कौल हक के, सबे करों एक दीन । सो ए कौल तोड़्या दुनी, जिनों रहया ना आकीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -35

- कहे रसूल खुदा मैं देखिया, और ले आया फरमान । कौल किया आखिर आवने, दीदार होसी सब जहान || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -34
- कहे रसूल रूहअल्ला वास्ते, ल्याया आखिरी फरमान । रूह अल्ला इमाम आवसी, ले हक इलम पढ़सी कुरान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -68
- कहे रूह सुख पावत, और सुख विचारे अतंत । पर दुख पाऊं इन विध का, कछू पोहोंच न सके सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -131
- कहें रूहें एक दूजी को, नजीक बैठो आए । जिन कोई जुदी परे, रहिए अंग लपटाए || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -25
- कहे लज्या मैं पेहेले भूली, अवसर धनी ना छोडूं । सिर माया का भान के, पिउसों मुख ना मोडूं || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -99
- कहे लदुन्नी भोम तलेय की, हक बैठे खेलावत । तैसा इत होता गया, जैसा हजूर हुकम करत || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -39
- कहे लाखों पैगंमर हो गए, कई और लिखे बजरक । किन बका पट न खोलिया, दिए किनने किसे पैगाम हक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -90
- कहे लोभ लालच क्या गुनाह हमारा, जोलो जीव ना करे खबर । अब तुम पिउ देखाया हमको, तो देखो पिउ ग्रहें द्रढ़ कर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -38
- कहे वचन सामा कामनी, गाल जुगते दिए भामनी । तेणी लिए मटुकी उजाय, वालो गोरस गोवालाने पाय || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -25
- कहे विचार जीव के अंग, तुम धनी देखाया जेह । जो कदी ब्रह्मांड प्रले होवे, तो भी ना छोडूं पिउ नेह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -4
- कहे विध विध की साहेदी, या फरमान या हदीस । और भेजे नामे वसीयत, सो गिरो पर बकसीस || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -42
- कहे वेद बैकुंठ से, आए चतुरभुज दिया दीदार । वसुदेव तिन सिखापन, स्याम पोहोंचाया नन्द द्वार || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -3
- कहे वेद वैराट कछुए नहीं, जैसे आकास फूल । ए चौदे तबक जरा नहीं, ना कछू डाल न मूल || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -16
- कहे सब एक वजूद है, और सब में एक दम । सब कहे साहेब एक है, पर सबकी लड़े रसम || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -12
- कहें सब्द रूह साहेदी, पर दिल देत कछू सक। मुसाफ देखे भागी सक, सब आयतें इसी माफक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -6
- कहे सब्द सब आगू ही, इत खुदा करसी कजाए । हिसाब सबन का लेयके, भिस्त जो देसी ताए || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -73
- कहें सुनें बातें करें, ए जो अर्स मेहेरबान । सो खिलवत सुख छोड़ के, लग जवाए नहीं नैन बान || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -117

- कहें सुन्दरबाई अछरातीत से, खेल में आया साथ । दोए सुपन ए तीसरा, देखाया प्राणनाथ || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -9
- कहे सूरज सोना जवेर, ख्वाब में बुजरक ए। क्यों पोहोंचे निमूना झूठ का, अर्स कायम हक के || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -64
- कहें हक को सूरत नहीं, तो फरमान भेज्या किन । दुनी सुध नहीं भेज्या किन पर, करसी कौन रोसन || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -34
- कहे हक तुम भूलोगे, उन जिमी में जाए। रहोगे बीच नासूत के, उतहीं उरझाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -48
- कहे हक देखो खेल लैल का, बैठे अर्स में इत । पीछे देखो सरत पर, सूरज मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -72
- कहे हक नूर बैठ नासूत में, करें नूर लाहूत के काम । नूर रूहें जिमी दुख में, लेवें नूर लाहूती आराम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -23
- कहे हदीस कुदसी, और आयतें हदीसें सूरत । इन का रोजा निमाज हक दोस्ती, एक जरा न बिना मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -37
- कहे हदीस निमाज का, भेद न पाया किन । हादी तीन सूरत आए बिना, काहू खोली नहीं बातन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -45
- कहें हम खासी उमत, और हमही वारस कुरान । कजा करत हैं हमहीं, हमहीं खावंद ईमान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -12
- कहें हमको इन वतन में, मौत आवेगी अब । नफा नुकसानी हो चुकी, फेर जनम लेवें कब || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -40
- कहे हादी इस्क मेरा बड़ा, कहें रूहें बड़ा हम प्यार । ए बेवरा बीच अर्स के, ए होए नहीं निरवार || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -31
- कहे हादी हक इलम से, ज्यों एक हरफें बूझे सब बयान । पर नफस मजाजी क्या जानहीं, जाके दिल आँख बुध न कान || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -85
- कहें हार हम हैड़े पर, अति बिराजे अंग लाग । सुख देत हक सूरत को, ए कौन हमारो भाग || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -44
- कहें हिन्दू पीछे मौत के, हम जनम लेसी फेर । जो अब हम भूलेंगे, तो नफा लेसी और बेर || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -43
- कहे हुकम आगे रेहेनीय के, केहेनी कछुए नाहें । जोस इस्क हक मिलावहीं, सो फैल हाल के माहें || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -16
- कहे हुकम नूरजमाल का, मोहे प्यारे अति मोमिन । महामत कहे दोनों ठौर, हमको किए धंन धंन || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -64
- कहे हुकमें महामत मोमिनों, क्यों कहे जाए गुन कानन । जाके ताबे कई गंज सागर, ए सुख सेहे सके अर्स के तन || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -45

- कहे हुकमें महामत मोमिनों, हक इस्क बोले बेसक । इस्क रब्द वाहेदत में, हक उलट हुए आसिक || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -44
- कहे हुकमें महामत मोमिनों, हमें पोहोंचाई इन मजल । कहे सास्त्र नहीं त्रैलोक में, सो हक बैठे रूहों बीच दिल || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -70
- कहो कलमा हक कर, ल्यो माएने कुरान । पाक दिल रूह पाक दम, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -11
- कहो कहोजी ठौर नेहेचल, वतन कहां ब्रह्म को || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -1
- कहो के भूल्या टीका करता, के भूले तुम अर्थ । सो जुबां काटिए जो टीका को टेड़ा कहे, तुम भूले करत अनर्थ || ग्रं - किरन्तन, प्र -13, चौ -12
- कह्या अर्स हमारे दिल को, हैं हमहीं हक हुकम । क्यों न आवे इस्क हक का, यों बेसक हैयाती इलम || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -9
- कह्या अव्वल महंमद ने, हक अमरद सूरत । मैं देखी अर्स अजीम में, पोहोंच्या बका बीच खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -16
- कह्या आखिर पैगंमर आवसी, देसी साहेदी अपनी उमत । जो आए कौल कर हक से, तब जाहेर होसी कयामत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -79
- कह्या आम सिपारे मांहें, अग्यारै सदी लिखी है जाहें । हुकम हादी के खोलों इसारत, पाइए कौल जाहेर कयामत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -17, चौ -1
- कह्या आवसी असराफील, आखिरी बड़ा निसान । जो फूंके जिमी पहाड़ उड़ावसी, दुजी फूंके कायम करे जहान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -82
- कह्या उठे पैगंमर अस्हाब, एही आखिरी किताब । खोलें बीच आखिरी उमत, जिन सिर आखिरी खिताब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -70
- कह्या उतरते हक ने, अलस्तो-बे-रख-कुंम || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -95
- कह्या एक गिरो थी मोमिन, ले आदम लग तोफान । आगू अमल इबराहीम के, हुती सबें कुफरान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -95
- कह्या और भी बड़ा सब चीजोंसे, माजूज बड़ा गज एक । तंगचस्म चाटे दिवाल को, पीछे फेर कागद जैसी देख || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -6
- कह्या खुदाए ने निसानी तेरी, न सकेगा कहे हकीकत मेरी । मरदों से बात न होवे इन, केहेनी तीन रात और चौथा दिन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -25
- कह्या गधा जो दज्जाल का, ऊंचा लग आसमान । एही हवा तारीकी सिर सबों, जासों पैदा ए जहान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -5
- कह्या गाए असराफील मुसाफ, किए जाहेर मगज कुरान । या से पाक होए दुनी कयामते, फल पाया सुभान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -92
- कह्या गौर मुख मासूक का, और निलवट असल तिलक । हाए हाए ए बयान करते क्यों जिए, हम में रही नहीं रंचक || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -90

- कहया चमड़ी टूटे पीठ की, सिर ना नीचा होए । कही सेर छाती मुरग गरदन, ए पीठ हाड़ चमड़ी तोड़त दोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -18
- कहया चमड़ी टूटे पीठ की, सिर ना नीचा होए । कही सेर छाती मुरग गरदन, ए पीठ हाड़ चमड़ी तोड़त दोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -6
- कहया चौदे तबक जरा नहीं, तो बका सुध होसी किन । हक सूरत अर्स कायम, सब दिल बीच कहया मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -61
- कहया जमाना आवसी, झूठा और नुकसान । यार अस्हाबों कतल, तरवार उठसी जहान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -24
- कहया जाहेर मांहें दुनियां, और बातून मांहें हक । ए वेद कतेब पुकारहीं, हक इलम कहे बेसक || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -68
- कहया जाहेर रसूलें, मैं हरफ सुने हैं कान । सो आए केहेसी इमाम, में लिखे नहीं फुरमान || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -1
- कहया जो इमाम आवसी, सो सरत हुई सत । आगे इन इमाम के, जाहेर होसी बड़ी मत || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -33
- कहया जो नबिऐं इमाम, तिन खुद खोले द्वार । दरवाजे सब खोल के, मोहे देखाया पार || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -3
- कहया झण्डा उठ्या ईमान का, कौल किया जिन सरत । महंमद मेंहेंदी इमाम आए, लिखे आए नामें वसीयत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -1
- कहया तब ल्याए कई ईमान, कई रहे ईमान बिगर । केतेक पीछे ल्याए थे, ईमान इस्माईल पर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -106
- कहया दज्जाल अस्वार गधे पर, काना आंख न एक । हक को न देखे आंख जाहेरी, रूह नजर न बातून नेक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -1
- कहया दरिया जंगल से, नेहेरें चलें दज्जाल । सो नेहेरें जंगल से क्यों चलें, ए फिरके चले इन हाल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -3
- कहया दिल अर्स मोमिन का, दिल कहया न हुकम का । देखो इनों का बेवरा, हिस्से रूह के हैं बका || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -11
- कहया दिल महंमद का, सूरज मारफत । हकीकत खोले पीछे, होसी हक लज्जत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -91
- कहया दुनियां दिल मजाजी, सो उलंघे ना जुलमत । दिल अर्स हकीकी मोमिन, ए कहे कुरान तफावत || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -20
- कहया दुनी निकाह अबलीस से, दिल मजाजी तिन पैदास । जेती औलाद आदम की, पूजे हवा चले लिबास || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -36
- कहया दुनी पढ़सी, आप दिल विचार । चिट्ठी लेसी पीछली हाथ में, केहेसी फैल पुकार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -98

SPJIN

- कह्या न जाए सुख जागनी, सत ठौर के सनेह । तो भी कहूं जिमी माफक, नेक प्रकासूं एह || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -2
- कह्या निमूना एक भांत का, अंग खूबी इस्क सागर । खुसबोए नरम चकलाइयां, सब सागर कहे यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -26
- कह्या पर जले जबराईल, चढ़ सक्या न चौथे आसमान । रूहें बसें तिन लाहूत में, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -23
- कह्या पैगंमर आखिरी, असराफील भी आखिर । ए जुदे क्यों होवहीं, देखो सहूर कर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -29
- कह्या पैदा आदम हवा से, याकी असल बिध इन । सो बाहेर ढूंढे माएना जाहेरी, बिना मगज सुकन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -16
- कह्या फजर को होएसी, फरदा रोज आखिरत । होसी खोले हकीकत, हक अर्स लज्जत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -78
- कह्या बीच हिंद के, हक करसी हिसाब । खासलखास उमत, सब लेसी सवाब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -113
- कह्या ब्रह्मसृष्ट क्यों मिलसी, चाल तुमारी क्यों चलसी । मोहजल पूर तीखा अति जोर, नख अंगुरी को ले जाए तोर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -78
- कह्या मगरब ऊगसी सूरज, दुनियां के दिल पर । नाहीं रोसनी तिनमें, तब होसी बखत आखिर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -10, चौ -1
- कह्या महंमद हक के नूर से, नूर महंमद के मोमिन । हक हादी रूहें वाहेदत, इत मिले न दूजा सुकन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -37
- कह्या मुसाफ नजीक हक के, सो हक नजीक खोलाए । नापाक इत आए ना सके, ए इन पाकी खोल्या जाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -53
- कह्या मेरी उमत में, उठेगी तरवार । सो रेहेसी लग आखिर, ऐसा होसी बखत ख्वार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -8
- कह्या मैं तारतम तुमको, मूल वचन जिन पर । सो सारे इनमें लिखे, निसान अपने घर || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -9
- कह्या मोतिन के मोंहों कुलफ, ए माएने तोड़त पढों गुमान । ए अर्स तन रूहें जानहीं, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -29
- कह्या याही के तरजुमें, जो दिल घसे न छाती से । अब लों छिपा मता ए तो रह्या, जो जाहेर न किया किनने || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -50
- कह्या रसूलें आवसी, आखिर ए मेहेरबान । नजर जाहेरी क्यों देखोगे, जोलों बातून नहीं पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -7
- कह्या रसूले जाहेर, खबर खुद की मुझ । कोई और होवे तो पोहोंचही, अब जाहेर करहों गुझ || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -7

- कह्या रसूले फरमान में, अर्स दिल मोमिन । हम और क्यों केहेलाइए, बिना अर्स हक वतन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -17
- कह्या रसूले माज को इमन, अदल कजा करो जाए । क्यों कर करेगा अदल, सो मो को कहो समझाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -16
- कह्या रसूलें रूहअल्ला, मांहें सिरदार सब रूहन । मैं फुरमान ल्याया इनों पर, ए करसी साफ सबन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -46
- कह्या वजूद आदमी, सैतान अमल दिल पर । दुनी होसी इन बिध की, कहे बीच हदीस पैगंमर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -14
- कह्या साहेदी भी खा नहीं, जिन को नहीं ईमान । और रवा नहीं खूनी की, ना रवा खुदी गुमान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -6
- कह्या सिजदा कर आदम पर, जो सब के अव्वल आदम । अजाजीले देख्या आप को, तो न पकड़े रसूल कदम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -26
- कह्या सुनो मेरे परवरदिगार, धोए हाड़ बुढ़ापे नार । खंभ में वजूद इन घर, बूढ़े हाड़ सुस्त इन पर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -15, चौ -6
- कह्या सूरज होसी मगरब का, तिनमें नहीं रोसन । होसी गुलबा जोर दज्जालका, तब ईमान न रेहेसी किन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -10, चौ -5
- कह्या सूरत बाहेर बदले, जब दिल दई आग लगाए। सो बाहेर फैल करे कई विध, सके न कोई छिपाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -8, चौ -16
- कह्या हक सेहेरग से नजीक, सो हक अर्स मोमिन दिल । ना ऊपर तले दाएँ बाएँ, ए बतावें मुरसद कामिल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -58
- कह्या हक सेहेरगसे नजीक, सब हैवान या खलक । तो रसूल जुदागी क्यों हुई, जो बीच भेज्या जबराईल हक || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -59
- कह्या हकें मासूक भेजोंगा, उतरते रूहों अर्स से । सिरदार तिनमें रूह अल्ला, हके तासों कौल किया आपमें || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -67
- कह्या हकें रूहन को, तुम उतरो मांहें लैल । बैठो पकड़ कदम, देखोगे मांहें खेल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -39
- कह्या हदीस कुदसीय में, जब बन्दा करे फिकर । वह फिकर मुझ सों रखे, हकें फुरमाया यों कर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -36
- कह्या हदीसमें रसूलें, स्वाल किया उमर । सरा तरीकत हकीकत, तीनों की देओ खबर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -68
- कह्या हदीसों आयतों, द्वार न खोल्या किन । अव्वल बीच या आखिर, खुले ना रसूल बिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -76
- कह्या होवे वजूद तमाम, इन से भली भांत होवे काम । जो सिर मेरा हुआ सुपेत, तरफ रोसनी नहीं अचेत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -15, चौ -7

- कह्या होसी जाहेर, अर्स रूहें मोमिन । उतरे नूर बिलंद से, करें सब अर्स रोसन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -18
- कह्यो ताको इंद्रावती नाम, ब्रह्मसृष्ट मिने घर धाम । मों पर धनी हुए प्रसन्न, सोंपे धाम के मूल वचन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -92
- कह्यो न जाए धनी को विलास, पूरी साथ सकल की आस । लीला विनोद करसी हॉस, ए सुख उमत लेसी खास || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -39
- कह्यो न जाय आनन्द, अंग न माय उमंग । विकसियां अमारा मन, रहियो सर्वे हरवरी || ग्रं - रास, प्र -19, चौ -3
- कां जाणो एवडो अंतर, हूं अलगो न थाऊं। तमने मेली वनमां, हूं ते किहां जाऊं || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -24
- कांई एणी पेरे की– रास, रमीने जागिया । कांई आपण आ अवतार, फरीने मांगिया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -1, चौ -1
- कांई तेणी घडी तत्काल, आपण आंही आवियां । पेहेला फेराना लवलेस, आपण आंही ल्याावियां || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -1, चौ -2
- कांई धणी तणे चरण पसाय, तू भरम उड़ाडजे रे || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -1
- कांईक मन मांहें रह्यो अंदेस, ते राखे नहीं धणी लवलेस । हवे आ फेरानो जो जो विचार, अजवालू लई आव्या आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -30
- कांए न निसरियो रे, भंडा जीव एणी वार । फिट फिट रे कालिया अवसर, चूक्यो रे चंडाल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -29
- कागद आया वतन का, कासद होए ल्याए फुरमान । आया खातिर अपने, देने को ईमान || ग्रं - किरन्तन, प्र -104, चौ -3
- कागद एक उमत का, और हुआ झूठों सों छल । माएने जब जाहेर भए, तब भाग्यो झूठों बल || ग्रं - खुलासा, प्र -14, चौ -15
- कागद चौदे तबक के, मैं देखी हकीकत । सब गावें लीला जागनी, पर बड़ी महंमद की मत || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -3
- कागद धस्यो मैं याको नाम, गुन लिखने मेरे धनी श्रीधाम । चौदे भवनकी लेऊ वनराए, तिनकी कलमें मेरे हाथ गढ़ाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -3
- कागद में ऐसा लिख्या, आवेगा साहेब । अंदर अर्थ खोलसी, सब जाहेर होसी तब || ग्रं - खुलासा, प्र -14, चौ -4
- कागर केयां सभ पधरो, खोल्या हकजा गंज । सुख डिंनाऊं सभ बका, जिंनी रात डीहें हुआ डुख रंज || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -27
- कांगरी केरी जुगत जोइए, द्रढ करीने मन । माणक मोती हीरा कुंदन, नीला ते पाच रतन || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -15

- कागल परठ्यूं में एहनूं नाम, गुण लखवा मारा धणी श्री धाम । चौद भवननी लऊं वनराय, तेहेनी लेखणो मारे हाथों घडाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -3
- काजल रेखा तो कहूं, जो होए सुपन के नैन । ए स्याम सेत लाल असल, सदा सुखकारी सुख चैन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -58
- काजी कजा ऐसी करी, रही ना किसी की हाम । हुआ महंमद खिताब मेंहेदी, मिल्या मिने इमाम || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -70
- काजी कजा कर के, देसी परदा उड़ाए। परदा उड़े सब उड़सी, लेसी कयामत उठाए || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -68
- काजी कजा करके, ले उठसी रूह मोमिन । पेहेले ए कयामत होएसी, पीछे अरवाहें सबन || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -86
- काजी कजा के नूर की, बजसी कई करनाल । नूर अकल असराफील, बजाए स्वर रसाल || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -60
- काजी कजा क्यों होएसी, क्यों होसी दुनी दीदार । क्यों भिस्त क्यों दोजख, किन सिर कयामत मुद्दार || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -17
- काजी कजा जो करसी, तब कहया रसूलें संग हम । ए सोई दिन आइया, अब क्यों भूलें कदम || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -6
- काजी नूर सोहागनियों, इस्क प्याला ले । क्यों बरनों में इन जुबां, ए जो भर भर सबको दे || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -96
- काजी होए के बैठसी, हिसाब लेसी सबन । पल में प्रले करके, उठाए लेसी ततखिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -19
- काजी होए के बैठसी, होसी सबों दीदार । तो भी ईमान न दुनी को, जो एती करी पुकार || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -30
- काट जीव टुकड़े करूं, मांहें भरूं मिरच लोंन । ए दरद पिया इन भांत का, अब ए मेटे कौन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -12
- काटूं तन तरवारसों, भूक करूं हड्डियां तोर । खलड़ी उतारूं पेहेले उलटी, जीव काढू यों जोर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -16
- काटे करम सबन के, काल मार किया दुख दूर । हिरदे मांहें नूर के, लिए नजर तले हजूर । || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -23
- कांटे चुभे दुख पाइए, सेहे न सके लगार । पर होत है मोहे अचंभा, ए क्यों सेहेसी जम मार || ग्रं - किरन्तन, प्र -33, चौ -15
- काटे विकार सब असुरों के, उड़ायो हिरदे को अंधेर । काढ़यो अहंकार मूल मोह मन को, भान्यो सो उलटो फेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -59, चौ -2
- काटे सो आउध असुरों के, पाड़ी पापीड़ा के सिर पर प्रहार । इने दुख दिए साध संत को, तो सेहेता है सिर पर मार || ग्रं - किरन्तन, प्र -54, चौ -5

- कांठले ऊपर चोलीय के, बेल धरत अति जोत । और भी मानिक मोती नीलवी, डोरा तिन पर करे उहोत || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -91
- कांठले माणक ने वली मोती, कुन्दन मांहें पाना नंग । चीड तणी चारे सर सोभे, कोई धात वसेकना रंग || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -37
- कांठे जल ऊपर वेलडियो, तेमां रंग अनेक । फूलडे जल छायुं छे जुगते, विध विधना विसेक || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -28
- काड़े कलाई कोनियां, इन अंग रंग सलूक । फेर मच्छे खभे लग देखिए, रूह क्यों न होए भूक भूक || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -11
- काड़े कोमल हाथ पाउं के, फने पीड़ी अंग माफक । उज्जल अति सोभा लिए, ए सूरत सोभा नित हक || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -78
- काड़ों पर पीड़ी तले, मिहीं चड़ी सोभित इजार । जोत करे माहें दावन, झाईं उठे झलकार || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -42
- काढ़ के बूझ ऐसी दई, मोहे समझाई सब इत का । बेसक का इलम दिया, जासों बैठी बीच बका || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -47
- कातने को उतावलियां, आईयां मिलकर तुम । अब झूलो रहियां नींद में, कातना भूल खसम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -17
- कांध उमेदूं वडियूं, मूं दिल में थो पाइए। धणी पाहिजे डोह के, मूं मोहां थो चाइए || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -53
- कांध केस पेच पगरी, पीठ लीक रुप रंग || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -39
- कांध डे तूं हे पत्तर, हिन रांदमें बेही । न तां वडा लाड मुंहजा, की पारीने सेई || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -6
- कांध पीछे केस नूर झलके, लिए पाग में पेच बनाए । गौर पीठ सुध सलूकी, जुबां सके ना सिफत पोहोंचाए || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -60
- कांध पीठ लीक सलूकी, कही इलमें दिल दे । हाए हाए हुकमें ए तन क्यों रख्या, जो हुकम बैठा हुज्जत रूह ले || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -107
- कांध रूह भाइयां सिफत करियां, तेहिजी हित थिए न सिफत किंएं केई । से न्हारयम जडे बेवरो करे, आंऊ उरझी ते में रही || ग्रं - सिंधी, प्र -13, चौ -1
- कानन की किन विध कहूं, जो सुने आसिक के बैन । सो सुन देवें पड़उत्तर, ज्यों आसिक पावे सुख चैन || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -71
- कानन के गुन अनेक हैं, सुख आसिक बिना हिसाब । आठों जाम इत पीवहीं, अर्स अवाहें ए सराब || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -2
- कानन मोती केहेत हों, पल में बदलत भूखन । आसिक देखे कई भांतों, सुख देवें दिल रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -69

SPJIN

- कानन मोती लटकत, उज्जल जोत प्रकास । बीच लाल की लालक, जोत मावत नहीं आकास || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -43
- कानों कड़ी गठौरी-मुरकी, जुगत जिनस नहीं पार । नाम नंग रंग रसायन क्यों कहूं, रूप खिन में बदलें बेसुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -70
- कानों सुनें आसिक की, दिल दे गुझ मासूक । कहे आधा सुकन इस्क का, आसिक होए जाए भूक भूक || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -5
- कान्हजीने रीस अति थई, पेहेलं माखण दई न गई। ते ता झाली न रही रीस, घोलीना कीधां कटका वीस || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -12
- कान्हें छेडो ग्रहयो उजाता, जसोदाजी थयां रीसे रातां । कान्ह कहे माखण आपो पेहेलूं, त्यारे जाणे लाग्युं माताने गेहेनू || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -10
- काफर और मुनाफक, हँसते थे महंमद पर । सोई दिन अब आए मिल्या, जो महंमदें कही थी आखिर || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -11
- काफर को मुस्लिम करें, मिनें लेवें दीन हिसाब । सिर मूढ़ दाढ़ी रखें, कहें हमें होत सवाब || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -16
- काफर कौल कयामत के, जानते थे झूठ कर । सो सरत महंमद की सत हुई, अग्यारहीं सदी आखिर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -97
- काफर दिल में कीना आनें, अंजील तौरेत पर मारे ताने । जो खुदाए का पैगंमर, तिनसे फिरे सो हुए काफर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -10, चौ -4
- काफर देखें मोमिनों भिस्त में, आप पड़े बीच दोजक । सुख मोमिनों का देख के, जलसी आग अधिक || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -125
- काफर न माने हक सूरत, ताको कछू अचरज नाहें । केहेलाए महंमद के पूजें हवा, ए बड़ा जुलम दीन माहें || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -64
- काफर पूछे मोमिनों से ले, ना पूछे रसूल को दिल दे । खुदाए ताला ने कहया यों कर, किस चीज से पूछे काफर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -2
- काफर मुसलिम मोमिन, जो ए जुदे न होते तीन । तो अर्स तन और जिमी के, क्यों पाइए कुफर आकीन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -89
- काफर मुस्लिम मोमिन की, सोई करसी पेहेचान । हकीकत मारफत के, खोलसी द्वार कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -10
- काफर रूह भी पाक होएसी, अंदर आग जलाए। मोमिनों मुस्लिम खातिर, भिस्त जो देसी ताए || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -80
- काबर कोयल स्वर, कपोत घूम चकोर । मृगला वांदर मोर, नाचत फेरी फरी || ग्रं - रास, प्र -19, चौ -5
- कांबिए नंग आसमानी फूल वेल, जुगते कुंदन जडाव । जडाव लाल नंग नीला पीला, कडले सोभा अति थाए || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -9

- काबिल हिंद के बीच में, होसी इमाम रोसन । ए लीजो प्रगट इसारतें, दोए रूहों का मिलन || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -15
- कांबी एक जवेर की, तामें झीने रंग नंग दस । दिल चाहे भूखन सब बने, सो हक भूखन ए अर्स || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -96
- कांबी कडला जुगते जडियां, सात वानि ना नंग सार । लाल पाना हीरा माणक नीलवी, कुन्दनमां मोती झलकार || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -7
- कांबी कडला रणझण बाजे, घंघरी तणां घमकार । हेम तणां वाला माहें गठिया, माहें झांझर तणो झमकार || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -8
- काम क्रोध दिमाग में, सब धखे निस वासर । सो सारे ठंढ़े हुए, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -18
- काम बड़े इन मेहेर के, ए मेहेर इन हक । मेहेर होत जिन ऊपर, ताए देत आप माफक || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -30
- कामरी पेहेरी बृजवधू, और सुन्दरवर स्याम । भी पेहेरी महंमद ने, और पेहेरी इमाम || ग्रं - किरन्तन, प्र -110, चौ -3
- कायम एक वाहेदत, हक की पातसाही । दूजी काहूं कितहूं, जरा कही न जाई || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -56
- कायम जिमी अर्स की, सांची जो साबित । पसु पंखी इन भोम के, जो हमेसा बसत || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -55
- कायम जिमी अर्स की, साहेबी पूरन कमाल । तो कैसा निमूना इनका, जिन सिर नूर जमाल || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -105
- कायम जिमी का खावंद, जिन को कहिए हक । तिन जिमी के जानवर, सो होए तिन माफक || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -56
- कायम न्यामत हक की, न थी रात के मांहें । अमल दुनी में सरीयत, ए चल्या है तब ताहें || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -83
- कायम फना बीच दुनी के, हुती न तफावत । मैं जो बेवरा करत हों, सो कदम हादी बरकत || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -52
- कायम वतन करें जाहेर, करें जाहेर नूरजलाल । करें उमत अर्स की जाहेर, करें जाहेर नूरजमाल || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -43
- कायम सदी तेरहीं, उथींदा निरवाण । महामत जोए इमामजी, जाहेर क्याऊं फुरमान || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -30
- कायम हक के अर्स में, बैठे अपने ठौर । हक के इत वाहेदत में, कोई नाहीं काहूं और || ग्रं - खुलासा, प्र -18, चौ -10
- कायम हमेसा बुजरकी, सिरदार इन रूहन । ए जुबां झूठे वजूद की, क्यों करे सिफत इन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -50

SPJIN

- कायम होत जो नूर से, सो आवे न सब्द माहें । तो रोसनी नूरमकान की, क्यों आवे इन जुबांए || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -8
- कायर केम चाले एणी वाटे, जेने लागे ते जम नो त्रास । रात दिवस रूए कलकले, सूकाय ते लोही मांस || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -6
- काया केम चाले तेह रे, कालजई कापे जेह रे । ऊभी केम रहे देह, बांध्या जे मूल सनेह । त्राटकडे दीधा छेहरे, मारो जीव जीवनजी लई गया हो स्याम || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -2
- काया बेडी समझ समर, सायर लख संसार । मालम जीव जगाए साथी, मेहेराज पुनों पार || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -24
- कारज यों सब हुए पूरन, श्री सुंदरबाई की सिखापन । हिरदे बैठ केहेलाया रास, पेहेले फेरे के दोऊ किए प्रकास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -18
- कारण अरवा अर्सजी, चुआं सिन्ध गालाए । जिन कलमें रसूल जे, सचो आकीन आए || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -1
- कारी कामरी रे, मोको प्यारी लागी तूं । सब सिनगार को सोभा देवै, मेरा दिल बांध्या तुझसों || ग्रं - किरन्तन, प्र -110, चौ -1
- कारी कुमत कूब कुचल, ऐसी कठिन कठोर हूं नारी । आतम मेरी निरमल करके, सेहेजें पार उतारी || ग्रं - किरन्तन, प्र -119, चौ -4
- कारें सदीमें कयामत, लिखी मंझ कुरान । से सभ केयांऊं पधरा, जे गुझ हुंदा निसान || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -28
- काल आवत कबूं ब्रह्म भवन में, तुम क्यों न विचारो सोई । अखंड सांई जो यामें होता, तो भंग ब्रह्मांड को न होई || ग्रं - किरन्तन, प्र -32, चौ -6
- काल न देखे इन फेरे, याही तिमर के फंद । ए सूरज आंखों देखिए, पर इन फंद के बंध || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -17
- काल ना देखें इन फेरे, याही तिमर के फंद । ए सूरज आंखों देखिए, पर याही फंद के बंध || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -17
- काल माया को ए जो इंड, उपज्यो और जाने सोई ब्रह्मांड । ए तीसरा इंड नया भया जो अब, अछर की सुरत का सब || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -46
- काल माया जोग माया, तीसरी लीला जागन । सुन्दरबाईऐं ना कहे, ए आगम के वचन || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -15
- काल माया देखी नींद में, आधी नींद माया जोग । ताथें देखाई जगाए के, इत लेसी सबको भोग || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -18
- काल याही दिन कहे, सो पोहोंचे कौल पर आए । तब पिंड या ब्रह्मांड, देत सबे उड़ाए || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -29
- काल सुन्य जड़ चेतन, ए सब हुए जाहेर । ए धोखा किन का ना रया, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -10

- कालमाया इंड पेहेले रच्यो, जोगमाया रचियो और । फेर तीसरो कालमाया रच्यो, जाने एही इंड वाही ठौर || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -15
- कालमाया जोगमाया, बीच कहे प्रले दोए । एह खेल भया तीसरा, माएने बुध जी बिना न होए || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -25
- कालमायानों लेस निद्रा, अने निद्रा मूल विकार । सर्वा अंगे सुध थाय, करी दऊं तेह विचार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -21
- कालमायामां रामत, एटला लगे प्रमाण । ब्रह्मांडनो कल्पांत करी, अखंड कीधो निरवाण || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -52
- काली ते रात कोई उपनी, सूझे नहीं सल सांध । दिवस तिहां दीसे नहीं, मांहे ते फरे सूरज ने चांद || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -19
- काहूं तरफ न देखाई अपनी, यो रहे चौदे तबक से दूर । सो सेहेरग से नजीक तुम हीं, हमको लिए कदमों हजूर || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -34
- काहूं तरफ न पाई अर्स की, कहावत हैं दीनदार । डूबे सब अपनी स्यानपे, जात हाथ पटक सिर मार || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -63
- काहूं न दरवाजा नजीक, कहां कुलफ किल्ली कल गत । राह भी नजरों न आवहीं, ए चले जाहेरी ले मत || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -18
- काहूं न पाइए जोगमाया की, हम बिना पेहेचान । वासना पांचों अछर की, भले कहावें आप सुजान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -8
- काहूं बदले न पाइए, कई दौड़त मुझ देखत । पर रास न आया किनको, जो लों धनी नहीं बकसत || ग्रं - किरन्तन, प्र -78, चौ -5
- किए आपस में रूहें गवाही, हमें अपनी जबान । याको जाने दिल हकीकी, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -27
- किए चौदे तबक तुम वास्ते, इनमें मता है जे । ए भी हक इस्क तो पाइए, जो देखो हक इलम ले || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -36
- किए विलास अंकूर थें, घर के अनेक प्रकार । पिया सुंदरबाई अंग में, आए कियो विस्तार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -36
- कित जानों हीरा कनी, हर ठौर हर भांत घनी । कित दोखूनी तीन चौखूनी, कित फिरती कहूं गोल बनी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -35
- किताब इलाही उतरी, गैब से आई इत । महीनें आठ लों उत जुध हुआ, चले मदीने से इन सरत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -9, चौ -9
- किताबें दुनियाँ मिने, कहूं केती गिनती अनेक । तिन सबोंमें आखिरी, कलाम अल्ला विसेक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -71
- किताबों सबों यों कहया, असे पोहोंचे रूह पाक । दिल मजाजी इन जिमी के, मिल जाए खाक में खाक || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -52

- किते वेयूं हो गालियूं, जे अर्स विच केयूं । तांजे असीं विसत्या, आंके विसरी की वेयूं || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -26
- किन उठाए हिंदू ठौर सिजदे, किन मिलाए आखिर निसान । किन खड़े किए मोमिन, कराए पूरन पेहेचान || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -105
- किन एक बूंद न पाइया, रसना भी वचन । ब्रह्मांड धनियों देखिया, जो कहावें त्रैगुन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -101
- किन कम किन ज्यादा जीतिया, कोई हाथ पटक चल्या हार । साथ जी यों बाजी मिने, कोई जीत्या बेसुमार || ग्रं - किरन्तन, प्र -86, चौ -3
- किन कायम अर्स न पाइया, ए गुझ रही थी बात । अब तू उमत जगाए अर्स की, बीच बका हक जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -10
- किन कायम द्वार न खोलिया, अव्वल से आज दिन । जो कोई बोल्या सो फना मिने, किन पाया न बका वतन || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -4
- किन कौल किया बीच अर्स के, अरवाहे जो मोमिन । सो पढ़े वेद कतेब को, ए खोली ना हकीकत किन || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -20
- किन खोले न माएने कबूं कुरान, पावें न हकीकत करें बयान । पढ़े आलम आरिफ कई जन, पर एक हरफ न खोल्या किन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -32
- किन जड़े घड़े ना समारे, भूखन आवत दिल चाहे । अर्स जवेर कंचन ज्यों, जानों असल ऐसे ही बनाए || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -98
- किन ठौर छिपाए तुम को, बोलत हो कहां से । कौन तरफ हो अर्स के, ए सहूर करो दिल में || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -57
- किन तरफ न पाई अर्स हक की, मांहें चौदे तबक । सो खोल दिए पट हादिएँ, इलम ईसे के बेसक || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -52
- किन तरफ हमारे तुम हो, किन तरफ तुमारे हम । बीच भयो क्यों ब्रह्मांड, क्यों हम पकड़ बैठे कदम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -17
- किन देख्या सुन्या न तरफ पाई, तो क्यों दुनियां सुन्या जाए। जो अरखा होसी अर्स की, सो सुन के सुख पाए || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -3
- किन पाया न इन इलम को, किन पाया ना ए इस्क । तो क्यों पावे ए निसबत, पेहेले सूरत न पाई हक || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -22
- किन पाया ना मगज मुसाफ का, जो ल्याया आखिरी पैगंमर । किया जाहेर यासों हक बका, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -41
- किन फेर दुनी पैदा करी, फेर कौन ल्याया नूह तोफान । किन ऐसी किस्ती कर तारी गिरो, किन डुबाई सब कुफरान || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -15
- किन बिध कहूं पसु पंखियों, परों पर चित्रामन । मुख बोलें हक के हाल में, तिन अंबर भरे रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -14

- किन बिध कहूं या सुख की, फिट फिट मूंडे अचेत । तुझ बैठे न आई तीव्रता, ना तो ए सुख लेत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -104
- किन बिध रूहें लाहूती, क्यों जबरूती फरिस्ते । जिन लई सिफायत महंमद की, सो बताए देवें सब ए || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -35
- किन भेज्या आया कौन, ल्याया हक का फरमान ए सहू । र करके समझहीं, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -16
- किन मान्या न मान्या किन, किन फेरया फुरमान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -34
- किन माया पार न पाइया, किन कयो न मूल वतन । सरूप न कयो काहूं ब्रहम को, कहे उत चले न मन वचन || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -5
- किन लिखाए सखत सौगंद, जो सरीयत सामी बल । तिन सबको किए सरमिंदे, हाए हाए अजूं याद न आवे असल || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -102
- किन विध कहूं मुख मांडनी, कहूं सनकूली के सुख पुंज । के कहूं आनंद सागर पूरन, गरूआ गंभीर नूर गंज || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -21
- किन विध कहूं सलूकियां, हर दिस सलूकी अनेक । देख देख जो देखिए, जानों उनथें एह नेक || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -164
- किन विध कहूं हथेलियां, अति उज्जल रंग लाल । केहेते लीकां दिल लरजत, ए अंग नूरजमाल || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -62
- किन विध जामा लग रह्या, ए जो अंग का जहूर । कई नकस बूटी मिहीं बेलियां, रूह कर देखे अर्स सहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -31
- किन विध दई तुम बेसकी, सक रही न किन सब्द । दुनियां चौदे तबक में, सुध परी न बांधी हद || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -19
- किन विध मैं तुमको कहूं, क्यों कर दिल धरूं । ले एहेसान तुमारे दिल में, मैं गुजरान क्यों करूं || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -3
- किन विध लेवें सुख बन के, क्यों हिंडोलों हींचत । किन विध रूहें अर्स में, माहों-माहें खेल करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -13
- किन सुख देखाय अर्स के, बहु विध बिना हिसाब । अनुभव अपना देख के, हाए हाए अजूं न उड्या ख्वाब || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -110
- किन सूरत न पाई हक की, न पाया अर्स बका ठौर । सब कहें हमों न पाइया, कर कर थके दौर || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -79
- किनका तुम धरत हो ध्यान, सो मोहे कहो श्री भगवान । मेरे मनमें भयो संदेह, कहे समझाओ मोको एह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -22
- किनके पेड़ जिमी पर, कई पेड़ पेड़ ऊपर । यों पेड़ पर पेड़ आसमान लों, कई सोभा देत सुन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -53

- किनको नफा न देवे कोए, तब कोई न किसी के दाखिल होए । कूवत तिन समें कहुंए जाए, तो कोई नफा किसी को न सके पोहोंचाए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -23, चौ -7
- किनहूं ऊंचा कातिया, दे फारी फुकार । सो ए घरों सैयनमें, हुई धंन धंन कातनहार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -13
- किनहूं कात्या सोहाग का, सूत भर भर सेर । कोई बैठियां पांउ पसार के, ले बैठी हिरदे अंधेर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -8
- किनार दिवाले द्वार ने, लाल दोरी दोए दोए । मन्दिर मन्दिर की हद लग, सोभा लेत अति सोए || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -70
- किनार बाएं बीच जवेर के, और रोसन बेसुमार । ए तखत नूरजमाल का, अर्स सब चीजों अपार || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -117
- किनारे कठेड़ा बैठक, अति सुन्दर थंभ सोभात । दोऊ तरफों चबूतरे, खूबी इन मुख कही न जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -25
- किंनी कतया सोहागजा, सूतर भरया सेर । के बेठियूं मय विच थेई, पेर मथे चाडे पेर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -6
- किने न केयो कडई, हेडो अधम कम । डिसी डोह पाहिजो, फिरी करियूं की जुलम || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -25
- किया खुलासा जाहेर, ले बेसक हक इलम । दिया महंमद मेंहेदी ने, गिरो मोमिनों हाथ हुकम || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -102
- किया जमा सब सब्दों का, धोए हाथ और हथियार । होसी नेहेचल सुख चौदे लोकों, हम देखे खेल कारन इन बार || ग्रं - किरन्तन, प्र -54, चौ -18
- किया टोना लड़की महंमद पर, दई गांठ अग्यारे तिन । सो हर सदी गांठें खुलीं, तब महंमद ले चले मोमिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -44
- किया तीनों गिरो का बेवरा, सरीयत तरीकत हकीकत । हुकम हुआ महंमद को, कर तीनों को हिदायत || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -62
- किया बरनन श्री धाम का, कई विध लिखे निसान । साथ को सुख उपजावने, ठौर ठौर किए बयान || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -5
- किया बेवरा इन वास्ते, उतरे अर्स से रूहें फरिस्ते । मोमिन मुतकी ए सुन के, रेहे न सकें जुदे || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -7
- किया मजकूर इस्क का, अजूं सोई है साइत । पड़े बीच फरामोस के, तुम जानो हुई मुद्दत || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -99
- किया राज मथुरा द्वारका, बरस एक सौ और बार । प्रभास सब संघार के, जाए खोले बैकुंठ द्वार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -23

- किया रूहों सबों रब्द, पर आप न पकड्या किन । फरामोसी सबों फिरवली, हुई हाँसी सबन || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -89
- किया सिजदा मूल वतन, जो दरगाह बड़ी है रोसन । यों कह्या बीच लवाब, ए हमेसां मूल सवाब || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -5
- किया हुकमें बरनन अर्स का, पर दृष्ट मसाला इत का । एक हरफ लुगा पोहोंचे नहीं, लग अर्स चीज बका || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -5
- किरणां सघले कोलांभियो, गयो वैराटनो अग्नान । द्रढाव चोकस लोक चौदनो, उडायूं उनमान || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -46
- किरना उठें नई नई, सिंघासन की जोत । कई तरंग इन जोत के, नूर नंगों से होत || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -26
- किरना बन जिमीय की, सामी किरना ससि प्रकास । नूर हम पे खेले नूर में, प्रेमें पियासों रास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -22
- किरना सबमें कुलांभियां, गयो वैराट को अग्यान । दृढ़ाए चित चौदे लोकको, उड़ाए दियो उनमान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -9
- किल्ली ल्याए वतन थे, सब खोल दिए दरबार । माया से न्यारा घर नेहेचल, देखाया मोहजल पार || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -8
- किस वास्ते खिताब खुदाए का, एक सोई खोले कलाम । हाए हाए ए सुध मोमिनो ना लई, मीठा हक इस्क का आराम || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -31
- किस वास्ते दुनी ना समझी, किस वास्ते भेज्या फरमान । ए बातें हक के इस्क की, हाए हाए करी न काहूं पेहेचान || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -29
- किस वास्ते फिकर करे, देख दाहिने हाथ पर । कुलफ मोतियों के मुंह पर, सब नूर आया महंमद नजर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -6
- किस वास्ते हलके जगावत, ऊपर करत बोहोतक सोर । हाए हाए ए सुध कोई ना ले सके, हक के इस्क का जोर || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -28
- किस वास्ते हाँसी करी, किस वास्ते हुए फरामोस । हाए हाए दिल ना विचारहीं, हाए हाए आवत नाहीं माहें होस || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -22
- किसोर सूरत हादी हक की, सुन्दर सोभा पूरन । मुख कमल कहूं मुकट की, पीछे सब अंग वस्तर भूखन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -113
- किस्ती नूह नबीय की, लिए अपने तन चढ़ाए। स्याम बेटा नूह नबी का, फिस्या किस्ती पार पोहोंचाए || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -17
- किस्सा इनों के इस्क का, किन मुख कह्यो न जाए। दीदार न होवे बखत पर, तो जानों अरवा देवें उड़ाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -5
- किस्सा लिख्या अजाजील का, किया सिजदा सब जिमी पर । तिन मारी राह सब दुनी की, इन ए फल पाया क्यों कर || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -21

- किस्से आखिरी कलाम अल्लाह के, जिन खोलें होसी हैयात । सो पढ़े कहें होए गए, जित दुनी रानी बीच जुलमात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -111
- किस्से करान के डारो तित, रद जमाने हो गए जित । ताए क्यों कहो यों कर, जो रोसनी होसी आखिर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -19
- किस्से कुरान तौरेत के, पढ़े डालत पीठ पीछल । कहे हो गए किस्से रातमें, यों इनों खोया फजर बका फल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -57
- किहां थकी अमे आवियां, अने पड्या ते अंधेर मांहें । जीवन जोत अलगी थई, मांथी न केमे निसराय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -37
- किहां बसे ने कीहो ठाम, ते मूने कहो श्री भगवान । ए लीला सांभलूं श्रवणे, वली वली लागू चरणे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -23
- किहे रे परियाणे तमें निसस्या, कांई जोवा वृंदावन । जोयूं बन रलियामणू, कांई तमे थया प्रसन्न || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -4
- की करियां आऊं गालडी, मथां उखणियां की मोह । मूं हथां एहेडी थेई, खल लाहियां चोटी नोंह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -8, चौ -5
- की करियां केडा वंजा, चुआं कीय करे । न पेराइयां पडूत्तर, न अची सगां गरे || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -4
- कीं करियां गालडी, जां न पसां पाहिजे नैण । जे सुणाइए त सुणां, मिठडा तोहिजा वैण || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -31
- की घुरां आंऊ के कणां, ओडो न अचे तूं । विओ को न पसां थी कितई, आंऊं विच आसमाने भू || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -11
- की याद मिलाप धनी को, और सखियों के सनेह । रात दिन रंग प्रेम में, विलास किए हैं जेह || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -4
- कीडी कुंजरने बेठी गली, तेहेनी तां कोणे खबर न पडी । केहेने तो कहूं छू एम, जे माया भारे थइ छे तेम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -3
- कीबूं राज मथुरा द्वारका, वरस एक सो ने बार। प्रभास सहु संघारीने, उघाड्या वैकुंठ द्वार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -22
- कुंअरबाई माता, नाम, उत्तम कायथ उमरकोट गाम । श्री देवचंदजी नगर आविया, आवी वचन भागवतना ग्रयां || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -32
- कुकडियूं करीन पेहेलीनियूं, हाणे को न सुजाणो साथ । न तां खरे बपोरे सेज सोझरे, हाणे थींदी रात || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -4
- कुकरम करो कुटिल गत चालो, आगे पीछे चींटी हार । वल्लभ कुंअर कितने को बरजे, कई उलटे सेवक संसार || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -17
- कुकरम कसाब जुध कई करावियां, पलीत अबलीस अम मां बेसार । जागतां दिन कई देखतां अमने छेतस्या, खरा ने खराब ए खलक खुआर || ग्रं - किरन्तन, प्र -40, चौ -2

SRJN

- कुछाइए त कुछांथी, माठ कराइए तूं। को न पसांथी कितई, मत्थे अभ तरे थी भू || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -9
- कुंजर काढूं कीडी मुख, सुध आणूं सरीर । वचन कही ने जुजवा, करूं खीर ने नीर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -136
- कुंजर काढ़ों चींटी मुख, सुध आनो सरीर । तारतम केहे जुदे जुदे, करों खीर और नीर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -158
- कुंजी दई मुझ को, और मेरे सिर खिताब । सास्त्र चौदे तबक के, सब मैं ही खोलों किताब || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -8
- कुंजी ल्याए किस वास्ते, किस वास्ते दई दूजे को । मेहेर अल्ला के कलाम, हाए हाए आए ना काहूं दिल मों || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -30
- कुंजी ल्याए रूहअल्ला, जासों पावें सब फल । ज्यों कर ताला खोलिए, सो जाने न कोई कल || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -11
- कुंजी ल्याए रूहअल्ला, दई हाथ इमाम । सो गिरो मोमिनों मिलाए के, करसी सिजदा तमाम || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -74
- कुंजी हाथ रूहअल्ला, और रसूल हाथ फरमान । भेजे इमाम पे खेल में, सो हादी रूहों लिए निसान || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -70
- कुटम कबीले माहें अपने, बैठे हते करार । साख दे दे भाने सोई, दिए दुख अपार || ग्रं - किरन्तन, प्र -120, चौ -2
- कुंड अठावीस कया सुकदेवे, एक बीजा थी चढता जाय । त्यारे पडयो परीछित दुख सुणी, स्वामी बीजा तो न संभलाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -34
- कुंड आगे ढांपी चली, अदभुत ऊपर मोहोलात । अंदर बैठकें क्यों कहूं, दोऊ किनार लिए चली जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -24
- कुंदन केरा अनवट सोहे, विछ्डा करे ठमकार । माणक मोती ने नीला पाना, जुगते अति जडाव || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -7
- कुदरत की सारी कही, बुरका जो गफलत । दोजख भिस्त फरिस्ते, आखिर कही कयामत || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -88
- कुदरत को माया कही, गफलत मोह अंधेर । या विध चौदे तबकों, कह्या फिरस्ते का मन फेर || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -36
- कुदरत रूप दज्जाल को, किनहूं न जान्या जाए। तब सबों को सुध परी, जब ईसे दिया उड़ाए || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -43
- कुदरत से पाइयत हैं, बुजरकी कादर । सिफत लिखी दोऊ ठौर की, आवत न काहूँ नजर || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -31
- कुंन के रोज की साहेदी, देवे एही उमत । सो कहे उस बखत की, जो ल्यावे एह हुज्जत || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -19

- कुंन केहेते जुलमत से, कहे पल में पैदा मोहोरे खेल । सो सरभर करें हक जात की, तो लटकाए गले में जेल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -13
- कुन केहेते पैदा हुई, ए जो खलक आम । जो कही जुलमत से, तीसरी दुनी तमाम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -34
- कुंन से और नूर से, ए दोऊ पैदास । रूहें उतरी अर्स अजीम से, कही असल खासल खास || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -76
- कुन्जी नूर के पार की, रूहअल्ला दई मुझ । केहे बातून मगज मुसाफ का, करों जाहेर जो है गुझ || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -48
- कुन्जी भेजी हाथ रूहअल्ला, पर खोल न सके ए। फुरमान खुले आखिर, हाथ सूरत हकी जे || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -70
- कुन्दन माहें धरे अति जोत, आकास न माए झलकार । बेन गूंथी तीन गोफने, जड़ित घूघरी घमकार || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -46
- कुफर और ईमान की, सुध न थी बीच रात । अब सुध परी सबन को, जाहेर हुई हक जात || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -60
- कुफर की हुई पातसाही, चौदे तबक चौफेर । सब दुनियां को बेमुख करके, बैठा बुजरकी ले अंधेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -102, चौ -8
- कुफर चौदे तबक का, इन सब्दों होसी नास । पर कहा कहूं तिन अगुओं, जिन किए घात विश्वास || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -2
- कुफर न काढ़ें आपको, और देखें सब कुफरान । अपना अवगुन ना देखहीं, कहें हम मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -43
- कुफर सारा काढ़सी, एक पलक में धोए । खारे जल पछाड़सी, याको धूप जो देसी दोए || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -3
- कुमारका हम संग रेहेती, पिउ खेलते सखियन । मूल सनमंध कुमारकाओं का, या दिन थें उतपन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -50
- कुमारिका रमे रामत, अभ्यास चीलो कुल तणो । कुलडा मांहें दूध दधी, रमे वन रंग रस घणो || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -35
- कुरबानी को नाम सुन, मोमिन उलसत अंग । पीछे हुते जो मोमिन, दौड़ लिया तिन संग || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -9
- कुरबानी को सब अंग, हँस हँस दिल हरखत । पिउ पर फना होवने, सब अंगों नाचत || ग्रं - किरन्तन, प्र -91, चौ -10
- कुरबानी सुन सखियां, उलसत सारे अंग । सुरत पोहोंची जाए धाम में, मिलाप धनी के संग || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -18
- कुरसी फिरस्ते लोहकलमी , कायम सितारों आसमान जिमी । पीछे आदम के पैदा भया, जात पाक से दोस्त कहया || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -50

- कुरान को पढ़ पढ़ गए, पर पाई न हकीकत किन । तो मासूक प्यारा न लग्या, हाए हाए जिमी हुई अगिन || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -28
- कुरान चीज ऐसी बुजरक, फेर तिन में ल्यावें सक । रसूल को नाम धरें काफर, किवता झूठा जादूगर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -3
- कुरान जिनों न विचारिया, जलो सो तिनकी मत । जो न जागी रसूल हुकमें, हाए हाए आग परो गफलत || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -22
- कुरान तफसीर जो हुसेनी, बुजरक एह पेड़ से केहेनी । मरद तीनों पर है मुद्दार, जो कलाम अल्ला कहे सिरदार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -1
- कुरान पढ़े चलें सरीयत, करें दावा मोमिनों राह । पर क्या करें कुंजी बिना, पावें ना खुलासा || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -67
- कुरान पुरान मैं देखिया, कही दुख की बड़ाई । साध बड़ी बड़ाई दुख की, लड़ाए लड़ाए के गाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -26
- कुरान पुरान रे वेद कतेबों, किए अर्थ सबे निरधार । टाली उरझन लोक चौदे की, मूल काढ़्यो मोह अहंकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -53, चौ -8
- कुरान माजजा नबी नबुवत, दोऊ साबित होवें तब । दज्जाल मार के एक दीन, आए रूह अल्ला करसी जब || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -77
- कुरान माजजा नबी नबुवत, साबित हुआ न चाहें । लड़ फिरके जुदे हुए, जो बुजरक कहावें दीन माहें || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -67
- कुरान माजजा नबी नबुवत, साबित होए हुए एक दीन । ईसा करसी हक इलमें, आवसी सबों आकीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -28
- कुरान में ऐसा लिख्या, खुदा एक महंमद साहेद हक । तिनको न कहिए मोमिन, जो इनमें ल्यावे सक || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -21
- कुरान लिख्या दिया चार ठौर, भी किताबें दैयां ठौर और । अब को अव्वल को कलाम आखिरी, ए नीके तुम ढूंढ़ो जाहेरी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -18
- कुरान ल्यावे आखिर, आवसी फरमान बरदार । अमल करे कहे माफक, वाको सक नहीं वार पार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -47
- कुरान वारस मोमिन कहे, पढ़या या उमी होए । बिन अर्स रूहें हक न्यामत, दूजा ले न सके कोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -71
- कुरान हकीकत न खुली, ना स्याम रसूल पेहेचान । ना पावें महंमद गिरो को, जो सौ साल पढ़े कुरान || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -18
- कुलफ था एते दिन, द्वार इस्क न खोल्या किन । सो खोल दिया हमें मेहेर कर, अपने हाथ मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -21
- कुलफ हवा का दुनी के, दिल आंखों कानों पर । ईमान क्योंए न आए सके, लिख्या फुरमान में यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -130

- कुलिए छकाए रे दिलड़े जुदे किए, मोह अहं के मद माते । असुर माते रे असुराई करें, तो भी न मिले रे धरम जाते || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -3
- कुली दज्जाल अंधेर सरूपे, त्रिगुन को पाड़े त्रास । सूर सिरोमन साध संग्रामें, पीछे पटक किए निरास || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -6
- कुली बल देखो रे, ए जो देखन आइयां तुम । खेल किया तुमारी खातिर, सुनियो हो सृष्ट ब्रह्म || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -1
- कुल्ल अकल हक इलमें, होए पैदा बका हक दिन । इन इलमें जहान जुलमती, करी हिदायत रोसन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -6
- कुवत कछुए न पाइए मांहें, खेलें मोह में परे परवस मन । भोमका एक न चढ़ सकें, कहावें ईश्वर को महाकारन || ग्रं - किरन्तन, प्र -31, चौ -6
- कुंवरबाई माता को नाम, उत्तम काइथ उमरकोट गाम । आए श्री देवचंदजी नौतनपुरी, सुख सबों को देने देह धरी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -61
- कुसल छे काई वृजमां जी, केम आवियो आणी वेर जी । उतावलियो उजाणियो जी, कांई मूक्या कारज घेर जी || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -3
- कूड न अचे अर्स में, रूह माधा न रहे कूड दम । न्हारयम अंतर मंझ बाहेर, कित जरो न रे हुकम || ग्रं - सिंधी, प्र -12, चौ -8
- कूदत फांदत नाचत, लेत भमरियां दे पड़ताल । नई नई विद्या देख के, हक हादी रूहें होत खुसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -90
- कृपा करत हो साथ पर बड़ी, भी अधिक कीजो घड़ी घड़ी। इंद्रावती पांउ परत आधार, धनी धाम के लई मेरी सार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -26
- कृपा करनी माफक, कृपा माफक करनी । ए दोऊ माफक अंकूर के, कई कृपा जात ना गिनी || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -15
- कृपा करी साथ सिरदारों, मुझ पर हुए मेहेरबान । निरगुन होए न्यारी रहूं, छोड़ बड़ाई गुमान || ग्रं - किरन्तन, प्र -101, चौ -7
- कृपा करो छो अमज तणी, सिखामण देओ छो अतिघणी। अहनिस लेओ छो अमारी सार, तो मोहजल उतरतूं पार || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -3
- कृपा करो छो सहु साथज तणी, वली कृपा साथने करजो घणी घणी । इंद्रावती चरणे लागे आधार, धणी लिए तेम लीधी सार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -26
- कृपा निध सुंदरवर स्यामा, भले भले सुंदरवर स्याम । उपज्यो सुख संसार में, आए धनी श्री धाम || ग्रं - किरन्तन, प्र -57, चौ -1
- कृपा है कई विध की, ए जो तीनों सृष्ट ऊपर । एक एक पर कई विध, इनका बेवरा सुनो दिल धर || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -14
- के अची आतण मंझा, सुतियूं सुख करे । उथियूं से उचाटमें, जड़े सूतर संभारे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -9

- के कहूं सागर तेज का, के कहूं सागर सरम । के नूर सागर कहूं बिलंद, के चंचल गुन नरम || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -12
- के तंदू चाडीन तकडूं, लधाऊं ही वेर । के नारीदयूं भू अडूं, के मथे चढ्यूं सिर मेर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -7
- के तूं बुध रहित है, के तूं बोलत बेसहूर । बेसहूर क्यों कहे सके, ए हक का गुझ जहूर || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -9
- के तो ओ दीपक नहीं, या तं पतंग नाहें । पतंग कहिए तिनको, जो दीपक देख झंपाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -18
- के पत्तर मूं केयां, के तो केयां कांध । से सुंजे हिये न संभरे, विसस्या मय रांद || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -14
- के बेठियूं मय विच थेई, पण नाडी तंद न चढे । कत्तणके जे विसस्यूं, से उथियूं ओराता धरे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -5
- केआऊं वडी रांदडी, कागर मूक्यो की हित । डियण साहेदी सभनी, लिख्या लखे भत || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -5
- केटलाक जोर करे जुध करवा, पण पग पंथ सब्द न कोय । सूं करे साध सनंध विना, मोटी मत वाला जोय || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -16
- केटलीक सखियो आंबलो सींचे, अमे चरण तमारे वलगां । दृढ करीने अमे चरण ग्रहया, जोइए कोण करे अमने अलगां || ग्रं - रास, प्र -27, चौ -3
- केटलीक सखी संग, निकसी रमती रंग, रूप देखावें झुन्झार । एक दौड़ के जावें, हौज में झंपावें, एक ले दूजी लार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -20
- केटलीक सुंदरी उलटई भरी, आवी वालाजीने पास । उमंग आणे आप वखाणे, विरह विनता गयो नास || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -8
- केड बांधीने ज्यारे कीजे उपाय, त्यारे तमे थाओ नरम । आपोपूं ज्यारे नाखिए आंख मीची, त्यारे तमने आवे सरम || ग्रं - खटरुती, प्र -7, चौ -18
- केडा वंजा के के चुआं, बिओ को न डिखारे हंद । तूं बेठो मूं भर में, आंऊं केडा वंजा करे पंध" || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -41
- केणी पेरे हूं करूं अस्तुत, मारा जीवने नथी कांई बल । मारी जोगवाई सर्वे अस्थिर वस्तनी, केम वरणवं सोभा नेहेचल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -3
- केतक ठौर हैं मोमिन, तिन सब ठौरों है उजास । पर इतथे नूर पसरया, तब ओ ले उठसी प्रकास || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -44
- केतक ठौरों सोहागनी, तिन सब ठौरों उजास । पर जब इत थे जोत पसरी, तब ओ ले उठसी प्रकास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -12
- केतक पर सिर बांध के, कर कर गए जब्द । सो सारे बेसुध गए, बिना एक महमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -15

- केतक बुजरक कहावहीं, सो याही सुन्य को चाहें । सो गले सब इतहीं, आगे ना निकसे पाए || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -39
- केतक संग रसूल के, रेहेते रात दिन मांहें । नातो ओ बुजरक हुते, पर कछू अली बिन चीन्हया नांहें || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -14
- केतिक करें लड़ाइयां, सामी देवें फरेब । कौन रसूल कौन रूहअल्ला, कौन वेद कौन कतेब || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -24
- केतिक छाया जल पर, केतिक छाया बार। ए दोऊ बराबर चली, जमना बांध किनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -15
- केती कहूं मेहेर मेहेबूब की, जो रूहें देखो सहूर कर । महामत कहे मेहेर अलेखे, जो देखो रूह की नजर || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -56
- केती चक्राव से बाहेर, जोए तले चबूतरों निकसत । रूहें खेलें तले कदम के, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -75
- केती बिध कहं कलजुग की, अलेखे अप्रमान । बरना बरन कर मिने व्याप्या, काहुं न किसी की पेहेचान || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -16
- केते आप कहावें परमेश्वर, केते करत हैं पूजा । साध सेवक होए आगे बैठे, कहें या बिन कोई नहीं दूजा || ग्रं - किरन्तन, प्र -6, चौ -10
- केते कहावें मोमिन, और दिल में मुनकर । एक नाजी फिरका असल, और दोजखी बहत्तर || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -18
- केते खेल कहूं सखियन के, जो करत बन नित्यान । खेल करें स्याम स्यामाजी, सखियों खेल अमान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -48
- केते दिन कयामत के, क्यों कयामत के निसान । ए सक कछुए ना रही, जो लिखी बीच कुरान || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -14
- केते रंग एक पात में, केते रंग एक फूल । केते रंग एक फल में, केते रंग डाल मूल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -25
- केतेक मोमिन हो बेसक, जो बेसक करो विचार । तो बेसक सुख अर्स का, इन तन बेसक ल्यो करार || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -20
- केतेक लग ढांपी चली, तरफ दोऊ थंभ हार । इन आणू जुदी जिनस, चली दयोहरी दोऊ किनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -10
- केतेक साहेब सों बैठे फिर, केतेक कयामत से मुनकर । बाजों को दुनियां हैयात, बाजे सक ल्यावें इन बात || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -6
- केतों के मुंह उजले भए, केतों के मुंह काले कहे । कैयों आकीन कई मुनकर, यों लिख्या होसी आखिर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -10, चौ -2
- केतोंक अपना किया कुरबान, करें निछावर बुजरक जान । इत पांच से जुलजुलाटहू, संग रसूल के असलू रूह || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -18

- केम ओधरिया आगे जीव, जेणे हता करमना जाल । गुरगम ज्यारे जेहेने आवी, ते छूट्या तत्काल || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -61
- केम जाणिए माया गई, अंतर जोत ते प्रगट थई । हवे आतम करे कांई बल, तो वाणी गाऊं नेहेचल || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -2
- केम न सुणियां रे, ए वचन तें श्रवणा । तें सूं न हता सुणया, वचन धणी तणां || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -5
- केम ने रघु रे मारा, अंग माहें रे बल । तें जीवने नव काढ्यूं रे, निध जातां नेहेचल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -23
- केम रहे धाख ते आपणी, त्रीजो ब्रह्मांड लाव्या । साथे धणी पधारिया, तारतम लई आव्या || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -105
- केम रे झपाए अंग ए रे झालाओ, वली वली वाध्यो विख विस्तार । जीव सिर जुलम कीधो फरी-फरी, हठियो हरामी अंग इंद्री विकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -38, चौ -1
- केम रे मूकं कहे केसरबाई, तमने रमतां थई घणी वार । हवे तमे केम नहीं मूको, मारा प्राणतणो आधार || ग्रं - रास, प्र -39, चौ -6
- केम रे रामतडी कीजिए, काया केम रे चाले विना जिउ । रामतडी केम थाएसे, उठाय नहीं विना पिउ || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -40
- केम वली जिभ्या मारी, ए केहेतां वचन । समूली न चुटाणी", जिहां थकी उतपन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -3
- केल घाट नूर कतरे, चौकी सोभित नूर किनार । पोहोंची नूर पुल बराबर, आगू लिबोई नूर अनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -22
- केल बन आगू चल्या, मधु बन मिल्या आए । इत सोभा बड़े बन की, इन अंग मुख कही न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -112
- केल लिबोई अनार, बाईं तरफ खूबी देत । जांबू नारंगी बट दाहिने, नूर सनमुख सोभा लेत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -19
- केल लिबोई और अनार, और तीन बन दाहिनी किनार । बट नारंगी जांबू बनराए, पाट के घाट अमृत केहेलाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -24
- केवडो काथो ने कपूर काचली, भरणी ने भारंगी । सेवण सेरडी सूरण सिगोंटी, नालियरी" ने नारंगी || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -8
- केवल ब्रह्म अछरातीत, सत-चित-आनन्द ब्रह्म । ए कयो मोहे नेहेचेकर, इन आनन्द में हम तुम || ग्रं - किरन्तन, प्र -65, चौ -12
- केस चुए में भीगल, लिए जुगतें पेच फिराए । पेच दिए ता पर बहु बिध, बांधी सारंगी बनाए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -28
- केस त्वचा जासे चरमाई, नसों टसे निरवाण । विध विधना दुख देखसो, पण तोहे नहीं छोडे प्राण || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -32

- केस रेखा कानों पीछे, बीच में अंग उज्जल । हक मुख सोभा क्यों कहिए, इन जुबां इन अकल || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -159
- केसरबाई जाणे अमकने आव्या, इंद्रावती जाणे अमपास । सघलीसूं सनेह करी, वन मांहें कीधां विलास || ग्रं - रास, प्र -39, चौ -13
- केसरी काबली हाथी, बाघ बीघ बांदर । पस्व घोड़े दीपड़े, लड़ें सूअर सांम्हर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -14
- केसरी कूवत कूदते, गरजत बिना हिसाब । बिन मन आवे आसमान में, ऐसी उठक सिताब || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -31
- केसरी कूवत ज्यादा कही, निपट अति बलवान । ए ख्वाब देखाया तिन वास्ते, करने अर्स पेहेचान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -30
- केसरी बाघ चीते हाथी, और जातें कई अनेक । कहया जीन बने अंग उत्तम, सो कहां लों कहूं विवेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -3
- केही पेर करूं जीव तूंने, तूं चूक्यो रे चंडाल । जो तूंने अगिन न उठी रे, कां न झंपाव्यो झाल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -31
- केही पेरे वाद करीस तूं मोसं, तं छे म्हारो जाण्यो । जिहां जेणी पेरे कहीस रे वाला, तिहां आवीस मारो ताण्यो || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -25
- केहे केहे जुबां इत क्या कहे, तेज जोत रोसन नूर । सो तो इन जिमी जरे की, आकास न माए जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -163
- केहे केहे जुबां एता कहे, जो जोत भस्या अवकास । आसमान जिमी भर पूरन, अब किन विध कहूं प्रकास || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -43
- केहे केहे दिल जो केहेत है, ताथें अधिक अधिक अधिक । सोभा इस्क बका तन की, ए मैं केहे न सकों रंचक || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -83
- केहे केहे मुख एता कहे, नूरै के वस्तर । मैं केहेती हों बुध माफक, ज्यादा जुबां चले क्यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -52
- केहे केहे मुख जेता कहे, सो सब हिसाब के माहें । और हक हुकम यों केहेत है, ए सिफत पोहोचत नाहे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -100
- केहे केहे रसूले फेर कही, ज्यों समझें सब कोए । पर ए बूझें हक हादी रूहें, और बूझे जो दूसरा होए || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -84
- केहे फरमान इनों हाथ में, मेहेर कर दिया रसूल । जाहेर तुमको बताइया, सो भी गैयां तुम भूल || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -7
- केहेत इमाम केसरी, खुदा इन वास्ते नई आयत करी । खासा सोई है बुजरक, ए साहेब कहे बेसक || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -20
- केहेत केहेलावत तुम ही, करत करावत तुम । हुआ है होसी तुमसे, ए फल खुदाई इलम || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -13

- केहेतां सवलू आणे चित अवलू, वस्त विना करे विवाद । महामत कहे तेहने केम मलिए, जे करे अवला उदमाद || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -23
- केहेती हों इन जुबांन सों, और सपन श्रवन नजर । जो नजरों सूरज ख्वाब के, सो सिफत पोहोंचे क्यों कर || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -73
- केहेती हों उमत को, सुनसी सब संसार । मकसूद तिन का होएसी, जो लेसी एह विचार || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -1
- केहेती हों करके हेत, सारे दिन की एह बिरत । तुम लीजो दृढ़ कर चित्त, अपना जीवन है नित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -79
- केहेती हों मोमिन को, सुनसी सब जहान । माएने गुझ या जाहेर, कोई ले न सक्या फुरमान || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -1
- केहेना केहेलावना ना रह्या, ऐसा तुम दिया इलम । तुम बिना जरा है नहीं, ज्यों जानो त्यों करो खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -40
- केहेना सुनना देखना, अर्स चीज न इस्क बिन । जो कछू सुख अखंड, सो सब इस्क पूरन || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -80
- केहेनी अकथ इमाम की, खसमें कथाई हम । इन कुरान के माएने, ना होवे बिना खसम || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -30
- केहेनी करनी चलनी, ए होए जदियां तीन । जुदा क्या जाने दुनी कुफर की, और ए तो इलम आकीन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -57
- केहेनी कही सब रात में, आया फैल हाल का रोज । हक अर्स नजर में लेय के, उडाए देओ दुनी बोझ || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -6
- केहेनी में न आवहीं, विचार देखें मोमिन । होए जाग्रत अरवा अर्स की, कछू सो देखे रसना रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -2
- केहेनी सुननी गई रात में, आया रेहेनी का दिन । बिन रेहेनी केहेनी कछुए नहीं, होए जाहेर बका अर्स तन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -56
- केहेनो तमे करो छो ध्यान, ते मूने कहो श्री भगवान । मारा मनमां थयो संदेह, कही प्रीछवो मूने एह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -22
- केहेर कह्या तीर त्रगड़ा, रही सीने बीच भाल । रोई रात दिन आसिक, रोवते ही बदल्या हाल || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -43
- केहेर नजर देखाए के, फेर लिए मेहेर मांहें । मुस्लिम नाम धराए के, बैठे मुस्लिम की छांहें || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -30
- केहेलाए मुस्लिम पकड़े वजूद, पाँउ चले राह ऊपर । क्यों न कटाए पुलसरातें, जो रसूलें देखाई जाहेर कर || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -38
- केहेलावें काजी पढ़े कुरान, अल्ला रसूल ना उमत पेहेचान । ना कुरान ना आप चिन्हार, अहेल किताब यों कहावें दीनदार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -2, चौ -3

- केहेलावें महंमद के, चलें ना महंमद साथ । डारें जुदागी दीन में, कहें हम सुन्नत जमात || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -44
- केहेवत हुकम इन जुबां, पर ए खूबी कही न जाए। ए कहे बिना भी ना बने, बिन कहें रूह बिलखाए || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -18
- केहेसी हम सुनंत जमात हैं, राह छोड़सी बीच की असल । मेरा तरीका छोड़ के, चलसी अपनी अकल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -12
- कैयों खोया जनम अपना, रहे धनी के जमाने मांहें । हाए हाए कहा कहूं मैं तिनको, जो इनमें से निरफल जाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -78, चौ -7
- कैयों जनम सुफल किए, ऐसा पिउ का समया पाए। सेवा सनमुख जनम लों, लिया हुकम सिर चढ़ाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -78, चौ -8
- कैयों ढूंढ्या चौदे भवन, ढूंढ़े चार मुक्त के जन । नवधा के ढूंढ़े भिंन भिंन, न कछु खबर त्रैगुन || ग्रं - खुलासा, प्र -11, चौ -7
- कैयों ढूंढ्या होए दरवेस, फिरे जो देस विदेस । पर पाया ना काहूं भेस, आगू ला मकान कया नेस || ग्रं - खुलासा, प्र -11, चौ -13
- कैयों पेहेचान होवहीं, कैयों नहीं पहेचान । सो सब होत हॉसीय को, करत आप सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -17
- कैसा अर्स देखाइया, क्यों लिए खिलवत माहें । ए जो अरवाहें अर्स की, क्यों अजूं विचारत नाहें || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -78
- कैसा इलम था तुम पे, पूजते थे किन को । कैसे झूठे कबीले में थे, अब आए किनमों || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -87
- कैसा इस्क बड़ी रूह सों, कैसा इस्क साथ रूहन । बड़ी रूह का इस्क हक सों, इस्क हक सों कैसा है सबन || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -10
- कैसा इस्क बड़ीरूहसों, कैसा इस्क रूहों साथ । इस्क हादी का हक से, कैसा हकसों इस्क जमात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -28
- कैसा घर बुजरक बका, कैसी खसम साहेबी । किन चाह्या तुमारा दीदार, कैसी तिनकी है बुजरकी || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -83
- कैसा पाया रूहों कबीला, कैसी पाई हक निसवत । कैसे दुख से निकस के, पाई सांची न्यामत || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -90
- कैसा सरूप है हक का, जो इन सबों का खावंद । क्यों देऊं निमूना इनका, इन जुबां मत मंद || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -56
- कैसा साहेब है अपना, और कैसा अपना वतन । कैसो अपनो वजूद है, जो असल रूहों के तन || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -2
- कैसा हाल है तुमारा, हो कैसे वतन में तुम । कौन बड़ाई तुमारी, हाए हाए आवे न याद खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -82

- कैसी जिमी थी कुफर की, और कैसी थी अकल । किन झूठे कबीले में थे, कैसे तुमारे अमल || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -84
- कैसी झूठी निसबत में, करते थे गुजरान । अब निसबत भई अर्स की, लेत संग सुभान || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -99
- कैसी नरम अंगुरियां पतली, देख सलकी तेज । आसमान रोसनी पोहोंचाए के, मानों सूर जिमी भरी रेजा रेज || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -53
- कैसी पाई सराफी, कैसी आई तुमें पेहेचान । हक बका चीन्हया कौन जिमिएं, पाया कैसा इस्क ईमान || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -86
- कैसी बात करत है, किन ठौर की बात । तूं कौन गुफ्तगोए किन की, ना विचारत हक जात || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -5
- कैसी बात दिल पैदा करी, जिनसे मांग्या खेल ए। सो कैसा खेल ए किया, ए देखत हो तुम जे || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -4
- कैसी मीठी बानी हक की, कहे प्रेम वचन श्री मुख । निसबत जान रमूज के, देत रूहों को सुख || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -30
- कैसे कर याको खोजिए, ए तो कोहेड़ा आकार । ए ढूंढ्या बोहोतों कई बिध, पर किनहूँ न पाया पार || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -13
- कैसे झूठे घर हुते, पाई कैसी अर्स मोहोलात । जागत हो के नींद में, कछू विचारत हो ए बात || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -92
- कैसे थे इन खेल में, किन माफक थे तुम । किन से ए निसबत भई, कैसा बका पाया खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -76
- कैसे फना में हुते, आए कैसे बका वतन । आए कैसे सुख में, छूटी कैसी जलन || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -91
- कैसे लगें पांउं चलते, वह कैसी होसी भोम । चलते देखे हक चातुरी, हाए हाए घाए न लगे रोम रोम || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -58
- कैसे सुख पाए कायम तन के, किनसों हुआ मिलाप । अब देखो साहेब अर्स का, पूछो रूह अपनी आप || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -97
- को निकसी घोड़े ज्यों पार, और कौन कटी पुलसरात की धार । खास गिरो साहेबें सराही, गिरो दूजी पीछे लगी आई || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -27
- कोइ आए न सके अर्स में, जाकी नसल आदम निदान । दई हैयाती सबन को, मेहेर कर सुभान || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -99
- कोइक काल बुध रास की, लई ध्यान में सकल । अब आए बसी मेरे उदर, वृध भई पल पल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -25
- कोइक काल बुध रासनी, ग्रही जोगवाई सकल । आवी उदर मारे वास कीधो, वृध पामी पल पल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -24

- कोइक दिन साथ मोहना जलमां, लेहेर विना पछटाणा । वासना घणूं वल्लभ मूने, न सहूं ते मुख करमाणा || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -29
- कोई आगे पीछे अव्वल, इस्क लेसी सब कोए । पेहेले इस्क जिन लिया, सोई सोहागिन होए || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -115
- कोई आप न चीन्हहीं, ना चीन्हे हक वतन । ना चीन्हे तिन जिमीय को, ऊपर खड़ा है जिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -47
- कोई आप बड़ाई अपने मुख थें, करो सो लाख हजार । परमेश्वर होए के आप पुजाओ, पर पाओ नहीं भव पार || ग्रं - किरन्तन, प्र -10, चौ -5
- कोई एक कौल महंमद का, हुआ न चल विचल । पर क्यों बूझें औलाद आदम की, जिनकी अबलीस नसल || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -98
- कोई एम मां केहेजो जे निंदया करे छे, वचने कहूं छू देखाडी। साध पुरुख नी निद्रा भाजे, आंखडी देऊं रे उघाडी || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -32
- कोई ऐसा न हुआ इन जहान में, जो तारे अपनी आतम । यों सब सास्त्र बोलहीं, कहे पुकार निगम || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -42
- कोई करे काल को संजम, कोई दिन काया बचाए । कोई राते करामतें, यों सब निगम नचाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -28, चौ -12
- कोई करे ले कैद में, बांधत उलटे बंध । मारते अरवाह काढ़ें, ए खेल या सनंध || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -28
- कोई करो सब जिमिएँ सिजदा, पालो अरकान लग कयामत । पर ए कदम न आवें दिल में, बिना असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -27
- कोई कहावे अप्रस अंगे, कोई निवेदन । कोई कहे अमे नेम धारी, पण मूके नहीं मैल मन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -9
- कोई कहे अद्वैत के आड़े, सब द्वैतै को विस्तार । छोड़ द्वैत आगे वचन, किने न कियो निरधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -29, चौ -12
- कोई कहे अद्वैत के कारन, द्वैत खोजी पर पर । अद्वैत सब्द जो बोलिए, तो सिर पड़े उतर || ग्रं - किरन्तन, प्र -29, चौ -11
- कोई कहे आकार बड़ा, कोई कहे निराकार । कोई कहे तेज बड़ा, यों लरें लिए विकार || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -16
- कोई कहे आकार बड़ा, कोई कहे निराकार । कोई केहेवे तेज बड़ा, यों लरें लिए विकार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -14
- कोई कहे आकार मोटो, कोई कहे निराकार । कोई कहे माहे जोत मोटी, एम वढे भस्या विकार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -15
- कोई कहे आतम बड़ी, कोई कहे परआतम । कोई कहे अहंकार बड़ा, जो आद का उतपन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -11

- कोई कहे आतम बड़ी, कोई कहे परआतम । कोई कहे अहंकार बड़ा, जो आद का उतपन || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -13
- कोई कहे आतम मोटी, कोई कहे परआतम । कोई कहे अहंकार मोटो, जे आदनों उतपन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -12
- कोई कहे आदे आद माता, और न कोई क्यांहें । सिव नारायन सबे यार्थे, या बिन कछुए नाहे || ग्रं - किरन्तन, प्र -28, चौ -9
- कोई कहे ए कछुए नाहीं, तो ए भी क्यों बनिआवे । जो यामें ब्रह्म सत्ता न होती, तो अधखिन रहने न पावे || ग्रं - किरन्तन, प्र -29, चौ -5
- कोई कहे ए तेज पुंज, याकी किरना सब संसार । कोई कहे याको अंग न इंद्री, निरंजन निराकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -28, चौ -6
- कोई कहे ए पुरूख प्रकृती, मिल रचियो खेल एह । तो सूरज दृष्टे क्यों रहे अंधेरी, ए भी बड़ा संदेह || ग्रं - किरन्तन, प्र -29, चौ -7
- कोई कहे ए ब्रह्मकी आभा, आभा तो आपसी भासे । तो ए आभा क्यों कहिए ब्रह्मकी, जो होत हैं झूठे तमासे || ग्रं - किरन्तन, प्र -29, चौ -4
- कोई कहे ए भरम की बाजी, ज्यों खेलत कबूतर । तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावें बाजीगर || ग्रं - किरन्तन, प्र -29, चौ -3
- कोई कहे ए सब ब्रह्म, तब तो अग्यान कछुए नाहीं । तो खट सास्त्र हुए काहे को, मोहे ऐसी आवत मन माहीं || ग्रं - किरन्तन, प्र -29, चौ -6
- कोई कहे ए सबे काल, करम सक्त उपाए । खेलावे अपने मुख में, आखिर दोऊ को खाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -28, चौ -11
- कोई कहे ए सबे ब्रह्म, रहत सबन में व्याप । कोई कहे ए सबे छाया, नाही यामें आप || ग्रं - किरन्तन, प्र -28, चौ -4
- कोई कहे ए सबे सुपना, न्यारा खावंद है और । तो ए सुपना जब उड़ गया, तब खावंद है किस ठौर || ग्रं - किरन्तन, प्र -29, चौ -8
- कोई कहे ओ निरगुन न्यारा, रहत सबन से असंग । कोई कहे ब्रह्म जीव ना दोए, ए सब एकै अंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -28, चौ -5
- कोई कहे ओ पुरुख उत्तम, और ए सबे सुपन । कोई कहे ए अलख अलहारे, कोई कहे सब सुन्न || ग्रं - किरन्तन, प्र -28, चौ -7
- कोई कहे ओ सदा सिव, और न कोई देव । कोई कहे आद नारायन, करत कमला जाकी सेव || ग्रं - किरन्तन, प्र -28, चौ -8
- कोई कहे करनी मोटी, कोई कहे मुगत । कोई कहे भाव मोटो, कोई कहे भगत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -5
- कोई कहे करम बड़ा, कोई केहेवे काल । कोई कहे साधन बड़ा, यों लरें सब पंपाल || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -4

- कोई कहे करम मोटो, कोई कहे मोटो काल । कोई कहे ए अगम, एम रमे सहु पंपाल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -2
- कोई कहे कहां कहया हाथ से, देखो सिपारे तेईसमें । देखो सहूर कर मोमिनों, कहया आदम पैदा हाथ से || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -111
- कोई कहे कीरतन बड़ा, कोई कहे श्रवन । कोई कहे बड़ी वंदनी, कोई कहे अरचन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -6
- कोई कहे कीरंतन बड़ा, कोई कहे श्रवन । कोई कहे बड़ी वंदनी, कोई कहे अरचन || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -8
- कोई कहे कीर्तन मोटो, कोई कहे श्रवन । वंदनी मोटी, कोई कहे अरचन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -6
- कोई कहे तीरथ मोटो, कोई कहे मोटो तप । कोई कहे सील मोटो, कोई कहे मोटो सत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -3
- कोई कहे दान बड़ा, कोई कहे ग्यान । कोई कहे विग्यान बड़ा, यों लरे सब उनमान || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -3
- कोई कहे दान बड़ा, कोई केहेवे ग्यान । कोई कहे विग्यान बड़ा, यों लरें सब उनमान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -1
- कोई कहे दान मोटो, कोई कहे गिनान । कोई कहे विग्नान मोटो, एम वदे सहु उनमान || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -1
- कोई कहे ध्यान बड़ा, कोई कहे धारन । कोई कहे सेवा बड़ी, कोई कहे अरपन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -7
- कोई कहे ध्यान मोटो, कोई कहे धारण । कोई कहे सेवा मोटी, कोई कहे अरपन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -7
- कोई कहे निराकार है, और निरंजन । कोई कहे अहं बका, सबमें ब्रह्म निरगुन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -61
- कोई कहे पारब्रह्म बड़ा, कोई कहे परसोतम । वेद के बाद अन्धकारे, करें लड़ाई धरम || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -17
- कोई कहे पारब्रह्म बड़ा, कोई कहे पुरसोतम । यों वेद के वाद अंधकारे, करें लड़ाई धरम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -15
- कोई कहे पारब्रह्म मोटो, कोई कहे परसोतम । वेदने वाद अंधकारे, वादे वढता धरम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -16
- कोई कहे बड़ा तीरथ, कोई कहे बड़ा तप । कोई कहे सील बड़ा, कोई केहेवे सत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -3
- कोई कहे बड़ा तीरथ, कोई कहे बड़ा तप । कोई कहे सील बड़ा, कोई केहेवे सत || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -5

- कोई कहे बड़ी करनी, कोई कहे मुगत । कोई कहे भाव बड़ा, कोई कहे भगत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -5
- कोई कहे बड़ी करनी, कोई कहे मुगत । कोई कहे भाव बड़ा, कोई कहे भगत || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -7
- कोई कहे बेचून है, और बेचगून । भी कहे बेसबी है, और बेनिमून || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -60
- कोई कहे ब्रहम आतमा, कोई कहे पर आतम । कोई कहे सोहं सब्द ब्रहम, या बिध सब को अगम || ग्रं - किरन्तन, प्र -28, चौ -3
- कोई कहे याको करम करता, सब बंधे आ जाए । तीनों गुन भी करमें बांधे, सो फेर फेर फेरे खाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -28, चौ -10
- कोई कहे विचार बड़ा, कोई कहे बड़ा व्रत । कोई कहे मत बड़ी, या विध कई जुगत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -4
- कोई कहे विचार बड़ा, कोई कहे बड़ा व्रत । कोई केहेवे मत बड़ी, या विध कई जुगत || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -6
- कोई कहे विचार मोटो, कोई कहे मोटो व्रत । कोई कहे मत मोटी, एम वदें कई जुगत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -4
- कोई कहे विष्णु नारायन, कोई अरहंत बतावे । कोई देवी देव पत्थर, पानी आग पुजावे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -59
- कोई कहे सकल व्यापक, देखीतां सब ब्रहम । कोई कहे ए ना लहया, यों करे लड़ाई भूले भरम || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -14
- कोई कहे सकल व्यापी, दीसंतो सह ब्रहम । कोई कहे ए निरगुण न्यारो, आ दीसे छे सहु भरम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -13
- कोई कहे सकल व्यापी, देखी तां सब ब्रहम । कोई कहे ए न लहया, यों लरें भूले भरम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -12
- कोई कहे संगत बड़ी, कोई कहे बड़ा दास । कोई कहे विवेक बड़ा, कोई कहे विश्वास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -8
- कोई कहे संगत बड़ी, कोई कहे बड़ा दास । कोई कहे विवेक बड़ा, कोई कहे विस्वास || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -10
- कोई कहे सत संगत मोटी, कोई कहे मोटो दास । कोई कहे विवेक मोटो, कोई कहे विस्वास || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -10
- कोई कहे सदा सिव बड़ा, कोई कहे आद नारायन । कोई कहे आदे आद माता, यों करत तानों तान || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -12
- कोई कहे सदा सिव बड़ा, कोई कहे आद नारायन । कोई कहे आदें आद माता, यों लरें तानों तान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -10

- कोई कहे सदा सिव मोटो, कोई कहे आद नारायण । कोई कहे आद सकत मोटी, एम करे ताणोंताण || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -11
- कोई कहे सुंन मोटी, कोई कहे निरंजन । सार अर्थ सूझे नहीं, पछे वादे वढे वचन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -14
- कोई कहे सुन्य बड़ी, कोई कहे निरंजन । कोई कहे निरगुन बड़ा, यों लरें वेद वचन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -13
- कोई कहे सुन्य बड़ी, कोई कहे निरंजन । कोई कहे निरगुन बड़ा, यों लरें वेद वचन || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -15
- कोई कहे स्वांत बड़ी, कोई कहे तामस । कोई कहे पन बड़ा, यों खेलें परे परवस || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -11
- कोई कहे स्वांत बड़ी, कोई कहे तामस । कोई कहेवे पन बड़ा, यों खेलें परे परबस || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -9
- कोई कहे स्वांत मोटी, कोई कहे मोटो पण । रमे सहुए निद्रा माहे, रूदे अंधारू अति घण || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -8
- कोई काम न और रूहों को, एक जानें हक इस्क । आठों जाम चौसठ घड़ी, बिना प्रेम नहीं रंचक || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -53
- कोई कायम जरा दूजा कहे, सो मसरक और काफर । एक जरा कोई कहूं नहीं, वाहेदत हक बिगर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -16
- कोई किरपी कोई दाता, कोई जाचक केहेवाए । कोईना अवगुण बोले, कोईना गुण गाए || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -28
- कोई किरपी कोई दाता, कोई मंगन केहेलाए । किसी के अवगुन बोले, किसी के गुन गाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -20
- कोई किरपी कोई दाता, कोई मंगन केहेलाए । किसी के अवगुन बोलें, किसी के गुन गाए || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -22
- कोई केहेवे करम बड़ा, कोई केहेवे काल । कोई कहे साधन बड़ा, यों लरें सब पंपाल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -2
- कोई केहेसी ए कछुए नहीं, और ए तो हैं जीवते । ए जवाब है तिनको, देखो पटंतर ए || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -14
- कोई केहेसी ए फल गया गुमाने, पर सो दोजख जले गुमान । फल एता बड़ा बंदगी का, खोवे नहीं मेहेरबान || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -22
- कोई केहेसी खेल कदीम का, सो अब आइयां क्यों कर । ए माएने गुझ वतन के, सो भी सब देऊ खबर || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -56
- कोई केहेसी रसूलें ना खोले, बिना हुकम माएने कुरान । सो तो आप नबी खुद हुकम, याकी हम रूहों में पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -59

- कोई कोई अपनी चातुरी, ले बैंच करें मूढ़ मत । अकल ना दौड़ी अंतर लों, बैंचें ले डारे गफलत || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -32
- कोई कोई कयामत को मानें, कोई कोई सामे मारें तानें । एक गिरो मिने नबुवत, कहे छुड़ावेंगे वे कयामत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -5
- कोई कोई पीछे रेहे गई, तिनकी सुरत रही हम मांहें । ढील करी ज्यों स्वांतसियों, आए अंग पोहोंचे नाहे || ग्रं - किरन्तन, प्र -92, चौ -15
- कोई कोने पूछे नहीं, छे कोई बीजो सेर । साध पुकारे पाधरा, पण आ अजाणो अंधेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -10
- कोई खट दरसनी कहावे, धरे ते जुजवा बेख । पारब्रहमने पामे नहीं, रूदे अंधेरी वसेख || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -3, चौ -10
- कोई खाली न गया इन खिलवतें, कछू लिया हक का भेद । सो कहूं जाए ना सके, पड्या इस्क के कैद || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -92
- कोई चढी चकडोल बसे, तुरी गज पाएदल । विध विधना बाजंत्र बाजे, जाणे राज नेहेचल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -29
- कोई छोड़े ना अपनी असल, पोहोंचे सिफली का मलकूत । जबरूती जबरूत में, रूहें लाहूती लाहूत || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -49
- कोई जालिम जीव जनम का, खराकी गोस्त सराब । तिनको लेवें दीन में, कहें हमें होत सवाब || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -14
- कोई जाहेर ना ले सके, तो गझ होसी किन पर । हम जो लिए जाहेर, नेक ए भी सुनो खबर || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -54
- कोई जीते कोई हारे, काहू हरख काहू सोक । जो तरफ सारी जीत आवे, ताए कहें पृथीपत लोक || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -27
- कोई जीते कोई हारे, काहू हरख काहू सोक । जो तरफ सारी जीत आवे, ताए कहें पृथीपत लोक || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -29
- कोई जीते कोई हारे, हरख सोक न माय । दिसा सर्वे जीती आवे, ते प्रथीपत केहेवाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -31
- कोई जो कदर जाने मेरी, अंग अंदर आनूं वतन । अनेक विध सेवा उपजाऊं, धनी न्यारे न होवे खिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -89
- कोई जो केलवी जाणे अमने, तो फल लई दऊं तत्काल । सेवानी सनंधो ते देखाडूं, जेणे धणी न थाय अलगा कोई काल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -89
- कोई तरफ न जाने अर्स की, तो मुझे जाने क्यों कर । नूरजलाल नूर मकाने, एक इने मेरे तरफ की खबर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -7
- कोई तलबें तांत चढ़ावहीं, भले पाई ए बेर । कोई नीचा सिर कर रही, कोई चढ़ियां सिर मेर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -9

SPJIN

- कोई तोके वैण विगो चोए, त से आंऊ सहां कीं। मूं साहेदयूं सभ तोहिज्यूं, गिड़यूं मूर मुराई || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -20
- कोई दम न उठे हुकम बिना, कोई हले ना हुकम बिना पात । तहां मुतलक हुकम क्यों नहीं, जहां बरनन होत हक जात || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -62
- कोई दिन राखत हों गुझ, सो भी सैयों के सुख काज । जब सैयां सबे मिलीं, तब रहे ना पकस्यो अवाज || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -13
- कोई दिन राह देखी साथ की, पीछे नजर फिराए । पोहोंचे दिन आए आखिर, अब हम रहयो न जाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -88, चौ -3
- कोई दिन हम छिपे रहे, सो भी मोमिनों के सुख काज । जो होवें नेक जाहेर, तो रहे न पकरयो अवाज || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -45
- कोई दूजा मरद न कहावहीं, एक मेंहेंदी पाक पूरन । खेलसी रास मिल जागनी, छत्तीस हजार सैयन || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -16
- कोई दूर बसत हैं, सो दूर दूर से दूर । सो भी जान कदमों तले, इन मन बल ऐसा जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -38
- कोई देत कसाला तुमको, तुम भला चाहियो तिन । सरत धाम की न छोड़ियो, सुरत पीछे फिराओ जिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -86, चौ -16
- कोई दोष मां देजो रे वेदने, ए तो बोले छे सत । विश्व पडी भोम अगनान महें, ए भोम फेरवे छे मत || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -97
- कोई न छोड़या घर आरब, बीच फितना हुआ सबमें । कह्या हदीसों सोई हुआ, सबुर न किया किनने || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -21
- कोई न छोड़्या दज्जालें, जीत लिए सकल । ऐसे अंधे कर लिए, कोई सके न काहूं चल || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -17
- कोई न जाने राह न जाने दिन, इन समें हादिएँ किए चेतन । उस दिन बदला होवे अति जोर, हाथों सीधे साहेब करे मरोर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -23, चौ -5
- कोई न निमूना पाइए, या इस्क या बल । एह खिलौने तिनके, जो खावंद अर्स असल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -43
- कोई न पोहोंतो इहां लगे, एहनो बोली मारे प्रताप जी । आ पांचो एहनी छाया पड़ी छे, ए सुन्य मंडल विस्तार जी || ग्रं - किरन्तन, प्र -69, चौ -8
- कोई नहीं इस्क की जोड़, ना कोई बांधे इस्क सों होड़ । इस्क सुध कोई न जाने, दुनी ख्वाब की कहा बखाने || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -27
- कोई ना उलंघे काल को, निराकार हवा ला सुंन । याको कोई ना उलंघ सके, ए ग्रासे सब उतपन || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -35
- कोई ना चीन्हे आप को, ना चीन्हें अपनो घर । जिमी पैंडा ना सूझे काहूं, जात चले इन पर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -30

SPJIN

- कोई ना चीन्हें आप को, ना सुध अपनो घर । जिमी न पैंडा सूझे काहू, जात चले या पर || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -34
- कोई ना निकस्या इन माया से, अब्बल सेती आज दिन । सो धनिएँ बल ऐसो दियो, हम तारे चौदे भवन || ग्रं - किरन्तन, प्र -81, चौ -2
- कोई ना परखे छल को, जिन छल में है आप । तो न्यारा खसम जो छल थे, सो क्यों पाइए साख्यात || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -33
- कोई ना परखे छल को, जिन छलमें हैं आप । तो न्यारा खसम जो छल थे, सो क्यों पाइए साख्यात || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -32
- कोई नाहीं इनका निमूना, पोहोंचे अति सोभित । टांकन चूंटी काड़े एड़ियां, पांउं तली अति झलकत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -100
- कोई निगाह रखे निमाज करे, हमेसां कबहूं ना फिरे । रखे अदब बंदगी सरत, फुरमाया अदा सोई करत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -33
- कोई पडे पगथी विना, तेहेने बीजी ते झालवा जाय । पडे ते बंने मोहों भरे, ए हांसी एमज थाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -11, चौ -8
- कोई पहाड़ गिरदवाए का, कोई बराबर खूटों चार । जो सोभा पहाड़न की, सो न आवे माहे सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -24, चौ -7
- कोई पांच बिने की दस करो, पालो अरकान लग आखिर । पर अर्स बका हक का, दिल होए न मोमिन बिगर || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -30
- कोई पोंढ़े पलंग हेम के, कोई ऊपर ढोले वाए। बात करते जी जी करे, ए खेल यों सोभाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -22
- कोई पौढे पलंग कनक ने, कोई ऊपर ढोले वाय । वातो करतां जी जी करे, ए रामत एम सोभाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -20
- कोई बड़ाई ले बैठियां, सो गैयां आपको भूल । उठियां अंग पछताए के, होए सूरत बेसूल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -7
- कोई बढ़ाओ कोई मुड़ाओ, कोई बैंच काढ़ो केस । जोलों आतम न ओलखी, कहा होए धरे बहु भेस || ग्रं - किरन्तन, प्र -14, चौ -2
- कोई बात खुदा से न होवहीं, ऐसे न कहियो कोए । पर एक बात ऐसी बका मिने, जो हक से भी न होए || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -32
- कोई बांध सीढ़ी आवे सामी, करे पोक पुकार । विरह वेदना अंग न माए, पीटे माहें बाजार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -16
- कोई बांध सीढ़ी आवे सामी, करे पोक पुकार । विरह वेदना अंग न माए, पीटे माहें बाजार || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -18
- कोई बुरा न चाहे आप को, पर तिन से दूसरी न होए । बीज बराबर बिरिख है, फल भी अपना सोए || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -109

- कोई बूझे ना इसलाम को, ना लगें नबी के बान । ना सुध सल्ली ना बंदगी, कहें हम मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -25
- कोई बेसक दुनी में ना हता, गई दुनियां एती उमर । सो दृढ़ कर दई हक सूरत, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -45
- कोई बेसे पालखी, कोई उपाडी उजाय । कोई करे छत्र छाया, रामत एमज थाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -21
- कोई बैकुंठ कोई जमपुरी, कोई स्वर्ग पाताल । खेलें सब ख्वाबी पुतले, रूह आड़ी गफलत पाल || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -32
- कोई बैकुंठ कोई जमपुरी, कोई स्वर्ग पाताल । सब खेलें ख्वाबी पुतले, आड़ी मोह सागर पाल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -30
- कोई बैठे तखतरवा, आगे तुरी गज पाएदल । अति बड़े बाजंत्र बाजहीं, जाने राज नेहेचल || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -26
- कोई बैठे तखतरवा, आगे तुरी गज पाएदल । अति बड़े बाजंत्र बाजे, जाने राज नेहेचल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -24
- कोई बैठे सुखपाल में, कोई दौड़े उचाए । जलेब आगे जोर चले, ए खेल यों खेलाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -23
- कोई भत्या लई भाकसी, उथमे बंध बंधाय । मार माथे पडे मोहोकम, रामत एणी अदाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -32
- कोई भांत तरह जो अर्स की, पेट पांसे उर अंग सब । हाथ पांउं कंठ मुख की, किन बिध कहूं ए छब || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -110
- कोई भूली राह बतावहीं, ताए बड़ा सवाब । ढिंढोरा फिराइया, कर कर एह जवाब || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -44
- कोई भैरव कोई अगिन, कोई करवत ले । पारब्रह्मने पामे नहीं, जो तिल तिल कापे देह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -20
- कोई मांहें जनम पामे, कोई पामे मरन । कोई मांहे हरख सों, कोई सोक रूदन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -26
- कोई माहें फकीर फरतां, उदम नहीं उपाय । उदर कारण कष्ट पामे, भीखे पेट न भराय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -35
- कोई मांहें रोगिया, अने कोई मांहें अंध । कोई लूला कोई पांगला, रामत एह सनंध || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -34
- कोई मांहें वेहेवारिया, कोई राणा राय । कोई मांहें रांकर रोवंतां, ए रामत एम रमाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -19
- कोई मिने बेहेवारिए, कोई राने राज । कोई मिने रांक रलझले, रोते फिरें अकाज || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -21

SPJIN

- कोई मिने वेहेवारिए, कोई राने राज । कई मिने रांक रलझलें, रोते फिरें अकाज || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -23
- कोई मिने होए कायर, छोड़ लज्या भाग जाए। कोई मारे कोई पकड़े, कोई गए आप बचाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -26
- कोई मिने होए कायर, छोड़ सरम भाग जाए । कोई मारे कोई पकरे, कोई जावे आप बचाए || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -28
- कोई मोमिन केहेसी ए क्यों कहया, हक मुख सोभा सागर । सुच्छम सरूप अति कोमल, ललित किसोर सुन्दर || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -24
- कोई वचन करड़े कहे, किन खण्डनी न खमाए । सो कलपे दोऊ कलकले, वाको अमल यों ले जाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -12
- कोई वेख जो साध कहावे, कोई चतुर सुजाण । कोई वेख जो दुष्ट कहावे, कोई मूरख अजाण || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -3, चौ -2
- कोई वेद पाँचों मुख पढ़ो, कई त्रैगुन जात पढ़त । पर ए चरन न आवें ब्रहमसृष्ट बिना, जाकी ब्रहम सों निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -33
- कोई वेद विचार न करे, भाई सह को स्वादे लाग्युं । अनल एणी पेरे चाले ते माटे, साचूं ते सर्वे भाग्युं || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -92
- कोई वैकुंठ कोई जमपुरी, कोई स्वर्ग पाताल । रमे पांचेना मांहें पुतला, बीजा सागर आडी पाल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -29
- कोई वोहोरे सत वस्त ने, रास जवेर खरचाय । अखंड धन तेने अनंत आव्यूं, ते चौद भवन धणी थाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -18
- कोई सखी रे एणे समे निसरतां, एक पग भांणां रे मांहें । बीजो पग पति ना रूदे पर, एणी द्रष्टे न आव्यूं रे कोई क्यांहें || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -12
- कोई सखी रे काम करे घर मधे, आडो ऊभो ससरो पति जेह । वेण सुणी ने पाटू दई निसरी, एणी द्रष्टमां सरूप सनेह || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -9
- कोई सखी रे वात करे पतिसं, ऊभी धवरावे रे बाल । एणे समे वेण थई वल्लभनी, पडी गयो बाल तेणे ताल || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -10
- कोई सखी रे वेगे वछूटतां, पड्यो हडफटे ससरो त्यांहें । आकार बहे रे घणवे उतावला, चित जई बेलूं वालाजी मांहें || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -13
- कोई सखी रे सिणगार करतां, सुणी तेणे वेण श्रवण । पायना भूखण काने पहेरिया, कान तणा रे चरण || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -19
- कोई सखी रे हुती गाय दोहती, दूध घोणियों रे हाथ माहें । एणे समे वेण थई वल्लभनी, पडी गयो घोणियो रे तेणे ताए || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -8
- कोई सखी रे हुती नवरावती, हाथ लोटो नामे छे जल । सुणी स्वर पड्यो लोटो अंग ऊपर, न बोलानूं चितडे व्याकुल || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -16

- कोई सखी रे हुती प्रीसणे, हाथ थाली प्रीसे छे धान । एणे समे वेण थई वल्लभनी, पडी गई थाली ते तान || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -11
- कोई सत वोहोरे कोई असत वोहोरे, कोई बंधाय बंध । वेपार एणी पेरे करे वेहेवारिया, ए चौटो एणी सनंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -15
- कोई सिर ल्यो तो लीजियो, धनिएँ केहेलाए साथ कारन । न तो मेरे सिर जरूर है, एही सब्द बल वतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -86, चौ -5
- कोई सीढी बांधी आवे सामा, करे ते पोक पुकार । विरह वेदना अंग न माय, पीटे मांहें बाजार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -24
- कोई सीधा सब्द जो केहेवहीं, तो तोरा देखावें ताए । जो गरीब सामें बोलहीं, तो तिनको सूली चढ़ाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -41
- कोई सुध न पावे याकी, ऐसी माया सपरानी । आपे प्रभु आपे सेवक, मांझे मांझ उरझानी || ग्रं - किरन्तन, प्र -10, चौ -6
- कोई सोए रहियां आतन में, उठियां तब उदमाद । दुख पाया तब दिल में, जब सूत आया याद || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -11
- कोई हिंदू जो बैकुंठ जावहीं, सो भी खेल के मांहें । ए फना आखिर कहावहीं, पर कायम भिस्त तो नांहें || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -28
- कोई हेम गले अगनी जले, कोई भैख करवत ले। खसम को पावे नहीं, जो तिल तिल काटे देह || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -18
- कोई हेम गले अगनी जले, भैरव करवत ले। खसम को पावें नहीं, जो तिल तिल काटे देह || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -20
- कोईक करे हजारगणां, केहेने ते मूलगां जाय । कोई बंधाई पड़े फंद मांहें, कोई कोटी धजा केहेवाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -17
- कोईक दिन साथ मोह के जल में, लेहेर बिना पछटाने । कहे महामती प्यारी मोहे वासना, ना सहूं मुख करमाने || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -28
- कोईक पूरा ईमान ल्याइया, बिन ईमान रहे बोहोतक । कई जुबां ईमान दिल में नहीं, सो तो कहे मुनाफक || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -17
- कोट इंड की दुनीय का, कूवत बल हिकमत । अपार अर्स के जानवर, क्यों कहूं बल बुध इत || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -58
- कोट इंड पैदा फना, करे नूर की कुदरत । ए बल नूर जलाल का, पाव पल की इसारत || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -65
- कोट इंड पैदा फना, होवें नूर के एक पल । ऐसी नूर जलाल की, कुदरत रखे बल || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -77
- कोट उपाय करे जो कोई, तो सूझे नहीं सनंध । कोहेडा तणी आंकडी न लाधे, तो छूटे नहीं बंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -11

- कोट करो नरमेध, अश्वमेध अनंत । अनेक धरम धरा विखे, तीरथ वास वसंत || ग्रं - किरन्तन, प्र -127, चौ -2
- कोट करो बंदगी, बाहेर हो निरमल । तोलों ना पिउ पाइए, जोलों ना साधे दिल || ग्रं - किरन्तन, प्र -132, चौ -2
- कोट थाय मींडूं मूके सातमू, दस कोट करूं वली मूकी आठ । नव मूकीने करूं अबज, गुण गणती जाऊं करती कवज || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -13
- कोट नासूत की दुनियां, मलकूत को पूजत । खुदा याही को जानहीं, ए मलकूत साहेबी इत || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -68
- कोट बेर जाहेर सबों, रसूले फरमाया जेह । सो कलमा सिर लेए के, पाँउ भरे हम एह || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -3
- कोट ब्रह्मांड का केहेना क्या, जिमी झूठी पानी आग वाए। ए चौदे तबक जो मुरदे, नुकते इलमें दिए जिवाए || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -48
- कोट ब्रह्मांड जो हो गए, तित काहं ना सुनी । खोज खोज खोजी थके, चौदे लोक के धनी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -5
- कोट ब्रह्मांड नूर के पल थे, यों कहे सास्त्र त्रिगुन । सो अछर किने न दृढ़ किया, न दृढ़ किया इनों वतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -97, चौ -5
- कोट ब्रह्मांड पर के वाउ से, अर्स चिड़िया देवे उड़ाए । तो इन अर्स के फील को, बल देखो चित्त ल्याए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -73
- कोट मलकूत के खावंद, ला के तले बसत । नूर सिफत कर कर गए, पर आगे ना पोहोंचत || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -69
- कोट मलकूत नासूत, एक पल में करें पैदाए । सो नूर नजर देख के, एक खिन में दें उड़ाए || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -63
- कोट सेवक करो नाम निकालो, इष्ट चलाओ बड़ाई । सेवा कराओ सतगुर केहेलाओ, पर अलख न देवे लखाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -5, चौ -5
- कोट हिस्से एक लुगे के, हिसाब किया मिहीं कर । एक हिस्सा न पोहोंच्या रास लों, ए में देख्या फेर फेर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -42
- कोट हिस्से एक हरफ के, हिसाब किया मिहीं कर । एक हिस्सा न पोहोंच्या इन जिमी लग, ए मैं देख्या दिल धर || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -17
- कोट होवे मींडा धरते सातमां, दस कोट करूं मींडा धरके आठमां । नवमां धरके करूं अबज, गुन गिनती जाऊं करती कबज || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -14
- कोटक कचेहेरी बनी, फिरतियां गिरदवाए। ए सुन्दरता इन जुबां, मोपे कही न जाए । || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -20
- कोटान कोट करो प्रकार, तो एता तुम जानो निरधार । मेरी जुबां न वले एह वचन, एह दृढ़ करो जीवके मन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -33

- कोटान कोट जाणे सूरज उदया, ब्रह्मांड न माय झलकार । प्रघल पूर जाणे सायर उलट्यो, एक रस थई सर्वे नार || ग्रं - रास, प्र -7, चौ -3
- कोटान कोट बेर इन मुख पर, निरख निरख बलि जाऊँ। ए सुख कहूं मैं तिन आगे, अपनी रूह अर्स की पाऊँ || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -116
- कोटान कोट ले जुबां, जानों बरनन करूं एक द्वार । ए बरनन तो होवहीं, जो आवे माहें सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -127
- कोड करे तूं केड बांधीने, थी पिरिए जे पास । सिपरी तूं सुजाण पांहिंजा, छड वेओ मंडे साथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -16, चौ -5
- कोण तमसूं जुध करे, बीजो ऊभो सामो कीहो चोर । आप बंधाणां आप सूं, माहेली गमा तिमर घोर || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -41
- कोण फेरो करे वली, अखंड धंन आवे अपार । साहुकारी तमे करोने नेहेचल, तो निध पामो निरधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -20
- कोणियां रमिए रे मारा वाला, गाइए वचन सनेह । मनसा वाचा करी करमना, सीखो तमने सीखq एह || ग्रं - रास, प्र -24, चौ -1
- कोणी आगल कांकणी, जांबू रंग नंग जडाव । कुन्दन ना करकरियां सोभे, जोत करे अपार || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -48
- कोणे हँसिए कोणे वखाणिए, ए रामत थई अति रंग रे । एणी विधे दीधां अमे ठेक, मारा वालाजीने संग रे || ग्रं - रास, प्र -28, चौ -7
- कोनी कलाई अंगुरी, पेट पांसे उर खभे । हाथ पांउं पीठ मुख छब, हक नूर के अंग सबे || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -111
- कोनी काड़े कलाइयां, रंग नरमाई सलूक । ऐसा सखत मेरा जीवरा, और होवे तो होए टूक टूक || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -64
- कोमल अंग कंठ हैड़ा, खभे मछे गौर लाल । कोनी कांड़े कोमल देखत, आसिक बदलत हाल || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -48
- कोमल कर एक जुई रे जुगतना, जो वली जोइए रंग । झलकत नख अंगूठा आंगलियो, पोहोंचा कलाई पतंग || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -23
- कोमल कांडे कडली सोभे, नीली जडित अति सार । कडली पासे पोहोंची घणी ऊंची, करे ते अति झलकार || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -26
- कोमल कोणी चंदन अंग चरचित, मणि जडित बाजूबंध । कंचन कसवी फुमक बेहू लटके, सूं कहूं सोभा सनंध || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -28
- कोमल चित करी वचन रूदे धरी, जो जो ते सर्व संभारी जी । खरा जीवने वचन कहया छे, माया जीवने थासे ए भारी जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -45
- कोमलता चरन अंगुरी, और चरन तली कोमल । ए दिल रोसन देख के, हाए हाए खाक न होत जल बल || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -67

- कोयलडी टहंकार करे रे, सुडलाई करे रे कलोल । एणी रूते हूं एकलडी, रोई नेणा करूं रंग चोल || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -5
- कोरे वेल जडाव जुगतनी, मध्य जडावना फूल । जडाव झलहल जोर करे, चीर कानियांनी कोरे मस्तूल || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -14
- कोली कालंगी ने कारेली, तंबडी ने तडबूची । कोठवडी ने चनकचीभडी, टिंडुरी ने खडबूची || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -19
- कोहेड़े दोऊ दो भांत के, एक वैराट दूजा वेद । जीव जालों जाली बंधे, कोई जाने न याको भेद || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -7
- कोहेड़े दोऊ दो भांत के, एक वैराट दूजा वेद । जीव जालों जाली बांधे, कोई जाने न छल भेद || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -4
- कोहेडो काली रातनो, एमां पग न काढे कोए। अनेक करे अटकलो, पण बंध न छूटे तोहे || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -31
- कौन आप और कौन पर, कौन सकल जहान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -26
- कौन आप कौन और है, ऐसा छल किया खसम । सुध न खसम रसूल की, नहीं गिरो की गम || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -3
- कौन किया था वतन, जामें कबूं मिटी ना सक । कौन फना सोहोबत में, कहावते थे बुजरक || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -88
- कौन गिरो जो अंदर लई, और कौन काफर हुए सही। वाही सूरत में कही पुलसरात, कौन गिरो चली बिजली की न्यात || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -26
- कौन जंगल गुमराह में हुते, कैसा पाया अर्स बाग । नींद उड़ाओ विचार के, क्यों ना देखो उठ जाग || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -93
- कौन जिमी में तूं खड़ी, कहां है तेरा वतन । कौन खसम तेरी रूह का, कौन असल तेरा तन || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -2
- कौन तरफ वजूद है, कौन तरफ है कौल । हाल कौन तरफ का, कौन तरफ है फैल || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -59
- कौन तुम और कहां तें आए, और कहां तुमारा घर । ए कौन भोम और कहां श्री कृष्णजी, पाओगे कौन तर || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -5
- कौन दीन क्यों चलना, और क्यों रेहेनी फरमान । क्यों अंतर मांहें बाहेर, कहें हम मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -26
- कौन बदबोए में हुते, अब आई कौन खुसबोए । सहूर अपने दिल में, तौल देखो ए दोए || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -95
- कौन बन कौन सखियां कौन हम, यों चौंक के फिरी आतम । रास आया मिने जाग्रत बुध, चुभ रही हिरदे में सुध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -36

- कौन बल होसी इन का, देखो दिल विचार । जिनका सकारे साहेब, पल पल सींचनहार || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -72
- कौन मिलावा तेरा असल, तूं बिछुरी क्यों कर । तो तोहे याद न आवहीं, जो तै सुन्या नहीं दिल धर || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -3
- कौन मैं कहां को कहां थें बिछ्यो , कौन भोम ए छल । गुर सिष्य ग्यान कथें पंथ पैंडे, पर एती न काहू अकल || ग्रं - किरन्तन, प्र -20, चौ -4
- कौन रूहें कौन फरिस्ते, कौन आदम कौन जिन । पढ़ पढ़ वेद कतेब को, पर हुआ न दिल रोसन || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -4
- कौन ल्याया कुंजीय को, है कंजी में क्या विचार । किन ने ताला खोलिया, खोल्या कौन सा द्वार || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -17
- कौन विध कहूं मैं तुझको, क्करमी करम चंडाल रे । तोहे अंग न उठी अगिन, तो तूं क्यों न झंपाया झाल रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -32
- कौन वैरी कौन सजन, क्यों कर सब समान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -21
- कौन सख्य बसे किन ठाम, कैसी सोभा कहो कहा नाम । ए लीला सुनो श्रवन, फेर फेर के लागों चरन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -23
- कौन सब पैगंमर हुए, क्यों कर निसान आखिर । कहां से उतरे रूहें मोमिन, कहां से आए काफर || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -16
- कौन सरूप है आतमा, परआतम कह्या क्यों भिन । सुध ठौर ना सरूप की, ए संसे भान्यो न किन || ग्रं - किरन्तन, प्र -21, चौ -9
- कौन है तेरा मासूक, किनसों है निसबत । देख अपना वतन, अब तूं आई कित || ग्रं - किरन्तन, प्र -111, चौ -13
- कौल अलस्तो-बे-रब का, किया रूहों सों जब । हक इलम ले देखिए, सोई साइत है अब || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -2
- कौल अलस्तो-बे-रब का, किया रूहों सों जब । हक इलम से देखिए, सोई साइत है अब || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -21
- कौल कहे सो सब हुए, और भी कह्या होत । रूहअल्ला ल्याए इलम, भरे जिमी आसमान जोत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -23
- कौल किए रूहों सों, उतरते हक । सो सिर लिए अपने, मजाजी खलक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -38
- कौल किए हक हादीने, मांहें खिलवत रूहन । सो दिल महमद मोमिनों, हुआ पूर रोसन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -30
- कौल किया हकें इनसों, बीच खिलवत रूहों मजकूर । दिया इलम लदुन्नी इनको, ए बीच दरगाह बिलंदी नूर || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -13

- कौल किया हके मुझ से, हम आवेंगे आखिर । ज्यों आवे ईमान उमत को, तुम जाए देओ खबर || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -13
- कौल किया हके मुझसे, हम आवेंगे आखिरत । हिसाब ले भिस्त देयसी, आखिर करसी कयामत || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -8
- कौल किया हकें रूहों सों, बीच बका वतन । सो साइत आए मिली, जाहेर हुआ अर्स तन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -70
- कौल केतेक आए मिले, और केतेक हैं मिलने । भूल परे ना किसी कौल की, रसूलें कह्या तिनमें || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -101
- कौल तोड़ जुदे किए कुफरें, मेटे मसी तफरका । एक दीन तब होएसी, दिन ऊगे अर्स बका || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -68
- कौल तोड़ जुदे हुए, तो नारी कहे बहत्तर । लिख्या जलसी आगमें, और कहा कहे इन ऊपर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -19
- कौल फैल आए हाल आइया, तब मौत आई तोहे । तब रूह की नासिका को, आवेगी खुसबोए || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -67
- कौल फैल जुदे हुए, हुआ फरामोसी हाल । अब पड़े याही सक में, इन जुदागी के ख्याल || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -65
- कौल फैल हाल बदले, पर ना छूटे रूह इस्क । रूह इस्क दोऊ बका, इनमें नाहीं सक || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -33
- कौल फैलजी वही वेई, हांणे आई मथे हाल । हांणे कुछण मुकाबिल, हित हल्ले न अगरी गाल || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -57
- कौल सोई तोड़ेंगें, जिनों होसी मजाजी दिल । होसी जुदे बुजरकी वास्ते, कह्या फिरसी फिरके मिल मिल || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -76
- कौल हमारे नूर पार के, सो क्यों समझें जुलमत के । कुंन केहेते पैदा हुए, ला मकान के जे || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -27
- कौल हाल मोमिन के नूर में, रूहअल्ला आया इनों पर । दिया इलम लदुन्नी इन को, खोलने मुसाफ खातिर || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -131
- क्या करे अधबीच में लिया, अखंड सुख पूरा केहेने ना दिया । दोष नहीं राजा को इत, ब्रह्मसृष्टी बिना न पोहोंचे तित || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -23
- क्या कहूं भेजोगे हमको, के इतथें करोगे दूर। के इतहीं बैठे देखाओगे, हमको अपने हजूर || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -8
- क्या कहूं सब्द तुमें पोहोंचे नांहें, मेरी जुबां भई माया अंग माहें । तुम सब्दातीत भए मेरे पिउ, मेरी देह खड़ी माया ले जिउ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -11
- क्या खाना क्या पीवना, क्या जो सुनना कान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -18

- क्या गरीब क्या पातसाह, क्या नजीक क्या दूर । निकस आया सबन का, तीन बिध का अंकूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -21
- क्या जाने हद के जीवड़े, बेहद की बातें । रास में खेले अखंड, इत उठे प्रभातें || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -50
- क्या दानव क्या देवता, क्या तिर्थंकर अवतार । ब्रह्मा विष्णु महेस लों, सो भी पैदा माया मोह अहंकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -30, चौ -4
- क्या बल केहेसी कायर माया को, जो गए सागर में रल । सामें पूर जो चढ़या होसी, सो केहेसी तिखाई मोह जल || ग्रं - किरन्तन, प्र -77, चौ -13
- क्या रोई क्या रोऊंगी, उठी आग इस्क । थिर चर सारा जलिया, जाए झालां पोहोंची हक || ग्रं - किरन्तन, प्र -75, चौ -4
- क्या लेना क्या छोड़ना, क्या इलम क्या ग्यान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -19
- क्या वस्तर क्या भूखन, असल अंग के नूर । हाए हाए रूह मेरी क्यों रही, करते एह मजकूर || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -27
- क्या वस्तर क्या भूखन, चीज सबे सुखकार । खुसबोए रोसन नरमाई, इन बिध अर्स सिनगार || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -43
- क्या समझें लोक अंदर की बात, देखलावने लखमीजी को आए साख्यात । उठ बैठे श्री कृष्णजी पूरन किया काम, यो लखमीजी की भानी हाम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -57
- क्या हक क्या हराम, क्या नफा नुकसान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -22
- क्या हिंदू क्या मुसलमान, सब एक ठौर ल्यावं ईमान । सो क्या होसी उठे कुरान, ए विचार देखो दिल आन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -6
- क्या है इन दरबार में, दई कहां की सुध । सुध बका सारी नीके लेओ, विचारो आतम बुध || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -18
- क्यों अर्स आगू जोए है, क्यों अर्स ढ़िग है ताल । क्यों पसु पंखी अर्स के, क्यों बाग लाल गुलाल || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -23
- क्यों असराफील आवसी, क्यों बजावसी सूर । क्यों कर पहाड़ उड़सी, तब कौन नजीक कौन दूर || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -18
- क्यों आदम क्यों पैगंमर, क्यों फिरस्ते पेहेचान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -29
- क्यों आवन क्यों गवन, क्यों कर विरहा मिलान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -23

- क्यों इस्क क्यों बंदगी, क्यों गफलत गलतान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -11
- क्यों उजू निमाज क्यों, क्यों कर बांग बयान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -13
- क्यों ए इंड खड़ा किया, क्यों करी सरत फना निदान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -36
- क्यों ए न आवे पढ़ों ईमान, करें न दिल सहूर । तो छीन ले भेजी वारसी, आप मोमिनों हाथ हक नूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -37
- क्यों ए न प्रबोधे समझें, कोई आद अमल ऐसा घेन । क्या मूरख क्या समझू, सबे लगे दुख देन || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -8
- क्यों ऐसी हम से होएगी, क्या हम जूदे होसी माहें खेल । ऐसी अकल क्यों होएसी, ए कैसी है कदर-लैल || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -30
- क्यों कर आवे झूठ पर, जो अर्स बका का होए। ए गुझ माएने मोमिन बिना, क्यों लेवे हवा दम सोए || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -38
- क्यों कर आवे बराबरी, खावंद और खेलौने । ए मुहकक क्या विचारहीं, जाहेर तफावत इनमें || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -37
- क्यों कर कहूँ ए साहेबी, ए जो रूहे करत अर्स माहें । हके कई देखाए ब्रह्मांड, पर कोई पाइए न निमुना क्यांहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -80
- क्यों कर कहूं मैं पौरियां, और क्यों कर कहूं झरोखे । देख देख मैं देखिया, न आवे गिनती में ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -24
- क्यों कर कहूं मैं हेत की, जो धनिएँ किए भांत भांत । जगाई धाम देखावने, कई विध करी एकांत || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -17
- क्यों कर मुरदे उठसी, क्यों होसी हक दीदार । क्यों कर हिसाब होएसी, ए सब रूह-अल्ला खोले द्वार || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -13
- क्यों कर लैलत कदर है, क्यों कर हौज कौसर । ए सुध किनको न परी, कौन किताबें क्यों कर || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -14
- क्यों कर हकीकत हौज की, क्यों घाट पाल गिरदवाए। किन विध टापू बीच में, ए सब सुध मोमिन देवें बताए || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -39
- क्यों करें जंग दज्जाल सें, काफर या मुसलमान । औलाद आदम सब ताबीन, पातसाह दिलों सैतान || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -31
- क्यों कसौटी अंग की, क्यों रोजे रमजान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -14
- क्यों कहिए सोभा हक की, ना कछू झूठ में आए हम || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -49

- क्यों कहूं अर्स जिमी की, क्यों कहूं हक सूरत । क्यों कहूं खासी रूह की, क्यों कहूं रूहें उमत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -92
- क्यों कहूं इन बानी की, मुख से उचरत जे । मीठी मीठी मुसकनी, सब भीगे इस्क के || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -39
- क्यों कहूं इन रूहन की, हक देखावें कई सुख । दई सुख बका लज्जत, ख्वाब देखाए के दुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -57
- क्यों कहूं इन रूहनकी, जासों धनी बोलत सनमुख । नही निमूना इनका, एही जानें ए सुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -34
- क्यों कहूं इन सुख की, क्यों कहूं इन विलास । क्यों कहूं इस्क आराम की, क्यों कहूं रमूजें हाँस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -93
- क्यों कहूं इन सुख की, जाको निरखत धनी नजर । प्याले आप धनीय को, सामी देत भर भर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -37
- क्यों कहूं इन सुख की, जो हकसों नैनों नैन मिलाए । फेर फेर प्याले लेत हैं, आगू इन धनी के आए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -38
- क्यों कहूं इन सुखकी, जाए हक लेत बोलाए । सनमुख बातें करके, अमीरस नैन पिलाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -33
- क्यों कहूं इन सुखकी, जाको देत धनी चित्त । सो धनी आगू आएके, सामी मीठी बान बोलत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -40
- क्यों कहूं इन सुखकी, जासों हक करत हैं हाँस । ए सोई रूहें जानहीं, जो लेत खुसाली खास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -32
- क्यों कहूं इन सुखकी, जासों हक करें इसारत । ए सोई रूहें जानहीं, सामी सैन से समझावत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -30
- क्यों कहूं इन सुखकी, जासों हक रमूज करत । ए सोई रूहें जानहीं, जिनका बासा इत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -29
- क्यों कहूं इन सुखकी, जिनका हक खावंद । आठों जाम रूहन पर, हक होत परसंद || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -53
- क्यों कहूं इन सुखकी, जो इन मेले में बसत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -22
- क्यों कहूं इन सुखकी, जो ख्वाब में गैयां भूल । याद देने सुख अर्स के, हमें भेज्या एह रसूल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -54
- क्यों कहूं इन सुखकी, जो दूर बैठत हैं जाए । तितथे धनी बोलाएके, ढिग बैठावत ताए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -39
- क्यों कहूँ इन सुखकी, जो धनी देत कर हेत । आराम इन इस्क का, सोई जाने जो लेत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -24

SPJIN

- क्यों कहूं इन सुखकी, जो प्यारी पिउ के दिल । सनमुख बातां करत हैं, इन खावंद सामिल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -35
- क्यों कहूं इन सुखकी, जो सदा सोहोबत हक जात । जो इस्क आराम में, सो क्यों कहूं इन मुख बात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -52
- क्यों कहूं इन सुखकी, जो हक देत दायम । ए सोई रूहें जानहीं, जो पिएं सराब कायम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -31
- क्यों कहूँ इन सुखकी, जो हक देत मुख बोल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -23
- क्यों कहूं इन सुखकी, धनी देवें इस्कसों । ए सोई रूहें जानही, हक देत हैं जिनकों || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -26
- क्यों कहूं इन सुखकी, हक देत कर प्रीत । जो ए प्याले लेत हैं, सोई जाने रस रीत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -27
- क्यों कहूं इन सुपेती की, उज्जल जोत अपार । दो सै हांसों चांदनी, नाहीं रोसन नूर सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -147
- क्यों कहूं किनार की कांगरी, मानिक मोती सात नंग । हीरे लसनिए पाने पोखरे, माहें पाच कुन्दन करें जंग || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -40
- क्यों कहूं खूबी चरन की, और खूबी भूखन । अदभुत सोभा हक की, क्यों न होए अर्स तन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -115
- क्यों कहूं गति चलन की, जो स्यामाजी पाउं भरत । नाहीं निमूना इनका, जो गति स्यामाजी चलत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -126
- क्यों कहूं गाल की सलूकी, क्यों कहूं गाल का रंग । अनेक गुन गालन में, ज्यों जोत किरन रंग तरंग || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -61
- क्यों कहूं गौर गालन की, सोभित अति सुन्दर । जो देखू नैना भरके, तो सुख उपजे रूह अन्दर || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -60
- क्यों कहूं चरन की बुजरकियां, इत नाहीं ठौर बोलन । ए पकड़ सरूप पूरा देत हैं, मेरे जीव के एही जीवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -17
- क्यों कहूं चरन के भूखन, अर्स जड़ सबे चेतन । सोभा सुन्दर सब दिल चाही, बोल बोए नरम रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -26
- क्यों कहूं जिमी अपार की, क्यों कर कहूं मोहोलात । क्यों कहूं जोए हौज की, क्यों कहूं नूर जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -91
- क्यों कहूं जुगत अंदर की, क्यों कहूं जुगत बाहेर । जित देखों तित लग रहों, जानों नजरों आवे जाहेर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -73
- क्यों कहूं जुगत जामें की, हरे पर उज्जल दावन । निपट सोभित मिहीं बेलियां, झांई उठत अति रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -39

- क्यों कहूं जोत नखन की, ए सबथें अति जोर । जानों तेज सागर अवकास में, सबको निकसे फोर || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -51
- क्यों कहूं ताके सुखकी, हक बातें करें दिल दे । ए रूहें प्याले जानहीं, जो हाथ धनीके लें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -36
- क्यों कहूं धाम अन्दर की, विस्तार बड़ो अतन्त । क्यों कहे जुबां झूठी देह की, अखण्ड पार के पार जो सत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -2
- क्यों कहूं नंग दुगद्गी, ए पांचों सैन्या चढ़मए । जंग करें माहे जुदे जुदे, पांचों अंबर में न समाए || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -79
- क्यों कहूं पसु पंखियन की, इनके इस्क को बल । एक जरे को न पोहोंचहीं, इन अंग की अकल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -11
- क्यों कहूं पीड़ीय की, सलूकी सुख जोर । ए सुख सब रगन को, और देत कलेजा तोर || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -42
- क्यों कहूं बल जबराईल, जिन सिर हैं महंमद । ए सिफत इन बल बुध की, क्यों कहे जुबां हद || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -54
- क्यों कहूं बल दज्जाल का, जाहेर बड़ा पलीत || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -4
- क्यों कहूं बल बाघन को, ए जो ख्वाब में ऐसे जोर । देह छोटी बड़ी कूवत, देत फीलों मद तोर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -34
- क्यों कहूं मुख की सलूकी, और क्यों कहूं सुन्दरता । ए आसिक जाने मासूक की, जिन घट लगे ए घा || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -4
- क्यों कहूं मोहोल अर्स के, क्यों कहूं जिमी बन । क्यों कहूं इन लसकर की, मिने पातसाहियां पूरन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -84
- क्यों कहूं रंग दुलीचे, फिरती दोरी चार । स्याम सेत हरी जरद, ए फिरती जोत किनार || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -95
- क्यों कहूं रंग रसना, मुख मीठा बोल बोलत । स्वाद लेत रस अर्स के, जुबां केहे ना सके सिफत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -142
- क्यों कहूं रेती इन भोम की, जानो उज्जल मोती सेत । ए सुख हमारे कहां गए, जो इन भोम में लेत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -9
- क्यों कहूं रोसनी चांद की, क्यों कहूं रोसनी हक । क्यों कहूं रोसनी समूह की, जुबां रही इत थक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -162
- क्यों कहूं वन की रोसनी, सीतल वाए खुसबोए । ए जुबां न केहे सके, जो सुख आतम होए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -27
- क्यों कहूं सागर चातुरी, कई सुख अलेखे उतपन । कई पैदा होत एक सागरें, नए नए सुख नौतन || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -75

SPJIN

- क्यों कहूं सुख इन रूहन के, जासों खेलें हँसें सनमुख । पार नहीं सोहागको, इन पर धनीको रूख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -47
- क्यों कहूं सुख इनका, जासों हक हाँसी करत । ए विध कहूं मैं कितनी, जो रूहों हक खेलावत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -56
- क्यों कहूं सुख नजीक का, जो इन हककी सोहोबत । ए सोई रूहें जानहीं, जो लेवें हर बखत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -28
- क्यों कहूं सुख नजीकियों, जाको देखें हक नजर । बातें इस्क पिउ अंगे, पिएं प्याले भर भर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -42
- क्यों कहूं सुख रूहन के, इन पिउसों रस रंग । आठों जाम आराम में, एक जरा नहीं दिल भंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -48
- क्यों कहूं सुख रूहन के, जिनका साकी ए। हक प्याले इस्क के, भर भर रूहों को दे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -51
- क्यों कहूं सुख रूहन के, जो आठों जाम दिन रात । प्रेम प्रीत सनेह की, भर भर प्याले पिलात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -50
- क्यों कहूं सुख रूहन के, जो आठों पोहोर पिउ पास । रात दिन सोहोबत में, करें हाँस विलास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -49
- क्यों कहूं सुख रूहन के, जो इन पिउ के आसिक । भर भर प्याले लेवहीं, फेर फेर देवें हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -45
- क्यों कहूं सुख रूहन के, जो लगे इन हकके कान । करें मजकूर मजाक सों, साथ इन सुभान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -46
- क्यों कहूं सुख रूहन के, जो लेवत आठों जाम । बिना हिसावे दिए आराम, हक का एही काम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -58
- क्यों कहूं सुख रूहन के, जो हक बड़ी रूह अंग नूर । आठों जाम इन पिउसों, हँस हँस करें मजकूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -44
- क्यों कहूं सुख रूहन के, फेर फेर देखें मुख पिउ । नैन बैन सुख देत हैं, चुभ रेहेत माहें जिउ || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -43
- क्यों कहूं सुख रूहन के, फेर फेर देखें हक नैन । खावंद नजीक बुलाए के, बोलत मीठे बैन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -41
- क्यों कहूँ सुख रूहन के, हक इन विध हांसी करत । आप देत भुलाएके, आपै जगावत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -7
- क्यों कहूं सुख रूहन के, हकें कौल से किए हुसियार । दिल नींद दे ऊपर जगावत, करने हाँसी अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -8
- क्यों कहूं सुख रूहन के, हमें यों कहया उतरते । जो केहेता हों तुमको, जिन भूलो खेल में ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -6

SPJIN

- क्यों कहूं सुख सनमुख का, जो पिलावें नैनों सों। ए सोई रूहें जानहीं, रस आवत हैं जिनकों || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -25
- क्यों कहूं सुख सबन के, सब अंगों के एक चित्त । अरस-परस सुख लेवहीं, अंग नए नए उपजत || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -30
- क्यों कहूं सुख हाँसीय का, वास्ते हाँसी किए फरामोस । फेर फेर उठावें हाँसीय को, वह टलत नहीं बेहोस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -66
- क्यों कहूं सुख हाँसीय को, जो ख्वाब में दैयां भुलाए । ऊपर फेर फेर याद देत है, पर फरामोसी क्योंए न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -55
- क्यों कहूं सोभा कुंदन, लटकत हैं एक जुगत । आहार देत हैं आसिकों, देख देख न होए तृपित || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -205
- क्यों कहूं सोभा बन की, और छाए रही फल बेल । तले खेलें सैयां सरूपसों, आवें एक दूजी कंठ मेल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -32
- क्यों कहूं हिसाब मन्दिरन को, दिवाला चौक थंभ कई लाख । अमोल अतोल अन गिनती, कछू कयो न जाए मुख भाख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -17
- क्यों कैद बेकैद क्यों, क्यों दोऊ दरम्यान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -35
- क्यों खासल खास उमत, बीच नूरतजल्ला जे । क्यों खास उमत दूसरी, जो कही बीच नूर के || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -24
- क्यों छूटे हक हैयड़ा, मोमिन के दिल से । अर्स मता जो मोमिन का, सब हक हैड़े में || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -32
- क्यों छूटोंगी ए गुन्हे हो नाथ, सांची कहूं मेरे धाम के साथ । तुम साथ मिने मोहे देत बड़ाई, पर मैं क्यों छूटोंगी बज्रलेपाई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -17
- क्यों डर क्यों बेडर, क्यों खूनी मेहेरबान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -17
- क्यों तसबी क्यों फेरनी, क्यों कर नाम लेहेलान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -16
- क्यों दिन जावें एकले, किन विध जावे रात । किन विध बसो तुम अर्स में, वह कहां गई मूल बात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -19, चौ -6
- क्यों दियो रे बिछोहा दुलहा, छूटी हक खिलवत । हम अरवाहे जो अर्स की, फेर कब देखें हक सूरत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -1
- क्यों दिल की बंदगी तरीकत, मलकूत या ला-मकान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -39
- क्यों दीजे निमूना इन का, जो कही हक की जात । निसबत इस्क इलम, ज्यों बिरिख फल फूल पात || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -29

- क्यों देऊं निमूना नख का, इन अंगों नख का नूर । देत न देखाई कछुए, जो होवे कोटक सूर || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -67
- क्यों देवें तुमको साहेबी, बीच जिमी फना मिने । तिन से तुमारी उमेदें, होएं न पूरन तिने || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -132
- क्यों धनी गुन गिनूं इन आकार, पर कछुक तो गिनना निरधार । इंद्रावती कहें मैं गुन गिनों, कछुक प्रकासूं आपोपनों || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -11
- क्यों न उड़ी अकल अंग थे, जो बरनन किया अर्स हक । ए पूरी हांसी बीच अर्स के, मांहें गिरो आसिक || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -154
- क्यों न खेलावें खिलवत में, रूह अपनी रात दिन । हक इलमें अजूं जागी नहीं, कहावें अर्स अरवा तन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -141
- क्यों न हो प्रेम इनको, जो पिउ की निरखें बंकी पाग । निस-दिन नजर न छूटहीं, पिउसों करें रंग राग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -68
- क्यों न होए खुसालियां, देख अपनी ठकुराए । और नाहीं कोई कहूं, ए मैं देख्या चित्त ल्याए । || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -96
- क्यों न होए प्रेम इनको, ऊपर झूलत हैं यों कर । अरस-परस इन धनी सों, दोऊ बैठत बांध नजर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -43
- क्यों न होए प्रेम इनको, करें धाम धनी सो केलि । इन बन इन धनीय सों, रमन अह निस खेलि || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -81
- क्यों न होए प्रेम इनको, जाके ए मोहोल ए सेज । लें सोहाग सबों अंगों, जिन पर धनी को हेज || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -70
- क्यों न होए प्रेम इनको, जाके ए वस्तर भूखन । साजत हैं सबों अंगों, धाम धनी कारन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -21
- क्यों न होए प्रेम इनको, जाके ए सोभा सिनगार । सबों अंगों सुख धनी को, निस दिन लेत समार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -22
- क्यों न होए प्रेम इनको, जाके घर एह धाम । स्याम स्यामाजी साथ में, जाको इत विश्राम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -18
- क्यों न होए प्रेम इनको, जाके धनी निरखें नैन । आठों-जाम याके अंग में, चुभ रेहेत बंके बैन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -67
- क्यों न होए प्रेम इनको, जाके निरखें धनी भूखन । याही नजर अंगना अंग में, चुभ रेहेत निस-दिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -62
- क्यों न होए प्रेम इनको, जाके निरखें धनी वस्तर । सो रूहें अपना अंग हैं, लेत खेंच नजर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -64
- क्यों न होए प्रेम इनको, जाको इन धनी सों विहार । निस दिन केलि करत हैं, सब अंगों सुखकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -23

- क्यों न होए प्रेम इनको, जाको इन बन में है हाँस । कमी कबूं न होवहीं, सदा फल फूल बास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -82
- क्यों न होए प्रेम इनको, जाको इन साथ में रस रंग । निस दिन विहार करत हैं, धाम धनी के संग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -32
- क्यों न होए प्रेम इनको, जाको ए धनी सरूप । रात दिन सुख लेत है, जाके सब अंग अनूप || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -28
- क्यों न होए प्रेम इनको, जाको देखें धनी नजर । प्रेम प्याले पीवत, धनी देत भर भर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -55
- क्यों न होए प्रेम इनको, जाको धनी निरखत नैंन भर । आठों जाम अंग उनके, उलसत उमंग कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -58
- क्यों न होए प्रेम इनको, जाको धनी राखत रूख । धाम मंदिर मोहोलन में, धनी देत सेज्या पर सुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -16
- क्यों न होए प्रेम इनको, जाको धनी सों अन्तर नाहें । अरस-परस एक भए, झीलें प्रेम रस माहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -72
- क्यों न होए प्रेम इनको, जाको निस दिन एही रमन । सब अंगों आनंद होत है, मिलावे धनी इन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -29
- क्यों न होए प्रेम इनको, जाको पिउ एती दिलासा देत । सामियों तो अंग इस्क के, कोट गुना कर लेत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -63
- क्यों न होए प्रेम इनको, जाको मिलाप इन घर । विहार करत अंग उछरंग, धनी सों बिध बिध कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -37
- क्यों न होए प्रेम इनको, जाको याही साथ में खेल । मन्दिर या मोहोलन में, पिउ सो स्मन रंग रेल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -36
- क्यों न होए प्रेम इनको, जिन सिर नूरजमाल । कई कोट ब्रह्मांडों न पाइए, इनका औरे हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -14
- क्यों न होए प्रेम इनको, जिनका एह चलन । आठों पोहोर इन धनी सों, रस भर रंग रमन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -75
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन धनी की गलतान । निस दिन धनी खेलावत, विध विध की देत मान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -30
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन बन को रस लेत । फल फूल सुगंध बेलियां, वाउ सीतल सुख देत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -83
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन बन में करें बिलास । निस-दिन इन धनीय सों, करत विनोद कई हाँस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -77
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन बन में करें विलास । सोहागिन अंग धनी धाम की, प्रेम पुंज नूर प्रकास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -80

- क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन मेले में बैठत । अरस-परस रंग अहनिस, नए नए खेल करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -27
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन मोहोलों में नेहेचल । दोऊ हिंडोलों हींचत, करें दिल चाह्या मिल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -50
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन मोहोलों या पलंग । चित्त चाहे सुख अनुभवी, इन धनी के संग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -54
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन हिंडोलों झूलत । इन समें सोभा मन्दिरों, कड़े हिंडोले खटकत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -47
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन हिंडोलों पौढ़त । मन चाहे इन मन्दिरों, अखण्ड केलि करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -52
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो इनहीं में रहे हिल मिल । सकल अंग सुख देत हैं, धाम धनी के दिल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -19
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो करें इन हिंडोलों विहार । झूलत बोलें झनझने, यो मन्दिर होत झनकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -42
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो खेलत इन मोहोलन । हिंडोलों या पलंगे, सुख लेवें चाहे मन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -53
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो झांकत झरोखे इन । झूलत हैं इन पिउ संग, बीच इन हिंडोलन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -41
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो झूलते होंए मगन । फेर फेर प्रेम पूरन, उमंग अंग सबन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -46
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो धनी की सेना लेत । नैनों नैन मिलाए के, सामी इसारत देत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -25
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो धनी को रिझावत । आठों पोहोर सबों अंगों, अरस-परस रंग रमत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -71
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो धनी को लेवें माहें नैन । न्यारे निमख न करें, निस-दिन एही सुख चैन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -34
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो धाम धनी अरधंग । अह निस अनुभव होत है, इन पिउ की सेज सुरंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -26
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो धाम धनी के तन । इन मोहोलों में इन पिउ संग, हींचत हिंडोलन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -40
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो निरखत धाम धनी । रात दिन सुख लेत हैं, सब अंगों आप अपनी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -24
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो निरखें धनी के अंग । पलक ना पीछी फेरत, आठों-जाम उछरंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -35

- क्यों न होए प्रेम इनको, जो पिउ के सुने बंके बैन । याके आठों जाम हिरदे मिने, चुभ रेहेत पिउ के चैन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -61
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो पिउ को निरखें नीके कर । आठों-पोहोर इनों पर, धनी की अमी नजर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -74
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो पिउ सों करें एकांत । आठों-जाम इन सरूप सों, सुख लेत भांत भांत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -73
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो पिउसों पीवें प्रेम रस । कर कर साज सबों अंगों, पिउसों अरस-परस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -60
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो पौढ़त इन पिउ संग । अरस-परस दोऊ हींचत, अंग लगाए के अंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -48
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो फूलन सेज बिछाए । चारों पोहोर रंग रेहेस में, केलै करते जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -57
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो बसत धाम बन माहें । जो बन हमेसा कायम, एक पात गिरे कबूं नाहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -78
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो बैठत पिउ के पास । निस-दिन रामत रमूज में, होत न वृथा एक स्वास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -38
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो रहे इन मोहोल मंदिर । दिल दे विहार करत हैं, ले दिल धनी अंदर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -20
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो रहें इन साथ के माहें । निस दिन आराम पिउ का, न्यारे निमख न होवें क्याहे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -33
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो लें इन हिंडोलों सुख । झलकत भूखन झूलते, बैठत हैं सनमुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -44
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो लें झूलतें रंग रस । उछरंग अंग न मावहीं, अंक भर अरस-परस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -45
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो लेत इतकी खसबोए । सिनगार कर सेज्या पर, केलि करें संग दोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -49
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो लेत धनी को सुख । आठों जाम सेवा मिने, सदा खड़े सनमुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -31
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो लेत पिया को दिल । ए निस-दिन पिएं सुधा रस, पिउसों प्याले मिल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -69
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो लेवें इन हिंडोलों सुख । अखंड इन मोहोलन में, लेवें सदा सनमुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -51
- क्यों न होए प्रेम इनको, जो सदा खेलत इन बन । एक पात की जोत देखिए, करें जिमी अम्बर रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -79

SRJN

- क्यों न होए प्रेम इनको, जो सेज समारें हेत कर । चारों जाम इन धनी को, राखत हैं उर पर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -56
- क्यों न होए प्रेम इनको, धनी अछरातीत जिन सिर । ब्रह्मसृष्ट बिना न पाइए, देखो कोट ब्रह्मांडों फेर फेर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -15
- क्यों न होए प्रेम इनको, धनी बरसत निज नजर । ताके अंग रोम रोम में, प्रेम आवत भर भर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -65
- क्यों न होए प्रेम इनको, धनीसों नैनों नैन मिलाए । ताको इन सरूप बिना, पल पट दई न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -66
- क्यों न होए प्रेम इनको, प्रेम वासा इन ठौर । एही कहे प्रेम के पात्र, प्रेम नहीं कहूं और || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -76
- क्यों न होए प्रेम इनको, रंग रची सेज समार । चारों जाम पिउ सब अंगों, देत सुख अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -59
- क्यों न होए प्रेम इनको, सोहागनियां बड़ भाग । क्यों कहूं इन रूहन की, जाए देत धनी सोहाग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -17
- क्यों न होए प्रेम इनको, हाँस विनोद में दिन जाए । सेज्या संग इन धनी के, रस रंग रैन विहाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -39
- क्यों न होए बल इनको, जाको अमृत हक सींचत । ए पाले-पोसे खावंद के, अर्स तले आवत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -24
- क्यों न होए हुकम को हुकम, जो पेहेले किया इप्तदाए । हुई उमेद सब की पूरन, अब क्यों न दीजे रुहें जगाए || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -16
- क्यों ना आई बास नासिका, पेहेचान के प्रेमल । पिउ संग जीवरा न चल्या, अंदर लेता था सुगंध सकल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -9
- क्यों ना देखे ए वचन, भट परो मेरे जिउ । तूं लेत निमूना किनका, तूं कौन कौन तेरा पिउ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -8
- क्यों निसान कयामत के, क्यों कर फना आखिर । कहे सब विध लिखी कुरान में, सो पाई न काहूं खबर || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -13
- क्यों नूर क्यों नूर तजल्ला, क्यों कर वतन खसम । खोलसी माएने इमाम, खातिर मोमिनों हम || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -49
- क्यों पाक ना पाक क्यों, क्यों रेहेनी फुरमान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -12
- क्यों पैदा क्यों होसी फना, ए ना काहू को खबर । सो सारों को सुध हुई, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -16
- क्यों फरेब से न्यारे रहिए, क्यों चलिए सरियान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -8

- क्यों बड़ी अकल आगे आवसी, क्यों आखिर के निसान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -37
- क्यों बरनों अर्स अंग को, एक अंग में अनेक रंग । जो देखों ताके एक रंग को, तिन रंग रंग कई तरंग || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -33
- क्यों बरनों सुख भिस्त के, हो बैठे नरी नेहेचल । रेहेमत इन रेहेमान की, रच दिया और मंडल || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -66
- क्यों बरनों हक सूरत, अब लों कही न किन । ए झूठी देह क्यों रहे, सुनते एह बरनन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -1
- क्यों बाहेर क्यों अंदर, क्यों अंतर के निसान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -27
- क्यों भली बुरी क्यों, क्यों कर जान अजान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -20
- क्यों मुख ऐसा बोलहीं, जो समझे होंए कागद । ना सुध रसूल ना फुरमान, तो यों कहें सब्द || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -10
- क्यों मेहेर मुझ पर भई, ए थी दिल में सक । मैं जानी मौज मेहेबूब की, वह देत आप माफक || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -5
- क्यों रहे प्रकास पकस्यो, इमाम नूर अति जोर । मैं राखत हों ले हुकम, ना तो गई रैन भयो भोर || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -51
- क्यों रहे प्रकास पकस्यो, एह जोत अति जोर । जब सब उजाला इत आईया, तब गई रैन भयो भोर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -14
- क्यों रहे सुरतें पकड़ी, एक दूजे के आगे होए । दौड़ा दौड़ ऐसी हुई, पीछे रहे न कोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -92, चौ -8
- क्यों रह्या जीव बिना जीवन, क्यों न आया हो मरन । अंग क्यों न लागी अगिन, याद आया न मूल वतन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -9
- क्यों रूहें भेद छिपी हजूरी, बंदगी हादी संग आसान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -41
- क्यों रे नेहड़ा यासों कीजिए, जो मिलके करे भंग । एक रस होइए क्यों तिनसे, नेहेचल नहीं जाको रंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -33, चौ -10
- क्यों वतन क्यों खसम, कौन ठौर क्यों नूर । ए सेहेरग से देखे नजीक, जो मोमिन सदा हजूर || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -102
- क्यों सदर-तुल-मुन्तहा, क्यों है अर्स अजीम । क्यों कौल फैल हकके, क्यों हक सूरत हलीम || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -22
- क्यों सब्द आगे चले, तुम कर देखो विचार । छाया पार किरना रहें, सूरज किरनों पार || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -32

- क्यों सरूप है प्राकृत को, क्यों मोह क्यों सुंन । क्यों सरूप जो काल को, ए नेहेचे करी न किन || ग्रं - किरन्तन, प्र -21, चौ -7
- क्यों सुंनत क्यों इंद्रियां, क्यों राखे कैद आन । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -15
- क्यों हम जुदे होएसी, एक दूजी को छोड़ें नाहें || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -40
- क्यों हुकम क्यों कर हुआ, किन बिध लीजे मान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -32
- क्यों होए तफावत इस्क, बैठे बीच बका में हम । एक जरा न होए जुदागी, तो क्यों पाइए ज्यादा कम || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -32
- क्योंए न आवे सब्द में, जोगमाया की बिध । तो भी देखाऊं कछुयक, लीला हमारी निध || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -6
- क्योहरियां घाटन पर, चारों जदी जिनस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -6
- क्योहरियां सोभित ताल की, पाल पांवड़ियां अन्दर । सोभा कहा कहूं सब जड़ित की, बीच मोहोल जल ऊपर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -55
- क्योहरी आणू चबूतरे, खुले झरोखे ताल पर । सबों विराजत कठेड़ा, नूर भराए रहयो अंबर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -95
- क्योहरी तले जो चबूतरे, चौक दूजा याही बराबर । जल ऊपर जो चबूतरा, आईं सीढ़ियां इत उतर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -49
- क्रतव चितवणी जे सेवा करे, अवला गुण मोहजल परहरे । ते पण मनसा वाचा करमणा करी, अने दोड करे घणूं वालपण धरी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -4
- क्रोध अहमेव समें नहीं, अने वेख धरो छो साध । लोभ लज्या नमे नहीं, माहें मोटी ते ए ब्राध || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -8
- क्रोध कहे मैं अति बलवंता, पर क्या करूं धनी बिन । अब उलटाए देऊं कर सीधा, फेर कबहूं ना होवे दुस्मन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -80
- क्रोध कहे हूं घणुवे जोरावर, पण धणी विना करूं हूं केम । हवे जो कोई गुण जीवने चंपावे, तो त्यारे तमे कहेजो मूने एम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -80
- क्रोध में तूंने जाण्यो पोतानो, पण नव सिध्यू तूं मांहेंथी काम । फिट फिट भुंडा दुष्ट अभागी, रही मारा हैडा मांहें हांम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -78
- क्रोधना कडका करूं, उडाडी अलगो नाखू । साथ माहे ना दऊं पेसवा, निद्रा ते आडी राखू || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -23

ख

- खई कस्यो ही निद्रडी, ही हंद ओखो घणूं आय । जे हिंनी वेणे न उथियूं, त केही पर कंदियूं ताय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -19

- खईसो भरम जो घेण, जे लाथो लहे न कीय । अख उघाडे सओ कुछण, पुण वरी तीय ज्यूं तीय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -1
- खट प्रमान से ब्रह्म है न्यारा, सो कहें अद्वैत हम आप । माया ईश्वर त्रिगुन हमथे, हमहीं रहे सबमें व्याप || ग्रं - किरन्तन, प्र -31, चौ -4
- खटचक्र नाडी पवन, साधे अजपा अनहद । कई त्रवेनी त्रकुटी, जोती सोहं राते सब्द || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -3, चौ -9
- खटरूत वालाजी रे वहीं गयूं, तेना थया ते बारे मास । एवडो विरह केम दीधो रे वालैया, तमने हजी न उपजे त्रास || ग्रं - खटरुती, प्र -7, चौ -7
- खटसास्त्र पढ़ो कांड तीनों, करम निहकरम विधोगत । ब्रह्म चरन न आवे ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्म सों निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -30
- खंडनी कर खीजिए, जागे नहीं इन भांत । दीजे आप ओलखाए के, यों साख देवाए साख्यात || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -10
- खड़ियां रूहें निरत में, इत उछरंग होत । तरफ चारों जवेरन में, निरत देखे अधिक जोत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -67
- खंडी खांडी खीजिए, जागे नहीं एणी भांत । आपोपूं ओलखाविए, साख पुराविए साख्यात || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -10
- खंडी खांडी रडी रडावी, दुख जगवतां दीठा घणा । जाग्या पछी ज्यारे जोइए, त्यारे बनेमां नहीं मणा || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -11, चौ -13
- खंडी खांडी रोए रोलाए, दुख देखे दोऊ जन । जागे पीछे जो देखिए, तो कमी न मांहें किन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -13
- खंडी खांडी, छांडी मांडी, मेली भेली, भूमी चूंमी, गाली लाली, लोपी चापी, लाजी भाजी, दाझी काढी, आंजी हांजी, जीती जोपे, रूडी रीते, उठी इंद्रावती आ वार जी || ग्रं - रास, प्र -42, चौ -4
- खबर गिंनी धणीयजी, डिंनी लोकन के । आसिक के हे उलटी, पांण के लगी जे || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -6
- खबर तुमारे इस्क की, तो होवे जाहेर । सब मिल जाओ इत थे, बका से बाहेर || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -16
- खबर देसी भली भांतें, विष्णु जागसी तत्काल । तब आवसी नींद इन नैनों, प्रलेय होसी पंपाल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -98
- खबर देसे भली भांतें, विष्णु जागसे तत्काल । आवसे आणे नेत्रे निद्रा, त्यारे प्रले थासे पंपाल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -93
- खबर न पाई काहूं ने, जो दिल ऊपर सैतान । साफ किए सबन को, जाहेर कर हुकम सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -37

- खबर मेरे इस्क की, तुम जानी नहीं किन । इस्क बड़े सबों अपने, तो कहे रूहन || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -12
- खभे देत दोऊ खूबियां, रूह देख देख होए खुसाल । जो नेक आवे अर्स की लज्जत, तो रोम रोम लगे रूह भाल || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -5
- खभे मच्छे कोनिया, और कलाइयां काइन । पोहोंचे हथेली अंगुरी, नूर क्यों कर कहूं नखन || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -6
- खरगोस एक जवेर का, चले रूह के मन सों । बड़ा फील लड़े अर्स का, कहो कौन जीते इनमों || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -74
- खरचे खाए अहमेवे, मांहें मोटा थाय । दान करी कीरत कहावे, ए रामत एम रमाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -27
- खरी रे वस्तनो, तुंने हतो रे तेज । तें कां नव राख्यो रे, धाम धणीतूं हेज || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -35
- खरी वस्त आंहीं गोप छे, जो जो चौटा पीठ हाट । वोहोरजो पारखूष करी, आवी कुली बेठो छे पाट || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -8
- खरी वस्त जे थासे सही, ते रेहेसे वचन रासना ग्रही । जेम कयूं छे करसे तेम, ते लेसे फलतणो तारतम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -21
- खरो खोजी हसे जाण जवेरी, ते जोसे दृढ़ मन धीर । वस्त अखंड ने तेहज लेसे, जे होसे वचिखिण वीर || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -11
- खरो हसे जे खरी भोम तणों, आ वचन विचारसे जेह । अगिन झाला देखीने छाडसे, अखंड सुख लेसे तेह || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -125
- खलील अल्ला दोस्त खुदाए का, जाकी पोहोंची दुआ हजूर । सो भी रहत इमाम में, कलाम अल्ला का जहूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -8
- खसम एक सबन का, नाहीं दूसरा कोए। ए विचार तो करे, जो आप सांचे होए || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -22
- खसम एक सबन का, नाहीं न दूसरा कोए । एह विचार तो करे, जो आप सांचे होए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -34
- खसम एक सबन का, नाहीं न दूसरा कोए। ए विचार तो करे, जो आप सांचे होए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -20
- खसम के आगे अब, क्यों उठावें सिर । सब अंग आग जो हो रही, हाए हाए झालें उठे फेर फेर || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -26
- खसम खड़ा है अंतर, जेती सोहागिन । तूं पूछ देख दिल अपना, कर कारज दृढ़ मन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -44
- खसम खसम तो करत हों, पर खसम न आवत भार । ना हुज्जत रूह अर्स की, तो होत ना दिल करार || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -15

SRJN

- खसम खसम तो केहेती हों, जानों खदी रहे ना मुझ माहें । गुनाह अपनी अंगना पर, बका में आवत नाहें || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -42
- खसम खसम तो केहेती हों, जो तुम देखाई निसबत । भार भी तुम देओगे, तुम ही देओगे लज्जत || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -44
- खसम जो न्यारा द्वैत से, और ठौरों सब द्वैत । किने ना कया ठौर नेहेचल, तो पाइए कैसी रीत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -23
- खसम जो न्यारा द्वैत से, और ठौरों सब द्वैत । किने ना कह्यो ठौर नेहेचल, तो पाइए कैसी रीत || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -23
- खसम सुध सब देवही, गुझ बतावे कुरान । बातें कहे वतन की, पैगंमर प्रवान || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -69
- खसमें ख्वाब देखाइया, बीच अर्स अपने इत । हक हादी रूहें मिलाए के, उड़ाए दई गफलत || ग्रं - खुलासा, प्र -18, चौ -6
- खसमें लिखी हकीकत, जोलों न पाइए सोए। तोलों असलू मोमिन को, चैन जो कैसे होए || ग्रं - सनंध, प्र -1, चौ -8
- खसमें हमारे दिल पर, ऐसे किया हुकम । तो यों दिल में उपज्या, मांगें खेल खसम || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -5
- खाए गया सबन को, अजूं देखत नाहीं ताए । तिनसे लड़ने बाहेर, बांध बांध कमरें जाए || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -21
- खाए पिएँ सब मिलके, बंदगी एक खसम । नाम न्यारे सब टल गए, हुई नई एक रसम || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -19
- खाक कछू न पावहीं, रूह तो अपने बीच असल । कोई देखे सहूर करके, तो पोहोंचे हादी कदमो नसल || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -53
- खाक पानी आग वाए को, ए चौदे तबक हैं जे । सो मेरे दिल कायम किए, बरकत नुकते इलम के || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -44
- खातिर तुम अर्स मोमिन, मैं ल्याया हक फरमान । कौल करत हों तेहेकीक, इत ल्याऊं बुलाए सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -5
- खातिर प्यारी रूहें मोमिन, मैं कहूं अर्स सब्द । बका सब्द कहे बिना, उड़े ना सरियत हद || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -1
- खातिर मोमिन रसूलें, कई निसान लिखे प्यार कर । सो मैं ठौर ठौर हक बका, कर देऊं सब खबर || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -5
- खाते पीते उठते बैठते, सोवत सुपन जाग्रत । दम न छोड़ें मासूक को, जा को होए हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -3
- खाना खिलावें आप में, देखलावें मसीत मेहेराब । लेकर कलमा पढ़ावहीं, कहें हमें होत सवाब || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -17

- खाना दीदार इनका, या सों जीवे लेवे स्वांस । दोस्ती इन सरूप की, तिनसे मिटत प्यास || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -90
- खाना पीना खिन खिन लिया, प्यार अर्स रूहन । पल पल मासूक देखना, एही आहार आसिकन || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -6
- खाना पीना दिल चाहता, सब बिध का करार । नूर सख्ये होए के, भिस्त में बसें नर नार || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -71
- खाना पीना दीदार, रोजा निमाज दीदार । एक दोस्ती जाने हक की, दुनी सब करी मुरदार || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -43
- खाना पीना सब इतहीं, इतहीं मिलाप मजकूर । इतहीं पूरन दोस्ती, इत बरसत हक का नूर || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -60
- खार हवे ते हूं वालू रे वाला, घणा दिन हुती रूदे झाल । ज्यारे में तमने भीडिया जीवसूं, त्यारे रूदे ठस्युं तत्काल || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -33
- खावंद अर्स अजीम का, गझ सुनत रात दिन । ए जो अरवाहें अर्स की, कई सुख लेवें कानन || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -9
- खावंद अर्स अजीम का, सो कहूं नेक हकीकत । इन हक बका से मोमिन, रखते हैं निसबत || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -3
- खावंद इनों में खेलहीं, धन धंन इनों के भाग । अर्स के जानवरों को, कायम है सोहाग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -1
- खावंद के दीदार को, पस और जानवर । आवत हैं गुन गावते, अपने समें पर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -4
- खावंद होए के करसी काम, तिनका अब्बल से धरिया नाम । बाहेर ल्याया तुमारे ताईं, छिपा लड़का था पेट माहीं || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -20, चौ -6
- खास उमत महंमद की, जो कही अर्स रबानी । दूजी गिरो फरिस्तन की, जो कही नूर मकानी || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -24
- खास उमत सों कहियो जाई, उठो मोमिनों कयामत आई। केहेती हों माफक कुरान, तुमारे आगे करों बयान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -1
- खास गिरो नूरजमाल में लई, नूरजलाल ठौर दूजी को दई । तीसरी जो सब दुनियां कही, करी नूर नजर तले सही || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -2, चौ -10
- खास गिरो फरिस्तन की, ए जो पैदा नूर मकान । सो पोहोंचे बका बीच नूर के, ले हक इलम ईमान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -92
- खास छज्जे गोख जालियां, यामें केती मिलाई धात । संधो संध समारिया, मिने हिकमत कई हिकात || ग्रं - किरन्तन, प्र -33, चौ -4
- खास मोहोल कुण्ड ऊपर, जहां लेहेरी छलकत जल । सो जल उतरत पहाड़ से, चढ़ गिरत ऊंचे नल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -18

- खास रूहें उमत की, और मतकी दीन इसलाम । और तीसरी खलक, ए तीनों कहे अल्ला कलाम || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -49
- खास विरिख कई विध के, सो केते कहं विवेक । तले पहाड़ छाया मिने, जानों ए बिरिख अति विसेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -22
- खासल खास अर्स अजीम, हक सूरत नूरजमाल । इत हादी रूहें खिलवत, ए वाहेदत जात कमाल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -23
- खासल खास रूहें इस्क, और खासे बंदगी दिल । आम वजूद जदल से, जिनों नासूती अकल || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -7
- खासलखास गिरी रूहें, अर्स अजीम सूरत हक । और गिरो खास फरिस्तों, रहें नूर मकान बुजरक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -33
- खासलखास रूहें उमत, गिरो फरिस्तों खास कहावे । गिरो रूहों गिरो फरिस्ते, दोऊ अपने ठौर पोहोंचावे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -14
- खासलखास रूहें कहीं, ए अहमद उमत । भाई कहे महमद के, हक खासी खिलवत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -15
- खासलखासों दे हिकमत, ज्यों रहे न सुभेसक । बिगर वास्ते पोहोंचे बीच, अर्स अजीम बका हक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -98
- खासा नूरी खुदाए का, ए बोल्या सब्दातीत । सब मिल सब्द विचारहीं, पर पावें ना वे रीत || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -19
- खासी उमत जो अहमदी, आई अर्स से उतर । ताए अपना इलम देयके, ले चलसी अपने घर || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -31
- खासी गिरो के बीच में, आखिर इमाम खावंद होए। ए जो लिख्या फरमान में, रूहअल्ला के जामें दोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -7
- खासी जान खेड़ी जिमी, जल सींचिया खसम । बोया बीज वतन का, सो ऊग्या वाही रसम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -9
- खासी जान खेड़ी जिमी, जल सींचिया खसम । बोया बीज वतन का, सो ऊग्या वाही रसम || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -10
- खासों में खासे कहे, रबानी उमत । खिलवत हक हादी रूहें, अर्स हक वाहेदत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -75
- खाहिस से बनावहीं, अपने हाथ समार । जुदा जुदा कर पूजहीं, जिनको नाहीं पार || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -21
- खिड़की मुकाबिल खिड़कियां, अन्दर बाहेर जे । जो सुख हैं मोहोलन के, कब लेसी हम ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -22, चौ -5
- खिण माहें अर्थज लीजे रे, जे वचन कया वेद व्यासे । दीपक वा मा खमेरे नहीं, हमणां धवक अंधारूं थासे || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -3

- खिताब दिया ऐसा खसमें, इत आए इमाम । कुंजी दई हाथ भिस्त की, साखी अल्ला कलाम || ग्रं - किरन्तन, प्र -99, चौ -4
- खिताब रसूली महंमद पर, तमामी आखिर मेंहेंदी खिताब । ए ले इलम आखिरी हक का, महंमद मेहेंदी खोले किताब || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -73
- खिताब हादी सिर तो हुआ, जो फुरमान और न कोई खोलत । हक कदम हिरदे मोमिनों, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -7
- खिन एक लेहु लटक भंजाए। जनमत ही तेरो अंग झूठो, देखतहीं मिट जाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -48, चौ -1
- खिन एक विरहा ना सहे, सो सौ बरस सहें क्यों कर । फरामोसी इन हक की, कोई हाँसी ना इन कदर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -71
- खिन खिन में सुख होएसी, धनी याद किए असल । ए सुख आए इस्क, बेर ना लगे एक पल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -23
- खिन खेले खिन में हंसे, खिन में गावे गीत । खिन रोवे सुध ना रहे, ए सोहागिन की रीत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -14
- खिन खेलें खिन में हंसें, खिन में गावें गीत । खिन रोवें सुध ना रहे, एही मोमिन की रीत || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -32
- खिन में कछू और कहे, खिन में और की और । सो बात दृढ़ क्यों होवहीं, जाको वचन ना रेहेवे ठौर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -29
- खिन में कहे सत असत, माया कछुए कही न जाए। यो संग संसा दृढ़ हुआ, सब धोखे रहे फिराए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -27
- खिन में कहे सब ब्रह्म है, खिन में बंझा पूत । मद माते मरकट ज्यों, करे सो अनेक रूप || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -26
- खिन में कहे है आप में, खिन में कहे बाहेर । खिन में मांहें न बाहेर, याको शब्द न कोई निरधार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -28
- खिन में सिनगार बदलें, करें नए नए रूप अनेक । होत उतारे पेहेने बिना, ए क्यों कह्यो जाए विवेक || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -19
- खिन में सिनगार बदले, बिना उतारे बदलत । रंग तित भूखन नए नए, रंग जो दिल चाहत || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -141
- खिन सज्जन खिन दुस्मन, दिवाना दाना प्रवीन । बिध बिध के बंध फंद डार के, सब सूर किए आधीन || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -11
- खिनमें कछू और कहे, खिनमें और की और । सो बात दृढ़ क्यों होवही, जाको वचन ना रेहेवे ठौर || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -28
- खिनमें कहे सत असत, माया कछुए कही न जाए । यों संग संसा दृढ़ हुआ, सो धोखे रहे फिराए || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -26

- खिनमें कहे सब ब्रह्म है, खिनमें बंझा पूत । मदमाते मरकट ज्यों, करे सो अनेक रूप || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -25
- खिनमें कहे है आप में, खिनमें कहे बाहेर । खिनमें माहें न बाहेर, यों सब्द न कोई निरधार || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -27
- खिलवत खाना अर्स का, बैठे बीच तखत स्यामा स्याम । मस्ती दीजे अपनी, ज्यों गलित होऊ याही ठाम || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -6
- खिलवत जांणां अर्स जी, कौल फैल हाल असल । तोजी गुझ न रही कां मूंह थी, दावो तो मूं विच अदल || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -62
- खिलवत निसबत वाहेदत, जेती अर्स हकीकत । ए लज्जत हुकम सिर लेवहीं, अर्स रूहें सिर ले हुज्जत || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -57
- खिलवत भी जाहेर करी, जो हक पातसाही वाहेदत । छिपी सब जाहेर हुई, जो हक दिल बीच न्यामत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -32
- खिलवत संदेसे दिए रूहअल्ला, जो मेहेर कर केहेलाए । किन खोले न द्वार अर्स के, मोको सब विध दई समझाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -6
- खिलवत सब मेयराज में, जो रूहों करी अव्वल । सो खोले हक हादीय की, ज्यों देखें हकीकी दिल || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -4
- खिलवत हक रूहन की, जो इस्क रूहों असल । ए बातून बका अर्स की, बीच न आवे फना अकल || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -1
- खिलवत हक हादी रूहन की, कबूं न जाहेर किन । सो रूहअल्ला ने रूहसों, तिन कही आगे मोमिन || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -6
- खिलवत हक हादीय की, जो इस्क रूहों असल । ए बातून बारीक वाहेदत की, इत पोहोंचे ना फना अकल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -23
- खिलाफ राह चलें काफर, दुनियां को देखावें डर । ए जो सरत कही इस दिन, उस बखत उतरे मोमिन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -11, चौ -7
- खिल्ली कूडी कर गालडी, सुजाण पोतेजा पिरी । तोजे काजे आप विधाऊं, विनी भेरां न्हार की || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -16, चौ -3
- खीजी वढीने ए निध, बीजो कोण देसे । जीव ना सगा जांणी, आंसुवाली कोण केहेसे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -48
- खीजे वढे वासना न जागे, जगव्यानी जुगत जुइ । आप जाग्यानी जुगत आपूं, त्यारे केम रहे वासना सुइ || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -9
- खीटलडी जडाव भली पेरे, मांहें लाल हीरा सुचंग । माणक मोती नीला पाना, मांहें पांच वानि ना नंग || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -57
- खीटलडी वालाजी केरी, जीव करे रे जोयानी खांत । माणक मोती हीरा पुखराज, कुंदन मांहे जडियां भांत || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -33

- खीर नीर देखो विचार, एक धनी दुजा संसार । दोऊ बासन में दोऊ जुद, यों नीके कर देखो हिरदे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -28
- खुई सा निद्रडी रे, जे अजां न छडे जीव । तोहे नी सांगाए न वरे, जे पसां मथे हेडी भाइयां || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -1
- खुई सा परडेहडो, जित सांगाए न्हाए सिपरी । पिरी पुकारेनी हलया, मूंजी माया मत बेई फिरी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -8, चौ -1
- खुंट आठों दोऊ चबूतरे, और आठों बने द्वार । सोले दिवालें हुई सबे, सोभा लेत पेड़ों हार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -17
- खुद काजी कजाए का, रसूलें किया अति सोर । सो सोर याद जो आवहीं, हाए हाए झाले बढ़े त्यों जोर || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -6
- खुद की सुध दई रसूलें, पर आया नहीं आकीन । अंग मरोर जिमी परे, हाए हाए जिन रसूल को न चीन || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -9
- खुद तो किन को ना मिल्या, अब काजी कजा चलाए। कहें जो चाहे खुद को, हम मिलावें ताए || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -3
- खुदा एक महंमद बरहक, सो गैर दीन माने क्यों कर । हक सूरत की दई साहेदी, हकें तो कया पैगंमर || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -26
- खुदा एक महंमद साहेद, मसहूद है उमत । ए तीनों अर्स अजीम में, ए वाहेदत बीच हकीकत || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -22
- खुदा काजी होए बैठसी, होसी फजर को दीदार । ले पुरसिस लैलत कदर में, होसी फजर तीसरे तकरार || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -11
- खुदा काजी होय के, कजा करसी सबन । सो हिसाब जरे जरे को, लियो चौदे भवन || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -19
- खुदा के नूर से महंमद, हुई दुनियां महंमद के नूर । इन बात में सक जो ल्याइया, सो रह्या दीन से दूर || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -16
- खुदा देवे साहेदी खुदाए की, और ना किनहूं होए। करें बयान फुरमा हुकम, लायक पूजने के सोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -16
- खुदा न देवे दुख किन को, पर मारत है तकसीर । पटक पटक सिर पीटहीं, रोसी राने राए फकीर || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -5
- खुदा याही को कहें, याही को कहें काल । आखिर सब को खाएसी, एही खेलावे ख्याल || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -27
- खुदा याही को जानहीं, जो मलकूत में त्रैगुन । कदी ले इलम आणू चले, गले ला मकान जो सुन || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -35
- खुदाए कर पूजेंगे, बका मिनें बेसक । पाक होसी हक इलम सों, करें बंदगी होए आसिक || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -140

- खुदाए की सौह खाए के कही, के कयामत नजीक आई सही । पहेली नीयत अकीदे अपनी, झूठा कौल ना करे धनी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -7
- खुदाए बीच वजूद हिजाब, रूह तुमारी बैठा दाब । पीछे फना के फायदा सब, दौलत खुदाए बका पाओ जब || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -25
- खुदी गुणो हुकमें, घुरां कुछां हुकम । पट लाहियां या जे करियां, सभ हुकमें चयो इलम || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -19
- खुदी गुना सब हुकमें, मांगू बोलूं सब हुकम । पट खोलूं या जो करूं, सब हुकम कहे इलम || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -19
- खुदी हक हुकम की, सो तो भूलें नाहीं कब । वह काम सोई करसी, जो भावे अपने रब || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -4
- खुबियां आखिर बखत की, किन मख कही न जाए । खूबी कहिए तिन की, जो सब्द मांहें समाए || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -41
- खुबी इन भोम बन की, जानों फेर फेर देखं धाए । देख देख के देखिए, तो नजर न काढ़ी जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -10
- खुलासा मुसाफ का, असराफील बतावे । तब सूरज मारफत का, हक अर्स दिल नजरों आवे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -10
- खुली मुसाफ हकीकत, तिन इतहीं हक वाहेदत । अर्स बरकत सब इतहीं, इतहीं हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -84
- खुले द्वार सब असों के, एही रूह अल्ला इलम । एही लदुन्नी खुदाई, ए कौल हक हुकम || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -5
- खुले ना बंध बिना बांधे, बिध बिध खोले जाए । ए माया मोहोरे देख के, उरझ रहे सब मांहें || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -18
- खुसखबरी तोहे जिकरिया, देता हों में यों कर कहया । ए बेटा तुझे बकसिया, कहया नाम उसका एहिया || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -9
- खुसखबरी सों हुआ खुसाल, पेहेले ना सुध थी वजूद इन हाल । ए बात जाहेर न जानी कबे, दूजे फेरे पोहोंचे इन मरतबे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -23
- खुसबोए जिमी अति उज्जल, ज्यों सोने जवेर दरखत । बेसक जंगल जवेर ज्यों, रोसन नूर झलकत || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -33
- खुसरंग फल नारंग के, पीलक लिए रंग लाल । झाई उठे माहें जल, ए सोभित इन मिसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -36
- खुसरंग बीच सिंघोड़ा, तले दो अनी ऊपर एक। इन दोऊ पांखें खुसरंग, ए कटाव सोभा विसेक || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -148
- खूटी न आवी रे भुंडी, तूं वल्लभ रे विछडतां । हजी न जाय रे जीव, ए वचन रे सांभरतां || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -68

- खूब देखाई क्यों देवहीं, चबूतरा एक तरफ । जाने केहेसी आपे दूसरा, मेरे इलम के सरफ || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -19
- खूबी अजब इन बन की, जो बन ऊपर पाल । क्योहरियां उलंघ के, डारें लटक रही माहें ताल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -80
- खूबी क्यों कहूं निसबत की, वास्ते निसबत खुली हकीकत । तो पाई हक मारफत, जो थी हक निसवत || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -3
- खूबी खुसाली अधिक, और ज्यादा सोभा संसार । ले प्याला रूह जगाए के, ल्यो इस्क चलो हादी लार || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -39
- खूबी खुसाली न आवे सब्द में, ना रंग रस बुध बान । कोई न आवे सोभा सब्द में, मुख अर्स खावंद मेहेरबान || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -52
- खूबी खुसाली पूरन, सुन्दर सोभा चित्रामन । नैन श्रवन या चोंच मुख, गान करें निस दिन || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -87
- खूबी खुसाली बुजरकी, सोभा सिफत मेहेरबान । इस्क प्रेम वतन का, कायम सुख सुभान || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -29
- खूबी जुगल किसोर की, प्रेम वचन इन रीत । आसिक इन मासूक की, भर भर प्याले पीत || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -25
- खूबी तखत ना केहे सकू, इन जुबां के जोर । जानूं रात कुफर की मिट गई, हुआ दिन जाहेर भोर || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -3
- खूवी इन पहाड़ की, ऊँचा माहें आकास । कई मोहोल बैठक रोसनी, ज्यों रोसन धाम प्रकास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -11
- खेंच किया सबों के आगे, मोमिन इनपे पेसवा लागे । बीज मिट्टी दुनियां की न्यात, पर ए पाक साफ कही जात || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -42
- खेल ऐसा फरेब का, सब हवा को पूजत । सुध दोऊ को ना परी, कायम बका सुख कित || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -44
- खेल कई कोट एक पल में, देख उड़ावे पैदा कर । ऐसी कुदरत नूरजलालपे, नूर-मकान ऐसा कादर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -9
- खेल कर उतारे खेल में, रूहें पोहोंची इन इलम । इन बातों सक ना रही, कहा कहूं तुमें खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -49
- खेल कर मोहे बैठाई मांहें, मुझ पर भेज्या फरमान । मांहें लिखी हकीकत मारफत, मुझ बिना न काहूं पेहेचान || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -7
- खेल करें इत भुलवनी, मंदिर एक सौ दस की हार । सो हर तरफों गिनिए, एही गिनती तरफ चार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -14
- खेल करें जब इन मोहोलों, धनी सुख देत सैयन को । कई विध खेल कहूँ केते, आवे ना जुबां मों || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -4

- खेल कह्या है नींद का, सब खेलें बीच अंधेर । ए जो आइयां खेल देखने, ताए बैंच लिया दिल फेर || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -51
- खेल का जोस आया सबों, इस्क न रह्या किन । सब चाहें साहेबी खेल की, हक इस्क न नजीक तिन || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -34
- खेल किया किस वास्ते, किस वास्ते देखाया दुख । मेहेर प्रीत हक के दिल की, हाए हाए देखें ना इस्क के सुख || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -27
- खेल किया जिन खातिर, सो आइयां देखन अब । ए खेल अर्स रूहें देखही, और खेल है सब || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -55
- खेल किया तुम खातिर, सो तूं कहो आगे मोमिन । पेहेले खेल देखाए के, पीछे मूल वतन || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -43
- खेल किया तुम वास्ते, जो देखत बैठे वतन । सो देख के उड़ावसी, जिन विध झूठ सुपन || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -21
- खेल किया तुम वास्ते, ज्यों बाजी के कबूतर । जिन मिल जाओ तिन में, ओ तुम नहीं बराबर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -54
- खेल किया तुम वास्ते, देखो दिल में आन । ए झूठ खेल देखाइया, करने हक पेहेचान || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -101
- खेल किया पेहेले बृज में, खेल दूजा वृन्दाबन । उमेद रही तो भी नेक सी, ताथें एह उतपन || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -21
- खेल किया महंमद वास्ते, जैसे खेल के कबूतर । खासलखास गिरो रबानी, वह इनों की करे बराबर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -33
- खेल किया महंमद वास्ते, महंमद आया वास्ते उमत । ताए एक दम न्यारी ना करें, मेहेर कर धरी तीन सूरत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -34
- खेल किया मेरे कारने, दुनियां चौदे तबक । मेरे हाथ तिनकी हैयाती, भिस्त पाई मुतलक || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -6
- खेल किया याही वास्ते, हकें सुख दिए जुबान । सो मेरी इन जुबान सों, क्यों कर होए बयान || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -20
- खेल किया हांसी वास्ते, वास्ते हाँसी किए फरामोस । वास्ते हाँसी ऊपर पुकारहीं, वास्ते हाँसी न आवत होस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -9
- खेल किया हुकम सों, हम आए हुकम । हुकमें दरसन देखावहीं, कछू ना बिना हुकम खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -42
- खेल कुफार इन भांत का, सब खेलें हक बका भूल । इनमें फुरमान ल्याइया, मेरे मासूक का रसूल || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -40
- खेल खावंद कैसी सरभर, जो रूहें अंग हादी नूर । हादी नूर हक जातका, मोमिन देखें अर्स सहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -80

- खेल खावंद जो त्रैगुन, जाने याथें जासी फेर । ए निरखे मैं नीके कर, अजूं ए भी मिने अंधेर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -33
- खेल खावंद जो त्रैगून, जानों याथें जासी फेर । ए निरखे मैं नीके कर, अजूं ए भी मिने अंधेर || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -38
- खेल खेलें अनेक रब्द, मिनों मिने करें क्रोध । जैसे मछ गलागल, छोड़े न कोई बोध || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -35
- खेल खेलें और रब्दें, मिनो मिने करें क्रोध । जैसे मछ गलागल, छोड़े ना कोई बोध || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -2
- खेल खेलें कुमारका, चीले कुल अभ्यास । दूध दधी छोटे बासन, करे रंग रस बन विलास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -46
- खेल झूठा झूठी रसमें, रूहें गैयां तिनमें मिल । अब सीधा क्यों ए न होवहीं, जो हुकमें फिराया दिल || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -12
- खेल झूठा देख्या नजरों, सो ले खड़े सिर आप । ताही में मगन भए, छोड़ कायम मिलाप || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -110
- खेल त जरो न्हाए की, ए इलमें खोली नजर । हित बेही मंगू सुख अर्सजा, धणी मिडन कोठे घर || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -25
- खेल तन में हुकम ना रेहे सके, हुज्जत लिए रूहन । हुकम हमारे खसम का, क्यों देवे दाग मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -74
- खेल तो झूठा फना कया, साहेब हमेसा हक । जैसा साहेब बुजरक, खेल भी तिन माफक || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -75
- खेल तो है एक खिन का, रूहें जानें हुई मुद्दत । कई कुरसी हुई कई होएसी, गईयां भूल मूल सोहोबत || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -36
- खेल दुनियां अर्स खेलौने, करें बाल चरित्र भगवान । या खेल या बिन साहेबी, होए लखमीजी क्यों गुजरान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -88
- खेल देख उमत फिरी, भिस्त दे सबन । इतहीं बैठे पोहोंचहीं, अपने कायम वतन || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -52
- खेल देखन कारने, करी उमेद एह । ए माप्या तुम वास्ते, कोई राखों नहीं संदेह || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -3
- खेल देखाऊं इन भांत का, जित झूठे में आराम । झूठे झूठा पूजहीं, हक का न जानें नाम || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -22
- खेल देखाऊं मैं जुदागी, कदम तले बैठो मिल । ऐसा खेल फरामोस का, जानों जुदे हुए सब दिल || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -24
- खेल देखाए उरझाए हमको, सो फेर दिया छुड़ाए। ना तो ऐसा फरेब, कबूं किन छोड़्या न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -3

- खेल देखाया तिन वास्ते, उपजे तुमको चाह । ए खेल देख के मांगोगे, जानो होवें हम पातसाह || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -135
- खेल देखाया तुमको, वास्ते तफावत । इत याद देत सुख पावने, हक बका निसबत || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -84
- खेल देखाया ब्रह्मसृष्ट को, करके हुकम आप । ए झूठा खेल कायम किया, करके इत मिलाप || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -45
- खेल देखोगे दुख का, याद देसी मैं ए सुख । मैं देऊंगा सब साहेदियां, पर तुम छोड़ न सको दुख || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -28
- खेल देख्या कालमाया का, सो कालमाया में भिल । अब देखो सुख जागनी, होसी निरमल दिल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -12
- खेल देख्या जो हम, सो थिर होसी निरधार । सारों मिने सिरोमन, होसी अखंड ए संसार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -33
- खेल देख्या बैठे घर, अग्याएं सैयों नजर । जब अंतर आंखां खुली, तब दृष्ट घर की घर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -70
- खेल पाया इप्तदाए से, आप असल बका घर । सब सुध हुई प्रताप तें, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -5
- खेल फरिस्ते अर्स बका, हक मता पाया हम सब । आखिर भिस्त कयामत, ए कजा कहिए अब || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -53
- खेल बनत याही बिध, एक भागे एक लरे । इनकी हाँसी बड़ी होएसी, जब घरों बैठ बातां करे || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -40
- खेल बनाया मेरे वास्ते, मोहे भेज के आए आप । पट खोल इलम समझाइया, मोसों नीके कियो मिलाप || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -10
- खेल भी तुम देखाईया, दई फरामोसी भी तुम । तुम ही जगावत जुगतें, कोई नहीं तुम बिना खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -33
- खेल मांग्या दुख का, तब कह्या हम तुम । दुख का खेल तुमको, क्यों देखावें हम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -22
- खेल में कई मुद्दत, होत है दुनियां को । कई कोट होत पैदा फना, नूर के निमख मों || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -14
- खेल में मेंहेंदी तोतला, जुबां कजा ए ठौर । आगे तो नूर-तजल्ला, तहां जुबां बोल है और || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -4
- खेल याद देने को मेरे पिउजी, दुख दिए अति घने जी। साथें मनोरथ एह जो किए, धनिएँ राखे मन आपने जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -9
- खेल रचे खिन ना हुई, सो भी कहूं तुमें समझाए । ए वतन के पाव पल में, कई पैदा फना हो जाए || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -57

- खेल रचे सुपन के, देखाए मिने सुपन । ए देखे हम न्यारे रहे, कोई और न देखे जन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -31
- खेल रसूल हुकमें हुआ, बीच ल्याए रसूल फरमान । आखिर भी रसूल आए के, भिस्त दई सब जहान || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -44
- खेल हंस कर बातड़ी, पेहेचान अपना पिउ । दो बेर धनी तुझ कारने, आए जान अपना जिउ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -3
- खेल हुआ जो लैल में, तकरार जो अव्वल । उतरी रूहें फरिस्ते, अरस के असल || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -7
- खेल हुआ हम वास्ते, हम पर हादी ल्याए फरमान । हम वास्ते कुंजी रूहअल्ला, दई इमाम हाथ पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -63
- खेलत जुदी जुदी जिनसों, इत पांउ ना भोम लगत । इत खेलें रूहें पाल पर, कई विध दौड़त कूदत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -67
- खेलत सब फना में, बोलें चालें सब फना । सब जानत आपे आपको, हम उड़सी ज्यों सुपना || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -26
- खेलते दिन जाए, हाँसी न समाए, प्रेम पिएं संग लाल । एक ठेक देतियां, रेती में गड़तियां, खेल होत कमाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -19
- खेलते बोलते नाचते, या देखें खेल लराए । सो सब वास्ते रूहन के, कई विध खेल कराए || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -33
- खेलने वाली सातों घाट की, हक प्रेम सुराही पिलावत । रूहें सुपने न छोड़ें कदम को, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -18
- खेलावत हक बोलाए के, या पंखी या पसुअन । सो सब रूहों वास्ते, सब को एह कारन || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -32
- खेलें अर्स हौज टापू मिने, हक भेले चांदनी चढ़त । रूहें क्यों रहें इन कदम बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -32
- खेले एकै रात में, बृज रास जागन । बेर साइत भी ना हुई, यों होसी सब सैयन || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -34
- खेले पिछले साथ में, सात दिन ताई । अक्रूर चल्या बुलाए के, पोहोंचे मथुरा मांहीं || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -51
- खेलें मिलके रास जागनी, भेलें इहां से चौबीस हजार । करसी लीला बरस दस तोड़ी, हाँस विलास आनन्द अपार || ग्रं - किरन्तन, प्र -54, चौ -14
- खेलें सब देखा देखी, ज्यों चले चींटी हार । यों जो अंधे गफलती, बांधे जाएँ कतार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -29
- खेले सब देखा देखी, ज्यों चले चींटी हार । यों जो अंधे गफलती, बांधे जाए कतार || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -33

SPJIN

- खेलें सब बेसुध में, कोई बोल काढ़े विसाल । उतपन सारी मोह की, सो होए जाए पंपाल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -21
- खेलें सब बेसुध में, कोई बोल काढ़े विसाल । उतपन सारी मोह की, सो होए जाए पंपाल || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -23
- खेलें हौज कौसर के बाग में, रूहें बन डारी झूलत । हक चरन सुपने न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -30
- खैर उतरी महीने हजार, गिरो दोऊ भई सिरदार । हुकम दिया साहेबें इनके हाथ, भई सलामती इनके साथ || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -36
- खैर उतरी महीने हजार, गिरो दोए भई सिरदार । हुकम दिया सब इनके हाथ, भई सलामती इनके साथ || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -26
- खोज करी सब दुनियां, किन पाई न सूरत हक । खोज खोज सुन्य में गए, कोई आगू न हुए बेसक || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -3
- खोज खोज और खोजहीं, आद के आद अनाद । पल पल नूर बढ़ता, श्रवनों एही स्वाद || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -27
- खोज खोज और खोजहीं, आद के आद अनाद । पल पल सब्द प्रकास ही, श्रवणों एही स्वाद || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -9
- खोज खोज के सब थके, कई कहावें फिरके बुजरक । पर तिन सारों ने यों कहया, गई न हमारी सक || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -6
- खोज खोज खट सास्त्र हुए, अनेक वचन विस्तार । करम उपासना ग्यान की, बानी थकी मांहें माया मोह अहंकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -30, चौ -9
- खोज थके सब खेल खसमरी । मन ही में मन उरझाना, होत न काहू गमरी || ग्रं - किरन्तन, प्र -47, चौ -1
- खोज थके सब वेद, और खोज्या कैयों कतेब । पर पाया न काहूं भेद, ताथें रही सबों उमेद || ग्रं - खुलासा, प्र -11, चौ -3
- खोज पाई जिन ए निध, धंन धंन सो बुध । दृढ़ करी सनेहसों, साथ को कही सुध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -19
- खोज बड़ी संसार रे तुम खोजो साधो, खोज बड़ी संसार । खोजत खोजत सतगुर पाइए, सतगुर संग करतार || ग्रं - किरन्तन, प्र -26, चौ -1
- खोज मोमिन ना थके, जोलों पार के पार पार । नित खोजे चरनी चढें, नए नए करे विचार || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -26
- खोज सोहागिन ना थके, जोलों पार के पारै पार । नित खोजे चरनी चढ़े, नए नए करे विचार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -8
- खोजी खोजे बाहेर भीतर, ओ अंतर बैठा आप । सत सुपने को पारथीं पेखे, पर सुपना न देखे साख्यात || ग्रं - किरन्तन, प्र -2, चौ -5

- खोजे कोई न पावहीं, वार ना पाइए पार । ले बुत बैठावें क्योहरे, कहें हमारा करतार || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -5
- खोजो खरा थई ते माटे, आ रचियो मायानो फंद । दुनी मुझाणी फेरा दिए, मांहें पडया रदे ना अंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -6
- खोज्या ना ढूंढ्या ना पढ़े, दिए मोमिनों हिस्से कर । जो एता झंडे किया रोसन, तो भी देखे न दुनी नजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -45
- खोटा थी खरो लीजिए, अवसर एवो आज । आ वेला अमृत घडी, प्रबोध कहे मेहेराज || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -57
- खोटा साटे साचू जड़े छे, एवी मली छे बाजार । लाभ अलेखे आ फेरा तणो, जो राखी सको वेहेवार || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -21
- खोटाने खोटू करूं, साचा सागर तारूं । वाणिए रस पाई करी, साथ ना कारज सारूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -137
- खोड होय भरतारमा, अने मूरख होय अजाण । तोहे तेने नव मूकवो, एम कहे छे वेद पुराण || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -29
- खोल आंखां तूं हो सावचेत, पेहेचान पिउ चित ल्याए । ले गुन तूं हो सनमुख, देख परदा उड़ाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -5
- खोल आंखें रूह नूर की, क्यों नूर न देखे बेर बेर । क्यों न आवे बीच नूर के, ज्यों नूर लेवे तोहे घेर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -10
- खोल खजाना धनिएँ सब दिया, अंग मेरे पूरा न ईमान । सो ए खोया मैं नींद में, करके संग सैतान || ग्रं - किरन्तन, प्र -99, चौ -6
- खोल देखो एक इस्क को, तो कई सुख अर्स अपार । सो सुख लेसी कर बेवरा, जो होसी निसबती हुसियार || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -18
- खोल न सकें पढ़ें अल्ला कलाम, सो खोले उमी सब मेहेर इमाम । अव्वल एही बांधी सरत, खुले माएने जाहेर होसी कयामत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -31
- खोल बका अर्स मोहोलात, और बाग हौज जोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -16
- खोल हकीकत मारफत, बताए कयामत के दिन । कई विध बंध धनिएँ बांधे, अपनी उमत के कारन || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -36
- खोलने न दे आंख अंदर, दिल पर दुस्मन जोरावर । पातसाही करे सबों के दिल पर, ए जो बैठा ले कुफर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -35
- खोली अग्यारहीं सदी मिनें, ए जो किताब फरकान । मार दज्जाल करे एक दीन, मिलाए कयामत निसान || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -95
- खोली इलमें सब किताबें, या कतेब या वेद । सब खोले मगज मुसाफ के, माहें छिपे हुते जो भेद || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -63

- खोल्या नूर पार इमामें, अर्स अजीम बका द्वार । कराया सिजदा हजूर, इस्क पूरा दे प्यार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -13
- खोल्या नूर पार इमामें, अर्स अजीम बका द्वार । कराया सिजदा हजूर, इस्क पूरा दे प्यार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -25
- खोवे जोस बंदगी खोवे, और साहेब की दोस्ती । बिना इस्क जो बुजरकी, सो सब आग जानो तेती || ग्रं - किरन्तन, प्र -102, चौ -6
- ख्वाब की अकल छोड़ के, कहूं अर्स के कलाम । हक बका जाहेर करूं, अखंड सुख जे ठाम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -2, चौ -18
- ख्वाब के सुख कारने, किया आपसों छल । सब्द ना सुने रसूल के, हाए हाए खाए गोते बिना जल || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -20
- ख्वाब देखाई साहेबी, और अर्स की हैयात । ए दोऊ तफावत देख के, अंग में सुख न समात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -4
- ख्वाब पैदा बका जिमी से, पर देखे न बका को । एक जरा बका आवे जो ख्वाब में, तो सब ख्वाब उड़े तिनसों || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -112
- ख्वाब बल पसुअन का, देखलाया तुम को । कैसा बल अर्स पसुअन का, विचार देखो दिल मों || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -65
- ख्वाब बैठ इन अर्स में, हमें देखाया तुमको । महामत कहे ए मोमिनों, पेहेचान लीजो दिलमों || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -45
- ख्वाब वजूद दिल मोमिन, हकें कहया अर्स सोए । अर्स तन मोमिन दिल से, ए केहेने को हैं दोए || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -24

ग

- गए अवसर सूं थाय पछे, धन गए हाथ सहु घसे । मांहें हांण बाहेर सहु हसे, ते तो मांहेंनी मांहे रडसे || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -69
- गगन पाताल मेर सिखरों, अष्टकुली बनाए । पचास कोट जोजन जिमी, सागर सात समाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -9
- गंज खोलसी इस्क का, मोहोर हुती जिन पर । लेसी अछूत प्याले मोमिन, हर्के खोली मोहोर फजर || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -22
- गज मल कंस को कारज कियो, उग्रसेन को टीका दियो । काला ग्रह में दरसन दिए जिन, आए छुड़ाय बंध थें तिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -53
- गजब हुआ दुनी पर, बैंच लिया फरमान । हादी भेजे नामे वसीयत, इत रया न किनों ईमान || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -42
- गझ पिरी जो आसिक, कडी न के के चोए । जे पोन कसाला कोडई, त वर मंझाई रोए || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -19

- गढ़ते सरफा करूं अति घन, जानों बड़ी छोही उतरे जिन । ए सरफा में फेर फेर करूं, अखंड धनी गुन हिरदे धरूं || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -4
- गण तूं हिकडो न्हार संभारे, संदो सिपरियन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -15, चौ -2
- गणा डिठम पाहिजा, जडे न्हारयम दिल धरे । हे पण गुणो खुदीय जो, जे फिरी न्हारयम सहूर करे || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -29
- गंथो जाली दोरी बिना, आप बांधत हो अंग । अंग बिना तलफत हो, ए ऐसे खेल के रंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -4
- गंथो जाली दोरी विना, आप बांधो मांहें अंग । अंग विना तमे तरफडो, कांई ए रामतना रंग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -11, चौ -4
- गधा एता बड़ा तो है नहीं, कहया हवा तारीक मकान । ए जो कुंन केहेते पैदा हुई, सिफली दुनी जहान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -4
- गधा बड़ा दज्जाल का, कहया ऊंचा लग आसमान । पानी सात दरियाव का, पोहोंच्या नहीं लग रांन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -3
- गयो अवसर फेर आयो है हाथ, चेतन कर दिए प्राणनाथ । तब जो वासना बाई रतन, लीलबाई के उदर उतपन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -2
- गरक हुए मोह गुमानमें, जनम गमावत वाद । या बिध खैचें आप में, कहें हमें होत सवाब || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -21
- गलित गात अंग भीगल, ए दिल हकीकी गलतान । ए वाहेदत हक हादी रूहें, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -38
- गलियन में दुरजन देखे, तोमें नहीं विचार । तूं कामी कछू ना देखही, पर सासुड़ी दे मोहे गार || ग्रं - किरन्तन, प्र -46, चौ -3
- गली माहें कई गलियां, कई चौक चबूतरे अनेक । खिड़की माहें कई खिड़कियां, जित देखू जानों सोई विसेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -5
- गले बाथ सब लेय के, मिल बैठेंगे एक होए । तो फरामोसी कहा करे, होए न जरा जुदागी कोए || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -43
- गल्या पखे बीजो घाट, केम करी थासे । बीजो घाट विना मोहजल, केम रे मुकासे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -52
- गाए गोधा अंन वस्तर पेहेराव्या, गोप सकल दातार । केहेने धन केहेने भूखन, नवनिध दे दे कार || ग्रं - किरन्तन, प्र -51, चौ -9
- गांगा चांपा और जेता, ए मामा तीनों के नाम । दखिन दिस और पछिम दिस, बसे फिरते गाम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -19
- गांगो चांपो अने जेतो, ए मामा त्रणेना नाम । दखिण दिस ने पछिम दिस, वीटी बेठा गाम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -9

- गांठे वाले रसायन सों, अर्स के पांचों नंग । घूघरी नाकों बीच पीपर, फुमक करत जवेरों जंग || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -104
- गाड़े जालें हाथ अपने, रूदन करें जल धार । सनमंधी सब मिलके, टल वले नर नार || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -19
- गाड़ें जालें हाथ अपने, रूदन करें जलधार । सनमंधी सब मिलके, टलवलें नर नार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -17
- गाल आंजी जाणूं असीं, जे डिंन्यू असां के इलम । कांध हित न भेणी कुछण, गाल्यूं घरे थींदयूं खसम || ग्रं - सिंधी, प्र -13, चौ -10
- गाल गुझांदर ई थेई, तूं पाणई जांणे । हे गूझ्यू गाल्यूं तो रे, के के चुआं हांणे || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -48
- गाल तणो रंग कह्यो न जाय, अधुर परवाली नी भांत । दंत सोभे रंग दाडिम नी कलियो, हरवटी अधुर वचे लांक || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -51
- गाल निपट आए थोरडी, हेडी भारी को केइए । सभनी गाले समरथ, पण दिल धुंडी केई रखिए || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -45
- गाल मिठी वलहा, सणाए डेखार धाम । दीदार डेयम पांहिजो, मूं अंगडे थिए आराम || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -20
- गाल रंग अति उज्जल, गेहेरा अति कसूंबाए । मेहेबूब मुख देखे पीछे, रूह खिन न सहे अंतराए || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -65
- गाल सोभा अति देत हैं, क्यों कहूं इन मुख छब । उज्जल लाल रंग सुन्दर, क्यों कहूं सलूकी फब || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -70
- गाल्यूं मूंजे दिलज्यूं, सभ तूंहीं सुजाणे । हे सभेई तोहिज्यूं, तो करायूं पांणे || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -38
- गाल्यूं सभे रांद ज्यूं, थींदयूं मय खिलवत । थीदा खिलवत में सुख खेलजा, गिडां खेलमें सुख निसबत || ग्रं - सिंधी, प्र -12, चौ -16
- गावती सुचंग रंग, आणती अति उमंग । स्वर एक गाय संग, अलवेली अति अंग, वास्नाओ सुगंध || ग्रं - रास, प्र -13, चौ -11
- गावेगा कुरान को, असराफील सूर कर । तब फिरसी सब फरिस्ते, एह बात चित्त धर || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -45
- गिन तूं सुख बेसक के, जो इलम दिया नसीहत । मेहेर करी मेहेबूब ने, हके जान निसबत || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -5
- गिंन स्याबासी जेडिएं, कर कां एहेडी पर । हाणे को थिए विसरी, जे तो पिरी सुजातां घर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -27, चौ -13
- गिनती न होए एक जात की, तो क्यों कहूं इनों को बल । एक चिड़िया उड़ावे कोट ब्रह्मांड, तो कौन बल फीलों मिसल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -58

- गिनती फिरके केते कहूं, कई हुए बीच जहूदान । कहे ताबे दज्जाल के, जलसी जो कुफरान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -32
- गिनान नी इहां गम नहीं, सब्द न पामे सेर । गिनान दीवो तिहां सूं करे, ब्रह्मांड आखो अंधेर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -30
- गिनान भुंडा रे एणे समे, नव कीधो अजवास । एवी सी मूने भोलवी रे, में कीधो तारो विस्वास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -25
- गिंनी गुझां सुख पिरनजा, रहे मंझ सैयन । पांण गुझ मासूक जो, न बुझाए बियन || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -10
- गिरद अर्स के देखिया, जहां लो नजर पोहोचत । एकल छत्री बन की, छेदर ना गेहेरा कित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -23
- गिरद झरोखे के थंभ फिरते, जदी कई जिनसों जोत धरते । नव भोम रंग बरनन, तापर खुली चांदनी उठत किरन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -63
- गिरद मोहोल बराबर, तरफ तले संकड़ा । मोहोल बढ़ते बराबर, चढ़ते अति चौड़ा || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -5
- गिरदवाए कठेड़ा चांदनी, क्यों कहूं खूबी जुबांन । अर्स एक जवेर का, एकै बिध रंग रस जान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -93
- गिरदवाए तखत के, कई बैठियां तले चरन । जानों जिन होवें जुदियां, पकड़ रहे हम सरन || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -10
- गिरदवाए नूर हिंडोले, झलकत नूर जंजीर । क्यों कहूं झूले नूर के, रूहें हँसत मुख नूर नीर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -94
- गिरदवाए फूल चेहेबच्चे, ए सोभा जुदी जुगत । अन्तर आंखें खोल के, ए सुख देखो अतंत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -150
- गिरदवाए फेर देखिए, आकास न माए झलकार । मोहोलातें सब नूर की, जुबां कहा केहेसी विस्तार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -6
- गिरदवाए बड़े द्वार मेहेराबी, ए मोहोल सोभा लेवत । इत खेले रूहें कदम तले, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -73
- गिरदवाए मानिक बने, बीच हीरे की जोत । किनार ऊपर जो नीलवी, हुई जिमी अंबर उद्दोत || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -41
- गिरदवाए मेहेराव झरोखे, फेर देखिए तरफ चार । इन मुख खूबी तो कहूं, जो होवे कहूं सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -2
- गिरदवाए सब हिंडोले, जुदी जुदी जिनसों अनेक । बारे हजार बोलत, स्वर एक दूजे पे विसेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -118
- गिरवान दोऊ देखत, अति सुन्दर अनूपम । मुख आगे मासूक के, निरखत अंग आतम || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -26

- गिरो आई लैल के खेल में, सो तुमें मिलसी आए । दिल साफ इनों के करके, अर्स में लीजे उठाए || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -42
- गिरो उठाई अदल से, वास्ते पैगंमरों । देवें ग्वाही आखिर को, ऊपर मुनकरों || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -9
- गिरो उतरी लैलतकदर में, कह्या तिनमें का है तूं । खोल दे पट अर्स का, ज्यों आए मिले तुझको || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -8
- गिरो एक बुजरक कही, रूह अल्ला आए तिन पर । इत जादे पैगंमर दो भए, एक नसली और नजर || ग्रं - किरन्तन, प्र -121, चौ -8
- गिरो तीसरी नूर बिलंदसे, ताको कौल फैल हाल नूर । रूहें अर्स दिल उतरी लैलमें, करें हमेसा हक जहूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -77
- गिरो देखत जो ब्रह्मांड, सो तो कछुए नांहें । सांच निमूना दूसरा, कोई नाहीं अर्स के माहें || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -80
- गिरो नजीकी फरिस्ते, इनका नूर-मकान । ए मलकूत में रेहे ना सकें, चढ़ ना सके लाहूत आसमान || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -58
- गिरो पाहिजी आसिक, चाऊं मंझ हिंनी । जा पर पसां पाहिजी, त असां हे अकल के डिंनी || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -5
- गिरो फरिस्ते इत रहे, जबराईल मकान । एह आगे ना चल सके, याको याही ठौर निदान || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -50
- गिरो फरिस्ते नजीकी, बका नूर मकान । उतरे मलायक इत थे, सो पोहोंचसी कर पेहेचान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -21
- गिरो बचाई साहेब ने, तले कोहतूर हूद तोफान । बेर दूजी किस्ती पर, चढ़ाए उबारी सुभान || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -12
- गिरो बनी असराईल, जित महंमद पैगंमर । जिन कौल मकसूद सबन के, सो बीच इन आखिर || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -11
- गिरो बनी असराईल, सो मिसल गाजियों जान । होए कबूल बंदगी उनसे, इन विध कहे फुरमान || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -10
- गिरो माफक सिरदार चाहिए, जैसा कया रसूल । खैच लेवें दिल साथ को, सब पर होए सनकूल || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -21
- गिरो मोमिन नाम अनेक हैं, जुदे जुदे कहे नाम । बोहोत नामों बुजरकियां, लिखी मांहें अल्ला कलाम || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -86
- गिरो रूहें फरिस्ते लैल में, किन वास्ते आए उतर । कुंन केहेते खेल पैदा किया, ए किनने किन खातिर || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -19
- गिरोह एक बखत आखिर, आबिद को खुदाए कह्या यों कर । सिताबी होवे रूखसद , तुझ पर गुनाह नाहीं कद || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -19, चौ -7

- गिलम जोत फूल बेलियां, जोत ऊपर की आवे उतर । जोतें जोत सब मिल रहीं, ए रंग जुदे कहूं क्यों कर || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -39
- गीत गाए रंग थाय, विविध पेरे विलास । जुवती जोडे एकठी दोडे, मारा वालाजीसुं करवा हांस || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -9
- गुजरी अर्स बका मिने, मजकूर जो मुतलक । सो इलम हमें ऐसा दिया, जिनमें जरा न सक || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -63
- गुजरे हैं हद से काफर, दूर दराज जानी थी आखिर । दुख लंबे हुए तिन कारन, यो मता पाया दोजखियों हाल इन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -38
- गुझ अर्थ यामें लिखे, सो समझे कैसे कर । अर्थ ऊपर का लेय के, अकस लेत दिल धर || ग्रं - खुलासा, प्र -14, चौ -8
- गुझ का गुझ कौन पावहीं, बिना मेंहेंदी इमाम । ए रूह अल्ला जानहीं, मेरे अल्ला के कलाम || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -6
- गुझ तो तुमको कहूंगी, सक न राखू किन । पर पेहेले कहूं नेक मोमिनों, जो हमारा चलन || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -1
- गुझ थे मोमिन अर्स के, ताकी जाहेर हुई खबर । सो बैठे घेर इमाम को, हुई बधाइयां घर घर || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -7
- गुझ माएने कौन लेवहीं, जो जाहेर लिए न जाए। ए सब खोले रसूलें, जो मैं दिए बताए || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -53
- गुझ मासूक का आसिक, सो केहेना न कासों होए । जो कई पड़ें कसाले, तो बाहेर माहें रोए || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -19
- गुझ सुख लेवे हक के, रहे सोहोबत मोमिन । अपना गुझ मासूक का, कबूं कहें न आगे किन || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -10
- गुझका गुझ और जो सुन्या, सो लिख्या न रसूले कुरान । जांने काजी जुबां केहेलाए के, कर देऊ काजी की पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -25
- गुझांदर रूहन जो, सभे तूं जाणे । कुरो चुआं विच वडी थेई, मूं पाहिजेडी न पांणे || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -33
- गुण केटला कहूं मारा वाला, अमसू कीधां अति घणा जी । आणी जोगवाई ने आणी जिभ्याए, केम केहेवाय वचन तेह तणा जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -36, चौ -1
- गुण जे कीधा मोसू मारा वालैया, ते आणी जिभ्याए नव जाय कया । देह सारूं हूं लखू प्रमाण, एक अर्ध अणूमात्रनुं काढू निरमाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -8
- गुण तो पाछल हजी भस्या भंडार, गुण जेटला भंडार में गणियां आधार । गणतां गणतां पाछल दीसे अपार, तेहेनो निस्माण काढवो निरधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -43

- गुण धणी जातां रे जीव, ताहरो किहां हतो रे काल । करम कोढियो ढेड तूं, थयो रे चंडाल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -33
- गुण ने सघला मली रे, तमे मोसू थया अवला । मारो धणी रे चालतां, तमे कां नव थया सबला || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -26
- गुण पख इंद्री अवला, करूं ते सवला साथ । करी निरमल सुख दऊं नेहेचल, करूं ते सहुने सनाथ || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -25
- गुण पख इंद्री वस करी अबलीस ने, अंगना अंग थाप्यो दई धिकार । अर्थ उपले एम केहेवाइयो वासना, फरी एणे वचने दीधी फिटकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -38, चौ -3
- गुण पचवीसे बांधया रे, बांधया ते नवे अंग । इंद्री पखे गुणे बांधया, काई दृढ करी माया संग || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -26
- गुण मुख बोली भलूं न मनायूं, अवगुण न राखू छानो । सत वस्त देवाने सत भाखू, एमा दुख मानो ते मानो || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -13
- गुण लखवा वालो ते एह, आपणमां बेठा छे जेह । इंद्रावती कहे आ ते रे ते, जेणे गुण कीधां ते ए रे ए || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -35, चौ -14
- गुण सघले घारण आवियो, अने जीव कायामां बेसी रह्यो । संघला गुण काया मंझार, कोणे नव लाध्यो अवसर आणी वार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -74
- गुणा केयम अजाणमें, गुणा डिठम मय अजाण । दम न चुरे रे हुकम, जडे धणी पूरी डिंनी पेहेचान || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -31
- गुणा डिठम कई पाहिजा, से लाथा तोहिजे इलम । कोए पाक न्हाए हिन दुनीमें, से असांके केयां खसम || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -18
- गुणा डिठम पाहिजा, जडे थेयम जाण । गुणा डिठम से पण खुदी, तरसीस पसी पांण || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -30
- गुणा डिठम पाहिजा, धणी जा आसांन । उमर वेई धांऊं पाईदे, जफा डिठम जाण || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -24
- गुन अंग इंद्री आकार के, आग पड़ो तुम पर रे । प्रेम न उपज्या तुमको, चलते धामधनी घर रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -11
- गुन अंग इंद्री देखो रे चलते, जो उलटे लगे संसार जी । एही दुस्मन विसेखे अपने, सो करत हैं सिर पर मार जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -26
- गुन अंग इंद्री नूर की, नूरै बान वचन । पिंड प्रकृत सब नूर की, नूरै केहेन सुनन || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -49
- गुन अंग इंद्री मेरे मुझसों, उलटे क्यों हुए दुस्मन रे । जिन समें हुआ रे बिछोहा, मेरे क्यों न हुए सजन रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -27
- गुन अंग इंद्री सबे घारन, कोई न जाग्या जीव के कारन । इन सूरमों किनहूं न खोल्या द्वार, जीव बैठा पकड़ आकार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -31

SPJIN

- गुन अंग इन्द्रियों की, पिउ बांधते गोली प्रेम काम । पेहेचान करते पोहोंचावने, सनमंध देख धनी धाम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -10
- गुन अंग सब नूर के, नूर इंद्री नूर पख । रीत रसम सब नूर की, प्रीत प्रेम नूर लख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -16
- गुन अवगुन सबके माफ किए, जो रहो या चलो हम संग । हम पीछे फेर न देखहीं, पिउसों करें रस रंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -88, चौ -14
- गुन एक अंग कह्यो न जावहीं, जो देखों दिल धर । तो गंज अलेखे अपार के, सुख कहूं क्यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -38
- गुन केते कहूं इन कदम के, जिन अर्स अखंड किया इत । ए कदम ताले तिनके, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -23
- गुन केते कहूं इन चरन के, आवें न मांहे सुमार। याही वास्ते खेल देखाइया, रूह देखसी देखनहार || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -2
- गुन केते कहूं मेरे पिउ जी, जो हमसों किए अनेक जी। ए बुध इन आकार की, क्यों कहे जुबां विवेक जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -36, चौ -1
- गुन गरीबन आई अकरमन, ना भई सनमुख सावधान । लाहा लीजे दौड़ धनी का, सो दिया गरीबी भान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -103
- गुन जेते महाप्रले भए, वाही जोस में लिख गुन कहे । बीच में स्वांस न खाया एक, ढील ना करी कछू लिखते विसेक || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -36
- गुन जो किए पिउ तुम इत आए, सो इन जुबां मैं कहे न जाए । देह माफक में लिखू परमान, एक पाओ लवे का काढूं निरमान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -9
- गुन धनी के गाते गाते, गई सारी आरबल । अवगुन अपने भाखते, उमर खोई ना सकी चल || ग्रं - किरन्तन, प्र -100, चौ -9
- गुन धनी के याद कर, पकड़ पिउ के पाए। सुखे बैठ सुखपाल में, देसी वतन पोहोंचाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -2
- गुन ना देखें काहू को, अवगुन लेवें सिरतान । आप पड़े बस इंद्रियों, कहें हम मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -34
- गुन नैनों के क्यों कहूं, रस भरे रंगीले । मीठे लगें मरोरते, अति सुन्दर अलबेले || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -5
- गुन पख अंग इंद्रियां, सबके जुदे जुदे स्वाद । तरफ अपनी बँचहीं, खेलत मिने विवाद || ग्रं - किरन्तन, प्र -33, चौ -6
- गुन पख अंग इन्द्री उलटे, करत हैं सब जोर । सो सब टेढ़े टाल के, कर देऊं सीधे दोर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -24
- गुन पख इंद्री सब विख के, विखै को सब आहार जी । आतम निरमल एक वतन की, सो तो कही निराकार जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -7

- गुन लिखने वालो सो एह, आपन मांहें बैठा जेह । इंद्रावती कहे दिल दे रे दे, जिन गुन किए सो ए रे ए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -35, चौ -14
- गुन सागर धनी चलते, क्यों किया ऐसा हाल रे । बज्रलेपी रे स्वाम द्रोही, जीव क्यों चूक्या चंडाल रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -34
- गुनाह एक अबलीस के, क्यों सब दुनी मारी जाए । पाक सरा हक अदल, सो ऐसे क्यों फुरमाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -49
- गुनाह एही सबन पर, ए जो झूठी सकल जहान । दावा किया वाहेदत का, पछतासी हुए पेहेचान || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -56
- गुनाह किया अजाजीलें, दुनी दिल लगी लानत । ढूंढें दज्जाल को बाहेर, पावें ना लिखी इसारत || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -22
- गुनाह तेरी उमत का, कुलफ मुंह मोतियन । देख दाहिने हाथ पर, जो हक मुख कहे सुकन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -5
- गुनाह नूरतजल्ला मिनें, पोहोंच्या रूहों का जित । कह्या गुनाह कुलफ मुंह मोतिन, दिल महंमद कुंजी खोलत || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -20
- गुनाह पोहोंच्या तिन अर्समें, इन दरगाह रूहन । दिल हकीकी ए कहे, अर्स कलूब मोमिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -74
- गुन्हे किए अजान में, गुन्हें देखे सो भी अजान । दम न ले बीच हुकमें, जब हके पूरी दई पेहेचान || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -31
- गुन्हे भी अपने तब देखे, जब मैं हुई हसियार । देखी हुसियारी ए भी खुदी, डरी हुई खबरदार || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -30
- गुम हुई जिनों की अकलें, होए नजीक न तिनों हक । जान बूझ न छोड़े इन जिमी, तिन से रेहेनी न होए बेसक || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -54
- गुरगम टाली ए गांठ न छूटे, केमे न थाय रे नरम । मांहेली कामस केमें न जाय, जो कीजे अनेक श्रम || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -73
- गुरगम टाली बंध न छूटे, जो कीजे अनेक उपाय । जेणी भोमें रे आप बंधाणां, ते भोम न ओलखी जाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -59
- गुरज गुरज तीन द्वारने, तीनों भोमों में । कई एक ठौरों चरनियां, ऊपर चढ़िए जिनों से || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -16
- गुरज दोऊ के बीच में, गिरत चादरें चार । चार चार हर एक में, उतरत सोले धार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -9
- गुरज दोए हर द्वारने, इत बड़े दरबार । सो तेज जोत नूर को, कयो न जाए सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -54
- गुरज हजार बीच चांदनी, सब गुरज बराबर । कई कोट जुबां इन खूबी की, सिफत न सके कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -40

- गुलाबी ने कफी डोलरिया, दूधेली ने दोफारी । कमल फूल ने कनीयल केतकी, मोगरेमां झरमरी || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -20
- गूंगे कहे जालिम हुकम, वे सबके तले न ले सकें दम । पढ़े जुबां काटे पीव लोहू बहे, झूठे फैल मुख सीधे कहे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -26
- गूंजे भमरा स्वर कोयलना, घूमे कपोत चकोर । सूडा बपैया ने वली तिमरा, रमे ते वांदर मोर || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -32
- गूंथो जालें दोरी बिना, आप बांधत हो अंग । अंग बिना तलफत हो, ए ऐसे खेल के रंग || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -7
- गेहूं जौ और कह्या घास, काफर फरिस्ते रूहें उमत खास । फरिस्ते जो गेहूं इसलाम, और घास कह्या सब काफर तमाम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -17
- गेहेन घारण तमे परहरो, टालो ते तिमर घोर । उठीने अजवाले जुओ, त्यारे देखसो माहेला चोर || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -45
- गेहेरा अति सुन्दर जल, बीच में बन्यो है मोहोल । जल ऊपर मोहोल जो छाजे, बीच बीच में बन विराजे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -41
- गेहेरा रंग जो केसरी, लेत दावन झई इजार । सेत केसर दोऊ रंग के, सोभा होत सुखकार || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -73
- गेहेरी छाया अति निपट, देखत नहीं आसमान । जमुना धाम के बीच में, ए बन सोभा अमान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -30
- गेहेले वाले अमने कीधां गेहेलड़ा, मलीने गेहेलाइए छलया । जात कुटमथी जूआ थया, हद छोडी वेहदमां भलया || ग्रं - किरन्तन, प्र -49, चौ -4
- गैब आवाज हुई इसारत, उतरी इलाही इन सरत । आठ महीने हुए तिन पर, तब पेहेली किताब भई मयसर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -23
- गैब खिलवत जाहेर तो हुई, जो हमें कराई ए । ए खबर नहीं नूर को, करी लदुन्निएँ जाहेर जे || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -4
- गैब बातें मेहेबूब की, बीच बका खिलवत । हकें भेजी मुझ ऊपर, रूह-अल्ला ल्याए न्यामत || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -1
- गैबी मार दज्जाल का, सब में गया पसर । सो साफ हुई सब दुनियां, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -13
- गैर दीन बेचून कहे, पर क्यों कहे मुसलमान । कहावें दीन महंमदी, तो इत कहां रया ईमान || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -25
- गोकल मिने आप अपने, घर सब कोई आया । खबर ना पड़ी काहूं को, ऐसी रची माया || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -41
- गोकुल आखो कीबूं गेहेलू, अने वालो तो वचिखिण । जिहां मलूं तिहां एहज वातो, हांस विनोद रमण || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -49

- गोकुल जमुना त्रट भला, पुरा ब्यालीस बास । पुरा पासे एक लगता, ए लीला अखंड विलास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -12
- गोकुल जमुना त्रट भलो, पुरा बेतालीस वास । पासे पुरो एक लगतो, ए लीला अखंड विलास || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -2
- गोकुल माहें आप आपणे, घेर सह कोई आव्या । खबर न पडी केहेने, एवी रची माया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -31
- गोकुल सख्प पधारियो, तेहेने न कहिए अवतार । ए तो आपणी अखंड लीला, तेहेनो ते कहूं विचार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -14
- गोता खंदे वेई उमर, पट सूके रे पाणी । जे तो डिंनी हेत करे, सा टरे न सत्राणी || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -46
- गोते न खांऊं बिना जल, जो आवे इस्क । तो हुकम खुदी न कछू गुना, पट दम न रखे बेसक || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -16
- गोप रेहेसे साध एणे समें, ते प्रगट केणी पेरे थाय । वख वधारया बह विध तणा, ते खाल्या कम करी जाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -3
- गोप हुता दिन एते, बड़ी बुध का अवतार । नेक अब याकी कहूं, ए होसी बड़ो विस्तार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -24
- गोफणडे घुघरडी फरती, अने बोलंती रसाल । फरता पाना दोरी बंध सोभे, वेण लेहेके जेम व्याल || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -64
- गोफणडे फमक जे दीसे, तेनो लाल कसवी रंग । जडाव मांहे माणक ने मोती, पाना पुखराज नंग || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -44
- गोवरधन को ढांपिया, एक बूंद न हुआ दखल । आग लोहा पानी प्रले के, सोस लिया सब जल || ग्रं - किरन्तन, प्र -110, चौ -5
- गोवाला नासी जाय अलगां, अमें वलगी राखू वालो पास । पछे एकांते अमें वालाजी संगे, करूं वनमां विलास || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -38
- गोवाला संग रमे वालो, सेर पाणी वाट । विनोद हांस अमें आवू जावू, जल भरवा एणे घाट || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -26
- गोविंद के गुन गाए के, तापर मांगत दान । धिक धिक पड़ो ते मानवी, जो बेचत हैं भगवान || ग्रं - किरन्तन, प्र -26, चौ -4
- गोस कुतब पैगंमर, ओलिए अंबिए कई नाम । ताए कई बिध दई बुजरकियां, साहेब के समान || ग्रं - किरन्तन, प्र -121, चौ -4
- गौपद वछ रे एणे समे, सुकजीए निरधारियों ते सार । त्राटकडे रे त्रटका करिया, कांई बंध हता जे संसार || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -17
- गौर केहेती हों मुखसे, सो देख के अंग इतका । ए जुबां दृष्ट इत फना की, सोभा क्यों कहे कण्ठ बका || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -16

SRJN

- गौर गलस्थल गिरदवाए, और बीच नासिका गौर । स्याह पांखड़ी कमल पर, सोभित टेढ़ियां नूर जहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -154
- गौर गलस्थल धनी के, उज्जल लाल सुरंग । झाई उठे इन नूर में, करन फूल के नंग || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -110
- गौर गाल दोऊ निपट, मांहें झलकत मोती लाल । ए सोभा कान की क्यों कहूं, इन जुबां बिना मिसाल || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -158
- गौर गाल मुख उज्जल, मांहें गेहेरी लालक ले । ए जुबां सुख सोभा क्यों कहे, अर्स अंग हक के || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -21
- गौर गाल सुन्दर हरवटी, फेर फेर देखों मुख लाल । अर्स कर दिल मोमिन, मांहें बैठे नूरजमाल || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -74
- गौर चरन अति सोभित, और सिनगार भखन सोभित । ए अंग संग न्यारे न कबहूं, अति बारीक समझन इत || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -69
- गौर निरमल नासिका, सोभा न आवे मांहें सुमार । आसिक जाने मासूक की, जो खुले होए पट द्वार || ग्रं - सिनगार, प्र -15, चौ -1
- गौर निलवट रंग उज्जल, जाऊं बल बल मुखारबिंद । ए रस रंग छबि देखिए, काढ़त विरहा निकन्द || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -53
- गौर पांखड़ी दो लांक की, लाल पांखड़ी दो तिन पर। अधुर अधुर दोऊ जुड़ मिले, हुई लांक के सरभर || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -139
- गौर मुख अति उज्जल, और जोत अतंत । ए क्यों रहे रूह छबि देख के, ऐसी हक सूरत || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -16
- गौर मुख लाल अधुर, ए जो सलूकी सोभित । एह जुबां तो केहे सके, जो कोई होए निमूना इत || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -27
- गौर रंग अति गालों के, ए रंग जानें इनके तन । अचरज अदभुत वाही देखें, जो हैं अर्स मोमिन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -71
- गौर रंग अति गालों के, माहें गेहेरी लालक लिए । दोऊ भ्रकुटी बीच नासिका, ऊपर सुन्दर तिलक दिए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -45
- गौर रंग जामा उज्जल, जड़ बैठा अंग ऊपर । अति बिराजत इन विध, ए खूबी कहूं क्यों कर || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -81
- गौर रंग लालक लिए, सोभा सुन्दरता अपार । जो एक अंग बरनन करूँ, वाको भी न आवे पार || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -18
- गौर हक अंग केहेत हों, ए गौर रंग लाहूत । और कहूं सोभा सलूकी, ए छबि है अदभूत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -58
- गौर हरवटी अति सुन्दर, बीच लांक ऊपर अधूर । बल बल जाऊं मीठे मुख की, मिल दोऊ करें मजकूर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -46

- गौर हरवटी अति सुन्दर, या देख के लांक सलूक । लाल अधुर देख ना गया, लोहू मेरे अंग का सूक || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -62
- ग्यान मेरा तिन समें, क्यों ना किया वतन उजास । तिन समें दगा दिया मुझको, मैं रही तेरे विस्वास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -26
- ग्यान लिया कर दीपक, अंधेर आप नहीं गम । जोत दीपक इत क्या करे, ए तो चौदे तबकों तम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -23
- ग्यान लिया कर दीपक, अंधेर आप ना गम । इत दीपक उजाला क्या करे, ए तो चौदे तबकों तम || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -23
- ग्यान संग स्यानप मिली, तित क्यों कर आवे दरद । ना आपे ना दरद किनें, सो होए जाए सब गरद || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -30
- ग्यानी अनेक कथें बहु ग्यान, ध्यानी कई बिध धरें ध्यान । पर ए सबही सुन्य के दरम्यान, छूट्या न काहूं संसे उनमान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -9
- ग्याने प्यारी स्यानप, दरदे सेती वैर । दर- प्यारी दिवानगी, स्यानप लगे जेहेर || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -34
- ग्रास किए त्रिगुन त्रैलोकी, ऐसो मोह अंध अहंकार । सुध न होवे काहूं धाम धनी की, पोहोंचने न देवे पुकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -18
- ग्रीखमनी रूत आवी रे वाला, वेलडियो सोहे वनराय । फूल फल दीसे रे अति उत्तम, एणी रूते वन सोहाय || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -2
- ग्वाही भी साहेब की कही, सौंह भी खुदाए की खाई सही । एक कौल बीच बंदा कहया, पैगंमर भी एही भया || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -21, चौ -6

घ

- घट बढ़ अर्स में है नहीं, मिटे न कबूं रोसन । तिन सरूप को इन मुख, क्यों कर होए बरनन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -6
- घट बढ़ अर्स में है नहीं, हक पूरन हमेसा । हम इस्कें लें यों अर्स में, सब सुख पूरनता || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -40
- घडता कोसर करूं अतिघणी, जाणूं रखे मोटी छोही पडे तेहतणी । झीणियों टांको मारे हाथो थाय, अणियों मांहें नहीं मूकू मणाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -4
- घडी एक रहीने स्यामाजी बोल्या, आपणने मूक्यां निरधार । दोष दीठो जो आपणो, तो वनमां मूक्यां आधार || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -7
- घड़े जड़े ना किन किए, दिल चाया सब होत । दिल चाया मीठा बोलत, दिल चाही धरे जोत || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -128
- घड़े जड़े ना समारे, ना सांध मिलाई किन । दिल चाहे नंगों के असल, वस्तर या भूखन || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -86

- घणं रे दोहेली छे जम जाचना, तमें मको रे परा छल छद्रम । वार वार वारूं डूं तमने, विस्मी रे जमपुरी विखम || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -6
- घणा डीह घारिम कुफरमें, कर कूडे से संग । कंने सुणी संग तोहिजो, लगी न रूह जे अंग || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -6
- घणा दिवस में न जाण्यूं मारा वाला, वचन तणी जे निध रे । जीवना नेत्र उघाडी करीने, तमे दया करी मूने दिध रे || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -3
- घणी खंडनी कीधी व्यासजी नी, पूरी वचनोने श्रवणा न दीधी । वाणी सर्वे नाखी उडाडी, अवतारनी लाज न कीधी || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -102
- घणी विधे हूं घोली घोली जाऊं, मंदिर ने वली द्वार । भामणां लऊ ते भोमतणां, जिहां वसो छो मारा आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -4
- घणुए कहयूं रे बेहेनी, मूने मूल सनेह । पण हूं निगमी बेठी रे, निध हाथ आवी जेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -71
- घणुए भाइयां न कुछां, पण कुछाइए थो तूं । इस्क रे कुछण की रहे, न डिंनी सबूरी मूं || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -11
- घणूं दुख देखे जीव जातां, वली ते गूंथे तत्काल जी । केम दोष दीजे करोलियाने , एहेना घर थया मांहें जाल जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -14
- घणूं धन ल्याव्या धणी धामथी, बहु विधना प्रकार । ते धन सर्वे में तोलियूं, तारतम सहुमां सार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -54

- घणूज साले विरह वालैया, जे दी• तमे अमने । केटली वात संभारूं दुखनी, हवे सूं कहूं तमने || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -23
- घणों द्रप भुल चुक जो, ही हकजी खिलवत । सचो रचे सच से, भुल न हल्ले हित || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -58
- घणो सा गेहेंदी हथडा, जा चुकंदी हेर । निद्र लथे ओरातवी , पण वरी हथ न ईदी हीय वेर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -10
- घमझणाझण, जोड रणारण, बिछुडा ठणाठण, छेक वाले फेरी फरी || ग्रं - रास, प्र -30, चौ -4
- घर आए ना पेहेचाने, कहे विध विध के वचन । कान आंखां फूटियां, और फूटे हिरदे के नैन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -4
- घर का धनी अखंड फल पावे, सो इत क्यों सोवे करारे । गफलत को न छोड़े आपे, फेर फेर हमको मारे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -94
- घर घर आनंद उछव, उछरंग अंग न माए । विलास विनोद पिया संगे, अह निस करते जाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -41
- घर घर आनंद ओछव, उछरंग अंग न माय । विनोद हांस वालाजी संगे, अहनिस करतां जाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -30

- घर घर उछव बाजे रस बाजे, चोहोटे चौवटे थेई थेईकार । पसु पंखी साधू कोई न दुखी, सुखे खेलें चरें चुगें करार || ग्रं - किरन्तन, प्र -54, चौ -9
- घर घर होसी सादियां, उड़ गई गफलत । जो कह्या सो सब हुआ, आई ए आखिरत || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -42
- घर दीसे छे पाधरा, बीजी बे लीला जे कीधी । ते ए सर्वे सांभरे, वली आ लीला त्रीजी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -107
- घर देखाडी जगवी, आप आवी आवार । कर ग्रहीने कंठ लगाडी, त्यारे हूं उठी निरधार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -45
- घर मंदिर सहु वीसरया, वीसरया सेठ समरथ । माल लुसानूं जाय मूरखो, तमें कां निगमो ए ग्रथ || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -32
- घर मोमिन आग इस्क में, हक अगनी के पालेल । सोई इस्क आग देखावने, ल्याए जो मांहें खेल || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -8
- घर श्री धाम अने श्रीकृष्ण, ए फल सारतणो तारतम । तारतमे अजवायूँ अति थाय, आसंका नब रहे मन महे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -23
- घर ही में न्यारे रहिए, कीजे अंतरमें बास । तब गुन बस आपे होवहीं, गयो तिमर सब नास || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -27
- घरों आए पीछे सबन के, छठी भोम सुखपाल । बने बिराजे मोहोल में, अति बड़ी पड़साल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -103
- घाट अनार का ए बन खूबी देत हैं, चल्या दोरी बंध हार । फल नकस की कांगरी, लटकत जल अनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -14
- घाट अनार को अति भलो, एकल छत्री सब जान । घट बढ़ काहूं न देखिए, छाया गेहेरी सब समान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -16
- घाट अवघाट सिलपाट अति सलवली, तहां हाथ न टिके पपील पाए । वाओ वाए बढ़े आग फैलाए चढ़े, जले पर अनल ना चले उड़ाए || ग्रं - सनंध, प्र -6, चौ -5
- घाट अवघाट सिलपाट अति सलवली, तहां हाथ ना टिके पपील पाए । वाओ वाए बढ़े आग फैलाए चढ़े, जले पर अनले ना चले उड़ाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -3, चौ -5
- घाट के दोऊ तरफ पुल, मिले दोऊ तरफों इन । बन नारंगी चन्द्रवा, पोहोंच्या दिवालों रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -30
- घाट जांबू अति सोभित, जिमी जड़ाव किनारे जोए । कई मोहोल किनारे जवेरों, बन सोभित किनारे सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -2
- घाट जांबू का निकट घाट पाट के, सोभित है अति बन । इन मुख खूबी क्यों कहूं, छत्रियां जांबूअन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -29
- घाट झुण्ड तलाव के, पावड़ियां तरफ जल । क्योहरिया चबूतरे, सोभित इन मिसल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -92

- घाट तीन हांस पचास लों, बीच बड़े दरबार । दो घाट लगे दोऊ हिंडोलों, दो घाट हिंडोलों पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -81
- घाट तेरे क्योहरी का क्योहरी चौथे घाट की, देखें पाइयत हैं सुख । झुण्ड बन्या इन ऊपर, खूबी क्योंकर कहूं इन मुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -70
- घाट ना पाई बाट किने, दिस न काहूं द्वार । ऊपर तले माहें बाहेर, गए कर कर खाली विचार || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -4
- घाट नारंगी अति भला, जानों कोई न इन समान । सो कब पावें सुख झीलना, जो हम लेती संग सुभान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -5
- घाट नारंगी का चार हार फल की बनी, जल पर दोरी बंध । तले सात सात की कांगरी, माहें नकस कई सनंध || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -35
- घाट पाट अति सलवली, तहां हाथ न टिके पपील पाए । पवने अगनी पर जले, किन चढ्यो न उड्यो जाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -12
- घाट पाट जल ऊपर, अमृत बन हैं जाहें । इन बन की सोभा क्यों कहूं, मेरो सब्द न पोहोंचे ताहे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -17
- घाट बट का जो बट बन्यो जमुना पर, अनेक तिनकी डार । निपट पसारा इनका, जित बैठ करत सिनगार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -41
- घाट बट को अति बड़ो, जल लिए चल्या किनार। कई बन इत बहु विध के, जानों बने दोरी बंध हार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -50
- घाट बाईं तरफ का, चौथे हिस्से तक । ऊपर झुण्ड बिराजिया, अति सोभा बुजरक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -42
- घाट लिबोई का छत्रियां लिबोइयन की, सुगंध सीतल अति छांहें । पेड़ जुदे जुदे लम्बी डारियां, मिल गैयां माहों माहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -7
- घाट लिबोई हिंडोलों, आए मिल्या इत ए। खूबी ताड़ बन की, क्यों कहूं बल जुबां के || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -111
- घाटी छाहया सोहे बननी, फूलडे रंग प्रेमल अपार । एणी रूते मारा वालैया, मूने तेडीने रमजो आधार || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -3
- घाटी टेढ़ी सकड़ी, तीखी खांडा धार । रोम रोम सांगा सामिया, तामें चर्चा कर सिनगार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -7
- घारण घणी विध आवी जीवने, जेम मीन वीट्यो माहें जाल । जेणे नेत्रे निध निरखू निरमल, ते नेत्रे आडी थई पाल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -25
- घाव लगत टूटत रगां, इन विध रेहेत जो याद । मासूक मारत आसिक को, अर्स अंग चरन स्वाद || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -43
- घास करत है सिजदा, करें सिजदा दरखत । तो क्यों न करें चेतन, यों फुरमान फुरमावत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -39

- घास पसु सब नूर के, जिमी जंगल सब नूर । आसमान सितारे नूर के, क्यों कहूं नूर चांद सूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -40
- घुमडलो वालो मोसूं घूम छे, वचन मीठडा रे गाय । अंगे वस्तर भूखण मीठडां लागे, वचे वचे कंठडे रे बलाय || ग्रं - रास, प्र -23, चौ -5
- घुरण अचे दिल में, पण द्रजा तोहिजे द्राए । लाड करे त घुरां, जे पसां संग सांजाए || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -28
- घुरसे गोरस हरखे हेतें, घर घर प्रते थाए । आंगणे वेलू उजली, वालो विराजे सहु महे || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -22
- घुरसे गोरस हेत में, घर घर होत मथन । खेले सब में सांवरो, मिने बाहेर आंगन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -32
- घूमडलो घूमवानो रे वालैया, मूने छे अति घणो कोड । साम सामा आपण थईने घूमिए, मारा वालैया आपण बांधीने होड || ग्रं - रास, प्र -23, चौ -3
- घृत वाइव बल स्याम रंग, रंग आसमानी मधु उत्तर । दस रंग अमृत ईसान, रस पूरव रंग सरभर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -57
- घोघरे घाटडे स्वर बोलाविए, बीजा अनेक स्वर छे रसाल । झीण झीणा झीणा झीण झीनेरडा, मीठा मधुरा वली रसाल || ग्रं - रास, प्र -23, चौ -2
- घोड़े पर राखत हैं, आकास में उड़त । कमी करें ना कूदते, सुख अस्वारी के अतंत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -5
- घोलिए इत घोल करने, आवत बृज में जे । फेर जाए रहे मथुरा, वस्त भाव ले दे || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -36
- घोलिया इहां घोल करवा, आवे वृजमां जेह । वस्त वसाधूं लिए दिए, जई रहे मथुरा तेह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -25
- घोली घोली जाऊं ते वाणी ऊपर, जे वचन कहो छो रसाल । साथ सकलने चरणे राखी, सागर आडी बांधो छो पाल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -14
- घोली घोली मैं जाऊं तुम पर, उरिनी में होऊंगी क्यों कर । उरिनी होना तो मैं कह्या, माया लेस हिरदे में रह्या || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -15

च

- चई चई चुआं केतरो, सभ दिलजी तूं जाणे । तो रे आइयां हेकली, सभ जाणे थो पांणे || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -63
- चई संदरबाई असां के, मारकंड जी हकीकत । ई दर थी आंके खोलियां, आंजी पण ई बीतक || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -1
- चकलाई इन कदम की, कदम तली ऊपर सलूक । ए फिराक मोमिन ना सहें, सुनते होंए टूक टूक || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -33

- चकलाई इन कदम की, सुख सलूकी देत । हिरदे जो रूह के चुभत, रूह सोई जाने जो लेत || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -51
- चकलाई इन चरन की, भूखन छबि अनूपम । दिल ताही के आवसी, जा को मुतलक मेहेर खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -116
- चकलाई चंचलाई की, छबि होए नहीं बरनन । जो धनी देवें पट खोल के, तो तबहीं उड़े एह तन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -64
- चकलाई दोऊ खभन की, अंग उतरता सलूक । देख कमर कटि पतली, हाए हाए दिल होत ना टूक टूक || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -43
- चकलाई हक अंगों की, रूप जाने अरवा अर्स । रूह जागी जाने खेल में, जो हुई होए अरस परस || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -59
- चंगी भली आइयां, चरई ते चुआं । भुले चुके वैण निकरे, जिन डुखे जो मुआं || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -29
- चंडाल हिरदे निरमल, खेले संग भगवान । देखलावे नहीं काहू को, गोप राखे नाम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -16
- चंडाल हिरदे निरमल, संग खेले भगवान । देखावे नहीं काहू को, गोप राखे नाम || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -19
- चढ़ आवत बादलियां, सेहेरें घटा तरफ चार । इन समें बन सोभित, माहें बिजलियां चमकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -36
- चढ़ उतर के देखाइया, वास्ते राह मोमिन । जो रूहें उतरी लैलत कदर में, सो चढ़ जाएंगे अर्स वतन || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -56
- चढ़ ऊँचे लेत गुलाटियां, फेर गुलाटियों उतरत । ए नट विद्या बहुविध की, क्यों कर करूं सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -89
- चढ़ कूदें कई दरखतों, पेड़ पेड़ से पेड़ ऊपर । तले जो अंत्रीख आए के, फिरत चढ़त ऊँचे उतर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -91
- चढ़ता रंग रस तो कहूं, जो होए नहीं पूरन । पर आसिक जाने मासूक की, नित चढ़ती देखे रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -37
- चढ़ते चढ़ते रंग सनेह, बढ़यो प्रेम रस पूर । बन जमुना हिरदे चढ़ आए, इन विध हुए हजूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -83, चौ -13
- चढ़ते मोहोल मोहोलन पर, जाए लग्या आसमान । चढ़ती सोभा सुन्दर, ए क्यों कर कहे जुबान । || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -29
- चढ़ना है नासूत से, तिन ऊपर है मलकूत । तिन पर ला-मकान है, तिन पर नूर बका साबूत || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -67
- चढ़यो माया को जोर अमल, भूलियां आप मांहें घर छल । ना सुध धनी ना मूल अकल, इन मोहजल को ऐसो बल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -82

- चढवू ऊंचूं चीरक थई, वाटे दुख दिए घणां दुष्ट । परवाह उतरता सोहेलूं, पण दोहेलू ते चढतां पुष्ट || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -16
- चढी झरोखे न्हारजे, मीह वसे मथें वन । वींटी बरियूं बडरियूं, हिन वेरां बाग सोहन || ग्रं - सिंधी, प्र -2, चौ -7
- चढी नी आयूं सेरडियूं, कपरियूं गजन । ए सुख डिए रूहन के, वन में विज्यूं खेवन || ग्रं - सिंधी, प्र -2, चौ -6
- चतुर चौकस चेतन अति चोपसों, कूवत कर सब अंग कमर कसे । सुंदर सेज्या सनकूल तन रूह रची, मासूक दिल मोमिन मोहोल मांहें बसे || ग्रं - किरन्तन, प्र -113, चौ -1
- चतुरदसी बुधवारी थई, सनंधे सर्वे श्री विहारीजीने कही। मध्यरात पछी कीधो परियाण", बिहारीजीने कांईक खबर थई जाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -60
- चतुरदसी बुधवारी भई, सनंध सबे श्री बिहारीजीसों कही । मध्यरात पीछे किया परियान, बिहारीजी को सुध भई कछु जान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -15
- चंद चाल मंद थई, जोई सनंधे थकत रही । गत मत भूली गई, देखी थयो उदास री || ग्रं - रास, प्र -16, चौ -11
- चंद्रवा दुलीचा तकिए, सब जोत का अंबार । जित देखों तित जोत में, नूर क्यों कहूं लेहेरें अपार || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -36
- चंबली ने चनी चणोठी, चंद्रवंसी चोली ने चीभडी । गलकी ने गिसोटी गोटा, गुलबांस ने गुलपरी || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -17
- चबूतरे चेहेबच्चे लग, बीच चालीस मंदिर । चालीस चेहेबच्चे परे, अस्सी बीच तीस अंदर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -105
- चबूतरे दिवाल में, दोऊ तरफ आठ मेहेराब । जो नीके कर निरखिए, तो तबहीं उड़ जाए ख्वाब || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -3
- चबूतरे लग कठेड़ा, रहियां चारों तरफों भराए । ज्यों मिल बैठियां बीच में, योही बैठियां गिरदवाए || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -11
- चरई थी चुआं थी, जिन डुखे जो मुंहसे । तो डिखास्यो हिक तोहके, आंऊं चुआं बे केहके || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -28
- चरकीन जिमी में बैठ के, कैसी लेते थे वाए । अब वाए झरोखे अर्स के, कैसी लेत हो अब आए || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -94
- चरचरी मारे वालैए करी उमंग, सखी सर्वे तेडी संग । रमाडे नव नवे रंग, अदभुत लीला आज री || ग्रं - रास, प्र -12, चौ -1
- चरचा कथा तेहेने कहिए, जे आप रूए रोवरावे । दिन दिन त्रास वधतो जाय, ते बंध रदेना छोडावे || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -47
- चरचा जे श्री मुख तणी, संदर वाण वचन रे । एना विचार मोसूं करो रे वाला, मोकलो मेलीने मन रे || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -4

- चरचा सुनें वतन की, जित साथ स्यामाजी स्याम । सो फल चरचा को छोड़ के, जाए लेवत हैं हराम || ग्रं - किरन्तन, प्र -105, चौ -13
- चरण अंगूठा अति भला, पासे कोमल आंगलियो सार । रंग तो अति रलियामणो दीसे, नख हीरा तणां झलकार || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -3
- चरण आंटी भुज बंध वाली, कोई न नमे रे अभंग । बाथो लिए बने बल करी, रस चढतो जाय रंग || ग्रं - रास, प्र -41, चौ -12
- चरण तणा अंगूठा कोमल, नख हीरा तणा झलकार । रंग तो जोई जोई मोहिए, पासे कोमल आंगलियो सार || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -3
- चरण तले कीधुं निवास, इंद्रावती गाए प्रकास । भाजी भरम कीधो अजवास, पामे फल कारण विस्वास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -19
- चरण तले पदमनी रेखा, करे ते अति झलकार । पानी लांक लाल रंग सोभे, इंद्रावती निरखे करार || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -5
- चरण पसाय सुंदरबाईने करी, फल वस्त आवी रदे चढी । चरण फल्या निध आवी एह, हवे नहीं मूकू चित चरण सनेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -18
- चरणे लाग कहे इंद्रावती, गुण न देखे किन एक रती । धणी जगाडी देखाडसे गुण, हाँसी थासे त्यारे अति घण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -53
- चरन अंगूठे चित्त दे, नैनों नखन देखती जोत । नजरों निमख न छोड़ती, हाए हाए सो अब लोहू भी ना रोत || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -19
- चरन अंगूठे पतले, और पतली अंगुरियां । लाल रंग माहे सोभित, अतंत उज्जलियां || ग्रं - सिनगार, प्र -5, चौ -5
- चरन कमल मासूक के, चित्त में चुभे जिन । ए छबि सलूकी भूखन, क्यों कर छोड़ें मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -113
- चरन केहेती हों मुखथे, जो निरखती थी निस दिन । सो समया याद न आवहीं, क्यों न लगे कलेजे अगिन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -18
- चरन ग्रहों नूर जमाल के, जिनने अर्स किया मेरा दिल । सो बयान करत है हुकम, हक सुख लेसी मोमिन मिल || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -42
- चरन तली अति कोमल, मेरी रूह के नैन कोमल । निस दिन राखों इन पर, जिन आवने देऊं बीच पल || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -24
- चरन तली अति कोमल, रंग लाल लांके दोए । मिहीं रेखा माहें कई विध, ए बरनन कैसे होए || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -98
- चरन तली की जो लींकें, सो एक लीक न होए बरनन । तो मुख से चरन क्यों बरनवू, जो नूरजमाल का तन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -16
- चरन तली ना छूटत, रंग लाल लिए उज्जल । ताए क्यों कहिए आसिक, जो इतथे जाए चल || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -87

- चरन तली रेखा देखती, मेरी आखों नीके कर । ए कटाव किनार पर कांगरी, हाए हाए नैना जले न नाम धर || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -21
- चरन तली लांक एड़ियां, उज्जल रंग अति लाल । केहेते छबि रंग चरन की, अजूं लगत न हैड़े भाल || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -137
- चरन तले कियो निवास, इंद्रावती गावे प्रकास । भान के भरम कियो उजास, पावे फल कारन विस्वास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -19
- चरन बासा हमारे दिल में, रहे रूह के नैनों मांहें । क्यों न्यारे हम से रहें, हम बसें हक हैं जाहें || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -10
- चरन रज ब्रह्मसृष्ट की, ढूंढ़ थके त्रैगुन । कई विध करी तपस्या, यों केहेवत वेद वचन || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -55
- चरन से कमर लग, भूखन या वस्तर । हेम जवेर या रेसम, सब एकै रस बराबर || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -31
- चरन हक सूरत के, तिन अंगों के भूखन । रूह लेसी सोभा विचार के, जाके होसी अर्स में तन || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -70
- चरनी आगे मिलावा होत, जुत्थ लाड़बाई धरे जोत । साक बांदर जो ल्यावत, आगे सखियां सब समारत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -66
- चरनी आठों चबूतरे, और ऊपर आठों के छात । बड़े छज्जे चारों द्वार पर, सब फिरते छज्जे मोहोलात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -75
- चरनी दोए बड़ी कही, जो बड़े गुरज दरम्यान । आइयां जिमी से ऊपर लग, क्या करसी जुबां बयान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -50
- चरनी नीली अतलस, माहें अनेक बिध के रंग । चीन पर बेली नकस, बीच जरी बेल फूल नंग || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -39
- चरनी सीढ़ियां नूर की, चढ़ उतर नूर झलकार । थंभ पड़साले नूर की, नूरै के द्वार चार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -6
- चरनों लाग कहें इंद्रावती, गुन न देखे किन एक रती । धनी जगाए के देखावसी गुन, तब हांसी होसी अति घन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -50
- चल जाइए सातों घाट लग, खूबी देख होइए खुसाल । कई विध हक जिकर करें, पसु पंखी अपने हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -12
- चल देखाया बड़कों, सब चले जाएं तिन लार । अब सो क्यों ए ना छूटहीं, जो बांध दई कतार || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -27
- चल न सक्या जबराईल, रह्या हद जबख्त । मासूक कह्या महंमद को, तो पोहोंच्या बका हाहूत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -18
- चलत चाल घर अपने, होए न कसाला किन । आयस कछू न आवहीं, सब अपनी में मगन || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -17

- चलत पैरत कूदत, उड़ना याको काम । मन की अस्वारी सबको, मन चाया करें विश्राम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -70
- चलता पूर लिए दोऊ किनारे, डर धरता बुधजी का । मद चढ्यो करी एकल छत्री, ले बैठा सिर टीका || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -20
- चलते हलते धाम में, सबे होत चलवन । कई कोट जुबां इत क्या कहे, कई बिध थंभ दिवालन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -45
- चलना जेता रात का, अमल जो सरीयत । दिन मारफत हुए बिना, कछुए ना सूझत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -49
- चलना पिउ का सुनते, तोहे सब अंगों अगिन ना आई । सुनते आग झाला मिने, दौड़ के क्यों न झंपाई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -6
- चलना सबों सिर हक है, ए जान्या सबों तेहेकीक । पर आप बस कोई न चल्या, चले एक दूजे की लीक || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -107
- चलना हादी के पीछल, रखना कदम पर कदम । आदमी चले न चाल रूह की, इत दुनी मार न सके दम || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -62
- चलवन करते हाथ की, नैनों देखत सब सलूक । यों देखत मासूक को, अजूं होत न आसिक टूक || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -44
- चलसी सब एक चालें, दूजा मुख ना बोले वाक । बोले तो जो कछू होए बाकी, फोड़ उड़ायो तूल आक || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -33
- चले रहे सब हुकमें, बैठे सोवे हुकम । बिना हुकम रूह सबके, मुख ना निकसे दम || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -17
- चले लैलत कदर से, तकरार जो अव्वल । सो भेले दुनी के क्यों चले, जो उमत अर्स असल || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -11
- चलो चलो रे साथ, आपन जईए धाम । मूल वतन धनिए बताया, जित ब्रह्मसृष्ट स्यामाजी स्याम || ग्रं - किरन्तन, प्र -89, चौ -1
- चलो नूर द्वार से नूर ले, दे नूर तवाफ गिरदवाए । देख मेहेराव नूर झरोखे, नूर बाग देख फेर आए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -35
- चलो प्रभुजी जाइए तित, बुलाए लखमीजी आइए इत । तब दया कर आए भगवान, लखमीजी बैठे जिन ठाम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -44
- चल्या अछर के मोहोल लों, एकल छत्री नूर । जैसा बन इत धाम का, ए भी तैसा ही जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -4
- चल्या गया चौथी तरफ लों, अतंत खूबी विस्तार । तले चेहेबच्चे नेहेरें चलें, जुबां केहे न सके सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -33
- चल्या गया बन ताल लों, एकल छत्री अति भिल । तलाव धाम के बीच में, आगू निकस्या चल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -7

- चल्यो जुग जाए री सुध बिना । सुध बिना सुध बिना सुध बिना, चल्यो जुग जाए री सुध बिना || ग्रं - किरन्तन, प्र -21, चौ -1
- चसमें पहाड़ जारी करे, चसमें कायम पानी भरे । कह्या जिमी ए बादल पानी, जिनसे साबित भई जिंदगानी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -71
- चाक चढ़ी सब दुनियां, आजूज माजूज हुए जोर । सो तुम अजूं न देखत, एता पड्या आलम में सोर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -99
- चाकले दोऊ पसमी, जोत जवेर नरम अपार । बैठे सुन्दर सख्प दोऊ, देख देख जाऊं बलिहार || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -35
- चातुरी गति की क्यों कहूं, सब बोले चाले सुध होत । अव्वल इस्क सब खूबियां, हक के अंग की जोत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -124
- चांद कह्या आरव फारस, रोसन स्याम लियो बड़ो जस । चांद आरब दूजा कौन होए, इत महंमद बिना न पाइए कोए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -28
- चांद चौदमी रात का, बैठे चांदनी नूरजमाल । सनमुख सबे बैठाए के, करें खावंद रूहें खुसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -28
- चांद सूरज दोऊ कही दौलत, मिने चार बिलंदी और मिलत । जबराईल रोसन वकील, बुध नूर की असराफील || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -14
- चांद सूरज दोऊ हादी कहे, महंमदी सूरत । कही गिरो सितारों की, खासलखास उमत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -111
- चांद सूरज धनी के हजूर, सो मैं क्या कहूं ताको नूर । इत जमुना जी के सातों घाट, मध्य का जल जो बीच पाट || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -19
- चांदनी झरोखे बैठ के, किन विध लेती सुख । सो याद देत धनी इन जिमी, काल क्यों काटूं माहें दुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -22, चौ -11
- चांदलियो तेंजे जुए हेजे, नीचो आवी निरधार । जल जमुना ना वाध्यां घणां, आघा न वहे लगार || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -20
- चायो आंजों चुआंथी, मुं हंद न्हाए कुछण । संग वीयम विसरी, छडिम ते घुरण || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -27
- चार क्योहरियां लग लग, चारों तरफों चार चार । सोले बंध पर दयोहरी, थंभ पचीस पांच पांच हार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -55
- चार क्योहरी आणू चबूतरा, तिन तले घड़नाले चार । तिन बीच चारों झरोखे, करें पानी ऊपर झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -61
- चार खूट चारों हांसों, कई जिनसों फूल देखाए । कई जुगतें पात सोभित, सब खुसबोए रही भराए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -44
- चार खून दोए चबूतरे, दोऊ तरफों चौथे हिस्से । तरफ आठ पेड़ दिवाल ज्यों, सोभा कही न जाए मुख ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -15

- चार खूने के चार नकस, कई कांगरी कटाव फूल । बीच पांखड़ी फिरती फूल ज्यों, ए अर्स तखत इन सूल || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -110
- चार खूने चार दोपुड़े, पचासी हर एक के । जमे तीन से चालीस, एते थंभ भए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -89
- चार गुरज चार खूट के, माहें मोहोल फिरते गिरदवाए। फिरते झरोखे सिरे लगे, आसमान में पोहोंचे आए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -64
- चार चार नेहरें जंजीर ज्यों, मिल मिल फिरें गिरदवाए । बीच बीच सोभित बगीचों, अचरज एह देखाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -40
- चार चार मेहेराव दाएं बाएं, आठ हुए तरफ दोए । सोभा आगू बड़े द्वार के, सो इन मुख खूबी क्यों होए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -120
- चार चार हार सबन के, उर पर अति झलकत । कण्ठ सरी कण्ठन में, सबन के सोभित || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -6
- चार चार हिंडोले नूर के, अर्स मावे ना नूर झनकार । लेत लेहेरें नूर सागर, जानों नूर गंज भरे अंबार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -102
- चार चौकी बन माफक, छात पांचमी ऊपर किनार । ए जुगत बनी जोए मोहोल की, सोभित अति अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -71
- चार तरफ चार नेहेरें, ऊपर सब ढांपेल । कहूं चार आठ सोले मिली, कई विध मोहोलों खेल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -23, चौ -2
- चार थंभ चार खूट के, छत्री सोभा अति जोर । जो कदी नैनों देखिए, तो झूठे तन बंध देवे तोर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -101
- चार थंभ चार खूट के, नीलवी के झलकत । ए बारे थंभों का बेवरा, माहें जल सों जंग करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -134
- चार थंभ जो पाइयों पर, तिन में बेली अनेक । रंग नंग बारीक अलेखे, तिनको क्यों कर होए विवेक || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -109
- चार थंभ नूर हर चौरे, चार पौरी आगं नर द्वार । नूर पौरी चार हर चौरे, ए नूर सोभा ना किन सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -48
- चार थंभ बराबर सोभित, उपरा लग ऊपर । घट बढ़ न दोऊ तरफों, ए सोभा अति सुन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -31
- चार थंभ हारें चलीं, ऊपर ढांपिल तरफ दोए । यों चल आई दूर लों, ए जल जमुना जोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -15
- चार थंभ हारें चली, ऊपर ढांपी तरफ दोए । यों चल आई दूरलों, ए जल जमुना जोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -12
- चार द्वार चार रंग के, आठ थंभ भए जो इन । पाच मानिक और नीलवी, द्वार पुखराज चौथा रोसन || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -12

- चार द्वार चारों तरफों, और कठेड़ा सब पर । चौसठ थंभों के बीच में, गिलम बिछाई भर कर || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -6
- चार पदारथ पामिया रे, ए थी लीजिए धन अखंड । अवसर आ केम भूलिए, जे थी धणी थाय ब्रह्मांड || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -49
- चार फूली ते फरती दीसे, बे फूली अणियाली । मध्य लाल मोती फरतां पाना, ए जुगत क्यांहे न भाली || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -61
- चार बेर चौका देओ, लकड़ी जलाओ धोए जल । अपरस करो बाहेर अंग को, पर मन ना होए निरमल || ग्रं - किरन्तन, प्र -14, चौ -3
- चार मोहोल बड़े थंभ ज्यों, सो ऊपर जाए मिलत । रूहें इत सुख कदमों लेवहीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -52
- चार लाख कोम आजूज माजूज, ए जो आवे जाए रात दिन । गिनती कौल पूरा कर, आखिर एही काल सबन || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -33
- चार लाख कौम इन की, फौजां होसी तीन । अर्थ ऊपर के आखिरत, क्यों पावें रात दिन || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -27
- चार सखी मली श्रीराजने, कराव्या सिणगार । वस्तर भूखण विधोगते, कांई सोभ्या ते प्राण आधार || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -20
- चार सरें इत चीड़की, हर सर में रंग दस । सो रंग इन जुबां न आवहीं, रंग रूह चाहिल अर्स || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -92
- चार हारना चारे फुमक, तेहेना जुजवी जुगतना रंग । लाखी लिबोई ने स्याम सेत, सुंदर ने ए सोभंत || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -42
- चार हांस तले थंभ के, आठ ऊपर तिन । सोले बीच आठ तिन पर, और चार ऊपर इन || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -79
- चार हिंडोले जुदे जुदे, झूला लेवें सब एक। एकै बेर सब फिरत हैं, फेर खेल होत विसेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -124
- चारे गमां वाल्या चाकला, बेठां वाली पलाठी । सोभा मारा वालाजीनी सी कहूं, जे आतमाए दीठी || ग्रं - रास, प्र -46, चौ -2
- चारों किताबों के माएने, और माएने चारों वेद । लिख्या सबोंमें जुदा जुदा, कयामत एकै भेद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -70
- चारों किनारे चढ़ती, दोरी बेली चढ़ती चार । चारों तरफों फूल चढ़ते, करत अति झलकार || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -31
- चारों खूटों थंभ नीलवी, सोभा लेत इत ए। पांच थंभों के लगते, हुए बीस दस जोड़े || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -118
- चारों खूटों बड़े चार चेहेबच्चे, तिन हर एक में कई कारंज । सब नेहेरें तहां से चलें, वह चेहेबच्चों भत्या जल गंज || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -53

- चारों खूटों मोहोल ढांपिल, जानें के रचिया सेहेर । इन विध बराबर गलियां, आड़ी ऊंची गली बीच नेहेर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -23, चौ -3
- चारों घाटों के बीच बीच, गिरदवाए दयोहरियां सब । याही विध आणू सबों, ऊपर बन छाए रही छब || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -96
- चारों चरन अति नाजुक, जो देखू सोई सरस । ए अंग नाहीं तत्व के, याकी जात रूह अर्स || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -226
- चारों चरन बराबर, सुभान और बड़ी रूह जी। गौर सब गुन पूरन, सुन्दर सोभा और सलूकी || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -223
- चारों चीज पूजी रात की, पानी खाक पत्थर अगिन । आकास पूज्या कैयों नाम धर, निराकार हवा ला सुंन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -65
- चारों जोड़े चरन के, ए जो अर्स भूखन । ए लिए हिरदे मिने, आवत सख्प पूरन || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -66
- चारों जोड़े चरन के, और अनवट बिछिया रोसन । बानी मीठी नरमाई जोत धरे, मेरे जीव के एही जीवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -6
- चारों जोड़े चरन के, झांझर घुघर कड़ी । कांबिए नंग अर्स के, जानों के चारों जोड़े जड़ी || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -102
- चारों जोड़े चरन के, नरमाई सुगन्ध सुखकार । बानी मधुरी बोलत, सोभा और झलकार || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -91
- चारों जोड़े चरन तो कहूं, जो घड़ी साइत ठेहेराय । खिन में करें कोट रोसनी, सो क्यों आवे माहे जुबाएँ || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -216
- चारों जोड़े चरन भूखन, रंग चारों में उठे हजार । ए बरनन जुबां तो करे, जो कछुए होए निखार || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -67
- चारों तरफ एक एक रंग के, तैसी तरफों चार। नए नए रंग एक दूजे संग, चारों तरफों चौसठ सुमार || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -8
- चारों तरफ चबूतरा, जमना दोऊ किनार । ए कुंड हुए दोऊ इन विध, चली स्योहरी दोऊ हार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -9
- चारों तरफ झरोखे कुण्ड के, बीच चादरें खूबी देत । बड़े देहेलान कचेहेरियां, हक रूहे खुसाली लेत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -17
- चारों तरफ मोहोल नूर ताल के, नूर जल चादरों गिरत । सो परत बीच नूर कुंड के, रूहें देख देख नूर हंसत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -15
- चारों तरफों अर्स के, कई बैठक चौक चबूतर । जुदे जुदे कई विध के, ए नेक कहूं दिल धर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -30
- चारों तरफों अर्स जिमिएं, जो कोई हैं सूरत । बखत पर दीदार को, मन वेगी पोहोचत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -37

SRJN

- चारों तरफों ऐसे ही झूले, हक हादी रूहें खेलत । अर्स अजीम के बीच में, मोहोल अम्बर जोत धरत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -8
- चारों तरफों कुण्ड ज्यों, इत देत खूबी अति जल । हाए हाए ए बात करते मोमिन, रूह क्यों न जात उत चल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -60
- चारों तरफों चकलाई, फना अदभुत रूह बँचत । एड़ियां अति अचरज, इत आसिक तले बसत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -225
- चारों तरफों चंद्रवा, अर्स के यों कर । दौड़ दौड़ के देखिए, आवत यों ही नजर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -61
- चारों तरफों चंद्रवा, चौसठ थंभों के बीच । जोत करे सब जवेरों, जेता तले दुलीच || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -19
- चारों तरफों चलती, नेहेरें बीच बाग के । बीच मेहेरावों से देखिए, सोभित बिरिखों तले || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -68
- चारों तरफों चेहेबच्चे, ए सोभा अति सुंदर । जल गिरत फुहारे मोतियों, चारों चांदनी अंदर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -149
- चारों तरफों चौदे लोकों, ए सुध हुई सबों पार । बाजे दुन्दुभि भई जीत सकल में, नेहेचल सुख बे सुमार || ग्रं - किरन्तन, प्र -57, चौ -8
- चारों तरफों चौदे लोकों, बैकुंठ लग पाताल । फूल पात फल नहीं या द्रखत को, काष्ट त्वचा मूल न डाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -6, चौ -2
- चारों तरफों थंभ दो दो, जानों बन चार द्वार । मानिक हीरे पाच पोखरे, ए चारों द्वार नंग चार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -132
- चारों तरफों दरवाजे, आगू चौखूटे चबूतर । थंभ चार हर चबूतरे, मोहोल इन आठों पर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -60
- चारों तरफों दुलीचा, फिरता बिछाया भर कर । चबूतरे लग कठेड़ा, सोभा अति सुन्दर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -94
- चारों तरफों देखिए, रूहें बारे हजार । जिमी अंबर में रोसनी, उठे किरनें नूर अंबार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -159
- चारों तरफों द्वारने, और चारों खूटों गुरज चार । कहा कहूं अन्दर मोहोल की, जिनको नहीं सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -61
- चारों तरफों नेहेरें चलें, बीच कठेड़े चबूतर । चेहेबच्चे बीच बीच बन, ए सिफत कहूं क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -38
- चारों तरफों बन में, कई जिनसें कई जुगत । नई नई भांत ज्यों चंद्रवा, बन में केती कहूं विगत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -29
- चारों तरफों बराबर, ऊपर लगे पहाड़ सों आए। जुदे जुदे जवेरन को, नूर पहाड़ तले न समाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -27

- चारों तरफों बातें करें, मुख मुख जुदी बान । रंग रस हाँस विनोद की, पिउ सों प्रेम रसान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -123
- चारों तरफों मोहोल छज्जे, तामें एक तरफ भया नूर । तरफ दूजी अर्स अजीम, दोऊ तरफों जल जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -16, चौ -11
- चारों तरफों मोहोल बीच ताल, चारों तरफों हिंडोले । एक हिंडोले माहें झूले, हक हादी रूहें भेले || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -7
- चारों तरफों मोहोलात के, क्यों कहूं खूबी ए। कई रंग नंग थंभ जवेर के, चारों तरफों झरोखे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -68
- चारों तरफों हिंडोले, अर्स के गिरदवाए । सब हिंडोलों हक संग, ए सुख अंग न समाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -132
- चारों दोरी के रंग कहे, और दस रंग कांगरी दोए । और जिनस दो बेल की, रंग बोहोत ना गिनती होए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -168
- चारों निसान ए कहे, और देखो कहे जो तीन । ईसा इमाम असराफील, जिन खड़ा किया झंडा दीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -1
- चारों बंध बनी तले, नीले पीले सोभित । सोभे नरम बंध चोलीय के, खूबी साड़ी तले देखत || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -51
- चारों भूखन चरन के, मांहें रंग जोत अपार । दिल न लगे बिना गिनती, जानों क्यों ल्याऊं माहे सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -68
- चारों भोम चौकी हिंडोले, हक हादी रूहें हींचत । हम सुख लेती सब मिल के, सो कहां गई निसवत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -25
- चारों हांसों खुली चांदनी, तीन तरफों बन बराबर । तरफ चौथी झरोखे अर्स के, सोभे आगू चबूतर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -12
- चारों हिस्से ताल के, मोहोल बने इन ठाट । और झुण्ड ऊपर चारों चौक के, ए जो बने चारों घाट || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -91
- चाल - एहेवा अनेक वचन कया अमने, जेणे एक वचने ओलखू तमने । पेरे पेरे करीने प्रीछव्या सही, अमे निरोध तोहे उडाड्यो नहीं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -6
- चाल - मूने दुख साले ए मन माहें, नव जाय कह्यो ते क्यांहें । गमे तमने तेहज थाय, बीजे सामूं कोणे न जोवाय || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -28
- चाल चातुरी कहा कहूं, लटक चटक भरे पाए । मटके अंग मरोरते, कछू ए गत कही न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -41
- चाल मिलाप या दीदार, ए तीनों रूह के नेक । जब ही याद जो आवहीं, तब ही होए मांहें एक || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -10
- चाल- अंधने आंख रूदे तणी होय, पण अमने नव दीसे कोय । अमे तो रह्या निध खोय, टाणे भूल्या सूं थाय रोय || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -68

- चाल- जो ए विचारिए एक वचन, तो अलगां थैए पासेथी केम । दीजे प्रदखिणा रात ने दिन, कीजे फेरो सुफल धन धन || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -54
- चाल- हवे मायानों जे पामसे पार, तारतम करसे तेह विचार । ब्रह्मांड मांहे तारतम सार, एणे टाल्यो सहुनो अंधकार || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -41
- चाल. ऐसे अनेक वचन कहे हमको, जिन एक वचने पेहेचाने तुमको । तुम दई पेहेचान विध विध कर, पर निरोध बैठा हिरदा पकर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -6
- चाल. तमे कृपा कीधी अति घणी, जाणी मूल सगाई घरतणी । माया पाडी पडताले हणी, बल दीधू मूने मारे धणी || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -20
- चाल. हवे एहनो केटलो कहूं विस्तार, जोरावर अति अपार । मोसूं जुध मांडयूं आसाधार, जुध करे छे वारंवार || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -10
- चालती चतुरा रे चाल, मुख तो अति मछराल । सोहंती कट लंकाल, चढती जाणे घंटाल, प्रेम काम सिंध || ग्रं - रास, प्र -13, चौ -8
- चालसे सहु एक चाले, बीजू ओचरे नहीं वाक । बोले तो जो कांई होय बाकी, चूंथी उडायूं तूल आक || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -32
- चालीस हांसों की ए कही, करें आप अपना खेल । छोड़ें न हांस मरजादा, हक आगे करें सब केलि || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -102
- चालीस हांसों चबूतरा, बड़े मेहेराव इन पर । देख देख के देखिए, खूबी क्यों कहूं इन चबूतर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -73
- चाहन वाले दुख के, दुनियां में ढूंढ़ देख । ब्रह्मांड यार है सुख का, दुख दोस्त हुआ कोई एक || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -32
- चाहिए निसदिन हक अर्स में, और इत हक खिलवत । होए निमख न न्यारे इन दिल, जेती अर्स न्यामत || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -2
- चाहिए मोमिन आसिक हक के, और आसिक हादी के । रूहें हादी आसिक हक की, सीधा इस्क बेवरा ए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -34
- चित ऊपर चालू रे सखियो, तमे मारा जीवन । जेम कहो तेम करूं रे सुंदरी, का दुख आणो मन || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -15
- चित ऊपर वली चालिए, धणी तणे वचन । ए वाणी तमे चित धरो, हूं कहूं छू द्रढ करी मन || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -82
- चित चोरी लीवू दई चुमन, सखी कहो करूं हूं तेम । मारा जीव थकी अलगी नव करूं, जुओ अलवी थैयो जेम || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -40
- चित दे एक चुनावहीं, हिंदू जो आद के आद । सो जोरा करके ढ़हावहीं, कहें हमें होत सवाब || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -18
- चित में चेतन अंतरगत आपे, सकल में रह्या समाई । अलख को घर याको कोई न लखे, जो ए बोहोत करे चतुराई || ग्रं - किरन्तन, प्र -18, चौ -6

- चित्त चाहे सुख देत हैं, लाल मोती कानन । देख देख जाऊं वारने, ए जो भूखन चेतन || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -31
- चित्त चाह्या नासिका भूखन, खुसबोए लेत चित्त चाहे । चित्त चाही जोत सोभा धरे, सुख आसिक अंग न समाए || ग्रं - सिनगार, प्र -15, चौ -10
- चित्त बैंच लिया इन चरनों, मोहे सब विध करी धंन धंन । ए सिफत करूं क्यों इन जुबां, मेरे जीव के एही जीवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -15
- चित्रामन एक थंभ की, क्यों कहूं केते रंग । बन बेली फूल पात की, जुदी जुदी जिनसों नंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -54
- चित्रामन सारे चेतन, सब लिए खड़े गुमान । जोत लरत है जोत सों, कोई सके न काहू भान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -38
- चिन्हार भई सब साथ में, आई धाम की खुसबोए । प्रेम उपज्या मूल का, सुपन रेहेना क्यों होए || ग्रं - किरन्तन, प्र -92, चौ -5
- चीज सबे अर्स चेतन, वस्तर या भूखन । सुख लेत हक के अंग का, यों करत अति रोसन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -76
- चींटी हस्ती को बैठी निगल, ताकी काहं ना परी कल । सनकादिक ब्रह्मा को कहे, जीव मन दोऊ भेले रहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -4
- चीठी आवे चाले ततखिण, जाय ते करता रूदन । झाझं सेवा जेहनी करता, ते दिए छे हाथ अगिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -28
- चीण, चरणिए जोइए, मांहें वेल मोती झलकंत । राती नीली चुन्नी कुंदनमां, भली पेरे माहे भलंत || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -20
- चीते अतंत सुन्दर, ऐसे ही बलवान । कमी काहू में नहीं, सोभित जोड़ समान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -60
- चीते चीतल बैल बकर, लड़ें बरबरे हरन । जरख चरख रोझ रीछड़े, लड़त आवें अरन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -15
- चीन मोहोरी बगल या बीच, गिरवान कोतकी नकस । सब जामा जानों के भूखन, ठौर एक दूजे पे सरस || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -46
- चीन्हे क्यों कर ब्रह्म को, ए तो गुन ही के अंग को विकार । बाजीगरें बाजी रची, मूल माया तें मोह अहंकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -30, चौ -1
- चीन्हो इन खसम को, चीन्हो बका वतन । और चीन्हो तुम आपको, देखो फैल करत विध किन || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -15
- चीरक थई तमें ना सको रे, मायामां थया मोटा । वाणी विचारी नव जुओ, पछे सास्त्र करो कां खोटा || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -19
- चुआं कुजाडो हिंद के, सांई वडो डिंन्यो सुहाग । आयो रब आलम जो, सभनी उघड्यो भाग || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -3

- चुआं तेहजो बेवरो, सुणजा कन डेई । डिठम से सहूर से, सहूर आई पण करेजा सेई || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -2
- चुआं थी रूह मुंहजी, से पण आइम भूल । मूंजी आंऊ त चुआं, जे हुआं विच अर्स असल || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -59
- चुआं रुआं के न्हारियां, बेठो आइए मूं बट । लाहिए दममें तूंहीं धणी, अंखे कंने जा पट || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -51
- चुटकी खाक ले चोंच में, मुरग बैठा दरखत पर । पर ना जलें इन मुरग के, सो कोई देवे एह खबर || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -60
- चुप किए भी न बने, समझाए ना बिना मिसल । पसु पंखी अर्स और खेल के, देखो तफावत बल || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -22
- चुप किए भी ना बने, जाको ए ताम दिया खसम । तातैं ज्यों त्यों कया चाहिए, सो कहावत हक हुकम || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -51
- चुप किए भी ना बने, हुकम इलम आया इत । और काम इनको नहीं, जो अर्स अरवा लई हुज्जत || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -128
- चूंघरडीनो घाट जुगतनो, कोरे करडा कुंदन । मांहें मोती फरतां दीसे, मध्य जडिया नीला नंग || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -10
- चूड़ आणू डोरे दो सोभित, और कंकनी सोभे ऊपर । दोऊ तरफों तेज जोत के, कंकनी बोलत मीठे स्वर || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -101
- चूड़ कोनी काड़े लग, चूड़ी चूड़ी हर नंग । नंग नंग कई रंग उठे, तिन रंग रंग में कई तरंग || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -99
- चेतन व्यापी व्याप में, सो फेर आवे जाए। जड़ को चेतन ए करे, चेतन को मुरछाए || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -18
- चेतन व्यापी व्याप में, सो फेर फेर आवे जाए । जड़ को चेतन ए करे, चेतन को मुरछाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -18
- चेतो सबे सत वादियो, सुनियो सो सतगुर मुख बान । धनी मेरा प्रभु विश्व का, प्रगटिया परवान || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -2
- चेयम हाल हिनजो, जा हिक मुं गडई । मूं बेओ जमारो डोरीदे, हुन बी पण खबर सुई || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -25
- चेहेन कीधां ने पामी मृत, विख वालाने थयूं अमृत । सोसी लीधी पूतना नार, गोकुलमां ते जय जयकार || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -7
- चेहेन चरित्र चातुरी, बृज रास की लई । अनुभव असलू अंग में, आए चढ़ी धाम की सही || ग्रं - किरन्तन, प्र -83, चौ -5
- चोए इलम कुंजी अंई, पट पण आयो अंई । अकल आंजी अगरे, पसो उलटी या सई || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -9

- चोकस चित केणी पेरे लाधे, बाहेर देखाडे अनंत । ते माटे आ कोहेडो अंधेर, मारे जाई ने संगत संत || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -14
- चोर टाली करूं वोलावो, सुख सीतल करूं संसार । विध विधना सुख दऊं विगतें, कांई रासतणा आवार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -28
- चोर फेर करूं बोलावे, सुख सीतल करूं संसार । अंग में सबों आनन्द, होसी हरख तुमे अपार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -27
- चोली अंग को लग रही, सेत जामा अंग गौर । चीन से कुसादी दावन, ताको क्योंकर कहूं जहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -17
- चोली अंग को लग रही, हार लटके अंग हलत । तले हार बीच दुगदुगी, नेहेरे लेहेरें जोत चलत || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -42
- चोली अंग सों लग रही, ज्यों अंग नूर जहूर । ए लज्जत दिल तो आवहीं, जो होवे अर्स सहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -15
- चोली के बंध चारों बंधे, सोभित पीठ ऊपर । झलकत फुन्दन चोली कांगरी, सोभा देखत साड़ी अंदर || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -53
- चोली चादर हार झलकत, आकास रह्यो भराए । तो सोभा मुख मुकट की, किन बिध कही जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -221
- चोली स्याम जड़ाव नंग, माहें हेम जवेर अनेक । जड़तर कंठ उर बांहे, कहां लग कहूं विवेक || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -36
- चौक अठाईस त्रिपुड़े, हर एक के एक सौ दोए । अठाईस सै छप्पन, जमें मंदिरन को सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -83
- चौक चार उपरा ऊपर, बट पीपल बखान । बराबर थंभ छातें, ठौर सोभित सब समान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -29
- चौक चार खूने के दोपुड़े, गली बारे हर एक । अड़तालीस ए जमे, ए जो गली दिवालों देख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -94
- चौक चार खूने के दोपुड़े, हर एक के ओनासी मंदर । तीन से सोले एह जमें, लगते दिवाल अंदर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -84
- चौक त्रिपुड़े अठाईस, गली हर एक की अठार । तिनकी ए जमे भई, पांच से ऊपर चार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -93
- चौक थंभ कठेड़े, बैठक चारों घाटन । जो बन खूबी पाल पर, सो क्यों कहूं जुबां इन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -93
- चौक पर फिरती चांदनी, आठ योहरी गिरदवाए । पांच क्योहरियां बीच में, तले आठ थंभ सोभाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -71
- चौक बीच आए जब देखिए, दोऊ तरफ बने दोऊ द्वार । दोए द्वार दोए सीढ़ियों, चौक सोभित अति अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -13

- चौकठ ताके घोड़ले, और दिवालों चित्रामन । सोभा क्यों कहूं जोत में, भस्यो नूर रोसन || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -59
- चौकस कर चित दीजिए, आतम को एह धन । निमख एक ना छोड़िए, कर मन वाचा करमन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -6
- चौकियां माचियां सिंघासन, कई हिंडोले जंजीर कंचन । कई बासन धात अनेक, कई बाजंत्र विविध विसेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -73
- चौकी संदूकें नूर की, सब सुन्दर नूर सामान । नूर भरे मोहोल सोभित, ए क्यों होए नूर बयान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -60
- चौकी हांस पचास लो, फूलबाग हद जित । और पचास हांस फूलबाग, बड़े चेहेबच्चे पोहोंचत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -48
- चौखूनी चौसठ बाखरे, इनों बीच बीच दरम्यान । दो दो पौरी तिनकी, याको रूहें जानें बयान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -99
- चौखूनी बाखर बनी, तिन विस्तार है बुजरक । चारों तरफों बराबर, कहूं बेवरा बुध माफक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -79
- चौड़े देखें चारों तरफों, ऊंचे लग आसमान । ऐसे और मोहोल तो कहूं, जो कोई होवे इन समान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -13
- चौथा सरूप ईसा रूहअल्ला, ल्याए किल्ली हकीकत धाम । पाँचमां सरूप निज बुध का, खोल माएने भए इमाम || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -76
- चौथा हार हीरन का, पांचमा सुन्दर नीलवी । इन हारों बीच दुगदुगी, देखत सोभा अति भली || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -78
- चौथी तरफ नाहीं कया, सो मेरी परीछा लेन । जाने मेरे इलम से रूह आपै, केहेसी आप मुख बैन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -17
- चौथी भोम के बन से, जाइए तीसरी भोम अर्स । ए भोम झरोखे बराबर, ए बन मोहोल अरस-परस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -33
- चौथी भोम सुख निरत के, कौन देवे कर हेत । ए सुख अर्स के इन जिमी, हक हमको विध विध देत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -19, चौ -11
- चौथी साहेदी नामें नूर, हुआ रूहअल्ला का नुसखा जहूर । नव सै नब्बे नव मास ऊपर, ए नुसखा लिया मिसल मातबर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -14
- चौथे आसमान लाहूत में, रूहअल्ला बसत । पेहेले बताई फुरकानें, सो मोमिन भेद जानत || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -47
- चौथे आसमान लाहूत में, रूहें बैठी बारे हजार । इन तसबी से पैदा होत हैं, फरिस्तों का सिरदार || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -6
- चौथे सिपारे में लिखी, सो रोसनी में दिल में रखी । जाहेर करों वास्ते उमत, खोलों बातून आई सरत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -10, चौ -1

- चौद भवन जे सुकजीए मथिया, वली पडदे मथिया ब्रह्मांड तीत । तेहेनो सार तमे प्रगट करी रे, साथने दीधो रूडी रीत || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -43
- चौद भवन जेने इछे, कोई विरला ने प्राप्त होय । ए पांमी केम खोइए, तूं तां रतन अमोलक जोय || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -50
- चौद भवन माया अंधार, पार नहीं मोटो विस्तार । तमने पूर्वी समरथ सार, हूं केणी पेरे करूं विचार || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -9
- चौद भवन सुपन तणा, जोवा आव्यो छे साथे । ए ब्रह्मांड मुक्त पामसे, सोणो जागे समासे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -23
- चौद भवननो नहीं आसरों, उदेकार अति घणो थयो । सब्दातीत ब्रह्मांड कीधां प्रकास, ए अजवायूँ जोसे साथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -7
- चौद लोक इछे आ वेला, जोगवाई तमे पाम्या छो जेह || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -5
- चौद लोक कमायूं खाय आहींन, नथी बीजो कोई ठाम । अधखिण वारो आंहीं पामिए, ए धन मूल अमान || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -7
- चौद लोक वैकुण्ठ सुन्य जेह, भोम समी हूं करूं वली तेह । पाधरा पाथरी करूं एक ठामे, वांक चूक टालू ए माहें || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -2
- चौद वरस लगे नेष्टा बंध, वचन ग्रयां सघली सनंध" । एणे समे गांगजी भाई मल्या, धनबाई ऊपर पूरण दया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -33
- चौद वरस लगे नेष्टाबंध, भागवत कोण लेसे । एहेनो सार काढी अमने, ततखिण कोण देसे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -41
- चौदलोक इंडा मधे, भोम जोजन कोट पचास । अष्ट कुली पर्वत जोजन, लाख चौसठ वास || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -33
- चौदे चढी चाले एणी विधे, आगल निराकार केहेवाय । तिहां पंथ न थाय पग थोभ विना, साध इहां जईने समाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -15
- चौदे तबक आड़े देयके, सो नजीक छिपे क्यों कित । निपट सेहेरग से नजीक, वह कहां गई निसबत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -16
- चौदे तबक इंड में, जिमी जोजन कोट पचास । पहाड़ कुली अष्ट जोजन, लाख चौसठ वास || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -36
- चौदे तबक इतना नहीं, जाके कीजे ट्रक दोए । बिना वाहेदत कछूए ना रख्या, क्यों ना देख्या लिख्या सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -79
- चौदे तबक एक होएसी, सब हुकम के प्रताप । ए सोभा होसी तुझे सोहागनी, जिन जुदी जाने आप || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -36
- चौदे तबक कर कायम, भिस्त द्वार दीजो खोल । मैं साहेब के हुकम से, अव्वल किया है कौल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -12

- चौदे तबक करसी कायम, ए जो झूठे खाकी बुत । मोमिन बरकत इन कदमों, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -86
- चौदे तबक करसी कायम, दारू मसी" का ए। गई न फरामोसी रूहों की, आई हुकम सों जे || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -112
- चौदे तबक कहे फरेब के, काहूं न किसी की गम । ना गम रसूल फुरमान, कहां हक कौन हम || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -40
- चौदे तबक कायम होएसी, सब हुकम के प्रताप । ए सोभा तुझे सोहागनी, जिन जुदी जाने आप || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -40
- चौदे तबक की खबर भई, ला मकान हवा को कही। निराकार कहिए सुंन, एही बेचून बेचगून || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -8
- चौदे तबक की जहान में, किन तरफ न पाई अर्स हक । सो किया अर्स दिल मोमिनों, ए निसबत मेहेर मुतलक || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -69
- चौदे तबक की दुनियां, और जिमी अंबर । ऐसे खेल पैदा फना, होवें कई नूर नजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -54
- चौदे तबक की दुनी के, मैं देखे सब कागद । सो सारे ही बंद हुए, बिना एक महमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -23
- चौदे तबक की दुनी को, काहू खबर खुदा की नाहें । ऐसे किए मोहोरे खेल के, ए भी मिल गए तिन माहें || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -72
- चौदे तबक की दुनी में, किन कया न बका हरफ । ए हरफ कैसे केहेवहीं, किन पाई न बका तरफ || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -1
- चौदे तबक की दुनी में, बका तरफ न पाई किन । सो सबों ने देखिया, किया जाहेर बका हक दिन || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -42
- चौदे तबक की बात जो, सो तो केहेसी सकल जहान । पर लैलतकदर मेंहेदी बिना, क्यों खुले माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -50
- चौदे तबक की रूह में, ऐसा ना कोई समर्थ । सब्द महमद मेंहदी बिना, करे सो कौन अर्थ || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -23
- चौदे तबक के खावंद, कर कर गए उपाए । तित परदा सबन पर, सो इत दिया उड़ाए || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -5
- चौदे तबक के तखत, बैठा मलकूत अजाजील । राह मारत सब दुनी दिलों, अबलीस इनों वकील || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -24
- चौदे तबक के बीच में, तरफ न पाई किन । हादी गिरो अर्स बीच में, बैठाए इलमें कर रोसन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -116
- चौदे तबक को पीठ देवहीं, ए कलमा कहया तिन । कलाम अल्ला यों कहेवहीं, ए केहेनी है मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -49

- चौदे तबक जुलमत से, पेहेले कही जो रात । दिन कायम सूर अर्स की, इत काहूं न पाइए बात || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -60
- चौदे तबक नबी के नूर से, सो सब कहें हम मोमिन । सो मोमिन जाको सक नहीं, हक बका अर्स रोसन || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -27
- चौदे तबक नूरने, फेर किया मंडल । खेल चाल दिल चाहते, नूर अरवा नूर बल || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -76
- चौदे तबक पढ़ पढ़ गए, किन खोली नहीं किताब । इसारतें रमूनें क्यों खुलें, देखो किन खोलाई दे खिताब || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -62
- चौदे तबक बेसक हुए, इन बानी के रोसन । सो इलम ले कायम हुए, सुख भिस्त पाई सबन || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -54
- चौदे तबक सिर मलकूत, ए तो कुरसी फरिस्तों अर्स । इन सिर ला-मकान है, आगू सब्द न चले निकस || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -53
- चौदे तबक हिसाब में, हिसाब निरंजन संन । न्यारा इस्क हिसाब थे, जिन देख्या पिउ वतन || ग्रं - सनंध, प्र -9, चौ -2
- चौदे तबक हिसाब में, हिसाब निरंजन सुंन । न्यारा इस्क हिसाब थे, जिन देख्या पिउ वतन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -2
- चौदे तबक हुई कजा, एक जरा ना रह्यो कुफर । सो साफ किए सबन को, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -35
- चौदे तबक होसी कायम, इन नुकते इलम हुकम । हक अर्स वाहेदत में, हुआ रोसन दिन खसम || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -3
- चौदे तबकों ढूंढ़या, सब रहे दूर से दूर । रूह-अल्ला के इलम बिना, हुआ न कोई हजूर || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -2
- चौदे तबकों न पाइए, हक बका ठौर तरफ । सो कदम तले बैठावत, ऐसा इलम का सरफ || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -54
- चौदे तबकों न पाइया, अर्स हक का कित । सो नजीक देखाए सेहेरग से, इलम ईसा के इत || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -39
- चौदे तबकों बका का, कोई बोल्या न एक हरफ । तो ए क्यों पावे हक सूरत, किन पाई न बका तरफ || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -17
- चौदे तबकों में नहीं, रूह-अल्ला का इलम । ए दिया एक तोही को, करके मेहेर खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -5
- चौदे धरके करूं नील दस, गन प्रकास लेऊ धनी जस । पंद्रे धरके करूं पदम, मेरे धनी के गुनकी मैं करूँ गम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -19
- चौदे बरसलों नेष्टा बंध, वचन ग्रहे सारी सनंध । कई जप तप किए व्रत नेम, सेवा सरूप सनेह अति प्रेम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -63

- चौदे भवन के जो धनी, विश्व पूजत सब ताए । ए सुध नहीं काहू को, कोई और है इप्तदाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -22
- चौदे भवन को दिया आकीन, सो भी कहे गिरो बल दिया । सोभा अलेखें कहूं मैं केती, ऐसा धनिएँ हमसों किया || ग्रं - किरन्तन, प्र -81, चौ -6
- चौदे भवन में जोत न समाए, ए नूर किरना किने पकड़ी न जाए । सब्दातीत ब्रह्मांड किए प्रकास, देखसी साथ एह उजास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -7
- चौदे भवन लग एही अंधेरी, झूठे को खेल झुठाई । प्रगट नास व्यास पुकारे, सुकदेव साख पुराई || ग्रं - किरन्तन, प्र -5, चौ -3
- चौदे लोक अग्याकारी, सिर सबन के हुकम । या छलने ऐसे उरझाए, आप भूली सुध घर खसम || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -15
- चौदे लोक उजाला करे, जो निज वतन द्रष्टें धरे । याको नूर सदा नेहेचल, नेक कहूंगी याको आगे बल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -18
- चौदे लोक चारे गमा, सह सतनों सुपन । एणे द्रष्टांते प्रीछजो, विचारी वासना मन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -114
- चौदे लोक बैकुंठ सुंन जोए, जिमी बराबर करूं सोए । मैं प्रगट बिछाए करूं एक ठौर, टेढ़ी टाल करूं सीधी दोर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -2
- चौदे लोक में झूठ विस्तरयो, तामें एक सांचे किए तुम । हँसते खेलते नाचते चलिए, आनंद में बुलाइयां खसम || ग्रं - किरन्तन, प्र -89, चौ -8
- चौदे लोक सुपन के, साथ आया देखन । मुक्त दे पीछे फिरे, सदासिव चेतन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -33
- चौसठ थंभ चबूतरा, इत कठेड़ा बिराजत । तले गिलम ऊपर चन्द्रवा, चौसठ थंभों भर इत || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -4
- चौसठ थंभ चबूतरा, दरवाजे तखत बरनन । रूह मोमिन होए सो देखियो, करके दिल रोसन || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -2
- चौसठ दरम्यान हवेलियां, सो हिसाब कहूं मंदिरन । हर एक के तैंतालीस, जमे सताईस से बाबन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -85

छ

- छक्यो साथ प्रेम रस मातो, छूटे अंग विकार । परआतम अन्तस्करन उपज्यों, खेले संग आधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -83, चौ -9
- छंछेक देखे छैल चीते, जगत जलदी जोर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -36
- छज्जे चढ़ एक दूजी देवें ठेक, यों कई ठेकतियां जाए । एक दोऊ पांऊं ठेकें खेल विसेकें, जान लगत न छज्जे पाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -40, चौ -3

- छज्जे बड़े नौमी भोम के, बोहोत बड़ो विस्तार । बैठक धनी साथ की, बाहेर की किनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -133
- छटके छेल कंठ मेल, हाँस खेल रंग रेल । बंध बेल ठमके ठेल, कामनी केलि करे || ग्रं - किरन्तन, प्र -123, चौ -3
- छटके रमे पाखल भमे, रामत न करे भंग । छेलाइए छेके अंग वसेके, सखी सर्वे सुचंग || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -7
- छटके रामत मेली, वालाजी संघाते गेहेली । आलिंघण लिए ठेली, चुमन दिए पिउ पेहेली, मुख आस पास || ग्रं - रास, प्र -38, चौ -13
- छठी भोम नूर पूरन, जित रेहेत नूर सुखपाल । बड़ी बड़ी नूर हवेलियां, बड़े बड़े नूर पड़साल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -79
- छठे दिन मोमिन जमा हुए, तब गिरो आई सब कोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -23
- छत्ते आगा लिया इन समें, जब दोऊ सों लागी जंग । हुकम लिया सिर आकीन, छोड़ दुनी का संग || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -101
- छत्री पांच ऊपरा ऊपर, जानों रचिया भोम समार । एक भोम रेती तले, ऊपर भोम बट चार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -44
- छप्पन रया विन सांभल्या, तेतां सुणी न सक्यो राय । कलकली कंपमान थया, ते तां कहया न सुण्या जाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -35
- छब फब इन नैनों की, जो रूह देखे खोल नैन । आठों पोहोर न निकसे, पावे आसिक अंग सुख चैन । || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -16
- छब फब नई एक भांत की, श्रवन गाल मुसकत । लाल अधुर मुख नासिका, जानों गौर हरवटी हँसत || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -23
- छब फब मुख सनकूल, चढ़ती कला देखाए । कायम अंग अर्स के, सब चढ़ता नजरों आए || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -80
- छबि सरुप मुख छोड़ के, देख सकों न लांक अधूर । ए लाल की लालक क्यों कहूं, जो अमृत अर्स मधूर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -111
- छर थी तीत अछर थया, अने अछरातीत केहेवाय । आपणने जावू एणे घरें, इहां अटकलें केम पोहोंचाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -70, चौ -5
- छर रामत इछायें करे, अछर आपो आप । एहेनी वासना पोहोंचसे इहां लगे, ए सत मंडल साख्यात || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -94
- छल की भोम को तुम समझत नाहीं, ना सुनत मेरी बात जी । जानत हो दिन दो पोहोर रेहेसी, पाओ पल में हो जासी रात जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -29
- छल तें मोहे छुड़ाए के, कछु दियो विरहा संग । सो भी विरहा छुड़ाइया, देकर अपनो अंग || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -32

- छल में आप देखाइया, दिया अपना इलम । मैं आप पेहेचान ना कर सकी, न कछू चीन्हया खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -26
- छल मोटे अमने अति छेतल्या, थया हैया झांझरा न सेहेवाए मार । कहे महामती मारा धणी धामना, राखो रोतियों सुख देयो ने करार || ग्रं - किरन्तन, प्र -37, चौ -4
- छलकत छोले चेहेबच्चे, नेहेरें चलत तेज नर । सो विचरत सब बगीचों, पीवत हैं भरपूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -8
- छलथैं मोहे छुड़ाए के, कछू दियो विरहा संग । सो भी विरहा छुड़ाइया, देकर अपनों अंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -29
- छात पांचमी पोहोंची पहाड़ लों, बड़े बंगले बड़ी दिवाल । बड़े छज्जे चारों तरफों, सुख पाइए जो आवे हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -28
- छाती निरखों हक की, गौर अति उज्जल । देख हैड़ा खूब खुसाली, तो मोमिन कहया अर्स दिल || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -19
- छाती मेरी कोमल, और कोमल तुमारे चरन । बासा करो तिन पर, तुम सों निसबत अर्स तन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -20
- छाती मेरे खसम की, जिन का नाम सुभान । जो नेक देखू गुन अन्दर, तो तबहीं निकसे प्रान || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -35
- छाती मेरे खसम की, देखी जोर सलूक । न्यारे होत निमख में, हाए हाए जीवरा न होत टूक टूक || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -55
- छाती मेरे मासूक की, चुभी मेरी छाती मांहें । जो रूह अर्स अजीम की, तिनसे छूटत नाहे || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -56
- छाया की जो दुनियां, ताए अचरज होए सबन । काल के पार जो पोहोंचहीं, सो क्यों कर रेहेवे तन || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -38
- छिपके साहेब कीजे याद, खासलखास नजीकी स्वाद । बड़ी दवा मांहें छिपके ल्याए, सब गिरोह सों करे छिपाए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -15, चौ -1
- छिपा था बुजरक बखत, जाहेर हुआ रोज देखाई कयामत । अग्यारहीं सुख ले चले सिरदार, पीछे बारहीं में जले बदकार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -24, चौ -3
- छिपाइयां अपनी मेहेर में, देखाया और आलम । देखो कौन आवे दौड़ अर्स में, लेय के इस्क खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -15
- छिपाया देखाऊं जाहेर कर, जो हमें फरमाए । त्यों देखाऊं कर माएने, ज्यों छोटे बड़े समझी जाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -4
- छिपिया सांच सबन से, झूठ गया पसर । सो सारे सत ले खड़े, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -17
- छिपी किसी की ना रहे, करना धनी अदल । सांच झूठ जैसा जिनों, चढ़ आया तराजू दिल || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -26

- छिपी बातें थी दिलमें, ए देखो जाहेर करी पुकार । जोस दे न हादी का छिपने, या जीत या हार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -8, चौ -18
- छिपी बातें बीच अर्स के, कोई रही न माहें सक । पाई ऐसी बेसकी, जो लई दिल की बातें हक || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -30
- छीन लिए बल सबन के, जो सूरमें बड़े केहेलाए। बांध्या जो कोई बल करे, तो बड़े जो गोते खाए || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -14
- छीन लिया एता मता, तो भी न हुई खबर । क्यों देखे मजाजी दुनियां, जो लों बातून नहीं नजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -29
- छुटकायो भी ना छूटे, तो आतम दृष्ट कैसे टूटे । इत बोहोत लीला कहूं केती, सोई जाने लगी जाए जेती || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -150
- छूटक छापा कुंदन केरा, साडी सेंदरिए रंग । हीरा माणक मोती लसणिया, मध्य पांच वानिना नंग || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -22
- छूटक छूटक क्योहरी, सातों घाटों माहें । दोऊ किनार जड़ाव ज्यों, क्यों कहूं सोभा जुबांए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -24
- छूटक छूटक क्योहरी, सातों घाटों माहें । दोऊ किनारें जड़ाव ज्यों, क्यों कहूं सोभा जुबाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -19
- छूटक थड ने घाटी छाया, रमवाना ठाम अति सार । इंद्रावतीबाई अति उछरंगे, आयत करे अपार || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -34
- छूटत है रे खरग छत्रियों से, धरम जात हिंदुआन । सत न छोड़ो रे सत वादियो, जोर बढ़यो तुरकान || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -2
- छूटी छोले लेहेरें पड़ियां बाहेर, छूट गई मरजाद । भाने भेख पंथ पैडे दरसन, ढाहे तीरथ प्रासाद || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -17
- छूटी रूहों को अर्स की, मूल मेले की लज्जत । इस्क न आवे क्यों हमको, जाकी नूरजमाल सों निसबत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -8
- छे दिन कहे और कौल में, कहया तिन का बेवरा ए। हादी मोमिन कर सबों बका, अपने अर्स बका पोहोंचैंगे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -25
- छे दिन की पैदास । पैदास कही छे दिन की, सो इन आलम का विस्तार । दिन जुमां के बीच में, पाई साइत जो कही अपार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -18
- छे मंदिर आणू सीढ़ियां, दोऊ तरफ चढ़ाए । चौक छोटे आगू देहरी, सोभा इन मुख कही न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -34
- छे रोज कहे एक कौल में, और तीन रात कौल एक । ए हिसाब होए बीच फजर, हुए जाहेर साहेब नेक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -30
- छे हजार बाजू दोए बगल, जबराईल ऊपर रूहन । अग्यारै सदी गिरह खोल के, चले महंमद संग मोमिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -15

- छे हांस ऊपर दस मंदिर, हांसें पोहोंची लग पचास । एक झरोखा दो मेहेराव, ए जो फिरती खूबी खास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -108
- छेक इंड मांहे कीधूं सही, पण अखंड ते लई सक्यो नहीं। पाछा वली पड्या प्रतिबिंब, एहोनी तां एह सनंध || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -6
- छेडे हेम हीराने पुखराज पाना, कोरे माणक नीलवी ने मोती । काणी छेडा जुजवी जुगते, इंद्रावती खांत करी जोती || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -17
- छेडो न छटके, अंग न अटके, भरे पांउं चटके, मानवंती मटके || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -1
- छेतरवां हीडो जगदीस ने, ते छेतरया केम करो जाय । पास बीजा ने मांडिए, जई आपोपूं बंधाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -11
- छेद इंड में कियो सही, पर अखंड दृष्टें आया नहीं । आड़ी सुंन भई निराकार, पोहोंच ना सके ताके पार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -7
- छेल छंछेरीने लीधी बाथ जुगते, रामत कीधी अति रंग जी । स्याम सुन्दरी बने सरखी जोड, जाणिए एक अंग जी || ग्रं - रास, प्र -43, चौ -1
- छेलाइए अति छेल, वल्लभ संघाते गेहेल । प्रेम तो पूरो भरेल, स्याम संगे रंग रेल, वाले बांहोंडी रे बंध || ग्रं - रास, प्र -13, चौ -9
- छेलाइए छाना थई छपजो, रखे कोई बोलतं काई । ओ काने सरूओ छे सबलो, हमणा ते आवसे आंहीं || ग्रं - रास, प्र -15, चौ -6
- छोटा बड़ा अर्स का, सो सब हैं चेतन । पेहेचान इस्क अंग में, इन विध बका वतन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -21
- छोटी बड़ी न जाड़ी पतली, सबे बनी एक रास । उतरती मिहीं मिहीं से, जुबां क्या कहे खूबी खास || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -85
- छोटी बड़ी या जो कछू, ए जो चौदे तबक की जहान । ए भी हक इस्क तो पाइए, जो होए बेसक पेहेचान || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -30
- छोटे छोटा या बड़े बड़ा, खेल देखावें सब । सब सुख तबहीं पावहीं, धनी को रिझा जब || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -42
- छोटे बड़े जिन खोजिया, न पाया करतार । संसा सब कोई ले चल्या, पर छूटा नहीं विकार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -4
- छोटे बड़े जिन खोजिया, न पाया करतार । संसा सब कोई ले चल्या, पर छूटा नहीं विकार || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -4
- छोटे बड़े जीव कई रंग के, जानों के देह कंदन । कई नकस कई बूटियां, कई कांगरी चित्रामन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -66
- छोटे बड़े पसु पंखी, सब रिझावें साहेब । लड़ें खेलें बोले बानी, विद्या कई विध साधे सब || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -37

- छोड़ गुमान सब मिलसी, ए जो देखत हो जहान । जात पांत ना भांत कोई, एक खान पान एक गान || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -24
- छोड़ घर को सुख अलेखे, आतम काहे को दुखड़ा देखे । आतम परआतम पेखे, सुख उपजे सत अलेखे || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -17
- छोड़ याको आगे को गए, नूर बनमें दाखिल भए । जबराईल रह्या इन ठौर, ला मकान से ए मकान और || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -9
- छोड़ सगाई आतम की, करें सगाई आकार । वैराट कोहेड़ा या बिध, उलटा सो कई प्रकार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -13
- छोड़ सगाई रूह की, करें सगाई आकार । वैराट कोहेड़ा या विध, उलटा सो कई प्रकार || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -16
- छोड़ सरा ले तरीकत, पीठ देवे नासूत । फैल करे तरीकत के, सो पोहोंचे मलकूत || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -39
- छोड़ी म जिमी अरब की, आए हम पास तुमारे || ग्रं - सनंध, प्र -34, चौ -14
- छोड़ो बिलावत सबकी, बलसीस मांगो हिंद के मुसलमानों पें || ग्रं - सनंध, प्र -34, चौ -12
- छोड़्या नहीं अर्स को, और खेलमें भी गैयां । अंतराए भी हुई अर्स से, और जुदियां भी न भैयां || ग्रं - सिंधी, प्र -16, चौ -17

ज

- जई ने जुए फल जुआ थईने, अनेक कीधी उनमान । एक माहें थी चोरासी बुधे बोल्या, पण पांम्या नहीं पराधान || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -53
- जंग करत अंगो अंगें, साथ नंग के नंग। रंग सों रंग लरत हैं, तरंग संग तरंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -41
- जंग करे जोत थंभ की, अर्स जोतसों आए। मिली जोत जिमी बन की, ए नूर आसमान क्यों समाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -46
- जंग किया सैयां तिनसों, जो आगे कछए नांहें । ए भी कहें ओ ना कछू, पर उरझ रहियां तिन मांहें || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -52
- जंग जवेर करत हैं, आसमान देखिए जब । लरत बीच आकास में, नजरों आवत है तब || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -117
- जगदीस नाम विष्णु को होए, यों न कहूं तो समझे क्यों कोए । ए जो प्रेम लीला श्री कृष्णजीऐं करी, सो गोपन में गोपियों चित धरी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -7
- जंगल रोया जलिया, जल बल हुआ खाक । इनमें पंखी क्यों रहे, जो पर जल हुए पाक || ग्रं - किरन्तन, प्र -75, चौ -8

SPJIN

- जगाइए इलम से, विच सोणे विहारे । निद्रडी आई जा हुकमें, जागां कीय करे || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -2
- जगाई तो भी ना जागी, आप कह्या इत आए। मैं परी बीच फरेब के, मोहे थके जगाए जगाए || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -32
- जगाऊं सुख याद देने, करूं आप अपनी बात । पीछे हम तुम मिलके, जाहेर कीजे विख्यात || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -11
- जगाए आवेस लेयके, तब इत भए अंतरध्यान । विलास विरह चित चौकस करने, याद देने घर धाम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -15
- जगाए नीके सुख देऊ, रेहेस खेलाऊं रंग । सत सुख क्यों आवहीं, जोलों ना दीजे अंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -41
- जगाए लई रूहें अपनी, कदमों जो असल । या संदेसा कहे, इत बैठे हैं सामिल || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -41
- जगावत कई जुगतें, दई कई विध साख गवाहे । बैठावत सुख अखंड में, तो भी जेहेर जिमी छोड़ी न जाए || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -15
- जंजीर द्वार भिस्तकी, अव्वल खोले महंमद । दिल साफ करो ए देख के, ले हदीस साहेद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -77
- जंजीरां मुसाफ की, मोतियों में परोइए जब । जिनसें जिनस मिलाइए, पाइए मगज माएने तब || ग्रं - किरन्तन, प्र -72, चौ -1
- जठरा अगिन तले करी, ऊपर ऊंधे मुख लटकाए । बोल न सके ठौर सकड़ी, काढयो मुरदे ज्यों छुटकाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -106, चौ -6
- जड़ित किनारें दोऊ जल पर, दोऊ कठेड़े गिरदवाए। ए सुख लेती मासूक संग, इत अचरज बनराए । || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -27
- जड़ित पानी श्रवनों, लरें लाल मोती लटकत । ए जरी जोत कही न जावहीं, पांच नंग झलकत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -57
- जड़ी न घड़ी समारी किने, ए तो कायम सदा असल । नई न पुरानी अर्स में, इत होत न चल विचल || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -82
- जडे आणीने ओडडा, तडे पेरई डिंने लज्जत । हे डिनो अचे सभ तोहिजो, मूंके बुझाइए सौ भत || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -18
- जडे गुणा डिठम पाहिजा, द्रिनिस घणूं हिकार । तरसी न्हारयम हक अडां, कियम पांण पुकार || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -23
- जडे सूतर सभनी न्हास्यो, वीयन हथ पाए । जिंनी मूर न कतयो, पोएसे मोहों लिकाए || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -12
- जड्या पहाड़ जानों सोने सों, जुदे जुदे जवेरन । ए मोहोल अति सुन्दर, बड़ी बैठकें रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -15

- जंत्र बेन बजावहीं, रबाब ताल मृदंग । अमृत सारंगी झरमरी, झांझ तंबूरा चंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -92
- जदिप ते जीते विदयाए, पण एने अजाण्यूं नव जाय । ज्यारे वालोजी सहाय थाय, झख मारे त्यारे मायाय || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -16
- जदिप संग थयो कोई जीवनो, तेनो न करूं मेलो भंग । ते रंगे भेलू वासना, वासना सतनो अंग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -64
- जदी नदी जुगतें सोभित, बन मोहोलों लिया घेर । गिरद झरोखे नवों भोम के, बीच धाम बन चौफेर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -56
- जनम अंध अमे जे हता, ते तां तमे देखीतां कस्या । वांसो वछूटो हाथथी, जमपुरी जातां वली कर ग्रहया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -3
- जनम अंध जो हम हते, सो तुम देखीते किए। पीठ पकड़ हम ना सके, सो फेर कर पकर लिए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -3
- जनम मानखो खंड भरथनो, सृष्ट कुली सिरदार । ए वृथा कां निगमो, तमे पामी उत्तम आकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -48
- जनम व्याह नित प्रते, सारे पुरे अनेक होए। नेक कारज करे कछुए, तो बुलावे सब कोए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -54
- जनम संघाती जाण्यो, मन तो ऊपर माण्यो । सुंदरी चितसुं आण्यो, विविध पेरे वखाण्यो, वालानी विख्यात || ग्रं - रास, प्र -38, चौ -2
- जनम होवे काहू के, काहू के होए मरन । हांसी हिरदे काहू के, काहू के सोक रूदन || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -20
- जनम होवे काहू के, काहू के होवे मरन । कोई हिरदे हँसे हरखे, कोई सोक रूदन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -18
- जब अंतर आंखां खुलाई, तब तो बाहेर की मुंदाई । जब अंतर में लीला समानी, तब अंग लोहू रया न पानी || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -22
- जब अस्वारी साहेब करें, होवें बड़ी रूह रूहें अस्वार । पसु पंखी सबे मिले, हर जातें फौजें न पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -8
- जब आई आयत हकीकत, तब पीछली करी मनसूक । ए हुकम तोड़े सो क्यों देखे, जो फोड़ जमात हुए टूक टूक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -61
- जब आखिर हक जाहेर सुनें, तब खिन में रूहें दौड़त । सो क्यों रहें कदम पकड़े बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -62
- जब आगू से खबर करी, क्या करे फरेब असत । इस्क हमारा कहां जाएसी, क्या करसी नहीं मदत || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -22
- जब आतम दृष्ट जुड़ी परआतम, तब भयो आतम निवेद । या विध लोक लखे नहीं कोई, कोई भागवंती जाने ए भेद || ग्रं - किरन्तन, प्र -8, चौ -3

- जब आतम ने दई साख, साथें भी कही बेर लाख । सत धनिएं साख आए दई, सो तो सत वतन वालों ने लई || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -18
- जब आया प्रेम सोहागी, तब मोह जल लेहेरां भागी । जब उठे प्रेम के तरंग, ले करी स्याम के संग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -54
- जब आया रब आलमीन, तब आया सबों आकीन । और मजहब सब उड़ गए, एक खड़ा महंमद दीन || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -16
- जब आवत इत अर्स से, चढ़िए इन घाट ताल । चबूतरे दोए क्योहरी, सीढ़ियां चढ़ते होत खुसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -3
- जब आवें यार ले महंमद, पट खोल दे मुसाफ दीदार । काजी कजा तब होएसी, दूजा कौन खोले ए द्वार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -73
- जब आह सूकी अंग में, स्वांस भी छोड्यो संग । तब तुम परदा टालके, दियो मोहे अपनो अंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -8
- जब आह सूकी अंगमें, स्वांस भी छोड्यो संग । तब तुम परदा टाल के, दियो मोहे अपनो अंग || ग्रं - सनंध, प्र -10, चौ -8
- जब इन दोऊ मरदों ने, मिल साहेदी दई । तब मेरे दिल अर्स में, जरा सक ना रही || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -20
- जब इमाम आए सुने, तब मोमिन रेहे ना सकत । दौड़ के कदम पकड़े, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -63
- जब इमाम इत आइया, तब ए सारे संग । सरूप मेंहेंदी याही को, यामें देखोगे कई रंग || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -18
- जब इमाम इत आए, तब क्यों रहे ढांप्या चोर । मोमिन पेहेले छुड़ाए के, दिए दुनी के बंध तोर || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -39
- जब इमाम जाहेर हुए, तब क्यों रेहेवे अंधेर । अपनी तरफ सबन के, लिए दुनी दिल फेर || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -45
- जब इलम मेरा पोहोंचिया, तब ए होसी बेसक । तब साइत ना रेहे सकें, ऐसा इनों का इस्क || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -6
- जब इलम सबों आइया, सो कछू सखती देवे दिल । तिन सखती तन अर्स की, पाइए लज्जत असल || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -25
- जब इस्क इनों आवसी, तब देखेंगे मुझको । इस्क बिना इन अर्स में, मैं मिलों नहीं इनसों || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -32
- जब इस्क गया सब थे, तब निकल आई पेहेचान । जिनका इस्क जोरावर, ताए कछुक रहे निदान || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -90
- जब ईसा मेंहेदी महंमद मिले, तब मिले सब आए । फेर पीछा क्या देखहीं, परदा दिया उड़ाए || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -66

SPJIN

- जब उठे अंग रूह के, सो तं जागी जान । आई अर्स अंग लज्जत, तिन पूरी भई पेहेचान || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -41
- जब उड़ी नींद असल की, हक देखे होंए जाग्रत । सुख लेसी खेल का अर्स में, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -4
- जब ए इलम रूहों पाइया, इस्क हो गया चौदे तबक । और देखे न कछुए नजरों, सब देखे इस्क हक || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -33
- जब ए करें जाहेर, देवें पट उड़ाए। भिस्त दे सबन को, लेवें कयामत उठाए || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -44
- जब ए द्वार हुकमें खोलिया, हकमें देख्या हक हाथ । तब रही ना फरेबी खुदी, वाहेदत हुकम हक साथ || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -65
- जब ए सुख अंग में आवहीं, तब छूट जाएं विकार । आयो आनन्द अखण्ड घर को, श्री अछरातीत भरतार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -37, चौ -6
- जब ए हुई खुसाली, तब भूले सिजदे खाली । निमाज के बखत दिल धर, छूटी दाएँ बाएँ नजर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -7
- जब एक ठौर पांचों भए, तब तुमारा इत का । सत संदेसा हक को, क्यों न पोहोंचे माहें बका || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -61
- जब एक रात एक दिन हुआ, सो एही फरदा कयामत । अहेल किताब मोमिन कहे, हादी कुरान सूरत || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -29
- जब एही बातून जाहेर हुआ, पेहेचान पोहोंची मांहें सब । सब एक हेयातीय का, करसी सिजदा तब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -8, चौ -20
- जब कछू पैदा ना हुआ, जिमी या आसमान । सो हुकम तब ना हुआ, जिन थें उपजी जहान || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -15
- जब काफर देखे अगुओं, तब जाने काले नाग । करी दुनी को जरदरूं, इनहूं लगाई आग || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -7
- जब की माया ए भई पैदा, ए लीला न जाहेर कब । बृज रास और जागनी लीला, ए जो प्रगटी अब || ग्रं - किरन्तन, प्र -57, चौ -7
- जब कुफर कछू ना रह्या, तब दुनियां हुई एक दीन । ए नूर कजा का झिल मिल्या, आया सबों आकीन || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -22
- जब केहेनी आई अंग में, तब फैल को नाहीं बेर । फैल आए हाल आइया, लेत कायम रोसनी घेर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -73
- जब खसम काजी हुआ, तब नाहीं दुखिया कोए। महंमद मेहेर करावहीं, सब पाक हुए दिल धोए || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -16
- जब खसम की सुध सुनी, तब रहे ना सोहागिन । ख्वाबी दम भी ना रहे, तो क्यों रहे सैयां चेतन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -23

- जब खावंद अर्स देखिए, तब तो एही एक । इस बिना और जरा नहीं, जो तूं लाख बेर फेर देख || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -81
- जब खुली मुसाफ मारफत, तब हुआ बेवरा रोसन । खेल भी हुआ जाहेर, हुए जाहेर बका मोमिन || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -94
- जब खुली हकीकत मारफत, तब मजहब हुए सब एक । तब सबके दिल धोखा मिट्या, हुए रोसन पाए विवेक || ग्रं - किरन्तन, प्र -121, चौ -13
- जब खूबी ताल यों देखिए, चढ़ चांदनी पर । फिरती पाल बन योहरी, जल सोभित अति सुंदर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -8
- जब खेलें इत सखियां, स्याम स्यामाजी संग । तब सोभा इन बन की, लेत अलेखे रंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -13
- जब खोले मगज मुसाफ के, द्वार हकीकत मारफत । एही दिन ऊगे होसी जाहेर, देखसी दुनी कयामत || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -103
- जब घर की तरफ देखों तुमको, तब फेर यों होए मेरे मन को । ए धाम धनी को कहा कहे वचन, तब जीव विचार दुख पावे मन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -10
- जब चढ़े प्रेम के रस, तब हए धाम धनी बस । जब उपजे प्रेम के तरंग, तब हुआ धाम धनी सों संग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -56
- जब चले सैर जिमीय की, जो बन बिगर थोड़ी रेत । साफ जिमी अति दूर लों, तरफ पछिम की सुपेत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -65
- जब जहूर जाहेर हुआ, कलाम अल्ला का नूर । तब ए होसी कायम, ले याही का जहूर || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -46
- जब जाग अर्स हक देखिए, ए नहीं खेल कछू तब । पर जोलों हुकमें है खड़ा, तोलों क्यों होए झूठा अब || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -7
- जब जानों करूं बरनन, तब ऐसा आवत दिल । जब रूह साहेदी देत यों, इत ऐसा ही चाहिए मिसल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -2
- जब जाहेर माएने लीजिए, तब खड़े होत हैं घर । अन्दर माएने सब उड़त हैं, सो पढ़े लेवें क्योंकर || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -36
- जब जाहेर हुआ रोजा और हज्ज, तब काजिएँ खोल्या मुसाफ मगज । ए बात साहेबें छत्रसालसों कही, घर इमाम बिलंदी छत्ता को दई || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -23, चौ -9
- जब जैसा दिल चाहत, तिन खिन तैसा देखत । वस्तर भूखन हक अंग के, केहेनी में न आवत || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -47
- जब जोड़े मिले मुकाबिल, तब जाहेर हुए रात दिन । रात कुफर फना मिट गई, हुआ हक बका अर्स रोसन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -36

- जब जोस आवे हक बोलते, प्रेम सों गलित गात । तिन समें मुख मासूक का, मार डारत निघात || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -32
- जब तमाम सदी अग्यारहीं, ए महंमद उमत आकीन । जबराईल मुसाफ ले आए, और बरकत दुनियां दीन || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -46
- जब तुम भूले मुझ को, तब इस्क गया भुलाए । अब नए सिर इस्क, देखो कौन लेय के धाए || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -86
- जब तें एह आसा मेटी, तब तो तं साहेब सों भेंटी । जो लों कबू देखे आप, तो लों साहेब सो नहीं मिलाप || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -16
- जब थक रही जुबां इतहीं, ए जो नरें किया ख्याल । तो आगे जुबां क्यों कर कहे, बल सिफत नूरजलाल || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -9
- जब थें आया रसूल हक का, तिन बीच हुए कई काम । जहां जो पूरन हुआ, दिन सोई कह्या अल्ला कलाम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -34
- जब थें दुनी पैदा हुई, अब लग थें अव्वल । बका पट किने न खोल्या, कई गए ब्रह्मांड चल || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -13
- जब थें सूरज देखिए, लेत अंधेरी घेर । जीव पसु पंखी आदमी, सब फिरें याके फेर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -16
- जब थें सूरज देखिए, लेत अंधेरी घेर । जीव पसु पंखी आदमी, सब फिरें याके फेर || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -16
- जब दुख मेरी रूहन को, तब सुख कैसा मोहे । हम तुम अर्स अजीम के, अपने रूह नहीं दोए || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -61
- जब देखिए सामी खेल के, तो बीच पड़यो ब्रह्मांड । एती जुदाई हक अर्स के, और खेल वजूद जो पिंड || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -36
- जब देखें कदम रंग को, जानों एही सुख सागर । जब देखू याकी सलूकी, आड़ी निमख न आवे नजर || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -47
- जब देखो गुन श्रवना, जानों कोई न इन सरभर । सहूर करों एक गुन सुख, तो जाए निकस उमर || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -39
- जब देखों सीतल नजरों, सब ठरत आसिक के अंग । सब सुख उपजे अर्स में, हक मासूक के संग || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -33
- जब देखों हक निसबत, तब एकै हक निसबत । और हक का हुकम, कछू ना हुकम बिना कित || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -24
- जब देख्या हांस विलास, गल गया हाड मांस स्वांस । जब अंतर आया सुमरन, रहयो अंग ना अंतस्करन || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -23
- जब दोए रे दोए बोलावें, तब तैसे ही पाउं चलावें । तीन कहें तो बाजे तीन, चार बाजे कला सब लीन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -144

SRJIN

- जब नंग देखू नीलवी, जानों एही सुख सागर । जोत मीठी रंग सुन्दर, जानों के सब ऊपर || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -21
- जब नहीं कछू पैदा हुआ, जिमी या आसमान । और ना कछू चौदे तबक, फरिस्ते दुनी जहान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -6
- जब न्यामत पाई हक की, खुली मुसाफ हकीकत । तब सब विध पाइए, हक अर्स मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -12
- जब पट अपने मोह से, किया मुसाफें दूर । तब नूर बका जाहेर हुआ, और तजल्ला नूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -59
- जब पट खोल्या महंमदें, सो नर बंदें लई जिन । तिन दिए पैगाम हक के, सबमें किया बका दिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -18
- जब पीछल चले पुखराज के, अति चौड़ो बड़ो विस्तार । ए बन खूबी क्यों कहूं, आवत नहीं सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -20
- जब पूरन सदी अग्यारहीं, तब जागनी रास तमाम । मन चाह्या सुख दे सबों, हँसते उठे घर धाम || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -21
- जब पूरन सरूप हक का, आए बैठा मांहें दिल । तब सोई अंग आतम के, उठ खड़े सब मिल || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -70
- जब पेहेले मोको सब जानसी, तब होसी तुमारी पेहेचान । हम तुम अर्स जाहेर हुए, दुनी कायम होसी निदान || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -74
- जब पोहोंचे एह सरत, बाहेर न जाना तिन बखत । हर एक जमात बोहोत मेला, हर इन की सों मुराद किबला || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -11, चौ -10
- जब प्रले प्रकृती होई, ना रहे अद्वैत बिना कोई । एक अद्वैत मंडल इत, धनी अंगना के अंग नित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -3
- जब प्रेम सबों अंग पिआ, अपना अनुभव कर लिया । तब वार फेर जीव दिया, अब न्यारे न जीवन जिया || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -60
- जब प्रेम हुआ झकझोल, तब अंतर पट दिए खोल । जब चढ़े प्रेम के पुन्ज, निज नजरों आया निकुंज || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -62
- जब प्रेम हुआ प्रघल, अंग आया धाम का बल । तुम यों जिन जानो कोए, बिन सोहागिन प्रेम न होए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -63
- जब बँचत नैना जोड़ के, तब दोऊ बान छाती छेदत । अंग आसिक के फूट के, वार पार निकसत || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -39
- जब बँचत भर कसीस, तब मतलक डारत मार । इन विध भेदत सब अंगों, मूल तन मिटत विकार || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -11
- जब बात करें हक रूह सों, तब अंग सब उलसत । करते बातें छिपे नहीं, हक अंगों इस्क सिफत || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -26

- जब बिछोहा धनी का, तब दुख में धनी विलास । उन दुख के विलास में, पोहोंचाए देत धनी आस || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -8
- जब बैठे जिन तरफ, तब तितहीं की जुगत । बातें करें बनाए के, नूर अपने अपनायत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -135
- जब बैठे तरफ दरियाव की, घृत दूध दधी असल । कायम सुख कायम भोम के, आवे न माहें अकल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -138
- जब बैठे तरफ नूर की, तब तितहीं का विस्तार । जित सिफत जिन चीज की, तिन सुख नहीं सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -136
- जब बैठे तरफ पहाड़ की, तब बरनन करें अति दूर । तिन भोम के सुख को, सुमार नहीं जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -137
- जब बैठे तरफ बड़े बन की, तब सोई सुख बरनन । पसु पंखियों के इस्क की, कई विध करें रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -139
- जब बैठे हक दिल में, तब रूह खड़ी हुई जान । हक आए दिल अर्स में, रूह जागे के एही निसान || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -72
- जब बोलत बदन विकास के, होत सबे हेहंकार । दसों दिसा सब गरजत, पड़त सबे पुकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -38
- जब बोलावें सर्वा अंगे, भूखन बोले सबे एक संगे । जब जुदे जुदे स्वर बोलावें, छब जुदी सबोंकी सोहावे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -146
- जब भेख काछा रूह का, फैल सोई किया चाहे तिन । नाम धराए क्यों रद करे, हक एती देत बड़ाई जिन || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -8
- जब माएने खुले मुसाफ के, बैठे इमाम जाहेर होए । तब ए दुनी जुदी जुदी, क्यों कर रहसी कोए || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -54
- जब माया मोह न अहंकार, ना विस्तरे त्रिगुन । ए दिल दे के समझियो, कहूंगी मूल वचन || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -16
- जब मुसाफ हादी गिरो चली, पीछे दुनी रहे क्यों कर । खेल किया जिन वास्ते, सो जागे अपनी सरत पर || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -33
- जब मेला होसी मोमिनों, तब देखसी सब कोए । और न कोई कर सके, जो मोमिनों से होए || ग्रं - किरन्तन, प्र -118, चौ -5
- जब मैं मरम पायो मोहजल को, तब मैं भाग्या रोई। डर के उबट चल्या उबाटे, बाट बड़ी मैं खोई || ग्रं - किरन्तन, प्र -19, चौ -4
- जब मैं हुती विरह में, तब क्यों मुख बोल्यो जाए। पर ए वचन तो तब कहे, जब लई पिया उठाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -21
- जब मोह मुसाफै खोलिया, तब पट न आड़े हक । तब दीदार पावे दुनियाँ, जो हक इलमें हुई बेसक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -60

- जब मोहे हादी सुध दई, ए खले माएने तब । तले ला मकान के, खुराक मौत की सब || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -24
- जब मोहे हादी सुध दई, पाया ला इला तब । नूर-मकान नूर-तजल्ला , पाई अर्स हकीकत सब || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -33
- जब याद आयो सुख अखंड, तब रहे ना पिंड ब्रह्मांड । जब चढ़े विकट घाटी प्रेम, तब चैन ना रहे कछू नेम || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -24
- जब याद तुमें मैं आंऊगा, तबहीं बैठोगे जाग । गए आए कहूं नहीं, सब रूहें बैठीं अंग लाग || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -37
- जब यों बुजरक हलके हुए, हिसाब दिए पाक होए । कुफर खुदी जब उड़ गई, तब गुसल किया सब अंग धोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -34
- जब रसूल आवे फेर कर, खोलसी द्वार हकीकत । खतम है याही पर, होवे तबहीं अदालत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -25
- जब रूह को जगावे हुकम, तब रूह आप छिप जाए । तब रहे सिर हुकम के, यों हुकमें इलम समझाए || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -54
- जब लग ख्वाब नजरों, तब लों देत देखाई यों कर । ना तो सुख नूर-जमाल को, बैठे लेवें कायम घर || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -54
- जब लग तुम रहो माया में, जिन खिन छोड़ो रास जी । पचीस पख लीजो धाम के, ज्यों होए धनी को प्रकास जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -3, चौ -5
- जब लग भूली वतन, तब लग नाहीं दोस । जब जागी हक इलमें, तब भूली सिर अफसोस || ग्रं - किरन्तन, प्र -118, चौ -6
- जब लग मैं ना समझी, तब लग थी मैं मैं । समझे थे मैं उड़ गई, सब कछू हुआ तुम से || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -10
- जब लग मैं सुपने मिने, नहीं खसम पेहेचान । तब लग मैं सिर अपने, बोझ लिया सिर तान || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -43
- जब लग लगे दुनियां, तब पोहोंचे न बका मों । एक रूह दूजा इस्क, आए काम पड्या इनसों || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -82
- जब लाहूत से रूहें उतरीं, कह्या अलस्तो बे रब कुंम । नासूत जिमीमें जाए के, जिन मुझे भूलो तुम || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -2
- जब लिया बातून माएना, खोली रूह नजर । तब हुआ अर्स दिल मोमिनों, जाहेर हुई फजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -76
- जब लिया माएना बातून, रूह नजर खुली तब । दिन मारफत हुआ आलम में, नूर रोसन किया अब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -7
- जब लीजे अन्दर के माएने, तब ना कछु साहेब बिन । साहेब बिना सब दोजख, चौदे तबक अगिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -38

- जब लीजे सुख सुपन, नहीं वतन दृष्ट । जब सुख वतन देखिए, नहीं सुपन की सृष्ट || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -121
- जब ले उठसी रूहें लुदंनी, तब होसी सब पेहेचान । दई हैयाती सबन को, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -48
- जब वैष्णव अंग किये री अपरस, और कैसी अपरसाई। परस भयो जाको परसोतम सों, सो बाहेर न देवे देखाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -8, चौ -4
- जब सत सुख लाग्यो रंग, तब क्यों रहे झूठे को संग । जब धनीसों उपज्यो सत सनेह, तब क्यों रहे झूठी देह || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -20
- जब सत सुख हिरदे में आवे, अरवा तबहीं निकस के जावे । जब सत सुख धनी पाया, तब जीवरा क्योंकर पकरे काया || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -21
- जब सपन से जागिए, तब नींद सबे उड़ जात । सो जागे में सक ना रही, करें मांहों-मांहें सुपन बात || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -19
- जब समझे तब देखिया, याद जो आवे दिल । बीच खिलवत बातें हकपे, जो मांग्या तुम मिल || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -64
- जब सांच उठ खड़ा हुआ, तब कुफर रेहेवे क्यों कर । जोलों कायम दिन ऊग्या नहीं, है तोलों रात कुफर || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -18
- जब साहेब की सुध सुनी, तब जाए ना रह्यो रूहन । ओ ख्वाबी दम भी ना रहें, तो क्यों रहें अर्स मोमिन || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -41
- जब सूत सैयां देखिया, तब जाहेर हईयां सब कोए । पर जिन कछूए न कातिया, छिपाए रही मुख सोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -14
- जब सूर बाजे दूसरा, देवे हक चिन्हाए । तिन सबों कायम किए, रही आठों भिस्त भराए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -84
- जब स्याम रसूल आए इन जिमी, तब हुआ नूर रोसन । कुरान रसूल उमत, जाहेर करी सबन || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -34
- जब हक आवत ताल को, आए बिराजत इत । सो खेल जल का करके, ऊपर सौक को बैठत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -29
- जब हक इलमें मारफत खुली, तब देख्या बका अर्स सूर । सो सूर हुआ सिर सबन के, बरस्या बका हक नूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -22
- जब हक का इलम, हुआ जाहेर ए। तिन इलमें कायम करी, दुनी फानी हुती जे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -38
- जब हक चरन दिल दृढ़ धरे, तब रूह खड़ी हुई जान । हक अंग सब हिरदे आए, तब रूह जागे अंग परवान || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -37
- जब हक झंडा नूर महंमदी, बीच खड़ा हुआ हिंद के । तब अक्स नूर ईमान का, रह्या अंधेर कुफर पीछे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -7

- जब हक बिना कछू ना देखे, तब बूझ हुई कलमें । जब यों कलमा जानिया, तब बका होत तिनसें || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -52
- जब हक याद जो आवहीं, तब रूह देख्या चाहे नजर । दिल अर्स मारया इन घाव से, सो ए मुरदा सहे क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -26
- जब हक हादी जाहेर भए, और अर्स उमत । सब किताबें रोसन भई, ऊगी फजर मारफत || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -99
- जब हक हादी बीच बैठत, ले रूहें बारे हजार । नंग जवेर इन जिमी के, गिरद बैठत साज सिनगार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -153
- जब हके मोहे इलम दिया, तब मोसों कही निसबत । सो निसबत बका हक की, ताकी होए ना इत सिफत || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -22
- जब हम जाहेर हुए, सुध होसी संसार । दुनियां सारी दौड़सी, करने को दीदार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -79
- जब हमें इलम ए दिया, तेहेकीक रूह को तुम । कर मनसा वाचा करमना, कोई ना बिना खसम हुकम || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -35
- जब हार चौथा देखिए, जानों नीलक अति उजास । जानों के सरस सबन थें, ए देत खुसाली खास || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -19
- जब हुए हिजाबमें रसूल, तबहीं खतरा पड्या बीच यार । तबहीं आया बीच फितना, पड़ी जुदागी बीच चार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -13
- जबथें पैदा भई दुनियां, रही दूर दूर थे दूर । फना बका को न पोहोंचहीं, ताथें कोई न हुआ हजूर || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -39
- जबराईल असराफील, हक नजीकी निदान । सो भी आए उमत वास्ते, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -12
- जबराईल आइया, सबों पैगंमरों पर । सो ए रह्या बीच नूर के, ना चल्या महंमद बराबर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -40
- जबराईल जबरूत से, याकी असल नूर मकान । सोहोबत करी महंमद की, तो ल्याया हक फुरमान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -16
- जबराईल जित अटक्या, आगू पोहोंच्या नाहें । सो ए जाने दुनियां हम, पोहोंचे तिन ठौर माहे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -40
- जबराईल जोस धनी का, सो आया गिरो जित । करे वकीली उमत की, कहूं पैठ न सके कुमत || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -12
- जबराईल नूर मकान लग, आगू न सक्या चल । ना तो ल्यावने वाला मुसाफका, कहे आगूंजाऊं तो जाए पर जल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -15
- जबराईल पिया हुकमें, रूहों करत रखोपा आए । सोई सूरत है अपनी, पिया हुकमें लेत मिलाए || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -71

- जबराईल पोहोंच्या नूर लग, मैं पोहोंच्या पार हजूर । मैं वास्ते उमत के, बोहोत करी मजकूर || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -10
- जबराईल महंमद हिमायतें, तो भी छोड़ न सक्या असल । तो दुनियां जो तिलसम की, सो क्यों सके आगे चल || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -44
- जबराईल साथ महंमद, सो तो हुए बीच परदे । अब अदल कजा बीच दुनी के, कौन चलावे ए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -21
- जबराईल साथ रसूल के, आया बीच अव्वल । कुरान ल्याया बीच रात के, चलाया सरा अमल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -13
- जबराईल हक हुकमें, ल्याया नामें वसीयत । फुरमान फकीरों सफकत, ले आवे दुनी बरकत || ग्रं - खुलासा, प्र -18, चौ -2
- जबरुत लाहूत दोऊ बका, हादी रूहें लेवें लज्जत । ए पातसाही हक की, बीच नूर वाहेदत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -11
- जबरूत ऊपर अर्स लाहूत, इत महंमद पोहोंचे हजूर । रद बदल बंदगी वास्ते, करी हकसों आप मजकूर || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -55
- जबरूत लाहूत अर्स कहे, देवें रूह अल्ला हकीकत । ए बका मता दोऊ अोंं का, सो महंमद पे मारफत || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -34
- जमपुरीना दुख दारूण, तेसू नथी तमें माण्या । पुराण ते माटे कहे पुकारी, केणे जाय रखे अजाण्या || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -33
- जमाना खाली नहीं, बिना महंमदी कोए । करत रोसन सबन में, चिराग नबी की सोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -76
- जमुना जरी किनार पर, कई योहरियाँ तलाब । भांत भांत रंग झलकत, यों कई जवेर जड़ाव || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -6
- जमुना जल ढांपी चली, ए बैठक सोभा अतंत । ए सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -77
- जमुना तरफ ताल के, जित जल भिल्या माहें जल । योहरियां इन बंध पर, जल पर सोभित मोहोल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -53
- जमुना दोऊ किनार के, मोहोल ढांपिल दोऊ ओर । तलाव तरफ जोए आए के, जाए माहें मिली मरोर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -22
- जमुना धाम तलाव के, बीच में कई विवेक । कुंजवन मंदिर कई रंगों, कहा कहूँ रसना एक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -8
- जमुनाजी का मूलकुंड कठेड़ा चबूतरा ढांपी खुली सात घाट || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -1
- जमुनाजी के जो पार, बन पसु पंखी याही प्रकार । मोहोल सामे सोभे मोहोल, सो मैं क्यों कहूं या मुख कील || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -56

- जमुनाजी के मूलमें, पहाड़ बन्यो चबूतर । आगूं कुंड दूजा भया, जहां से जल चल्या उतर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -7
- जमुनाजी ने कांठडे, काई द्रुमवेलीनी छांहें । साथ सहु मलीने सामटो, कांई आव्यो ते आनंद मांहें || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -23
- जमुनाजीना जल जोरावर, मध्य वहे छे नीर । वहेतां जल बले रे खजूरिया, दरपण रंग जाणो खीर || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -29
- जमे कियो मंदिरन को, सब बारे हजार भए । दरवाजे थंभ गलियां, अब कहूं जो बाकी रहे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -86
- जमे सब गलियन को, सत्रह से बानबे । आठों जाम देखिए, ज्यों रूह याही में रहे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -96
- जमे सब थंभन को, एक सौ तेरे हजार । छेहत्तर तिनके ऊपर, एते भए सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -91
- जर खरचे खाए गफलतें, करें बड़े दिमाक । कीरत अपनी कराए के, पीछे होवें हलाक || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -21
- जरा एक अर्स-अजीम का, उड़ावें चौदे तबक । तो रूह बका क्यों देखहीं, झूठा खेल मुतलक || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -40
- जरा जरा मेरे जीव का, विरहा तेरा करत । चरने ल्यो इंद्रावती, पेहेले जगाए के इत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -23
- जरा न हुकम सुध बिना, सबन के दम दम । साइत ना खाली पाइए, बिना हुकम खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -5
- जरी जवेर रंग रेसम, नकस बेल फूल पात । ए सिनगार सोभा कही इन जुबां, पर सब्द न इत समात || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -83
- जरी पटुका कटाव कई, कई नकस बेल किनार । पाच पाने हीरे पोखरे, कई रंग नंग झलकार || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -59
- जरे जरा सब नूर में, छज्जे दिवाल सब नूर । जिमी बन बीच आकास में, मावत नहीं जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -28
- जरे जानवर के वाओ सों, ब्रहमांड उड़ावे कोट । तो अर्स जिमी के फील की, कहूं सो किन पर चोट || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -61
- जरे जिमी की रोसनी, भराए रही आसमान । क्यों कहूं जोत तखत की, जित बैठे बका सुभान || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -36
- जरो जरो मूंजे जीव संदो, मूंके विरह पाताऊं वढ । इंद्रावती चोए चेताय, मूंके माया मंझानी कढ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -8, चौ -13
- जल आवे जाए ऊपर से, तले हक हादी रूहें खेलत । ए सुख क्यों छूटे कदम के, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -72

- जल उछले उछरंगमां, लेहेरडियो लेहेर तरंग । पसुपंखीना सब्द सुहामणां, कांई उलट पसस्यो अंग || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -5
- जल उछाले उछरंगसू, सह वालाजीने छांटे । वालोजी छांटे एणी विधसूं, त्यारे सर्व नासंतियो कांठे || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -10
- जल किनारे बन हैं, कई विध की बैठक । कई जल टापू पहाड़ में, कई मोहोलों माहें छूटक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -69
- जल को थल उलटावहीं, थल को उलटावे जल । कायर सूरे खाली भरे, सब में हुकम बल || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -25
- जल छे लोक के लेऊं लिखनहारी, एक बूंद ना छोडूं कहूं न्यारी । सब जल मिलाए लेऊं मेरे हाथ, गुन लिखने मेरे श्रीप्राणनाथ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -7
- जल जिमी तेज वाए को, अवकास किया है इंड । चौदे तबक चारों तरफों, परपंच खड़ा प्रचंड || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -12
- जल जिमी तेज वाए को, अवकास कियो है इंड । चौदे तबक चारों तरफों, प्रपंच खड़ा प्रचंड || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -11
- जल जिमी न तेज वाए, न सोहं सब्द आकास । तब ए आद अनाद की, जब नहीं चेतन प्रकास || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -6
- जल ने सीतल नेणे वही गया, हवे अगिन थई अति जोर । निस्वासा जेम धमण धमे, बलतो जीव करे रे बकोर || ग्रं - खटरुती, प्र -4, चौ -5
- जल पर डारें लगियां आए, जियां भोम तरफ सोभाए । जमुना जी के दोऊ किनारे, बन जल पर लगी दोऊ हारें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -25
- जल पर दोए चबूतरे, ऊपर चढ़ती क्योहरी दोए। आए पोहोंची थंभन को, अति सोभा घाट पर सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -73
- जल बिन जल जीव ना रहे, ना थल बिन जीव थल । तो अर्स रूहें अर्स बिन क्यों रहें, जिनों हक बका अर्स असल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -51
- जल माहें भमरियां, कई बिध तीखे तान । कहूं सुख नहीं साइत का, ए दुख रूपी निदान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -9
- जल में जीव बसत हैं, सो सुन्दर सोभा अमान । फौज बांध आणू धनी, खेल करें कई तान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -22
- जल में सिनगार सखियन के,लेहेरां लेवें संग छांहें । होए ऊंचे नीचें आसमान लों, केहेनी अचरज न आवे जुबांए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -26
- जल मोहोल तले जो खलके, मंदिर कोट प्रकास मनी झलके । बन को झुन्ड पाल पर एक, तले सोभा अति विसेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -42
- जलती जलती दुनियां, जासी पैगंमरों पे । ताए सब पैगंमर यों कहे, तुम छूट न सको हम से || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -13

- जलती सब पैगंमरों पे गई, पर ठंढ़क दारू काहू थें ना भई । हाथ झटक के कह्या यों कर, हम सब सरमिंदे पैगंमर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -35
- जलसी खुद देखे पीछे, ऐसा बड़ा खसम । कलमा रसूल का सुन के, हाए हाए पकड़े नहीं कदम || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -7
- जलाए दिए सब इस्कें, हो गई सब अगिन । एक जरा कोई न बच्या, बीच आसमान धरन || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -150
- जवेर अर्स जिमी के, और सोना भी जिमी अर्स । जिमी रेत या दरखत, सब अर्स जिमी एक रस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -77
- जवेर कहे मैं अर्स के, और जवेर तो जिमी से होत । सो हक बका के अंग को, कैसी देखावे जोत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -186
- जवेर ख्वाब जिमी के, ए खुब ख्वाब में लगत । ए झूठ निमूना क्यों देऊ, अर्स बका के दरखत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -4
- जवेर जुदे जुदे सोभित, अनेक रंग अपार । एक जवेर को अर्स हैं, ज्यों रंग रस बन विचार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -20
- जवेर पैदा जिमीय से, यों अर्स में पैदा न होत । ए खूबी हक जहूर की, सो लिए खड़ी सदा जोत || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -15
- जवेर पैदा जिमीय से, सो भी नहीं कह्या अर्स में । चौदे तबक उड़ावे अर्स कंकरी, इत भी बोलना नहीं तार्थें || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -125
- जवेर बयान तोहफे हुकम, चार जिलदों पर दई खसम । तलब पाकी की पकड़ी, तरतीब तमामियत पाई बड़ी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -19
- जवेर भी रस जिमी के, और जिमीको रस बन । नरमाई फूल पात अधिक, ना तो दोऊ बराबर रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -35
- जस नया जुबां जुदी जुदी, रात दिन रटन । याही अंग इस्क में, छोड़त नाहीं खिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -3
- जहद कहिए क्यों तिन को, जो करे ऐसे फैल । आगे हुआ सबन के, कदम छोड़ी ना महंमद गैल || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -25
- जहां आप तहां नजर, जहां नजर तहां मेहेर । मेहेर बिना और जो कछू, सो सब लगे जेहेर || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -26
- जहां कछुए है नहीं, सब कहें बेचून बेचगून । सुन्य निराकार निरंजन, बेसबी बे निमून || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -9
- जहां जबराईल जाए ना सक्या, रह्या नूर-मकान । पर जलावे नूरतजल्ली, चढ़ सक्या न चौथे आसमान || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -32
- जहां नहीं तहां है कहे, ए दोऊ मोह के वचन । तार्थें विस्तार अन्दर, बाहेर होत हूं मुंन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -45

- जहां पर जले जबराईल, इत थे आगे न सके चल । दरगाह अर्स अजीम की, हक हादी रूहें असल || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -46
- जहां पैए पाए पार के, हुआ नेहेचल नूर प्रकास । तित अगिए अवतार में, क्या रह्या उजास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -39
- जहां बिध बिध की हैं न्यामत, मेवा मिठाइयां बीच भिस्त । करके तमासा नूर, इसलाम साहेब के हजूर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -9
- जहां लग नजरों देखिए, तहां लग एही बन । जित जमुना तले आए मिली, देखो किनार एही रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -2
- जहां लग हद फूलबाग की, ए जिमी जोत अपार । ए जोत रोसनी जुबां तो कहे, जो आवे माहे सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -52
- जहां लो नजरों देखिए, ए बड़े बिरिख अति विस्तार । मेवे मोहोल छातें बनी, ना कछू पसु पंखी को पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -45
- जहान तो कछु है नहीं, है अर्स बका हक । हक इलम ले देखिए, तो होइए अर्स माफक || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -107
- जहूद कहें मूसा बड़ा होए, ताके हाथ छूटे सब कोए । यों सारों ने रसम जुदी कर लई, सब बुजरकी धनी की कही || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -29
- जहूद नसारे पैगंमर, कई केहेलाए रात के मांहें । दिन ऊगे महंमद बुर्राक के, आगू दौड़े सब जाएँ || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -82
- जा कांध न करे पांहिंजो, उभी बियनके चोए । डे सोहाग बियनके, पांण अंगण ऊभी रोए || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -34
- जा कारन माया रची, सास्त्र भी ता कारन । खेल भी एही देखहीं, और अर्थ भी लिए इन || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -6
- जा को अनुभव होए इन सुख को, ताए अलबत आवे याद । अर्स की रूहों को इस्क का, क्यों भूले रस मीठा स्वाद || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -7
- जा को नाम रसना, होसी कैसी मीठी हक । जिन की जैसी बुजरकी, जुबां होत है तिन माफक || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -1
- जा झोडा लगाय पांणमें, सा कंदी उचाट घणी । मनसे भाय कोय न पसे, पण महे बेठो सुणे धणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -6
- जा तूं रिणायर विच में, अंख ढंकिए की। हिन रिणायर ज्यों रामायणूं, किन कंने न सुण्यो कडी || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -4
- जा न्हाए अकल हिन आलम में, सा डिनिएं मूके मत । जे से आंऊं सभ समझी, कायम आलम सिफत || ग्रं - सिंधी, प्र -13, चौ -9
- जा पर चओ सा करियां, तं पांण कराइए थो । हे पण तूंही चाइए, मूं मथे की अचे डो || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -47

- जा माया आं मोहें मंगई, सा डिठियां वी वार । साथ हाणें पिरी साथ हल्लजे, जी पिरी पेराईन करार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -8
- जा सहूर करियां रूह से, त निपट गरई गाल । चुआं हित हिन मूंह से, मूंजो खसम नूरजमाल || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -34
- जा हित लाहिंदी निद्रडी, सा घर उथींदी छिडकाय । हिन आतण संदियूं गालियूं, कंदीसा कोड मंझाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -12
- जाई जुई ने जासू जायफल, जाए ने जावंत्री । सूरजवंसी ने सणगोटी, सूआ ने सेवंत्री || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -18
- जाऊं बलिहारी नासिका पर, अने दुखणां लऊं श्रवणा । सुंदर सरूप सकोमल ऊपर, जीव लिए भामणा घणा घणा || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -12
- जाऊं वारने आंगने बेलू, जित ले बैठो संझा समे साथ । बातें होत चलने धाम की, घर पैंड्रा देखाया प्राणनाथ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -2
- जाए आगू भई जोए जाहेर, ढांपिल दोऊ किनार । ऊपर कलस दोऊ कांगरी, और थंभ सोभे हार चार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -26
- जाए इलम पोहोंच्या हक का, ताए हुई हक हिदायत । सो आया फिरके नाजी मिने, झण्डा दीन हकीकी जित || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -1
- जाए खुली हकीकत मारफत, पाई अर्स पेहेचान । सो क्यों सहे बका बिछोहा, जिनों नींद उड़ी निदान || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -79
- जाए जाए समसेर लेवहीं, अब कीजे आप घात । दिल दे कबहूं ना सुनी, हाए हाए पैगंमर की बात || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -11
- जाए ना उलंधी देखीती, ना कछु होए पेहेचान । तो दुलहा कैसे पाइए, जाको नेक ना सुन्यो निसान || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -22
- जाए पड़े प्रेम के फांस, ज्यों सूके लोहू गल जाए मांस । पीछे तीसों नूर बरसात, तिन आगू आवसी पुल-सरात || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -41
- जाए पूछो मोमिन को, जरे जरे बका की बात । देखो अर्स अरवाहों में, ए महंमद की सिफात || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -34
- जाए मिल्या अर्स दिवालों, सोले गुरज झरोखे बीस । हर गुरज बीच बीच में, मोहोल सोभे झरोखे तीस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -37
- जाए मिल्या बन नूर के, नूर परे कहूं क्यों कर । जित ए न्यामत देखिए, सो सब सुमार बिगर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -66
- जाए हक सराब पिलावत, आस बांधत है सोए । वाको अर्स सराब की, आवत है खुसबोए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -100
- जाकी अग्याएँ अगनी चले, चले जिमी और जल । वाउ भी हुकम पर खड़ा, ऐसा दज्जाल का बल || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -10

- जाकी करे मुसाफ सिफतें, औलिए अंबिए पैगंमर । सो हुए सब जहूदों मिनें, जो देखे बातून सहूर कर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -65
- जाकी तरफ न पाई किनहूं, इन मांहें चौदे तबक । ताको ले बैठे दिल में, किया ऐसा अपने हक || ग्रं - किरन्तन, प्र -118, चौ -8
- जाकी न असल अर्स में, सो सेहेरग से नजीक क्यों होए । वह फना बका को क्यों मिले, वाकी अकल में न आवे सोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -80
- जाकी बड़ाई लिखी कुरान में, किताबों और पैगंमर । जापर मोहोर महंमद की, सो सबों देसी फल फजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -19
- जाके नूर की ए रोसनी, ऐसी करी सिफत । तिन का असल जो बातून, सो कैसी होसी सूरत || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -15
- जाके पलथें पैदा फना, कई दुनी जिमी आसमान । सो आवत दायम दीदार को, ऐसा खावंद नूर-मकान || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -69
- जाको गिनती मैं अपने, सोई देखे दुस्मन । देखे देखाए तो भी ना छूटे, कोई ऐसी अग्यां बल कुंन || ग्रं - किरन्तन, प्र -41, चौ -12
- जाको जाना बैकुंठ बास, सो क्यों सहे अखंड प्रकास । तो पार दरवाजे मूंदे रहे, हद के संगिए खोलने ना दिए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -24
- जाको तुम सतगुर कर सेवो, ताको इतनी पूछो खबर । ए संसार छोड़ चलेंगे आपन, तब कहां है अपनों घर || ग्रं - किरन्तन, प्र -10, चौ -3
- जाको दिल जिन भांत को, तासों मिले तिन विध । मन चाया सरूप होए के, कारज किए सब सिध || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -94
- जाको नामै कायम, अखंड बका अपार । सोई भूल जानो अपनी, सोभा ल्याइए माहे सुमार || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -28
- जाको नामै संस्कृत, सो तो संसे ही की कृत । सो अर्थ दृढ़ क्यों होवहीं, जो एती तरफ फिरत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -11
- जाको नामै संस्कृत, सो तो संसे ही की कृत । सो हरफ दृढ़ क्यों होवहीं, जो एती तरफ फिरत || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -13
- जाको पेड़ प्रतिबिंब प्रकृती, पांच तत्व ही को आकार । मांहें खेले निरगुन व्यापक, लिए माया मोह अहंकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -30, चौ -2
- जाको लगी सोई जाने, मुख बरनी न जाए बखाने । खेल मांग के आइयां जित, धनी आए के बैठे तित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -161
- जाको लेत हैं मेहेर में, ताए पेहेले मेहेरें बनावें वजूद । गुन अंग इंद्री मेहेर की, रूह मेहेर फूंकत माहें बूद || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -14
- जाको सिफायत महंमद की, तिन का एही निसान । जोए हौज अर्स जिमीय की, एक जरा न बिना पेहेचान || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -42

- जाको स्वाद लग्यो कछू दुख को, सो सुख कबूं न चाहे । वाको सो दुख फेर फेर, हिरदे चढ़ चढ़ आए || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -33
- जाको हक इलम आया नहीं, ताए पट रह्या अंतराए । हक नजीक थे सेहेरग से, तहां से दूर ले गए उठाए || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -82
- जाको हक इलम पोहोचिया, तिन हुआ सब दीदार । अंतर कछुए ना रह्या, वह पोहोंच्या नूर के पार || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -81
- जाग जीव तूं जोरावर, क्या देऊ तोको गारी । तें होए चंडाल अवसर खोया, जीती बाजी हारी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -114
- जागणीना सुख दऊं तमने, रास माहे रमाई रंग। सततणा सुख केम आवे, जिहां न दऊं मारूं अंग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -41
- जागत हो के नींद में, विचारत हो के फरामोस । सीधी बात जाग करत हो, तुम हो होस में के बेहोस || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -87
- जागतां ब्रह्मांड उपजे, पाओ पलके अपार । ते सर्वे अमें जोइया, आंहीं थकी आवार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -102
- जागतां विखने सुपने विख रे, निद्रामां विख निरवाण जी । बाहेर तणो विख केही पेरे कहूं रे, तेतां वाए ते विख उधाण जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -8
- जागते ब्रह्मांड उपजे, पाव पल में अनेक । सो देखे सब इत थे, बिध बिध के विवेक || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -14
- जागते विख और सुपने विख रे, नींद में विख निदान जी । बाहेर का विख क्यों कर कहूं रे, वहे आंधी वाए अग्यान जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -9
- जागनी में लीला धाम जाहेर, निसान हिरदे लिए चित धर । तब उपज्यो आनंद सबों करार, ले नजरों लीला नित विहार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -111
- जागियां तो भी खेल न छोडें, फेर फेर दुख को दौड़ें। धनी याद देत घर को सुख, तो भी छूटे ना लग्यो जो विमुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -186
- जागे सुख अनेक छे, आंही अलेखे । चार पदारथ पामिए, जीव द्रष्टें देखे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -121
- जागे सुख अनेक हैं, इतही अलेखे । वतन सुख लीजिए, जीव नैनों भी देखे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -143
- जागो जगाऊं जुगत सों, छोड़ो नींद विकार । पेहेचान कराऊं पिउ सों, सुफल करूं अवतार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -19
- जाग्रत तरफ दुनीय की, सोवत सुपना ले । देखत सुपना नींद सें, ए तीनों अवस्था जीव के || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -9
- जाग्रत बुध हिरदे आई, अब रहे ना सकें एक खिन । सुरत टूटी नासूत से, पोहोंची सुरत वतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -92, चौ -4

- जाग्रत वचन अनुभवें, अखंड घर वतन । अचरज बड़ो होत है, देह उड़त ना झूठ सुपन || ग्रं - किरन्तन, प्र -85, चौ -8
- जाग्रत सब्द धनीय के, ततखिन करें मकसूद । सोई सब्द लिए बिना, होए जात नाबूद || ग्रं - किरन्तन, प्र -85, चौ -2
- जांण गिडम से पण खुदी, आंऊं जुदी थियां हिनसे । जुदी रहां त पण खुदी, खुदी किए न निकरे हिनमें || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -32
- जाणीने पडिया जम जाले, आ देखो छो मायानो फंद । जे कारण तमे आप बंधावो, तेसुं नथी रे तमारो सनमंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -19
- जाणूं साथजी विदेस आव्या, दुख दीठां के भांत । ते माटे सुख आणी भोमे, देवानी मूने खांत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -8
- जाणे तेज ब्रह्मांड ते रामत, जेम रमतां सदाय । आ ते ब्रह्मांड उपनूं, एणी रे अदाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -35
- जाण्यूं लाभ मायानो लेसं, निद्राने वांसो देसूं । धणीने चरणे रेहेराँ, माया केहेसे ते सर्वे सेहेतूं || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -30
- जात अलेखे पखियों, पस् अलेखे जात । जात जात अनगिनती, क्यों कर कहूं विख्यात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -9
- जात एक खसम की, और न कोई जात । एक खसम एक दुनियां, और उड़ गई दूजी बात || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -17
- जात न कही एक सख्प की, अति सोभा सुन्दर मुख । तेज जोत रंग क्यों कहूं, ए तो साख्यातों के सुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -48
- जात भांत जिनसें जुदी, जुदी जुदी जिमी पैदाए । सब बैठियां अंग लगाए के, खेलें कहूं दिए उलटाए || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -32
- जात भेख ऊपर के, ए सब छल की जहान । जो न्यारा मांहें बाहेर से, तुम तासों करो पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -5
- जात हक की कहावहीं, और कहावें माहें वाहेदत । जो इलम विचारे हक का, ता को इस्क बढ़त || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -25
- जाथें चरन जुदे होंए, सो आसिक खोले क्यों नैन । ए नैन कायम नूरजमाल के, जासों आसिक पावे सुख चैन || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -27
- जान बूझ के जो भूले, चले न फरमाए पर । सो लटके सूली आग की, हाए हाए जो हुए बेडर || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -31
- जान बूझ के पूजोगे, पानी पत्थर आग । सब केहेसी ए झूठ है, तो भी रहोगे तिन लाग || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -36
- जान बूझ पूजें फना को, कहें एही हमारा खुदाए । हम छोड़ें ना कदीम का, जो बड़कों पूज्या इप्तदाए || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -54

SRJIN

- जान बूझके भूलिए, इलम पाए बेसक । देखो दिल विचार के, क्यों राजी करोगे हक || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -103
- जान होए सो जानियो, ए क्योंकर रहे छाना । क्यों कर ए छिपा रहे, सब सुनसी जहाना || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -93
- जानवर जे हिन बाग जा, डारी डारी त्रपन । मिठडी चूंजे मीठी वाणियां, हे रांदिका रूहन || ग्रं - सिंधी, प्र -2, चौ -13
- जानवर तो ए है नहीं, लिखी हैवानी तबीयत । तो कह्या तालिब न देखसी, दुनी दाभा आखिरत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -8, चौ -8
- जानूं साथजी विदेस आए, दुख देखे कई भांत । जो लों ना इत सुख पावहीं, तो लो ना मोहे स्वांत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -8
- जाने जिन कोई जुदी पड़े, ए डर दिल में ले । मिल कर बैठियां एक होए, बड़ी अचरज बैठक ए || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -13
- जाने सोई ब्रह्मांड, जो खेलत सदाए । ए ब्रह्मांड जो उपज्या, ऐसी रे अदाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -45
- जानो के गंज नूर को, भराए रह्यो आकास । जब नीके नजर दे देखिए, तब कछू पाइए खूबी खास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -46
- जानों के जोबन चढ़ता, ऐसे नित देखत नौतन । गुन पख अंग इंद्रियां, बढ़ता नूर रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -130
- जानों के जोवन नौतन, अजूं चढ़ता है रंग रस । ऐसा कायम हमेसा, इन विध अंग अर्स || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -53
- जानों के पल पल चढ़ता, तेज जोत रस रंग । पूरन सरूप एही देखहीं, इस्क सूरत के संग || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -131
- जानों तीनों चौक बराबर, बारे द्वार दिखाई देत । चार चार द्वार चबूतरे, दो सीढ़ियों पर सोभा लेत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -18
- जानो तो राजी रखो, जानो तो दलगीर । या पाक करो हादीपना, या बैठाओ माहें तकसीर || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -38
- जानों थंभ दिए बडवाईके, फिरते फिरते हार चार । सोभा लेत पात फूल, ए बट बड़ो विस्तार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -43
- जानों नूर देखों मासूक का, तो जुगल नूर सब पर । सब नूर देखों जित तितहीं, भरी नूरै नूर नजर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -53
- जानो मूल मेला सब एक मुख, सब एक सोभित सिनगार । सागर भत्या सब एक रस, माहें कई बिध तरंग अपार || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -2
- जानों सागर सब एक जोत में, नूर रोसन भर पूरन । झांई झलके तेज दरियाव ज्यों, कई उठे तरंग भिन्न भिन्न || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -23

- जानों सुपनें नींद उड़ गई, मुरदे हुए वजूद । हके हक अर्स देखाइया, सुपन हुआ नाबूद || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -21
- जाम दावन बांहें चोली, सिंध सागर रल्या मानो खीर । जोत भरी जिमी आसमान, मानो चलसी ऊपर चीर || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -45
- जामा अंग को लग रह्या, हार दुगद्गी हैड़े पर । ऊपर अति झीनी झलकत, जड़ बैठी चादर || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -57
- जामा अंग जवेर का, भूखन नंग कई रंग । जोत पोहोंचे आकास में, जाए करत मिनो मिने जंग || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -39
- जामा कहूं मैं सूत का, के कहूं कपड़ा रेसम । के कहूं हेम नंग जवेर का, के कहूं अव्वल पसम || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -5
- जामा जड़ाव जुड़या अंग जुगतें, चार हारों करी अंबर झलकार । जगमगे पाग ए जोत जवेर ज्यों, मीठे मुख नैनों पर जाऊं बलिहार || ग्रं - किरन्तन, प्र -112, चौ -2
- जामा जुड़ बैठा अंग पर, कोई अचरज खूबी लेत । सोभा सलूकी सुख क्यों कहूं, अंग गौर पर जामा सेत || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -43
- जामा पटुका और इजार, ए सबे हैं एक रस । कण्ठ हार सोभा जामें पर, जानों एक दूजे पे सरस || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -200
- जामा पटुका चोली बांहें की, चीन मोहोरी बन्ध बगल । ए आसिक अंग देख के, आगूं नजर न सके चल || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -41
- जामें ऊपर जो भूखन, जो कण्ठ पेहेरे हैं हार । सो कई नंग जंग करत हैं, अवकास न माए झलकार || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -58
- जामें चादर जुड़ रही, ढांपत नहीं झलकार । गिनती जोत क्यों कर होए, नंग तेज ना रंग पार || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -59
- जामें दावन सेत झलकत, जोत उठत आकास । और जोत चढ़त करती जंग, पीत पटुके की प्रकास || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -219
- जामें में झांई झलकत, हरे रंग इजार । लाल बन्ध और फुन्दन, कई रंग नंग अपार || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -89
- जासी संग न सांगाए, त रूह केडी सांजाए । हे गाल्यूं थियन सभ मथियूं, त की लाड करे घुरांए || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -2
- जासों पाई बुजरकी महंमदें, हक मिले के सुकन । सो सुकन टूटत है, कर देखो दिल रोसन || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -63
- जाहिर झूठा खेलहीं, हिरदे अति अंधेर । कहें हम सांचे और झूठे, यों फिरें उलटे फेर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -16
- जाहेर कहे जो माएने, ए तित भी रहे उरझाए । लिखियां जो इसारतें, सो इनों क्यों समझाए || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -23

- जाहेर कह्या ईसा आखिर, आए करसी एक दीन । एही दज्जाल को मारसी, एही देसी सबों आकीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -61
- जाहेर कह्या सो देखाइया, बातून जाहेर कर देऊं तुम । आगू अर्स रूहें मेले मिने, देखाऊं बका वतन खसम || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -4
- जाहेर काहूं ना हुआ, छिप कर लिए सब । इमाम आए जाहेर हुआ, ए जो दज्जाल न देख्या किन कब || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -38
- जाहेर किया हक इलमें, रूह सिर आया हुकम । सोई करे हक बरनन, ले हकै हुकम इलम || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -55
- जाहेर किया हुकमें, हुकमें किया हक । हुकमें लीन्ही अंदर, जुबां रही इत थक || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -59
- जाहेर कीजे माएने, काजी एह कजाए । पेहेचान आसिक मासूक की, भी नीके देऊं बताए || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -55
- जाहेर खिताब हादी पर, दिया वास्ते मोमिन । सो मुकता हरफ के माएने, होए न लदुन्नी बिन || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -64
- जाहेर जिनकी भई नजर, कयामत बदला कह्या तिन पर । करे जिमीन सात आसमान, वास्ते उमत महंमद दरम्यान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -62
- जाहेर झूठा खेलही, हिरदे अति अन्धेर । कहे हम सांचे और झूठे, यों फिरें उलटे फेर || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -18
- जाहेर दुलहा छोड़ के, ढूंढ़त माएने गुझ । ए खोज तिनों की देख के, होत अचम्भा मुझ || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -9
- जाहेर नजरों खेल देखिए, कहूं नजीक न अर्स हक । तरफ भी न पाई किनहूं, बीच इन चौदे तबक || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -38
- जाहेर पहचान कही रसूले, गिरो खासी और कयामत । सहूर करें दिल अकलें, तो दोऊ पावें हकीकत || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -25
- जाहेर पेहेचान है तिन की, ले चलत माएने बातन । कौल फैल चाल रूह नजर, इनों असल बका अर्स तन || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -5
- जाहेर बाहेर बातून, अंदर अन्तर तुम । कहूं जरे जेती जाएगा, नहीं खाली बिना खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -3
- जाहेर महंमद पुकारहीं, फरमान ल्याया मैं । कई हजारों बातें करी, साहेब की सूरत सें || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -13
- जाहेर माएने कलमें के, रसूलें कहे समझाए । सो भी कोई न ले सक्या, तो क्यों देऊं बातून बताए || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -2
- जाहेर मैं केता कहूं, खुदाए का जहूर । वास्ते खास उमत के, ए करी है मजकूर || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -59

- जाहेर राह मारे दुस्मन, अबलीस दिलों पर । जाहेरी इलमें नफा न ले सके, पेहेचान होए क्यों कर || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -72
- जाहेर लिखी आदम की, सब औलाद पूजे हवाए । एक महंमद कहे मैं पोहोंचिया, नूर पार सूरत खुदाए || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -57
- जाहेर लिख्या मिस्कात में, मैं डरों पीछले इमामों से । गुमराह करसी दुनी को, ऐसे बुजरक होसी आखिर में || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -77
- जाहेर लिया माएना, सरीयत कांड करम । खुद खबर पाई नहीं, ताथें पड़े सब भरम || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -9
- जाहेर साहेब हुए पीछे, चले न दूजी बाट । पंथ पैडे मजहब सब उड़ गए, सब हुआ एकै ठाट || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -40
- जाहेर सिपारे आठमें, लिख्या पैदा आदम हवाए। अबलीस लिख्या दुनी नसलें, और दिल पर ए पातसाह || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -14
- जाहेर हक देखाइया, हम लिए माएने ए। एही कलमा रसूल का, हम सिर चढ़ाया ले || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -8
- जाहेर हुआ फरमान से, क्यों आरिफ करें न सहूर । रूहें फरिस्ते और दुनियाँ, ए लिख्या तीनों का मजकूर || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -8
- जाहेर हुई जो साथ में, देखो रास प्रकास । तारतम वानी वतन की, जिन कियो तिमर सब नास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -22
- जाहेर हुई सबन की, आखिर गिरो आकल । अंदर की उदे हुई, समें पावने फल || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -25
- जाहेरियों नजर जाहेर, धरी ऊपर सात आसमान । हक छोड़ नजीक सेहेरग से, पूजी हवा तारीक मकान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -3
- जाहेरी कहें अजूं न आइया, हक सेती गजब । आकीन बिना देखे नहीं, जो छीन लिया मता सब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -10
- जाहेरी कहें दिवाल, हद बांधी सिकंदर । सो तो जाहेर किन देखी नहीं, बिन माएने खुले अंदर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -29
- जाहेरी देखें सूरज जाहेर, अजूं मगरख ऊग्या नाहें । देखें न माएना अंदर, कहया रोसन नहीं तिन मांहें || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -10, चौ -6
- जाहेरी बड़े जानें आपको, और समझें नहीं हकीकत वतन । हक इलम आया नहीं, तोलों होए नहीं रोसन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -67
- जाहेरी माएने लिए अंधेर, जाको लानत लिखी बेर बेर । ढांपे कुरान की रोसनाई, अंदर सैताने एही सिखाई || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -2, चौ -4
- जित आद अन्त न पाइए, तित तेहेकीक होए क्यों कर । इत सब्द फना का क्या कहे, जित पाइए न अव्वल आखिर || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -123

- जित चल न सके जबराईल, कहे आणू जलत मेरे पर । जलावत नूर तजल्ली, मैं चल सकों क्यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -59
- जित चल न सके जबराईल, कहे मेरे पर जलत । नूरतजल्ला की तजल्ली, ए जोत सेहे न सकत || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -14
- जित चाहिए ठौर दुगदुगी, सब बनी पाग पर तित । ठौर कलंगी के कलंगी, सिफत न जुबां पोहोचत || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -45
- जित चीज नई पैदा नहीं, ना कबूं पुरानी होए। तित सब्द जुबां जो बोलिए, सो ठौर न रही कोए || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -126
- जित जबराईल ना चल सक्या, आगे परे न पाए । सो ए ठौर देखे सबे, बरकत रूहअल्लाह || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -16
- जित जित देखों नजरों, हक जिमी अर्स वतन । कहे सेती कई कोट गुना, आवत अन्दर रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -68
- जित जुदागी जरा नहीं, तित बेवरा क्यों होए । ताथें रूहें रब्द हक का, क्यों ए ना निबरे सोए || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -24
- जित जैसा रंग चाहिए, तहां तैसा ही देखत । ना समारे नए किन, ना पुराने पेखत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -19
- जित जैसा रूह चाहत, तहाँ तैसा बनत सिनगार । नित नए वाहेदत में, सोभा अखंड अपार || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -16
- जित तले दस खिड़कियां, इतथें रूहें उतरत । फिरत सैर इन बन को, जब कबूं आवे हक इत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -17
- जित दुख कोई जाने नहीं, होए अकेला सुख । ए सुख लज्जत तब पाइए, जब देखिए कछू दुख || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -57
- जित दूजी कोई है नहीं, एकै साहेब हक । तो तिन को दूजी बिना, कौन कहे बुजरक || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -55
- जित देखू तित खुसबोए, पहाड़ जवेर बोए नूर । रस धात रेजा रेज जो, खुसबोए सबे जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -49
- जित देखू तित सूरमें", एक दूजे थें अधिक देखाए। कई ऊपर तले कई बीच में, याको जुध न समाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -43
- जित पर जले जबराईल, पोहोंच्या न बिलंदी नर । बिना रूहें इसारतें खिलवत, दूजा ए कौन जाने मजकूर || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -25
- जित पोहोंची सिफायत महंमद की, सो तबहीं दनी को पीठ दे । सो पोहोंच्या महंमद सूरत को, आखिर तीसरी हकी जे || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -21
- जित बन जैसा चाहिए, तहां तैसा ही तिन ठौर । नकस बेल फूल बन के, एक जरा न घट बढ़ और || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -37

SPJIN

- जित बेली बनी चाहिए, और कांगरी फूल । कई नकस खजूरे बूटियां, चोली सोभित है इन सूल || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -37
- जित बोहोत रेती मोती पतले, गड़त घूटन लो पाए। इत सबे मिल सखियां, रब्द गुलाटें खाएं || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -41
- जित मन में चितवें, तित पोहोंचे तिन बखत । ऐसा बल रखें हक का, कायम जिमी में बसत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -32
- जित मेहेर तित सब है, मेहेर अव्वल लग आखिर || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -18
- जित रहे आग इस्क की, तित देह सुपन रहे क्यों कर । बिना मोमिन दुनी न छूटहीं, दुनी ज्यों बिन जलचर || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -94
- जित साहेब होवे एकला, ना साहेदी दूजे बिन । बिन दिए साहेदी तीसरे, क्यों आवे ईमान तिन || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -60
- जित हक हादी रूहें, अर्स अजीम का नूर । कौल किया रूहोंसों हकें, सो महमंद मसी ल्याए मजकूर || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -33
- जिन अंग जैसा भूखन, दिल चाया सब होत । खिन में दिल और चाहत, आगूं तैसी करे जोत || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -140
- जिन अंगों मिलिए पिउसों, सो ए दिए उलटाए। फेरी दुहाई वैराट चौखूटों, कोई सिर न सके उठाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -14
- जिन आदम में महंमद, हकमें आए मोमिन । अजाजील अब हुकमें, पकड़ कदम हुआ रोसन || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -41
- जिन आसंका आनो एह, एह जिन पूछो संदेह । लखमीजी तुम करो करार, मुखथे वचन ना आवे बाहार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -27
- जिन इत आंखां ना खोलियां, करके बल बेसुमार । नींद उड़ाए ना सकी, सो ले उठसी खुमार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -12
- जिन इत उड़ाई नींदड़ी, सो उठत अंग रोसन । केहेसी कातनहार को, विध विध के वचन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -13
- जिन उपजे मोमिन को, इन हांसी का भी दुख । सो दुख बुरा रूहन को, जो याद आवे मिने सुख || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -59
- जिन उपजे सैयन को, इन हांसी का भी दुख । ए दुख बुरा सोहागनी, जो याद आवे मिने सुख || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -30
- जिन ए कलमा हक किया, मैं तिनका जामिन । सो आपे अपने दिल में, साख जो देसी तिन || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -32
- जिन ए मेरा कलमा, लिया न मांहें बाहेर । सो दुनियां आखिर दिनों, जलसी आग जाहेर || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -35

- जिन कहो अजाजील को, इनने फेस्या हुकम । इन हुकम की इसारतें, हादी वास्ते करी खसम || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -32
- जिन कारन तेरा आवना, हुआ जिमी इन । रूह-अल्ला ने जो कही, सो मैं कहूं आगे मोमिन || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -16
- जिन किन को संसे उपजे, खेल देख के यों । ए जो रूहें अर्स की, तिनका इस्क न रहया क्यों || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -22
- जिन किन राह हक की, लई सांच से सरीयत । भिस्त होसी तिनों तीसरी, सच्चे ना जले कयामत || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -16
- जिन किनको धोखा रहे, जुदे कहे अवतार । तो ए किनकी बुधे विष्णु को, जगाए पोहोंचाए पार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -1
- जिन केहेनी किल्लीय से, खुल्या भिस्त का द्वार । सो केहेनी छुड़ाई हुकमें, दे फैल रेहेनी सार || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -14
- जिन को लिखी आयतों हदीसों, हिदायत हक । हकें इलम अपना, तिन को दिया बेसक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -43
- जिन को हक मेहेर सों, आप करें हिदायत । सो सवे विध बूझहीं, अर्स बका निसबत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -13
- जिन कोई कहे पट बीचमें, मासूक और आसिक । कबूं आसिक परदा ना करे, यों कहया मासूक हक || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -56
- जिन कोई कहे रसूल को, परदा खुद दरम्यान । आसिक ए मासूक कहया, सो बिन देखे मिले क्यों तान || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -60
- जिन कोई सक तुमे रहे, मैं सब विध देऊं समझाए । माएने इन रसूल के, भांत भांत देऊं बताए || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -40
- जिन खातिर ए रसूल, ले आया फुरमान । हम ले आकीन चले जिन बिध, नेक ए भी करूं बयान || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -17
- जिन खिन चित्त जो चाहे, सो आगूही बनि आवे । इन विध सिनगार सब समें, नित नए रूप देखावे || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -19
- जिन खिन रूह जैसा चाहत, सो तैसी सोभा देखत । बारे हजार देखें दिल चाहे, ए किन विध कहूं सिफत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -184
- जिन खिनमें तत्व पाँच समारे, नास करे खिन मांहीं । ए कहाँ से उपाय कहाँ ले समाए, ए विचारत क्यों नाहीं || ग्रं - किरन्तन, प्र -4, चौ -11
- जिन गेहूं खाया कौल तोड़ के, आदम तिन नसल । सो क्यों पावे रमूजें हक की, जो लिख्या अर्स असल || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -93
- जिन गोकुल को तुम अखंड कहत हो, सो तुमारी दृष्टं न आया । सुकजी के वचन में प्रगट लिख्या है, पर तुमको किने न बताया || ग्रं - किरन्तन, प्र -10, चौ -2

- जिन चांद नूर देख्या महंमदी, सोई जाने रोजे रमजान । न जाने दिल मुरदा मजाजी, ए जाने दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -46
- जिन छोड़ दुनी को ना लई, हकीकत मारफत । सो अर्स बका में न आइया, लई ना महंमद सिफायत || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -22
- जिन जानो ए बरनन, करत आदमी का । ए सब थें न्यारा सुभान जो, अर्स अजीम में बका || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -13
- जिन जानो ढील इस्क की, जब रस आयो अंतस्करन । तब सुख पाइए धाम के, निस दिन रंग रमन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -18
- जिन जानो पाया नहीं, है पावन हार प्रवान । सो छिपे इन छल थे, वाकी मिले न कासों तान || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -54
- जिन जानो पाया नहीं, है पावनहार प्रवान । सो ए छिपे इन छल थे, वाकी मिले न कासों तान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -42
- जिन जानो बिना कारने, खेल जो रचिया एह । ए माएने गुझ फुरमान के, समझ लीजो दिल दे || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -5
- जिन जानों रूहन को, अर्स में सेवक नाहें । हुकमें काम करावत, जो आवत दिल माहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -54
- जिन जानो वचन अचेत में कहे, ए केहेते अनेक दुख भए । जब मैं विचारूं चित में आन, ए कैसी मुख निकसी बान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -6
- जिन जानो विवादे पूछे, मैं जग्यासू करों खोज । जो लों धोखा न मिटे, साधो तो लों न छूटे बोझ || ग्रं - किरन्तन, प्र -29, चौ -2
- जिन जानो सास्त्रों में नहीं, है सास्त्रों में सब कुछ । पर जीव सृष्ट क्यों पावहीं, जिनकी अकल है तुच्छ || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -26
- जिन जिमी की ए रोसनी, ऐसे बाग के दरखत । तो इत सुख ऐसे ही चाहिए, अर्स बका की न्यामत || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -24
- जिन जुबां मैं दुख कहूं, सोए करूं सत टूक । पर ए दुख जिन तुमें लागहीं, तो मैं करत हों कूक || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -32
- जिन जेता हजम होवहीं, ज्यों होए नहीं बेहोस । तब ही फूटे कुप्पा कांच का, पाव प्याले के जोस || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -87
- जिन जैसा किबला सेविया, आगं आया तैसा तिन । दुनी कारन खोवे दीन को, तो आखिर कही जलन || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -33
- जिन जैसा चीन्हा महंमद को, तासों तैसी रखी चिन्हार । यों बदला पाए देखिए, या जीत या हार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -35
- जिन जैसी करी दोस्ती, तिन तैसी पाई बकसीस । दूर नजीक या अंदर, देखो माएने आयत हदीस || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -54

- जिन जो देख्या जागते, सो देखे मांहें सपन । कानों सुन्या सोभी देखत, याके साथ तो हक इजन || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -15
- जिन तुम वचन विसारो एक, कारन साथ कहे विसेक । वचन कहे हैं कीजो त्यों, आपन पेहेले पांउ भरे हैं ज्यों || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -13
- जिन दयाए परदा उड़ाइया, मैं फेर फेर मांगों सो मेहेर । इस्क दीजे मोहे अपना, जासों लगे बुजरकी जेहेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -62, चौ -13
- जिन दिल दे मिहीं कातियां, ढील न करी एक पल । सो ए उठी सैयन में, हंसते मुख उजल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -12
- जिन दिल पर सैतान पातसाह, सो ना पाक बड़ा पलीत । खून करे खिन में कई, दिल पाक होए किन रीत || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -39
- जिन दिल हुआ अर्स हक का, सोई लीजो इन अर्स सहूर । कहे हक हुकम ए मोमिनों, नूर पर नूर सिर नूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -41
- जिन दिस मेरा पिउ बसे, तिन दिस पर होऊं कुरबान । रोम रोम नख सिख लों, वार डारों जीव सों प्रान || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -26
- जिन दीन लिया खुदाए का, सो नाजी गिरो आखिर । और होसी दोजखी, जो जुदे रहे बहत्तर || ग्रं - खुलासा, प्र -6, चौ -18
- जिन दृढ़ करी हक सूरत, हक हकमें जोस ले । अर्स चीज कही सो मेहेर से, पर बल इन अंग अकल के || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -3
- जिन देखी सूरत हक की, इन वजूद के सनमंध । जोस हुकम मेहेर देखावहीं, मोमिन जाने एह सनंध || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -6
- जिन देख्या हक हैड़ा, क्यों नजर फेरे तरफ और । वाको उसी सूरत बिना, आग लगे सब ठौर || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -20
- जिंन देव या आदमी, या जिमी आसमान फरिस्ते । तीन सूरत महंमद की, है हादी सिर सब के || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -74
- जिन नाम धराया हुकमें, रूहें फरिस्ते सिर पर । पोहोंचे अपनी निसबतें, द्वार बका खोल कर || ग्रं - सिंधी, प्र -16, चौ -11
- जिन परदेस में पांउं पकड़े, ज्यों बिछरे आए मिलत । सो मोमिन छोड़ें क्यों कदम को, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -78
- जिन पाई राह रोज कयामत, सो उठे फजर के नूर बखत । फजर पीछे जब ऊग्या दिन, तब तो तोबा तोबा हुई तन तन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -24, चौ -4
- जिन पिआ मस्ती तिन की, बीच दनी के छिपे नाहें । सो मस्ती मोमिनों जाहेर हुई, चौदे तबकों माहें || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -30
- जिन बंदगी मेरी करी, लिया निसबत हिस्सा तिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -23

SPJIN

- जिन बंधे हुए अंधे, फिरे सो उलटे फेर । सो नेक बताए पीछे, उड़ाए देऊ अन्धेर || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -2
- जिन बांधे हैं भवन चौदे, सो नार हमसे रहत है न्यारी । दुख में बैठी सुख लेवे महामति, पार के पार पिया की प्यारी || ग्रं - किरन्तन, प्र -9, चौ -8
- जिन बिध की ए इजार, तापर लग बैठा दावन । सेत रंग दावन देखिए, आगू इजार रंग रोसन || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -80
- जिन बेचून बेचगून नजरों, ताए खबर न इलम हक । हक इलम देखावे मासूक, इन हाल मोमिन कहे आसिक || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -110
- जिन मंडल ए मांडे मंडप, थोभ न थंभ न बंध । वाको नाहीं केहेत क्यों साधो, ए रच्यो किन कौन सनंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -4, चौ -9
- जिन मोमिन की सिफायत, करी होए मेंहेंदी महंमद । सो जाने अर्स बारीकियां, और क्या जाने दुनी जो रद || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -190
- जिन मोमिन के कारने, रचिया एह मंडल । तिनकी उमेदां पूरने, मेंहेंदी महंमद आए मिल || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -1
- जिन रांचो मृग जल दृष्टे, जाको नाम प्रपंच । ए छल गफलत को कियो, ऐसो रच्यो उलटो संच || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -30
- जिन राचो मृग जल दृष्टे, जाको नाम प्रपंच । ए छल मायाऐं किया, ऐसे रचे उलटे संच || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -27
- जिन रूह का दिल जिन विध का, सोई विध तिन भासत । एक पलक में कई रंग, रूह जुदे जुदे देखत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -178
- जिन विध पाऊं चलावहीं, सोई भूखन बोलत । जो बजावें झांझरी, तो धुंधरी कोई ना चलत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -56
- जिन विध बैठियां बीच में, याही बिध गिरदवाए। तरफ चारों लग कठेड़े, बीच बैठा साथ भराए || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -25
- जिन विध लिख्या कुरान में, हदीसों में भी सोए । ए अर्स दिल मोमिन जानहीं, जो नूर बिलंद से उतस्या होए || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -81
- जिन सब जिमी पर सिजदे, किए हक पर बेसुमार । उन आदम के वास्ते, क्या हक नूरी को देवें डार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -44
- जिन सायर खनाए पहाड़ चुनाए, रवि ससि नखत्र फिराए । फिरत अहनिस रंग रूत फिरती, ऐसे अनेक वैराट बनाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -4, चौ -10
- जिन सिर कह्या वह गाम, तिन छोड़ न जाए लड़ाई काम । बाकी लोक पीछे जो रहे, जब वह तलब दानाई चहे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -11, चौ -11
- जिन सिर लई बात रसूल की, कदम पर धरे कदम । इन कलमें के हक से, न्यारा नहीं खसम || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -31

- जिन सुख पिउजी ना मिले, सो सुख देऊ रे जलाए । जिन दुख मेरा पिउ मिले, मैं सो दुख लेऊं बुलाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -16, चौ -3
- जिन सुध ख्वाब न पार की, सो क्यों समझे ए बात । और सबों को अटकल, रसूलें देखी हक जात || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -40
- जिन सुध सेवा की नहीं, ना कछु समझे बात । सो काहे को गिनावे आप साथ में, जिन सुध ना सुपन साख्यात || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -1
- जिन सों सब विध समझिए, ऐसी दई मोहे सुध । सास्त्रों आगू यों कया, धनी ले आवसी जाग्रत बुध || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -18
- जिन हक बका अर्स न पाइया, तिन खुदा हवा या मलकूत । सो कटे पुलसरात में, जिन पकड़े वजूद नासूत || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -28
- जिन हद कर दई नवधा भगत, जुदी कर गाई पाई प्रेम जुगत । यों आए सुक व्यास बड़ी मत, भई नई रे नवों खंडों आरती || ग्रं - किरन्तन, प्र -56, चौ -10
- जिन हरबराओ मोमिनों, हुकम करत आपे काम । खोल देखो आंखें रूह की, जिन देखो दृष्ट चाम || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -93
- जिनकी बद-खसलतें, अपना भला मन ल्याए । इनका एही किबला, औरों का भला न चाहें || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -28
- जिनको कयामत की है सक, क्यों कर उठसी एह खलक । बात नहीं ए बरकरार, काफर न देखें ए विस्तार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -20, चौ -1
- जिनको किताब दई तौरेत, सब दुनियां को एही सुख देत । मांहें लिख्या सिपारे उन्तीस, जाए देवें खुदा तासों कैसी रीस || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -16
- जिनको सब कोई खोजहीं, ए खोली आंकड़ी तिन । तो इत हुई जाहेर, जो कारज है कारन || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -26
- जिनमें हुकम किया इसलाम दीन, दौलत दई सबों आकीन । मोती कह्या डब्बे बुजरक, उतहीं का सितारा हक || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -10
- जिनस जुगत कहूं केटली, अलेखे सुख अखंड । जोगमायाए नवो निपायो, कोई सुख सरूपी ब्रह्मांड || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -55
- जिनस जुगत कहूं केती, अनेक सुख अखंड । जोगमायाए उपाया, कोई सुख सरूपी ब्रह्मांड || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -4
- जिनहूं जैसा खोजिया, सब बोले बुध माफक । मैं देखे सबद सबन के, सो गए जाहेर मुख बक || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -50
- जिनहूं जैसा खोजिया, सो बोले बुध माफक । मैं देखे सब्द सबन के, जो गए जाहेर मुख बक || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -40
- जिंनी अज न कतयो, सा रीदियूं सेई । जडे गाल्यूं कंदयूं पाणमें, जेडियूं सभे बेही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -21

- जिंनी की न जाणयो, तेहे हथ न छुती पई । कोड करे घणवे आवई, पण उनी हाम रही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -23
- जिंनी जाचो कतयो, फारी फुकारे । सा माले मंझ सरतिए, सुहाग लधाई घरे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -11
- जिंनी जाणी वंजे सायरें, से की निद्र कन । हिन सूंजी घणां संघारिया, तूं मालम धिरिए न मन || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -5
- जिनीनी कीझो कतयो, तनके ता डेई । सा जोर करे महें जेडिए, मरके मंझ बेही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -10
- जिने लिए माएने बातून, हुआ पैगंमर सोए। उमत औलिए अंबिए, बिन बातून न हुआ एक कोए || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -66
- जिनों अर्थ लिया अंदर का, माएने पेहेचाने तिन । खासों की एही बंदगी, जाने दिल रूह वतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -22
- जिनो आज न कातिया, करसी याद ए दिन । जब बातां करसी सोहागनी, मिलकर बीच वतन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -23
- जिनों खुली नजर रूह की, सोई पोहोंचे अर्स हक । जिनों छूटी न नजर जाहेरी, सो पड़े दुनी बीच सक || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -74
- जिनों खुली हकीकत मारफत, सो सहे ना बिछोहा खिन । और हक इलम खोल्या आखिरी, ए बीच असल अर्स तन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -75
- जिनों खुले मगज मुसाफ के, माएने हकीकत । सकसुभे तिन को नहीं, जिनों हुई हक हिदायत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -33
- जिनों भिस्त बिलंदी पाई, गिरो बड़े मरातबे पोहोंचाई । लई औरों भिस्त मीरास, जो रहे मोमिन बीच विलास || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -37
- जिनों मुसाफ लदुन्नी खोलिया, पाई हकीकत । तब जानो फजर हुई, आए पोहोंची सरत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -94
- जिनों लदुन्नी पोहोचिया, लिया बका अर्स भेद । सो क्यों गिरो सों जुदा पड़े, जाए परे कलेजे छेद || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -78
- जिनों हक हकीकत देवहीं, सो छोड़े हवा मलकूत । दिल साफ जिकर रूहानी, ले पोहोचावे जबरूत || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -49
- जिन्होंने कबूं कानों ना सुनी, जात बरन भेख धर । आवत सब उछरंग में, हुई बधाइयां घर घर || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -13
- जिमी अर्स की देखियो, हिसाब न काहूं सुमार । देख देख के देखिए, अनेक अलेखे अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -14
- जिमी आकास जोत में, तेज जोत जल बन । नूर क्योहरी किनार दोऊ, अवकास न माए रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -30

SPJIN

- जिमी आकास बिरिख नूर के, पात फूल फल नूर । दिवाल झरोखे नूर के, क्यों कहूं नूर जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -8
- जिमी आरब से ल्याइया, दुनियां की बरकत । और न्यामत बड़ी ल्याया, फकीरों की सफकत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -108
- जिमी ऊंची नीची कहूं नहीं, बराबर एक थाल । पसु पंखी सब में खेल ही, ए खेलौने नूर जमाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -82
- जिमी ऊपर तले जो रेती, जानों तितके बिछाए मोती || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -34
- जिमी को कह्या बिछान, तिन पर ल्यावसी तीनों जहान । पहाड़ मेखां कही उस्तुवार, पैदा किया दुनियां नर नार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -8
- जिमी गिरदवाए पहाड़ों की, सब देखत बराबर । पहाड़ भी सीधे सब तरफों, जानों हकें किए दिल धर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -24, चौ -8
- जिमी चेतन बन चेतन, पस पंखी सुध बुध । थिर चर सबे चेतन, याकी सोभा है कई विध || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -30
- जिमी जल तेज वाए बन, जो कछू बीच आसमान । सब खुसबोए नूर में, सुख देत रूहों सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -15, चौ -14
- जिमी जल ना वाए अगनी, ना सब्द सोहं आसमान । ना कछू जोति रूप रंग, नहीं नाम ठाम कोई बान || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -45
- जिमी जात भी रूह की, रूह जात आसमान । जल तेज वाए सब रूह को, रूह जात अर्स सुभान || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -40
- जिमी तले जो दरखत, एह जिनस कछू और । खूबी फल फूल पात की, किन मुख कहूं ए ठौर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -60
- जिमी बन ए लसकर, जिमी बस्ती न कहूं वीरान । सब आए मुजरा करत हैं, आगू अर्स सुभान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -52
- जिमी बन जुबां न आवहीं, तो क्यों कहूं सिनगार जहूर । सुन्दरता सख्पों की, कई रस सागर भर पूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -33
- जिमी भी सब एक रस, तिनमें कई जुगत । जित जैसा रंग चाहिए, तित तैसा ही देखत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -77
- जिमी रंचक रेत की, कछू दिया न निमूना जात । तो क्यों कहूं फल फूल पात की, और झरोखे मोहोलात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -7
- जिमी सकल जहान जो, हिंदू या मुसल्मीन । हाथ काट पेट कूटहीं, हाए हाए जिन रसूल को न चीन || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -24
- जिमी सब बराबर, बन पोहोंच्या सागर जित । या बन या मोहोलों मिने, नेहेरें चली गैयां अतंत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -47

- जिमी हद न छोड़हीं, ना हद छोड़े जल । रूत रंग सब हुकमें, होवे चल विचल || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -23
- जिहां अटकल तिहां भ्रांतडी, अने भ्रांत तो थई आडी पाल । पार जवाय पूरण दृष्टे, इहां रज न समाय पंपाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -2
- जिहां नथी कांई तिहां छे केहेवाय, ए बने मोह ना वचन । ए वाणी मारी मूने हंसावे, ते माटे थाऊं छू मुन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -133
- जिहां लगे जीव न पूरे साख, तो भले प्रबोध दीजे दस लाख । एक वचन नव लागे केमे, जिहां लगे जीव न समझे मने || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -35, चौ -3
- जिहां लगे जीव न विचारे मन माहें, तो चोपडे घडे जेम छांटो थाए । हवे इंद्रावती कहे सांभलो वात, चरणे लागू मारा धामना साथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -64
- जिहां लगे तमे रहो रे मायामां, रखे खिण मूको रास जी । पचवीस पख लेजो आपणां, तमने नहीं लोपे मायानों पास जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -3, चौ -5
- जिंहा लगे पाड हुतो मारे माथे, तिहां लगे हुती ओसियाली । हवे मारी पेर जो जो रे वाला, हूं न टलूं तूंथी टाली || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -23
- जिहां वाविए वृख उपजे, जेनों फल वांछे सहु कोय । बीज जेवू फल तेवू, करत कमाई जोय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -8
- जी कढ़े तूं हियां, जी पुजाईने घर । हल्ले न जरे जेतरी, बी केहजी फिकर || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -52
- जी बुझाइए मूंहके, डे तूं मेहेर करे । जे न घुरां तो कने, त को आए बेओ परे || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -19
- जी सुख सोणेमें गिनजे, ती सख गिडां रात । डीहें सुख गिनजे जागंदे, ही आए रेहेमानी दात || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -23
- जीते हरखे पौरसे, उमंग अंग न माए । हारे सारे सोक पावें, तोबा तोबा करें जुबांए || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -31
- जीते हरखे पौरसे, सूरातन अंग न माए । हारे सारे सोक पावें, सो करें मुख त्राहे त्राहे || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -29
- जीत्या हरखे पौरसे, सूरातन अंग न माए । हास्या तिहां सोक पामे, करे मुख त्राहे त्राहे || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -33
- जीव अमारा चरणे तमतणे, ते अलगां थाय केम । जल मांहें जीव जे रहे, कांई मीन केरा वली जेम || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -45
- जीव अमारा तम कने, काई चरने वलगां एम । फूल तणी गत जाणजो, ते अलगां थाय केम || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -43
- जीव करे मनसे गालडी, सा सभे थींदी घर । पाय न रेहेंदी तिर जेतरी, अंई जिन विसरो इन पर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -7

- जीव खरा होए जुदा मन करे, कपट रत्ती न हिरदे धरे । यों करके तुमको सेवे, वचन विचार अंदर जीव लेवे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -6
- जीव गया जब अंग थे, तब अंग हाथों जालें । सेवा जो करते सनेह सों, सो सनमंध ऐसा पालें || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -9
- जीव चंडाल कठण एवो कोरडू, कां रे करो छो हत्यारो । वृथा जनम करो का साधो, आवो रे आकार का मारो || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -66
- जीव छे मारो अति सुजाण, ते धणीना चरण नहीं मूके निरवाण । पण सांचो तो जो करे प्रकास, जोत जई लागी आकास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -18
- जीव छोटे बड़े कई जल के, अपने अपने ख्याल । खेलें बोलें दौड़ें कूदें, खावंद को करें खुसाल । || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -25
- जीव जगाए देत निध निरमल, करत आतम रोसन । सो जीव बुध ले करे उजाला, सबमें चौदे भवन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -18
- जीव जगावी भाजी भरम, श्री बालाजीने लागं पाए । सोभा तमारी तीत सब्द थकी, मारी देह आ जिभ्या सब्द मांहें || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -2
- जीव जल थल या जानवरों, कई केसों परन । रंग खूबी देख विचार के, ले अर्स मसाला इन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -69
- जीव जाग्यो त्यारे नथी वस्त वेगली", आतम परआतम जोड़ । त्यारे वांसो दईने विश्वने, सनमुख रेहेसे कर जोड़ || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -119
- जीव जीवोना सनमंध मेली, करे सगाई आकार । वैराट कोहेडा एणी विधे, अवला ते कई प्रकार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -17
- जीव तूं क्यों होत है निलज, तोहे अजूं ना लगे घाए । याद करके पिउ को, क्यों ना उड़े अरवाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -4
- जीव थयो मांहें निराकार, ते केणी पेरे बांध्यो बंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -76
- जीव देते न सकुचें, मोमिन राह हक पर । दुनियां जीव ना दे सके, अर्स रूहों बिगर || ग्रं - किरन्तन, प्र -118, चौ -14
- जीव निरजोर को थिए, तोके अजां न लगे घाए । सिपरी संभारे करे, मुंडा को न उडाइए अरवाए || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -15, चौ -4
- जीव बंधाणों अगनाने, ते अगनान निद्रा जोर । जेहेर चढ्यूं घेन भोम तणुं, ते पड्यो तिमर मांहें घोर || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -77
- जीव बराबर बैठा होए, क्यों बैठा तूं ए निध खोए । एती बड़ाई तुझ पर भई, तुझ देखते ए निध गई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -29
- जीव माया के ऐसी करें, कैयों देखे दृष्ट । ओ भी उन पर यों करें, तो हम तो हैं ब्रह्मसृष्ट || ग्रं - किरन्तन, प्र -91, चौ -2

- जीव मूहीजो जे तडे जागे, त अवसर वंजाइयां की। हुंद साथ न छडियां सजणे, आडी लेहेर माया थेई नी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -6, चौ -7
- जीव मेरा बड़ा वतनी पात्र, अजूं जीव जानें ए लिख्या तुछ मात्र । गुन तो बाकी भरे भंडार, सोई भंडार गुन गिनूं आधार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -38
- जीव रे चतुरमुख को छोड़त नाहीं, जो करता सृष्ट केहेलाए। चारों तरफों चौदे लोकों, काल पोहोंच्यो आए || ग्रं - किरन्तन, प्र -48, चौ -4
- जीव विष्णु महाविष्णु लों, याके कई विध नाम धरत । अग्यान ग्यान ले विग्यान, यों कई विध खेल खेलत || ग्रं - किरन्तन, प्र -107, चौ -5
- जीव सकोमल कूपल काढ्या, खिण नव लागी वार । फूले रंग फल फलिया रे, ततखिण रंगे रंग्यो विनता आधार || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -34
- जीव संघारता मन न विमासे, जाग करे नामनाय । करम बंधातां कोई नव देखे, पण लेखू लेसे जम राय || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -25
- जीव समो तूं बेठो थई, तझ देखतां ए निध गई। एवडी उपमा बेठो लई, अने बेठो छे काया धणी थई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -72
- जीव सृष्ट बैकुंठ लों, सृष्ट ईश्वरी अछर । ब्रह्मसृष्ट अछरातीत लों, कहे सास्त्र यों कर || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -23
- जीवडा तू घारण केही करे, भंडा घट्यो दिन अनेक । जोवंतां जोगवाई गई, भंडा हजिए तू काय नव चेत || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -8
- जीवता गुण ते हवे, केणी पेरे मरसे । दुखी टालीने सुखी, बीजो कोण करसे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -54
- जीवते मारिए आपको, सब्द पुकारत हक । जो जीवते न मरेंगे मोमिन, तो क्या मरेंगे मुनाफक || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -104
- जीवन चलते जीवरा, क्यों छोड्या ते संग रे । अब कहूं रे तोको करम चंडाल, तूं तो था तिनका अंग रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -30
- जीवन मन विमासियूं", सखी केम भाजसे खेवना । आ तां पूर जाणे सायरतणां, एम आव्यां हलीमली || ग्रं - रास, प्र -34, चौ -4
- जीवन सखी वृंदावन रंग जोइएजी, जोइए अनेक रंग अपार । विगते वन देखाई तमने, मारा सुंदरसाथ आधार || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -1
- जीवना अंग कहे परियाणी, तमे धणी देखाड्या जेह । प्रले ब्रह्मांड जो थाय प्रगट, पण तोहे न मूकू खिण एह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -22, चौ -4
- जीवने आसा पूरण हती घणी, जाणुं मने छेह नहीं दिए मारो धणी । चरणे लागी लखमीजी चाल्या, अने रूदन करे जाय पाला पल्या || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -37

- जीवने जगावी ए निध, बीजो कोण देसे । श्रवणा उघाडी जीवना, एम वचन कोण केहेसे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -60
- जीवने निसरता घनू सोहेलू, काई दुख ना उपजे लगार । पण विमासी जो विचार करूं ,तो माया मेलो केम छाडूं आधार || ग्रं - खटरुती, प्र -4, चौ -14
- जीवरा न समझे अर्स को, ना सहूर करे वाहेदत । रूहें भूल गई लाड़ लज्जत, ना सुध रही निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -13
- जीवरा भी मेरा रख्या, तुम कारज भी कारन । आस भी पूरी सुहागनी, और वध भी राख्यो विरहिन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -10
- जीवरा भी मेरा रख्या, तुम कारज भी कारन । आस भी पूरी सोहागनी, वृध भी राख्यो विरहिन || ग्रं - सनंध, प्र -10, चौ -10
- जीवें आतम अंधी करी, मिल अंतस्करन अंधेर । गिरदवाए अंधी इंद्रियां, तिन लई आतम को घेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -5
- जीवें हंससों करी पेहेचान, चारों चरन लगे भगवान । फेर मनें यों कियो विचार, ले नजरों देख्या आकार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -9
- जीवों मांहें जिनस जुजवी, उपनी ते चारे खान । थावर जंगम सहु मली, लाख चौरासी निरमान || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -28
- जीवों मिने जुदी जिनसे, कहियत चारों खान । थावर जंगम मिलके, लाख चौरासी निरमान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -29
- जुए जागी तां तेहज ताल, दया करी काढ्यो तत्काल । मायानी तां एह सनंध, निरमल नेत्रे थइए अंध || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -16
- जुओ जीवतणी ए रीत, नव मूके अंधेरनी प्रीत । धणी अमारो अछरातीत, अमे तोहे न समझया पतीत || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -56
- जुओ भूलवी छेतरे केम, आगे छेतरी मूने जेम । सुकजी तो पुकारे एम, जे छल पुरी ए भरम || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -34
- जुओ रे बेहेनी हूं हाय हाय, करती हीडूं त्राहे त्राहे । वालोजी रे विछड़तां, कां जीव कडका न थाए || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -1
- जुओ रे वलाका एहना, अंगोंअंग वाल्या छे बंध । तो हँसे छे आपण ऊपर, आपण कीधी न एह सनंध || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -31
- जुओ रे सखियो एम गातां फरतां, वालाजीने दऊं चुमन । भंग न करूं फेर फूंदडी केरो, तो देजो स्याबासी सहु जन || ग्रं - रास, प्र -17, चौ -5
- जुओ रे सखियो तमे आ जोड फरतां, रामत करे घणे बल । इंद्रावतीनां तमे अंगडां जो जो, मारा वालाजीतूं फरे केवे बल || ग्रं - रास, प्र -17, चौ -4
- जुओ रे सखियो तमे वाणी वालातणी, बोलेते बोल सुहामणां रे । मीठी मधुरी वात करे, हूं तो लऊं ते मुखनां भामणां रे || ग्रं - रास, प्र -37, चौ -1

- जुओ रे सखियो तमे वालोजी ठेकतां, दीधी फाल अति सारी रे । निसंक अंग संकोडीने ठेक्या, जांऊ ते हूं वलिहारी रे || ग्रं - रास, प्र -28, चौ -4
- जुओ रे सखियो मारा जीवनी वातडी, मारा मनमा ते एमज थाय रे । नैणा ऊपर नेह धरी, हूं तो धरूं वालाजीना पाय रे || ग्रं - रास, प्र -37, चौ -3
- जुओ रे सखियो मारा भूखण बाजतां, झांझरिया ते बोले रसाल रे । लेनी पग धरूं तुझ आगल, पण बीजी म करजे आल रे || ग्रं - रास, प्र -37, चौ -7
- जुओ रे सखियो वाले भूलवी मूने, पण हूं केमे नव टली । अनेक वलाका दीधां मारे वाले, तो हूं मलीने मली || ग्रं - रास, प्र -18, चौ -3
- जुओ रे सखियो वालो कोणियां रमतां, भांत भांत अंग वाले । सखियो रामत बीजी करी नव सके, उभली जोड निहाले || ग्रं - रास, प्र -24, चौ -4
- जुओ रे सखियो वालो वेण वजाडे, अधुर धरी अति रंग । वेण सांभलतां ततखिण तमने, काम वाध्यो सर्वा अंग रे || ग्रं - रास, प्र -31, चौ -3
- जुओ साथ सुपन विखे, रामत रमे छे जेम । एक पखे साथ जागियो, रामत तेमनी तेम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -26
- जुओ सुपने कई बढी मरतां, आयस न आवे आप । मारतां देखे ज्यारे आपने, त्यारे धुजे अंग साख्यात || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -112
- जुगत एक वली जुई छे, ऊभी लाखी लिबोईनी दोर । मानकदे" द्रढ करीने जुए, सोभित बंने कोर || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -19
- जुगत जोगमाया तणी, बीजो न जाणे कोयजी । बीजो कोई तो जाणे, जो अम विना कोई होयजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -12
- जुगते जां न जगवू तमने, तो जोगमाया केम थाय । निरमल वासना कीधा विना, रासमां ते केम रमाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -22
- जुगतें सिध साधक, कई व्रत धारी मुन । कई मठ वाले पिंड पाले, कई फिरे होए नगन || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -22
- जुगल किसोर अति सुन्दर, बैठे दोऊ तखत । चरन तले रूहों मिलावा, बीच बका खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -228
- जुगल किसोर तो कहे, जो आसिक मासूक एक अंग । हक खिन में कई रूप बदलें, याही विध हादी रंग || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -116
- जुगल के सुख केते कहूं, जो देत खिलवत कर हेत । सो सुख इन नेहेरन सों, धनी फेर फेर तोको देत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -131
- जुगल सरूप इत बैठत, दोऊ दिल की पावें मोमिन । एक वचन मुख बोलते, पावें पड़उत्तर आधे सुकन || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -100
- जुगल सरूप जब बैठत, इस्क जानें दिल की सब । इस्क बोल काढ़ें जिन हेत को, उत्तर पावे दूजा दिल तब || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -99

- जुड़ बैठी जामें पर चादर, सोभा याही के मान । ए नाम लेत जुदे जुदे, हक सोभा देख सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -202
- जुत्थ जुदे जुदे बन खेलें, खेल नए नए रंग रेलें । तब लग खेलें साथ सब, दिन घड़ी दोए पीछला जब || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -131
- जुथ जुजवे जुवंतियों, उछरंगतियो अपार । उछव करती आवियो, बाबा नंदतणे दरबार || ग्रं - किरन्तन, प्र -51, चौ -5
- जुदी जातें भाँतें जुदी, खड़ियां जुदे भेख धर । जानत नीके झूठ है, तो भी पकड़ रहियां सत कर || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -54
- जुदी जुदी जातें कहावती, फैल करते जुदे नाम धर । सो रात मेट के दिन किया, हुई जाहेर सबों फजर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -73
- जुदी जुदी जातें जहानमें, सब आवत हैं मिल कर। होत दीदार सबन को, हुई बधाइयां घर घर || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -11
- जुदी जुदी जिनसों सोभित, जुदी जुदी जिनसों फल फूल । पात रंग जुदी जिनसों, देख देख होइए सनकूल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -77
- जुदी जुदी जुगतों जाएगा, बहु विध सिंघासन । छोटे बड़े कई माफक, कई छत्र मनी रतन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -105
- जुदी जुदी सनंधों साहेदी, हमें भेजी कई किताब । जासों पढ़ा या अनपढ़ा, सब रोसन होए सिताब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -3
- जुदी हम से भगवान की, रूह फिरी एक सोए । जब फिरे सुनसी हमरे को, तब घरों आवसी रोए || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -67
- जुदे जुदे कबीलों, कर बैठियां अपना घर । जानें हम इत कदीम के, जुदे होवें क्यों कर || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -33
- जुदे जुदे जवेरन की, दस विध की मुंदरी । दोऊ अंगूठों अंगूठिएँ, और मुंदरी आठ अंगुरी || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -36
- जुदे जुदे जुत्थों प्रेम रस, अलबेलियां अति अंग । हँसत आवत धनी के चरनों, रस भरियां अंग उमंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -74
- जुदे जुदे नाम खसम के, एक नारी दूजे नर । खुद खसम को भूल के, खेल में बैठियां सत कर || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -55
- जुदे जुदे नामें गावहीं, जुदे जुदे भेख अनेक । जिन कोई झगड़ो आप में, धनी सबों का एक || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -72
- जुदे जुदे भेख दरसनी, अनेक इष्ट आचार । धरे नाम धनी के जुदे जुदे, पैडे चले माया मोह अहंकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -30, चौ -8
- जुदे जुदे रंगों जवेर ज्यों, कहा कहूं झलकार । ए कुण्ड कठेड़ा चबूतरा, सिफत न आवे सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -7

- जुदे जुदे रंगों जोत चले, ए जो नंग हाथ मुंदरी । ए तेज लेहेरें कई उठत हैं, ज्यों ज्यों चलवन करें अंगुरी || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -50
- जुदे जुदे सुख ले हक के, रूह आसिक क्योंए न अघाए । ताथें जुदा जुदा बरनन, सुख आसिक ले दिल चाहे || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -5
- जुदे पड़े राह बीच रात के, जिद फितने खोया आकीन । तो दुनी बरकत सफकत फकीरों, हक कलाम लिए छीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -13
- जुदे पहाड़ों रूलाए रलझलाए, दे दे सब्दों का मार । कर उपराजन खाते अपनी, होए घर में सिरदार || ग्रं - किरन्तन, प्र -120, चौ -4
- जुदे सब थें इन विध, इन विध सब में एक । साँच झूठ के खेल में, ए जो बेवरा कया विवेक || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -23
- जुदे होए हम ना सकें, अव्वल तो तुमसों । हादी रूहन में जुदागी, कोई होए ना सके हममों || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -23
- जुद्ध दारूण अति जोर हुआ, तिमर घोर झुंझार । प्रकासवान खांडा धार बुधे, निरमल कियो संसार || ग्रं - किरन्तन, प्र -54, चौ -7
- जुध करो तुम दोऊ जोधा, राग आओ धनी धाम पाया । बिध बिध वैर कर कठनाई, जाए बैठो माहे माया || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -70
- जुध किया जरासिंधसों, रथ आयुध आए खिन मांहें । तब कृष्ण विष्णु मय भए, बैकुंठ में विष्णु तब नांहें || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -21
- जुध की– जरासिंधसूं, रथ आउध आव्या जिहां थकी । कृष्ण विष्णु मय थया, वैकुंठमां विष्णु त्यारे नथी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -20
- जुध बड़ा दज्जाल का, लिए जो सारे जीत । भागे भी ना छूटहीं, कोई ऐसा बड़ा पलीत || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -12
- जुध याको जाहेर कहया, देसी बंदगी छुड़ाए। आप अंदर से उठसी, जीत्यो न काहू जाए || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -22
- जुबां आकीन कयामत न मानें, ऊपर इसलाम के कीना आने । उनसे जो हुए मुनकर, सोई गिरो कही काफर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -10, चौ -5
- जुबां क्या कहे बड़ाई हक की, पर रूहें भूल गई लाड़ लज्जत । एक दम न जुदे रहे सकें, जो याद आवे हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -30
- जुबां थकी बल नूर के, ऐसी सिफत कमाल । तो इत आणू जुबां क्यों कर कहे, बल सिफत नूरजमाल || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -13
- जुबान से कलमा केहेना, सिर फरज रोजा निमाज । जगात हिस्सा चालीसमा, कर सके न हज इलाज || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -28
- जुलम करें कई जालिम, मूंदी आँखें गुमान । खून करते ना डरें, कहें हम मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -35

- जे अपार वराका तोहिजा, मं हिकडी गंठ न छुटे । लखे भते न्हारियां, तो रे जोडी कां न जुडे || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -49
- जे अरवाएं अर्स जी, से सभ हकजी आमर । असां हुज्जत गिडी अर्स जी, अग्यां बेठ्यूं हक नजर || ग्रं - सिंधी, प्र -12, चौ -5
- जे अरवाहें अर्स ज्यूं, से सभ म अडां न्हारीन । आंऊ पसां आं अडूं, हे बिठ्यूं जर हारीन || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -19
- जे आई गाल विचारियो, रूहें मेडो करे । त रही न सगों किएं रांदमें, हे कूडा वजूद धरे || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -37
- जे आंऊं चाहियां दिलमें, से को न करयो आई हित । कोठ्यों को न सुखनसे, जी थिए न उसीडो हित || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -5
- जे आंऊं न्हारियां रूहन अडूं, पसी इंनी जो हाल । रूअन अचे मूंह के, से तूं जांणे नूरजमाल || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -50
- जे आंऊं मंगां सहूर में, तांजे मंगां बे अकल । लाड सभे तो पारण, जे अचे मूंजे दिल || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -36
- जे कन गाल्यूं विचमें, तंद न उकले तिन । पई रही तिन हथमें, पोए बेठ्यूं फेरीन मन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -15
- जे कीं केयो से हकमें, से हकम आं हथ थेयो । हिक जरो रे तो हुकमें, आए न कोए बेयो || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -31
- जे की गुजस्यो मारकंड के, विच जिमी हिन अभ । से गुझ दिलजो निद्रमें, डिठो नारायणजी सभ || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -3
- जे की डिसण बोलण, से तो रे सब बंधन । हक इलम चोए पधरो, जे विचार करे मोमिन || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -29
- जे के बलहो होए मासूक, तेहजा वलहा लगे वैण । से की डिए डुझणे, जे वलहो होए सैण || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -14
- जे कोई सुंदरी होय रे जोरावर, तेणे सीखवू वसीकरण वात । विध विधनी तेणे विद्या देखाडूं, जेणे वस थाय प्राणनो नाथ || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -29
- जे कोडी पोन कसाला, त करे न के के जांण । गिनी कायम सुख धणीयजा, बोले ना के सांण || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -9
- जे खरो थई जीव जुओ मन करे, कपट रती रदे नव धरे । एम थैने जे तमने सेवे, अने वचन विचारी तमारा ग्रहे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -6
- जे घुरां इस्क, त हित पण पसां पांण । हे पण खुदी डिठम, जडे थेयम हक पेहेचान || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -2
- जे चओ त बोलियां, न तां मांठ करे रहां । जे उपाओ था दिल में, से तो रे के के चुआं || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -13

- जे जागी बेठा निजधाममां, तेहेने आवेसनों सं कहिए । तारतम तेज प्रकास पूरण, तेणे सकल विधे सुख लहिए || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -47
- जे जीव निद्रा मूके नहीं, रस पाईए वाणी । धणी लाव्या एटला माटे, माया बल जाणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -116
- जे जीव होय जल तणों, ते न रहे विना जल । अनेक विध ना सुख देखाडो, पण मूके नहीं पाणी-वल || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -123
- जे जोगवाई छे तारे हाथ, ते आणी जिभ्याए केही कहूं वात । आटला दिवस ते जाण्यूं नव जाण, मूरख करे तेम कीधुं अजाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -12
- जे तूं करिए हेकली, भाइए गडजा आंऊं। से तां तोहिजी सिखाइल, त पाइयां थी धांऊं || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -39
- जे तूं चुके जीव हिन भेरा, त तां सुणज मूंजी गाल । जीव कढंदुस जोरे तोके, करे भुछा हवाल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -15, चौ -5
- जे तूं जगाइए इलम से, त पसां थी हेकली पांण । जे की करिए संग लाडजो, त थीयम तो अडूं ताण || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -56
- जे तूं सजण भाइए, से इझण संजो डेह । मिठडो गालाए मारीन, हथडा विजन कलेजे || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -20
- जे न थिए मुकाबिल मुंहसे, थिए कम हिन वेर । त हिंनी तोहिजे कागरें", पांण के सचो चौंदा केर || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -23
- जे निध गोकुल प्रगटी, तेतां सुख अलेखे । अणजाणे सुख माणिया, घर कोई ना देखे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -88
- जे निध देखाडी तमे मूने, तेने जड थई वलगू हूं अंध । म्हारी विध तां एकज छे, बीजी न जाणू सनंध || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -45
- जे निया सामो न्हारिए, त पट न रखे दम । ते हक केई न्हारजे, हल्लाए हक हुकम || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -78
- जे निसान्यूं फरमानमें, से डिनाई सभ निसान || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -13
- जे बंध बांध्या जोइए रे चरणसं, ते बंध बांध्या लई पंपाल । अखंड सुख आवे केम तेने, जे रे पडे जई जमनी जाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -18
- जे बल की– नरसैए, एवो करे न कोय । हदनो जीव बेहदनी, ऊभो लीला जोय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -44
- जे मनोरथ कीधां श्री धाम माहें, ते दृढ सघला आहीं थाए । जे पेर सघली कही छे तमे, ते दृढ कीधी सर्वे जोईए अमे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -20
- जे मनोरथ मनमां थाय, ततखिण कीजे तेणें ताय । आ जोगवाई छे पाणीवल, आपण करी बेठा नेहेचल || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -21

- जे मनोरथ मनमा रह्यो, मारा धणी श्रीराज । खरूं करतां खोटा महेथी, पण नव सिध्यूं एके काज || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -26
- जे मुं करिए हेकली, विच आसमाने में । जे आंऊ पसां पांणके हेकली, से सभ करिए थो तूं || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -55
- जे मूं कूडी करिए, त भले कूडी कर । त पाहिजो नालो डेई, को लिखे कागर || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -17
- जे में तमसं कीधां रे अवगुण, तेणी तमे वालो छो रीस । आपोपूं ओलखावी करी, तमे दीधो मूने वदेस || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -18
- जे रस छे वाला हमचडीमां, ते तो क्यांहे न दीठो रे । जेम जेम सखियो आवे अधकेरी, तेम तेम दिए रस मीठो रे || ग्रं - रास, प्र -14, चौ -4
- जे रे हुकम पट खोलियां, त द्रजां खुदी जे गुने । न तां कुंजी डिंनाऊं हथ आसिक, सा मासूक विछोडो की सहे || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -13
- जे वड्यूं केइए हिन रांदमें , तिनी ज्यूं केई कोडी सिफतूं कन । से बडा मंगन खाक पेरनजी, असां अर्स रूहन || ग्रं - सिंधी, प्र -13, चौ -5
- जे वराका लाहिए, त आंऊं बेठिस तरे कदम । को न वराको कितई, ई आइम मूंजा खसम || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -50
- जे विरह तमे दीधो रे वाला, ते सिर ऊपर में सह्यो । अवगुण साटे तमे ए दुख दीधा, हवे पाडी केहेनो नव रह्यो || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -20
- जे सखी चरणे रही नव सकी, ते पर हांसी थई अति जोर रे । इंद्रावती वालो ने सखियो, दिए ताली हांसी करे सोर रे || ग्रं - रास, प्र -27, चौ -8
- जे सखी सांची थई ने वलगी, ते ता वछोडतां नव छूटे रे । ओलियो सखियो बल करी करी थाकी, ते ता उठाडता नव उठे रे || ग्रं - रास, प्र -27, चौ -7
- जे सखी हुती कुमारका, घर नहीं तेहेना अंग । सनेह बल दया लीधी धणीतणी, ते मलीने भली साथने रंग || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -28
- जे सहूर करे न्हारियां, त खुदी मंगण तरे हुकम । त दर उपटे पाहिजो, गडजां को न खसम || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -18
- जे सुख डिंना हकें रातजा, तेजी पण हित लज्जत । अर्सजा पण सुख हिंनमें, गिडां कई कोडी भत || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -24
- जे सुख तोहिजी अंखिए, डिंना असांके तो । से सुख कंने सुयां, सुंजो हियो न झल्ले सो || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -12
- जे सुख तोहिजे अर्स में, डिंना तो गालिन । से सभ वीयम विसरी, सुंजे हियडे न चढिन || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -13
- जे सौ भेरां आंऊं विसई, त पण आंहिजा सेंण" । पस तूं हिये पाहिजे, जे तो चेया वैण || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -31

- जे होयम जरा इस्क, त न पसां खुदी हुकम । पण हिक न्हाएम इस्क, ब्यो पसां आडो हुकम इलम || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -14
- जेटला गुण ए गणतां थाय, ए गुण मारा जीवमां समाय । लेखणो करवाने बुध करे छे बल, घडू ने समारूं सहु काढीने बल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -36
- जेटला वचन गाया अमे रमता, ते सर्वेना सुख लीधां । कहे इंद्रावती केम कहूं वचने, अनेक सुख वाले दीधां || ग्रं - रास, प्र -14, चौ -8
- जेटली नहाती कार्तिक कुमारिका, ए वास्ना नहीं उतपन । एनी लज्या लोपावी हरीने वस्तर, तेसूं कीधो वायदो वचन || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -27
- जेटली मनमां उपजे वात, ते सहु आतम पूरे साख । मन जीवने पूछे जेह, त्यारे जीव सहु भाजे संदेह || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -12
- जेटली सनंध कही छे तमे, ते द्रढ करी सर्वे जोइए अमे । लीला तमे कही अपार, तेह तणो नव लाधे पार || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -8
- जेणी रूते मूने कीधी परदेसण, वली ते आव्यो असाढ । हजी विछोडो न भाजो रे वाला, जीवने थई वली वाढ || ग्रं - खटरुती, प्र -7, चौ -14
- जेणी सनंधे पाउं भरो, अने अंग वालो नरम । भमरी फरो जेणी भांतसुं, अमे नाचूं फरूं तेम || ग्रं - रास, प्र -29, चौ -4
- जेणे ए निध खोली खंत करी, रूदयामां आणी । धंन धंन कहिए मोटी बुध, निध ए निरखाणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -12
- जेणे दरसने नेत्र ठरे, अने वचन कहे ठरे अंग । अनेक विघन जो उपजे, पण मूकिए नहीं साध संग || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -27
- जेता अर्स दिल मोमिन, बिन मेयराज न काढ़े बोल । बिन पूछे देवें सब को, अर्स अजीम पट खोल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -23
- जेता एक कठेड़ा, सब में सुन्दर तकिए। तिन तकियों साथ भराए के, बैठे एक दिली ले || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -24
- जेता कोई दिल मजाजी, चढ़ सके न नूर मकान । दिल हकीकी पोहोंचे नूर तजल्ला, ए दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -2
- जेता कोई पैगंमर और, सारी सिफतें याही ठौर । सतरहें सिपारे यों कर कहया, बिना महंमद कोई आया न गया || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -39
- जेता कोई पैगंमर, रसूल नबी औलिए । गोस" कुतब वली अंबिए, नबी नसीहत सिर सब के || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -78
- जेता कोई पैगंमर, सो सब जहूदों मांहें । इसलाम मोमिन सब याही में, कोई जाहेरियों में नाहे || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -64
- जेता कोई फरिस्ता, बीच हैवान या इनसान । बिना फरिस्ते जरा नहीं, बीच जिमी या आसमान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -35

- जेता कोई बनी आदम, कह्या निकाह अबलीस से । कह्या दुनी बीच अबलीस, लोहू ज्यों तन में || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -13
- जेता कोई रंग बन में, तिन रंग रंग हर हार । इन विध आगू अर्स के, बन पोहोंच्या जोए किनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -26
- जेता कोई रूह मोमिन, जाए पोहोंच्या हक इलम । सो बात समझे हक अर्स की, जिन दिल पर लिख्या बिना कलम || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -33
- जेता कोई हक अर्स दिल, सो कहे मरद मोमिन । सो देखो हक इलम से, खोल रूह नजर बातन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -10
- जेता कोई हक अर्स दिल, सो कहे मरद मोमिन । सो देखो हक इलम से, खोल रूह नजर बातन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -22
- जेता तले हुकम के, ए जो कादर की कुदरत । ए सब बेसक तोलिया, सक न पाइए कित || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -2
- जेता पैदा जुलमत से, ए जो मजाजी दिल । सो दिल हकीकी मोमिन मिने, कबहूं ना सके मिल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -35
- जेता बल जिन अंग में, तेता इस्क हक का जान । सक जरा ना मिले, पिउ सों पूरी पेहेचान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -14
- जेता बाग ऊपर, तेता तले विस्तार । चारों खूटों बराबर, ए सिफत न आवे सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -65
- जेता मता हक का, सो सब अर्स में देख । सो सब मोमिन दिल में, पाइए सब विवेक || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -63
- जेता माएना मुसाफ का, किया नजूम और बातन । सो पढ़े कहें किस्से हो गए, डालें बीच नाबूद दिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -110
- जेता मुसाफ माएना, सब नजूम और बातन । सो खोले काम कयामत के, दिन होसी सबों रोसन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -58
- जेता वस्तर भूखन, सब रंग रस कई गुन । रूह कछुए कहे एक जरे को, सो सब आगू होत पूरन || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -46
- जेता सहूर जो कीजिए, सब सिफतें सिफत बढ़त । जो कदी आई बोए इस्क, तो मुख ना हरफ कढ़त || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -44
- जेता सुख तुमारे अर्स में, सो सब हमारे दिल । ए सुख रूह मेरी लेवहीं, जो दिए इन अर्स में मिल || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -34
- जेता हिस्सा तन में जिनका, सो जोरा तेता किया चाहे । ए विचार करें सो मोमिन, हक हुकम देसी गुहाए || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -18
- जेती अरवाहें अर्स की, हक सेहेरग से नजीक तिन । दे कुंजी अर्स पट खोलिया, हादिएं किए सब रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -62

- जेती अरवाहें अर्स में, ताए मन चाहया सब होए । दिल चितवन भी पीछे करे, आगे बनि आवे सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -4
- जेती कोई पैदाइस कंन, मोको तिन थैं जानो भिंन । मैं ना इन में ना इनके संग, बेसुध कहे सब इनके अंग || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -64
- जेती कोई हैं ब्रहमसृष्ट, प्रेम पूरन धनी पर द्रष्ट । कंस के बंध वसुदेव देवकी, इत आई सुरत चत्रभुज की || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -21
- जेती खूबियां अर्स की, सब देखिए जमाकर । लीजे सब पेहेचान के, अन्दर दिल में धर || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -77
- जेती चीज अर्स में, न होए पुरानी कब । नुकसान जरा न होवहीं, ए लीजे सहूर में सब || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -44
- जेती चीज जरा कोई खेल में, सो हक हकमें हलत चलत । सो सुख दिए हक रसनाएं, हम केती करें सिफत || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -18
- जेती चीजें अर्स की, जोत इस्क मीठी बान । खूबी खुसबोए हक चाहेल, तहां नजीक ना नुकसान || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -46
- जेती चीजें अर्स में, सो सब मुतलक न्यामत । सो मुतलक इलम बिना, क्यों पाइए हक खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -55
- जेती जुगत पाट ऊपर, सब लेहेरां लेवें माहें जल । जानों तले ब्रहमांड दूजो भयो, भयो आसमान जोत सकल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -27
- जेती दुनी भई कुंन से, हवा तिनसे ना छूटत । सो क्यों छोड़े ठौर अपनी, कही असल जिनों जुलमत || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -45
- जेती फिरती चांदनी, भस्यो नूर उद्दोत । ले सामी चन्द रोसनी, भयो थंभ एक जोत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -44
- जेती बातें कहूं साथजी, तिनके देऊं निसान । और मुख थे न बोलहूं, बिना धनी फुरमान || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -19
- जेती बातें मैं कही, तिन सब में चतुराए । ए चतुराई भी तुम दई, ना तो एक हरफ न काढ़्यो जाए || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -29
- जेती बुजरकी बीच दुनी के, सो सब कुफर हथियार । कुफरों में कुफर बुजरकी, काम क्रोध अहंकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -102, चौ -4
- जेती मैं कही जोगवाई, सो देख देख आतम न अघाई । या बाहेर या अंदर, सब एक रस मोहोल मन्दिर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -78
- जेती रूहें अर्स की, ताए फरामोसी न जाए जीत । कछू पड़े बीच अपने, ए नहीं इस्क की रीत || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -47
- जेती रूहें आसिक, रेहेत हक खूबी के मांहें । रूह को छोड़ के वजूद, कोई जाए न सके क्यांहे || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -5

- जेते अंग आसिक के, सो सब कदमों लगत । ए गत सोई जानहीं, जिन अंग रूह बँचत || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -39
- जेते अंग आसिक के, सो सारे किए सुफल । सोई असल रूह आसिक, जिन मोमिन अर्स दिल || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -74
- जेते अंग मासूक के, रूह आसिक रहे तिन मांहें । रूह आसिक और कहूं ना टिके, अपने अंग में भी नाहें || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -23
- जेते अंग हैं वजूद के, तेते अंग बातून दिल । नजर खुली जब रूह की, हुआ दिल मोमिन अर्स असल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -39
- जेते कहे मैं अवगुन, तेते हर रोम दाग। सो हर दम आतम को लगे, तब मैं बैठू जाग || ग्रं - किरन्तन, प्र -41, चौ -11
- जेते कोई फिरके कहे, सब छोड़ देसी कुफर । आवसी दीन इसलाम में, दिल साफ होए कर || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -75
- जेते कोई मोमिन, सो बैठे तले कदम । तो तुमारे रसूल का, फेरें नाहीं हुकम || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -44
- जेते पैगंमर भए, जिनों पोहोंचाया हक पैगाम । पाई जबराईल से बुजरकी, जो पोहोंच्या नूर मुकाम || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -1
- जेते फिरते नूर द्वार ने, आगू नूर चबूतरे दोए दोए । नूर चौक चारों चबूतरों, दोऊ नूर द्वार बीच सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -45
- जेते वचन कुरान में, सो सब स्यामाजी दई साख । सो सारे इन लीला के, कहूं केते हजारों लाख || ग्रं - किरन्तन, प्र -104, चौ -6
- जेते सुख इस्क के, लेते अर्स के माहें । सो देखन की ठौर एह है, और ऐसा न देख्या क्या || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -31
- जेनो नव काढ्यो निरमाण, सुकजीना वचन प्रमाण । गोपद वछ वली सुकजीए कयो, भवसागर एम साथने थयो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -20
- जेम कहो तेम करूं रे सखियो, बांध्या जीव जीवन । अधखिण अलगो न थाऊं, करार करो तमे मन || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -12
- जेम रंग लिए रे ममोलो, मेह बूठे तत्काल । तमने मले हूं रंग एम लऊ, इंद्रावती ना आधार || ग्रं - खटरुती, प्र -4, चौ -18
- जेम हस्या ब्रह्माए वाछरू, गोवाल संघाते । ततखिण नवा निपना, आपोपणी भांतें || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -30
- जेरे गामनी वाटज लीजे, आवे तेहज गाम । जाणी ने जमपुरी जाओ छो, त्यारे न आवे अखंड विसराम || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -28
- जेरोनी लगो जर उथई, जीव कर करे मंझ । बलहे संदोनी विरह ई मारे, मूंके डिंनाऊं डूरण डंझ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -8, चौ -3

- जेवी अमने आयत हुती, तमे तेवा स्माइयां रंग जी । साथ सकलमां एम सुख दीधां, इंद्रावती पामी आनन्द जी || ग्रं - रास, प्र -43, चौ -10
- जेहेडो धणी पाहिजो, तेहेडी तेहजी रांद । लाड कोड इस्क जा, तेहेडाई पारे कांध || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -32
- जेहेना मनमा जेह, उछाह हुता घणां । सुख दीधां तेहेने तेह, पार नहीं तेहतणां || ग्रं - रास, प्र -44, चौ -5
- जेहेनो धणी पोते निध पामे, ते केम सए करारे । आप पोते खबर नव राखे, अने फोकट अमने मारे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -94
- जेहेर उतारने साथ को, ल्याए तारतम । बेहद का रस श्रवने, पिलावें हम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -139
- जेहेर उतारवा साथनूं, लाव्या तारतम । बेहद रस श्रवणे करी, अमे पाऊ एम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -117
- जेहेर चढ्यो हाथ पाउं झटकतियो, सरवा अंग साले कोई सके न उतार । समरथ सुखथाय साथने ततखिण, गुणवंता गारूडी जेहेर तेहेने तेणी विधे झार || ग्रं - किरन्तन, प्र -37, चौ -2
- जैसा अमल रात का, चाहिए ज्यों चलाया । बीच सरे जबराईले, किया हक का फरमाया || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -1
- जैसा केहेत हों हक को, यों ही हादी जान । आसिक मासूक दोऊ एक हैं, ए कर दई मसिएँ पेहेचान || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -115
- जैसा खेल अव्वल का, ए जो रूहों देख्या ब्रह्मांड । बरकत इन मोमिन की, सब दुनियां करी अखंड || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -83
- जैसा चौक तले का, तैसा ही ऊपर । आगू झरोखे दूजी भोम के, इत चौक बीस मंदिर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -8
- जैसा पहाड़ तैसी जिमी, और तैसेही दरखत । ए मोहोल ऐसे जवेरन के, जुबां क्यों कर करे सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -41
- जैसा बाहेर होत है, जो होए ऐसा दिल । तो अधखिन पिउ न्यारा नहीं, माहे रहे हिल मिल || ग्रं - किरन्तन, प्र -132, चौ -4
- जैसा मीठा लगे मन को, भूखन तैसा ही बोलत । गरम ठंढा सब अंग को, चित्त चाहया लगत || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -5
- जैसा मेहेबूब बुजरक, तैसा हादी हक का तन । रूहें तन हादी माफक, इनों माफक बका वतन || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -72
- जैसा साहेब केहेत हो, ऐसी कबं हमसे न होए । सौ बेर देखो अजमाए के, ऐसी मोमिन करे न कोए || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -33

SPJIN

- जैसा साहेब बुजरक, तैसा बुजरक इस्क । जो दिल देय के देखिए, तो सुख आवे हक माफक || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -71
- जैसा सुख दिल चाहे, वस्तर भूखन तैसे देत । सब गुन अर्स चीज में, सब सुख इस्क समेत || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -115
- जैसा हक है सिर पर, तैसा तेहेकीक जानत नाहें । विसर जात है नींद में, दृढ़ होत न ख्वाब के माहें || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -17
- जैसी तुमारी साहेबी, करी मेहेर तिन माफक । सुध हुए खुसाली होएसी, जो करी अपने मासूक हक || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -141
- जैसी सख्प की नाजुकी, तैसी सोभा सलूक । चकलाई चारों तरफों, दिल देख न होए टूक टूक || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -30
- जैसी साहेबी रूहन की, विध लखमीजी भी इन । वाहेदत में ना तफावत, पर ए जानें रूहें अर्स तन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -91
- जैसी सोभा देखों साहेब की, तैसे कानों पेहेने भूखन । आसमान जिमी के बीच में, हो रही सबे रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -30
- जैसी सोभा पसु पंखियों, सोभा तैसी भोम बीच बन । सो सोभा मीठी हक जिकर, यों हाल खुसाल रात दिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -15
- जैसी सोभा भूखन की, कहूं तैसी सोभा वस्तर । कछू पाइए सोभा सरूप की, जो खोले रूह नजर || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -11
- जैसी है हक सूरत, और तिन वस्तर भूखन । जो सोभा देत इन सूरतें, सो क्यों कहे जाए जुबां इन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -53
- जैसे बालक बावरा, खेले हंसता रोए । एसे साधू सास्त्रमें, दृढ़ न सब्दा कोए || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -29
- जैसे बालक बावरा, खेले हंसता रोए। ऐसे साधू सास्त्र में, दृढ़ ना सब्दा कोए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -30
- जैसे मछ गलागल, ना किनकी मरजाद । यों खैच लेवें आप में, कहें हमें होत सवाब || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -12
- जैसे सख्प अर्स के, भूखन तिन माफक । याही रवेस वस्तर जवेर के, ए अंग बड़ी रूह हक || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -10
- जैसे सरूप रूहन के, चरनों लगे गिरदवाए। त्यों पुतलियां मोतिन की, कदमों रही लपटाए || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -61
- जैसे हिंडोले अर्स के, ऐसे ही हिंडोले बन । रूहें बारे हजार बैठत, ए समया अति रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -42
- जो अंग देखे आखिर लग, तिन से देखे चौदे तबक । और काहूं न देख्या कछुए, बिना हक इस्क || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -6

- जो अंग होवे अर्स की, उपजत नहीं अंग आहे । बारे हजार रूहन में, सो काहे को आप गिनाए || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -42
- जो अटकों इन अंग में, तो जाए न सकों छोड़ कित । गुझ गुन कई श्रवन के, रूह इतहीं होवे गलित || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -38
- जो अंदर चारों घड़नाले, आगू चबूतरा जल पर । तले जल जाली बारों आवत, सोभा इन घाट कहूं क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -64
- जो अंदर झूठी बंदगी, देखलावे बाहेर । तिनको मुस्लिम जिन कहो, वह ख्वाबी दम जाहेर || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -35
- जो अनेक अवगुण होय मारा, तोहे तमे लेसो सार । अमे कलपतां तमे दुखासो, ते नेहेचे जाणो निरधार || ग्रं - खटरुती, प्र -5, चौ -9
- जो अब जीवरा भूलसी, तो देखी तेरी बिध । काढूंगी तुझे जोरसे, करके बुरी सनंध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -5
- जो अब भी जाहेर ना होती, बका हक सूरत । तो क्यों होती दुनी हैयाती, क्यों भिस्त द्वार खोलत || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -13
- जो अमरद कहया महंमदें, सोई कही ईसे किसोर सूरत । और सब चीजें कही बराबर, दोऊ मकान हादी उमत || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -32
- जो अरवा कहावे अर्स की, सुने बेसक हक बयान । हाए हाए ए झूठी देह को छोड़ के, पोहोचत ना तित प्रान || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -3
- जो अरवा होए अर्स की, सो कीजो इलम सहूर । इलम सहूर जो हमें दिया, लीजो इनसे रूहें जहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -16
- जो अरवा होए अर्स की, सो लीजो दिल धर । सुच्छम सूरत सोभा बड़ी, सो सुनियो पड़उत्तर || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -25
- जो अरवाहें अर्स की, सो आए मिलेंगी तुझ । तुझ अन्दर मैं आइया, ए केहे फुरमाया मुझ || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -9
- जो अरवाहें अर्स की, सो यामें खेलें रात दिन । ऊपर तले माहे बाहेर, ए जरे जरा जाने मोमिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -87
- जो अर्थ ऊपर का लेवहीं, सो कहे देव सैतान । यों जंजीरां मुसाफ की, कई विध करी बयान || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -8
- जो अर्थ ऊपर का लेवहीं, सो सुख जाने एक हक श्रवन । एक एक के कई अनेक, सो कई गुन मगज लेवें मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -21
- जो अर्स बातें सक हमको, तो हमें क्यों कहया अर्स कलूब । मोमिन कहे बीच वाहेदत, इन आसिको हक मेहेबूब || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -130
- जो अर्स रूहें आईं होती, तो काहे को कौल करत । सो कहया पीछे आवसी, ए सोई लेसी हकीकत || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -22

- जो अर्स से रूहें उतरी, तामें था रूहअल्ला सिरदार । कह्या तुम पर रसूल भेजोंगा, हके यों कौल किया करार || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -71
- जो अलवेला एवा तमें, तो मंदिरिऐं न आवो केम म्हारे । हूं माननी मान मूकी केम कहूं, पण बोलड़े बंधाणी छू तारे || ग्रं - किरन्तन, प्र -43, चौ -2
- जो अलहा किनहूं न लह्या, मैं तिनका कासद । अर्स रूहों वास्ते आइया, मेरे हाथ कागद || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -6
- जो आकार तमारे होत रे अभागी, तो कटका करूं तरवारे । पीजी पीजी पुरजा करी, वली वली काढूं हेठल धारे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -91
- जो आड़ी आवे पलक, तो जानों बीच पड्यो ब्रह्मांड । ए निसबत हक वाहेदत, जो अर्स दिल अखंड || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -48
- जो आधा फूल एक पेच में, आवे दूजे पेच का मिल । यों बनी बेल फूल पाग की, देख देख जाऊं बल बल || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -55
- जो आयत हब्बूनी हब्बहुम, तिन किए तरजुमें तीन । पेहेचान जैसी तैसी मजल, फल सोई देवे आकीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -103
- जो आया झण्डे तले महंमदी, सो तबहीं कायम होत । देख्या सब हक दिल मता, हुई अर्स अजीम बीच जोत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -25
- जो आवत अरवा नासूतमें, पकड़े वजूद नाबूद । सो ले सरीयत चढ़ ना सके, छूटे ना फना वजूद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -55
- जो आसिक अर्स अजीम के, तिन सिर नूरजमाल । परीछा तिनकी जाहेर, सब्द लगें ज्यों भाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -91, चौ -8
- जो आसिक असल अर्स की, सो क्यों सकचे देते जिउ । करे कुरबानी कोट बेर, ऊपर अपने पिउ || ग्रं - किरन्तन, प्र -91, चौ -5
- जो आसिक इन मासूक की, सो अटक रहे एक अंग । और अंग लग जाए ना सके, अंग एकै लग जाए रंग || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -127
- जो आसिक भूखन पकड़े, सो भी छूटे न आसिक सें । देख भूखन हक अंग के, आसिक सुख पावे या || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -32
- जो इत अरवा होए अर्स की, तो उड़ावे चौदे तबक । रूहें नाम धराए हम, ऐसा हुकमें कर दिया हक || ग्रं - सिंधी, प्र -16, चौ -7
- जो इत आंखा खोलसी, ले इस्क या विचार । सो करसी बातें बिध बिध की, सब सैयों में सिरदार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -11
- जो इन पर आकीन ल्याइया, ताए भिस्त होसी बेसक । जो इन बातों मुनकर, ताए होसी आखिर दोजक || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -10
- जो इस्क ले मिलसी, सो लेसी सुख अपार । दरद बिना दुख होएसी, सो जानों निरधार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -27

- जो इस्क ले मिलसी, सो लेसी सुख अपार । दरद बिना दुख होएसी, सो जानो निरधार || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -56
- जो इस्क वाहेदत का, ए जो किया मजकूर । ए बेवरा क्यों पाइए, कोई होए न पल एक दूर || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -15
- जो उठसी आंखां चोलती, सो केहेसी कहा वचन । ना तो आई थी उमेद देखने, पर नींद ना गई तिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -14
- जो उठी कयामत को, सो क्यों सोवे ऊगे दिन । आया असल तन में, बीच बका वतन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -86
- जो उतरे मलायक लैल में, ताको असल नूर मकान । सो राह हकीकत लिए बिना, उत पोहोंचे नहीं निदान || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -46
- जो उतरे हैं अर्स अजीम से, रूहें और फरिस्ते । कहिए जात खुदाए की, असल हैं अर्स के || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -92
- जो उतरे होवें अर्स से, रूहें तौहीद के दरम्यान । सो लेसी अर्स अजीम को, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -21
- जो उनने देख्या आकार, तो लगी लानत और हुआ खुआर । तब अजाजीलें मांग्या वचन, के आदम मेरा हुआ दुस्मन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -16
- जो उमत होवे अर्स की, सो नीके विचारो दिल । विने अपनी देख के, करो फैल देख मिसल || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -1
- जो ऊधो ने दई सिखापन, सो मुख पर मारे फेर वचन । याही विरह में छोड़ी देह, सो पोहोंची जहां सरूप सनेह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -48
- जो ए काम ढूंढ़े बदफैल, काफर चाहे उलटी गैल । ऐसे जो हैं सितमगार, पाया न समया हुए खुआर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -29
- जो ए काम तुमसे होए, तब आई वतन खुसबोए । और फैल झूठे जो कोई, काफर गुस्सेसों कहे सोई || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -19
- जो ए खबर होती तुमको, जैसी मेरी साहेबी बुजरक । तो बड़ा कबूं न केहेतियां, अपने मुख इस्क || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -26
- जो ए बात करे जागते, तो तोहे नींद आवे क्यों फेर । नैनों पल क्यों लेवहीं, क्यों बोले और बेर || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -8
- जो एक नंग नीके निरखिए, तो रोम रोम छेदत भाल । जो लों देखों उपली नजरों, तो लों बदलत नाहीं हाल || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -33
- जो एक पग पर राखू तूंने, तो हूं इंद्रावती नार । दिन घणा तूं छपयो मोसूं, हवे नहीं छपी सके निरधार || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -26
- जो एक वचन कहूँ मेहेर का, ले मेहेर समझियो सोए । अपार उमर अपार जुबांए, मेहेर को हिसाब न होए || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -41

- जो एता भी कया न जावहीं, तो क्यों कहूं थंभ चित्राम । परआतम हमारियां, ए तिनके सुख आराम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -50
- जो कछु अर्स में देखिए, सो सब जात खुदाए । और खेलौने बगीचे, सो सब जाते के इप्तदाए || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -82
- जो कछु पैदा कुंन से, मैं तिन का देत निमूना । सो क्यों कही जाए कायम को, जो वस्त है झूठ फना || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -16
- जो कछु बीच अर्स के, पस पंखी नंग बन । सोभा बानी कोमल, खुसबोए रंग रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -35
- जो कछु बोले रूह मुखथे, सो नीके सुने हक कान । ऐसा मीठा जवाब तोहे देवहीं, कोई न सुख इन समान || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -13
- जो कछु बोले हक रसना, सो सब वास्ते रूहन । और जरा हक दिल में नहीं, ए जानें दिल अर्स मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -38
- जो कछुए चीज अर्स में, सो सब वाहेदत माहें । जरा एक बिना वाहेदत, सो तो कछुए नाहें || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -43
- जो कछुए चीज अर्स में, सो सूरत सब इस्क । सो लाड़ लज्जत सुख लेत हैं, सब रूहें हादी हक || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -105
- जो कछुए ना समझी, हाथ न लई पूनी । आई थी उमेद में, पर उठी अलूनी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -24
- जो कछू आखिर होएसी, तुम देत हो आगू बताए । सो क्यों हम भूल जाएँगे, जो लेत हैं दिल लगाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -64
- जो कछू कया कतेब ने, सोई कया वेद । दोऊ बंदे एक साहेब के, पर लड़त बिना पाए भेद || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -42
- जो कछू कया महंमदे, ईसे भी कया सोए। ए माएने सो समझहीं, जो अरवा अर्स की होए || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -20
- जो कछू कहिए वचने, सो तो सब अनित । वतन सरूप कोई न कहे, तो क्यों कर जाइए तित || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -20
- जो कछू कहिए वचने, सो सब मिने गफलत । ना सरूप ना काहू वतन, तो क्यों कर जाइए तित || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -20
- जो कछू कहूं महंमद को, तामें अली जान || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -54
- जो कछू पिंड ब्रह्मांड की, सब फना कही सास्त्रन । अखंड के पार जो अखंड, तहां क्यों पोहोंचे झूठ सुपन || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -11
- जो कछू बोलें हक जुबांन, सो सब रूहों के हेत । अर्स बोल खेल या चलन, या जो कछू लेत देत || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -39

SPJIN

- जो कछू सुख जीव को, सो बुध ना अंतस्करन । सुख अंतस्करन इंद्रियन को, उतर पोहोंचावे मन || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -8
- जो कछू हिरदे में आवत, सो आवे नहीं जुबान । चुप किए भी ना बने, चाहें साथ सुजान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -130
- जो कदाच वालो आवे ओलीगमां, तो आपण पैए जैए । दाव रहे जो वालाजी ऊपर, तो फूली अंग न मैए || ग्रं - रास, प्र -15, चौ -8
- जो कदी आवे मस्ती में, तो एक प्याला देवे गिराए । सराब तहूरा ऐसा चढ़े, दिल तबहीं देवे फिराए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -99
- जो कदी आसिक खोले नैन को, पेहेले हाथों पकड़े दोऊ पाए । ए नैन अंग नूरजमाल के, सो इन आसिक से क्यों जाए || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -40
- जो कदी इस्क आवे नहीं, तो मोमिन बैठ रहें क्यों कर । अर्स हकसों बेसक होए के, क्यों रहें अर्स बिगर || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -41
- जो कदी ए दाग धोए डारोगे, मन वाचा कर करमन । अक्स हमारे नाम के, कदी रूहें बातें तो करसी वतन || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -24
- जो कदी कमर अटकी, तो आसिक न छोड़े ए। ए लांक पटुका छोड़ के, जाए न सके उर ले || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -95
- जो कदी कहूं नरमाई की, और लीकों सिफत । आए जाए आरबल, सब्द न इत पोहोंचत || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -118
- जो कदी कहोगे रूहें इत न हुती, ए तो हकमें किया यों । तो नाम हमारे धर के, हुकम करे यों क्यों || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -20
- जो कदी छीन लेत हैं जिनपे, पर रोस न काह किनपे । इतथे जो फिर कर गैयां, तिन और कटोरी जाए लैयां || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -112
- जो कदी जाहेर न हुई, सो तुझे होसी सुध । अब थें आद अनाद लों, जाहेर होसी निज बुध || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -34
- जो कदी तें आई नहीं, तो हक का है हुकम । हुज्जत दई तो को अर्स की, दिया बेसक अपना इलम || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -2
- जो कदी दिल में हक लिया, कछु किया ना प्रेम मजकूर । क्यों कहिए ताले मोमिन, जा को लिख्या बिलन्दी नूर || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -63
- जो कदी पेहेले हार देखिए, तो वाही नजर भरे जोत । या बिन कछू न देखिए, सब में एही उद्दोत || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -25
- जो कदी मेहेर करें मासूक, तो दूजा अंग देवें दिल आन । तो सुख लेवे सब अंग को, जो सब सुख देवे सुभान || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -39
- जो कदी मोमिन तन में हुकम, तो हकम भी रहे ना इत । क्यों ना रहे इत हुकम, हुकम हुकम बिना क्यों फिरत || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -21

- जो कदी रूहें इत हैं नहीं, तो भी एता मता लिए आमर । सो अर्स बका हक बिना, ले हुज्जत रहे क्यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -13
- जो कदी वह आगे चली, जिमी बैठी वह जिमी माहें । पांचों पोहोंचे पांचों में, रूह अपनी असल छोड़े नाहे || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -87
- जो कदी हम आइयां नहीं, तो नाम तो हमारे धरे । और तिन में हुकम हक का, हक तासों ऐसी क्यों करे || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -21
- जो कबहूं प्रगटे होते, तो होत कुफर को नास । जब इमाम जाहेर हुए, तब नूर हुआ उजास || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -46
- जो कबूं कानों ना सुनी, सो सुन जीव गोते खाए । दम ख्वाबी बानी वाहेदत की, सुनते ही उड़ जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -36
- जो कबूं कानो ना सुनी, सो सुनते जीव उरझाए । ताथें डरती मैं कहूं, जानूं जिन कोई गोते खाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -4
- जो कबूं जाहेर ना हुई, सो ए करी तुझे सुध । अब थें आद अनाद लों, जाहेर होसी निज बुध || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -38
- जो कयामत देखावते जाहेर, तो निसान भी करते जाहेर । तो करते ना यों इसारतें, जो दुनी देखावते बाहेर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -22
- जो कलाम अल्लाह में, फरमाई फजर । सो खुली हक इलमें, रूह बातून नजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -41
- जो कहावें महंमद के बंदे, सो भी न चीन्हें हिरदे के अंधे । कहावे जाहेरी मुसलमान, गिनें महंमद को औरों समान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -5
- जो कही महंमद ने, हक जात सूरत । सोई कही रूहअल्ला ने, यामें जरा न तफावत || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -31
- जो कहूं कई कोट बेर, तो केहेना एता ही खसम । जब कछू तुम ही करोगे, तब केहेसी आए हम || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -48
- जो कहूं खूबी रंग की, जोत कहूं लाल उज्जल । ए क्यों आवे सब्द में, जो कदम बका नेहेचल || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -119
- जो कहूं बका जिमीय के, जवेर या वस्तर । सो भी रूह के अंग को, सोभा कहिए क्यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -7
- जो कहूं रोसनी एक पात की, सो भी कही न जाए। कोट चांद जो सूर कहूं, तो एक पातै तले ढंपाए || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -20
- जो कहूं हक दिल माफक, तो इत भी सब्द बंधाए । ताथें अर्स बारीकियां, सो किसी विध कही न जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -127
- जो कहे किस्से हो गए, कहे दाग देऊ तिन नाक । लिख्या सिपारे उनतीस में, राह गुम हुआ नापाक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -112

- जो कहे खूदा को बेचून, तब बरहक न हुआ महंमद । खुदा महंमद वाहेदत में, सो कलाम होत है रद || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -24
- जो कहे झुन्ड दोऊ तरफ के, दोए दोए चबूतरे किनार । चौथे हिस्से चबूतरे, हार फिरवली खूटों चार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -12
- जो कहे हैं नेकोंकार, पाया छिपा भला दीदार । जो फुरमान के बरदार, सोई नेक गिरो सिरदार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -11
- जो कहया आयतों हदीसों, और किताबों बोल । जिन पर मोहोर महंमद की, सो कहूं फुरमाए कौल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -2
- जो कहया इन सेती नूर, सच्चे सूर कहावें जहूर । इनका रंग है तकव्वल, सिर बिलंदी ताज सकल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -52
- जो कहया था रसूल ने, सोई हुआ बखत । आए लिखे नामें वसीयत, जाहेर करी कयामत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -91
- जो कहया महंमदें, लैल मेयराज माहीं । सोई कौल रूहअल्ला ने, कहे रूहों के ताई || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -19
- जो कहया सरा दीन महंमदी, तामें सकसुभे कोई नाहें । सो सब सुध देवे हक बका, सकसुभे न अर्स दिल मांहें || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -29
- जो कहया सौ गज का, सो सब से बड़ा क्यों होए । और भी कहया सबसे बड़ा, तो क्यों एक गज कहया सोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -27
- जो किए होते एते सिजदे, ऊपर उस आदम । जाको हक करें एता बड़ा, सो क्यों रद करे हुकम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -30
- जो किन जीवे संग किया, ताको करूं ना मेलो भंग । सो रंगे भेलूं वासना, वासना सत को अंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -64
- जो किनहूं पाया नहीं, ना कछु सुनिया कान । तिन का जामिन होए के, मैं इत मिलाऊं आन || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -6
- जो किनहूं पाया नहीं, सो जात रोज दरबार । साहेब अर्स-अजीम के, करने उत दीदार || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -6
- जो किने गफलत करी, जागी नहीं दिल दे । सो इत दीन दुनी का, कछू ना लाहा ले || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -57
- जो किने गफलत करी, जागी नहीं दिल दे । सो इत लोक अलोक का, कछू न लाहा ले || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -28
- जो कीजे बरनन हक बका, होए जोस मेहेर हुकम । निसबत हक हादीय सों, और आखिर इस्क इलम || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -50
- जो कोई अंग हलका लगे, और दूजा भारी होए । एक अंग छोड़ दूजा लेवहीं, पर आसिक न हलका कोए || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -30

- जो कोई अरवा असं की, हक कदम तिन जीवन । सो जीव जीवन बिना क्यों रहे, जाके असल अर्स में तन || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -11
- जो कोई अर्स जिमीय में, पसु या जानवर । सो सरूप सारे इस्क के, एक जरा ना इस्क बिगर || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -81
- जो कोई आतम धाम की, इत हुई होए जाग्रत । अंग आया होए इस्क, तो कछू बोए आवे इत || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -39
- जो कोई इत जागिया, सो क्यों चले परवस । सब सावचेत सुरत बांध के, बीच उठिए अपने अर्स || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -108
- जो कोई उलटी करे, साथी साहेब की तरफ । तो क्यों कहिए तिन को, सिरदार जो असरफ || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -14
- जो कोई ऐसा मिले, सो देवे सब सुध । माएने गुझ बताए के, कहे वतन की बिध || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -62
- जो कोई ऐसा मिले, सो देवे सब सुध । सब्हें सब समझावहीं, कहे वतन की विध || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -50
- जो कोई ऐसे मगन होए खेले प्रेम में, तो या बिध हमको है री सेहेल । पर पीवना प्रेम और मगन न होना, ए सुख औरों है मुस्किल || ग्रं - किरन्तन, प्र -9, चौ -5
- जो कोई कबीला पार का, सो सारों ने दई साख । धनी गुन आए आतम नजरों, सो कहे न जाए मुख भाख || ग्रं - किरन्तन, प्र -100, चौ -4
- जो कोई खप करे या निध की, सो नाखे आप निघात । महामत कहे ताए अखण्ड सुख दीजे, टालिए संसारी ताप || ग्रं - किरन्तन, प्र -10, चौ -11
- जो कोई खास उमत सिरदार, खड़े रहो होए हुसियार। वसीयत नामे देवे साख, अग्यारै सदी होसी बेबाक || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -2
- जो कोई गाम के हैं, तिनको इलम दीन का कहे । सवा नव बरस दसमी के बाकी, इतथें मजकूर भई है ताकी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -11, चौ -12
- जो कोई चीज अर्स में, बाग जिमी जानवर । ताको सुख बल इस्क का, पार न आवे क्यों ए कर || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -20
- जो कोई जहां बसत हैं, सो तहां से आवत । समें सिर दीदार को, कोई नाहीं चूकत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -40
- जो कोई जीव होए माया को, सो चलियो राह लोक सत जी । जो कोई होवे निराकार पार को, सो राह हमारी चलत जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -48
- जो कोई दुनियाँ कुंन से, आए न सके मांहें अर्स । जो रूहें फरिस्ते उतरे, सोई अोंं के वारस || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -34
- जो कोई दूर बसत हैं, सो जानों आगे हजूर । बोहोत बल हिकमत, सब अंगों निज नूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -31

- जो कोई निज धाम की, सो निकसो रोग पेहेचान । जो सुरत पीछी खैचहीं, सो जानो दुस्मन छल सैतान || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -35
- जो कोई पिउ के अंग प्यारा, ताको निमख न करे प्रेम न्यारा । प्रेम पिया को भावे सो करे, पिया के दिल की दिल धरे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -44
- जो कोई मारे इन दुस्मन को, करे सब दुनियां को आसान । पोहोंचावे सबों चरन धनी के, तो भी लेना ना तिन गुमान || ग्रं - किरन्तन, प्र -102, चौ -11
- जो कोई रूहें निसबती, ए हांसी का है ठौर । खसम वतन आप भूल के, कहा देखत हो और || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -4
- जो कोई सच्चे यकीन वाले हैं, प्यार सांचा रसूल के कदमों पर || ग्रं - सनंध, प्र -2, चौ -6
- जो कोई सब्द बीच दुनियां, सो उठे हुकम के जोर । ए गुझ सुख हक रसना, कछू मोमिन जाने मरोर || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -45
- जो कोई सब्द संसार में, अर्थ ना लिए किन कब । सो सब खातिर सोहागनी, तूं अर्थ करसी अब || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -37
- जो कोई सब्द संसारमें, ना खुले माएने कब । सो सब खातिर मोमिनों, तूं खोलसी माएने अब || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -41
- जो कोई साथ में सिरदार, लई धाम धनी रोसन । बैंच छोड़ सको सो छोड़ियो, ना तो आपे छूटे हुए दिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -27
- जो कोई सास्त्र संसार में, निरने कियो आचार । त्रिगुन त्रैलोकी पांच तत्व, ए मोह अहंको विस्तार || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -1
- जो कोई हक के हुकम का, ताए जो इलम करे बेसक । लेवे अपनी मेहेर में, तो नेक दीदार कबूं हक || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -25
- जो कोई होवे ब्रह्मसृष्ट का, सो लीजो वचन ए मान । अपने पोहोरे जागियो, समया पोहोंच्या आन || ग्रं - किरन्तन, प्र -86, चौ -17
- जो कोई होसी अंग अर्स की, और जागी होए हक इलम । तो कछू बोए आवे इन सहूर की, जो करे मदत हक हुकम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -38
- जो कोई होसी बेफुरमान, नेहेचे सो दोजखी जान । ताको ठौर ठौर लानत लिखी, सोई जाहेरियों हिरदे में रखी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -21
- जो कोटाण कोट करो प्रकार, तो एटलूं तमे जाणो निरधार । मारी जिभ्याए न वले एह वचन, ए दृढ करो जीव ने मन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -33
- जो कौल किए बीच खिलवत, हक हादी रूहों मिल । सो क्यों तुमें याद न आवहीं, अर्स में तन तुम असल || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -16
- जो कौल फुरमाया अव्वल, सो सब आए के किया । सूर बजाए दिल साफ से, सुकन सिर लिया || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -4

- जो खावंद अर्स अजीम का, ए हक नूरजमाल । आए तले झरोखे झांकत, दीदार को नूरजलाल || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -68
- जो खेल में खबर ना हक की, तो निसबत खबर क्यों होए। हक आसिक निसबत मासूक, वाहेदत में ना दोए || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -37
- जो खेलें झीलें चेहेबच्चे, जल फहारे उछलत । सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -45
- जो खोलत रसूल माएने, तो खेल रेहेत क्यों कर । जो अर्स अजीम करते जाहेर, तो तबहीं होती आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -62
- जो गंज हक के दिल में, सो पूरन इस्क सागर । कोई ए रस और न ले सके, बिना मोमिन कोई न कादर || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -25
- जो गिरो भाई कहे महमद के, ताको इस्कै में गजरान । वाको एही फैल एही बंदगी, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -34
- जो गुजस्या बीच इन सूरत, खबर हुकम हकीकत । ए जो कही आयत साहेब, सो पढ़ी में कहे महंमद || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -10, चौ -11
- जो गुझ अपनी रूह का, सो खोल मासूक आगू । यों कर जनम सुफल, ऐसी कर हक सों तू || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -72
- जो गुन मैं केहेती हों, हक अंग गुन अपार । अर्स रूहें गिनें गुन अंग के, सो गुन आवे न कोई सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -28
- जो गुन हक के दिल में, सो मुख में देखाई देत । सो देखें अरवाहे अर्स की, जो इत हुई होए सावचेत || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -34
- जो गुन हिरदे अन्दर, सो मुख देखे जाने जाए। ऊपर सागरता पूरन, ताथें दिल की सब देखाए || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -36
- जो गौर रंग देखिए, जुबां कहा कहे हक मान । और कछू न देवे देखाई, आगू अर्स सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -55
- जो घड़नाले पुल तले, दस दस दोऊ के । दस नेहेरें चलें दोरी बंध, बड़ी अचरज खूबी ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -21
- जो चल जाए सारी उमर, तो क्यों छोड़िए सुख नैनन । इन सुख से क्यों अघाइए, आसिक अंतस्करन || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -122
- जो चीज पैदा जिमी की, सो दूसरी कही जात । चीज दूसरी वाहेदत में, कैसे कर समात || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -8
- जो चूक्या अबको ता रे ता, तो सिर में लगसी घा रे घा । संसार में नहीं कछू सा रे सा, श्री धामधनी गुन गा रे गा || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -35, चौ -17
- जो चूक्यो आंणे ता रे ता, तो कपालमा लागसे घा रे घा । संसारमा नथी कांई सा रे सा, श्री धाम धणी गुण गा रे गा || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -35, चौ -17

- जो चौदे तबकों में नहीं, वार न काहूं पार । सो अलहा हम आवसी, खातिर सोहागिन नार || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -8
- जो जनम सारे लो कहिए, तो एक नकस को पार न पैए । पचरंगी पाटी मिहीं भरी, कई विध खाजली माहें करी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -174
- जो जरा इन जिमी का, तिन सब में इस्क । ए चेतन इन भांत के, कछू जाने न बिना हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -28
- जो जवेर बंदे रूहन के, देखो तिन को बल । जानत हो इन विध को, देखियो अपनी अकल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -70
- जो जहां घाट बन देखिए, जानों एही बन विसेक । एक से दूजा अधिक, सो कहां लो कहूं विवेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -17
- जो जाग उठ बैठा हुआ, जगाया हक इलम । सो हादी बिना पल एक ना रहे, छोड़ न सके कदम || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -76
- जो जाग बातें करें उमंगसों, सो हंस हंस ताली दे । जिन नींद दई सुख इंद्रियों, सो उठी उंघाती दुख ले || ग्रं - किरन्तन, प्र -77, चौ -12
- जो जाग बैठे धाम में, ताए आवेस को क्या कहिए । तारतम तेज प्रकास पूरन, तिनथें सकल बिध सुख लहिए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -47
- जो जागी इत होएसी, तिनका एही निसान । मूल सरूप ले सुरत में, पट खोलिए कर पेहेचान || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -109
- जो जागो सो देखियो, ए लीला सब्दातीत । मेहेरें इत प्रगट करी, मूल धाम की रीत || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -23
- जो जागो सो देखियो, मेरी तो निसां भई । रूह देखे सो दिल लग न आवहीं, तो क्यों सके जुबां कही || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -45
- जो जाणो जीवने जगवू रे आहीं, तो तां जो जो ते रास प्रकास जी । एम केहेजो जीवने आ कयूं सर्व तूंने, त्यारे जीवने थासे अजवासी जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -42
- जो जाने खेल को साहेबी, सो खेलै के कबूतर । इन की सहूर सुरिया लग, सो हके पोहोंचे क्यों कर || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -72
- जो जानो इत जाग चलें, तो लीजो अर्थ प्रकास जी । जीव को कहियो ए कह्या सब तोको, सिर लिए होसी उजास जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -43
- जो जानो घर पाइए अपना, तो एक राखियो रस वैराग जी । सकल अंगे सुध सेवा कीजो, इन विध बैठो घर जाग जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -42
- जो जाहेर परस्त हैं, चाहें मिटटी पानी पत्थर । इनका एही किबला, जिनकी बाहेर पड़ी नजर || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -29

- जो जाहेर माएने देखिए, तो बीच पड़यो ब्रह्मांड । एता बिछोड़ा कर दिया, हक अर्स और इन पिंड || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -35
- जो जाहेर है तुम पे, माएने इन कुरान । एते दिन न समझे, अब नेक देऊ पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -8
- जो जाहेरी देखें जाहेर, माएने तो छिपे निसान । निसान देखोगे दिन कयामत, सो क्यों होए जाहेरियों पेहेचान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -21
- जो जीव देते सकचों, तो क्यों रहे मेरा धरम । विरहा आगे कहा जीव, ए केहेत लगत मोहे सरम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -6
- जो जीव देते सकुचों, तो क्यों रहे मेरा धरम । विरहा आगे क्या जीव, ए कहत लगत मोहे सरम || ग्रं - सनंध, प्र -10, चौ -6
- जो जीव नींद छोड़े नहीं, पिलाइए वानी । ल्याए पिउ वतन थे, बल माया जानी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -138
- जो जीव पोते करे अजवास, तो मने नव खमाय प्रकास । ते ऊपर कहूं दृष्टांत, जो जो पोतानू वृतांत || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -17
- जो जीव होसी सुपन के, सो क्यों उलंघे संन । वासना सुन्य उलंघ के, जाए पोहोंचे अछर वतन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -21
- जो जीवें करी पेहेचान, सो मनने तबही दई भान । फेर सनकादिकें यों पूछिया, तुम कौन हो यों कर कह्या || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -10
- जो जो खिन इत होत है, लीजो लाभ साथ धनी पेहेचान । ए समया तुमें बहुरि न आवे, केहेती हों नेहेचे बात निदान || ग्रं - किरन्तन, प्र -89, चौ -10
- जो जो मायानो वृतांत, ए अलगी थाय तो उपजे स्वांत । ततखिण कंपमाण ते थयो, अने माया माहे भलीने गयो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -9, चौ -12
- जो जोगवाई है तेरे हाथ, सो या मुखथें कही न जात । एते दिन तें ना करी पेहेचान, तैसी करी ज्यों करे अजान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -15
- जो जोत कहूं अंग नंग की, देऊं निमूना नरम पसम । ए तो अर्स पत्थर या जानवर, सो क्यों पोहोंचे परआतम || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -121
- जो जोत नख अंगुरी, जुबां आगे चल न सकत । फेर फेर वचन एही कहूं, अंबर जोत भरत || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -65
- जो जोत समूह सरूप की, सो नैनों में न समाए । जो रूह नैनों में न समावहीं, सो जुबां कयो क्यों जाए || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -54
- जो जोत होसी जागनी, ए नूर बिना हिसाब । लोक चौदे पसरसी, तब उड़ जासी ए ख्वाब || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -82
- जो जोरा करे इस्क, तन मोमिन देवे उड़ाए । दिल सखती बिना अर्स अजीम की, इत लज्जत लई न जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -44

- जो जोरा होए इस्क का, तो निकसे ना मुख दम । सो गाए के इस्क गमाइया, जोरा कराया इलम || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -2
- जो झगड़ा लगावें आपमें, ताए होसी बड़ो पछताप । ओ जानें कोई ना देखहीं, पर धनी बैठे देखें आप || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -6
- जो झुन्ड ताल की पाल पर, ऊंचा अतंत है सोए । फेर आए लग्या भोम सों, इन जुबां सोभा क्यों होए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -9
- जो ठौर चित्त में चितवें, हम जाए पोहोंचे इत । खिन एक बेर न होवहीं, जानों आगे खड़े हैं तित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -21
- जो तन अर्स में मोमिनों, सो मता अक्सों पोहोंचावत । सो अक्सों से बीच दुनी के, मोमिन मेहेर करत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -97
- जो तमे न होता वेगला, तो कां नव सुणी पुकार । अमने देखी रोवंतां, केम खम्या एवडी वार || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -29
- जो तमे भीडो जीवने जीवसूं, तो भाजे मारा अंगनी दाहे । जीव थाय मारो सकोमल, जेम वसंत मोरे वनराए || ग्रं - खटरुती, प्र -4, चौ -16
- जो तमें साख देवे आतम, तो सत माएने जानो तारतम । इन अंतर देखो उजास, या जीव को बड़ो प्रकास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -17
- जो तुम धनी देखाया मोको, होए लागू मूरख मूढ़ अंध । एक विध है मेरी ऐसी, और न जानूं सनंध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -45
- जो तुम बड़े करे खेल में, ताकी दुनी करे सिफत । सो बड़े गिरो के पाउं की, खाक भी न पावत || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -17
- जो तूं उठी काते बिना, आए इन अवसर । कहा करेगी इन नींद को, जो ले चलसी घर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -27, चौ -5
- जो तूं ग्रहे हक नैन को, तो नजर खुले रूह नैन । तब आसिक और मासूक के, होए नैन नैन से सैन || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -25
- जो तूं चाहे प्रतिष्ठा, धराए वैरागी नाम । साध जाने तोको दुनियां, वह तो साधों करी हराम || ग्रं - किरन्तन, प्र -103, चौ -1
- जो तूं भूले मैं तुझको, देऊंगी तुरत जगाए । मैं भूलों तो तूं मुझे, पल में दीजे बताए || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -44
- जो तूं ले हकीकत हक की, तो मौत का पी सरबत । मुए पीछे हो मुकाबिल, तो कर मजकूर खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -65
- जो तोहे कहे हक हुकम, सो तूं देख महामत । और कहो रूहन को, जो तेरे तन वाहेदत || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -65
- जो थंभ आगू द्वार ने, अति उज्जल हीरों के । दोऊ तरफों जोड़े चार थंभ, ए चारों मानिक रंग लगते || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -116

- जो थी चौदे तबकों अंधेर, भान्यो सैतानी उल्टो फेर । कराया सबों को सिजदा, जाहेर किया जो साहेब है सदा || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -2, चौ -9
- जो दम होवें ख्वाब के, तिन क्यों उपजे विचार । ए सब ढूंढें ख्वाब में, माएने हवा नूर पार || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -7
- जो दम होवें ख्वाब के, सो क्यों करसी पेहेचान । चीन्या नहीं रसूल को, किन हिंदू न मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -13
- जो दिल कहया अर्स हक का, तिन तरफ जले काफर । मार ना सके राह मोमिनों, सब बंधे इनों बिगर || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -34
- जो दिल चाहे तखतरवा, हजार बारे ले बैठत । राज स्यामाजी बीच में, आकास में उड़त || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -71
- जो दिल से ए सहूर करें, तो क्यों रहें मिले बिगर । अर्स बेसकी सुन के, अजूं क्यों रहें नींद पकर || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -12
- जो दिल हक का देखिए, तो पूरा इस्क का पुन्ज । क्यों छोड़े आसिक इनको, हक दिल इस्क गन्ज || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -96
- जो दीदार न होता दुनी को, तो क्यों करते इमाम इमामत । क्यों जानते कयामत को, जो जाहेर न होती निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -14
- जो दुख तुमहीं विछुरे, मोहे लाग्यो जो तासों प्यार । एता सुख तेरे विरह में, तो कौन सुख होसी बिहार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -11
- जो दुख तुमहीं विछुरे, मोहे लाग्यो तासों प्यार । एता सुख तेरे विरह में, तो कौन सुख होसी विहार || ग्रं - सनंध, प्र -9, चौ -11
- जो दुख देवे किनको, सो नाहीं मुसलमान । नबिऐं मुसलमान का, नाम धरया मेहेरबान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -24
- जो दुख मेरी सैयन को, तब सुख कैसा मोहे । हम तुम एक वतन के, अपनी रूह नहीं दोए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -33
- जो दुनियां खाकें रल गई, सबों कर डारी रद । सो फेर कौन उठावहीं, बिना एक महमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -25
- जो दुनी को लग रहे, ताए अर्स बका सुध नाहें । महंमद सिफायत लई मोमिनों, जाकी रूह बका अर्स माहें || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -23
- जो देऊं निमूना अर्स का, तो रूहों लगत न कोई बात । रूहें अंग हादीय को, हादी अंग हक जात || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -17
- जो देख न सक्या जबराईल, तो क्यों कहूं औरन । ए हक खिलवत महंमद रूहें, सो जाने बका बातन || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -16
- जो देखी सारी कुदरत, सो भी इन श्रवन की बरकत । जो विचार करों इन तरफ को, तो देखों सब में एही सिफत || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -42

- जो देखू अर्स जागते, तो इत नाहीं जरा सक । फेर देखू तरफ सुपन की, तो यों ही खड़ा मुतलक || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -19
- जो देखू मुख सलूकी, तो चुभ रहे रूह मांहें । जो सुख मुख अर्स का, केहे ना सके जुबाएँ || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -52
- जो देखे इत आंखां खोल के, तो देखे हक का इस्क अपार । सोई हाँसी देखे आप पर, तो क्यों कहूं औरों सुमार || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -42
- जो देखेगा दिल दे, आयतां जंजीरां मिलाए । माएने मगज मुसाफ के, होसी नूर रोसन ताए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -36
- जो देते हम को इस्क, तो क्यों सकें हम गाए । दिल अर्स पोहोंचे रूह इस्कें, तो इत क्यों रह्यो रूहों जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -56
- जो देवें पल आड़ी मासूक, तो जानों बीच पड्यो ब्रह्मांड । रूह अन्तराए सहे ना सरूप की, ए जो दुलहा अर्स अखंड || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -22
- जो न आवे सो जुदा होइयो, ना तो होसी बड़ी जलन । हम तो चले धाम को, तुम रहियो मांहें करन || ग्रं - किरन्तन, प्र -88, चौ -8
- जो न कछू गाम नाम न ठाम, सो सत सांई निराकार । भरम के पिंड असत जो आपे, सो आप होत आकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -4, चौ -8
- जो न लेवें हकीकत, नजर खोल बातन । तो लों अंधेरी ना मिटे, दिल होए नहीं रोसन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -51
- जो नकल हमारे की नकल, तिनका होत ए हाल । तो पीछे पाउं हम क्यों देवें, हम सिर नूरजमाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -91, चौ -4
- जो नंग पेहेले देखिए, पीछे देखिए आकास । तब याही की जोत बिना, और पाइए नहीं प्रकास || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -87
- जो नजीकी निस दिन, हक हादी हमेस । क्यों कहूं अर्स अरवाहों को, ए जो कायम खुदाई खेस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -46
- जो नहीं विष्णु महाविष्णु को, बुधजी पोहोंचे तित । मेरे हिरदे चरन धनी के, इने ए फल पाया इत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -15
- जो निध हक हैड़े मिने, सो कई अलेखे अनेक । सो सुख लेसी अर्स में, जिन बेवरा लिया इत देख || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -36
- जो निस दिन रहे आग में, ताए आगै के सब तन । वाको जलाए कोई ना सके, उछरे आगै के वतन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -5
- जो निसबती दिल चरन के, तामें जरा न तफावत । ए कदम रूहें ल्याई दुनीमें, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -84
- जो नूर पार अर्स अजीम, ए जो बेवरा कयामत का । मोमिन दुनी की तफावत, ए फना ओ बीच बका || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -1

- जो नेत नेत कया निगमे, सब लगे तिन सब्द । माएने निराकार पार के, क्यों समझे दुनियां हद || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -33
- जो न्यामत हक के दिल में, तिन का क्योंए ना निकसे सुमार । सो सब इस्क हक का, रूहों वास्ते इस्क अपार || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -31
- जो पट आड़े धाम के, मैं ताए देऊं जार बार । कोई बिध करके उड़ाइए, ए जो लाग्यो देह विकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -75, चौ -6
- जो पट खोलों हुकम बिना, लगत खुदी गुन्हे डर । ना तो हाथ कुंजी दई आसिक के, हक बिछोहा सहें क्यों कर || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -13
- जो पटलियां पोहोंची मिने, सात पटली सात नंग । सो सातों नंग इन भांत के, मानों चढ़ता आकासे रंग || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -31
- जो पड़े कसाला कोटक, पर कहे न किन को दुख । किसी सों ना बोलहीं, छिपावे हक के सुख || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -9
- जो पति होय अभागियो, अने जनम दलिद्री अपार । तोहे तेने नव मूकवो, जो होय कुलवंती नार || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -27
- जो पति होय आंधलो, अने वली जड होय अपार । तोहे तेने नव मूकवो, जो होय कुलवंती नार || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -25
- जो पति होय कोढियो, अने कलहो करे अपार । तोहे तेने नव मूकवो, जो होय कुलवंती नार || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -26
- जो पति होय पांगलो, बीजा अवगुण होय अपार । तोहे तेने नव मूकवो, जो होय कुलवंती नार || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -28
- जो परआतम पोहोंचे नहीं, सो क्यों पोहोंचे हक अंग को । खेलौने और खावंद, बड़ो तफावत इन मों || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -122
- जो परआतम पोहोंचे नहीं, सो क्यों पोहोंचे हक अंग को। आसिक और मासूक, कैसी तफावत इनमों || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -78
- जो पाइए इत लज्जत, तो होवे सब विध । कायम सुख इन अर्स के, सब काम होवें सिध || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -21
- जो पांच बिने न करे, सो नाहीं मुसलमान । इन की बिने फैल नासूती, ए लिख्या माहें फुरमान || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -31
- जो पाणीवल अलगां जाय, तो खिनमात्र वरसां सो थाय । धणी विना केम रहेवाय, जो काईक निध ओलखाय || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -59
- जो पातसाही हक की, नूरतजल्ला नूर । इन दोऊ असों बका जिमी, सो सब वाहेदत नूर हजूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -17
- जो पिउ प्यारी आवत, ताको गुझ राखों उजास । बाट देखों और सैयन की, सब मिल होसी विलास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -18

- जो पीठ दीजे ब्रह्मांड को, हुआ निस दिन हक सहूर । तब परदा उड्या फरामोस का, बका अर्स हक हजूर || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -70
- जो पूजें मक्के के पत्थर, इनों एही जान्या सांच कर । और जिनको खुदाए की पेहेचान, सहें दुख न छोड़ें ईमान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -2
- जो पेहेनावा अर्स का, अचरज अदभुत जान । कहूं दुनियाँ में किन बिध, किन कबहूँ न सुनिया कान || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -23
- जो पेहेले आप मुरदे हुए, तो दुनियां करी मुरदार । हक तरफ हुए जीवते, उड़ पोहोंचे नूर के पार || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -95
- जो पेहेले लई हके दिल में, पीछे आई माहें नर । तिन पीछे हादी रूहन में, ए जो हुआ जहूर || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -44
- जो पैदा चौदे तबक में, जो कोई हुए बुजरक । अपने मुख किने ना कह्या, जो हम हुए बेसक || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -18
- जो पैदा जिन ठौर से, तिन सोई देखाइए असल । हुकम चले जित हक का, तित होए ना चल विचल || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -26
- जो पैदा हुआ आग का, सो आग में जलत नाहें । वह वजूद आग इस्क के, रहें हमेसा आग मांहें || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -9
- जो पोहोंच्या इन खिलवतें, दिल हकीकी इन राह । इत दिल मजाजी आए न सके, जित अबलीस दिलों पातसाह || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -30
- जो प्रगट लीला न होवे दोए, तो असल नकल की सुध क्यों होए । ता कारन ए भई नकल, सुध करने संसार सकल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -50
- जो फरिस्ता जबरूत का, सो रेहे ना सके मलकूत । मलकूत बीच फना के, नूर मकान बका जबरूत || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -50
- जो फिरते आए चबूतरे, दोरी बंध बराबर । ऊपर बन सोभे दोरी बंध, कहूं गेहेरा नहीं छेदर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -97
- जो फेर देखें आपन, तो ए हुई हाथ धनी । और किसी का ना चले, कोई करे स्यानप घनी || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -27
- जो बका साहेब का घर, रखो दीदे धनी नजर । ए सिजदा तब पाइए, खूबी घर की देखी चाहिए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -6
- जो बची गिरोह कोहतूर तले, और तोफान किस्ती पर । बेर तीसरी लैलत कदर में, जिन रोज कयामत करी फजर || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -23
- जो बंध बांधे बाप ने, बेटे चले जाए तिन लार । जीव उरझे जाली छल की, ए सब माया मोह अहंकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -30, चौ -6
- जो बन आया चेहेबच्चे, सोभा अति रोसन । छाया करी जल ऊपर, तीनों तरफों तिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -59

- जो बन आया चेहेबच्चे, सोभा अति रोसन । छाया करी जल ऊपर, तीनों तरफों बन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -2
- जो बनजारे खेल के, तिन सिर जम को डंड । कोइक दिन स्वर्ग मिने, पीछे नरक के कुंड || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -31
- जो बनजारे खेल के, तिन सिर जम को दंड । कोई दिन स्वर्ग मिने, पीछे नरक के कुंड || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -33
- जो बरनन करूं पूरे पात को, तो चल जाए काहू उमर । तो पात न होवे बरनन, ए अर्स तखत यों कर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -104
- जो बल किया नरसैऐं, कोई करे ना और । हद के जीव बेहद की, लीला देखी या ठौर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -56
- जो बसत अर्स जिमिएँ, या नजीक या दूर। रात दिन इन के अंग में, बरसत हक का नूर || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -69
- जो बाग तले चबूतरा, सो छाया बीच दरखत । बीच अर्स के उसी जुबां, हक आगू होए सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -58
- जो बात करनी है हकें, सो पेहेले लेवें माहें दिल । पीछे सब में पसरे, जो वाहेदत में असल || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -42
- जो बात निजस नाबूद, हक कलाम न कहे तिन में । जो हक दोस्त गिरो मासूक, कहे हक कलाम तिन से || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -35
- जो बात मैं दिल में लई, सो हके आगू रखी बनाए । इत काम बीच खुदाए के, काहूँ दम ना मारयो जाए || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -77
- जो बिछुड़ के आए मिले, सो पलक ना छोड़ सकत । जो रूहें पाए चरन पिउ के, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -79
- जो बीच जिमी आसमान के, महंमद हिदायत सब पर । भाई महंमद अर्स खिलवत, नसीहत और न इन बिगर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -104
- जो बुजरक बड़े कहावहीं, तिन ज्ध किए मिल मिल । सो फरिस्ते उलटाए के, ले डारे गफलत दिल || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -15
- जो बेटा नसली ईसे का था, सो कलाम अल्ला कहे जुदा रह्या । इन बिध केती कहूं जंजीर, कुरान कई भांतों तफसीर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -5
- जो बैठे हैं होए पहाड़ ज्यों, सो उड़ाए असराफीलें सूर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -59
- जो बोलावत घुघरी, तो नहीं झांझरी बान । जो सबे बोलावत, तो बोलें सब समान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -57
- जो बोलावें झांझरी एक, जानों एही खेल विसेक । जिनको रे बोलावत जैसे, सो तो बोलत भूखन तैसे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -145

- जो बोले साधू सास्त्र, जिनकी जैसी मत । ए मोहोरे उपजे अंधेर से, ताको ए सब सत || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -24
- जो भूले अब को अवसर, सो फेर न आवे ठौर । नेहेचे सांचे न भूलहीं, इत भूलेंगे कोई और || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -15
- जो भेजी गिरो हक ने, ए जो खासल खास उमत । ताए देऊं दोऊ साहेदी, ज्यों आवे असल लज्जत || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -68
- जो मता कह्या दिल मोमिन, सो मोमिन दिल समेत । सो बसत हक के दिल में, सो हक दिल मता रूह लेत || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -18
- जो मनोरथ किए मांहें श्रीधाम, सो पूरन इत होए मन काम । जो बिध सारी कही है तुम, सो सब द्रढ़ करी चाहिए हम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -20
- जो मनोरथ मूल का, हुआ नहीं पूरन । बिन सुध विरह विलास किए, यो रही धाख मन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -124
- जो मसलहत कर चलिए, अर्स रूहें मिल कर । अपनी जुदाई दुनी से, सो क्यों होए इन बिगर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -111
- जो माएने न पाए बातून, तो हुए जुदे जुदे मांहे दीन । फिरके हुए तिहत्तर, एक नाजी में कह्या आकीन || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -12
- जो मांगू हक जान के, अर्स रूह कर हुज्जत । तो तब ही उमेद पोहोंचहीं, जो दिल में यों उपजत || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -16
- जो मांग्या है ख्वाब में, सो हकें पूरा सब किया । सो बोहोत ना मोहे सुध परी, जो ख्वाब के मिने दिया || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -18
- जो मानो सो मानियो, दिल में ले ईमान । मैं तो तेहेकीक कहूंगी, गिरो अपनी जान || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -34
- जो माया मोह थें उपजे, सो क्या जाने दुख के सुख । जो माया को सुख जानहीं, ताथें हुए बेमुख || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -25
- जो मासूक सेज न आइया, देख्या सुन्या न कही बात । सुख अंग न लियो इन सेज को, ताए निरफल गई जो रात || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -37
- जो मांहें निरमल बाहेर दे न देखाई, वाको पारब्रहम सों पेहेचान । महामत कहे संगत कर वाकी, कर वाही सो गोष्ट ग्यान || ग्रं - किरन्तन, प्र -26, चौ -7
- जो मुख सोभा देखिए, तो उपजत रूह आराम । आठों पोहोर आसिक, एही मांगत है ताम || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -54
- जो मुनकर हुकम सों, मोमिन कहिए क्यों ताए। यो फरामोसी हम को, देखो सौ बेर अजमाए || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -45
- जो मुनाफक ताना मारते, कौल करते थे रद । मारे याही सिर्क से, अब नूर झंडे महंमद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -40

- जो मुरदार करी दुनी मोमिनों, सो दिल मजाजी खान पान । नूर बिलंद पोहोंचे पाक होए के, ए दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -22
- जो मूल सरूप हैं अपने, जाको कहिए परआतम । सो परआतम लेय के, विलसिए संग खसम || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -41
- जो मेहेर ठाढ़ी रहे, तो मेहेर मापी जाए। मेहेर पल में बढ़े कोट गुनी, सो क्यों मेहेरें मेहेर मपाए || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -38
- जो मैं तबहीं जागती, तो क्यों जावे मेरा पिउ । क्यों छोड़ों खसम को, संग पिउ के मेरा जिउ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -7
- जो मैं मांगू जाग के, और जागे ही में पाऊं । तो कारज सब सिद्ध होवहीं, जो फैलें नींद उड़ाऊं || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -19
- जो मैं मांगों इस्क को, तो इत भी आप देखाए । ए भी खुदी देखी, जब इलमें दई समझाए || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -2
- जो मैं मारत अव्वल, तो कौन सुख लेता ए। है नाहीं के फरेब में, सुख नूर पार का जे || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -4
- जो मैं मारत आपको, तो आवत कौन कदम । मैं ना होने में कछू ना रहया, किया कराया खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -7
- जो मोटा या बारीक, तिन भी पाया मोल । पर जिन कछुए न कातिया, तिनका कछुए न सूल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -20
- जो मोमिन किए हमें बेसक, सो लेंगे दिल विचार । अर्स दिल एही मोमिनों, तो ल्याए बीच सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -22
- जो मोमिन देखें राह दुनी की, सो रूह नहीं अर्स तन । दुनियां घर जुलमत से, मोमिन अर्स वतन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -22
- जो मोमिन बिने पाँच अर्स में, सो होत बंदगी बातन । जिन बिध होत हजूर, सो करत अर्स दिल मोमिन || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -72
- जो मोमिन होते इन दुनी के, तो करते दुनी की बात । चलते चाल इन दुनी की, जो होते इन की जात || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -58
- जो मोहोल नूर किनार के, नूर लेखे में आवे क्यों कर । ए नूर रूहें देखत, फेर फेर नूर नजर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -73
- जो याद आवे ए कदम की, तो तबहीं जावे उड़ देह । कोई बन्ध पड़्या फरेब का, आवे जरा न याद सनेह || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -10
- जो यार हैं अपने तन के, भला खावें सोवें पलंग । तिनका एही किबला, और न चाहें रंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -31
- जो यारी होती मोमिन दुनी सों, तो दनी को न करते मुरदार । रूहें इनसे जुदी तो हुई, जो हम नाहीं इन के यार || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -59

- जो रखे रसूलें हुकमें, और सबन थें छिपाए । सो मोको कुंजी देय के, कौल पर जाहेर कराए || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -49
- जो रंग कहूं गौर का, तो सागर मेर तरंग । जो कहूं लाल मुख अधुर, हुए सागर लाल सुरंग || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -27
- जो रंग चाहिए जिन मिसलें, सो नंग धरत तित जोत । फूल नकस कटाव कई, ए कछू अचरज पाग उद्दोत || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -40
- जो रंग जित सोभा लेवहीं, जित चाहिए फल फूल । डार पात सब जुगतें, कहा कहे जुबां ए सूल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -28
- जों रब्द किया इत बैठ के, अजूं बैठे हो ठौर इन । रात दिन ना पल घड़ी, सोई बात सोई खिन || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -47
- जो रस कलंगी दुगद्गी, सोई पाग को रस । अंग रंग जोत बराबर, ए नंग रस नूर अर्स || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -51
- जो रस गोकुल प्रगट्या, सो तो सुख अलेखे । बिन जाने सुख बिलसिया, घर कोई न देखे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -106
- जो रूख होवे जल पर, या जोए या ताल । या सुख मोहोलन में, देवें दायम नूरजमाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -76
- जो रूह अर्स अजीम की, सो मिले नहीं कुफरान । ए बेबरा इमाम बिना, करे सो कौन बयान || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -72
- जो रूह अर्स की मोमिन, तिन सब की ए निसबत । दिल मोमिन अर्स इन माएनों, इन दिल में हक सूरत || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -2
- जो रूह अर्स महंमद की, तिनको न सक्या पेहेचान । तो न आया बड़े नूर में, छोड्या न नूर मकान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -17
- जो रूह असलू ईश्वरी, दूजी रूह सब जहान । पर रूह न्यारी सोहागनी, सो आगे कहूंगी पेहेचान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -3
- जो रूह कहावे अर्स की, माहें बका खिलवत । सो जिन खिन छोड़े सरूप को, कहे उमत को महामत || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -88
- जो रूह जगाए देखिए, तो ठौर नहीं बोलन । जो चुप कर रहिए, तो क्या लें आहार मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -60
- जो रूह देखे लांक लीक को, तो रूह तित हीं रहे लाग । अर्स रूहों को इन लीक बिना, सुख दुनियां लागे आग || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -30
- जो रूह पैठे हक दिल में, सो मगन मांहें न्यामत । जो तित पड़ी कदी खोज में, तो छूटे ना लग कयामत || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -19
- जो रूह भूली आप को, मुस्लिम कलमे पेहेचान । तिनको वतन बतावहीं, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -27

- जो रूह हमारी आवे खेल में, तो खेल रहे क्यों कर । याको उड़ावे अर्स कंकरी, झूठ क्यों रहे रूहों नजर || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -52
- जो रूह होवे अर्स अजीम की, नूर बिलंद से उतरी । सोई समझे हक इसारतें, और खबर न काहू परी || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -86
- जो रूह होवे अर्स की, सो सुनियो अर्स तन कान । अर्स अकलें विचारियो, मैं केहेती हों अर्स जुबान || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -50
- जो रूह होवे मुस्लिम, सो संग ना करे कुफरान । आसिक खुद खसम की, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -26
- जो रूह होसी मोमिन, चल्या चाहिए सावचेत । कह्या काफर स्याह मुंह आखिर, मुख मोमिन नूर सुपेत || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -95
- जो रूहें अंग अर्स के, तिन चीज न कोई सोभाए । वाहेदत में बिना वाहेदत, और कछू ना समाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -38
- जो रूहें अर्स अजीम की, कहूं तिनको मेरी बीतक । जो हुई इनायत मुझ पर, जिन बिध पाया हक || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -51
- जो रूहें अर्स अजीम की, खासल खास उमत । ले पोहोंचे नूरतजल्ला, महंमद तीन सूरत || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -51
- जो रूहें अर्स अजीम की, सो मिलियो लेकर प्यार । ए बानी देख फजर की, सबे हूजो खबरदार || ग्रं - सागर, प्र -3, चौ -10
- जो रूहें उतरीं अर्स सें, तामें केते कहे पैगंमर । सिरदार सबों में रूहअल्ला, कहें हदीसें यों कर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -44
- जो रूहें उतरी अर्स से, सो कदम ले अर्स पोहोचत । देसी भिस्त सबन को, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -54
- जो रूहें कही लाहूती, इजने इत उतरत । सो पकड़े कदम इस्क सों, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -55
- जो रूहें होए अर्स की, सो तो तले हकम । जानत त्यों खेलावत, ऊपर बैठ खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -22
- जो लग्या चबूतरे चेहेबच्चा, बजरक बड़ा विसाल । उतरता जल इतथे, नेहेरें चलत इन हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -9
- जो लग्या वजूद को, ताए छूटे न जिमी नासूत । पुलसरात को छोड़ के, क्यों पोहोंचे मलकूत || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -5
- जो लिखी सबे बुजरकियां, सो सब बीच आखिर । सो गिरो नाजी महमद की, लिखे नामे याके फैलों पर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -46
- जो लिखी सिफतें फरमान में, सो सब तुम अर्स रूहन । और सिफत तो होवहीं, जो कोई होवे वाहेदत बिन || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -61

SPJIN

- जो लिख्या अव्वल ताले मिने, सोई दुनी से होए । और बात फुरमाए बिना, क्यों कर करे कोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -24
- जो लिख्या जिन ताले मिने, मांहें हक फरमान । रूहें फरिस्ते और कुंन से, तीनों की नसल कही निदान || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -89
- जो लेवे राह तरीकत, ताके फैल हाल दिल से । सो पाक होए पोहोंचे मलकूत, फरिस्तों के अर्स में || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -15
- जो लों इलम को हुकमें, कहया नहीं समझाए । तो लों सो रूह आप को, क्यों कर सके जगाए || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -53
- जो लों इस्क न आइया, तोलों करो उपाए । योंही इस्क जोस आवसी, पल में देसी पट उड़ाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -10
- जो लों ए सक ना मिटे, तो लों होए ना पेहेचान हक । ए भी कीजे जाहेर, सब मोमिन करूं बेसक || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -60
- जो लों कछुए आपा रखे, तो लों सुख अखंड न चखे । तसवी गोदड़ी करवा, छोड़ो जनेऊ हिरस हवा || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -17
- जो लों जाहेर हक ना हुए, तो लों मारे दिमाक । हक प्रगटे कुफर मिट गया, सब दुनियां हुई पाक || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -21
- जो लों जाहेरी अंग ना मरें, तो लों जागें ना रूह के अंग। ए मजकूर रूह अंग होवहीं, अपने मासूक संग || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -66
- जो लों थे परदे मिने, दुनियां उरझी तब । सो परदा अब खोलिया, दिया मन चाहया सुख सब || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -20
- जो लों न चीन्हें महंमद को, तो लों सुध ना जमाने । तब लग सुध न बका फना, ना सुध नफा नुकसाने || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -50
- जो लों पट न खोल्या बका का, तो लों फना दुनी बीच रात । मारफत दिल महंमद, करे दिन देखाए हक जात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -1
- जो लों माएने मगज न पाइया, तो लों पढ़या न किन कुरान । किन भेज्या किन वास्ते, ना कछू रसूल पेहेचान || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -7
- जो लों मुतलक इलम न आखिरी, तो लों क्या करे खास उमत । पेहेचान करनी मुतलक, जो गैब हक खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -48
- जो लों मुसाफ हकीकत, खोले नहीं वारस । कोई पावे ना बिना लदुन्नी, हक महंमद रूहें अर्स || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -20
- जो लों रखी तुम होस में, तब लग उपजत ए। ए में मांगे तुमारी तुम पे, तुम मंगावत जे || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -3
- जो लों रेहेमान न जाहेर, रहो बंदे बाब पकर । मैं हुकम छोड़ चलसी, फेर आवसी भेले आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -25

- जो लों लिया जाहेरियों, माएना ऊपर का । तब लग फना बीच में, हुए जिद कर तफरका || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -18
- जो लों ले ऊपर का माएना, तो लों छोड़ ना सके फना । हक हादी पाए बिना, दुनी उड़ जात ज्यों सुपना || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -121
- जो लों ले ऊपर के माएने, तो लों कबूं न बूझा जाए। सक छोड़ न होवे साफ दिल, जो पढ़े सौ साल ऊपर जुबांए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -34
- जो लों ले ऊपर के माएने, दनी छूटे न उपली नजर । तो भी न लेवें बातून, जो यों लिख्या जाहेर कर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -46
- जो लों हक सूरत पावें नहीं, तो लो महंमद औरों बराबर । दई कई बुजरकियां, लिखे लाखों पैगंमर || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -70
- जो ल्याए फुरमान रसूल, सो अब खोली हकीकत । अर्स रूहें फरिस्ते, हुई हक की मारफत || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -63
- जो वचन जुबां केहेत है, हिस्सा कोटमा ना पोहोचत । पोहोंचे ना जिमी जरे को, तो क्या करे जात सिफत || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -4
- जो वस्त जिन मिसल की, सोई बनी ठौर तित । सेज्या संदूक सिंघासन, कहूं केती कई जुगत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -19
- जो विचार विचार विचारिए, तो अनहोनी हक करत । इत बल किसी का नहीं, दिल आवे सो देखावत || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -14
- जो विचार विचार विचारिए, तो हक छाती न दिल अंतर । ए पट आड़ा क्यों रहे, जब हुकमें बांधी कमर || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -64
- जो विध लहुँ वचननी, तो संसार अमने सूं । एनुं काई चाले नहीं, जो ओलखू आपोपूं || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -63
- जो विरह अमारो होय तमने, तो केम बेसो करार । तम विना खिण जुग थई, वन भोम थई खांडा धार || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -31
- जो सके ना सांच कर, सो जले दोजख मांहें काफर । भिस्त दोजखी दूरथें देखें, त्यों त्यों जलें आप विसेखें || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -40
- जो सबों को अगम, सो सब रसूल नजर । तो रसूल मुस्लिम को, फिरे सों फुरमाए कर || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -40
- जो सय आई दिन में, तिन सबों खाहिस सौ तरफ । सोई सबों एक तरफ रातकी, ए देखो माएने कर हरफ || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -26
- जो सरीयत पकड़ के, चल्या नहीं सांच ले । सो आखिर दोजख जल के, भिस्त चौथी पावे ए || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -17
- जो सरूप इन जिमी के, सो सब रूह जिनस । मन अस्वारी सबन को, आए पिएं प्रेम रस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -34

- जो सलूकी फनन की, और अंगरी फनों तली । ए बका बरनन कबूं न हुई, गई अब्बल से दुनी चली || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -132
- जो सहूर करो तुम दिल से, खेल में किए बेसक । तो फुरसत न पाओ दम की, सुख इस्क गिनती हक || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -36
- जो सहूर कीजे हक सिफतें, तो ए तो हक बका श्रवन । ए सुख क्यों आवें सुमार में, कछू लिया अर्स दिल मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -43
- जो सागर कहे ताबे कान के, तिन सागरों ताबे कई सागर । जो गुन देखू हक एक अंग, याथें रूह निकसे क्यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -27
- जो सांचे सांचा देवहीं, तो कहा बड़ाई बुजरक । पर खाकी बुत सत होवहीं, तो जानियों महंमद बरहक || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -9
- जो सास्त्रों की प्रनालिका, कहियत हैं विध इन । सो कर देऊ जाहेर, समझो चित चेतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -6
- जो साहेब किन देख्या नहीं, न कछू सुनिया कान । सो साहेब इत आवसी, करसी कायम सब जहान || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -25
- जो साहेब किने न देखिया, ना कछू सुनिया कान । सो साहेब काजी होए के, जाहेर करसी कुरान || ग्रं - किरन्तन, प्र -104, चौ -5
- जो साहेब मैं देखिया, सो मिले होए सुख चैन । तब लग आतम रोवत, सूके लोहू पानी नैन || ग्रं - किरन्तन, प्र -75, चौ -5
- जो साहेब सनकूल होवहीं, तो दुख आवे तिन । इन दुनियां में चाह कर, दुख ना लिया किन || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -30
- जो सिफत आदम की कही न जाए, तो महंमद की क्यों कहूं जुबांए । ए दोऊ सिफत सरूप जो एक, तीसरा साकी इन में देख || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -59
- जो सिफत बड़ी चित्त लीजिए, बड़ी अकल सो जान । फना बका को क्या कहें, ताथे पोहोचत नहीं जुबान || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -12
- जो सुख अर्स अजीम के, सो देखाए दुनीमें इत । भेज्या इलम बका अपना, वह कहां गई निसबत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -13
- जो सुख इस्क सागर को, माहें हेत प्रीत तरंग । ए जो अर्स अरवाहों को, आए खिलवत के रस रंग || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -28
- जो सुख खोलूं अर्स के, माहें मिलावे इत । निकस जाए मेरी उमर, केहे न सकों खिन की सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -28
- जो सुख देसी इमाम, सो या जुबां कहयो न जाए । उमेदां मोमिन की, पूरी ईसा इमामें आए || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -31
- जो सुख परआतम को, सो आतम न पोहोचत || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -7

- जो सुख पावत बड़ी रूह, सब तिनके सुख सनकूल । ज्यों जल मूल में सीचिए, पोहोंचे पात फल फूल || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -12
- जो सुख मन में आवत, सो आवे ना जुबां मों । और जो सुख जुबां से निकसे, सो क्यों पोहोंचे परआतम को || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -9
- जो सुख याथें उपज्यो, सो कयो न किनहूँ जाए । पात्र होए पूरा प्रेम का, तिन का रस ताही में समाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -31
- जो सुख लाल चबूतरे, लेत मोहोला बड़े पसुअन । ए बैठक सुख क्यों कहूं, ए सुख जाने अर्स के तन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -30
- जो सुंदरता अंगुरियों, और सुंदरता नख जोत । ए सोभा न आवे सब्द में, केहे केहे कहूं उद्दोत || ग्रं - सिनगार, प्र -5, चौ -10
- जो सुध आचारजों नहीं, सो जीवों नहीं बरतत । जाग्रत बुध ब्रह्मसृष्ट में, लिख्या जाहेर होसी आखिरत || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -28
- जो सुध नहीं नूर जाग्रत, नूरजमाल का बातन । सो बेसक सुध हके मोहे दई, सो मैं पाई वजूद सुपन || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -61
- जो सुध मलकूत में नहीं, ना सुध नूर वतन । सो गिरो दिल पूरन भई, मैं काढ़ी बकसीस इन || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -26
- जो सुनके दौड़ी नहीं, तो हांसी है तिन पर । जैसा इस्क जिन पे, सो अब होसी जाहिर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -26
- जो सुराही हक की पीवना, सो इस्क हक दिल मिने। सो मोमिन पीवे कोई पैठके, और पिया न जाए किने || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -20
- जो सृष्ट आई जिन ठौर से, घर पोहोंचे आप अपनी । पार दरवाजे खोल के, आखिर पोहोंचे कर करनी || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -24
- जो सैयां हम धाम की, सो जाने सब को तौल । स्याम स्यामाजी साथ को, सब सैयों पे मोल || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -6
- जो सोभा कही हक की, ऐसी हादी की जान । हके मासूक कह्या अपना, सो जाहेर लिख्या माहे फुरमान || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -72
- जो सोभा बाजू-बन्ध में, हिस्सा कोटमा कया न जाए । मैं कहूं इन दिल माफक, वह पेहेनत हैं चित्त चाहे || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -96
- जो सोभा हक सूरत की, सो क्यों पुरानी होए। नई पुरानी तित कहावत, जित कहियत हैं दोए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -198
- जो सोभावत इन चरन को, ए भूखन सब चेतन । अनेक गुन याके जाहेर, और अलेखे बातन || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -67
- जो सोभावत चरन को, सो केते कहूं गुन इन । कोई घायल अरवा जानहीं, जो होसी अर्स के तन || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -43

SPJIN

- जो सोहागिन वतनी, ताकी प्रगट पेहेचान । रोम रोम सब अंगों, जुदी जुदी दे कुरबान || ग्रं - किरन्तन, प्र -91, चौ -9
- जो हक अंग दिल में नहीं, सो अंग रूह का फरामोस । जब हक अंग आया दिल में, सो रूह अंग आया माहे होस || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -32
- जो हक अंग देख्या होए, हक जमाल न छोड़े तिन । जाके अर्स की एक रंचक, त्रैलोकी उड़ावे त्रैगुन । || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -21
- जो हक अर्स दिल मोमिन, मिल के करो सहूर । कही जिमी तले की दुनियां, रूहें नूर पार तजल्ला नूर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -91
- जो हक करें मेहेरबानगी, तो इन बिध होए हुकम । एता बल रूह तब करे, जब उठाया चाहें खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -74
- जो हक का इस्क विचारिए, तो बड़ा दिल देत लज्जत । ए बुजरक मेहेरबानगी, हमें ऐसी दई न्यामत || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -70
- जो हक काहूं न पाइया, ना किन सुनिया कान । पाया न वा के अर्स को, जो कौन ठौर मकान || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -14
- जो हक के दिल में आइया, सो सब देख्या नीके कर। जो देखाया इलमें, या देखाया नजर || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -38
- जो हक के सब फरिस्ते, किया सिजदा आदम पर । तो अब लों तिन हुकम से, सरा होत नहीं मुनकर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -33
- जो हक को देखे ना उड़े, सो दूजा कहिए क्यों कर । ए बातें अर्स वाहेदत की, पाइए हक इलमें खबर || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -39
- जो हक तोहे अन्तर खोलावहीं, तो आवे हक लज्जत । और बड़े सुख कई अर्स के, पर ए निपट बड़ी न्यामत || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -24
- जो हक तोहे देवें हिंमत, तो रूह तूं पी सराब । ए कायम मस्ती अर्स की, जो साकी पिलावे आब || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -29
- जो हक देखे टिकया रहे, सोई अर्स के तन । सोई करें मूल मजकूर, सोई करे बरनन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -11
- जो हक देवें इस्क, तो इस्क देवे सब उड़ाए । सुध न लेवे वार पार की, देवे वाहेदत बीच डुबाए || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -24
- जो हक न देवे हिंमत, तो पूरा होए न हाँसी सुख । जो रूह भाग जाए आखिर लग, हांसी होए न बिना सनमुख || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -31
- जो हक निलाट आवे दिल में, और दिल में आवे श्रवन । दोऊ अंग खड़े होएं रूह के, जो होवें रूह मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -26
- जो हक पैदा होए नासूत में, तो होय सबे हैयात । इलम अपना देय के, करें जाहेर बका बिसात || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -18

- जो हक बका सूरत में, मुस्लिम ल्यावे सक । तो क्यों खुदा एक हुआ, क्यों हुआ महंमद बरहक || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -22
- जो हक मुख आपे कही, करता हों इसारत । सो हक की हादी बिना, और न कोई समझत || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -88
- जो हक सूरत देखिए इनमें, तो ख्वाब देवें सब भान । ले माएने देखो बातून, ज्यों होवे सब पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -10
- जो हकमें किए नबिएं जाहेर, दूजे रखे रसूल पर अखत्यार । और गुझ रखे जो तीसरे, सो कहे रूहअल्ला कर प्यार || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -14
- जो हकें केहेलाया सो कहया, इत मैं बीच कहं नाहें । फैल हाल सब हक के, हकें सक मेटी दिल माहें || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -7
- जो हमें इलम मोहे दिया, सो देसी इमाम भाइयों को । बलाए दफे दुनी रिजक, सो भी हक करे वास्ते इनों || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -37
- जो हमेसां दरगाह के, ए बीच भिस्त खुदाए के। और जाहेद जो चाहें भिस्त, आसिकों दीदार की कस्त || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -10
- जो हरफ जुबां चढ़े नहीं, सो क्यों चढ़े कुरान । और जुबां ले आवसी, इमाम एही पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -2
- जो हवे आपण ओलखिए आवार, तो जीव घणूं पामे करार । साथ ऊपर दया अति करी, वली जोगवाई आवी छे फरी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -11, चौ -3
- जो हुए पैगंमर रात के, सरिया न उलंघी किन । जो जेते लग पोहोंचिया, सोई पैगाम दिए तिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -9
- जो हुए होवें मुरदे, तिनको देत उठाए। इन विध इलम लदुन्नी, पर तुमें न सके जगाए || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -13
- जो हुकम सिर लेय के, उठी ना अंग मरोर । पिया सैयां सब देखहीं, तुम इस्क का जोर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -25
- जो हुकम हुआ जाहेर का, सो जाहेर किए मैं तब । बाकी रखे जो हुकमें, सो हुकमें जाहेर करों अब || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -76
- जो हूं एम करूं रे बेहेनी, मारा जीवनी दाझ तो जाय रे । कोई विध करी छेतरूं वालो, तो मूने केहेजो वाह वाह रे || ग्रं - रास, प्र -37, चौ -5
- जो हो गए एते पैगंमर, तो क्यों रही अब लो रात । तो तबहीं बका दिन कर, उड़ाए देते जुलमात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -116
- जो होए आतम धाम की, सो अपने समें पर । अपना सांच देखावहीं, भूले नहीं अवसर || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -14
- जो होए आपे विरहनी, सो क्यों कहे विरहा सुध । सुन विरहा जीव ना रहे, तो विरहिन कहां से बुध || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -19

- जो होए आवे मोमिन रूह से, सो कबूं ना और सों होए । इत चली जो रूह जगाए के, सो सोभा लेवे ठौर दोए || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -44
- जो होए इस्क आकीन साबित, तोभी झूठी ए सरीकत । सिरे न पोहोंच्या इनका काम, ऐसा लिख्या मांहें अल्ला कलाम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -22
- जो होए मुझपे इस्क, तो देखों न खुदी हुकम । एक नाहीं मोपे इस्क, तो आड़ा देखों हुकम इलम || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -14
- जो होए सैयां सोहागनी, सो निरखो अपने निसान । वचन कहे मैं जाहेर, सोहागनियों पेहेचान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -18
- जो होवे अरवा अर्स की, सो इन कदम तले बसत । सराब चढ़े दिल आवत, सो रूह निस दिन रहे अलमस्त || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -117
- जो होवें अरवा असं की, सो लीजो कर सहूर । अंग रंग नंग सब जंग में, होए गयो एक जहूर || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -35
- जो होवे अर्स अजीम की, सो निरखो अपने निसान । ए लछन मोमिन वतनी, सो देखो दिल में आन || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -37
- जो होवे अर्स अजीम की, सो ले हकीकत मारफत । इनको इस्क मुतलक, जिन रूह हक निसबत || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -8
- जो होवे आपे विरहनी, सो क्यों कहे विरहा सुध । सुन विरहा जीव ना रहे, तो विरहिन कहां थे बुध || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -16
- जो होवे नूर मकान का, कायम जिनों वतन । सो क्यों पकड़े वजूद को, पोहोंचे न हकीकत बिन || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -7
- जो होसी रूहें अर्स की, तिन आवे ईमान अब्बल । आखिर तो सब ल्यावसी, दोजख की आग जल || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -64
- जोइए कोंण मुकावे जोरावर, ते कोय देखाडो नार । मारे मंदिर थकी कोण मुकावसे, वस मारे आव्या आधार || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -28
- जोइए मुखारविंद गाल बने गमां, तेज कह्यो न जाय । अधखिण जो अलगा रहिए, त्यारे चितडां उपापला थाय || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -29
- जोए अर्स के किस तरफ है, किस तरफ हौज अर्स के । नूर अर्स की गलियां, अरस अरवा जानें ए || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -40
- जोए इतथें मरोर सीधी चली, अर्स आगू सोभा सरत । रूहें क्यों छोड़ें इन कदम को, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -80
- जोए ऊपर बन झरोखे, सो निपट सोभा है ए। फल फूल पात जल ऊपर, ए बने तोरन नंग जे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -72
- जोए किनारे जरी योहरी, पूर जवेर दरखत । ए नाम निसान सबे लिखे, पर कोई पावे ना हकीकत || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -26

- जोए चबूतरों कुंड पर, ऊपर बन झूमत । ए कदम सुख मोमिन लेवहीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -76
- जोए जमुना का जल जो, पहाड़ से निकसत । सो पोहोंच्या तले चबूतरे, ए बैठक अति सोभित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -3
- जोए जमुना का जल, पहाड़ से उतरत । तले आया कुंडमें, पहाड़ से निकसत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -6
- जोए जमुना के मूल में, उतर जल चबूतर । और कुण्ड एक इत बन्यो, जहां से जल चल्या उतर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -5
- जोए जितथें हुई जाहेर, कहां सुख इन चबूतर । आगूं कुंड जल चलकत, बड़ा बन सोभा ऊपर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -16
- जोए निकसी किन ठौर से, क्यों कर आगे चली । अर्स आगे आई कितनी, जाए कर कहां मिली || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -38
- जोए बट थे कुंज बन चल्या, बोहोत रेती बीच ताए । ताल हिंडोलों बीच होए, आगू निकस्या जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -12
- जोग माया जो लीला रास, रात अखंड सब चेतन विलास । ए लीला सुकें आवेस में कही, राजा परीछितें सही ना गई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -10
- जोगमाया कर रास जो खेले, कई सुख साथ लिए पिउ भेले । करी अंतराए देने को याद, हम दुख मांग्या पिउपे आद || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -11
- जोगमाया की जुगत जुई, एक रस एक रंग। एक संगे सदा रेहेना, अंगना एकै अंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -11
- जोगमाया की जुगत, और न जाने कोए। और कोई तो जाने, जो कोई दूसरा होए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -16
- जोगमाया की नाव कर, तित सखियां लई बुलाए । सो सोभा है अति बड़ी, जित सुख लीला खेलाए || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -12
- जोगमाया तो माया कही, पर नेक न माया इत । ख्वाबी दम सत होवहीं, सो अछर की बरकत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -11
- जोगमाया नो देह धरीने, श्री स्यामाजी थया तैयार । ततखिण तिहां तेणे ठामे, मारे साथे कीधो सिणगार || ग्रं - रास, प्र -7, चौ -1
- जोगमाया में खेल जो खेले, संग जोस धनी के भेले । जोगमाया में बाढ्यो आवेस, सुध नहीं दुख सुख लवलेस || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -34
- जोगमायाए जागृत थाय, जल भोम वाय अगिनजी । पसु पंखी थावर जंगम, तत्व पांचे चेतनजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -13
- जोगमायाए जाग्रत होए, जल जिमी वाए अगिन । थिर चर सब पसु पंखी, तत्व सबे चेतन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -17

- जोगमायानी कयांहें न दीसे, अम विना ओलखाणजी । वासना पांचे अछरनी, भले कहावे आप सुजाणजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -4
- जोगमायानी जुगत एहेवी, एक रस एक रंगजी । एक संगे रहे, सदा, अंगना एकै अंगजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -7
- जोगमायामां आपण रास ज रम्या, तेता साथ सकलने घj घणूं गम्या । वचन संभारवाने अदृष्ट थया, त्यारे अमे विरह कीधां जुजवा || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -11
- जोगारंभ कर देह रखी, नवनाथ जाए बसे बन । सिध चौरासी और कई जोगी, सो भी कारन या दिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -17
- जोगारंभी या कसबी, पोहोंचे ला मकान । मोह तत्व क्यों ए न छूटहीं, कया परदा ऊपर आसमान || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -4
- जोड़ बनी दोऊ अधुर की, निपट लाल सोभित । तिन ऊपर दो पांखड़ी, हरी नेक टेढ़ी भई इत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -140
- जोत अति जवेरन की, बांहों पर बाज बन्ध । जात चली जोत चीर के, कई विध ऐसी सनन्ध || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -47
- जोत उद्योत कियो त्रिलोकी, उड़यो मोह तत्व अंधेर । बरस्यो नूर वतन को, जिन भान्यो उलटो फेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -57, चौ -9
- जोत उपली कही जुबान सों, पर रेहेस चरित्र सुख चैन । सुख परआतम तब पाइए, जब खुलें अन्तर के नैन || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -28
- जोत ए दरखत पात की, हुओ अंबर जिमी रोसन । धनी ए सुख कब देओगे हमें, अपने इन बागन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -37
- जोत करूं धनी की दया, ए अंदर आए के कह्या । उड़ाए दियो सबको अंधेर, काढ्यो सबको उलटो फेर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -25
- जोत करे दिल चाहती, जैसी नरमाई अंग चाहे । सोभा धरे दिल चाहती, जुबां खुसबोए कही न जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -16
- जोत जरे इन जिमी की, मावत नहीं आसमान । तिन जिमी के बन को, जुबां कहा करसी बयान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -3
- जोत जाग्रत बुध जोर हुई, सत बानी कियो है विस्तार । कालिंगा कुली मारिया, सत सुख बरत्यो संसार || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -14
- जोत जिमी पोहोंचे आसमान लो, आसमान पोहोंचे जोत बन । सो छाए रही ब्रह्मांड को, सब ठौरों उठत किरन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -5
- जोत तेज धात रंग रस, रूह बढ़ता देखे दायम । अंग अर्स इसी खेस, यों देखे सूरत कायम || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -36
- जोत तेज प्रकास जो नूर, सब ठौरों सीतल सत सूर । जोत रोसन भत्यो आसमान, किरना सके न कोई काहूं भान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -16

- जोत देख चरन नख की, जाए लगी आसमान । चीर चली सब जोत को, कोई ना इन के मान || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -212
- जोत धरत आकास रोसनी, क्यों कर कहूं नख जोत । मानों सूरज अर्स के, कोटक हुए उद्दोत || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -134
- जोत धरत कई जुगतें, निहायत मान भरे । लज्या लिए पल पापण, आनंद सुख अगरे || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -8
- जोत धरत चित्त चाहती, चित्त चाही नरम लगत । कई रंग करें चित्त चाहती, खुसबोए करत अतंत || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -30
- जोत नखन की क्यों कहूं, अवकास रहयो भराए। तामें जोत नखन की, नेहेरें चलियां जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -7
- जोत ने प्रगट थई, नव झाली रहे विना ठाम । ब्रह्मांड अखंडोंमां निसरी, जई पोहोंती घर श्री धाम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -17
- जोत बुध बंने अम कने, अमे प्रगट कीधां प्रकास । पूरूं आस अछरनी, मारूं सुख देखाडी साख्यात || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -119
- जोत में एक रोसनी, सोभा सुन्दर गुन अनेक । सोभा रंग रोसन नरमाई, रस मीठे कई विवेक || ग्रं - सिनगार, प्र -5, चौ -12
- जोत लगी जाए आसमान, थंभ बंध्यो चौखुन । आकास जिमी बीच जोत को, इनको नहीं निमून || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -24
- जोत सरूपी जानवर, बल बुध को नाहीं सुमार । नजरों अमी रस पीवत, अर्स खावंद सींचनहार || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -71
- जोत सर्वे भेली थई, कांई आपने घर बार । मारा ते घरनी वातडी, केम कहूं मारा आधार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -122
- जोतां जोत वृंदावन, अंगे रंग उतपन । सामग्री सखी जीवन, नवलो सर्वे साज री || ग्रं - रास, प्र -12, चौ -3
- जोतिष कहे विजिया अभिनंद, सब कलिजग को करसी निकंद । अंजील कहे ईसा बुजरक, सो आए के करसी हक । || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -28
- जोध अमे बने छऊं बलिया, हवे जोजो अमारी भांत । धणी तमे देखाड्या अमने, अमे ते ग्रहूं छू हरकांत || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -50
- जोधा दोऊ जोरावर मेरे, तुम तरफ हो जिनकी । अनेक उपाय करे जो कोई, पर जीत होए तिनकी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -57
- जोयं नहीं तमें जागीने, अमृत ढोलीने विख पीछ । असत मंडल ने सतकरी समझया, अखंड ने वांसो दीधूं || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -15
- जोया ते साते सागर, अने जोया ते साते लोक । पाताल साते जोइया, जाग्या पछी सहु फोक || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -35

SRJN

- जोर असां से को करिए, जडे आई गाल सरे । सोई सचो अमीन, जो सची गाल करे || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -66
- जोर कर जुदागी कर दई, और जोर कर जगावत तुम । केहेनी सुननी मेरे कछू ना रही, तो क्यों बोलूं मैं खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -39
- जोर कर तुम जागो जीव जी, नहीं सूते की एह जिमी जी । ज्यों ज्यों सोइए त्यो त्यों बाढ़े विख विस्तार, पीछे दुख पावे जीव आदमी जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -11
- जोर करी तमे जगवो रे जीवने, नहीं सतानी आ भोम जी । जेमने सुइए तेम वाधे विस्तार, पछे नहीं उठाय केमे जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -10
- जोर करे जोत जवेर, ऊपर हक तखत । ए नूर जिमी आसमान में, रोसन बढ्यो अतंत || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -114
- जोर करो तमे जोध जुजवा, राग आवो मांहें आधार । वेर विधे विधे कठणाईतूं, जई बेसो मांहें संसार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -70
- जोर किया हम बोहोतेरा, रस रह्या न ढ़पाना । ए अब जाहेर होएसी, बाहेर प्रगटाना || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -91
- जोर कीधो घणुए अमे, रस केमे न रखाणो । प्रगट थासे पाधरो, रस बाहेर नंखाणो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -76
- जोर जालिम अजराईल, बैठा छल में हुकम ले । फिरत दोहाई. इन की, तले काफर खेलत जे || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -19
- जोर हुई नींद साथ को, यों सुपन बाढ्या । खेल मिने थे बल कर, न जाए काठ्या || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -156
- जोरे छेडो लीधो तत्काल, नसो चढावी निलाट । जसोदाजी गया उजाई, आगल दूध गयूं उभराई || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -11
- जोलों अपनी राह पावें नहीं, तोलों पोहोंचे ना अपने मकान । हादी हद्दों हिदायत करके, आखिर पोहोंचावें निदान || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -19
- जोलों आतम ना देवे साख, तोलों प्रबोध भले दीजे दस लाख । पर सो क्योंए ना लगे एक वचन, जोलों ना समझे आतम बुध मन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -35, चौ -3
- जोलों जाहिर ना हुते, तब इत उपज्या क्रोध । जब प्रगटे तब मिट गया, सब दुनियां को ब्रोध || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -3
- जोलों जीव जागे नहीं, तोलों कहा करें हम । जोर हमारा तबहीं चले, जब जाग बैठो तुम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -87
- जोलों जीव विचार विकार न काटे, ज्यों छीट ना लगे घड़े चिकटे । इंद्रावती कहे सुनो साथ, जिन छोड़ो अपनो प्राणनाथ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -69

- जोलों जुदे होए नहीं, हक बका अर्स सों । तोलो नजरों न आवहीं, अर्स सुख खिलवत मों || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -38
- जोलों ताला खुले नहीं, द्वार अथरवन कतेब । पाई ना तरफ हक बका, ना कछू खेल फरेब || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -66
- जोलों तिमर ना उड़े, तोलों सृष्ट न होवे एक । तिमर तीनों लोक का, उड़ाए दिया उठ देख || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -8
- जोलों न काढू विकार, तोलों क्यों करके जगाए । जागे बिना इन रास के, किन निज सुख लिए न जाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -22
- जोलों पिउ परदे मिने, विश्व विगूती तब । सो परदा अब खोलिया, एक रस होसी अब || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -2
- जोलों पिउ सुध ना हुती, सोहागिन अंग में पिउ । जब पिया जाहेर हुए, तब ले खड़ी अंग जिउ || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -17
- जोलों फरमान खुल्या नहीं, तोलों रात है सब में । एही फुरमान करसी फजर, जब लिया हाथ हादी ने || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -67
- जोलों फुरमान ना जाहेर, तोलों मुख से ना निकसे दम । अब इमाम के निज नूर से, देखाऊं खेल मुस्लिम || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -6
- जोलों सुध ना मासूक की, मोमिन अंग में पिउ । जब मासूक जाहेर हुए, आसिक ले खड़ी अंग जिउ || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -35
- जोवंता जुजवा वनमां, स्यामाजी लाध्या एक ठाम । स्यामाजी स्याम किहां छे, मारूं अंग पीडे अति काम || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -5
- जोस इस्क और बंदगी, चलना हक के दिल । ए बकसीस सब तुम से, खुसबोए वतन असल || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -35
- जोस इस्क सुख अर्स के, ए लगें रूह मोमिन । जब ए सबे मदत हुए, तब क्यों रहे पट रूहन || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -76
- जोस गिरो मोमिनों पर, हकें भेज्या जबराईल । रूहें साफ रहें आठो जाम, और अबलीस दुनी दिल || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -85
- जोस हमेसा हक को, रेहेत सदा पूरन । पर आसिक देखे इन विध, रंग चढ़ता रस जोबन || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -34
- जोस हाल और इस्क, ए आवे न फैल हाल बिन । सो फैल हाल हक के, बिना बकसीस न पाया किन || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -12
- ज्यादा चौदे तबक से, दज्जाल गधा इन हद । काना अस्वार तिन पर, सो भी वाही कद || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -40
- ज्यादा हुआ फुरमाए से, जो कौल किया अव्वल । सो जोड़ देखो आयतों हदीसों, ले दिल अर्स अकल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -116

- ज्यारे अंध अगनान उडी गयु, त्यारे प्रगट थया पारब्रहम । रंग लाग्यो ए रस तनो, ते छूटे वलतो केम || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -54
- ज्यारे अर्थ लेसो वाणी तणो, त्यारे अर्थमा छे अजवास । अजवाले जीव जागसे, त्यारे थासे टली चोर दास || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -46
- ज्यारे जीव पोते जाग्रत न थाय, त्यारे करूं केम अमे । जोर अमारूं त्यारे चाले, ज्यारे सामा जागी बेसो तमे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -87
- ज्यारे जीव हुतो निद्रा मांहें, तेणो ते जुओ विचार । पण ज्यारे निद्रा उडाडी धणिए, त्यारे केम रहे विना आधार || ग्रं - खटरुती, प्र -7, चौ -4
- ज्यारे जीवनी मोरछा भागी, त्यारे उडी ग! अगनान । करम नी कामस केम रहे, ज्यारे भलयो श्री भगवान || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -81
- ज्यारे तमे जाग्या जोरावर, त्यारे अमे जाऊं छू संसार । भले मल्या धणीजी तमने, हवे करो अजवालूं अपार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -95
- ज्यारे धणी धणवट करे, त्यारे बल वेरी ना हरे । वली गया काम सराडे चढ़े, मन चितव्या कारज सरे || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -17
- ज्यारे धणी पोते घर संभारे, त्यारे चोरी करे केम चोर । हवे अवला माहेथी सवलूं करूं, जई बेसू संसार मांहें जोर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -32
- ज्यारे पसरी जोगमाया, में इछा कीधी तमतणी । हूं वेण लऊँ तिहां लगे, मुझपर थई घणी || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -37
- ज्यारे वचने जगवसो वासना, त्यारे आप ओलखसो प्रकास । त्यारे पारब्रहम नों पार थकी, तमें आंहीं देखसो अजवास || ग्रं - किरन्तन, प्र -70, चौ -12
- ज्यारे सुख मायाना माणिए, घर ना आवे द्रष्ट । ज्यारे घरतणा सुख जोइए, नहीं सुपननी सृष्ट || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -101
- ज्यों अंग त्यों बस्तर भूखन, करें कोट रंग चित्त चाहे । अर्स जूना न कबूं कोई रंग, देखत पल में नित नए || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -36
- ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, अखंड सरूप के एह । इत नहीं भांत सुपन ज्यों, दुनी पेहेन उतारत जेह || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -40
- ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, तिन सब अंगों सुख दायक । सोभा भी तैसी धरे, जैसा अंग तैसा तिन लायक || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -42
- ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, होत हमेसा बने । दिल जैसा चाहे खिन में, तैसा आगूहीं पेहेने || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -27
- ज्यों अव्वल त्योंहीं आखिर, सोभा सारी महंमद पर । ए तुम देखो नीके कर, सारे कुरान में एही खबर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -9
- ज्यों आगू त्यों पीछल, याके सनमुख माहें दिवाल । बीसों दोए चबूतरे, इन दिवाल रंग लाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -7

- ज्यों आया नूर तारतम, श्री देवचंदजी के पास । सो विध सब इनमें लिखी, ज्यों कर हुआ प्रकास || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -25
- ज्यों ऊपर हिंडोले अर्स के, भोम सातमी आठमी जे । जब इन बन हिंडोलों बैठिए, देखिए बड़ी खुसाली ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -41
- ज्यों ए विरहा उपज्या, ए नहीं हमारा धरम । विरहिन कबहूं ना करे, यों विरहा अनूकरम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -22
- ज्यों ए विरहा उपज्या, ए नहीं हमारो धरम । विरहिन कबूं ना करे, यों विरहा अनूकरम || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -17
- ज्यों एक फूल चौसठ पांखड़ी, चार द्वार बने गिरदवाए । गुरज साठ बने तिन पर, ए खूबी कही न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -3
- ज्यों कबूतर खेल के, हुए अलेखे इत । आदमी एक नासूत का, दोऊ देखो तफावत || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -13
- ज्यों घायल सांप को चींटियां, लगियां बिना हिसाब । त्यों अगुओं को दुनियां, मिल कर देसी ताब || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -9
- ज्यों चढ़ती अवस्था, बाल किसोर बुढ़ापन । यों बुध जाग्रत नूर की, भई अधिक जोत रोसन || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -73
- ज्यों जड़ाव एक चंद्रवा, जवेर जड़े कई विध । बन बेली कटाव कई, सोभित सोने की सनंध || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -24
- ज्यों जड़ाव एक मोहोल है, जवेर जड़े कई संग । कुंदन माहें सोभित, नए नए अनेक रंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -15
- ज्यों जाने बेसुध हुए, जैसे अमल चढ्या जोर । सो तुम क्यों ए ना सुनोगे, हादी करे बोहोतक सोर || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -10
- ज्यों जानो त्यों मेहेबूब करो, ए सुख दिया न जाए दूजे किन । कहूं तो जो दूजा कोई होवहीं, मेरे जीव के एही जीवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -16
- ज्यों जानो त्यों रखो, धनी तुमारी मैं । ए केहेने को भी ना कछू, कहा कहूं तुमसे || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -1
- ज्यों जाहेर खड़े देखिए, त्यों देखिए इन इलम । यों लाड़ लज्जत सुख देवहीं, बैठाए अपने तले कदम || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -17
- ज्यों ज्यों अम्बर गाजत, मोर कोयल करें टहुंकार । भमरा तिमरा गान गूंजत, स्वर मीठे पंखी मलार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -71
- ज्यों ज्यों उठे सत सुख के तरंग, त्यों त्यों उड़े सुपन को संग । जब याद आवे सुख अपनों, तब छूटेगो झूठो सुपनो || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -15
- ज्यों ज्यों एह विचारिए, त्यों तेहेकीक होता जाए । इत जरा नूर-जमाल बिना, रूह में कछू न समाए || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -36

- ज्यों ज्यों गरीबी लीजे साथ में, त्यों त्यों धनी को पाइए मान । इत दोए दिन का लाभ जो लेना, एही वचन जानो परवान || ग्रं - किरन्तन, प्र -89, चौ -12
- ज्यों ज्यों जल लेहेरां लेवहीं, त्यों त्यों तले ब्रह्मांड डोलत । कई विध तेज किरनें उठें, नूर आसमान लेहेरां लेवत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -29
- ज्यों ज्यों तुम कृपा करी, मैं त्यों त्यों किए अवगुन । तिन पर फेर तुम गुन किए, मैं फेर फेर किए विघन || ग्रं - किरन्तन, प्र -100, चौ -8
- ज्यों ज्यों दुलहा देखहीं, त्यों त्यों उपजे दुख । ऐसे मौले मेहेबूबसों, हाए हाए हुए नहीं सनमुख || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -8
- ज्यों ज्यों नैनों देखिए, त्यों त्यों लगत सुंदर। न्यारी नजर न होवहीं, चुभ रह्या रूह अंदर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -21
- ज्यों ज्यों बैठियां लग लग, त्यों त्यों अरस-परस सुख देत । बीच कछू ना रेहे सके, यों खैच खेंच ढिग लेत || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -22
- ज्यों ज्यों माएने विचारहीं, त्यों बेधे सकल संधान । रोम रोम ताए बेधहीं, सब्द रसूल के बान || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -30
- ज्यों ज्यों मोहोल ऊंचे चढ़े, तिन चौगिरदः थंभ हार । चौड़ा ऊंचा चढ़ता, चढ़ता चढ़या विस्तार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -28
- ज्यों ज्यों साथ में होत है प्रीत, त्यों त्यों मोही को होत है सुख । ज्यों ज्यों ब्रोध करत हैं साथ में, अंत वाही को है जो दुख || ग्रं - किरन्तन, प्र -89, चौ -14
- ज्यों ज्यों हाथ की अंगुरी, होत है चलवन । त्यों त्यों नख जोत आकास में, नेहेरें चीर चली रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -8
- ज्यों ज्यों होवे अर्स नजीक, खेल त्यों त्यों होवे दूर । यों करते छूट्या खेल नजरों, तो रूहें कदमै तले हजूर || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -13
- ज्यों ज्यों होसी जागनी, त्यों त्यों उड़सी एह । देखोगे सब नजरों, पिया हाँसी करी है जेह || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -38
- ज्यों तुम पेहेले भरे पांउ, योंही चलो जिन भूलो दाउ । भी देखो ए पेहेले वचन, प्रेम सेवा यों राखो मन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -20
- ज्यों दरिया तेज जोत का, त्यों सब दिल दरिया एक । एक रस एक रोसनी, जुबां क्यों कर कहे विवेक || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -27
- ज्यों नींद में देखिए सुपन, यों उपजे हम बृज वधू जन । उपजत ही मन आसा घनी, हम कब मिलसी अपने धनी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -20
- ज्यों नींद में देखिए सुपन, यों बज को सुख लियो सैयन । सुपन जोगमाया को जोए, आधी नींद में देख्या सोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -109
- ज्यों नींद में सुपन देखिए, कई लाखों वजूद देखाए। आंखां खोले उड़े फरामोसी, वह तबहीं मिट जाए || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -64

- ज्यों फरेब देवें दुनी को, त्यों हक को देने चाहें । पर हक की आग जो दोजख, फैल माफक चुन ले ताए || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -33
- ज्यों फिरती थाल अर्स उज्जल, यों ही साफ सिफत बराबर । अर्स जिमी कही नूर की, कहूं गढ़ा न ऊंची टेकर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -23
- ज्यों बरनन सुपन सरूप की, ए भी होत विध इन । ए चारों चीज उत हैं नहीं, ना अर्स में ख्वाब चेतन || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -14
- ज्यों मन एक निमख में, पोहोचत पार के पार । तो क्यों न पोहोंचे बका जिमी को, जिन मन बल नहीं सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -41
- ज्यों मेहेर त्यों जोस है, ज्यों जोस त्यों हुकम । मेहेर रेहेत नूर बल लिए, तहां हक इस्क इलम || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -28
- ज्यों रोम सुपन के अंग को, त्यों रोम न अर्स अंग पर । सब अंग इस्क वास्ते, रोम रोम कहे यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -13
- ज्यों सुपनें में मनुआ, आप भाव सब ठौर । तरंग जैसा आप में, सोई देखे मिने और || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -44
- ज्यों सूरत दिल देखत, त्यों रूह जो देखे सूरत । बेर नहीं रूह लज्जत, तेरे अंग जात निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -80
- ज्यों हरे ब्रह्मांए बाछरू, गोवाला संघातें । ततखिन सो नए किए, आप अपनी भांतें || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -40
- ज्यों हाथ पांउं सूरत के, मुख नेत्र नासिका कान । त्यों सब मिल एक सूरत, यों वाहेदत अंग सुभान || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -32

झ

- झठ देखे सांच पाइए, इस्क बल हिकमत । ए तीनों तौल देखो दोऊ ठौर के, अंदर अपने चित्त || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -66
- झंडा नूर का महंमदी, ताए कबूं न होए नुकसान । जेते दिन जित फुरमाया, रह्या तेते दिन तित ईमान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -10
- झणके झण झांझरी, घुघरी घमके मांझ री। कडला बाजे मांहें कांबी री, विछुडा स्वर मिलाप री || ग्रं - रास, प्र -16, चौ -9
- झण्डा ईसे मेहेंदी ने, खड़ा किया है जित । सो आई इत न्यामते, हक हकीकत मारफत || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -31
- झण्डा खड़ा था दीन का, मक्के मदीने । सो जमात ले सरीयतें, पकड़्या था अकीने || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -85
- झण्डा महंमदी नूर का, सो पोहोंच्या नूर बिलंद । हुआ दिन दिल महंमद मारफत, उड़ी रात फरेबी फंद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -36

- झन्ड तले सोभा कही न जाए, धनी इत बिराजत आए । धनी बैठत साथ मिलाए, सब सिनगार साज कराए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -43
- झरमरबाई बजावत, माहें झरमरी अमृती । कई बाजे कई रंग रस, ए रंग अलेखे कहूं केती || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -66
- झरोखे इन भोम के, बने बराबर हर हार । खूबी नूर रोसनी, क्यों कहूं सोभा अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -111
- झरोखे कई विध के, गिनती होए क्यों कर । कहूं जुदे जुदे कहूं सामिल, ए लीजो दिल धर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -91
- झरोखे को पीठ देवें, बैठे द्वार सनमुख लेवें । संग सखियां केतिक विराजें, या समें श्री मंडल बाजे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -95
- झरोखे नवों भोम के, मिल मिल बैठत जाए । निस दिन हेत प्रीत चित्त सों, मन वांछित सुख पाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -68
- झरोखे नूर गिरदवाए, नूर सोभा कही न जाए । कछू नूर स्वाद तो आवहीं, जो नूर लीजे दिल ल्याए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -66
- झरोखे सामी नजर करें, परनाम करके पीछे फिरें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -98
- झलकत नूर बराबर, ऊपर अंगुरियों नख । सोभा सलूकी नख जोत की, जुबां केहे न सके इन मुख || ग्रं - सिनगार, प्र -5, चौ -8
- झलकत सुन्दर गिलम, अति सोभित सिंघासन । यों जोत जमी जवेरन की, बीच जगल जोत रोसन || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -22
- झलके झीणी रेतडी, नहीं कांकरडी लगार । थाय रूडी इहां रामत, आपण रमिए आधार || ग्रं - रास, प्र -41, चौ -9
- झाझरिया एक जुई जुगतना, कोरे लाल जडाव कांगरी । एक हार बे हीरा तणी, बीजी मध्य दरपण रंग दोरी || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -11
- झांझरियां जडाव जुगतनां, करकरियां सोभंत । चूंघरडी करडा जडतरमां, झलहल हेम करत || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -8
- झाडं कहे दुख सहुने लागे, सत वचन ना सेहेवाय । सत सहुए उथापियूं, असत ब्रह्मांड न समाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -41
- झाप झालाओ हवे उठतियो अंगथी, सुख सीतल अंग अंगना ने ठार । बाल्या क्ली वली ए मन ए कबुधे, कमसील काम का कराव्या करतार || ग्रं - किरन्तन, प्र -38, चौ -2
- झाप न खाई तें भैरव, क्यों कायर हुआ अवसर । तिल तिल तन न ताछिया, जाते ए सुख सागर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -33
- झालर अगनित बाजे ले बाजती, ब्रह्मांड में नौबत गाजती । कलिजुग सैन्या सुन भाजती, भई नई रे नवों खंडों आरती || ग्रं - किरन्तन, प्र -56, चौ -4

- झीणी रेखा हथेलिए दीसे, पोहोंचा सोभित पतंग जी । आंगलिए वीसा वीस दीसे, कोमल कलाई अति रंग जी || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -41
- झीणी रेखा हथेली आंगलिए, सात वीटी सोभंत । त्रण वीटी ऊपर नंग दीसे, अति घणुं ते झलकंत || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -24
- झीलन स्यामा संग राज सों, साथें किए जल केलि । इन समें के विलास की, क्यों कहूं रंग रेलि || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -18
- झूठ अमल सबे उठे, आए साहेब बीच हिंदुअन । दाभा जाहेर हुई मक्के से, आए हिंद में मेंहेदी मोमिन || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -47
- झूठ आगे सांच के, क्यों आवे सरभर । नाहीं क्यों कहे आगू है के, लगे ना पटंतर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -81
- झूठ तो कछुए है नहीं, सांच कायम साबित । यों अर्स और दुनीय के, कौन निमूना इत || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -66
- झूठ न आवे अर्स में, सांच नजरों रहे न झूठ । देख्या अंतर माहे बाहेर, कछू जरा न हुकमें छूट || ग्रं - सिंधी, प्र -16, चौ -8
- झूठ न भेदे सांच को, सांच अंग सत साबित । बाहेर उपली अंधेर देखाए के, होए जात असत || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -23
- झूठ न सुन्यो कबूं इत थे, जिन करो झूठी उमेद । ए गुझ हक के दिल का, आवत तुमको भेद || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -56
- झूठ निमूना हक को दीजिए, ए कैसी निसवत । ए झूठ खेल देखाइया, लेने हक लज्जत || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -76
- झूठ सबे उड़ जाएसी, ना चले तिन बखत । हक हादी के प्रताप थे, क्यों रेहेवे गफलत || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -16
- झूठ सब्द ब्रह्मांड में, कहावत याही में सांच । ए दोऊ झूठे होत हैं, वास्ते पिंड जो कांच || ग्रं - किरन्तन, प्र -107, चौ -1
- झूठ सांच का निमूना, ओ फना ए नेहेचल । खेल देखे पाइयत हैं, खुद खावंद का बल || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -89
- झूठ हम देख्या नहीं, झूठ रहे न हमारी नजर । पट आड़े खेल देखाइया, सो देने इस्क खबर || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -147
- झूठा ए छल कठन, काहं ना किसी की गम । कहां वतन कहां खसम, कौन जिमी कौन हम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -5
- झूठा खेल कबीले झूठे, झूठे झूठा खेलें । सब झूठे पूजें खाएं पिएं झूठे, झूठे झूठा बोलें || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -58
- झूठा खेल देखाइया, चौदे तबक की जहान । एक कंकरी होवे अर्स की, तो उड़े जिमी आसमान || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -63

- झूठा सब लगेगा मीठा, झूठा कुटम परिवार । सुख दुख इनमें झूठी चरचा, हुआ सब झूठे का विस्तार || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -59
- झूठी जिमी में बैठाए के, देखाए सुख अपार । कौन देवे सुख दूजा ऐसे, बिना इन भरतार || ग्रं - किरन्तन, प्र -83, चौ -7
- झूठी जुबां के सब्दसों, और माएने लेना बका । जो सहूर कीजे हक इलमें, तो कछू पाइए गुझ छिपा || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -23
- झूठे को झूठा करूं, सांचा सागर तारूं । ए रस श्रवनो पिलाए के, साथ के कारज सारूं || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -159
- झूठे झूठा राचहीं, दिल सांच न पावत । ए सांच क्यों कर पावहीं, पेहेले दिल में न आवत || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -51
- झूठे मोहोरे जो खेल के, मिल गैयां माहें तिन । कबीला कर बैठियां, कहे एह हमारा वतन || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -19
- झूले पुल मोहोल साम सामी, जल बीच मोहोल झलकत । रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -20
- झोडो करियां कांध से, जे तो झोडाई । तूं दाई तूं मुदई, हित तूंही गुहाई || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -81

ट

- टांकन घंटी ने कांडा कोमल, कांबी कडला बाजे रसाल । बूंघरडी घम घम स्वर पूरे, मांहें झांझर तणो झमकार || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -6
- टीका दिया उग्रसेन को, भए दिन चार । छोड़ वसुदेव भेख उतारिया, या दिन थे अवतार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -53
- टीलू दई उग्रसेनने, वेख सहित सिधाव्या । इहांथी लीला अवतारनी, वसुदेव वधाव्या || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -41
- टेढ़ी सकड़ी गलियां, तामें फिरे फेर फेर । गुन पख अंग इंद्रियां, कियो अंधेरी में अंधेर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -25
- टेढ़ी सकड़ी गलियां, तामें फिरे फेर फेर । गुन पख अंग इंद्रियों, कियो अंधेरी में अंधेर || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -25
- टेढ़े सुकन तुमे कहूं, सो काट करूं जुबां दूर । पर इन मायाका तुमको, कहा होसी रोसन नूर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -17
- टेवरू कुंदरू ने कबोई, कांकसी ने कलूंब । खेजड खजूरी ने खाखरा दीसे, केसू तणी अति लूंब || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -15
- टोना कह्या महंमद पर, अग्यारे गांठ लगाए । वह गांठें छूटे बिना, काहू ना सकें जगाए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -9, चौ -12

ठ

- ठंढे वजूद होवें वर पाए, तब हकीकत देखें आए। सब दुनियां हुई गुन्हेगार, यो देख्या बखत दोजखकार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -35
- ठेकत हैं कई जल में, और कूद चढ़े कई डार । खेल करें कई भांत सों, सब अंगों चंचल हुसियार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -47
- ठौर और कोई ना रही, सो बेसक करी इलम । ए बेवरा तुम कहावत, सो केहेती हों खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -52
- ठौर खेलन के चित धरो, विध विध के बन माहें । केहेती हों आगूं तुम, जो हिरदे चढ़ चढ़ आए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -15
- ठौर ठौर थाने दिए, मेला हुआ है मध देस । छत्रपति नमे नेहसों, राए राने पृथी के नरेस || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -12
- ठौर ठौर दई बड़ाइयां, मिने सब हमारी बात । केती कहूं मेहेरबानगी, मेरे धनी करी साख्यात || ग्रं - किरन्तन, प्र -122, चौ -7
- ठौर बका अर्स कया, और खावंद नूरजमाल । इन दरगाह रूहों के सुख, क्यों कहूं फैल हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -63
- ठौर सबों के सब को, फरिस्ता बतावे । पाक असराफील इन विध, कुरान को गावे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -13

ड

- डाई जोए की करे, डिसी अंखिएं डोह । जी जाणे ती करे, मथे हुकम धणी जो || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -26
- डार पात सब नूर में, फल फूल बेलों जोत । केहे केहे मुख कहा कहे, सब आकास में उद्दोत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -9
- डारी लटकी जल पर, पेड़ गिरद क्योहरी हार । और पेड़ डारों डारी मिली, यों फिरती पाल किनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -52
- डिजां संडेहो सिंधडी, तूं घणूं बलही इमाम । सिंध हिंद माधा थेई, पोरया जेदां रूम स्याम || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -10
- डिठम सुख सोणेमें, हिक आंझो तोहिजो आए । मूंसे संग केइए हिन भूअ में, जे डिए हित सांजाए || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -7
- डिठो डिखास्यो हुकमें, असीं थेयां हुकम । न्हाए न थ्यो न थींदो, की धारा हुकम खसम || ग्रं - सिंधी, प्र -12, चौ -9
- डिनिए बड्यूं वडाइयूं, हांणे जे डिए दीदार । मिठा वैण सुणाइए वलहा, त सुख पसूं संसार || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -23

- डिंनी असांके निद्रडी, इस्क न ई सांजाए। आं जागंदे प्यारयूं पाहिज्यूं, तो डिन्यूं की भुलाए || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -22
- डिंनी बी साहेदी इलम, त्री तोहिजे इस्क । चौथी साहेदी रसूल, बियूं कई साहेदियूं हक || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -2
- डेई रूहें के निद्रडी, डिखास्याई हे रांद । हे केर डिसे थी रांद के, हित को आए हुकम रे कांध || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -5
- डेई लदुन्नी इलम, मूंके परी परी समझाइए । को हेडयूं गाल्यूं मूं मुहां, दुनियां में कराइए || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -21
- डेखारी नारायण जी, माया मारकंड के । जे की डिठो रिखि निद्रमें, सभ चई नारायणजी से || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -4
- डोरीदे जे लधिम, अरवा कई हजार । किन जाण्यो घर नूरजो, के नूर घर पार || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -20
- डोरे कंचन नंग के, तिन आगू नवघरी । नव रंग नवघरी मिने, रही आकास जोत भरी || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -102
- डोह न अचे सुतडे, जागंदे मथें डोह । असीं डुख डिसूं आं डिसंदे, की चोंजे आसिक सो || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -23

ढ

- ढांपे थे जो एते दिन, हनोज लों न खोले किन । बातून जो कुरान के स्वाल, सो जाहेर किए छत्रसाल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -27
- ढील मंगू घर हल्लणजी, बिओरे खेल में मंगां सुख । हिनमें अचे थो कुफर, आंऊं छडी न सगां रुख || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -26
- ढूंढ़ ढूंढ़ के सब थके, ए जो लैलत-कदर । ए दरवाजा खोलिया, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -26
- ढूंढ़ ढूंढ़ सब जुदे परे, हक न पाया किन । अव्वल बीच और आखिर लो, किन पाया न बका वतन || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -60
- ढूंढ़ थके अर्स को, चौदे तबक न पाया किन । रात फना को छोड़ के, किन देख्या न सूर रोसन || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -59
- ढूंढ़ पाए ना पकड़े मोमिन के, पर हुआ हक हाथ सहूर । जो मेहेर करे मेहेबूब, तब ए होए जहूर || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -46
- ढूंढें अपने रसूल को, और अपना फरमान । और ढूंढें हक इलम को, जासों बातून होए बयान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -52
- ढूंढ़े जाहेर निसान जाहेरी, सो तो कहे कयामत के दिन । जो कोई ताबे दज्जाल के, ताए रूह आंख नहीं बातन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -22

- ढूंढेंगे हरघड़ी मरतबा, दुनियां सिर रसूल दबदबा । बिलंद दुनियां का हुआ आसमान, होए चाह्या मरतबा पावे पेहेचान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -16
- ढूंढ़ोगे तुम मुझको, बोहोतक सहूर कर । मेरा ठौर न पाओ या मुझे, क्योंए ना खुले नजर || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -6
- ढूंढ्या चौदे तबकों, पर पाई न किन तरफ । बका का बीच दुनियां, कोई बोल्या न एक हरफ || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -48
- ढोलतां ढोलाने सोहेलू, पण आगल ऊंडी खाड । लोही मांस सर्वे सूकसे, पछे घरट दलासे हाड || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -31

त

- तं आपे न्यारी होत है, पिउ नहीं तझ से दूर । परदा तू ही करत है, अंतर न आड़े नूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -132, चौ -5
- त की चुआं बी तिनके, जे मं अडां पसी रोए । त चुआं थी हेकली, मूं बट बी न कोए || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -52
- त केहो जवाब रूहनके, विच करियां की आंऊं। न की सुणाइए गुझ में, न पाइदडे धांऊ || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -41
- त केहो पडूत्तर मूंहके, चुआं कुरो रूहन । रूहें उमेदूं मूं में, आंके सभ रोसन || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -21
- तं मेहेबूब लाडो कांध मुं, चौडे तबके सई निसबत । हाणे लिके थो के गालके, लाड जाहेर मगे महामत || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -88
- तखत धस्या हके दिल में, राखू दिल के बीच नैनन । तिन नैनों बीच नैना रूह के, राखों तिन नैनों बीच तारन || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -25
- तखत रूहों बीच चांदनी, बैठे बड़ी रूह खावंद । सो थंभ हुआ चांदनी, ऊपर आया पूरन चन्द || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -43
- तखत सोभित बीच नूर का, नूर में जुगल किसोर । बैठे हक बड़ी रूह नूर में, नूर सोभा अति जोर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -47
- तडे धणिएं मूंके चयो, जे ब जण्यूं आईन । खिल्ले थ्यूं न्हारे रांद अडा, तांजे सांगाईन || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -12
- तडे मुकियां रूह पाहिजी, जा असांजी सिरदार । कुंजी मूकियां अर्स जी, उपटन बका द्वार || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -7
- ततखिण कम्पमानज थयो, माया मांहें भलीने गयो । कल्पांत सात ने छियासी जुग, माया आडी आवी बुध || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -14
- ततखिण ते दीसे नहीं, बाजीगर हाथ । आंबो न काई वेलडी, एणे रंगे बांध्यो साथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -131

- ततखिण रातडी आवी देखसो, माहें प्रगट थासे अंधेर जी। जीव अंधेर ज्यारे देखी मुझासे, त्यारे विखना ते आवसे फेर जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -29
- ततखिण वाले उठाडियो, कांई आवीने लीधी अंग । आनंद अति वधारियो, कांई सोकनो कीधो भंग || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -50
- ततखिन कछू न देखिए, बाजीगर हाथ । आंबो ना कछू बेलियां, या रंग बांध्यो साथ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -153
- तत्व गुन अंग इंद्रियां, सब इस्कै के भीगल । पख सारे इस्क के, सब इस्क रहे हिल मिल || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -37
- तत्व पांचों जो देखिए, तो यामें ना कोई थिर । प्रले होसी पलमें, वैराट सचराचर || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -26
- तत्व पांचो जो देखिए, यामें ना कोई थिर । प्रले होसी पल में, वैराट सचरा चर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -26
- तत्व सबन को नास है, जाको मूल मोह मद । सो नेहेचल कौन करावहीं, बिना एक महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -27
- तत्व सह एणीए जीती लीधां, चौद लोक पोतानां कीधां । वली लीधो तत्व मोह, जे थकी उपन्या सहु कोए || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -7
- तन असल तले कदम के, और उपज्या तन सुपना । ताए भी हक रहे नजीक, जो था बीच फना || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -39
- तन ऐसा धर नासूत में, करी हक सों निसवत । कजा चौदे तबक की, इन तन पे करावत || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -24
- तन तो अपने अर्स में, सो तो सोए नींद में । जागत हैं एक खावंद, ए नींद दई जिनने || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -4
- तन पाहिजा अर्समें, से तां सूतां निद्रमें । जागे थो हिक खावंद, ही निद्रडी आं दी जे || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -4
- तन मोमिन अर्स असल, आड़ी नींद हुई फरामोस । सो नींद वजूद ले उड़या, तब मूल तन आया मांहें होस || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -135
- तन मोमिन असल अर्स में, जो अर्स अजीम बका हक । जित पोहोंच्या नहीं जबराईल, तित क्या कहूं औरों खलक || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -54
- तनडा असांजा तो कंने, पण दिलडा असांजा कित । से की फिकर न कस्यो, के हाल मूंहजो चित || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -19
- तपसी बहु बिध देह दमो, सर्वा अंग दुख सहंत । पर तोले न आवे एकने, मुख श्री कृष्ण कहत || ग्रं - किरन्तन, प्र -127, चौ -5
- तफावत ए झूठ की, क्यों आवे बराबर सांच के, || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -82

- तब अद्रष्ट भए हममें से इत, हम सारे साजे बैठे तित । जो कछू जीव को उपजे भाउ, तो क्यों छोड़े हम पिउ के पांउ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -20
- तब अनेक आपन को कहे विचार, कई विध कृपा करी आधार । तब अनेक पखें समझाए सही, तो भी कछू टांकी लागी नहीं || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -5
- तब अनेक धनिऐं किए उपाए, पर सुभाव हमारा क्योंए न जाए। तब अनेक विध कह्या तारतम, पर तो भी अपना न गया भरम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -4
- तब अबाबकर यारों कह्या, क्या भाई न तुमारे हम । रसूल कहे भाई और हैं, यार हमारे तुम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -36
- तब अव्वल आखिर की मिली सब जहान, मिले तित हिंदू मुसलमान । और भी मिली अनेक जात, सब कोई नुसखा करे विख्यात || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -17
- तब आप अंतरध्यान होए के, भेज दिया फरमान । हम को इस्क उपजावने, इत कई विध लिखे निसान || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -36
- तब आयत भेजी हक ने, ल्याया जबराईल । सो देखो आयत में, हक केहेसी असराफील || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -42
- तब इत भए अंतरध्यान, सब सखियां भई मृतक समान । जीव न निकसे बांधी आस, करने धनीसों प्रेम विलास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -38
- तब इतहीं जो वतन पिउ पार, सखी भाव भजिए भरतार । आतम महामत है सूरधीर, प्रेमें देखाए जुदे खीर नीर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -30
- तब उड़े काफर हुते जो पहाड़ से, हुए मोमिनों बान चूर । लगे और बान अर्स इलमें, तिन हुए कायम नूर हजूर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -60
- तब ए बात सुन हकें कह्या, मैं प्यारा हों तुमको । पर मैं आसिक अवाहों का, सो कोई जानत नहीं तुममों || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -10
- तब ए बुजरक आवसी, साहेब जमाने के। हक करसी हिदायत तिनको, इनों संग नाजी फिरका जे || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -80
- तब ए होसी आजिज, और मौला तो मेहेरबान । तब लेसी सबों को भिस्त में, देकर अपनों ईमान || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -36
- तब कछुक मोको सुध भई, कछुक भई पेहेचान । ए दरद कहूं मैं किन को, धनी हो गए अन्तरध्यान || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -18
- तब कह्या जालूत ने, देखों मैं किताब । सो ए देख के कहोंगा, करो जिन सिताब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -24
- तब कह्या बड़ी रूह ने, इस्क मेरा ताम । हक रूहों की मैं आसिक, मेरा याही में आराम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -25
- तब कह्या माज बिन जबलें, करूं कजा देख मुसाफ । कहे रसूल जो तूं अटके, तो क्यों करे इन्साफ || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -17

- तब कह्या रसूलें किताब, जले या चोरी जाए। तब क्यों करो इमामत, देखो दिल सों ल्याए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -25
- तब कह्या रसूलें हदीस में, ए जो सैतान का फितना । सो आवत बीच बरारब, मैं देखत हों इतना || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -6
- तब कह्या हकें हादी रूहन को, मैं तुमारा आसिक । ए तेहेकीक तुम जानियो, इस्क मेरा बुजरक || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -19
- तब कह्या हुई फजर, ऊग्या हक बका दिन । तब सूरज मारफत के, करी गिरो रोसन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -22
- तब केतिक गिरो उधर भई, और केतिक मेरे साथ । दई जाहेर मसनंद नसलिएँ, दूजी बातून मेरे हाथ || ग्रं - किरन्तन, प्र -122, चौ -3
- तब कोई नहीं किसी के संग, दुख सुख लेवे अपने अंग । करूं ब्रह्मसृष्ट को मिलाप, अखंड सूर उदे भयो आप || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -101
- तब खुदाई इलम से, भई सवे पेहेचान । ऐसी पाई निसबत, बूझा अपना कुरान || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -66
- तब खेल हम मांगया, सो देखाया दो बेर । तामें बृज में खेले पिया संग, बीच मोह के अंधेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -17
- तब खोज सब्द को लीजे तत्व, तौल देखिए बड़ी केही मत । जासों पाइए प्रान को आधार, सो क्यों सोए गमावे रे गमार || ग्रं - किरन्तन, प्र -3, चौ -7
- तब गांगजी भाई पाए मन उछरंग, किए करतब अति घनें रंग । सनेहसों सेवा करी जो अत, पेहेचान के धाम धनी हुए गलित || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -90
- तब गुनाह कछू ना लगे, जो कीजे ऐसी चाल । सो सुकन पेहेले कहे, जो कोई बदले हाल || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -24
- तब गोवरधन तले, स्याम राख्यो गोकुल । जल प्रले के फिरवले, अंदर न हुआ दखल || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -9
- तब चारों अपने हुए, हुआ फितना बीच जोर । सफर पीछे रसूल के, दिन दिन बाढ़या सोर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -16
- तब जानों इन बात की, कोई देवे दूजा साख । सो हलके हलके देत गए, मैं साख पाई कई लाख || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -21
- तब जीव को घर कहां रह्यो, कहां खसम वतन । गुर सिष्य नाम बोहोतो धरे, पर ए सुध परी न किन || ग्रं - किरन्तन, प्र -21, चौ -4
- तब तीसरो रचके खेल, स्यामाजी आए इत । तब हम भी आइयां तित, स्यामाजी खेले जित || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -3
- तब तो दरवाजा मूंद के गया, पीछे तो नफा काहू को न भया । सब जले जल्या अजाजील, जाए उठाया असराफील || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -24, चौ -5

- तब तौलासी वासना, और तौलासी हुकम । सब बल तौलें बलवंतियां, और तौले सरूप खसम || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -4
- तब दिल में राखियो, खबरदारी तुम । इसारतें कई रमूजें, लिख भेजेंगे हम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -55
- तब धाम धनिऐं कियो विचार, ए दोऊ मगन हुए खेलें नर नार । मूल वचन की नाहीं सुध, ए दोऊ खेलें सुपने की बुध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -27
- तब नारायनजीऐं कियो प्रवेस, देखाई माया लवलेस । फिरी सुरत आए नारायन, याद आवते गए निसान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -14
- तब नैनों आंसू बोहोत जल आए, काहूपे ना रहे पकराए। सुख आनंद गयो कहूं चल, अंग अंतस्करन गए सब गल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -54
- तब पावें रसूल की बुजरकी, जब पेहेचान होवे हक । हकें मासूक कया तो भी न समझें, क्या करे आम खलक || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -71
- तब पेहेचान भई सकल, हुए जब सर्वग्यन । नेहेचल सूर ऊग्यो निज वतनी, हुओ मन को भायो सबन || ग्रं - किरन्तन, प्र -59, चौ -4
- तब प्रेम जो उपजे, रस परआतम पोहोंचाए । तब नैन की सैन कछू होवहीं, अन्तर आंखां खुल जाए || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -43
- तब फरमाया रसूल ने, है फितना सोर तुम मांहें । स्याम इमन जिमी बचोगे, और खैर काहूं नाहें || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -3
- तब फेर कहया अरवाहों ने, हम क्यों भूलें तुमको । तुम पेहेले किए चेतन, खेल कहा करे हमको || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -24
- तब फेर कहया रसूल ने, ए सुध नहीं तुमें किन । ए नीके मैं जानत, माएने किताब इन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -27
- तब फेर कहया रसूल ने, मेरा गम है भाइयों मांहें । कहे अबीजर ऐसे भाई, सो क्या अब इत नाहे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -34
- तब फेर धनिऐं कियो विचार, साथ घरों ले जाना निरधार । तब संवत सत्रे बारोतरा बरख, भादों मास उजाला पख || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -14
- तब बल ना चले इन नारी को, लोप न सके लगार । महामत यामें खेलत पिया संग, नेहेचल सुख निरधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -22, चौ -8
- तब बानी को करसी विचार, सब माएने होसी निरवार । तब आवसी ब्रहमसृष्ट, जाहेर निसान देखसी दृष्ट || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -88
- तब बैकुंठ में विष्णु ना कहे, इत सोलेकला संपूरन भए । या दिन थे भयो अवतार, ए प्रगट वचन देखो विचार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -56
- तब ब्रहमाजी खीरसागर, आए विष्णु पे बैकुंठ घर । ए प्रभुजी ए क्या उतपात, लखमीजी तप करे कल्पांत सात || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -40

SPJIN

- तब भी अनेक विध कही, पर नींद पेड़ की आड़ी भई । भी फेर अनेक दिए द्रष्टांत, पर साथ पकड़ के बैठा स्वांत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -3
- तब मारया रसूलें छाती मिने, केहे के अल्हंमदो-लिल्लाह । कही रजामंदी खुदाए की, है सिर रसूल अल्लाह || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -19
- तब मैं दिल में यों लिया, करों कायम चौदे तबक । मेरे खावंद के इलम से, सबों पोहोंचाऊं हक || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -63
- तब मैं पियासों यों कया, जो तुम पूछी बात । मैं मेरी मत माफक, कहूंगी तैसी भांत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -8
- तब मैं पियासों यों कहया, जो तुम पूछी बात । मैं मेरी मत माफक, कहूंगी तैसी भांत || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -8
- तब रसूल खोलत जो माएने, हकीकत मारफत । तो तबहीं होती फजर, जाहेर होती कयामत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -3
- तब रूहों मुझ आगे कहया, ऐसा इस्क हमारा जोर । फरामोसी क्या करे हम को, इस्क देवे सब तोर || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -27
- तब रूहों वले कहया, बीच हक खिलवत । मजकूर किया हकें तुम सों, वह जिन भूलो न्यामत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -2
- तब रूहों वले कहया, हम भूलें नहीं क्योंए कर । तुम साहेद किए रूहें फरिस्ते, पल रेहे न सकें तुम बिगर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -3
- तब लखमीजी बड़ो पायो दुख, कह ना सके कलपे अति मुख । मोसों तो राख्यो अंतर, अब रहूंगी मैं क्यों कर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -28
- तब लखमीजी लागे चरने, यों बुलाए ल्याए आनंद अति घनें । तब ब्रहमा खीरसागर सुख पाए फिरे, दोऊ आए आप अपने घरे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -49
- तब लरे हमसों अपनायत करी, तो भी नींद हम ना परहरी । कई विध कहया आप आंझू आन, पर या समें हमको सुध न सान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -13
- तब लिख्या आया आयतमें, बाजे पैदा कलमें कुंन । एक कहे एक हाथ से, कहे बाजे दो हाथन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -107
- तब लों रसमें लरत हैं, जब लों है उरझन । रूहअल्ला कुंजी ल्याइया, तब जोरा न चलसी किन || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -17
- तब वले कया अरवाहों ने, अर्स से उतरते । किया जवाब हक ने, रूहों याद किया चाहिए ए || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -3
- तब विध विध कहया अनेक प्रकार, तो भी भई सुध न सार । अनेक सनंधे केहे केहे रहे, पख पचीस आपन को कहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -6
- तब श्रीमुख वचन कहे प्राणनाथ, ढूंढ काढ़नो अपनो साथ । माया मिने आई सृष्ट ब्रहम, सो बुलावन आए हैं हम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -76

- तब सख्प हुकम के, खेल किया मिने पल । हाथ फुरमान ले आइया, रसूल हमारा चल || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -7
- तब सनकादिके फेर यों कह्यो, तो ए जदे करके देओ । फेर ब्रह्मांए करी फिकर, तब देखे वचन विचार चित धर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -6
- तब सब किने पायो अचरज, यों लखमीजी को देखाया बृज । सोले कला दोऊ सरूप पूरन, ए आए हैं इन कारण || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -55
- तब सबों ने देखिया, जो कछु हक बिसात । हक खिलवत जाहेर हुई, अर्स बका हक जात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -8
- तब सुकजी यों बोले प्रमान, लीजो वचन उत्तम कर जान । चौदे भवन में बड़ा सोए, बड़ी मत का धनी जोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -3
- तब सुध पाई सब बेसक, हुए बेसक खबरदार । हकें ऐसी दई बेसकी, हुए बेसक बेसुमार || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -96
- तब सुनत जमात की, बातें सबे बनि आई । महंमद की तीन सूरतें, करी पूरी पनाही || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -113
- तब सूरज पना क्या रह्या, कही बिन रोसन अंधेर । सो गया ईमान रह्या कुफर, तिन लई जो दुनियां घेर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -10, चौ -7
- तब से परदा मुंह पर, रह्या हजरत मुसाफ के । सो सदी अग्यारहीं लग, किन दीदार न पाया ए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -51
- तब हक के अंग का नूर जो, जो है नूरजलाल । तब तिनके दिल पैदा हुआ, देखों इस्क नूरजमाल || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -9
- तब हक के दिल में उपज्या, मैं देखाऊं अपना इस्क । और देखांऊ साहेबी, रूहें जानत नहीं मुतलक || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -8
- तब हकें कह्या हादी रूहों को, तुम मासूक मेरे दिल । इत इस्क मेरा पाए ना सको, जो सहूर करो सब मिल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -26
- तब हम जाए पियासों कही, खेल अछर का देखें सही । जब एह बात पिया ने सुनी, तब बरजे हांसी करने घनी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -13
- तब हम मिल के कियो विचार, कह्या एक दूजी को हूजो हुसियार । खेल देखन की हम पियासों कही, तब हम दोऊ पर अग्या भई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -16
- तब हम मोमिन मिल के, खेल मांग्या हादी हक पे। तब हुकमें पेहेले पैदा किया, हमारी नजर हुई खेल में || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -6
- तब हममें से अद्रष्ट भए, कोई कोई वचन हिरदे में रहे । जो या समें खबर ना लेते तुम, तो मोहजल अति दुख पावते हम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -8
- तब हमसों इसारत करी, कह्या धाम आड़े इंद्रावती खड़ी। मैं पैठ न सकों वह करे विलाप, तब मोहे बुलाए के कियो मिलाप || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -18

- तब हमें कह्या फरामोस का, खेल देखावें हम । मैं जुदे भी तुमें ना करूं, देखाऊं तले कदम || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -60
- तब हमें कह्या सबन को, मैं तुमारा आसिक । और आसिक बड़ी रूह का, कौन मेरे माफक || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -11
- तब हमें दिलमें यों लिया, मैं देखाऊं अपना इस्क । और पातसाही अपनी, ए देखें रूहें मुतलक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -30
- तब हंस कर आंझू आनके कह्या, पर तिन समे हम कछु ए ना लह्या । तब तारतम केहे देखाया घर, हम तो भी ना सके पेहेचान कर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -7
- तब हंसे कियो जवाब, समझे सनकादिक भान्यो वाद । चित किये चारों के धीर, पर ना हुए जुदे खीर नीर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -11
- तब हाथ निलाट दियो सही, सुकें दुख पाए के कही । मैं जोगी तें राजा भयो, रास को सुख न जाए कह्यो || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -13
- तब हादी रूहन को, ए दिल उपजी सक । हक का इस्क हमसे बड़ा, ए क्यों होवे मुतलक || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -20
- तब हार के धनिएँ विचारिया, क्यों छोडूं अपनी अरधंग । फेर बैठे मांहें आसन कर, महामति हिरदे अपंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -99, चौ -11
- तब हुआ रूहन का, हक अर्स कलूब । याही हक अर्समें, रूह नजरों मिले मेहेबूब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -112
- तब होसी कुरान का माजजा, और नबी की नबुवत । ए कौल तोड़ जुदे पड़त हैं, सो कौल मेंहेदी करसी साबित || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -20
- तबक चौदमें मलकूत, ला हवा सुन्य तिन पर । ता पर बका नूरमकान, जो नूरजलाल अछर || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -39
- तबक चौदे इंड में, जिमी जोजन कोट पचास । पहाड़ कुली अष्ट जोजन, लाख चौसठ बास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -34
- तबक चौदे इंड में, जिमी जोजन कोट पचास । साढ़े तीन कोट ता बीच में, होत अंधेरी उजास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -14
- तबक चौदे इंड में, जिमी जोजन कोट पचास । साढ़े तीन कोट ता बीच में, होत अंधेरी उजास || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -14
- तबक चौदे इन में, जिमी और आसमान । रात बड़ी कदर की, कोई नाहीं इन समान || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -44
- तबक चौदे कोहेड़ा, ए सबे कुदरत । सुर असुर कई अनेक विध, खेलें ख्वाबी दम गफलत || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -29
- तबक चौदे ख्वाब के, ए खेल झूठा है सब । सो बका कौन करावहीं, बिना एक महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -26

- तबक चौदे ख्वाब के, याको पेडै नींद निदान । नींद के पार जो खसम, सो ए क्यों कर करे पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -48
- तबक चौदे ख्वाब के, याको पेडै नींद निदान । नींद के पार जो खसम, सो ए क्यों करे पेहेचान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -37
- तबक चौदे जो कोई, रूह होसी सकल । इन कलमें की बरकतें, तिन सुख होसी नेहेचल || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -50
- तबक चौदे देखे वेदों, निराकार लों वचन । उनमान आगे केहेके, फेर पड़े मांहें सुंन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -23
- तबक चौदे देखे वेदों, निराकार लो वचन । उनमान आगे केहेके, फेर पड़े मांहें सुंन || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -25
- तबक चौदे मलकूत से, ऐसे पलथें कई पैदास । ऐसी बुजरक कुदरत, नूरजलाल के पास || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -5
- तबक चौदे हद के, चौगिरद निराकार । ए सब्द हदी क्यों समझहीं, जो निराकार के पार || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -15
- तबहीं दुनी पाक होएसी, तबहीं होसी एक दीन । जब मुआ सबोंका सैतान, तब आया सबों आकीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -3
- तम उपर थी तिल तिल करी नाखू मारी देह, तमे कीधा मोसूं अधिक सनेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -18, चौ -8
- तम पांच के बांधे पांच देखत हो, पांच के चौदे भवन । ए पांचों प्रले हो जासी, पीछे कब ढूंढ़ोगे अपना वतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -7
- तम विना जे घडी गई, अमे जाण्यां जुग अनेक । ए दुख मारो साथ जाणे, के जाणे जीव वसेक || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -4
- तम सामं अमें ज्यारे जोइए, त्यारे जोर करे मकरंद रे । बाथो बथिया लीजे रे वालैया, एम थाय आनंद रे || ग्रं - रास, प्र -25, चौ -7
- तम सामी अमे ऊभा रहीने, हाथ ताली एम लेसू । बेसंता उठता फरता, सामी ताली देसू || ग्रं - रास, प्र -21, चौ -2
- तमको नींद उड़ावने, मैं देऊं एक द्रष्टांत । तुम विध अगली देखके, जो कदी समझो इन भांत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -4
- तमथी अलगो जे रहूं, ते जीव मारे न खमाय । एम पलक माहे रे सखियो, कोटानकोट जुग थाय || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -10
- तमने मोटी मतवाला साध देखाई, जेणे भरया ब्रह्मांडमां पाय । कोई वैकुण्ठ कोई सुन्य मंडलमां, एटला लगे पोहोंचाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -12
- तमसूं जुध करे घेन घारण, लज्या ने अहंकार । कायर ने कंपावे ए बल, बीक ने भ्रांत विचार || ग्रं - किरन्तन, प्र -70, चौ -10

SPJIN

- तमारा गुणनी केही कहूं वात, तमे अनेक विधे कीधी विख्यात । पोतावट जाणी प्रमाण, इंद्रावती चरणे राखी निवाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -17
- तमारा मनमां न आवे लेस, पण साख पूरे मारूं मनई वसेख। वारी फरी नाखू मारी देह, तमे कीधां मोसूं अधिक सनेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -14
- तमारे मन में न आवे लवलेस, पर मैं जानों मेरे मन के रेस । वार डारों तुम पर मेरी देह, तुम किए मोसों अधिक सनेह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -14
- तमे अंतरगते दीधां द्रष्टांत, त्यारे भागी मारा मननी भ्रांत । हवे तमे आव्या एकांत, संसार दसा थई स्वांत || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -16
- तमे अनेक सिखामण कही, पण भरम आडे में कांई नव ग्रही । मोसू एवी तोहज थई, जो वाणी तमारी में नव लही || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -14
- तमे अमथी अलगां थया, त्यारे व्रह थयो अति जोर । तमे वनमां मूकी गया, अमे कीधा घणां बकोर || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -3
- तमे आंबला ना थड थाओ, अमे चरण झालीने बेसू । मारो आंबो दहिए दूधे सीचूं, एम केहेतूं प्रदखिणा देसूं || ग्रं - रास, प्र -27, चौ -2
- तमे आंही आव्या अम माटे देह धरी, दया अम ऊपर अति घणी करी । तमे सामा आव्या आगल अम माट, लई आव्या तारतम देखाडी घर वाट || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -17
- तमे उठो ते अंग मरोडीने, म जुओ मायानो मरम जी । धणी पधारया छे तम माटे, तमने हजी न आवे सरम जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -38
- तमे कहो छो वनमां हता, तो कां नव लीधी सार । अमे वन वन हेठे विलखियो, त्यारे कां नव आव्या आधार || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -28
- तमे का पति नव मूकवो, जो अवगुण होय रे अपार । तमे रे तमारे मोहें कह्यु, तमे न्याय रे कीधो निरधार || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -35
- तमे केहेसो जे एम कहे छे, नेहेचे जाणो जीव माहें । तमारा सम जो तम विना, एक अधखिण में न खमाए || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -34
- तमे केहेसो ज्यारे तारतम सांभल्यूं, त्यारे अंध केहेवाय केम । तेह तणो पडउतर दऊं, तमे सांभलो द्रढ करी मन || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -14
- तमें गिनान तणो अजवास लईने, उपलो टालो छो अंधेर । पण मांहेलो सूतो निद्रा माहें, तो केम जाए मननो फेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -70, चौ -11
- तमे गुण कीधां मोसू घणां घणां, पण अलेखे अवगुण अमतणा । तमे गुण करो छो ते ओलखी करी, पण मोहजल लेहेर मूने फरी वली || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -18
- तमे छो अमारडा धणी, तो आसडी परो छो अमतणी । इंद्रावती चरणे लागे, कृपा करो तो जागी जागे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -18, चौ -9

- तमें जैन महेश्वरी सहुए सुणजो, आदे धरम छे एक । रिखभ देव चाल्या पछी मारग, वेहेचाणां विवेक || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -64
- तमें जो जो रे मारा साध संघाती, आ विश्व तणी जे वाट । हार कतार चाले केडा बेडी, भवसागर नों घाट || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -1
- तमे जोपे ग्रहजो द्रढ मन करी, हूं तमने कहूं फरी फरी। साथ सकल लेजो चित धरी, हूं वालोजी देखाई प्रगट करी || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -6
- तमे ततखिण लीधी अमारी खबर, लई आव्या तारतम देखाड्या घर । आपण जाग्या पछी हाँसी करतूं जोर, घरने विसारी माया ए कीधा चोर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -50
- तमे तमारा गुण नव मूक्यां, में कीधी घणी दुष्टाई । हूं महा निबल अति नीच थई, पण तमे नव मूकी मूल सगाई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -22, चौ -11
- तमे तारतमना दातार, अजवायूँ कीबूं अपार । साथ तणां मनोरथ जेह, सर्वे पूरण कीधां तेह || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -10
- तमे तो वालाजी फूंदडी फरो छो, पण फरो छो आप अंग राखी । ए रामत करतां मारा वालैया, फरिए पाछां अंग नाखी || ग्रं - रास, प्र -17, चौ -3
- तमे त्रणे जोधा एक सम थई, कां नव कीधी समी वात । ज्यारे जीवनजी मल्या जीवने, त्यारे तमे कां न कीधो उलास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -52
- तमे निरत करो रे भामनी, निरत रूडी थाय नार । तमे वचन गाओ प्रेमना, पासे स्वर पूरूं रसाल || ग्रं - रास, प्र -29, चौ -2
- तमे पडदा पाछा कीधां पछी, वली आवी ते आ वसंत । ते पछी तमसूं रमवानी, लागी छे खरी मूने खंत || ग्रं - खटरुती, प्र -5, चौ -2
- तमे पति तो तमारा ऊभा मूकिया जी, कांई रोता मूक्या बाल । ए वचन सुणी ने विनता टलवली, कांई भोम पडियो तत्काल || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -9
- तमे पेरे पेरे समझावी, मूने तोहे बुध न आवी । जुगते करीने जगावी, लई तारतमे लगावी || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -15
- तमे प्राणपे मूने वालियो, जेम कहो करूं हूं तेम । रखे कोई मनमां दुख करो, कांई तमे मारा जीवन || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -58
- तमे भली पेहेलीने कीधी मारी वहार, धणी लिए तेम लीधी सार । चौद भवननी गम आंही, तेतां लखी सर्वे सास्त्रों मांही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -18, चौ -3
- तमे मांगी रामत विनोदनी, तेणे विलस्या तमारा मन । वात वालाजीनी विसरी, जे कया मूल वचन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -11, चौ -3
- तमे मोसू भंडाई अति कीधी, तमने दऊं कटारी घाय । एवो अवसर आव्यो मारा हाथमां, पण तमे भूलव्यो मूने दाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -68

- तमें राखी रदमां अंधेर, ओलाडवा हीडो छो संसार । एणी पेरे उवट चढ़ाय नहीं, जवाय नहीं पेले पार || ग्रं - किरन्तन, प्र -70, चौ -8
- तमे रामत जोवा कारणे, इच्छा ते कीधी एह । ते माटे सहु मापियूं, आ कयूं कौतक जेह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -9
- तमे रे जुओ पोते आप संभारी, केही रे लीधी छे वाट । केही रे भोमना बंध बांधो छो, उतरसो कीहे रे घाट || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -25
- तमे वांकी ते वाटे चलविया, विसमां ते केम चलाय । हूं ग्रही दऊं धाम धणी, तो सुख मूने थाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -6
- तमें वांकू विसमू काई नव जोयूं, जेम भामनी भुंडी भंडावे । कुकरम करतां काई न विचारे, पछे नाहो ने नीचू जोवरावे || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -20
- तमें वाणी विचारी न चाल्या रे वैष्णवो, तमें वाणी विचारी न चाल्यो । अखर एकनो अर्थ न लाध्यो, मद मस्त थईने हाल्यो || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -1
- तमे वीतकनूं मूने पूछयूं, सुणो कहूं तेणी वात । आ मंडल तां दीसे सुपन, पण थई लाग्यूं साख्यात || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -10
- तमे साथ मारा सिरदार, हवे आ द्रष्टांत जो जो विचार । पाधरो एक कहूं प्रकास, सुकजी पाए पुरावू साख || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -11
- तमे साथ सकल मली सांभलो, हूं वचन कहूं निरधार जी । तमे वेण मारो श्रवणे सुण्यो, घर मूक्या ऊभा बार जी || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -2
- तरक करे सब दुनी को, कछू रखे ना हक बिन । वजूद को भी मह करे, ए महंमद सिफायत मोमिन || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -31
- तरंग तरंग कई किरनें, कई रंग नंग किरने न समाए। यों जोत सागर सरूपों को, रह्यो तेज पुन्ज जमाए || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -19
- तरंग बड़े मेर से होए, इत खड़ा ना रेहेने पावे कोए । लेहेरें पर लेहेरें मारे घेर, मांहें देत भमरियां फेर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -79
- तरंग हक के इस्क के, पाए ना गिरो में किन । अजूं माएने मगज, हाए हाए पाए नहीं मोमिन || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -35
- तरफ अर्स अजीम की, कोई जाने ना एक नूर बिन । पर गुझ मता न जानहीं, जो है नूरजमाल बातन || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -41
- तरफ चारों फिरते हिंडोले, उपली लग भोम जोए । धाम तलाव जमुना नारंगी, सखियां हींचत बट पर सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -48
- तरफ चारों बीच वजूद के, लिख्या विध विध कर । यों दुनी निगली सैतान ने, एक हके मोमिन बचाए फजर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -79
- तरफ दूजी पुरे सारे, बीच बाट धेन का सेर । इत खेले नंद नंदन, संग गोवालों के घेर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -14

- तरफ न कही किन ने, तो पट खोले क्यों कर । ए हुए जो बड़े रात के, तिन सबकी एह खबर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -11
- तरफ पीछल धाम के, अंन बन मेवे अनंत । फल फूल पात कंदमूल, ए कहांलों को गिनत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -3
- तरफ बांई द्वार पुखराजी, दो मानिक थंभ तिन पास । चार थंभ नूर सरभर, ए अदभुत नूर खूबी खास || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -11
- तरफ बांईं सोभा ताल की, बीच चांदनी चारों घाट । जल बन मोहोल पाल की, अति सोभित ए ठाट || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -45
- तरफ भी किन पाई नहीं, पावे तो जो दूसरा होए । तुम तो बीच वाहेदत के, और जरा न कित काहूं कोए || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -70
- तरवार भाले कटारियां, मोहे काट करी ट्रक टूक । मेरे अंग हुए मुझे दुस्मन, जीव करे मिने कूक || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -17
- तरसाइए त तरसण मोहके, मूं मंझां की न सस्यो । सभ गाल्यूं आंजे हथमें, जाणो तीय कस्यो || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -8
- तरसे दिल मुंहजो, जाणे कडे धणी पस्सां । त की न हून कांध के, मिडन उमेदूं अस्सां || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -23
- तरारे गिंनी तन ताछियां, हडे करियां भोर । पेहेलेनी खल उबती लाहियां, जीव कढां ई जोर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -8, चौ -6
- तरीकत देखाओ खास दूजी को, केहे मीठी हलीमी जुबांन । तेरा हुकम न फेरे ए गिरो, पोहोंचाओ बका नूर मकान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -99
- तरीकत भी ले ना सके, सो रात की बरकत । जो तरीकत ले पोहोंचे मलकूत, तो भी आड़ी हवा जुलमत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -90
- तलफ तलफ दुख पावे मन, अंग मांहें लागी अगिन । तब सुकजिऐं दिलासा दिया, आंसू पोंछ के बैठा किया || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -17
- तलफे तारूनी रे, दुलही को दिल दे । सनमंध मूल जानके रे, सेज सुरंगी पर ले || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -1
- तलफे तारूनी रे, दुलही को दिल दे । सनमंध मूल जानके, सेज सुरंगी पर ले || ग्रं - सनंध, प्र -7, चौ -1
- तलब द्वा फातियाओं की कर, चाहता था तो अजमंतिसा अवसर । फकीर सुलतानसों बातें भई, तब आकीन आया सही || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -4
- तलबे सेवा करूं सब अंगों, मोहे मिले धनी एकांत । तिन समें आए बैठी अंग में, फिट फिट भुंडी स्वांत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -33
- तलाव जमुना जी के मध, बन के मंदिर या विध । ए खेलन के सब ठौर, तलाव विध है और || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -38

- तलाव बनें लिया घेर, ऊपर क्योहरियां चौफेर । कई पावड़ियां जो किनारे, बड़ा चौक तले जाली बारे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -39
- तली हथेली हाथ पांऊ की, लाल अति उज्जल । और बीसों अंगुरियां नरम पतली, नख नरम निरमल || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -77
- तले अधुर के लांक जो, मुख बराबर अनी तिन । सेत बीच बिन्दा खुसरंग, ए मुख सोभा जाने मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -134
- तले खड़ा हुकम के, नाम जो नूरी जिन । माएने जाहेर ना किए, हुकमें एते दिन || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -37
- तले चलता पानी जोए का, दस घड़नाले जल । नेहेरें चली जात दोरी बंध, ए जल अति उज्जल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -70
- तले चार गुरज बिलंद हैं, थंभ होत ज्यों कर । चारों भोम से छात लग, आए पोहोंचे ऊपर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -41
- तले चारों सीढ़ी जुदी जुदी, पीछे करत पानी मार । सो चारों उपरा ऊपर, इन विध पड़त धार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -15
- तले चौथा चाहिए, आगू अर्स द्वार । दरखत दोऊ चबूतरों, सोभा लेत अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -20
- तले छे जुदे रहे, ऊपर पहाड़ मोहोल एक । और दोए कही जो घाटियां, भए आठ ऊपर इन विवेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -49
- तले जाली द्वारें पाल में, जित जल रह्या समाए । इत बैठ झरोखों देखिए, जानों पूर आवत हैं धाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -54
- तले जिमी अति रोसनी, और रोसन चारों छात । चारों चौक देखे आगू चल के, ए सुख रूहें जाने बात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -39
- तले जो दोऊ चबूतरे, बिरिख लाल हरा तिन पर । ए बिरिख द्वार चबूतरे, नूर रोसन करत अंबर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -13
- तले ताक अति सोभित, साम सामी बार । जल छोड़े ना हद अपनी, निकसत सामी द्वार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -16, चौ -3
- तले ताल बन बंगले, जल चक्राव ज्यों चलत । रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -68
- तले तीन तरफ मेहेराव, ए जो कही दिवाल गिरदवाए । ऊपर दिवाले बनकी, ए सिफत कही न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -56
- तले दस घड़नाले पोरियां, बीच नेहेरें ज्यों चलत । स्याम स्यामाजी सखियां, इन मोहोलों आए खेलत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -3
- तले फिरता कठेड़ा, चारों तरफों द्वार । तले उतरती सीढ़ियां, जल माहें करें झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -72

- तले बंगले नेहेरें नूर की, चले चक्राव नूर इत । चारों तरफ बड़ी नूर पौरी, नूर सोभा न देखी कित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -16
- तले बन निकुन्ज जो, तिन पर ए मोहोलात । मिल गए मोहोल अर्स के, रूहें दौड़त आवत जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -40
- तले बाग जो दरखत, बड़ा बन गिरदवाए। चारों खूटों बराबर, खूबी जरे की कही न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -63
- तले बैठ जब देखिए, जानों गुरज लगे आसमान । क्यों कहूं इन मोहोलात की, खेलें रूहें हादी सुभान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -13
- तले भोम चबूतरा, बैठा हक मिलावा इत । हक हादी ऊपर बैठ के, गिरो को खेलावत || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -55
- तले भोम थंभों की जुगत, कही जाए न बानी सों बिगत । इत बड़ा चौक जो मध, ताकी अति बड़ी सोभा सनन्ध || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -164
- तले सात तबक जिमीय के, या बीच ऊपर आसमान । मूल बिरिख पात फूल फैलिया, सब हुआ इस्क सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -36
- तले से ऊपर चढ़त है, जिमी की रोसन । और जिमी पर उतरत है, ऊपर का नूर बन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -74
- तले से ऊपर लग, थंभ झरोखे देहेलान । ए बैठकें बका मिने, रूहे संग सुभान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -45
- तले से ऊपर लग, मोहोल झरोखे पड़साल । कई चौक थंभ कचेहेरियां, कई देहेलाने दिवाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -31
- तले सोभा चारों द्वारने, आगू कठेड़े बैठक । आराम लेवें इन ठौरों, जब आवें इत हादी हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -9
- तहां एक पलक न होवहीं, इत कई कल्प वितीत । कई इंड उपजे होए फना, ऐसे पल में इन रीत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -13
- तहां चार विध की कही मुगत, करनी माफक पावे इत । इतथे जो कोई आगे जाए, निराकार से ना निकसे पाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -5
- तहां जाए के बेन बजाई, सखियां सबे लई बुलाई । तामसियां राजसियां चलीं, स्वांतसियां सरीर छोड़ के मिलीं || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -29
- ता कारन तुम सुनियो साथ, प्रगट लीला करी प्राणनाथ । कोई मन में ना धरियो रोष, जिन कोई देओ महामती को दोष || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -13
- ता कारन दुख देत हैं, दुख बिना नींद न जाए । जिन अवसर मेरा पिउ मिले, सो अवसर नींद गमाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -16, चौ -7
- ता कारन बानी बेहद, केहे नींद टालों । ना देऊं सुपन पसरने, चढ़या जेहेर उतारों || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -157

- ता बीच चौड़े दो चबूतरे, ऊपर हरा लाल दरखत । छाया बराबर चबूतरे, ए निपट सोभा है इत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -83
- ता सुख को कहा कीजिए, जो देखलावे धरम राए । मैं वह दुख मांगो पिउपें, पिउ सों पल पल रंग चढ़ाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -16, चौ -11
- ताए नारायन कर सेवहीं, ऐसी ए कुफरान । पीर जैसे मुरीद तैसे, एक रस ए निरवान || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -40
- ताए रूहअल्ला मारसी, करसी दुनियां साफ । आखिर उमत महंमदी, करसी आए इंसाफ || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -41
- ताए हर भात रंज पोहोंचाया जिन, सो लटके बीच सूली अगिन । चुगलखोर काटे हाथ पांऊं, और सखती दिलों को लगे घाउ || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -28
- ताए होसी मान धनीयको, साथ मिने रंग लाल । उठसी हंसती हरखमें, पाँउ दे पड़ताल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -9
- तांजे मुकाबिल न थिए, मूं थी छुटे न की । पांण वतन बिंनीजो हिकडो, तूं मुंहजो पिरी || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -83
- तांजे मूं कूडी करिए, त हितरो कजाडो के के । त हेडा कागर सभनी, कुरे के लिखे || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -16
- ताडो कुंजी ना दर उपटण, समझाए डिंनी सभ तो । बेठा आयो म दिलमें, जी जांणो ती गडजो || ग्रं - सिंधी, प्र -12, चौ -1
- ताण अवला अतांग पूरा, आमलो अवलो एह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -10
- ताण्यूं तमारूं सं करे, जेने लाग्यो छे चोलनो रंग । साध कहावी असाध थाओ छो, करो छो भजनमा भंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -21
- ताता सीरा फिरे हुकमें, ससि सूर नखत्र । इन जुबां बल हुकम के, केते कहूं विचित्र || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -27
- ताथें अंबार इस्क के, इन जिमी सब जान । हक का कायम वतन, सब अंग इस्क पेहेचान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -18
- ताथें अर्स और दुनी के, तफावत जानवर । कायम और फना की, क्यों आवे बराबर || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -21
- ताथें अव्वल कजा महंमद लग, पीछे अदल क्यों होए । हक तरफ का सिलसिला, क्यों कर पाइए सोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -20
- ताथें इन बीच अगुओं, जिन करी बड़ी हरकत । ए जुलम किन विध कहूं, जिन या विध फेरी मत || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -5
- ताथें कालमाया जोगमाया, दोऊ पल में कई उपजत । नास करे कई पल में, या चित्त थिर थापत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -12

SPJIN

- ताथें गुझ नबी न राखहीं, पर सुनने वाला न कोए । तिन बखत ना रूहें बका की, तो गुझ अर्स जाहेर क्यों होए || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -63
- ताथें जो कछू कह्या मुसाफमें, सो सब आखिरी सिफत । सो क्यों बूझे दिल मजाजी, जिनों पाई न हक मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -120
- ताथें जो मैं हक की, रहत तले हुकम || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -48
- ताथें जो रूह अर्स अजीम की, सो क्यों ना करे उपाए । ले हक सरूप हिरदे मिने, और देवे सब उड़ाए || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -21
- ताथें तूं चेत रूह अर्स की, ग्रहे अपने हक के अंग । रहो रात दिन सोहोबत में, हक खिलवत सेवा संग || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -67
- ताथें दई नेक फरामोसी, रूहों को मांहें अर्स । हाँसी करने इस्क की, देखें कौन कम कौन सरस || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -144
- ताथें नेक कहूं नूर बीच का, नूर भोम तले खिलवत । हक हादी नूर मोमिन, ए नूर गंज हक वाहेदत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -2
- ताथे पल पल में ढिग होइए, सुख लीजे जोस इस्क । त्यों त्यों देह दुख उड़सी, संग तज मुनाफक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -9
- ताथें फेर फेर बरनन, करें हक बका सूरत । हुकम इलम यों केहेवहीं, कोई और न या बिन कित || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -18
- ताथें बड़ी हकीकत मोमिनों, बड़ी मारफत लज्जत । मोमिन लीजो अर्स दिल में, ए नेक हुकम कहावत || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -40
- ताथें बरनन इन दिल, अर्स हक का होए । इस्क हक के से जल जाए, और जरा न रेहेवे कोए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -111
- ताथें बरनन क्यों करूं, किन विध कहूं सिनगार । ए सोभा हक सूरत की, काहूं वार न पार सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -22
- ताथें महामत कहे ए मोमिनों, क्यों कहे जुबां इन देह । रूहअल्ला खोले अन्तर, लीजो लज्जत सब एह || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -164
- ताथें मैं इन धनी की, करत हक का काम । ए खेल खुसाली लेय के, जाग बैठे इत धाम || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -49
- ताथें यों दिल आई हमको, जिन कोई संसे रहे तुमको । एक प्रवाही वचन यों कहे, मुख थें कहे पर अर्थ ना लहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -35, चौ -4
- ताथें रस तो सब एक है, तामें अनेक रंग । कलंगी दुगदुगी ठौर अपने, करत माहों मांहें जंग || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -74
- ताथें सिफत में क्यों करूं, अर्स अजीम की ख्वाब में इत । एता भी कहूं मैं हुकमें, और केहेने वाला न कित || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -20

- ताथें सुख और अंगों के, सो भी लिए दिल चाहे । ना तो श्रवन ताबे कई गंज हुए, ताको एक गुन दिल न समाए || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -40
- ताथें हक लेत पेच हाथ में, कोमल अंगुरियों । गौर अंगुरियां पतली, मीठा सोभे मुंदरियों || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -42
- ताथें हिरदे आतम के लीजिए, बीच साथ सरूप जुगल । सुरत न दीजे टूटने, फेर फेर जाइए बल बल || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -46
- ताथें हुई बड़ी उरझन, सो सुरझाऊँ दोए || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -44
- ताथें हुकम के सिर दोस दे, बैठ न सकें मोमिन । अर्स दिल खुदी से क्यों डरें, लिए हक इलम रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -19
- तान तीखे आड़े उलटे, और लेत भमरियां जल । मिने मछ लड़ाइयां, यामें लेवें सारे निगल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -9
- तान तीखे ग्यान इलम के, दुन्द भमरियां अकल । बहें पंथ पैडे आड़े उलटे, झूठ अथाह मोह जल || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -2
- तान मान कई रंग करो, अलापी करो किरंतन । आप रीझो औरों रिझाओ, पर बस न होए क्यों ए मन || ग्रं - किरन्तन, प्र -14, चौ -6
- ताना बाना रंग रेसम, जवेर का सब सोए । बेल फूल बूटी तो कहूं, जो मिलाए समारे होए || ग्रं - सिनगार, प्र -10, चौ -7
- तापर क्योहरी एक, जल पर पाट कठेड़ा विसेक । चारो थंभों के जो नंग, झलके माहें जल के तरंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -20
- तामस माहें तामसियो, एणी वातडी कहीं न जाय । कहे इंद्रावती सुणो रे साथजी, वाले एम कीधां अंतराय || ग्रं - रास, प्र -31, चौ -7
- तामस राजस स्वांतस, चलें मांहें गुन तीन । वचन अनुभव इस्क, हुआ जाहेर आकीन || ग्रं - किरन्तन, प्र -85, चौ -17
- तामें नंग कहूं केते जरी, तिन फन्दन में कई रंग । रंग रंग में कई किरने, किरन किरन कई तरंग || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -29
- तामे फल श्री भागवत, सुकजी मुख भाख । पाती ल्याया बेहद की, साथ की पूरी साख || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -24
- तामें बड़े जीव मोह जल के, मगर मच्छ विक्राल । बड़ा छोटे को निगलत, एक दूजे को काल || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -3
- तामें बेर एक बांटे की कही, पिया गुन एते में तेते किए सही । ए गुन गिनते मेरा कारज सरया, आतम मूल सख्य हिरदे में धरया || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -43
- तामें सिफत सोफी महंमद की, याकी गरीब गिरो की सिफत । सो करसी कायम त्रैलोक को, एही खावंद आखिरत || ग्रं - किरन्तन, प्र -121, चौ -2

- तारतम अंग थयो विस्तार, उदर आव्या बुध अवतार । इछा दया ने आवेस, एणे अंग कीधो प्रवेस || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -22
- तारतम का जो तारतम, अंग इन्द्रावती विस्तार । पैए देखावे पार के, तिन पार के भी पार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -72
- तारतम का बल कोई न जाने, एक जाने मूल सख्प । मूल सरूप के चित्त की बातें, तारतम में कई रूप || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -55
- तारतम के उजाले कर, रोसन कियो इन सूल जी। कई कोट ब्रह्मांड देखाई माया, पाया अंकूर पेड़ मूल जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -35
- तारतम के सुख साथ आगे, बिध बिध पियाने कहे । पीछे ए सुख इंद्रावती को, दया कर सारे दिए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -50
- तारतम जोत उद्दोत है, तिनथे कहा होए। एक सुपन दूजा वतन, जीव देखे दोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -128
- तारतम जोत उद्योत छे, तेणे सूं थाय । एकी द्रष्टे घर जोइए, बीजी माया जोवाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -106
- तारतम तणा विचार, कोण करी देसे हेत । केमने सांभलसूं रे, वृज रास अखंडना विवेक || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -39
- तारतम तणे अजवास, पूरण मनोरथ कीधां साथ । तम तणे चरण पसाय, जे उत्कंठा मनमां थाय || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -11
- तारतम तणो विचार करो रे, पेहेलो फेरो थयो केही पेर । केणी पेरे मनोरथ कीधां, जाग्या केही पेरे घेर || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -7
- तारतम तृतां न्हार विचारे, जा पिरी आंदो तो कारण । हेतरा भट बरंदे मथे, तोके अजां सा न वंजे घारण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -14, चौ -10
- तारतम तेज प्रकास पूरण, इंद्रावतीने अंग । ए मारूं दीधूं में देवाय, हूं इंद्रावतीने संग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -65
- तारतम तेज प्रकास पूरन, इंद्रावती के अंग । ए मेरा दिया मैं देवाए, मैं इंद्रावती के संग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -65
- तारतम देख विचार के, पिउ ल्याए बेर दोए । एती आग सिर पर जली, तूं रह्या खांगडू होए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -8
- तारतम नूर प्रगट्या, तिन तेजें फोरयो आकास । लागी सिखर पाताल लो, अब रहे ना पकरयो प्रकास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -8
- तारतम पख दूजा कोई नहीं, बिना साथ सब सुपन । जो जगाऊं माया झूठी कर, धाख रहे जिन मन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -164
- तारतम पख बीजो कोई नथी, साथ विना सह सुपन । जगबुं माया खोटी करी, धाख रखे रहे मन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -142

- तारतम पखे विछोडो नहीं, सुपनमां माया जोइए सही । सुपर विछोडो पण धणी नव सहे, तारतम वचन पाधरा कहे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -11, चौ -5
- तारतम रस पाई करी, साथ घेर पोहोंचाई । धंन धंन कहिए तारतम, जेणे थयूं अजवायूँ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -138
- तारतम रस बेहद का, सब जाहेर किया। बोहोत विधे सुख साथ को, खेल देखते दिया || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -136
- तारतम रस वाणी करी, हूं पाऊं जेहेने । जेहेर चढ्यूं होय भोमनो, सुख थाय तेहेने || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -115
- तारतम रस वानी कर, पिलाइए जाको । जेहेर चढ्या होए जिमी का, सुख होवे ताको || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -137
- तारतम लई श्री राज पधारया, थयूं ते सर्वने जाण । सखियो कहे अमें आवी ने मलसूं, मलिया ते मूल एधाण || ग्रं - किरन्तन, प्र -124, चौ -5
- तारतम वचन कहूं वली फरी, तमने कहयूं छे अनेक विधे करी । वली तमने कहूं प्रकास, सुणजो एक मने ग्रही स्वांस || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -21
- तारतम सब समझहीं, धाम सैयां हम बेहेन । तित भी ब्रोध छूटा नहीं, ए भी लगे दुख देन || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -15
- तारतम सूरज प्रगट्यो, सकल थयो प्रकास । लागी सिखरो पाताल झलक्यो, फोडियो आकास || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -45
- तारतमना सुख साथ आगल, विध विधना वाले कीधां । पछे ए सुख एकली इंद्रावतीने, दया करी धणिए दीधां || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -50
- तारतमनूं अजवालू लईने, वालो आव्या छे बीजी वार जी । फोडी ब्रह्मांडने पाडयो मारग, आंही अजवालूं अपार जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -34
- तारतमनो जे तारतम, अंग इंद्रावती विस्तार । पैया देखाड्या सारना, तेने पारने वली पार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -71
- तारतमनो बल कोई न जाणे, एक जाणे मूल सरूप । मूल सरूपना चितनी वातो, तारतममां कई रूप || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -55
- तारतमे रस बेहद तणो, सर्वे प्रगट कीधो । घणी विधे सुख साथने, माया जोतां दीधो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -114
- तारी अरवाहें सबन की, चौदे तबक की सष्ट । अवतार तीर्थंकर हो गए, किन तारे ना गछ इष्ट || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -41
- तारीख तीन ब्रह्मांड की, केती हो कर हेत । नींद एक आधी दूसरी, तीसरी में सावचेत || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -7
- तारीफ ईसा मेंहेंदी की, सो इन जुबां कही न जाए। पेहेचान रसूल खुदाए की, अर्स वतन दिया बताए || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -87

SPJIN

- तारीफ काजी कजाए की, क्यों कहूं या मुख । नाबूद को कायम किए, दिए रूहो कायम सुख || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -88
- तारीफ महंमद मेंहेंदी की, ऐसी सुनी न कोई क्यांहें । कई हुए कई होएसी, पर किन ब्रह्मांडों नांहें || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -43
- तारीफ रसूल की तो करूं, जो इन जिमी का होए । या ठौर बात जो नूर पार की, कबहूं ना बोल्या कोए || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -18
- तारे केहेवू होय ते केहे रे केहे, लाभ लेवो होय ते ले रे ले । तारतम कहे छे आ रे आ, हजार वार कहूं हां रे हां || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -35, चौ -15
- ताल ऊपर मोहोलात जो, आठ पहाड़ तले जो इन । मोहोल उपले आकास लों, किया निपट नूर रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -3
- ताल को बीच लेय के, मिल्या धाम दिवालों आए । कई मेवे केते कहूं, अगनित गिने न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -2
- ताल पाल बन गिरदवाए, ऊपर कई मोहोल देखत । सो क्यों छोड़ें हक कदम को, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -27
- ताल बीच टापू बन्यो, मोहोल बन्यो तिन पर । तिन गिरदवाए जल है, खूबी होज कहूं क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -7
- ताल में द्वार लग लग, पोरें बनी बीच पाल । झलकत है थंभ अगले, सोभा लेत है ताल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -86
- तालब तो भी तुमसे, इस्क नहीं तुम बिन । सब्द सुख भी तुमसे, तुमहीं दिया दरसन || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -29
- ताला द्वार कजाए का, आए खोलसी जब । कयामत रोसन करके, मिल भेले चलसी सब || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -65
- ताला द्वार न कुंजी खोलना, समझाए दई सबों आप । दिल अपने में हक बसें, ज्यों जाने त्यों कर मिलाप || ग्रं - सिंधी, प्र -16, चौ -1
- तासों महामत प्रेम ले तौलती, तिनसों धाम दरवाजा खोलती । सैयां जाने धाम में पैठियां, ए तो घरही में जाग बैठियां || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -196
- तित कई विध रस उपजावें, कई विलास मंगल मिल गावें । कई हँस हँस ताली देवें, यों कई बिध आनंद लेवें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -121
- तित कानों सुने जाएँगे, ए जो चौदे तबक । कोई हमारे अर्स की, तरफ न पावे हक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -41
- तित पोहोंच के सुध दई तुमें किन, बुजरकी दई इत इन । निहायत इस रोज की कोई न पावे, ए पातसाह पुरसिस का देखावे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -23, चौ -6
- तित पोहोंच्या मेरा मासूक, कई गझ बातें करी हजूर । सो फिस्या तुम रूहों वास्ते, आए जाहेर करी मजकूर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -84

- तिन अगुओं बांधी दुनियां, किया जोर जब्द । वैर लगाया या विध, कोई सुने न काहू को सब्द || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -38
- तिन अच्छी थें भी ठौर अच्छी, जाए कहिए हिंदुस्तान । जहां मैंहेंदी महंमद आए के, जाहेर किया फुरमान || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -5
- तिन अनी पर दूजी अनी, सोभित सिंघोड़ा सुपेत । ऊपर पांखें दोऊ फिरवली, बीच छेद्र सोभा दोऊ देत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -149
- तिन आगे भी ना कहे, जो हक के खबरदार । पर कहा कहूं मैं तिनको, जो बाहेर करें पुकार || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -11
- तिन ऊपर टोपी बनी, ऊपर चढ़ती अनी एक । तले कटाव कई रंग नंग, ए अनी फूल बन्यो विसेक || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -173
- तिन कबीले में रेहेना, पूजें पानी आग पत्थर । बेसहूर इन भांत के, जान बूझ जलें काफर || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -38
- तिन कारन तुमें देखाऊं सार, मूल वतन के सब प्रकार । धनी अपनों धनी को विलास, जिनथें उपज अखंड हुओ रास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -3
- तिन की तसल्ली के कारण, महंमद को हुआ इजन । और इसलाम कहे दरवेस, कही खास उमत इन भेस || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -3
- तिन खोली रूह नजर, जाए हकें बखसी बातन । इन राह सोई चलसी, जो हक अर्स दिल मोमिन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -26
- तिन गिरो में सिरदारी, तें मुझे दई मेरे खसम । ऐसी बड़ी करी मोहे खेल में, अब इत उरझ रहया मेरा दम || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -18
- तिन चाह्या दीदार रूहन का, जो रूहें बीच बड़ी दरगाह । ए मरातबा मोमिनों, जिन वास्ते हुकम हुआ || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -70
- तिन जोड़े भी चार थंभ, सो पीत रंग पुखराज । तिन परे चारों पाच के, दोऊ तरफों रहे बिराज || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -117
- तिन डांडों पर छत्रियां, अति सोभित हैं दोए । माहें कई दोरी बेली कांगरी, क्यों कहूं सोभा सोए || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -32
- तिन तारन में जो पुतलियां, माहें नूर रंग रस । पिउ देखें प्यारी नैनों, साम सामी अरस-परस || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -63
- तिन तारों बीच जो पुतली, तिन पतलियों के नैनों माहें । राखू तिन नैनों बीच छिपाए के, कहूं जाने न देऊँ क्या || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -26
- तिन तीन निमाजका बेवरा, एक कही नफसानी । दूजी पाक करत हैं, वजूद जिसमानी || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -39
- तिन दिया धक्का आदम को, अबलीस गेहूं खिलाए । काढ़या प्यारी भिस्त से, दुस्मन संग लगाए || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -12

- तिन दिलों पर सूरज, ऊग्या मारफत । जिनों पाई अर्स इलमें, हक की हिदायत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -100
- तिन नंगों के फूल बने, आगं सिर पटली कांगरी । निलवट से ले राखड़ी, बीच लाल मांग भरी || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -50
- तिन पर नूर अछर, जो कायम जबरूत । तापर अर्स अजीम, जो कह्या बका हाहूत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -68
- तिन पर बंदगी एक करे कोए, सो हजार बंदगियों से नेक होए । तिनको सवाब बड़ा बुजरक, देवे एही साहेब हक || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -11, चौ -4
- तिन परे नूर नूर के परे, नूर मोहोल की गिनती नाहें । नूर जिनसें कई जुदी जुदी, ए नूर आवे न हिसाब माहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -72
- तिन फरेब में रल गैयां, जित पाइए ना इस्क हक । कहें हक मोहे तब पाओगे, जब ल्योगे मेरा इस्क || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -2
- तिन भाग की मैं क्या कहूं, ए जिन दिल कदम बसत । धन धंन कदम धंन ए दिल, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -24
- तिन भिस्त हाल चार का बेवरा, एक मलकूती भिस्त । दो भिस्त अव्वल लैल में, चौथी महंमद आए जित || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -12
- तिन मुरगें झटके अपने पर, ता बूंदोंके भए पैगंमर । एक लाख भए बीस हजार, जिनों पैगाम दिए सिरदार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -3
- तिन में जो दस बरसों फजर, सब दुनियां भई एक नजर । तीस बरस जब अग्यारहीं पर, तब दुनियां सब भई आखिर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -46
- तिन में बाजे कहे बेसुध, तिनको कबूं न आवे बुध । इन में खुदाए किए दोए, कयामत काम दूजे से होए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -20, चौ -4
- तिन रूह के नैन को, किन विध कहं नर तेज । जो हक नैनों हिल मिल रहे, जाके अंग इस्क रेजा रेज || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -16
- तिन रूहों के बीच में, रूह अल्ला सिरदार । सो ए लिखी माहें हदीसों, जो कही परवरदिगार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -32
- तिन वास्ते हमें पैदा किया, दई दूर जुदागी जोर । और नजीक बैठाए सेहेरग से, यों देखाया खेल मरोर || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -53
- तिन सब जिमी में बस्ती, कहं पाइए नहीं वीरान । पातसाही पसुअन की, और जानवरों की जान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -15
- तिन सबों किताबों बीचमें, बिध बिध लिखी कयामत । तिन सबों जिकर करी, आखिर बड़ी सिफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -72
- तिन समें धाख रहीती जोए, अब इत सुख देत हैं सोए। अब सुनो पिउ कहूं गुन अपने, अवगुन मेरे हैं अति घने || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -13

- तिन से अर्स मता क्यों छिपा रहे, जो दिल अर्स कहया मोमिन । एक जरा न छिपे इन से, ए देखो फुरमान वचन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -135
- तिन से कायम होत है, सदरतुलमंतहा जित । होए नाहीं इन जुबां, नूर मकान सिफत || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -78
- तिन हक के दिल का गुझ जो, सो कुंजिएं खोल्या इन । तो बात दुनी की इत कहां रही, कुंजी ऐसी नूर रोसन || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -49
- तिन हक दिल अन्दर पैठ के, माप्या सागर इस्क । इन हक के इलमें रोसनी, सब मापे सागर बेसक || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -16
- तिन हकें मोमिन दिल को, अपना कहया अर्स || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -32
- तिन हर पांखड़ी कई कांगरी, हर कांगरी कई नंग । एक नंग को बरनन ना होवहीं, तो सारे थंभ को क्यों कहूं रंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -33
- तिन हर फौजों कई साहेबियां, करें पातसाहियां अनेक । तिन पातसाहियों की क्यों कहूं, लवाजमें विवेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -64
- तिन हवा हिरस से पैदा हुई, अपनी खाहिसें जे । सो फैल कर जुदे पड़े, ए जो फिरे दुनियां के फिरके || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -16
- तिनका जरा सब नूर में, नूर जिमी बिरिख बाग । नूर फल फूल पात नूर, रूहें निसदिन नूर सोहाग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -2
- तिनकी भी मैं करी चीर, गुन जेती उतारी लीर। अब जिन किनको संसे रहे, तारतम संसे कछू ना सहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -35, चौ -7
- तिनकी भी है तफसीर, सुनियो गिरो मोमिन । मारफत दरवाजा खोलिया, दिल दीजो नजर वतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -121, चौ -7
- तिनथें तीन घाट तरफ बाएं, ताकी जुदी तीनो बनराए । बन बड़ा इनथें भी बाएं, पिया सैयां खेलन कबूं कबूं जाएं || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -22
- तिनमें भी दोए भांत है, एक वासना दूजे जीव । संसा न राखू किनका, मैं सब जाहेर कीव || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -24
- तिनसे राह जुदी हुई, गिरो दोए हुई झगर । एक उरझे दीन जहूद के, उतरी किताबें दूजे पर || ग्रं - किरन्तन, प्र -121, चौ -9
- तिनी के पण न चोए, जे हिन सुखज्यूं आईन । त चुआं कुजाडो तिनके, जे बाहेर धांऊ पाईन || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -11
- तिंनी बी में हिकडी, अची गई म । जे हाल आए इन जो, से जाणे थो सभ तूं || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -22
- तिंनी सांणे विच सरतिए, पोए मिहीणां लधाऊं। न तां चेताणवारिए बंग लाथा, परी परी करे धाऊं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -19

- तिनों तो सस्ता किया, जिनों नहीं भरोसा निदान । या विध आपे अपना, हलका करें कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -49
- तिमर घोर अंधेर काली, अने अंधेरनो नहीं पार । मोह लगे मोहजल भरवू, असत ने आसाधार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -32
- तिमरा भमरा स्वर साधे, गुंजे गान पिया सों चित बांधे । मृग कस्तूरियां घेरों घेर, करें सुगंध बन चौफेर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -51
- तिरछा नेक जो मुसकत, तो मार डारत मुतलक । जो कदी सनमुख होए यों रूह सों, तो क्यों जीवे रूह आसिक || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -18
- तिलक नासिका नेत्र की, केस लवने कान गाल । मुख चौक देख नैन रूह के, रोम रोम छेदे ज्यों भाल || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -49
- तिलक निलाट न किन किया, असल बन्यो रोसन । कई रंग खूबी खिन में, सोभा गिनती होए न किन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -124
- तिलक सोभित रंग कंचन, असल बन्यो सुन्दर । चारों तरफों करकरी, सोहे लाल बिंदी अंदर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -38
- तिलमात्र दुख नव दिए आपणने, जो जोइए वचन विचारी जी । दुख आपणने तोज थाय छे, जो संसार कीजे छे भारी जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -2, चौ -6
- तिवरता कहे हूं बलवंती, जीवने दऊं हूं जोर । वस करी आy धणी तमारो, करूं पाधरा दोर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -108
- तिस वास्ते क्यों भूलिए, हाथ आए अवसर । जो पीछे जाए पछतावना, क्यों आगे देख न चलें नजर || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -4
- तिस वास्ते खेल देखाइया, ए बात दिल में आन । झूठ निमूना देखाए के, रूहों होए हक पेहेचान || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -50
- तिस वास्ते दुनी पैदा करी, दई दूर जुदागी जोर । हमें नजीक लिए सेहेरग से, यों इलमें देखाया मरोर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -1
- तिहां दोडीने आवी मात, देखी कान्हूडानो उतपात । दामणूं लीवू जसोदाए, कान्हजी पाखल पलाए || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -13
- तिहां रोतो रीकतो जाय, रहयो बिरिख जखल भराय । तिहां थी निसरवा कीबूं जोर, पड्यो विरिख थयो अति सोर || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -18
- तिहां लगे वेख वालातणो, मुक्त कंसने दीधी । रास पाछली रामत, लीला जाणजो बीजी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -40
- तीतर लवा कोकिला चकोर, सब्द वाले सामी टकोर । सुआ मैना करें चोपदारी, चातुरी इन आगे सब हारी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -49
- तीन उमत कही खेल में, एक रूहें और फरिस्ते । तीसरी खलक आम जो, ए सब लरें सरीयत जे || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -75

- तीन खूनें तले नासिका, खूना चढ़ता चौथा ऊपर । ए खूबी जाने रूह अर्स की, ए जो अनी आई नमती उतर || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -129
- तीन खूने तिन ऊपर, दो दोऊ तरफों बीच एक । दस दस नंग तिनों में, सो मोमिन कहें विवेक || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -174
- तीन घाट आगू अर्स के, जांबू अमृत अनार । सो अनार पोहोंच्या अर्स को, दो दोऊ भर किनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -80
- तीन छातें चौथी चाँदनी, सब गुरजों पर इत । तले छज्जे जल हाथ लग, ऊपर अति सोभित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -11
- तीन जिनस पैदा कही, ताके जुदे कहे ठौर तीन । करे तीनों को हिदायत महंमद, याको बूझसी महंमद दीन || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -23
- तीन ठौर लीला करी, देखाए तीन ब्रह्मांड । सो तीनों एक पलमें, देखाए के उड़ावसी इंड || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -33
- तीन डांडे जो पीछले, दो तकिए बीच तिन । कई रंग बिरिख बेली बूटियां, ए कैसे होए बरनन || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -30
- तीन तकरार कहे रात के, तिन तीनों के बयान । बृज रास और जागनी, ए कई विध लिखे निसान || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -12
- तीन तीन छज्जे तरफ जल के, छे छज्जे बन पर । अन्दर गिरदवाए मोहोलात, बीच बैठक चबूतर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -14
- तीन नंग रंग गोफने, तिन एक एक में तीन रंग । हीरा मानिक नीलवी, सोभित कंचन संग || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -49
- तीन पुरे तीन मामों के, बसे ठाट बस्ती मिल । आप सूरे तीनों ही, पुरे नंद के पाखल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -18
- तीन फेरे दुलहे पीछे फिरी, चौथे फेरे आगल भई । अब ए लीला सब गावसी, सब मिल करि है सही || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -10
- तीन फौजां तिन होएसी, तुला ताबा साबा की। दुनी जिमी सब खाए के, तीर आसमान चलावसी || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -4
- तीन बेटे नूह नबीय के, बेर तीसरी दुनी इनसे । हक फुरमान गिरो ऊपर, महंमद ल्याए इनमें || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -16
- तीन ब्रह्मांड जो अब रचे, ब्रह्मसृष्ट कारन । आप आए तिन वास्ते, सखी पूरे मनोरथ तिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -2, चौ -16
- तीन ब्रह्मांड लीला तीन अवस्था, खिनमें देखे खेले संग आधार । धनी मैं अरधांग साथ अंग मेरा, इन घर सदा हम नित विहार || ग्रं - किरन्तन, प्र -54, चौ -20
- तीन यारों के जुदे हुए, करके बीच करार । हमहीं सुनत जमात हैं, खासी उमत खासे यार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -18

- तीन रंग जरी फुन्दन, गोफनड़े नंग जड़तर । बारीक नंग नीले नकस, ए बरनन होए क्यों कर || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -47
- तीन रूहों की तफावत, कौन कौन ठौर निदान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -10
- तीन लीला माया मिने, हम प्रेम विलसी जेह । ए लीला चौथी विलसते, अति अधिक जानी एह || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -74
- तीन सरीर उड़ावें मुख थे, आप होत हैं ब्रहम । पूछे तें कहें हम भोगवे, प्रालब्ध जो करम || ग्रं - किरन्तन, प्र -31, चौ -7
- तीन सरूप कहे वेद ने, बाल किसोर बुढ़ापन । बृज रास प्रभात को, ए बुधजी को रोसन || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -69
- तीन सरूप खुदाए के कहे, तीनों तकरार रूहों बीच रहे । एक बृज बाल दूजा रास किसोर, तीसरे बुढ़ापनमें भोर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -28
- तीन सरूप चढ़ती उतपनी, चढ़ती चढ़ती कही रोसनी । खोली राह आखिर बाग की, तंग सेती पोहोंचे बुजरकी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -47
- तीन सूरत महंमद की, गुझ हक का जाने सोए । हक जानें या निसबती, और कोई जानें जो दूसरा होए || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -39
- तीन सूरत महंमद की, मिल करी ऐसी सिफात । उमतें पोहोंचाई दोऊ वतनों, दुनी सब करी हैयात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -119
- तीन सूरत महंमद की, मिल फरमाया किया । भिस्त खोल दुनी फानी को, कायम सुख दिया || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -115
- तीन सृष्ट कही वेद ने, उमत तीन कतेब । लेने न देवे माएने, दिल आड़ा दुस्मन फरेब || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -40
- तीन हजार छे सै बने, मेहेराव बराबर । सोभा हांसों चालीस, इन जुबां कहूं क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -74
- तीनों गोफने धुंधरी, बेनी गूंथी नई जुगत । बल बल जाऊं देख देख के, रूह होए नहीं तृपित || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -50
- तीनों जोधा बड़े जोरावर, हम तीनों की राह एक । धनी आतम से क्यों ए न छूटे, जो पड़े विघन अनेक || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -54
- तीनों तरफ बन डारियां, करत छाया जल पर । एक तरफ के झरोखे, जल छाए लिया अन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -7
- तीनों तरफों कठेड़ा, ऊपर छाया दरखत । सो छाया मोहोलों पर छई, ए रूहें लेवें लज्जत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -4
- तीनों तरफों कठेड़ा, नेक नेक पड़साल । चारों तरफ उतरती सीढ़ियां, पानी बीच विसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -8

- तीनों तरफों गुरज के, छज्जे बने यों आए । उपरा ऊपर भी तीन हैं, क्यों कहूं सोभा ताए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -13
- तीनों तरफों ताल के, जुदी जुदी मोहोलात । बड़े छज्जे तरफ पहाड़ के, दोऊ बाजू दरखतों छात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -7
- तीनों तरफों मंदिर, आगू दो दो थंभों की हार । बड़ा मोहोल अति सोभित, सुन्दर अति सुखकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -44
- तीनों फरिस्तों का बेवरा, लिख्या बीच कुरान । सो खोल हकीकत मारफत, हादी मोमिन देवें पेहेचान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -1
- तीनों भोम चबूतरे, और फिरते मन्दिर द्वार । बीच बैठक चबूतरे, बने थंभ तरफ हार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -19
- तीनों वेदों ने यों कया, वेद अथर्वन सबको सार । ए वेद कुली में आखिर, त्रिगुन को उतारे पार || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -32
- तीनों सूरत महंमद की, तिन जुदी जुदी करी पुकार । रूहें फरिस्त लेवें सब साहेदियां, जो लिख भेजी परवरदिगार || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -7
- तीर कह्या तीन अंकुड़ा, छाती छेद न गया चल । रह्या सीने बीच आसिक के, हुआ काढ़ना रूहों मुस्किल || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -42
- तीरथ ते जे एक चित कीजे, करम न बांधिए कोय । अहनिस प्रीते प्रेमसूं रमिए, तीरथ एणी पेरे होय || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -23
- तीर्थंकरों सबों खोजिया, और खोज करी अवतार । तो बुजरकी इत कहाँ रही, जो कायम न खोले द्वार || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -38
- तीस चेहेबच्चे ऊपर, बने जो झरोखे । चार चार द्वार हर मंदिरों, मुख क्यों कहूं सोभा ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -106
- तीस वरक हुए नाजल, ऊपर जामें कहे असल । बीच किताब ल्याए इद्रीस, पीछे आदम के सौ बरीस || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -16, चौ -4
- तीस हजार और गुझ कहे, ताकी आई न किन को बोए । जबराईल से छिपाए, ए आखिर जाहेर किए सोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -69
- तीसमें सिपारे लिखी ए बिध, सो क्यों पावे बिना हिरदे सुध । नूह नबी के बेटे तीन, तिन में स्याम सलाम अमीन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -26
- तीसरा हार अंग देखिया, अति उज्जल जोत मोतिन । जानों सबथें ऊपर, एही है रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -18
- तीसरा हिस्सा एक हांस का, ए जो दस झरोखे । द्वार थंभ आगूं इन, ना दिवाल बीच इनके || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -30
- तीसरी गिरो सरीयत से, जो करसी जेहेल जिदाल । सो समझेंगे जिदैसों, क्या करें पड़े बंध दज्जाल || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -65

- तीसरी भोम जो नूर की, जित है नूर पड़साल । हक हादी रूहें नूर बैठक, आवें दीदारें नूर-जलाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -131
- तीसरी भोम मोहोल सिनगार, और बैठ के आरोग पौढ़न रे । सुखपाल बैठ बन सिधावते, कौन केहेसी पीछला पोहोर दिन रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -78
- तीसरे जंजीरों करी जिकर, पोहोंचे न चौदे तबकों की फिकर । सोए परोवनी मोतियों मांहें, खुदा बिन दावा किनका नाहें || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -2, चौ -2
- तीसरे जो कजा करी, अपनी जाहिल अकल । सो तो कहया दोजखी, आगे कजा न सकी चल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -5
- तीसरे सिपारे बड़ा जहूर, इमाम सुलतान का मजकूर । महमूद गजनवी सुलतान, मिले इमाम सुख हुआ जहान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -1
- तीसरे सिपारे लिखे ए बोल, पढ़े न देखें दिल आंखें खोल । नूह का बेटा बुजरक स्याम, जाको दोनों जहान में रोसन नाम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -31
- तुझमें बल है सावचेती, चित चेतन अति रोसन । परआतम बस कर दे आतमां, ना होए अंतराए एक खिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -108
- तुझमें भी तेज है उन जोत का, और वाही कमल की बास रे । वह तेज फिरते रे तूं तेज, क्यों न पोहोंच्या जोत प्रकास रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -37
- तुम अपनी जान दया कर, धनी लेवे त्यों लई खबर । माया गम सास्त्रों माहें, सो त्रिगुन भी समझत नाहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -3
- तुम आइयां छल देखने, भिल गैयां मांहें छल । छल को छल न लागहीं, ओ लेहेरी ओ जल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -11
- तुम आइयां छल देखने, भिल गैयां मांहें छल । छल को छल न लागहीं, ओ लेहेरी ओ जल || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -11
- तुम आए खेल देखन को, सो किया कारन तुम । ए खेल देख पीछे फिरो, आए बुलावन हम || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -38
- तुम आए तिन जिमीय में, जिनमें न काहूं सबर । पेहेलें बिन मांगे दई तुमको, अब होसी सब खबर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -134
- तुम आए सब आइया, दुख गया सब दूर । कहे महामती ए सुख क्यों कहूं, जो उदया मूल अंकूर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -11
- तुम आए सब आइया, दुख गया सब दूर । कहे महामती ए सुख क्यों कहूं, जो उदया मूल अंकूर || ग्रं - सनंध, प्र -10, चौ -11
- तुम आंकड़ी न पाई इत अखण्ड कहया, तोए न खुले रे द्वार । तुम समझे नहीं बानी सुकदेव की, तो हिरदे रहयो रे अंधकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -13, चौ -13
- तुम आप में रहियो साहेद, और गवाही फरिस्ते । मैं भी साहेद तुम में, तुम जिन भूलो सुकन ए || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -52

- तुम आपको ना करो पेहेचान, बोहोत ताए कहिए जो होए अजान । तुम जो हो इन घर के प्रवान, सुनते क्यों ना होत गलतान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -18
- तुम इत भी माफक इस्क के, देखियो कर सहूर । हिसाब न सोभा मुकट की, ए जुबां क्या करे मजकूर || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -49
- तुम कबूल में तरबियत पाई, खसलत तुमारी इन में आई। भी देखो तुम एह वचन, हजरत ईसे जो कहे रोसन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -13, चौ -3
- तुम करत मुझसे दुस्मनी, मैं किया चाहों एक राह । तो जुदे परत कई दीन से, जो दिलों अबलीस पातसाह || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -66
- तुम करो लड़ाई इनसों, मार ट्रक करो दुस्मन जी । फेर वाको उलटाए चेतन करो, ज्यों होवें तुमारे सजन जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -27
- तुम कहोगे कहां खसम, कैसा खेल कौन हम । देसी साहेदी रसूल रूहअल्ला, जो खिलवत करी हम तुम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -58
- तुम कहोगे रसूल को, हम क्यों आए कहां वतन । मलकूत बिना कछू और है, आगे तो खाली हवा सुंन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -60
- तुम कहोगे हम बेसुध हुए, दिल में रही ना खबर । ना कछू रही सो अकल, तो इस्क आवे क्यों कर || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -92
- तुम कारन में कह्या दृष्टांत, जीव सो वचन विचारो एकांत । बैकुंठ ठौर तित का ग्यान, केहेने वाला श्री भगवान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -63
- तुम किया होसी हम कारने, पर ए झूठी जिमी निरास । ऐसा दिल उपजे पीछे, क्यों ले मुरदा स्वांस || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -52
- तुम कूदत हो अर्स में, अपने इस्क के बल । तब सुध जरा ना रहे, रहे न एह अकल || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -17
- तुम केवल काल तत्व ग्यानी, ब्रह्म ग्यानी भए । सब दरवाजे खोजे साधो, पर सुन्य छोड़ कोई ना गए || ग्रं - किरन्तन, प्र -32, चौ -7
- तुम खावंद हमारे सिर पर, अर्स अजीम बका वतन । हम क्यों भूलें सुख कायम, तुमारे कदमों हमारे तन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -4
- तुम खेल देखन कारने, किया मनोरथ एह । ए माप्या तुम वास्ते, कोई राखू नहीं संदेह || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -4
- तुम खेल में आए वास्ते, करी कायम जिमी आसमान । तिन सब के खुदा तुमको किए, बीच सरभर लाहूत सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -126
- तुम गुन किए मोसों अति घन, पर अलेखे मेरे अवगुन । तुम गुन किए मोसों पेहेचान कर, मैं अवगुन किए माया चित धर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -18
- तुम जाए झूठे खेल में, कर बैठोगे जुदे जुदे घर । में आए इलम देऊं अर्स का, पर तुम जागो नहीं क्योंए कर || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -25

- तुम जान बूझ मोहे मोहीसों, छोड़ के नेहेचल सुख । मैं तो आई भले अवसर, पर भूले सो पावे दुख || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -9
- तुम जानते थे मलकूत को, हम सिर एही बुजरक । तिनको न बका ख्वाब में, सो इत पाया सबों हक || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -6
- तुम जानो हम जाहेर, होएं जुदे हक बिगर । हम तुम अर्स में एक तन, तुम जुदे होए सको क्यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -71
- तुम जुदे जिन पड़ो, रहियो गिरोह साथ । सो होएगा दोजखी, जो छोड़सी जमात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -95
- तुम जो अरवाहें अर्स की, पर छलें किए हैरान । बाहेर देखना छोड़ के, तुम अंतर करो पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -2
- तुम जो अरवाहें अर्स की, साथ हक जात निसबत । ए जो दोस्ती हक हमेसगी, बीच खिलवत के वाहेदत || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -6
- तुम ज्यादा प्यार कहया अपना, हादी कहे मेरा अधिक । मैं कहया प्यार मेरा ज्यादा, तब तुम उपजी सक || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -11
- तुम झूठ को साजो समारो, जो झूठा होए जासी । सांचे सुख देवे जो सांचा, सो कबे ओलखासी || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -9
- तुम ढूंढ़ो अपने खिलके मांहें, तामें तो साहेब आया नाहें । जिनको तुम केहेते काफर जात, सो सबकी करसी सिफात || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -21
- तुम तीनों जोधा भए क्यों उलटे, भए माया के दास । जब जीवनजीं मिले जीवको, तब क्यों न कियो उलास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -52
- तुम तुमारे गुन ना छोड़े, मैं बोहोत करी दुष्टाई । मैं तो करम किए अति नीचे, पर तुम राखी मूल सगाई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -11
- तुम दई जो पिया मोहे निध, सो तो संगियों को कही सब विध । और हिरदे जो मोहे चढ़ाई, सो भी देऊ इनों को दृढ़ाई || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -8
- तुम दई भिस्त बका ब्रह्मांड को, तिनमें जरा न सक । किए नाबूद से आपसे, तो भी गुन जरा न देख्या हक || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -129
- तुम दुख पाया मुझे सालहीं, अब सब सुख तुम हस्तक । दिया तुमारा पावहीं, दुनियां चौदे तबक || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -34
- तुम दुख पाया मुझे सालहीं, अब सुख सब तुम हस्तक । दिया तुमारा पावहीं, दुनियां चौदे तबक || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -6
- तुम दुलहा मैं दुलहिनी, और ना जानूं बात । इस्क सों सेवा करूं, सब अंगों साख्यात || ग्रं - किरन्तन, प्र -62, चौ -17
- तुम देखत मोहे इन इंड में, मैं चौदे तबक से दूर । अंतरगत ब्रह्मांड ते, सदा साहेब के हजूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -65, चौ -18

- तुम देखो दिल में, अरवाहें जो अर्स । हक देखावत नजरों, घड़नाले नेहेरें दस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -16, चौ -1
- तुम देखो भांत धनीय की, कई विध करी चेतन । सबों सुनाए कहे इंद्रावती, जागो चलो वतन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -21
- तुम देखो साथ सुपन में, खेल खेले ज्यों । एक विधे साथ जागिया, खेल त्यों का त्यों || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -36
- तुम देख्या तिन मुलक को, जित जरा ना इस्क। इत बेसक क्यों होवहीं, जित खबर न पाइए हक || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -76
- तुम नाहीं इन छल के, और छल को जोर अमल । सांची को झूठी लगी, ऐसो छल को बल || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -10
- तुम नाहीं इन छल के, छल को जोर अमल । सांची को झूठी लगी, ऐसो छल को बल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -10
- तुम निरखो सत सरूप, सत स्यामाजी रूप अनूप । साजो री सत सिनगार, विलसो संग सत भरतार || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -3
- तुम पनधारी आतम निवेदी, बानी न देखो विचारी । अजूं ना मानो तो इत आओ, मैं देखाऊं लीला तुमारी || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -20
- तुम पर भेजोंगा फुरमान, मासूक के हाथ । अर्स कुंजी नूर रोसन, भेजों रूह मेरी साथ || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -56
- तुम पर मेरे है मुद्दार, ऐसी पीठ क्यों दीजे । आतम संग मिलाए धनीजी, धंन धंन मोहे कीजे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -69
- तुम पर वार डारूं जीवसो देह, तुम किए मोसों अधिक सनेह । मैं वारने लेऊं तुम पर, मैं सुरखरू होऊंगी क्यों कर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -8
- तुम बका सुख छोड़ के, खेल मांग्या हाँसी को । सो देखो हकीकत अपनी, हकें भेजी फुरमान मों || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -83
- तुम बड़ा इस्क कहया अपना, मेरा न आया नजर । खेल देखाया तिन वास्ते, अब देखो सहूर कर || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -13
- तुम बंध पड़े जिन कारने, किया आप सों ज्यों । मुझ जैसे होए मोहे छेतरी, तुमको दई अगिन त्यों || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -5
- तुम बिना लाड़ पूरन कौन करे, इन माया में दूजी बेर देह कौन धरे । तुम मोसों गुन किए अनेक, सो चुभे मेरे हिरदे में लेख || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -7
- तुम बिना हम कबहूं, रेहे ना सकें एक दम । क्यों होसी हम नादान, जो ऐसा करें जुलम || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -32
- तुम बैकुंठ जमपुरी एक कर देखी, तब तो सास्त्र पुरान सब भान्या । सुकदेव व्यास के वचन बिना, कौन कहे मैं जान्या || ग्रं - किरन्तन, प्र -32, चौ -3

- तुम बैठाए बैठत हों, मुझ में नहीं ताकत । बैठी कदम तले हक, ए भी तुम कहावत || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -79
- तुम बैठे अपने वतन में, खेल देखत मिने ख्वाब । हम आए तुमें देखावने, देख के फिरो सिताब || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -39
- तुम बैठे जिमी नासूती, आड़ा मलकूत जबरूत । सात आसमान हवा बीच में, में बैठा ऊपर लाहूत || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -81
- तुम बैठे मेरे कदम तले, कहूं गईयां नाहीं दूर । ए याद करो इन इस्क को, जो आपन करी मजकूर || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -45
- तुम माएने ऊपर के यों लिए, किस्से कुरान के पेहेले हो गए। जो जमाने हुए मनसूख, ए रोसनी तित क्यों डारो चूक || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -23
- तुम मांगी धनी पे करके खांत, ए जो धनीएँ करी इनायत । याद करो सोई साइत, ए जो बैठके मांग्या तित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -190
- तुम मांगी बीच ख्वाब के, जित आगे अकल चलत नाहें । धनी देवें आप माफक, याकी सिफत न होए जुबाएँ || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -133
- तुम मांगी है बुजरकी, तिन से कोट गुनी दई। दे साहेबी ऐसे अघाए, चाह चित्त में कहूं न रही || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -131
- तुम माहों माहे रहियो साहेद, इत मैं भी साहेद हों। ए जिन भूलो तुम सुकन, मैं फुरमान भेजों तुमको || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -28
- तुम माहों माहे रहियो साहेद, मैं केहेता हों तुम को । याद राखियो आप में, इत में भी साहेद हों || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -4
- तुम मुख नीचा होएसी, आगू सब मोमिन । ए हांसी सत वतन की, कोई मोमिन कराओ जिन || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -15
- तुम मुख नीचा होएसी, आगू सैयां सबन । ए हांसी सत और की, कोई सैयां कराओ जिन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -15
- तुम मोहे ऐसा देखाइया, एक वाहेदत में हैं हम । दूजा कछुए है नहीं, बिना तुम तले कदम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -74
- तुम रूहें जात नासूत में, जाओगे मुझे भूल । तब तुम ईमान ल्याइयो, मैं भेजोंगा रसूल || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -27
- तुम रूहें नूर मेरे तन का, इन विध केहेवे हक । बोहोत प्यारी बड़ी रूह मुझे, मैं तुमारा आसिक || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -7
- तुम रूहें मेरे नूर तन, सो वाहेदत के बीच एक । इस्क बेवरा बका मिने, क्यों पाइए ए विवेक || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -12
- तुम लई खबर हमारी ततखिन, ले आए तारतम देखाया वतन । पिया हांसी करसी अति जोर, भुलाए मायाएं कर बैठाए चोर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -47

- तुम लिख्या फरमान में, हक अर्स मोमिन कलूब । सो सुकन पालो अपना, तुम हो मेरे मेहेबूब || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -7
- तुम व कबीले मेरे के, जो कोई रूहे मुस्लिम हैं || ग्रं - सनंध, प्र -34, चौ -4
- तुम वतन में धनीयसों, क्यों करसी बात अंधेर । रेहेसी उमेदां मन में, ए न आवे समया और बेर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -16
- तुम सब जानत हो, तुमको कही खबर । ऐसी बात तुमारी बुजरक, सो भूल जात क्यों कर || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -3
- तुम सब मिल दौड़े अखंड सुखको, सुन प्रेम टीका के वचन । अर्थ पाए बिना प्रेमें ले पटके, कहूं उलटाए दिए रे अगिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -13, चौ -16
- तुम सब रूहें मेरे तन हो, तुम सों इस्क जो मेरे दिल । ए क्यों कर पाओ बका मिने, जो सहूर करो सब मिल || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -7
- तुम समझ के संगत कीजो रे बाबा, मुझ जैसा दिवाना न कोई । जाही सों लोक लज्या पावे, सो तो मोहे बड़ाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -19, चौ -1
- तुम सांचे सिध साध भगवत तुमको वैष्णवो, सांच सकल संसार । भनत महामत तुम अमर होउ याही में, मैं न कछू यामें निरधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -11, चौ -8
- तुम साथ मेरे सिरदार, एह दृष्टांत लीजो विचार । रोसन वचन करूं प्रकास, सुकजी की साख लीजो विस्वास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -11
- तुम साहेब हमारे ऐसे मासूक, हम ऐसे तुमारे आसिक । तुमको क्यों हम भूलेंगे, और देओगे इलम बेसक || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -58
- तुम सुध पिउ ना आपकी, ना सुध अपनों घर । नाहीं सुध इन छल की, सो कर देऊं सब जाहेर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -17
- तुम सुनो मोमिनों वचन, जो धनिएँ कहे मुझे आए। साथ आया अपना खेलमें, सो लीजो सबे बोलाए || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -44
- तुम सूती धनिएं जगाइया, कया आगे मौत का दिन । कई साख पुराई आपे अपनी, तो भी छूटे न दुख अगिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -77, चौ -8
- तुम स्याने मेरे साथजी, जिन रहो विखे रस लाग । पोउ पकड़ कहे इंद्रावती, उठ खड़े रहो जाग || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -21
- तुम ही आप देखाइया, पेहेचान तुम इलम । तुम हीं दई हिंमत, तुम हीं पकड़ाए कदम || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -29
- तुम ही इस्क देत हो, तुम ही दिया जोस । सोहोबत भी तुम ही दई, तुम ही ल्यावत माहे होस || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -30
- तुम हीं उतर आए अर्स से, इत तुम हीं कियो मिलाप । तुम ही दई सुध अर्स की, ज्यों अर्स में हो आप || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -31

- तुम ही देखाई निसबत, तुम ही देखाई खिलवत । तुम ही देखाया सुख अखण्ड, तुम ही देखाई वाहेदत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -32
- तुम हो अंग मेरे के, जिन देखो माया को मरम जी । धाम धनी आए तुम कारन, तुमें अजहूं न आवे सरम जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -39
- तुम हो सैयां सोहागनी, ए समझ लीजो दिल बूझ । जब सैयां भेली भई, तब होसी बड़ा गूझ || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -20
- तुम हो हमारे धनी, तो पूरी आसा लाख गुनी । इंद्रावती चरनों लागे, कृपा करो तो जागी जागे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -9
- तुमको इस्क उपजावने, करूं सो अब उपाए । पूर चलाऊं प्रेम को, ज्यों याही में छाक छकाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -1
- तुमको देऊँ सुख जागनी, साथजी मेरे आधार । भेख धरे जो वासना, छोटे बड़े नर नार || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -1
- तुमको बल जो खुल्या होता इन बानी का, तो भटकत नहीं रे भरम । इतथें देखो अखंड लीला प्रगट, तब समझत माया को मरम || ग्रं - किरन्तन, प्र -13, चौ -15
- तुमको माया लागी होए सत, तुम बिना और सबे असत । इन जिमी ऊपर के लेऊ सब जल, और लेऊ सात पाताल के तल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -6
- तुममें से कोई होएगा ऐसा, जो पोहोंच के करेगा वफा । बीच ज्वानियां आगू ज्वान, बाहेर फेर हुए निदान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -20, चौ -9
- तुमहीं दिल में यों ल्यावत, मैं देखों हक नजर । सो पट तुमहीं से खुले, तुमसे टले अन्तर || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -33
- तुमहीं साथ जगाइया, तुम दई सरत देखाए । तुमहीं तलब करावत, तो दरसन को हरबराए || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -32
- तुमारे गुन की कहा कहूं बात, तुम लाड़ पूरे करके अपन्यात । पिउ ने अपनी जानी परवान, इंद्रावती चरने राखी निरवान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -17
- तुमें अर्स देखाया दिल में, जो खोलो ले कुंजी सहूर । कुलफ फरामोसी ना रहे, अर्स दिल हक हजूर || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -73
- तुमें धनी बिना कौन दूसरा, ए उड़ावे अंधेर । तुम देखो साथ विचार के, जिन भूलो इन बेर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -13
- तुमें नासूत देख दिल उपज्या, करें पातसाही फना में हम । मैं दई पातसाही बका मिने, सो अब देखोगे सब तुम || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -139
- तुमें सुध छल ना अपनी, ना सुध हक वतन । बताए देऊ या विध, ज्यों दृढ़ होवे आप मन || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -17
- तुमें सूती कौन जगावहीं, केहे केहे मगज कुरान । सुध देवे काजी कजाए की, ले माएने करो पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -23

- तूं उलट याको पीठ दे, प्रेम खेल पियासों रंग । ओ आए मिलेंगे आपहीं, जासों तेरा है सनमंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -24, चौ -8
- तूं करत मृतक समान, ऐसी निपट निखर । अब तूं आओ आड़ी माया के, ज्यों निरखू धनी निज घर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -27
- तूं करिए तूं कराइए, तूं पुजाइए पांण । जा मथे गिने तिर जेतरी, सा जोए वडी अजाण || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -53
- तूं कहा देखे इन खेल में, ए तो पड्यो सब प्रतिबिंब । प्रपंच पांचो तत्व मिल, सब खेलत सुरत के संग || ग्रं - किरन्तन, प्र -7, चौ -2
- तूं कितेई भगो न छुटे, अर्स में मूं मांध । लाड पाराइयां पाहिजा, पुजी पल्लो पांध || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -95
- तूं की पारीने वडियं, जे हितरी न थिए तोह । फिरी फिरी मंगाए न डिए, हे के सिर डियां डोह || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -8
- तूं कौन आई इत क्यों कर, कहां है तेरा वतन । नार तूं कौन खसम की, दृढ़ कर कहो वचन || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -6
- तूं कौन आई इत क्योंकर, कहां है तेरा वतन । नार तूं कौन खसम की, दृढ़ कर कहो वचन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -6
- तूं चाइए कर सुणाइए, सभ उमेदूं तो हथ । धणी मूंहजे धामजा, तूं सभनी गाले समरथ || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -47
- तूं जागत है के नींद में, करके देख विचार । बिध सारी याकी कहे, इन जिमी के प्रकार || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -7
- तूं जागत है के नींद में, करके देख विचार । विध सारी याकी कहो, इन जिमी के प्रकार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -7
- तू तां केवल माया रूप पापनी, वोल्या लई तूं बाथ । श्रवणाय ते सांभलवा न दीधी, आलस वगाई तारे साथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -24
- तूं तो माया रूप पापनी, ते डबोई ले कर बाथ । ते श्रवना को सुनने ना दिया, आलस जम्हाई तेरे साथ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -24
- तूं तो मूने जाणे छे जोपे, में तो घणी खीदड़ी खुदावी । अनेक विनवणी कीधी तें, तो हूं तारे वस आवी || ग्रं - किरन्तन, प्र -43, चौ -3
- तूं था बीच कौम जाहिल, तित खदाए ने दई अकल । बरस बारहीं के लिए तीस, दस लिए अग्यारहीं के किए चालीस || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -20, चौ -8
- तूं थी धणी मुकाबिल, को रखे थोडे बंग । मूं गिन्यू साहेदयूं तोहिज्यूं, कई केयम दुनी से जंग || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -37
- तूं देख दरसन पंथ पैंडे, करें किव सिध साध । चढ़ी चौदे सुन्य समावे, तहां आड़ी अगम अगाध || ग्रं - किरन्तन, प्र -7, चौ -4

- तूं देख दिल विचार के, उड़ जासी असत । सारों के सुख कारने, तूं जाहेर भई महामत ॥ ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -42
- तूं देख दिल विचार के, उड़जासी सब असत । सारों के सुख कारने, तूं जाहेर हुई महामत ॥ ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -38
- तूं देख भयो मोहे बावरो, मैं कुलवधुआ नार । तूं रोक रह्यो मोहे राह में, घड़ी भई दोए चार ॥ ग्रं - किरन्तन, प्र -46, चौ -2
- तूं धणी तूं कांध तूं, मूंजो तूं खसम । ही मंगांथी लाडमें, जाणी मूर रसम ॥ ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -8
- तूं धणी मूं इस्कजो, तूं धणी सहूर इलम । तूं धणी वतन रूहजो, हे गुझ के के चुआं खसम ॥ ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -49
- तूं नाम निरगुन कहावहीं, सब सरगुन के सिरे । सब नंग मोती तेरे तले, कोई नाहीं तुझ परे ॥ ग्रं - किरन्तन, प्र -110, चौ -2
- तूं निमूना माया जीव का, क्यों कर लेवे इत । ए दाग तेरा क्यों छूटहीं, ए तुझे लाग्या जित ॥ ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -10
- तूं पारीने उमेदूं वडियूं, असां ज्यूं तेहेकीक । पण ते लाए थी विलखां, मथां आयो कौल नजीक ॥ ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -36
- तूं पूछ मन चित बुध को, और गुन अंग इंद्री पख । देख तत्व सब सास्त्रों का, फेर कर नीके लख ॥ ग्रं - किरन्तन, प्र -87, चौ -6
- तूं बंधे तूं छुडाइए, तित बी काएं न गाल । जी फिराइए ती फिरे, कौल फैल जे हाल ॥ ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -53
- तूं बल कर कछू अपना, चल राह तामसी सूर । ब्रह्मसृष्ट निकसी बृज से, देख क्यों कर पोहोंची हजूर ॥ ग्रं - किरन्तन, प्र -87, चौ -7
- तूं बालक नेह न बूझहीं, मैं बरज्यो केतीक वार । मैं मेरो कियो पाइयो, अब कासों करों पुकार ॥ ग्रं - किरन्तन, प्र -46, चौ -5
- तूं भाइयूं बेठ्यूं मूं कंने, माधा नजर । जे दिल हिनीजा न्हारिए, त हे विलखे थ्यूं रे वर ॥ ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -13
- तूं भूल जात क्यों वचन, जो श्रीधाम धनी कहे आप । एक आधा सुकन विचारते, तो पलक न छोड़े मिलाप ॥ ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -12
- तूं रे जुबां ऐसी क्यों वली, कहेते एह वचन रे । बैंच निकालूं तोको मूल थे, जहां से तूं उतपन रे ॥ ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -3
- तूं लज करिए केह जी, या अर्स तांजे हित । तो निसबत असां से, बेओ कोए न पसां कित ॥ ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -90
- तूं लीजे नीके माएने, तेरे मुख के बोल । जो साख देवे तुझे आतमा, तो लीजे सिर कौल ॥ ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -43

- तूं लीजे नीके माएने, तेरे मुख के बोल । जो साख देवे रूह अपनी, तो लीजे सिर कील || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -47
- तूं सचा सच गालाइज, सच बोलाइज मूं। सच दावो सच साहेद, सच जाणे सभनी सचा तूं || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -64
- तूं सचो तो गाल्यूं सच्यू, अने सचो तो हलण । मूं तो दावो सरे सचजो, झल्यम सचो दावन || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -63
- तूं सचो धणी मूं सिर, तोके पुजां मय रांद । लाड पाराइयां पाहिजा, तूं मूं सिर सचो कांध || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -84
- तूल का भी कोटमा हिसा, मन एता भी नहीं ऐसा । सो ए गया जीव को निगल, यों सब पर बैठा चंचल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -20
- तृष्णा कहे मैं क्योंए ना छोडूं, जो आतमाऐ देखाया आधार । तुम जाए गुन और फिराओ, मैं छोडूं नहीं निरधार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -41
- तृष्णा कहे हूं केमे नव मूकू, जे आत्माए देखाड्या आधार । तमे जई बीजा गुण संभारो, ए हूं नहीं मूकू निरधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -41
- ते आणी जोगवाईए केम गणू आधार, पण काईक तोहे गणवा निरधार । इंद्रावती कहे हूं गुण गणूं, कांईक दाखू आपोपणूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -11, चौ -11
- ते ऊपर एक कहूं विचार, सांभलो साथ मारा सिरदार ।आ चौद भवन देखो आकार, एहेना मूलनो करो विचार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -35, चौ -8
- तें कहे वचन मुख थे, होसी तिनथें प्रकास । असत उड़सी तूल ज्यों, जासी तिमर सब नास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -42
- तें क्या सुने नहीं श्रवना, प्यारे पिउ के वचन रे । ए रे लवा तुझे सुनते, क्यों ना लगी कानों अगिन रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -5
- ते तमने कहूं प्रगट करी, मूल वचन लेजो चित धरी । हवे तारतम जो जो प्रकास, तिमर मूलथी करूं नास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -3
- ते तमे कीधी छे प्रकास, तेहेनी तारतम पाय पुरावी साख । तमे अमने जुगते माया रामत देखाडी, तमे अमने घेर पोहोंचाड्या दुस्तर उतारी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -18, चौ -4
- ते तां अमने अनभव्यु, अमे तोहे न जाणी सनंध । घन लाग्यो कपालमा, अमे तोहे अंधना अंध || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -65
- तें ता पा न कतयो, हुत घुरवो सेर । जडे उथींदी आतण मंझां, तडे घj घुरंदी ही वेर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -27, चौ -3
- ते तां में जोयूं मारी दृष्ट, अने जीव थई बेठो कोई दुष्ट । नहीं तो विछोडो केम खमाए, पण दुष्ट भरम बेठो मन माहे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -64
- ते तो आकार करे रे जोने उजला, माहें तो अधम अंधार । खाय ने पिए रे सेज्या सुख भोगवे, एणी वाटे चालतां करार || ग्रं - किरन्तन, प्र -67, चौ -6

- ते दर ढंके मूरजो, असां अंखे कंने डिंने पट । तो भायों घुर्रदयूं घणी परे, बेठो जाणी बट || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -41
- ते देखी चित भरमियो, सुध नहीं सरीर । विकल थई रंग वेलडी, चित ना रहे धीर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -130
- ते देखीने आव्या जेम, वली आंही प्रगट थया छो तेम । धणी ज्यारे धणवटकरे, त्यारे मन चितव्या कारज सरे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -12
- तें नव कीबूं जीवने जांण, नेठ खोटो ते खोटो निखाण । आ क्रोध हतो सबलो समरथ, पण नव सरयूं तूं मांथी अरथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -73
- ते नहीं वैकुंठ नाथने, जे रस बुध अवतार । चरण ग्रया वालाजी तणां, कांई ए निध पाम्यो सार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -15
- तें ना दई जीव को खबर, नेठ झूठा सो झूठा आखिर । ए क्रोध है बड़ा समरथ, पर आया न मेरे समें अरथ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -30
- ते पण आपण रया सही, तोहे भरम उडाड्यो नहीं । तोहे आपण ऊपर अति दया, वृज तणां सुख विगते कया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -53
- ते पण चित दई नव सांभल्या, नहीं तो पूर बढ्यो प्रघल । आडा गुण सघला जोध जुजवा, तेणे नव लेवा दी• टीपू जल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -8
    - ते प्रवाही वचन ज्यारे जोइए, तेहेमां को को छे भारे वचन । एतां दिए अचेत थकी उपमां, पण मूने साले ते मन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -5
    - ते बेठो जीवन ऊपर चढी, कीडी कंजर एम बेठी गली । एम त्रणे डूंगर ढांकयो, एम गज कीडी पग बांधयो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -16
    - ते बेसे पंडित विष्णू संग्रामे, एक काना ने कडका थाय । मांहोंमा बढी मरे, एक मात्र न मेलाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -11
    - ते मां सारहूं तमतणों मथिया, तेहेनो सार लीधो आधार । हूं धणियाणी श्री धाम धणीनी, में जीत्यो अनेक वार || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -44
    - ते माटे ए वासना पांच, इंडू फोडी निकली जुओ द्रष्टांत । ए पुरुख प्रकृति ओलंघी ने गया, अछर माहें जई ने भेला थया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -11
    - ते माटे एम थाय अमने, रखे आसंका रहे तमने । एक परवाही वचन एम कहे, मुखथी कहे पण अर्थ नव लहे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -35, चौ -4
    - ते माटे तमने कयूं द्रष्टांत, जीवसं वचन विचारो एकांत । ठेकाणूं वैकुण्ठ विश्राम, केहेवा वालो श्री भगवान || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -58
    - ते माटे तमने देखाई सार, आपण घरने आपणा आधार । विहिला थयानी नहीं आवार, आंहीं तमने नहीं मूकू निरधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -3
    - ते माटे तमे सुणजो साथ, आपण काजे कीबूं प्राणनाथ । रखे जाणो मनमा रहे कांई लेस, ते माटे कीधो उपदेस || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -19

- ते माटे तमे सुणजो साथ, एक कहूं अनुपम वात । चरचा सुणजो दिन ने रात, आपणने त्रूठा प्राणनाथ || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -17
- ते माटे तमे सुणजो साथ, जे प्रगट लीला कीधी प्राणनाथ । कोई मनमा म धरजो रोष, रखे काढो मेहेराजनो दोष || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -13
- ते माटे पेर बने करूं, सुपन हरखे समावू । चरणे लागी कहे इंद्रावती, साथ जुगते जगावू || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -143
- ते माटे बंध बांहों खरो ग्रही, करजो जोरमां जोर । पछे दोडसो त्यारे नहीं रे केहेवाय, थासे अति घणो सोर || ग्रं - रास, प्र -20, चौ -3
- ते माटे बोल कह्या में कठण, जोवाने विस्वास । नव दीठो कोई फेर चितमां, हवे हूं तमारे पास || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -21
- ते माटे रखे चरण चाचरो, थिर थई ऊभा रेहेजो । जो जोर घणुं आवे तमने, त्यारे तमे अमने केहेजो || ग्रं - रास, प्र -27, चौ -5
- ते माटे वचन कह्या में एह, रखे अधखिण साथ विसारो तेह । अधखिण रखे तमारी थाय, तो तेहेमां के कलपांत वही जाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -15
- ते माटे वाणी बेहद तणी, केहे निद्रा टालूं । सुपन न दऊं वाधवा, चढ्यूं जेहेर उतारूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -135
- ते माटे वालेजीए, आवीने छोडायो साथ । बीज त्यावी घर थकी, कीधो जोतनो प्रकास || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -2
- ते माटे सहु आप संभारी, रखे कोई प्रगट थाय रे । जो दाव आपण ऊपर आवसे, तो ए केमे नहीं झलाय रे || ग्रं - रास, प्र -15, चौ -9
- ते माटे सहु चाले संजमपुरी, ऊवट कोंणे न अगमाय । संजमपुरी ना दोख जाग्या पछी, श्रवणांएँ न संभलाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -11
- ते माटे हूं एम कहूं, जे नव मूकवो पत। ततखिण तमे पाछा वलो, जो रूदे होय कांई मत || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -30
- ते माटे हूं कयूं एम, नहीं तो रामत जे कीधी श्री कृष्ण । ए नामनुं तारतम में केम केहेवाय, साथ संभारी जुओ जीव माहें || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -6
- ते माटे हूं कयूं घणुए, नहीं तो एटलू केहेवू स्या ने पडे । आ प्रगट कीबूं ते तम माट, नहीं तो आ वचन काई नव केहेवात || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -8
- ते माटे हूं फरी फरी कहूं, जे माया अमल सवल चढ्यूं । अमल उतारो प्रकास जोई करी, अने भरम गेहेन मूको परहरी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -10
- ते माटे हूं विरह सहूं छू, जीव राखं समझावी मन । नौतनपुरी तमसूं मेलो करी, मारे सांभलवा छे श्री मुख वचन || ग्रं - खटरुती, प्र -7, चौ -13
- ते में वडी मूंके केइए, मुंजी सिफत न थिए मय रांद । जे ए सिफत न पुजे, त सिफत तोहिजी करियां की कांध || ग्रं - सिंधी, प्र -13, चौ -8

- ते लई धणी आव्या आहे, साथ संभारी जुओ जीव मांहें । एणे घरे तेडेरे आ वल्लभ, बीजाने ए घणूं दुर्लभ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -26
- ते लईने आव्या धणी, दया आपण ऊपर छे घणी । जाणे जोसे माया अलगां थई, तारतमने अजवाले रही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -9, चौ -16
- ते लाएं की भूल जे, आए हथ अवसर । पोए को पछताएजे, पेरो हल्लजे न न्हारे नजर || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -4
- ते लाएं पिरम आंऊ हेकली, मुं बी न गडजी काए । जे तोजो दर उपटे, मूज्यू आसडियूं पुजाए || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -28
- ते लाये घणों को चुआं, तोके सभ मालुम । से सभ तोहिजे हुकमें, असां केयां कम || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -30
- ते लीधां चल्लू करावियां, बेठा वांसे तकियो दई । थाल बाजोट उपाडियारे, लोयु मुख रूमाल लई || ग्रं - रास, प्र -46, चौ -16
- तें वचन कहे जो मुख थे, होसी तिनसे बड़ो प्रकास । असत उड़सी तूल ज्यों, होसी कुफर सब नास || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -46
- ते वचन घणूं साले मूने, कठण तमने जे कया । मारी वासनाओने निद्रा मांहें, मूल घर विसरी गया || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -6
- ते वाट प्रगट पाधरी, कीधी आवार । धंन धंन ब्रह्मांड ए थयो, धंन धंन नर नार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -20
- ते विनतडी जोजो सार, माया दुख पामी निरधार । धणी लिए तेम लीधी सार, मुख माहें थी काढी आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -16
- ते व्यासे कीधी मोटी, दीधूं छलने मान । तेमां पंडित ताणताण करे, माहे अहंमेव ने अग्नान || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -13
- ते सर्वे चित धरी, अमसू रमो अति रंग । कहे इंद्रावती साथने, रमवानी घणी उमंग || ग्रं - रास, प्र -29, चौ -12
- तेज आकास वाए जल पृथ्वी, रवि ससि चौदे भवन । ए फरे सर्व करम ना बांध्या, तो बीजी तो एहेनी उतपन || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -88
- तेज ऐसो इन डार को, और पात को प्रकास । सो रोसनी ऐसी देखत, मावत नहीं आकास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -7
- तेज कोई ना सेहे सके, बिना अर्स रूह मोमिन । तेजें उड़े परदा अन्धेरी, ए सहे बका अर्स तन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -213
- तेज गेहेन ने तेहज घारण, तेज घटन अधको आवे जी । एणी भोंमने ए निद्रा महेथी, धणी विना कोण जगावे जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -4
- तेज जोत उद्दोत आकास लों, किरना न काहूं अटकाए। देख देख जंग निरने कियो, कोई पीछा ना पाँउं फिराए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -44

- तेज जोत कछू और है, सोभा सुन्दरता कछू और । पर ए अंग नूरजमाल के, याको नहीं निमूना ठौर || ग्रं - सिनगार, प्र -5, चौ -11
- तेज जोत नूर भरे, लाल तली कोमल । लाल लांके लीकें क्यों कहूं, रूह निरखे नेत्र निरमल || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -224
- तेज जोत प्रकास में, सोभा संदरता अनेक । कहा कहूं मुखारबिंद की, नेक नेक से नेक || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -119
- तेज जोत सोभा सलूकी, रूह केताक देखे ए। खुसबोए नरम स्वर माधुरी, और कई सुख गुझ इनके || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -54
- तेज तिमर यामें फिरें, रवि ससि तारे ना थिर । सेस नाग कर ब्रह्मांड, ले धस्यो वाके सिर || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -10
- तेज तेज सों लरत हैं, जहूर जहूर सों जंग । केते कहूं रंग रंग सों, तरंग संग तरंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -112
- तेज भी मानिक तित मिले, पोहोंचत तित पुखराज । नीलवी तो तेज आसमानी, रहे रंग नंग पांचों बिराज || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -114
- तेज वचन वांचता सांभलता, जाय जम वारो बांध्यो । अर्थ तणी ओलखाण न आवे, प्रेम वचन नव लाध्यो || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -115
- तेज सबों में मूल का, सबहीं चेतन । थिर चर चेतन ए लीला, ऐसी उतपन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -118
- तेजपाल मोदी वलोट पूरे, जो कछू चाहिए सोए। घृत लेवे बड़े बड़े ठौरों, और बिरतिया होए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -35
- तेजपाल मोदी वलोट पूरे, वृजमां मोटे ठाम । वस्त वसाणूं सहु लिए, घृत दिए आखू गाम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -24
- तेजसू तेज करूं रे मेलावो, जोतने जोत छे भेला । अंग सदीवे छे रे एकठां, परआतम ने मेला || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -37
- तेडी आपणने जाय घरे, वचन कया केम पाछां फरे । मनना मनोरथ पूरण करे, नेहेचे धणी तेडी जाय घरे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -11, चौ -2
- तेडी सिधावसे साथने, प्रगट थासे वाणी । बुधतणो अवतार कहिए, मोटी बुध जणाणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -11
- तेणे समें कयूं नारदजीएँ, न वले जिभ्या मारी एम । कठण वचन कया व्यासजीने, में केम केहेवाय तेम || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -107
- तेणे समे धाखी रहीती जेह, हमणां पूरण कीधी तेह । हवे वालाजी कहूं ते सुणो, अने अति घणो दोष छे अमतणो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -13

- तेना जीवने जगावी निध देओ छो निरमल, करो छो वासना प्रकास । ते जीव वचिखिण वीर थई, चौद भवन करे अजवास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -17
- तेम जीव अमारा बांधिया, जेम पडिया मांहें जाल । खिण एक सांमू नव जुओ, तो पिंडडा पडे तत्काल || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -44
- तेम जीव होय सागर तणो, ते मके नहीं भवसागर । अखंड सुख जो अनेक देखाडो, पण मूके नहीं पोते घर || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -124
- तेम तेम कामस चढती जाय, जेम जेम जराबल आवे । एम करतां जम किंकर आवे, पछे जीत्यूं रतन हरावे || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -46
- तेम मारा जीवने तम विना, आ रूत एणी पेरे जाय । हवे रखे राखो खिण तम विना, हूं वली वली लागू छू पाय || ग्रं - खटरुती, प्र -4, चौ -9
- तेमां केटलीक सखियो ऊभी रहियो, काई द्रढ करीने मन । बाई वांक हसे जो आपणों जी, तो वालोजी कहे छे वचन || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -10
- तेमां केटलीक सखियो ऊभी रही, उठाडे सर्वे साथ । आपणने केम मूकसे, मारा प्राणतणो जे नाथ || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -9
- तेमां केटलीक सखियो ऊभी रही, माहोमांहें करे विचार । कलकलतां केम मूकसे, कांई आपणने आधार || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -38
- तेमां पुरूख बे प्रगट थया, अंग मोडीने ऊभा रह्या । कर जोडीने अस्तुत कीधी, तेणे तरत वाले सीख दीधी || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -19
- तेरा दिल लग्या ज्यों सूरत को, त्यों जो सूरतें रूह लगे। तो अबहीं ले रूह लज्जत, एक पलक में जगे || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -82
- तेरी गिनती बांधी स्वांसों स्वांस, तिनको भी नाहीं विस्वास । केते रहे बाकी तेरे स्वांस, एक स्वांस की भी नाहीं आस || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -13
- तेरे केहेना होए सो केहे रे केहे, लाभ लेना होए सो ले रे ले । तारतम केहेत है आ रे आ, हजार बार कहूं हां रे हां || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -35, चौ -15
- तेरे चौकी बीच पाल के, आगे पाले की पड़साल । गिरद चौकी चार बिरिख की, सोभित झुन्ड कमाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -75
- तेरे बीच बाट घाट न तत्व कोई, तूं करे पांउं बिना पंथ । निरंजन के परे न्यारा, तहां है हमारा कंथ || ग्रं - किरन्तन, प्र -7, चौ -8
- तेरे लोके आण फरे, संजमपुरी सिरदार । जे जाणे नहीं जगदीसने, ते खाय मोहोकम मार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -31
- तेरे संगी तोहे अबहीं मिलेंगे, तूं करे क्यों न करार । महामत मन को दृढ़ कर, समरथ स्याम भरतार || ग्रं - किरन्तन, प्र -24, चौ -9

- तेवा भूखण ने तेवो वागो, नटवरनो लीधो वेख । घणां दिवस रामत कीधी, पण आज थासे बसेख || ग्रं - रास, प्र -11, चौ -6
- तेवा सरूप ने तेवा भूखण, तेज तणा अंबार । ए अजवायूँ ज्यारे जीव जुए, त्यारे सूं करे संसार || ग्रं - रास, प्र -7, चौ -7
- तेह ज गोकुल जमुना त्रट, जाणे ते वृजवासी। जाणे रामत रास रमी करी, सहु उठ्या उलासी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -34
- तेह तणी वली कीधियो चीर, गुण जेटली उतारी लीर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -35, चौ -7
- तेहत्तर फिरके कहे महंमद के, बहत्तर नारी एक नाजी । नारी जलसी आग में, नाजी हिदायत हक की || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -4
- तेहेकीक अर्ज पोहोंचत है, जो भेजिए पाक दिल । ऐसी पोहोंचाई हक ने, दिल पोहोंचे मोहोल -असल || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -59
- तेहेकीक केयो तो इलमें, तो धारा न कोई बेसक । अर्स रूहें असीं कदमों, कित जरो न तो रे हक || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -17
- तेहेकीक जानोगे झूठ है, तो भी दिल से न छूटे एह । ऐसी मोहोब्बत बांधोगे, झूठे सों सनेह || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -53
- तेहेकीक न्या असांहिजो, डोह आयो मथे कांध । पण तोरो थ्यो तो हथ में, ते मूंजो हल्ले न मय रांद || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -69
- तेहेकीक मुझको है ए डर, खलक अपनी जो है हाजर । पीछे मेरे मोहीम खैरात, जो वर पाए करे दीन की बात || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -13, चौ -4
- तेहेकीक मू ई बुझियो, मुंके बुझाई तो इलम । थेयो थिएथो जे थींदो, से हल-चल सभ हुकम || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -33
- तेहेकीक वह था कहे खलक, एही सांच कहेगा हक । पोहोंचाया चौथे आसमान, बीच मेयराज भिस्त पेहेचान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -16, चौ -5
- तेहेतसरा से हवा लग, एक फरिस्ता खड़ा इन कद । ए बड़का सबन का, तो पोहोंच्या हवा सिर हद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -51
- तेहेत्तर फिरके महंमद के, तामें एक को हक हिदायत । और नारी एक नाजी कह्या, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -28
- तैंतालीस जुफ्त जो कहे, हर जुफ्त सत्तर बहार भए । हर बहार सात सौ बरस लए, हर बरस तीन सौ साठ दिन दए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -41
- तो अंग आधा अरधांग, मासक का आसिक । तो दोऊ तन एक भए, जो इस्क लाग्या हक || ग्रं - किरन्तन, प्र -91, चौ -13
- तो अजमंतिसा में सही, गजनवी को बकसीस भई । इमाम पेहेचान करो रोसन, संसे भान देऊं सबन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -9

- तो अर्स कया दिल मोमिन, पाया अर्स खिताब । इतहीं गिरो पैगंमरों, काजी कजा इत किताब || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -87
- तो अर्स कह्या दिल मोमिन, जो इन दिल में हक बैठक । तो इत जुदागी कहां रही, जहां हकै आए मुतलक || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -26
- तो अर्स कह्या दिल मोमिन, जो पकड्या इलम हक । हक सूरत सुध अौं की, रूहों रही न जरा सक || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -44
- तो अर्स कह्या दिल मोमिन, सो कायम हक वतन । रूहें कही दरगाह की, जित असल मोमिनों तन || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -52
- तो अर्स मोहोल की रोसनी, और अर्स मोहोल हौज जोए जे । नूर मोहोल ना केहे सकों, तो क्या कहे जुबां नूर ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -12
- तो अर्स वस्तर क्यों रंग गिनों, और करके दिल अटकल । बेसुमार ल्याऊं सुमार में, यों मने करत अकल || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -55
- तो अर्स हुआ दिल मोमिन, जो जाहेर किया गुझ ए। हक हादी गुझ मोमिन, कोई और न कादर इनके || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -119
- तो अव्वल आखिर महंमद, महंमद सब अवसर । सब नूर इनका कह्या, कोई बखत न इन बिगर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -22
- तो असरफीलें आखिर, कुरान को गाया । ऐसा बड़ा काम तो किया, जो आखिर को आया || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -1
- तो आ वार एकनी सी कहूं, एमां सू थy सुपन । पण सत भोमनूं असतमां, द्रष्टांत नहीं कोई अन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -118
- तो आए नामें वसीयत, जो पेहेले फरमाए । सो ए देखो बीच आयतों, दिलसों अर्थ लगाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -92
- तो आंखां मूंदे कहे, और बेहेरे कहे श्रवण । पढ़े तो पावें नहीं, कुलफरे दिलों पर इन || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -24
- तो इन जुबां क्यों होवहीं, हक हादी सागर सुख । ए बारीक सुख बीच अर्स के, होसी मूल मेले के मुख || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -20
- तो इन रूहों मोमिनों, दिल अर्स केहेलाया । जो हक इलम लदुन्नी, मेरे दिल आगूं ही आया || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -21
- तो इलम चयो लाड पारीदो, ते में सक न काए । जे जे भतें मूं न्हारियो, इलमें सभे डिंनी पुजाए || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -45
- तो उमेदं पुजाइयूं, जे जो न्हाए सुमार । हे तो पांण मंगाइए, तूही डियन हार || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -16
- तो ए क्यों आवे बानी में, कर देखो सहूर हक । ए अर्स तनों विचारिए, तुम लीजो बुध माफक || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -194

- तो ए झूठी जिमी कायम हुई, ऐसी हक बरकत । जानें आगू कह्या रसूल ने, देसी हम सबों भिस्त || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -14
- तो ए माएने ना खुले, रसूल मुख फुरमान । चौदे तबक की दुनियां, सो इत हुई हैरान || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -66
- तो एते दिन बूझी नहीं, साल बीते नब्बे हजार पर । क्यों समझे औलाद आदम की, हक दिल छिपी खबर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -90
- तो कजा उतलों अटकी, ताही दिन बदल्या बखत । रसूल खड़े थे ले सिदक, पीछे उठे फितुए" आखिरत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -40
- तो कया अर्स दिल मोमिन, हक बैठे उठे खेलाए । सुख बका हक अर्स रूहे, सिफत क्यों कहे दिल जुबांए || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -30
- तो कया खुदा एक है, और महंमद कया बरहक । सो न आवे ख्वाबी दम पर, जो लो होए न रूहें बुजरक || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -61
- तो कया तीत सब्द से, जो कछू इत का पोहोंचे नाहें । असत ना मिले सत को, ऐसा लिख्या सास्त्रों माहें || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -10
- तो कया थावर चेतन, अपनी अपनी मिसल । ए अन्तर आंखें खुले पाइए, परआतम सुख नेहेचल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -31
- तो कया रसूल ने, अर्स में वाहेदत । सो कया इन माएनो, ए रूहें एक दिल एक चित्त || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -18
- तो कया सब्दातीत को, हद सब्द पोहोचत नाहें । ऐसे झूठ निमूना देय के, पछतात हों जीव माहें || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -17
- तो कयो न जाए मन वचन, ना कछू पोहोंचे चित । बुधे सुनी न निसानी श्रवनों, तो क्यों कर जाइए तित || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -18
- तो कलाम अल्ला की आयतें, और हदीसें महंमद । ए मोमिन देखें दिल अर्स में, ले मुसाफ मगज साहेद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -73
- तो कहया वाहेदत इनको, अर्स अरवा हक जात । ज्यों जोतें जोत उद्दोत है त्यों, सूरत की सूरत सिफात || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -6
- तो कही रात दुनी इन वास्ते, दिए बंदगी फरज लगाए । ले तरीकत चल कोई ना सक्या, गए पांउं पुल-सरातें कटाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -89
- तो कहे सेहेरग से नजीक, खासलखास बंदे हक के । किए अर्स तन से रूबरू, जो नूर बिलंद से उतरे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -79
- तो कह्या अमल रात का, सुध आप ना हक । हुता न इलम लदुन्नी, जिनसे होइए बेसक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -80
- तो कह्या अर्स दिल मोमिन, ना मोमिन जदे अर्स से । पर ए जाने अरवाहें अर्स की, जो करी बेसक हक इलमें || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -9

- तो कहया असराफील, आवसी आखिर । सो फल लैलत कदर का, पाया तीसरे फजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -37
- तो कहया आगू हक बुध के, चौदे तबकों सुध नाहें । सो बुध जाग्रत महंमद रूहअल्ला , दई मेरे हिरदे मांहें || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -55
- तो कहया नबिऐं इमन को, ला बारकला मुसल्मीन । दई बारकला हिंद मुस्लिम, लिए सिर कलाम आकीन || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -24
- तो कहया मजाजी दिल को, गोस्त का टुकड़ा । तिन दिलों पातसाह दुस्मन, और दिल तो कहया मुरदा || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -47
- तो कहया मासूक महमद, आसिक अपना नाम । बांध्या आप हुकम का, केहेवत यों कलाम || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -64
- तो कहया मोमिन खाना दीदार, पानी पीवना दोस्ती हक । तवाफ सिजदा इतहीं, करें रूह कुरबानी मुतलक || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -11
- तो कहया रसूलें हदीसमें, सूर देसी पहाड़ उड़ाए। सो पहाड़ जरे ज्यों खाली मिने, फिरे उड़ते ना ठेहेराए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -24
- तो कहया वेद कतेब में, ए ब्रह्मांड नहीं रंचक । तो क्यों कहिए आगे इनके, ए जो सिफत दिल हक || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -51
- तो काहे को कहावें महंमद के, जो इतना न करें सहूर । कौल महंमद रद होत है, जो हक सों किया मजकूर || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -62
- तो केयो से थेयो, तो केयो थिए थो। थींदो से पण तो केयो, तो रे कित्त न को || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -32
- तो क्या चले बंदन का, जिन दिल पर ए पातसाह । सब जाने दुस्मन मारसी, हक तरफ चलते राह || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -32
- तो क्या निमूना झूठ का, पर लेसी रूहों लज्जत । ख्वाब बड़ाई देख के, विचारसी निसबत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -80
- तो क्यों कहूं जोड़ निसबत की, जो दीजे निसबत मान । निसबत हक की जात हैं, जो हक वाहेदत सुभान || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -19
- तो क्यों कहूं सारे बाग की, जिन की खूबी कही ए। ऐसा जरा कया जिनका, तो क्यों कहूं ठौर हक के || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -64
- तो क्यों पोहोंचे दिल मजाजी, जाकी पैदास कही जुलमत । सो चाहे बिना हादी असल, जबराईल न पोहोंच्या जित || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -88
- तो क्यों माने बीच दुनियां, ए जो हक जात भूखन । रैन अंधेरी क्यों रहे, जब जाहेर हुआ बका दिन || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -2
- तो खाकीबुत कायम किए, जो किया वास्ते खेल उमत । रूहों पट दे बका बुलाए के, दई चौदे तबकों भिस्त || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -18

- तो खेल हम देखिया, ना तो कैसा खेल कौन हम । क्यों उतरें रूहें अर्स से, छोड़ के एह कदम || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -62
- तो गुनाह अर्स अजीम में, लिख्या सब मेयराज के माहें || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -50
- तो घर न्यारो दनी से, थेयम तोसे संग। आसमान जिमी जे विचमें, मूके तो धारा सभ रंज || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -5
- तो चुक्यो चुआं थी, मुंजी या उमत । असीं इंदासी कोठियां, कोठीने जे भत || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -25
- तो चेयो रसूल के, तूं थीयज हुनमें अमीन । डिज तूं मूर निसानियूं, जी अचे रूहें आकीन || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -5
- तो जाहेर करी बीच लैल के, हक की गैब खिलवत । फजर होसी इत थे, दिन याही हक मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -62
- तो जूदे जूदे कहे जंजीरों, देखो दाखले मिलाए । पेहेचान जंजीर जंजीरों, ज्यों दिल पाक होवे ताए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -66
- तो जोरा किया दज्जाल ने, देखो आए नामे वसीयत । लिखाए महंमद मेंहेदिए, तो भी देखें ना पोहोंची कयामत || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -32
- तो जोरा किया दज्जाल ने, लोकों छुड़ाए दिया आकीन । अग्यारै सदी के आखिर, रया न किन का दीन || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -41
- तो डर बड़ा मोहे लगत, जो गुनाह कया इन पर । माफक रूह अल्लाह के, कोई मरद नहीं बराबर || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -7
- तो डिंनी सोहेली करे, न तां वाट घणूं विखम । हेआं हल्लो सभ सुखन में, रूहें घुरें एह खसम || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -23
- तो डिसंदे आंऊ विलखां, सभ सुध डिंनी आं हित । बलहा याद अजां को न अचे, को डिना हियडो सखत || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -18
- तो तरक करी इनों दुनियां, जो अर्स दिल मोमिन । दुनी जलसी इत दोजख, जब दिन हुआ बका रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -122
- तो तरसाएं तरसण, तोके पसण नैण । कोड थिए कनन के, तोहिजा सुणन मिठडा वैण || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -16
- तो तरसाएं तरसण, हियडो मिडन के । ए डिनो अचे मासूक जो, इस्क अर्स में जे || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -17
- तो दरगाह से खादिम बुजरकों, लिखे सखत सौं खाए। सो जमाना सदी अग्यारहीं, किने न देख्या दिल ल्याए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -7
- तो दुख सारों ने मांगया, बड़ी मत वालों ने जाग । दुख तें अपने पिउ का, आवत विरह वैराग || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -18

- तो दुनियां ताबें दज्जाल के, पातसाह सैतान दिलों पर । दुनी सिफली अबलीस बिना, एक दम न सके भर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -6
- तो दुनियां होसी हैयाती, ले मोमिनों बका बरकत । ए बात दुनी क्यों बूझहीं, ओ जात हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -92
- तो दें बड़ाई जाहेर परस्तों को, जो समझे नहीं हकीकत । हक इलम आए बिना, तो क्यों समझे मारफत || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -32
- तो न डेखारयो मूर थी, कोए हंद बेओ । मूंजी रूहके नूरजमाल रे, हंद जरो न कित रह्यो । || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -56
- तो न पाइए इत लज्जत, जो फैल न आवत हाल । हाल आए क्यों सेहे सके, बिछोहा नूर-जमाल || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -22
- तो न लेवें निमूना इनका, ना लेवें इनकी रसम । हक बिना कछुए ना रखें, अर्स अवाहों ए इलम || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -52
- तो नवधा से न्यारा कहया, चौदे भवन में नाहें । सो प्रेम कहां से पाइए, जो रेहेत गोपिका माहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -5
- तो नसल तुमारी बाकी रहे, स्याह सुपेत छोटे बड़े कर कहे । कोई खूब कोई किए बुरे, नींद रात ताजगियां करे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -9
- तो नूर रांग पार की क्यों कहूं, जाको सुमार नहीं वार पार । वह मोमिन देखें दिल अर्स में, जो दिल अर्स परवरदिगार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -25
- तो न्यारा कया सब्द थे, प्रेम ना मिनें त्रिगुन । कई कोट ब्रह्मांडों न पाइए, प्रेम धाम धनी बिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -11
- तो पाण डेखारे डिठम, बेओ कोए न रखे हंद । सेहेरग से डेखारे ओडडो, कित करणो पेओ न पंध || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -24
- तो पाया खिताब अर्स का, ना तो दिल आदमी अर्स क्यों होए । ए हक हादी मोमिन बातून, और बूझे जो होवे कोए || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -120
- तो पिया मिने आए के, सब छुड़ाई सोहागिन । बोए के नूर प्रकासिया, बीज ल्याए मूल वतन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -2
- तो पीछा फेरे हुकम, जो कोई दूसरा होए । हुकम सबों समझावहीं, हुकमें न समझे कोए || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -34
- तो बातून गुझ लाहूत का, जाहेर सब करत । ना तो अर्स बका की रोसनी, क्यों होवे जाहेर इत || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -16
- तो बेर एक की कहा कहूं, इत हुआ कहां सुपन । पर सत ठौर का असत में, दृष्टांत नहीं कोई अन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -31
- तो बेवरा कबूं न पाइए, बीच अर्स वाहेदत । इस्क बेवरा तो पाइए, जो कछू होए जुदागी इत || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -14

- तो भए तेहत्तर फिरके महंमद के, तामें एक नाजी कहया नेक । और बहत्तर कहे दोजखी, ए बेवरा कया विवेक || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -36
- तो भायो हे उमेदूं मगंदयूं, नयूं नयूं दिल धरे । हिन जिमी न द्रापंदयूं, आंऊं डींदुस कीय करे || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -39
- तो भी कहूं नेक नूर की, कछुक इसारत अब । पीछे तो जाहेर होएसी, तब दुनी मिलसी सब || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -13
- तो भी घाव न लग्या अरवाह को, जो देखे अलेखे एहसान । न्यामत पाई बका हक की, कर दई रूह पेहेचान || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -37
- तो भी घाव न लग्या रे कलेजे । ना लग्या रे कलेजे, जो एते देखे धनी गुन । कोट ब्रह्मांड जाकी पलथें पैदा, सो चाहे हमारा दरसन || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -1
- तो भी चोट न लगी रे आतम को, जो एती साख धनिएँ दई । कठिन कठोर निपट ऐसी आतमा, एती साखें ले गल न गई || ग्रं - किरन्तन, प्र -98, चौ -1
- तो भी दुनियां अर्स देखे नहीं, यों देखावत कतेब वेद । पावे न लाम इलम बिना, कोई इन विध का है भेद || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -80
- तो भी न आवे ए विवेक, ना कछू ए मुख बान रे । सो संग धनी के एक खिन में, कर देवें सब पेहेचान रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -49
- तो भी न मानें हक सूरत, पातसाह अबलीस दिलों जिन । कहे हक न किनहूं देखिया, खुदा निराकार है सुंन || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -17
- तो भी न विचारें दिल मजाजी, जो सखत लिख्या सों खाए । हक हादी उठाया वह झंडा, जिनें रात के अमल चलाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -8
- तो भी ना भई हमको खबर, तब फेर आए दूजा देह धर । ततखिन मिले हमको आए, सागर वतनी नूर बरसाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -19
- तो भी नेक कहूं मैं इन की, जो आए चढ़त है चित्त । ए जो बैठक खावंद की, सो नेक कहूं सिफत || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -83
- तो भी नेक केहेना साथ कारने, माफक जुबां इन बुध । अद्वैत अखण्ड पार की, करूं साथ के हिरदे सुध || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -3
- तो भी प्रेम न उपज्या, धनी कर कर थके सनेह । ढीठ निपट निठुर भई, धनी क्योंए न सके ले || ग्रं - किरन्तन, प्र -97, चौ -13
- तो भी रूह मेरी ना रहे, हक बरनन किया चाहे । हक इलम आया मुझ पे, सो या बिन रहयो न जाए || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -13
- तो मजकूर मेयराज का, ए जो किया जाहेर मेहेरबान । मोमिन देखो हक सहूर से, खोली मारफत-फजर सुभान || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -81
- तो मने करत हैं हम, हमको भी भूलोगे तुम । तब हम फेर धनीसों कहया, कहा करसी हमको माया || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -15

- तो मुंके ई बुझाइयो, जे तूं हेकली थिए । त तोसे करियां गालडी, दीदार पण डिए || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -42
- तो मुंके चेओ तूं मुंहजी, हेडी करे निसबत । धणी मुंहजे धामजा, आंऊं हांणे को हिन भत || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -2
- तो मुसाफ मगज असराफीलें, किए जाहेर कई विध गाए । तो एक सूरें दुनी फना करी, किए दूजे सूरे कायम उठाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -25
- तो मोमिन तन में हुकम, फैल करे लिए रूह हुज्जत । वास्ते हादी रूहन के, ए हकें करी हिकमत || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -8
- तो मोमिनों दिल अपना, जीवते अर्स केहेलाया । जो इस्क मासूक के दिल का, ऊपर सरूप देखें पाया || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -104
- तो मोहोल मन्दिर की क्यों कहूं, और क्यों कर कहूं दिवाल । कई लाख खिड़की हवेलियां, कई लाखों पौरी पड़साल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -143
- तो मोहोलत कर पीछे फिरे, हम आगे आखिर । महंमद मेहेंदी रूह अल्ला, इन मोमिनों की खातिर || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -65
- तो रसूल ने अव्वल, ऐसा फरमाया । सो अपनी सरत पर, फरिस्ता आखिरी आया || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -2
- तो रही छिपी बीच फरमान के, निकाह अबलीस सोहोबत अकल । सो क्यों पावें मगज मुसाफ का, कहे मुरदे मजाजी दिल || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -92
- तो लानत हुई तिन को, वजूद देख गया भूल । देख्या न तरफ रूह की, वह तो हक का नूरी रसूल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -41
- तो लिखाया जाहेर कर, इतथें उठ्या झंडा नूर । खड़ा किया बीच हिंद के, हुआ आसमान जिमी जहूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -3
- तो लिख्या आगृहीं थे, रसूलें अल्ला कलाम । करसी जाहेर मोमिन, आखिर आए इमाम || ग्रं - सनंध, प्र -1, चौ -10
- तो लिख्यो फुरमान में, मूं अर्स दिल मोमिन । से सुणी वेंण फुरमान जा, मूंजो झल्यो दिल रूहन || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -20
- तो लों अंधेरी रात की, छटे नहीं क्यों ए कर । देखें निसान बातून माएनों, तब पावें दिन आखिर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -17
- तो वचन तमने केहेवाय, नहीं तो अर्ध लवो नव प्रगट थाय । आ वृजवालो वालो ते एह, वचन आपणने कहे छे जेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -56
- तो वचन तुमको कहे जाए, जो तुम धाम की लीला माहें । बृजवालो पिउ सो एह, वचन अपन को केहेत हैं जेह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -61
- तो वैकंठ नथी कांई वेगलं, जो दृढाविए मन । सत चरण भास्यो रदे मांहे, त्यारे असत थयुं सुपन || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -20

- तो सत सब्द के माएने, ले न सक्या कोए । डूबे हिंदू स्यानपें, सो गए प्यारी उमर खोए || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -39
- तो सांचा एहिया पैदा किया, नाबूदसेंती बूद में लिया । बुजरकी सों खुदाए ने कही, जिकरिया फरजंद पोहोंच्या सही || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -22
- तो सारे सरूप की क्यों कहूं, और क्यों कहूं इनों के खेलि । बन बेली पसु पंखी, माहें करें रंग रस केलि || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -47
- तो सोभा सारे सख्प की, क्यों कहे जबां इन । लेहेरें नेहेरें पोहोंचे आकास लों, और ठौर न कोई मोमिन || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -134
- तो सोहोबत तेरी सत हुई, सांचा तूं मोमिन । सब बड़ाइयां तुझ को, जो पोहोंचे मजल इन || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -34
- तो हक अंग सुख खेल में, बेवरा करत हुकम । अजूं न आवे नजरों सख्प, ना तो क्यों वरनवाए खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -11
- तो हक अर्स है कह्या, ए चौदे तबक जरा नाहें । जो नाहीं सो है को क्या कहे, ताथें आवत न सब्द मांहें || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -45
- तो हक नजीक कह्या रूहन को, और नूर नजीक फरिस्तन । और आम खलक देखन को, जो कहे जुलमत से तन || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -15
- तो हक सेहेरग से नजीक, ए विध जानें मोमिन । अर्स दिल मोमिन तो कह्या, जो निसबत अर्स तन || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -26
- तो हक सेहेरग से नजीक, कोई जाने ना लदुन्नी बिन । एही लिख्या फुरमान में, यों ही रूहअल्ला कहे वचन || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -12
- तो हदीसें हक इलम की, भांत भांत करे बड़ाई । बाब भिस्त जो हैयाती, सो याही कुंजी से खोल्या जाई || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -11
- तो हमें कया अर्स अपना, इस्क दिल मोमिन । सो इस्क करे जाहेर, दिल पैठ हक के तन || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -18
- तो हमें कह्या अर्स अपना, मोमिनों का जो दिल । तो सब ल्याए वाहेदत में, जो यों सुख लेत हिलमिल || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -108
- तो हुआ दिलों पर पातसाह, सोई राह चलावत । जिन राह चलते अबलीस को, दूर किया दे लानत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -10
- तो हुई दुनी सब हैयाती, जो उड़ाए दिया उनमान । पट खोले महंमद भिस्त के, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -43
- तो होए कबूल मुस्लिम, जो पोहोंचे मजल इन । जोलों होए न हजूर बंदगी, खुले मुसाफ हकीकत बिन || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -36
- तोके आंऊं न पसां, न की कंने सुणयां । हितरी पण न थेयम, त बिआ केरा. लाड मंगां || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -32

- तोको कहूं अभागी अकरमी, जो जाग्या ना एते सोर । सात बेर तोको कहूं सोहागी, जो तूं उठे अंग मरोर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -13
- तोड़ हवा कुलफ ले ईमान, सोई कया सिरदार । हवा तरक कर लेवे तौहीद, ए बल पैगंमरी हुसियार || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -26
- तोड़त सरूप सिंघासन, अपनी दौड़ाए अकल । इन बातों मारे जात है, देखो उनकी असल || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -13
- तोफतल कलाम जो है किताब, ए लिख्या तिस बीच आठमें बाब । उमतें सब पैगंमरों की मिली, सब दिलों आग दोजख की जली || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -34
- तोबा-तोबा करियां, जिन भला चकां हांण || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -55
- तोलों चले ना इस्क का, जोलों आड़ी पड़ी सक । सो सक जब उड़ गई, तब क्यों न आवे इस्क हक || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -101
- तोलों भेख जो पिउ का, कुबलापील मास्या । चांडूल मुष्टक संघार के, जाए कंस पछाड़या || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -52
- तोसों तो काम बड़ा है मेरा, मद मस्त मेवार । फिर तूं पख पचीस महें, बलवंता बेसुमार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -84
- तोसों ना कछू अंतर, तूं है सोहागिन नार । माएने गुझ बताए के, खोल दे पार द्वार || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -37
- तोसों ना कछू अन्तर, तूं है सोहागिन नार । सत सब्द के माएने, तूं खोलसी पार द्वार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -33
- तोहिजे इलमें आंऊं सिखई, गिडम वकीली सभन । मूंजो एतबार सभनी, आयो तोहिजी रूहन || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -60
- तोहिजे इलमें मूंके ई चयो, ही रांद केई आं कारण । लाड कोड आसां उमेदूं, से सभेई पारण || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -3
- तोहे केमे न आवे रे, विद्या एवी रे वाण । ते खिण मांहें दई करी, वालो करतां चतुर सुजाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -46
- तोहे कोसर करूं घडतां अति घणी, जाणू जेमने झीणियों थाय अति अणी । हवे धरती उपला लऊं सर्व जल, बीजापण भस्या सात पातालना तल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -5
- तोहे तो सब सुध परी, कहूं अटके नहीं निरधार । आगे होए सोहागनी, कराओ सबों दीदार || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -39
- तोहे तोके सांगाय न वरे, तूं थेओ को ई। न्हार संभारे पाण पांहिंजो, जे गालों करीन था पिरी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -15, चौ -9

- तोहे धणिए हाथथी मूकी नहीं, तो वली आपणमां आव्या सही । ए निध मुखथी न जाय कही, जे आंही अम ऊपर दया थई || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -73
- तोहे यों धनी कब मिलसी, पेहेचान के ले सोहाग । ऐसी एकांत कब पावेगी, अब है तेरा लाग || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -28, चौ -2
- तोहे रूहें न छडीन रांदके, कां निद्रडी लगाई हिन । कडे थी न हेडी फकडी, मथां हिन रूहन || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -15
- तौरेत अंजील और जबूर, चौथी कलाम अल्ला जहूर । ए चारों उतरियां जिनों पर, सो चारों नाम कहे पैगंमर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -13
- तौरेत आई नूर बिलंद से, आखिर उमत करी बेसक । भई चिन्हार महंमद मुसाफ, जैसे पेहेचानने का हक || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -20
- तौरेत लिखी ठौर बीसेक कही, सो ज्दे जुदे नामों पर दई । ता बीच कहे अल्ला कलाम, कौल कयामत इन पर इसलाम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -16
- त्यारे अनेक आडीका मेल्या आधार, तोहे आपणने न वली सार । अनेक प्रकार करी करी रया, पख पचवीस आपणने कया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -52
- त्यारे अनेक विधे आपणने कही, पण भरम बेठो चित आडो थई । अनेक आपणने कया दृष्टांत, तोहे बेठां अमे ग्रही स्वांत || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -49
- त्यारे अम माहेथी अदृष्ट थया, मूल वचन रूदयामां रया । एणे समे जो खबर न लेवाय, तो दुस्तर अमने घणूं दोहेलूं थाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -8
- त्यारे एक दामणे बेंहू हाथ, बांधी कट ऊखल संघात । एवो बांध्यो दामणिए बंध, जुओ कान्हजी रूए अचंभ || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -17
- त्यारे कुमारिका अम संग रेहेती, अमें वाला संगे रमती । कुमारिकाओ ने प्रेम उतपन, मूल सनमंध इहां थकी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -39
- त्यारे गांगजी भाई पाम्यां अचरज मन, जे किहां छे साथ अने आवसे केम । आ वचन बेहदना कोण मानसे, केणी पेरे ए साथ आवसे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -37
- त्यारे गांगजी भाई पाम्या मन उछरंग, कीधां क्रतब अति घणे रंग । साख्यात तणी सेवा कीधी सही, अंग पाडूं कोई राख्यूं नहीं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -46
- त्यारे जीव जई आप ओलखसे, ओलखसे आ ठाम । घर पोताना दृष्टे आवसे, त्यारे पामसे विश्राम || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -80
- त्यारे तेवा मांहें सूं सोध थासे, आज आव्यो अवसर । साध पुरूख तमें जोजो संभारी, बीजी नथी छूटवा पर || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -72
- त्यारे नारायण जी कीधो प्रवेस, देखाडी माया लवलेस । जुए जागीतां तेहज ताल, दया करी काढयो तत्काल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -9, चौ -14

- त्यारे बेहेर द्रष्टनो कयो विचार, एक मोटो आडीको थासे निरधार । अंतरगते आवसे धणी, वस्तों आपणने देसे घणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -41
- त्यारे ब्रह्मा ने खीर सागर मली, आव्या वैकुंठ भगवानजी भणी । एवडो स्वामीजी स्यो उतपात, लखमीजी तप करे कल्पांत सात || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -40
- त्यारे ब्रह्मा मन विमास्या रही, मन मांहें अति चिंता थई । ए पडउत्तर हूं थी नव थयो, त्यारे वैकुंठनाथने सरणे गयो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -5
- त्यारे भगवानजी एम बोल्या रही, जे वांक अमारो काइए नहीं । स्वामी तोहे वचन तमने केहेवाय, जे लखमीजी घणूं दुखी थाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -41
- त्यारे भगवानजी बोल्या तत्काल, लखमीजी म लावो वार । त्यारे कलप्यो जीव दुख अनंत करी, उपनो वैराग सोक मन धरी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -36

- त्यारे भगवानजी मन विमास्या रही, श्री धणीजीए इछा कीधी सही । लाधू सपन दी• आवेस, माया रामत कीधी प्रवेस || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -23
- त्यारे मन मांहें विचार करियो, ए कां आडा थाय दुरिजन । ए सूं जाणे छे वर नहीं एनो वालैयो, तो जातां वारे छे वन || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -23
- त्यारे लखमीजी दुखाणा घणूं, मनसू जाणे हूं केही पेर करूं । मोसूं तां राख्यो अंतर, हवे करीस हूं केही पर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -28
- त्यारे लखमीजी लाग्या चरणे, एम तेडी आव्या आनंद अति घणे । ब्रह्मा ने खीर सागर वल्या, चरणे लागी अस्थानक आव्या || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -49
- त्यारे लखमीजीए कीधा परणाम, त्यारे वली बोल्या श्री भगवान । लखमीजी तमे चालो घरे, त्यारे वली रमा वाणी ओचरे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -45
- त्यारे लीला त्रणे थिर थासे, अखंड एणी प्रकार । निमख एक न विसरे, रूदे रेहेसे सरूपने सार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -96
- त्यारे वचनतणां करतूं विचार, खरी वस्त जोसूं तत्काल । वासना ओलखी लेसूं सही, माया जीवने वचन भारे केहेसूं नहीं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -44
- त्यारे वढ्या आपणसं पोतावट करी, तोहे भरम निद्रा नव मूकी परहरी । त्यारे अनेक पेरे आंसूवालीने कयूं, पण एणे समे अमे कांई नव लयूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -58
- त्यारे वली धणी जीए कीधा विचार, जे साथ घेर तेडी जावू निरधार । त्यारे संवत सतरे बारोतरे वरख, भादरवो मास अजवालो पख || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -59
- त्यारे वास्यो श्री रघुपति राय, एवा कठण सम कां खाधा । तमे छो अमारा हूं नेहेचे जाणूं, मन मां म धरजो बाधा || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -40
- त्यारे सह कोई पाम्यो मन अचरज, एम लखमीजीने देखाड्यू वृज । समारे थई बेठा भगवान, लखमीजीनी एम भाजी हाम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -54

- त्यारे साथ सहु आवी रेहेसे, रामत थासे रंग । त्यारे प्रगट थातूं पाधरा, पछे उलटसे ब्रह्मांड || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -15
- त्यारे सुकजी एम बोल्या प्रमाण, ग्रहजो वचन उत्तम करी जाण । चौद भवनमां मोटो तेह, मोटी मतनो धणी छे जेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -3
- त्यारे हँसी वढी आंसूवाली ने कयूं, पण एणे समे अमे कांई नव लयूं । त्यारे तारतम कही घर देखाड्या सही, पण अमे तोहे ओलख्या नहीं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -7
- त्यारे हाथ निलाटे नाख्यो सही, सुकजी कहे मुख माथी रही। हूं जोगी तूं राजा थयो, रासतणो सुख नव जाए कयो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -13
- त्यों त्यों जोत बढ़त है, ज्यों ज्यों देखें नूरजमाल । नाचत हरखत हँसत, देख धनी को खुसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -25
- त्यों सुख जेता हक का, पोहोंचत है बड़ी रूह को । बड़ी रूह का सुख रूहन, आवत है सब मों || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -13
- त्रक तूं सारे सई कर, जोपे कर जोत्रा । माल तूं बंध मूरडे करे, पई म छड हथां || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -27, चौ -7
- त्रट जोईने जलमां सांचस्या, साथ वालो स्यामाजी संग । परियाणीने थया सहु जुजवा, जल माहे कीजे आनंद || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -8
- त्रण लीला माया मधे, अमें प्रेमे मांणी जेह । आ लीला चौथी मांणता, अति अधिक जाणी एह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -73
- त्रणे जोधा अमे जोरावर, चालू एकी वाट । वालाजीने ग्रही करी ने, जीवने भेला करी दऊं साथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -54
- त्रासिमा पख प्रवान, जो वासना पांचों लिया निखान । ए पांचो कहूं अपनायत कर, देखाऊं सब्दातीत घर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -12
- त्राहि त्राहि करूं रे सजनी, पिउजी दियो मोहे छेह रे । जल बल विरहा आग में, भसम ना हुई जीव देह रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -71
- त्रिगुन इस ब्रह्मांड के, तिनको भी ए सुध नाहें । कहां से आए हम कौन हैं, कौन इन जिमी मांहें || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -23
- त्रिगुन तिर्थंकर अवतार, कई फरिस्ते पैगंमर । तिन सबकी सोभा ले स्याम, आया महंमद पर || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -2
- त्रिगुन त्रैलोकी मोह की, कहां तें हुई किन पर । सो संसे न रह्या किन का, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -7
- त्रिगुन से पैदा हुई, ए जो सकल जहान । सो खेले तीनों गुन लिए, नाहीं एक दूजे समान || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -5
- त्रिलोकी त्रैगुन में, कहूं नाहीं बेसक इलम । सो हकें भेज्या तुम ऊपर, ए देखो इस्क खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -35

- त्रिविध दुनी तीन ठौर की, चले तीन विध मांहें । कोई छोड़े न अंकूर अपना, होवे करनी तैसी तांहें || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -2
- त्रैगुन सिफत कर कर गए, ए जो खावंद जिमी आसमान । खोज खोज खाली गए, माहें थके ला मकान || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -8
- त्रैलोकी तिमर नसाइयो, कर रोसन अति जहूर । चौदे लोक चारों तरफों, बरस्या खुदा का नूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -20
- त्रैलोकी त्रिगुन माया मिने, हम बैठे थे रचके घर रे । सो नेहेचल धाम में बैठाए के, याको कौन देखावे खेल कर रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -53
- त्रैलोकी में रे उत्तम खंड भरथ को, तामें उत्तम हिंदू धरम । ताकी छत्रपतियों के सिर, आए रही इत सरम || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -4

थ

- थंभ और चीज न आवे सब्द में, कर मोमिन देखो सहर । अर्स बानी देख विचारिए, तब हिरदे होए जहूर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -22
- थंभ थंभ को देखत, ज्यों सूर के सामी सूर। बढ़त है बीच रोसनी, क्यों कहूं नूर को नूर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -89
- थंभ दिवालें गलियां, कई सीढ़ियां पड़साल । मन्दिर कमाड़ी द्वार ने, माहें कई नंग रंग रसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -4
- थंभ दिवाले नूर की, नूरै के झरोखे । नूर सख्प माहे झांकत, नूर सब नूर देखें ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -19
- थंभ दिवाले सिंघासन, सब में होत निरत । इन समें पसु पंखी चित्रामन के, सब ठौरों केलि करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -75
- थंभ दोए हारें बनी, अंदर मोहोल कई और । कई बैठकें जुदी जुदी जिनसों, कहां लग कहूं कई ठौर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -88
- थंभ द्वार अति सोभित, तरफ तीनों साठ मंदिर । बीस बीस हर तरफों, चौक बैठक अति अंदर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -45
- थंभ बड़े जवेरन के, कहूं सो केते रंग । बोहोत छज्जे कई रंगों के, करे जोत जोत सों जंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -4
- थंभ बड़े बड़ी जाएगा, पहाड़ तले चहुंओर । ए खूबी कही न जावहीं, बन सोभित नेहेरें जोर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -24
- थंभ बारे पाट चांदनी, जल हिस्से तीसरे जोए । चारों खूटों थंभ नीलवी, थंभ आठ चार रंग सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -41
- थंभ बारे बारे चारों खांचों, कहूं तिनका बेवरा कर । बारे नंग चार धात के, रंग जुदे जोत बराबर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -13

- थंभ बारे भए इन बिध, साम सामी एक एक । यों बारे बने साम सामी, तरफ चारों इन विवेक || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -15
- थंभों दिवालों नंगों तेज जोत, जानों निरत सबों ठौर होत । पिया पीछल मंदिर सेत दिवाल, तामें कई रंग नंग विसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -151
- था रब्द सबों इस्क का, हक देत फेर फेर याद । रूहें क्योंए न छोड़ें खेल को, दुख लाग्या ऐसा कोई स्वाद || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -35
- थाली धात वसेकनी, जगते अजवाली । लाल जडाव लोटे जल, लई प्रेमे पखाली || ग्रं - रास, प्र -46, चौ -6
- थासे संजोग त्यारे बंध छूटा, करम नहीं लवलेस । निहकर्म तणां निसान ज वागा, अखंड सुख पांमसे वसेक || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -121
- थियां हेकली हिन रंजमें, मथे अभ तरे थी मैं । ई हाल पसां पाहिजो, त की छडे हेकली मूं || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -9
- थी उरझन चौदे तबक में, सब जाते थे मर मर । दई हैयाती सबन को, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -40
- थी न सगां हेकली, बी तो लगाई । छूटे न तोहिजी तोह रे, मुंजी फिरे न फिराई || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -45
- थी रात अंधेरी सबन में, बका दिन देखाए करी फजर । मकसूद किया सबन का, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -43
- थे हम दोऊ बंदे स्यामाजीय के, एक नसली और नजरी । झगड़ दोऊ जुदे हुए, देने खबर पैगंमरी || ग्रं - किरन्तन, प्र -122, चौ -2
- थेई धणी से सुरखरू, सोई सोहागिण होए । सा मर गिने पाणसे, जे आडो पट न कोए || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -36

द

- दई अग्या सबों बड़ भागी, आइयां मंदिर चरनों लागी । श्री राज स्यामाजी सेज्या पधारे, कोई कोई वस्तर भूखन वधारे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -155
- दई कुंजी सनाखत तुम को, मैं भेज्या मासूक रसूल । बेसक करियां दे इलम, सो भी गैयां तुम भूल || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -80
- दई दई सम सम थाकी थाकी तमने, कां कां करो भीडा भीड जी । आयत आयत आवे रे अंगों अंगें, त्यारे न देखो पीड जी || ग्रं - रास, प्र -43, चौ -7
- दई दिलासा बुलाए के, मैं लई सिखापन । रूहअल्ला के फरमान में, लिखे जामें दोए तन || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -4
- दई प्रदखिणा अति घणी, करूं दंडवत परणाम । सहु साथना मनोरथ पूरजो, मारा धणी श्री धाम || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -83

- दई प्रदखिणा अति घणी, साथे कीधा दंडवत परणाम । हवे करतूं रामत रंग तणी, अने भाजयूं हैडानी हाम || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -50
- दई बड़ाई मेरे दिल को, हक बैठे अर्स कर । अपनी अंगना जो अर्स की, रूह क्यों न खोले नजर || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -5
- दई बड़ी बड़ाई आपसी, दियो सो अपनों नाम । करनी अपनी दे थापी, दे साहेदी अल्ला कलाम || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -17
- दई भिस्त चौदे तबक को, सबों पूरा इस्क इलम । सो सब सेवें हम को, सबों बल रसना खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -52
- दई मेहेरें कुंजी इमाम को, तीनों महंमद सूरत । मेहेरें दई हिकमत, करी मेहेरें जाहेर हकीकत || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -33
- दई साख रसूल अल्लाह ने, ना पोहोंचे जबराईल इत । कहे पर जले तजल्ली से, ताथे जोए ना उलंघत || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -61
- दख्यान इनों के इमाम मेंहदी तोक्ला, जुबान बोलने से ना समस्थ || ग्रं - सनंध, प्र - 2, चौ -8
- दज्जाल एक आंख जाहेरी, कई बिध तिनकों लानत करी । नाहीं दज्जाल आंख बातूनी, जासों मारफत पाइए धनी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -34
- दज्जाल नजरों न आवहीं, सब में किया दखल । जाने दोस्त को दुस्मन, कोई ऐसी फिराई कल || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -6
- दज्जाल सरूप अंधेर को, आखिर ईसा मारसी ताए । पेहेले निरमल करके, लेसी कदमों सुरत लगाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -29
- दंत तरणां लई तारुणी तलफियो, तमें बाहो दाहो दीन दातार । खमाए नहीं कठण एवी कसनी, राखो चरण तले सरण साधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -36, चौ -3
- दंत लालक लिए मुख अधुर, क्यों कहूं रंग ए लाल । जो कछू होवे पेहेचान, तो क्यों दीजे इन मिसाल || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -75
- दन्त उज्जल ऐनक ज्यों, मांहें जुबां देखाई देत । देख दन्त की नाजुकी, अति सुख मोमिन लेत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -145
- दन्त सलूकी रंग की, इन जुबां कही न जाए। मुख मुस्कत दन्त देखत, क्या केहे देऊं बताए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -141
- दबदबे का रोसन सूर, मेहेरबानगी साया खुदाए का नूर । ए सारे जो कहे निसान, सो पावे हादी से होए पेहेचान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -11
- दम अबलीस अजाजील को, जाए कुराने कही लानत । सो बैठ दुनी के दिल पर, चलावे सरीयत || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -48
- दम ख्वाबी देखें क्यों बका को, कर देखो सहर । ख्वाब दुनी तब क्यों रहे, जब हुआ दिन बका जहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -119

- दम दज्जाल सबन में, रहत दुनी दिल पर । ए जो पातसाह अबलीस, करत सबों में पसर || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -42
- दम दिल तन एकै, बिछुर के भूली वतन । जानू के सोहोबत कबूं न हुती, तो यों कहा सुकन || ग्रं - किरन्तन, प्र -118, चौ -2
- दम दिल पाक तब होवहीं, जब हक की आवे फिराक । अर्स रूहें दिल जुदा करें, और सबसे होए बेबाक || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -48
- दम न छोड़े मासूक को, मेरी रूह की एह निसबत । क्यों बातें याद दिए न आवहीं, जो करियां बीच खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -6
- दम में आंऊं बाझाइंदी, दम में हित नाहियां । दम में भाइयां मूर थी, तोके थीराइयां || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -32
- दम में चुआं आंऊं हेकली, दम में गडजिम बेई । दम में मेडो रूहन जो, न्हारियां थी त्रेई || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -31
- दमानक ज्यों कहूं कहूं, यों पीछली देत गिराए । ए चोट आसिक जानहीं, जो होए अर्स अरवाए || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -40
- दया आपण ऊपर अति घणी, प्रगट लीला कीधी घरतणी । सेवा कीधी धनवाइए ओलखी धणी, सोभा साथमां लीधी अतिघणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -55
- दया और अंकूर की, छिपे न करनी नूर । मन वाचा करम बांध के, दूजा ऐसा कर ना सके जहूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -30
- दया को प्रकरण अब तो मेरे पिया की, दया न समावे इंड । ए गुन मुझे क्यों विसरे, मोसों हुए सब अखंड । सोहागनियों पिया दया गन कैसे कहँ || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -1
- दया धनी की है अति घन, कई विध सुख लिए सैयन । सेवा करी धनबाईऐ पेहेचान के धनी, सोभा साथ में लई अति घनी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -10
- दया भी तिन पर होएसी, जिनके असल अंकूर । अव्वल मध और आखिर, सनमुख सदा हजूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -23
- दया मुकट सिर छत्र चमर, दया सिंघासन पाट । दया सर्वे अंग पूरण, सहु दया तणों ए ठाट || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -3
- दया मुकट सिर छत्र चंवर, दया सिंघासन पाट । दया सबों अंगों पूरन, सब हुओ दया को ठाट || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -3
- दयाने रखे तमे विसारो, इंद्रावती अलवी रे थाय । एणे वचने वालोजी तेडसे, अंगना आवीने लागसे पाय || ग्रं - खटरुती, प्र -3, चौ -19
- दयासिंध सुख सागर, इस्क गंज अपार । सराब पिलावत नैन सों, साकी ए सिरदार || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -15

- दर माधा अर्स जे, आंऊं रोंदी पसां हित । ते मूं तोके कोठई, आंऊं हल्ली न सगां तित || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -16
- दरखत करत हैं सिजदा, छोटा बड़ा घास पात । पहाड़ जिमी जल सिजदे, इस्क न इनों समात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -31
- दरखत सबे खुसबोए के, खुसबोए जिमी और जल । वाए तेज खुसबोए सों, तो कहा कहूँ पात फूल फल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -29
- दरद जो तेरे दुलहा, कर डास्यो सब नास । पर आस ना छोड़े जीव को, करने तुम विलास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -2
- दरद जो तेरे दुलहा, कर डास्यो सब नास । पर आस ना छोड़े जीव को, करने तुम विलास || ग्रं - सनंध, प्र -10, चौ -2
- दरद मीठा मेरे पिउ का, ए जो आग दई मुझे तब । अति सुख पाया मैं इनमें, सो मैं छोड़ ना सकों अब || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -19
- दरदा ले द्वारे खड़ी, खसम की गलतान । रूह लगी रसूलसों, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -31
- दरदी जाने दिल की, जाहेरी जाने भेख । अन्तर मुस्किल पोहोंचना, रंग लाग्या उपला देख || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -15
- दरदी दरदा जानहीं, ग्यानी जाने ग्यान । ए राह दोऊ जुदी परी, मिले ना काहू तान || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -31
- दरदी विरहा के भीगल, जानों दूरथें आए विदेसी । घर उठ बैठे पल में, रामत देखाई ऐसी || ग्रं - किरन्तन, प्र -80, चौ -13
- दरपन रंग दोऊ अंगूठी, और नंगों के दरपन । कर सिनगार तामें देखत, नख सिख लग होत रोसन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -107
- दरबार मोहोल नूर सबे, सब नूरै नूर विस्तार । ए नूर कहूं मैं कहां लग, कहूं याको वार न पार सुमार || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -43
- दरम्यान जो साया कही, आगे ऊग्या दिन । सूरज दिल महमद का, हुआ नूर रोसन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -94
- दरवाजे सामी दरवाजे, नूर सामी नूर बिराजे । नूर किरना उठे साम सामी, जोत रही सबों ठौर जामी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -57
- दरिया उजला दूध सा, मेहेर मीठा मिश्री । ए दरिया कबूं न होए अंधेरा, ए हकें रूहों पर मेहेर करी || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -64
- दरिया रूप अंधेरी, आदम रूप दज्जाल । एही सरूप कुलीय का, वैर विखे लानती चाल || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -48
- दरिया ला मकान का, तिनकी लेहेर मलकूत । तिन से लेहेर उठत है, सो जानो नासूत || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -31

- दरियाव जिमी परे रांग के, फिरते न आवे पार । देख जिमी या सागर, कहूं गिनती न पाइए सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -62
- दस और दोए जुदे कहे, ए इसारत जिनकी सोई लहे । ए बुरज कहे दस और दोए, ए गिनती मजल चांद की सोए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -21, चौ -3
- दस और दोए बुरज कहे, वह बारहीं सदी कयामत । क्यों पावे बंधे जाहेरी, बुजरक इन सरत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -9, चौ -14
- दस और दोए बुरज जो कहे, सो बारहीं कयामत के पूरे भए । ए तीसरी बड़ी फरिस्तों की फजर, पीछे उठ खड़ी दुनियां नूर नजर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -48
- दस दस रंग बिरिख बेल में, फल फल रंग दस दस । रंग दस दस जिमी आकासें, नूर पसु पंखी याही रंग रस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -54
- दस द्वार हुए हिसाब के, हुए बारे देखन मों। देखें बीच तीनों चौक से, ए किन मुख खूबी कहों || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -19
- दस धरके करूं अबज दस, गुन गिनते आवे मोहे अति घनो रस । अग्यारे धरके करूं खरब एक, लिखते गुन धनी ग्रहूं विसेक || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -15
- दस पर एक सदी भई, छूट गई गांठे सब । आमर" महंमद आखिर हुई, ठौर पोहोंचे मोमिन सब || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -9, चौ -13
- दस बरस लों खेलहीं, होसी विनोद कई हाँस । सबके मनोरथ पूरने, करसी बड़ो विलास || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -18
- दस मूकीने करूं अबज दस, ए गुण गणतां मूने आवे घणों रस । अग्यार मूकीने करूं खरखज एक, लखतां गुण धणी ग्रहूं वसेक || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -14
- दस रंग कहे एक तरफ के, दूजी तरफ दस रंग । सो रंग रंग कई किरने उठे, किरन किरन कई तरंग || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -163
- दस रंग कांगरी के कहूं, चार मनके ऊपर तीन । दो तीन पर एक दो पर, ए जानें दस रंग रूह प्रवीन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -169
- दस रंग के जवेर की, माहें कई नकस मुंदरी । दोए अंगूठी अंगूठों, आठों जिनस आठ अंगुरी || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -99
- दस रंग डांडों देखत, नए नए सोभित जे । हर तरफों रंग जुदे जुदे, दसो दिस देखत ए || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -28
- दस रंग नंग माहें झांझरी, ए बानी जुदी झनकार । ए सोभा अति अनूपम, अर्स के अंग सिनगार || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -40
- दस स्याम सेत के लगते, दस मंदिर सामी हार । इन चौक की रोसनी, मावत नहीं झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -2
- दस हांसें बाकी रही, ताके मंदिर झरोखे । तित ढिग दो दो मेहेराव, खूबी लेत बन पर ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -103

- दसम के नब्बे अध्या, तिनका सार भी जुदा कह्या । ताको सार अध्याय पैंतीस, जो बृजलीला करी जगदीस || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -6
- दसमी के सवा नव बरस, ता दिन पैदा सरूप सरस । पीछे जो तीसरा हुआ तमाम, वह चांद ए सूरज आखिरी इमाम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -4
- दसमी भोम चांदनी दसमी भोमें चांदनी, ए सोभा है अतंत । कई कदेले कुरसियां, बीच सोभा लेत तखत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -145
- दसमी भोमें चांदनी, ऊपर कांगरी जोत । तेज पुन्ज इन नूर को, जानों आकास सब उद्दोत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -81
- दसमी भोमे नूर चांदनी, नूर गुमटियां देखत । ए मोहोल गिरदवाए नूर के, नूर में हक हादी रूहें खेलत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -120
- दसमी लग रोज रख का, सो दुनी के साल हजार । कया बेहेतर महीने हजार से, लैल तीसरा तकरार || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -36
- दसमी सदी भी हिसाब में, गिनती में आई । इतथें सूरू हुई, रूहअल्ला की रोसनाई || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -6
- दसमी से दोए भए, सो हादी दोए बुजरक । आखिर जमाना करके, पोहोंचाए सबों हक || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -9, चौ -15
- दसहीं ईसा अग्यारहीं इमाम, बारहीं सदी फजर तमाम । ए लिखी बीच सिपारे आम, तीसमा सिपारा जाको नाम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -13
- दसों दिस बसत हैं, सब में खावंद बल । रोम रोम अंग इस्क के, इन हक इस्कै के सींचल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -42
- दसों दिसा जित देखिए, मन चाह्या रूप देखाए । बिना निमूने इन जुबां, किन बिध देऊ बताए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -177
- दसों दिसा नूर नूर में, नूरै नूर खेलत । नूर उठे बैठे नूर में, नूर नूरे में चलत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -123
- दसो दिसा भवसागर, जए ते एह सुपन । आवरण पाखल मोहनूं, निराकार कहावे सुंन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -25
- दसों दिसा भवसागर, देखत एह सुपन । आवरण गिरद मोह को, निराकार कहावे सुंन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -26
- दसो दिसा भवसागर, देखत एह सुपन । गिरदवाए आवरण गफलत, निराकार कहावे सुंन || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -28
- दसों दिसा सब नूर की, नूरै का आकास । इन जुबां नूर बिलंद की, क्यों कहूं नूर प्रकास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -28
- दसों भोम के मोहोल सुख, कौन देवे मासूक बिन । सो इत सुख ल्याए इलम, ना तो कौन देवे जिमी इन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -19, चौ -19

- दाझ घणी थई देहमां, लागी कालजडे झाल" । जाणूं जीव नहीं रेहेसे, निसरसे तत्काल || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -32
- दाझ बुझत है एक सब्द में, जब कहूं धनी श्रीधाम । इन वचनें आतम सुख पायो, भागी हैड़े की हाम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -20
- दाणलीला नी रामत करतां, माथे मही माखणनो भार । वचन रंगनां उथला वालतां, रमतां वन मंझार || ग्रं - रास, प्र -4, चौ -9
- दान करे सहु देखा देखी, बांधे ते करम अनेक । मन तणी आंकडी न लाधे, तेणे बंधाय बंध विसेक || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -24
- दान दया सेवा सर्वा अंगे, कीजे ते सर्वे गोप । पात्र ओलखीने कीजे अरचा, सास्त्र अर्थ जोइए जोपा || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -27
- दाना एक खस खस का, तामें देखाए चौदे भवन । सो दाना फेर होएसी, तुम देखोगे सब जन || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -36
- दाना दिवाना हुकमें, हकमें दोस निरदोस । दूर नजीक करे हुकमें, हुकमें अपना जोस || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -19
- दाभ तूल-अर्ज माएने बातन, मुख आदम का गधी तन । बातून माएने कही कयामत, देखसी खुले हकीकत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -33
- दाभ-तूल-अर्ज मक्के से, जाहेर होसी सब ठौर । एक हाथ आसा मूसे का, दूजे सलेमान की मोहोर || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -30
- दाभतूल का निसान, ए देखो दिल धर । इनका तालिब न देखे इने, माएने खुले बिगर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -8, चौ -7
- दाभा गधा सों निसबत, अहेल जिमी दुनी जे । बिन आकीन बिन मुसाफ, कही जिमी जाहेर दाभा ए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -8, चौ -9
- दाभा होसी जाहेर, मेंहेंदी मोमिनों इमामत । उड़ावे सूर असराफील, बेसक पाया बखत || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -10
- दायम इस्क सबों अपना, रूहें केहेती अपनी जुबान । याही रसना बल वास्ते, खेल देखाया सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -15
- दायम करत रब्द, रूहें हादी हक । सब कोई केहेते आपना, बड़ा है मेरा इस्क || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -17
- दायम बातें इस्क की, करत माहों माहें प्यार । खेलते हँसते रमते, करत बारंबार || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -30
- दावा हुआ हजरत के सेती, ए करार बाँध्या सरत एती । नाम हजरत के सेहर कही, अग्यारे गिरह रस्सी पर दई || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -17, चौ -2
- दावो मुंजो या रूहन जो, सभनी बटां आंऊं । आंऊं गुझ जांणां सभ तोहिजी, की पेर डिए पांऊं || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -61

- दाहिनी तरफ जो है हक, ए लड़कियां तिन की मिलक । निगाह रखे जानें सुपना, इंद्रियों से आप अपना || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -26
- दाहिने हाथ मंदिर रंग लाखी, कई कटाव दिवाल दिल साखी । बांई तरफ पीली जो दिवाल, माहे स्याम सेत रंग लाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -152
- दाहो दसे दसो दिस सब धखे, लाल झाला चले इंड न झलाए । फोर आसमान फिरे सिर सिखरों, ए फलंग उलंघ संग खसम मिलाए || ग्रं - सनंध, प्र -6, चौ -4
- दाहो दसे दसों दिस सबे धखे, लाल झालां चले इंड न झलाए । फोड़ आकास फिरे सिर सिखरों, ए फलंग उलंघ संग खसम मिलाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -3, चौ -4
- दिखलाया सब प्रगट कर, साथ सकल लीजो चित धर । ए जिन करो तुम हलकी बान, धनी कहावत अपनी जान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -5
- दिन अग्यारे ग्वालो भेस, तिन पर नहीं धनी को आवेस । सात दिन गोकुल में रहे, चार दिन मथुरा के कहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -52
- दिन अग्यारे भेख लीला, संग गोवालो तणी । सात दिन गोकुल मधे, पछे चाल्या मथुरा भणी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -18
- दिन आटला गोप हुतो, मोटी बुधनो अवतार । लवलेस कांइक कहूं एहेनो, आगल अति विस्तार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -23
- दिन एते हक जस गाइया, लदुन्नी का बेवरा कर । हके हुकम हाथ अपने लिया, जो दिया था महंमद के सिर पर || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -65
- दिन कयामत के आए पोहोंचे, अब कैसी ठकुराई । धिक धिक पड़ो तिन बुध को, जो अब चाहे बड़ाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -101, चौ -8
- दिन कयामत के पूरे कहे, सो खास उमतवालों ने लहे । क्यों लहे जाको लिखी दोजक, जावे नहीं तिनों की सक || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -23, चौ -1
- दिन ख का दसमी सदी लग, दुनियां के साल हजार । मास हजार लैल के, तीसरे तकरार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -4
- दिन गए सो तुम जानत, बाकी भी जानत तुम । जिन विध राखो त्यों रहूं, कहा कहूं खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -51
- दिन दोहेला जाय घj मने, वली वसेके वसंत । ते तमे जाणो छो मारा वाला, जे विध जीव ने वहंत || ग्रं - खटरुती, प्र -5, चौ -4
- दिन भी लिखे जाहेर, बीच किताब हिंदुआन । जो साख लिखी इनमें, सोई साख फुरमान || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -38
- दिया जवाब रूहों हक को, ए सुकन दिल बीच आन । ए रूहें रहें हक हजूर, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -28
- दिया दोऊ हाथों कर, सिर साहे. खिताब । महामत खोले सो माएने, आगे अहेल किताब || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -26

- दिया निमूना अरवाहों को, एक पलक बेर जान । वले जवाब रूहों कया, अजूं सोई अवाज बीच कान || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -7
- दिया बीच ब्रह्मांड जुदागी, अजूं इनसे भी दूर दूर । निपट दई ऐसी नजीकी, बैठे अंग सों लाग हजूर || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -55
- दिया मोमिनों बड़ा मरातबा, जेती हक बिसात । ले बैठे मोमिन दिल में, सब मता हक जात || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -59
- दिया हवा का कुलफ, ईमान के द्वारे पर । ए खोलेगा सोई सिरदार, याको पीठ देवे पैगंमर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -64
- दियो जोस खोले दरबार, देखाया सुन्य के पार के पार । ब्रह्मसृष्ट मिने सुन्दरबाई, ताको धनीजीएं दई बड़ाई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -67
- दिल अर्स कह्या जो मोमिन, सो दिल नाजी पाक उमत । और इलाज ना इलम कोई, बिना असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -41
- दिल अर्स कह्या याही वास्ते, परदा कह्या जहूर । दोऊ दिलके बीच में, जो दिल देखे कर सहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -67
- दिल अर्स किया इन कदमों, इतहीं बैठे कर भिस्त । ए न्यारे निमख न होवहीं, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -22
- दिल अर्स खुलासा लेय के, और देख अर्स रूह अंग । रूहों सरभर कोई आवे नहीं, खूबी रूप सलूकी रंग || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -79
- दिल अर्स न होए बिना मोमिन, जो पढ़े चौदे किताब । सब जिमिएँ करे सिजदा, दिल पावे ना अर्स खिताब || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -30
- दिल अर्स नाम धराए के, नैना बरनों नूरजमाल । हाए हाए छेद न पड़े छाती मिने, रोम रोम लगे ना रूह भाल || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -2
- दिल अर्स भी तो कया, हमें जान ए निसबत । इन गिरो पर मेयराज तो हुआ, जो दिन ऊग्या हक मारफत || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -30
- दिल अर्स मोमिन कया, जामें अमरद सूरत । खिन न छूटे मोमिन से, मेहेबूब की मूरत || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -31
- दिल अर्स मोमिन कह्या, तित आए हक सुभान । सो दिल पाक औरों करे, जाए देखो मगज कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -43
- दिल अर्स हकीकी तो कया, जो हक कदम तले तन । रसूल उमती उमती तो कहे, जो हक खिलवत बीच रूहन || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -73
- दिल अर्स हुआ हुकमें, तुम आए अपने हुकम । इस्क इलम सब हुकमें, कहू जरा न बिना खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -48
- दिल असांजा सोणेमें, से था डुख पसंन । से पसो था नजरों, जे गुजरे दिल रूहन || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -21

SRJN

- दिल के अंगों बिना हक के, इत स्वाद लीजे क्यों कर । देखे सुने बोले बिना, तो क्या अर्स नाम धस्या धनी बिगर || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -36
- दिल के सुख केते कहूं, जो हक दिल दरिया पूरन । सब अंग ताबे दिल के, होसी अर्समें हिसाब इन || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -19
- दिल को तुम अर्स किया, तुम आए बैठे दिल मांहें । हम अर्स समेत तुम दिल में, अजूं क्यों जोस आवत नाहें || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -47
- दिल चाया रूहन को, हक दें हमेसा सुख । पहाड़ बन मोहोल आकास जिमी, जित रूहों का होवे रूख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -75
- दिल चाही खूबी सलूकी, दिल चाही नरम छव । दिल चाया रंग खुसबोए, रही दिल चाही अंग फब || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -138
- दिल चाही नरम सोभित, दिल चाही जोत खुसबोए । जिन खिन जैसा दिल चाहे, सब विध दे सुख सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -32
- दिल चाही सोभा धरे, दिल चाही खुसबोए । दिल चाही करे नरमाई, जोत करे जैसी दिल होए || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -142
- दिल चाहे मूं हिकडी, को न पारिए लख गुणी । तूं की लिके मूंह थी, तो जेडो मूं धणी || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -37
- दिल थिए मिडन धणीयसे, जे मूँ इस्क न हंड । कांध पूरे इस्कसे, तिन आए सौ गणी चड || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -24
- दिल दलगीरी छोड़ दे, होत तेरा नुकसान । जानत है गोविंद भेड़ा, याको पीठ दिए आसान || ग्रं - किरन्तन, प्र -103, चौ -4
- दिल पर दुस्मन हुआ पातसाह, मारी दीन इसलाम की राह । हुए हिरस हवा के बंदे, किए सैताने देखीते अंधे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -2, चौ -5
- दिल परस सरस भयो अर्स इलाही, दोऊ चुभ रहे दिल सों दिल मिल । न्यारी ना होए प्यारी आप मारी, चल विचल ना होए वाहेदत असल || ग्रं - किरन्तन, प्र -115, चौ -2
- दिल पाक जोलों होए नहीं, कहा होए वजूद ऊपर से धोए । धोए वजूद पाक दिल, कबहूं न हुआ कोए || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -40
- दिल फिरे रंग फिरत है, जसा जोस बदलत । पर असल इस्क ना बदले, जो नेहेचल रूह न्यामत || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -34
- दिल बका या फना दम, सब असल अपनी चाहे । कोई दोजख कोई भिस्त में, या कोई अर्स बीच उठाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -55
- दिल बंदगी तरीकत तीसरी, मलकूत पोहोंचे पाक होए। दिल मजाजी जुलमत लों, आप अकल न छोड़े कोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -40
- दिल मजाजी और हकीकी, कहे कुरान में दोए । ए लेसी तफावत देख के, जो रूह अर्स की होए || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -103

- दिल मजाजी गोस्त टुकड़ा, किया रसूले मुख बयान । सो क्यों उलंघे जुलमत को, बिना दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -20
- दिल मजाजी जो कहे, ताको अर्स दिल कबूं न होए । सो आए न सके वाहेदत में, जिन दिल अबलीस कह्या सोए || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -27
- दिल मजाजी दुनी का, इत अबलीस पातसाह । सो औरों दुस्मन और आपका, मारत सबकी राह || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -104
- दिल मजाजी दुनी का, मोमिन हकीकी दिल । हक हादी रूहें निसबत, कही अबलीस दुनी नसल || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -22
- दिल मजाजी दुनी सरियत, सो सके ना पुल हद भान । याको तोड़ उलंघे ले हकीकत, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -17
- दिल मुरदा मजाजी जुलमत से, पैदा कुंन केहेते कुफरान । क्यों होए सरभर मोमिनों, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -18
- दिल में जानों दे निमूना, समझाऊं रूहों को। खूबी दुनी की देख के, लगाए देखों अर्स सों || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -54
- दिल मोमिन अर्स कया, ए जो असल अर्स में तन । ए लिख्या फुरमान में जाहेर, पर किया न बेवरा किन || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -35
- दिल मोमिन अर्स कया, कया दनी दिल सैतान । ए जाहेर इन विध लिख्या, आरिफ क्यों न करें बयान || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -33
- दिल मोमिन अर्स कया, बड़ा बेवरा किया इत । दुनी दिल पर अबलीस, यों कहे कुरान हजरत || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -47
- दिल मोमिन अर्स कह्या, उतरे भी अर्स से । हक बैठक इनों दिल पर, ए सिफत न आवे जुबां में || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -35
- दिल मोमिन अर्स कह्या, सब अर्स में न्यामत । सो क्यों न करे दिल बरनन, जाकी हक सों निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -5
- दिल मोमिन अर्स कह्या, सैतान दुनी दिल पर । क्यों गिरो दुनी भेली चले, भई तफावत यों कर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -15
- दिल मोमिन अर्स तन बीच में, उन दिल बीच ए दिल । केहेने को ए दिल है, है अर्से दिल असल || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -14
- दिल मोमिन अर्स नूर में, नूर इस्क आग जलाए । एक नूर वाहेदत बिना, और नूर आग काहूं न बचाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -24
- दिल मोमिन एही पेहेचान, दिल कदम छोड़ न चलत । तो पाई अर्स बुजरकी, जो थी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -81
- दिल मोमिन का अर्स है, जो देखे अर्स मोमिन । हक चाहें बैठाया अर्स में, तो तेरे आगे ही नहीं ए तन || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -22

- दिल मोमिन क्यों अर्स कह्या, ए दुनी ना एता विचारत । ए विचार तो उपजे, जो होए हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -46
- दिल मोमिन हक अर्स कह्या, तो इन दुनियां करी हराम । पीठ दई मुरदार को, जिन दिलों अर्स आराम || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -33
- दिल रूहें बारे हजार को, रूप नए नए चाहे दम दम । दें चाह्या सख्प सबन को, इन विध कादर खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -32
- दिल सखत बिना इन सरूप की, इत लज्जत लई न जाए । ए हुकम करत सब हिकमतें, हक इत ए सुख दिया चाहें || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -36
- दिल साँच ले सरीयत चले, या पाक होए ले तरीकत । दिल अर्स न होए बिना मोमिन, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -26
- दिल हक का और हादी का, ए दोऊ दिल हैं एक । एकै मता दोऊ दिल में, ए अर्स रूहें जानें विवेक || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -24
- दिल हकीकी अर्स मोमिन, कया तिन दिल की भी तरफ नांहें । वाकी इत तरफ क्यों पाइए, दिल रेहेत अर्स तन माहे || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -30
- दिल हकीकी जो मोमिन, सो लें माएने बातन । हक इलम इस्क हजूरी, रूहें चलें बका हक दिन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -34
- दिल हकीकी रहे ना सकें, जो आया लदुन्नी दरम्यान । दिल मजाजी क्या करे, हुआ फरक जिमी आसमान || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -48
- दिल हकीकी रूहें असं की, जामें आप आसिक हुआ सुलतान । तो कही गिरो ए रबानी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -1
- दिलडा असां जा जागया, पण पुजे ना रूहसी । से हुकम हथ आंहिजे, हल्ले न असां जो की || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -15
- दिलडो अर्स संग जो, असां मथां की लाथां । पुकारीदे न न्हारियो, असां विच हेडी को पातां || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -25
- दिलमें तूं उपाइए, मंगाइए पण तूं । मूंजी रूह के गालियूं, जे मिठ्यूं सुणाइए मूं || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -46
- दिवस नहीं अजवास नहीं, ए अंधेरना तिमर । एणे कांई सूझे नहीं, आ भोम आप न घर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -20
- दिवाना मूरख मिले, स्यानप मिले सैतान । दरद ग्यान दोऊ जुदे, मिले न पिंड पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -32
- दिवाल कही अष्टधात की, चाटें आजूज माजूज दायम । पीछे रहे जैसी कागद, सुबा देखे त्योंही कायम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -2
- दिवाल कही दुनी उमर, ए टूटे रहे न कोए। खाएँगे एही सबन को, उमर चाट काटत हैं दोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -28

- दिवाला आकास लों, करे जोत जोत सों जंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -67
- दिवाला थंभन की, नरमाई अतंत । छाया पात गली मन्दिरों, तले उज्जल रेत चिलकत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -2
- दिवालों चित्रामन, कई जोत उठे तरंग । साम सामी ले उठत, करत माहों माहें जंग || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -60
- दिस एके नहीं सूझे सागर मांहें, भवसागर जम जाल । अनेक वार तडफडसो मरसो, तोहे नहीं मूके काल || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -71
- दीजे न आल आकार को, पिउ मिलना अंग इन । दौड़ चढ़ पहाड़ झांप खा, कायर होवे जिन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -14
- दीजे परिकरमा अर्स की, मोमिन दिल ना सखत । सूते भी कदम ना छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -5
- दीदार हुआ मुरदे उठे, आए हक इलम । भिस्त दोजख कही त्यों हुई, किया हिसाब चलाए हुकम || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -100
- दीदार हुआ हक सूरत का, देख अर्स नजर बातन । न्यामत अोंं की सबे, लई अर्स दिल मोमिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -3
- दीन इसलाम से जात हैं, कारन सुख सुपन । बुजरक आगे होए के, राह मारें औरन || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -39
- दीन कियाऊं हिकडो, भनी सभे कुफरान । अर्स बका केयाऊं जाहेर, जित हक बिठो पांण || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -12
- दीन दरसन फिरके मजहब, और मिलो कई जात । पढ़ पढ़ सिर बांधे पर, पर पाई ना नबी की बात || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -22
- दीन होए के चलसी, दरदी रसूल रेहेमान । बोहोत कह्या है रसूलें, ताकी नेक करी है बयान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -51
- दीप सुअर रोझ रीछड़े, बैल साम्हर मृग मेढ़े । हरन अरन बकर कूकर, फील गिमल घोड़े गैंड़े || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -29
- दीपक देख पीछा फिरे, साबित राख के अंग । आए देवे सुध और को, ताए क्यों कहिए पतंग || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -23
- दीपक देख पीछा फिरे, साबित राखे अंग । आए देवे सुध और को, सो क्यों कहिए पतंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -20
- दीपनो मेलो रे ओछव अति भलो, जिहां सिणगार करो धणी सर्व साथ । एणे रे समे वाला मूने तेडजो, जेम आवीने मलूं मारा प्राणनाथ || ग्रं - खटरुती, प्र -3, चौ -12
- दीवे टाल्यो ज्यारे सुंन सोहाग, त्यारे पतंग पाम्यो वेराग । कां झंपावी ओलवे आग, कां कायानो करे त्याग || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -55

- दीसे छे द्वार पाधरो, बेहदनो बार । इंडाने कयूं सुपन, सुपन संसार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -67
- दुख की प्यारी प्यारी पिउ की, तुम पूछो वेद पुरान । ए दुख मोही को भला, जो देत हैं अपनी जान || ग्रं - किरन्तन, प्र -16, चौ -6
- दुख को निबाहू ना मिले, और सुख को तो सब ब्रह्मांड । इन झूठे दुख थे भाग के, खोवत सुख अखण्ड || ग्रं - किरन्तन, प्र -16, चौ -5
- दुख खाना दुख पीवना, दुखै हमारो आहार । दुनियां को दुख खात है, तो दुख थें भागत संसार || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -15
- दुख तमारा नव सहं, ते चोकस जाणो चित । ए दुख ते सुख घणा देसे, रंग रस ए रामत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -30
- दुख तुमारे मैं न सहूं, सो जानो चित्त चौकस । ए दुख देसी बोहोत सुख, खेल होसी रंग रस || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -30
- दुख ते केमें दऊं नहीं, तो रामत केम जोवाय । खांत खरी जोया तणी, तेहेनो ते एह उपाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -23
- दुख तो क्यों ए न देवे रे पिउजी, ए विचार के संसे खोइए जी । ए याद वचन तो आवे रे सखियो, जो माया छोड़ते घनों रोइए जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -8
- दुख तो क्योंए देऊं नहीं, तो खेल देख्या क्यों जाए । खंत लगी खरी खेल की, तिनको सो एह उपाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -23
- दुख तो मोहोंगे मोल को, मैं देख्या दिल ल्याए । दुनियां सब भागी फिरे, कोई न सके उचाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -28
- दुख तो हमारो आहार है, औरन को दुख खाए । दुख के भागे सब फिरें, कोई विरला साध निबाहे || ग्रं - किरन्तन, प्र -16, चौ -4
- दुख दसो द्वार भेदया, और दुख भेदयो रोम रोम । यों नख सिख दुख प्यारो लगे, तो कहा करे छल भोम || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -21
- दुख दावानल काटत, और काटत सकल विकार । दुख काटत मूल माया को, बढ़े नहीं विस्तार || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -20
- दुख दावानल दुरगत मेलो, रदे मांहें चरण करो प्रकास । अखंड सुख एणी पेरे आवे, मेहेराज कहे जीव जाणो विश्वास || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -25
- दुख देवे दिवानगी, स्यानप देवे उड़ाए। ताथें दुख कोई ना लेवहीं, सब सुख स्यानप चाहें || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -31
- दुख ना दीजे देह को, सखे छोड़िए सरीर । ए सिध इन विध होवहीं, जो जोस इस्क करे भीर || ग्रं - किरन्तन, प्र -85, चौ -15
- दुख ना देखें और को, ऐसे हिरदे निपट पाखान । दुख देते ना सकुचें, कहें हम मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -41

- दुख पावत हैं मोमिन, सो हम सह्यो न जाए। हम भी होसी जाहेर, पेहेले सोहागनियां जगाए || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -35
- दुख पावत हैं सोहागनी, सो हम सह्यो न जाए। हम भी होसी जाहेर, पर तूं सोहागनियां जगाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -31
- दुख प्यारो है मुझ को, जासों होए पिउ मिलन । कहा करूं मैं तिन सुख को, आखिर जित जलन || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -6
- दुख बड़ो पदारथ, जो कोई जाने ए। ता) सुख को छोड़ के, दुख ले सके सो ले || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -11
- दुख बस्तर दुख भूखन, दुख थें निरमल देह । जो दुख प्यारो जीव को लगे, तो उपजे सत सनेह || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -19
- दुख बिना न होवे जागनी, जो करे कोट उपाए । धनी जगाए जागहीं, ना तो दुख बिना क्यों ए न जगाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -14
- दुख माया धनी मांग के, हम आए जिमी इन । सो छल सरूप अपनो देखावहीं, तो भी भूलें नहीं सोहागिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -78, चौ -14
- दुख रूपी इन जिमी में, दुख न काहूं देखत । बात बड़ी है मेहेर की, जो दुख में सुख लेवत || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -9
- दुख रे प्यारो मेरे प्रान को । सो में छोड़यो क्यों कर जाए, जो मैं लियो है बुलाए । टेक || ग्रं - किरन्तन, प्र -16, चौ -1
- दुख ले चलसी इत थे, नहीं आवन दुजी बेर । तिन क्यों मुख ऊंचा होएसी, जो खसम सों बैठी मुख फेर || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -16
- दुख ले चलसी इत थें, नहीं आवन दूजी बेर । तिन क्यों मुख ऊंचा होएसी, जो पिउसों बैठी मुख फेर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -16
- दुख सब सुपनों हो गयो, अखण्ड सुख भोर भयो । महामत खेले अपने लाल सों, जो अछरातीत कह्यो || ग्रं - किरन्तन, प्र -16, चौ -12
- दुख सुख डारो आग में, ए जो झूठी माया के । पिंड ना देखो ब्रह्मांड, राखो धाम धनी सुरत जे || ग्रं - किरन्तन, प्र -86, चौ -15
- दुख से पिउजी मिलसी, सुखें न मिलिया कोए। अपने धनी का मिलना, सो दुखै से होए || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -10
- दुख सोभा दुख सिनगार, दुखै को सब साज । दुख ले जाए धनी पे, इन सुख तें होत अकाज || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -17
- दुख हुआ बोहोत कलप्या, पर कहा करे जान । पात्र बिना पावे नहीं, रस बेहद वान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -70
- दुखडा खमी तमे ना सको, माया सुखे रया माणो रे । चढाए नहीं एणी उवटे, पाछां चढताने कां ताणो रे || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -20

- दुखतां केमे न दिए रे वालोजी, ए तां विचारीने जोइए जी । सांभरे वचन तो ज रे सखियो, जो माया मूकतां घणूं रोइए जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -2, चौ -8
- दुखतें विरहा उपजे, विरहे प्रेम इस्क । इस्क प्रेम जब आइया, तब नेहेचे मिलिए हक || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -16
- दुःखने दोहेला घणां भोगव्या, पण विरह दुःख में न खमाय । जीवडो रूए निस दिन पिऊ विना, आंसूडा ते अंग न माय || ग्रं - खटरुती, प्र -4, चौ -4
- दुखने साटे अखंड सुख आवे, अधखिण मांहें आज । साहुकारो साधो वेहेवारियो, एम सुणो कहे मेहेराज || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -43
- दुगदुगी सोभा तो कहूं, जो पगड़ी सोभा होए और । जोत करे हक दिल चाही, कोई तरफ बनी इन ठौर || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -41
- दुनियां अगुओं देखहीं, तब जाने जैसे जेहेर । यों दुनियां बीच अगुओं, बड़ा जो पड़सी वैर || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -8
- दुनियां इन चिराग को, रोसन कर बूझत । आप वतन हक बका की, इनसे कछू ना सूझत || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -58
- दुनियां इस्क न ईमान, क्यों उड़या जाए बिना पर । तो दुनी कही जिमी नासूती, रूहें आसमानी जानवर || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -96
- दुनियां कही सब ख्वाब की, सो नाहीं झूठ सब्द । तबक चौदे हद के, हक बका पार बेहद || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -39
- दुनियां कहे ए हम पर, ल्याया है किताब । ऐसे रसूल को तो कहें, जो बोलत मिने ख्वाब || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -9
- दुनियां केहेनी केहेत है, सो इबत मैं सागर । मैं लेहेरें मेर समान में, कोई निकस न पावे बका घर || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -17
- दुनियां कैसी पैदा करी, ए जो चौदे तबक । तिन सबों यों जानिया, किनों न पाया हक || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -5
- दुनियां गोते खावहीं, बिन जल भवसागर । सो सारे ही थिर किए, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -15
- दुनियां चारों खूट की, सब आवत हैं एक दर । मंगल गावें सब कोई, हुई बधाइयां घर घर || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -12
- दुनियां चौदे तबक की, सब दौड़ी बुध माफक । सुरिया को उलंध के, किन पाया न बका हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -2
- दुनियां चौदे तबक के, दिए इलमें मुरदे उठाए। ताए मौत न होवे कबहूं, लिए बका मिने बैठाए || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -54
- दुनियां चौदे तबक में, काहू खोली नहीं किताब । साहेब जमाने का खोलसी, एही सिर खिताब || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -73

SPJIN

- दुनियां चौदे तबक में, किन पाई न बका तरफ । तिन अर्स में बैठाए हमको, जा को किन कह्यो ना एक हरफ || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -34
- दुनियां चौदे तबक में, किन रिया उलंघी ना जाए । फना तले ला मकान के, ए तिनमें गोते खाए || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -58
- दुनियां चौदे तबक में, कोई बेसक हुआ न कित । सो सब थें सक मिट गई, ऐसी बेसकी आई इत || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -21
- दुनियां चौदे तबक में, जाकी तरफ न पाई किन । सो सब मेयराज में, रसूलें करी रोसन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -20
- दुनियां चौदे तबक में, सोई नाजी गिरो है एक । आखिर जाहेर होएसी, पर पेहेले लेसी सोई नेक || ग्रं - खुलासा, प्र -6, चौ -19
- दुनियां चौदे तबकों, और मिलो गुन । माएने मगज मुसाफ के, कोई खोले न हम बिन || ग्रं - खुलासा, प्र -14, चौ -5
- दुनियां चौदे तबकों, किन निरने करी न सूरत हक । तिन हक के दिल में पैठ के, करूं जाहेर हक इस्क || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -118
- दुनियां चौदे भवन में, जो देखिए मूल अर्थ । जो लेवे तेरा निमूना, ऐसा ना कोई समरथ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -9
- दुनियां जो छाया मिने, सो करे अटकलें अनेक । छाया सूर न देखहीं, पीछे कहे ताए रूप न रेख || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -31
- दुनियां जो जैसी हती, सो तिसी विध लई समझाए । तोरा किया सिर सबन के, दई सरीयत राह चलाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -4
- दुनियां जो तिलसम की, आगू होने चाहे तिन । जो ल्याया रूहल-अमीन, कलाम अल्ला रोसन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -41
- दुनियां टेढ़ी मूल की, ताको गयो पेड़ से बल । पाक किए सब इमामें, कुफर गया निकल || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -23
- दुनियां टेढ़ी मूल की, सो पेड़ से निकालूं बल । पिया प्रकास जो खिन में, सीधा करूं मंडल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -5
- दुनियां दिल अबलीस कह्या, हक अर्स दिल मोमिन । ए जाहेर किया बेवरा, कुरान में रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -142
- दुनियां दिल कया मजाजी, सो टुकड़ा गोस्त का । अबलीस कया दुनी नसले, सोई दिलों इनों पातसाह || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -42
- दुनियां दिल पर अबलीस, तो राह पुलसरात कही। वजूद न छोड़े जाहेरी, तो दस भांत दोजख भई || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -95
- दुनियां दिल मजाजी अवलीस, दिल हकीकी पर हक । एक गिरो दिल अर्स कही, सोई अर्स रूहें बुजरक || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -41

- दुनियां दिल मजाजी, कहया सो कछुए नाहें । और दिल हकीकी मोमिन, हक अर्स कहया इनों माहे || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -22
- दुनियां पैदा कलमें कुंन से, असल उनों जुलमत । जिन मिल जाओ तिन में, तुम हादी मुझ से निसबत || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -51
- दुनियां बाहेर देखहीं, अजूं आया नहीं दज्जाल । बंदगी करते आवसी, तब लड़सी तिन नाल || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -20
- दुनियां बीच ब्रह्मांड के, ऐसा होए जो इलम लिए ए। हक नजीक सेहेरग से, बीच बका बैठावे ले || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -25
- दुनियाँ भी ऐसी होएसी, दिल अबलीस सैतान । वजूद होसी आदमी, दिल कहूं न पाइए ईमान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -10
- दुनियां में अर्स कहावहीं, ताए सब जाने हक । ए इलम तिनको नहीं, जो ते पाया बेसक || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -7
- दुनियां में दोऊ लड़त हैं, एक कुफर दूजा ईमान । जीती कुफरें त्रैलोकी, ईमान दिया सबों भान || ग्रं - किरन्तन, प्र -102, चौ -7
- दुनियां ला इलाह की, फेर फेर करे फिकर । गोते खाए फना मिने, पोहोचे न बका नजर || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -29
- दुनियां ला इलाह की, फेर फेर करे फिकर । सब तले ला फना के, एक हरफ ना चले ऊपर || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -31
- दुनियां सकल चलत है पैंडे, जो साध बड़ों ने बताया । उलटा कोई नहीं रे यामें, पतित किने न केहेलाया || ग्रं - किरन्तन, प्र -15, चौ -3
- दुनियां सरीयत फरज बंदगी, और फरिस्तों बंदगी हकीकत । रूहों हकीकत इस्क, और इन पे है मारफत || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -27
- दुनियां सवे जाहेरी, सो लेवे माएने जाहेर । अंदर अर्थ खुले बिना, क्यों पावे दिन आखिर || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -15
- दुनियां से ढ़ापे रहे, अर्स बका एते दिन । रेहेत अब भी ढांपिया, जो करे ना रूह रोसन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -136
- दुनियां हिन आलम में, कायम न डिठो के । से सभ पाण पुकारियां, हिन चौडे तबके में || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -20
- दुनी असल जिनों तारीकी, सो इलमें करो पेहेचान । ताको नजीक सेहेरग से, खाली हवा ला मकान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -83
- दुनी कही सिफलीय की, तिन जिमी न छोड़ी जाए। ज्यों जीव खारे का खारे जल, त्यों मीठे का मीठे समाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -8, चौ -11
- दुनी कहे पैगंमर हो गए, लिखी सिफतें इनों आखिर । ए बका बातून क्यों बूझहीं, जो फंदे बीच माएनों ऊपर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -109

SPJIN

- दुनी कहे हक को, वजूद नहीं मुतलक । तो ए हुकम किन ने किया, जो सूरत नाहीं हक || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -24
- दुनी किबला करें पहाड़ को, और हक तरफों में नाहें । अर्स बका तरफ न राखत, ए देखे फना के महे || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -55
- दुनी के सुख दिए मैं तिनको, जो कोई चाहे सुख । जिनसे मेरा पिउ मिले, मैं चाहूं सोई दुख || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -5
- दुनी चलन इन जिमी का, चलना हमारा आसमान । मोमिन दुनी बड़ी तफावत, ए जाने मोमिन विध सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -60
- दुनी जाने तन मोमिन, बैठे हैं हम मांहें । बोलत हैं बानी बका, ए रूहें तन दुनी में नाहें || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -87
- दुनी जाने मोमिन दुनी से, ए नहीं बीच इन खलक । एता भी ना समझे, पुकारत कलाम हक || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -82
- दुनी जाहेरी झण्डे की, तिन पांउं कटाए पुल-सरात । लई ना हक हकीकत, और वजूदें चल्या न जात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -96
- दुनी जुदे तुमें तो जानहीं, जो तुम जुदे हो मुझ सें । हम तुम होसी भेले जाहेर, अपन वाहेदत हैं अर्स में || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -72
- दुनी तन जुलमत से, इन की असल न बका में । जब फरामोसी उड़ी जुलमत, तब जरा न रह्या दुनी सें || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -136
- दुनी तरफ न पावे हक की, और मुसाफ हुआ पास हक । हक मुसाफ आड़े एक पट, सो पट उड़े देखे खलक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -61
- दुनी दिल कह्या सैतान, दिल मोमिन अर्स हक । सो सरभर क्यों इनकी करे, जाए आगे पीछे दोजक || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -52
- दुनी दिल पर अबलीस, और पैदास कही जुलमत । काम हाल इनों अंधेर में, हवा को खुदा कर पूजत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -129
- दुनी दिल पर अबलीस, दिल मोमिन अर्स हक । कुरान कौल तो ना विचारहीं, जो इनों अकल नहीं रंचक || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -38
- दुनी दिल मजाजी कह्या, मोमिन हकीकी दिल । बिना तरफ दुनी क्यों पावहीं, जो अर्से रहे हिल मिल || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -77
- दुनी दुनी पैं चाहे दुनियां, ताथें करामात ढूंढ़े । पीछे दोऊ बराबर संगी, तब दे सिच्छा और मूंडे || ग्रं - किरन्तन, प्र -20, चौ -2
- दुनी दोजख दरिया मछली, पातसाह सैतान दिल पर । हराम खात है अबलीस, तिन तले दुनी का घर || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -50
- दुनी द्वैत जुबां छोड़ के, कहूं जुबां अकल और । कलाम कहूं अर्स अजीम के, महामत बैठे इन ठौर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -2, चौ -19

- दुनी न छोड़े तिन को, जो मोमिनों मुरदार करी । दुनी हवा को हक जानहीं, रूहों हक सूरत दिल धरी || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -48
- दुनी नाम सुनत नरक छूटत, इनों पे तो असल नाम । दिल भी हमें अर्स कह्या, याकी साहेदी अल्ला कलाम || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -84
- दुनी पंखी बिछोहा न सहे, वह आगे ही उड़े अरवा । गिरत है आकास से, होत है पुरजा पुरजा || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -82
- दुनी बदले दीन खोवहीं, चलें सो उलटी रीत । सुपने के सुख कारने, लोभे किए फजीत || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -5
- दुनी बरकत सफकत फकीरों, और अल्ला कलाम । उठाए दुनी से जबराईल, ल्याया अपने मुकाम || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -103
- दुनी बरकत सफकत फकीरों, और लिया छीन कुरान । बाकी इसलाम में क्या रह्या, जो रह्या न काहू ईमान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -11
- दुनी मगज न जाने मुसाफ का, तो देखे अर्स को दूर । जो जाने हक इलम को, तो देखें मोमिन हक हजूर || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -120
- दुनी में बैठाए न्यारे दुनी से, किए ऐसी जुगत बनाए। सुख दिए दोऊ ठौर के, अर्स दुनी बीच बैठाए || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -31
- दुनी यों खेलाई हक ने, क्या करे बिना अखत्यार । ए सब कछू हाथ कादर के, वही नचावनहार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -28
- दुनी राह न पावे रात की, जाहेर फना नाबूद । ऊग्या दिन मारफत का, सबों हुआ मकसूद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -65
- दुनी रूहें एही तफावत, चाल एक दूजे की लई न जाए। रूह मोमिन पर ईमान के, दुनी पर बिन क्यों उड़ाए || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -65
- दुनी सिजदा न किया, रूह महंमद आदम पर । इन भी देख्या वजूद को, ना खोले बातून नजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -9
- दुनी सिफत पोहोंचे मलकूत लो, सो फरिस्ते खाक भी पावत नाहें । तिन गिरो में बुजरक, मोहे ऐसी करी खेल माहें || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -19
- दुनी हजार साल हक दिन के, कही सौ साल एक रात । बारै फरदा रोज फजर, होए जाहेर हादी हक जात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -67
- दुबधा दिल में अवगुन ढूंढे, गुन चितसों न लगावें । भटकत फिरे भरम में भूले, अंग में आग धखावें || ग्रं - किरन्तन, प्र -6, चौ -9
- दुरमती करे तेम कीबूं, अमृत ढोलीने विख पीबूं । धणी सेहेजे आव्या सुख न लीवू, कारज कोई नव सिध्यूं || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -71
- दुर्मती तू कां थयो, हूं तो पाडूं ते बंब अपार । आंही आव्या न ओलख्या, पछे केही पेरे मोहों उपाड° || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -12

- दुलहा मेरा चल गया, मेरी वले न जुबां यों । पल पल वचन पिउ के, मोहे लगे कटारी ज्यों || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -10
- दुलहासों जो मैं करी, ऐसी करे न दूजा कोए । विलख विलख पिउजी चले, पर मैं मूंदी आंखां दोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -14
- दुलहे ने दिल हाल दे, खेंच लिए दिल सारे । कहा कहूं सुख इन विध, जो किए हाल हमारे || ग्रं - किरन्तन, प्र -83, चौ -10
- दुष्ट अधरमी केता कहूं, हुआ बेमुख देते पीठ रे । ऐसा समया गमाइया, निपट निठुर जीवरा ढीठ रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -35
- दुष्ट थई अवगुण करे, ते जई जमपुरी रोय । पण साध थई कुकरम करे, तेणूं ठाम न देखू कोय || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -7
- दुष्ट पापनी तें सू कीबूं, आगल करीस हूं केम । केही पेरे हूं मोंहों उपाडीस, मारा धणी आगल न आवी सरम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -97
- दुष्टाई सबों की संघारती, सुख अखंड आनंद विस्तारती । जन सचराचर तारती, भई नई रे नवों खंडों आरती || ग्रं - किरन्तन, प्र -56, चौ -2
- दुष्टे दुष्ट मले मद माता, ए कलजुगना रंग । सत पंडित कहावे साध मंडली, ए करमोंना बंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -45
- दुस्तर दोख न विचारे मद माता, लडसडती चाल चाले । उनमद थका अभिमान करे, अने कंठ बांहोंडीयो घाले || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -3
- दुस्मन बैठा दिल पर, सो तो जलाया चाहे । सो जाहेर फरेब देत है, हाए हाए कोई न चीन्हे ताए || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -32
- दुस्मन राह मारे इन हाल, भूले देखें बाहेर दज्जाल । छठे सिपारे लिख्या इन पर, ईसा मारसी इन काफर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -36
- दुस्मन हकमें सज्जन, सज्जन हकमें वैर । खूनी मेहेर सीधा उलटा, हुकमें मीठा जेहेर || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -22
- दूजा अंग आया नहीं, तो लों एक अंग क्यों छूटत । यों और अंग ले ना सके, एकै अंग में गलित || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -31
- दूजा कछू पोहोंचे नहीं, हक को बीच बका । जहां रूह न होवे एकली, छोड़ सबे इतका || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -83
- दूजा कौन देसी रे लड़ के, ऐसी जाग्रत बुध सुजान रे । साथ धाम का जान के, कौन केहेसी हेत चित आन रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -51
- दूजा जले इन राह में, ए वाहेदत का मैदान । तीन सूरत महंमद या रूहें, ए एकै दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -36
- दूजा ढिग वाहेदत के, आए न सके कोए। आगे ही जल जात है, बका न देखे सोए || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -15

- दूजा तरफ तो जानहीं, कोई और ठौर बका होए । नाहीं क्यों जाने तरफ है की, किन ठौर से तरफ ले कोए || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -8
- दूजा तो कछु है नहीं, दूजी है हुकम कुदरत । सो पैदा फना देखन की, फना मिले न माहें वाहेदत || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -42
- दूजा तो कहूं जरा नहीं, कहिए किन की बिध बात । कहें वेद कतेब और हदीसें, कछू नाहीं बिना हक जात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -107
- दूजा तो कोई है नहीं, ए जो माया मन दज्जाल । इलम देखे ए ना कछू, इत जरा नहीं जवाल || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -34
- दूजा देह धरन का, रसूलें किया नहीं हुकम । ताए दूजा देह क्यों होवही, जाको हिसाब हाथ खसम || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -24
- दूजी कुरसी इत तरीकत, जाहेरी ऊपर फरमान । हकीकत मारफत की, ना किन किया बयान || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -6
- दूजी गिरो फरिस्तन की, भई पैदा नूर मकान । उतरी लैलत कदरमें, सो ताबे न होए सैतान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -76
- दूजी भोम का चेहेबच्चा, जल पर झरोखे तिन । सोभा लेत अति सुन्दर, तीनों तरफों बन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -6
- दूजी भोम का चेहेबच्चा, धनी बैठत इत अन्हाए । सिनगार समें रूहन के, इन जुबां कयो न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -22
- दूजी भोम जो चौकियों, दौड़ जाइए तितथें । बीच मेहेरावों कूद के, उतर आइए अर्स में || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -24
- दूजी भोम सब नूर में, रूहें फेर देखें नूर ले । नूर प्याले हक हादी नूर, रूहों भर भर नूर के दे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -33
- दूजी सृष्ट जो जबरूती, जो ईस्वरी कही। अधिक सुख अछर में, दिल नूर चुभ रही || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -110
- दूजे तीजे मैं तो कहे, जो साथ को माया भारी । तुम देखो सुपना सत कर, तो मैं कहया विचारी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -162
- दूजे तो हम हैं नहीं, ए बोले बेवरा वाहेदत का। ज्यों खेलावत त्यों खेलत, ना तो क्या जाने बात बका || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -36
- दूध तो देख्या नहीं, देख्या ऊपर का फैन । दौड़ करें पड़े खैच में, ए भी लगे दुख देन || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -5
- दूध दधी माखण ल्यावं, अमें वालाजीने काज । ते दधी झूटी अमतणो, दिए गोवालाने राज || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -37
- दूध दधी माखन ल्यावें, हम पियाजी के काज । तित दधी हमारा छीन के, देवें गोवालों को राज || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -48

- दूध दधी ल्याई लाड़बाई, सोतो लिए मन के भाई । सब खेलें हाँसी करें, आए आए धनी जी के आगे धरें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -116
- दूध पानी रे जुदा कर, कौन केहेसी कर रोसन रे। मोहजल गेहेरे में डूबते, कौन काढे या धनी बिन रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -45
- दूध लीबूं एम जुओ करी, पाणीने मूक्यूं परहरी । दूध पाणी नो जुओ विचार, जुआ करी ओलखो आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -23
- दूध सहत की नदियां चलें, बागों बीच दरखतों तले । है इसलाम को मेहेमानी, होसी खुदा की मेहेरबानी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -8
- दूध-पाणी ना विछोडा, कोण करीने देसे । हवे आ बेहेवट मांहेथी, बांहें ग्रहीने कोण लेसे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -42
- दूनी अपनी दानाई से, लेने चाहे दोए । फरेव देने चाहे हक को, सो गए प्यारी उमर खोए || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -25
- दूब दुलीचे नूर में, नूर लग्या जाए आसमान । दूर लग नूर या विध, नूर खेलें इत चौगान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -10
- दूर करो जो बिना हक, करो उस्तुवारी जो बुजरक । लुत्फ मेहेरबानगी पाओ भेद, छूटो तिनसे जो है निखेद || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -24
- दूर कहूं न जाऊंगा, तुम बैठो पकड़ चरन । खेल देखोगे इतहीं, तुम मिल सब मोमिन || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -41
- दूर किए तारीकी रात के, सितारा करता था मैं मैं । डुबाया मारफत सूरजें, नाबूद इब्या मैं मैं सें || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -66
- दूर तो करोगे नहीं, कदम तले बैठे हक । हम फेरें तुमारा फुरमाया, ऐसे लूखे होसी मुतलक || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -31
- दूर तो कहूं जाए नहीं, बैठे पकड़ हक चरन । तो फरामोसी बल क्या करे, आपन आगू हुइयां चेतन || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -24
- दूर तो कहूं न करोगे, बैठे कदम तले । फेरें तुमारा फुरमाया, हम ऐसी क्यों करें || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -65
- दूर नजीक भी अर्स के, सो भी पाइए अर्स सहूर । नैन चरन अंग तीनों ही, एक यादै में हजूर || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -9
- दूर होसी इन रात के प्रभात, रात छेह क्योंए न आवे जी । दुख की रात घनूं लागसी दोहेली, पीछे फजर मुख न देखावे जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -33
- दूरथैं अति सुन्दर, आए देखें सोभा अतंत । इन जुबां इन पहाड़ की, क्यों कर करे सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -12
- दूसरा इत कोई है नहीं, एकै नूरजमाल । ए सब में हक नूर है, याही कौल फैल हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -84

- दूसरा कोई है नहीं, जित एकै होए । तो तिन की सुध दूजे बिना, क्यों कर देवे सोए || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -59
- दूसरा तो कोई है नहीं, ए ख्वाबी दम सब जहान । तो रसूल आया किन वास्ते, हक पे ले फुरमान || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -7
- दूसरी भोम का नूर जो, चेहेबच्चा नूर झीलन । हक हादी सुख नूर भुलवनी, देत नूर सुख अपने तन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -132
- दूसरी भोम जो अर्स की, सो तीसरी भोम लग बन । जाइए झरोखे से हिंडोले, ए सोभा कहूं मुख किन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -32
- दूसरे सत्प मिल करी कस्त, हाजी मस्कीनों को देखाई वस्त । कहया अरफे का अगला दिन, वास्ते अग्यारहीं ईद रोसन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -18, चौ -5
- दृष्ट उपली सजन हो रहे, बोल देखावें मीठे बैन । जनम सारा धनी संग रहे, कबूं दिल न दिया सुख चैन || ग्रं - किरन्तन, प्र -78, चौ -12
- दे आड़ो ब्रह्मांड सबन को, ढूंढ़ ढूंढ़ रहे सब दूर । आगूं आए इलम दिया, जासो पोहोंची बका हजूर || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -55
- दे कर नींद रूहन को, खेल देखावत नजर । तो ए खेल कौन देखत, कोई है बिना हुकम कादर || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -5
- दे साख धनिऐं जगाइया, दई बिध बिध की सुध । भांत भांत दई निसानियां, तो भी ठौर न आवे निज बुध || ग्रं - किरन्तन, प्र -77, चौ -14
- दे साहेदी कहूंगी हक, सो देखो कुरान जाए होवे सक । अब लों जाहेर थी सरीयत, खोले माएने बातून हकीकत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -4
- दे साहेदी किताब की, खोल दिए पट पार । ए खेल लैल का देखिया, तीसरा तकरार || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -41
- दे साहेदी खुदा की सो खुदा, ऐसा लिख्या बीच कुरान । एक छूट दूजा है नहीं, यों बरहक महंमद जान || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -27
- दे हक इलम जगाए मोमिनों, देखी अर्स बका न्यामत । एक जरा छिपी ना रही, देखी अर्स हक खिलवत । || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -24
- देऊं कुरान की साहेद, बिना फरमान न काढ़ों सब्द । छठे सिपारे में एह सनंध, ईसा नुसखे का खावंद || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -10
- देऊं हरफ हरफ की आयतें, जो हादिऐं खोले द्वार । सब सिफत खास गिरोह की, लिखी बिध बिध बेसुमार || ग्रं - किरन्तन, प्र -72, चौ -2
- देख कलंगी जोत सलूकी, जेता अर्स अवकास । सो सारा ही तेज में, पूरन भया प्रकास || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -10
- देख के अवसर भूलहीं, बहोरि न आवे ए अवसर । जानत हैं आग लगसी, तो भी छूटे ना छल क्योंए कर || ग्रं - किरन्तन, प्र -77, चौ -10

- देख कोमलता कान की, नैनों सीतलता होए । आसिक इन सरूप के, ए सुख जाने सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -3
- देख खेल हम फिरेंगे, जो कोई है मुस्लिम सो सब || ग्रं - सनंध, प्र -34, चौ -17
- देख तले तरफ जिमीय के, उज्जल जोत अपार । बन रोसन भरया आसमान लों, किरना नहीं सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -59
- देख तूं निसबत अपनी, मेरी रूह तूं आंखां खोल । तैं तेरे कानों सुनें, हक बका के बोल || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -1
- देख तैयारी साथ की, ओ समया रया न हाथ । अवसर नया उदे हुआ, उमंगियो सब साथ || ग्रं - किरन्तन, प्र -92, चौ -7
- देख दिलासा धनीय की, भी साख दई सबन । माहें बाहेर अंतर मिने, सब अंग किए रोसन || ग्रं - किरन्तन, प्र -87, चौ -5
- देख दुनी देख अर्स को, कई रंगों सोभे जानवर । सुख सनेह खूबी खुसाली, कई मुख बोलत मीठे स्वर || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -68
- देख देख के देखिए, सोभा अति सुन्दर । जैसी देखियत दिवालों, तिनसे अधिक अन्दर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -62
- देख देख जो देखिए, तो अधिक अधिक अधिक । नैन देखे सुख पाइए, जानों सब अंगों इस्क || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -24
- देख देख मैं देखया, ए सब करत हक हुकम । ना तो अर्स दिल एता मता लेय के, खिन रहे न बिना कदम || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -71
- देख निलवट तिलक, मुख भी भासत अति सुन्दर । सब अंग दृढ़ करके, ले रूह के नैनों अन्दर || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -19
- देख बल इन खावन्द का, जो मलकूत में बसत । कोट ब्रहमांड नए कर, अपने बन्दों को बकसत || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -27
- देख बिछोहा हादी का, पीछा साबित राखे पिंड । धिक धिक पड़ो तिन अकलें, सो नहीं वतनी अखंड || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -45
- देख बीड़ी मुख मोरत, रूह अंग उपजत सुख । पीऊं सराब लेऊ मस्ती, ज्यों बल बल जाऊं इन मुख || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -128
- देख मेहेर तूं हक की, खोल दई हकीकत । देख इलम तूं बेसक, दई अपनी मारफत" || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -15
- देख सलूकी अंगूठों, और अंगरियों सलूकी । उतरती छोटी छोटेरी, जो हिरदे में छबि फबी || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -15
- देख सुन्दर सरूप धनीय को, ले हिरदे कर हेत । देख नैन नीके कर, सामी इसारत तोको देत || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -12

- देख हरवटी अति सुन्दर, और लाल गाल गौर । लांक अधुर बीच हरवटी, क्यों कहूं नूर जहूर || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -69
- देखत काल पछाड़त पल में, तो भी आंख न खोलें । आप जैसा और कोई न देखें, मद छाके मुख बोलें || ग्रं - किरन्तन, प्र -19, चौ -9
- देखत मंदिर में कई बिध, वस्त सकल पूरन । टूक टूक कर वार डारों, मेरे जीव के और तन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -8
- देखत है दिल खेल को, लिए अर्स रूह हुज्जत । फुरमान आया इनों पर, और इलम आया न्यामत || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -53
- देखन को ए खेल खिन को, लिए जात लपटाए । महामत रूदे रमे तांसों, उपजत जाकी इछाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -48, चौ -6
- देखन को हम आए री दुनियाँ, हमहीं कारन कियो ए संच । पार हमारे न्यारा नहीं, हम पार में बैठे देखे प्रपंच || ग्रं - किरन्तन, प्र -9, चौ -7
- देखन खेल जुदागीय का, दिल में लिया रूहन । हक आप बैठे तखत पर, खेल रूहों को देखावन || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -2
- देखन मोमिन खातिर, रचिया खेल सुभान । अब मोमिन क्यों भूलही, पाई हकीकत फुरमान || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -39
- देखना था सो सब देख्या, हक इस्क और पातसाई । और हाँसी रूहों इस्क पर, सब देखी जो देखाई || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -15
- देखलाऊं मैं चेहेन कर, तब लीजो तुम हिरदे धर । तब ब्रहमा और खीरसागर दोए, लखमीजी की विनती होए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -47
- देखलावने तुम को, कोहेड़े किए ए। बताए देऊं आंकड़ी, छल बल की है जेह || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -5
- देखलावने मोमिन को, कोहेड़े किए एह । बताए देऊ आंकड़ी, छल बल की है जेह || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -8
- देखा देखी करो इनकी, बैठे तिलसम माहें । तुम आए बका वतन से, ए मुतलक कछुए नाहे || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -72
- देखा देखी का सिजदा, किया होवे जिन । कहया हाड़ पीठका सींग ज्यों, पीठ नरम न होवे तिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -5
- देखा देखी न छूटहीं, सेवत हैं दिन रैन । खुस बखत होवें खैच में, ए यों लगे दुख देन || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -7
- देखा देखी पंथ करे, अने चालता सह कोई जाय । जाणी साधन करे संजमपुरी ना, मनमां चिंता न थाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -8
- देखा देखी पंथ करो छो, रदे नथी विचार । सास्त्र वाणी जो सत करो, तो भूलो केम आवार || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -30

- देखाई राह तौरेत कुरान, कुफर सबों का दिया भान । ल्याया नहीं जो आकीन, सो जल दोजख आए मिने दीन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -2, चौ -8
- देखाए फरामोसी तारीकी, ऊपर देऊं मेरा इलम । जासों मुरदे होवें जीवते, सो दई हाथ हैयाती तुम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -63
- देखाडवा तमने, कोहेडा कीधा एह । उखेली फेर नाखू अवलो, जेम छल न चाले तेह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -9
- देखाया रसूल ने, सो लीजो आप चेतन । अंकूर अपना देखिए, ज्यों याद आवे वतन || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -16
- देखाया रूहन को, देखो नौमें सिपारे । ए हक हादी रूहें निसबती, जो बन्दे अपने प्यारे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -57
- देखावत रूहन को, पसु पंखी लराए । हँसत हक अरवाहों सों, नए नए खेल खेलाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -12
- देखावें खोल मुसाफ दिल, सक कुफर उड़ावे सब का । कर कजा साफ अदल, सो पावे तौहीद राह || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -27
- देखी अपनी भिस्त आप नजरों, जो होसी बका परवान । सब करम काटे हक इलम सों, ए देखी बेसक मेहेर सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -45
- देखी अमरद जुल्फें हक की, और बोहोत करी मजकूर । कही बातें जाहेर बातून, पोहोंच के हक हजूर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -6
- देखी कायम साहेबी हक की, जिनका नहीं सुमार । इन नासूत में बैठाए के, सुख देखाए नूर के पार || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -19
- देखी निरमलता दंतन की, न आवे मिसाल लाल मानिक । ज्यों देखत बीच चसमों, त्यों देखी जाए जुबां मुतलक || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -95
- देखी सूरत अमरद, तासों किया मजकूर । सो ए दुनी में महंमदें, सब मेयराजें किया जहूर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -19
- देखीतां सुखड़ा मैं तो नाख्या उडाडी, दुस्तर दुखें न बलया । एहेनी गेहेलाइए अमने एवा कीधां, जईने अछरातीतमां गलया || ग्रं - किरन्तन, प्र -49, चौ -5
- देखीते वैष्णव अति संदर, नीके बनावत भेख । माला तिलक धोए धोती पेहेरे, एक दूजे के देख || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -4
- देखू एक एक अंगुरी, आठों अंगुरी दोऊ पाए । कोमल सलूकी मिल रही, ए छब फब कही न जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -5, चौ -6
- देखे जीव दुख घणूं दुर्लभ, मेलो धणीनो आवार । श्री धाम मधे मेलो सदीवे, पण दुर्लभ मेलो संसार || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -12
- देखे दोऊ सुख दुख, तो भी कछुक रह्यो संदेह । सत सख्ये तो फेर, मंडल रचियो एह || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -29

- देखे बृज रास नीके, खेल किया पर पर । ले भोग विरह विलास को, हम आए निज घर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -28
- देखे मोती पूर नूर से, कहया मुंह पर कुलफ तिन । इन कुलफ को खोलेगा, तेरा दिल रोसन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -4
- देखें रंग चरन अंगूठे, और सलूकी कहूं क्यों कर । नख उतरते छोटे छोटे, सोभा लेत अंगुरियों पर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -78
- देखे सातों सागर, और देखे सातों लोक । पाताल सातों देखिया, जागे पीछे सब फोक || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -36
- देखे सातों सागर, देखे सातों लोक । पाताल सातों देखिए, ए गफलत उड़े सब फोक || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -38
- देखे सारे सास्त्र, सो तो गोरख धंध । मूल कड़ी पाए बिना, देखीते ही अंध || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -60
- देखो अचरज महामत मोमिनों, जो बेसक हुए हो तुम । तुम किन दई एती बुजरकी, दिल अर्स कर बैठे खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -142
- देखो अंतर आंखें खोल के, तो आवे नजरों विवेक । बरनन ना होवे एक को, गलगल सों लगी अनेक || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -7
- देखो अंत्रीख खड़ियां, हाथ बिना हथियार । नींद बड़ी है जागते, पिंड बिना आकार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -10
- देखो अंबार इस्क के, या जड़ या चेतन । जो कछू नजरों श्रवनों, सो इस्कै को वतन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -30
- देखो इनको सूल मुख सनकूल, दरद न माए अन्दर । सखियां बेसुमार हुओ अंबार, ए देखो नीके नजर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -40, चौ -9
- देखो और जिमीय को, औरे आसमान । सो सब फना बीच में, दुनियां सकल जहान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -40
- देखो कई साखें धनीय की, भी देखो अनुभव आतम । कई साखें देखो फुरमान में, जो मेहेर कर भेज्या खसम || ग्रं - किरन्तन, प्र -98, चौ -8
- देखो कौन सरूप बड़ी रूह का, आपन रूहें जाको अंग । हक प्याले पिलावत, बैठाए के अपने संग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -49
- देखो चौसठ थंभ चबूतरा, रंग नंग अनेक अर्स । नाम लिए न जाए रंगो के, रंग एक पे और सरस || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -16
- देखों जहां जहां दौड़ के, इसी भांत बन छांहें । जिमी बन नूर देख के, सुख उपजत रूह माहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -75
- देखो जाहेर याके माएने, चित ल्याए वचन । रात ऐसी बड़ी तो कही, लीला बड़ी वृंदावन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -68

- देखो जिमी दमी आदमी, खलक तमासा । ए खाली बीच बसत हैं, मुरदों का वासा || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -42
- देखों तरफ पुखराज की, या देखों तरफ ताल । या जोत मानिक देखिए, होए रही अम्बर जिमी सब लाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -161
- देखो ताल नदी झूठी जिमी, और देखो अर्स हौज जोए । करो याद सुख क्यो रूह को, दिल देख तफावत दोए || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -102
- देखो तीन बेर गिरो वास्ते, हक हुए मेहेरबान । राख लई गिरो पनाह में, डुबाए दई सब जहान || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -34
- देखो दिल विचार के, ए पसुओं का चलन । उड़त हैं आसमान में, ए चारों तरफों सब धरन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -52
- देखो दिल से दसो दिस, किन तरफ हैं हक । ए विचार देखो इलम को, तो जरा ना रहे सक || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -58
- देखो दोऊ पलड़े, एक दुनी और अर्स अरवाए । रूहें फरिस्ते पूजें बका सूरत, और लिख्या दुनियाँ खुदा हवाए || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -9
- देखो नामें मेयराजमें, किताब सिकंदर । अस्वार महंमद की जलेबमें, चलें प्यादे पैगंमर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -83
- देखों नैना नूरजमाल, जो रूहों पर सनकूल । अरवा होए जो अर्स की, सो जिन जाओ खिन भूल || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -1
- देखो पांउ जीवने भरे, भव सागर ए क्यों कर तरे । जाको ना निकस्यो निरमान, सुकजीकी वानी प्रमान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -25
- देखो पैगंमर आखिरी, रसूल केहेलाया । सो असराफीले गाए के, बातून सब बताया || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -28
- देखो प्रीत पसुअन की, और देखो प्रीत पंखियन । एक चलें दूजा ना रहे, जीव जात मांहें खिन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -65
- देखो बड़ाई महंमद, मासूक केहेवें हक । इन के सरभर दूसरा, कोई नहीं बुजरक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -16
- देखो बड़ी बड़ाई इनकी, हकें मासूक भेज्या इन पर । भेजी हाथ कुंजी रूह अपनी, और दई अपनी आमर || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -14
- देखो बन ए नारंगी, जानो उनथें एह अधिक । सुख लेती रूहें इन घाट के, कब देसी हमें हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -4
- देखो बन्दर खेल अर्स में, बड़ा देख्या अचरज ए । ए खूबी खुसाली क्यों कहूं, हक हादी आगू होत है जे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -96
- देखो बल इन कुंजीय का, ए जो लिखी रमूजें हक । आखिर रसूल होए आवहीं, दे इलम खोलावें बेसक || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -37

- देखो मनसूख कही किन माएनों, क्यों मोहोर करी कही हक । सो लिख्या कौल तौरेत में, जासों नफा लेसी खलक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -15
- देखो मन्दिर मोहोल झरोखे, ज्यों छूट जाए दुख धोखे । देखो झूठी फेर फेर मारे, सत सुख बिना कोई न उबारे || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -16
- देखो मरातबा मोमिनों, बोलें न मेयराज बिन । जो हकें हरफ छिपे रखे, वास्ते अर्स रूहन || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -53
- देखो महामत मोमिनों जागते, जो हक इलमें दिए जगाएँ । करे सो बातें हक अर्स की, तूं पी इस्क तिनों पिलाएँ || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -27
- देखो माया को वृतांत, ए दूर होए तो पाइए स्वांत । ततखिन कंपमान सो भयो, माया मिने भिलके गयो || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -12
- देखो मोमिनों के दिल में, कही केती अर्स बरकत । विचार देखो हक दिल में, क्या होसी हक न्यामत || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -16
- देखो मोहोलातें नूर की, अंदर सब पूर नूर । कहां लग कहूं माहें नूर की, नूर के नूर जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -12
- देखो विचार के साथ जी, साख दई आतम महामत । सो आतम साख सबों की देयसी, पोहोंच्या इलम हमारा जित || ग्रं - किरन्तन, प्र -98, चौ -12
- देखो सब्द इनों की रोसनी, पर जानेगा बड़ी मत का धनी । पख पचीस या ऊपर होय, तारतम के वचन हैं सोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -16
- देखो सहूर कर मोमिनों, हक के सब फरिस्ते । ए बखत करसी आखिर, किन नबी पर किए सबों सिजदे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -37
- देखो साहेदी हदीसों आयतों, उन्तीसमें सिपारे । उमतें किया सिजदा, खोल अर्स बका द्वारे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -15
- देखो साहेदी हदीसों आयतों, उन्तीसमें सिपारे । उमतें किया सिजदा, खोल अर्स बका द्वारे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -27
- देखो साहेबी अपनी, मेरा खसम नूरजमाल । जब देखत हों दिल ल्याए के, मेरी रूह होत खुसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -95
- देखो सिपारे तीसरे, होवे हकीकत सों एक दीन । सो आन मिलाए सब हुकमें, आए तले मारफत झण्डे आकीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -18
- देखो सुपनमें कई लड़ मरें, सबे आपे पर ना दुखात । जब देखें मारते आपको, तब उठे अंग धुजात || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -25
- देखोगे आसमान जिमी, माहें मरदों का वास । देत देखाई मर जात है, कर गिनती अपने स्वांस || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -24
- देख्या देखाया हुकमें, और हम भी भए हुकम । ना हुआ ना है ना होएगा, बिना हुकम खसम || ग्रं - सिंधी, प्र -16, चौ -9

- देख्या बेचून बेचगून को, और बेसबी बेनिमून । निराकार देख्या ला निरंजन, ए बेसक पड़ी सब सुंन || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -55
- देख्या में विचार के, हम सिर किया फरज । बड़ी बुजरकी मोमिनों, देखो कौन क्यों देत करज || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -3
- देख्या हौज अर्स का, योहरियां गिरदवाए । और जंगल पूर मोतियों से, दिया महंमद को देखाए || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -9
- देख्यो खेल मिल्यो सब साथ, जागनी रास बड़ो विलास । खेलते हंसते चले वतन, धनी साथ सब होए प्रसंन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -32
- देख्यो द्वार बेहद के, सकजी बलवंत । पर कल किल्ली क्यों पावहीं, जोर किया अनंत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -83
- देत काल परिकरमा इनकी, दोऊ तिमर तेज देखाए । गिनती सरत पोहोंचाए के, आखिर सबे उड़ाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -9
- देत खुसबोए खुसाली, श्रवनों अति सुन्दर । बात सुनत मेरी रीझत, सुख पावत रूह अन्दर || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -37
- देत दिखाई सो मैं चाहत नाहीं, जा रंग राची लोकाई । मैं सब देखत हूं ए भरमना, सो इनों सत कर पाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -18, चौ -4
- देत देखाई तत्व पाँचों, मिल रचियो ब्रह्मांड । जिन से उपजे सो कछुए नाहीं, आप न पोते पिंड || ग्रं - किरन्तन, प्र -6, चौ -3
- देत देखाई बाहेर भीतर, ना भीतर बाहेर भी नाहीं । गुर प्रसादें अंतर पेख्या, सो सोभा बरनी न जाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -2, चौ -8
- देत निमूना बीच नासूत, जानों क्योंए आवे मांहें दिल । आगू मेला बड़ा होएसी, लेसी मोमिन ए विध मिल || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -1
- देत बिछोहा धनीधाम के, तुम क्यों न किया एह विचार रे । हुती आसा मुखी इंद्रावती, सुख चाहती अखंड अपार रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -81
- देत हों बल सबन को, जो हैं असलू मोमिन । तूं पूछ देख दिल अपना, कर कारज दृढ़ मन || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -48
- देतां विद्या कोई जोर न दाखे, तो सखी बल करी मुकावसे केम । इंद्रावतीने वस आव्या छो, हवे जेम जाणसे करसे तेम || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -30
- देना है ठौर बुजरक, आप सदका देना बलक । छोटा बड़ा जो नर नार, ए सबन पर है करार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -23
- देव दानव रिखि मुनि, ब्रह्मग्यानी बड़ी मत । सास्त्र बानी सबद मात्र, ए बोली सबे सरस्वत || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -11
- देसी पैगंमर की साहेदी, गिरो अदल से उठाई जे । करी हकें हिदायत इन को, बहत्तर नारी एक नाजी ए || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -134

- देसी हकीकत सब असलं की, नूर जमाल सूरत । केहेसी निसबत वाहेदत, रखे न खतरा बीच खिलवत || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -74
- देह इन्द्री फरेब की, देखत इल्लत फना । सो क्यों कहे बका सुभान मुख, इन अंग की जो रसना || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -125
- देह काफर जले जो आग में, सो तो अचरज कछुए नांहें । पर जो जले जान बूझ के, हाए हाए तिन आग लगी दिल मांहे || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -27
- देह रखी सुपन की, और सक ना जागे में । ए भी हके जान्या त्यों किया, विचार देखो दिल में || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -16
- देहेन हाथे दिए पोते, रूदन करे जलधार । सगा सनमंधी सहु मली, टलवले नर नार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -25
- देहेलान ऊपर द्वार के, जो ऊपर चबूतरे दोए । चार चार मंदिर दोऊ तरफ के, ऊपर लग चांदनी सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -7
- देहेलान दस मंदिर का, झरोखे दस सामिल । माहें चौक दस मंदिर का, हुए तीनों मिल कामिल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -29
- देहेसत सबों जुदागीय की, पर खेल देखन की चाह । देखें पातसाही हककी, देखें इस्क बड़ा किन का || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -3
- दैत ऐसा जोरावर, देखो व्याप रह्या वैराट । काम क्रोध अहंकार ले, सब चले उलटी बाट || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -28
- दैत कालिंगा मार के, सब सीधा होसी तत्काल । लीला हमारी देखाए के, टालसी जम की जाल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -27
- दैत कालिंगो मारीने, सनमुख करसे तत्काल । लीला अमारी देखाडीने, टालसे जमनी जाल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -26
- दैव ते दोस लिए नहीं, ते माटे कीधा पुराण । देखी पडो का खाडमां, आ तां सहुने करे छे जाण || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -36
- दो अंगूठे आठ अंगुरी, नख सोभित तिन पर || ग्रं - सिनगार, प्र -5, चौ -4
- दो अंगूल जिमी छोड़ी नहीं, इन सकसे सिजदे बिगर । एती एके बंदगी क्यों होवहीं, तुम क्यों ना देखो दिल धर || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -23
- दो गिरो पोहोंची वतन अपने, तीसरी आम जो दीन । सो तेता ही नजीक, जिनका जेता आकीन || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -9
- दो गुरजों बीच मंदिर, हर मन्दिर झरोखे । तीन तीन उपरा ऊपर, बने तीनों भोमों के || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -15
- दो तकरार पेहेले कहे, जो गजरे मांहें लैल । तोफान पीछे ए तीसरा, जो भया फजर का खेल || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -35

- दो तीन चार पुड़े चौकियां, कई जवेरों झलकत । सीसे प्याले डब्बे तबके, कई वस्तें धरियां इत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -30
- दो थंभ द्वार मानिक के, दोए पुखराज तिन पास । दोए थंभ द्वार पुखराज के, ता संग मानिक करे प्रकास || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -14
- दो दरिया बीच एक जिमी, दो जिमी बीच दरिया एक । यों आठ दरिया बीच आठ जिमी, गिन तरफ से इन विवेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -61
- दो दो थंभ आगू द्वारने, तिन आगू दूसरी हार । ए थंभ अति बिराजत, सोभा नाहीं सुमार || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -78
- दो दो नंग थंभों के बीच में, बिना नूर न पाइए ठौर । दिवाल बंधाई नूर की, क्यों कहूं रंग नंग और || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -37
- दो दो मन्दिर हारें नूर की, बीच दो दो नूर थंभ हार । यों नवे भोम नूर मन्दिर, नूर झरोखे किनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -37
- दो दो रूहें मिल बैठती, सुख लेती सुखपाल । कहां सुख साथ मासूक के, सैर जाते जोए या ताल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -19, चौ -4
- दो दो सरूप नूर झूलत, नूर साम सामी मुकाबिल । कड़े झनझनें नूर के, नूर खेलें झूलें हिल मिल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -89
- दो दो सीढ़ियों के बीच में, ए जो छोटे कहे दो द्वार । तिन पर अजब कांगरी, अति सोभित पाल अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -40
- दो बेटे नूह नबीय के, एक स्याम दूजा हिसाम । स्यामें समारी किस्ती मिने, दिया रूहों को आराम || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -28
- दो बेटे रूह अल्लाह के, एक नसली और नजरी । भई लड़ाई इन वास्ते, मसनन्द पैगंमरी || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -91
- दो बेर डुबाई जहान को, गिरो दो बेर बचाई तोफान । तीसरी बेर दुनी नई कर, आखिर गिरो पर ल्याए फुरमान || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -48
- दो बेर दुनियां नई कर, किन दो बेर डुबाई जहान । तुमको लैलत कदर में, दो बेर किन बचाए तोफान || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -4
- दो बेर लैलत कदर में, खेल में तुम उतरे । चाहे मनोरथ मन में, सो हुए नहीं पूरे || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -42
- दो भुजा सरूप जो स्याम, आतम अछर जोस धनी धाम । ए खेल देख्या सैयां सबन, हम खेले धनी भेले आनंद घन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -24
- दो योहरी सोभा लेत हैं, ताल के खूटों पर । द्वार सामी टापूअ के, दोरी बन्ध बराबर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -23
- दो सीढ़ियों के बीच में, तले चबूतरे द्वार । तिन सब सीढ़ियों परकोटे, चढ़ती कांगरी दोऊ किनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -38

- दो सै एक गुरजें नूर की, नूर गुमटियां बारे हजार। बीच नूर रहें बैठक, थंभ नूर सोभा अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -119
- दो सौ खांचों ऊपर, सोभे नगीने सौ दोए । बुजरक बीच गुमटियां, खूबी केहे न सके कोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -96
- दो हादी दसमी सदी से आए, उमत तिन में लई मिलाए । दस ऊपर दोए बुरज जो कही, इन में हादी उमत मजकूर भई || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -21, चौ -2
- दो हार नूर थंभन की, नूर गली चली गिरदवाए । बीच नूर गली कई पौरियां, ए नूर सोभा क्यों कही जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -50
- दो हांस बीच तीसरा हिस्सा, तिनके झरोखे दस । एक हांस तिनकी बढ़ी, ए भी सोभा एक रस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -40
- दो हिजाब जर मोती के, बीच राह साल सत्तर । हक महंमद दोऊ हिजाब में, आखिर बातें करी इन बेर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -17
- दोऊ अंगूठे चरन के, और खूबी अंगुरियों । सोभा सुन्दर फनन की, आवत ना सिफत मों || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -135
- दोऊ अनियां भौंह केसन की, निलाट तले नैन पर । रेखा बांध चली दोऊ किनारी, आए अनियां मिली बराबर || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -122
- दोऊ अर्स बका जाहेर किए, जबरूत नूर जलाल । हादी रूहें लाहूत में, हक सूरत नूर जमाल || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -103
- दोऊ आए बीच हिंदुअन के, जैसे कह्या हजरत । ए बेवरा सोई समझहीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -50
- दोऊ आसन जोड़े आए, सैयां चौकी चाकले उठाए । सैयां तले आरोगने गैयां, आरोग आए पान बीड़ी लैयां || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -119
- दोऊ कमाड़ रंग दरपन, माहें झलकत सामी बन । नंग बेनी पर देत देखाई, ए सोभा कही न जाई || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -60
- दोऊ कमाड़ों की क्यों कहूं, नर रंग दरपन । ए रोसनी जुबां क्यों कहे, भरया नूर अंबर धरन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -1
- दोऊ कहे वजूद एक है, अरवा सबमें एक । वेद कतेब एक बतावहीं, पर पावे न कोई विवेक || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -41
- दोऊ कायम भई उमत, उठे बीच हादी कयामत । तीसरी कायम भई दुनियां और, तिन सबों की हज इन ठौर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -79
- दोऊ किनार सीधी चली, आए पोहोंच्या केल घाट । एक चौक क्योहरी इतलों, ए बन्यो जो ऐसो ठाट || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -18
- दोऊ किनारे गुरज दोए, बीच सोले चादरें उतरत । सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -65

- दोऊ किनारे जोए के, एक मोहोल एक चबूतर । कहूं हेम रंग कहूं जवेर, अति सोभित बन ऊपर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -21
- दोऊ किनारे ढांपिल, आगू जल जोए खुलत । रूहें क्यों रहें इन कदम बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -78
- दोऊ किनारे बन सोभित, चल्या जल जमुना ले । रोसनी न माए आकास लों, क्या कहे जुबां नूर ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -3
- दोऊ किनारें बैठक, बन गेहेरा गिरदवाए। अति सोभा इत जोए की, इन जुबां कही न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -13
- दोऊ किनारे सीधी चली, पोहोंची पुल केल घाट । ए मोहोल चौक इतलों, आगू चल्या ओर ठाट || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -21
- दोऊ किनारों बैठक, बन गेहेरा गिरदवाए। अति सोभा इन जोए की, इन जुबां कही न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -16
- दोऊ गिरो उतरी दोऊ अर्स से, रूहें और फरिस्ते । हके इलम भेज्या इनों पर, सो ले दोऊ अौं पोहोंचे ए || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -40
- दोऊ गिरो जो उतरी, दोऊ असों से आई सोए । सो आप अपने अर्स में, बिना लदुन्नी न पोहोंचे कोए || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -42
- दोऊ गुरज बीच बड़े देहेलान, जित सोले जाली द्वार । थंभ झरोखे दोऊ तरफो, ए सोभा अति अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -12
- दोऊ छेड़ों में थंभ दोए, बीच तीसरा सरभर । तिन गुल पर गुल कटाव, नूर रोसन सोभा सुन्दर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -103
- दोऊ छेद्र चकलाई नासिका, गौर रंग उज्जल । तिलक निलाट कई रंगों, नए नए देखत मांहें पल || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -31
- दोऊ छेद्र तले अधुर ऊपर, तिन बीच लांक खूने तीन । सोई सोभा जाने इन अधुर की, जो होए हुकम आधीन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -132
- दोऊ छेद्रों के गिरदवाए, यों पांखड़ी फूल कटाव । बीच अनी आई जो नासिका, ए मोमिन जाने मुख भाव || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -130
- दोऊ जड़ाव अदभुत, सात रंग नंग झाल । सुच्छम झाल सोभा अति बड़ी, झांई उठत माहें गाल || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -66
- दोऊ जहान को करो तरक, एक पकड़ो जो साहेब हक । या हँस कर छोड़ो या रोए, जिन करो अंदेसा कोए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -18
- दोऊ जुदी लीला कही अखंड, तीसरी अखंड लीला ए ब्रह्मांड । किए तारतमें मन वांछित काम, भी देखाया सुख अखंड धाम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -9
- दोऊ ढांपे किनारे नूर के, जोए फिरी नूर तरफ ताल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -19

SPJIN

- दोऊ तन तले कदम के, आतम परआतम । इनमें सक कछू ना रही, यों कहे हक इलम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -45
- दोऊ तरफ किनारे कांगरी, कई भांत दोरी नंग जरी । दाहिने हाथ भिंन चबूतरा, ता बीच गली लगता तीसरा || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -12
- दोऊ तरफ क्योहरियां पाल पर, पेड़ सीढ़ियों के लगती । दो सीढ़ी ऊपर आगू द्वारने, चौक आगू देत खूबी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -20
- दोऊ तरफ दोए चबूतरे, ए जो लगते दिवाल । तीनों तरफों कठेड़ा, क्यों देऊं इन मिसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -121
- दोऊ तरफ बड़े द्वार के, ए जो हांसें कही पचास । सामी चौक चांदनी, क्यों कहूं खूबी खास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -6
- दोऊ तरफ सोभा कान भूखन, बीच नासिका सोभे दोऊ नैन । तिलक निलाट अति उज्जल, दोऊ अधुर मधुर मुख बैन || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -41
- दोऊ तरफों कह्या पेटमें, और दुनी हाथ बीच दोए । इन बिध रहे बीच आदम, याको किन बिध मारे कोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -15
- दोऊ तरफों क्योहरी, कई कंगूरे कलस ऊपर । इत बैठक अति सुन्दर, चल आए दोऊ चबूतर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -14
- दोऊ तरफों खिड़कियां, तिन आगू बढ़ती पड़साल । ए रूहें नजरों नीके देखहीं, तो तेहेकीक बदलें हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -36
- दोऊ तरफों जो योहरी, कई कंगूरे कलस ऊपर । इत बैठक अति सुन्दर, चल आए दोऊ चबूतर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -17
- दोऊ तरफों दो योहरी, उतरती जल पर । तिन आगूं दोए चबूतरे, सो आए छात अन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -24
- दोऊ तरफों दोए चबूतरे, दोऊ तरफ कठेड़े दोए । बीच थंभ लगते चले, सोभा लेत अति सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -11
- दोऊ तरफों बिरिख अति सुन्दर, दोऊ तरफों मोहोल सुन्दर । बीच जोए सातों घाटों, दस नेहेरें चलें अंदर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -16, चौ -14
- दोऊ तरफों रेखा हरवटी, आए मिली कानन । गौर कान सोभा क्यों कहूं, नहीं नेत्र जुबां मेरे इन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -157
- दोऊ तरफों सिंघासन के, बगलों तकिए दोए । बारीक तिन कटाव कई, ए बरनन कैसे होए || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -107
- दोऊ दरबार की रोसनी, अंबर नूर भरत । रूहें कदम न भूलें सुपने, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -83
- दोऊ दरवाजे साम सामी, सोभित दोरी बंध । नूर नूरबिलंद की, जुबां कहा कहे ए सनंध || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -8

- दोऊ दौड़ करत हैं, हिंदू या मुसलमान । ए जो उरझे बीच में, इनका सुन्य मकान || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -3
- दोऊ द्वार बीच मेहेराब जो, ए सोभा कहूं क्यों कर । पड़साल आगू सबन के, गिरदवाए सोभा जल पर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -22, चौ -7
- दोऊ नेत्र किनारी सोभित, घट बढ़ कोई न केस । उज्जल स्याह दोऊ लरत हैं, कोई दे ना किसी को रेस || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -123
- दोऊ नेत्र टेढ़े कमल ज्यों, अनी सोभा दोऊ अतन्त । जब पापण दोऊ खोलत, जानों कमल दो विकसत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -151
- दोऊ पाउं बड़ी दो अंगरी, अंगूठों बराबर । तिन थें तीन उतरती, लगती कोमल सुन्दर || ग्रं - सिनगार, प्र -5, चौ -7
- दोऊ पुल के बीच में, बड़ी सातों घाटों सिफत । रूहें खेलें इत कदमों तले, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -81
- दोऊ पुल के बीच में, सातों घाट सोभित । पांच पांच भोम छठी चांदनी, इन मोहोलों की न होए सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -23
- दोऊ पुल देख के आइए, निकुंज मंदिरों पर । इत देख देख के देखिए, खूबी जुबां कहे क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -22
- दोऊ पुल नूर सात घाट में, रूहें देखें नूर रोसन । हक जिकर नूर पंखियों, होत नूर में रात दिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -26
- दोऊ बगलों केवड़े, किन विध कहूं रोसन । कई रंग नंग मां झलकत, जामा क्यों कहूं अर्स तन || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -24
- दोऊ बाजू बड़े दरवाजे, रूह अल्ला कया रंग लाल । बिन अंग जुबां बोलना, आगूं क्यों कहूं अर्स दिवाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -2
- दोऊ बाजू बन मोहोल दोऊ, परे दोऊ तरफों दरखत । पीछे मोहोल पर बड़े मोहोल, तिनकी जुदी बड़ी सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -9
- दोऊ बाजू बन्ध बिराजत, तामें केहेत जड़ाव । माहे रंग नंग कई आवत, ए जड़ाव कया इन भाव || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -95
- दोऊ बांहें चूड़ी अति सुन्दर, मिहीं मिहीं से लग मोहोरी । कई रंग नंग चूड़ियों, जवेर जवेर बीच जरी || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -29
- दोऊ बीच अधुर रेखा मुख, कटाव तीन तीन तरफ दोए। पांखें रंग सुरंग दोऊ उपली, चढ़ि टेढ़ी सोभा देत सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -147
- दोऊ बेल दोऊ बगलों पर, जानों कुन्दन नंग जड़तर । नीले पीले लाल जवेर, सुख पाऊं देत नजर || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -28
- दोऊ ब्रह्मांडों बीच में, सेर राख्या सार । खबर ना पड़ी काहू को, बेहद का बार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -46

- दोऊ मत को कह्यो प्रकार, ए ब्रह्मसृष्टी करें विचार । जाको जाग्रत है बड़ी बुध, चेते अवसर जाके हिरदे सुध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -11
- दोऊ माहों माहें जब बोलहीं, तब मीठे कैसे लगत । कोई रूह जानें अर्स की, जित हक हुकम जाग्रत || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -129
- दोऊ मिल अग्यारहीं भई, सब साले मिलाइयां बीच कही । कलीम अल्ला रोसनी दसमी मिनें, अग्यारमी में ऊग्या दिनें || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -18, चौ -8
- दोऊ मिल मधुरे बोलत, लेऊ खुसबोए के सुनों बान । सोभा कहूं के नरमाई, ए भूखन चरन सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -45
- दोऊ मुक्ताफल कान के, करड़े कंचन बीच लाल । साड़ी किनार सेंथे पर, श्रवन पानड़ी झाल || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -53
- दोऊ मेहेर देखत खेल में, लोक देखें ऊपर का जहूर । जाए अन्दर मेहेर कछू नहीं, आखिर होत हक से दूर || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -6
- दोऊ मैले जब मिले, बांध गोली मांस रचाए । नरक उदर दस मास लों, पूरो कियो पचाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -106, चौ -5
- दोऊ मोहोलों बीच नूर गली, नूर चबूतरे चौक चार । नूर गली आई बीच में, दोऊ साम सामी नूर द्वार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -44
- दोऊ मोहोलों बीच में, पानी तले आए निकसत । ए मोहोल नूरजमाल के, जुबाँ कहा करे सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -16, चौ -6
- दोऊ सख्प अति उज्जल, कई जोत खूबियों में खूब । इस्क कला सब पूरन, रस इस्क भरे मेहेबूब || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -122
- दोऊ सरूप प्रगटे, लई मिनों मिने बाथ । एक तारतम दूजी बुध, देखसी सनमुख साथ || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -92
- दोऊ सरूप में जोत जो एक, सो मैं देख्या कर विवेक । ए चरन फलें कहे इंद्रावती, तारतम जोत करूं विनती || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -2
- दोऊ सरूपों ऊपर, दो फूल ज्यों बिराजत । देखी और अनेक चित्रामन, पर अचरज एह जुगत || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -112
- दोऊ सीढ़ियों के सिरे पर, दोए दरवाजे बुजरक । दोऊ तरफों दो दिवालें, सो भी वाही माफक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -52
- दोऊ हाथ की अंगुरी, पतलियां कोमल । चरन न छूटे आसिक से, इतथें न निकसे दिल || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -104
- दोऊ हादियों दई साहेदी, मिलाए दिए निसान । तो भी लज्जत ना पाई रूहों ने, हाए हाए जो एती भई पेहेचान || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -113
- दोए अर्स कहे दोऊ हादियों, कही अ◌ोंं की मोहोलात । कही अमरद और किसोर, ए अर्स सूरत हक जात || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -115

- दोए कलस दोए छत्रियों, छे कलस ऊपर डांडन । आठों के अवकास में, करत जंग रोसन || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -33
- दोए कलस दोए छत्रियों, छे कलस गिरदवाए। ए आठ कलस हैं हेम के, सुन्दर अति सोभाए || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -113
- दोए दोए गुरज बीच द्वार के, दो दो छोटी द्वारी के । ए छोटे बड़े मेहेराब जो, सोभा क्यों कहूं सिफत ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -43
- दोए दोए सैयां सब संग, मिल बैठ करें कई रंग । सुखपाल चलावें मन, ज्यों चाहिए जैसा जिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -129
- दोए द्वार इत और हैं, इन चांदनी चार द्वार । सो चारों तरफो जगमगे, सोभा अलेखे अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -53
- दोए पुल जोए ऊपर, ए अति खूबी मोहोलात । पांच पांच भोमें मोहोल की, ऊपर छठी चांदनी छात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -68
- दोए पुल सात घाट बीच में, पाट घाट बिराजत । बीच दोऊ दरबार के, बन अंबर जोत धरत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -20
- दोए पोहोंची दोए जिनस की, मनी मानिक मोती पुखराज । हेम हीरा लसनियां नीलवी, दोऊ पोहोंची रही बिराज || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -66
- दोए भोम कही जो बन की, खिड़की मोहोल तिन बन । भोम दूजी मोहोल झरोखे, इत बसत पसु पंखियन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -10
- दोए मुनारों लगते, कई छातें चबूतरों पर । दोए बीच सीढ़ियां आगू द्वार के, जुबां सिफत पोहोंचे क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -45
- दोए सरूप कहे मिने और, किल्ली कुरान ल्याए इन ठौर । पांच सरूप मिले इत नूर, असलू बीज मांहें अंकूर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -29
- दोडी लीधी कंठ बांहोंडी, बंने करी हो हो कार । सखियो मनमां आनंदियो, सुख देखी थयो करार || ग्रं - रास, प्र -41, चौ -11
- दोडी वलगी वालाने वसेख, जाणे पिउजी हुता परदेस । सघलीना हैडा माहें, हाम मलवानी मन माहे || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -31
- दोडे सह कोई फलने, ऊंचा चढे आसमान । आकास फल मले नहीं, कोई विचारे नहीं ए वाण || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -4
- दोनों जहान में थी उरझन, करमकांड सरीयत चलन । करी हकीकत मारफत रोसन, साफ किए आसमान धरन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -32
- दोनों तरफों मोहोल के, आगू जित दरखत । सो क्यों छोड़े कदम सुपने, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -64
- दोरी बंध जल बराबर, दोऊ तरफ चली जो साध । चल कुंड से मरोर सीधी चली, मरोर हौज मिली आए आध || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -31

- दोरी लगती कांगरी, सब ठौरों गिरदवाए । चित्रामन तिनके बीच में, जो देखों सो अधिक सोभाए || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -71
- दोष नहीं इन बानी केरो, ए तो दुष्ट दासी की कमाई । अधम शिष्य गुर को बुरा कहावे, पर सोने न लगत स्याही || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -18
- दोष मा दीजे रे वैराट वाणी ने, मुखथी बोले सहु सत । बोल्या ऊपर चाली न सके, त्यारे फरी जाय छे मत || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -83
- दोष विप्रों ने कोई मां देजो, ए कलजुग ना एधाण । आगम भाख्यूं मले छे सर्वे, वैराट वाणी रे प्रमाण || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -38
- दोस्त कहूं हक बका को, धर ऐसा झूठा तन । निसबत तुमसों तो कहूं, जो देख्या बका वतन || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -26
- दोस्त मेरे मोमिन, और मासुक हादी बेसक । तो नाम लिख्या अपना, मैं तुमारा आसिक || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -22
- दोस्ती कही हक की, तिन में समनून पातसाह । पातसाह कौन होए बिना मासूक, देखो इस्म कुरान खुलासा || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -19
- दोस्ती हक हमेसगी, क्यों भुलाए दई मोमिन । तुम जो रूहें अर्स की, मेरे अर्स के तन || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -11
- दौड़ इनों के मन की, क्यों कर कहं छंछेक । पोहोंचें सब कदमों तले, जित खावंद सबों का एक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -20
- दौड़ थके सब सुन्य लो, किन ला हवा को न पायो पार । तब खुदा याही को जानिया, कहे निरंजन निराकार || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -4
- दौड़ सको सो दौड़ियो, आए पोहोंच्या अवसर । फुरमान में फुरमाइया, आया सो आखिर || ग्रं - किरन्तन, प्र -80, चौ -2
- दौड़त खेलत सखियां, एक साम सामी आवत । हाँसी रमूज एक दूजी सों, अरस-परस ल्यावत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -66
- दौड़े कई पैगंमर, कई तीर्थंकर अवतार । अव्वल से आखिर लग, किन खोल्या न बका द्वार || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -16
- दौड़े कूदें सखियां ठेकत, कई अंग अटपटी चाल । मटके चटके पाउं लटके, अंग मरोरत मुख मछराल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -73
- द्रष्ट वाली जो जुओ, तो दुख काइए नथी । रामतना रंग करसो आंही, विनोद वातों मुख थकी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -27
- द्वार अर्स अजीम का, और नूर द्वार जोए पार । ए सुख कब हम देखसी, इन दोऊ दरबार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -44
- द्वार आगू दोए चबूतरे, दोए तले बीच चौक । हरा लाल दोऊ पर दरखत, हक हादी रूहों ठौर सौक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -60

- द्वार आगे चबूतरे तीन, दोए दोए तरफ एक भिंन । दोनों पर नंगो के फूल, चित्त निरखे होत सनकूल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -10
- द्वार खोलने दौड़िया, सुकजी सपराना । ले चल्या संग परीछित, सो तो बोझे दबाना || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -84
- द्वार जो नूर मंदिर, नूरै के चार चार । लगते द्वार जो नूर के, माहें भुलवनी नूर अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -23
- द्वार तोबा के खुले हैं अब, पीछे तो दुनियां मिलसी सब । जब द्वार तोबा के मूंदयो, रैन गई भोर जो भयो || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -99
- द्वार तोबा के बंद होएसी, अग्यारै सदी आखिर । जो होवे अरवा अर्स की, सो नींद करे क्यों कर || ग्रं - खुलासा, प्र -18, चौ -3
- द्वार द्वार नूर मुकाबिल, नूर चबूतरों चबूतरे । नूर मोहोल मोहोल मुकाबिल, दोऊ तरफों सोभा नूर ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -43
- द्वार सबे खोलसी, होसी नूर रोसन । देखोगे हक सूरत, और असलू तन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -57
- द्वार समान सब देखत, ऊपर सोभा अपार । माहें खट छपरें बन की, हिंडोले छातें चार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -32
- द्वार सामी पाट घाट का, सो रस्ता बराबर । जोए परे रस्ता नूर लग, आवे साम सामी द्वार नजर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -130
- द्वार सोभित कमाड़ियों, साठों करें झलकार । और जोत थंभन की, सुख कहूं जो होए सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -46
- द्वारने इन बेहद के, लेहेरें आवें सीतल । सो इत खड़ा लेवहीं, रस की प्रेमल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -58
- द्वेष जो लाग्या पेड़ से, सब सोई रहे पकर । साधो द्वेष मिटावने, उपाय थके कर कर || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -87
- द्वैत आड़े अद्वैत के, सब द्वैत को विस्तार । छोड़ द्वैत आगे वचन, किने ना कियो निरधार || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -16
- द्वैत आड़े अद्वैत के, सब द्वैतई को विस्तार । छोड़ द्वैत आगे वचन, किने ना कियो निरधार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -16

ध

- धखत दाह दसो दिस, झालां इंड न समाए । फोड़ आकास पर फिरे, किन जाए ना उलंघी ताए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -11
- धड़ दो एक सुकन कहे, तित अचरज बड़ा होए । ए तन बिन बोले रूह अर्स की, कहे बानी बिना हिसाबें सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -38

- धडथी मस्तक कोई अलगू करे, तो अर्ध वचन मुखथी नव परे । जो कोई सारे सघला संधाण, तो अर्ध लवो न केहेवाय निरवाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -9
- धड़थें सिर कोई न्यारा करे, तो आधा वचन ना मुखथें परे । जो कोई सारे सकल संधान, तो कह्या न जाए पाओ लुगा निरवान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -9

- धणिए आपणतूं जे करी रे, तू तां जोने विचारी मन । कोडी ते हाथथी परी करी, तूने दी• छे हाथ रतन || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -7
- धणिए जगावी मूने एकली, हूं जगवं बांधा जुथ । दुखनी भोम दूथी घणी, ते करी दऊं सत सुख || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -44
- धणिए धणवट जे करी, तू तां जोने विचारी तेह । आ पापनी ने परहरी, तू कां न करे सनेह || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -5
- धणी कहावे अंतरगत रही, कया नी सोभा कालबतने थई । नहीं तो ए वचन केम प्रगट थाय, केहेतां घणूं कालजु कपाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -5
- धणी कहावे तो हूं कहूं, नहीं तो ए निध कांई एम न दऊं । देतां मारो जीव निसरे, ए वचन कांई मूने न विसरे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -3
- धणी को न करयो मूं दिलजी, आंऊं अटकां थी हिन गाल । तुं पुजे सभनी गालिएं, आंऊ की तरसां हिन हाल || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -35
- धणी जमाने जो आइयो, तडे छुटी वेई तांणों बांण । तित मोमिन उथी ऊभा थेयां, दोजख थेई कुफरान || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -15
- धणी तूं पसे थो पाणई, अने कछाइए थो पांण । जा करे गाल रे इस्क, सा दानाई सभ अजाण || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -30
- धणी तो डिंनी निद्रडी, ते विसरया सभ की। जी नचाए ती नचियूं, कुरो करियूं अस्सीं || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -17
- धणी द्वार डिनो असां हथमें, बिओ इलम डिंनाऊं जाण । त की सहूं आडो पट, को न उपट्यो पांण || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -12
- धणी धारा ही निद्रडी, व्यो ल्हाए ई केर । पिरी उतां जिंदुओ अदी, आऊं घोरे वंजां हिन वेर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -28, चौ -7
- धणी पाहिजो पांण के, विचारण न डे । के के डीह हिन रांद में, करे थो रखण के || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -44
- धणी बेठा आयो विचमें, सभ नजरमें पाए । असां दिलजी को न कस्यो, आंजे दिलमें तां आए || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -6
- धणी मंझ अची करे, आंके बेठा वेंण चाय । वियनके मतू डिए, पण तो पर केही आय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -21

- धणी मुंजी गालिनजी, से सभ तो के आए जाण । अव्वल विच आखिर लग, तो डिंनो अचे पांण || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -34
- धणी मुंहजी रूहजा, गाल करियां कोड करे। आईन उमेदूं लाडज्यूं, अची करियां गरे || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -1
- धणी मुंहजी रूहजा, गिंनी वेई विसराई । पेईस ते पेचन में, वडी जार वडाई || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -6
- धणी मुंहजी रूहजा, मूं से हित गालाए । पिरी पसण जी थिए, से तूंही डिए उपाए || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -48
- धणी मुंहजी रूहजा, हांणे चुआं कीय करे । रूह के डिंन्यो पर-डेहडो, चओ सो दिल धरे || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -2
- धणी मुंहजे अर्सजा, चुआं { हेकली जो हाल । जी आंऊं गडजी विछडिस, सा करियां आंसे गाल || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -10
- धणी मुंहजे धामजा, अंई चओ करियां तीं । असां के हिन रांदमें, मुझाए रख्या की || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -19
- धणी मुंहजे धामजा, असां न्हाए चोंणजी गाल । असांजा आंजे हथ में, कौल फैल जे हाल || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -30
- धणी या रांद बिच में, पडदो तो वजूद । पुठ डेई हकके ही पसो, हे जो न्हाए की नाबूद || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -7
- धणी रे आपणमां आवियां, मुंडा का नव जागे जीव । पेरे पेरे तूंने प्रीछव्यो, तूं हजी करे कां ढील || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -4
- धणी लगतां वचन कहीस आवी धाम, त्यारे भाजीस मारा जीवनी हाम । आ तां वचन में साथ माटे कया, ए वचन जोई साथ मूकसे माया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -12
- धणीतणा वचन ग्रया माहें रास, पाछला पार उतारवा साथ । आवसे साथ एणे प्रकास, अंधकारनो कीधो नास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -17
- धणीना जेम धणवट, लीधी भली पेरे सार । आ दुख रूपणीना मुख माहेथी, बीजो कोण काढे बिना आधार || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -19
- धन खरचं खाएँ गफलतें, आपे बुजरक होए । कीरत अपनी कराए के, खेल या बिध होए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -19
- धन गयूं ते आव्यूं वली, गयो अंधकार सहु टली । सुखना सागर मांहें गली, एने बीजो न सके कोए कली || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -74
- धंन गोकुल जमुना त्रट, धंन धंन बृजवासी । अग्यारे बरस लीला करी, करी अविनासी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -32
- धंन धंन ए दिन साथ आनंद आयो || ग्रं - किरन्तन, प्र -83, चौ -1

- धंन धंन गोकुल जमुना त्रट, धंन धंन वृजवासी । अग्यार बरस लगे लीला करी, चौद भवन प्रकासी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -22
- धंन धंन जवेर नकस चित्रामन, धन धंन देखत कई रंग उतपन । धंन धंन थंभ गलियां दिवाल, धंन धंन सखियां करे लटकती चाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -84, चौ -9
- धंन धन जुग ते कलजुग, जेमां ए निध आवी । धंन धंन खंड ते भरथनो, लीला ए पधरावी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -21
- धंन धंन तुमारे ईमान, धंन धंन तुमारे सहूर । धंन धंन तुमारी अकलें, भले जागे कर जहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -121
- धंन धंन धणी धंन तारतम, धंन धंन सखी जे ल्यावी । धंन धंन सखी हूं सोहागणी, मुझ मांहें ए निध आवी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -51
- धंन धंन धणी साथसो, बीजी वार जे आव्या । धंन धंन तेज ते तारतम, प्रगट प्रकास लाव्या || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -113
- धंन धन धनी के वस्तर भूखन, धन धंन आतम से न छोडूं एक खिन । धंन धंन सखी में सजे सिनगार, धंन धंन धनिएं मोकों करी अंगीकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -84, चौ -3
- धंन धन धनी साथसों, धंन धंन तारतम । पूरन प्रकास ल्याए के, सुख दिए हम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -135
- धंन धंन नूर सबमें रहयो भराई, देखे आतम सो मुख कयो न जाई । धंन धंन साथ छक्यो अलमस्त, धंन धंन प्रेम माती महामत || ग्रं - किरन्तन, प्र -84, चौ -12
- धंन धंन पांचों तत्व, धंन धंन त्रैगन । धंन धंन जुग सो कलजुग, धंन धंन पुरी नौतन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -29
- धंन धंन पुरी नौतन, जहां लीला उदे हुई। केताक साथ आइया, दूजिऐं सब कोई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -134
- धंन धंन पुरी नौतन, जेमां ए लीला थई । लीला बंने पाधरी, रास प्रकासे कही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -112
- धंन धंन ब्रह्मांड आ थयो, धंन धंन भरथ खंड । धंन धंन जुग ते कलजुग, जेमां लीला प्रचंड || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -111
- धंन धंन ब्रह्मांड ए हुआ, धंन धंन भरथखंड । धंन धन जुग सो कलजुग, जहां लीला प्रचंड || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -133
- धंन धन सखी मेरी सेज रस भरी, धन धन विलास में कई विध करी । धंन धंन सखी मेरे सोई रस रंग, धंन धन सखी में किए स्याम संग || ग्रं - किरन्तन, प्र -84, चौ -5
- धंन धंन सखी मेरे नेत्र अनियाले, धन धन धनी नेत्र मिलाए रसाले । धंन धंन मुख धनी को सुन्दर, धंन धंन धनी चित चुभायो अन्दर || ग्रं - किरन्तन, प्र -84, चौ -2
- धंन धंन सखी मेरे पिउ कियो विलास, धन धंन सखी मेरी पूरी आस । धंन धंन सखी में भई सोहागिन, धन धन धनी मुझ पर सनकूल मन || ग्रं - किरन्तन, प्र -84, चौ -7

- धंन धंन सखी मेरे भयो उछरंग, धंन धन सखियों को बाढ़यो रस रंग । धंन धंन सखी मैं जोवन मदमाती, धंन धंन धाम धनी सों रंगराती || ग्रं - किरन्तन, प्र -84, चौ -10
- धंन धंन सखी मेरे मन्दिर सोभित, धन धंन सरूप सुन्दर प्रेम प्रीत । धंन धंन चौक चबूतरे सुन्दर, धंन धंन मोहोल झरोखे अन्दर || ग्रं - किरन्तन, प्र -84, चौ -8
- धंन धंन सखी मेरे सोईरे दिन, जिन दिन पियाजी सो हओ रे मिलन । धंन धंन सखी मेरे हुई पेहेचान, धंन धंन पिउ पर मैं भई कुरबान || ग्रं - किरन्तन, प्र -84, चौ -1
- धंन धंन सखी मैं सेज बिछाई, धंन धंन धनी मोको कंठ लगाई । धन धंन सखी मेरे सोई सायत, धंन धंन विलसी में पिउसों आयत || ग्रं - किरन्तन, प्र -84, चौ -4
- धंन धंन सखी मोको कहे दिल के सकन, धन धन पायो में तासों आनंद घन । धंन धंन मनोरथ किए पूरन, धन धंन स्यामें सुख दिए वतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -84, चौ -6
- धंन धंन साथ मुख नूर रोसन, धन धंन सुख सदा धाम वतन । धंन धंन सखी मेरे भूखन झलकार, कौन विध कहूं न पाइए पार || ग्रं - किरन्तन, प्र -84, चौ -11
- धंन पिया धंन तारतम, धंन धंन सखी जो ल्याई । धंन धंन सखी मैं सोहागनी, जो मो में ए निध आई || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -51
- धन पोता, नव साचवो, लूसे छे चोर चंडाल । अधखिण माटे आप बंधावो, हमणां वही जासे ततकाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -33
- धंन रसूल धन फुरमान, धंन आया जिन खातिर । धंन मेंहदी महंमद रूहअल्ला, धंन धंन ए आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -37
- धनक भाजी हस्ती मल्ल मारी, त्यारे थया दिन चार । कंस पछाडी वासुदेव छोडी, इहां थकी अवतार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -19
- धनक भान गज मल मारे, तब हुए दिन चार । पछाड़ कंस वसुदेव छोड़े, या दिन थे अवतार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -19
- धनिएँ आगू अर्स के, कहे तीन चबूतर । दाहिनी तरफ तले तीसरा, हरा दरखत तिन पर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -16
- धनिएँ तो केहे केहे देखाइया, कर कर मुझसों एकांत रे । पर मैं चूकी चंडालन अवसर, अब पकड़ बैठी में स्वांत रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -73
- धनिएँ तोको बोहोतक कह्या, गए अवसर पीछे कछू ना रह्या । तेरी दोरी क्यों न टूटी तिन ताल, फिट फिट रे भुंडा कहां था काल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -36
- धनिएँ दई दिलासा मुझको, कई पदमों लाख करोड़ । तब आतम ने यों कया, परआतम धनी संग जोड़ || ग्रं - किरन्तन, प्र -87, चौ -4
- धनिएँ देखाया नजरों, सुरतां दैयां फिराए । अब पैठे हम रास में, उछरंग हिरदे चढ़ आए || ग्रं - किरन्तन, प्र -92, चौ -3
- धनिएँ भिस्त कराई हमपे, किल्ली हाथ हमारे । लोक चौदे हम किए नेहेचल, सेवें नकल हमारी सारे || ग्रं - किरन्तन, प्र -81, चौ -4

- धनिएँ हेत करके मुझको, कई विध दई समझाए । साख सास्त्र सब सब्द, मोहे बिध बिध दई जगाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -97, चौ -11
- धनी अपना जब आप संभारे, तब चोरी करे क्यों चोर । अब उलटाए करूं मैं सीधा, बैठों माया में जोर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -32
- धनी आए जगावहीं, कहे कहे अनेक सनंध । नींदें सब भुलाइयां, सेवा या सनमंध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -18
- धनी आए मेरे लाड़ पालने, वतन पार के पार । कारज कारन महाकारन से, न्यारी हों इन पिउकी नार || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -22
- धनी इनों के कारने, सरूप धरें कई करोर । लें दिल चाहया दरसन, ऐसे आसिक हक के जोर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -8
- धनी एती भी आसा ना रही, जो करूं तमसों बात । ना बात तुमारी सुन सकों, ना देखू तुमें साख्यात || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -32
- धनी एते गुन तेरे देखके, क्यों भई हिरदे की अंध । कई साखें साहेदियां ले ले, याही में रही फंद || ग्रं - किरन्तन, प्र -100, चौ -1
- धनी कबूं देखें फेर दौड़ते, कबूं बैठ चले सुखपाल । ए बन जमुनाजीय का, एही बन फिरता ताल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -19
- धनी कहावे तो यों कहूं, ना तो ए सुख औरों क्यों देऊं । ए देते मेरा जीव निकसे, ए बानी मेरे जीव में बसे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -3
- धनी के केहेलाए मैं कहे, तुमको चार सब्द । किन ज्यादा किन कम लिए, किन कर डारे रद || ग्रं - किरन्तन, प्र -86, चौ -2
- धनी के गुन मैं केते कहूं, मैं अबूझ कछू बोहोत ना लहूं । धनी के गुन को नाहीं पार, कर ना सके कोई निरवार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -7
- धनी जी के गुन मैं क्या कहूं, इन अवगुन पर एते गुन । महामत कहे इन दुलहे पर, मैं वारी वारी दुलहिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -41, चौ -16
- धनी जी ध्यान तुमारे रे । धनी मेरे ध्यान तुमारे, बैठे बुधजी बरस सहस्त्रा चार । छे से साठ बीता समे, दुनियां को भयो आचार || ग्रं - किरन्तन, प्र -53, चौ -1
- धनी दिए दरसन ता कारन, करने को सैयां चेतन । धनी आप सैयों को दई सुध, सो हम गावत अनेक विध || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -185
- धनी देवें सहूर सब बिध, तो नैनों निरखू निसदिन । आठों जाम चौसठ घड़ी, मेरे जीव के एही जीवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -20
- धनी धाम आप बिसर्जन, खेल देखाया जो सुपन । तामें बांधी ऐसी सुरत, सो अब पीछी क्यों ए ना फिरत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -184
- धनी धाम देखन की खांत, सो तो चभ रही मेरे चित । किन बिध बन मोहोल मंदिर, देखों धनी जी की लीला अंदर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -5

- धनी धाम सुख बतावत, ए धनी सुख अखंड । आप दया बतावत अपनी, आड़े दे ब्रह्मांड पिंड || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -14
- धनी न जाए किनको धूत्यो, जो कीजे अनेक धुतार । तुम चैन ऊपर के कई करो, पर छूटे न क्यों ए विकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -14, चौ -1
- धनी न देवें दुख तिल जेता, जो देखिए वचन विचारी जी । दुख आपन को तो जो होत है, जो माया करत हैं भारी जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -6
- धनी फरमान साख लेय के, देखाए दई असल । सो फुरमाया छोड़ के, करें चाया अपने दिल || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -12
- धनी बिना अंग निरमल चाहे, सो देखो चित ल्याए । क्यों निरमल अंग होवहीं, जो इन विध रच्यो बनाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -106, चौ -4
- धनी भेजी किताब हाथ रसूल, जाए कहियो होए अमीन । आखिर धनी आवसी, तब ल्याइयो सब आकीन || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -22
- धनी भेज्या फुरमान बुलावने, कया आइयो सरत इन दिन । खेल में लाहा लेय के आपन, चलिए इत होए धंन धंन || ग्रं - किरन्तन, प्र -89, चौ -7
- धनी मलकूत के कई गए, पर पाया न नूर-मकान । खोज खोज के कई थके, पर देख्या नहीं निदान || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -80
- धनी माएने खोलसी, सत जानियो सोए । साहेब बिना ए माएने, और खोल न सके कोए || ग्रं - खुलासा, प्र -14, चौ -6
- धनी मिले स्वांत न कीजे, क्यों बैठिए करार । जाग दौड़ कीजे सब अंगों, स्वांत कीजे संसार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -34
- धनी में अरधांग अछर मुझ माहीं, बुधजी बोले सो कई प्रकार । हुकम महंमद नूर ईसा भेला, कजा इमाम मेंहेंदी सिर मुद्दार || ग्रं - किरन्तन, प्र -54, चौ -2
- धनी मेरा अर्स का, मैं तुमारी अरधंग । भेख बदल सुनाए वचन, दिया दीदार बदल के अंग || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -27
- धनी मेरे कहो वाही वचन, जीव बोहोत दुख पावे मन । जो तप करो कल्पांत एकईस, तो भी जुबां ना वले कहे जगदीस || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -46
- धनी मैं तो सूती नींद में, तुम बैठे हो जाग्रत । खेल भी तुम देखावत, बल मेरो कछू ना चलत || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -16
- धनी लगते वचन कहूंगी आए धाम, तब भानूंगी मेरे जीव की हाम । ए तो वानी कही में साथ कारन, साथ छोड़सी माया ए देख वचन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -12
- धनी विना ए नींदड़ी, टाल ना सके कोई और । वार डारों जीव देह सों, मोहे धनी मिले इन ठौर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -28, चौ -7
- धनीजी को इस्क भावे, बिना इस्क न कछू सोहावे । यों न कहियो कोई जन, धनी पाया इस्क बिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -18

- धमके धारूणी, गाजती गारूणी, चांदनी रैणी, जोत करे जामंत री || ग्रं - रास, प्र -30, चौ -8
- धमके पांऊ धारूणी, रमती रास तारूणी । फरती जोड फेरनी, न चढे कोणे स्वांस री || ग्रं - रास, प्र -16, चौ -10
- धरम तणां सुख भोगवो, पाप तणां ल्यो दुख । अगिन चोरासी लाख भोगवी, अंते आव्या मनुख || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -38
- धरा ए कीधो सिणगार, डूंगरडा नीलया रे । एणी रूते रे आधार, करो सीतल काया रे || ग्रं - खटरुती, प्र -1, चौ -13
- धरे नाम खसम के, जुदे जुदे आप अनेक । अनेक रंगे संगे ढंगे, बिध बिध खेलें विवेक || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -33
- धसमसियो मंदिरमा पेसे, माननी सर्वे धाए । नंद ने बधावो दई वल्या, मांडवे मंगल गाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -51, चौ -6
- धस्यो नाम बाई सुन्दर, निज वतन देखाया घर । इत दया करी अति घनी, अंदर आए के बैठे धनी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -66
- धाएडियं करीन पिरी, परी परी चए वेण । पाणजे काजे पिरी बभेरां, पाण त्रेमाईन नेण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -6
- धाख क्यों रहे अपनी, ए किया इंड फेर । साथें आए पिउजी, इत दूजी बेर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -125
- धागा असल रूई तांतसा, जवेर जैसी जोत नंग । हुकमें बनें ताके वस्तर, होए कैसा पेहेनावा अंग || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -3
- धागे बराबर नकस, झीने बारीक अतंत । ए फूल बेल तो आवें नजरों, जो अंग अंग खुलें वाहेदत || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -34
- धाम अंकूर एक बिध को, कई विध कृपा केलि । ए माफक कृपा करनी भई, करने खुसाली खेलि || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -16
- धाम के मोहोलों सामग्री, माहें सुखकारी कई बिध । अंदर आखें खोलिए, आई है निज निध || ग्रं - किरन्तन, प्र -80, चौ -11
- धाम छोड़ आगे चल्या, तरफ चेहेबच्चे पास । इन बन की सोभा क्यों कहूं, जित नित होत विलास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -12
- धाम धनी तुझ कारने, आए माया में दोए बेर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -3
- धाम धनी दई रोसनी, जो बड़े जमात दार । सोभा दई अति बड़ी, जिनके सिर मुद्दार || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -29
- धाम धनी पेहेचान के, सीधी बात न करी सनमुख । कबूं दिल धनी का मैं न रख्या, अब क्यों सहूंगी ए दुख || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -18

SPJIN

- धाम रास और बृज की, कही सुन्दरबाईऐं जेह । ए तो कागद नेक देखिया, देत साख सब एह || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -14
- धाम लीला जाहेर करी, विध विध की रोसन । दिया सुख अखण्ड दुनी को, और कायम किए त्रिगुन || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -22
- धाम से रब्द करके, हम कब आवें दूजी बेर । सब भूले सुध हार जीत की, तो मैं कया फेर फेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -77, चौ -3
- धामणा धावडी ने वरीयाली, सफल जल भोज पत्र । खसखस फूल दीसे एक जुगते, छोत्रा ऊपर छत्र || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -13
- धारा गुफा झापा, कई जो गालें तन । कई सूकें बिना खाए, कई करें पिंड पतन || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -31
- धिक धिक ग्याता ग्यान को, जिन उलटी फिराई मत । सो अगुए जलो आग में, हाए हाए करी बड़ी हरकत || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -16
- धिक धिक नीची चातुरी, विचार न अंतस्करन । त्रैलोकी इन अंग संग, गई खोए अखंड वतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -106, चौ -12
- धिक धिक पड़ो तिन समझ को, जो पीछे देवें पाए । कुरबानी को नाम सुन, क्यों न उड़े अरवाहें || ग्रं - किरन्तन, प्र -91, चौ -3
- धिक धिक पडो ते तेज बलने, धिक धिक पडो रूप रंग । धिक धिक पडो ते गिनानने, जेहेने नव लाधो प्रसंग || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -22, चौ -8
- धिक धिक पडो मारा जीव अभागी, धिक धिक पडो चतराई । धिक धिक पडो मारा गुण सघलाने, जेणे नव जाणी मूल सगाई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -22, चौ -7
- धिक धिक पडो मारा सर्वा अंगने, जे न आव्या धणीने काम । में ओलखी नव बावस्या , मारा धणी सुंदर श्री धाम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -22, चौ -10
- धिक धिक पडो मारी पांचो इन्द्री, धिक धिक पडो मारी देह । श्री धाम धणी मूकी करी, संसारसूं कीधूं सनेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -22, चौ -9
- धिक धिक पड़ो मेरी पांचो इंद्री, धिक धिक पड़ो मेरी देह । श्री स्याम सुंदरवर छोड़ के, संसार सों कियो सनेह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -9
- धिक धिक पड़ो मेरी बुध को । मेरी सुध को, मेरे तन को, मेरे मन को, याद न किया धनी धाम । जेहेर जिमी को लग रही, भूली आठों जाम || ग्रं - किरन्तन, प्र -99, चौ -1
- धिक धिक पड़ो मेरे सब अंगों, जो न आए धनी के काम । बिना पेहेचाने डारे उलटे, ना पाए धनी श्री धाम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -10
- धिक धिक पडो रे आ संसारने, कां न उठे रे अगिन । विरह तामस रे भेलो थयो, त्यारे अंगडा थयां रे पतन || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -24

- धिक धिक पड़ो रे तमने, सं न हती ओलखाण । जीवनू धन रे जाता, तमे कां नव काढ्या रे प्राण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -28
- धिक धिक रे जीवडा, तें खोई निध हाथे । श्री धणी धाम चालतां, तूं न चाल्यो रे साथे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -67
- धिक धिक रे भुंडा जीव अजान, तेरी सगाई हती निरवान । रे मुरख तोको कहा भयो, धनी जाते कछू पीछे ना रह्यो || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -32
- धिक धिक स्वाद कहूं मैं तोको, मोहे मिल्या था मीठा जीवन । सो ए स्वाद छोड़ अभागी, जाए पड़या संसार विघन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -74
- धुआं करे मार दिवाना, कह्या ऐसे ही ईमान बिन । छूटी मुसाफ नसीहत बरकत, तब ऐसा क्यों न होए हाल तिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -20
- धूरत करके ल्याओ धन, खरचो मुख करो उनमाद । मेले मेलो मुख भाखो उछव, पातलिऐं डालो प्रसाद || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -13
- धोखा इनों का भी ना मिट्या, तो कहा करे और । बेहद वानी के माएने, क्यों होवे दूजे ठौर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -48
- धोखा कोई न राखहूं, करूं निरसंदेह । मुक्त होत सचराचर, आयो वतनी मेह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -31
- धोरीडा अवाचक थयो रे, मुख थी न बोलाय रे । कल ने वेलू रे धोरी, उवट ऊंचाणे स्वास मा खाय रे || ग्रं - किरन्तन, प्र -130, चौ -2
- धोरीडा घणूं दोहेलू छे रे, कीधां भोगवे रे। तारे कांधे चांदी रे, दुखड़ा सहे रे || ग्रं - किरन्तन, प्र -130, चौ -3
- धोरीडा जाय रे उजाणी, द्रोडा द्रोड तूं आवे । दया रे विना रे, बेठा मारडी पडावे || ग्रं - किरन्तन, प्र -130, चौ -4
- धोरीडा वहीं ने छूटे रे, करम आपणां रे । मेहेराज कहे एम, कीधा छे घणा रे || ग्रं - किरन्तन, प्र -130, चौ -5
- ध्यान जोर एक समें भयो, लाग्यो सनेह ढांप्यो न रह्यो । लखमीजी आए तिन समें, मन अचरज भए विस्मे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -20

न

- न अर्स जिमिएँ दूसरा, कोई और धरावे नाउ । ए लिख्या वेद कतेब में, कोई नाहीं खुदा बिन काहूं || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -83
- न कछू सुनिया वेद पुरान, न कछू किव चातुरी । एक दोए वचन सुने मुख धनी के, तिनसे सुध सब परी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -8
- न करो संगत साधनी, मन न धरो विश्वास । संजमपुरी ना दुख सांभलो, पण तोहे ना उपजे त्रास || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -10

- न काई मनमां न कांई चित, न कांई मारे रदे एवडी मत । एक वचन समू नव केहेवाय, एतां आव्यो जाणे पूरतणो दरियाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -1
- न की कत्यो रात में, न की कत्यो डीह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -17
- न की जाणूं रांद के, आं दिल उपाई पांण । डियण असांके सुखडा, हे दिलमें आईम जाण || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -3
- न केहेवाय माया मांहें आ वाणी, पण साथ माटे कहेवाणी । साथ आवसे रूदे आंणी, ते में नेहेचे का जाणी || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -44
- न गणाय आ फेरा तणां, अने गुण आपणतूं कीधां अति घणां । पेहेला फेरानी केही कहूं वात, गुण जे कीधां धणी प्राणनाथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -11, चौ -10
- न ठौर ठेहेरावें अर्स को, ना हक की सूरत । हुकम सूरत बिना क्यों होए, और हुकम रखे साबित || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -25
- न तां कम सभ पूरो केयो, अने करिए पण थो । कंने पण तेहेकीक, से पूरो आंझो आए तो || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -41
- न तां केर आंऊ केर इलम, आंऊ हुइस के हाल । पुजाइए हिन मजलके, मूं धणी नूरजमाल || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -46
- न तां केर रांद केडी आए, रे रूहें को जाणे । डियण असांके सुखडा, तो उपाइए पांणे || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -2
- न तां जे दर उपटियां, पसण धणी रेहेमान । की न्हारियां वाट हुकमजी, धणी डिंनी कुंजी पेहेचान || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -15
- न तो ए सब्द सास्त्रों के, हती सबों को सुध । तो भी पकड़े ला मकान सुन्य को, ऐसी जीवों नास्तिक बुध || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -43
- न तो सूरे क्यों ना बल करें, कोई बुरा न आपको चाहे । दौड़त है निस वासर, किन पट न टाल्यो जाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -21
- न थई प्रगट पाधरी, मुख एहेने वाणी । धाख रही रूदे घणी, कलप्या दुख आणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -50
- न था भरोसा हम को, जो भवजल उतरें पार । इन जुबां केती कहूं, इन मेहेर को नाहीं सुमार || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -2
- न था मैं परवरदिगार मेरे, बीच साहेब याद तेरे । कायदा उमेद गया सब भूल, मुझ ऐसे की द्वा करी कबूल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -13, चौ -2
- न थाय नवो न लोपायः जूनो, श्री धाम एणी प्रकार । घटे वधे नहीं पत्र एके, सत सदा सर्वदा सार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -63
- न थाय पंच अध्याई केमे, मारा मुनीजी नी वाण । पण नेठ लेवाणों निध समे, रस आवे सुजाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -56

- न थी हिंमत आप उठे की, सो तुम उठाए चौदे तबक । ऐसा किया बैठ नासूत में, तुम इनमें रही न सक || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -117
- न देखें अपना हवाल, कई पैदा किए आदमी डाल । खुदा खाक पाक से पैदा किया, तिन बूंद का ए विस्तार कर दिया || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -20, चौ -2
- न पावें ऊपर माएने जाहेरी, ए मगजों सों इसारत करी । एक सरूप अवस्था तीन, ज्यों लड़का ज्वान बुढ़ापन कीन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -46
- न मांग्या न दिल उपज्या, दिल हकें उठाया एह । तो मांग्या खेल जुदागीय का, देने अपना इस्क सनेह || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -67
- न मानो सो देखियो, अगले अमल सरे दीन । मनसूख लिख्या सबन को, जो गए छोड़ आकीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -63
- न सुध केहडो कादर, न सुध केहडी कुदरत । न सुध अर्स कायम जी, न सुध हक निसबत || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -28
- नए नए रंग रूह मोमिन, आवत हैं सिरदार । बड़ो सुख होसी कयामत, नहीं इन सुख को पार || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -48
- नए नए रंग सोहागनी, आवत हैं सिरदार । खेल जो होसी जागनी, नाहीं इन सुख को पार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -17
- नए नए रंगों नूर बाग बन, इंतहाए नहीं बिरिख नूर । ना इंतहाए नूर पसु पंखी, क्यों कहूं इन अंग जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -27
- नए सिनगार जो कीजिए, उतारिए पुरातन । नया पुराना पेहेन उतारना, ए होत सुपन के तन || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -33
- नकले असले जुदागी, एक जरा है आड़ा पट । कहया सेहेरग से नजीक, तिन निपट है निकट || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -91
- नकस फूल कटाव कई, कई तेज जोत जुगत । देख देख के देखिए, नैनां क्योंए न होए तृपित || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -34
- नख अंगुरियां अंगूठे, कोई दिया न निमूना जाए। जोत क्यों कहूं इन मुख, रहे अंबर जिमी भराए || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -55
- नख अंगुरियां निरखते, मंदरियां अति झलकत । ए रंग रेखा क्यों छूटहीं, आसिक चित्त गलित || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -106
- नख अंगूठे अंगुरियां, अंबर न माए झलकार । ढांपत कोटक सूरज, और सीतलता सुखकार || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -108
- नख अंगूठे अंगुरियां, चलते अति सोभित । चाल विचारते अर्स की, हाए हाए अरवा क्यों न उड़त || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -61
- नख अंगूठे अंगुरियां, नीके ग्रहिए हक कदम । सोई नख अंगुरियां पाउं रूह के, खड़े होत मांहें दम || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -36

- नख अंगूठे अंगुरियां, सिफत न पोहोंचे सुकन । आसमान जिमी के बीच में, रूह याही में देखे रोसन || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -13
- नख थकी कर वरणवू, एह जुगत अति सारजी । आंगलियो अंगूठा कोमल, नख हीरा तणा झलकार जी || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -40
- नख निमूना देऊं हीरों का, सो मैं दिया न जाए । एक नख जरे की जोत तले, कई सूरज कोट ढंपाए || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -96
- नख सिख अंग इस्क के, इस्कै संधों संध । रोम रोम सब इस्क, क्यों कर कहूं सनंध || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -35
- नख सिख बन्ध बन्ध सब अंग, मानों सब चढ़ते चंचल । छब फब सोभा सुन्दर, तेज जोत अंग सब बल || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -76
- नख सिख लों बरनन करूं, याद कर अपना तन । खोल नैन खिलवत में, बैठ तले चरन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -114
- नख सिख लों बरनन किया, और गाया लड़ाए लड़ाए। मोमिन चाहिए विरहा सुनते, तबहीं अरवा उड़ जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -77
- नखत्रोड पूर तणातां, बांहें ग्रहीने कोण वालसे । एवा रे लाड अमारा, हवे बीजो कोण पालसे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -57
- नंग नरम जोत अतंत, और अतंत खसबोए। ए भूखन चरनों सोभित, बानी चित्त चाही बोलत सोए || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -68
- नंग नाम केते कहूं, कहूं केती अर्स धात । बरनन तखत अर्स का, कहे जुबां सुपन नंग जात || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -100
- नंग नीले पीले झांझरी, और मोती मानिक पांने जरी । निरमल नाके कंचन, रंग लाल लिए घूघरी || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -103
- नंग पटली दस रंग की, मांहें कई विध के नकस । ए सलूकी बेल बूटियां, एक दूजे पे सरस || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -27
- नंग हेम मिले तो कहूं, जो किन जड़े होए जड़तर । नकस कटाव बेली तो कहूं , जो किन बनाए होंए हाथों कर || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -38
- नजर खेल से उतरती देखिए, त्यों अर्स नजीक नजर । यों करते लेल मिटी रूहों, दिन हुआ अर्स फजर || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -14
- नजर फिरी मेरी दूर लग, देख्या बन विस्तार । नीला पीला स्याम सेत कई, कहों कहाँ लग कहूं न सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -46
- नजर से न काढ़ी मुझे, अव्वल से आज दिन । क्यों कहूँ मेहेर मेहेबूब की, जो करत ऊपर मोमिन || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -38
- नजरों आया सबन के, जब पसरया ए इलम । तब और न देखे कछू नजरों, बिना इस्क खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -37

- नजरों काहू न आवहीं, करत गैब की मार । कोई छूट्या मोमिन भाग के, और कर लिए सब कुफार || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -27
- नजरों निमख ना छूटहीं, तो नहीं लागत पल । अंदर तो न्यारा नहीं, पर जाए न दाह बिना मिल || ग्रं - सनंध, प्र -9, चौ -10
- नजरों निमख ना छूटहीं, तो नाही लागत पल । अन्दर तो न्यारा नहीं, पर जाए न दाह बिना मिल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -10
- नजरों सब आवत है, इन ऊपर की बैठक । देख दूर की बातें करें, रंग रस उपजावें हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -134
- नजरों होत अछर के, कोट चले जात माहें खिन । मैं सुन्या मुख धनी के, खेल पैदा फना रात दिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -86
- नजीक इमाम आजम के कही, पीछे निमाज सुबह की भई । अरफा से असर ईद दिन, दोए साहेब भए कौल इन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -19, चौ -3
- नतीजा पावे सब कोए, सो हुकम हाथ छत्रसाल के होए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -44
- नंद जसोदा गोवाल गोपी, धेन बछ जमना बन । थिर चर सब पसु पंखी, नित नित लीला नौतन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -60
- नंद जसोदा गोवाल गोपी, धेन वछ जमना बन । पसु पंखी थावर जंगम, नित नित लीला नौतन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -41
- नंदजी के आठ मंदिर, मांडवे एक मंडान । पीछे वाड़े गौओं के, तामें आथरे सर्वे जान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -20
- नंदजी के पुरे सामी, दिस पूरव जमुना त्रट । छूटक छाया वनस्पति, बृध आड़ी डालों बट || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -16
- नंदजीना पुरा पाखल, पुरा त्रण मामाओ तणा । ठाट वस्ती आखे पुरा, आप सूरा त्रणे जणा || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -8
- नंदजीना पुरा सामी, दिस पूरव जमुना त्रट। छूटक छाया वनस्पति, वृध आडी डालो वट" || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -6
- नदी ताल बाग जानवर, जो अर्स की हकीकत । रूहअल्ला दई साहेदी, हक हादी खास उमत || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -4
- नफसों से करो सबर, मारे हिरस हवा परहेज कर । दिल से दृढ़ करो सबर, साबित बंदगी मौला पर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -22
- नफा ईमान का अब है, पीछे दुनियां मिलसी सब । तोबा दरवाजे बन्द होएसी, कहा करसी ईमान तब || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -35
- नफा नुकसान सब हुकमें, हकमें भिस्त दोजख । झूठा सांच करे हुकमें, हुकम करे सबों हक || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -43

- नबियों सिर नबी कह्या, सिर पैगंमरों पैगंमर । आगे होए लेसी सब को, बीच बका पट खोल कर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -30
- नबी और नारायन की, कछुक कहूं पटतर । रसूल कहे नूरजमाल की, नहीं नारायन गम अछर || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -11
- नब्बे बरस हजार पर, पढ़ते गुजरे दिन । लिखी कयामत बीच कुरान के, सो तो न पाई किन || ग्रं - खुलासा, प्र -6, चौ -7
- नब्बे साल हजार पर, जब लग बीते दिन । एते दिन किन ना कह्या, जो कुरान न पकड्या किन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -42
- नब्बे हजार हरफ कहे नबी को, तामें कछू गुझ रखाए रेहेमान । सो माएने जाहेर किए, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -26
- नब्बे हजार हरफ कहे, यों कर किया हुकम । तीस हजार जाहेर करो, आखिर बाकी खोलें हम || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -16
- नया सिनगार साजत, तब तो नया पेहेन्या कया जात । नया पुराना अर्स में नहीं, पर पोहोंचे न इतकी बात || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -11
- नर देख्या भोम दस में, नर सबहीं के सिरे । नूर ले नौमी भोम में, नूर नूरै में उतरे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -125
- नर नारी बूढ़ा बालक, जिन इलम लिया मेरा बूझ । तिन साहेब कर पूजिया, अर्स का एही गुझ || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -21
- नर बाग हिंडोले रोसन, बिना हिसाबें नर के। हक हादी रूहें नूर में, नूर हीचे अर्स लगते || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -8
- नरम अंगुरियां पतली, पोहोंचे सलूकी जुदे भाए। रंग सलूकी पोहोंचे हथेलियां, किन मुख कहूं चित्त ल्याए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -50
- नरम अंगुरियां पतली, लगें मीठी मूठ वालत । ए कोमलता क्यों कहूं, जिन छबि अंगुरी खोलत || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -66
- नरम जोत खुसबोए, दिल चाही सोभाए । कई विध सुख लेवे हक के, सुख भूखन कहे न जाए || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -107
- नरम तली लाल उज्जल, आसिक एही जीवन । धनी जिन छोड़ाइयो कदम, जाहेर या बातन || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -23
- नरम नाजुक पेट पांसली, क्यों कहूं खूब रस रंग । देत आराम आठों जाम, हक बका अर्स अंग || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -18
- नरम लांक अति बारीक, पेट पांसली अति गौर । ए छबि रूह रंग तो कहे, जो होवे अर्स सहूर || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -81
- नरमाई इन रेत की, उज्जल जोत सुपेत । खुसबोए कही न जावहीं, निकुन्ज-बन या रेत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -53

- नरसैयां इन पेंडे खड़ा, लीला बेहद गाए। बल करे अति निसंक, मिने पैठ्यो न जाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -55
- नरसैयां कबीर जाटीय के, और कई साधों सास्त्र वचन रे। काढ दे सार कौन इनका, करके एह मथन रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -47
- नरसैयां कबीर ने जाटी, वचन कोण लेसे । एहेना अर्थ अमने, कोण करी देसे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -44
- नरसैयां दौड़्या रस को, वानी करे रे पुकार । रस जाए हुआ अंदर, आड़े दरवाजे चार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -57
- नरें चाह्या दिल में, देखू इस्क रूहन । तब तुमें खेल नूर का, दिल में हुआ देखन || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -100
- नव अंगों पालो नवधा, ल्यो बैकुंठ चार मुगत । ए चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्म सों निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -31
- नव चौकी का मोहोल जो, ए बड़ी ठौर बीच पाल । चौथा हिस्सा पाल का, हुई क्योहरी आगूं पड़साल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -47
- नव में सांभल्यूं वेद पुराण, नव सांभली किव चतुराई । एक बे वचन मुख सांभल्या धणीना, तेणे एम जाण्यूं आ पुष्ट ओ प्रवाही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -7
- नव रंग इन नाड़ी मिने, ताना बाना सब नंग । जानों बने जवेरन के, नकस रेसम या रंग || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -112
- नव रंगना नंग जुजवा, तेहेना ते जुजवा रूप । हूं मारी बुध सारूं वरणवू, पण एह छे अदभूत || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -46
- नव सदी के आगे रोसन, कह्या होसी भिस्त का दिन । अरफा आगे रोज भिस्त, जाहेर होसी सबों सरत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -10, चौ -8
- नव सूझे हाथने हाथ, माया अमले छाक्यो साथ । नव ओलखे आपने पर, सुध नहीं सरीर न सूझे घर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -40
- नव सै नब्बे हुए बरस, और नव मास उतरे सरस । तिनसे दूसरा होए मकबूल, सो ए बंदगियां करे कबूल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -11, चौ -5
- नव सै नब्बे हुए वितीत, तब हजरत ईसा आए इत । सो लिख्या अग्यारहें सिपारे माहें, मैं खिलाफ बात कहोंगी नाहें || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -7
- नवघरी ने निरमल मोती, हीरा ने रतन । कुन्दन मांहें पाना पुखराज, चूड मांहें नव रंग || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -45
- नवरंग इन नाड़ी मिने, कंचन धात उज्जल । ए केती हों सब अर्स के, ए देखो दिल निरमल || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -42
- नवरंग रतन चूड़ के, जुदी जुदी चूड़ी झलकत । जोत सों जोत लरत है, सोभा अर्स कहूं क्यों इत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -87

- नवरंग रतन नंग चूड़ के, अर्स धात न सोभा सुमार । चूड़ जोत जो करत है, आकास न माए झलकार || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -86
- नवरंगवाई जो बजावें, मुख बानी रसीली गावें । इत बाजत बेन रसाल, बेनबाई गावें गुन लाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -96
- नवल वेख ल्याव्या एक भांतनो, कसबटिए वांसली लाल । अधुर धरीने ज्यारे वेण बजाडे, त्यारे चितडा हरे तत्काल || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -46
- नवला रंग पसु पंखी, वनमा करे टहुंकार । नवला सुख श्री राजसुं, साथ लिए अपार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -97
- नवली प्रेमल वेलडी, नवी रेत सेत प्रकास । नवलो पूनम चांदलो, सकल कला अजवास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -96
- नवलो वन सोहामणो, नवलो वा वाय । नवला जल जमुनातणा, लेहेरों ले वनराय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -95
- नवलो सरूप धणी तणो, नवलो सिणगार । नवलो नेह ते आपणो, नवलो आकार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -94
- नवी नबुवत कुरान माजजा, ए दोऊ साबित होवें इन से । कुरान न खुले बिना खिताब, ना तो लिख्या सब इनमें || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -20
- नवी सबद मोहे मद चढ्यो, बढ्यो बल महामत । अब एक खिन ना रहे सकू, उड़ गई कहुंए स्वांत || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -72
- नवे भोम नूर बरनन, नूर क्यों कहूं ख्वाब जुबांए । ए नूर हक हुकम कहे, ना तो नूर आवे ना सब्द माहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -113
- नवों भोम इन विध की, आगू उपरा ऊपर बड़े द्वार । आगे चौक सबन के, सबों फिरते थंभ हार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -10
- नवों भोम के मन्दिरों, माहें सखियां खेल करत । चारों जाम हाँस विलास में, रंग रस दिन भरत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -67
- नवों भोमका तुम साथ जी, कर देखो आतम विचार । क्यों आवे जुबां इन अकलें, ए जो अपारे अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -53
- नसीहत लई जिन मोमिनों, ए तरफ जानें सोए । अर्स हौज जोए, रूहें पेहेचान यासों होए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -86
- नसो न त्रूटी रे, तूं केम रही तन तुचा । रूप रंग लई कां न थई, तिल तिल जेवडा पुरजा || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -19
- नहवाए चरचे अरगजे, प्रीतें जिमा पाक । सनेह करके सेवहीं, पर नजर बांधी खाक || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -8
- नहीं करें बराबरी है की, क्यों मिले दाखला ताए । है नींद उड़े उठे अर्स में, फना नींद उड़े उड़ जाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -29

- नहीं कायम चौदे तबक में, सो इत देखाए दिया । सेहेरग से नजीक, अर्स बका में लिया || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -45
- नहीं जासों पेहेचान कबह, तासों करे सनमंध । सगे सहोदरे मिलके, ले देवें मन के बंध || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -15
- नहीं तो अधखिण ए रे आपणों, नव सहे विछोह जी । ए तां विचारीने जोइए रे सखियो, तो तारतम भाजे संदेह जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -2, चौ -11
- नहीं तो ए निध दीठां पछी, खिण एक अंतर न खमाय । विध सघली दीसे तम मांहें, ओवारणे इंद्रावती जाय || ग्रं - खटरुती, प्र -7, चौ -6
- नहीं तो एम केम वरणवे, केम थाय पंच अध्याई । स्कंध बारे भागवतना, तेथी थाय कोट सवाई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -49
- नहीं तो करूं कटका जे जिभ्या वदे वांकू, पणतमें लछणे आप एम कहावो । जे स्वामी अविचल सुख आपे, तेहने तमें कां निंदावो || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -17
- नहीं तो कुलाहल एवडो हुतो, पण चितडां वेध्यां रे प्रमाण । साथ सहुए रे वेण सांभल्यो, बीजो श्रवण तणो गुण जाण || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -7
- नहीं तो नथी थई अधखिण वार, मारकंड दुख पाम्यो अपार । त्यारे मांहें नारायणजी कीधो प्रवेस, देखाडी माया लवलेस || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -15
- नहीं तो वैकुंठ नाथने केही खबर, विना तारतम सं जाणे मूलघर । बीजिए खबर काइए नव कही, तो पण निध भारे करी ग्रही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -51
- नहीं पिंड पोते हाथ पांउ भी नाहीं, नाटक नाच देखावे । मुख न जुबाँ कछू नहीं याको, और बानी विविध पेरे गावे || ग्रं - किरन्तन, प्र -6, चौ -4
- नहीं भरोसो खिन को, बरस मास और दिन । ए तो दम पर बांधिया, तो भी भूल जात भजन || ग्रं - किरन्तन, प्र -106, चौ -15
- नहीं राखू संदेह एक, पैया काढूं सहुना छेक । आ वाणी थासे अति विसेक, कहूं पारना पार विवेक || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -43
- नहीं राखों तुमें संदेह, इन चारों का अर्थ जो एह । जो कोई साध पूछे क्यों, ताए सास्त्र सब केहेवे यों || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -14
- नहीं रे निद्रा कोई घेण घारण, निद्रा होय तो जगव्यो जागे जी । उठाडी जीवने ऊभो कीजे, वली न मूके पोतानो माग जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -3
- नहीं हिसाब इस्क का, स्वाद को नाहीं हिसाब । हिसाब ना तरंग अमल के, ए जो आवत साकी के सराब || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -3
- ना अर्स बका किन देखिया, ना कछु सुनिया कान । तरफ भी किन पाई नहीं, तो करे सो कौन बयान || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -20
- ना इस्क ना अकल, ना सुध आप वतन । ना सुध रेहेसी हक की, ए भूलोगे मूल तन || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -19

- ना ईस्वर ना मूल प्रकृती, ता दिन की कहूं आपा बीती । निज लीला ब्रह्म बाल चरित्र, जाकी इछा मूल प्रकृत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -9
- ना कछु खोली ना फेर बांधी, इन पागै में कई गुन । पल पल में सुख दिल चाहे, नए नए देत रूहन || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -47
- ना कछु देखू दरसन, ना कछु केहेने की आस । ना कछू सुध सनमंध की, बैठी हों कदम के पास || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -31
- ना कछु ना कुछ ए कहें, ओ सत - चिद - आनंद । असत सत को ना मिले, ए क्यों कर होए सनमंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -20
- ना कछू एता बल दिया, जो लगी रहूं पिउ चरन । पर ए सब हाथ खसम के, और पुकारूं आगे किन || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -35
- ना कछू कात्या रात में, ना कछू कात्या दिन । सो वतन बीच सैयनमें, मुख नीचा होसी तिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -19
- ना कछू चोर न कोई साधू, कई डिंभके धरे ध्यान । तान मान सब विद्या व्याकरण, बहुरंगी बहु ग्यान || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -12
- ना कछू जानी साहेबी, ना जान्या इस्क असल । तो बुजरक इस्क अपना, रब्द किया सबों मिल || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -29
- ना कछू पाया एक को, ना उमत अर्स ठौर । ना पाया हौज जोए को, जाए लगे बातों और || ग्रं - खुलासा, प्र -6, चौ -6
- ना कछू मन में ना कछू चित, ना कछू मेरे हिरदे एती मत । एक वचन सीधा कह्या न जाए, ए तो आयो जैसे पूर दरियाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -1
- ना कहुंगी में यूठ जो, तुम पास कलमा सांध है || ग्रं - सनंध, प्र -2, चौ -3
- ना किया अजाजीले सिजदा, तो सब रहे सिजदे बिन । सब दुनियां ताबे तिन के, ताथे किया न सिजदा किन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -40
- ना कोई कहे बेचून को, नाहीं बेचगून । ना केहेने वाला बेसबी का, नाहीं बेनिमून || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -8
- ना खाली तब हवा सुन्य, नाहीं ला मकान । ना कछू किया तब हुकम, ए जो कह्या कुंन सुभान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -9
- ना गई नींद अंदर की, क्यों एते बान सहे । जाग चलो संग पिउ के, पीछे करोगे कहा रहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -12
- ना गिनती नाम जो हक के, सो हर नामें करें जिकर । मुख चोंच सुन्दर सोहनें, बोलें बानी मीठी सकर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -32
- ना चाहों मैं बुजरकी, ना चाहों खिताब खुदाए। इस्क दीजे मोहे अपना, मोहे याहीसों मुद्दाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -62, चौ -3

SRJN

- ना चितारे चेतरी, ना घड़ी ना किन समारी । ए अर्स जिमी थंभ मोहोलाते, या दिवाले या द्वारी || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -69
- ना छूटी सरीयत करम की, ना छूटी तरीकत उपासन । मगज न पावे माएना, चले सब बस परे मन || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -2
- ना जनने वाली मेरी औरत, अठानवे बरस की मजल है इत । और बस बकस ना कर, नजीक तेरे तेहेकीक मुकरर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -13, चौ -6
- ना जप तप ना ध्यान कछू, ना जोगारंभ कष्ट । सो देखाई बृज रास में, एही वतन चाल ब्रह्मसृष्ट || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -16
- ना जल ना कछू पूर है, कौन बहे कौन आड़ी होए। ए अमल इन जिमी का, तुम देखावत विध दोए || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -19
- ना जीव करम ना काल कोई, गंध नहीं बल ग्यान । तीर्थंकर भी इत गले, जो कहावें सदा प्रवान || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -46
- ना तब चारों चीज को, किनहूं समारे । ना कछू चाँद तब सूरज, ना पैदा सितारे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -7
- ना तुमें अमल ना नींद कछु, पर ऐसा खेल हाँसी का ए। खेलें हँसें बातें करें, याद आवे ना हक घर जे || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -11
- ना तेहेकीक होवे रंग की, ना छबि होए तेहेकीक । क्यों कहूं बीसों अंगुरियां, और मिहीं हथेलियां लीक || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -65
- ना तो अजाजील भी नूर से, दे गुमाने डारया दूर । एक रह्या दरम्यान में, एक मांहें आया हजूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -57
- ना तो असराफील है नूर का, क्यों फरिस्ता सके आगे आए। पर मगज मुसाफी नूर में, रूह महंमद लिया मिलाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -24
- ना तो आए बुध के सागर, गुन खट ग्यानी । भगवानजी को महादेवजी, पूछे बेहद वानी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -3
- ना तो इन बिध कही जो रसूलें, ज्यों सब समझी जाए। जाको असल ना दिल अकल, तिन हक कौल क्यों समझाए || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -87
- ना तो इस्क इनों का असल, सब अंगों इस्क रूहन । इस्क उड़ावे अंग लज्जत, आया इलम वास्ते इन || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -27
- ना तो ए कबहूं नहीं, जो हक रूहें देखें सुपन । एक जरा अर्स का, उड़ावे चौदे भवन || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -27
- ना तो ए क्यों ऐसे वरनवे, क्यों कहे पंच अध्याई । ए रस छोड़ और वचन, मुख काढ्यो न जाई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -61
- ना तो ए प्याला पीय के, ए कच्चा वजूद न रख्या किन । पर हुकम राखत जोरावरी, प्याला पिलावे रखे जतन || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -84

- ना तो ए मैं ऐसी नहीं, जो निकसे किए उपाए । मेहेनत कर त्रिगुन थके, कोई सके न मैं को फिराए || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -28
- ना तो ए लड़का सो भी जानहीं, जो कछू कर देखे सहूर । एक तरफ क्यों होवहीं, आगू अर्स तजल्ला नूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -18
- ना तो एता बड़ा गधा, होसी कैसा कद दज्जाल । सो दज्जाल गधा जब गिर पड़े, तले दुनी रहे किन हाल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -5
- ना तो ऐसा बरनन क्यों करें, ए जो वाहेदत नूरजमाल । ना कोई इनका निमूना, ना कोई इन मिसाल || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -95
- ना तो ऐसी मेहेर इस्क सों, हक करत आपन सों । जगाए के पेहेचान सब दई, हाए हाए आवत ना होस मों || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -29
- ना तो कई बुजरक हुए, कैयों करियां नसीहत । ओ मुरीद विचारे क्या करें, किने पीर न पाई मारफत || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -25
- ना तो क्यों न उड़े इन आतमा, विचार के एह वचन । इस्क जरे आतम को, इत हो जाए सब अगिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -62, चौ -8
- ना तो ख्वाब जिमी बका जिमी सों, एक जरा न तफावत । पर झूठ न रहे सांच नजरों, आंखें खुलते ख्वाब उड़त || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -113
- ना तो जबराईल महंमद पर, कलाम अल्ला ले आया । पर माएना छिपा जो मगज, सो असराफीलें पाया || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -27
- ना तो जिन जुबां में दुख कहूं, सो ए करूं सत टूक । तो एता रूहों खातिर, बिध बिध करत हो कूक || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -60
- ना तो जो बात आखिर होएसी, सो रखें आगू दई बताए। कह्या खेल जुदागी दुख का, तुम मांगत हो चित ल्याए || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -37
- ना तो द्वार खोल के, आगे देखें न अर्स रेहेमान । इत क्यों देखों राह हुकम की, हमें दई कुंजी पेहेचान || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -15
- ना तो नींद उड़े तन सुपना, ए रेहेवे क्यों कर । देखो अचरज अदभुत, धड़ बोले सिर बिगर || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -37
- ना तो नींद उड़े पीछे सपना, कबलों रेहेवे ए। इन विध सुपना ना रहे, पर हुआ हाथ हुकम के || ग्रं - सागर, प्र -3, चौ -7
- ना तो पंच अध्यायी क्यों कहे सुक मन, रासलीला अखंड बरनन । ए लीला क्यों अध बीच रहे, एकादस द्वादस स्कंध कहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -21
- ना तो प्रबोध काहे को कहूं, चरन पिया के प्रेमें ग्रहूँ। पर साथ कारन कहूं फेर फेर, ए पांचो नाम लीजो चित धर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -13
- ना तो बेसक जब निसबत, तब रूह क्यों करे फरामोस । ए देह जो सुपन की, खिन में उड़ावे हक जोस || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -19

- ना तो बैकुंठनाथ को कैसी खबर, बिना तारतम क्या जाने मूल घर । और भी खबर कछुए ना कही, तो भी निध भारी कर रही || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -51
- ना तो बैठ झूठी जिमी में, ए बका बरनन क्यों होए। इलम हुकम खेचे रूह को, अकल जुबां कहे सोए || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -14
- ना तो बैठे हैं ठौर इतहीं, इतहीं किया रब्द । पर ऐसा फरेब देखाइया, जो पोहोंचे ना हमारा सब्द || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -37
- ना तो बैठे हो कदम तले, पर लागत ऐसे दूर । हक आप इस्क देखावने, करत आपनसों मजकूर || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -90
- ना तो महंमद की हिमायतें, आगू चल्या एक कदम । तिन राह पांच से साल की, काटी माहें दम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -71
- ना तो लानत जो दज्जाल की, सो दुनी को लगे क्योंकर । सो वास्ते ताबे दज्जाल के, हुई बातून आंख बिगर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -8
- ना तो सखत दिल मोमिन के, हक करें क्यों कर । पर अर्स लज्जत बीच दुनी के, लिवाए न सखती बिगर || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -46
- ना तो सुपन के सरूप जो, सो तो खेल को खेचत । सो हुकमें तुमें सुपना, हक को मिलावत || ग्रं - सागर, प्र -3, चौ -13
- ना तो हक आदमी के दिल को, अर्स कहें क्यों कर । पर ए आसिक मासूक की वाहेदत, बिना आसिक न कोई कादर || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -110
- ना थे अब्बल ना होसी आखिर, ए जो बीच में देत देखाए । सो भी कहे किताबें अबहीं, आखिर देसी उड़ाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -58
- ना निमूना नूर का, ना निमूना बका वतन । ना निमूना हक का, ना निमूना हादी रूहन || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -107
- ना न्यारा आसिक मासूक, ए तो एकै किया प्रवान । तो बीच कहया क्यों फरिस्ता, जो जाए आवे दरम्यान || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -58
- ना परतीत जो और की, यों पढ़े काजी कुरान । राह बतावें और को, कहें हम मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -46
- ना पेहेचान दज्जाल की, ना दाभतूलअर्ज । ए सुध काहूं न परी, क्यों मगरब सूरज || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -21
- ना पेहेचान ना निसबत, दुनी गिरो असल दुस्मन । एक हक न छोड़ें उमत, दुनी दुनियां बीच वतन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -16
- ना पेहेचान प्रकृत की, ना पेहेचान हुकम । ना सुध ठौर नेहेचल की, और ना सुध सरूप ब्रहम || ग्रं - किरन्तन, प्र -65, चौ -2
- ना पेहेचान हवाए की, जामें चौदे तबक झूलत । जिन से आए काफर, ना सुध तिन जुलमत || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -42

- ना पेहेचानें आपको, ना पेहेचाने हादी हक । ना देखें अजाजील दिल पर, जो डालसी बीच दोजक || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -26
- ना पेहेचाने इन उजाले, ए दोए साख पूरन । पीछे पिउ आगे वतन में, क्यों होसी मुख रोसन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -18
- ना पेहेन्या ना उतारिया, दिल चाह्या नित सुख । वाहेदत हमेसा ए सुख, हक सींचल सनमुख || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -20
- ना पेहेन्या ना उतारिया, दिल चाह्या सब होत । जब जित जैसा चाहिए, सो उत आगू बन्या ले जोत || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -87
- ना बैठ सके विरहनी, सोए सके ना रोए । राज पृथी पांव दाब के, निकसी या बिध होए || ग्रं - सनंध, प्र -7, चौ -9
- ना बैठ सके विरहनी, सोए सके ना रोए। राजप्रथी पाँउ दाब के, निकसी या विध होए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -9
- ना मानोगे संदेसे, ना मुझे करोगे याद । झूठा कबीला करोगे, लगसी झूठा स्वाद || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -35
- ना मैं अव्वल ना आखिर, मैं नाहीं बीच में । बन्या बनाया आप ही, सो सब तुम ही से || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -8
- ना रवा मोमिन ना चाहें, घर छोड़ बाहेर लड़ने को जाएँ । होए सेहेर उजाड़ बखत सोए, खाने पीने की ढील होए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -11, चौ -9
- ना रह्या इस्क अपना, ना रह्या वतन सों । हक सों भी ना रह्या, तो कहा कहूं हुकम को || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -28
- ना सक महंमद दीन में, ना सक महंमद सरीयत । ना सक सुंनत जमात में, कहें यों आयतें हदीसे सूरत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -30
- ना समारी जिमी जल को, ना आकास चांद सूर । वाओ तेज सब हक के, हैं कायम हमेसा नूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -82
- ना समास्या अर्स को, ना किए नूर मन्दिर । ना किए हौज जोए को, ना पर्वत बन जानवर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -81
- ना सीढ़ी ना पावड़ी, ए चढ़त पड़त क्यों कर । ए देखन जैसी हांसी है, देखो मोमिनों दिल धर || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -10
- ना सुख कहे जाएं जिमी के, ना सुख कहे जाएं बन । ना सुख कहे जाएं मोहोलों के, ना सुख कहे जाएं पहाड़न || ग्रं - परिक्रमा, प्र -24, चौ -10
- ना सुध आप ना खसम, ना सुध घर गुफ्तगोए । ज्यों जीवत मुरदे भए, रूहें क्यों कर बल होए || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -93
- ना सुध उजू निमाज की, ना रोजे रमजान । ना तसबी ना नाम की, कहें हम मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -27

- ना सुध खासी गिरोह की, जो कहावत है बुजरक । जिन को हिदायत हक की, तिन सोहोबतें पाइए हक || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -43
- ना सुध जीव सरूप की, ना सुध जीव वतन । ना सुध मोह तत्व की, जिनथैं अहं उतपन || ग्रं - किरन्तन, प्र -65, चौ -4
- ना सुध दोस्त ना दुस्मन, ना सुध नफा नुकसान । ना सुध दूर नजीक की, ना सुध कुफर ईमान || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -49
- ना सुध निराकार की, ना सुध निरगुन सुंन । ना सुध ब्रहम क्यों व्यापक, कैसी सूरत निरंजन || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -44
- ना सुध ब्रहमसृष्ट की, सुध सृष्ट ना ईश्वरी । हिंदू जो जीव सृष्ट के, तिन ए सुध ना परी || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -45
- ना सुध मेरी ना वतन की, आपस में जाओगे भूल । ना सुध मेरे कागद की, ना सुध मेरे रसूल || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -15
- ना सुध मोमिन गिनती, ना सुध तीन उमत । माएने मगज खोले बिना, पाइए ना तफावत || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -22
- ना सुध मोमिन मुसलिम, ना सुध काफर मुनाफक । सो सुध हुई सबन को, किया बेवरा इलम हक || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -61
- ना हुई जाहेर या मुख, बेहद की बान । धाख रही बोहोत हिरदे, कलप्या दुख आन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -63
- ना होए नया न पुराना, श्री धाम इन प्रकार । घटे बढ़े नहीं पत्र एक, सत सदा सर्वदा सार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -63
- नाके वाले जवेर के, माहें नरम जोत गुन दोए || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -94
- नाजी फिरका हक इलमें, बेसक हुआ एक । मारफत माएना मेयराज का, सब पाया विवेक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -104
- नाजुक नरम तेज जोत में, सलूकी सोभा मीठी जुबान । सुन्दर सप खुसबोए सों, पूरन प्रेम सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -48
- नाजुक सलूकी मीठी लगे, नैना देखत ना तृपिताए । हाए हाए ए अनुभव दिल क्यों भूलै, ए हुकमें भी क्यों पकराए || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -23
- नाजुक सोभा हक की, जो रूह के आवे नजर । तो अबहीं तो को अर्स की, होए जाए फजर || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -79
- नाजुकी इन सरूप की, और अति कोमलता । सो इन अंग जुबां क्या कहे, नूरजमाल सूरत बका || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -29
- नाटारंभ कई बाजंत्र, धन खरचे अहीर उमंग । साथ सब सिनगार कर, हम आवें अति उछरंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -55

- नातो ए अपना रे पिउजी, अधखिन बिछोहा न सहे जी । एह विचार जो देखिए साथजी, तो तारतम प्रगट कहे जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -11
- नातो ए बात जो गुझ की, सो क्यों होए जाहेर । सोहागिन प्यारी मुझ को, सो कर ना सकों अंतर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -11
- नातो एह बात जो गुझ की, सो क्यों होवे जाहेर । पर मोमिन प्यारे मुझ को, सो कर ना सकू अंतर || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -12
- नातो सब जाहेर करूं, नाहीं तुम सों अंतर । खेंच खेंच तो केहेती हूं, सो तुमारी खातिर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -5
- नाद दुन्द पडछंदा पर्वतें, वरत्यो जय जय कार । नंद गोप सहु गेहेला हरखे, खोलावे भंडार || ग्रं - किरन्तन, प्र -51, चौ -8
- नाबूद कही जो दुनियां, तिनकी नजर भी नाबूद । अर्स रूहें हक इलमें, ए आसिकै देखे मेहेबूब || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -108
- नाम इमाम धरावहीं, पर फरमान की ना सुध । बरकत कलमें रसूल के, साफ होसी सब बिध || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -26
- नाम खुदाए का कुरान में, लिख्या है आसिक । पढ़े इस्क औरों में तो कहे, जो हुए नहीं बेसक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -6
- नाम जाको नवरंग, ताकी निरत कहूं क्यों कर । अनेक गुन रंग ल्यावहीं, नए नए दिल धर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -63
- नाम जो लेते विरह को, मेरी रसना गई ना टूट । सो विरहा नैनों देख के, हाए हाए गैयां न आंखां फूट || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -24
- नाम ठाम सब नूर के, कहूं जरा ना नूर बिन । मोहोल मन्दिर सब नूर के, माहे बाहेर नूर पूरन || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -51
- नाम न ठाम नहीं गुन निरगुन, पख नहीं परवान जी । आवन गवन नहीं अंग इंद्री, लख न कांई निरमान जी || ग्रं - किरन्तन, प्र -69, चौ -3
- नाम नंगों का लेत हों, केहेत हों जड़ाव जुबाए । सब्दातीत तो कहावत, जो सिफत इत पोहोचत नाहे || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -94
- नाम निसान इत झूठ है, तो भी तिन पर होत साबूत । जोत झूठी देख नासूत की, अधिक है मलकूत || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -23
- नाम मेरा चलावसी, कहेंगे तरीका महंमद । सुंनत जमात कौल तोड़ के, जुदे पड़सी कर जिद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -11
- नाम मेरा सुनते, और सुनत अपना वतन । सुनत मिलावा रूहों का, याद आवे असल तन || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -49
- नाम लेत इन सख्प को, सपन देह उड़ जाए । जोलों रूह ना इस्क, तोलों केहेत बनाए || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -115

SRJIN

- नाम सारे जुदे धरे, ऊपर करी इसारत । फुरमान खोल जाहेर करे, धनी जानियो तित || ग्रं - खुलासा, प्र -14, चौ -7
- नाम सारों जुदे धरे, लई सबों जुदी रसम । सबमें उमत और दुनियाँ, सोई खुदा सोई ब्रहम || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -38
- नामधारी पतित जो हुते, जिन जुध जगपति सों किए। जगपति जग में बड़ा जोरावर, तिन मार चरन तले लिए || ग्रं - किरन्तन, प्र -15, चौ -6
- नामै जाको प्रपंच, तिन सबको मूल सरीर । या बन थे बाग विस्तस्यो, जानो भरिया मृगजल नीर || ग्रं - किरन्तन, प्र -33, चौ -2
- नार सिणगार, भूखण सार, संग आधार, निरत करे सनंध री || ग्रं - रास, प्र -30, चौ -3
- नार सिदामा तणी, तेहनी नणद राधाबाई । जाणो सगाई स्यामनी, अंग धरे ते अति बडाई || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -19
- नारंग बन की छत्रियां, जाए लगी बट घाट । फल फूल पात जड़ित ज्यों, जानों रच्यो अचंभो ठाट || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -37
- नारयण लखमी विष्णु माहें, विष्णु थकी उतपन । अंग समाय अंगमां, ए नहीं वासना अंन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -6
- नारायन कहावें निगम, कहें मोहे खबर नहीं खुद । नवी हक रसूल कहावहीं, कहे मैं ल्याया कागद || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -30
- नारायन विष्णु एक अंग, लखमी याथैं उतपन । एह समावे याही में, ए नहीं वासना अन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -8
- नाला रूहें फरिस्ते जा, धस्या हक आमर । पुंना पाहिजी निसबतें, हुकमें पुजाया उपटे दर || ग्रं - सिंधी, प्र -12, चौ -11
- नासत में बैठाए के, भेज्या बेसक इलम । एक जरे जेती सक ना रही, बैठी बेसक तले कदम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -71
- नासंती क्यांहें न छूटूं ए थी, आइज बांधे आवी । हूं जाणूं रखे सासुडी सांभले, थाकी कही केहेवरावी || ग्रं - किरन्तन, प्र -50, चौ -3
- नासिका की मैं क्यों कहूं, कोई इनका निमूना नाहें । जिन देख्या सो जानहीं, वाके चुभ रहे हैड़े माहे || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -42
- नासिका के मूल सें, जानों कमल बने अदभूत । स्याम सेत झांईं लालक, सोभा क्यों कहूं अंग लाहूत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -152
- नासिका बेसर लाल मोती लटके, आंखडिए अंजन सोहे । पापण चलवे ने पीउजीने पेखे, चतुराईए मन मोहे || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -53
- नासिका हक सूरत की, ए जो स्वांस देत खुसबोए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -126

- नासूत ऊपर लोक जानत, आसमान सात में मलकूत । तिन पर हवा जुलमत, तिन पर नूर बका जबरूत || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -52
- नासूत और मलकूत का, निमूना देखकर । ए बल दिल में लेय के, देखो अर्स जानवर || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -10
- नासूत और मलकूत की, ना ला मकान की सुध । जबरूत लाहूत हाहूत, दई हादी हिरदे बुध || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -53
- नासूत और मलकूत लग, इनकी याही बीच नजर । देख किताबें यों कहें, हम पाई नहीं खबर || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -52
- नासूत तले मलकूत के, ज्यों लेहेर सागर । तले इन मलकूत के, नासूत है यों कर || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -30
- नासूत बीच फना के, अर्स कायम हमेसगी । दुनियां ताल्लुक दिल की, रूह मोमिन खुदाए की || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -56
- नासूत मलकूत जबरूत, लाहूत चौथा आसमान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -40
- नासूत मलकूत लाए की, ना सुध थी जबरूत । नाम पढ़े जानत हैं, कहें बका लाहूत || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -14
- नासूती अवतार के, ऐसे बंदे जोरावर । सो मलकूत के एक खिन में, कई कोट जात मर मर || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -29
- नास्तिक कर बैठे हते, देख वेद कतेब के माहें । पांच तत्व त्रिगुन बिना, कहे और कछुए नाहें || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -41
- नाहलिया निस्वासा धमण धमाय, हारे मारा अंगडा मां अगिन न माय । वाला तारी झालडियो केमे न झंपाय, पिउजी तारो एवो स्यो कोप केहेवाय || ग्रं - खटरुती, प्र - 9.3, चौ -2
- नाहीं कथनी इस्क की, और कोई कथियो जिन । इस्क आगे चल गया, सब्द समाना सुंन || ग्रं - सनंध, प्र -9, चौ -6
- नाहीं कथनी इस्क की, और कोई कथियो जिन । इस्क तो आगे चल गया, सब्द समाना सुंन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -6
- नाहीं करें बराबरी है की, क्यों मिले दाखला ताए । बका नींद उड़े उठे अर्समें, फना नींद उड़े उड़ जाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -84
- नाहीं जासों पेहेचान कबहूं, तासों करे सनमंध । सगे सहोदरे मिलके, ले देवें मन के बंध || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -13
- नाहीं जुदा कांही जाही अर्स माहीं, मिले रूह भेले दिल एक हुए । तो कलूब किबला भया मकबूल अल्लाह कया, अव्वल आखिर मिले एक हुए न जुए || ग्रं - किरन्तन, प्र -117, चौ -3

- नाहीं तुम बराबरी, सो इन जबां कही न जाए। पर मुझे सुख तब होएसी, जब देऊं नैनों सब देखाए || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -90
- नाहीं मोमिनों कबहूं, दुनियां का दिमाक । जाको हक इलमें, किए सबों को पाक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -46
- नाहीं रे नींद कोई घेन घारन, नींद होए तो लीजे उठाए जी । उठाए जीव को खड़ा कीजे, फेर पड़े सोई उलटाए जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -3
- निकल्यूं न जाय ए मांथी, क्याहे न लाभे छेह । एमां पग पंखीनों दीसे नहीं, कहूं सनंध सर्वे तेह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -11
- निकस न सके आसिक, हक के एक अंग से । तिन अंग ताबे कई सागर, अर्स रूहें पड़ी इनमें || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -26
- निकसते दाहिनी तरफ जो ठौर, सैयां आए बैठे चढ़ते दिन पोहोर । मिलावा होत दिवालों के आगे, सैयां पान बीड़ी वालने लागे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -103
- निकाह हवा सों कही आदम की, निकाह अबलीस औलाद आदम । पूजे हवा खाहिस ले अपनी, जेता बुजरक आदम हर दम || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -91
- निखर अमारी आतमा, अने निठुर अमारा मन । कठण एवां तमतणां, अमे तो रे सहयां वचन || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -47
- निखर तमे निवलाई घणी कीधी, एवा अंध थया अभागी । हवे तमने हूं सूं कहूं, जे जीवे न वास्या जागी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -47
- निगमें गम कही ब्रहम की, क्यों समझे ख्वाबी दम । सो ए करूँ सब जाहेर, रूहअल्ला के इलम || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -36
- निज घर पिउ को लीजे प्रकास, ज्यों वृथा न जाय एक स्वांस । ग्रह गुन इंद्री भर तूं पांओ, ऐसा फेर न पाईए दाओ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -17
- निज नाम सोई जाहेर हुआ, जाकी सब दुनी राह देखत । मुक्त देसी ब्रहमांड को, आए ब्रहम आतम सत || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -1
- निज नैना देऊं खोलके, ज्यों आड़ी न आवे मोह सृष्ट । होसी पेहेचान सत सुख, निज वतन देखो दृष्ट || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -71
- निज बुध आवे अग्याएँ, तोलों ना छूटे मोह । आतम तो अंधेर में, सो बुध बिना बल ना होए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -36
- निज बुध आवे हुकमें, तोलों ना छूटे मोह । आतम तो अंधेर में, सो बुध बिना बल ना होए || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -41
- निज बुध भेली नूर में, अग्या मिने अंकूर । दया सागर जोस का, किन रहे न पकस्यो पूर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -1
- निज हुकम आया सिर मोमिनों, जिनके ताले निज नूर । ऐसे ताले हमारी रूह के, क्यों न करें हम हक जहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -46

- निजनाम श्री जी साहिब जी, अनादि अछरातीत । सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -37, चौ -1
- नित इत विश्राम, पूरन हैं प्रेम काम । हिरदे न रहे हाम, इस्क आराम री || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -2
- नित उठी आंगनडे ऊभो, आलज करे अमारी । लोक मांहें अमें लज्या पाम, हूं कुलवधुआ नारी || ग्रं - किरन्तन, प्र -50, चौ -2
- नित नए उछव आनंद, होत किरंतन सार । वैष्णव जो कोई खट दरसन, आए इष्ट आचार || ग्रं - किरन्तन, प्र -57, चौ -3
- नित प्रते सहु साथने, वालो जी दिए छे ए सार । दया करीने वरणवे, आपण आगल आधार || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -48
- नित लेत प्रेम सुख अर्स में, जानों आज लिया नया भोग । यों हक देत जो हम को, नित नए प्रेम संजोग || ग्रं - सिनगार, प्र -15, चौ -13
- निद्रा उडे भाजे सुपन, त्यारे उथलो थाय । सुख घेरनू ने सुपननू, बंने केम लेवाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -91
- निद्रा कहे ज्यारे जीव जाग्यो, त्यारे में केम रेहेवाय । चरण फल्या ज्यारे धणीतणा, त्यारे जाऊं छू लागीने पाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -28
- निद्रा परी नाखी देओ, उठीने ऊभा थाओ रे । बीजी ते वात मूकी करी, तमे ग्रहो प्रभूना पाओ रे || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -43
- निद्रा साथने जोर थई, एम सुपन वाध्यो । रामत माथी बल करी, नव जाए काढ्यो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -134
- निपट अंधेरी ला-ए की, सिर ना सूझे हाथ पाए । टापू पहाड़ो बीच में, सब बंधे गोते खाए || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -44
- निपट नजीकी सेवहीं, दौड़े एक दूजे में लेन । खैचा खैच ऐसी करें, ए भी लगे दुख देन || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -10
- निपट बंकी छबि नैन की, नरै के तारे कारे । सोभे सेत लालक लिए, नूर जोत उजियारे || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -12
- निपट बड़ा सागर आठमा, ए मेहेर को नीके जान । जो मेहेर होए तुझ ऊपर, तो मेहेर की होय पेहेचान || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -42
- निपट बड़े मोहोल पहाड़ के, निपट बड़े दरबार । कब सुख लेसी इनके, ए धनी तुमहीं देवनहार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -4
- निपट बड़े सुख अर्स के, इत आवत नहीं जुबांए । देख माया निमूना झूठ का, याकी बातें करसी अर्स माहे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -93
- निपट सोभा है नासिका, सोहे तैसा ही तिलक । और नहीं इनका निमूना, ए सरूप अर्स हक || ग्रं - सिनगार, प्र -15, चौ -2

- निबल नेणां रे भुंडा, तमे दृष्टं नव जोयूं । वालोजी रे विछड़तां, तमे लोही नव रोयूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -7
- निबेरा खीर नीर का, महामत करे कौन और । माया ब्रह्म चिन्हाए के, सतगुर बतावें ठौर || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -22
- निबेरा खीर नीर का, सास्त्र सबों का सार । अठोतर सौ पख को, कर दियो निरवार || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -13
- निबेरा भिस्त रास का, कहूं पावने रूहों हिसाब । भिस्त को सुख है जागते, रास को सुख है ख्वाब || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -35
- निमख न छोड़े चरन को, मोमिन रूह जो कोए। निस दिन रहे खुमार में, आवत है चरन बोए || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -118
- निमख निमख में निरखिए, पट न दीजे पल ल्याए । छेटी खिन ना पर सके, तब इस्क जोस अंग आए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -12
- निमख में नूर नजरों, उठे अंग उजास । बरस्या नूर सबन में, कायम सुख में बास || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -69
- निमूना इन जिमी का, हक को दिया न जाए। पर कछुक तो कहे बिना, गैब की क्यों समझाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -14
- निमूना इन निसबत का, कोई नाहीं इन समान । ज्यों निमूना दूसरा, दिया न जाए सुभान || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -28
- निमूनो मारकंड जो, चयो सुन्दरबाई भली भत । सुकदेव आंदो आं कारण, हे जे पसो था हित || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -2
- निरख नासिका धनी की, लटके मोती पर लाल । लेत अमी रस अधुर पर, रस अमृत रंग गुलाल || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -111
- निरंजन निराकार तें, खेल रच्यो नारी नर । ए सुध हुई सबन को, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -8
- निरत करी नरम अंगरौं, कांई फेरी फरया एक पाय । छेक वाले छेलाईसू, तत्ता थेई थेई थाय || ग्रं - रास, प्र -29, चौ -9
- निरत करे नवरंगबाई, पासे कई विध बाजे बजाई । निरत करें और गावें, पासे सखियां स्वर पुरावें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -142
- निरत करे, खंत खरे, फेरी फरे, इन्द्रावती एक भांत री || ग्रं - रास, प्र -30, चौ -11
- निरत कला सब नाच के, फेर फेर देत पड़ताल । यों स्वर मीठे मोहोलन के, चलत आणू मिसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -68
- निरत भूखन बाजे गान, देखो ठौर सैयां सब समान । इन लीला में आयो चित्त, छोड्यो जाए न काहूं कित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -149

- निरमल अंगुरियों नख, ताकी जोत भरी आकास । सब्द न इन आणू चले, क्यों कहूं अर्स प्रकास || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -209
- निरमल नजरों न आवहीं, ले बैठी संग चंडाल । उपजत ऐसी अंगथे, उतारूं उलटी खाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -41, चौ -5
- निरमल नेत्र अति सुन्दर, परों पर चित्रामन । मीठी बानी खूबी खेल की, कहां लो कहूं रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -40
- निरमल पोहोंची नवघरी, पांच पांच दोऊ के नंग । अर्स रसायन में जड़े, करत मिनो मिने जंग || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -90
- निरमल मोती नासिका, कई बिध नथ बेसर । जोत जोर नंग मिहीं नकस, ए बरनन होए क्यों कर || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -4
- निरमल हिरदे में लीजो वचन, ज्यों निकसे फट बान जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -46
- निराकार आकारों ना सुध, ना सुध आप खसम । ना सुध छल ना वतन, ए बुजरकों बड़ी गम || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -18
- निराकार कासों कहिए, कासों कहिए निरंजन । क्यों व्यापक क्यों होसी फना, एता न कह्या किन || ग्रं - किरन्तन, प्र -21, चौ -6
- निराकार के पार के पार, तारतम को जागनी भयो सार । अछर पार घर अछरातीत,धाम के यामें सब चरित्र || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -27
- निराकार निरंजन सुन्य की, पाई न काल की विध । ना प्रकृत पुरुख की, न मोह अहं की सुध || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -2
- निराकार निरंजन सुन्य की, ब्रह्म व्यापक मांहें जहान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -45
- निराकार बैकुण्ठ पर, तिन पर अछर ब्रह्म । अछरातीत ब्रह्म तिन पर, यों कहे ईसे का इलम || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -22
- निलबट चौक चारों तरफों, रंग सोभित जोत अपार । निरख निरख नेत्र रूह के, सब अंग होए करार || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -18
- निलवट तिलक नासिका, रंग पल में अनेक देखाए । दंत बीड़ी मुख मोरत, हाए हाए जीवरा उड़ न जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -64
- निलवट पर सर मोतिन की, ऊपर नीलवी बीच मानिक । दोऊ तरफों तीनों सरें, तीनों बराबर माफक || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -45
- निलवट बंके नैन नासिका श्रवन, कौल फैल हाल नित नवले देखाए । रूह भी रंग रस चंचल चपल गत, मोहन मोही मोहनी मह हो जाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -113, चौ -3
- निलवट बेना चांदलो, हरी गरदन मुख मोर । नैन चोंच सिर सोभित, बीच बने तरफ दोऊ जोर || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -3

- निलवट वेणा चोकडो, पांच मोती तिहां सोभे । लाल पाच कुंदन मांहें सोभित, जोई जोईने जीव थोभे || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -59
- निलवट श्रवन नासिका, सिर कंठ उर कई हार । हाथ पांउं चरन भूखन, अति अलेखे सिनगार || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -34
- निलवट सुन्दर सुभान के, सोभा मीठी मुखारबिंद । ए छबि कहीं न जाए एक अंग की, ए तो सोभा सागर खावंद || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -123
- निलवट सोभे तिलक नी रेखा, नीली पीली गुलाल । बेहुगमा सुन्दर ने सोभे, रेखा मध्य बिंदका लाल || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -36
- निस दिन ग्रहिए प्रेम सो, जुगल सरूप के चरन । निरमल होना याही सों, और धाम बरनन || ग्रं - किरन्तन, प्र -106, चौ -2
- निस दिन रंग-मोहोलन में, साथ स्यामाजी स्याम । याद करो सुख सबों अंगों, जो करते आठों जाम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -5
- निस दिवस दोहेली थाय, पिउजी विना अंगना रे । मारूं कालजर्छ रे कपाय, मारा वालाजी विना रे || ग्रं - खटरुती, प्र -1, चौ -8
- निस दिवस वालाजीसों वातो, रामत करतां जाय । खिणमात्र जो अलगा थैए, तो विछोडो खिण न खमाय || ग्रं - रास, प्र -4, चौ -7
- निसबत असल सबन की, जित निसबत तित सब । सब निसबत के वास्ते, इलमें जाहेर किए अब || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -4
- निसबत इन तफावत, ए भेले चलें क्यों कर । दुनी जिमी गिरो आसमानी, दुनी के पाउं गिरो के पर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -17
- निसबत वास्ते इस्क, निसबत वास्ते इलम । खुसाली निसबत वास्ते, आखिर ल्याए खसम || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -10
- निसबत हक की जात है, निसबत में इस्क । निसबत वास्ते इलम, इत आया बेसक || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -5
- निसबती अची गडवी, पण ही सुख फजर कित । सुख बका अर्स केर गिनी सगे, जे नूर जमाल बुठडो हित || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -20
- निसाए नारी जे निसरे जी, कांई क्लवंती ते न केहेवाय । नात परनात जे सांभले जी, कांई चेहरो तेमा थाय || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -6
- निसान कहे इन वास्ते, सो बांधे कौल पर हद । लेत माएने ऊपर के, सो करने को सब रद || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -16
- निसान बका हक अर्स के, सो सब देऊंगी तुम । पर पेहेले नेक ए कहूं, जो तुम वास्ते हुआ हुकम || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -3
- निसान बड़ा ईसा आखिरी, और एही आखिरी किताब । महंमद मेंहेंदी आखिरी, इमाम आखिरी खिताब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -80

- निसान मिले सब बातून, अब जाहेर होसी सब || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -102
- निसान लिखे कयामत के, फरमान हदीसों दरम्यान । सो भी खोले एही उमत, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -14
- निसान लिखे कयामत के, होसी जाहेर दाभा जिमी से । जब नूर झंडा हादी ले गए, बाकी रही हैवानी जिमी में || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -8, चौ -3
- निसान लिखे दिन कयामत, सो तो रखे हक हादी हाथ । या हादी खोलें हक इलमें, या खोलें सुनत-जमात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -2
- निसान लिखे सो सब मिले, जो कयामत के फरमाए। ताए नफा न देवे तोबा पीछली, जो अव्वल झंडे तले न आए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -4
- निसान सब जाहेर हुए, आई बड़ी दरगाह से पुकार । चाक चढ़ी सब दुनियां, पर क्यों देखे बिना विचार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -12
- निसान सब जाहेर हुए, जो दुनी देखे सहूर कर । जो खोल देखे आंखे रूहकी, तो देखे हुई फजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -11
- निहायत था नातवान, ना वर पाएगी ना काम पेहेचान । सब तरबियत तुमको किया, पोहोंचे कुदरत तमाम हाथ दिया || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -20, चौ -7
- नीच अधरमी जीव रे, एवो अधरम कोई करे । श्री धणी धाम चाल्या पछी, आकार कोण धरे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -30
- नीच करम ऐसा चंडाल, तुझ बिना कोई न करे रे । श्री धनी धाम चले पीछे, इन जिमी में देह कौन धरे रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -31
- नीच नैंन ए तुझ देखते, आया न आंखों लोह । पिउ लौकिक जिनों बिछुरे, ऐसे भी रोवे सोऊ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -7
- नींद आई हुकम सों, हुकमें हुआ सुपन । हुकम से जागत हैं, एक जरा न हुकम बिन || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -32
- नींद उड़ाए जगाए के, कौन देसी घर आप पेहेचान रे । खेल देखाए आप देह धर, कौन काढ़सी होए गलतान रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -52
- नींद उड़ाए जब चीन्होंगे आपको, तब जानोगे मोहोल यों रचानो । तब आप घर पाओगे अपनों, देखोगे अलख लखानो || ग्रं - किरन्तन, प्र -1, चौ -4
- नींद उड़े भागे सुपना, तब फेर फेरा होए । सुख सुपन और वतन, लिए जाए ना दोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -109
- नींद उड़े रहे न सुपना, और सपने में देखना हक । मेहेर इलम जोस हुकमें, हक देखिए बेसक || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -8
- नींद ऐसी भई निगोड़ी, ए तुम देखो रे सई । दिन दो पोहोरे जागते, मोहे काली रैन भई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -3

- नींद कहे आतम जब जागी, तब क्यों रह्यो मैं जाए । नींद कहे मैं जात हों, लागू तुमारे पाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -28
- नींद को रात कदर कही, दुनी ढूंढें खेल में रात । कहे जो आजूज माजूज, ए तिन में गोते खात || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -47
- नींद निगोड़ी ना उड़ी, जो गई जीव को खाए। रात दिन अगनी जले, तब जाए नींद उड़ाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -16, चौ -9
- नींद बरी या भरम की, भरम तो भई आड़ी पाल । वह दुख देत जलाए के, जो आड़ी भई अपने लाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -16, चौ -8
- नीदें दिए गोते सुध बिना, ए जो सुपन का तन । तिनको भी हमें न छोड़िया, सिर पर रहे रात दिन || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -40
- नीयत ना नीकी कबहूं, जनम दगाई जान । निस दिन चाहें छल को, कहें हम मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -36
- नीर उजले खीर से, खसबोए जिमी रेत सेत । पसु कई विध खेलहीं, यों कागद निसानी देत || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -7
- नीर खारे भवसागर, और लेहेरां मारे मार । बेटो बीच पछाड़हीं, वार न काहूं पार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -8
- नील करूं मींडा मूकीने तेर, ए गुण गणतां मूने टली गयो फेर । हवे चौद करूं दस नीलने काज, गुण गणवा मारा धणी श्री राज || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -18
- नीलवी और लसनियां, और परवाली लाल । और रंग कपूरिया, ए रंग बारे इन मिसाल || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -11
- नीलवी ने लसणियां सोभित, पाना ने वली लाल । माणक मोती ने हीरा कुन्दन, माहे रतन तणां झलकार || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -47
- नीला ने पीला रंग, ताकी उठत कई तरंग । दोऊ रंगों की उठत झांई, इन मंदिरों दिवालों के ताई || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -93
- नीला रंग इजार का, मिहीं चूड़ी बूंटी ऊपर । तिन पर झलके दावन, हरी झांई आवत नजर || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -14
- नीली अतलस चरनियां, कई बेल कटाव नकस । चीन किनारे जो देखों, जानों एक पे और सरस || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -110
- नीली जिमी नूर पाच की, नूर नीले पसु जानवर । नूर नीला आसमान जिमी, ए नूर खूबी कहूं क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -50
- नीली ते लाहिनो चरणिया, अने माहे कसवनी भांत । कोरे कोरे कांगरी, इंद्रावती जुए करी खांत || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -14
- नीले पीले के बीच में, झांई लेत रंग दोए । सो पटुका कमर बन्या, रंग कया सुन्दरबाई सोए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -58

- नीलो ने कांई पीलो दीसे, कणा तणो रंग जेह । काणी छेडा जडाव जुगते, लवलेस कहूं हूं तेह || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -16
- नीलो पीलो सेत सेंदुरियो, माहे कसवनी भांत जी। स्याम गुलालियो अने केसरियो, मांहें जांबू ते रंगनी जात जी || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -18
- नूर अकल असराफील, ले पोहोंच्या पार बेहद । जिन कोई हिसबो खेल में, याको न लगे सब्द || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -94
- नूर अकल ले लदुन्नी, हकमें किया पसार । महंमद मेंहेंदी ईसा आवसी, आगे चेतावें नर नार || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -17
- नूर अछर की नजरों, कई कोट ऐसे इंड । त्रिगुन त्रैलोकी पल में, कई उपज फना ब्रह्मांड || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -25
- नूर अमृत सागर ईसान, सुख सीतल सुन्दर । नूर नजर भर देखिए, सुख सब बाहेर अन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -7
- नूर आगू दरबार के, नूर लग चांदनी झलकार । हांस पचासों नूर पूरन, नूर जोत न कहूं सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -30
- नूर आवें दीदार को, लेने सुख सुभान । ए कायम सुख देखिए, ए किया वास्ते पेहेचान || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -99
- नूर इन आखिर का, और रोसन काजी सुभान । क्योंकर इन जुबां कहूं, रसूल नूर फुरमान || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -95
- नूर इमाम इन भांत का, कबूं जो निकसी किरन । तो पसरसी एक पलमें, चारों तरफों सब धरन || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -50
- नूर इस्क इन मद का, ए जो चढ़सी सबन । ताए लेसी असलू नूर में, क्यों करे जुबां बरनन || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -97
- नूर ऊपर तले माहें नूर, कई बेल फूल नूर नकस । घोड़े कमाड़ी नूर चौकठ, भत्या सागर नूर रस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -65
- नूर और नूरतजल्ला , कहे महंमद दो मकान । दोए सूरतें जुदी कही, ताकी रूहअल्ला दई पेहेचान || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -47
- नूर और नूरतजल्ला, अर्स साम सामी झलकत । ए रूहें कदम न भूलें सुपने, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -82
- नूर और नूरतजल्ला, आकास जिमी सब नूर । देत देखाई सब नूरै, नूर जहूर भर पूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -137
- नूर कहे महामत रूहें, देखो नजरों नूर इलम । वाहेदत आप नूर होए के, पकड़ो नूरजमाल कदम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -31
- नूर किनार नूर जोए के, नूर जल तरंग । नूर जल पर मोहोलातें, क्यों कहूं नूर के रंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -3

- नूर किनारे रेती नूर में, मोहोल चबूतरे नूर किनार । ताल हिंडोले बीच नूर बन, नूर सोभा निकुंज अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -3
- नूर कुंजी आए पीछे, ईसे का अमल । साल सत्तर ढाँप्या रह्या, आगू चल्या महंमदी मिल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -12
- नूर कुन्जी अगिन मुसाफकी, कले कुलफ खोलत हकीकत । सुध पाइए सागर नूर पार की, हक मारफत रूहों खिलवत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -1
- नूर के एक पल में, इत इंड चले कई जाए। ए भी मोमिनों खेल देखाए के, देसी सबे उड़ाए || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -77
- नूर के पार नूर तजल्ला, रसूल अल्ला पोहोंचे इत । मोमिन उतरे नूर बिलंद से, सो याही कलमें पोहोंचें वाहेदत || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -51
- नूर को रूप सरूप अनूप है, नूर नैना निलवट नासिका नूर । नूर श्रवन गाल लाल नूर झलकत, नूर मुख हरवटी नूर अधूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -114, चौ -1
- नूर खाना नूर पीवना, नूर मुख मजकूर । इस्क अंग सब नूर के, सब नूर पूर नूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -15
- नूर खुदा आया मसरक, ऊग्या सूरज मगरब । जाहेरी ढूंढें सूरज जाहेर, ए जो पढ़े आखिरी सब || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -39
- नूर खुदा रोसन हुआ, बैंच छूटी सब तरफ । लेत माएने ऊपर के, सो रया न कोई हरफ || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -20
- नूर खूबी कही केसन की, हक सरूप की इत । हाए हाए मेरा अंग मुरदा ना हुआ, केहेते बका निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -76
- नूर खेलत नूर देखत, और नूरै नूर बरसत । रूहें आइयां जो इत नूर से, सो नूर नूरै को दरसत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -48
- नूर गंज भोम आठमी, नूर चार तरफ झूलन । चारों चौक नूर हिंडोले, रूहें झूलत नूर रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -93
- नूर गंज मध्य मन्दिर, नूर चौक ठौर निरत । नूर रात नूर बरसत, रूहें नूर देखें नूर की सूरत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -46
- नूर गुरज हांसों पर, बीच कांगरी नूर किनार । बीच बीच बैरखें नूर की, मौजें आवत नूर झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -121
- नूर घाट जांबू बन का, और नूर घाट नारंग । बट घाट छत्री बन हिंडोले, पुल सोभे मोहोल नूर रंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -2
- नूर चंद्रवा क्यों कहूं, नूरै की झालर । तले तरफ सब नूर की, देखो नूरै की नजर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -45
- नूर चरन कमल नूर हस्तक, नूर सोभा सबे नूर सिनगार । नूर सिर पाग नूर कलंगी दुगदुगी, नूर हिये हार नूर गंज अंबार || ग्रं - किरन्तन, प्र -114, चौ -3

- नूर चारों पौरी बराबर, जो करत हैं झलकार । ए जुबां खूबी तो कहे, जो पाइए काहूं सुमार || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -12
- नूर चीज सब चेतन आसिक, बाए बादल बीज अम्बर । सब बिध स्वाद पूर पूरन, सुख जाए ना कहयो क्योंए कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -35
- नूर चेहेबच्चे नूर चबूतरे, ए नूर फेर फेर देख । फेर नूर चौक द्वारने, नूरै नूर विसेख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -36
- नूर चौक ऐसे ही गिरदवाए, नूर फिरते आए सब में, । बीच फिरती आई नूर गली, नूर गली सोभा पौरी ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -46
- नूर चौक मन्दिर फिरते, नूर चबूतरों बैठक । नूर बरसत कई हवेलियां, नूर बैठक रूहे हादी हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -69
- नूर जरद जिमी जानवर, नूर पीले पसु जरद जोत । फल फूल पीले बिरिख बेलियां, नूर पीला आकास उद्दोत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -49
- नूर जरे तिनके का, मैं नूर कहया दिल धर । नूर समूह की क्यों कहूं, रूहे नूर देखें सहूर कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -6
- नूर जल किनारे सीढ़ियां, नूर चबूतरा गिरदवाए। नूर मोहोल मेहेराव फिरते, नूर झांई जल में बनराए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -5
- नूर जिमी आसमानी आसमान नूर, रंग पसु पंखी नूर आसमान । फल फूल बिरिख बेली सोई रंग, नूर सोभा जंग सके न भान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -53
- नूर जिमी निकुंज बन, नूर जिमी जल ताल । नूर टापू मोहोलात नूर, और नूर मोहोल बन पाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -4
- नूर जिमी बन नूर जल, आकास वाए सब नूर । नूर पसु पंखी द्वारने, नूर सब ससि सूर || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -41
- नूर जिमी बराबर अर्स की, कहूं चढ़ती नहीं उतार । दूजी सोभा नूर रोसन, जिमी भरी अम्बर झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -30
- नूर जिमी या तूल चौड़ी, इंतहाए न तरफ आवत । कहूं जुबां अर्स गिनती, अंग अर्स के जानें सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -28
- नूर झंडा महंमदी इमामें, किया खड़ा हकीकी दीन । क्यों दाखले मिले दिल मजाजी, दिल दुस्मन तोड़े आकीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -22
- नूर झरोखे किनार के, तिन में नूर मन्दिर । नूर थंभ दो दो आगू इन, हर मन्दिर नूर अन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -85
- नूर झरोखे बैठक, नूर जल नूर ऊपर । नूर झरोखे तीसों मिले, जितथें आवें नूर नजर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -19
- नूर तखत नूर चौक में, बैठे नूर में जुगल किसोर । नूर सख्प निरत नवरंग, बीच नूर बैठे भर जोर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -47

- नूर तजल्ला नूर की, जिमी बाग जानवर । महंमद सिफायत जिनको, तिन से छिपी रहे क्यों कर || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -43
- नूर तजल्ला बीच में, लिख्या गुनाह पोहोंच्या रूहन । जित आए न सक्या जबराईल, इत असल मोमिनों तन || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -68
- नूर तजल्ला बीच में, हक हादी रूहों खिलवत । हक से हादी रूहें नूर में, ए अर्स असल वाहेदत || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -67
- नूर तरफ पाट घाट नूर का, बारे थंभ नूर के। ऊपर चांदनी नूर रोसन, नूर क्यों कहूं किनार बन ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -1
- नूर तीनों तरफों झलूबिया, तरफ चौथी नूर झरोखे । नूर बन छाया जल पर, खासी बैठक नूर ठौर ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -18
- नूर थंभ गली देखिए, जानों नूर मंदिर द्वार । माहें मंदिर झरोखे नूर एकै, हर बैठक नूर विस्तार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -109
- नूर दखिन सुख सागर, नूर वाहेदत मुख नीर । पाइए मारफत मुसाफ की, अर्स अंग असल सरीर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -2
- नूर दधि सागर सीतल, नूर पछिम अंग पूरन । ए सुख अतंत हमेसा, नूर वाहेदत पूर रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -4
- नूर दिस थंभ दोए मानिक, बट दिस हीरा थंभ दोए । दोए थंभ पाच दिस अर्स के, थंभ पोखरे केल दिस सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -133
- नूर दूर से देखत, सो नूर बैठक इत । दो से हांसें नूर की, हक मेले नूर बरकत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -110
- नूर द्वार थंभ दो मानिक, तिन पासे दो पुखराज । ए द्वार तरफ दाहिनी, रया नूर इत बिराज || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -10
- नूर द्वार दोऊ ओर बराबर, नूर द्वार सीढ़ी दोए तरफ । नूर छे चौक आगू देहरी, रूहें नूर देखें तो बोलें ना हरफ || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -41
- नूर द्वार नूर ऊपर, नूर बड़ी बैठक नूर भर । कर दीदार नूर-जमाल का, फेर आए नू-कादर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -35
- नूर द्वार सुख पेहेली भोमें, सुख अव्वल भोम नूर पूर । फिरता सुख सब नूर में, मध्य नूर नूर नूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -133
- नूर नगन चेतन भूखन रचे, अंग संग देखे सब चढ़ते रोसन । यो खैच खड़ी करी इलम खसम के, लई जोस फरामोस से होस वतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -116, चौ -1
- नूर नजरों नूर श्रवनों, नूर को नूर विचार । नूर सेज्या सुख नूर अंग, नूर रोसन नूर सिनगार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -14
- नूर नाम रोसन का, दूनी जानत यों कर । सो तो रोसनी जिद अंधेर की, दुनी क्या जाने लदुन्नी बिगर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -54

- नूर नामे में पैगंमर, एक लाख बीस हजार । सो सिफत सब महमद की, सो महंमद स्याम सिरदार || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -3
- नूर नीर खीर दधि सागर, घृत मधु एक ठौर । रस सब रस सागर, बिना मोमिन न पावे कोई और || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -60
- नूर नूर को देखहीं, नूर की नूर सुनत । नूर नाचत नूर बाजत, नूर कहां लों को गिनत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -50
- नूर नूर जहूर जहूर सों, करत सफर जंग दोए। एक दूजे के सनमुख, ठेल न सके कोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -40
- नूर नूर सब एक हो गई, एक दूजी को खेचत । दूनी जोत बीच खाली मिनें, रंग क्यों गिने जाए इत || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -39
- नूर नेहेरें तीन तले चलें, नूर पाट एता जल पर । ठौर खेलन नूर जमाल के, ए नूर रूहें देखें दिल धर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -25
- नूर नेहेरें मोहोलों तले, नूर ढांपे चले अनेक । नूर चले नूर चक्राव ज्यों, नूर सुख पाइए देख विवेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -4
- नूर नैरित अंग उजले, सोभा सुन्दर सागर खीर । हक इलम देखावे उरफान, पिएं इस्क प्याले सूरधीर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -3
- नूर परिकरमा दीजिए, फिरते जाइए नूर बन में । बाग परे नूर अंन बन, आगू बन बिना नूर जिमी ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -9
- नूर पसु पंखी नूर में, जिमी जुदी जुदी नई सिफत । नई कहूं हिसाब इतके, ए नूर खूबी हमेसा अतंत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -12
- नूर पांच पेड़ पुखराज के, दो नूर सीढ़ी तीसरा ताल । ए आठों पहाड़ तले नूर में, ऊपर नूर मोहोल ना मिसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -12
- नूर पार अर्स मोमिन, हते ना तिन बखत । तो महंमद मेंहेंदी मोमिन, आए अर्स से आखिरत || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -67
- नूर पार जिमी और रांग की, जो फेर देख रूह दिल । कई पहाड़ मोहोल बाग नेहेरें, जिमी बराबर टेढ़ी न तिल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -22
- नूर पार थे रसूल आवहीं, ए देखो हकीकत । हक भेजे अपना फरमान, आगे आलम तो गफलत || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -6
- नूर पार नूर तजल्ला, पोहोंचे रसूल रूहअल्ला हजूर । ए सब इमाम खोलसी, जो दोनों किया मजकूर || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -48
- नूर पार पिउ एक खुद हैं, और न दूजा कोए। और नार सब माया, यामें भी रूह दोए || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -2
- नूर पार भी एह बन, और पहाड़ पुखराज । इन आगू बड़ा बन चल्या, रहया सागरों लग बिराज || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -45

- नूर पूर सुख सागर, अतंत पूरख सुखदाए । ए सबरस सब विध सब सुख, नूर सब अंगों उपजाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -8
- नूर पौरी नूर द्वारने, नूर गलियां थंभ अर्स । नूर प्याले रूहें पीवहीं, ले भर भर नूर सरस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -58
- नूर बका इत दायम, आवे हक के दीदार । तले झरोखे झांकत, आए उलंघ जोए के पार || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -11
- नूर बड़ा इन सब्द में, सो देख थके सब कोए । इमाम बिना इन नूर को, रोसन क्यों कर होए || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -25
- नूर बड़ो इन माएनों, सो अब हुआ रोसन । तबक चौदे गरजिया, बरस्या नूर वतन || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -32
- नूर बड़ो इमाम को, सो क्यों ढापू मैं अब । सुख लेने को या बखत, पीछे दुनी मिलसी सब || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -52
- नूर बाजे नूर बजावहीं, नूर गावें नूर सरूप । नूर देखें फेर फेर नूर को, नूर नाचत नूर अनूप || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -51
- नूर बाहेर नेहेर आई कुंड में, आगू नूर चबूतरे । जाए ढांपी चली मोहोल नूर के, नेहेर खुली नूर किनारे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -18
- नूर बिना अंग कोई ना देख्या, और सब अंगों बरसत नूर । अंबर में न समाए सके, इन अंगों का जहूर || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -37
- नूर बैठत नूर उठत, नूर चलते नूर निदान । सब ठौरों नूर पूरन, जानों सब गंज नूर समान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -70
- नूर बोलत जुबां नूर की, नूर सुनत नूर श्रवन । खुसबोए नूर नासिका, नूर नैन देखे ना नूर बिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -12
- नूर भरी भोम पांचमी, जित नूर सेज्या सुख । रात सुख नूर अति बड़ा, हक सुख नूर सनमुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -129
- नूर भरी भोम सातमी, नर मोहोल बिना हिसाब । बिना हिसाब चौक नूर के, सो भयो सागर नूर आव || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -81
- नूर भरे ताक खिड़कियां, बारसाखें नूर द्वार । कई मोहोल मन्दिर नूर के, ना गिनती नूर सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -83
- नूर भरे नैना निरमल, प्रेम भरे प्यारे । रस उपजावत रंग सों, मानों अति कामन-गारे || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -10
- नूर भस्या आकास में, सामी आया आकास नूर ले । नूर भस्या दरिया नूर का, माहें कई उठे तरंग नूर के || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -118
- नूर भस्या आसमान में, नूर चांदनी नूर चौक । नूर बिना कछू न देखिए, नूरै में नूर सौक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -124

- नूर भोम दूजी बैठक, पसु पंखियों एह नूर ठौर । कई जिनसें नूर जिकर, बिना हक न बोले नूर और || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -27
- नूर भोम दूजी से तले लग, भस्या चेहेबच्चा नूर जल । लंबा चौड़ा नूर एक हांस लग, ऊपर आया नूर बन चल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -17
- नूर मकान जबरूत जो, पोहोंच्या जबराईल जित । अर्स अजीम जो लाहूत, हक हादी रूहें बसत || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -45
- नूर मकान जिमी असल, असल बन चौफेर । पसु पंखी असल, खेलत घेरों घेर || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -40
- नूर मकान जो हक का, जित होत है हुकम । होए पल में पैदा फना, ऐसे लाख इंड आलम || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -11
- नूर मकान में आवें दीदार को, इत नूरजमाल बिराजत । रूहें याद कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -7
- नूर मकान से पैदा हुई, ए जो गिरो फरिस्तन । कायम वतन से उतरे, सो पोहोंचे न हकीकत बिन || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -11
- नूर मकान से फरिस्ता, आवे असराफील । सब उड़ावे सूर बजाए के, पलक न होवे ढील || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -16
- नूर मत जाहेर होएसी, तब जानो हुई आखिर । तब मौला हम आवसी, इन मोमिनों की खातिर || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -27
- नूर मंदिर एक सौ दस, एक अन्दर की नूर हार । चारों तरफों मंदिर नूर के, ए नूर गिनती बारे हजार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -21
- नूर मंदिर तीस इन तले, ताके चार चार नूर द्वार । आगू तीन गली नूर थंभ की, ए जो मंदिर नूर किनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -20
- नूर मंदिर पहेली भोम के, नर रसोई चौक ठौर । ए अंदर नूर द्वार के, कछू नूर बिना नहीं और || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -14
- नूर मंदिर भोम गिनती का, बीच नूर चबूतरा । हक हादी रूहें नूर बैठकें, अति रंग रस नूर भरया || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -22
- नूर मन्दिर द्वार नूर, नूर जिमी चौक थंभ दिवाल । नूर भरपूर नूर में, सब नूरै की हाल चाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -49
- नूर मन्दिर फेर देखिए, फेर देखिए नूर झरोखे । तब नूर बन आवे नजरों, नूर पसु पंखी खेले जे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -67
- नूर महंमद कह्या हक का, दुनी सब महंमद नूर । जरा एक महंमद बिना, नहीं काहूं जहूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -83
- नूर महंमद रूहें हक की, ए हैं एकै जात । और बाग जोए हौज कौसर, ए साहेबी अर्स सिफात || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -6

- नूर मानिक हीरे पाच पोखरे, नर द्वार से आए फेर द्वार । चारों खूटों नूर थंभ नीलवी, नूर पाच रंग बारे सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -24
- नूर मीठा मधु उत्तर, सुख अतंत अंगों अंग । ए विध जाने रस रसना, उपजत इनके संग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -6
- नूर मुख चौक मांडनी अति नूर में, नूर वस्तर नूर भूखन जहूर । नूर जोवन रोसन नूर नौतन, नूर सब अंगो उद्दोत नूर पूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -114, चौ -2
- नूर मेहेराव आणू सीढ़ी नहीं, आगू बढ़ती नूर पड़साल । नूर मेहेराव इन ऊपर, नूर पड़साल माहें चाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -39
- नूर रांग तरफ जो देखिए, इंतहाए न कहूं आवत । पार आवे जिन चीज को, तिनकी होए सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -16
- नूर रास भी बरन्यो ना गयो, तो भिस्त बरनन क्यों होए । बोहोत बड़ी तफावत, रास भिस्त इन दोए || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -32
- नूर रूहें चढ़ चांदनी, नूर नवों भोमों पर । खूबी नूर भोम दसमी, ए नूर सोभा ना काहूं सरभर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -115
- नूर रोसन बल धाम को, सो कोई न जाने हम बिन । अंदर रोसनी सो जानहीं, जिन सिर धाम वतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -7
- नूर लिया छठी भोम में, भोम अर्स विवेक विचार । मोहोल लिया सुख नूर का, नूर नूर में नूर न सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -128
- नूर लेहेरें दायम उठे, पाउ पल में बिना हिसाब । कोई लेहेर कायम करे, कई उड़ावें कर ख्वाब || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -39
- नूर वाइव बल पूरन, नूर जहूर समन सागर । परख पूरन सुख सुन्दर, सब बिध नूर नजर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -5
- नूर वाउ चलत बहु विध की, सुगंध सोहत सीतल । सब चीजें खुसबोए नूर पूर, जिमी मोहोल बन जल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -33
- नूर सख्प देखत दिवालों, नूर सख्प देखत द्वार । नूर सख्प देखत नूर बीच, नूर झलकारों झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -26
- नूर सख्प सब नूर के, ले नूर दौड़ें बारे हजार । बारे हजार नूर मन्दिरों, नूर झलकारों झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -28
- नूर सख्य रसूल, हक आगे खड़ा हुकम । मूल मेला महंमद रूहों का, सब बैठियां तले कदम || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -76
- नूर सबों में पसरया, सो कहूं सब सनंध । याही सब्दों बीच का, उड़ जासी बंध फंद || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -26
- नूर सरूप पैठे एक तरफ से, नूर निकसे जाए नूर पार । नूर फिरत बीच गिरदवाए, नूर झलकारों झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -30

- नूर सरूप पैठे एक द्वार से, जाए निकसें नूर किनार । यों नूर सख्प दौड़ें सब में, नूर झलकारों झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -27
- नूर सरूप रूप नूर के, नूर वस्तर भूखन । सोभा सुन्दरता नूर की, सब नूरै नूर रोसन || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -48
- नूर ससि बन पसु पंखी, जिमी नरै रेजा रेज । थिर चर नूर सबों मिने, सब चीजें नूर तेज || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -21
- नूर सागर सूर मारफत, सब दिलों करसी दिन । रात गुमराही कुफर मेट के, करे चौदे तबक रोसन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -71
- नूर सामी नूर द्वार का, होत नूर नूर सों जंग । खड़ियां आगू नूर चांदनी, नूर देखें अर्स नूर अंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -31
- नूर सिफत द्वार सनमुख, और नूर द्वार पीछल । एक दाएँ बाएँ एक, हुआ बेवरा चारों मिल || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -7
- नूर सीढ़ियां नूर चबूतरे, नूरै के थंभ दिवाल । बीच खाली सोभा नूर की, ए नूर कहूं किन हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -26
- नूर सेज्या-पौढ़ें इतहीं, नूर मोहोल बड़ा ए। इत नूर मेला पोहोर तीन लग, नूर हुकम कहावे जे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -44
- नूर सोभा नूर जहूर, और न सोभा इत । देखो अर्स तन अकलें, ए सख्प वाहेदत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -28
- नूर स्याम जिमी आसमान लग, नूर स्याम पसु पंखी नूर । फल फूल स्याम नूर बिरिख बेली, नूर पसु पंखी सब जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -52
- नूर हक के अंग का, होवे एकै ठौर । इत थे दूजे पसरे, पर न होवे काहूं और || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -36
- नूर हक सहूर मजकूर नूर महामत, नूर ऊग्या बका नूर का सूर । सब नूर रूहें नूर हादी नूर में, नूर नूर में बैंच लई हके हजूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -114, चौ -4
- नूर हिंडोलों, जंजीरों, कड़े खटकत नूर जुगत । ए घाए पड़धाएं नूर पड़छंदे , नूर हर ठौरों बोले बिगत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -103
- नूर हीरे मानिक पोखरे, पाच नीलवी नूर थंभ । नूर पांच रंग दोऊ तरफों, दस दिवालें नूर अचंभ || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -32
- नूर-अनामिन अल्ला तो कह्या, कुल-सैयन-मिन्नूरी । करे इन का दावा दिल मजाजी, देखो अकल इनों सहूरी || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -118
- नूर-जमाल के दीदार को, आवें नूर-जलाल । नूर-जमाल के अर्स में, इत रूहें रहें कमाल || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -12
- नूर-जलाल की सिफत को, जुबां ना पोहोचत । तो नूरजमाल की सिफत को, क्यों कर पोहोंचे तित || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -12

- नूर-जलाल दीदार बाहेर से, करके पीछे फिरत । नूर-जमाल के कदमों, बड़ीरूह रूहें बसत || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -63
- नूर-तजल्ला अर्स में, सूरत साहेब की । दरगाह बीच रेहेत हैं, रूहें हमेसगी || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -61
- नूर-मकान का खावंद, जिनके होत एक पल । कोट ब्रह्मांड ऐसे होए के, वाही खिन में जात हैं चल || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -59
- नूर-मकान नूर हक का, जित हैं नूर-जलाल । तिन दिल हकें यों चाहया, देखें इस्क नूर-जमाल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -27
- नूर-मकान हुआ तिन पर, राह चले ना नूर पर । जित पर जले जबराईल, तित वजूद आदम पोहोंचे क्यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -83
- नूरजमाल अंग का नूर जो, बड़ी रूह रूहों सिरदार । बड़ी रूह के अंग का नूर जो, रूहें बुजरक बारें हजार || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -48
- नूरजलाल आवे दीदारें, जो अपन बैठे मांहें लाहूत । तिन चाहया देखों रूहों इस्क, तुम तो देखाया नासूत || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -138
- नूरतजल्ला नूर के, बीच में ए मोहोलात । ए सुख बका के क्यों कहूं, इन मोहोलों खेलें हक जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -16, चौ -16
- नूरी फरिस्ता हुकमें, ले डास्या उलटाए । ए मोमिनों खातिर हुकम, कई विध खेल बनाए || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -35
- नूरी हक का तिन पर भेजिए, जो कोई नूरी हक का होए। पर झूठे ख्वाबी दम पर, नूर पार थे न आवे कोए || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -44
- नूरै के मोहोल मंदिर, नूर दिवाले द्वार । नूरै नकस कटाव नूर, नूर क्यों कहूं बड़ो विस्तार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -7
- नूरै के मोहोल मन्दिर, नूर दिवाले द्वार । नूर नकस कटाव नूर, नूर क्यों कहूं बड़ो विस्तार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -34
- नूस्खे रेहेमत मदतगार, इन ठौर भया उस्तुवार । तीन सरूप की एह बयान, सो ए कहे एक के दरम्यान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -44
- नूह काफर की बन्ध में, रहे साल चालीस । बेटे मारे कई दुख दिए, तो भी काफर न छोड़ी रीस || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -2
- नूह नबी को वारसी, आदम दई पोहोंचाए । आए ईसा नूह नबी इमाम, सो आदम सफी अल्लाह || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -10
- नेऊ मांहें अध्याय पांत्रीस, जे वृज लीला कीधी जगदीस । जगदीस वचन एणे न केहेवाय, एम न कहूं तो विगत केम थाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -5
- नेक अधुर दोऊ खोलहीं, दन्त लाल उज्जल झलकत । अधुर लाल दो पांखड़ी, जानों के नित्य मुसकत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -144

- नेक कही हक इस्क की, पर इस्क बड़ा विस्तार । इनको बरनन न होवहीं, न आवे मांहें सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -139
- नेक कहूं तिनका बेवरा, चारों तरफ बन पाल । अव्वल बड़े घाट से, ए जो हौज कौसर कया ताल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -8
- नेक कहूं दोजख की, ए जलसी ज्यों कुफरान । ए जो सब्द रसूल के, अंदर दिल में आन || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -1
- नेक कहूं बाजू बन्ध की, जोत न जामें सुमार । तो जो नंग बाजू बन्ध के, सो क्यों आवें माहें विचार || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -26
- नेक कहूं या नूर की, कछुक इसारत अब । पीछे तो जाहेर होएसी, तब दुनी देखसी सब || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -12
- नेक कहूं राह मुस्लिम की, जो देखाई रसूलें मेहेर कर। भूले अवसर पछताइए, सो कहूं सुनो दिल धर || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -5
- नेक खोलें अधुर मुख बोलत, करें प्यारी बातें कर प्यार । सो सुख देत आसिकों, जिन को नहीं सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -45
- नेक तो भी कहूं जाहेर, मेरे मोमिनो के कारन । अंतर में ना कर सकों, अर्स रूहें मेरे तन || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -3
- नेक देखाए रंग अर्स के, कई खूबी रंग अलेखे । रूह सहूर करे हक इलमें, हक देखाएँ देखे || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -14
- नेक नेक निसान केहेत हों, वास्ते साहेदी महंमद । ए पट खुल्या नूर पार का, कहों कहां लग कहूं न हद || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -27
- नेक बसे हम बृज में, नेक बसे रास मांहें । आगे तो धाम आइया, तब तो आँखें खुल जाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -88, चौ -5
- नेक सिनगार कया इन जुबां, क्यों बरनवाए सुख ए। ए सोभा ना आवे सब्द में, नेक कहया वास्ते रूहों के || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -121
- नेक सुनो तुम मोमिनों, बीच लिख्या तफसीर । सो देखो चौथे सिपारे, दिल पाक करो सरीर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -22
- नेणा चपल अति अणियाला, ने रेखा सोभे मांहें लाल । बेहुगमा भ्रकुटीनी सोभा, टीलडी ते मध्य गुलाल || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -54
- नेणे आंसू बहु जल झरे, अने वली वली रमा विनती करे । धणी ए अंतर तां में न खमाय, जीव मारो आकुल व्याकुल थाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -29
- नेणे सेनी नेह धर, मुंजे चस्मे से कतां । सुत्र संनो ही कती करे, मूंजी अंखिए भर अचां || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -28, चौ -5
- नेणेंनी मंझां निद्र न वंजे, जे हेडी मथां थेई । सेणेसे अंई साथ न हल्यां, पोरयां कुरो कंदा रही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -12

- नेत नेत कर तो गाया, जो ब्रह्म न नजरों आया । जित देख्यो तित माया, तब नाम निगम धराया || ग्रं - खुलासा, प्र -11, चौ -9
- नेत्र अनियां अति तीखियां, रस इस्क भरे पूरन । ए बैंचें जिन रूह ऊपर, ताए सालत हैं निस दिन || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -33
- नेत्र कहे और नासिका, हाथ कहे और मुख । और अंग सबे याही विध, केहेते बातें दे सब सुख || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -27
- नेफा रंग कसूंबरे का, अति खूबी अतलस । बेल भरी मोती कांगरी, जानों ए भूखन से सरस || ग्रं - सिनगार, प्र -10, चौ -6
- नेफे मोहोरी चीन के, बेल बनी मोती नंग । लाल नीली पीली चूनियां, सोभित कंचन संग || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -74
- नेह कर तूं नैनों से, और चसमें से कताए। मिहीं सूत ले उजला, आओ आंखें कर पाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -28, चौ -5
- नेहेकलंक दीसे चांदलो, नहीं कलातणो कोई पार । उठे अलेखे किरणें, सहु झलकारों झलकार || ग्रं - रास, प्र -41, चौ -4
- नेहेचल घर थें आइयां खेल देखने, सत सरूप परवान । सो अंकूरी भूले क्यों यामें, जाए दई पिउ पेहेचान || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -4
- नेहेचल जोगवाई नहीं एणे ठाम, अधखिणमां थाय कई काम । इंद्रावती कहे आ वार, निद्रा नव कीजे निरधार || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -22
- नेहेचल निध दई करी, सूतो जीव कोण रे जगाडसे । ब्रह्मांड फोडीने श्री धाम, ऊपरवाडे एम कोण पोहोंचाडसे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -61
- नेहेचल निध रे जातां, तं किहां हती रे बुध । धिक धिक रे चंडालनी, तूं कां थई रे असुध || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -24
- नेहेचल निध रे बिछुड़ते, कहां गई वह बुध । धिक धिक रे चंडालनी, ते क्यों भई ऐसी असुध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -25
- नेहेरें आवत जिन द्वार की, निकसत सामी द्वार । तले मोहोल के आए के, जल चल्या जात है पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -16, चौ -4
- नेहेरें चलत कई बीच में, चेहेबच्चे बगीचों । कई बैठकें कारंजों, जल उछलत फुहारों || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -51
- नेहेरें चलसी उलटी, किए नजीकी दूर। ईसा मेंहेदी महंमद, आए हिंद में बरस्या नूर || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -19
- नेहेरें बन में होए चलीं, सो नेहेरें कई मिलत । आगूं आए मोहोल बन के, इत चली कई जुगत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -24, चौ -12
- नेहेरें मोहोल ढ़ांपियां, जल चक्राव ज्यों चलत । मोमिन हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -33

- नेहेरें सागर से खुली चलीं, सो भी भई बन माहें । ए बन सोभा नेहेरों की, खूबी क्यों केहेसी जुबाएं || ग्रं - परिक्रमा, प्र -25, चौ -2
- नैणाने तरसे रे वालाजी ने निरखवा, श्रवणा तरसे वाणी रसाल । वाचाने तरसे रे वालाजी सूं वातडी, जाणूं करी काढूं रूदयानी झाल || ग्रं - खटरुती, प्र -3, चौ -4
- नैन अनियारे अति तीखे, पल देत तारे चंचल । स्याम उज्जल लालक लिए, ए क्यों कहूं सुपन अकल || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -119
- नैन अनियारे बंकी छब, चंचल चपल रसाल । बान बंके मारत बैंच के, छाती छेद निकसत भाल || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -73
- नैन एक रूह के, जो सख लेवें परवरदिगार । तिन सुख से सुख पोहोंचहीं, दिल रूहों बारे हजार || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -104
- नैन कान मुख नासिका, रंग रस भरे जोवन । हाथ पाउं कण्ठ हैयड़ा, सब चढ़ते देखे रोसन || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -75
- नैन की पाओ पल में इसारत, कई कोट ब्रह्मांड उपजत खपत । इत खेल पैदा इन रवेस, त्रैलोकी ब्रह्मा विष्णु महेस || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -10
- नैन चढ़ाए साथ न जागे, यों न जागनी होए । मूल घर देखाइए, तब क्यों कर रेहेवे सोए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -9
- नैन तीखे अति अनियारे, सखी ए छबि कही न जाए । आधे धूंघट मासूक को, निरखत नैन तिरछाए || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -60
- नैन देखें नैन रूह के, तिनसों लेवे रंग रस । तब आवें दिल में मासूक, सो दिल मोमिन अरस-परस || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -19
- नैंन नासिका मुख श्रवना, भंडी खोपड़ी पकड़ तूं क्यों रही रे । तोड़ इनों को जुदे जुदे, तूं क्यों उजड़ ना गई रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -23
- नैन निलवट बंकी छबि, अति चंचल तेज तारे। रंग भीने अति रस भरे, बका निसबत रूह प्यारे || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -20
- नैन नीके चोंच सोभित, मीठी जुबां मुख बान । खुसबोए गूंजें कई भमरे, कई तिमर अलापें तान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -44
- नैन रस भरे रंगीले, चंचल चपल भरे सरम । ए अरवाहें जानें अर्स की, जो मेहेरम बका हरम || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -32
- नैन रसीले रंग भरे, प्रेम प्रीत भीगल । देत हैं जब हेत सुख, चुभ रेहेत रूह के दिल || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -9
- नैन रसीले रंग भरे, बँचत बंके मरोर । सो आसिक रूह जाए ना सके, जाए लगें बान ए जोर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -120
- नैन रसीले रंग भरे, भौं भकटी बंकी अति जोर । भाल तीखी निकसे फूटके, जो मारत खैच मरोर || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -13

- नैन रहे नैन देख के, एही बड़ा जुलम । न जानो क्यों सुरखरू, करसी हक हुकम || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -149
- नैन श्रवन मुख नासिका, चारों अंग गेहेरे गंभीर । अर्स आकास सिंध तेज का, ताए चारों नेहेरें चलियां चीर || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -123
- नैन श्रवन मुख नासिका, मुख छबि अति सुन्दर । ए देखत ही आसिक अंगों, चुभ रहत हैड़े अन्दर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -51
- नैन श्रवन या रसना, जो अंग किए बरनन । तिन इस्क देखाया हक का, और देख्या न या बिन || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -5
- नैन सुख देत जो अलेखे, मीठे मासूक के प्यारे । मेहेर भरे सुख सागर, रूह तर न सके तारे || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -23
- नैन सैन जो करत हैं, सामी रूह मोमिन । ए सैन दिल लेय के, हाए हाए चिराए न गया ए तन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -66
- नैन सों नैन लेत रंग सैंने, अरस-परस उछरंग । उर मुख नेत्र कर कंठ, यों सुख सब विध अंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -46
- नैनन की मैं क्यों कहूं, नूर रंग भरे तारे । सेत माहें लालक लिए, सोहें टेढ़े अनियारे || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -40
- नैनों अंगुरियां देखती, कोमलता हाथ लगाए । सो मेरे नैन नाम धराए के, हाए हाए जल बल क्यों न जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -20
- नैनों आंसू बहुविध झरे, फेर फेर रमा विनती करे । धनी एह अंतर सह्यो न जाए, जीव मारो मांहें कलपाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -29
- नैनों की गति क्यों कहूं, गुनवंते गंभीर । चंचल चपल ऐसे लगें, सालत सकल सरीर || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -9
- नैनों निलवट निरखते, देखी बनी सारंगी पाग । दुगदुगी कलंगी ए जोत, छबि रूह हिरदे रही लाग || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -130
- नैनों नैन मिलाए के, अमीरस सींचत । अपने अंग रूहें जान के, नेह नए नए उपजावत || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -5
- नौतन खेल या रास को, कबहूं ना होवे भंग || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -35
- नौतन पुरी भली पेरे, चितसों चरचानी । साथी जो बेहद के, तिनहूं पेहेचानी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -20
- नौतन रंग पसु पंखी, बानी नई रसाल । नौतन वेन बजावहीं, नए सुख देवें लाल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -115
- नौतनपुरी मां ए निध, सारी सनंधे गोताणी । निरखी गोती ने नेहकरी, साथमां संभलाणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -13

SPJIN

- नौतनपुरीमा धणी मलवाने, जीव न मके काया । धणीनो विछोडो घेर खिण नहीं, विछोडो मेलो मांहें माया || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -13
- नौमी आगे अरफा ईद कही, ले दसमी आगे सब लीला भई । मजले सब अग्यारहीं के मध, सो कहे कुरान विवेक कई विध || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -24, चौ -1
- नौमी भोम बैठाए के, जो सुख नजरों दूर । ए कौन देवे सुख हक बिना, बुलाए के अपने हजूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -19, चौ -16
- न्यामत ल्याए सब रात में, लैलत-कदर के माहें । बुलाए ल्याओ रूहें फजर को, वतन कायम है जांहें || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -6
- न्यारा निमख न होवहीं, करने पड़े न याद । आसिक को मासूक का, कोई इन बिध लाग्या स्वाद || ग्रं - किरन्तन, प्र -91, चौ -16
- न्यारा रहे सबन थे, ए जो बीच जिमी आसमान । संग करे खुद दरदी का, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -21
- न्यारी गति नैनन की, अति अनियारे लोचन । उज्जल माहें लालक लिए, अतंत तेज तारन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -65
- न्यारे तो हम होएँ नहीं, निमख ना छोड़ें कदम । ए जेती अरवाहें अर्स की, कदम तले सब हम || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -22
- न्हवाए चरचे अरगजे, प्रीते जिमा पाक । सनेह करके सेवहीं, पर नजर बांधी खाक || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -11
- न्हास्यम इलम धणीय जे, सभ हुकमें केयो ख्याल । विओ कोए न कितई, रे हुकम नूरजमाल || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -28

प

- पकवान सर्वे प्रीसी करी, साक मुक्यां छे घणां । कंदमूल भांत भांतनां, अलेखे अथाणां || ग्रं - रास, प्र -46, चौ -10
- पख पचवीस छे अति भला, पण ए छे आपणो धरम । साख्यात तणी सेवा कीजिए, ए रूदे राखजो मरम || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -81
- पख पचीस वरनवे जेह, भी सुख वल्लभः देवे एह । अंतरध्यान समे ज्यों भए, भी आए वचन पिया सोई कहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -8
- पख बयासिमां जो कह्या, वल्लभाचारज तहां पोहोंचिया । स्यामा वल्लभियों करी बड़ी दौर, ए भी आए रहे इन ठौर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -6
- पखडिम पिरन जी, हे जा डेखास्याई रांद । अस्सां मथें खिल्लण, केइए कुडन के कांध || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -19
- पगला पोताना जुओ नहीं, अने बीजाने देओ छो दोस । सास्त्र अर्थ समझ्या नथी, तां जातो नथी रिदे रोस || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -22

- पंच अध्याई सुकजीए कही, पण परीछित नव सक्यो ते ग्रही। प्रश्न चुक्यो थयो अजाण, रास लीला न वरणवी प्रमाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -12
- पंच अध्यायी ताको जो सार, किसोर लीला जोगमाया विस्तार । बृज लीला को जो ब्रह्मांड, रात दिन जित होत अखंड || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -9
- पचवीस पख छे आपणा, तेमा कीजे रंग विलास । प्रगट कह्या छे पाधरा, तमे ग्रहजो सहु साथ || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -79
- पचवीस पख वरणवनी जेह, वल्लभ वली सुख आपे तेह । अंतरध्यान समे जेम थया, वली वालो ततखिण आवया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -9, चौ -8
- पंचामृत पाक बनाए, भोजन भयो रूचाए । अंग संग ले निकस्यो, कौन हाल भयो ताए || ग्रं - किरन्तन, प्र -106, चौ -9
- पचास हजार बाग किए खैरात, बरकत नुसखे भई सिफात । हवेलियां जो थी वैरान, सो किया खड़ियां हुए मेहरबान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -21
- पचास हांस तरफ बाग के, हर हांसें तीस मन्दिर । मेहेराव बीच झरोखा, तीन तीन सबों अन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -69
- पचीस थंभ ऊपर कहे, तले सोले थंभ गिरदवाए । सो पोहोंचे दूजी भोम में, भोम बीच की अति सोभाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -56
- पछे एक वालो एक सुंदरी, एम रमू रंगें रस भरी । लिए आलिंघण फरी फरी, दाझ अंगतणी गई गली || ग्रं - रास, प्र -34, चौ -5
- पछे साथ उठीने बेठा थया, एह वचन आगलथी कया । इंद्रावती कहे उठसे अछर, लई आनंद पोताने घर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -27
- पट अर्स अजीम जो, मुराई की उघाडे । जे मूं कोठिए लिकंदी, त आंऊं को न अचां लिके || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -18
- पट आड़ा बका वतन के, एही हुई फरामोस । जो याद करो हक वतन, इस्क न आवे बिना होस || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -74
- पट एही अपने दिल को, हमें सोई दिल अर्स कह्या । हक पट अर्स सब दिल में, अब अंतर कहां रह्या || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -63
- पट कर बड़ा देखाइया, चौदे तबक बनाए । तुम पर हाँसी करके, देसी पट उड़ाए || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -37
- पट पेहेर खाए चीकनारे, हेम जवेर सिनगार । हक लज्जत आई मोमिनों, तिन दुनी करी मुरदार || ग्रं - किरन्तन, प्र -110, चौ -8
- पट बका किने न खोलिया, कई अवतार हुए तीर्थंकर । हक इलम बिना क्योंए ना खुले, कई लाखों हुए पैगंमर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -32
- पटली सामी छ फूली सोभे, मध्य सेंदुरनी रेखे । बेहू गमा मोती सर सोभे, इंद्रावती खांत करी पेखे || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -60

- पडछंदा बाजे भोम विराजे, पडताले धमकार । सघली संगे उमंग अंगे, अजब रमे आधार || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -21
- पंडित पढ़े सब इत थके, उत चले ना सब्द बुध मन । निरंजन के पार के पार, पोहोंचाऊं याही सास्त्रन || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -12
- पड्या पड़छंदा पाताल आकासें, धरती धम धमकार । खल भल हुआ लोक चौदे, करत कालिंगा को संघार || ग्रं - किरन्तन, प्र -54, चौ -8
- पढ़ पढ़ थाके पंडित, करी न निरने किन । त्रिगुन त्रिलोकी होए के, खेले तीनों काल मगन || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -7
- पढ़ पढ़ वेद कतेब को, नाम धरे आलम । एती खबर किन ना परी, कहां साहेब कौन हम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -3
- पढ़ना द्वा वजीफा जित, सब चाह्या हाजियों का हुआ इत । पाक होवे सबों का दम, तब जाहेर हुई ईद खसम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -18, चौ -6
- पढ़सी को फुरमान को, लेसी को हकीकत । कलाम अल्ला को खोलसी, को लेसी हक मारफत || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -66
- पढ़े आलम आरिफ कहावें, पर एक हरफ को अर्थ न पावें । मुखथें कहें किताबें चार, पर हिरदे अंधे न करें विचार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -12
- पढ़े करें माएना आजूज माजूज, जो नाती नूह नबी के । सो क्यों खाए नापाक दुनियां, पाक पैगंम-जादे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -15
- पढ़े कलाम अल्लाह को, ले माएने अपनी अकल । जो कही मुसाफें मुरदार, ताए छोड़े न दुनी एक पल || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -20
- पढ़े कहें दिन कयामत, हमें रखे अपने हाथ । या तो हक आपै खोलहीं, या हादी खोलें जो हक साथ || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -19
- पढ़ें किताबें अपनी, पैगंमर तीन । सो आए बीच आखिर, ए जो हकीकी दीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -7
- पढ़े गुनें विकार न छूटे, आग न अंगथें जाए । आप वतन चीन्हे बिना, तो लों जल बिन गोते खाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -28, चौ -13
- पढ़े चारों विद्या चौदे, हए वरन विस्तार । आप चंगी सब दुनियां, खेलत हैं नर नार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -11
- पढ़े चारों विद्या चौदे, हुए वरन विस्तार । आप चंगी सब दुनियां, खेलत हैं नर नार || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -13
- पढ़े तब पावें इस्क को, जब खुलें माएने मगज । इस्क बिना करें बंदगी, कहें हम टालत हैं करज || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -8
- पढ़े तो हम हैं नहीं, ए जो दुनियां की चतुराए । कहूं माएने हकीकत मारफत, जो ईसा रसूल फुरमाए || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -1

- पढ़े दुनी मुसाफ आखिरी, खोले माएना बीच मुस्लिम । कहे पाकों को कुफर, होए ऐसा जाहेरी माएन जुलम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -16
- पढ़े मुल्लाँ आगू हुए, सो तो खाए गुमान । लोकों को बतावहीं, कहें हम पढ़े कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -4
- पढ़े वेद कतेब को, जोग कसब ना पोहोचत । दिल अर्स किया जिन कदमों, ए न आवें बिना हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -40
- पढ़े सो भी पेट कारने, और पालने कबीले । दुनियां को देखावहीं, आणू चल के ए || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -37
- पढ़ों पढ़ाई दुनियां, अगुओं उलटी गत । ए होसी सब जरदरूं, अबहीं इन आखिरत || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -6
- पढ़ोगे सब साहेदियां, जो मैं लिखोंगा इसारत । सो दिल में ल्याओगे, पर छूटेगी नहीं गफलत || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -23
- पढ़्या नाहीं फारसी, ना कछू हरफ आरब । सुन्या न कान कुरान को, और खोलत माएने सब || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -5
- पण असल पाहिजी गिरोमें, जा रूहअल्ला चई । सकुमार बाई गडवी, अजां सा पण न्हार सई || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -40
- पण केम कहूं सब्द न पोहोंचे तमने, मारी जिभ्या थई माया अंगने । वाला तमे थया छो सब्दातीत, मारी माया देह ऊभी सरीख || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -11
- पण घणो खप करूं साथ पाठला माट, साथ जोई वचन आवसे आणी बाट । साथ जो जो तमे दया धणीतणी, ए दयानी वातों छे अति घणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -23
- पण जिहां लगे दया तमारी नव थाय, तिहां लगे सर्व तणाणू" जाय । ते पारखू में जोयुं निरधार, साथ सकलना वचन विचार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -5
- पण तोहे न वली अमने सार, त्यारे वली बीजो देह धस्यो तत्काल । ततखिण आवी अम भेला थया, वली वचन सागरना पूर ल्यावया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -19
- पण देखाडीस हूं चेहेने करी, त्यारे तमे लेजो चित धरी । त्यारे ब्रहमा ने खीर सागर बे, लखमीजीने वचन कहे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -47
- पण धणी तणी कृपा अति घणी, वली वली दया करे साथ तणी । तो वचन तमने केहेवाय, नहीं तो कीडी मुख कोहलू न समाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -12
- पण पार नथी रास रातनो, ए तो बेहद कही। ते मांहें लीला बेहदनी, पंच अध्याई थई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -54
- पण पेहेलू पत्र एक वेधीने, तो बीजा लगे जाय । एमां ब्रहमांड कई उपजे, वार एटली पण न केहेवाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -117

SPJIN

- पण बंध छूटा विना न चलाय, भाई ए छे करम नी काणी । मन माहें जाणे अमें सुख भोगवसुं, पण जाय बंधाणां जमपुरी ताणी || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -13
- पण मारो जीव केमे नव रहे, लखमीजी वली वली एम कहे । त्यारे वली बोल्या श्री भगवान, लखमीजी तूं निश्चे जाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -32
- पण सांचो तो जो समझे जीव, तो वाणी भले मखथी कही पीउ । ए वाणी नथी काई किवना जेम, मारा जीवने खीजवा कया में एम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -17
- पण साथ माटे कहूं फरी फरी, हवे पांचे नाम जो जो चित धरी । एक भगवानजी वैकुंठनो नाथ, महादेवजी पण एणे साथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -9
- पण सुख सहु सुपनना, नेठ निद्रा मांहें । ए सर्व जोगमाया तणां, घर द्रष्ट न थाए || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -99
- पण हित अची इलम अटक्यो, जे कडी न अटके कित । मूं न्हारे न्हारे न्हारियो, त अची अटक्यो हित || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -46
- पण हे गाल्यूं आईन रांदज्यू, ते मूंके सिकाइए । पांण इस्क डेखारे लाडमें, मूंके कुडाइए || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -25
- पतंग और पतंग को, जो सुध दीपक दे || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -22
- पंतग और पतंग को, जो सुध दीपक दे। तो होवे हांसी तिन पर, कहे नाहीं पतंग ए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -19
- पतंग कहे पतंग को, कहां रहया तूं सोए । मैं देख्या है दीपक, चल देखाऊं तोहे || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -20
- पतंग कहे पतंग को, कहां रहया तूं सोए । मैं देख्या है दीपक, चल देखाऊं तोहे || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -17
- पतली अंगुरियां उज्जल, सोभा क्यों कहूं मुंदरियों मुख । ए देखे रूह मोमिन, सोई जानें ए सुख || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -56
- पतली पांचों अंगुरियां, पांचों जुदी जुगत । जुदे जुदे रंग नंग मुंदरी, सोभा न पोहोंचे सिफत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -208
- पतलीने तमें पगला भरिया, लाग्यो स्वाद संसार । पुरुखपणे रमया माया मां, तो आड़ी आवी अंधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -14
- पति तो केमे नव मूकवो, तमे अति घणूं का रे अपार । तमे साख पुरावी वेद नी, त्यारे केम मूकू आधार || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -34
- पति तो वालैयो अमतणो, अमे ओलखियो निरधार । वेण सांभलतां तमतणी, अमने खिण नव लागी वार || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -32
- पतित ऐसी पुकार न कीजे, पर मोको इन चोटें अगिन लगाई । बोहोत बरस मैं राखी अंदर, अब तो ढाँपी न जाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -15, चौ -12

- पतित मेरे आगे कौन कहावे, मैं कोई न देख्या रे पतीत । ए सब कोई साध चलत हैं सीधे, जो देखिए अपनी रीत || ग्रं - किरन्तन, प्र -15, चौ -2
- पतित सिरोमन यों कहे । जो मैं किए हैं बज्रलेप, मेरे साहेब सों द्वेष || ग्रं - किरन्तन, प्र -15, चौ -1
- पतिव्रता नारी ते पति ने पूजे, सेवे ते अनेक पेरे। पिउ पर वचन सुणे जो वांकू, तो देह त्याग तिहां करे || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -19
- पतिव्रता पणे सेविए, न थाय वेस्या जेम । एक मेलीने अनेक कीजे, तेणी थाय धणीवट केम || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -44
- पतिव्रता पल अंग थाए नहीं अलगियो, न कांई जावंतियो विना जार । पात्रियो पिउ थकी अमें जे अभागणियों, रहियो अंग दाग लगावन हार || ग्रं - किरन्तन, प्र -35, चौ -3
- पत्थर पानी आग पूजत, किन जानी ना हक तरफ । कया दरिया हैवान का, समझ ना करे एक हरफ || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -41
- पंथ पैंडे कई चलहीं, कई भेख दरसन । ता बीच अंधेरी ग्यान की, पावे ना कोई निकसन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -29
- पंथ पैंडे दीन मजहब, कर कर गए रब्द । पर हुआ न कोई काम का, बिना एक महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -6
- पंथ पैंडे सब चलहीं, कई दीन दरसन । ना सुध आप ना पार की, ए सुध परी न किन || ग्रं - किरन्तन, प्र -21, चौ -8
- पंथ सहुना एहज पैया, जे वलग्या माहें वैराट । ए विध कही सहु विगते, ए रच्यो माया ठाट || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -18
- पंथ सारों की एह मजल, अनेक विध वैराट । ए जो विगत खेल की, सब रच्यो छल को ठाट || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -17
- पंथ सारों की एह मजल, अनेक विध वैराट । ए जो विगत खेल की, सब रच्यो छल को ठाट || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -19
- पंथ होवे कोट कलप, प्रेम पोहोचावे मिने पलक । जब आतम प्रेमसों लागी, दृष्ट अंतर तबहीं जागी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -53
- पदारथ तारतम तणा, केम प्रगट कीजे । आफणिए ए देखसे, जीव जगवी लीजे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -122
- पंद्रा दिन खेलें बन, पंद्रा दिन सुख भवन । अब कहूं भवन को सुख, जो श्री धनीजी कयो आप मुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -140
- पधराव्या पोताने घेर, जुगते सेवा कीधी अनेक पेर । त्यारे श्रीमुख वचन कहयां प्राणनाथ, जे खोली काढवो छे आपणो साथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -35
- पन ने धारी रे पन इत ले चढ़या, कोई उपज्यो असुर घर अंस । जुध ने करनें उठया धरमसों, सब देखें खड़े राज बंस || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -5

SRJN

- पन बांध बरस चौदेलो, सास्त्र को अर्थ कौन लेसी । सो ए प्रकास इन पिउ बिना, एक साइत में समझाए कौन देसी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -44
- पनर करीने करूं गुण पार, दस पार करूं सोल गुणने आधार । पदम करवाने करूं सतर, हूं अरधांग मारो धणी ए घर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -19
- पर अंधे यों न समझहीं, जो इनका नाम रसूल । सो तो पार से आया हक पे, याको जुलमत ना मूल || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -42
- पर आम खलक ना समझे, जाकी पैदास कही जुलमत । इलम लदुन्नी से जानत, रूह मोमिन बीच वाहेदत || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -17
- पर इत सुख पायो जो मेरी आतम, सो तो कबहूं न काहू जनम । इत बैठे धनी साथ मिल, हाँसी करने को देखाया खेल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -180
- पर इस्क न दिया आवने, वास्ते रब्द के । हक आए इस्क क्यों न आवहीं, किया हुकमें हाँसी को ए || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -22
- पर ए जो अर्स अजीम, रहें हमेसा मोमिन । ए रूहें नजीकी हक के, इनों अर्स बीच तन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -15
- पर ए देख्या अचरज, जो विरहा सब्द सुनत । क्यों तन रह्या जीव बिना, हाए हाए ए सुनत न अरवा उड़त || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -12
- पर ए बानी सो समझे, जो पोहोंच्या होए इन मजल । और क्यों समझें ए माएने, जो इन राह में जात हैं जल || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -21
- पर ए सुख सबे सुपन में, नेठ नींद जो मांहें । ए सुख जोग माया मिने, दृष्ट ना घर तांहें || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -119
- पर ए सुध दुनी में है नहीं, तो क्या जाने कित अर्स । क्यों हक क्यों हादी रूहें, क्यों दिल मोमिन अरस-परस || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -105
- पर ऐसा देखोगे तिलसम, जो सबे हुई फरामोस । इलम देऊं मेरा बेसक, तो भी ना आओ माहें होस || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -51
- पर कछुक निमूने बिना, नजरों न आवे तफावत । तो चुप से तो कछू कह्या भला, रूह कछू पावे लज्जत || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -10
- पर कबूं दीदार ना निसबत का, ना काहूं को एह न्यामत । ए जुबां इन निसबत की, कहा करसी सिफत || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -26
- पर करूं साथ पीछले की बड़ी जतन, देख वानी आवसी इन बाट वतन । देखियो साथ दया धनी, ए कृपा की बातें हैं अति घनी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -23
- पर जब लग दया तुमारी न होए, तब लग काम न आवे कोए । ए परीछा में करी निरधार, देखे सबके सब्द विचार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -5
- पर जेता हिस्सा नींद का, रूह तेती फरामोस । जो मेहेर कर हुकम देखावहीं, तब देखे बिना जोस || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -9

- पर जो पसुअन के, सो अतंत सोभा लेत । कहा करें ए भूखन, पसु ऐसी सोभा देत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -18
- पर जो स्वाद हक उरफान में, सो केहे ना सके जुबां इन अंग । जो हक मेहेर कर देवहीं, तो प्याले पीजे हक हादी संग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -39
- पर दिल के जो अंग हैं, धनी अर्स तुमारा सोए । तुमें देखें कहे बातें सुने, लेवे तुमारी बानी की खुसबोए || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -31
- पर न आवे तोले एकने, मुख श्री कृष्ण कहत । प्रसिद्ध प्रगट पाधरी, किवता किव करंत || ग्रं - किरन्तन, प्र -127, चौ -1
- पर पसो पिरियनजी, पाणसे के के पर करे । इंद्रावती चोए अदियूं, अंई हांणे हलो नी घरे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -20
- पर पेहेले पात एक बेध के, तो दूजा बेधाए । यामें सुपन कई उपजें, बेर एती भी कही न जाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -30
- पर पोतेजी न्हार तूं निखर, वलहो न डिसे अजां छेह । अवगुण न डिसे पांहिंजा, पिरी मेहेर करी वरी एह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -14, चौ -3
- पर मनुआ दिए बिन हाथ न आवे, सत की बड़ी ठकुराई । और उपाय याको कोई नाहीं, जिन देवे आप बड़ाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -5, चौ -10
- पर मुझे प्यारी बरारब, जिन जिमी आए रसूल । मेहेर नजर महंमद की, पर काफर गए सब भूल || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -28
- पर मूरख जो हैं इमनके, और नहीं इनोंको आया आकीन || ग्रं - सनंध, प्र -34, चौ -7
- पर मैं डरों इमामों से, करसी गुमराह ऐसी उमत । करसी लड़ाई आप में, छूटे न लग कयामत || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -35
- पर सरीयत झण्डा नासूत में, पोहोंच्या न लग मलकूत । पकड़े पुल-सरात ने, छोड़ ना सके नासूत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -14
- पर सवाब तो तिन को होवहीं, छोटा बड़ा सब जिउ । एकै नजरों देखहीं, सब का खावंद पिउ || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -23
- पर सांचा तो जो होए गलतान, तो भले मुख निकसी ए बान । ए बानी मेरी नाहीं यों, और किव करत हैं ज्यों || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -20
- पर साथ ऊपर दया अति घनी, फेर फेर कृपा करत हैं धनी । तो वचन तुमको कहे जाए, ना तो चींटी मुख कुम्हड़ा न समाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -12
- पर साथ वास्ते दाह उपजी मन, यों जानें न कहया हम कारन । यों न कहूं तो समझे क्यों कोए, कई विध दया धनी की होए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -21
- पर हक अर्स लज्जत तो पाइए, बैठे मांग्या खेल में जे । सो हुकमें मांग्या दे हुकम, हकें करी वास्ते हाँसी के || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -75

- पर हकें बांधी पाग रुच के, नरम हाथों पेच फिराए । आसिक देखे बांधते, अतंत रूह सुख पाए । || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -49
- पर हिरदे आवनें रूहों के, मैं कई बिध करत बयान । ना तो क्यों कहूं रंग नंग धात की, ए तो खिलवत बका सुभान || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -19
- पर हुआ हाथ हुकम के, जो हुकम देवे याद । हुकमें पेहेचान होवहीं, हुकमें आवे स्वाद || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -11
- परआतम के अंतस्करन, जेती बीतत बात । तेती इन आतम के, करत अंग साख्यात || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -13
- परआतम के अन्तस्करन, पेहेले उपजत है जे || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -45
- परत नहीं पेहेचान पिंड की, सुध न अपनों घर । मुखथें कहे मोहे संसे मिट्या, मैं देखे साध केते या पर || ग्रं - किरन्तन, प्र -4, चौ -6
- परदा आड़ा मासूक, कबूं आसिक करे ना कोए । आसिक मासूक तब कहिए, एक अंग जब होए || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -57
- परदा इन सिरदार पर, ए जो कही जुलमत । पीछा हटाया हुकमें, ताए कुफर सेवें कर सत || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -15
- परदा लिख्या मुंह पर, वास्ते आवने हिंदुओं माहें || ग्रं - खुलासा, प्र -14, चौ -17
- परदा लिख्या वास्ते आवने हिंदुओं मांहे, ए पढ़े इसारत समझत नाहें । जो देखत हैं जेर जबर, सो हकीकत पावें क्यों कर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -23
- परदेसें साथ पसस्यो हुतो, तित सबे पड़यो सोर । यों ठौर ठौर रंग फैलिया, हुआ महंमदी दौर || ग्रं - किरन्तन, प्र -92, चौ -10
- परपंचे सह पंथ चाले, कहे लेसू चरण निवास । ए रामतना जे जीव पोते, ते केम पामे साख्यात || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -19
- परमहंस जाहेर भए, जाहेर धाम धनी अखण्ड । कुली कालिंगा मारिया, मुक्त दई ब्रह्मांड || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -46
- परमहंस बिन कौन कहे, जिन तजे हैं तीन सरीर । कहे महामत महादिसा धनी की, कोई कर यो जुदे खीर नीर || ग्रं - किरन्तन, प्र -29, चौ -15
- परवती परवाली ने पाडर, पान वेल अति सार । आल अकोल ने बेर उपलेटा, दुधेला ने देवदार || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -16
- परसेवे वस्तर साथना, नाहवा समे उतास्या जेह । श्री राज बेठा तेह ऊपर, तमे प्रेम ते जो जो एह || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -22
- परहेज करे बदफैल से, बिने पांचों से पाक होए । सो आग न जले दोजख की, पावे भिस्त तीसरी सोए || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -29
- परिकरमा कर आवें, पल में फिर आवें, आए कदमों लगें सब संग । कहे महामती, सब रंग रती, क्यों कहूं प्रेम तरंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -24

- परी परी मूंके चेयाऊं, मुंके सल्लेथा से वेण । अखडियूं पाणी भस्याऊं, आऊं तोहे न खणांमथा नेण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -7, चौ -5
- परीछिते एम पूठ्यो प्रश्न, सुकजी मूने कहो वचन । चौद भवन मांहें मोटो जेह, मुझने उतर आपो तेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -2
- परीछितें यों पूछ्यो प्रस्न, सुकजी मोको कहो वचन । चौदे भवन में बड़ा जोए, मोको उत्तर दीजे सोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -2
- परे सारे बीच चौरे, बैठे गोप बढ़े भराए । चारों पोहोर गोठ घूघरी, खेलते दिन जाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -33
- पल पल आवे पसरती, न पाइए दया को पार । दूजा तो सब मैं मापिया, पर होए न दया को निखार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -5
- पल पल आवे पसरती, न लाभे दयानो पार । बीजूं ते सहु में मापियूं, आगल रही आवार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -5
- पल पल में पट उड़त है, बढ़त बढ़त अनूकरम । इस्क आए जोस धनी के, उड़ गयो अन्तर भरम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -11
- पवन जोत सब्दा उठे, नाड़ी चक्र कमल । इत कैयों कई बिध खोजिया, यामें ब्रह्म नहीं नेहेचल || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -15
- पवन दूध आहारी, कई ले बैठत हैं नेम । कैद ना करे कछुए, ए सब छल के चेन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -25
- पवन पानी आकास जिमी, ज्यों अगिन जोत बुझाए । अवसर ऐसो जान के, तूं प्राणपति लौ लाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -48, चौ -5
- पसरी दया प्रगटे दयाल, काटे दुनी के करम जाल । चेतन व्यापी भए निहाल, भई नई रे नवों खंडों आरती || ग्रं - किरन्तन, प्र -56, चौ -6
- पसां बंझाईदयूं हिनके, मं अचे बाझाण । ई दर ओडी कांध अडूं, थेयम बधंदी ताण || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -53
- पसु गाए लगावें रट, गिरदवाए योहरी निकट । बड़ा अचरज मोहे एह, ए सुन क्यों रहे झूठी देह || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -12
- पसु पंखी अति सुन्दर, बोलत अमृत रसान । सुन्दरता केस परन की, क्यों कर करों बयान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -10
- पसु पंखी अनेक नाम, तेना विचित्र चित्राम । निरखतां न भाजे हाम, जुजवी जुगत री || ग्रं - रास, प्र -22, चौ -5
- पसु पंखी अनेक हैं नाम, सोभे केसों पर चित्राम । अति सुन्दर जोत अपार, याके खेल बोल मनुहार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -55
- पसु पंखी इन बन में, जो जिमी बन सोभित । और सोभा पर नकस की, क्यों कर करूं सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -33

SPJIN

- पसु पंखी का मुजरा लेवें, सुख नजरों सबों को देवें । पीछे बैठ करें सिनगार, सखियां करावें मनुहार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -81
- पसु पंखी चारों भोम के, सुख देत दिल चाहे । सो सुख कब लेसी मोमिन, क्यों इन बिन रहयो जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -27
- पसु पंखी जवेरन के, अति सोभा अर्स में लेत । सब सेवा करें रूहन की, इत ए काम कर देत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -59
- पसु पंखी जो बन में, सब आवें करने दीदार । राज स्यामाजी रूहें, जब कबूं होवें अस्वार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -10
- पसु पंखी बन जिमिएं, तले ऊपर हैं जित । क्या जाने मूढ़ मुसाफ की, रमूजें इसारत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -29
- पसु पंखी बोलें इन समें, कई विध बन गूंजत । रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -24
- पसु पंखी माहें सुंदर सोभित, करत कलोल मुख मीठी बान । अनेक बिध के खेल जो खेलत, सो केते कहूं मुख इन जुबान || ग्रं - किरन्तन, प्र -89, चौ -4
- पसु पंखी या दरखत, रूह जिनस हैं सब । हक अर्स वाहेदत में, दूजा मिले ना कछुए कब || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -41
- पसु पंखी वासे मन उलासे, आनंदियो अपार । वन कुलांभे वेलो आवे, फूलडा करे बेहेकार || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -19
- पसु पंखी सब बन में, घेरों घेर फिरत । कई तले कई बन पर, कई विध खेल करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -17
- पसु पंखी सब में पूरन, दिल चाह्या पूरन बन । इन जिमी पसु पंखियों, जिकर करे रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -85
- पसु पंखी हाथ पांउं नैन के, कई विध केस परन । कई खेल पुतलियन के, कई वस्तर कई भूखन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -55
- पसु पंखी हिन अर्सजा, ते की चुआं चित्राम । मिठी मोहें मीठी जिकर, ए डिए रूहें आराम || ग्रं - सिंधी, प्र -2, चौ -11
- पसु पंखी, जुए जखी, मिले न अंखी, सुख देखी रामत री || ग्रं - रास, प्र -30, चौ -10
- पसु सबे खुसबोए सों, खुसबोए सबे जानवर । तन बंध बंध खुसबोए सों, बोए बाल पर पर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -51
- पसु सुन्दर अति सोहनें, मीठी बान बोलत । इनों सिफत जुबां क्यों कहे, जो खावंद को रिझावत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -34
- पहली जोगमाया थई रासमां, तेहेनो ते अति अजवास । पण आ जे थासे जागणी, तेहेनों कयो न जाय प्रकास || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -14

SPJIN

- पहाड़ जवेर केते कहूं, तले बीच ऊपर । कई जवेर कई रंग के, क्यों कहूं सोभा सुन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -79
- पहाड़ तले कई कुण्ड हैं, कई बिध पानी फिरत । कई जिनसें केती कहूं, नेहेरें साम सामी चलत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -20
- पहाड़ थंभ जो पहाड़ थुनी, पहाड़े मोहोल मंडान । कई मोहोल मोहोलों मिले, कहूं जिमी न देखिए आसमान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -12
- पहाड़ पुखराजी मोहोलमें, सुख चांदनी लेवत । सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -54
- पहाड़ मानिक मोहोल कई, यों पहाड़ मोहोल अनेक । सब अपार अलेखे इन जिमी, कहां लो कहूं विवेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -24, चौ -1
- पहाड़ रोए टूटे टुकड़े, हुए हैं भूक भूक । भवजल रोया सागर, सो गया सारा सूक || ग्रं - किरन्तन, प्र -75, चौ -9
- पाइए इन तखत के, उत्तम रंग कंचन । छे डांडे छे पाइयों पर, अति सुन्दर सिंघासन || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -27
- पाइए इनसे बुजरकी, जो असल कया एक । खास रूहें याकी जात हैं, ए रूहअल्ला जाने विवेक || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -18
- पाइए सुध पूरन से, पैंडा बतावें पार । सब्द जो सारे सूझहीं, सब गम पड़े संसार || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -19
- पाइयत झूठ के बदले, सत सुख अखंड । सो देख पीछे क्यों होवहीं, करते कुरबानी पिंड || ग्रं - किरन्तन, प्र -87, चौ -2
- पाई इसारतें रमूजें, बीच अल्ला कलाम । सक जरा ना रही, पाया कायम आराम || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -7
- पाई खलासी मोमिन, हुआ मकसूद सबन । ऐसे होवे जो कोई, सांची बंदगी में सोई || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -2
- पाई तीनों की बेसकी, कुफर बंदगी इस्क । ऐसा इलम इन दुनी में, हुई बका की बेसक || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -10
- पाई बड़ाई पैगंमरों, हाथ जबराईल सवन । सो जबराईल न पोहोचिया, मकान महंमद मोमिन || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -52
- पाई सेखी हुए बुजरक, नेक न सक करते हक । लायक खुदाए के करी सिफत, पैदा किया अर्स दोस्त || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -49
- पाँउ चले ना पर उड़े, बीच तो ऐसे पंथ । पर ए सब तोलों देखिए, जोलों ना दृष्टे कंथ || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -17
- पाउं झांझर घूघर बोलहीं, कांबी कड़लो बाजत । याही तरह अनवट बिछुआ, संग लिए गाजत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -54

- पांउं तली नरम उज्जल, लीकें एड़ी लांक लाल । ए रूह आसिक से क्यों छूटहीं, ए कदम नूर जमाल || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -76
- पाउं तले पड़ी रहे, याको इतहीं खान पान । एही दीदार दोस्ती कायम, जो होए अरवा अर्स सुभान || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -88
- पाँउ तो कोई ना भर सक्या, उमेद करी सबन । सो महंमद मेंहेंदी आए के, नीयत पोहोंचाई तिन || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -44
- पाउं देख देख भूखन, कई विध सोभा करत । सो नए नए रूप अनेक रंगों, खिन खिन में कई फिरत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -215
- पाँउ ना उठे हुकम बिना, मुख ना निकसे दम । दिल चितवन भी ना करे, फरिस्ता बिना हुकम || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -36
- पांउं निस दिन छोड़ें ना मोमिन, सुपने या सोवत । सो क्यों छोड़ें बेसक जागे, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -3
- पांउं पीड़ी बूंटन की, जो चकलाई सोभाए । जेते अंग आसिक के, तिन सब अंगों देत घाए || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -41
- पाउं भरे एक भांतसुं, रमती रंगे खांतसुं । जुओ सखी जोड कान्हसुं, कांई सुन्दरी सकला परी || ग्रं - रास, प्र -16, चौ -4
- पाउं भरे एक भांतसूं, स्यामाजी सोभे एणी चाल । जीव निरखीने नेत्र ठरे, इंद्रावती लिए रंग लाल || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -69
- पांउ लागके पीछियां फिरें, खेल चित चाया त्यों करें । कई रंग फूले फूल बास, लेत नए नए बनके विलास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -136
- पांउं लीक केहेते अरवा उड़े, क्यों बरनवी हक सूरत । बंध बंध छूट ना गए, हाए हाए कैसी अर्स हुज्जत || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -89
- पाए बिछुरे पिउ परदेस में, बीच हक न डारें हरकत । ए करी इस्क परीछा वास्ते, पर ना छूटे हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -77
- पाक जो होवें इन बिध, जब उड़े गुमान कुफर । पाक हलके हुए बोझ डालके, तब आए बीच नूर नजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -27
- पाक दिल पाक रूह, जा में जरा न सक । जा को ऊपर ना डिंभक, एक जरा न रखे बिना हक || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -42
- पाक न होइए इन पानिएं, चाहिए अर्स का जल । न्हाइए हक के जमाल में, तब होइए निरमल || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -44
- पाक न होए पानी खाक से, और इलाज न पाकी कोए। बिना पाक न हुकम छुए का, एक पाक हक से होए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -52
- पाक पानी से न होइए, ना कोई और उपाए । होए पाक मदत तौहीद की, हकें लिख भेज्या बनाए || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -65

- पाक फरिस्ते पाक सिजदे, बेसुमार किए हक पर । तिन बदले दुनी को दोजख, क्यों देवें कादर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -50
- पाक हुआ दिल जिनका, तिन वजूद जामा पाक सब । हिरस हवा सब इंद्रियां, तिन नहीं नापाकी कब || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -41
- पाक होना इन जिमिएं, और न कोई उपाए । लीजे राह रसूल इस्कें, तब देवें रसूल पोहोंचाए || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -45
- पाग ऊपर जो दुगद्गी, ए जो बनी सब पर । जोत हीरा पोहोंचे आकास लों, पीछे पाच रहे क्यों कर || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -58
- पाग कही सिर हक के, और कहया सिर मुकट । हाए हाए जीवरा क्यों रहया, खुलते हिरदे ए पट || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -72
- पाग बनाई कोई भांत की, बीच में कटाव फूल । बीच बेली बीच कांगरी, रूह देख देख होए सनकूल || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -54
- पाग बनी सिर सारंगी, इन जुबां कही न जाए। ए जुगत जोत क्यों कहूं, जो हमें बांधी दिल ल्याए || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -29
- पाग बांधी कोई तरह की, जो तरह हक दिल में ल्याए । बल बल जाऊं मैं तिन पर, जिन दिल पेच फिराए || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -57
- पाग सोभित सिर हक के, बनी हक दिल चाहेल । सो इन जुबां क्यों केहे सके, जाकी दृष्ट अंग इन खेल || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -40
- पांच अंगुरियां पतली, जुदी जुदी पांचों जिनस । अर्स अंग की क्यों कहूं, उज्जल लाल रंग रस || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -92
- पांच किताबें पेहेचान से, हुकमें हाथ दई । ए साल निन्यानवें लिख्या, गंज छिपे जाहेर भई || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -9, चौ -10
- पांच चीज जीव सब उड़ गए, मसी बका से ल्याए औखद । सो खिलाए जिवाए कोई न सक्या, बिना एक महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -29
- पाँच जिल्द इन मजलें पाई, तो लों बात करी छिपाई । जेता कछू केहेता पुकार, सुनने वाला न कोई सिरदार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -15, चौ -4
- पांच तत्व गुन तीनों ही, ए गोलक चौदे भवन । निरगुन सुन्य या निरंजन, ज्यों पैदा त्योंही पतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -107, चौ -8
- पांच तत्व चौदे लोक, पाउ पल में उपजाए । खेल ऐसे अनेक रचे, नार निरंजन राए || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -14
- पांच तत्व छठी आतमा, सास्त्र सबों ए मत । ए निरमान बांध के, ले ख्वाब किया सत || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -37
- पांच तत्व छठी आतमा, सास्त्र सबों ए मत । यों निरमान बांध के, ले सुपन किया सत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -35

- पांच तत्व छठी आतमां, सास्त्र सर्व मां ए मत । ए निरमाण बांधीने, लई सुपन की– सत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -34
- पांच तत्व तारा ससि सूर फिरें, फिरें त्रिगुन निरगुन । पुरुख प्रकृति यामें फिरें, निराकार निरंजन सुन || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -6
- पांच तत्व पिंड में हुए, सोई तत्व पांच बाहेर । पांचो आए प्रले मिने, सब हो गयो निराकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -20
- पांच तत्व मिल मोहोल रच्यो है, सो अंत्रीख क्यों अटकानो । याके आस पास अटकाव नहीं, तुम जाग के संसे भानो || ग्रं - किरन्तन, प्र -1, चौ -3
- पांच तत्व मोह अहंकार, चौदे लोक त्रैगुन । ए सुन्य द्वैत जो ले खड़ी, निराकार निरंजन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -2, चौ -7
- पांच नंग की धुंधरी, दिल रूचती बोलत । दिल चाहे रंग देखावत, दिल चाही सोभित || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -124
- पांच नंग मांहें कलंगी, तामें तीन नंग ऊपर । एक मध्य एक लगता, पांच रंग जोत बराबर || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -48
- पांच नेहेरें जबराईल पर, आइयां भिस्त से उतर । पांचों कही जुदे जुदे ठौर, बिना इमाम न पावे और || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -68
- पांच पचीस जो उलटे, होए बैठे दुस्मन रे। सो नेहेचल घर में बैठाए के, कौन कर देवे सीधे सजन रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -56
- पांच पचीस तेहने, बीजो कोण ओलखावसे । वचन धणीना पखे, ए सवलो केम थासे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -53
- पांच पांच अंगुरी जुदी जुदी, अति कोमल छबि अंगुरी । दोऊ अंगूठों आरसी, और आठों रंग आठ मुन्दरी || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -105
- पांच पांच हांसों बगीचा, भए पचास हांसों बाग दस । ए सोभा इन जुगते, याको क्यों कहूं रूप रंग रस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -54
- पाच पाने कंचन के, नीलवी और हीरे । लसनिएं और गोमादिक, रंग पीत पोखरे || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -106
- पाच पाने पुखराज, जरी मांहें जड़ित । चंपकली का हार जो, उर ऊपर लटकत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -81
- पाच पाने मोती नीलवी, हीरे पोखरे मानिक नंग । बेल कटाव कई नकस, कहूं गरभित केते रंग || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -88
- पाच पाने हीरे पोखरे, मंदरी अंगुरियों सात । नीलवी मोती लसनियां, साज सोभित हेम धात || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -68
- पांच फरिस्ते नूर से, खड़े मिने हुकम । पाव पल में पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -2

- पाँच फूल कलंगी पर, उपरा ऊपर लटकत । कोई ऐसी कुदरत नूर की, लेहेरी आकास में झलकत || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -115
- पांच बखत सल्ली करे, दिल दरदा आन सुभान । सुने ना कान कुफार की, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -12
- पांच बिने कही तीनों की, जाहेर किए बयान । निसां होए तालिब की, देखो अर्स दिल पेहेचान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -69
- पांच बिने कही मुस्लिम की, जिन लई सरीयत । कलमा निमाज रोजा कया, और जगात हज जारत || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -27
- पांच भोम छठी चांदनी, ए खूबी अति सोभित । ए हद इन मोहोलन की, जुबां क्या करसी सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -16, चौ -12
- पांच मलीने काया परठी, ते माहें जीव समाणो । थावर जंगम सकल व्यापक, एणी पेरे पथराणो || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -17
- पांच रंग जरी फुन्दन, सोभा लेत अतंत । पांच रंग जवेर झलके, फुन्दन सोहे लटकत || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -106
- पांच रंग नंग हर कड़ी, कई बेल फूल पात । कई कटाव कई बूटियां, इन जुबां गिने न जात || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -55
- पांच रंगना पांचे फुमक, सोहे मूल वेणनें बंध । गोफणडे फुमक जे दीसे, तेहेनो स्याम कसवी रंग || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -63
- पांच लरी चीड़ तिन पर, कंठ लग आई सोए । रंग नंग धात अर्स के, इन जुबां सिफत क्यों होए || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -83
- पांच हजार ताए बरस भए, आठ सौ सैंतालीस ऊपर कहे । त्रेसठ बरस उमर के लिए, छे हजार नब्बे कम किए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -43
- पांच हार अति सुन्दर, हीरे मानिक मोती लसन । नीलवी हार आसमान लों, जंग पांचों करें रोसन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -85
- पाच हीरे मोती मानिक, बेनारे चौक टीका सोभित । सेंथें लाल तले मोती सरे, नूर रोसन तेज अतंत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -56
- पांचमा सागर पूरन, गेहेरा गुझ गंभीर । प्याले इस्क दरियाव के, पीवें अर्स रूहें फकीर || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -1
- पांचमी भोम बन चांदनी, अति खूबी लेत इत ए । चल जाइए चौथी भोम अर्स, मोहोल देखो बैठ झरोखे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -34
- पांचमें सिपारे में एह बयान, न मानो सो जाए देखो कुरान । और हिंदवी किताबों में यों कही, बुध कलंकी आवेगा सही || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -25
- पांचे ते उतपन मोह नीं, मोह तो अगम अपार । नेत नेत कही निगम वलिया, आगल सुध न पडी निराकार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -33

- पांचे ते जोइए ज्यारे जुजवा, न लाभे केहेनो पार । भेला ते करी बली जोइए, तो रची ऊभो संसार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -15
- पांचे ते थई आवे दोडतां, देखाडवा आकार । ततखिण ते दीसे नहीं, परपंच ए निरधार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -26
- पांचे ते थई आवे पाधरा, जाणूं थासे ते प्रलेकाल । बल देखाडी आपणूं, थई जाय पंपाल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -25
- पांचे ते फरे फेर जुजवा, थाय नहीं पग थोभा । ए अजाडी कोई भांतनी, ते नहीं जोवा जोग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -17
- पांचे नाम कहूं प्रगट, दऊं सिखामण जाणी घरवट । नहीं तो प्रबोध स्या ने कहूं, श्री वालाजीना चरणज ग्रहूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -8
- पांचों ऊपर हार हेम का, मुख मोती सिरे नीलवी । ए हार अति बिराजत, जड़तर चंपकली || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -80
- पांचो बुध ले वले पीछे, तामें बुध विसेक विचार । अछर आंखां खोलसी, होसी हरख अपार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -100
- पांचों हारों के ऊपर, दोरा देखत जड़ाव । कई बेल फूल पात नकस, कयो न जाए कटाव || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -89
- पाछल आपण केम रहूं, जो होय काई वालपण । केम न खीजे वालैयो, ज्यारे सेवा भूल्यां आपण || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -15
- पाछला साथ छे ते आवसे केम, ते जोसे प्रकास तणा वचन । चरणे छे ते तो आव्या सही, पण हवे आवसे वचन प्रकास ना ग्रही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -16
- पाछला साथमां रामत, दिन अग्यार कीधी । अक्रूर तेडी सिधावियो, जई मथुरा लीधी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -39
- पांण केयां को पधरो, उपटे बका दर । मूकियां रूहरे अर्स जी, डेई संडेहोरे कुंजी कागर || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -6
- पांण चऊं कूडी दुनियां, ते मैं हेडी केई न के। उलटयूं बेअकल्यूं, थेयूं पांण सचीय से || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -22
- पांण चाइए नालो हक, बेओ तो नाम रेहेमान ।आंऊं मंगां हक पडूत्तर, मूंके डे मेहेरबान || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -67
- पांण जेड्यूं डिंने दातड्यूं, से डिठ्यूं मूं नजर । अजां मंगाइए मूं हथां, v कांध एहडो कादर || ग्रं - सिंधी, प्र -13, चौ -4
- पांण तां सत्यं अर्स में, तरे धणी कदम । जे रमे रमाडे रांदमें, ब्यो कोए आय रे हुकम || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -6
- पांण पांहिंजो पस तूं, अंख उघाडे न्हार । खीर पाणी जी परख पधरी, हिन तारतम महें विचार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -14, चौ -5

SRJN

- पांण फिरी जा न्हारियां, त गाल थेई हथ धणी । हित बे केहजो न हल्ले, जे करे दानाई घणी || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -27
- पांण बखत हल्लण जे, याद केयांऊं मूंके । चेयाऊं ई जेडिन के, जे कोठे अचो हिनके || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -14
- पाणके हिन पिरी धारा, वेओ चोय ई केर । साथ संभारे न्हास्यो दिलमें, जिन चुको हिन बेर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -14
- पाणजे साथ के परमें चोयज, जे तो उकले वेण । साथ तां की न सांगाय सुहागी, तोहे पाहिजा सेण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -16, चौ -6
- पात ना रेहेवे बन में, हकमें फल फूल बास । हुकमें उजाला अंधेर, हुकमें अंधेर उजास || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -26
- पात पात को देख के, हँसत बेलि संग बेलि । सैंन करें पंखी पंखी सों, जानों दौड़ करसी अब केलि || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -22
- पातसाह अबलीस दिल पर, सब पर हुआ हुकम । इन दोऊ की अकल सों, कहें खोले बातून हम || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -8
- पातसाही एक खावंद की, बीच साहेबियां दोए। ए वाहेदत की हकीकत, बिना मारफत न जाने कोए || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -56
- पातसाही एक हक बिना, और नहीं कोई कित || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -51
- पातसाही पसु पंखियन की, करत बिना हिसाब । अखंड अलेखे अति बड़े, पिएं नूर हैयाती आब || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -28
- पातसाही पाहिजी, डिखारी भली पर । की चुआं वडाई हकजी, मूं धणी वडो कादर || ग्रं - सिंधी, प्र -12, चौ -19
- पातसाही मेरी बीच उमत, कबूल करने को बजाए ल्यावत । पीछे मेरे मौत के कहे हजरत, चाहिए खलीफा इस बखत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -13, चौ -5
- पातसाहों एही जानिया, मोती जवेर सिर ताज । इनका एही किबला, चाहें ज्यादा अपना राज || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -26
- पात्र बिना तुम पाइया, मुनीजी क्यों करो दुख । आज लगे बेहद का, किन लिया है सुख || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -71
- पात्र बिना रस क्यों रहे, आवत ढलकाना । पात्र हुते तिन पाइया, भली भांत पेहेचाना || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -87
- पात्र विना तमे पामियां, मनीजी कां करो दुख । आज लगे ए रस तणो, कोणे लीधो छे सुख || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -58
- पात्र विना रस केम रहे, आवतो ढोलाणो । पात्र हुता ते पामियां, रस इहां बंधाणो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -72

- पांन सोहे सेंथे पर, माहें बेल कांगरी कटाव । हारें खजूरें बूटियां, मानों के जुगत जड़ाव || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -48
- पानी ऐसा उड़ावें, जानो अम्बर बरसावें, खेल करें न बीच में भंग । क्योंए न थकें, ऐसे अंग अर्स के, आणू सोहें पुतलियां नंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -22
- पांपण पल ना लेवही, दसो दिस नैन फिराऊं। देह बिना दौड़ो अन्दर, पिया कित मिलसी कहां जाऊं || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -8
- पापण पल ना लेवही, दसों दिस नैन फिराए । देह बिना दौड़े अंदर, पिया कित मिलसी कहां जाए || ग्रं - सनंध, प्र -9, चौ -8
- पाया बीच नासूत के, हजरत ईसे दीदार । दई कुंजी बका की, देखे लैलत कदर तीन तकरार || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -12
- पार के पार पार जाए पोहोंच्या, जीवत अखण्ड सुख पाया । पतितन के सिर महामत मुकुट मनि, जिन ए जुध जग में लखाया || ग्रं - किरन्तन, प्र -15, चौ -13
- पार जमुना जो बन, इसी भांत दिल आन । दोरी बंध बन ले चल्या, डारी सब समान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -1
- पार जिमी ना पार सागर, नूर पाइए न काहू इंतहाए । नूर जिमी देखो नूर सागर, नूर अपार अर्स गिरदवाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -11
- पार द्वार सब खोल के, कर दई मूल पेहेचान । संसे मेरे कोई न रया, ऐसे धनी मेहेरबान || ग्रं - किरन्तन, प्र -99, चौ -9
- पार न आवे सागरों, और पार किनारों नाहें । पार ना मोहोलों किनारों, कई नेहेरें आवें जाएं || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -49
- पार न जामें सलूकी, ना कछू नरमाई पार । इन मुख गुन केते कहूं, खूबी तेज न सुगंध सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -32
- पार न जिमी अर्स को, पार ना पसु जानवर । पार नहीं बिरिख बाग को, पार ना पहाड़ सागर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -13
- पार न बुध बल को, पार ना खूबी खुसबोए । पार ना इस्क आराम को, नूर पार ना इत कोए || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -8
- पार नहीं आसमान को, जहांलो जानें तहांलो जाएं । खेल कर पीछे फिरें, देखें पर्वत आए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -74
- पार नहीं जिमीन को, और पार नहीं आसमान । पार नहीं जड़ चेतन, पार ना इस्क रेहेमान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -20
- पार नहीं थंभन को, नहीं दिवालों पार । ना कछू पार सीढ़ियन को, ना पार कमाड़ी द्वार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -52
- पार नहीं बीच थाल के, गिरदवाए ना चौड़ी तूल । मोहोल पहाड़ नेहेरें सरभर, मुख सिफत कहा कहे बोल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -24

- पार नहीं रास रात को, ए तो बेहद कही । तामें अखंड लीला रास की, पंच अध्याई भई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -67
- पार ना अर्स जिमी का, ना बागों का पार । पार ना पसु पंखियन को, ना कछू खेल सुमार || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -7
- पार ना अर्स जिमीय का, बैठियां कदम तले इत । ऐसा पट आड़ा किया, जानूं कहूं गईयां हैं कित || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -36
- पार ना कहूं अर्स का, सो कहया बीच दिल मोमिन । ए विचार कर देखिए बका, सो ल्याए बीच दिल इन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -4
- पार ना खूबी खुसबोए को, पार ना पसु पंखियन । मीठी बानी अति बोलत, अंग सोभित चित्रामन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -33
- पार ना पहाड़ों हिंडोलों, नहीं मोहोलों नेहेरों पार । पार ना बन नेहेरें जिमी का, क्यों पसु पंखी होए निरवार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -48
- पार पुरुख पिया एक है, दूसरा नाहीं कोए । और नार सब माया, यामें भी विध दोए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -2
- पार बुध पाए पीछे, याको होसी बड़ो मान । अछर नेक ना छोड़े न्यारी, ए उदयो नेहेचल भान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -35
- पार बुध पाम्या पछी, एहेनों मान मोटो थासे । अछर खिण नव मूके अलगी, मारी संगते एम सुधरसे || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -34
- पार वचन कहे कौन दूजा, सर्वग्यन को सब सूझे । ए संसे भानो आतम के, ज्यों परआतम बूझे || ग्रं - किरन्तन, प्र -29, चौ -14
- पार वतन के सब्द, अंग में जो निकसे फूट । गलित गात सब भीगल, पिया सब्दें होए टूक टूक || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -13
- पार वतन जो सोहागनी, ताकी नेक कहूं पेहेचान । जो कदी भूली वतन, तो भी नजर तहां निदान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -1
- पार सुख थबू एणी पेरे, हजी रमो तमें छाया मांहें । तमने फरी फरी आ भोम आडी आवे, तमें कामस न टालो क्यांहें || ग्रं - किरन्तन, प्र -70, चौ -6
- पार सुध किन ना हती, बाहेर अंदर अंतर । सो सारे संसे गए, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -25
- पार सोभा ना पार सागर, ना पार टापू ना इमारत । पार टापू ना मोहोल किनारें मोहोल, सोभा आसमान नूर झलकत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -36
- पार हुई तहां से रूहें, और सब हुए गरक । फेर तीसरा ए पैदा हुआ, यों देत साहेदी हक || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -10
- पारब्रहम क्यों पाइए, ततखिन कीजे उपाए । कई ढूंढ़े मांहें बाहेर, बिना सतगुर न लखाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -16

- पारब्रहम जित रेहेत हैं, तित आवे नाहीं काल । उतपन सब होसी फना, ए तो पांचों ही पंपाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -22
- पारब्रहम तो पूरन एक है, ए तो अनेक परमेस्वर कहावें । अनेक पंथ सब्द सब जुदे जुदे, और सब कोई सास्त्र बोलावे || ग्रं - किरन्तन, प्र -6, चौ -7
- पारब्रहम पाम्यां तणां, अनेक उदम करे साध । चढी वैकुण्ठ आघा वहे, तिहां तो आडी छे अगम अगाध || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -13
- पारेवडा गुडिया तणां, जेम कंडियो भरियो । फूंक मारी जुए फरी, तरत खाली करियो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -127
- पाल ऊपर जो क्योहरियां, आगू हर क्योहरी चबूतर । तिन दोऊ तरफों सीढ़ियां, जित होत चढ़ उतर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -22, चौ -3
- पाल ऊपर जो योहरी, बीच कठेड़ा सबन । ए बैठक सोभा लेत है, कहा कहूं जुबां इन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -41
- पाल टापू हीरे एक की, तिनमें कई मोहोलात । अनेक रंग नंग देखत, असल हीरा एक जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -7
- पाल हीरे की उज्जल, ऊपर रोसन बन छाहें । तिनसे पाल सब रोसन, जिमी हरी पाच देखाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -33
- पालखी अमे करूं रे वाला, तमे बेसो तेहज मांहें । अमें उपाडीने चालिए, हवे नहीं मूकू खिण क्यांहें || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -7
- पाले अरकान मसले बावन, तुम वाही को जानो मोमिन । उजू निमाज रोजा फरज, ए तो इन पर धरया करज || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -7
- पाले मेकाईल इन को, रूह कबज करे अजराईल । ए खेल समेत फरिस्ते, आखिर उड़ावे असराफील || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -21
- पावने बुजरकी अर्स की, और बुजरकी खुदाए। पावने बुजरकी रूहों की, कायम जो इप्तदाए || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -77
- पावसियों आव्यो रे वरखा रूत माहें, भोमलडी ढांकी रे वादलिए छाहे । अंबरियो गरजे रे वीजलडी वा वाय, पिउजी विना मारे रे अमने घाए । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -9.6, चौ -1
- पांसे पांखड़ी बगलें, सोभित बंधो बंध । अंग रंग खूबी खुसालियां, पार ना सुख सनंध || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -13
- पासे बैठके खेल देखावें, हाँसी करने को आप भुलावें । भूलियां आप खसम वतन, खेल देखाया फिराए के मन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -162
- पाहिज्यूं सुरत्यूं हुकम, ही रांद डेखारे हुकम । रमे रांद मोहोरा हुकमें, डेखारे तरे कदम || ग्रं - सिंधी, प्र -12, चौ -4

- पिउ आए ना पेहेचाने, मोहे ना परी सुध । वचन कहे जो हेत के, भांत भांत कई बिध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -2
- पिउ की पेहेचान बिना, कछए न जाने कोए । जरा सक तो उपजे, जो कोई दूसरा होए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -15
- पिउ जगाई मुझे एकली, मैं जगाऊं बांधे जुथ । ए जिमी झूठी दुख की, सो कर देऊं सत सुख || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -44
- पिउ जी तमे पेहेली का प्रीतडी देखाडी, माहेला मंदिरियो कां दीधां रे उघाडी । पिउजी तमे अनेक रंग रमाडी, हवे तो लई आसमाने भोम पछाडी । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -9.6, चौ -6
- पिउ तुम आए माया देह धर, साथकी मत फिर गई क्यों कर । हांसी करसी पिउ साथ पर, क्या करसी माया जब मांगी घर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -46
- पिउ ने प्रकास्यो पेहेले, आयो सो अवसर । बृज ले रास में खेले, खेले निज घर || ग्रं - किरन्तन, प्र -83, चौ -3
- पिउ नेत्रों नेत्र मिलाइए, ज्यों उपजे आनन्द अति घन । तो प्रेम रसायन पीजिए, जो आतम थें उतपन || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -40
- पिउ पधारे बुलावन तुमको, तो होत है एती पुकार जी । यों करते जो नहीं मानो, तो दुख पाए चलसी निरधार जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -36
- पिउ पांच बेर हम वास्ते, सागर में डारया आप । सो नजरों न आवे प्रेम बिना, बिना मेहेर या मिलाप || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -9
- पिउ पुकार पुकार थके, तुम अजहुं जल बिन गोते खात जी । दिन उगते संझा होत है, पीछे आड़ी पड़ेगी रात जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -19
- पिउ पेहेचान टालो अंतर, परआतम अपनी देखो घर । इन घर की कहा कहूं बात, वचन विचार देखो साख्यात || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -13
- पिउ प्रेमें भीगा खेलही, पुरे सारो मांहें । खेले खिन जासों ताए दूजा, सूझे नहीं कछु क्यांहें || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -39
- पिउ बातें खेलें हंसे, गीत पिया के गाए । रोवें उरझे पिउ की, बातनसों मुरछाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -15
- पिउ मेरा मुझ वास्ते, आए ऐसे में आप । कई बिध जगाई मोहे, मैं कर ना सकी मिलाप || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -12
- पिउ हारया हारया कहे स्वरमां, हाँसी हरखे रे उपजावे । हूं जीती जीती कहे घोघरे, साथ सहुने हँसावे || ग्रं - रास, प्र -23, चौ -6
- पिउजी तमे सरदनी रूते रे सिधाव्या, हारे मारा अंगडामां विरह वन वाव्या । ए वन खिण खिण कूपलियो मूके, हां रे मारूं तेम तेम तनई सूके । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -9.1, चौ -1

- पिउजी पधारया तेडवा तमने, तो थाय छे आटलो पुकार जी । एम करतां जो नहीं मानो, तो वालो नहीं रहे निरधार जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -35
- पिउजी पधारया प्रभातमां, आपण आव्या छु अत्यारे । ते पण तेडीने वाले काढियां, नहीं तो निसरता नहीं क्यारे || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -14
- पिउजी पुकार करी करी थाक्या, तमे काय न जागो मारा साथ जी । ऊगीने दिन आथमवा आव्यो, अने पछेते पडसे आडी रात जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -18
- पिउना अधुर पिए, अमृत पूंटडे लिए। सामा वली पोते दिए, देवंता मुख नव विहे, अंग प्रेम वास || ग्रं - रास, प्र -38, चौ -9
- पिए तुमारी सुराही का, कई स्वाद फूल सराब । ऐसी लेऊ मस्ती मेहेबूब की, ज्यों उड़ जावे ख्वाब || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -32
- पिए हैं सराब प्रेम, छूटे सब बंधन नेम । उठ बैठे मांहें धाम, हँस पूछे कुसल खेम || ग्रं - किरन्तन, प्र -83, चौ -14
- पिंजर मथे पिंजरी, रिणे कारी रात । हिन पवने घणां पछाडिया, तूं तरसी करिए न तात || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -8
- पिया इस्क रस, ब्रह्मसृष्ट को अरस परस । काहूं और न इस्क खोज, औरों जाए न उठाया बोझ || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -16
- पिया ऐसी निपट में क्यों भई, कठिन कठोर अति ढीठ । श्री धाम धनी पेहेचान के, फेर फेर देत मैं पीठ || ग्रं - किरन्तन, प्र -41, चौ -2
- पिया किए अति प्रसन, तीन बेर दिए दरसन । तारतम बात वतन की कही, आप धाम धनी सब सुध दई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -65
- पिया के दिल की दिल लेवे, रैन दिन पिया दिल सेवे । पिया के दिल बिना सब जेहेर, औरों सों होए गयो सब वैर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -46
- पिया के दिल की सब जाने, पिया जी को दिल पेहेचाने । अंग पिउजी के दिल आने, पिउ बिना आग जैसी कर माने || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -47
- पिया खजाना खरच के, आए बंध से लैयां छुड़ाए। अब सो करें मेहेमांनियां, बस्तर भूखन पेहेराए || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -56
- पिया जो पार के पार हैं, तिन खुद खोले द्वार । पार दरवाजे तब देखे, जब खोल देखाया पार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -3
- पिया प्रेमें सों पेहेचान, प्रेम धाम के देवे निसान । प्रेम ऐसी भात सुधारे, ठौर बैठे पार उतारे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -52
- पिया बिन कछुए न भावहीं, जानें कब सुनों पिया बैन । जोलों पिउ मुझे ना मिले, तोलों तलफत हों दिन रैन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -6
- पिया भेजे मलायक, रखोपे रूहों कारन । सो संग अंदर रेहेवहीं, करत सदा रोसन || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -43

- पिया में विध विध तोको ढूंढ़िया, छोड़ धंधा सब और । पूछत फिरों सोहागनी, कोई बतावे पिया ठौर || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -1
- पिया मैं बोहोत भांत तोको खोजिया, छोड़ धंधा सब और । पूछत फिरों सोहागनी, कोई बताओ पिया ठौर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -1
- पिया मोहे अपनी जान के, अन्तर दई समझाए। ना तो आद के संसे अब लों, सो क्योंकर मेट्यो जाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -13
- पिया मोहे स्वांत न आवहीं, ना कछु नैनों नीर । पिया बिना पल जो जात है, अहनिस धखे सरीर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -1
- पिया ल्याए मुझ कारने, और हुआ न काहूं जान । मैं लिया पिया विलसिया, विस्तारिया प्रमान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -52
- पिया हकमें गावें महामत, उड़ाए असत थाप्यो सत । सब पर कलस हुओ आखिरत, भई नई रे नवों खंडों आरती || ग्रं - किरन्तन, प्र -56, चौ -16
- पिया हम खेल जान्या घरका, ज्यों खेल करत सदाए । हम खेल खड़े यों देखसी, ए भी इन अदाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -24
- पियाजीएँ कई हाँसी करी, सो लिखी मिने किताब । जब सैयां सबे मिली, तब होसी बिना हिसाब || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -39
- पिरम हाणे पांण विचमें, तूंहीं आइए तूं । से तूं जांणे सभ की, हे तो सुध डिंनी मूं || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -29
- पिरिए संदा गुण संभारे, झल्ल तूं पिरिए पेर । सांणे तोके सुख पुजाइंदा, वेओ कोठे ईंय केर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -16, चौ -2
- पिरी कोठणके आवया, सुणियो सजण वेण । को न सुजाणो सिपरी, मथे खणी नेण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -17
- पिरी डिए थो जे दिलमें, सा माधाई करियां पुकार || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -41
- पिरी पाण हित अची करे, बेसक डिंने इलम । अर्स बका हिक हकजो, बेओ जरो न रे हुकम || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -15
- पिरी पुकारे पंजसे, मिडंदा लख हजार । डुख मंझाए न चोंदा मूंहजी, ईं कडई कोए पुकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -23
- पिरी मत्थें बेही करे, डेखास्याई हे ख्याल । खिल्लण खसम रूहन मथां, पसी असांजा हाल || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -12
- पिरी मुंजानी हलया, आऊं की चुआं जिभ्याय रे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -7, चौ -10
- पिरी हल्या प्रभात में, आऊं उथिस अवेरी । की वंजाइयां वलहो, जे हुंद जागां सवेरी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -6, चौ -6
- पिरोजा और कपूरिया, याके आठ थंभ रंग दोए । गिन छोड़े दोए द्वार से, बने हर रंग चार चार सोए || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -17

- पीछल तकिए दोऊ तरफों, बीच चढ़ती कांगरी चार । फूल पात बेल कटाव कई, जुबां कहा कहे नकस अपार || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -102
- पीछल बीसक पिउ पासे रहियां, सो भी आइयां घरों सब सैयां । पिउजी सबों मन्दिरों पधारे, होत सेज्या नित विहारे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -157
- पीछला साथ आए मिलसी, पर अगले करें उतावल । केताक साथ विचार नीका, सो जाने चलें सब मिल || ग्रं - किरन्तन, प्र -92, चौ -11
- पीछला साथ आवेगा क्योंकर, प्रकास वचन हिरदे में धर । चरने हैं सो तो आए सही, पर पीछले कारन ए बानी कही || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -20
- पीछले जेते गए दिन, बाकी कोई न रेहेवे किन । एक बेर फना सब किए, फेर कायम उठाए के लिए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -75
- पीछले तीन थंभ जो खड़े, ता बीच कई नकसों नंग जड़े। तकियों के बीच दोऊ सिरे, ताके फूलन पर नंग हरे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -171
- पीछले सरे दीन मनसूख, सबों किए जो थे बीच रात । आए पैगंमर सब इत, कर दिन उड़ाई जुलमात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -41
- पीछे अटकाव न राखो रंचक, जो आओ संग हम । तुम जानोगे वह नेक है, पर जरा होसी जुलम || ग्रं - किरन्तन, प्र -88, चौ -7
- पीछे आए रसूल, कहे मैं पाई हक सूरत । बोहोत करी रद-बदलें, वास्ते सब उमत || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -5
- पीछे आप जुदे होए के, भेज दिया फरमान । सो पढ़या में भली भांत सों, करी सब पेहेचान || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -54
- पीछे ईमान सब ल्यावसी, ए जो चौदे तबक । अव्वल आकीन ब्रह्मसृष्ट का, जिनमें ईमान इस्क || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -4
- पीछे उसके एते नाम लेवे, खासों में खासगी देवे । भांत भांत नाम जुदे बेसुमार, अपने नामें सब किए उस्तुवार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -14
- पीछे कटाव जो कोतकी, रंग नंग जरी झलकत । चीन मोहोरी दोऊ हाथ की, ए सुन्दर जोत अतन्त || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -83
- पीछे केहेर नजर करी, सो भी वास्ते मेहेर । पर काफर जो उलटे, सो देखे सब जेहेर || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -29
- पीछे जमाने रसूल के, पैदा होसी बलाए बतर । अदल न चले तिनमें, एक रसूल बिगर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -23
- पीछे जहान इन दुनी की, दौड़ी आवे एक दर । तब तो सुख सागर हुआ, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -34
- पीछे जो दिल में आवे साथ के, आपन करेंगे सोए । भूली रोवे तेहेकीक, गए हाथ पटकते रोए || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -3

SPJIN

- पीछे जोग माया को भयो पतन, तब नींद रही अछर सैयन । बृज लीलासों बांधी सुरत, अखंड भई चढ़ आई चित || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -42
- पीछे ढूंढ़ो घर आपनों, कौन ठौर ठेहेरानो । जब लग घर पावत नहीं अपनों, सो भटकत फिरत भरमानो || ग्रं - किरन्तन, प्र -1, चौ -2
- पीछे तले या ऊपर, रंग भर रूहें खेलत । ए खुसाली खावंद की, जुबां क्या करसी सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -30
- पीछे तेरहीं में उठ खड़े, सुख कायम पोहोंचे सब । आठों भिस्त विवेक सों, हुए नजरों न छूटे अब || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -9, चौ -18
- पीछे पछतावा क्या करे, जब गया समया चल । ऐसे क्यों भूलें अंकूरी, जाके सांचे घर नेहेचल || ग्रं - किरन्तन, प्र -77, चौ -11
- पीछे पछतावा क्या करे, जब लगी दोजख आए। इसी वास्ते पुकारे रसूल, मेहेर दिल में ल्याए || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -33
- पीछे प्रले करके, लेसी तुरत उठाए । चौदे तबक सचराचर, देसी भिस्त बनाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -30
- पीछे मूसा के इकहत्तर, तामें फिरका नाजी एक । और सत्तर नारी कहे, ए समझो विवेक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -28
- पीछे रह्या जो पत्थर घास, सो इन दुनियां की पैदास || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -17, चौ -8
- पीछे सदी अग्यारहीं के, जब होसी तीस बरस । बनी आदम पसु पंखी, नूर इस्क पिलाया रस || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -22
- पीछे हक सब करसी, रूह सुख लिया चाहे अब । सुख लेने को अवसर, पीछे लेसी मोमिन सब || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -83
- पीछे हुकमें जाहेर करी, अबलीस सब दिलों पातसाह । हुआ सबों का दुस्मन, ना करने देत सिजदाए || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -53
- पीठ चोरावें धनी सों, करें मिनो मिने खोल । ए देखो अंदर की जाहेर, देखावें अपना मोल || ग्रं - किरन्तन, प्र -105, चौ -10
- पीठ देवे दुनी को, सो मोमिन मुतलक । देखो कौल सबन के, सब बोले बुध माफक || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -40
- पीठ पीछे जो मंदिर, कई रंग सेत दिवाल । दाहिनी तरफ लाखी मंदिर, क्यों कहूं नकस मिसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -47
- पीडी ऊपर पायचा, ने झीणी करली झलवार । केसरिए रंग सूथनी, इंद्रावती निरखे करार || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -10
- पीड़ी घुटन पाउं माफक, सोभा अति सुन्दर । ए कदम सुध तिने परे, जो रूह बेधी होए अन्दर || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -36

- पीपली पारस ने पारजातक, साले ने सीसोटा जी । फणस तूत ने तीन तेवरियां, ताड छे अति मोटा जी || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -6
- पीला पटुका कमरें, रंग नंग छेड़े किनार । बेल पात फूल नकस, होत आकास उद्दोत कार || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -86
- पीली पटोली पेहेरी एक जुगते, माहे विविध पेरे जडाव । जीव तणु जीवन ज्यारे जोइए, त्यारे नव मूकाय लगार || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -13
- पुकार करतां रात पडी रे, वालो रात न रहे निरधार जी । जेणे रे तमने एवा भोलवया, ते वेरीडा कां न अविधारो जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -21
- पुकार करते रात पड़ी, पिउ रात ना रेहेसी निरधार जी । जो दुस्मन तुमको भुलावत है, सो तुम क्यों न करत विचार जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -22
- पुकार करी सबन में, कहया आवेगा सुभान । हिसाब ले भिस्त देयसी, ठौर हक बका पेहेचान || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -66
- पुकार कहया वेद कतेबों, पर बस न किया काहूं दिल । कर कर मेहेनत कई थके, पर हुआ न कोई निरमल || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -24
- पुकार चले मेरे पिउजी, मैं तो नींदई में उरझीए । अब ढूंढे मेरा जीव रे, सो सजन अब कित पाइए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -1
- पुकार सुनी दोऊ पिउ की, वतन देखाया नजर । उठी ना अंग मरोर के, अब आई नजीक फजर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -7
- पुतलियां जवेरन की, सोभा सुन्दरता अत । कहूं केती सेवा बंदगी, सब अग्या सों करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -56
- पुरसिस का दिन साहेब देखावे, कयामत कौल दूजा कोई न पावे । पांच सूरत लिखी आम सिपारे, ए समझें पाक दिल उजियारे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -23, चौ -2
- पुरा पटेल सादूल का, बसे तरफ दूजी ए। तरफ तीसरी वृखभानजी, बसे नाके तीनों ले || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -15
- पुरा सघले बचें चौरा, मांहें मेलावा थाय । चारे पोहोर गोठ घूघरी, रामत करतां जाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -23
- पुरा सहु बीजी गमां, वचे वाट धेननो सेर । इहां रमे वालो सकल मांहें, गोवालो ने घेर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -4
- पुरूख प्रकृती काल की, ईश्वर महाविष्णु उनमान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -46
- पुरे सघले रमूं अमें, अजवालिए लई ढोल । वालोजी इहां विनोद करे, ते कया न जाय बोल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -42
- पुरो एक वृखभाननो, उत्तर दिस लगतो । पासे भाई भेलो लखमण, पुरो पूरण वसतो || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -16

- पुरो जो वृखभान को, भेलो भाई लखमन । नंदजी के उत्तर दिसे, बसत बास पूरन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -26
- पुरो पटेल सादूलनो, बीजी ते गमां एह । व्रखभानजी त्रीजी गमां, पुरो दीसे लांबो तेह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -5
- पुल तले नेहेरें चलें, दोऊ पुल मुकाबिल । दोऊ बीच सोभा देय के, जाए ताल पोहोंच्या जल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -19
- पुल पांच भोम छठी चांदनी, चारों तरफों बराबर । ए कहां गए सुख रूहन के, ए हम क्यों गए ठौर बिसर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -30
- पुल से आगे घाट केल का, ले चल्या जमुना जोए । केल किनारे मिल्या मधुबन, पुखराज अर्स बीच दोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -32
- पुष्ट मरजाद जो प्रवाह पख, याको सार बताऊं लख । ताके हिसे किए नौं, चढ़े सीढ़ी भगत जल भौं || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -3
- पुष्ट मरजाद ने परवाह पख, एह तणी कीधी छे लख । ते वेहेची कीधा नव भाग, चढे पगथी लई वेराग || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -3
- पूछ नीके अपने धनी को, भी नीके देख तारतम । नीके देख फुरमान को, भी पूछ नीके आतम || ग्रं - किरन्तन, प्र -87, चौ -9
- पूछे रसूल सों दोए सुकन, सो साहेब ने किए रोसन । ए दोनों बात खुदाए से होए, इनको पूजेंगे सब कोए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -33
- पूछो अपनी आतम को, कोई दूजा है इप्तदाए। रूह-अल्ला इलम ल्याए के, केहेलावें इत खुदाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -98, चौ -4
- पूजे परमेश्वर करके, दिल में राखें दोए । तिन कारन पूछत हों, कौन विध याकी होए || ग्रं - किरन्तन, प्र -105, चौ -4
- पूजे हवा कौल तोड़ के, ए फौज सबे अबलीस । लेने बुजरकी जुदे पड़े, कर एक दूजे की रीस || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -27
- पूजोगे सब फना को, कोई ऐसा खेल बेसुध । ना तो क्यों पूजो मिट्टी गोबर, पर क्या करो बिना बुध || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -37
- पूर असल जिमी बराबर, और उज्जल जोत प्रकास । कहूं कम ज्यादा न देखिए, और जोत भरयो अवकास || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -84
- पूरन पांचों इंद्री सरूपं, एक एक में पांच पूरन । हर एक में बल पांच का, हर एक में पांच गुन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -30
- पूरन मेहेर भई धनी की, दोऊ हादिऐं करी चेतन । सो भी बुजरकी देखी दुस्मन, जो भिस्त दई सबन || ग्रं - किरन्तन, प्र -102, चौ -10
- पूरी मेहेर जित हक की, तित और कहा चाहियत । हक मेहेर तित होत है, जित असल है निसबत || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -3

- पूरुं मनोरथ तमतणां, करार थाय जीव जेम । सखी जीवन मारा जीव तमे छो, कहो करूं हूं तेम || ग्रं - रास, प्र -11, चौ -11
- पूरुखपणे ए दृष्टं न आवे, ए अबलापणे लीजे अंग । पुरुख नथी ए विना कोई बीजो, जे रमे नेहेचल लीला रंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -9
- पूरूं मनोरथ तमतणां, उघाडूं रामतना बार । रामत देखाडी करी, करूं सत ना विस्तार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -3
- पेड़ काली किन न देखी, सब छाया में रहे उरझाए । गम छायाकी भी न पड़ी, तो पेड़ पार क्यों लखाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -21
- पेड़ काली किन ना देखी, सब छायाही में रहे उरझाए । गम छायाकी भी ना पड़ी, तो पेड़ पार क्यों लखाए || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -21
- पेड़ चार चारों तरफों, छाया सोभा लेत अतंत । हार किनार बराबर, इत ज्यादा दो दरखत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -46
- पेड़ जुदे जुदे गेहेरी छाया, सब पेड़ों छत्री एक । देख देख के देखिए, जानों सबसे ए ठौर नेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -11
- पेड़ जुदे जुदे लम्बी डारी, छाया घाटी सोभे नीची सारी । निकसी एक थें दूजी गली, सो तो तीसरी में जाए मिली || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -31
- पेड़ बोए पात बोए, बोए फल फूल डार । जल जिमी खुसबोए को, कछू आवे नहीं सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -48
- पेड़ लम्बे उपली छातलों, छत्रियां छज्जों पर । लम्बे छज्जे बड़ी बैठक, इत मोहोला लेत जानवर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -3
- पेर पेरनी प्रीछवनी करी रे, विध विधना कहो द्रष्टांत । वृज रास ने घर तणी, मूने कहो वीतक वृतांत || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -5
- पेरां कागर कई मुंके, आकीन डियण के सभन । से निसान पुंना सभनी, केयां रांदमें रोसन || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -14
- पेरे पेरे में तूने का रे, सुण रे धणीना वचन । अधखिण वालो न वीसरे, जो तू जुए विचारी मन || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -20
- पेरो केयां जा गालडी, सा रूहके पुरी लगी । हिक तो रे को न कितई, हे तोहिजे इलमें सक भगी || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -4
- पेरो पांणे जांणी हिन के, हाणे करिए हल्लणजी वेर । पुकारीदे न डेओ, पसण पाहिजा पेर || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -44
- पेरो वेण तो केहा कढया, से करो मथियण मन मंझा । बुध मन तोहेजा बेही रेहेंदा, हाणे क्रोध कढंदे साहा || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -15, चौ -3
- पेरो हई गाल कौलजी, थेई थींदी सभ चोयम । द्रजां चांदे अगरी, जी न अचे दिल पिरम || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -56

- पेरोनी पाण नजर न्हारीदे, व्यो अवसर हथां । जडे हथे मंझे हली वेयां, तडे केहेडी थेईनी पाण मथां || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -20
- पेहेचान आप ना नासूत की, ना पेहेचान मलकत । ना सुध बका जबरूत की, ना सुध अर्स लाहूत || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -40
- पेहेचान नहीं मोमिन की, जिनमें अहमद सिरदार । जो रूहें कही दरगाह की, बीच बका बारे हजार || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -45
- पेहेचान बुध नेहेकलंक, और पेहेचान ब्रहमसृष्ट । याकी अस्तुत निगम करे, किन सुन्या न देख्या दृष्ट || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -67
- पेहेचान महंमद रूहअल्ला, और पेहेचान मोमिन । तोरा सबों पर इनका, यों कहे कुरान रोसन || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -68
- पेहेचान मेंहेदी महंमद, और ईसा अली मोमिन । ए कजा दिल भीतर, निसां हुई हम सबन || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -68
- पेहेचान लई सो भी खुदी, मैं न्यारी हुई तिनसे । न्यारी होत सो भी खुदी, ए खुदी निकलत नाहीं मैं || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -32
- पेहेचान सब अौं की, अयॊ बीच की हकीकत । सो जरा छिपी ना रखी, सब दई हक मारफत || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -21
- पेहेचान सबों को देह की, आतम की नहीं दृष्ट || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -21
- पेहेचान सबों वजूद की, नहीं रूह की दृष्ट । वैराट का फेर उलटा, या विध सारी सृष्ट || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -24
- पेहेचान हक अर्स रूहन की, ए केहेते आवसी इस्क । ए सुन रूहें ना सेहे सकें, बिछोहा अर्स हक || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -68
- पेहेचान हुई सब विध की, पाई हक मारफत । क्यों न आवे इस्क हमको, जाकी नूरजमाल सों निसबत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -11
- पेहेचान हुती न एते दिन, प्रेम नाहीं पिया सों भिंन । पिया प्रेम पेहेचान जो एक, भेली होसी सबों में विवेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -55
- पेहेचानवे को पिउजी अपना, करूं तारतम विचार जी । साथ सकल तुम लीजो दिल में, न रहे संसे लगार जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -13
- पेहेचानो अजाजील को, सिजदा न किया आदम पर । दूर हुआ ले लानत, सो सबों लगी क्यों कर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -38
- पेहेन पाखर गज घंट बजाए चल, पैठ सकोड़ सई नाके समाए । डार आकार संभार जिन ओसरे, दौड़ चढ़ पहाड़ सिर झांप खाए || ग्रं - सनंध, प्र -6, चौ -6
- पेहेन पाखर गज घंट बजाए चल, पैठ" सकोड़ सई नाके समाए । डार आकार संभार जिन ओसरे, दौड़ चढ़ पहाड़ सिर झाप खाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -3, चौ -6

- पेहेनावा अर्स अजीम का, क्यों कहिए मांहें सुपन । कंकरी एक अर्स की, उड़ावे चौदे भवन || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -18
- पेहेनावा नूरजमाल का, वस्तर या भूखन । ज्यों नूर का जहूर, ए जानत अर्स मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -191
- पेहेनावा फना मिने, और पेहेनावा अर्स का । कछू पाई है तफावत, तुम देखो दिल अपना || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -100
- पेहेने उतारे इन जिमी, नाहीं अर्स में चल विचल । इत नकल कोई है नहीं, अर्स वाहेदत सदा असल || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -5
- पेहेने वस्तर जो झीलन, राज स्यामजी सैयां सबन । इत एक घड़ी लों झीलें, जल क्रीड़ा कई रंग खेलें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -133
- पेहेरयो बागो रे बांधी कमर, अश्व उजले भए अस्वार । होसी बड़ा मेला बरस एके, साथ होत सबे तैयार || ग्रं - किरन्तन, प्र -53, चौ -10
- पेहेलां कया में साथने, पांचे तणां ए नाम । सुकदेव ने सनकादिक, महादेव भगवान || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -5
- पेहेला तकरार हूद घर, दूजा किस्ती पर । तीसरा भया फजर का, जाने वाही लैलत कदर || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -16
- पेहेला दीदार होए मोमिनों, बीच आखिरी पैगंमर । ए मुसाफ कह्या आखिरी, देवे दीदार आखिर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -55
- पेहेला फेराना अवतार, ते तारतमे कया विचार । पेहेले फेरे तां खबर न पडी, तो आपण आव्या आंहीं वली || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -29
- पेहेला रोज कयामत बयान, सो हजार बरस की इसारत जान । दोऊ सरूप कहे दो अंगुली, दसमी से दूजी अग्यारहीं मिली || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -18, चौ -7
- पेहेला रोज कौल हुरमत, सो हादी देखावे रोज कयामत । जिस बरस बीच होए फजर, पेहेले जिल्हज थें खुली नजर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -18, चौ -3
- पेहेली चाल चालो कीडीनी, हलवे पगलां भरजो । पछे बली कांईक अधकेरां, वधतां वधतां वधजो || ग्रं - रास, प्र -20, चौ -4
- पेहेली जिलद तमामियत, ले हाथ बिलंद पनाह पोहोचत । कबूलियत पाई है जित, बोहोत साथ मिलावत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -20
- पेहेली तरफ का जो बन, बड़े मेहेराव आगू दरखत । ए बन मेवे केते कहूं, अर्स अजीम की न्यामत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -44
- पेहेली तारीख पाई बुजरक, मेहेरम थे तिन पाया हक । इत थे बरस सत्तानवे, तित दूजे जामें जाहेर भए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -22
- पेहेली फिरती दिवाल फेर देखिए, तिन बीच मोहोल अनेक । जो जो खूबी देखिए, जानों एही नेक सों नेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -15

- पेहेली बेर तहां ए निध न हुती, तारतम जोत रोसन जी। तो ए फेरा हुआ रे साथ को, तुम देखो विचारी मन जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -14
- पेहेली भोम के झरोखे, सो दूजी भोम लग बन । ए झरोखे के बराबर, भोम दूजी हिंडोलन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -25
- पेहेली भोम फूल बाग लों, दिवाल देखिए दिल धर । फिरते मेहेराव झरोखे, बन आवे अंदर थे नजर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -26
- पेहेली मुझवण कही वैराटनी, बीजी वेदनी मुझवण । ए संखेपे कही में समझवा, ए छल छे अति घन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -18
- पेहेली वृन्दावन मां रामत, वली ते आंही उतपन । आ लीलाओने प्रगट करसे, सुकजी तणे वचन || ग्रं - किरन्तन, प्र -124, चौ -8
- पेहेलू द्रष्टे जे अमने आवयूं, तेटला ते मांहें अजवास । ते अजवास मांहें अमें रमूं, बीजा लोक सहुनो नास || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -75
- पेहेले अंगुरी नख चरन, मस्तक लों कीजे बरनन । सब अंग वस्तर भूखन, सोभा जाने आतम की लगन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -177
- पेहेले आप पेहेचानो रे साधो, पेहेले आप पेहेचानो। बिना आप चीन्हें पारब्रह्म को, कौन कहे मैं जानो || ग्रं - किरन्तन, प्र -1, चौ -1
- पेहेले ए सस्ती हती, मुस्लिम दीन कुरान । पीछे अति पछताएसी, पर क्या जाने कुफरान || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -21
- पेहेले एक ए हक के दिल में, रूहों लाड़ कराऊं निस दिन । बेसुमार बातें हक दिल में, सब इस्क वास्ते मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -26
- पेहेले एक जहूद बुजरक, तिन पीठ न छोड़ी महंमद । यार असहाब न चल सके, ताकी दे मसनवी साहेद || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -24
- पेहेले ओलखो आपको, पीछे करो मोसों पेहेचान । देखो अपने अर्स को, याद करो निसान || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -24
- पेहेलें कबर से मैं उर्ले, मेरे भाइयों की खातिर । ज्यों काम करता हों अव्वल, त्यों करोंगा उठ आखिर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -31
- पेहेले कही सब खेल की, और कहे देखनहार । रूहें फरिस्ते खेल देखहीं, पकड़ ख्वाब आकार || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -36
- पेहेले कहूं अव्वल की, हक हादी हुकम । मोमिन दिल अर्समें, हमें धरे कदम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -1
- पेहेले कहे मैं साथ को, इन पांचों के नाम । सुकदेव और सनकादिक, कबीर सिव भगवान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -7
- पेहेले कह्या नूर मकान जो, सो नूर मांहें वाहेदत । हक हादी रूहें खिलवत, ए वाहेदत सब निसबत || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -53

- पेहेले कह्या मैं तुम को, भूलोगे खेल देख । जहां झूठे झूठा खेलहीं, उत मुझे न पाओ एक || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -33
- पेहेले किया बरनन अर्स का, रूह अल्ला का केहेल । अब चितवन से केहेत हो, जो देत साहेदी अकल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -1
- पेहेले किस्ती दई पोहोंचाए, इत फरमान ल्याए रसूल केहेलाए । हिसाम चांद कह्या हिंदुस्तान, ए जो पूज्या हिन्दुओं साहेब जान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -29
- पेहेले कुन्ड चबूतरा, दूजा आणू सोए । चारों तरफों बैठक, जल उज्जल खुसबोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -8
- पेहेले क्यों थे रसूल हक पें, क्यों ल्याए फुरमान । अब कौन सरूपें आखिर, ए सब करो पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -8
- पेहेले क्यों न संभारिए, काहे को पड़िए जम फांस । लाख चौरासी अगनी, तित जलिए न कीजे बास || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -7
- पेहेले क्यों फरामोसी देयके, रूहें डारी माहें छल । पीछे ताला कुंजी दोउ दिए, दई खोलने की कल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -18
- पेहेले चल्या सैयद अकेला, तब तो थी सरीयत । अब अकेले क्यों छोड़िए, गिरो पोहोंची दिन मारफत || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -23
- पेहेले जीवों करी अस्तुत, भली भांत भगवान । पंडिताई चतुराई महाप्रवीनी, किव कर हिरदे आन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -5
- पेहेले जोगमाया भई रास में, ताको सो अति उजास । पर साथ जोग होसी जागनी, ताको कह्यो न जाए प्रकास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -14
- पेहेले ते काढ़े वचन, सो क्या मन की दोर । बुध मन तेरे बैठे रेहेसी, जीव को क्रोध काढ़सी जोर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -3
- पेहेले तो आंखां फूटियां, अब तो कछुक संभाल । ए जासी अवसर हाथ से, पीछे होसी कौन हवाल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -5
- पेहेले तो तें बुरी करी, अब जिन चूके अवसर । पिउ तोकों वतन में, बुलावत हैं हंसकर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -6
- पेहेले तो सब भूलियां, मैं तो कहूं तुमें हक । देखो हाथ में नूर खुदाए का, फरेब में हुए गरक || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -6
- पेहेले तो हम न पेहेचाने, सो सालत है मन । चरचा कर कर समझाए, कहे विध विध के वचन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -5
- पेहेले तौलें बुध जागृत, पीछे तौलें धनी आवेस । और तौलें इस्क तारतम, तब पलटे उपलो भेस || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -3
- पेहेले दिए सब उड़ाए के, चौदे तबक दम जे । काजी कजा के नूर से, भिस्त में बैठे नूर ले || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -65

- पेहेले दृढ़ कर हक सूरत, ए अंग किन नूर के । हक जातके निसबती, बका मोमिन समझें ए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -27
- पेहेले दृष्टं हमारे जो आइया, तेते मिने उजास । हम खेलें तिन उजासमें, और लोक सब को नास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -76
- पेहेले देख पाग सलूकी, माहें कई बिध फूल कटाव । जोत करी है किन बिध, जानों के नकस नंग जड़ाव || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -9
- पेहेले नजरों देखते, गयो अवसर टूटी आस । निकस गए जब हाथ से, तब आपन भए निरास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -19
- पेहेले पट दे खेल देखाइया, दई फरामोसी हाँसी को । दिया बेसक इलम अपना, तो भी न आवे होस मों || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -46
- पेहेले पाल न सकी सगाई, ना कर सकी पेहेचान । पर हम बीच खेल के, कई पाए धनी धाम निसान || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -24
- पेहेले पी तूं सरबत मौत का, कर तेहेकीक मुकरर । एक जरा जिन सक रखे, पीछे रहो जीवत या मर || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -31
- पेहेले पेड़ देखो माया को, जाको न पाइए पार । जगत जनेता जोगनी, सो कहावत बाल कुमार || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -3
- पेहेले प्यार दिया मुझे इलम सों, सो मुझपे इलम दिवाए । सब दुनियां को आरिफ कर, मुझ आगे सबपे कथाए || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -53
- पेहेले प्रले करके, उठाए लिए ततखिन । मेरे हाथ कराए के, दई सोभा चौदे भवन || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -22
- पेहेले फरेब देखाइया, पीछे महंमद दीन । कलमा जाहेर करके, देखाया आकीन || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -62
- पेहेले फेरे आपण आवियां, ते तो वाले का छे विवेक । ते तां लाभ लईने जागियां, हवे आपण करूं रे विसेक || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -26
- पेहेले फेरे तां ए निध न हुती, अजवालू तारतम जी । तो आ फेरो थयो आपणने, साथ जुओ विचारी मन जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -2, चौ -14
- पेहेले फेरे थ! छे जेम, आंही पण वालेजीए कीधं तेम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -9, चौ -9
- पेहेले फेरे थy आपणने, गौपद वछ संसार । एणे पगले चालिए, जो तू पहेलो फेरो संभार || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -27
- पेहेले फेरे रास रामतडी, जे कीधी वृन्दावनजी । आनंदकारी जोगमाया, अविनासी उतपनजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -6
- पेहेले फेरे श्री वैकुंठनाथ, इछा दरसन करवा साथ । साथतणे मन मनोरथ एह, जे माया रामत जोइए तेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -22

- पेहेले फेरे हुआ है ज्यों, भी इत पिया ने किया है त्यों । सोई पिया और सोई दिन, देखो तारतम के वचन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -9
- पेहेले बरनन करूं सिर राखड़ी, पीछे बरनन करूं सब अंग । अखंड सिनगार अर्स को, मेरी रूह हमेसा संग || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -39
- पेहेले बीज उदे हुआ, पुरी जहां नौतन । सब पुरियों में उत्तम, हुई धंन धंन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -104
- पेहेले बीतक रसूलसों, सो भी सुनो नेक बोल । आरव समझें आरबी, दोए कहूँ लुगे दिल खोल || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -32
- पेहेले बेवरा सातों घाट का, और जोए हौज मिलाए । पीछे पुल मोहोल हक के, सो फेर नीके देऊं बताए । || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -22
- पेहेले भाई दोऊ अवतरे, एक स्याम दूजा हलधर । स्याम सरूप ब्रह्म का, खेले रास जो लीला कर || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -27
- पेहेले मंडल में मांगी मुझे, सो आए ब्याही इत । कौल किया लिख्या सास्त्रों में, सो आए पोहोंची सरत || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -4
- पेहेले माएने हक कलमें के, सुध हक इमाम रसूल । और कजा सब होएसी, पर बड़ी कजा ए मूल || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -50
- पेहेले लिख्या फरमान में, आवसी ईसा इमाम हजरत । मारेगा दज्जाल को, करसी एक दीन आखिरत || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -30
- पेहेले सब फना कर, उठाए लिए ततखिन । साफ किए सब नूर ने, यों भिस्त भई वतन || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -68
- पेहेले सरत करी महंमदें, हक हम आगे आखिर । द्वार खोलें तब हक बका, करें दिन सिफायत फजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -2
- पेहेले सुख सोहागनी, पीछे सुख संसार । एक रस सब होएसी, घर घर सुख अपार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -39
- पेहेले सोभा कही सुभान की, सोई सोभा बड़ी रूह जान । नहीं जुदागी इनमें, जुगल किसोर परवान || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -29
- पेहेले हवा कही मलकूत पर, सब सोई रहे पकड़ । पाई न हकीकत कुरान की, तो कोई सक्या न ऊपर चढ़ || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -34
- पेहेले हुकमें इलम जाहेर, हुआ हुकमें हक बरनन । मैं हुकम लिया सिर अपने, अब रूह छिप गई हक इजन || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -66
- पेहेलो ठेक दीधो मारे वाले, पछे जो जो ठेक अमारो रे । तो मारा वचन मानजो सखियो, जो दऊं ठेक वालाजीथी सारो रे || ग्रं - रास, प्र -28, चौ -3
- पेहेलो सिणगार कीधो मारे वालेजीए, तेहेनो ते वरणवू लवलेस । पछे संवाद वालाजी साथनो, ते मारी बुध सारूं कहेस || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -1

- पैगंमर की दरगाह साबित, रसूल इद्रीस फरमाए मिले इत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र - 16, चौ -6
- पैगंमर या और कोई, जो हुए रात में बुजरक । किन नूर पार पोहोंच के, ले खबर न दई बका हक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -10
- पैगंमर या तीर्थंकर, कई हुए अवतार । किन ब्रोध न मेट्यो विस्व को, किए नहीं निरविकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -2, चौ -10
- पैगंमर यों पुकारिया, मैं अल्ला का रसूल । संग मेरे सो चले, जो चीन्हे सब्द घर मूल || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -41
- पैगंमर हजरत, निमाज अदा इन सरत । ऊपर से आयत आई, तब नजर आसमान से फिराई || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -4
- पैगंमरों भिस्त तीसरी, जिनों दिए हक पैगाम । चौथी भिस्त जो होएसी, पावे खलक जो आम || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -15
- पैगाम दिए तुम जिन को, जो कहावते थे सुलतान । सो पटके उसी हुकमें, जिन फेस्या हादी फुरमान || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -95
- पैठते दाहिने हाथ जांही, सेज्या है या मंदिर मांहीं । कई जिनस जड़ाव सिंघासन, राजस्यामाजी के दोऊ आसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -94
- पैंडा बताया रसूलें, पर कोई न समझया तब । तिन राह सब चलसी, राजी हो हो अब || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -36
- पैंडा बेहद वतन का, ए वतनी जाने । हद का जीव बेहद का, द्वार क्यों पेहेचाने || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -82
- पैंडे सब देखाइए, ज्यों समझे सब कोए || ग्रं - सनंध, प्र -3, चौ -4
- पैदा आदम हवा से, हिरस हवा सैतान । इन विध की ए पैदास, केहेवत कुरान पुरान || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -70
- पैदा किया एहिया को देख, आगू वह मैं नाम एक । बीच ल्याए जादलमिसल, भांत बुजरकी नाम नकल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -10
- पैदा निमूना दुनी का, अर्स जिमिएं नहीं पोहोचत । दुनी निमूना हक को, ए कैसी निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -4
- पैदास कतरे नूर की, ए जो हुई चल विचल । फेर समेत समानी नूर में, सो नूर सदा नेहेचल || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -81
- पैदास जुलमत काल की, सो तो है सब नास । खेलें काल के मुख में, ताए अबहीं करेगो ग्रास || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -33
- पैदास बीच अबलीस कया, ए जो आदम की नसल । पूजे हवा को खुदा कर, दुनियां एह अकल || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -17

- पैया देखाड्या पारना, अविचल भान उदे थयो । तिहां अगिया अवतारमा, अजवास इहां स्यो रहयो || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -38
- पैया सहुना काढे प्रगट, नहीं तारतमने अटकल । आवेस जागवू हाथ धणीने, एह अमारूं बल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -49
- पोए जा दिल अचे पाहिजे, पाण करियूं सेई । भुली रोए तेहेकीक, हथड़ा मथे डेई || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -3
- पोए मूकियां रूह पाहिजी, जा असांजी सिरदार । कुंजी आणे अर्स जी, खोल्याई बका द्वार || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -12
- पोए हथ हणंदा पटसे, हैडे डींदा घा । सजण सूरे में वेही न रेहेंदा, हल्ली वेदानी हथ मंझां || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -5
- पोढ्या भेला जागसे भेला, रामत दीठी सहु एक । वातो ते करतूं जुजवी, विध विधनी विसेक || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -29
- पोताना पगले था रे था, मा मूके तारो चाह रे चाह ।तारा जीवने प्रेम तूं पा रे पा, जेम सहू कोई कहे तूने वाह रे वाह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -35, चौ -18
- पोते नूह नबीय के, जादे पैगंमर । सब दुनियां को खाएसी, आजूज माजूज क्यों कर || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -19
- पोते पोताना करे वखाण, तेहेने सह कोई कहे अजाण । पण जेवडी वात तेहेवा वखाण, वचन ग्रहसे जोईने जाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -5
- पोते प्रगट पधारया छो, आडा देओ छो वृज ने रास । इंद्रावतीतूं अंतर कां कीचूं, तमे देओ मूने तेनो जवाब || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -9
- पोरयां तां सभ ईदा, सभ सची चोंदा से । जे असां बेठे अचे दुनियां, जे की डिसूं रांद ए || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -38
- पोहोंची काड़ों कड़े झलकत, हेम जवेर कई रंग रस । दिल चाह्या रूप रंग ल्यावहीं, जो देखिए सोई सरस || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -58
- पोहोंची तकसीर रूहें अर्स में, हके फरमाया फरमान । तित दूजा कोई न पोहोचिया, बिना दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -32
- पोहोंची ने नवघरी दीसे, ऊपर ऊंचा नंग । माणक मोती पाना कुन्दन, ए सोभे पोहोंची ना नंग || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -44
- पोहोंची पांचों नंग की, जबां केहे न सके जिनस । पाच पाने मोती नीलवी, लरें हीरे अति सरस || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -103
- पोहोंची पुकार सुनी धनी श्रवनों, कही कुली की सब गम । कलपे जुथ जान ब्रह्मसृष्ट के, मिले नूर बुध हुकम || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -22
- पोहोंची बांहे बाजू बन्ध, दोऊ निरखत नीके कर । एक नंग और फुन्दन, चुभ रहत हैड़े अन्दर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -107

- पोहोंची सिफायत जिनको, तिन छोड़ी दुनियां मुतलक । कदम पर कदम धरे, पोहोंच्या बका अर्स हक || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -29
- पोहोंचे और हथेलियां, केहे न सकों सलूकी ए। छबि देख रंग हाथन की, बल बल जाऊं इनके || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -101
- पोहोंचे देखं के अंगरी, नरमाई देखं के गौर । मुंदरी देखू के हथेलियां, लीकें देखू के नख नूर || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -43
- पोहोंचे नहीं अंग दिल के, ताथें रूह अंग लीजे जगाए । तो लों आपा ना मरे, जोलों खुदी न देवे उड़ाए || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -40
- पोहोंचे नहीं कल बल कुली को, कोई मिने चौदे भवन । ऐसो महाबली ताए उड़ावें, बुधजी एकै खिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -19
- पोहोंचे महंमद मेयराज में, दो गोसे फरक कमान । इत रूहें रहें दरगाह मिने, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -25
- पोहोंचे लीकें हथेलियां, छबि अंगरियां नख तेज । देखो अचरज मुख केहेते, हो न गया रेजा रेज || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -110
- पोहोंचे सोभित रंग सुन्दर, टांकन चूंटी काड़े कोमल । लांक एड़ी पीड़ी पकड़, बेर बेर जाऊँ बल बल || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -79
- पोहोंचे हथेली अंगुरी नख, लीके रंग सलूक । हक अंग मिहीं हिरदे बैठे, अब निमख न होए रूह चूक || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -35
- पोहोंचे हथेली हाथ के, अतन्त रंग उज्जल । बलि जाऊं छबि लीकों पर, निपट अति कोमल || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -103
- पोहोंच्या मेयराज में गुनाह मोमिनों, ए सुन उरझे मुसलमान । ठौर गुन्हे न पोहोंच्या जबराईल, ए जाने दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -30
- पोहोर दिन से चार घड़ी लग, बरस्या हक का नूर । इस्क तरंग सबों अपने, रोसन किए जहूर || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -19
- पोहोर रैनी लगे जो खेलावें, पीछे मुख अग्या करके बोलावें । इतहीं थें अग्या करी, पाउं लाग सेज्या दिल धरी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -154
- पौढ़े भेले जागसी भेले, खेल देख्या सबों एक । बातां करसी जुदी जुदी, बिध बिध की विसेक || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -29
- प्यार लग्या मोहे जिनसों, हमें बड़ा किया सोए । सो सबपे केहेलाए हुकमें, सब विध सुख दिया मोहे || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -55
- प्यार हक का ज्यादा हमसों, ए उपजी रूहों दिल सक । इस्क हमारा हक सों, क्या नहीं हक माफक || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -8
- प्यारा जिनको मासूक, तिनके प्यारे लगें वचन । सो कबूं न केहेवे और को, मासूक प्यारा जिन || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -14

- प्यारा नाम खुदाए का, फेरे तसबी लगाए तान । रात दिन लहे बंदगी, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -30
- प्यारी खिलवत में प्यारी रसना, होत वचन कदीम । सो इन जुबां प्यार क्यों कहूं, जो हक हादी रूहें हलीम || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -28
- प्यारी पिया सोहागनी, सो जुबां कही न जाए। पर हुआ जो मुझे हुकम, सो कैसे कर ढंपाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -27
- प्यारी बातें करे जब आसिक, हेतें सुनत हक कान । क्यों कहूं सुख तिन रूह के, जो प्यार कर सुनें सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -36
- प्यारी रसना सों अनेक, प्यारी बातें करें बनाए । प्यारे प्यारी रूह बीच में, ए गुन जुबां किने न गिनाए || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -26
- प्यारे कदम राखों छाती मिने, और राखों नैनों पर । सिर ऊपर लिए फिरों, बैठो दिल को अर्स कर || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -24
- प्यारे पाउं मेरे पिउ के, देख नख अंगूठे अंगुरियों । सो बैठे बीच दिल तखत के, तो अर्स कह्या मेरे दिल को || ग्रं - सिनगार, प्र -5, चौ -3
- प्यारे मेरे प्राण के, नैना सुख सागर सलोने । रेहे ना सकों बिना रंगीले, जो कसूबड़ी उजलक में || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -32
- प्यारे मेरे प्राण के, मोहे पल छोड़ो जिन । मैं पाई मेहेर मेहेबूब की, मेरे जीव के एही जीवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -7
- प्याला हुकम पिलावहीं, करें हुकम रखोपा ताए। ना तो इन प्याले की बोए से, तबहीं अरवा उड़ जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -80
- प्याले पर प्याले पिलावहीं, ताको निस दिन रहे खमार । देवे तवाफ निस दिन, हुकम मेहेर को नहीं सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -91
- प्रकास कह्यो मैं रास को, एह सुन्यो तुम सार । अब महामती कहें सो सुनो, दया को विस्तार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -35
- प्रकास के वचन निरधार, वचन सब करसी विचार । आगे बड़ो होसी विस्तार, अखंड सब होसी संसार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -8
- प्रकास तणा वचन निरधार, जे जोईने करसे विचार । आगल ए थासे विस्तार, जीव घणा उतरसे पार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -8
- प्रकास बानी तुम नीके कर लीजो, जिन छोडो एक खिन जी । अंदर अर्थ लीजो आतम के, विचारियो अंतस्करन जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -51
- प्रकास वाणी तमे जो जो जोपे करी, रखे मूको ते एक वचन जी । द्रढ थई तमे देजो जीवने, लेजो ते माहेलूं धन जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -50
- प्रकृत सबे पिंड की, सीधी करूं सनमुख । दुख अगनी टाल के, देखाऊं ते अखंड सुख || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -26

- प्रकृत सर्वे पिंडनी, सवली- करू सनमुख । दुख दावानल करूं अलगो, देखाई ते अखंड सुख || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -26
- प्रकृती पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम । ए ठौर माया ब्रह्म सबलिक, त्रिगुन की परआतम || ग्रं - किरन्तन, प्र -65, चौ -10
- प्रकृती महाप्रले होवहीं, सब तत्व गुन निरगुन । द्वैत उड़े कछू ना रहे, निराकार निरंजन सुंन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -2, चौ -8
- प्रगट करी मूल सगाई, कई दिन आपन राखी छिपाई । वचन बड़ा एक ए निरधार, श्री सुंदरबाई केहेते जो सार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -11
- प्रगट थासे पाधरी, जोजो रास प्रकास । ग्रन्थ सघलानी उतपन, वाणी वेद व्यास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -15
- प्रगट देखाई पाधरा, पांचे ते जुजवा तत्व । रमे सहु मन मोह मांहे, सहु मननी उतपत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -23
- प्रगट पंपाल दीसे रमता, अति घणो अंधेर । कहे अमे साचा तमे झूठा, एम फरे ते अवले फेर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -4, चौ -17
- प्रगट प्रकास न कीजे, आपण देखी बाज । गोप रही न सकू ते माटे, सनमंधी मलवा साध || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -26
- प्रगट बेठा बंध छोडवा, ते आपण माटे थाय । अवतार ते पण कस्में बंधाणां, रखे कोई देखी बंधाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -86
- प्रगट वचन सुणो उत्तम मानखो, तमें वोहोरखा आव्या छो सुख । पण आंणी भोमे मुझवण घणूं विसमी, सुखने आडे अनेक छे दुख || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -2
- प्रगट वाणी प्रकास कही छे, इंद्रावती चरणे लागे जी । ते लाभ लेसे बने ठामनो, जेहेनो जीव आंही जागे जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -52
- प्रगट वैराट थयो जे दाडे, एणा बंध पेहेला ना बंधाणां । बाल्या बले नहीं ते माटे, सहुए ते जाय तणाणां || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -89
- प्रगटे निसान रे धूमरकेतु खय मास, पर सुध न करे अजूं कोई इत । बेगेने पधारो रे बुध जी या समे, पुकार कहे महामत || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -21
- प्रगटे पूरन ब्रह्म सकल में, ब्रह्म सृष्ट सिरदार । ईश्वरी सृष्ट और जीव की, सब आए करो दीदार || ग्रं - किरन्तन, प्र -57, चौ -2
- प्रगटे ब्रह्म और ब्रह्मसृष्टी, और ब्रह्म वतन । महामत इन प्रकास थे, अखंड किए सब जन || ग्रं - किरन्तन, प्र -57, चौ -10
- प्रताप की प्रताप इमाम कहा कहूं, इन जुबां कह्यो न जाए। तो भी नेक रोसन करूं, तुम लीजो चित ल्याए || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -1
- प्रताप बड़ा महंमद का, जिन दिया सबों को सुख । चौदे तबक की दुनी के, दूर किए सब दुख || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -2

- प्रतिबिंब के जो असल, तिनों हक बैठे खेलावत । तहां क्यों न होए हक नजर, जो खेल रूहों देखावत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -86
- प्रतिबिंब लीला या दिन थे, फेर के गोकुल आए । चले मथुरा द्वारका, बैकुंठ बैठे जाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -7
- प्रथम एकड़ा करूं एक चित, लगता मींडा धरूं भिलत । मेरे हाथ अखर कुसादे न होए, मैं डरूं जानों मिले न दोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -11
- प्रथम पाधरू कहूं रे सखियो, ए रामत छे मदमाती । दोडी न सके तेणी बांहोंड़ी न छूटे, ते आवसे पाछल घसलाती || ग्रं - रास, प्र -20, चौ -2
- प्रथम मूल से बुध फिराई, अहंमेव दियो अंधेर । या बिध इंड रच्यो त्रैलोकी, मूल तें दियो मन फेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -8
- प्रथम मोह तत्व नी उतपन, ते मांहें थी तत्व पांचे । ए पांच तत्व थकी चौद लोक प्रगट्या, एमा वैष्णव होय ते न राचे || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -4
- प्रथम लागू दोऊ चरन को, धनी ए न छोड़ाइयो खिन । लांक तली लाल एड़ियां, मेरे जीव के एही जीवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -2
- प्रबोध वचन ते सदा केहेवाय, पण आ वचन काई प्रगट न थाय । ते माटे तमे सुणजो साथ, आपणमां बेठा प्राणनाथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -6
- प्रभात थासे अति वेगलो रे, रात छेडो केमे न आवे जी । दुखनी रात घणूं जासे दोहेली, पछे वहाणू ते केमे न वाए जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -32
- प्रभु प्रतिमां रे गज पांउ बांध के, घसीट के खंडित कराए। फरस बंदी ताकी करके, तापर खलक चलाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -15
- प्रले पैदा की सुध नहीं, तो ए क्यों जाने अछर । लोक जिमी आसमान के, इनकी याही बीच नजर || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -25
- प्रले प्रकृती जब भई, तब पांचों चौदे पतन । मोह अहं सबे उड़े, रहे सरगुन ना निरगुन || ग्रं - किरन्तन, प्र -21, चौ -3
- प्रवेस कीधो छ माया मंझार, तेडी आपणने जावू निरधार । अमे आव्या छू एटले काम, तेडवा साथ घरे श्री धाम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -36
- प्रहलाद युधिष्ठिर वसुदेव, बलि रूकमांगद हरिचंद । सगाल दधीच मोरध्वज, कसनी कर छूटे या फंद || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -15
- प्राणपे वल्लभ छो मूने, एम करूं हूं केम || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -14
- प्रीत प्रगट केम कीजिए, कीजिए तो छानी छिपाए, मेरे पिउजी । तूं तो निलज नंदनो कुमार, मेरे पिउ जी || ग्रं - किरन्तन, प्र -46, चौ -1
- प्रीत रीत इस्क की, इस्कै सहज सनेह । निस दिन बरसत इस्क, नख सिख भीगे सब देह || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -21

- प्रीतम मेरे प्राण के, अंगना आतम नूर । मन कलपे खेल देखते, सो ए दुख करूं सब दूर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -17
- प्रीतम मेरे प्रान के, आतम के आधार । ए दिल भीतर देखियो, है अति बड़ो विस्तार || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -1
- प्रेम अंदर ऐसी भई, नींद माहें की उड़ कहूं गई । गुन अंग इंद्री पख, पिया प्रेमें हुए सब लख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -48
- प्रेम आतम दृष्ट न छोड़े, प्रेम बाहेर दृष्ट न जोड़े। प्रेम पिया के चितसों चित न मोड़े, प्रेम और सबन सों तोड़े || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -45
- प्रेम आप न देखे कित, दृष्ट पियाई देखे जित । निज नजर प्रेम खोलत, जाग धाम देखावे सर्वत्र || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -51
- प्रेम आप पर कोई ना लेखे, बिना धनी काहूं न देखे । प्रेम राखे धनी को संग, अपनो भी न देखे अंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -42
- प्रेम खोया मैं बानी कर कर, हो गया जीव कोई भिष्ट । साथ के चरन धोए पीजिए, ताको दिए में कष्ट || ग्रं - किरन्तन, प्र -101, चौ -2
- प्रेम खोल देवे सब द्वार, पारै के पार जो पार । प्रेम धाम धनी को विचार, प्रेम सब अंगों सिरदार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -64
- प्रेम दरद इस्क तुमारा, मैं फेर फेर मांगू फेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -62, चौ -20
- प्रेम देखाऊं तुमको साथजी, जित अपना मूल वतन । प्रेम धनी को अंग है, कहूं पाइए ना या बिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -1
- प्रेम नजरों जो कछू आया, ताको इतहीं अखंड पोहोंचाया । प्रेम है बड़ो विस्तार, भवजल हुतो जो खार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -57
- प्रेम नाम दुनियां मिने, ब्रह्मसृष्टि ल्याई इत । ए प्रेम इनों जाहेर किया, ना तो प्रेम दुनी में कित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -2
- प्रेम पिया जी के आउध, प्रेम स्यामा जी के अंग सुध । ब्रह्मसृष्टी की एही विध, ए दूजे काहू ना दिध || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -40
- प्रेम पुंज गंज गंभीर, नेत्र सदा सुखदाए । जो रूह मिलावे नैन नैन सों, तो चोट फूट निकसे अंग ताए || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -17
- प्रेम प्याला भर भर पीऊं, त्रैलोकी छाक छकाऊं । चौदे भवन में करूं उजाला, फोड़ ब्रह्मांड पिउ पास जाऊं || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -2
- प्रेम प्रीत रस इस्क, सब नैनों में देखाई देत । ए रस जानें रूहें अर्स की, जो भर भर प्याले लेत || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -23
- प्रेम बताऊं ब्रह्मसृष्ट का, पेहेले देखो धाम बरनन । पीछे प्रेम बताऊं ब्रह्मसृष्ट का, जो धाम धनी के तन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -13

- प्रेम ब्रह्म दोऊ एक हैं, सो दोऊ दुनी में नाहें । पढ़े दोऊ बता दुनी में, जो समझत ना सास्त्रों माहे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -10
- प्रेम रसायन गावत, अति प्यारी मीठी बान । याही विध हस्त देखावहीं, फेर फेर देत हैं तान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -58
- प्रेम लिए सोभा गुन, सब सुख देत पूरन । या वस्तर या भूखन, सुख जाहेर या बातन || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -60
- प्रेम विनोद विलास माया मांहें, सुफल फेरो एम कीजे । अखण्ड आनंद सदा इंद्रावती घरे, पूरण सुख लाहो लीजे || ग्रं - किरन्तन, प्र -44, चौ -4
- प्रेम सब्दातीत तो कया, जो हुआ ब्रह्म के घर । सो तो निराकार के पार के पार, सो इत दुनी पावे क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -12
- प्रेम सागर पूर चलावती, संग सैयोंको भी पिलावती । पियाजी कहें इन्द्रावती, तेज तारतम जोत करावती || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -195
- प्रेम सेन्या है अति बड़ी, जब मूल आउध ले चढ़ी । सो रहे न काहू की पकड़ी, यासों सके न कोई लड़ी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -41
- प्रेम सेवा वाले प्रगट कीधी, वृज तणी आ वार । वचन विचारीने जोइए, कांई नरसैयां तणा निरधार || ग्रं - रास, प्र -4, चौ -1
- प्रेमतणी गोली बांधीने, अमल करूं जो जो छाक । चौद भवन माहे किरण कुलांभी, फोडी जाऊं ब्रह्मांड पिउ पास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -22, चौ -2
- प्रेमतणी रे धणी, गोली बांधतां काम । तेहेमां सूं न हता रे गुण, तमे चतुर सुजाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -11
- प्रेमना प्रघल पूर, सूरो मांहें अति सूर । पिए रस मेली अधुर, सघली सुचेत री || ग्रं - रास, प्र -22, चौ -8
- प्रेमी तो नेहेचे छिपे, उन मुख बोल्यो न जाए । सब्द कदी जो निकसे, सो ग्यानी क्यों समझाए || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -57
- प्रेमी तो नेहेचे छिपे, उन मुख बोल्यो न जाए। सब्द कदी जो निकसे, सो ग्यानी क्यों समझाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -45
- प्रेमें करी अलख की लख, त्रैलोकी की खोली चख । तब छूट्या सबों से अभख, सब हुए स्याम सनमुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -59

फ

- फजर कही जो फुरमाने, सो अर्स बका हक दिन । जो लों बका तरफ पाई नहीं, तो लों सबों ना रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -28
- फजर हुई बीच सैयनमें, मिल बातां करसी सब । जिन कछुए न कातिया, तिन कहा हाल होसी तब || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -18

- फजर हुए खुले हकीकत, खुलें हकीकत होए कयामत । हुए हक बका अर्स जाहेर, सूर उग्या दिन मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -17
- फणा तो रंग पतंग छे, कांकसा नसो निरमल निरधार । कूकम रंगे पानी सोभे, चरण तली वली सार || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -5
- फणा नसो अने कांकसा, अति रंग घण रे सोहाए । जीव थकी अलगां नव कीजे, राखिए चरण चित माहें || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -4
- फना छोड़ इन परमेश्वरों, नूर बका न पाया किन । तिन पर नूर बिलंद, सो किया तुम मेरा वतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -5
- फना जिमी के बीच में, जाहेरी पहाड़ पूजत । दुनियां नजर फना मिने, अर्स बका न काहूं सूझत || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -29
- फना टांकन की सलूकी, और छब चूंटी काड़ों । अर्स रूहें जुदागी ना सहें, जाके असल तन अर्स मों || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -35
- फना टाकन घूटियां, और काड़े अति कोमल । रंग सोभा सलूकी छोड़के, आगू आसिक न सके चल || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -121
- फना तले ला मकान लग, आगू नूर-मकान बका। उतथें उतरे सो चढ़े, और चढ़ ना सके इत का || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -54
- फना बीच से निकस के, बीच आवें बका असल । दुनी दुख छोड़ लें हक सुख, ए रूहें क्यों छोड़े अपना फल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -54
- फरक नहीं दिल रूह के, ए तो दोऊ रहे हिल मिल । अर्स में जो रूह है, तो हमें कह्या अर्स दिल || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -81
- फरजंद मेरे ऐसा होए, साहेब दीन हुकम का सोए। लेवे मीरास इमामत, लेवे मुझ से हकीकत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -13, चौ -7
- फरतण फेर बाजोटिया, रंग पाकी परवाली । कांबी पडगी जे कांगरी, जाणे रहिए निहाली || ग्रं - रास, प्र -46, चौ -1
- फरतां फूंदडी लीधी कंठ बांहोंडी, वली फरे छे तेमनां तेम । दई चुमन ने थया जुजवा, वली फरे ते फरतां जेम || ग्रं - रास, प्र -17, चौ -6
- फरतां रमतां रास, चुमन मुख दीजिए रे। लीजिए रस अधुर, अमृत पीजिए रे || ग्रं - रास, प्र -35, चौ -5
- फरती रमे फेरसं, सुन्दरबाई घेरतूं । हजार वार तेरसुं, आवी वालाजी पास री || ग्रं - रास, प्र -16, चौ -5
- फरदा रोज पेहेले कह्या, ए जो बखत कयामत । एक दिन एक रात की, फजर है आखिरत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -1
- फरमान आया ईसे पर, ए देखो साहेदी हदीस । वह लेने न देवे माएने मगज, जिनों दिल दुस्मन अबलीस || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -64

- फरमान आया जिन पर, ए सोई जानें इसारत । ले मारफत बैठे अर्स में, बीच बका खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -6
- फरमान उसी साइत का, पिया भेज्या हम पर । सारी विध सोई लिखी, जो कही बाई सुन्दर || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -13
- फरमान कहे गिरो साहेदी, देसी कारन पैगंमर । सब केहेसी महंमद का देखिया, तब कुफर तोड़सी मुनकर || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -19
- फरमान जबराईल ल्याइया, बरारब से बीच हिंद । आए नूर झण्डा खड़ा किया, गया कुफर फरेबी फंद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -18
- फरमान तुमारा आवसी, सो हम पढ़ कर । देख इसारतें रमूजें, हम भूल जाएं क्यों कर || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -9
- फरमान बरदारी ल्यावे जोए, सिताब छुटकारा पावे सोए। जिनों कुरान की पाई खबर, तिनों कह्या यों दिल धर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -21
- फरमान मेरे मेहेबूब का, ले आया अर्स से रसूल । भेज्या अपनी अरवाहों पर, साहेब होए सनकूल || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -1
- फरमान हकें लिख भेजिया, दिया हाथ रसूल के । रूह अल्ला पर भेजिया, किन खबर न पाई ए || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -74
- फरमाया केतक फेर उठाए, तकब्बरों दोजख हमेसगी पाए । और जो कहे मोतिन के घर, सो खासी उमत साहेब के दर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -30
- फरमाया सरीयत तरीकत, किया रात बीच अमल । ना पोहोंचे बका दिन को, बिना हकीकत अर्स असल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -19
- फरामोस गुनाह दिल मोमिनों, सोई कुलफ गुनाह इनों दिल । याकी कुंजी दिल महंमद, सो टाले फरामोसी दे अकल || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -72
- फरामोस सख्प अजराईल, मौत हुकम सिर सबन । जिन वजूद धस्या खेल में, आए लेत कौल पर तिन || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -20
- फरामोस हुइयां लाहूत से, रूहअल्ला संदेसे देवत । ए मेहेर लेवें मोमिन, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -6
- फरामोसी कुलफ की, कुंजी इलम बेसक || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -67
- फरामोसी क्यों होएसी, क्या ज्दे होसी मांहें खेल । तुमको क्यों हम भूलेंगें, ए कैसी है कदर लेल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -38
- फरामोसी तुम किन दई, अब तुमको कौन जगाए। इन बातों नींद क्यों रहें, जो होवे अर्स अरवाए || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -21
- फरामोसी दई जिन वास्ते, हाँसी भी वास्ते इन । इस्क ले ले हँससी, कयामत बखत मोमिन || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -57

- फरामोसी हके दई, सो वास्ते हाँसी के। हाए हाए घाव न लागहीं, सुन के सब्द ए || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -2
- फरामोसी हम को क्या करे, फेर कह्या रूहन । हम अरवाहें अर्स-अजीम की, असल बका में तन || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -8
- फरिस्ता कतरे नूर से, लानत दीनी ताए । सो मोमिन जाहेर करके, हुकमें सिजदा कराए || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -40
- फरिस्ता चौदे तबकों, फिरवल्या सब पर । हुकम चलाया अपना, कोई रह्या न ताबे बिगर || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -28
- फरिस्ता जबराईल, पैगंमरों सिरदार । सो मांहें पैठ ना सक्या, अर्स अजीम द्वार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -70
- फरिस्ता नजीकी बुजरक, किया सब जिमी सिजदा जिन । दई लानत न किया सिजदा, रद किया वास्ते मोमिन || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -34
- फरिस्ते अर्स सूरत नहीं, इनों जुदी असल । पैदास कही फरिस्तन की, पेड़ से नकल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -44
- फरिस्ते देव जिंन आदमी, ए जो चौदे तबक । पैदा फना हो जात है, नूर के पलक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -55
- फरिस्ते नजीकी जो बुजरक, साथें हुकम धनी का हक । उतरे लैलत कदर के माहें, तीन तकरार रात के जाहें || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -23
- फरिस्तों अजाजील सिरदार, अबलीस जिनों वकील । पोहोंचाया सबों सय दिलों, पलक न करी ढील || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -39
- फरे खटरूत ऊष्णकाल, वरखा ने सीतकाल । नखत्र तारे फरे मंडल, फरे जीवने जंजाल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -23
- फरेब कछुए ना रह्या, रोसन उमत करी जब । हक अर्स जाहेर हुआ, तब कायम दुनी हुई सब || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -68
- फरेब की तो तुम सुनी, थिर चर चौदे तबक । खेल खावंद जो त्रैगुन, सब सब्द बान पुस्तक || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -4
- फरेबी लिए जाए, मेरी रूह तं आँखें खोल । बीच बका के बैठके, तें किनसों किया कौल || ग्रं - किरन्तन, प्र -111, चौ -1
- फल डारें अगोचर, आड़ी अंतराए पाताल । वैराट वेद दोऊ कोहेड़ा, गूंथी सो छल की जाल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -2
- फल डाल अगोचर, आडी अंतराय पाताल । वैराट वेद बने कोहेडा, गूंथी ते रामत जाल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -5
- फल डाल अगोचर, आड़ी अन्तराए पाताल । वैराट वेद दोऊ कोहेड़ा, गूंथी सो छल की जाल || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -5

- फल फूल छाया पात की, खुसबोए जिमी और बन । आकास भरयो नूरसों, किया रेत बन रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -20
- फल फूल बन पसु पंखी बेहेकत, कोई चीज न बिना खसबोए । सदा सुगन्ध सबे सुख दायक, याकी सिफत किन बिध होए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -34
- फल रोप्यो आंबो तमतणो, वाड कांटा कुटंम पाखल । बीजो झांपो रखो करे, काई स्यो रे सनमंध तेसुं फल || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -41
- फल वस्त जे भारे वचन, जीव पण न कहे आगल मन । ते प्रगट कीधां अपार, जे काई हुतो आपणो सार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -10
- फल वस्त जो भारी वचन, जीव भी न कहे आगे मन । सो प्रगट किए अपार, जो हुता अखंड घर सार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -10
- फलक चीज केहेते हैं हक, हुआ चाहिए दोऊ देखो विवेक । महंमद ले उठे उमत खास, सो तो पोहोंचे साहेब विलास || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -17, चौ -7
- फिट फिट आसा तूं भई माया की, बैठी मोहजल में आए । मैं माया में अखंड फल पाया, सो मोहे दियो हराए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -100
- फिट फिट जोधा जोरावर तुमको, मद मत्सर अहंकार । तुम अंतराय करी धनीसों, दौड़ करी संसार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -51
- फिट फिट भंडा गुण कहूं तिवरता, मूने मल्या ता धाम धणी । एवो अवसर कोई निगमे , तें कीधी मोसूं भंडी घणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -106
- फिट फिट भंडी आसा तूं थई सागरनी, धणी मेल्या विसारी । जीवने सुफल जे हाथ लागू, मूंडी ते तूं बेठी हारी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -100
- फिट फिट भंडी न आई तीव्रता, मोहे मिले थे धाम धनी । ऐसा विलास खोया तें मेरा, बोहोत बुरी करी घनी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -106
- फिट फिट भुंडा स्वाद कहूं तूंन, मूने मल्याता मीठा आधार । एह स्वाद मेलीने रे सोखिया, तूं स्वाद थयो संसार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -74
- फिट फिट भुंडी तृष्णा अभागणी, तूं निबल थई निरधार । बीजा गुण सघला तृपत थाय, पण तूंने कोई भावठ नां भंडार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -39
- फिट फिट भुंडी तें दा चूकवयो, हवे करे कांईयक बल । जीवनजी मलया जीवने, तूं थाय संसारमा नेहेचल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -30
- फिट फिट भुंडी तें भुलाई, अब कर कछू बल । आतम दृष्ट जुड़ी परआतम, हो माया माहे नेहेचल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -30
- फिट फिट भुंडी दुष्ट पापनी, तोको दई अनेक धिकार । पेहेले अवसर गमाईया, अब नीके निरखो भरतार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -26
- फिट फिट भुंडी दुष्ट पापनी, हवे तजूं तुझने निरधार । आगे ते अवसर चूकवयो, हवे निरखू जीवनो आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -26

- फिट फिट भूडे दुष्ट अभागी, मोहे करायो धनीसों ब्रोध । मैं जान्या था सखा मेरा, पर तें कमल फिराया क्रोध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -77
- फिट फिट रे गुण तमने, ए अंग ना प्रेम काम । नव लाध्यो विरह रे, विछड़तां धणी श्री धाम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -12
- फिट फिट रे तुंबड़ी, भुंडी केम रही रे साजी । साखला न थई रे, एहरण घण बचे लागी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -21
- फिट फिट रे प्रेमल, नासिका केम रही। ए निध जातां अंगथी, विछडी नव गई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -10
- फिट फिट रे भंडा तूं सब्द, क्यों आई मुख बान रे । वाओ ना लगी तिन दिस की, निकस ना गए क्यों प्रान रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -2
- फिट फिट रे भुंडा जीव अजाण, तारी सगाई हती निवाण । रे मूरख तूंने सूं थy, ए निध जातां काई पाडूं नव रहयूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -75
- फिट फिट रे भुंडा जीव, ए तें की– रे सूं । ए विरह देखी रे अंगथी, उडी न पडियो रे तूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -69
- फिट फिट रे भुंडा तूं सब्द, केम आवी मुख वाण । वाए न आव्यो ते दिसनो, धणी भेला चालतां मारा प्राण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -2
- फिट फिट रे भुंडी तूं बुध, तें क्यों ना करी अखंड घर सुध । महादुष्ट तूं अभागनी, ना सुध दई जीव को जाते धनी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -25
- फिट फिट रे मेरी आतमा, तें क्यों खोई निध आई हाथ रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -69
- फिट फिट रे सैन्या तुमको, क्या न हुती तुमे पेहेचान रे । जाते जीव का जीवन, तुम क्यों ले न निकसे प्रान रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -29
- फिट फिट लज्या तूं थई लोकिक नी, बीजा बांध्या कुटमसों करम । धाम धणी मूने तेडवा आव्या, तिहां तूने न आवी सरम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -96
- फिट फिट लज्या तूं भई लौकिक, बांधे कबीले सों करम । धनी मेरे मोहे आए बुलावन, तित तोहे न आई सरम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -96
- फिरका जो तेहेत्तरमां, कहया नाजी हक इलम । मोमिन दिलों पर लदुन्नी, लिख्या बिना कलम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -99
- फिरके इकहत्तर मूसा के, हुए ईसा के बहत्तर । एक को हिदायत हक की, यों कहया पैगंमर || ग्रं - खुलासा, प्र -6, चौ -16
- फिरके नारी तो कहे, ए जो बीच कुरान । बहत्तर बांटे होए के, सबे हुए हैरान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -1
- फिरके बनी असराईल, हुए पीछे मूसा महत्तर । एक नाजी नारी सत्तर, कहे फुरमान यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -2

- फिरके सबों ने यों कया, ए जो दुनियां चौदे तबक । ढूंढ़ ढूंढ़ के हम थके, पर पाया नाहीं हक || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -2
- फिरत चिरागां इन में, एक चांद दूजा सूर । ए तो सोर सेहेरन का, नहीं रोसन वतनी नूर || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -45
- फिरता पेड़ जो पहाड़ का, तले बन्या सकड़ा ए। फिरते थंभ चौड़े चढ़े, जाए फैल्या आसमान में जे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -26
- फिरती गिरदवाए चांदनी, नवों भोम झरोखे । गिरदवाए विचारी गिनती, छे हजार हर हार के || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -88
- फिरते आए घाट लग, चारों घाट बराबर । कम ज्यादा इनमें नहीं, अब देखो पाल अंदर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -84
- फिरते थंभ जो चौसठ, चारों तरफों द्वार । दो दो सीढ़ी आगू द्वारने, सोभित हैं अति सार || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -85
- फिरते बन धाम विराजे, ऊपर आए रया लग छाजे । चारों तरफों फूले फूल बन, कई रंग सोभा अति घन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -46
- फिरते मोती सोभित, माहे मानिक पाच कुंदन । हीरे लसनिए नीलवी, सातों अम्बर करे रोसन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -73
- फिरते मोहोल अति बने, कई मोहोलातें जे । कई रंगों चरनी बनी, सब एक जवेर में ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -33
- फिराए दिए सब फिरके, सब आए बीच हक दीन । भिस्त दई हम सबन को, ल्याए सब हक पर आकीन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -8
- फिराक सुनते हक की, वजूद पकड़े क्यों इत । जो रूह असल वतन की, ए नहीं तिन की सिफत || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -28
- फिरी पसां जा पाण अडां, त करियां कांध से दानाई । तडे अची लिकां थी तो तरे, चुआंए डिंनी धणीजी आई || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -33
- फिरे जहां थे नारायन, नाम धराया निगम । सुन्य पार ना ले सके, हटके कह्या अगम || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -40
- फुन्दन बन्ध अति सोभित, मांहें रंग अनेक झलकत । ए सेत हरे के बीच में, मांहें नरम झाबे खलकत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -218
- फुरकान दई हारून को, सो देखो कौल आखिर । कोई कहे ए किस्से हो गए, सो कहे बेकौली बेखबर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -56
- फुरमाए कलाम सब रूहों को, ए मोमिन करें सहूर । इन अंधेरी से निकस के, क्यों न जैए पार नूर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -105
- फुरमान आया इनों पर, अहमद इनों सिरदार । हक बिना कछुए ना रखें, इनों दुनियां करी मुरदार || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -133

SPJIN

- फुरमान आया इमाम पर, कुंजी रूह अल्ला इलम । खुली हकीकत हुकमें, इसारतें रमूजे खसम || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -88
- फुरमान एक दूसरा, सुकजी ल्याए भागवत । ए खोल सके न त्रैगुन, यामें हमारी हकीकत || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -10
- फुरमान कोई न खोल सके, सो भी इस्क कारन । खिताब दिया सिर एक के, सो भी वास्ते इस्क मोमन || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -38
- फुरमान जाहेर पुकारहीं, बीच हिंदुओं भेख फकर । पातसाही करसी महमद, आखिरी पैगंमर || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -33
- फुरमान जाहेर सूरत देखावहीं, सो माएने न ले दिल अंध । पढ़ें अपनी अकलें, पाड़ी दुनियां दोजख फंद || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -18
- फुरमान दूजा ल्याया सुकदेव, सो ढांप्या था एते दिन । सो प्रगट्या अपने समें पर, हुआ हिंदुओं में रोसन || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -45
- फुरमान देख के मैं डरी, देख रूहअल्ला पर गुना । ए खासी रूह खुदाए की, मोमिनों रहया न आसंका || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -6
- फुरमान नूर के पार का, सो क्यों कर इनों समझाए । ए माएने रोसन तब होवहीं, जब बैठे इमाम इत आए || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -27
- फुरमान भेज्या किन ने, ल्याए ऊपर किन । कौन लेके आइया, मांहें क्या खजाना धन || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -16
- फुरमान भेज्या जुदे होए, देने को साख दोए । सो मेहेर धनी की मैं ही जानों, और न समझे कोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -97, चौ -14
- फुरमान भेज्या हकें इस्कें, इस्कें लिखी इसारत । तुमें कुन्जी दई हकें इस्कें, खोलने हक मारफत || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -37
- फुरमान महंमद ल्याइया, किया अति घना सोर । कया रब आलम का आवसी, रात मेट करसी भोर || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -26
- फुरमान रसूल ले आइया, रूहअल्ला संदेसे । असल इलम दे दे थके, अजूं न आवे अकल में ए || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -79
- फुरमान लिखू तुमको, और भेजोंगा पैगाम । तुम कहोगे किन भेजिया, किनके एह कलाम || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -65
- फुरमान लिख्या इन विध का, जो पढ़ के देखें ए। एक जरा सक न रहे, तबहीं जागें हिरदे || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -42
- फुरमान ल्याए महंमद, किन खोली न इसारत । तब रूहें आई न थी, तो पीछे फेर करी सरत || ग्रं - किरन्तन, प्र -111, चौ -8
- फुरमान ल्याए महंमद, सब लिखी हमारी बात । जरा एक ना घट बढ़, सब अंग निसानी जात || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -26

- फुरमान ल्याया जो रसूल, पर समझया नाहीं कोए । जिन खातिर ले आइया, ए समझेगी रूह सोए || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -1
- फुरमान ल्याया दूसरा, जाको सुकजी नाम । दई तारतम ग्वाही ब्रह्मसृष्ट की, जो उतरी अब्बल से धाम || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -5
- फुरमान ल्याया रसूल, तिनमें अल्ला-कलाम । सो भेज्या मोमिनों पर, अंदर गुझ अलाम || ग्रं - सनंध, प्र -1, चौ -6
- फुरमान ल्याया हक का, महंमद आया किन ऊपर । एती खबर किने ना करी, जोलों हुई आखिर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -64
- फुरमान हाथों ना छूटहीं, जोलों पाइए हक वतन । मासूक वतन पाए बिना, दरद ना जाए निसदिन || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -28
- फुरमाया कहूं फुरमान का, और हदीसे महंमद । मोमिन होसी सो चीन्हसी, असल अर्स सब्द || ग्रं - खुलासा, प्र -6, चौ -1
- फुरमाया सब हो चुक्या, मिले सब निसान । हादी करसी जाहेर, खोल माएने मगज कुरान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -9
- फुरमाया सो सब हुआ, ऊपर अपनी सरत । कौल रसूल के फिरवले, आई ए आखिरत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -29
- फुरमाया सो सब हुआ, जो कछू कह्या महंमद । तो जो किया रूहअल्लाने, दज्जाल को रद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -27
- फूंदडी मेलीने हाथ, चटकासं घाली बाथ । रामत करे निघात, कंठ बांहोंडी फरे साथ, रंगे प्राणनाथ || ग्रं - रास, प्र -38, चौ -11
- फूल कटाव कई बीच में, कई विध के नकस । इन के बीच में मानिक, गिरदवाए नीलवी सरस || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -111
- फूल कमल कई पसम, कैसी कोमल दुनी इन । फूल अत्तर चोवा मुस्क, और जोत हीरा जवेरन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -64
- फूल कहूं कई रंग के, गिनती न आवे सुमार । ना गिनती रंग पात की, खूबी क्यों कहूं इनों किनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -45
- फूल झालों के मुख पर, सोभा लेत अति नंग । तिन नंगों जोत उठत है, तिनके अनेक तरंग || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -67
- फूल पात जो कोमल, रगाँ तिनमें कोई नाहें । तिनके सेज चबूतरे, कई बने जो मोहोलों माहे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -16
- फूल फूल कई पांखड़ी, तिन हर पांखड़ी कई नंग । नंग देख नंग हँसत, फूल फूल के संग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -23
- फूल फूल्या जेम वेलडी, ते तां विकसे सदा रे सनेह । वछूटे ज्यारे वेलथी, त्यारे ततखिण सूके तेह || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -42

- फेर अवसर आयो है मेरे, चित चेतन कीजे बल । रात दिन जगाए जीव को, जिन दे मिलने पल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -107
- फेर अवसर आयो है हाथ, चरने लाग केहेती हूं साथ । अब चरने लागूं धनी चितधरी, तुम खबर मेरी भली बिध करी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -14
- फेर आए रसूल स्याम मिल, सोई फेर आये यार । देख निसबत पांचों दुनीमें, क्यों छोड़ें असल अर्स प्यार || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -35
- फेर इनका भी कहूं बेवरा, ज्यों हिरदे आवे मोमिन । ए चौथा घाट अति सोहना, सुख होए अर्स रूहन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -74
- फेर इनों को पूछिए, क्या बेचून बेचगून । क्या है सुन्य निरंजन, कछू खबर न दई इन || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -17
- फेर कब जुदागी पाओगे, छोड़ के हक अर्स । बैठे खेल में पिओगें, हक इस्क का रस || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -34
- फेर कर भलो आयो अवसर, खुले भाग धनी चित में धर । आपन छोड़ने न करें संसार, पर धनी धाम बिछोहा न सहे लगार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -4
- फेर कहूं इनका बेवरा, ज्यों जाहेर सबों समझाए । अब कहूं इन भांतसों, ज्यों मोमिनों हिरदे समाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -45
- फेर कहूं तले बन की, जो बन बड़ा विस्तार । भर चबूतरे आणू चल्या, जाए पोहोंच्या केल के पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -1
- फेर कहूं पाल ऊपर, जो देखी माहें दिल । सो कहूं मैं अर्स रूहन को, देखें मोमिन सब मिल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -94
- फेर कहूं विध सकल, जासों सब समझाए । संसा कोई साथ को, मैं राख्यो न जाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -105
- फेर कहूं सुख तले बन के, ए बन बड़ा विस्तार । भर चबूतरे आणू चल्या, मिल्या मधुबन किनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -78
- फेर कहूं हरवटीय से, ज्यों सुध होए मुख कमल । हक मुख मोमिन निरखहीं, जिन दिल अर्स अकल || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -137
- फेर जवाब रूहन को, इन विध दिया हक । इस्क तुमारा भले है, पर मैं तुमारा आसिक || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -4
- फेर तीसरी बेर दुनी कर, जिनमें होसी फजर । सब विध बेसक करके, तुमें खेल देखाया और नजर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -5
- फेर तुम लेत वाही की अकल, पर क्या करो तुम जो वाही की नसल । तुम दज्जाल बाहेर ढूंढ़त, वह दिल पर बैठा ले लानत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -18
- फेर तुम हमको अकल दई, मैं खदी पकड़ी सोए । जो जैसी करेगा, तैसी पावेगा सोए || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -46

- फेर तूं चरखा उतावला, करके अंग कूवत । तूं लेसी सोहाग धनीय को, तेरे बारीक इन सूत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -27, चौ -8
- फेर दई हमें मेहेर कर, मूल मेले की लज्जत । क्यों न जागें रूहें ए सुन के, जाकी इन हकसों निसबत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -9
- फेर दिया इलम अपना, जासों फरामोसी उड़ जाए । खेल में मता सब अर्स का, इलमें सब विध दई बताए || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -51
- फेर देख नूर भोम दस का, होए हिरदे नूर जहूर । महामत मोमिन नूर का, नूर देखे अर्स सहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -57
- फेर देखिए नूर द्वार को, मोहोल नूर चौक झलकत । रूहें खेलें खुसाली नूर में, नूर नूरै में मलपत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -80
- फेर देखिए फूल बाग लों, हर मंदिर मेहेराव दोए । बीच बीच उचेरा झरोखा, कहूं किन मुख सोभा सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -27
- फेर देखो जो नजरों, तो रेहेसी न्यारे दुख । करोगे इत खेल रंगे, विनोद बातें मुख || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -27
- फेर देखो सुपन को, तो अजूं रह्या है लाग । फरामोसी नींद ना गई, जानों किन ने देख्या जाग || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -18
- फेर नूर दिवालों देखिए, नूर बन झरोखे जित । नूर खिड़की नूर द्वारने, देख्या नूर बिना न कित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -55
- फेर पटकोगे हाथड़े, और छाती देओगे घाउ । चल जासी पिउ हाथ से, फेर न पाओगे दाउ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -5
- फेर पूछे सिव विष्णु को, कहे ब्रह्मांड और । और ब्रह्मांड की वारता, क्यों पाइए इन ठौर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -6
- फेर फेर इतहीं दौड़त, कहं ठेकत दौड़त गिरत । सब सखियां मिल तिन पर, फेर फेर हाँसी करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -47
- फेर फेर ए मुख निरखिए, फेर फेर जाऊं बलिहार । ए खूबी खुसाली क्यों कहूं, इन सुख नाहीं सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -48
- फेर फेर कह्या सौं खाई, अल्ला की साहेदी देवाई । खुदाए देखता है सबन, और जानता है सबन के मन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -21, चौ -5
- फेर फेर चरन को निरखिए, रूह को एही लागी रट । हक कदम हिरदे आए, तब खुल गए अन्तर पट || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -1
- फेर फेर दई ए बेसकी, याही वास्ते भेज्या इलम । जाने जिन भूलें रूहे खेल में, याद देने हक कदम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -68
- फेर फेर देखो धनी हेत की, फेर फेर रंग विलास । फेर फेर इस्क रस प्रेम की, देखो विनोद कई हाँस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -21

- फेर फेर ना आवे ए अवसर, जिन हाम ले जागो घर । थोड़े में कह्या अति घना, जान्या धन क्यों खोइए अपना || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -70
- फेर फेर पट खोलें हुकम, निसबत जान रूहन । हक मुख अंग इस्क के, ले देखिए अर्स अंग तन || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -1
- फेर फेर बन को देखिए, भांत चन्द्रवा जे । केहे केहे फेर पछतात हों, ऐसे झूठे निमूना दे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -62
- फेर फेर मेहेबूब देखिए, लगे मीठड़ा मुख मासूक । अंग गौर जोत अंबर लों, छब देख दिल होत न भूक भूक || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -87
- फेर फेर सरूप जो निरखिए, नैना होए नहीं तपित । मोमिन दिल अर्स कह्या, लिखी ताले ए निसबत || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -1
- फेर फेर सरूप जो निरखिए, फेर फेर भूखन सिनगार । फेर फेर मिलावा मूल का, फेर फेर देखो मनुहार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -20
- फेर फेर सुरत साधिए, धनी चरित्र सुख चैन । इस्क आए बेर कछू नहीं, खुल जाते निज नैन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -19
- फेर फेर हक अंग देखिए, ज्यों याद आवे निसबत । है अनुभव तो एक अंग का, जो हमेसा वाहेदत || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -66
- फेर फेर हक वाहेदत, फेर फेर हक खिलवत । फेर फेर सुख निसबत के, फेर फेर ए लई न्यामत || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -73
- फेर मांगी रसूलें रेहेमत, जिमी स्याम इमन को । तब फेर अर्ज करी आरबों, क्या है बरारबमों || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -2
- फेर मूल सरूपें देख्या तित, ए दोऊ मगन हुए खेलत । जब जोस लियो खेंच कर, तब चित चौंक भई अछर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -35
- फेर सुपन तरफ जो देखिए, तो मुरदे खड़े बोलत । बातें करें अकल में, ऐसा हुकमें देख्या खेल इत || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -22
- फेर हिसाब कर जो देखिए, तो गुनाह रूहों आवत । ए बेवरा है कलस में, मोमिन लेसी देख तित || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -158
- फैल हाल न देखें अपने, कहें अजाजीलें फेस्या फरमान । अपनी दोजख देवें औरों को, पर हक पे सब पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -32
- फैलाव ऊपर का न करूं, नेक देऊं मगज बताए । ज्यों वतन की सुध परे, सब पकड़ें इमाम के पाए || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -9
- फोड़ ब्रह्मांड आड़े आवरण, ताए पोहोंचावे अछर पार रे । सुख अखंड अछरातीत के, कौन देवे बिना इन भरतार रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -63
- फोफल काथो चूना जावंत्री, केसर कपूर घाली । ऊपर लवंग दई करी, पान बीडी वाली || ग्रं - रास, प्र -46, चौ -17

- फौज फरिस्तों की भरी नूर, असराफील बजावे सूर । और तीसमें सिपारे एह बयान, इन्ना इन्जुलना सूरत परवान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -22

ब

- बका अर्स में जूदागी, सो तो कळू न होए । ए बेबरा नहीं वाहेदत में, होए कम ज्यादा बीच दोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -31
- बका अर्स हक सूरत, हुआ नूर रोसन । सो ए सरत जाहेर हुआ, फरदा रोज का दिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -40
- बका अव्वल से अबलो, किन किया न जाहेर सुभान । नेक कहूं सो बेवरा, ज्यों होए हक पेहेचान || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -4
- बका आड़े पट करों, तुम देख न सको कोए । झूठे मिलावे कबीले, तुम देखोगे सब सोए || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -49
- बका ऊपर बंदगी, करावसी इमाम । हक गिरो हम आए के, करें कजा तमाम || ग्रं - किरन्तन, प्र -111, चौ -10
- बका करी जो दुनियां, दिया सब को हक इलम । सो इलम सिफत करे हमारी, हुकमें किया वास्ते हम || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -46
- बका चाहे सो फना होए, बिना फना बका न पावे कोए। छोड़ो नाचीज जो कमतर, ताथें फना होउ बका पर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -26
- बका चीज जो कायम, तिन जरा न कबूं नुकसान । जेती चीज इन दुनी की, सो सब फना निदान || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -43
- बका जिमी जल तेज वाए, और बका आसमान । आपन बैठे वाही अर्स में, पर नजरों देखें जहान || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -106
- बका तरफ कोई न जानत, ए जो चौदे तबक । सो रात मेट के दिन किया, पट खोल अर्स हक || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -9
- बका तरफ कोई न जानत, पढ़े ढूंढ़ ढूंढ़ हुए हैरान । सो बका हदें सब बेवरा किया, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -39
- बका तरफ न पाई काहू ने, तो द्वार खोले क्यों कर । क्यों बका बिन बड़े कहे रातमें, क्यों किन तरफ न कहीं पैगंमर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -91
- बका न चौदे तबक में, न पाया त्रैलोकी त्रैगुन । सेहेरग से नजीक देखाइया, ऐसा इत इलमें किया रोसन || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -11
- बका पट किने न खोलिया, अव्वल से आज दिन । हाए हाए तन न हुआ टुकड़े, करते जाहेर ए वतन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -136
- बका पोहोंच्या एक महंमद, कही जिनकी तीन सुरत । तित और कोई न पोहोचिया, जो लई इनो बका खिलवत || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -73

- बका फना का बेवरा, पाया मगज सबका ए। हादी रूहें अर्स से इजने, लैलत कदर में उतरे || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -3
- बका बीच रूहन को, खेल देखावें हक । आया गया इत कोई नहीं, ए इलम कहे बेसक || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -84
- बका सब्द मुख सब के, सो इलम सब में गया पसर । सब्द फना को न देवे पैठने, ऐसा किया बखत रूहों आखिर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -40
- बका सुकन सब मेयराज के, जाहेर किए सब में । सब अर्स बका मुख बोलहीं, और सुकन ना गिरो से || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -38
- बका सूरत पर बंदगी, करी इमामें इमामत । दोऊ अर्स बताए दोऊ गिरोह को, करी महंमद सिफायत || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -56
- बका से आए रूह अल्ला, और महंमद मेंहेंदी इमाम । मैं जो करी मजकूर, सो देसी साहेदी तमाम || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -76
- बंके नैन समारे सर बंके, बंकी सारस भौं बंकी । बंके बैन लगत बान बंके, बंकी चलत बंक लंकी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -47
- बंके भौं भृकुटी लिए, सोभित गौर अंग । अंग अंग भूखन भूखन, करत माहों माहे जंग || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -65
- बखत महमद के उठने, और आवे अस्हाब । तब सो खोले मुसाफ को, पोहोंचे लग कोसे नकाब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -56
- बंगले विराजे बंगले, ए जो मोहोल तले ताल । बारे हजार बड़ी रूह ले, हकसों खेलत माहें हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -19
- बगलों कोतकी कटाव, और बंध बेल गिरवान । रंग जुदे जुदे झलकत, रस एकै सब परवान || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -203
- बगलों नकस केवड़े, कंठ बेली दोऊ गिरवान । ए जुगत जुबां तो कहे, जो कछू होए इन मान || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -44
- बगलों बेली फूल खभे, गिरवान बेली जर । पीछे कटाव जो कोतकी, रूह छोड़ न सके क्योंए कर || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -43
- बज वधु मिने खेलने, संग केतिक जाए । सांवरो इत दान लेने, करे आड़ी लकुटी ताए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -47
- बजलीला रात दिन अखंड, रासलीला अखंड रात रे । पिउजी बिना विवेक कौन केहेसी, हुआ प्रतिबिम्ब तीसरा प्रभात रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -41
- बंझापूत फूल आकास, और ससिक सिंग । कह्या वेद कतेब में, भंग न कछू अभंग || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -25
- बट पीपल की चौकियां, एक घाट लग हद । लंबी चांदनी फूल बाग लों, ए सोभा न आवे माहें सब्द || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -35

- बट पीपल की चौकियां, चारों भोम हिंडोले । ए सुख कब हम लेवेंगे, हक हादी रूहें भेले || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -24
- बट पीपल की चौकियां, हक हादी रूहें हींचत । रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -26
- बट पीपल चारों चौकियां, ऊपर छातें भी चार । अंबराए बिरिख अनेक बन, निहायत रोसन झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -32
- बट पीपल निकट बनराए, सो देखे न दृष्ट अघाए । ज्यों ज्यों देखिए त्यों त्यों सोभाए, पेहेले थे पीछे अधिकाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -45
- बट बेठा न सुणो, न की न्हास्यो नेणन । न पुजी सगा पांध के, न की सुणियां कनन || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -42
- बड़के फना हो गए, और हाल होत फना । आखिर फना सब पीछले, जाए गिनते रात दिना || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -39
- बड़के हमारे कदीम के, पूजत आए ए। सो क्यों छूटे हमसे, ख बाप दादों का जे || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -22
- बडर वंजे वीटियो, डिस न डिसे कांए । मालम मतू मुझियूं, झूडें मीह मथाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -11
- बड़ा अचरज इन हुकम का, मुरदे राखत जिवाए । मौत सरबत निस दिन पीवै, सो मुरदे रखे क्यों जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -92
- बड़ा इस्क सबों अपना, कहया रूहों रब्द कर । तिलसम तो देखाइया, पावने पटंतर || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -44
- बड़ा कहया इन माएनों, करी रोसन आकास जिमी । सौ गज कहे सौ तरफों के, दौड़े खाहिस दिन आदमी || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -24
- बड़ा कहया सब चीज से, और आजूज सौ गज का । चाटे दिवाल अष्टधात की, कहे सुबा तोडूं इन्साअल्ला || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -5
- बड़ा कहया सब चीजों से, ले जिमी लग आसमान । दिन बीच दुनी की दौड़त, सौ तरफ खाहिस जहान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -23
- बड़ा चौक सोभा लेत हैं, बड़े दरवाजे अंदर । बड़ी बैठक इत गिरोह की, आगू रसोई के मन्दिर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -1
- बड़ा जाहेर ए माएना, कहे हक में ल्याया फरमान । इन कलमे की दोस्ती, कहया मिलसी रेहेमान || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -4
- बड़ा दरवाजा इनमें, बीच दोए हांस इन । भोम तले लग चांदनी, ए खूबी अति रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -41
- बड़ा फरिस्ता नजीकी, जाको रूहल अमीन नाम । जुलमत हवा तो उलंघी, जबरूत इन मुकाम || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -51

- बड़ा फरिस्ता मलकूत का, जाए सके ना जबरूत जित। सुनने हकीकत कुरान की, रखता नहीं ताकत || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -43
- बड़ा बन ऊँचे हिंडोले, तले हाथी जात आवत । कहूँ केते बड़े जानवर, इन चौगान खेल करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -83
- बड़ा बन मोहोल नूर का, ए नूर अति सोभित । जोए नूर आई पुल तले, सो क्यों कही जाए नूर सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -20
- बड़ा मेला इत होएसी, आए खुद खसम । बखत भला साहेब दिया, भाग बड़े हैं तुम || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -4
- बड़ा मोहोल चौक चांदनी, चांद पूरन रया छिटक । रात बीच सिर आवत, जब कबूं बैठे इत हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -157
- बड़ा सुख आगे मोमिन, पीछे सुख संसार । एक दीन सब होएसी, घर घर सुख अपार || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -45
- बड़ा होत है अचरज, बात जाग्रत माहें सुपना । जब कछू होवे जाग्रत, तब तो ए आगे ही से फना || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -13
- बड़ाई इन इलम की, क्यों इन मुख करों सिफत । सो आया तुममें मोमिनों, जा को सब्द न कोई पोहोंचत || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -55
- बड़ाई तुमारी बका मिनें, निपट दई निहायत । तुमें खुदा कर पूजसी, ऐसी और ना काहू सिफत || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -124
- बड़ाई नुकते इलम की, कहूं जाहेर न एते दिन । खोले द्वार खिलवत के, एही कुन्जी बका वतन || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -4
- बड़ियां ऊंची आसमान लों, और खूबी देत अति जोर । जोत जवेर अति झलकत, किनार दोऊ सीधी दौर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -51
- बड़ी गाल धणीयजी, लगी मथे आसमान । आंऊं रे पाणी भू सूकीयमें, खाधिम डुब्यूं पांण || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -33
- बड़ी दरगाह से नामें वसीयत, पुकार करी केती आए। तो भी न विचारे दिल मजाजी, जो ऐसे लिखे सखत सी खाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -30
- बड़ी बड़ाई अपनी, सुनी हमारी हम । हम दें मुक्त सबन को, जाए मिलें खसम || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -20
- बड़ी बड़ाई इन की, कोई नहीं इन समान । रहें हजूर हक के, ए निसबत करी पेहेचान || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -62
- बड़ी बड़ाई इनकी, जिन इस्कें चौदे तबक । करम जलाए पाक किए, तिन सबों पोहोंचाए हक || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -89
- बड़ी बड़ाई बड़ी साहेबी, बुजरक सदा बेसक । और सब याकें खेलौने, सब पर एकै हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -99

- बड़ी बड़ाई मोमिनों, जाके बड़े अंकूर । तो इन पर रसूल भेजिया, अपना अंगी नूर || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -53
- बड़ी बुजरकी हक की, तिन के खेल भी बुजरक । लिख्या वेद कतेब में, पर इनों न जात सक || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -88
- बड़ी बुध वाले जो कहावहीं, सो सीतल भए इन भांत । ना पेहेचान छल वतन की, सो सुन्य गले ले स्वांत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -38
- बड़ी बैठक इन चबूतरे, अति खूबी तिन पर । इत खूबी खुसाली होत है, जब खेलें बड़े जानवर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -57
- बड़ी बैठक जित होत है, इन बड़े देहेलान । ए कब देखाओ मेला बड़ा, मेरे वाहेदत बड़े सुभान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -19, चौ -10
- बड़ी बैठक पड़साल की, इत मेवा मिठाई आरोगत । कर सिनगार चरनों लगें, सबे इत बैठत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -38
- बड़ी भाखा एही भली, सो सबमें जाहेर । करने पाक सबन को, अंतर मांहे बाहेर || ग्रं - सनंध, प्र -1, चौ -16
- बड़ी भिस्त भी याही से, जो कही कजा के मांहें । तिन भिस्त के नूर की, बात बड़ी है ताहे || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -31
- बड़ी मत के जो धनी कहे, होए गए जो आगे । तिन भी धनी मिलन को, दुख धनी पें माँगे || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -7
- बड़ी मत सो कहिए ताए, श्री कृष्णजी सों प्रेम उपजाए । मत की मत तो ए है सार, और मत को कहूं विचार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -5
- बड़ी रूह कहे तुम सांची सबे, पर इस्क मेरा काम । अव्वल हक और रूहन सों, इन इस्कै में मेरा आराम || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -3
- बड़ी रूह कहे प्यारे मुझे, मेरा साहेब बुजरक । और प्यारी रूहें मेरे तन हैं, ए जानो तुम बेसक || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -6
- बड़ी रूह कहे मुझ में, हक का पूरा इस्क । रूहें प्यारी मेरी रूह की, इनमें नाहीं सक || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -10
- बड़ी रूह रूहें सामिल, हक बैठत इन ठौर । ए खूबी कहूँ मैं किन जुबां, इतथे जिनस चली और || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -14
- बड़ी रूहें देख्या हक को, हके देख्या सामी भर नैन । हाए हाए बात करते जीव क्यों रह्या, एह देख नैन की सैन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -93
- बड़ी सोभा अहेल किताब की, लिखी मिने कुरान । सो आरब जाने आपको, ए जो धनी फुरमान || ग्रं - खुलासा, प्र -14, चौ -9
- बड़ी हाँसी इत होएसी, जब सब होसी रोसन । खेल खुसाली इत होएसी, इस्क बेवरे इन || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -27

- बड़ीरूह रूहें नूर में, लें अर्स नूर आराम । नूरजमाल के नूर में, नूर मगन आठों जाम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -1
- बड़े घाट ताल के चार हैं, चारों सनमुख बराबर । दोऊ तरफ उतरती क्योहरी, तले आगू चबूतर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -22, चौ -2
- बड़े चार द्वार चबूतरों, क्यों कहूं देहेलानों सिफत । ए सुख लेवें मोमिन कदमों, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -59
- बड़े झरोखे तिन पर, तिन पर बड़े देहेलान । इत आए फजर पसु पंखियों, दीदार देत सुभान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -28
- बड़े दरखत कुण्ड लों, ऊपर छाया सीतल । अब दरखत मोहोलों माफक, दोऊ तरफों बीच जल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -9
- बड़े दरवाजे चौक के, एक सौ चवालीस । तैंतीस से बारे जमे, हर द्वार पौरी तेईस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -97
- बड़े देहेलान कचेहेरियां, बैठक बारे हजार । हक हादी रूहन की, नाहीं सिफत सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -3
- बड़े द्वार बड़े चबूतरे, इत सोने के कमाड़ । जड़ाव चारों द्वार ने, एक जवेर मोहोल पहाड़ || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -73
- बड़े नसीब रूहें अर्स की, जिन जावें खेलमें भूल । मोमिन वास्ते अर्स से, आए इमाम ईसा रसूल || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -81
- बड़े निसान आखिरत के, आजूज माजूज दोए । बेटे कहे याफिस के, इनहूं न छोड्या कोए || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -25
- बड़े पसु पंखी इन चांदनी, हक हादी मोहोला लेवत । रूहें ए चरन क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -56
- बड़े पहाड़ जो हिंडोले, बारे हजार बैठत । एकै छप्पर खटके, हक हादी साथ हीचत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -24, चौ -2
- बड़े बड़े ग्यानी गुनी मुनी, पर पाया न काहूं हारद । कथ कथ सब खाली गए, बिना एक महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -7
- बड़े बड़े पहाड़ मोहोल फिरते, बड़े बड़े के संग। छोटे छोटा जोत सों, करे नूर जोत सों जंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -9
- बड़े बड़े सुभट सूरमें, पर हुआ न कोई मरद । जो सुध ल्यावे नूर पार की, बिना एक महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -14
- बड़े बयान बातें कई, जो हक जुबाएँ दिए इत । इत बेवरा कर जाए अर्स में, लेसी लज्जत बीच खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -22
- बड़े मेहेराव बराबर, एक दूजे को लगता । हांस चालीस ऊपर चबूतरे, सोभा न आवे सब्द में बका || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -79

SPJIN

- बड़े मोहोल जो पहाड़ से, इत रूहें खेलें कई जुगत । सो सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -51
- बड़े लम्बे टेढ़क लिए, अति अनियां सोभे ऊपर । सीतल करूना अमी झरे, मद रंग भरे सुन्दर || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -13
- बड़े सात निसान आखिर के, जासों पाइए कयामत । खिताब हादी जाहेर कर, दई सबों को नसीहत || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -8
- बड़े सुख मोमिन लेवहीं, रस इस्क पिएं भर भर । औरों को भी पिलावहीं, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -31
- बढ़त बढ़त प्रीत, जाए लई धाम की रीत । इन विध हुई है इत, साथ की जीत || ग्रं - किरन्तन, प्र -83, चौ -6
- बढ़त बढ़त मेहेर बढ़ी, वार न पाइए पार । एक ए निरने में ना हुई, वाको वाही जाने सुमार || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -6
- बताए देऊ बिध सारी, बृज बस्यो जिन पर । अग्यारा बरस लीला करी, रास खेल के आए घर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -11
- बत्रीस करीने दस अंतज करूं, ए गुण एकांत मारा चितमां धरूं । मध गुण करूं त्रेतीसज करी, रखे कागल स्याही लेखणो जाय वरी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -26
- बंदगी ए करसी कबूल, एक की हजार देवें इन सूल । ए दूजा जामा ईसे का होए, बातून माएने पाइए सोए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -13
- बंदगी एही है बुजरक, दूजी पाक गिरो बीच हक । गिरो मोमिन जमे करें, छे सिफतें वारसी धरें || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -35
- बंदगी का फल मांगिया, नूरी फरिस्ते हक पे । तिन बदले दुनी सब दोजख, क्यों डारी जाए आग में || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -55
- बंदगी जिकर मेहेर की, ए मेहेर हक हुकम । रूहें बैठी मेहेर छाया मिने, पिएं मेहेर रस इस्क इलम || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -17
- बंदगी मजाजी और हकीकी, ए जो कहियाँ जदियां दोए । एक फरज दूजा इस्क, क्यों न देख्या बेवरा सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -17
- बंदगी रूहानी और छिपी, जो कहीं साहेदी हजूर । ए दोऊ बंदगी मारफत की, बीच तजल्ला नूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -42
- बंदगी वजूद नफसानी, नासूत बीच सरियान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -38
- बंदगी वाले खुदाए राखत, बलाए सेती सलामत । कजाए का सिर लेओ हुकम, हक मिलावे को रूह तुम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -23
- बंदगी सरीयत की, और हकीकत बंदगी । नासूत दुनियां अर्स मोमिन, है तफावत एती || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -55

- बंदियां खूब खुसालियां, जाए फिरें ज्यों मन । काम कर दसों दिस, आए खड़ियां वाही खिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -62
- बदी न छोड़ें एक पल, डर न रखें सुभान । फैल करें चित चाहते, कहें हम मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -45
- बंध चोवीस बीजा एनी जोडे, वली पंच इंद्रीने नव अंग । त्रणे पख त्रणे गुण करी रे, ए बंध बांधी दुख लीधा रे अभंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -16
- बंध छोडे जई आकार ना, मोटी मत धणी जे कहावे । पण बंध बंधाणां जे अरूपी, ते तां दृष्टे केहेनी न आवे || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -58
- बंध जो बांधे या बिध, हर वस्त के बारे नाम । सो बानी ले बड़ी कीनी, ए सब छल के काम || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -6
- बंध ना खुले बिना बंधे, जो खोले फेर फेर । ए बुत कुदरत देख के, गैयां आप खसम बिसर || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -23
- बंध प्रभुसों न बांधया रे, त्यारे केणी पेरे आवे तेह । रदे विचारी जोइए जो, बांध्यो छे केसुं नेह || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -27
- बंध बांधे या विध, हर वस्त के बारे नाम । सो बानी ले बड़ी कीनी, ए सब छल के काम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -4
- बंध बांध्या वेदव्यासें, वस्त मात्रना नाम बार । ते वाणी वखाणी व्याकरणनी, छलवा आ संसार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -4
- बध विना जीव बेसुध थासे, माथे पडसे मार । बांधेल बंध ताणसे बलिया, विसमसे नहीं खिण वार || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -69
- बन के मोहोल से चलिया, जानों तले ऊपर एक छात । छात दूजी घर पंखियों, बन ऊपर बन मोहोलात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -76
- बन गिरदवाए अर्स के, और एही गिरदवाए ताल । एही गिरदवाए जोए के, जुबां कहा कहे खूबी जमाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -10
- बन गिरदवाए अर्स के, देख आए आगू द्वार । केहे ना सकों हिस्सा कोटमा, अर्स बन कया अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -85
- बन छाया दीवाल लग, झूमत झरोखों पर । ठाढ़े होए के देखिए, आवत चांदनी लो नजर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -87
- बन छाया है मोहोल जो, इत मोहोल बने बन के । जानो सोभा सब से अतंत है, सब सुख लेती रूहें ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -25, चौ -1
- बन जंगल या जिमी, एक दूजे से प्रकास । विचार देखो ए मोमिनों, नूर कैसा भया आकास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -24
- बन जो दोऊ किनारों, साम सामी सोभात । हारें चौकी पांच हार की, पोहोची पुल पर छात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -18

SPJIN

- बन दोऊ किनारे ले चल्या, ऊपर बराबर जल । कोई आगे पीछे दोऊ में नहीं, एक दोरी पात फूल फल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -26
- बन नूर के फिरवल्या, एही छाया है तित । इन जुबां ए बरनन, क्यों कर करूं सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -12
- बन नूर नेहेरें ह्यपी चली, कई नेहेरें बन नूर विस्तार । कई नूर नेहेरें मिली सागरों, कई नूर नेहेरें आवें वार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -7
- बन पाट जोत आसमान लों, सब देखत जल माहें । एक नयो अचंभोए बन्यो, केहेनी में आवत नाहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -28
- बन बड़ा पुखराज का, कई मोहोल बड़े अतंत । तिन परे बड़े बन की, जुबां कहा करसी सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -65
- बन बिगर की जो जिमी, जानों जरी दुलीचे बिछाए । ए दूब जोत आसमान लों, रया नूरै नूर भराए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -25, चौ -7
- बन बेली सब रोइया, और जंगल जानवर । कई पसु पंखी केते कहूं, जले जो दरदा कर || ग्रं - किरन्तन, प्र -75, चौ -7
- बन में फिर के देखिया, अर्स अजीम के गिरदवाए । एकल छाया बन की, तले जिमी जोत कही न जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -86
- बन मोहोल नेहेरें कहीं, इन जिमी विध कही न जाए । ए अर्स जवेर देख्या चाहे, सो ए बन देखो आए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -40
- बन मोहोल विलास को, सुख गिनती में आवत नाहें । ए न कछू जूबां केहे सके, चुभ रहत चित माहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -6
- बन लेवत सोभा पाले, कई हिंडोले लम्बी डालें । घाट पाट क्योहरी कई रंग, जल सोभा लेत तरंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -40
- बन विसेखे देखिए, मांहें खेलन के कई ठाम । पसु पंखी खेलें बोलें सुन्दर, सो मैं केते लेऊ नाम || ग्रं - किरन्तन, प्र -80, चौ -4
- बन सवे एक रस हैं, कई रंग बिरिख अनेक । रंग रस स्वाद जुदे जुदे, कहां लो कहूं विवेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -21
- बन सुन्दर अति उत्तम, सोभा लेत ए ठौर । ए बन छाया का देखे पीछे, जानो ऐसा न कोई और || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -23
- बनथें आए सिनगार कर, संझा तले भोम मन्दिर । आरोग चढ़े भोम चौथी, खेलें नवरंगबाई की जुत्थी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -141
- बनाए कबूतर खेल के, ज्यों देखावे दुनियां को । यों देखावें सत गिरो को, ए जो पैदा कुंन सों || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -9
- बनी असराईल जिकरिया, एहिया यूसफ इस्माईल । बखत बदल्या दाऊद आए, हुए जाहेर नूर जमाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -14

- बंने कोहेडा बे भांतना, वैराट ने वली वेद । ए जीव जालों जाली बांध्या, जाणे नहीं कोई भेद || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -7
- बंने ब्रहमांड वचमां, सेर राख्यो छे सार । खबर न पडी केहेने, बेहदनो बार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -36
- बंने सरूप थया प्रगट, लई माहोमांहें बाथ । एक तारतम बीजी बुध, ए जोसे सनमुख साथ || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -87
- बन्ध बन्ध सब इस्क के, और इस्कै अंगों अंग । गुन पख सब इस्क के, सोई इस्क बोलें रस रंग || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -132
- बन्यो ताल के बीच में, चारों तरफों जल । बन झरोखे गिरदवाए, सोभित बाग मोहोल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -1
- बयान किए जो रसूलें, हम सोई लिए जाहेर । लाख बेर कहया रसूलें, जन जन सों लर लर || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -2
- बयान बड़े बोहोत निसान, तार्थें जुदे जुदे लिखे जात । एक दूजे के आगे जो कहिए, तो कागद में न समात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -2
- बरकत इन रूहन की, भिस्त देसी सबन । ले दे हिसाब फजर को, ले चलसी रूहें वतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -3
- बरकत कुंजी रूहअल्ला, हुआ बेवरा तीन उमत । पूरी उमेदे सबन की, जाहेर होते हक सूरत || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -34
- बरकत दुनियाँ और कुरान, और फकीरों की मेहेरबान । ए दरगाह से आया बयान, जबराईल ले जासी अपने मकान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -3
- बरकत हिन रूहनजी, सुख गिडां सभनी मुलक । सिफत न थिए हिन सुखजी, हे जा पेराई सभे खलक || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -26
- बरकरार किया हुकम बखत, ए इसारत जाहेर कही कयामत । ए फसल परहेजगार मोमिन, काफरों के तंबीह के दिन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -20
- बरन चारों विद्या चौदे, ए पढ़ाए भली पर । कर आवरण मोह नींद को, खेलावे नारी नर || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -12
- बरनन आसिक कर ना सके, और कोई पोहोंचे न आसिक बिन । हक जाहेर क्यों होवहीं, देखतहीं उड़े तन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -2
- बरनन करत हों चरन की, अर्स सूरत हक जात । ए नेक कहूं हक हुकमें, सोभा सब्द न इत समात || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -3
- बरनन करते जिनको, धनी केहेते सोई धाम । सेवा सुरत संभारियो, करना एही काम || ग्रं - किरन्तन, प्र -80, चौ -3
- बरनन कराए मुझपे, हमें सब अपने अंग । सो विध विध विवेक सों, सो गाया दिल रूह संग || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -1

- बरनन करूं एक पात की, सो भी इन जुबां कही न जाए। कोट ससि जो सूर कहूं, तो एक पात तले ढंपाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -20
- बरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत हक के दिल । जाको दिल में लेत हैं, तहां आवत न्यामत सब मिल || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -23
- बरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत है माहें हक । जाको निवाजें मेहेर में, ताए देत आप माफक || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -24
- बरनन करूं क्यों मेहेर की, सिफत ना पोहोचत । ए मेहेर हक की बातूनी, नजर माहें बसत || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -21
- बरनन करूं बड़ी रूह की, जो हक नूर का अंग । रूहें नूर इन अंग के, जो हमेसा सब संग || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -1
- बरनन करूं बड़ी रूह की, रूहें इन अंग का नूर । अरवाहें अर्स में वाहेदत, सो सब इन का जहूर || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -1
- बरनन करूं मैं इन जुबां, रंग नंग इतके नाम । ए सब्द तित पोहोंचे नहीं, पर कहे बिना भाजे न हाम || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -37
- बरनन करें बका हक की, हम जो अर्स अरवा । लेवें सब मुतलकियां, हम में रहे न कछू छिपा || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -58
- बरनन करो रे रूहजी, हकें तुम सिर दिया भार । अर्स किया अपने दिल को, मांहें बैठाओ कर सिनगार || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -1
- बरनन किया अर्स का, सो सब हिसाब असे के । गिनती सो भी अर्स की, ए बातें मोमिन समझेंगे || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -5
- बरनन किया बका हक का, मैं हुकम लिया दिल ल्याए । केहेते हैड़े की सलूकी, हाए हाए मेरी छाती न गई चिराए || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -103
- बरनन किया श्रवन का, जाके ताबे दिल हुकम । मासूक अंग बरनवते, हाए हाए मोमिन रहे क्यों हम || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -91
- बरनन किया हक सूरत का, रूह देख्या चाहे फेर फेर । एही अर्स दिल रूह के, बैठे सिनगार कर || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -3
- बरनन धाम को, कहूं साथ सुनो चित्त दे । कई हुए ब्रह्मांड कई होएसी, कोई कहे न हम बिन ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -1
- बरनन होए इलम से, जो इलम हक का होए । एक देखाऊं बातून में, जाहेर बरनवू दोए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -11
- बरना बरन वादे लड़ते, ब्रोध न छोड़ता कोए । चाल असत की चलते, हिंदू मुसलमान दोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -19
- बरन्यो न जाए या मुख, चित्त में लिए होत है सुख । बन में खेले टोले टोले, मोर बांदर करत कलोले || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -47

- बरस असी लगे ए रस, सारी पेरे सचवाना । लिया पिया साथ में, जिन जैसा जाना || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -88
- बरस नब्बे हजार पर, गुजरे एते दिन । कयामत लिखी कुरान में, सो ए न पाई किन || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -1
- बरस नव सै नब्बे हुए जब, मोमिन गाजी आए तब । रूहअल्ला आए तिन मिसल, दूसरा जामा होसी मिल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -12
- बरस निन्यानवेलों सरम, न करी जाहेर होए के गरम । बरस निन्यानवे कही हुरम, साथ ईसा के समझियो मरम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -15, चौ -2
- बरस पांच हजार पर, सात से सैंतालीस । होसी नेहेचल नूर नजरों, जित दिन हजार बरीस || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -8
- बरस मास और दिन लिखे, सरत भांत बिध सब । बड़ाई ब्रहमसृष्ट की, ए जो लीला होत है अब || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -57
- बरसे बयान राह वतनी, कही सूरत मेह इसलाम । गिरे भुने मुरग आसमान से, बनी असराईल पर तमाम || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -14
- बरस्या बादल नूर रोसन, गिरे आंझू सरमिंदे सबन । सब रोवें होवें पसेमान, एही हाल होसी सारी जहान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -18, चौ -10
- बराबर दोरीबंध ज्यों, फिरती पहाड़ किनार । सो इन मुख सोभा क्यों कहूं, झलकारों झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -38
- बराबर नेहेरें चेहेबच्चे, और बराबर दरखत । झूठी जुबां इन देह की, क्यों कर कहे ए जुगत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -26
- बराबर मोहोल के गिरद, बीच बीच पौरी द्वार । पौरी के तरफ सामनी, मोहोल दरवाजे चार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -80
- बल अलेखे इन का, कोई इनका निमूना नाहें । तो निमूना दीजिए, जो होवे कोई क्याहे || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -67
- बल करीने तमे ऊभा रहेजो, खससो तो हँससे तम पर । जो अमे चरण ग्रही नव सकूँ, तो सहु कोई हँससे अम पर || ग्रं - रास, प्र -27, चौ -4
- बल कहा कहूं कुंजीय का, ए जो झूठा खेल रंचक । सो रूहों सांच कर देखाइया, बन्ध बांधे कई बुजरक || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -40
- बल किया बलिऐं घना, द्वार द्वार पछटाना । पर साथे संघाती हद का, इत सो उरझाना || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -85
- बल कीधूं बलिए घणूं, द्वार द्वार पछटाणो । साथे संघाती हद तणो, ते तां पाछल तणांणो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -70
- बल क्यों कहूं इन कुंजीय का, जो हक दिल गझ इस्क । तिन दरियाव की नेहेरें, उतरी नासूत में बेसक || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -39

SRJN

- बल जाऊं मैं चरन कमल की, बल जाऊं मीठे मुख । बलिहारी सोभा सुंदरता, जिन दरसन उपजत सुख || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -10
- बल तो जुबां को है नहीं, ना कछू बुध को बल । ए जोगवाई झूठे अंग की, क्यों कहे सुख नेहेचल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -129
- बल बल छबीली छब पर, दंत तंबोल मुख लाल । बल बल आठों जाम की, बल बल रंग रसाल || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -52
- बल बल जाउं मुख हक के, सोभा अति सुन्दर । ए छबि हिरदे तो आवहीं, जो रूह हुकमें जागे अंदर || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -25
- बल बल जाऊं चरन के, बल बल हस्त कमल । बल बल नख सिख सब अंगों, बल बल जाऊं पल पल || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -54
- बल बल जाऊं मुख सलूकी, बल बल जाऊं रंग छब । बल बल जाऊं तेज जोत की, बल बल जाऊं अंग सब || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -82
- बल बल जाऊं मुखारके बिंद, वरनन करूं सरूप सनंध । वारने जाऊं नैनों पर, देखत हो सीतल द्रष्ट कर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -2
- बल बल जाऊं मैं दुलीचा चाकला, बल जाऊं मंदिर के थंभ । जिन थंभों कर धनी अपने, जगतें दिए बंध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -6
- बल बल तिरछी चितवनी, बल बल तिरछी चाल । बल बल तिरछे वचन के, जिन किया मेरा तिरछा हाल || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -51
- बल बल पियाजी के प्रेम पर, बल बल चितवन हेत । महामत बल बल सबों अंगों, फेर फेर वारने लेत || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -55
- बल बल बंकी पाग के, बल बल बंके नैन । बल बल बंके मरोरत, बल बल चातुरी चैन || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -50
- बल बल मीठे मुख के, अंग अंग अमी रस लेत । कई बिध के सुख देत हैं, पल पल में कर हेत || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -53
- बल बल सोभा सख्प की, बल बल वस्तर भूखन । बल बल मीठी मुसकनी, बल बल जाऊं खिन खिन || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -49
- बल बुध आसा उमेद, ए तुम राखी तुम पर । मुझ में मेरा कछू ना रया, अब क्या कहूं क्योंकर || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -19
- बल बुध न रही कछू उमेद, मेरो कोई अंग चलत नाहें । ऐसी उरझाई इन खेल में, एक आस रही तुम माहें || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -17
- बलगें विनोदें हमसों, देखते सब जन । पर कोई न विचारे उलटा, सब कहे एह निसन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -56
- बलि जाऊं पाटी पलंग सिराने, चादर सिरख तलाई । पौढ़त पिउजी ओढ़त पिछौरी, ऊपर चंद्रवा चटकाई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -5

SPJIN

- बलि बलि जाऊं चाल गति की, भूखन तेज करे झलकार । गिरदवाए मिलावा रूहन का, सब सोभा साज सिनगार || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -127
- बलिया बीक न आणे केहेनी, सांभले न काई देखे । साचा ए सूर धीर कहिए, जे ए दोख ने न लेखे || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -5
- बलियामां दीसे बल, अंग आछो निरमल । नेणां कटाछे वल, पापण चलवे पल, अजब अख्यात || ग्रं - रास, प्र -38, चौ -1
- बलिहारी जाऊं बोहोत बेर, देहरी मंदिर द्वार । वारने जाऊं इन जिमी के, जहां बसत मेरे आधार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -4
- बलिहारी महंमद की, बलिहारी मुसाफ । बलि बलि जाऊं काजी की, जिन आए किया इंसाफ || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -4
- बल्कि एही है बुजरक, किया खुदाए पैगंमर हक । ना कछू मेहेतारी ने पाले, बाप के ना हुए हवाले || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -12
- बसत सबे अर्स तले, कई पदमों लाख करोर । करत पूरी पातसाहियां, पसु पंखी दोऊ जोर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -30
- बसत सुखाले नरमाई में, आसमान लग रोसन । ए पांउं प्यारे मासूक के, जो कोई आसिक मोमिन || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -18
- बसरी मलकी और हकी, ए कही सूरत तीन । इनों किया हक इलम से, महंमद बेसक दीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -110
- बसरी मलकी और हकी, ए तीनों एक सूरत । ए तीनों महंमद की, बीच अर्स वाहेदत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -85
- बसरी मलकी और हकी, ए तीनों के जुदे खिताब । एक फुरमान ल्याई दूसरी कुंजी, तीसरी खोले किताब || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -8
- बसरी मलकी और हकी, कही महंमद तीन सूरत । करें सिफायत आखिर, खासल खास उमत || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -12
- बसरी मलकी और हकी, कही महंमद तीन सूरत । कारज सारे सिध किए, अव्वल बीच आखिरत || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -1
- बसरी मलकी और हकी, कही महंमद तीन सूरत । तामें दोए देसी हक साहेदी, हकी खोले सब हकीकत || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -25
- बसरी मलकी और हकी, जो कही महंमद तीन सूरत । दो देवे हक की साहेदी, फरदा रोज कयामत || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -19
- बसरी मलकी और हकी, तीन सूरत महंमद की जे । ए तीनों सूरत दे साहेदी, आखिर अर्स देखावें ए || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -10
- बसरी मलकी और हकी, माहें फैल तीनों के। सो खोले फुरमान को, आखिर सूरत हकी जे || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -73

- बसरी मलकी और हकी, लिखी महंमद तीन सूरत । होसी हक दीदार सबन को, करसी महंमद सिफायत || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -78
- बसरी मलकी हकी लिखी, आई महंमद तीन सूरत । एक अव्वल दो आखिर, सो वास्ते तुम उमत || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -16
- बहत्तर ईसा के भए, नाजी एक तिन में । और नारी फिरके इकहत्तर, कह्या रसूलें जानिक से || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -29
- बहु विध भेज्या फरमान, तिन में सब अयो न्यामत । खिलवत वाहेदत सुध भई, और सुध दई कयामत || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -112
- बहुत बंध फंद धंध अजूं कई बीच में, सो देखे अलेखे मुख भाख न आवे । निराकार सुन्य पार के पार पिउ वतन, इत हुकम हाकिम बिना कौन आवे || ग्रं - सनंध, प्र -6, चौ -7
- बहुत बातें हैं हक की, बीच अर्स खिलवत । इन जुबां केती कहूं, हिसाब बिना न्यामत || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -33
- बांई तरफ दिवाल जो, मंदिर लिबोई रंग । बेल नकस कटाव कई, सो केते कहूं तरंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -48
- बाई भागवंती भली पेरे, प्रीसे सूखडी सारी । कहूं केटली घणी भांतनी, सर्वे मूकी संभारी || ग्रं - रास, प्र -46, चौ -9
- बाई रे गिनान सब्द गम नहीं नवधाने, वेद पुराणें नव कलया । ए वात गेहेलड़ी करे रे महामती, मारे अखंड सुख फूले फलया || ग्रं - किरन्तन, प्र -49, चौ -6
- बाई रे गेहेलो वालो गेहेली वात करे रे, एहने कोई तमें वारो । दुरजन देखतां अमने बोलावे, निलज ने धुतारो || ग्रं - किरन्तन, प्र -50, चौ -1
- बाई रे वात अमारी हवे कोण सुणे, अमें गेहेलाने मलया । एहनो नेहडो सुणीने हूं तो घणुऐं नाठी, पणतूं कीजे जे पांणे पड्या || ग्रं - किरन्तन, प्र -49, चौ -1
- बाईजीएँ घर चलते, जाहेर कहे वचन । आड़ी खड़ी इन्द्रावती, है इनके हाथ जागन || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -66
- बाएँ हाथ आसा मूसे का, हाथ दाहिने मोहोर सलेमान । मोहोर करसी पेसानी जिनकी, मुंह उज्जल तिन रोसन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -8, चौ -12
- बाकी जेती रही उमर, तिन में रखे खुदाए का डर । कयामत को होवें जाहेर, पोहोंचेंगे बदले यों कर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -19, चौ -10
- बाकी जो तीस रहे, सो राखियो छिपाए । बका दरवाजे खोलसी, आखिर को हम आए || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -12
- बाकी तो वेद कतेब, दोऊ देत हैं साख । अन्दर दोऊ के गफलत, लड़त वास्ते भाख || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -55
- बाकी दसमी सदीय के, सवा नव साल रहे । गाजी मिसल मोमिन की, रूहअल्ला उतरे कहे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -9, चौ -5

- बाकी दिन रहयो घड़ी एक, तामें सिनगार किए विवेक । हुओ संझाको अवसर, राज स्यामाजी बैठे सिनगार कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -134
- बाकी रहया क्या इसलाम में, जब हक मता लिया छीन । सो लिखे सखत सौं खाए के, उठ्या हम से नूर झंडा आकीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -8, चौ -2
- बाकी स्याही करूं में अति विगत, एक जरा न जाए समारूं इन जुगत । ए कागद कलम मस कर, माहें बारीक आंक लिखू चित धर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -8
- बांग आवाज कानों सुनी, कफर कहिए क्यों ताए । सो रूह आखिर कजा समें, औरों भी लेसी बचाए || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -47
- बाग जंगल राह नूर के, पसु पंखी नूर पूर । ख्वाब जिमी में नूर अर्स की, नूर जुबां कहा करे मजकूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -29
- बाग जिमी जो अर्स की, और पसु जानवर । कहा कहूं सुख साहेबी, जिन पर हक नजर || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -54
- बाग पांच पांच हांसके, हैं दस बाग हांस पचास । यों मोहोलातें सौ बाग की, कहूं किन विध खूबी खास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -67
- बाग बने फूलन के, लगत झरोखे दिवाल । जब आवत हैं इन छज्जों , रूहें इत होत खुसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -5
- बाघ केसरी खेलहीं, चीते खेलें सियाहगोस । सब विद्या अपनी साधहीं, सब खेलें इस्क के जोस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -99
- बाघ केसरी चीते खेलहीं, और मोर मुरग बांदर । हर जातें जातें कई जिनसे, कहूँ कहां लग खेल जानवर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -84
- बाघ गूंजें अति बली, कूवत ले कूदत । देखे आवत दूर से, जानों आसमान से उतरत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -59
- बाघ चीते गज केसरी, हंस गरूड़ मुरग मोर । पसु पंखी सुख क्यों कहूं, इन जुबां के जोर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -32
- बाघ बकरी एक संग चरें, कोई न करे किसी सों वैर। पसु पंखी सुखे चरें चुगें, छूट गयो सब को जेहेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -20
- बाछरू ले बन पधारे, आठवें दसवें दिन । कबूं गोवरधन फिरते, माहें खेलें बारे बन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -43
- बाजी एक देखाऊं दूजी, जो खेलत हैं उजियारे । भेख बनाए के नाचत सनमुख, एक ठाट लिए चारे || ग्रं - किरन्तन, प्र -6, चौ -12
- बाजीगर न्यारा रहया, ए खेलत कबूतर । तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावें बाजीगर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -31
- बाजीगर न्यारा रहया, ए खेलत कबूतर । तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावें बाजीगर || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -35

- बाजु बन्ध पोहोंची कड़ी, ए भूखन सोभा अपार । नरम हाथ लीकें हथेलियां, क्यों आवे सोभा सुमार || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -49
- बाजू बंध दोऊ बने, जरी फुमक लटकत । हीरे लसनिएं नीलवी, देख देख रूह अटकत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -85
- बाजू मच्छे कोनियां, कांड़े कलाइयां हाथ । हक के अंग हिरदे आए, तब रूह खड़ी हुई हक साथ || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -34
- बाजूबंध और पोहोंचियां, कड़े जवेर कंचन । नंग रंग नाम केते कहूं, कही जाए न जरा रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -63
- बाजूबंध की क्यों कहूं, जो बिराजे बाजू पर। कई मिहीं नकस कटाव, जोत भरी जिमी अम्बर || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -104
- बाजे आपे चलहीं, पर पसु सेवा को उठाए। इन बखत खूबी कहा कहूं, ए केहे न सके जुबांए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -48
- बाजे कहे साहेब इस्क, सबसे जुदा ए आदम हक । जैसे जात पाक सुभान, एह मरातबा किया बयान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -56
- बाजे नजीक अर्ज़ निमाज, और डरें नहीं हुकम आवाज । निमाज पीछे कहया यों कर, खुदाए का तुम राखो डर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -20
- बाजे बासन सब नूर के, पलंग चौकी सब नूर । नूर बिना जरा नहीं, नूर नूर में नूर जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -27
- बाजे सब बजावहीं, बंदे बांदर बलवंत । ओतो आपे बाजहीं पर, ए सेवा न छोड़त || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -47
- बाढ़ी व्याध स्वाद गुन इंद्री, मद चढ़यो मोह अंध । माता बेहेन पुत्री गोरांनी, कासों नहीं सनमंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -10
- बात इस्क की है अति घन, पर पावे सोई सोहागिन । ब्रहमसृष्ट बिना न पावे, सनमंध बिना इस्क न आवे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -17
- बात उठावें जो मन से, सो होसी सबे वतन । एक जरा छिपी ना रहे, यों कोई भूलो जिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -7
- बात करत तूं हक की, जो रूहों सों गुफ्तगोए । इन बका की खिलवत से, कछू तोको भी नसीहत होए || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -3
- बात कही सब वतन की, सो निरखे मैं निसान । नजरों सब जाहेर हुआ, उड़ गया उनमान || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -6
- बात कही सब वतन की, सो निरखे मैं निसान । प्रकास पूरन दृढ़ हुआ, उड़ गया उनमान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -6
- बात न सुनी रसूल की, तिन सीखां लगियां कान । इस्क हक का छोड़ के, हाए हाए डूबे जाए ग्यान || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -13

- बात पोहोंची आए नजीक, अब जो कोई रेहेवे दम । उमेदां तुमारी पूरने, राखी खसमें तुम हुकम || ग्रं - सागर, प्र -3, चौ -9
- बात बड़ी इन खसम की, सो क्यों कर ढापूं अब । सुख लेने को या समें, पीछे दुनियां मिलसी सब || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -20
- बात बड़ी इन नूर की, ए तो नेक कह्यो प्रकास । इत खेलें रूहें हकसों, बिध बिध के विलास || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -28
- बात बड़ी कहे मन मेरी, मैं सकल विध जानों । मूल बिना करूं सिरदारी, जीव को भी बस आनों || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -86
- बात बड़ी कहे मोह मेरी, मोको जाने प्रेमी सोए । मैं बैठत हों जित आए के, तितथे उठाए न सके कोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -44
- बात बड़ी देख देखिए, प्रेम प्रघल भर पूर । प्रेम अंग कयो न जावहीं, सूरों में सूर सूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -77
- बात बड़ी मोमिन की, जिनके अर्स में तन । ए रूहें दरगाह की, जिनको अर्स वतन || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -68
- बात बड़ी है काल की, ऐसे कई ब्रह्मांड उपाए । काल भी आखिर ना रहे, पर ए पेहेले सब को खाए || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -36
- बात बड़ी है मेहेर की, जित मेहेर तित सब । निमख ना छोड़ें नजर से, इन ऊपर कहा कहूं अब || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -25
- बात बड़ी है मेहेर की, मेहेर होए ना बिना अंकूर । अंकूर सोई हक निसबत, माहे बसत तजल्ला नूर || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -27
- बात बड़ी है मेहेर की, हक के दिल का प्यार । सो जाने दिल हक का, या मेहेर जाने मेहेर को सुमार || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -40
- बात मासूक की सो करे, आगे आसिक अरधंग । कहे कुरान पुकार के, रसूल न छाया संग || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -43
- बात याकी हम जाने, और जाने हमारी एह । ना समझे कोई दूसरा, ए अंदर का सनेह || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -57
- बात रसूल की जो सुने, ताको तअजुब बड़ा होए । हक बका सुध देवहीं, सो कहे न दूजा कोए || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -29
- बात विचार सब इस्क के, इस्कै गान इलम । अंग क्यों कहूं इन जिमिएं, एता भी केहेत हुकम || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -134
- बात सुंदरबाई और है, और उनकी और रवेस । गत मत उनकी और है, हम लिया सब उनका भेस || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -23
- बातने सुनी रे बून्देले छत्रसाल ने, आगे आए खड़ा ले तरवार । सेवाने लई रे सारी सिर बैंच के, सांइए किया सैन्यापति सिरदार || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -20

SPJIN

- बातां सुनियां दूर से, पर लई न जाए के सुध । सो गुन अंग इंद्री जलो, हाए हाए जलो सो बुध || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -14
- बातून खुले ऐसा हुआ, सेहेरग से नजीक हक । तुम बैठे बीच अर्स के, कदम तले बेसक || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -53
- बातून जब तुम देखागे, खोलसी रूह नजर । लैलत कदर के तकरार, तीसरे होसी फजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -51
- बातें इन विरह की, मैं गाई अंग अंग कर । अचरज इन निसबतें, अरवा ना गई जर बर || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -152
- बातें करें सलोनियां, मासूक सलोंने मुख । नैन सलोंने रस भरे, कई देत आसिकों सुख || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -27
- बातें बका में जो हुई, जब उनों होसी रोसन । तब तुरत ईमान ल्यावसी, जो मेरे हैं मोमिन || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -43
- बातें बोहोत करी रूहन सों, मेरा कह्या न ल्याइयां दिल । सुन्या न आणू इस्क के, बहस किया सबों मिल || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -29
- बातें सबे सुपन की, करें जागे पीछे सब कोए । पर आगे की बातें सबे, सुपने में कबूं न होए || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -13
- बातें हकसों अर्स में, जो करते थे प्यार । सो निसबत कछूए ना रही, ना दिल चाहे दीदार || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -36
- बादल बरस्या रूह-अल्ला, ए बूंदें लई जो तिन । और कोई न ले सके, बिना अर्स रूहन || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -29
- बादल रूह-अल्लाह का, बरस्या वतनी नूर । अर्स बका का नासूत में, हुआ सब जहूर || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -12
- बादलियां आवें, रंग देखलावें, करें मोर कोयल टहंकार । अति घन गाजें, अम्बर बिराजे, सोभित रूत मलार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -12
- बांधत बंध आपको आपे, न समझे माया को मरम । अपनों कियो न देखे अंधे, पीछे रोवें दोष दे दे करम || ग्रं - किरन्तन, प्र -4, चौ -4
- बांधी पाग समार के, हाथ नरम उज्जल लाल । इन पाग की सोभा क्यों कहूं, मेरा साहेब नूरजमाल || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -52
- बांधे आप हुकम के, काजी हुए इत आए । कौल किया मोमिनोंसों, सो पाल्या खेल देखाए || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -49
- बांध्यो संसार एणी पेरे, लागे नहीं कोई लाग । जाय बंधाणां सहु जमपुरी, केहेने नथी टलवानो माग || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -34
- बान मधुरी धुंधरी, ए जुदे रुप रंग रस । पांच रंग नंग इनमें, जानो उनपे एह सरस || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -46

- बानी गाऊँ श्री वल्लभाचारज, ज्यों वैष्णव को सुख होए । सत वचन बोहोत तो न कहूं, जानों दुख पावे दुष्ट कोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -2
- बानी जो अद्वैत की, सो कहावे सब्दातीत । सो जाग्रत बुध अद्वैत बिना, क्यों सुध पावे द्वैत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -2, चौ -9
- बानी सुनें तें सुख उपजे, और देखें सुख अपार । या पसु या जानवर, सोभा न आवे माहें सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -79
- बाप फारस रूम आरब का, कया फरमाने स्याम । फुरमान ल्याए वास्ते, रसूल धराया नाम || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -33
- बाब अर्स अजीम का मता जाहेर किया याने एक जवेर का अर्स गैब बातें बका अर्स की, कहूं सुनी न एते दिन । हम आए अर्स अजीम से, करें जाहेर हक वतन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -1
- बाबा बूढा होए खेलावसी, दे मन चाहया सुख सब । तीन अवस्था एक साइत में, देखाए के हँससी अब || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -32
- बार - साखें द्वार ने, सोभे साठों मन्दिरों के। सोभे गिरदवाए बराबर, एक एक पें अधिक सोभा ले || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -67
- बार उघाडवा दोडियो, सकजी सपराणों || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -69
- बार करीने दस करूं खरब, आगे कोणे नव गणया गुण एव । तारतम जोतां बीजो कोण गणसे, अम टाली कोई थयो न थासे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -15
- बार मासना पख चौवीस, तेना त्रणसे ने साठ दिन । त्रणसे ने साठ वचे रात थई, तमे हजिए न सुणो वचन || ग्रं - खटरुती, प्र -7, चौ -8
- बारणे इन बेहद तणे, लेहेर टाढक आवे । प्रेमल कांईक रसतणी, बारणे रे जणावे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -46
- बारीक इन कमाड़ियों, अनेक चित्रामन । रंग नंग या तखतें, ए सब जवेर चेतन || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -68
- बारीक गलियां अर्स की, मोमिन भूलें न इत । अरवा अर्स की रात दिन, याही में खेलत || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -41
- बारीक टांक मेरे हाथों होए, ऐसी करूं जैसी करे न कोए। कोई तो केहेती हों जो माया लागी तुम, बाहोतक कहया जो पेहेले हम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -5
- बारीक बातें अर्स की, सो जाने अर्स के तन । जीवत लेसी सो सुख, जिनका टूट्या अन्तस्करन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -19
- बारीक बातें दुख की, जो कदी लगे मिठास । तो टूट जात है ए सुख, होत माया को नास || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -23
- बारीक सुख सख्प के, कोई जाने रूह मोमिन । इस्क इलम जोस याही को, जाके होसी अर्स में तन || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -62

- बारे गमां बोलतां, एक अखर एक मात्र । ते बांधी बत्रीस श्लोकमां, एवो छल कीधो छे सास्त्र || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -5
- बारे तरफों बोलत, एक अखर एक मात्र । ऐसे बांध बतीस श्लोक में, बड़ा छल किया है सास्त्र || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -8
- बारे तरफों बोलते, एक अखर एक मात्र । ऐसे बांध बत्तीस श्लोक में, बड़ा छल किया यों सास्त्र || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -10
- बारे धरके दस करूं खरब, पेहेले यों गिनके किन कहे न कब । तारतम कहे और कौन गिने गुन, हुआ न कोई होसी हम बिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -16
- बारे मात्र एक अखर, अखर श्लोक बतीस । छल एते आड़े अर्थके, और खोज करें जगदीस || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -9
- बारे मात्र एक अखर, अखर श्लोक बत्तीस । छल एते आड़े अर्थ के, और खोज करें जगदीस || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -11
- बारे हजार उमत की, रूहें जो इप्तदाए । जबराईल के पर पर, दोऊ बाजू बैठाए || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -46
- बारे हजार रूहें नूर हिंडोले, हर नूर रूहें हक संग । इन समें नूर क्यों कहूं, नूर होत उछरंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -101
- बारे हलके थे जो बंध, किए आजाद छूटे माया फंद । लाख नंगों के दिए सिरो पाए, हुआ सुख दुख सबों जाए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -20
- बाल गोपाल माहें खूबी खुसाली, करते मिल नर नार । सो जेहेर समान कर दिए तुमको, छुड़ाए मीठो रोजगार || ग्रं - किरन्तन, प्र -120, चौ -6
- बाल चरित्र लीला जोबन, कई विध सनेह किए सैयन । कई लिए प्रेम विलास जो सुख, सो केते कहूं या मुख || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -25
- बाल लीला और किसोर, तीसरी बढ़ापन । तीन अवस्था तीन ब्रहमांड, देखाए मिने एक खिन || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -31
- बाल लीला भई बृज में, लीला किसोर वृन्दावन । जगनाथ बुध जी जागनी, भई भोर लीला बुढ़ापन || ग्रं - किरन्तन, प्र -59, चौ -5
- बालक सुंदर बोले मीठं, केडे करी घेर आणूं । खिणमा जोवन प्रेमें पूरो, सेजडिए सुख माणूं || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -31
- बावन मसले जो कहे अरकान, जो बजाए ल्यावे मुसलमान । तिनका कौल था एते दिन, सांचे पाक दिल किए जिन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -5
- बास बस्ती बसे घाटी, तीन खूने गाम । कांठे पुरा टीवा ऊपर, उपनंद का ए ठाम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -13
- बास्ते इन मुसलमानों के इमाम मेंहदी, आया हिन्द की जिमी || ग्रं - सनंध, प्र -34, चौ -10

- बांहें ग्रही बेठी करी, आवेस दीधो अंग । ते दिन थीं दया पसरी, पल पल चढते रंग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -43
- बाहें ग्रही लई निसरी, में त्रण जुध कीधां फरी फरी । पछे गत मत मारी हरी, लई वस पोताने करी || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -13
- बांहें ग्रहीने तारूं तमने, जेम लेहेर न लगे लगार । सुखपालमां सुखे बेसाडी, घेर पोहोंचाई निरधार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -35
- बांहे चूड़ी और मोहोरियां, चूड़ी अचरज जुगत । निपट मिहीं मोहोरीय से, चढ़ती चढ़ती सोभित || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -46
- बांहें चूड़ी बाजू बंध सोहे फुमक, पोहोंची कांड़ों कड़ी हस्त कमल मुंदरी । नख का नूर चीर चढ़या आसमान में, ज्यों हक चलवन करें सब अंगुरी || ग्रं - किरन्तन, प्र -112, चौ -4
- बांहें बाजू बंध सोभित, रंग केते कहूं गिन । तेज जोत लरें आकास में, क्यों असल निरने होए तिन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -204
- बांहें मेरे मासूक की, प्यारी लगें मेरी रूह । हक हुकम यों कहावत, सो वाही जाने हकहू || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -2
- बांहें हलते फुन्दन लटके, हींचे फन्दन जोत प्रकास । बांहें हलते ऐसा देखिए, मानों हींचत नूर आकास || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -30
- बाहेर के देखावहीं, अंदर आंख न कान । सो कहा सुने कहा देखसी, कहें हम मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -32
- बाहेर तो ना जाए सको, छेह न आवे जिमी इन । एक जरा जुदा न होए सके, तुमें ठौर न बका बिन || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -71
- बाहेर थकी गांठ एक छोडिए, तिहां बीजी बंधाय अपार । ए विसमा बंध नों नथी रे उपाय, बीजो आणे संसार || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -74
- बाहेर देखाई माफक, अंदर बड़ा विस्तार । पहाड़ ऊपर या मोहोल में, आवत नहीं सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -72
- बाहेर देखावें अबलीस, वह कह्या बैठा दिल पर । कहे दोजख जलसी अबलीस, आप पाक होत यों कर || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -28
- बाहेर देखावें बंदगी, माहें करें कूकरम काम । महामत पूछे ब्रह्मसृष्ट को, ए बैकुंठ जासी के धाम || ग्रं - किरन्तन, प्र -105, चौ -14
- बाहेर निकसो तो आप नहीं, और मांहें तो नरक के कुंड । ब्रह्म तो यामें न पाइए, ए क्यों कहिए ब्रह्म घर पिंड || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -14
- बाहेर भेख देख भुलाने, तुम भीतर खोज न कीनी । भागवत वचन वल्लभी टीका, तुम याकी सुध न लींनी || ग्रं - किरन्तन, प्र -10, चौ -7
- बाहेर मंझ अंतर, सभनी हंदे इस्क । रूहअल्ला डिखारई, वडी दोस्ती हक || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -48

SPJIN

- बांहोंडी कंठमां घाली, एकी गमा लीधो टाली । लई चाली अणियाली, सखी मुख हाथ ताली, जोई रह्यो साथ || ग्रं - रास, प्र -38, चौ -6
- बांहोंडी झाली वनमा घाली, रामत रमे अति दाय । वनमा विगते जुजवी जुगते, रंग मन इछा थाय || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -13
- बांहोंडी मूकसो तो अडवडसू, त्यारे हांसी करसे सहु साथ । ते माटे बल करीने रमजो, फरतां न मूकवो हाथ || ग्रं - रास, प्र -17, चौ -2
- बांहोंडी वाले भूखण संभाले, रखे खूचे कोई नंग । लिए बाथो वालाजी संघातो, उनमद बल अनंग || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -6
- बिचल गई गम वार पार की, और अंग न कछु ए सान । पिया रस में यों भई महामत, प्रेम मगन क्यों करसी गान || ग्रं - किरन्तन, प्र -25, चौ -4
- बिचली दिसा अवस्था चारों, बिचली सुध न रही सरीर । बिचल्यो मोह अहंकार मूलथें, नैनों नींद न आवे नीर || ग्रं - किरन्तन, प्र -25, चौ -3
- बिचले नैन श्रवन मुख रसना, बिचले गुन पख इंद्री अंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -25, चौ -2
- बिछरो तेरो वल्लभा, सो क्यों सहे सुहागिन । तुम बिना पिंड ब्रह्मांड, हो गई सब अगिन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -2
- बिछुरो तेरो वल्लभा, सो क्यों सहे सोहागिन । तुम बिना पिंड ब्रह्मांड, होए गई सब अगिन || ग्रं - सनंध, प्र -8, चौ -2
- बिछोहा नहीं कछू पख तारतम, सुपन में माया देखें हम । सुपन बिछोहा धनी ना सहे, तारतम वचन प्रगट कहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -5
- बिछौना बिछाइया, करत दुलीचा जोत । फल फूल पात नकस, कई उठत तरंग उद्दोत || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -93
- बिछौने सब नूर में, और तकिए नूर गिरदवाए । रूहें बैठी नूर भर पूर, रया नूरै नूर समाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -5
- बिछ्रे पाए परदेस में, देखी पिउ अंग छाती । अब पलक पड़े जो बिछोहा, हाए हाए उड़े ना करे आप घाती || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -57
- बिध दोऊ देखिए, एक नाभ दूजा मुख । गूंथी जालें दोऊ जुगते, मान लिए दुख सुख || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -6
- बिध बिध के भेख काछे, सारे जान प्रवीन । वरन चारों खेलें चित दे, नाहीं न कोई मतहीन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -10
- बिन खुदी बिन गुमान, और साफ दिल ईमान । सरे दो साहेद चाहिए, ऐसे सिदक मुसलमान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -38
- बिन जाने बिन पेहेचाने कई सुख, ऐसे धनिएँ हमको देखाए। अबलों गिरो न जाने धनी गुन, सो जागनी हिरदे चढ़ आए || ग्रं - किरन्तन, प्र -81, चौ -7

- बिन जामें देखों अंग को, आसिक सब सुख चाहे । बागा पेहेने हमेसा देखिए, कछू ए छबि और देखाए || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -3
- बिन पूछे कहूं विचार, निज वतनी जो निरधार । जिन कोई संसे तुमें रहे, सो मेरी आतम ना सहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -2
- बिन फुरमाए हक के, दिल जरा न उपजत । तो क्यों दिल ऐसा आवत, जो हक मांग्या ना देवत || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -17
- बिन मोमिन कोई ना ले सके, हक नासिका गन । कह्या अर्स हक वतन, सो किया दिल जिन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -127
- बिन वाए चढ़या बगरूला, सबको देखे बिन आंखें । खिनमें फिरवले सब लोकों, पाँऊ बिना बिन पांखें || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -5
- बिना आकीने इस्क, कबहूं न उपज्या किन । स्यानों ग्यान विचारिया, हाए हाए करी खराबी तिन || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -17
- बिना आकीने पढ़हीं, अपनी अकलें करें बयान । सो सुनाए सुनाए दुनी को, कई किए बेईमान || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -16
- बिना इस्क सूझे नहीं, ए जो रात का अमल । ए राह चलसी लग फजर, तोरे के बल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -50
- बिना जुदागी इस्क की, क्यों कर पाइए खबर || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -31
- बिना दरद दौड़ावे दानाई, सो पड़े खाली मकान । इस्क नाहीं सरूप बिना, तो ए क्यों कहिए ईमान || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -14
- बिना दिवाले लिखिए, अनेक चित्रामन । तो ए क्यों पावें खुद को, जाको मूल मोह सुंन || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -24
- बिना दिवाले लिखिए, अनेक चित्रामन । सो क्यों पावे खुद को, जाको मूल मोह सुंन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -22
- बिना निमूने न पाइए, क्यों है तफावत । कछू दूजी देखे बिना, पाइए ना हक सिफत || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -52
- बिना पुरान प्रकास न होई, सास्त्र बिना कौन माने । एक अखर को अर्थ न आवे, तो ब्रह्म भरम में आने || ग्रं - किरन्तन, प्र -32, चौ -5
- बिना पेड़ देखो विस्तार, एता बड़ा किया आकार । एतो पेड़ कह्या आकार, तो ताको क्यों ना होए विस्तार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -35, चौ -11
- बिना भारी कौन भार उठावे, मुखथे वचन कह्यो न जावे । जब भया कृष्ण अवतार, रूकमनी हरन कियो मुरार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -52
- बिना मगज न पाइए फुरकान, किन वास्ते आया फरमान । एह वास्ता पाइए तब, मगज माएने खुले जब || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -30

SPJIN

- बिना मोमिन ए जो और, ताको दोजख भिस्त बीच ठौर । और काफर दोजख में जल, देखें भिस्ती मरें जल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -38
- बिना विचारे रेहेत है, तुम पे हक इलम । ए सहूर रूहें पोहोंचहीं, तबहीं उड़े तिलसम || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -74
- बिना श्री कृष्णजी जेती मत, सो तूं जानियो सब कुमत । कुमत सो कहिए किनको, सबथें बुरी जानिए तिनको || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -6
- बिना सुख कोई न रया, सब मन काम पूरन । अंधेरी कछू न रही, भए चौदे तबक रोसन || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -103
- बिना हक हादी निसबत, कोई होए न सके दाखिल । मारफत पाइए मुसाफ की, जो हक दें कुल्ल अकल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -105
- बिना हिसाबें आलम, वैराट सचराचर । दौड़त सब दीदार को, हुई बधाइयां घर घर || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -14
- बिना हिसाबें उमतें, करें सिफतें अनेक । सो सारे यों केहेवहीं, हम सिर एही एक || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -34
- बिना हिसाबें जानवर, पस बिना हिसाब । ए बल दिल में लेय के, तौलो निमूना ख्वाब || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -57
- बिना हिसाबें बाजंत्र, पड़े एक ताली घोर । जिमी अंबर सब गाजत, ए जुगत सोभा जोर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -46
- बिना हिसाबें बोलियां, मिने सकल जहान । सबको सुगम जान के, कहूंगी हिंदुस्तान || ग्रं - सनंध, प्र -1, चौ -15
- बिना हुकम हक के जरा नहीं, कहे सुने देखे हुकम । किल्ली इलम हुकमें सब दई, किया तेहेकीक हुकमें खसम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -26
- बिरिख तणी ओलखांण न उपजे, जे ए फलनं छे आ वन । केम फल लाधे सोध विना, जेनूं विकल थयूं छे मन || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -51
- बिरिख बाग आगू सब चबूतरों, कई जुदे जुदे बागों रंग बन । आगू देत खूबी इन द्वारने, बन आसमान कियो रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -46
- बिरिख मोमिन आग इस्क, और आग इस्क अर्स । सब पीवें आग इस्क रस, दिल आगै अरस-परस || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -7
- बिसरी सुध सरीर की, बिसर गए घर । चींटी कुंजर निगलिया, अचरज या पर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -154
- बीच अग्यारहीं सब रोसनी, ज्यों ज्यों मजले भई जित । हक न्यामत लई हादियों, त्यों लिखी कुरान में तित || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -9, चौ -7
- बीच अर्स अजीम के, सूरत बका हक । मोमिन हक इलम से, चीन्हें मुतलक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -46

- बीच अर्स खिलवत में, होत दायम विवाद । इस्क अपना रूहें हक को, फेर फेर देती याद || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -18
- बीच असल तन और सुपने, पट नींदै का था । सो नींद उड़ाए सुपना रख्या, ए देखो किया हक का || ग्रं - सागर, प्र -3, चौ -6
- बीच आ जाएँ सौदागर, वास्ते फानी फल कुफर । काफर होए सिताबी दूर, मोमिन साहेब के हजूर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -5
- बीच आखिरत के बुजरकी, हुई है इस उमत की। सांची गिरो जो है हक, तहां बाग भिस्त बुजरक || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -7
- बीच कायम ठौर बिछोहा नहीं, जो जदी होवे गिरो दम । खेल इस्क जुदागीय का, क्यों देखें अर्स में हम || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -63
- बीच कुरान रूहों का लिख्या, इनों असल अर्स में तन । यों हक कलाम कहे जाहेर, मैं बीच अर्स दिल मोमिन || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -40
- बीच खाली जित जाएगा, तित लरत थंभों का नूर । उत जंग होत नंगन की, तित अधिक नूर जहूर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -38
- बीच खेल और खावंद, पट तुमारा वजूद । पीठ दे हक को ए देखत, जो ना कछू है नाबूद || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -9
- बीच चेहेबच्चा जल का, कई फुहारे छूटत । फिरते द्वार इन चौक के, बोहोत सोभा अतन्त || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -18
- बीच चौदे तबकों, कहे सात आसमान । कोई सुरिया उलंघ ना सक्या, देखो सोलमें सिपारे बयान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -16
- बीच जमुना जी के और मन्दिर, अतिबन सोभित बन के अंदर । कई सेज्या बनी फूल बन में, कई रंग हुए सघन में || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -29
- बीच झरोखें कारंजे, चारों तरफों चार चलत । ए चारों बीच चेहेबच्चे, एकै ठौर पड़त || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -41
- बीच तखत बिराजत, सबथैं ऊंचा गज भर । बैठक हक बड़ी रूह, सोभा लेत सब पर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -26
- बीच तरफ या गिरदवाए, किन विध कहूं मोहोलन । एह अर्स की रोसनी, क्यों कहे जुबां इन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -109
- बीच नाबूद दुनी के, आई मेहेर हक खिलवत || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -20
- बीच नूर चबूतरा, चौसठ थंभ नूर के। फिरता कठेड़ा नूर का, नूर क्यों कहूं नूर बीच ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -3
- बीच पट आतम परआतमा, कौन उड़ाए कर दे संग रे । इन दुलहे बिना दुलहिनसों, क्यों होसी रस रंग रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -58

- बीच पटुका कस्या कमरें, रंग कई बिध छेड़े किनार । बेली नकस फूल केते कहूं, अवकास भस्यो झलकार || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -41
- बीच फना जीवों के, क्यों रहें बका अर्स तन । पल इनमें रेहे ना सकें, जिन सिर बका वतन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -97
- बीच फूल कटाव कई, राखड़ी के गिरदवाए । ए जुगत बनी मूल लग, गूंथी नंग मोती बेनी बनाए || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -48
- बीच बका के पोहोंचिया, जित जले जबराईल पर । तित नब्बे हजार हरफ सुने, फिरे जो मजकूर कर || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -2
- बीच बका के बैठ के, हमें कह्या यों कर || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -48
- बीच बका के रूहन सों, हमें करी खिलवत । सों साथ रूह-अल्लाह के, भेजे संदेसे इत || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -24
- बीच बका लाहूत में, जो रूहें मोमिन । तीन सूरत महंमद की, सो कहे एक तन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -17
- बीच बन्या दरवाजा दो हांस का, बीच दस झरोखे । पांच बने बांईं हांस के, पांच दाहिनी से || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -27
- बीच बीच दोरी बंध, अड़तालीस बंगले । हर हारें अड़तालीस, ए बैठक पहाड़ तले || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -25
- बीच बैठक राज स्यामाजी, साथ गिरदवाए घेर । साजे सकल सिनगार, सोभा क्यों कहूँ इन बेर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -22
- बीच ब्रह्मांड ना जुग कोई, बरस मास ना दिन । खिन में सब देखाए के, दोए साखें करी जागन || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -35
- बीच मेयराज इसारतें, मासूक लिख भेजत । हाँसी करने रूहन पर, ए जो फरेब देखाया इत || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -50
- बीच लिख्या हदीसों आयतों, हक खिलवत के सुकन । सो क्यों पावें दिल दुस्मन, बिना अर्स दिल मोमिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -104
- बीच वचन बे वालातणा, आ तेह तणो अजवास । जे वाव्यूं मारे वालैए, तेणे पूरया मनोरथ साथ || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -125
- बीच सब मेयराज के, जेती भई मजकूर । ए सक जरा ना रही, जो खिलवत तजल्ला-नूर || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -29
- बीच हार मानिक का, और हीरों हार उज्जल । पाच मोती और नीलवी, लसनियां अति निरमल || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -108
- बीच हारों के दुगद्गी, पाच पांने हीरे नंग । माहें लसनिए नीलवी, करें पांचों आपुस में जंग || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -88

- बीच-बीच में बन बिराजत, गुरज छज्जे जल पर । छे छज्जे फिरते बने, सब गुरजों यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -10
- बीज आतम संग निज बुध के, सो ले उठिया अंकूर । या जुबां इन अंकूर को, क्यों कर कहूं सो नूर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -10
- बीज बिरिख ना कमल फल, भंग ना कछू अभंग । मोहादिक एही सुन्य, बीच सरूप या संग || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -47
- बीज रूह संग निज बुध, सो ले उठिया अंकूर । या जुबां इन अंकूर को, क्यों कर कहूं सो नूर || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -11
- बीजा अनेक विधना फूल दोरी बंध, करे जुजवी जुगत झलकार । माणक मोती हीरा पुखराज, पिरोजा पाना पांचों सार || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -39
- बीजा कहूं छु एटला माट, जे माया भारे करो छो साथ । तारतम पख बीजो कोय नथी, एक आव्या छो तमे घेर थकी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -27
- बीजा केहेने दोष न दीजे रे भाई जी, ए माया विकराल । करोलिया जेम गूंथी गूंथे, मुझाई मरे मांहें जाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -122
- बीजा त्रीजा हूं तो कहूं, जो साथने माया थइ भारी । साथ सुपन जुए सत करी, तो हूं कयूं विचारी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -140
- बीजा नाम अनेक छे, पण लऊ केहेना । ब्रह्मांडना धणी ऊपर, लेवाय नहीं तेहेना || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -86
- बीजा फरे छे फेरमां, एने फेर नहीं लगार । पण बांध्या बंध जे खरी गांठे, आव्या ते मांहें अंधार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -40
- बीजा रे छ लोक तेहेना लऊं जल, नहीं मूकू किहांए टीपू अवल । सर्व जल मेलवीने लऊं मारे हाथ, गुण लखवा मारे श्री प्राणनाथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -6
- बीजा वचन भारी केम कहिए, ते तां अर्थी विना न अपाय । केसरी दूध कनक ना रे, पात्र विना न समाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -59
- बीजा सं जाणे बापडा, जेणो होय ते जाणे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -62
- बीजी बुध केही आवे अम समवड, हूं बुध मांहें बुध अवतार । बुधे करी वालाजीने वल्लभ करीस, ए बुध नहीं मूकू लगार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -12
- बीजी विध विधनी वनस्पती मौरी, केटला लऊं तेना नाम । जमुनाजी ना त्रट घणूं रूडा, रूडा मोहोल बेसवा ना ठाम || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -26
- बीजी सखी इहां नहीं रे बापडी, आंहीं तो इंद्रावती नार । जोर करो जोइए केटलूं केसरबाई, केम ने मुकावो आधार || ग्रं - रास, प्र -39, चौ -9
- बीजो फेरो ए स्या ने करे, थया ते सेठ सरीख । टली वानोतर धणी थयो, ते अखंड सुख लेसे अंत्रीख || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -19
- बीड़ियों की छाब लेकर, धरी पलंग तले चौकी पर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -105

- बीडी ते लई आरोगिया, वली लीधी सह साथ । साथ हुतो जे प्रीसणे, सखियोने प्रीसे प्राणनाथ || ग्रं - रास, प्र -46, चौ -18
- बीड़ी मुख आरोगते, अधुर देखत अति लाल । हँसत हरवटी सोभा सुन्दर, नेत्र मुख मछराल || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -26
- बीड़ी मुख में मोरत, सुन्दर हरवटी हँसत । सोभा इन मुख क्यों कहूं, जो बीच में बात करत || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -42
- बीड़ी लई जिन हाथ सों, सोभित पतली अंगुरी । तिन बीच जोत नंगन की, अति झलकत हैं मुंदरी || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -41
- बीड़ी लेत मुख हाथ सों, सोभित कोमल हाथ मुंदरी । लेत अंगुरियां छबिसों, बलि जाऊं सबे अंगुरी || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -25
- बीड़ी सोभित मुख में, मोरत लाल तंबोल । सोभा इन सूरत की, नहीं पटंतर तौल || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -113
- बीड़ी सोभित मुख मोरत, लेत तम्बोल रंग लाल । ए बरनन रूह तोलों करे, जोलों लगे न हैड़े भाल || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -52
- बीती सदी अग्यारहीं, ल्याए रसूल फुरमान । बड़े उलमा आरिफ कहावहीं, पर पड़ी न काहू पेहेचान || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -65
- बीते नब्बे साल हजार पर, मुसाफ मगज न पाया किन । तो गए एते दिन रात में, हुआ जाहेर न बका दिन || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -127
- बीस थंभ रंग पांच के, आगू अर्स द्वार । दस बाएं दस दाहिने, करें रोसन नूर झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -5
- बुजरक इस्क अपना, तोलों देख्या तुम । कादर की कुदरत की, तुमको नाहीं गम || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -14
- बुजरकी अर्स रूहों की, सिर अपने लेवें । सिफत एक नाजीय की, सो बहत्तरों को देवें || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -39
- बुजरकी दलील फुरमाई, आदम पर बकसीस बड़ाई । मेहेर करी ऊपर सूरत, इन मेहेर की करी न जाए सिफत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -51
- बुजरकी पैगंमरों, पाई जबराईल से । हुए नजीकी हक के, सो सब न्यामत दई इनने || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -53
- बुजरकी मारे रे साथजी, बुजरकी मारे । जिन बुजरकी लई दिल पर, तिनको कोई ना उबारे || ग्रं - किरन्तन, प्र -102, चौ -1
- बुजरकों धोखा क्योंए न जाए, तो बखत ऐसा दिया देखाए । फितुए इनों के जावें तब, ऐसा कठिन बखत देखें जब || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -34
- बुत पुजावते रात के, गई जड़ मेख तिन । सो क्यों जाहेरी आगे चल सकें, हुए हक बका दिन रोसन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -84

- बुध जाग्रत इलम हक का, और हकै का हुकम । जोस अर्स का दिल में, ए सब मिल दिल में हम || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -49
- बुध जी को असराफील, विजया अभिनन्द इमाम । उरझे सब बोली मिने, वास्ते जुदे नाम || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -54
- बुध जी धनी हुकम मांहें, फरिस्ता असराफील । तिन कान दिए सुनने अग्या को, अब हुकम को नाहीं ढील || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -21
- बुध जी रया छे आसरे, जे छे बुध अवतार । ए बुध जी विना बीजा बापडा, कोण काढे ए सार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -13
- बुध तमारी किहां गई, पछे आवसे ते कीहे काम । वचन जुओ सुकदेवना, तेमां प्रगट पराधाण || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -39
- बुध तारतम जित भेले, तित पेहेले जानो आवेस । अग्या दया सब पूरन, अंग इंद्रावती प्रवेस || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -67
- बुध तारतम भेला बने, तिहां पेहेले पधारया श्री राज । अंग मारे अजवास करी, साथना सारया काज || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -67
- बुध तारतम लई करी, पसरी वैराटने अंग । अछरने एणी विधे, रूदे चढ्यो अधिको रंग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -100
- बुध तारतम लेयके, पसरसी वैराट के अंग। अछर हिरदे या बिध, अधिक चढ़सी रंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -105
- बुध तुरिया दृष्ट श्रवना, जहां लों पोहोंचे मन । ए होसी उतपन सब फना, जो आवे मिने वचन || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -13
- बुध तुरिया दृष्ट श्रवना, जहांलों पोहोंचे मन । ए होसी उतपन सब फना, जो आवे मिने वचन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -13
- बुध तुरिया दृष्ट श्रवना, जेती गम वचन । उतपन सब होसी फना, जो लों पोहोंचे मन || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -16
- बुध तुरिया दृष्ट श्रवना, जो लों पोहोंचे मन । उतपन सारी आवटे, जो कछू कहिए वचन || ग्रं - किरन्तन, प्र -29, चौ -10
- बुध नेहकलंक आए के, मार कलजुग करसी दूर । असुराई सबों मेट के, देसी मुक्त हजूर || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -52
- बुध ब्रहमसृष्टी वास्ते, आवसी कया वेद । ए बात है उमत की, कोई और न जाने भेद || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -32
- बुध ब्रहमा मन नारद, मिल व्यासे बाँधे करम । ए सरीयत है वेद की, जासों परे सब भरम || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -46
- बुध मूल अछर की, आई हमारे पास । जोगमाया को ब्रहमांड, तिन हिरदे था रास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -88

- बुध विना इहां बंधाई, पडिया ते सह फंद मांहें । ए वचन सुणी करी, एणे समे ते ग्रही मारी बांहें || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -42
- बुध सरूप अछरनी, आवी अमारे पास । ब्रह्मांड जोगमाया तणो, तेणे रूदे ग्रहयो रास || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -83
- बुधजी की जोतें कियो प्रकास, त्रैलोकी को तिमर कियो नास । लीला खेलें अखंड रास विलास, भई नई रे नवों खंडों आरती || ग्रं - किरन्तन, प्र -56, चौ -15
- बुनियाद रसूल सोई आखिरी, ए सिफत सारी इनकी करी । इन इमाम औलाद जो यार, पाक दरूद करे हुसियार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -6
- बुरका डाल अजाजील पर, हुकमें किया रद । सिजदा कराया आदम पर, जित मेंहेदी मोमिन महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -38
- बुरका हवा का सिर पर, ले बैठा बुजरक । दे कुलफ आड़े ईमान के, किए सब हवा के तअलुक || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -25
- बुरी करी तुम अति मोसों, अब मारूं जमधर घाव । अब अवसर फेर आयो मेरे, जो भुलाए दियो तुम दाव || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -68
- बुरी करी तुम भरम भ्रांतड़ी, यों न करे दूजा कोए। तारतम जोत उद्दोत के आगे, संसे कबूं ना होए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -90
- बुलाइयां निसबत जान के, देखो मेहेर हक की ए। हाए हाए तो भी इस्क न आवत, अरवा अर्स की जे || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -1
- बुलाए सैयों को चले वतन, क्यों न होए जो कहे वचन । मन के मनोरथ पूरन कर, नेहेचे धनी ले चलसी घर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -2
- बूझी तुमारी साहेबी, दिया सब अंगों इस्क देखाए । तुमारे हर अंगों ऐसा किया, रहे चौदे तबक भराए || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -7
- बूंद बकान ने कोठ करपटा, निगोड ने वली नेत्र । मरी पानरी ने वली मरूओ, अकोल ने आंकसेत्र || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -11
- बृज अखंड ब्रह्मांड में हुआ, विचार देखो रे बधवंत । एक रंचक न राखी चौदे लोक की, महाप्रले कहयो ऐसो अंत || ग्रं - किरन्तन, प्र -13, चौ -8
- बृज के सुख इत आए के, हमको अलेखे दिए जी। रास के सुख इत देएके, आप सरीखे किए जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -36, चौ -3
- बृज ने रास अखण्ड कहे प्रगट, सो तो नित नित नवले रंग । एक रंचक रहे जो ब्रह्मांड की, तो टीका को होवे रे भंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -13, चौ -9
- बृज रास ए सोई लीला, सोई पिया सोई दिन । सोई घड़ी ने सोई पल, वैराट होसी धंन धंन || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -22
- बृज रास तुमको लीला कही, तारतम सों रोसनाई कर दई । अब इन फेरे के कहूं प्रकार, सब साथ ढूंढ काढों निरधार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -22

- बृज रास में हम रमे, बुध हती रास में रंग। अब आए जाहेर हुई, इत उदर मेरे संग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -90
- बृज रास लीला दोऊ नित कही, खेलें दोऊ लीला बाल किसोर । तो मथुरा आए कंस किनने मारया, ए कौन भई तीसरी लीला और || ग्रं - किरन्तन, प्र -13, चौ -11
- बृज रास लीला दोऊ मांहें, दुख तामसियों देख्या नांहें । प्रेम पियासों ना करे अंतर, तो ए दुख देखें क्यों कर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -44
- बृज सारी करी दिवानी, और पिया तो वचिखिन । जहां मिले तहां एही बातें, विनोद हांस रमन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -59
- बृजलीला लीला रास माहें, हम खेले जान के जार । जागनी लीला जाग पेहेचान, पिउसों जान विलसे करतार || ग्रं - किरन्तन, प्र -54, चौ -15
- बृध आडी तरखर नी डालो, जुगतें वन कुलंभ । भोम ऊपर ऊभा फल लीजे, एम केटली कहूं एह सनंध || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -25
- बे वीटी ने हीरा मोती, बीजी बे रंग बे रतन । पांच रंगनी पाच एकने, एकने करडा कंचन || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -43
- बेई कित न जरे जेतरी, कांए न रखिए गाल । हे तेहेकीक मूंजी रूहके, केइए नूरजमाल || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -58
- बेई न जरे जेतरी, तोहिजे दिलमें गाल । लाड उमेदूं रूह दिलज्यूं, से तूं पूरे नूरजमाल || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -4
- बेओ कित न जरे जेतरो, सभ हथ तोहिजे हुकम । जे तिर जेतरी मूं दिल में, सभ जाणे थो पिरम || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -44
- बेओ को न पसां कितई, सभ अंग तांणीन तो अडूं । जे हाल पुजाइए पुंनिस , हाणे को न करिए हेकली मूं || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -38
- बेओ जमारो वडाई में, बेठी खोए उमर । डे वडाइयूं बियनके, पाण न खुल्यो दर || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -35
- बेचून बेचगून बेसबी, कहे बेनिमून निदान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -44
- बेचून बेचगून बेसबी, है बेनिमून क्यों कर । सो जाहेर हुआ सबन को, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -37
- बेटा नवासे साहेब का, बाप दादा नूह था । अबनूस था उसका नाम, इद्रीस लकब कहया इस ठाम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -16, चौ -2
- बेटा नूह नबीय का, कया हिंद का बाप हिसाम । सो तोफान के पीछे, आया हिंद मुकाम || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -30
- बेठा मली आरोगवा, कांई सोभित जुजवी पांत । सो सखी सों इंद्रावती, थया प्रीसने भली भांत || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -24

- बेडी पूराणी बखर भारी, लगे वा इबां । सार सुखाणी गोस के, तूं उथिए न निद्र मंझा || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -6
- बेडी बंध ढीरा थेया, त्रूटन संधो संध । अजां अंख न उपटिए, पाणीनी पूरो मंझ || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -13
- बेन सुनके चली कुमार, भव सागर यों उतरी पार । इनकी सुरत मिली सब सखियों मांहे, अंग याके रास में नांहें || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -31
- बेनी गूंथी एक भांत सों, पीठ गौर ऊपर लेहेकत । देत देखाई साड़ी मिने, फिरती बूंघरड़ी घमकत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -52
- बेनी सोभित गौर पीठ पर, चोली और बंध चोली के । सब देत देखाई साड़ी मिने, सब सोभा लेत सनंध ए || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -52
- बेर ना हुई एक अधखिन, किया मायाएं बिछोहा घन । मारकंड माया द्रष्टांत, मांगी धनी पे करके खांत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -11
- बेर भई एक बांटे जेती, ए सब कागद लिखे मांहें बेर एती । ए लिख लिख के मैं लिखे अपार, अब ए बेर निरने करूं निरधार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -35
- बेरिज करी वैराट की, ए पढ़ियो चित दे । खेलाए रास जागनी, झलकाओ नूर ए || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -26
- बेल नकस दोऊ बगलों, और बेल गिरवान बन्ध । चूड़ी समारी बाहन की, क्यों कहूं सोभा सनन्ध || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -84
- बेल नकस दोऊ बगलों, चीन झलकत मोहोरी जड़ाव । नकस बेल गिरबान बन्ध, पीछे अतंत बन्यो कटाव || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -55
- बेल पात फूल कई विध के, कई विध कांगरी इत । जोत न नरमाई सुमार, जुबां क्या कहे सिफत || ग्रं - सिनगार, प्र -10, चौ -5
- बेल मोहोरी इजार की, जानों एही भूखन सुन्दर । अतंत सोभा सब से, एही है खूबतर || ग्रं - सिनगार, प्र -10, चौ -2
- बेला कई रंगों कई नकस, देखो एक दूजी पे सरस । ता बीच चरनी केती कई रंग, बेला कटाव जड़ित कई नंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -11
- बेला बन चढ़ियां इन सूल, हुई दिवाले पात फूल । गिरद चारों तरफों फूले फूल रंग, जुदी हारें सोभा जिन संग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -27
- बेली किनार छेड़े बनी, सुन्दर अति सोभित । कटाव फूल नकस कई, जुदी जुदी जड़ाव जुगत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -34
- बेवरा अगली भोम का, मेहेराव और झरोखे । खूबी क्यों कहूं दिवाल की, सोभा लेत इत ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -1
- बेवरा किया फरमान में, और हदीसें महंमद । जिने खुली हकीकत मारफत, सोई जाने बातून सब्द || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -43

- बेवरा लिख्या मुसाफ में, लिखे जूदे जुदे बयान । दिल मजाजी क्यों समझे, जाको मुरदार कह्या फुरकान || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -50
- बेवरा हुआ मुसाफ का, एक दुनियां और अर्स हक । हक अर्स में सब कया, दुनियां नहीं रंचक || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -90
- बेसक असल सुख की, आवे बेसक रूहों इलम । जरे जरे की बेसकी, जो बीच नजर खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -56
- बेसक इलम आइया, पाई बेसक हक दिल बात । हुए बेसक इस्क न आइया, सो क्यों कहिए हक जात || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -103
- बेसक इलम दिया अपना, आप आए के इत । ना रया धोखा जरा हमको, देखाए दई निसबत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -2
- बेसक इलम पोहोंचिया, के नाहीं पोहोंच्या तुम । ए देखो दिल विचार के, तो न्यारा नहीं खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -55
- बेसक इलम रूहअल्ला का, जो हैयात करे फना को । मुरदे चौदे तबक के, उठे इन इलम सों || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -104
- बेसक इलम रूहों पाइया, अजूं नजर क्यों ना खोलत । क्यों न आवे हमको इस्क, जाकी अर्स अजीम निसबत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -10
- बेसक इलम ले दिल में, बरनन किया बेसक । हुए बेसक रूह ना उड़ी, हाए हाए पोहोंची ना खिलवत हक || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -146
- बेसक इलम सीख के, ऐसे खेल को पीठ दे । देखो कौन आवे दौड़ती, आणू इस्क मेरा ले || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -85
- बेसक खेल देखाइया, खोली बेसक कतेव वेद । बेसक हमों ने पाइया, बेसक हक दिल भेद || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -16
- बेसक जगाई फरामोस में, बेसक दे इलम । होसी रूहों बका की बेसक, ले बेसक इलम खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -60
- बेसक जान्या आपे अपना, बेसक जान्या हक । बेसक जान्या हादीय को, उमत हुई बेसक || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -53
- बेसक झूठ देखाइया, सो क्यों देखें हमको । रूहें लेवें इलम बेसक, तब पोहोंचे बका मों || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -75
- बेसक ठौर कादर, पाई बेसक कुदरत । बेसक खेल जो मांगया, बेसक बातें उमत || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -58
- बेसक डिंने इलम, जगाया दिल के। इलम न पुज्जे- रूहसी, सभ हथ हुकम जे || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -29
- बेसक देखी फरामोसी, बेसक गिरो मोमिन । बेसक फुरमान रमूजें, पाई बेसक बका वतन || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -57

- बेसक दोऊ असों की, जरे रे की बेसक । बेसक मेहेर मोमिनों पर, बेसक करी जो हक || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -17
- बेसक फरामोसीय में, हक बेसक मिले हम साथ । बेसक ताला खोलिया, बेसक कुन्जी हमारे हाथ || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -15
- बेसक बड़े अर्स की, क्यों कहूं बड़ी मोहोलात । बाग बड़ा गिरदवाए का, इन जुबां कह्या न जात || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -35
- बेसक मेला इत होएसी, महंमद सरा अदल । तिन कायम करी दुनी फानी को, ले हक इलम अकल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -28
- बेसक हकें देखाइया, बेसक करी मजकूर । बेसक रद-बदल करी, हुआ बेसक इलम जहूर || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -59
- बेसक हुए जो अर्स से, और बेसक हुए वाहेदत । मुतलक इलम पाए के, हाए हाए हुकम क्यों रह्या ले हुज्जत || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -148
- बेसक होए दीदार कर, ले जवाब होए बेसक । एही मोमिनों मारफत, खिलवत कर साथ हक || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -70
- बेसंता ताली दईने बेसिए, उठता लीजे ताली । फरता ताली दई करीने, वचे रामत कीजे रसाली || ग्रं - रास, प्र -21, चौ -3
- बेसहूर ऐसी दुनियां, माहें अबलीस आदम नसल । तो कहे महंमद को कासिद, जो लानत ऊपर अकल || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -12
- बेसुध चौदे तबकों, तामें हमको बेसक किए इत । सुख अर्मों के सब दिए, कर ऐसी हक निसबत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -14
- बेसुध नींद कहूं मैं तोको, तूं निठुर नीच निरधार । हुई तूं सब गुन के आड़े, ना लेने दई निध आधार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -23
- बेसुध भए देवे एती सोभा, तो कहा करे कर पेहेचान । जो मुख वचन एक कहों प्रवाही, तो सुन्या नहीं निरवान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -7
- बेसुध हुकमें करके, खेल कराया छल । ताए जो सिजदा करावहीं, पर हुकम बस अकल || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -39
- बेसुमार जो फेर फेर कहिए, तो आवत नहीं हिरदे । तो सब्द में ल्यावत, ज्यों दिल आवे मोमिनों के || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -3
- बेसुमार बुजरकी अर्स की, नेक कहूं अकल माफक । ए रूहें नीके जानत हैं, जो अपार अर्स है हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -14
- बेसुमार ल्याए सुमार में, ए जो करत हों मजकूर । क्यों आवे बीच हिसाब के, जो हक अंग सदा हजूर || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -2
- बेसो छो जिहां बलवंत बलिया, जाऊं बलिहारी तेणे ठाम । साथ सकल सवारों आवी बेसे, वरणवो धणी श्री धाम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -7

- बेहद के सब्द कहे का, था हरख अपार । दरवाजा ना खोलिया, रह्या रस सार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -65
- बेहद के साथी सुनो, बोली बेहद वानी । बड़े बड़े रे हो गए, पर काहूं न जानी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -1
- बेहद केरी वाटडी, जो जो तमे साथ । तारतम तेज छे निरमल, जोत अति अजवास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -14
- बेहद को सब्द न पोहोंचही, ए हद में करें विचार । कोई इत बुजरक कहावहीं, सो केहेवे निराकार || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -16
- बेहद को सब्द ना पोहोंचहीं, तो क्यों पोहोंचे दरबार । लुगा न पोहोंच्या रास लों, इन पार के भी पार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -41
- बेहद घर ने बेहद सुख रे, बेहद मारा श्री राज जी । अविचल सुख अनन्त देवाने, हूं जगवू तमारे काज जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -17
- बेहद घरनी वाटडी, बेहदी जाणे । हदनो जीव बेहदना, बार केम उघाडे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -68
- बेहद वाट देखावहीं, पिउ आए के पास । तारतम ले आए धनी, ए जोत उजास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -21
- बेहद वाणी बेहदी साथ तमे सांभलो, बोली बेहद वाणी । मोटा मोटेरा थई गया, कोणे नव जाणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -1
- बेहद सुख पार बेहद घर, बेहद पार श्री राज जी । अछरातीत सुख अखंड देवे को, मैं जगाऊं तुमारे काज जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -18
- बेहदी साथ आवियो, एणे दरवाजे । आ ब्रह्मांड मायातणो, रामत जोवा काजे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -37
- बेहू कांठे वनस्पति दीसे, झलूबे ऊपर जल । नेहेचल रंग सदा विध विधना, ए वन छे अविचल || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -27
- बेहू सरखा सरूप, मेली मुख कूप || ग्रं - रास, प्र -26, चौ -6
- बेहूगमां बे भामनी, वचे कान्ह कंठे कामनी । कंठ बांहोंडी बंने स्यामनी, एम फरत प्राणनाथ री || ग्रं - रास, प्र -16, चौ -7
- बेहेने दोऊ जीवा रूपा, भेलियां रहें मोहोलान । और बाई भागवंती, नारी घर कल्यान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -25
- बेहेनो बंने जीवा रूपा, भेलियां रहे मोहोलान । अने बाई भागवंती, नारी घर कल्यान || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -15
- बेहेवट पूर खमाए" नहीं, त्यारे बांह ग्रहीने काढी सही । पण न वली सुध आपणने केमे, मोहजल गुण नव मूक्यो अमे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -57

- बेहेवट पूर सह्यो न जाए, कर पकर के दई पोहोंचाए । तो भी सुध न भई आपन, क्योंए न छूटे मोह जल गुन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -12
- बैकुंठ जाए विष्णु को, सब देसी खबर । विष्णु को पार पोहोंचावसी, सब जन सचराचर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -18
- बैकुंठ थे जोत फिर आई, सिसपाल किया हवन । मुख समानी श्रीकृष्ण के, यों कहे वेद वचन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -22
- बैकुंठ नाथे सुने वचन, हंस होए आए ततखिन । हंसे रुप धरयो सुंदर, लिए सनकादिक के चित हर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -8
- बैकुंठ मिने नारायन जी, जिन मुख स्वांसा वेद । ए खावंद है खेल का, सो भी कहूं नेक भेद || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -29
- बैकुंठ से पाताल लों, बनि आदम हैवान । इन बीच की सब कही, ब्रह्मा रूद्र नारायन || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -5
- बैठ इन ख्वाब जिमीय में, कहे अर्स अजीम का बातन । हड्डी हड्डी जुदी होए ना पड़ी, तो कैसी रूह मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -142
- बैठ दुनी के दिल पर, चलाया हुकम । हक राह छुड़ाए डारे उलटे, ए दुस्मने किया जुलम || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -9
- बैठ बीच नासूत के, अंग नासूती जुबान । अर्स का बरनन कीजिए, सो क्यों कर होए बयान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -144
- बैठक दोऊ सिंघासन, चार पाए एक तखत । पीछल तकिए दोऊ जुदे, रख्या ऊपर दुलीचे इत || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -98
- बैठत सतगुर होए के, आस करें सिष्य केरी । सो डूवे आप सिष्यन सहित, जाए पड़े कूप अंधेरी || ग्रं - किरन्तन, प्र -26, चौ -6
- बैठत हो जित महाबलिया, बल बल जाऊं ठौर तिन । साथ सबेरा आए के बैठत, करो धाम धनी बरनन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -7
- बैठते उठते चलते, सपन सोवत जाग्रत । खाते पीते खेलते, सुख लीजे सब विध इत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -16
- बैठाई आप जैसी कर, सो खोल देखाई नजर । अजूं मांगत मेरे धनी, और ऐसे तुम कादर || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -16
- बैठाए बीच नासूत के, हम पर भेज्या फरमान । उनमें लिखी इसारतें, वाहेदत के सुभान || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -26
- बैठाए बेसक अर्स में, और जगाए बेसक । हाँसी भी बेसक हुई, जो आया नहीं इस्क || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -99
- बैठावें आठों भिस्तमें, छोटा बड़ा जो कोए। जो जैसा तैसी तिनों, महंमद पोहोंचावें सोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -84

- बैठियां सब मिल के, अंग सों अंग लगाए । उठाऊं जुदे जुदे मुलकों, नए नए वजूद बनाए || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -50
- बैठी अंग लगाए के, ऐसी करी अन्तराए । ना कछू नैनों देखत, ना कछू आप ओलखाए || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -3
- बैठी अंग लगाए के, ऐसी दई उलटाए। न कछू दिल की केहे सकों, न पिया सब्द सुनाए || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -4
- बैठी आंखें खोल के, अंग सों अंग जोड़। आसा उपजे अर्ज को, सो भी दई मोहे तोड़ || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -5
- बैठी इन मेले मिने, ए घर धनी सुख अखंड । आस न केहेन सुनन की, जानो बीच पड़यो ब्रह्मांड || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -13
- बैठी तले कदम के, ऐसी करी परदेसन । ले डारी ऐसी जुदागी, रया हरफ न नुकतारे इन || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -9
- बैठी तले कदम के, बीच डारे चौदे तबक । दूर-दराज ऐसी करी, कहूं नजीक न पाइए हक || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -8
- बैठी तले कदम के, मेरो ए घर धाम धनी । ए सुख देखाए जगावत, तो भी होत नहीं जागनी || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -12
- बैठी थीं डर जिनके, सब हिल मिल एक होए । हुकम हक के कौल पर, उलट तुमको जगावे सोए || ग्रं - सागर, प्र -3, चौ -12
- बैठी सदा चरन तले, कबूं न्यारी ना निमख नेस । पाइए न नाम ठाम दिस कहूं, ऐसा दिया विदेस || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -7
- बैठी हों आगे तुम, जानें अर्ज करूं कर जोड़ । सो उमेद कछू ना रही, कोई ऐसो दियो दिल मोड़ || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -10
- बैठे आगू हक के, किया था मजकूर । इंतहाए नहीं अर्स जिमी का, तुम कहूं नजीक हो के दूर || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -70
- बैठे उठे न पर सके, सके न रोए विकल । आखिर जाहेर हुए पीछे, आग हुए जल बल || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -23
- बैठे ख्वाब जिमीय में, और दिल पर सैतान पातसाह । नसल आदम हवाई, जो मारे खुदाई राह || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -69
- बैठे जुगल किसोर, ऊपर दोऊ के छत्र । आगे जिकर करें कई विधसों, और बजावें बाजंत्र || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -10
- बैठे तिन सिंघासन, हक अपना मिलावा ले । इन अंग की अकलें, क्यों कहूं खूबी ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -9
- बैठे बातें करें बका अर्स की, सोई भिस्त भई बैठक । दुनी बातें करे दुनी की, आखिर तित दोजक || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -144

- बैठे मासूक जाहेर, पर दिल ना लगे इत । मासूक मुख देखन को, हाए हाए नैना भी ना तरसत || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -7
- बैठे मूल मेले मिन, धनी आगू अंग लगाए । अंग इस्क जो अनुभवी, तुम क्यों न देखो चित ल्याए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -14
- बैठे सिंघासन सिर छत्र, वैराट बरती है आन । मुकट मनी ढोलें चंवर, नवखंड घुरे हैं निसान || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -13
- बोए आवे सुगंध सीतल, उछरंग होत मलार । गाजत गंभीर मीठड़ा, इन समें सोहे सिनगार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -37
- बोए नेक आवे इन घर की, तो अंग निकसे आहे । सो तबहीं ततखिन में, पिउजी पे पोहोंचाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -93, चौ -19
- बोझ अपनों निज वतन को, सो सब मेरे सिर दियो । नाम सिनगार सोभा सारी, मैं भेख तुमारो लियो || ग्रं - किरन्तन, प्र -62, चौ -15
- बोझ उठावें ब्रह्मांड को, ऐसे जोरावर । गरूड़ बल ऐसा रखे, चले विष्णु मन पर || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -26
- बोलत बाघ विस्तार के, सब मिल एकै सोर । गरजे सेती जानिए, इनों अंगों का जोर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -35
- बोलत बानी माधुरी, चलत होत रनकार । खुसबोए तेज नरमाई, जोत को नाहीं पार || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -106
- बोलना राह नहीं है उन जैसा, ऐसे जाहेर कह्या मुहम्मद साहेब ने || ग्रं - सनंध, प्र -2, चौ -9
- बोलां थी तो बोलाई, तो अडां पसाइए तूं । निद्र इलम या इस्क, तो डिनो अचे मूं || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -12
- बोलिए सो सब बन्धन, ए भी बोलावत तुम । ए सहूर भी तुम देत हो, ज्यों जानो त्यों करो खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -41
- बोली जुदी सबन की, और सबका जुदा चलन । सब उरझे नाम जुदे धर, पर मेरे तो केहेना सबन || ग्रं - सनंध, प्र -1, चौ -14
- बोली बोलावें मेहेर की, और मेहेरै का चलन । रात दिन दोऊ मेहेर में, होए मेहेरें मिलावा रूहन || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -16
- बोली सबों जुदी परी, नाम जुदे धरे सबन । चलन जुदा कर दिया, तार्थे समझ न परी किन || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -43
- बोले चाले पर कोई न पेहेचाने, परखत नहीं परखानों । महामत कहे माहें पार खोजोगे, तब जाए आप ओलखानो || ग्रं - किरन्तन, प्र -1, चौ -5
- बोले न मेंहेंदी एक जुबां, जुबां बोलें कई लाख । आगे बिन जुबां बोलसी, बिन अंगों बिन भाख || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -3

- बोले सह बेसुधमां, कोई वचन काढे विसाल । उतपन सर्वे मोहनी, ते थई जाय पंपाल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -2
- बोले हुकम दावा ले रूहन, बीच तन नासूत । ले सब सुध अर्स इलमें, देत दुनी में लज्जत लाहूत || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -56
- बोलो ते सर्वे वात झूठी, वनमां न हुता निरधार । नेहेचे जाणूं नाहोजी, तमे झूठा बोल्या अपार || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -30
- बोल्या वेद कतेब जे, जेहेनी जेटली मत । मोह थकी जे उपना, तेहेने ते ए सहु सत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -21
- बोहोत अटकाव है आसिक, कछु सेवा भी किया चाहे । ए तो बरनन सिनगार, सेवा उमंग रही भराए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -94
- बोहोत कया घर चलते, वचन न लागे अंग । इंद्रावती हिरदे कठिन भई, चली ना पिउजी के संग || ग्रं - किरन्तन, प्र -99, चौ -10
- बोहोत कही उस्मान ने, कजा न करी कबूल । मैं इन्साफ अदल कर ना सकों, तो कहां पाऊं जबराईल रसूल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -13
- बोहोत दुख देखे जीव जाते, तो भी गूंथे जाली फेर फेर जी । दोष नहीं इन मकड़ी का रे, इनका घर हुआ जाली अंधेर जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -15
- बोहोत दूर लों ए बन, आगू आगू बड़े देखाए । चढ़ते चढ़ते चढ़ते, लग्या आसमानों जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -55
- बोहोत देखी बका न्यामतें, करी हक सों बड़ी मजकूर । ख्वाब जिमी झूठी मिने, किया हक बका जहूर || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -7
- बोहोत देखे दुख अनेक होएसी, तातैं उठो तत्काल जी । जल के जीव को घर जल में, ज्यों रहे मकड़ी मांहें जाल जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -13
- बोहोत धन ल्याए धनी धामथें, बिध बिध के प्रकार । सो ए सब मैं तोलिया, तारतम सबमें सार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -54
- बोहोत धनिएँ मोको चाया, जाने प्रेम उपजे इन । सो प्रेम क्योंए न आइया, ऐसा हिरदे निपट कठिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -97, चौ -12
- बोहोत निसानी और हैं, अर्स अरवा मोमिन । सो इन जुबां केते कहूं, मेरे वतनी के लछन || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -36
- बोहोत निसानी और हैं, प्रेम सोहागिन गझ । जब सैयां जाहिर हुई, तब होसी सबों सुझ || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -19
- बोहोत पुकार करूं किस खातिर, ए सब सुपन सरूप । बेहद बनज का होएगा साथी, सो एक लवे होसी टूक टूक || ग्रं - किरन्तन, प्र -6, चौ -16
- बोहोत फंद बंध धंध कई, कई कोटान लाखों लाख । अंदर नजरों आवही, पर मुख न देवे भाख || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -15

- बोहोत बखत भला पाइया, धनिऐ दियो तुझे आप । मेहेर करी मेहेबूबें, करके संग मिलाप || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -28, चौ -3
- बोहोत बड़ी इत बैठक, विध विध बेसुमार । रात उज्जल अर्स चांदनी, ए सोभा अर्स अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -152
- बोहोत बड़े गुन कान के, बिना आसिक न जाने कोए। कई गुझ गुन श्रवन के, और कोई जाने जो दूसरा होए || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -11
- बोहोत बंध फंद धंध अजूं कई बीच में, सो देखे अलेखे मुख भाख न आवे । निराकार सुन्य पार के पार पिउ वतन, इत हुकम हाकिम बिना कौन आवे || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -3, चौ -7
- बोहोत बातें कई और हैं, सो केते लिखों निसान । साथ हम तुम मिलके, हँस हँस करसी बयान || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -29
- बोहोत बातें बीच अर्स के, किन विध कहूं इन मुख । जो बैठीं इन मेले मिने, सोई जाने ए सुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -76
- बोहोत बातें सुख अर्स के, सो पाइयत हैं इत । सुख उमत को अर्स में, ए जानती न थीं निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -9
- बोहोत बातें हैं इनकी, सो केती कहूं जुबान । ए नेक इसारत करत हों, है बेसुमार बयान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -63
- बोहोत रेती इन ठौर है, निपट सेत उज्जल । खेल खुसाली होत है, सखियां पाउं चंचल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -25
- बोहोत लाड़ किए मुझसों, इनों अर्स में मिल । एक लाड़ किया मैं इनों से, प्यार देखन सब दिल || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -39
- बोहोत लेहेरी इन सागर की, मेहेर इस्क इलम । सोभा तेज सुख कई बका, इन निसबत में जात खसम || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -20
- बोहोत सिखापन विध विध कही, पर नींद आड़े कछ हिरदे ना रही । नींद उड़ाओ देख नेहेचल रास, ज्यों हिरदे होए पिउ को प्रकास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -7
- बोहोत सुख हक तन में, जाहेर करें हक नैन । सब पूरा सुख तब पाइए, जब कहे रसना मुख बैन || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -6
- बोहोत सोर किया मुझ ऊपर, रोए रोए कहे वचन । अपनायत अपनी जान के, मोहे खोल दिए द्वार वतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -16
- बोहोतों किया कुरान अपना, ना किन लई हकीकत । ना किन पाया इलम हक का, ना किन खोली मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -43
- ब्रह्म इस्क एक संग, सो तो बसत वतन अभंग । ब्रह्मसृष्टी ब्रह्म एक अंग, ए सदा आनंद अतिरंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -2

- ब्रह्म नहीं मिने संसार, मन वाचा रही इत हार। ढूंढ्या कैयों कई प्रकार, पर चल्या न आगे विचार || ग्रं - खुलासा, प्र -11, चौ -10
- ब्रह्म ने भेजी परमहंस पर, वेद अस्तुत बंदोबस्त । ए ब्रह्म चरन क्यों छोड़हीं, जाकी ब्रह्म सों निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -36
- ब्रह्म-सृष्ट कही वेद ने, ब्रह्म जैसी तदोगत । तौल न कोई इनके, जाकी ब्रह्म सों निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -34
- ब्रह्मदिक नारद कई देव, कई सुर नर करे एह सेव । ब्रह्मांड विखे केते लेऊ नाम, सब कोई सेवें श्री भगवान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -16
- ब्रह्मलीला ढांपी हती, अवतारों दरम्यान । सो फेर आए अपनी, प्रगट करी पेहेचान || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -25
- ब्रह्मलीला तीनों ब्रह्मांड की, सो जाहेर होसी सुख ब्रह्म । दे मुक्त सब दुनी को, ब्रह्मसृष्टी लेसी कदम || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -46
- ब्रह्मलीला ब्रह्मसृष्ट में, चढ़ती चढ़ती कहे वेद । प्रेम लच्छ दोऊ कहे, किए जाहेर बुधजीएँ भेद || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -70
- ब्रह्मसष्ट जाहेर करूं, करसी लीला रोसन । अखंड धनी इत आए के, किया जाहेर मूल वतन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -2, चौ -15
- ब्रह्मसृष्ट कही वेद ने, अहेल-अल्ला कहे फरमान । निसबत सुख ख्वाब में, कर दई हक पेहेचान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -2
- ब्रह्मसृष्ट कहे मोमिन को, कुमारका फरिस्ते नाम । ठौर अछर सदरतुलमुतहा, अरसुल्अजीम सो धाम || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -52
- ब्रह्मसृष्ट के कारने, खेल जो रचिया ए। खेल देखाए सत वतन, महामत आए ले || ग्रं - किरन्तन, प्र -107, चौ -10
- ब्रह्मसृष्ट को ऐसो नूर, जो दुनियां थी बिना अंकूर । ताए नए अंकूर जो कर, किए नेहेचल देख नजर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -103
- ब्रह्मसृष्ट घर इस्क में, और दुनियां घर कुफर । मोमिन जलें न आग इस्कें, दुनी जाए जल बर || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -95
- ब्रह्मसृष्ट जाहेर करी, बुधजीए इत आए। अछरातीत को आनन्द, सत सुख दियो बताए || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -9
- ब्रह्मसृष्ट बिना न जाने कोए, ए सृष्ट ब्रह्ममथें न्यारी न होए। सो निध ब्रह्मसृष्ट ल्याईयां इत, ना तो ए लीला दुनिया में कित || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -72
- ब्रह्मसृष्ट भी धरे मोह के आकार, सो इत आवसी कौन प्रकार । तब श्रीधनीजीएं कहे वचन, बेहेर दृष्ट होसी रोसन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -84
- ब्रह्मसृष्ट मोमिन कहे, रूहें लेवें वेद कतेब विगत । ए समझ चरन ग्रहें ब्रह्म के, जाकी ब्रह्म सों निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -38

- ब्रह्मसृष्ट रूहें नाम दोए, अर्स रूहें ए जानत । दोऊ जान चरन ग्रहें एकै, जाकी ब्रह्म सों निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -39
- ब्रह्मसृष्ट वेद पुरान में, कही सो ब्रह्म समान । कई बिध की बुजरकियां, देखो साहेदी कुरान || ग्रं - किरन्तन, प्र -72, चौ -4
- ब्रह्मसृष्ट सखियां धाम की, आइयां छल देखन । जुदे जुदे घर कर बैठियां, खेलें भुलाए दिया वतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -77, चौ -2
- ब्रह्मसृष्ट हुती बृज रास में, प्रेम हुतो लछ बिन । सो लछ अव्वल को ल्याय रूह अल्ला, पर न था आखिरी इलम पूरन || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -47
- ब्रह्मसृष्टि और ब्रह्म की, है सुध कतेब वेद । सो आप आखिर आए के, अपनो जाहेर कियो सब भेद || ग्रं - किरन्तन, प्र -65, चौ -19
- ब्रह्मसृष्टि धाम पोहोंचावसी, और मुक्त देसी सबन । कलजुग असुराई मेट के, पार पोहोंचावसी त्रिगुन || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -30
- ब्रह्मसृष्टि बीच धाम के, ए देखें खेल सुपन । मोहे स्यामाजीएँ यो कया, जो आए धाम से आपन || ग्रं - किरन्तन, प्र -122, चौ -1
- ब्रह्मसृष्टी अछरातीत से, ईस्वरी सृष्ट अछर से । जीवसृष्ट बैकुंठ की, ए जो गफलत में || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -50
- ब्रह्मसृष्टी आई अर्स से, जीत इंद्री सुध अंग । छोड़ मांहे बाहेर दृष्ट अंतर, परआतम धनी संग || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -12
- ब्रह्मसृष्टी प्रेम लच्छ में, कुमारिका ईश्वर । तीसरी जीवसृष्ट दुनियां, वेद केहेत यों कर || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -48
- ब्रह्मसृष्टी लीजियो, हारे सैयां ए है अपना जीवन । सखी मेरी जो है मूल वतन, ब्रह्मसृष्टी लीजियो || ग्रं - परिक्रमा, प्र -2, चौ -1
- ब्रह्मसृष्टी सखियां स्याम संग, खेले बृज रास के माहें । ए सुनियो तुम बेवरा, खेल फजर तीसरा इहाए || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -23
- ब्रह्मा सिव या देव जन, कई दुनियां तिन सेवक । सो कहे ए सुख देवहीं, बैंचे अपनी तरफ खलक || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -26
- ब्रह्मांड को भान्यो खिलाफ, सब जहान को कियो मिलाप । ग्वाही खुदा की खुदा देवे, करे बयान हुकम सिर लेवे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -33
- ब्रह्मांड कोट वही गया, कोणे न सुणाणी । चौद भवनना जे धणी, खते खोलाणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -4
- ब्रह्मांड चौदे तबक, सब सत का सुपन । इन दृष्टांतें समझियो, विचारो वासना मन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -27
- ब्रह्मांड तीनों देखे हम, खेल बिना हिसाब । जाग वतन बातां करसी, जो देखी मिने ख्वाब || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -38

- ब्रह्मांड त्रणे दीठा अमे, रामत अलेखे । जागीने करतूं वातडी, जे सुपन मांहें देखे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -28
- ब्रह्मांड दसो दिस प्रगट कीधां, अंतराय नहीं रती रेख । सत वासना असत जीव, सहु विध कही विवेक || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -107
- ब्रह्मांड दोऊ अखंड किए, तामें लीला हमारी । तीसरा ब्रह्मांड अखंड करना, ए लीला अति भारी || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -73
- ब्रह्मांड बड़ा इन दुनी में, कोई नाहीं दूसरा ठौर । तो अर्स बाघ के बल को, कहूं न निमूना और || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -62
- ब्रह्मांड बंने अखंड कीधां, तेमां लीला अमारी । ब्रह्मांड त्रीजो अखंड करखो, ए लीला अति भारी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -106
- ब्रह्मांड बने अखंड कीधां, तेमां लीला अमारी । ब्रह्मांड त्रीजो अखंड करखो, ए लीला अति भारी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -72
- ब्रह्मांड मांहें आवियो एह, मन तणां भाजवा संदेह । साथ मांहें एक सुंदरबाई, तेणे श्री राजे दीधी बड़ाई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -19
- ब्रह्मांड माहेलो जीव जे होय रे, ते तां जाजो पोतानी वाटे जी । बेहद जीव जे होय रे अमारो, आ वचन कहेवाय ते माटे जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -47
- ब्रह्मांड विखे वाणी घणी, केहेना नाम लेवाय । साख पूरे सहु ए वाटनी, जो जीवे जोवाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -17
- ब्रह्मादिक नारद छे देव, बीजा सुर नर अनेक करे एनी सेव । ब्रह्मांड विखे केटला लऊं नाम, सहु कोई सेवे श्री भगवान || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -16
- ब्राह्मण कहें हम उत्तम, मुसलमान कहें हम पाक । दोऊ मुठी एक ठौर की, एक राख दूजी खाक || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -42
- ब्राह्मण भाट गुणीजन चारण, मलया ते मांगण हार । निरत नटवा गंधर्व, राग सांगीत थेई थेई कार || ग्रं - किरन्तन, प्र -51, चौ -7
- ब्रोध सुर असुरों को, दूजे जादे पैगंमर और । वेद कतेब छुड़ावने, धनी आए इन ठौर || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -90

भ

- भई नई रे नवों खंडों आरती, श्री विजिया अभिनंद की आरती । प्रेम मगन होए उतारती, सखी आप पिया पर वारती || ग्रं - किरन्तन, प्र -56, चौ -1
- भई रोसनाई रूहअल्लाह की, सुरू दसई अग्यारहीं विस्तार । होते सदी बीच बारहीं, आया बका मता बेसुमार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -35
- भई सोभा संसार में, अति बड़ी खूबी अपार । दुनियां उठाई पाक कर, ना जरा रह्या विकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -21

- भए जहूदों के बड़े बखत, पाई बुजरकी आए आखिरत । इत जाहेर हुए इमाम हक, सोई काफर जो ल्यावे सक || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -19
- भगत होत भगवान की, किव कर कहावें सिध साध । गुन अंग इंद्री के बस परे, ताथें बांधत बंध अगाध || ग्रं - किरन्तन, प्र -26, चौ -2
- भगवान जी आए इत, जागवे को तत्पर । हम उठसी भेले सबे, जब जासी हमारे घर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -34
- भगवान जी खेलत बाल चरित्र, आप अपनी इच्छा सों प्रकृत । कोट ब्रह्मांड नजरों में आवें, खिन में देखके पलमें उड़ावें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -99
- भगवान जी बोले तिन ताओ, लखमीजी बेर जिन ल्याओ । तब कलप्या जीव दुख अनंत कर, उपज्यो वैराग लियो हिरदे धर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -36
- भगवानजी आहीं आविया, जागवाने ततपरजी । अमे जागसूं सहु एकठा, ज्यारे जासूं अमारे घरजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -30
- भगवानजी केरी रामतडी, जोयानी हती मूने खांत जी । नौतनपुरी मांहें आवी करीने, मूने चीधी देखाड्यो दृष्टांत जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -36, चौ -3
- भगवानजी त्यारे तेणे ताल, हंस रूप लाव्या तत्काल । हँसजीने जीवे ओलख्यू , त्यारे मन आडो फरीने वल्यूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -6
- भगवानजी बोले तब ताहें, दोष हमारा कछुए नांहें । तो भी वचन तुमको कहे जाए, लखमीजी बोहोत दुख पाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -41
- भगो पण तूं न छुटे, मंगां हक नियाय । सरो घुरे सच सभनी, या गरीब या पातसाह || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -74
- भट जी चोखू तमने केम कहे, जेणे माड्यं ए ऊपर हाट । सूथी देखाडे संजमपुरी, तमे अपगरो एणी वाट || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -38
- भट परो इन नींद को, ए ठौर बुरी विखम । यों जगावते न जागियां, तो कौन विध होसी तिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -20
- भट परो तिन नींद को, जिन सोहागनियां दैयां भुलाए । तो भी नींद निगोड़ी ना उड़ी, जो धनी थके बुलाए बुलाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -1
- भट परो तृष्णा कहूं तोको, तूं निपट निठुर निरधार । और सबे गुन तृपत होवें, पर तो में कोई भूख भंडार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -39
- भट परो नींद मोह की, जो टाली न टले क्यों । आंखां खोल सीधा कहे, फेर वली त्यों की त्यों || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -1
- भट परो मेरे जीव अभागी, भट परो चतुराई । भट परो मेरे गुन प्रकृती, जिन बूझी ना मूल सगाई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -7
- भटजी कथा करवाने बेसे, केणे आंसू पात न आवे । भांड तणी पेरे वचन वांका कही, श्रोताने हँसावे || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -43

- भनत महामती हक दिल मारफत की, पोहोंचाई इन न्यामते उमत खिलवत । क्यों कहूं सिफत बरकत वाहेदत की, लज्जत आई इमामत कयामत || ग्रं - किरन्तन, प्र -116, चौ -4
- भमरा मदया करे रे गुंजार, लई फूलडे बहेकार । एणी रूते धणी धाम विना, घडी एकते केमे न जाय आधार || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -7
- भमरियां माहें बेसुमार, लेहेरां मेर समान । मछ लड़े बड़े मोहजल के, करनी पाल इस ठाम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -111
- भया निकाह आदम हवा, दुनी निकाह अबलीस । ए जाहेर लिख्या फुरमान में, पूजे हवा अपनी खाहिस || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -15
- भरत खंड सुलतान कहावते, सो दिए सब फंदाए । इन विध उरझे आपमें, सो किनहूं न निकस्यो जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -96
- भरत भली पेरे सोभित, कांई पचरंग चुन्नी सार । अनेक विध ना फूल वेल, खुसबोए तणा वेहेकार || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -29
- भरथ खण्ड रे हिंदू धरम जान के, मांगे विष्णु संग्राम अरथ । फिरत आप रे ढिंढोरा पुकारता, है कोई देव रे समरथ || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -6
- भरम की बाजी रची विस्तारी, भरमसों भरम भरमाना । साध सोई तुम खोजो रे साधो, जिनका पार पयाना || ग्रं - किरन्तन, प्र -2, चौ -6
- भरम टले ओलखाय धणी, अने सेवा थाय मारा वालाजी तणी । ओलखाय वल्लभ तो टले माया पास, एटला माटे प्रगट थयो रास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -28
- भरम भाजवा कया वचन, मोटीमत ग्रहे जेम थाय धन धन । हवे ओलखजे जोपे करी, भरम भ्रांत मूके परहरी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -15
- भरम भाजो वचन जोई करी, निद्रा घेन मूको परहरी । श्री धामतणां धणी केहेवाए, ते आवी बेठा आपण मांहें || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -13, चौ -2
- भरम भान के कहे वचन, बड़ी मत ले ज्यों होए धंन धंन । ए भरम की नींद उड़ाए के दे, पेहेचान पिउ की नीके कर ले || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -18
- भरम भ्रांत कहे सांभलो जीवजी, अमने मारो तरवारो । कीहे ठिकाणे निद्रा करो, ते आपोपू कां न संभारो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -93
- भरम भ्रांत कीधी तमे भुंडी, एम न करे बीजो कोए। तारतम अजवाले वालोजी ओलख्या, तमे आडा फरी वल्या तोहे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -90
- भरम मँडो तमे परहरो, जेम थाय अजवालुं अपार । वचन वालाजी तणे, तू मूलगां सुख संभार || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -10
- भला कहे दुनियां मिने, न भूलिए अपने तन । हक हादी रूहें बीच खिलवत, उठिए बीच बका वतन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -110

- भला जो कछू जान्या सो किया, इन झूठी जिमी में आए। जब कछू उमेद देओगे, तब कहूंगी आस लगाए || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -51
- भली बुरी किनकी नहीं, डरता रहे सुभान । सोहोबत खूनी की ना करे, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -22
- भली भांतना भूखण पेहेस्या, वेण रसालज वाय । साथ सकलमां आवीने ऊभो, करसूं रामत उछाय || ग्रं - रास, प्र -11, चौ -5
- भले कात्या इन सूत को, भला पाया ए बखत । भले सो भागी नींदड़ी, भले मिले धनी इत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -28, चौ -6
- भले तमे देह धस्या मुझ कारण, करी अजवालू टाल्यो भरम । जीव मारो घणो कठण हतो, तमे नेत्रे गाली कीधो नरम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -9
- भले तारतम कियो प्रकास, देखाया माया में अखंड विलास । तारतम वचन उजाला कस्या, दूजा देह माया में धरया || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -18
- भले तारतम कीधो प्रकास, सकल मनोरथ सिध्यां साथ । वचने सर्व अजवालो कस्यो, अने बीजो देह माया मांहें धरयो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -9, चौ -17
- भले तुम देह धरी मुझ कारन, कर रोसन टाल्यो भरम । जीव मेरा बोहोत सखत था, मेहेर नजरों भया नरम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -9
- भले देखो तुम आकार को, पर देखो अंदर का तेज । धनीधाम के साथसों, कैसा करत हैं हेज || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -10
- भले या जुग में आचारज प्रगटे, जिन चरची सुकजी की बान । धंन धंन टीका श्री वल्लभी, इन प्रेम प्रकास्यो परमान || ग्रं - किरन्तन, प्र -13, चौ -4
- भले सो कतंदी ही सुत्रडो, अदी भले लधिम ही वेर । भले सो भगी ही निद्रडी, मूंके भले धणी मिड्या हेर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -28, चौ -6
- भव सागर को नाहीं छेह, सुकजी यो मुख जाहेर कहे । पेहेले पांउ भरे तुम जेह, कर सांचा मूल सनेह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -23
- भव सागर क्यों एता भया, जो जीव खरे जीवनजी ग्रह्या । यों मन जीवथें जुदा टल्या, तब झूठा मन झूठे में मिल्या || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -27
- भवजल चौदे भवन, निराकार पाल चौफेर । त्रिगुन लेहेरी निरगुन की, उठे मोह अहं अंधेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -1
- भवरोगी होय जनमनो, जो एहेवो होय भरतार । तोहे तेने नव मूकवो, जो होय कुलवंती नार || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -24
- भवसागर और भागवत, याकी कुंजी एक समारी । ए दोऊ ताले दोऊ दरवाजे, कोई खोल न सके संसारी || ग्रं - किरन्तन, प्र -10, चौ -9
- भवसागर केम एटलो थयो, जो जीव खरे जीवनजी ग्रहयो । त्यारे मन एकलो बेसी रह्यो, खोटो मन खोटामां भल्यो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -22

- भवसागर जीवन को, किन पाया नाहीं पार । दुख रूपी अति मोहजल, माहें धखत जीव संसार || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -42
- भाई महंमद के मोमिन, कोई था न उस बखत । तो सरा चल्या तोरे बल, कह्या हम फेर आवसी आखिरत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -1
- भाई रे बेहद के बनजारे, तुम देखो रे मनुए का खेल । ए सब आग बिना दीया जले, याको रूई न बाती तेल || ग्रं - किरन्तन, प्र -6, चौ -1
- भाई रे ब्रह्मग्यानी ब्रह्म देखलाओ, तुम सकल में सांई देख्या । ए संसार सकल है सुपना, तो तुम पारब्रह्म क्यों पेख्या || ग्रं - किरन्तन, प्र -32, चौ -1
- भाई रे ब्रह्मग्यानी ब्रह्म सुपने में, महामत कहे यों पाइए । पार निकस के पूरन होइए, तब फेर सब दृष्टें देखाइए || ग्रं - किरन्तन, प्र -32, चौ -11
- भाखती महामती अर्स रूहें उमती, पूरन कर प्रीत प्रेमें पोहोंचाई । अर्स वाहेदत खिलवत खसम की, हुज्जत निसबत लिए इत आई || ग्रं - किरन्तन, प्र -113, चौ -4
- भाग जाए गोवाल न्यारे, हम पकड़ राखें पिउ पास । पीछे हम एकांत पिया संग, करें बन में विलास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -49
- भागत एक मंदिर से, प्रतिबिंब उठे अपार । पकड़न कोई न पावहीं, निकस जाएं कई द्वार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -19
- भागवत वचन जो जो रे विचारी, सार अखर जे सत । जीवने जगावो वचन प्रकासी, रदे उघाडो मत || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -30
- भाजे भजन रे बाजे उछव अटके, ढाहे मंदिर हरिद्वार । सत छोड़ सूरों नीचा देखिया, कमर बांधी रही तरवार || ग्रं - किरन्तन, प्र -53, चौ -4
- भाण वचन रे कांई, ए वालाने न केहेवाय । धणीतणी रे जोत, कोट ब्रह्मांडे न समाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -16
- भांत तो भली पेरे वरणवू, मांहें वेल सुनेरी सार जी । वस्तर समियल बणियल दीसे, नव सूझे कोए तार जी || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -16
- भाँत भाँत आलम में, रसूलें करी पुकार । बिन मोमिन कोई न कादर, जो सुनके होए हुसियार || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -80
- भानूं भरम मोह जो मूलको, लेऊं सो जीव जगाए। करूं अस्तुत पियाकी प्रगट, देऊ सो पट उड़ाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -2
- भानो भरम वचन देख कर, छोड़ो नींद रोसनी हिरदे धर । श्रीधाम के धनी केहेलाए, सो बैठे आपन में इत आए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -2
- भामणा ऊपर लउं भामणा, सुख अमने दीधां अति घणा । वली वली लागू चरणे, सेवा करीस हूं वालपण घणे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -3
- भारे वचन छे जो घणूं, जो काई ग्रहसो आपोपणूं । ए वचन ऊपर एक कहूं विचार, सांभलो साथ मारा धामना आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -8

- भारे वचन छे निरधार, साथ करसे एह विचार । जो न कहूं सतनो सार, तो केम साथ पोहोंचसे पार || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -45
- भारे विना भार न उपडे, मुखथी वचन जआ केमे नव पडे । ज्यारे थयो कृष्ण अवतार, रूकमणी हरण की– मुरार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -52
- भाले तरारी कटारिएँ, मूंके वढे बिधाऊं झूक । मूं अंग मूंहीं डुझण थेयां, जीव करे रे मंझ कूक || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -8, चौ -7
- भिस्त अव्वल रूहों अक्स, ए जो होसी भिस्त नई । भिस्त होसी दूजी फरिस्तों, जो गिरो जबरूत से कही || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -14
- भिस्त चौदे तबक, देसी दुनियां दीन । देसी ब्रह्मा रूद्र नारायन को, आखिर दे आकीन || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -45
- भिस्त दई तिन को, जो हुते दुस्मन । सबों लई थी हुज्जत, हम वारसी ले मोमिन || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -96
- भिस्त दई सबन को, चढ़े अछर नूर की दृष्ट । कायम सुख सबन को, सुपन जीव जो सृष्ट || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -109
- भिस्त दोजख जाहेर भई, नफा किसी को न देवे कोई । ले हिरदे हादी के पाए, छत्रसाल यों कहे बजाए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -41
- भिस्त दोजख दोऊ जाहेर, ए लिख्या मांहें फरमान । तिन छोड़ी दुनियां हराम कर, जिन हुई हक पेहेचान || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -121
- भिस्त भी बरकत मोमिनों, दई दुनियां को अविनास । पर सुख बड़े मोमिन के, लिए कदमों अपने पास || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -80
- भिस्त रजवान मोमिन निगेहवान, दोजख खजाना पोहोंचे कुफरान । तहां तांई बखत पोहोंचे सबन, पैदरपे जले अगिन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -37
- भिस्त हाल चार कुरान में, कहया आठ होसी आखिर । ए भी सुनो तुम बेवरा, देखो मोमिनों सहूर कर || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -11
- भिस्त होसी आठ विध की, और आठ विध का अंकूर । हर अंकूर कृपा कई विध, ले उठसी नेहेचल नूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -18
- भिस्त होसी इत जाहेर, और जाहेर दोजक । काजी कजा इत जाहेर, और जाहेर होसी सबों हक || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -62
- भिस्तां बांट दइयां इन बिध, काम सबों के किए यों सिध । कहे छत्ता जो पेहेले ल्यावे ईमान, खास उमत का सोई जान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -2, चौ -11
- भिस्ती देखें दोजखियों दुख, देखें मोमिन होवे सुख । यों कह्या बीच मिसल जादिल, पावे ईमान बीच मिसल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -39
- भी आउध अमृत रूप रस, छल बल वल अकल । कोमल कुटिल अंग सीतल, चंचल चतुर चपल || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -9

- भी इत अर्स अजीम से, मसी ल्यावें कुंजी रोसन । सो तोड़ कुफर आलम का, साफ करें सबन || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -17
- भी कया बानीय में, पांच सरूप एक ठौर || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -8
- भी कहूं तुमें समझाए के, तुम भानो धोखा मन । अवतार सो अक्रूर संगे, जाए लई मथुरा जिन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -16
- भी कहूं मेरी सैयन को, जो हैं मूल अंकूर । सो निज वतनी सोहागनी, पिया अंग निज नूर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -1
- भी ताके बांटे किए सताईस, चढ़े ऊंचे सरत बांध जगदीस । सो बांटे किए असी और एक, पोहोंचे बैकुंठ चढ़े या विवेक || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -4
- भी तितथें रूह आवहीं, आवें नूर से जोस कूवत । सो फुरमाया सब करे, पकड़ के सूरत || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -15
- भी तुमको दिखाऊं दुस्मन, जिनहूं न छोड्या कोए जी । सो तुमको दिखाऊं जाहेर, तुमको अंदर झूठ लगावे सोए जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -25
- भी पूछ संगी तूं अपने, जो हुए पिंड) दूर । कई साखें अजूं ले खड़ी, देख रोसन अपना नूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -87, चौ -10
- भी फुरमाया तुम भूलोगे, साहेद किए रूहें फरिस्ते । मैं तुम में साहेद तुम दीजियो, आप अपनी उमत के || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -5
- भी बल जाऊं आंगने, आगे पीछे सब साज । जहां बैठो उठो पांउ धरो, धनी मेरे श्री राज || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -3
- भी बल जाऊं हस्त कमल की, बल जाऊं वस्तर । लेऊं बलैयां भूखन की, बल जाऊं सीतल नजर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -11
- भी बेवरा वासना जीवका, याके जुदे जुदे हैं ठाम । जीव का घर है नींद में, वासना घर श्री धाम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -62
- भी भृकुटी अति सोभित, रंग स्याम अंग गौर । केहेनी जुबां न आवत, कछू अर्स रूहें जानें जहूर || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -66
- भी भृकुटी नैन मुख नासिका, हरवटी अधुर गाल कान । हाथ पाँउं उर कण्ठ हँसें, सब नाचत मिलन सुभान || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -118
- भी भृकुटी पल पापण, मुसकत लवने निलवट । इन विध जब मुख निरखिए, तब खुलें हिरदे के पट || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -22
- भी राखों बीच नैन के, और नैनों बीच दिल नैन । भी राखों रूह के नैन में, ज्यों रूह पावे सुख चैन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -148
- भी राजाऐं पूछा यों, बड़ी मत सो जानिए क्यों । बड़ी मत को कहूं विचार, लीजो राजा सबको सार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -4

- भी लगता मींडा धरूं एक, जीवसे गिनूं दस हजार विसेक । भी एक धरके लाख गिनाए, भी धरूं ज्यों दस लाख हो जाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -13
- भी लिख्या कुरान में गिरो की, सोहोबत करसी जोए । निज बुध जाग्रत लेय के, साहेब पेहेचाने सोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -18
- भी वरन्यो सुख नेहेचल रास, पहेले फेरे के दोऊ किए प्रकास । रास अखंड रात रोसन, बृज लीला अखंड रात दिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -8
- भी वाही चरचाने वाही बान, वचन केहेते जो परवान । बृज रास श्रीधाम के सुख, साथ को केहेते जो श्रीमुख || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -7
- भी हिंदू मुस्लिम की, कहूं तफावत तुम । हिंदू हिसाब जमपुरी, मुस्लिम हाथ खसम || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -19
- भीडी ते अंग इंद्रावती, सखी का करो तमे एम । जीवन मारा जीवनी, दुख करो एम केम || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -39
- भीडीने मलियो बंने उछरंगे, भाजी हैडानी हाम । इंद्रावती कहे केसरबाई, वाले पूरण कीधां मन काम || ग्रं - रास, प्र -39, चौ -15
- भुलवणीनी रामत कीजे, वाला तमे अम आगल थाओ रे । दोडी सको तेम दोडजो, जोइए अम आगल केम जाओ रे || ग्रं - रास, प्र -18, चौ -1
- भुलवणीमां भूलवजो, देजो वलाका अपार । भूलवी तमारी हूं नव भूलूं, तो हूं इंद्रावती नार || ग्रं - रास, प्र -18, चौ -2
- भुलाइयां खेल में बेसक, हुआ बेसक बेवरा ए। क्यों ना लें इस्क बेसक, कहाए बेसक संदेसे || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -61
- भुलाए दिया तुम हम को, आप वतन खसम । ताथें खुदी में ले खड़ी, झूठे खेल में आतम || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -44
- भुलाए वतन आप खसम, खेल देखाए के जुदागी । मेहेर करी इन विध की, बैठे खेले में जागी || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -40
- भूखण झलहलकार, नंग तो तेज अपार । जोत तो अति आकार, वस्तर सोहे सिणगार, मोहे वालो रे मन || ग्रं - रास, प्र -13, चौ -3
- भूखण बाजे धरणी गाजे, वृंदावन हो हो कार । अमृत वा वाय लहेरों लिए वनराय, अंग उपजावे करार || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -22
- भूखण बाजे भली भांतसूं, धरती करे धमकार । सब्द उठे सोहांमणा, उछरंग वाध्यो अपार || ग्रं - रास, प्र -29, चौ -8
- भूखण लटके भामनी, काई तेज करण कामनी । संग जोड स्यामनी, वनमां करे विलास री || ग्रं - रास, प्र -16, चौ -3
- भूखण स्वर सोहामणा, मुख वाणी ते बोले रसाल । ए स्वरने ज्यारे श्रवणा दीजे, त्यारे आडो न आवे पंपाल || ग्रं - रास, प्र -7, चौ -10

- भूखन अंग अर्स के, जानसी कोई आसिक । अनेक सुख गुन गरभित, ए अर्स सूरत अंग हक || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -44
- भूखन करत जुदे जुदे गान, मुख बाजे करें एक तान । क्यों कर कहूं ए निरत, सोई जाने जो हिरदे धरत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -147
- भूखन चरणे सोभंता, अने बोलता रसाल । जुजवी जुगतना जवेर ज दीसे, करे ते अति झलकार || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -12
- भूखन मेरे धनी के, किन विध कहं जो ए। के कहूं खूबी नरमाई की, के कहूं अम्बार तेज के || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -92
- भूखन सब्दातीत के, क्यों इत बरनन होए । सोभा अर्स सरूप की, इत कबहूं न बोल्या कोए || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -1
- भूखन सामी न देखिए, जो देख्या चाहे जंग । पेहेले देखिए आकास को, तो जुध करे नंग सों नंग || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -24
- भूखन हक श्रवन के, और हक कण्ठ कई हार । सोई कण्ठ श्रवन रूह के, साज खड़े सिनगार || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -61
- भूल गइयां खेल में, जो मोमिन हैं समरथ । नूर इमाम को मुझ पे, केहे समझाऊं अर्थ || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -7
- भूल गइयां खेल में, जो सैयां हैं समरथ । प्रकास पिया का मुझ पे, कहे समझाऊं अर्थ || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -7
- भूलीस मारे वचिखिण वाला, आवी मारे वांसे वलगो । अनेक वलाका जो हूं दऊं, पण तूं म थाइस अलगो || ग्रं - रास, प्र -18, चौ -6
- भूले करे जाहेरियों सिफत, सुध न परी बातन । मारफत सूरज उगे बिना, क्यों देखें बका अर्स तन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -31
- भूले सब जुदे पड़े, माएना सबों का एक । ए सतगुर हादी बिना, क्यों कर पावे विवेक || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -14
- भूले हक और आप को, और भूले बका घर । हक हँससी इसी बात को, रूहें भूली क्यों कर || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -74
- भूलोगे तेहेकीक तुम, मेरी पाओ ना तुम खबर । ए खेल देखे ऐसा होएसी, ना सुध आप ना घर || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -18
- भृकुटी तिलक सोभा छोड़ के, जाए न सकों लग कान । सो कान कोमल अति सुन्दर, सुख पाइए हिरदे आन || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -115
- भेख जुदे जुदे खेल ही, जाने खेल अखंड । ए देत देखाई सब फना, मूल बिना ब्रह्मांड || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -19
- भेख जुदे जुदे खेलहीं, जाने खेल अखंड । ए देत देखाई सब फना, मूल बिना ब्रह्मांड || ग्रं - सनंध, प्र -15, चौ -21

- भेख बागे का बेवरा, रह्या अग्यारे दिन रे । सात गोकुल चार मथुरा, कौन केहेसी विवेक वचन रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -42
- भेख भाखा जातें जुदियां, ना तो सोई दम सोई देह । बैंचा-बैंच कर हुकमें, खेल बनाया एह || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -14
- भेख भाखा जिन रचो, रचियो माएने असल । भई रोसन जोत रसूल की, अब खुले माएने सकल || ग्रं - सनंध, प्र -3, चौ -1
- भेख सारे बनाए के, करें हो हो कार । कोई मिने आहार खाए, कोई खाए अहंकार || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -11
- भेख सारे बनाए के, करें होहोकार । कोई मिने आहार खाए, कोई खाए अहंकार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -9
- भेज्या बेसक दारू हैयाती, तम पे मेरे हाथ हबीब । किए चौदे तबक मुरदे जीवते, तुम को ऐसे किए तबीब || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -116
- भेद न पाइए बिना तफसीर, ए दई सिच्छा महंमद फकीर । खासा मुरीद ए जब भया, बेटा नजरी एहिया को कह्या || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -3
- भैरव न झंपाव्यो रे जीव, एवो थयो कां कायर । तरवारे न ताछयो रे अंग, धणी जातां सुख सायर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -32
- भोजन सर्वे भोग लगावत, पांच सात अंन पाक । मेवा मिठाई अनेक अथाने, बिध बिध के बहु साक || ग्रं - किरन्तन, प्र -57, चौ -4
- भोंणे लिकंदो मुंह थीं, आए नियां गाल घणी । लाड कोड मंगां तो कने, अच मुकाबिल मूं धणी || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -82
- भोम आठमी हिंडोले इसी भांत भोम आठमी, चार चार खटछप्पर । चारों तरफों हींचत, ए सोभा कहूं क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -122
- भोम उज्जल कई नकस, कहा कहूं जिमी इन नूर । जानों कोटक उदे भए, अर्स के सीतल सूर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -84
- भोम चौथी निरत होत चौथी भोम में, जित मोहोल बन्यो विसाल । चौक मध्य अति सुन्दर, क्यों कहूं मंदिर द्वार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -43
- भोम चौथी नूर निरत की भोम चौथी जो नूर की, नूर में नूर विस्तार । ए नूर कया तो जावहीं, जो होवे नूर सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -45
- भोम चौथी नूर में, नट निरत नूर खेलत । नूर बिना कछू न पाइए, सुख सनमुख नूर अतन्त || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -130
- भोम छठी नूर सुखपाल भोम छठी नूर झिलमिले, सब ठौरों नूर नाम । नूर रूहें खेले नूर में, सब रहया नूर में जाम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -68
- भोम छठी बड़ी जाएगा, है बैठक इत विस्तार । बीच सिंघासन कई विध के, और झरोखे किनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -104

- भोम तले की क्यों कहूं, विस्तार बड़ो अतंत । नेक नेक निसान दिए हादियों, मैं करूं सोई सिफत || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -1
- भोम तले की बैठाए के, खेल देखाया बांध उमेद । हक बिना हकीकत कौन कहे, दिए बेसक इलम भेद || ग्रं - परिक्रमा, प्र -19, चौ -1
- भोम तले बन हिंडोले, अति सोभित इतथें । मेहेराव झरोखे सुन्दर, जब बैठ देखिए बन में || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -28
- भोम तीसरी नूर झरोखा तीसरी भोम का नूर जो, नूर इन मुख कया न जाए। बड़ी बैठक नूर इन भोमें, इत नूर आप दीदारे आए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -34
- भोम तीसरी बैठे हक हादी भोम तीसरी, जित आवत नूरजलाल । इत दोए पोहोर की बैठक, और सेज्या सुख हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -26
- भोम दूजी नूर भुलवनी दूजी भोम जो नूर की, नूर चेहेबच्चे जल । नूर मन्दिर भुलवन के, नूर एक सौ दस मोहोल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -15
- भोम नौमी नूर नूरै, गिरदवाए नूर तखत । ए नूर विचारे ना उड़े, हाए हाए नूर जीवरा बड़ा सखत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -104
- भोम पांचमी नूर सेज्या नूर देखो भोम पांचमी, जित मन्दिर नूर सेज । बारे हजार मोहोल नूर के, सब नूरै रेजा रेज || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -57
- भोम पांचमी पौढ़न की सुख बड़ो भोम पांचमी, मध्य मंदिर बारे हजार । बीच मोहोल स्यामाजीय को, इन चारों तरफों द्वार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -78
- भोम पांचमी मध की, इत पौढ़त हैं रात । स्याम स्यामाजी साथ सब, जोलों होए प्रभात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -101
- भोम पांचमी सुख पौढ़न के, ए हक की बातें नेक । कौन केहेवे मासूक बिना, आसिक गुझ विवेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -19, चौ -12
- भोम बन आकास का, अवकास न माए उजास । कछुक आतम जानहीं, सो कह्यो न जाए प्रकास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -61
- भोम बन तलाब सोभित, कुन्ज-बन बीच मंदिर । कहा कहूं गलियन की, छाया प्रेमल सुंदर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -52
- भोम भली खेडी करी, जल सींचियूं आधार । वली बीज मांहें वावियूं, सुणो सणगानों प्रकार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -46
- भोम भली भरतखंड की, जहां आई निध नेहेचल । और सारी जिमी खारी, खारे जल मोह जल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -2
- भोम भली भरथ खंड की, जहां आई निध नेहेचल । और सारी जिमी खारी, खारे जल मोह जल || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -2
- भोम भली भरथ खंडनी, जिहां निपजे निध निरमल । बीजी सर्वे भोम खारी, खारा ते जल मोहजल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -9

- भोम रोई भली भांत सों, टूट गई रसातल । नाग लोक सब रोइया, सो पड़या जाए पाताल || ग्रं - किरन्तन, प्र -75, चौ -10
- भोम विना ओढूँ लिए, अने चरण विना उजाय । जल विना भवसागर, तेहेमां गलचुवा खाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -11, चौ -9
- भोम सातमी किनार में, मन्दिर झरोखे जित । दोनों हारों हिंडोले, छप्पर-खटों के इत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -116
- भोम सातमी हिंडोले कहा कहूं भोम सातमी, मध्य मोहोल अनेक । कई विध गलियां हवेलियां, एक दूजी पे नेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -113
- भोमका सात कही वसिष्टे, तामें पांचमी केवल विदेही । छठी को सब्द ना निकसे, तो सातमी दृढ़ क्यों होई || ग्रं - किरन्तन, प्र -29, चौ -13
- भोमनी किरण भली, आकासे जईने मली । चांदलो न जाए टली, उजलीसी रेत री || ग्रं - रास, प्र -22, चौ -2
- भोमनी किरणो वननी किरणो, किरणा ससि प्रकासजी। ते मांहें अमें रमूं प्रेमें, पिउसों रंग विलासजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -20
- भोरी तूं न भूल इंद्रावती, ऐसा पिउ का समया पाए। तूं ले धनी अपना, औरों जिन देखाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -28, चौ -1
- भोरी तूं म भूल इंद्रावती, ही वेर एहेडी आय । पिरी पांहिंजडो गिनी करे, भोरी वीए तूं कां मसलाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -28, चौ -1
- भौं भृकुटी पल नासिका, सुन्दर तिलक हमेस । गौर सोभा मुख चौक की, क्यों कहूं जोत नूर केस || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -27
- भौंह बंके नैन कमान ज्यों, भाल बंकी सामी तीन बल । बान टेढ़े मारत खैच मरोर के, छाती छेद न गया निकल || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -41
- भौंह भासत भली भांतसों, पापण पलकों पर । ए नैन सोभा नूर जहूर, ए जाने मोमिन अन्तर || ग्रं - सिनगार, प्र -15, चौ -6
- भौंह स्याह नैन अनियां कही, और कह्या जोड़ गौर अंग । हाए हाए ए तन हुकमें क्यों रख्या, हुआ कतल न होते जंग || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -94
- भ्रांत आडी जिहां भाजे नहीं, तिहां मांहें थी न पूरे साख । वचन रूदे प्रकासी ने, जिहां आतमा न देखे साख्यात || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -3
- भ्रांत भरम सर्वे भाजी जासे, उडी जासे आसंक । अगम अगोचर सहु सोध थासे, रमसे मांहें वसंत || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -82
- भ्रांत माहेली जिहां भाजे नहीं, तिहां लगे जाय नहीं कपट । भेख ने बनावो रे अनेक विधना, पण मूके नहीं वेहेवट || ग्रं - किरन्तन, प्र -67, चौ -7
- भ्रांत माहेली रे महामत भाजवी, रदे मांहें करवो प्रकास । पछे ने देखाडूं घेर मुख आगल, जेम सोहेलो आवे मारो साथ || ग्रं - किरन्तन, प्र -67, चौ -9

म

- मईनुद्दीन ने भेजी हदीसें, देने मरीद आकीन । तालिब होए सो देखियो, करी जाहेर कुतबदीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -67
- मक्के मदीने दीन का, खड़ा था निसान । सो हुआ फुरमाया हक का, करसी दज्जाल कुफरान || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -40
- मगज जो मुसाफ का, जाहेर किया छिपाया । गाया खुस आवाज सों, कौल सिर चढ़ाया || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -5
- मगज देखो मुसाफ का, सबों महंमद हिदायत । आसमान जिमी या जो कछु, और न काहू नसीहत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -102
- मगज न पाया माएना, दुनी पढ़े कतेब वेद । प्रेम दुनी में तो कहें, जो पावत नाहीं भेद || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -9
- मगज माएने किन ना खुले, अव्वल बीच और अब । ए कजा तब होवहीं, जब खुले माएने सब || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -23
- मगज माएने मुसाफ के, सो होए न इमाम बिन । सो इत बोहोतो देखिया, पर सुध ना परी काहू जन || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -5
- मगज मुसाफ और हदीसें, हादी हिदायत देखें मोमिन । ए खुलासा बिने इसलाम का, सबों देखावे बका वतन || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -2
- मगज वेद कतेब के, बंधे हते जो वचन । आदि करके अबलों, सखी कबहूं न खोले किन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -2, चौ -3
- मगर मच्छ माहें बुजरक, वजूद बड़े विक्राल । खेलें निगले जीव को, एक दूजे का काल || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -45
- मंगल गाइए दुलहे के, आयो समैं स्यामा वर स्याम । नैनों भर भर निरखिए, विलसिए रंग रस काम || ग्रं - किरन्तन, प्र -80, चौ -10
- मंगला चरण सम्पूर्ण केस तिलक निलाट पर, दोऊ रेखा चली लग कान । केस न कोई घट बढ़, सोभा चाहिए जैसी सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -118
- मंगला चरण सम्पूर्ण बरनन करो रे रूहजी, मासूक मुख सुन्दर । कोमल सोभा अलेखे, खोल रूह के नैन अंदर || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -7
- मंगा जाणी संगडो, जे तो देखास्यो । हाणे विच बेही सभ जगाइए, हांणे कास्यूं को कास्यो || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -33
- मंगा थी पण द्रजंदी, मुं मथां हेडी थेई । हे सगाई निसबत, आंके विसरी की वेई || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -34
- मच्छ कच्छ मुरग मेंडक, कई रंग करें अपार । जुदी जुदी बानी बोलत, स्वर राखत एक समार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -23

- मच्छे दोऊ बाजूअ के, सलूकी अति सोभित । रंग छब कोमल दिल की, आसिक हैड़े बसत || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -62
- मछ गलागल मांहें छे सवला, अने पूरतणा प्रवाह जी । दिस एके नव सूझे सागर मां, तमे रखे ते विहिला थाओ जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -37
- मजकर बका बीच में, किया हक हादी रूहन । दई फरामोसी हाँसीय को, बीच अपने अर्स मोमिन || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -3
- मजकूर करी महंमद ने, हक हादी बीच रूहन । हकें कह्या उतरते रूहों को, सो सब मुसाफ करे रोसन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -29
- मजाजियों में ले मुसाफ, क्या हक कजा करसी बीच रात । जब हक हादी आई उमत, तबही उड़ी जुलमात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -75
- मजाजी और हकीकी, दिल कहे भांत दोए । ए बेवरा हकी सूरत बिना, कर न सके दूजा कोए || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -57
- मंडल अखंड में मांडवो, चौरी थंभ रोपे हैं चार । सो थंभ थापे थिर कर, कहूं सो तिन को प्रकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -7
- मंडाण तुझ ऊपर रे श्रवणा, लेवाए तारे बल । धणिए धन रेढतां नव जोयूं, नेठ कां न थया निबल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -19
- मता मोमिन का काफर, ले न सके क्योंए कर । दिल मोमिन का अर्स कया, दिल काफर अबलीस घर || ग्रं - किरन्तन, प्र -118, चौ -4
- मता सब मेयराज का, किया अर्स में हमें मजकूर । जो मेहेर हमेसा मुझ पर, सो ए सब करसी जहूर || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -82
- मथां अंबर हेठ जर, नखत्र न डिसे कोए । रिणे रूप घटाइयूं, मालम सुध न पोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -10
- मथुरा द्वारका लीला कर, जाए पोहोंचे विष्णु बैकुंठ घर । अब मूल सखियां धाम की जेह, तिन फेर आए धरी इत देह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -58
- मथे आंऊ त गिना, जे की मूमें होए । आंऊं गुझ जाणा पाण विच जो, बेओ न जाणे कोए || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -39
- मथेनी वसे मीहडो, वानर मोर कुडन । कई नी जातूं जानवर, कई जातूं पसुअन || ग्रं - सिंधी, प्र -2, चौ -10
- मद चढ़यो महामत भई, देखो ए मस्ताई । धाम स्याम स्यामाजी साथ, नख सिख रहे भराई || ग्रं - किरन्तन, प्र -83, चौ -11
- मद मत्सर अहंमेव अहंकार, तमे दोड कीधी संसार । फिट फिट गुण भंडा एवा बलिया, तमे विछोह पाड्यो मारे आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -51
- मंदिर आइयाँ सैयां जब, खुले द्वार दरसन पाए सब । तब आए सबे सुखपाल, स्यामाजी बैठे संग लाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -128

- मंदिर छे आगल मांडवे, चूले चढे दूध माट । राधाबाई खोले प्रभावती, लई बेसे ऊपर खाट || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -20
- मंदिर छे मांडवे आगे, चरी चढ़े दूध माट । स्यामा गोद प्रभावती, ले बैठत हैं खाट || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -30
- मंदिर जुदे कर गिनिए, हर मंदिर दरवाजे चार । यों गिनती बारे हजार की, भए अड़तालीस सहस्त्र द्वार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -16
- मंदिर जुदे द्वार जुदे, कई चौक चबूतर । ए सनंध इन मंदिरन की, जुबां सके न बरनन कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -126
- मंदिर दस का बेवरा, दस का एकै देहेलान । माहें बाहेर बराबर, जानें मोमिन अर्स बयान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -32
- मंदिर दिवाले गलियां, नकस फल फूल पात । मंदिर द्वार देख देख के, पलक न मारी जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -12
- मंदिर दिवालों थंभों के जो पार, सोभा करत अति झलकार । जोत ऊपर की जो आवे, तले की भी सामी ठेहेरावे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -166
- मंदिर मालिया अनेक निपाओ, पण भरवू एक तेहज दो भरी । अनेक उपाय करो कई बीजा, ए साधन सर्वे जमपुरी || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -9
- मंदिर मांहें अनेक विध दीसे, जोगवाई पूरण सर्वे । अनेक वार लऊं तेना भामणा, मारी वारी नाखू जीवसूं देह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -8
- मंदिर मोदी तेजपाल को, इत चरी चूल्हा पास । कोइक दिन आए रहे, याको मथुरा में बास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -22
- मंदिर याकी कांगरी करे जोत, जानो तहां की बीज उद्दोत । दरवाजे में ठौर रसोई, जित बड़ा मिलावा नित होई || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -64
- मंदिरों माहें खिड़कियां, बाहेर दिवालों के । चारों खूने गुरज से, तित दो दो झरोखे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -100
- मधुबन की किन विध कहूं, बन जाए लग्या आसमान । पुखराज अर्स के बीच में, ए सिफत न होए बयान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -79
- मध्य चौक जित चाहिए, ऊपर चाहिए चौकड़ी जित । बेल पात सब रंग नंग, सोई बनी पाग जुगत || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -41
- मध्य माणक ने फरता मोती, पाच तणो नीलास । किरण ज्यारे उठतां जोइए, त्यारे जोत न माय आकास || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -27
- मन उपजावे मन ही पाले, मन को मन ही करे संघार । पांच तत्व इंद्री गुन तीनों, मन निरगुन निराकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -47, चौ -3
- मन उमंग वालाजीतूं रमवा, आयत अति घणी थाय । आनंद माहें अति उजाय, धरणी न लागे पाय || ग्रं - रास, प्र -7, चौ -9

- मन ऊपर चलत हैं, या जिमी जल बन । या चढ़े आसमान में, ठौर फिरवले सबन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -73
- मन करम ने ठेलसे, जेथी प्रगट थाय सर्वा अंग । साथी बोध संघाती बोले, जीव मन एकै रंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -126
- मन कहे म्हारी वात छे मोटी, अने सकल विध हूं जाणू । गजा पखे चढी बेसूं माथे, जीवने जोपे वस आणू || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -86
- मन के हारे हारिए, मन के जीते जीत । मनहीं देवे सत साहेबी, मनहीं करे फजीत || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -26
- मन चित बुध अहंकार, काम क्रोध गफलत । आउध ए दज्जाल के, स्यानप ग्यान असत || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -8
- मन चित बुध अहमेव अवला, करूं जोरावर जेर । हवे हास्या सर्वे जीताडी, फेर ते सवले फेर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -27
- मन चित बुध दृढ़ किया, पिया न करें निरास । महामत नेहेंचें कहें, होसी दुलहे सों विलास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -55
- मन चित बुध श्रवना, पोहोंचे दृष्ट ना सब्दा कोए। खट प्रमान थे रहित है, सो दृढ़ कैसे होए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -15
- मन चित्त बुध श्रवना, पोहोंचे दृष्ट न सब्दा कोए । खट प्रमान ते रहित है, सो दृढ़ कैसे होए || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -15
- मन जीवने पूछे रही, त्यारे जीव फल देखाडे सही । ए अजवायूँ कीबूं प्रकास, तारतमना वचन मांहें रास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -24
- मन तणूं नथी कांई मूल, तेथी भारे आंकडा ने तूल । एक अरधी पांखडी नथी जेटलो, पण पग थोभ माटे कह्यो एटलो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -15
- मन तन जोबन चढ़ता नौतन, आया अमरद आसिक इस्क गंज ले । अधुर अमृत मुख दंत रसना रस, नित नए सुंदर सब देखे चढ़ते || ग्रं - किरन्तन, प्र -113, चौ -2
- मन तन वचन लगे तिन उतपन, आस पिया पास बांध्यो विश्वास । कहे महामती इन भात तो रंग रती, दई पियाऐं अग्या जाग करूं विलास || ग्रं - सनंध, प्र -6, चौ -8
- मन तन वचन लगे तिन उतपन, आस पिया पास बांध्यो विस्वास । कहे महामती इन भांत तो रंग रती, दई पिया अग्या जाग करूं विलास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -3, चौ -8
- मन तामसियो हरती, मान माननियो करती। अंगे न विरह धरती, तो अम पर थई हेल री || ग्रं - रास, प्र -36, चौ -5
- मन पोहोंचे इतलो, बुध तुरिया वचन । उनमान आगे केहेके, फेर पड़े मांहे सुंन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -20

SPJIN

- मन मन मनोरथ पूरया पूरया वाला वाला, वली वली लागूं पायजी । केही केही पेरे पेरे कहूं कहूं तमने, स्वांस स्वांस हैडे मुझाय जी || ग्रं - रास, प्र -43, चौ -8
- मन मांहे जाणे अमें धरम भोगवसं, प्रगट पाप न देखे । सुभ असुभ बंने भोगववा, ए धरम राज सर्वे लेखे || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -22
- मन मांहें सवलुं देखे, जाणे माया सुख अलेखे । धणीना सुख न पेखे, विख अमृत लागे विसेखे || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -33
- मन मैला धुओ नहीं, अने उजला करो आकार । आकार तिहां चाले नहीं, चाले निरमल निराकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -14
- मन वाचा कर सेवहीं, गलित गात रोवें नैन । तहां भी खैच छूटी नहीं, ए भी लगे दुख देन || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -11
- मन समरथ सबल तूं बलियो, तारा वेगनो कीहो कहूं विस्तार । सूझ सबल मांहे तूं फरतो, आडो ऊभो द्रोड अपार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -83
- मन सुकन तन भए सब एकै, एकै जात सिफात सब बात । एक अंग संग रंग सब एकै, सब एक मता अर्स बका बिसात || ग्रं - किरन्तन, प्र -117, चौ -2
- मन ही नीला मन ही पीला, स्याम सेत सब मन । छोटा बड़ा मन भारी हलका, मन ही जड़ मन ही चेतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -47, चौ -4
- मन ही बांधे मन ही खोले, मन तम मन उजास । ए खेल सकल है मन का, मन नेहेचल मन ही को नास || ग्रं - किरन्तन, प्र -47, चौ -2
- मन ही मैला मन ही निरमल, मन खारा तीखा मन मीठा । एही मन सबन को देखे, मन को किनहूं न दीठा || ग्रं - किरन्तन, प्र -47, चौ -5
- मनना मनोरथ पूरण कीधां, मारा अनेक वार । वारणे जाय इंद्रावती, मारा आतमना आधार || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -84
- मनसूख करी सब किताबें, रानी सबों की उमत । ए सुध किन को न परी, जो इनकी क्यों करी सिफत || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -15
- मनसूख कही जो किताबें, रात में आई जे । इन उमतें सब रानी कही, जिनों मांगे माजजे रात के || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -12
- मनसूख तीन कही ता मिने, फरकान एक यों भने । समझे ना किताबों के तांईं, क्या लिख्या है माएनों माहीं || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -15
- मनी मानिक लसनियां नीलवी, अतंत उद्दोतकार । फूल पात बेल नकस, ए जोत न छेड़ों सुमार || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -60
- मने उड़ाए तूल ज्यों, न पावें ठौर ठेहेरान । सो सारे गफलतें फिरें, कहें हम मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -37
- मने किए हमको तीन बेर, तब हम मांग्या फेर फेर फेर । धनी कहें घर की ना रेहेसी सुध, भूलसी आप ना रेहेसी ए बुध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -14

- मने फिराई दुनियां, रेहे ना सक्या कोई थिर । सो मन सारे थिर किए, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -21
- मने मेलो थयो मारा धणी तणो, ते वीतकनी कहं विध । ते विध सर्वे कही करी, दऊं ते घरनी निध || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -4
- मनोरथ सर्वे पूरण थाए, जो आ द्रष्टांत जुओ जीव मांहें । ते माटे इंद्रावती कहे फरी फरी, जो धणिए कृपा तमने करी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -68
- ममता तूं भई माया की, हलाक किए हैरान । फिट फिट भुंडी चंडालन, तें बड़ी करी मोहे हान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -61
- ममता तूं मायातणी, निबल थई निवाण । फिट फिट भूडी दुष्ट पापनी, कीधी मुझने घणी हाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -61
- मर मर सब कोई जात हैं, चाहिए मोमिनों मौत फरक । दुनियां बीच गफलत के, मोमिन जागे दिल अर्स हक || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -94
- मरकलड़े मुख बोलत, गौर हरवटी हँसत । नैन श्रवन निलवट नासिका, मानों अंग सबे मुसकत || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -29
- मरतबा इनों देऊं उस्तुवार, इन पानी से होए करार । इबन अबास करे बयान, आया पानी इन दरम्यान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -67
- मरदन अंगे चंदन चरचे, प्रीते प्रीसे पाक । सेज्या समारी सेवा करे, जाणे मूल सनमंध साख्यात || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -12
- मलक मुल्ला मलंग जिंदा, बांग दे मन धीर । पाक थई थई सहुए पड़िया, मीर पीर फकीर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -3, चौ -15
- मलकूत ऊपर जो जुलमत, नाम बुरका ला-मकान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -42
- मलकूत ऊपर हवा सुन्य, तिन पर नूर अछर । नूर पार नूरतजल्ला , ए जो अछरातीत सब पर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -14
- मलकूत और नूर के, क्यों कहूं तफावत । झूठी दुनी बका हक को, ए कैसी निसबत || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -62
- मलकूत कया बैकुंठ को, मोहतत्त्व अंधेरी पाल । अछर को नूरजलाल, अछरातीत नूरजमाल || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -51
- मलकूत जबरूत लाहूत, ए अर्स कर तीनों लिखे । मलकूत फना बीच में, जबरूत लाहूत बका ए || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -44
- मलकूत बैकुंठ वास्ते, दनी हेम में गलत । तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -68
- मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनियां आग पीवत । तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -66

- मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी पहाड़ से गिरत । तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -64
- मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी भैरव झंपावत । तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -67
- मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी सिर लेत करवत । तो रूहें हक कदम क्यों छोड़ही, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -65
- मलकूत से फरिस्ता, नूर समझाया आए । नसीहत कर पीछा फिस्या, नूहें स्याम दिया पोहोंचाए || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -4
- मलकूत हवा जुलमत, उलंघ जाना तिन पर । बिना हादी हिदायत, सो बका पावे क्यों कर || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -48
- मलकृत साहेब फरिस्ते, हक ढूंढ्या चहूं ओर । रहे बेचून बेसबीय में, ना पाया बका ठौर || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -9
- मली साथ वातो हरखे करी, जेवी रामत जेणे चित धरी । एम करता द्रष्टे आव्यूं धाम, केहेना मनमा रही न हाम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -26
- मलें दोजखी हाथ पांऊं दोए, ताए देखे भिस्ती अचरज होए । उड़न वाले कहे मोमिन, मुतकी भी पड़ोसी तिन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -27
- मसाला समार समार के लेवें, सखी एक दूजी को देवें । डेढ़ पोहोर चढ़ते दिन, बीड़ी वाली सैयां सबन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -104
- मसी और इमाम, जब देसी मेरी साहेदी । मैं गुझ करी नूर जमाल सों, सो होसी जाहेर बुजरकी || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -78
- मस्तक मुकट सोहामणो, कांई ए सोभा अति जोर । लाल सेत ने नीली पीली, दोरी सोभित चारे कोर || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -37
- महत्तरों की कोम में, जित हूद कील सिरदार । जोत रसूल टापू मिने, दिया जबराईलें आहार || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -6
- महंमद आया ईसे मिने, तब अहमद हुआ स्याम । अहमद मिल्या मेंहेदी मिने, ए तीन मिल हुए इमाम || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -21
- महंमद आया नूर पार से, याही खेल के मांहें । पर इन खेल में का नहीं, सो भी सक राखों नाहे || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -10
- महंमद आया वास्ते मोमिन, ले हक पे फरमान । सब दुनियां करी एक दीन, भिस्त दई सब जहान || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -18
- महंमद ईसा अर्स में, पोहोंचे हक हजूर । कर अर्ज सब मेयराज में, बेसक करी मजकूर || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -27
- महंमद ईसा आए मेयराज में, और असराफील इमाम । बुध जबराईल मिल के, किए गुझ जाहेर अल्ला कलाम || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -23

- महमद ईसा इमाम, बैत बका निसान । सोई तीन सूरत महंमद की, देखावें अर्स रेहेमान || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -54
- महंमद ईसे किए जवाब, तिन में रही न सक । सक नहीं पड़उत्तर में, जो हमें दिए बुजरक || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -28
- महंमद एही सिफायत, अर्स बका हक रोसन । जो अर्स अरवाहों को सक रहे, सो क्यों कहिए रूह मोमिन || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -33
- महंमद कहे ईसा आवसी, और महंमद मेंहेंदी इमाम । मार दज्जाल कुफर दुनी का, एक दीन करसी तमाम || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -23
- महंमद कहें ए मोमिनों, ए अर्स अरवाहों रीत । हक बका ल्यो दिल में, छोड़ो दुनियां कर पलीत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -45
- महमद कहे भाई मेरे, आवेंगे आखिरत । गिरो रबानी अहमदी, याकी बीच आयतों हदीसों सिफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -32
- महंमद कहे मैं उनसे, मोमिन मेरे भाई । कुरान हदीसों बीच में, है उनों की बड़ाई || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -70
- महमद कहे मैं उनों से, ओ मझ से जानो तुम । मुरदार करी जिनों दुनियां, करे बंदगी हजूर कदम || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -17
- महंमद कहे मैं उमत पर, ल्याया हक फुरमान । जो लेवे मेरी हकीकत, ताए होवे हक पेहेचान || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -7
- महंमद कहे मैं हुकमें, सब रूहें मुझ मांहें । मैं चल्या अर्स मेयराज को, पर पोहोंच सक्या नांहें || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -63
- महंमद की इनपे पेहेचान, भली भांत समझें कुरान । जैसे पेहेचानने का हक, इन उमत को नहीं कोई सक || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -15
- महंमद की जो उमत भई, दस विध दोजख तिनकों कही । यामें फिरके कहे बहत्तर, तामे एक मोमिन लिए अंदर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -25
- महंमद की फरमान में, कही तीन सूरत । बसरी मलकी और हकी, एक अव्वल दो आखिरत || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -8
- महंमद की बुजरकी, बीच इन कलाम । और कही हकीकत, आखिर आवने ईसा इमाम || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -11
- महंमद की हदीस में, खबर दई भाँत इन । कह्या सिरदार रूहअल्ला, बीच अर्स रूहन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -16
- महंमद के कहावें मुसलमान, ए जो जाहेरी लिए ईमान । जो तौहीद का कलमा कहे, उमत सरीकी लिए रहे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -21
- महंमद के तेहत्तर हुए, तिनको हुआ हुकम । जिन को हिदायत हक की, तामें आओ तुम || ग्रं - खुलासा, प्र -6, चौ -17

- महंमद क्यों ल्याए खासी उमत, इन बीच जिमी हैवान । ए उमत जाने इन स्वाल को, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -37
- महंमद चाहे सबों मिलावने, ए सब जुदागी डारत । ए सब गुमाने जुदे किए, दुस्मन राह मारत || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -76
- महंमद दीन की पेहेचान, काहूं हुती न एते दिन । ना पेहेचान कुरान की, नातो देख थके कई जन || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -20
- महंमद दीन देखाइया, और देखाया छल । भी देखाऊं जाहेर, ज्यों छूट जाए सब बल || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -2
- महंमद नूर हक का, यों गिरो महंमद का नूर । जिन किया दावा इन का, सो रहे दूर से दूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -119
- महंमद नूर हक का, रूहें महंमद का नूर । ए हमेसा बका मिने, ए एकै जात जहूर || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -4
- महंमद नूर है हक का, कुल सैयन महंमद नूर । इन झण्डे कौल महंमद के, आखिर किया चाहिए जहूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -5
- महंमद पाती के वचन, सुनियो भीम मकंद । आगम था पट बीच में, सो काढ्या पट निकंद || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -4
- महंमद पेहेलें आए के, बरसाया हक का नूर । कई विध करी मेहेरबानगी, पर किने ना किया सहूर || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -20
- महंमद पोहोंचे अर्स में, देखी हक सूरत । हौज जोए बाग जानवर, कही सब हक मारफत || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -5
- महंमद बतावें हक सूरत, तिनका अर्स दिल मोमिन । सो अर्स दिल दुनी छोड़ के, पूजे हवा उजाड़ जो सुंन || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -83
- महंमद बातें बोहोत हैं, सो केती लिखू तुम । ए बातें तब होएसी, जब मिलसी हम तुम || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -62
- महंमद बातें हक सों, पोहोंच के करी हजूर । दुनी न माने हक सूरत, जासों एती भई मजकूर || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -32
- महंमद बिना मेंहेदीय की, करदे कौन पेहेचान । इन विध माएने तो लिखे, जो निसबत अव्वल की जान || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -28
- महंमद मामिनों वास्ते, ले आया फरमान । इलम किल्ली ल्याए रूहअल्ला, किए छिपे जाहेर बयान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -40
- महंमद मुरग कह्या आसमान, ए नीके कर देऊ पेहेचान । इन मुरग ने किया गुसल, धोए पर अरक निरमल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -2
- महंमद मेंहेदी आवसी, और ईसा हजरत || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -60

- महंमद मेंहेदी आवसी, करसी इमामत । बका पर सिजदा गिरोह को, करावसी आखिरत || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -21
- महंमद मेंहेंदी ईसा अहमद, बड़ा मेला इसलाम । जित सूर फूंक्या असराफीले, होसी चालीस सालों तमाम || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -104
- महंमद मेंहेदी ईसा नाजल, असराफील जबराईल । रूहें फरिस्ते ऊपर, हकें भेजे एह वकील || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -37
- महंमद रूहों को देखाए के, करसी सब फना । आंखां खोले ज्यों उड़ जाए, नींद का सुपना || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -53
- महंमद सिखापन ए दई, जो उतरी अरवाहें सिरदार । हक बका सिर लीजियो, छोड़ो दुनियां कर मुरदार || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -44
- महंमद सिफायत सब को, कुल्ल सैयन महंमद नूर । सो बिन फरिस्ते क्यों होवहीं, तो लिया बीच रूह हजूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -21
- महंमद सूरत हकी बिना, द्वार खुले ना हकीकत । ए कदम पावें दिल औलिया, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -44
- महंमद हक के नूर से, रूहें अंग महंमद नूर । सो देखो अर्स अरवाहों में, पोहोंच्या महंमद का जहूर || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -44
- महंमद हुआ मेंहेदी, सैयद केहेलाया सही। खिताब दिया जब खसमें, तब भेली इमाम भई || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -12
- महंमदें जाहेर करी दावत, डर फरमाया रोज कयामत । पढ्या खलक ऊपर कुरान, ए तीनों मानें नहीं फरमान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -1
- महमूद गजनवी सुलतान, ओ नुसखा हासिल करे परवान । जब नुसखा उनने सही किया, पंद्रा रोज सामें आएके लिया || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -16
- महा ने प्रले लगे, कोई करे रे अभ्यास । सर्वे विद्या सास्त्रनी, लिए करी विस्वास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -45
- महादेवजीऐं बृज लीला, ग्रहयो अखंड ब्रहमांड । अछर चित सदासिव, ए यों कहावे अखंड || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -95
- महादेवजीऐं वृजलीला, ग्रहयो अखंड ब्रहमांड । अछर चित चोकस थयो, ए एम कहावे अखंड || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -90
- महाप्रले काल ज्यारे थासे, तिहां लगे रेहेसे अंधेर जी । ते माटे पिउजी करे रे पुकार, तमे आवजो ते आणे सेर जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -33
- महाप्रले लों जो कोई, सास्त्र पढ करे अभ्यास । बहु विध लेवे विवेकसों, कर मन द्रढ विस्वास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -48
- महाप्रले होसी जब लग, तबलों रेहेसी अंधेर जी । ता कारन पिउजी करे रे पुकार, जिन भूलो इन बेर जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -34

SRJN

- महाप्रले होसी जब, सरगुन न निरगुन तव । निराकार न सुन, केहेवे को नाहीं वचन || ग्रं - खुलासा, प्र -11, चौ -8
- महामत ए सनमधे पाइए, ऐसा अखण्ड सुख अपार । गुर प्रसादें नाटक पेख्या, पाया मन मन का प्रकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -6, चौ -17
- महामत कजा अदल, करे रसूल तीन सूरत । बसरिएँ मांग्या जिदनी इलम, कजा हकी सूरत जुबां कयामत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -49
- महामत कहे अपनी रूह को, और अर्स रूहन । इन सुख सागर में झीलते, आओ अपने वतन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -141
- महामत कहे अपनी रूहन को, तुम जो अरवा अर्स । सराब प्याले इस्क के, ल्यो प्याले पर प्याले सरस || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -141
- महामत कहे इन चरन को, राखों रूह के अन्तस्करन । या रूह नैन की पुतली, बीच राखों तिन तारन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -149
- महामत कहे इन दुख को, मोल ना किया जाए। लाख बेर सिर दीजिए, तो भी सर भर न आवे ताए || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -34
- महामत कहे ईमान इस्क की, सक्र गरीबी सबर । इन बिध रूहें दोस्ती धनी की, प्यार कर सके त्यों कर || ग्रं - किरन्तन, प्र -102, चौ -12
- महामत कहे ए तीसरा, ए जो रूहों दिल सागर । अब कहूं चौथा सागर, पट खोल देखो अन्तर || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -33
- महामत कहे ए मोमिनों, इस्क लीजे हक । असल अर्स के बीच में, हक का नाम आसिक || ग्रं - खुलासा, प्र -18, चौ -11
- महामत कहे ए मोमिनों, ए ऐसी कुंजी इलम। ए मेहेर देखो मेहेबूब की, तुमको पढ़ाए आप खसम || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -53
- महामत कहे ए मोमिनों, ए छोड़िए नहीं एक दम । अब कहूं अंदर अर्स की, जो दिए निसान खसम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -101
- महामत कहे ए मोमिनों, ए देखो हक की मेहेर । जो एक एहेसान हक का लीजिए, तो चौदे तबक लगे जेहेर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -30
- महामत कहे ए मोमिनों, ए निसबत इस्क सागर । ल्यो प्याले हक हुकमें, पिओ फूल भर भर || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -41
- महामत कहे ए मोमिनों, ए मेहेर बड़ा सागर । सो मेहेर हक कदमों तले, पिओ अमीरस हक नजर || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -45
- महामत कहे ए मोमिनों, ए सुख अपने अर्स के । एक पलक छोड़े नहीं, भला चाहे आपको जे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -16, चौ -18
- महामत कहें ए मोमिनों, ए है अपनी गत । झूठ वास्ते जुदे ना पडे, मोमिन अर्स वाहेदत || ग्रं - किरन्तन, प्र -118, चौ -18

- महामत कहे ए मोमिनों, एही उमत पेहेचान । विध बिध बान जो बेधहीं, हक बका अर्स बान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -71
- महामत कहें ए मोमिनों, ऐसी क्यों चाहिए रूहन । ए मेहेर देखो मेहेबूब की, अर्स जिनों वतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -111, चौ -17
- महामत कहे ए मोमिनों, करूं मूल सरूप बरनन । मेहेर करी मासूक ने, लीजो रूह के अन्तस्करन || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -42
- महामत कहे ए मोमिनों, कहीं दो झण्डों की बिगत । अब खोल देऊं फरदा रोज की, जो फुरमाई थी इसारत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -27
- महामत कहे ए मोमिनों, कही फितने की हकीकत । अब कहूं सातों निसान, जिन पर मुद्दा कयामत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -24
- महामत कहे ए मोमिनों, कही हकीकत फरिस्तों। अब कहूं कजा और फितना, जो उठया बरारख मों || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -61
- महामत कहे ए मोमिनों, कोई नाहीं हक बिगर । लाख बेर मैं देखिया, फेर फेर सहूर कर || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -33
- महामत कहे ए मोमिनों, क्यों कहूं पहाड़ सिफत । ए लज्जत तिनको आवसी, जाए हक बका निसबत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -88
- महामत कहे ए मोमिनों, क्यों न विचारो तुम । कई विध तुम वास्ते करी, क्यों भूलो इन खसम || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -23
- महामत कहे ए मोमिनों, खोल दिए चार निसान । और भी तीन केहेत हो, ले बातून देखो दिल आन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -36
- महामत कहे ए मोमिनों, जिन जागी भूलो कोए। राह अर्स इस्क न छोड़िए, ज्यों सोभा लीजे ठौर दोए || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -104
- महामत कहे ए मोमिनों, जो अरखा अर्स अजीम । इस्क प्याले लीजियो, भर भर नूर हलीम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -85
- महामत कहे ए मोमिनों, जो होवे अरवा अर्स । सो प्रेम प्याले ल्यो भर भर, पीजे हकसों अरस-परस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -47
- महामत कहे ए मोमिनों, तमें करी हिदायत हक । और कहूं फिरके पैगंमरों, जो चलाए हुए बुजरक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -54
- महामत कहे ए मोमिनों, तुम हो बका के। हक अर्स किया जाहेर, सो सब तुमारे वास्ते || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -108
- महामत कहे ए मोमिनों, देखो अपनी निसबत । असल तन अर्समें, जो हक की गैब खिलवत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -119
- महामत कहे ए मोमिनों, देखो खसम प्यार । ईसा महंमद अंदर आए के, खोल दिए सब द्वार || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -82

- महामत कहे ए मोमिनों, बका हासिल अर्स रूहन । कह्या दिल जिनों का अर्स बका, ए मोमिन असल अर्स में तन || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -98
- महामत कहे ए मोमिनों, मैं बोलत बुध माफक । ख्वाब मन जुबान सों, क्यों करुं बरनन हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -32
- महामत कहे ए मोमिनों, मैं बोलत बुध माफक । ख्वाब मन जुबानसों, क्यों कर बरनों हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -12, चौ -21
- महामत कहे ए मोमिनों, याद करो खिलवत सुकन । जो किया कौल अलस्तो-बे-रब, मिल हक हादी रूहन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -79
- महामत कहे ए मोमिनों, राह बका ल्योगे तुम । जिन का दिल अर्स कया, औरों ना निकसे मुख दम || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -88
- महामत कहे ए मोमिनों, रूहें आसिक इस्क वतन । बहस करी रूहों इस्क की, आसिक इस्क के तन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -122
- महामत कहे ए मोमिनों, ल्यो हकीकत कुरान । ढूंढ़ो फिरके नाजी को, जो है साहेब ईमान || ग्रं - खुलासा, प्र -6, चौ -20
- महामत कहे ए मोमिनों, सब बातों का ए मूल । ए काम किया सब हुकमें, आए इमाम मसी रसूल || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -89
- महामत कहे ए मोमिनों, सुनो मेरे वतनी यार । खसम करावे कुरबानियां, आओ मैं मारे की लार || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -35
- महामत कहे ए मोमिनों, हकें बैठाए तले कदम । करसी हाँसी बीच अर्स के, जो करी हुकमें इलम || ग्रं - सिंधी, प्र -16, चौ -20
- महामत कहे ए मोमिनों, हके भुलाए हाँसी को । हम दौड़े जान्या लें इस्क, हम को डारे बका इलम मों || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -59
- महामत कहे ए मोमिनों, हमें मेहेर करी तुम पर । भुलाए तुमें हाँसीय को, वास्ते इस्क खातिर || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -74
- महामत कहे ए मोमिनों, हमें हाँसी करी पूरन । देख खावंद या खेल को, ए कंजी तेरा दिल मोमिन || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -23
- महामत कहे ए मोमिनों, हादिएँ खोल दिए दिन बातन । कयामत दिन जाहेर कर, देखाया अर्स बका वतन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -41
- महामत कहे ए मोमिनों, हादिएँ खोले कयामत निसान । हक अर्स बका जाहेर हुए, फरिस्ते नूरै नूर किया जहान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -97
- महामत कहे ऐ मोमिनों, अजं फरामोसी न जात । बेसक देखो दिन बका, माहें मेयराज की रात || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -82
- महामत कहे ऐ मोमिनों, जिन हाँसी कराओ तुम । याद करो बीच बका के, किया रब्द आगू खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -116

- महामत कहे ऐ मोमिनों, जो दिए थे दिल भलाए । फरामोस से बीच होस के, अब साहेब लेत बुलाए || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -107
- महामत कहे ऐ मोमिनों, देखो ताल पाल के बन । ए लीजो तुम दिल में, करत हों रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -49
- महामत कहे ऐ मोमिनों, हक साहेबी बुजरक । बेसक इलम हक का, और हक का बड़ा इस्क || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -46
- महामत कहें कोई दिल दे, ए देखेगा मजकूर । तिन रूह पर इमाम का, बरसे वतनी नूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -122, चौ -8
- महामत कहे गुन इन धनी के, सो इन मुख कहे न जाए । एक गुन जो याद आवे, तो तबहीं उड़े अरवाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -81, चौ -12
- महामत कहे गुर सोई कीजे, जो अलख की देवे लख । इन उलटी से उलटाए के, पिया प्रेमें करे सनमुख || ग्रं - किरन्तन, प्र -4, चौ -13
- महामत कहे जो होवे धाम की, सो पेहेचान के लीजो लाहा । ले सको सो लीजियो, फेर ऐसा न आवे समया || ग्रं - किरन्तन, प्र -77, चौ -15
- महामत कहे तिन वास्ते, ए तीनों हैं सामिल । करनी कृपा अंकूर, वाके छिपे ना अमल || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -31
- महामत कहें धनी धाम के, मुझसों कियो मिलाप । आखिर सुख इन साथ में, मोहे कर थापी आप || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -41
- महामत कहें पीछे न देखिए, नहीं किसी की परवाहे । एक धाम हिरदे में लेय के, उड़ाए दे अरवाहे || ग्रं - किरन्तन, प्र -87, चौ -13
- महामत कहे बन धाम का, विध विध दिया बताए । जो होसी ब्रह्मसृष्ट का, ए बान फूट निकसे अंग ताए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -62
- महामत कहे बिंद बैठे ही उड़या, पाया सागर सुख सिंध । अछरातीत अखण्ड घर पाया, ए निध पूरब सनमंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -2, चौ -10
- महामत कहे बेसक मोमिनों, बेसक बेवरा कमाल । फरामोसी में हक का, पाइए बेसक इस्क हाल || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -64
- महामत कहे बैठियां देख के, हक हँसत हैं हम पर । कहें देखो इन बिध खेल में, भेलियां रहें क्यों कर || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -36
- महामत कहे बोलूं हुकमें, अर्स मसाला ले । दरगाही रूहन को, सुख असल देने के || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -86
- महामत कहे ब्रह्मसृष्ट को, ऐसा हुआ न होसी कब । गुझ सब जाहेर किया, ए जो लीला जाहेर हुई अब || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -46
- महामत कहे मदीने से, लिखे खलीफों पर फरमान । उठी दुनी बरकत सफकत फकीरों, और कलाम अल्ला ईमान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -40

SPJIN

- महामत कहे मलपतियां, आओ निज वतन । विलास करो विध विध के, जागो अपने तन || ग्रं - किरन्तन, प्र -80, चौ -15
- महामत कहें मेरे साथ जी, लीजो आखिर के वचन । हुकम सरत पोहोंची दया, कछू अंग अपने करो रोसन || ग्रं - किरन्तन, प्र -86, चौ -20
- महामत कहें मेहेबूब का, सांचा स्वाद आया जिन । परीछा तिनकी प्रगट, छेद निकसें बान वचन || ग्रं - किरन्तन, प्र -88, चौ -16
- महामत कहे मेहेबूब की, जेती अर्स सूरत । सो सब बैठीं कदमों तले, अपनी ए निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -229
- महामत कहें मेहेबूब के, रोम रोम लगे घाए । इन अंग को अचरज होत है, अजूं ले खड़ा अरवाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -91, चौ -19
- महामत कहे मेहेबूब जी, कोई रह्या न और उदम । बेसक और काहूं नहीं, बिना तेरे तले कदम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -80
- महामत कहे मेहेबूब जी, खेल देख्या चाहया दिल । हांसी करी भली भांत सों, अब उठो सुख लीजे मिल || ग्रं - किरन्तन, प्र -75, चौ -15
- महामत कहे मेहेबूब जी, मोहे खेल देखाया बुजरक । करो मीठी बातें मुझसों, मेरे मीठे खसम हक || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -27
- महामत कहे मेहेबूबजी, अब दीजे पट उड़ाए। नैना खोल के अंक भर, लीजे कंठ लगाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -84
- महामत कहे मेहेर की, रूहों आवे एक नजर । तो तबहीं रात को मेट के, जाहेर करें फजर || ग्रं - सागर, प्र -3, चौ -17
- महामत कहे मेहेर मोमिनों, हमें करी वास्ते तुम । कौन देवे इत सुख बका, बिना इन खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -44
- महामत कहे मैं सरमिंदी, सब अवसर गई भूल । ऐसी इन जुदागी मिने, क्यों कहूं करो सनकूल || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -54
- महामत कहे मैं हक की, खोले मगज मुसाफ कलाम । और हक कलाम कौन खोल सके, जो मिले चौदे तबक तमाम || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -58
- महामत कहे मैं हक की, पोहोंची बका में । ए मैं असल अर्स की, ए मैं मोमिनों हक से || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -62
- महामत कहें मोमिन की, मिट गई दुनियां चाल । देखिए हक दिल अर्स में, तो अबहीं बदले हाल || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -74
- महामत कहे मोमिन को, गेहेरा गंभीर जल देख । टापू बन्यो बीच हौज के, सोभित अति विसेख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -101
- महामत कहे मोमिनों पर, करी हाँसी हुकमें । ना तो अरवाहें इत क्यों रहें, बेसक होए हक से || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -160

- महामत कहे मोमिनों पर, बरसत बदली नूर । हक बका अर्स अजीम में, पट खोल लिए हजूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -122
- महामत कहें लिया मांग के, ए धनिएं देखाया छल । जो सनमुख रहेसी धनी धामसों, सो केहेसी छल को बल || ग्रं - किरन्तन, प्र -78, चौ -16
- महामत कहे संमंधी सांभलो, मारा सब्दातीत सुजाण । चरण सों चित पूरो बांधजो, जिहां लगे पिंडमा प्राण || ग्रं - किरन्तन, प्र -70, चौ -15
- महामत कहें सावचेत होइयो, मिल्या है अंकूरों आई। झूठी छूटे साँची पाइए, सतगुर लीजे रिझाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -5, चौ -11
- महामत कहे सिंध दूसरा, सोभा सरूप रूहन । ए सुखकारी अति सुन्दर, ए बका वतन बीच तन || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -122
- महामत कहे सुनो मोमिनों, ए अर्स नूरजमाल । एही अर्स अजीम है, रहें इन दरगाह रूहें कमाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -139
- महामत कहे सुनो मोमिनों, दीन हकीकी हक हजूर । हक अमरद सूरत माने नहीं, सो रहे दीन से दूर || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -28
- महामत कहे सुनो मोमिनों, बीच टापू जल गिरदवाए । ए अति ऊंचे मोहोल सुन्दर, देखो अपनी रूह जगाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -25, चौ -12
- महामत कहे सुनो मोमिनों, मेहेर हक की आपन पर । सब अंगों देखो तुम, तब खुले रूह की नजर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -113
- महामत कहे सुनो मोमिनों, मौला अति बुजरक । मेहेर होत जिन ऊपर, ताए लेत कदमों हक || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -80
- महामत कहे सुनो साथ जी, खिन बन छोड़ो जिन । या मंदिरों संग धनीय के, विलसो रात और दिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -21
- महामत कहे सुनो साथ, देखो खोल बानी प्राणनाथ । धनी ल्याए धाम से वचन, जिनसे न्यारे न होए चरन || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -25
- महामत कहे सुनो साथजी, बुध जुबां करे बरनन । ले सको सो लीजियो, ए नेक कया तुम कारन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -83
- महामत कहे हक इलमें, बेवरा कह्या नेक ए। दो गिरो पोहोंचाई दोऊ असों में, औरों पट खोले भिस्त आठों के || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -112
- महामत कहे हक नासिका, याकी सोभा न आवे सुमार । कछू बड़ी रूह मोमिन जानहीं, जा को निस दिन एही विचार || ग्रं - सिनगार, प्र -15, चौ -15
- महामत कहे हक हुकमें, ऐसा सुख ना दूजा कोए । पांउं मासूक के आसिक, पिए रस धोए धोए || ग्रं - सिनगार, प्र -5, चौ -15
- महामत कहे हँसे हक, देख मोमिनों हाल । आखिर बुलाए चलें वतन, करके इत खुसाल || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -36

- महामत कहे हुकमें इलम, जो हक सिखावें कर हेत । सो केहेवे आगू अर्स तन के, अपने दिल अर्स में लेत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -94
- महामत कहेवें यों कर, हम सैयां दौड़ी धाए । पर ए पट सुंदरबाई बिना, किनहूं न खोल्यो जाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -22
- महामत केहेवे यों कर, ए पढ़े बड़े कुफर । बातून नजर इन को नहीं, तो कजा की न हुई खबर || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -50
- महामत चाहें इन चरन को, कर मनसा वाचा करमन । आए बैठे मेरे सब अंगो, मेरे जीव के एही जीवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -21
- महामत चोए म धणी, मुंके वडी डेखारई रांद । कर मूंसे मिट्यूं गालियूं, मूंजा मिठडा मियां कांध || ग्रं - सिंधी, प्र -13, चौ -11
- महामत चोए मूं वलहा, तोसे करियां लाड कोड । केयम गुस्तांगी रांदमें, जे तो बंधाई होड || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -42
- महामत चोए मेहेबूब जी, अस्सां इस्क बेवरो ई । मूंजे आंजे दिल जी, आंऊ कंदिस अर्ज बेई || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -52
- महामत चोए मेहेबूब जी, कस्यो जे अचे दिल । जी जांणो ती कस्यो, असां जी अकल || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -31
- महामत चोए मेहेबूबजी, जे उपटिए द्वार । रूहें गिनी अचां पांणसे, जी अची करियां करार || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -57
- महामत चोए मेहेबूबजी, तो पसाएं पसन । अंखियूं नी आसा एतियू, मूंजी रूहजी या रूहन || ग्रं - सिंधी, प्र -2, चौ -18
- महामत चोए मेहेबूबजी, ही सुणज दिल धरे । हांणे हेडी डिजम हिमंत, जी लगी रहां गरे || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -23
- महामत चोए मेहेबूबजी, हे डिंनी तो लगाए । तूं जागे अस्सी निद्रमें, जाणे तीय जगाए || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -64
- महामत चोए हे मोमिनों, कोई कितई न धणी रे । फिरी फिरी लख भेरां, न्हास्यम सहूर" करे || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -33
- महामत चोए हे मोमिनों, धणिएं पूरी केई खिल । पिरी पसो या रांद के, हक बेठो अर्स तो दिल || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -23
- महामत चोए हे मोमिनों, पांण के बिहारे तरे कदम । खिल्ल कंदा वडी अर्समें, जा केई हुकम इलम || ग्रं - सिंधी, प्र -12, चौ -20
- महामत जागसी साथ जी भेले, जहां बैठे मिने दरबार । हम उठ के आनंद करसी झीलना, हंस हंस करसी सिनगार || ग्रं - किरन्तन, प्र -54, चौ -19
- महामत जो रूहें ब्रह्म सृष्ट की, सो सब साहेब के तन । दुनियां करी सब कायम, सही भए महंमद के वचन || ग्रं - किरन्तन, प्र -65, चौ -20

- महामत दम कदम न छूटे इन खसम के, हुआ मोहोल मासूक का मेरे दिल माहीं । एक अव्वल बीच आई सो एक हुई, आखिर एक का एक मोहोल बीच और नाहीं || ग्रं - किरन्तन, प्र -115, चौ -4
- महामत देखे विवेक सों, हक वस्तर और भूखन । सब अंग सोभा अंगों की, ज्यों दिल रूह होए रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -72
- महामत निमूना ख्वाब का, क्यों दीजे हक वस्तर । हक नूर न आवे सब्द में, पर रह्या न जाए क्योंए कर || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -45
- महामत पिया संग विलसहीं, सुख अखंड इन पर । धंन धंन प्रपंच ए हुआ, धंन धंन सो या मंदिर || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -33
- महामत महामद चढ़ी, आयो धाम को अहमद । साथ छक्यो सब प्रेम में, पोहोंचे पार बेहद || ग्रं - किरन्तन, प्र -83, चौ -15
- महामत रूहों हक सों हुआ, बहस इस्क वास्ते । सो इस्क बिना क्यों पैठिए, बीच हक अर्स के || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -83
- महामत साहेबी हककी, मैं खसम अंग का नूर । अंग रूहें मेरा नूर हैं, सब मिल एक जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -100
- महामत सिफायत जिन लई, सो इत हुए खबरदार। हक बका अर्स सबका, तिन इतहीं पाया दीदार || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -49
- महामत सो गुर कीजिए, जो बतावे मूल अंकूर । आतम अर्थ लगावहीं, तब पिया वतन हजूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -28, चौ -18
- महामत सो गुर पाइया, जो करसी साफ सबन । देसी सुख नेहेचल, ऐसी कबहूं ना करी किन || ग्रं - किरन्तन, प्र -21, चौ -10
- महामत हुकमें केहेत हैं, जो होवे अर्स अरवाए । रूह जागे का एह उद्दम, तो ले हुकम सिर चढ़ाए || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -75
- महामत हुकमें केहेत हैं, हक बरनन किया नेक । और भी कहूं हक हुकमें, अब होसी सब विवेक || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -67
- महामत होसी सब जाहेर, मिले अछरातीत भरतार । वैराट होसी नेहेचल, उड्यो माया मोह अहंकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -30, चौ -15
- महाविष्णु सुन्य प्रकृती, निराकार निरंजन । ए काल द्वैत को कोहै, ए सुध नहीं त्रिगुन || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -24
- महें घूमरियूं जर जुजवा, व्या परी परी जा पूर । हिक वेर न वेहेजे सुख करे, हेतां डिसे डुखे संदा मूर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -6, चौ -9
- माएना ऊपर का पोहोंचे नहीं, बीच अर्स बका । नजर बांध फना बीच, हुए जिद कर तफरका || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -36

- माएने इन कुरान के, गुझ रही थी बात । सो अर्स रूहें जाहेर हुई, सब जन में फैलात || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -89
- माएने इन कुरान के, जोलों ना समझाए। तोलों सो रूह आपको, मोमिन क्यों कहेलाए || ग्रं - सनंध, प्र -1, चौ -9
- माएने इन कुरान के, या जाहेर या बातन । दई सबों को हैयाती, खोल के इलम रोसन || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -87
- माएने इन मुसाफ के, कलाम अल्ला का कौल । ईसे के इलम से, दई इसारतें सब खोल || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -24
- माएने इन मुसाफ के, कोई खोल न सके और । कहया रसूलें इमाम थे, जाहेर होसी सब ठौर || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -4
- माएने ऊपर का सबों लिया, और लिया अहंकार । फिरके फिरे सब हक से, बांधे जाए कतार || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -11
- माएने जाहेर कुरान के, कही बात नेक सोए । और गुझ भी करों जाहेर, अर्स वतनी जो कोए || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -63
- माएने न पावें सब्द के, बड़े सब्द रसूल । पर दम ना समझें ख्वाब के, जाको जुलमत मूल || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -36
- माएने मुल्लां या ब्राह्मण, करते जो उलटाए । सोई हरफ जबराईल, गया सब चटाए || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -18
- माएने रूजू सब इनसे, तौरेत दई है जित । होत पेहेचान खुदाए की, इन गिरो की सोहोबत || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -13
- माएने ले चीन्हें आपको, करे रसूल पेहेचान । वतन सुध करे हक की, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -14
- माएने हकीकत मुसाफ के, पावें हक के इलम । सो पोहोंचे जबरूत में, होए सुध हक हुकम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -20
- मांग लई प्यारी उमर, ए जो रब्द के बखत । लाल पाउं तली छोड़ें क्यों मोमिन, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -2
- मांग लिया खसम पें, ए छल तुम देखन । जो कदी भूली छल में, तो फेर न आवे ए दिन || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -14
- मांग लिया खसम में, ए छल तुम देखन । जो कदी भूलियां छल में, तो फेर न आवे ए दिन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -14
- मांगत हों मेरे दुलहा, मन कर करम वचन । ए जिन तुम खाली करो, मैं अर्ज करूं दुलहिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -62, चौ -1
- मांगा किया राधाबाई का, पर ब्याहे नहीं प्राणनाथ । मूल सनमंधे एके अंगे, विलसत वल्लभ साथ || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -31

- मांगी दुख सुखनी रामत, ते वाले कीधी आवार । मन चित रंगे रमाड्यां, कांई आपणने आधार || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -44
- मांगी रसूलें रेहेमत, जिमी स्याम इमन । तब अर्ज करी आरबों, नबी दिया न जवाब तिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -1
- मांगी हुकमें रूह की हुज्जतें, दीजे दुनी में लाड़ लज्जत । सो हक आप मंगावत, कर हाँसी जुदाई बीच वाहेदत || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -31
- मांगे दुनी में हक लज्जत, सो भी बुजरकी वास्ते । इलमें हुए यों बेसक, एक जरा न दुनियां ए || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -14
- मांग्या खेल खुसाली का, तिन फेरे तुमारे मन । सो सब तुमको बिसरे, जो कहे मूल वचन || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -6
- मांग्या खेल विनोद का, तिन फेरे तुमारे मन । सो सब तुमको विसरे, जो कहे मूल वचन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -3
- मांठ करे पण न सगां, बंधां जा बोले । सभ जाणे थो रूहजी, चुआं कुजाडो दिल खोले || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -37
- माणक मोती ने नीली चुन्नी, फूल वेल माहें झलकंत । सोभा मारा स्यामजीनी जोई जोई जोइए, मारी तेणे रे काया ठरंत || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -15
- माणस होए ते तो अमने मां मलजो, जो तमे गेहेलाइए हलया । ओल्या वारसे वढसे खीजसे तमने, तोहे आवसो ते आंही पलया || ग्रं - किरन्तन, प्र -49, चौ -3
- मात पिता बिन जनमी, आपे बंझा पिंड । पुरुख अंग छूयो नहीं, और जायो सब ब्रह्मांड || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -4
- मात हुई मात चाहते, बुध बाबा आलम । मन चाह्या सबको दिया, अर्स रूहों के खसम || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -78
- माता पिता रे पति सासू ससरो, रोतां न सूणियां रे बाल । वाएने वेगे रे वछुटियो, वेण सांभलतां तत्काल || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -14
- माधवपुर परण्या रूकमणी, धवल मंगल गाए सुहागणी । गातां गातां ली– वृज नूं नाम, त्यारे पाछा भोम पड्या भगवान || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -53
- माधवपुर व्याही रूकमनी, धवल मंगल गावे सोहागनी । गाते गाते लिया बृज नाम, तब पीछे भोम पड़े भगवान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -53
- मांधा जणाया सभ के, डियण के आकीन । ईदो रख आलम जो, सभ कंदो हिक दीन || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -7
- मांधां डिखारई रांद रातमें, हांणे जाहेर केयां फजर । हे गालियूं केयूं सभ मेहेरज्यूं, सा लाथाऊं की नजर || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -39
- मान घणो मानवंतियोने, तामसियो झंझार । प्रेम घणो अंग आ संगे, एणे विरह नहीं लगार || ग्रं - रास, प्र -31, चौ -6

- मानखें देह अखण्ड फल पाइए, सो क्यों पाए के वृथा गमाइए । ए तो अधखिन को अवसर, सो गमावत मांझ नींदर || ग्रं - किरन्तन, प्र -3, चौ -2
- मानखो जनम पांम्यो बंध छोड़वा, वली रे वसेखे भरथ खंड । कुली मांहें उत्तम आकार पामी, सामा बांधे छे अधका बंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -90
- मानिक तहां मिलत है, पोहोचत तित पुखराज । नीलवी तो तेज आसमानी, उत पांचों रहे बिराज || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -59
- मानिक मोती नीलवी, पाच पाने पुखराज । लसनिएं और मनी, रहे कुंदन मांहें बिराज || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -37
- मानिक मोती नीलवी, हेम हीरा पुखराज । इन मुख सोभा क्यों कहूं, सिर खूबी रही बिराज || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -47
- मानिक मोती लसनिएं, पाच पाने पुखराज । गोमादिक और नीलवी, आठों अंगुरी रही बिराज || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -94
- मानिक मोहोल रतन मय, झलकत जोत आकास । नूर पूरन पूर भस्या, रूह खोल देख नैन प्रकास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -5
- मानिक हीरे पाच पोखरे, नूर तरफ से चारों द्वार । चारों खूटों थंभ नीलवी, अंबर भयो झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -19
- मानीक मोती पाने नीलवी, गोमादिक पाच पुखराज । और हीरा नंग लसनियां, बीच मनि दसमी रही बिराज || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -175
- मानो लाल कड़ी मानिक की, मांहें कई रंग बेल अनेक । सिर पुतलियों लग रही, ए सोभा अति विसेक || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -48
- मापे गेहेरे सागर, जिनको थाह न देखे कोए । तिन हक दिल अन्दर पैठ के, मापे इस्क सागर सोए || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -13
- माया ईश्वर तें होत हैं न्यारे, न्यारे होत तीन देह || ग्रं - किरन्तन, प्र -31, चौ -8
- माया काया जीवसों, भान भून ट्रक कर । विरहा तेरा जिन दिस, मैं वारं तिन दिस पर || ग्रं - सनंध, प्र -10, चौ -7
- माया काया जीवसों, भान भून ट्रक कर । विरहा तेरा जिन दिसा, मैं वारूं तिन दिस पर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -7
- माया की तो एह सनंध, निरमल नेत्रे होइए अंध । ता कारन कियो प्रकास, तारतम को जो उजास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -16
- माया कोहेडो अंधेर केहेवाय, मांहें साध बंधाणां जाय । तमने हजी लगे सोध न थाय, काल ताकी ऊभो माथे खाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -1
- माया गई पोताने घेर, हवे आतम तूं जाग्यानी केर । तो मायानो थयो नास, जो धणिए कीधो प्रकास || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -1

SRJN

- माया गुन सब करो हाथ, पेहेचानो प्राण को नाथ । अब एता आतमसों करो विचार, कौन वचन कहे आधार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -68
- माया जीव आंही टकी न सके रे, तेणे नहीं लेवाय ए वचन जी । ए वचन घणुए लागसे मीठा, पण रेहेवा न दे खोटानूं मन जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -46
- माया जीव कोई कोई छे समरथ, ते दोड करे छे कारण अरथ । निसंक आपोपा नाख्या जेणे, निहकर्म मारग लीधां तेणे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -2
- माया जीव कोई है समरथ, दौड़ करत है कारन अरथ । निसंक आपोपा डारया जिन, निहकर्म पैंडा लिया तिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -2
- माया जीव हममें रहे ना सके, सो ले न सके एह वचन जी । ना तो सब्द घने लागसी मीठे, पर रेहेने ना देवे झूठा मन जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -47
- माया जुओ तमे अलगां थई, तारतमने अजवाले रही । जे वाणी श्री धणिए कही, ते जीवने वचन केम दीजे नहीं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -62
- माया देखी बीच पैठ के, पिउ के उजाले तुम । विध विध खेल देखावने, पिउ ल्याए तारतम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -7
- माया मस्तकी ने वरस बडबोहोनी, सकरकंद संदेसर । करोड भरोड ने पलासी, अकथ ने आक सुंदर || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -14
- माया मांगी सो देखाए के, भानी मन की भ्रांत जी । सब सुख दिए जगाए के, कई विध के द्रष्टांत जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -36, चौ -2
- माया मोह अहंकार थे, ए सबे उतपन । अहंकार मोह माया उड़ी, तब कहां है ब्रहम वतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -28, चौ -2
- मायातां डिठियां मंझ पेहीने, सोझरे सिपरियन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -7
- मायानी तां एह सनंध, निरमल नेत्रे थैए अंध । ते माटे कीधो प्रकास, तारतम तणो अजवास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -9, चौ -15
- मायाने मलीने रे मूरखो, मोसू थया तमे कूडा । फिट फिट भुंडा दुष्ट अभागी, एणी वाते न थया रूडा || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -56
- मायानो मेलो घणूं दुर्लभ, नहीं आवे ते बीजी वार । रखे जाणे माया मेलो न थाय, ते माटे करूं छु पुकार || ग्रं - खटरुती, प्र -4, चौ -11
- मायासू करजे ना रे नां, फोकट फेरो मा खा रे खा । धणीने चरणे जा रे जा, एवो नहीं लाधे दा रे दा || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -35, चौ -16
- मायासों कीजो ना रे ना, नाबूद फेरा जिन खा रे खा । धनी के चरने जा रे जा, ऐसा न पावे दा रे दा || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -35, चौ -16
- मार डार पछाड़हीं, ओ रोए पीट होवे ताब । इन विध जातां बदलें, कहें हमें होत सवाब || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -11

- मार धणी तणे चरणे हुती, आटला ते दाडा गोप । वचन जे सुकजी तणा, ते केम करूं हूं लोप || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -84
- मार प्रतिष्ठा पैजारों, जो आए दगा देत बीच ध्यान । एही सरूप दज्जाल को, उड़ाए दे इनें पेहेचान || ग्रं - किरन्तन, प्र -103, चौ -2
- मारकंड जे दिलजी, सभ नारायण जी चई । जडे याद डिंनी मारकंड के, तडे हिक दम निद्र न रई || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -16
- मारकंड माया मंझां, जडे किएं न निकरी सगे । तडे गिडाई रिखि के पांणमें, मंझ पेही मारकंड जे || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -9
- मारकंडे माया दीठी जेम, घेर बेठा आपण जोइए तेम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -12
- मारता था राह दुनी की, सबका था दुस्मन । जित हिदायत एक हादी की, तित भी मारे तिन || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -7
- मारफत देवे इस्क, इस्के होए दीदार । इस्के मिलिए हकसों, इस्कें खुले पट द्वार || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -86
- मारफत लदुन्नी जिन लई, सो करे हक सहूर । सहूर किए हाल आवहीं, सो हाल बीच हक मजकूर || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -81
- मारफत लदुन्नी मोमिनों, बंदा हक का कामिल । बड़ी बुजरकी इन की, करें बातें हक सामिल || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -78
- मारफत सागर क्यों कहूं, करी सरे में पुकार । इन हक ठौर के नाम धर, पूज फिरके हुए बेसुमार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -58
- मारफत हक हकीकत, अर्स रूहों को दई हक । जो इलम दिया हकें अपना, तामें जरा न सक || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -56
- मारफत हुई हाथ हक के, क्यों ले सकिए सोए । ए दोस्ती तब होवहीं, जब होए प्यार बराबर दोए || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -85
- मारसी सबों का सैतान, तब होसी एक दीन । सुभे सक भाने लदुन्नी, होसी सब दिलों पाक आकीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -69
- मारा अवगुण घणां रे अनंत, पण छेह केम दीजिए रे । एणे वचने इंद्रावती अंग, वालो तेडी लीजिए रे || ग्रं - खटरुती, प्र -1, चौ -15
- मारा आवेस महेंथी भाग दऊं, साथने सारी पेर । मनना मनोरथ पूरा करी, हरखे ते जगवू घेर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -16
- मारा कया काढ़ा कया, और कया हो जुदा । एही मैं खुदी टले, तब बाकी रहया खुदा || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -30
- मारा गुण अंग सहु ऊभा थासे, अरचासे आकार । बुध वासना जगवसे, तेणे सांभरसे संसार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -99

- मारा ते घरनी वातडी, नथी कयानो क्यांहें विश्राम । कहूं तो जो कोई होय बीजो, गाम नाम न ठाम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -132
- मारा धणी हूं तो कहूं जो तमे अलगा हो, एक पाव पल अमारो विछोडो न सहो । में एम तां कयुं जो मारी ओछी मत, तमे अम माटे केटला करो छो खप || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -16
- मारा पूरण मनोरथ जेह, थया वस्तूं मली। काई रही नहीं लवलेस, वालाजीतूं रंग रली || ग्रं - रास, प्र -44, चौ -2
- मारा प्राणना प्रीतम छो, अंगनानी आतम टोली । कलपया मन रामत जोतां, नाखू ते दुखडा घोली || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -17
- मारा मन माहें एम आवी थयूं, साथ रखे जाणे अम माटे का नव कयूं । जो एम न कहूं तो खबर केम पडे, जे धणी साथ ऊपर दया एम करे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -21
- मारा वाला मांहें कल रे, अंगे अति बल रे । रमे घणे बल, रंग अविचल, वल्लभ अति वितसूं || ग्रं - रास, प्र -26, चौ -2
- मारा वालाजी रे वल्लभ, कहूं एक विनती रे । मारा करम तणी रे कथाय, सुणो मारी आप बीती रे || ग्रं - खटरुती, प्र -1, चौ -1
- मारा वालाजीमा एक गुण दीसे, जाणे रामत सीख्या सह पेहेली । इंद्रावतीमां बे गुण दीसे, एक चतुर ने रमता गेहेली || ग्रं - रास, प्र -24, चौ -8
- मारा वालासुं विलास, स्यामा करे हाँस । सूधो रंग पास, करी विस्वास, जुओ जोपे खंतसूं || ग्रं - रास, प्र -26, चौ -4
- मारा वालैया ए रामत घणूं रूडी, हमचडी रलियाली रे । कालेरामां कण्ठ चढावी, गीत गाइए पडताली रे || ग्रं - रास, प्र -14, चौ -2
- मारा साथ सनमंधी चेतियो, ए हांसीनों छे ठाम । आप वालो घर विसरी, हवे जागी भूलो कां आम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -11, चौ -1
- मारा साथ सुणो एक वातडी, आ सरूप ते केम वरणवाय । एक भूखण तणी जो भांत तमे जुओ, तो आणे देह जीव न खमाय || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -55
- मारा साथ सुणो एक वातडी, कयो सतनो में सार। ए सारनों सार देखाडी, जगवू ते मारा आधार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -2
- मारा सुंदरसाथ आधार, जीवन सखी वाणी ते एह विचारोजी । जागनीसूं जगवं तमने, ते साथजी कां न संभारोजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -1
- मारी जोगवाई हुती जेह, सुफल थासे आवारनी रे । जाण्यूं आवी माया मांहें, भाजसू हाम संसारनी रे || ग्रं - खटरुती, प्र -1, चौ -3
- मारी ने मरडी भांजी करीने, वली जगवी करो तमे जोर जी । गुण अंग इंद्री ज्यारे जीव जागसे, त्यारे करसे ते पाधरा दोर जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -26

- मारी वाणीए ब्रहमांडज गले, तो वासना केम वचनथी टले । वासनाओ माटे बांध्या बंध, कई भाते अनेक सनंध || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -9, चौ -4
- मारी वेहेली ते लेजो सार, नहीं तो जीव चालसे रे || ग्रं - खटरुती, प्र -1, चौ -14
- मारी वेहेली ते लेजो सार, वालानी हूं विरहणी रे। मूने दिवस दोहेला जाए, वसेके रैणी रे || ग्रं - खटरुती, प्र -1, चौ -10
- मारी संगते एम सुधरी, बुध मोटी थई भगवान । सत सरूप जे अछर, मारे संग पामी ठाम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -98
- मारूं अंग वालूं तमतणे, वचन वालू जिभ्या मुख । बोलावं ते मीठे बोलडे, जोऊं सकोमल चख || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -42
- मारे एही दज्जाल को, और एही करें एक दीन । साफ करे सब दिलों को, हक पर देवे आकीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -47
- मारे तो नथी काई किवनु काम, वचन कहेवा मारे धणी श्री धाम । जे आंही आवीने कह्या, गजा सारूं मारे चितमा रह्यां || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -4
- मारेगा कलजुग को, ए जो चौदे तबक अंधेर । तिनको काट काढ़सी, टालसी उलटो फेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -28
- मारो आसरो काई न हतो मारा धणी, पण मने बने सरूपे दया कीधी घणी । सेवा मां हूं न हती सरीख, नव जाणू मूने निध दीधी केम करीस || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -3
- मारो जीव कलकले आकलो, अने काया थरके अंग । कहो जी अवगुण अमतणां, जे कीधां रंगमां भंग || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -13
- मारो साथ रमे रे सोहामणो, कांई रामत रमे रंग । वालाजीसुं वातो, करे अख्यातो, उलट भीडे अंग || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -5
- मारो साथ होय ते तमे सांभलो, रखे आंही पाडो रात जी । ए रातना दुख घणा रे दोहेला, पछे निद्रा उडसे प्रभात जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -31
- मांस आहारी रे न दया डरे किनसे, ऐसा हुआ हाहाकार । बुधजी बिना वैराट में, ऐसो बरत्यो वेहेवार || ग्रं - किरन्तन, प्र -53, चौ -6
- मासूक आसिक दोऊ जाने दुनी, हक मोमिन मांहें खिलवत । उतरी अरवाहें अर्स से, तो भी पढ़े न पावें वाहेदत || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -82
- मासूक का मुख सोभित, देख लवने केस कान । पेहेचान वाले सुख पावहीं, देख अर्स अजीम सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -4
- मासूक की नजर तले, आठों जाम आसिक । पिए अमीरस सनकूल, हुकम तले बेसक || ग्रं - किरन्तन, प्र -91, चौ -15
- मासूक के चरनों का, किया बेवरा बरनन । जीव उड़या चाहिए केहेते लीक, हाए हाए क्यों रहे मोमिन तन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -119

- मासूक कोठे पांण के, पांण भायूं हित रहूं । गिनी गुझ सुख मासूक जो, दुनियां के चऊं || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -12
- मासूक छाती निरखते, क्यों याद न आवे अर्स । विचार किए आवे अनुभव, जा को दिल कह्यो अरस-परस || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -61
- मासूक छाती रूह थें ना छूटहीं, अति मीठी रंग भरी रस । ए क्यों कर छोड़े मोमिन, जो होए अरवा अर्स || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -58
- मासूक तुमारी अंगना, तुम अंगना के मासूक । ए हुकमें इलम दृढ़ किया, अजूं रूह क्यों न होत टूक टूक || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -45
- मासूक महंमद तो कया, बहस हुआ वास्ते इस्क। और कलाम अल्ला में कया, आसिक नाम है हक || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -11
- मासूक मेरे रूह चाहे सिफत करूं, सो मैं जाए ना कही । जब देख्या बेवरा कर, तब तामें उरझ रही || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -1
- मासूक संग सुख मिल के, इत हिंडोले पाल पर । सो सुख याद क्यों न आवहीं, जो हम लेती मिलकर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -22, चौ -9
- मासूकें इत आए के, कैसा दिया इलम । सक तोहे कोई ना रही, अजूं याद न आवे खसम || ग्रं - किरन्तन, प्र -111, चौ -16
- मासूकें मोहे मिल के, करी सो दिल दे गुझ । कहे तूं दे पड़ उत्तर, जो मैं पूछत हों तुझ || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -5
- मासूके मोहे मिलके, करी सो दिल दे गुझ । कहे तूं दे पड़उतर, जो मैं पूछत हों तुझ || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -5
- मांहें अंधारू माहें अजवालू, रूदे ते कोई न संभारे । पर वस बांध्यो करम करे, अवतार अमोलक हारे || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -91
- मांहें अंधेर और वैष्णव कहावो, ए तो बातें सब फोक । ज्यों धूरत नाम धरावे धनवंत, पासे नहीं दमड़ी रोक || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -10
- माहें ऊँची नीची कोई नहीं, सब बैठियां बराबर । अंग सकल उमंग में, खेल देखन को चाह कर || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -15
- माहें और रंग हैं कई, कई नकस करें चित्र । सोभा पर बलि जाइए, देख देख एह विचित्र || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -131
- माहें कई नेहेरें चलें, सब पहाड़ में फिरत । कई फुहारे चेहेबच्चे, सब ठौरों खूबी करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -16
- मांहें गया सबन को खाए, पढ़े ढूंढ़त जुदा ताए । जाहेरियों न देवे देखाए, ऊपर माएने दिए भुलाए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -32
- माहें जरी जवेर रंग कई, जानों आगंहीं बने असल । जित जुगत जो चाहिए, सोभित अपनी मिसल || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -33

- मांहे ते मृग कस्तूरिया, प्रेमल करे अपार । बीजा अनेक विधना पसु पंखी, ते रमे रामत अति सार || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -33
- माहें तो कोई नव ओलखे, ओलखाण ने खोरी बाले । ए सगाई आ भोम तणी, ते सनमंध एणी पेरे पाले || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -29
- मांहें थंभ एके थिर नहीं, फरे ते पांचे फेर । एनो फेरवणहार लाधे नहीं, मांहे ते अति अंधेर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -16
- मांहें धखे दावानल दसो दिसा, हवे बलण वासनाओं थी निवार । हुकम मोहथी नजर करो निरमल, मूल मुखदाखी विरह अंग थी विसार || ग्रं - किरन्तन, प्र -37, चौ -3
- माहें बिरिख बेली कई कटाव, कई फूल पात नकस । देख जवेर जुगत कई चंद्रवा, जानों के अति सरस || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -20
- माहें बेल फूल कई खजरे, नंगै के वस्तर । नरम सखत जो दिल चाहे, जोत सुगंध सब पर || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -111
- मांहें भभूके आग के, खाना अमल जेहेर अति जोर । पिउ पुकारे कई विध, मैं उठी ना अंग मरोर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -11
- मांहें मछ गलागल, लेहेरें आड़े टेढ़े बेहेवट जी । दसो दिसा कोई ना सूझे, फिरवलसी अंधकार पट जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -38
- मांहें मैले बाहेर उजले, सो तो कहे मुनाफक । मासिवा-अल्लाह छोड़ें मोमिन, तामें कुफर नहीं रंचक || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -41
- मांहें मोती कोरे कसवी, त्रीजी नीली चंनी सार । अनेक विधनी वेल जो सोभे, छेडे करे झलकार || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -24
- मांहें मोती माणक हीरा, पाना ने पखराज जी । कुन्दन मांहें रतन नंग झलके, रमवा सुंदरी करे साज जी || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -36
- माहें मोहोल कई विध के, कई कचेहेरी देहेलान । कई मंदिर हवेलियां, क्यों कर कहूं बयान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -70
- माहें वस्तां संदूक जोगवाई, सो तो अगनित देत देखाई । ताके खिल्ली किनारे भमरियां, ऊपर वस्तां अनेक बिध धरियां || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -69
- माहें हारें खजूरे बूटियां, बीच फूल करत हैं जोत । जुदे जुदे रंगों जवेर, ठौर ठौर रोसनी होत || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -43
- माहेले माएने जोपे ज्यारे जोइए, त्यारे दीधी तारूणी तन तछकार । कलकली महामती कहे हो कंथजी, एवा स्या रे दोष अंगनाओं ना आधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -38, चौ -4
- माहों मांहें कई प्रीत रीतसों, खेलें हँसें रस रंग । पेहेचान जिनों को पेड़ की, धनी को रिझावें सेवा संग || ग्रं - किरन्तन, प्र -77, चौ -4
- मांहों मांहें वालाजीनी वातो, बीजो चितमां नथी उचार । ततखिण वेण सांभलतां वल्लभ, खिण नव लागी वार || ग्रं - रास, प्र -7, चौ -8

- माहोमांहें विचारज करतां, वातज करतां एह । आतम सहुनी एकज दीसे, जुजवी ते दीसे देह || ग्रं - रास, प्र -4, चौ -6
- माहोमांहें विनोद घणो, उठो रामत कीजे रंग। तरत वालोजी आवसे, आपण जेना अंग || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -45
- माहोमांहें सगा समधी, माहे कुटुंबनो वेहेवार । हंसे हरखे रूए सोके, चौद विद्या वर्ण चार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -15
- मांहोंमांहें सनमंध करतां, उछरंग अंग न माय । अबीर गुलाल उडाडतां, सेहेरों मां फेरा खाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -22
- मिट्टी पत्थर बनाए के, कहें खुदाए का घर । मेहेराव को किबला किया, करें निमाज तिन पर || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -30
- मिठडो वाओ नूर जो, अचे नूर खुसबोए । हे सुख अर्स बाग में, की चुआं किनारे जोए || ग्रं - सिंधी, प्र -2, चौ -17
- मिठो गुझ मासूक जो, आसिक के के न चोए । पडोसन पण न सुणे, ई आसिक गुझी रोए || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -7
- मिनों मिने करें हसियारियां, हक खेल देखावें जदागी । एक कहे दूजी को मुख थे, रहिए लपटाए अंग लागी || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -39
- मिनों मिनें गझ करें, निस दिन एही चितवन । बुरा चाहें तिनका, जिन देखाया मूल वतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -105, चौ -9
- मिनों मिने सिनगार करावें, एक दूजी को भूखन पेहेरावें । साथ सिनगार करके आवें, जैसा धनी जी के मन भावे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -84
- मिनों मिने सिनगार करावें, एक दूजीके आगे धावें । उछरंगतियां आवें आगे, राज स्यामाजी के पांउ लागे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -135
- मिल मिल करें टहुंकार, मुख मीठी बानी पुकार । बांदर ठेकों पर ठेक देत, टेढ़ी उलटी गुलाटें लेत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -48
- मिलके साथ आवे दौड़ता, मिने सकुंडल सकुमार । निजधाम से आई सखियां, जुथ चालीस सहस्त्र बार || ग्रं - किरन्तन, प्र -54, चौ -13
- मिलाप हुआ जब मेंहेंदी से, तब कहया महामती नाम । अब मैं हुई जाहेर, देख्या वतन बका धाम || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -5
- मिलावा महंमद का, ए जो मिले दरवेस । देखें हम बिना काम महंमद का, क्यों कर जावे पेस || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -39
- मिली मासूक के मोहोल में माननी, आसिक अंग न मांहें अंग । जानूं जामनी बीच जुदी हुती हक जात सें, पेहेचान हुई प्रात हुए पिउ संग || ग्रं - किरन्तन, प्र -117, चौ -1
- मिहीं लीकां देखू लांक में, इतहीं करूं विश्राम । बल बल जाऊं देख देख के, एही रूह मोमिनों ताम || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -136

- मिहीं लीकें चरनों तली, रूह के हिरदे से छूटत नाहें । ए निसबत भई अर्स की, लिखी रूह के ताले माहें || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -12
- मीठडा मीठा रे, मूने वचनिएं का वाहो । मीठा ते मुखना लऊं मीठडा, कां प्रीतडी करीने परा थाओ || ग्रं - किरन्तन, प्र -42, चौ -1
- मीठा गुझ मासूक का, काहूं आसिक कहे न कोए । पड़ोसी पण ना सुनें, यों आसिक छिपी रोए || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -7
- मीठा सुख मेहेर सागर, मेहेर में हक आराम । मेहेर इस्क हक अंग है, मेहेर इस्क प्रेम काम || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -29
- मीठी जुबां बोलत मासूक, रूहें प्यारी आसिक सों । ऐसा मीठा अर्स खावंद, जाके बोल चुभे हिरदे मों || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -25
- मीठी जुबां मीठे वचन, मीठा हक मीठा रूहों प्यार । मीठी रूह पावे मीठे अर्स की, जो मीठा करे विचार || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -27
- मीठी जुबां स्वर बान मुख, बोलत लिए अति प्रेम । पिउ सों बातें मुख हंसें, लिए करें मरजादा नेम || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -122
- मीठी पापण चलवे एक भांते, तारे तेज अपार । बेहुगमा भृकुटीनी सोभा, इंद्रावती निरखे करार || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -35
- मीठी बानी चित्त चाहती, खुसबोए नरमाई चित्त चाहे । सोभा सलूकी चित्त चाही, ए अर्स सुख कहे न जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -49
- मीठी माया वल्लभ जीव की, सो छुड़ायो कुटम परिवार । बड़े घराने सब कोई जाने, उठावते तिनका भार || ग्रं - किरन्तन, प्र -120, चौ -8
- मीठी मीठी माहें मीठी मीठी, रस रसीली रसना बान । सुख सुखके मांहें कई सुख, सुख क्यों कहूं रसना सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -42
- मीठी सरत किसोर की, गौर लाल मुख अधुर । ए आसिक नीके निरखत, मुख बानी बोलत मधुर || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -222
- मीठे नैन बैन मुख मीठे, सोभा सुंदर अमान । जिन विध धनी रीझहीं, खेलें बोलें तिन तान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -12
- मीठे नैन रसीले निरखत, माहें सरम देत देखाए । प्यार पूरा देखत, मेहेर भरे सुखदाए || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -68
- मीठे लगें मरोरते, मीठी पापण लेत चपल । फिरत अनियारे चातुरी, मान भरे चंचल || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -24
- मीन जल विना जेणी अदाय, अंतर व्रह न खमाय । तो वह आपण केम सेहेवाय, जो एक लवो समझाय || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -60
- मुं इलम खटाई तोहिजे, से भाइयां तोहिजा आसान। तोके बंधो मूं रांद में, की छुटे भगो सुभान || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -76

- मुं कारण सैयल मुंहजी, हिनमें विधाऊं पांण । कूकडियूं करे करे, नेठ उथी वियां निरवाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -6, चौ -11
- मुं चयो मैं आसमान विच, आंऊ हेकली आइयां । जी न अचे दिलमें खतरो, से माधाई थी लाहियां || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -48
- मुं तेहेकीक आयो दिलमें, अगरो धणी इस्क । डिठम अर्स खिलवतमें, सा रही न जरो सक || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -21
- मुं दुलहिन के जाहेर तो केई, म दुलहा जाहेर तूं थेओ । पाहिज्यूं रूहें जाहेर तो केयूं, तो रे आए न को बेओ || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -89
- मुं धणी म हितई, ओडो डेखारे इलम । हथ घुरीदे न लहां, न डिसां नेणे खसम || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -6
- मुं पिरियन से जा केई, अदी एडी न करे व्यो कोए । सजण आया मूं कारण, आऊं अंख न खणियां तोए || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -8, चौ -4
- मुं मंगी आं डेखाई, करियां गाल केई । हाणे चोराइए ते चुआं थी, गाल गरी थी पेई || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -7
- मुं मथां हेडी को केइए, केहेडो आइम डो। जे गाल होए आं दिलमें, से मूं मांधां को न कढो || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -37
- मुं हिये सल्ले अगियूं गालियूं, से वलहा कुरो चुआं । सुंदरबाई हल्ली विलखंदी , पण से कंने की न सुआं || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -25
- मुए भी इत बेसक, और जिए भी बेसक । सहूर भी बेसक दिया, दिया इलम बेसक हक || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -95
- मुकट ऊपर ऊभी जवेरोनी हारो, तेमां रंग दीसे अपार । अनेक विधनी किरणज उठे, ते तां ब्रह्मांड न माय झलकार || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -41
- मुकट बन्यो सिर पाचको, रंग नंग तामें अनेक । जुदे जुदे दसों दिस देखत, रंग एक पे और विसेक || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -160
- मुकता हरफ तुम वास्ते, अखत्यार दिया हादी पर । जो चौदे तबक दुनी मिले, तो माएने होए न हादी बिगर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -63
- मुंके अकल न इस्क, से पट खोल्याई पांण । उघाड्यूं अंख्यूं रूहज्यूं, थेयम सभे सुजाण || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -45
- मुंके इलम डेई पाहिजो, केइए खबरदार। से न्हारिम जडे सहूरसे, त कांध आंऊं न गुन्हेगार || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -16
- मुंके इलमें चयो भली पेरे, कोए न्हाए डोह रूहन । केयो थ्यो सभ कांध जो, असीं सभ मंझ इजन || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -27
- मुंके निद्रडी विसारियो, पण तं की विसारिए। तो दिल से को उतारियूं, ही वार वार को चाइए || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -35

- मुंके वडी वधारिए, डिंने सभनी में सोहाग । की डिठम की डिंसदिस, जेडो कंने भाग || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -40
- मुक्त दई त्रैगुन फरिस्ते, जगाए नूर अछर । रूहें ब्रह्मसृष्ट जागते, सुख पायो सचराचर || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -112
- मुक्त दई सब जीवों को, पावें पस पंखी नर नार । होसी वैराट ए धंन धन, सुख आनंद अखण्ड अपार || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -24
- मुख उज्जल गौर लालक लिए, छबि जाए न कही जुबांए । देख देख सुख पावत, रूह हिरदे के माहें || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -57
- मुख उदर के कोहेड़े, रचे मिने सपन । और सुध इनों क्यों होए, ए खेले गफलती जन || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -22
- मुख उदर के कोहेड़े, रचे मिने सुपन । ए सुध काहू न परी, मिने झीलें मोह के जन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -20
- मुख उदर केरा कोहेडा, रच्या ते मांहें सुपन । सुध केहेने थाय नहीं, मांहें झीले ते मोहना जन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -19
- मुख ऊपर मोती निरमल लटके, बेसर ऊपर लाल । काने करण फूल जे सोभा धरे, ते ता झलके मांहें गाल || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -31
- मुख करमाने मन के, सो तुमारे मैं ना सहूं । ए दुख सुख को स्वाद देसी, तो भी दुख मैं ना देऊं || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -18
- मुख के सब्द मैं बोहोत सुने, इन भी कोई दिन किया पुकार । पर घायल भई सो तो कोईक कुली में, सो रहत भवसागर पार || ग्रं - किरन्तन, प्र -9, चौ -2
- मुख केहेने की हाजत ना पड़े, जो उपजे रूहों के दिल । सो काम कर ल्यावें खिन में, ऐसा इनों का बल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -64
- मुख गौर झरे कसूंबा, सोभा क्यों कहूं बड़ो विस्तार । रंग कहूं के सलूकी, ए न आवे मांहें सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -9
- मुख चौक अति सुन्दर, अति सुन्दर दोऊ गाल । कही न जाए छबि सलूकी, निपट उज्जल माहें लाल || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -71
- मुख चौक कहूं के चकलाई, के सीतल सागर सुख । के कहूं सागर रस का, जो नूरजमाल का मुख || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -11
- मुख चौक छबि की क्यों कहूं, सोभा हरवटी दंत अधूर । बीच लांक मुसकनी कहां लग, केहे केहे कहूं मुख नूर || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -19
- मुख चौक छबि निलवट बनी, क्यों कर कहूं सिफत । ए सोभा अर्स सरूप की, क्यों होए इन जुबां इत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -55
- मुख चौक छबि सलूकियां, सुन्दर अति सरूप । गाल लाल अति उज्जल, सुखदायक सोभा अनूप || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -63

- मुख चौक नेत्र नासिका, ए छबि अंग अर्स के । असले सिफत न पोहोंचहीं, बुध माफक कही ए || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -58
- मुख चौक नेत्र नासिका, निहायत सोभा अतंत । मुरली नासिका तेज में, सोभे नंग मोती लटकत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -72
- मुख चौक सलूकी क्यों कहूं, कछू जानें रूह के नैन । ए सुख सोई जानहीं, जासों हक करें सामी सैन || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -5
- मुख चौक सोभित अति मांडनी, अने झलके काने झाल । जडाव माणक मोती ने हीरा, कुन्दन मां पाना लाल || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -52
- मुख छवि अति बिराजत, सोभित सब सिनगार । देख अंगूठे आरसी, भूखन करत झलकार || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -117
- मुख जुबां मासूक की, सो भी कानों के ताबीन । रूह देखे गुन कानन के, जासों हक जुबां होत आधीन || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -6
- मुख थी बोलावी ज्यारे जोइए, तो गलित चित विश्वास । फेर नहीं अंधेर तणो, तेना रदे माहे प्रकास || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -16
- मुख दंत लाल अधुर छब, मधुरी बोलत मुख बान । खेंच लेत अरवाह को, ए जो बानी अर्स सुभान || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -72
- मुख न फेरें मोमिन, छाती इन सुभान । ए करते याद अनुभव, क्यों न आवे असल ईमान || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -60
- मुख नासिका देखत आसिक, सुन्दर सोभा अतंत । नेत्र बीच निलाट तिलक, आसिक याही सों जीवत || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -114
- मुख नासिका नेत्र भौंह, तिलक निलाट और कान । हाथ पांउ अंग हैड़ा, सब मुसकत केहेत मुख बान || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -126
- मुख नूर चौक भर पूरन, नूर दस मन्दिर पड़साल । इन भोम नूर रूहें देखहीं, तो नूर बदले नूर हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -37
- मुख बानी केहेलाई बड़ी कर, मांहें ब्रह्म सृष्ट । पंथ पैडे संसार के ज्यों, होए चलाया इष्ट || ग्रं - किरन्तन, प्र -101, चौ -3
- मुख बीड़ी आरोगें पान की, लाल सोभे अधुर तंबोल । ए रूह दृष्टें जब देखिए, पट हिरदे देत सब खोल || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -55
- मुख बोले पीछे पाइए, जो दिल अन्दर के गुन । पर मुख देखे पाया चाहे, जो अन्दर गुझ रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -35
- मुख मांहें थी वचन कया तो तूं, जो हजी न छेक निकलियो तूं । आगे किव मांडी छे अनेक, ते पण कांइक कीधी विसेक || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -16
- मुख मांहें दई अधुर, जीवन सुख जाणिए रे । अदभुत एहेना सनेह, ते केम वखाणिए रे || ग्रं - रास, प्र -35, चौ -7

- मुख मांहें बीडी तंबोलनी, मंद मरकलडो सोभे । इंद्रावती नेणेसू निरखे, अति घणूं करीने लोभे || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -65
- मुख मीठा सागर पूरन, मुख मीठा सागर बोल । मेहेर सागर दृष्ट पूरन, लई इस्क सागर मांहें खोल || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -37
- मुख मीठी अति रसना, चुभ रेहेत रूह के माहें । सो जानें रूहें अर्स की, न आवे केहेनी में क्याहे || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -125
- मुख मूंदे अधुर बोलत, बानी प्रेम रसाल । आसिक को छबि चुभ रही, जानों हैड़े निस दिन भाल || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -7
- मुख मेरे मेहेबूब का, रंग अति उज्जल गुलाल । क्यों कहूं सलूकी नाजुकी, नूर तजल्ली नूरजमाल || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -1
- मुख सख्प अति सुन्दर, क्यों कहूं सोभा मुख इन । एक अंग जो निरखिए, तो तितहीं थके बरनन || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -110
- मुख सुन्दरता क्यों कहूं, नूरजमाल सूरत । ए बयान दुनी में क्यों करूं, ए जो आई अर्स न्यामत || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -50
- मुखडूं निहाले अंगूठीमां, सोभा धरे सर्वा अंग । सणगटडो सिणगार सोभावे, श्री कृष्णजी केरी अरधंग || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -66
- मुखथी वचन रखें ओचरों, नहीं तो घणूं थासे खरखरो । चौद भवननी पूछो वात, ते तमने कहूं विख्यात || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -26
- मुखथी वाणी जे ओचरे, कांई ए स्वर अति रसाल । एक मात्र कणका जो रूदे आवे, तो थाय फेरो सुफल संसार || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -67
- मुखथी सेवा तूने सी कहू, जो तूं अंतर आडो टाल । अनेक विध सेवा तणी, तूंने उपजसे तत्काल || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -25
- मुखथे वचन कहे तो कहा, जो छेद के अजूं ना निकस्या । अगलों ने किव करी अनेक, तें भी कछुक करी विसेक || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -19
- मुखारबिंद मेहेबूब का, सुख देत हक सूरत । जुगल किसोर सोभा लिए, दोऊ बैठे एक तखत || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -121
- मुखारबिंद सब नूर के, नूर बस्तर भूखन । सब सिनगार साजे नूर के, नूर कहां लग कहूं रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -8
- मुखारविन्द स्यामाजीय को, रूह देख देख सुख पाए। निलवट सोहे चांदलो, रूह बलिहारी ताए || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -59
- मुंजा जीव सुहागी रे, हाणें जिन छडिए पिरी पेर । वभेरकां तो कारणे, पिरी आया हिन वेर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -16, चौ -1
- मुंजा पुजे न हथ अंगडा, त रहां कीय करे । कोठाइए कागर मूंकी करे, की बेहां धीरज धरे || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -43

- मुंजा लाड कोड पारणजा, आं सिर सभ मुद्दार । डिए डोह असांके, जे अस्सां सुध न सार || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -26
- मुंजा साथ सुहागी रे, हाणें अई को न सुजाणो सिपरी । पेरोनी पांण न सुजातां, आइडा से बरी रे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -1
- मुंजो जीव वढे कोरा करे, महें मिठो पाताऊं। सजण संदो सूर ई मारे, मंझा जीव करे रे धाऊं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -8, चौ -2
- मुझ को सब बराबर-बराबर है, मैं हूं औरत ईमाम मेंहदी की || ग्रं - सनंध, प्र -2, चौ -5
- मुझवण विध करो छो धर्मनी, माहों मांहें अगाध । वस्त खोल्या विना विमुख थाओ छो, लई जाय गुण कहावो साध || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -65
- मुझसे अजान अबूझ दुष्ट अप्रीछक, अधम नीच मत हीन । सो इन चरनो आए होए दाना स्याना, सुघड़ सुबुध प्रवीन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -17
- मुझे जगाई जुगतसों, सुख दियो अंग आप । कंठ लगाई कंठसों, या बिध कियो मिलाप || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -9
- मुझे जगाई जुगतसों, सुख दियो अंग आप । कंठ लगाई कंठसों, या विध कियो मिलाप || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -8
- मुझे भेज्या कासिद कर, मैं ल्याया फरमान । एही जानो तुम तेहेकीक, दिलसों आकीन आन || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -4
- मुझे भेज्या हक ने, याद दीजो मेरा सुख । तब इनों तिलसम का, उड़ जासी सब दुख || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -47
- मुझे मेहेर मेहेबूबे करी, अंदर परदा खोल । सो सुख निसबतियन सों, कहूं सो दो एक बोल || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -4
- मुझे मेहेर मेहेबूबें करी, अंदर परदा खोल । सो सुख सनमंधियनसों, कहूं सो दो एक बोल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -4
- मुझे संदेसे खिलवत के, सब रूहअल्ला दई सिखाए । बेसक इलम अर्स का, मोहे सब विध दई बताए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -7
- मुंदरियां दसों अंगुरियों, एक छोटी की न केहेवाए जोत । अर्स जिमी आकास में, हो जात सबे उद्दोत || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -64
- मुनकर हुकम और कयामत, हुए नाहीं नेक बखत । फंद मांहें हुए गिरफ्तार, भमर हलाकी पड़े कुफार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -10, चौ -6
- मुनीजी में बोहोत दुख पाऊं, एह दाझ जिन लिए जाऊं। तब भागे जोस कही पंच अध्याई, रास बरनन ना हुआ तिन ताई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -20
- मुनीजी हूं घणों दोहेलो थाऊं, रखे अगिन हूं लीधे जाऊं। त्यारे भागे आवेस कही पंच अध्याय, पण रास न वरणव्यो तेणे ताय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -20

- मुरग अंदर बैठा खाक ले चोंच में, ना जबराईल तिन समान । ए माएने मेयराज रूहें जानहीं, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -24
- मुरदे एही उठावसी, करसी साबित नबुवत । और साबित कुरान माजजा, ए करसी ईसा हजरत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -62
- मुरदे क्यों कर उठसी, दुनियां चौदे तबक । पढ़े वेद कतेब को, पर गई न काहूं की सक || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -23
- मुरली बजावत मोरबाई, बेनबाई बाजंत्र । तानबाई तान मिलावत, निरत जामत इन पर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -64
- मुरली सोभित मुख नासिका, लटके मोती नंग लाल । निरख देखू माहें नीलवी, तो तबहीं बदले हाल || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -64
- मुलक हुआ नबियन का, आखिर हिंदुओं के दरम्यान । गिरो भेख फकीर में, पातसाह महंमद परवान || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -12
- मुसलमान कई भेखसों, पीर मरद फकर । पीछा कोई ना रेहेवहीं, हुई बधाइयां घर घर || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -10
- मुसलमान कहें आवसी, सो हमारा खसम । लिख्या है कतेब में, आगे नबी हमारा हम || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -81
- मुसाफ उठया तो उत से, जो बिकर रही फुरकान । याके वारस मसी मोमिन, जो कहे अहेल फुरमान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -65
- मुसाफ मता महंमदी मोमिनों, पोहोंच्या वारसी आखिरी इमाम । झण्डा पोहोंच्या अर्स अजीम लग, देखाए हक बका अर्स तमाम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -21
- मुस्लिम किस्ती पार पोहोंचाए, काफर तोफानें दिए डुबाए । ए तीनों मिल दुनी रची और, सो तीनों आए जुदे जुदे ठौर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -27
- मुस्लिम को मुस्लिम की, हिंदुओं हिंदुओं की तर" । ए समझे सब अपनी मिने, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -20
- मुस्लिम जोडू जब करें, मिल पेहेले बांधे सरत । जिन कोई किनसों दिल बांधे, यों न्यारे रहें गफलत || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -18
- मुस्लिम मुए गाडहीं, बांध उमेद खसम । तेहेकीक हक उठावहीं, यों सोवें पकड़ कदम || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -25
- मुस्लिम सारे केहेलावहीं, पर ना सुध हकीकत । ना सुध रसूल ना खसम, ना सुध या गफलत || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -34
- मुंहजा जीव अभागी रे, हाणे तूं जिन चुके हिन वेर । तो के नी हिन अंधारे मंझा, ई वेओ कढंदो केर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -15, चौ -1
- मूँ अवगुण डिठां पाहिजा, गुण डिठम पिरम । से बेओ जमारो गेंदे, उमेद ए रियम || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -15

SRJN

- मूँ उमेदूं दिल में, धणी ज्यूं गडजण । लाड पारण असांहिजा, आईन अगरयूं सजण || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -26
- मूँ उमेदूं दिलमें, धणी से घारण । को न होन उमेदूं धणी के, मूंजा लाड पारण || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -22
- मूँ उमेदूं पिरनज्यूं, लधिम भली पर । सुयम मोहां सजणे, जो खिलवत थी घर || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -18
- मूँ घर अर्स अजीम, नूरजमाल मूं कांध । लाड पारण मूंहजा, मूं कारण केई रांद || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -44
- मूं जेहेवा अजाण अबूझ दुष्ट होय अप्रीछक, अधम नीच मत हीन । ते एणे चरणे आवी थाय जाण सिरोमण, सुघड सुप्रीछक प्रवीन" || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -16
- मूं धणी जाहेर थेओ, दीन दुनी सुरतान । गाल सुई सभनी, हिंदू मुसलमान || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -12
- मूँ धणी रे घारई, मूंजी सभ उमर । इस्क धणी या मूंह जो, पस जा पटतर || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -51
- मूं पर मंगई हिकडी, पिरी सुख डिंना घणी पर । हिंनी सुखे संदियू गालियूं, अदी कंदासी वंजी घर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -28, चौ -12
- मूँ फिराक धणी न सहे, मूंके बिहारयाई तरे कदम । धणी पाहिजी रूहन रे, रही न सके हिक दम || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -50
- मूँ फिराक हिन धणी जो, मंआं अगरो हिन धणी के । आंऊं बेठिस धणी नजर में, सिधी न गडजां ते || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -49
- मूँ विरहणी नो विरह भाजजो, तमे छो दयावंत || ग्रं - खटरुती, प्र -4, चौ -12
- मूंके कुछाइए निद्रमें, तूं पाण जागे थो। जे बांझाइए मूं वलहा, त तो इस्क अचे डो || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -12
- मूंके केयज सुरखरू, से लखे भाइयां भाल । रूहें कोठे अचां आं अडूं, जी खिल्ली करियां गाल || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -6
- मूँके चेयाऊं पधरो, सा सुई गाल सभन । पर केर परुडे इसारा, संदयूं हिन दोसन || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -17
- मूंके जा घारण आवई, जे अंई पसो साथ । त खरे बपोरे सेज सोझरे, मूंके थेई रात || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -6, चौ -3
- मूंजा अंध अभागी जीव जोर रे, तूं की सुतो हित । पर पर धणिए जगाइया, तोके घर न सूझे कित || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -14, चौ -1
- मूंजी सैयल रे, सजण हुअडा मूं गरें । मूं न सुजातां सिपरी , हल्या कास्यूं घy करे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -6, चौ -1

- मूंनी कारण मूंजी अदियूं, पिरी डिंना हित पेर । जिंनी पेरे आया अदियूं, आऊं घोरे वंजां हिन सेर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -28, चौ -8
- मूने अमल मायानो जोर हुतो, तमे ते माटे कीधो अंतर । हवे तमे पडदा टाल्या रे वाला, आप छपसो केही पर || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -11
- मूने केम करी रैणी जाय, वपैया पिउ पिउ लवे रे । सुंदरी कहे आवार, तेडो चरणे हवे रे || ग्रं - खटरुती, प्र -1, चौ -7
- मूने घणुए जणावियूं, निध दई चालता एकांत । पण में खोई निध पापनी रे, ग्रही बेठी हूं स्वांत || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -72
- मूने माया लेहेर हुती जोरावर, ते माटे कीधां अवगुणो । अंध थको ज्यारे पडे रे कुआमां, त्यारे केहो वांक तेहतणो || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -13
- मूने मारो वल्लभ मल्या रे वालेस्वरी, जाणूं सेवा कीजे हरकांत । तेणे समे आवी ऊभी तूं अकरमण, फिट फिट भुंडी स्वांत || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -33
- मूने हती नींदरडी, तमे सूती मूकी कां राते । जागी जोऊं तां पिउजी न पासे, पछे तो थासे प्रभाते || ग्रं - किरन्तन, प्र -45, चौ -2
- मूने हती मायानी लेहेर, तो न आव्यो जीवने बेहेर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -62
- मूरख मूढ़ करी तुम दुष्टाई, हुए नहीं स्वाम धरमी । मूरख मूढ़ करी तुम ऐसी, धिक धिक चंडाल अकरमी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -56
- मूरख मोह कहूं मैं तोको, जब आतम धनी घर आया । इन अवसर तूं चूक्या चंडाल, जाए बैठा मांहें माया || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -42
- मूल अंग आया इस्क, दूजा देखे न बिना हक । जब छूटे प्रेम के पूर, प्रगट्या निज वतनी सूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -61
- मूल तारतम तणा, कोण करसे रे विचार । आसामुखी हुती इंद्रावती, मारा प्राणना आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -77
- मूल तारतम तणी, कोण प्रीछवसे रे बडाई । धाम धणीसू मूने, कोण करी देसे रे सगाई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -76
- मूल ना लेवें माएना, लेत उपली देखा देख । असल सरूप को दूर कर, पूजत उनका भेख || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -17
- मूल प्रकृती मोह अहं थे, उपजे तीनों गुन । सो पांचों में पसरे, हुई अंधेरी चौदे भवन || ग्रं - किरन्तन, प्र -21, चौ -2
- मूल बिना ए बिरिख खड़ा, ताको फल चाहे सब कोए । फेर फेर लेने दौड़ही, ए हांसी इन बिध होए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -16
- मूल बिना ए मंडल, नहीं नेहेचल निरधार । निकसन कोई न पावहीं, वार न काहूं पार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -28

- मूल बिना ए मंडल, नहीं नेहेचल निरधार । निकसन कोई न पावहीं, वार न काहूं पार || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -28
- मूल बिना वैराट ऊभो, एम कहे सह संसार । तो भरमना जे पिंड पोते, ते केम कहिए आकार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -29
- मूल बिना वैराट खड़ा, यों कहे सब संसार । तो ख्वाब के जो दम आपे, ताए क्यों कहिए आकार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -25
- मूल बिना वैराट खड़ा, यों कहे सब संसार । तो ख्वाब के जो दम आपे, ताए क्यों कहिए आकार || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -28
- मूल मिलावा खिलवत का, अजूं न आवे याद । ए झूठी जिमी जो दोजख, इत कहा लग्यो तोहे स्वाद || ग्रं - किरन्तन, प्र -111, चौ -15
- मूल मिलावा चीन्हया, चीन्या बिछ्रे वास्ते जिन । बेसक हुई इन बातों, जो हक बका का बातन || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -6
- मूल मेला महंमद रूहों का, सो कोई जानत नाहें । ए जाने हक हादी रूहें, अर्स बका के मांहें || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -12
- मूल वतन धनिएँ बताइया, जित साथ स्यामा जी स्याम । पीठ दई इन घर को, खोया अखंड आराम || ग्रं - किरन्तन, प्र -99, चौ -2
- मूल विना तमे जुओ विस्तार, केवडो कीधो छे आकार । तो आनो तो हूं कयो आकार, तेहेनो कां नव थाय विस्तार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -35, चौ -11
- मूल सरूप बीच धाम के, खेल में जामें दोए । हरा हुल्ला सुपेत गुदरी, कहे रूहअल्ला के सोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -5
- मूल सुरत अछर की जेह, जिन चाह्या देखों प्रेम सनेह । सो सुरत धनी को ले आवेस, नंद घर कियो प्रवेस || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -23
- मूलगी आंखां दऊं उघाडी, जेम आडी न आवे मोह सृष्ट । सत सुखने ओलखावं, जेम घर आवे द्रष्ट || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -70
- मूलथैं बंदगी करे जिकर, करे सिफत निकोई आखिर । ए जो मुतकी मुसलमान, करी इसारत ऊपर ईमान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -34
- मूसा इबराहीम इस्माईल, जिकरिया एहिया सलेमान । दाऊदें मांग्या मेंहेंदी जमाना, उस बखत उठाइयो सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -36
- मूसा ईसा और दाऊद, ए चारों आए बीच जहूद । और आखिरी कहे महंमद, खतम किया इत बांधी हद || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -14
- मूसे ईसे रसूल के, सबों नारी कहे फिरके । कह्या एक नाजी तिनों में, खासलखास अर्स का जे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -31
- मृगजल द्रष्टे न राचिए, जेहेनुं ते नाम परपंच । ए छल छे माया तणो, रच्यो ते अवलो संच || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -31

- मृगजलसों जो त्रिखा भाजे, तो गुर बिना जीव पार पावे । अनेक उपाय करे जो कोई, तो बिंद का बिंद में समावे || ग्रं - किरन्तन, प्र -2, चौ -7
- मृतलोक और स्वर्ग की, ब्रहमा और नारायन । रास रात के बीच में, ए चारों दरम्यान || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -44
- मृदंग चंग, तंबूर रंग, अति उमंग, गावती सखी स्वर करी || ग्रं - रास, प्र -30, चौ -1
- में अनेक वार जीत्यो रे आगे, तेतो जाणो छो चित मांहें । ते माटे मोसूं करो रे अंतर, पण नाठया न छूटसो क्याहे || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -22
- में कहुँ बातें दिल मेरे की, साथ मेरे नाम बड़े हैं || ग्रं - सनंध, प्र -34, चौ -2
- में कहूं बातें असन की, साथ मेरे इमाम का ग्यान है । लागिल हिंद मुस्लिम, अना कलिमों हिंद कलाम । खातर हिंदके मुसलमानों के, मैं कहूं हिंद की बोली । अना कुल्ल सवा सवा, अना हुरम इमाम || ग्रं - सनंध, प्र -2, चौ -4
- में गुण लखतां कही लेखण अणी, रखे आसंका उपजे घणी । कथुआना पगना प्रमाण, लेखणो गढियो हाथ सुजाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -35, चौ -6
- में गुन गिनूं श्रीधामधनी के रे, पर कमी कागद कलम मस मेरे । कमी तो केहेती हूं जो बैठी माया माहे, ना तो कमी नहीं कछुए क्याहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -17
- में चित मांहें चितव्यूं, जाण्यूं करतूं सेवा सार । मल्यो धणी मूने धामनो, सुफल करूं अवतार || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -25
- में जे दिन चरण परसिया, मूने कयूं तेहज दिन । दया ते कीधी अति घणी, पण मूने जोर थयूं सुपन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -5
- में तां ए लवो कयो मायाने सनमंध, हूं देखीती नव देखू अंध । एम कहिए तेने जे नव लिए सार, तमे ततखिण खबर लेओ छो आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -14
- में तां एम न जाण्यूं रे वाला, करसो एम निधात । नाहोजी हूं तो नेह जाणती, आपण मूल संघात || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -17
- में तूंने परख्यो पूरे चेहेनें, अंग ओलख्यूं हूं अरधंग । में तूंने जीत्यो सघली पेरे, श्री धाम धणी हूं अभंग || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -40
- में दया तमने कीधी घणी, जो जओ आंख उघाडी । नहीं जुओ तोहे देखसो, छाया निसरी ब्रहमांड फाडी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -69
- में देखे जवेर अर्स के, ज्यों हेम भूखन होत इत । कई रंग नंग मिलाए के, बहु बिध भूखन जड़ित || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -97
- में धणीतणा गुण लखया सही, एक आसंका मारा मनमां थई । जे ऊंडा वचन कया निरधार, साथ केम करसे विचार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -35, चौ -2
- में मन मांहें जाण्यूं एम, जे किव थासे त्यारे रमसूं केम । किव पण थई आ वचन विचार, रमी इंद्रावती अनेक प्रकार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -17

- में माटे ल्याव्या धणी धामथी, बीजा कोणे न थयूं एनं जाण । में लीबूं पीयूं विलसियूं, विस्तारियूं प्रमाण || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -52
- में मारा करम भोगवतां, दीठां ते दुख अति घणां । पण मारा दुख देखी तमे दुखाणा, मूने ते दुख साले तम तणां || ग्रं - खटरुती, प्र -5, चौ -10
- में मारूं बल जाण्यूं, हूं तो छु अति मूढ । ए थाय सर्वे धणी थकी, ते में की– दृढ || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -27
- में लीधा कठणाई करी, श्री धणी तणे चरणे चित धरी । हूं घणुए राखू अंतर, पण सागर पूर प्रगट करे घर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -4
- में साथने कहय ते केम तमने केहेवाय, कहिए तेहेने जे अलगां थाय । एटलूं घणुए हूं जाणूं सही, ए वचन धणीने केहेवाय नहीं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -20
- मेघ की बूंदे जेती परे, ना कोई वनस्पति निरमान करे । जदिप याको निरमान होए, पर गुन धनीके ना गिने कोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -9
- मेघ पण गाजे वली पडे, वनस्पति पत्र कोई नव गणे । जदिपे तेहेनो निरमाण थाय, पण धणीतणा गुण कोणे न गणाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -11, चौ -9
- मेघलियो आवीने असाढ धडूके", सेरडियो सामसामी रे ढलूके । मोरलिया कोईलडी रे टहूके, एणे समे कंथ कामनियो ने केम मूके || ग्रं - खटरुती, प्र -9.6, चौ -3
- मेट दई रात अंधेरी, और अगले अमल सरे दीन । हक बका अर्स चिन्हाए, ऐसे हक इलमें किए अमीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -49
- मेटन लड़ाई बन्दन की, और जादे पैगंमर । धनी आए वेद छुड़ावने, ए तीन बातें चित्त धर || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -93
- मेयराज एक महंमद पर, दूजे हुआ न किन ऊपर । मेयराज हुए बिना पैगंमरों, पैगाम दिए क्यों कर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -92
- मेयराज किन पर ना हुआ, पैगंमर आखिरी बिन । और पैगंमर कई हुए, कई कहावें रोसन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -14
- मेयराज में जो इसारतें, हक इलमें खोलें मोमिन । कहें गुझ छिपा दिल हक का, कोई ना कादर या बिन || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -54
- मेयराज हुआ महंमद पर, कई किए जाहेर बयान । और रखे छिपे हुकमें, वास्ते हादी गिरो पेहेचान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -50
- मेयराज हुआ महंमद पर, कोई और न आया ढिग इन । सो आखिर ईसा इमामें, किए मेयराज में सब मोमिन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -40
- मेयराज हुआ महंमद पर, तोलों हलता है उजू जल । बैठक गरमी ना टरी, बेर ना भई एक पल || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -6
- मेयराज हुआ महंमद पर, नेक तिन किया रोसन । अब मुतलक जाहेर तो हुआ, जो अर्स में मोमिनों तन || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -29

- मेयराज हुआ महंमद पर, पोहोंच्या हक हजूर । सो साहेदी दई महंमदें, सो मोमिन करें मजकूर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -3
- मेयराज हुआ महंमद पर, सो कौल अर्स बका के । सो साहेदी के दो एक सुकन, बीच मुहककों पसरे || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -37
- मेयराज हुआ महंमद पर, सो लई सब हकीकत । हुए इलमें अर्स दिल औलियों, ऊगी बका हक सूरत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -94
- मेरा अंग पांच तत्व का, इन अंतस्करन विचार । केहेनी लीला अछरातीत की, जो परआतम के पार || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -13
- मेरा घर नूर के पार है, और हवा से ख्वाबी दम । याको मेरी खातिर, भिस्त देसी खसम || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -32
- मेरा छूट्या न इस्क रूहों सों, नजर न छूटी निसबत । रूहों छूटी इस्क निसबत, ऐसी भूल गैयां खिलवत || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -98
- मेरा जीव क्योंए न रहे, लखमीजी फेर फेर यों कहे । तब बोले श्री भगवान, लखमीजी तूं नेहेचे जान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -32
- मेरा दिल तुमारा अर्स है, माहें बबिध की मोहोलात । कई सेज हिंडोले तखत, रूह नए नए रंगों बिछात || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -26
- मेरा बुत्ता कछू न था मेरे धनी, मोपे दोऊ सरूपों दया करी अति घनी । सेवा में न थी हाजर, न जानूं दया करी क्यों कर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -3
- मेरा वतन नूर के पार है, हवा से ख्वाबी दम । इनों को मेरी खातिर, देसी भिस्त खसम || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -42
- मेरी एक दृष्ट धनीय में, दूजी साथ के मांहें । तो दुख आवे मोहे साथ को, ना तो दुख मोहे कहूं नाहें || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -31
- मेरी कदीम दोस्ती इनों से, दोस्ती पीछे इन । ए इलम लदुन्नी से माएने, करे हादी बीच रूहन || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -63
- मेरी छाती दिल की कोमल, तिन पर राखो नरम कदम । इतहीं सेज बिछाए देऊं, जुदे करो जिन दम || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -21
- मेरी बानी जुदी तो पड़े, जो वतन दूसरा होए । कहे हादी बल माफक, उरे सिफत सब कोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -13
- मेरी बुधे लुगा न निकसे मुख, धनी जाहेर करें अखंड घर सुख । अब साथ कछुक करो तुम बल, तो पूरन सोभा ल्यो नेहेचल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -7
- मेरी मेरी करते दुनी जात है, बोझ ब्रह्मांड सिर लेवे । पाउ पलक का नहीं भरोसा, तो भी सिर सरजन को न देवे || ग्रं - किरन्तन, प्र -4, चौ -2
- मेरी रूह चाहे वरनन करूं, होए ना बिना अर्स इलम || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -4

- मेरी रूह जो बरनन करत है, करी हादियों मेहेरबानगी । ना तो अब्बल से आज लगे, कहूं जाहेर न बका की || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -9
- मेरी रूह देखे सहूर कर, जाके नख सिख लग इस्क । जुबां कैसी तिन होएसी, और बानी बका अर्स हक || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -30
- मेरी रूह नैन की पुतली, तिन नैन पुतली के नैन । मासूक राखू तिन बीच में, तो पाऊं अर्स सुख चैन । || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -22
- मेरी रूह नैन की पुतली, तिन पतलियों के नैन । तिन नैनों में राखू मासूक को, ज्यों मेरी रूह पावे सुख चैन || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -26
- मेरी रूह नैन की पुतली, बीच राखू तिन तारन । खिन एक न्यारी जिन करो, ए चरन बसें निस दिन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -23
- मेरी रूहे कहया आगे रूहन, सुन्या मैं हक के मुख इलम । ए बात केहेतें तन ना फट्या, हाए हाए ए देख्या बड़ा जुलम || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -138
- मेरी संगते ऐसी सुधरी, बुध बड़ी हुई अछर । तारतमें सब सुध परी, लीला अंदर की घर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -103
- मेरी सेवा जो करते साथीड़े, फलड़े बिछावते सेज । सीतल वाए मोहे ढोलते, तिन जारी रेजा रेज || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -2
- मेरी सैयल रे, साह आए थे मेरे घर । मैं पेहेचान ना कर सकी, पिउ चले पुकार पुकार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -1
- मेरे अंग सबे उड़ ना गए, सब देख हक के अंग । सेज सुरंगी हक छोड़ के, रही पकड़ मुरदे का संग || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -153
- मेरे अंध अभागी जीव, तूं क्यों सूता इत । बिध बिध धनिएँ जगाइया, अजहूं ना घर सूझत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -1
- मेरे इनसों नहीं मिलाप, मैं बेखबरों में नाहीं आप । मैं इनों सों नहीं गाफिल, ए दुख सुख में रहे मिल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -65
- मेरे केहेना ब्रहमसृष्ट को, इन मन जुबां माफक । झूठी जिमिएँ याही सास्त्रन सों, जाहेर कर देऊ हक || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -19
- मेरे खसम का नूर है, नूर अंग नूरजलाल । सो आवत दायम दीदार को, मेरा खसम नूरजमाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -97
- मेरे गुन अंग सब खड़े होसी, अरचासी आकार । बुध वासना जगावसी, तिन याद होसी संसार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -104
- मेरे जीव अभागी रे, जिन भूले तूं अब । इन मोहजल से काढ़न वाला, ऐसा ना मिलसी कोई कब || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -1
- मेरे जीव सोहागी रे, जिन छोड़े पिउ कदम । दूसरी बेर माया मिने, तुझ कारन आए खसम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -1

- मेरे तो आगू होवना, धनिएँ दिया सिर भार । समझ सको सो समझियो, कर आतम अंतर विचार || ग्रं - किरन्तन, प्र -86, चौ -7
- मेरे तो गुजरान होएसी, जो पड़या हों बंध । जो कदी न छूट्या रात में, तो फजर छूटसी फंद || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -28
- मेरे तो मुदा तुम ऊपर, लेना तुमारे जोर । धनिएं तो धन बोहोतक दिया, पर तें लिया न हरामखोर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -19
- मेरे दिल की देखियो, दरद न कछू इस्क । ना सेवा ना बंदगी, एह मेरी बीतक || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -3
- मेरे दिल के दरद की, एक साहेब जाने बात । ऐसा कोई ना मिल्या, जासों करों विख्यात || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -26
- मेरे धनी की इसारतें, कोई और न सके खोल । सो भी आतम ने यों जानिया, ए जो स्यामाजी कहे थे बोल || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -26
- मेरे धनी तुमारी साहेबी, तुम अपनी राखो आप । इस्क दीजे मोहे अपनों, मैं, तासों करूं मिलाप || ग्रं - किरन्तन, प्र -62, चौ -2
- मेरे धनी धाम के दुलहा, मैं कर ना सकी पेहेचान । सो रोऊं मैं याद कर कर, जो मारे हेत के बान || ग्रं - किरन्तन, प्र -75, चौ -1
- मेरे ना कछू बन्दगी, ना कछू करी करनी । ओ में मुझमें ना रही, ए तो मैं हकें करी अपनी || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -11
- मेरे मीठे बोले साथ जी, हुआ तुमारा काम । प्रेम में मगन होइयो, खुल्या दरवाजा धाम || ग्रं - किरन्तन, प्र -80, चौ -1
- मेरे मीठे मीठरड़े आतम के, सो चुभ रहे अन्तस्करन । रूह लागी मीठी नजरों, मेरे जीव के एही जीवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -9
- मेरे सतगुर धनिएँ यों कया, और कया वेद पुरान । सो खोल दिए मोहे माएने, कर दई आतम पेहेचान || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -9
- मेरे सब अंगों हक हुकम, बिना हकम जरा नाहें । सोई हुकम हक में, हक बसें अर्स में तांहें || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -11
- मेरे साथ सनमंधी चेतियो, ए हांसी का है ठौर । पिउ वतन आप भूल के, कहा देखत हो और || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -1
- मेरे साथ सोहागी रे, पिउसों क्यों न करो पेहेचान । पेहेले चले पेहेचान बिना, फेर आए सो अपनी जान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -1
- मेला अति बड़ा हुआ, पसर गई पेहेचान । सेहेदाने सबों घरों, चारों खूटों बजे निसान || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -20
- मेला मजाजी दिलों का, ए चले बांधी जात कतार । ए अर्स दिल हकीकी जीवते, क्यों चलें भांत मुरदार || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -96

- मेवा मिठाई सेज सुख, सकल बिध भर पूर । इस्क सबों में अति बड़ा, दिल हिरदे नूर हजूर || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -73
- मेवे चाहिए सो लीजिए, फल फूल मूल पात । तित रह्या तैसा ही बन्या, ए बका बागों की बात || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -46
- मेहेदी नेवरी ने मलियागर, दाडम डोडंगी ने द्राख । बीयो बदाम ने बीली बिजोरो, रूद्राख ने भद्राख || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -5
- मेंहेंदी महंमद ढांपे ना रहें, जासों झूठ भी सांच होए । ऐसा खसम जोरावर, यासें सुख पावे सब कोए || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -47
- मेंहेंदी महंमद प्यारे मोमिन, सो जुबां कह्यो ना जाए । पर हुआ है मुझे हुकम, सो कैसे कर ढंपाए || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -30
- मेहेंदी हद कर दई, घर इमाम बताई राह । पोहोंचे अर्स मेयराज को, हँस मिलियां रूहें खुदाए || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -27
- मेहेनत करी केती या पर, बिध बिध बांधे बंध । जानिए सदा नेहेचल, ए रच्यो ऐसी सनंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -33, चौ -5
- मेहेनत करी महंमद ने, और असहाबों यार । झण्डा खड़ा किया दीन का, तले आई दुनी बे सुमार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -3
- मेहेनत तो बोहोतो करी, अहनिस खोज विचार । तिन भी छल छूटा नहीं, गए हाथ पटक कई हार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -8
- मेहेनत तो बोहोतों करी, अहनिस खोज विचार । तिन भी छल छूटा नहीं, गए हाथ पटक सिर मार || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -8
- मेहेबुब ऐसी मैं क्यों भई, ले प्रेम न खड़ी हुई। महामत दुष्टाई क्यों करी, ले विरहा मांहें ना मुई || ग्रं - किरन्तन, प्र -97, चौ -19
- मेहेबूब आसिक एक कहें, वाहेदत भी एक केहेलाए । अर्स भी दिल मोमिन कह्या, ए तो मिली तीनों विध आए || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -131
- मेहेबूब को रिझावने, अनेक कला साधत । और नजर ना कर सकें, बंध ऐसे ही बांधत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -74
- मेहेबूब छाती की लज्जत, देत नहीं फरामोस । फरामोस उड़े आवे लज्जत, सो लज्जत हाथ प्रेम जोस || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -71
- मेहेर करी बड़ी महंमदें, आठों भिस्तों पर । दोऊ गिरो दोऊ असों, पोहोंचे रूहें फरिस्ते यों कर || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -98
- मेहेर करी मेहेबूब ने, मोहोल देखे ऊपर जोए । ए सुख कहूं मैं किनको, मोमिन बिना न कोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -16, चौ -2
- मेहेर करी मोहे मेहेबूबे, रूहअल्ला मिले मुझ । खोल दिए पट अर्स के, जो बका ठौर थी गुझ || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -4

- मेहेर करी हक रसनाएं, सो किन विध कहूं विस्तार । बका सब्द जो उचरे, सो देने रूहों सुख अपार || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -48
- मेहेर की बातें तो कहूं, जो मेहेर को होवे पार । मेहेरें हक न्यामत सब मापी, मेहेरें मेहेर को नहीं सुमार || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -37
- मेहेर दिल मोमिन के, इस्क अंग रेहेमान । दाग न देवे बैठने, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -25
- मेहेर पूरी मेहेबूब की, बड़ी रूह रूहों ऊपर । इस्क साहेबी अर्स की, खेल देखाया और नजर || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -42
- मेहेर भरे मासूक के, सोहें नैन सुन्दर । भृकुटी स्याम सोभा लिए, चुभ रेहेत रूह अंदर || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -7
- मेहेर सिंघासन बैठक, और मेहेर चँवर सिर छत्र । सोहोबत सैन्या मेहेर की, दिल चाहे मेहेर बाजंत्र || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -15
- मेहेर सोई जो बातूनी, जो मेहेर बाहेर और माहें । आखिर लग तरफ धनी की, कमी कछुए आवत नाहें || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -7
- मेहेर हुई दुनियां पर, पाई तिनों आठों भिस्त । बीज बुता कछू ना हुता, करी हुकमें किसमत" || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -97
- मेहेर हुई महंमद पर, खोले नूरतजल्ला द्वार । सव मेयराज में लेय के, दिया हकें दीदार || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -1
- मेहेर होत अव्वल से, इतहीं होत हुकम । जलूस साथ सब तिनके, कछू कमी न करत खसम || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -4
- मेहेर होत है जिन पर, मेहेर देखत पांचों तत्व । पिंड ब्रह्माण्ड सब मेहेर के, मेहेर के बीच बसत || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -8
- मेहेरबान ना देवे दुख किन को, मारे सबों तकसीर । क्या राए राने पातसाह, क्या मीर पीर फकीर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -11
- मेहेरबान भी एह है, दाता न कोई या बिन । हक बंदगी सिवाए जो कछू कया, सो सब तले इजन || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -20
- मेहेराज कहे मख ए धंन, जो वली रूदे रमंत । चौदे भवन ते जीतियो, धन धंन ए कुलवंत || ग्रं - किरन्तन, प्र -127, चौ -6
- मेहेराव झरोखे नूर के, जरे जरा सब नूर । अर्स माहे बाहेर सब नूर में, नूर नजीक नूर दूर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -53
- मेहेरें खेल देख्या मोमिनों, मेहेरें आए तले कदम । मेहेरें कयामत करके, मेहेरें हँसके मिले खसम || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -36
- मेहेरें खेल बनाइया, वास्ते मेहेर मोमिन । मेहेरें मिलावा हुआ, और मेहेर फरिस्तन || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -31

- मेहेरें दिल अर्स किया, दिल मोमिन मेहेर सागर । हक मेहेर ले बैठे दिल में, देखो मोमिनों मेहेर कादर || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -39
- मेहेरें नेहेर ल्याए चरन अन्दर, द्वार नूर पार खोले इन । मोहे पोहोंचाई बका मिने, मेरे जीव के एही जीवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -12
- मेहेरें रसूल होए आइया, मेहेरें हक लिए फरमान । कुंजी ल्याए मेहेर की, करी मेहेरें हक पेहेचान || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -32
- मेहेरें हमको ऐसा किया, करी वतन रोसन । मुक्त दे सचराचर, हम तारे चौदे भवन || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -4
- मैं अंग इमाम को, मोमिन मेरे अंग। बीच आए तिन वास्ते, करूं सब एक संग || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -49
- मैं अंगे रंगे अंगना संगे, करूं आप अपनी बात । अब बोलते सरमाऊं, ताथें कही न जाए निध साख्यात || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -43
- मैं अपनी अकलें केती कहूं, तुम करावत सब । बाहेर अंदर अन्तर, या तबहीं या अब || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -37
- मैं अबला अरधांग हों, पिउ की प्यारी नार । सब जगाऊं सोहागनी, तो मुझे होए करार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -15
- मैं अव्वल जो चलों, साथ आए मिलें सब कोए । तो सिफत दुनियां मिने, खासी गिरो की होए || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -37
- मैं आऊंगा यारों वास्ते, खोलों नजूम मेरा मैं । मेरे कूच नजूमी कोई ना रहया, मेरा नजूम खुले मुझ से || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -81
- मैं आग देऊं तिन सुख को, जो आड़ी करे जाते धाम । मैं पिंड न देखू ब्रह्मांड, मेरे हिरदे बसे स्यामा स्याम || ग्रं - किरन्तन, प्र -88, चौ -10
- मैं आया हक का हुकम, हक आएगा आखिरत । कौल किया हमें मुझ सों, मैं ल्याया हक मारफत || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -5
- मैं आया हुकम हाकिम का, पर आवेगा हाकिम । करसी कजा सबन की, तब संग आखिर हम || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -66
- मैं आया हों अव्वल, आखिर आवेगा खुदाए । काजी होए के बैठसी, करसी सबों कजाए" || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -8
- मैं आसिक तुमारा केहेलाया, मैं लिखे इस्क के बोल । मासूक कर लिखे तुमको, सो भी लिए ना तुम कौल || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -2
- मैं इन सुख दुख थें ना डरूं, मेरे धनी चाहिए सनमुख । मोहे एही कसाला होत है, जब कोई देत साथ को दुख || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -30
- मैं उलटाए आतम जुगतें जगाई, पार की तरफ फिराई । सुन्य निराकार पार परआतम, मैं ता पर दृष्ट चढ़ाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -15, चौ -8

- मैं एक विध माँगी पिउ पे, पिउ ने कई विध करी रोसन । बातें इन रोसन की, करसी जाए वतन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -28, चौ -12
- मैं कदीम लिखी मेरी दोस्ती, ए किए न सहूर सुकन । तुमको बेसक किए इलम सों, हाए हाए अजूं याद न आवे रूहन || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -21
- मैं करूं खसामद उनकी, मैं डरता हों उनसे । जो कहावें मेरे उमराह, और मेरे हुकम में || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -22
- मैं कहावत हों सुहागनी, जो विरहा ना देऊ जिउ । तो पीछे वतन जाए के, क्यों देखाउं मुख पिउ || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -5
- मैं कहावत हों सोहागनी, जो विरहा न देऊ जिउ । तो पीछे वतन जाए के, क्यों देखाऊं मुख पिउ || ग्रं - सनंध, प्र -10, चौ -3
- मैं कही जो मुख मांडनी, और कहया मुख सलूक । ए केहेते सलूकी मेरा अंग, हाए हाए हो न गया टूक टूक || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -99
- मैं कहूं दुनियां भई बावरी, ओ कहे बावरा मोही । अब एक मेरे कहे कौन पतीजे, ए बोहोत झूठे क्यों होई || ग्रं - किरन्तन, प्र -18, चौ -5
- मैं कहूं सिफत सलूकी, पर केहे न सकों क्योंए कर। पूरा एक अंग केहे ना सकों, जो निकस जाए उमर || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -117
- मैं कहया इस्क मेरा बड़ा, हादी रूहों आप माफक । एह बात जब मैं करी, तब तुम उपजी सक || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -30
- मैं कहया नूरी अपना रसूल, तुम पर भेज्या फरमान । लिखी गुझ बातें दिल की, हाए हाए केहेवत यों सुभान || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -49
- मैं कारज खसम के, ले आया फरमान । आखिर इमाम आवसी, तब मैं भी संग सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -65
- मैं किन पर भेजों इसारतें, पढ़ी जाएं न रमूजें किन । तुम जानत हो कोई दूसरा, है बिना अर्स रूहन || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -26
- मैं केते नजरों देखे सही, पर गन मखसे न सके कही। ना कछू किनका भोम गिनाए, सागर लेहेरें गिनी न जाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -8
- मैं को तुम खड़ी करी, मैं को देखाई तुम । मैं को तले कदम के, खड़ी राखी माहें हुकम || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -31
- मैं कौन आया किन ठौर से, कहा देखत हो जहान । कौन नबी भेज्या किने, कहें हम मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -29
- मैं गिरद कही चौरस कही, पर कई हर भांत हवेली । जाके आवे ना मोहोल सुमार में, तो क्यों जाए गिनी पौरी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -25
- मैं गुन लिखते कही लेखन अनी, ए आसंका जिन होसी घनी । कथुए के पांऊ प्रवान, कलमे गढ़ियारे हाथ सुजान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -35, चौ -6

- मैं चल आई कदमों, ऐसा दिया बल तुम । इन विध मैं मरत है, ना कछू बिना खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -6
- मैं चलते देखे मजहब, और सबके परमेश्वर । सो सारे बीच फना मिने, नूर बका न काहू नजर || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -4
- मैं चाहत न स्वांत इन भांत, अजूं आउध अंग चले, इन नैनों दोनों नेक न आवे नीर । दरद देहा जरद गरद रद करे, मैं क्यों धरूं धीर अस्थिर सरीर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -3, चौ -1
- मैं चाहत न स्वांत इन भांत, अजू आउध अंग चले, इन नैनों दोनों नेक न आवे नीर । दरद देहा जरद गरद रद करे, मैं क्यों धरूं धीर अस्थिर सरीर || ग्रं - सनंध, प्र -6, चौ -1
- मैं चाहों मोमिन को, हम तुम एकै अंग । मैं तबहीं सुख पाऊंगी, मेंहेंदी महंमद मोमिन संग || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -2
- मैं छिपा हों इनसे, रूहें नजर में ले । वह देखत झूठा आलम, मोको देखत नाहीं ए || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -31
- मैं छिपाऊं तुम को, बैठो पकड़ कदम । तुम इस्क से पाओगे, आए मिलो मांहें दम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -36
- मैं छिपाऊं तुमको, बैठो कदम पकड़ के। ए तुम इस्कै से पाओगे, आए मिलो मुझसे || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -18
- मैं छिपोंगा तुमसे, तुम पाए न सको मुझ । न पाओ तरफ मेरीय को, ऐसा खेल देखाऊं गुझ || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -39
- मैं छिपोंगा तुमसों, तुमें नजर में ले । पाओ ना अर्स या मुझे, काहूं तरफ न पाओ ए || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -5
- मैं छोड़े कुटम सगे सब छोड़े, छोड़ी मत स्वांत सरम । लोक वेद मरजादा छोड़ी, भाग्या छोड़ सब धरम || ग्रं - किरन्तन, प्र -19, चौ -6
- मैं जानूं निध एकली लेऊ, धाम धनी मेरे जीव में ग्रहूं । ए सुख और काहूं ना देऊ, फेर फेर तुमको काहे को कहूं || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -1
- मैं जान्या अपने तन को, मारों भर भर बान । तिनसे झूठी देह को, फना करों निदान || ग्रं - किरन्तन, प्र -85, चौ -12
- मैं जान्या प्रेम आवसी, विरहे के वचनों गाए । सो अव्वल से ले अबलों, विरहा गाया लडाए लडाए || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -50
- मैं जो आई ब्याहन दुलहे को, दुलहा आए मुझ कारन । बांधे पालवसों पालव, पाट बैठे दुलहा दुलहिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -5
- मैं जो दई तुमें सिखापन, सो लीजो दिल दे । महामत कहे ब्रह्मसृष्ट को, सखी जीवन हमारा ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -4, चौ -24

- मैं जो मांगी बेखबरी, सो उमेद पूरी सब तुम । तब उस खुदी की मैं को, दिल चाया दिया हुकम || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -13
- मैं तुम कहूं मोमिनों, देखो दिल लगाए । ऐसी साहेबी खसम की, जो रूह देख सुख पाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -78
- मैं तुम पे भेजी रूह अपनी, अपन एते पड़े थे बीच दूर । मैं इलम भेज्या बेसक, तुमें दम में लिए हजूर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -85
- मैं तुमको चेतन करूं, एही कसौटी तुम । या बिध अर्स अरवाहों का, तसीहा लेवें खसम || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -53
- मैं तुमको चेतन करूं, एही कसौटी तुम । या विध सब सैयन का, तसीहा लेवें खसम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -24
- मैं तुमारा मासूक, तुम मेरे आसिक । और तुम मासूक मैं आसिक , ए मैं पुकास्या मांहें खलक || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -75
- मैं तुमारे वास्ते, करोंगा कई उपाए । ए बातें सब याद देऊँगा, जो करता हों इप्तदाए || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -29
- मैं तुमें पूछों मोमिनो, जो तुम हो अर्स के । तुम अपनी रूहसों विचार के, जवाब दयो मुझे ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -71
- मैं तेहेत-कबाए तुमको रखे, कोई जाने ना मुझ बिन । तुमको तब सब देखसी, होसी जाहेर बका अर्स दिन || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -73
- मैं तो अपना दे रही, पर तुम ही राख्यो जिउ । बल दे आप खड़ी करी, कारज अपने पिउ || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -9
- मैं तो अपनो दे रही, पर तुमहीं राख्यो जिउ । बल दे आप खड़ी करी, कछू कारज अपने पिउ || ग्रं - सनंध, प्र -10, चौ -9
- मैं तो आई तुम खातिर, तुम जानी नहीं सुपन । मैं तो सुपना हो गई, अब दुखड़े देखो चेतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -6
- मैं तो कछू न जानती, श्री स्यामाजी दई खबर । अपन आए खेल देखने, धाम अपना घर || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -6
- मैं तो कहूं जो तुम न्यारे हो, पाओ पल साथ की जुदागी ना सहो । मैं तो कहूं जो मेरी ओछी मत, तुम हम को कई सुख चाहत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -16
- मैं तो खोजों सुध पार की, कोई न देवे बताए । मोह अहंकार के बीच में, सब इतहीं रहे उरझाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -28, चौ -15
- मैं तो चाह्या सुख को, पर धनी की मझ पर मेहेर । ताथे दुख फेर फेर लिया, अब सुख लागत है जेहेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -29
- मैं तो तब ना उठ सकी, पिउ चले बखत जिन । क्यों खोउं धनी अपना, जो तब पकड़ों चरन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -6

- मैं तो तुमारी कीयल, अव्वल बीच और हाल । तुम बिना जो कछू देखत, सो सब मैं आग की झाल || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -9
- मैं तो तेहेकीक न कछु, और न कछू मुझसे होए । ए मैं विध विध देखिया, इन मैं में खतरा न कोए || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -26
- मैं तो नाम लेत जवेरों, जानों बोहोत नाम लिए जाए। नंग नाम धात कहे बिना, रंग नाम आवे ना जुबांए || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -17
- मैं तो बात करूं रे दिवानी, दुनियां तो स्यानी सुजान । स्याने दिवाने संग क्योंकर होवे, तुम मिलियो मोहे पेहेचान || ग्रं - किरन्तन, प्र -19, चौ -2
- मैं तो बिगड़या विश्व थें बिछुरया, बाबा मेरे ढिग आओ मत कोई । बेर बेर बरजत हों रे बाबा, न तो हम ज्यों बिगड़ेगा सोई || ग्रं - किरन्तन, प्र -18, चौ -1
- मैं तो बीच नाहीं के, मोहे खेल देखाया जड़ मूल । ताथें जानो त्यों करो, सरमिंदी या सनकूल || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -15
- मैं तो बीच नाहीं मिने, सो हक को पोहोचत नाहें । सो बीच दिल के बैठ के, गुनाह देत रूह के ताए || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -21
- मैं तो बीतक तब कही, जब लई मासूकें उठाए । जब मैं हुती विरह में, तब क्यों मुख बोल्यो जाए || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -24
- मैं त्रिलोकी अगिन कर देखी, दुनियां को सो सुख । दुनियां को अमृत होए लागी, मोहे लागत है विख || ग्रं - किरन्तन, प्र -19, चौ -3
- मैं थी बीच लड़कपने, धनी तुमारी पद्मएल । मेरे उमेद न आसा बंदगी, हक तुमारी निवाजल || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -12
- मैं दया तुमको करी, जो देखो नैना खोल । ना खोलो तो भी देखोगे, छाया निकसी ब्रह्मांड फोड़ || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -69
- मैं दुनियां ल्याया जो दीन में, सो मैं देखत हों अब । फिरके होसी मेरे तेहेत्तर, आखिर होएगी तब || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -79
- मैं दुनी की थी सो मर गई, इन मैं को मारया में । अब ए मैं कैसे मरे, जो आई है खसम से || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -5
- मैं देख तकसीर अपनी, पेहेले देख डरी एक बार । देख डरी सामी हक, तब मैं किया पुकार || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -23
- मैं देखाऊं तिन विध, ज्यों होए पेहेचान छल । जब तुम छल पेहेचानिया, तब चले न याको बल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -18
- मैं देखें गुनाह अपने, हक के देखे एहसान । उमर गई पुकारते, बीच हलाकी जहान || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -24
- मैं देखे सब खेल में, पंथ पैंडे दरसन । देखी इस्क बंदगी सबकी, जैसा आकीन सबन || ग्रं - सनंध, प्र -3, चौ -5

SRJN

- मैं देख्या अंग जामें बिना, नाजुक जोत नरम । ए केहेनी में न आवही, ए अंग होए न मांस चरम || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -44
- मैं देख्या अर्स के लोकों को, कोई अंग न बिना इस्क । क्यों न होए गंज इस्क के, जित जरा नाहीं सक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -12
- मैं देख्या इलम हक का, तो ए सब हुकम के ख्याल । और ना कोई कहूं, बिना हुकम नूरजमाल || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -28
- मैं देख्या दिल विचार के, इस्क हक का जित । इस्क मेहेर से आइया, अव्वल मेहेर है तित || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -12
- मैं देख्या दिल विचार के, चितसों अर्थ लगाए । इस मंडल में आतमा, चल्या न कोई जगाए || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -7
- मैं देख्या दिल विचार के, चितसों अर्थ लगाए । इस मंडल में आतमा, चल्या ना कोई जगाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -7
- मैं देख्या दिल विचार के, सुनियो तुम मोमिन । देऊ निमूना दुनी अर्स का, तुम देखियो दिल रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -61
- मैं देख्या सुन्या दुनीय में, सो सब फना वस्त । इन झूठे आकार से, क्यों होए कायम सिफत || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -19
- मैं देत हो खुसखबरी, जो रबानी अरवाहें । वे उतरे अर्स अजीम से, जो हैं हमेसगी इप्तदाए" || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -5
- मैं धाम धनी गुन लिखे सही, एक आसंका मेरे मनमें रही । मैं गेहेरे सब्द कहे निरधार, सो साथ क्यों करसी विचार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -35, चौ -2
- मैं न पेहेचानों आपको, ना सुध अपनों घर । पिउ पेहेचान भी नींद में, मैं जागत हों या पर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -10
- मैं न लिया सिर अपने, तो कहा देऊं दोष औरन । जागे सुपना क्यों रहे, पर हुआ हाथ इजन || ग्रं - किरन्तन, प्र -85, चौ -7
- मैं नजूम कह्या भाइयों वास्ते, पीछे कूच किया दुनी से । सोई भाइयों आगे नजूम, आए खोलों मेरा में || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -32
- मैं नरमाई एक फूल की, जोड़ देखी रूह देह संग । क्यों जुड़े जिमी सोहोबती, सोहोबत जात हक अंग || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -36
- मैं ना अब्बल ना बीच में, ना कछू मैं आखिर । किया कराया करत हैं, सो सब हक कादर || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -27
- मैं ना कछू जानी पेहेचान, मुझ पर करी मेहेनत । मैं इस्क न जानी निसबत, ना तो मोहे दई हक न्यामत || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -34
- मैं ना करूं तो दूजा करे कौन, कर निरवार ग्रहूं धनी के गुन । बाकी भंडार का लेखा देऊं मेरे पिउ, ए मुस्किल नहीं कछू मेरे जिउ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -40

- मैं ना किसी की कम कहूं, ना किसी की कहूं बढ़ाए। जो जैसा तैसा तिन, दोऊ कहूं दृढ़ाए || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -14
- मैं ना पेहेचानों आपको, ना सुध अपनों घर । पिउ पेहेचान भी नींद में, मैं जागत हों या पर || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -10
- मैं नाम लेत रंगों के, कहूं केते लाल माहें एक । एक नाम नीला कहूं, माहें नीले रंग अनेक || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -24
- मैं नाहीं न जानों कछुए, मैं नाहीं जरा रंचक । हके इलम जोस देय के, करी सो हुकमें हक || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -30
- मैं नूर अंग इमाम का, खासी रूह खसम । सुख देऊं जगाए के, मोमिन रूहें तले कदम || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -46
- मैं नेक कही इन बिध की, सो अर्स में बिध बेसुमार । इन मुख बानी क्यों कहूं, जाको वार न पार || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -17
- मैं नेक बात याकी कहूं, तुम कारन खोज्या खेल । कोई ना कहे मैं देखिया, जिनों नीके कर खोजेल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -2
- मैं नेक बात याकी कहूं, तुम कारन खोज्या खेल । कोई ना कहे हम देखिया, जिन नीके कर खोजेल || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -2
- मैं नेक बात याकी कहूं, पाक रूहों सनो सब मिल । मैं की खुदी सखत है, ए लीजो देकर दिल || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -9
- मैं नैनों देखू नैन हक के, हुई चारों पुतली तेज पुन्ज । जब नैन मिलें नैन नैन में, नूरै नूर हुआ एक गन्ज || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -34
- मैं पाले प्यार करके, सो वैरीड़े भए तिन ताल । मोसों तो राख्यो ए सनमंध, तुम डारे ले जम जाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -4
- मैं पूछत हों ब्रह्मसृष्ट को, दिल की दीजो बताए ।टेक || ग्रं - किरन्तन, प्र -105, चौ -1
- मैं पूछों पांडे तुम को, तुम कहो करके विचार । सास्त्र अर्थ सब लेवहीं, पर किने न कियो निरधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -28, चौ -1
- मैं पेहेले केहेनी कही, किया काम दुनी का सब । पर एक फैल रेहेनीय का, लिया न सिर पर तब || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -3
- मैं पेहेले ना पेहेचाने श्री राज, मोहे आड़ी भई माया की लाज । भवसागर की किने पाई न किनार, सो तुम सेहेजे उतारे पार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -2
- मैं फरमान भेज्या है अव्वल, हाथ अमीन रसूल । इमाम भेज्या रूहों वास्ते, जिन जावें ए भूल || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -40
- मैं बड़ भागी तुमें तो कहे, जो आए इन आखिर । तो कहूं जो दूर होवही, अब देखोगे नजर || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -12

SRJN

- मैं बताऊं या बिध, जासों जाहेर सब होए । नहीं पटंतर दीन पैडे, सो जुदे कर देऊं दोए || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -2
- मैं बातून तुमारी समझी, तुम अपना दिया इलम । अब इत केहेना कछू ना रया, होसी अर्स में आगू खसम || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -25
- मैं बिध बिध करके वचनों, मारे तरवारों घाए । टूक टूक जुदे करहीं, तो भी उड़त नहीं अरवाहे || ग्रं - किरन्तन, प्र -85, चौ -10
- मैं बिन मैं मरे नही, मैं सों मारना मैं। किन विध मैं को मारिए, या विध हुई इनसे || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -1
- मैं बीच फरामोसी के, तुम आए सूरत बदल । पेहेचान क्यों कर सकू, इन वजूद की अकल || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -28
- मैं बुरा न चाहूं तिनका, पर वे समझत नाहीं सोए । यार सजा दे सकत हैं, पर सो मुझसे न होए || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -25
- मैं बैठ सुपन की सृष्ट में, बोलू इन जुबांन । जीव सृष्ट क्यों मानहीं, तो भी कर देऊँ नेक पेहेचान || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -17
- मैं बोहोत हाँसी देखी आप पर, अनगिनती हक इस्क । इलम धनी के देखाइया, मैं दोऊ देखे बेसक || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -43
- मैं भटकी बीच दुनी के, घर घर मांगी भीख । लौकिकदई मोहे साहेबी, अंतर में अपनी सरीख || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -20
- मैं भी इत हों नहीं, ए भी कहावत तुम । जब दूजे कर बैठाओगे, तब खसम को कहेंगे हम || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -35
- मैं भी उन अंधेर में, हुती ना सुध दिन रात । जो मेहेर मुझ पर भई, सो कहूं भाइयों को बात || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -32
- मैं भी हेत करत हों इनसों, जान के वतन सगाई । मोहे प्यारा साथ मेरे धनी का, एही पट आड़े आई || ग्रं - किरन्तन, प्र -62, चौ -12
- मैं भूलों तो तूं मुझे, पल में दीजे बताए। तूं भूले तो मैं तुझे, देऊंगी तुरत जगाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -68
- मैं भेजी रूह अपनी, सब दिल की बातें ले । तुमें अजूं याद न आवही, हाए हाए कैसी फरेबी ए || ग्रं - किरन्तन, प्र -111, चौ -6
- मैं भेजी रूह अपनी, सब दिल की बातें ले । तुमें तो भी याद न आवहीं, कोई आए बनी ऐसी ए || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -79
- मैं भेजों किताबत तुमको, सब इत की हकीकत । तुम कहोगे किन खसमें, भेजी किताबत || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -20
- मैं भेजों रूह अपनी, इलम देसी समझाए । तब मूल कुल्ल अकल, असराफील ले आए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -61

- मैं मन मांहें जान्या यों, जो किव होसी तो खेलसी क्यों । किव भी हुई वचन विचार, खेली इंद्रावती अनेक प्रकार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -17
- मैं मांगत डरत हों, सो भी डरावत हो तुम । मैं मांगे तुमारी तुम पे, ना तो क्यों डरे अंगना खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -4
- मैं मारूं तो जो होए कछुए, ना खमें हरफ की डोट । मेरी बुधे एक लवे से, ऐसे मरे कोटान कोट || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -31
- मैं मुकट कहू बुध माफक, ए तो अर्स जवेर के नंग। नए नए कई भांत के, कई खिन में बदले रंग || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -180
- मैं मेरे धनीय की, चरन की रेनु पर । कोट बेर वारों अपना, टूक टूक जुदा कर || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -24
- मैं मैं करत मरत नहीं, और हक को लगावे दोस । अब मेहेर हक ऐसी करें, जो इन में थे होऊं बेहोस || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -22
- मैं मैं करता रात का अमल, कहया गैर हक था नाबूद । सूर ऊगे मारफत सब मिले, हुआ सबों मकसूद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -45
- मैं रूह अपनी भेजोंगा, भेख लेसी तुम माफक । देसी अर्स की निसानियां, पर तुम चीन्ह न सको हक || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -26
- मैं लाखों विध देखिया, कहूं खुदी क्योंए न जाए । ए क्यों जावे पेड़ से, जो दूजी हके दई देखाए || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -1
- मैं लाज मत पत दई रे दुनी को, निलज होए भया न्यारा । जो राखे कुल वेद मरजादा, सो जिन संग करो हमारा || ग्रं - किरन्तन, प्र -18, चौ -2
- मैं लाड़ किया रूहन सों, वास्ते इस्क इन । क्यों ना लें मेरा इस्क, अंग असलू मेरे तन || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -38
- मैं लिखू श्री धनीजी के गुन, जो रे किए मोसों अति घन । जोजन पचास कोट जिमी केहेलाए, आड़ी टेढ़ी खड़ी सब मांहें || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -1
- मैं लिखोंगा रमूजें, और सिखाऊंगा मेरा इलम । तिन इलम से चीन्होंगे, पर छूटे न झूठी रसम || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -24
- मैं लिख्या है तुम को, जो एक करो मोहे साद । तो दस बेर मैं जी जी कहूं, कर कर तुम याद || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -23
- मैं ल्याया धनीय की, इसारतें जिन खातिर । सो ताला अजूं खुल्या नहीं, तो मैं पोहोंचों क्यों कर || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -64
- मैं वास्ता कहूं तुमको, उतरियां कारन इन । इनों रब्द किया इस्क का, आगूं मेरे बीच वतन || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -4
- मैं शोभा बरनों इन जुबां, ले मसाला इत का । सो क्यों पोहोंचे इन सांई को, जो बीच अर्स बका || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -112

- मैं साख देवाई दोऊ हादियों पे, सो तुमें मिले सब निसान । अब तो बोले सब कागद, योंही बोली सब जहान || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -88
- मैं साथ को कह्या सो कहिए क्यों कर, यों तो कहिए जो दूर किए होवें घर । एता तो मैं जानूं जीव माहें, जो ए अरज धनीसों करिए नांहें || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -20
- मैं सुन्यो पिउ जी पे, श्री धाम को बरनन । सो भेदयो रोम रोम माहें, अंग अन्तस्करन || ग्रं - किरन्तन, प्र -83, चौ -8
- मैं सेवा करूं सर्वा अंगो, देऊं प्रदखिना रात दिन । पल न वायूँ निरखू नेत्रे, आतम लगाए लगन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -16
- मैं हक अर्स में जुदे जानती, ल्यावती सब्द में बरनन । जड़ में सिर ले ढूंढ़ती, हक आए दिल बीच चेतन || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -58
- मैं हुती बीच लड़कपने, तब कछुए न समझी बात । मोहे सब कही सुध धाम की, भेख बदल आए साख्यात || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -22
- मैं होत सरमिंदी साथ में, ए क्यों ए न जावे दुख । जब जाग बैठू आगे धनी, तब क्यों देखू सनमुख || ग्रं - किरन्तन, प्र -41, चौ -8
- मैदान अति दूर लो, दूर दूर अति दूर । सूर आकास रोसनी, और उज्जल जिमी सब नूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -67
- मैलाई ना छूटी मन की, ऊपर भए उज्जल । ना आया आकीन रसूल पर, हाए हाए छेतरे छल || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -18
- मोको धनिएँ देखाइया, सब इस्क चौदे तबक । इत जरा न बिना इस्क, अपना ऐसा देखाया हक || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -44
- मोको पाक होए सो छूइयो, यों केहेवे फरमान । करे गुसल तौहीद आब में, इन पाकी पकड़ो कुरान || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -72
- मोको मार छुड़ाई बंदगी, सो भी बुजरकी इन । ऐसी दुस्मन ए बुजरकी, मैं देखी न एते दिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -102, चौ -9
- मोटी मत ते कहिए एम, जेहेना जीवन वल्लभ श्री कृष्ण । मतनी मततां ए छे सार, वली बीजी मतनो कहूं विचार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -5
- मोटी मत वल्लभ धणी करे, ते भवसागर खिण माहें तरे । तेहेने आडो न आवे संसार, ते नेहेचल सुख पामे करार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -8
- मोटो अवतार श्री परसराम जी, तेना हजी लगे बंध न छूटे । कष्ट करे छे आज दिन लगे, पण तोहे ते ताणां न त्रूटे || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -84
- मोतिन की जोत क्यों कहूं, इन जुबां के बल । सोभा लेत दोऊ श्रवनों, अति सुन्दर निरमल || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -11

- मोतिन के मुंह ऊपर, कुलफ लिख्या मांहें फरमान । इन गुन्हेगारों के दिल को, अपना अर्स कर बैठे मेहेरबान || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -70
- मोती करन फूल कुंडल, कहूं केते नाम भूखन । पलमें अनेक बदले, सुन्दर सरूप कानन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -185
- मोती कहे जो इन को, जाको मोल न काहूं होए । बारे डाली गिनती, सूरत आदमी सोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -3
- मोती जोत अचरज, और अति उत्तम दोऊ लाल । जो रूह देखे नैन भर, तो अलबत बदले हाल || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -12
- मोती दरियाव से काढ्या महंमद, इन बिध इत लिख्या सब्द । घास कह्या सब चारा हैवान, गिरो उतरी दोऊ दरियाव से जान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -18
- मोती पाने पुखराज, लरें लटकत इन । तरंग उठत आकास में, किरना करत रोसन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -63
- मोती मानिक पाने लसनिएं, पाच हेम पुखराज । और भूखन कई सोभित, रया सब पर डोरा बिराज || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -90
- मोती रतन मानिक, हीरे हेम पाने पुखराज । गोमादिक पाच पिरोजा परवाल, रहे कई रंग नंग धात बिराज || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -99
- मोमिन अंग कोमल, ताए बान निकसें फूट । गलित गात सब भीगल, सब अंगों टूक टूक || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -31
- मोमिन अंदर उजले, खिन खिन बढ़त उजास । देह भरोसा ना करें, इमाम मिलन की आस || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -29
- मोमिन अर्स बका बिना, रेहे ना सके एक पल । जो हौज कौसर की मछली, तिन हैयाती वह जल || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -54
- मोमिन अर्स रूहों जैसा, कोई नहीं बुजरक । हक इलम यों केहेवहीं, इनमें नाहीं सक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -47
- मोमिन असल तन अर्स में, और दिल ख्वाब देखत । असल तन इन दिल से, एक जरा न तफावत || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -25
- मोमिन असल सूरत अर्स में, अबलों न जाहेर कित । खोज खोज कई बुजरक गए, सो अर्स रूहें ल्याई हकीकत || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -75
- मोमिन आए अर्स अजीम से, हमारी हक सों निसवत । दिया इलम लदुन्नी हकने, आई हक बका न्यामत || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -1
- मोमिन आए अर्स से, दुनी क्या जाने ए गत । ए कदम ताले ब्रह्मसृष्ट के, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -74
- मोमिन आए इत थे ख्वाब में, अर्स में इनों असल । हुकम करे जैसा हजूर, तैसा होत मांहें नकल || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -71

- मोमिन आए इन नसल में, जित हक न सुन्या कान । तिन जिमी क्यों पावें मोमिन, कायम अर्स सुभान || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -70
- मोमिन आए जुदे जुदे, जुदी जातें जुदी रवेस । जुदे मुलक मजहब जुदे, जुदी बोली जुदे भेस || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -71
- मोमिन आकीन न छूटहीं, जो पड़े अनेक विघन । आसिक मासूक वास्ते, जीव को ना करे जतन || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -23
- मोमिन आसिक हक के, सो हक की जाने दें खबर । हकें तो किया अर्स अपना, जो थे मोमिन दिल इन पर || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -102
- मोमिन उजू जब करें, पीठ देवें दोऊ जहान को । हौज जोए जो अर्स में, रूहें गुसल करे इनमों || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -47
- मोमिन उतरे अर्स अजीम से, दुनी तिन सों करे जिद । ए अर्स से आए हक पूजत, दुनी पूजना हवा लग हद || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -141
- मोमिन उतरे अर्स से, इनों दिल में हक सूरत । तो अर्स कह्या दिल मोमिन, खोली हक हकीकत मारफत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -128
- मोमिन उतरे अर्स से, सो अर्स बिलंदी नूर । ए जो रूहें कहीं दरगाह की, हक वाहेदत जिनों अंकूर || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -50
- मोमिन उतरे इस्क वास्ते, वास्ते इस्क ल्याए ईमान । ईमान न ल्याए सो भी इस्कें, इस्कें न हुई पेहेचान || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -28
- मोमिन उतरे नर बिलंद से, जाको एतो बड़ो मरातब । करसी पाक सब जिमी को, ताकी सरभर न होए किन कब || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -51
- मोमिन उतरे नूर बिलंद से, ए दुनी पैदा जुलमत । सांच झूठ क्यों मिल सके, क्यों रास आवे सोहोबत || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -99
- मोमिन उतरे नूर बिलंद से, कही दुनी आई जुलमत । जो देखो वेद कतेब को, तो जाहेर है तफावत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -71
- मोमिन उतरे नूर बिलंद से, कौल किया हक सों जिन । कह्या रसूल तुम पर आवसी, सो करसी तुमें चेतन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -49
- मोमिन उतरे नूर बिलंद से, जो कहे भाई महंमद के । महंमद आया इनों पर, खेल किया इनों वास्ते || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -16
- मोमिन उतरे नूर बिलंद से, तो कह्या अर्स कलूब । तिन तरफ क्यों आए सके, जिनका हक मेहेबूब || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -35
- मोमिन एही परीछा, जोस न अंग समाए । बाहेर सीतलता होए गई, मांहें मिलाप धनी को चाहे || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -10
- मोमिन और दुनी के, एही तफावत । मोमिन तन अर्समें, दुनी तन पेड़ गफलत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -21

- मोमिन और दुनी के, कह्या जाहेर बड़ा फरक । करे दुनी आहार फना मिने, अर्स मोमिन बका हक || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -55
- मोमिन और दुनी के, चाहिए सब विध जुदागी । दुनियां पैदा जुलमत से, रूहें उतरी अर्स अजीम की || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -92
- मोमिन कहे सुन मुस्लिम, भिस्त दोजख होसी सो भी दिल । आग भिस्त ना इस्म तें, बाहेर मुंह छिपे स्याह उज्जल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -8, चौ -15
- मोमिन का दुनी मजाजी, उठाए न सके भार । मारे उसी सिर्क से, तो कहे बीच नार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -2
- मोमिन काफर दो कहे, तिन की एह तफावत । ए चोट काफरों न लगे, मोमिनों छेद निकसत || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -22
- मोमिन कारन आवसी, आखिर करी सरत । हम भी फेर तब आवसी, सुख देसी कर सिफायत || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -30
- मोमिन केहेवें हुकमें, बूझ अनुभव पर हुकम । हुकम केहेवे सो भी हुकमें, कछू ना बिना हुकम खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -19
- मोमिन खाना अर्स में, हुआ दनी जिमी में आहार । दुनी रोजगार नासूती, जो मोमिनों करी मुरदार || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -70
- मोमिन खोजे आप को, और खोजे कहां है घर । खोजे अपने खसम को, और खोजे दिन आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -25
- मोमिन गिरो एक नूह के, जिनों बीच था स्याम । सो पार हुई किस्ती चढ़, जो चालीस जुफ्त तमाम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -96
- मोमिन गुसल हौज कौसर, माहें ईसा मेंहेदी महंमद । पकड़ें एक वाहेदत को, और करें सब रद || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -80
- मोमिन जिन जिन मुलकों, जुदी जुदी जुबां ले आए। ताही जुबां से तिन को, महंमद दें समझाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -82
- मोमिन तन असल से, अर्स मता कछू न छिपत । तो बका सूरज फुरमान में, कह्या फजर होसी इत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -90
- मोमिन तन में हुकम, तामें हिस्से रूह के देख । दिल अर्स हक इलम, रूह की हुज्जत नाम भेख || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -12
- मोमिन तब लग बंदगी, जो लों आया नहीं इस्क । इस्क आए पीछे बंदगी, ए जाने मासूक या आसिक || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -67
- मोमिन तिन को जानियो, नूर-जमाल सों निसबत । मेरी बेसक देसी साहेदी, जिनों पाई हक न्यामत || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -36
- मोमिन तीनों तकरार में, जाहेर होसी लैलत कदर । एक दीन होसी दुनी में, सुख कायम बखत फजर || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -47

- मोमिन तुम सूते क्या करो, ए कागद ए कासद । काजी कजा पर आइया, दे मुबारकी महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -31
- मोमिन थे सो समझे, ए तो सीधा कह्या महंमद । ना मैं जिमी आसमान का, खबर जो ल्याया खुद || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -12
- मोमिन दरदा ना सहे, जब जाहेर हुए पिउ । मोमिन अंग पिउ का, पिउ मोमिन अंग जिउ || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -34
- मोमिन दिल अर्स कया, सो अर्स बसे जित हक । निसबत मेहेर जोस हुकम, और इस्क इलम बेसक || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -17
- मोमिन दिल अर्स कया, सो अर्स हक का घर । इस्क प्याले हक फूल के, देत भर भर अपनी नजर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -97
- मोमिन दिल अर्स कर के, आए बैठे दिल मांहें । खुदी रूहों इत ना रही, इत गुनाह मोमिनों सिर नाहे || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -157
- मोमिन दिल कोमल कह्या, तो अर्स पाया खिताब । तो दिल मोमिन रूह का, तिन कैसा होसी मुख आब || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -15
- मोमिन दुनी ए तफावत, ज्यों खेल और देखनहार । मोमिन मता हक वाहेदत, दुनियां मता मुरदार || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -68
- मोमिन दुनी का बेवरा अरवा आसिक जो अर्स की, ताके हिरदे हक सूरत । निमख न न्यारी हो सके, मेहेबूब की मूरत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -1
- मोमिन दुनी दोऊ आदमी, हुई तफावत क्यों कर । ए बेवरा है फुरमान में, पर कोई पावे न हादी बिगर || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -126
- मोमिन नजीकी हक के, जाको हकें दई विलायत । नूर पार जाको वतन, करें आखिर अदालत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -46
- मोमिन पाए कदम हादी के, खोल द्वार लिए हजूर । पट खोल दिया फरमान का, पल पल बरसत नूर || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -42
- मोमिन पीछे ना रहें, ताए सके ना कोई पकर । उमेदां पूरी सबन की, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -30
- मोमिन बड़ा मरातबा, सो अब होसी जाहेर । छिपे हुते दुनियां मिने, सो निकस आए बाहेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -12
- मोमिन बड़े आकल, कहे आखिर जमाने के। इनकी समझ लेसी सबे, आसमान जिमी के जे || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -34
- मोमिन बड़े मरातबे, नूर बिलंद से नाजल । इनों काम हाल सब नूर के, अंग इस्कै के भीगल || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -4
- मोमिन बल धनीय का, दुनी तरफ से नाहें । तो कहे धनी बराबर, जो मूल सरूप धाम मांहें || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -19

- मोमिन बलहा महंमद, जे सदाई जाण । थियो सुहाग सभ केई, मेहेबूब अचो पाण || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -2
- मोमिन बसें अर्स बनमें, ऊपर चाह्या मेह बरसत । सो क्यों रहें इन पांउं बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -11
- मोमिन बातें वतन की, देऊंगी आगे बताए । पर अब कहूं नेक दीन की, जो रसूले राह चलाए || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -5
- मोमिन बैठे खेल में, अजू बीच ख्वाब । गुनाह पेहेले पोहोंच्या अर्स में, करें मासूक रूहें हिसाब || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -16
- मोमिन मांग्या मोले पें, सो भूल गैयां बातें मूल । सो खेल देखाए पीछे याद देऊं, देखाए फुरमान रसूल || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -20
- मोमिन मुख उज्जल भए, भए काफर मुख स्याह । यों मसरक और मगरब, दोनों दुरस्त कया || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -37
- मोमिन मुतकी वास्ते, इत आवसी खुदाए । भिस्त देसी सबन को, लिख्या है इप्तदाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -36
- मोमिन मुस्लिम मुनाफक, बिन ईमान सोई हैवान । ए आखिर हिदायत हादी बिना, पोहोंचे न अपने मकान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -32
- मोमिन मेरे अहेल हैं, हमें लिख्या माहें कुरान । खोल इसारतें रमूजें, इनों जरे जरा पेहेचान || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -27
- मोमिन यामें न रांचहीं, जाको सांचसों सनेह । निपट ए कछुए नहीं, भी देखो नेक बिध एह || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -1
- मोमिन रखे मोमिन सों, जो तन मन अपना माल । सो अरवा नहीं अर्स की, ना तिन सिर नूर जमाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -118, चौ -3
- मोमिन रूहें अर्स की, ए समझ लीजो तम दिल । ठौर ठौर से आए मोमिन, सुख लेसी सब मिल || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -38
- मोमिन रूहें कदमों लिए, फरिस्ते नूर समाए। तीसरे सारे भिस्त में, सो बैठे नूर की छाए || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -79
- मोमिन रूहें करें कुरबानियाँ, और मता वजूद समेत । छोड़ दुनी इस्क लेवहीं, दिल अर्स हुआ इन हेत || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -36
- मोमिन लिखे आसमानी, दनियां जिमी की कही । ना तो वजूद दोऊ आदमी, ए तफावत क्यों भई || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -72
- मोमिन लिखे मोमिन को, कहो तो आवें इत । ए अचरज देखो मोमिनों, कैसा समया हुआ सखत || ग्रं - किरन्तन, प्र -118, चौ -1
- मोमिन वासा चरन तले, अर्स अरवाहों का मूल । मोमिन आए इत अर्स से, तो फुरमान ल्याए रसूल || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -10

- मोमिन सुकन सुन जागसी, जाको अर्स वतन । जब नूर झण्डा खड़ा हुआ, पीछे रहें न रूहे अर्स तन || ग्रं - किरन्तन, प्र -118, चौ -11
- मोमिन सुख असल वतनी, विष्णु का सुख और । दुनी विष्णु कायम होएसी, कजा कहूंगी तिन ठौर || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -4
- मोमिन सुरत पीछी फिरे, उठ खड़ा होए अर्स तन । जो दुनियां दम पीछी फिरे, तो जाए ला-मकान बीच सुंन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -22
- मोमिन हक को जानत, नजीक बैठे हैं इत । हक कदम हमारे हाथ में, पर हम नजरों ना देखत || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -4
- मोमिन हक बिना कछू ना रखें, करी मुरदार चौदे तबक । महंमदें मोमिनों राह ए दई, ए राह क्यों ले हवाई खलक || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -87
- मोमिन हक बिना न देखें, एही मोमिनों ताम । बन्दगी तवाफ सब इतहीं, मोमिनों इतहीं आराम || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -59
- मोमिन होए सो देखियो, तमारा दिल कया अर्स । चारों घाट लीजो दिल में, दिल ज्यों होए अरस-परस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -78
- मोमिन होए सो समझियो, ए बीतक कहे महामत । अब बात न रही बोलन की, कया चलते जान निसबत || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -47
- मोमिनों की सरीयत में, आया मैकाईल बुध बल । पीछे बीच हकीकत, आया जबराईल सामिल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -59
- मोमिनों के माल का, दावा किया सबन । तब हो गए खेल कबूतर, हुआ जाहेर बका अर्स दिन || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -55
- मोमिनों के मेले मिने, कोई आए न सके रूह ख्वाब । ए ख्वाब नीके पेहेचानियो, ज्यों होवे दीन सवाब || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -39
- मोमिनों को देखलावने, किया खेल फार । अब जो अर्स रूहें होवहीं, सो क्यों चलें इन लार || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -39
- मोमिनों तुम को उपज्या, खेल देखन का ख्याल । जाको मूल नहीं बांधे तिन, ए तो हांसी का हवाल || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -5
- मोमिनों पाई बेसकी, सो इन कदमों की बरकत । सो क्यों छूटें मोमिन से, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -15
- मोमिनो सो असल का, महंमद सदा सनेह । सो आखिर लो फुरमान, लिए खड़ा है एह || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -27
- मोमिनों हकीकत मारफत, इनमें भी बिध दोए । एक गरक होत इस्क में, और आरिफ लदुन्नी सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -76
- मोर चकोर मैना कोयली, कई विध वन टहुंकत । रूहें कदम सुख सुपने लेवहीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -44

SPJIN

- मोर मैना मुरग बांदर, कई जुदी जुदी सब जुबान । नेक सब्द उठे भोम का, बोलें आप अपनी बान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -34
- मोर सांप जिद ले निकस्या, और भिस्त सेंती सैतान । हिरस हवा साथ आदम, लोक ताए कहें मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -14
- मोरत पान रंग तंबोल, मानों झलके माहें गाल । जो नैनों भर देखिए, रूह तबहीं बदले हाल || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -28
- मोरलिया करे रे किंगोर, सुणीने गरजना रे। मारो जीव आकुल व्याकुल थाय, सुणी स्वर कोयलना रे || ग्रं - खटरुती, प्र -1, चौ -6
- मोरलिया नाचे रंगे राचे, सब्द करे टहुंकार । वांदरडा पाय ऊभा थाय, लिए गुलाटो सार || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -18
- मोल तोल ना दुख को, कोई नाहीं इन बराबर । जिन दुखथें धनी पाइए, ताको मोल होवे क्योंकर || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -27
- मोल नहीं इन कामरी को, याको ले न सके कोए । मोमिन कहे सो लेवहीं, जो रूह अर्स की होए || ग्रं - किरन्तन, प्र -110, चौ -4
- मोसों पेहेचान ना कर सके, मेरा मेला तो अधखिन होए । मेरी तो पेहेचान जाहेर, मुझे जाती देखे सब कोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -8
- मोसों मिलाप कर कहया, मैं आया रूहन पर । अरवाहें जेती अर्स की, तिन बुलावन खातिर || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -4
- मोह अग्नान भरमना, करम काल ने सुंन । ए नाम सहु निद्रातणा, निराकार निरगुण || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -108
- मोह अग्यान भरमना, करम काल और सुंन । ए नाम सारे नींद के, निराकार निरगुन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -19
- मोह अहं गुन की इंद्रियां, करे फैल पसु परवान । फिरे अवस्था तीन में, ए जीव सृष्ट पेहेचान || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -7
- मोह उपज्यो इतथे, जो सुन्य निराकार । पल मीच ब्रहमांड किया, कारज कारन सार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -18
- मोह उपन्यों इहां थकी, जे संन निराकार । पल मेली ब्रहमांड कीधो, कारज कारण सार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -105
- मोह कहूं सुन वातडी, मूने मल्याता मारो आधार । फिट फिट मुंडा दुरमती, तें तोहे न छाड्यो संसार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -42
- मोह कहे मारी वात छे मोटी, मूने जाणे सह कोय । जेणे ठामे हूं बेसूं, तिहाथी अलगो करी न सके कोय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -44
- मोह जेहेर ऐसा जान के, ल्याए तारतम । सब विध का ए औखद, प्रकासे खसम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -160

- मोह तत्व अहं उड़यो, जो परदा ऊपर त्रैगुन । ए सब बीच द्वैत के, निराकार निरंजन सुन || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -104
- मोह तत्व कह्या नींद को, सुरत अहंकार । सुपन को कह्या ब्रह्मांड, नाम धरे बेसुमार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -81
- मोह ते जे नथी कांईए, सत असंग सदाय । असत सतने मले नहीं, वाणी पोहोंचे न एणी अदाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -128
- मोह फांस बंध दिए दुनी को, सब अंगो बस आने । राज करे सिर सबन के, चलावत ज्यों जित जाने || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -7
- मोह बढ़यो लेस माया को, निद्रा मूल विकार । सुध होए सबों अंगों, कर देऊ तैसो विचार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -21
- मोह सो जो ना कछु, इनसे असंग बेहद । सत को असत ना पोहोंचहीं, या बिध ना लगे सब्द || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -40
- मोहजल पूर अंधेर में, जित काहू ना किसी की गम रे । तहां से काढ़ देवे सुख नेहेचल, ऐसा कौन बिना इन खसम रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -59
- मोहादिक के आद लों, जेती उपजी सृष्ट । तिन सारों ने यों कया, जो किनहूं ना देख्या दृष्ट || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -9
- मोहादिक के आद लों, जेती उपजी सृष्ट । तिन सारों ने यों कह्या, जो किनहूं न देख्या दृष्ट || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -9
- मोहे अपनों सब दियो, रही न कोई सक । सही नाम दियो मोहोर अपनी, कर रोसन थापी हक || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -18
- मोहे इन इलमें बेसक करी, सक न जरा इलम । दई बेसकी सबन को, ठौर नहीं बिना तेरे कदम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -66
- मोहे इलम दिया आए अपना, तासों प्यार दिया मुझको । चौदे तबक कायम किए, केहेलाए मेरी रसना सों || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -43
- मोहे इलम दिया हक ने, सो इनों को देसी इमाम । आखिर बड़ाई इनों की, कहे मुसाफ हदीसें तमाम || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -33
- मोहे एक वचन ना आवे अस्तुत, पर सोभा दई ज्यों कालबुत । अस्तुत की इत कैसी बात, प्रगट होने करी विख्यात || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -9
- मोहे करी सबों ऊपर, ऐसी ना करी दूजी कोए। अजूं रूह मांग्या चाहे, ए तुम कैसी बनाई सोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -15
- मोहे करी सरीखी आप, टालने हम सबों की ताप । आतम संग भई जाग्रत बुध, सुपनथें जगाए करो मोहे सुध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -94
- मोहे कह्या आप श्री मुख, तेरी अर्स से आई आतम । तो को दिया अपनायत जानके, हक बका अर्स इलम || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -45

- मोहे कहया तेरी रूह, आई अर्स अजीम सों । कुन्जी देत हों तुझको, पट खोल दे सब को || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -5
- मोहे गरीबी और नातवान, ए बड़ाई आप सों हुई पेहेचान । होए पेहेचान जो मेरी चाहे, बिलंद करने जो कुदरत उठाए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -19
- मोहे चलते बखत बुलाए के, जाहेर करी रोसन । धाम दरवाजे इंद्रावती, ठाड़ी करे रूदन || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -11
- मोहे दई सिखापन, धोखे दिए सब भान । अन्तर पट उड़ाए के, कर दई सब पेहेचान || ग्रं - किरन्तन, प्र -97, चौ -8
- मोहे दिया लदुन्नी रूहअल्ला, सो मैं कहया बेवरा कर । ए किया उमत कारने, जो विचारो दिल धर || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -40
- मोहे दिल में ऐसा आइया, ए जो खेल देख्या ब्रहमांड । तो क्या देखी हम दुनियां, जो इनको न करें अखंड || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -19
- मोहे दिल में हुकमें यों कहया, जो दिल में आवे हक मुख । तो खड़ा होए मुख रूह का, हक सों होए सनमुख || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -23
- मोहे बाग रंग मंदिरों, सेजड़िएँ सोए करार । सो काढ़े कंठ पकड़ के, गए कल कलते नर नार || ग्रं - किरन्तन, प्र -33, चौ -8
- मोहे बोहोत कही समझाए के, पर पेहेचान न हुई पूरन । तब आप अन्दर आए के, बहु बिध करी रोसन || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -16
- मोहे भेजी धनीने, तुम को बुलावन । साथ जी मिलके चलिए, जाइए अपने वतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -7
- मोहे मेहेर करी रूहअल्ला ने, कुन्जी अर्स की ल्याए । अर्स बका पट खोल के, इलम दिया समझाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -7
- मोहे समागम पिउसों, वाले पूछियो विचार। आपोपूर्व तमे ओलखी, प्रगट कहो प्रकार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -6
- मोहे सिखापन उनकी, दे फरमान करी रोसन । इंद्रावती तो केहेवहीं, जो दोऊ बिध करी चेतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -24
- मोहे सेवा प्यारी पिउ की, साहेब हो बैठो तुम । अति सुख पाऊं इनमें, करों बंदगी खसम || ग्रं - किरन्तन, प्र -62, चौ -14
- मोहोरा ते दीसे सहु जुजवा, अने जुजवी मुखवाण । स्वांग काछे सहु जुजवा, जाणे दीसंतां प्रमाण || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -13
- मोहोरी चूड़ी इजार की, और नेफा इजार बंध । हरे रंग बूटी कई नकस, हकें सोभित भली सनंध || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -38
- मोहोरी चूड़ी बांहें बाजू बंध, सोभा बारीक कई बरनन । नाम लेत इन चीज का, हाए हाए अरवा उड़त ना मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -59

- मोहोरी जड़ाव फूल बने, जानों के एही नंग भूखन । बेल जामें जो जुगतें, सबथें सोभा अति घन || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -30
- मोहोरी तले जो कंकनी, स्वर मीठे झन बाजत । नंग कटाव ए कांगरी, चूड़ पर जोत अतन्त || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -98
- मोहोरी पेट और खड़प, चोली नकस कटाव । बाजू खभे उर ऊपर, मानो के फूल जड़ाव || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -84
- मोहोरे सब जुदे जुदे, जुदी जुदी मुख बान । खेले मन के भाव तें, सब आप अपनी तान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -6
- मोहोरे सब जुदे जुदे, जुदी जुदी मुख बान । खेलें मन के भावते, सब आप अपनी तान || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -8
- मोहोल के चारों खूने, सोले सोले हवेली । जमे जो चौसठ कही, तिन द्वार द्वार एक गली || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -81
- मोहोल के तले ताल जो, तम देखो अर्स अरवाए । रहिए संग सुभान के, छोड़िए नहीं पल पाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -1
- मोहोल के पीछे फिरवल्या, जहां लों पोहोंचे नजर । सब ठौरों एही रोसनी, कहां लों कहूं क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -5
- मोहोल चारों तरफों, हजार हांसों माहें । ए मोहोल पहाड़ जवेर के, क्यों केहेसी जुबाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -37
- मोहोल जिमी बन कहत हों, और पहाड़ नेहेरें बनराए । ए कैसे होसी अर्स के, ए देखो रूह जगाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -50
- मोहोल झरोखे अर्स के, फूलबाग के ऊपर । जोत झरोखे अर्स के, ए नूर कहूं क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -51
- मोहोल झरोखे जो नूर के, आवत नूर बयार । इन जुबां इन नूर को, ए नूर आवे न माहें सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -74
- मोहोल दोऊ छातों पर, तिन परे भी बड़े बन । ए बन मोहोल अति बिलन्द, पर नेक करूं रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -8
- मोहोल पांचों भोम के, सोभित बराबर । दोऊ तरफों देखत, पुल मोहोल पानी ऊपर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -16, चौ -5
- मोहोल बड़े ताल ऊपर, रूहें सुख लेवें हक सों इत । ए क्यों छोड़े हक कदम को, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -63
- मोहोल बड़े बीच गुरजों के, खुबी लेत तरफ दोए । एक खूबी तरफ ताल के, दूजी ऊपर चादरों सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -14
- मोहोल बड़े सोभा बड़ी, थंभ फिरते दोरी बंध । जोतें जोत जगमगे, क्यों कहूं सोभा सनंध || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -30

- मोहोल बने बेलियन के, सेज हिंडोले सिंघासन । चेहेबच्चे फुहारे कई सुख, कब होसी रूहन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -14
- मोहोल मंदिर अपने देखिए, देखिए खेलन के सब ठौर । जित है लीला स्याम स्यामा जी, साथ जी बिना नहीं कोई और || ग्रं - किरन्तन, प्र -89, चौ -2
- मोहोल मंदिर को नाहीं पार, धाम लीला अति बड़ो विस्तार । इन लीला की काहूं ना खबर, आज लगे बिना इन घर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -71
- मोहोल मध्य मानिक का, नूर पहाड़ मोहोल गिरदवाए । बड़े बड़े जोड़े छोटे छोटे, बराबर जुगत सोभाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -6
- मोहोल मन्दिर जो मध्य के, सो हैं अति रोसन । थंभों बेल फूल पांखड़ी, एक पात ना होए बरनन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -142
- मोहोल मन्दिर सब इस्क के, ऊपर तले इस्क । दसों दिस सब इस्क, इस्क उठक या बैठक || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -137
- मोहोल मन्दिर सब नूर के, नूर मेहेराव खिड़कियां द्वार । नूर सीढ़ियां सोभा नूर की, बीच गिरदवाए नूर झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -20
- मोहोल मन्दिर सब नूर में, झांखन झरोखे नूर । द्वार दिवाले नूर सब, सब नूर हजूर या दूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -18
- मोहोल मानिक पहाड़ नूर के, कई नेहेरें चादरें नूर ताल । कई मोहोल हिंडोले नूर के, ए नूर देखे बदले हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -5
- मोहोलन पर मोहोल विस्तरे, सोभा चढ़ती चढ़ी अतंत । कोई मोहोल बड़े इन भांत के, सब नजरों आवत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -32
- मोहोलिए मोती ने वली कांगरी, नीली राती चुन्नी कुन्दन । वेल मांहें हीरा हार दीसे, इंद्रावती जुए द्रढ मन || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -49
- मोहोलिए मोती ने वली नेफे, वेल टांकी बेहू भांत । नाडी मांहें नव रंग दीसे, मानकदे जुए करी खांत || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -11
- मौत उत पैठे नहीं, कायम अर्स सुभान । ठौर नहीं अबलीस को, जरा न कबूं नुकसान || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -28
- मौत सबों के सिर पर, मान लिया सबन । चौदे तबक के खेल में, ठौर बका न पाया किन || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -25
- म् विलखतां तमे दया न कीधी, हवे स्यो वांक काढूं तमारो । दिन घणां हूं रहीस तम सारूं, हवे जो जो तमे जोर अमारो || ग्रं - खटरुती, प्र -7, चौ -16
- म्हारा धणी तमे कहो ते ज वचन, जीव घणूं दुख पामे मन । जो तप करो कल्पांत एकवीस, तोहे न वले जिभ्या एम कहे जगदीस || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -46
- म्हारा वस कीधल वाला रे, अमथी अलगा केम करी थासो । हूं तो एवी नहीं रे सोहाली, जे वचनिऐं वहासो || ग्रं - किरन्तन, प्र -44, चौ -1

SRJN

- म्हारे मंडाण छे तम ऊपर, तमे कां थया मोसूं एम । हवे हुंकारी आवो अम पासे, हूं लाभ लऊं वालाजीनो जेम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -69

य

- या अपना या बिराना, सब परहेज किया दिल माना । तिस वास्ते ऐसी जानी, हाथ साहेब के बिकानी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -25
- या अर्स आपकी पेहेचान, या हक हादी रूहें निसबत । गिरो खासी उतरी अर्स से, और दुनी पैदा जुलमत || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -14
- या एक रसूल संग, ए जो जबराईल । सो नूर से आवत रूहन पर, हकें भेज्या रोसन वकील || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -3
- या कुरान या पुरान, ए कागद दोऊ प्रवान । याके मगज माएने हम पास, अंदर आए खोले प्राणनाथ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -96
- या खेल साथ देखहीं, जुदे जुदे होए । तो सुख ऐसा पसरया, नाहीं सुख बिना कोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -147
- या घर में या बन में रहे, पर कहा करे बिना सतगुर । तो लों मकसूद क्यों कर होवे, जो लों पाइए ना अखंड घर || ग्रं - किरन्तन, प्र -20, चौ -5
- या छल में अनेक छल हैं, सो करूं सब जाहेर । खोलूं कमाड कल कुलफ, अंतर मांहे बाहेर || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -21
- या जग में ए क्या रे पतीती, कोई न पोहोंच्या पार । बोहोत दौड़े सो सुन्य तोड़ी, आड़ी पड़ी निराकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -15, चौ -7
- या जमुनाजी या तलावे, आए खेलें जो मन भावें । श्री राज स्यामाजी के डेरे, सुखपाल उतारे सब नेरे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -130
- या जानें एह मोमिन, जिन इलम पाया बेसक । तिनों नीके कर चीन्हया, जिन बूझ लिया इस्क || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -35
- या जाहेर या बातून, रमूजें या इसारत । सो खोल्या सब इन कुंजिएं, हकीकत या मारफत || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -46
- या जिमीन का तिनका, या बड़ा दरखत । कही सिर सबन के, महंमद हिदायत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -75
- या जो बखत आरोगने, या कोई अर्स लज्जत । सो एक रूह से दूसरी, सुख देख केहे पावत || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -15
- या ठौर जोगमाया रच्यो, सब सामग्री समेत । तहां हद सब्द न पोहोंचही, तुमे तो भी कहूं संकेत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -3
- या तो इस्क हादी मिने, जा को हमें कहया मासूक । हक का सुकन सुन आसिक, हाए हाए होत नहीं टूक टूक || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -107

- या तो ओ दीपक नहीं, या तूं पतंग नाहें । पतंग कहिए तिनको, जो दीपक देख झपाए || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -21
- या दरिया या आसमान सब, ए कौल साहेब का न भूलें कब । ए सौगंद खाए के करी सरत, एही रोज जो कही कयामत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -21, चौ -4
- या दोऊ गिरी दोऊ असल्की, जो बका ठौर हैं दोए । फरिस्ते रूहें उतरी लैलमें, सो भी सूरत हकी से होए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -85
- या पर एक कहूं विचार, सुनियो ब्रह्मसृष्ट सिरदार । ए चौद भवन देखो आकार, याके मूल को करो विचार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -35, चौ -8
- या पसु या बिरिख कोई, अपार तिनों की बात । तो रूहीं के सुख क्यों कहूं, ए तो हैं हक की जात || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -21
- या पहाड़ या तिनका, सो सब चीज बिध आतम । सब देत देखाई जाहेर, ज्यों देखिए मांहें चसम || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -6
- या बन थे बाग रंग फूलिया, जानें लेसी सुख अपार । अधबीच उछेदिया, सो करता गया पुकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -33, चौ -7
- या बानी के कारने, कई करें तपसन । या बानी के कारने, कई पीवें अगिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -95
- या बानी के कारने, कई गले हेम । या बानी के कारने, कई लेवे अंनसन नेम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -97
- या बानी के कारने, कई दमे देह । या बानी के कारने, कई करें कष्ट सनेह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -96
- या बानी के कारने, कई भैरव झंपावे । या बानी के कारने, तिल तिल देह कटावे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -98
- या बानी के कारने, कई संधान सारे । या बानी के कारने, कई देह जारे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -99
- या बानी के कारने, करें कई बिध ताब । सो मुख थें केते कहूं, हुए जो बिना हिसाब || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -100
- या बिध उपज्यो सब संसार, देखलावने हमको विस्तार । जो अग्या भई हम पर, तब हम जान्या गोकुल घर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -19
- या बिध तो हुई नास्त, सो नास्त जानो जिन । सार सब्द में देख के, लिए सो दृढ़ कर मन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -41
- या बिध बांधी दुनियां, खोल ना सके कोई बंध । राह हक की छुड़ाए के, ले डारे गफलत फंद || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -19
- या बिध मेला पिउ का, पीछे न्यारे नहीं रैन दिन । जल में न्हाइए कोरे रहिए, जागिए मांहें सुपन || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -28

SPJIN

- या बिध सब जानवर, और केते कहूँ पसुअन । सब विध करें बंदगी, जैसा सोभित जिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -57
- या भली या बुरी, जिनहूं जैसी फैल जो करी । तब आगू आई सबों की करनी, जिन जैसी करी आप अपनी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -100
- या भांत अनेक ब्रह्मांड में, देत देखाई दसों दिस । ए मोहजल लेहेरा लेवहीं, सागर सब एक रस || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -19
- या भिस्त में इन सुख को, केतो कहूं विस्तार । दिल चाहया सब पावहीं, सब बिध सुख करार || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -74
- या भूखन या वस्तर, सिनगार के बखत । एक पेहेने सुख दूजी को यों, सबों सुख होत अतंत || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -14
- या रस सुख केते कहूं, कई रेहेस प्रकार । साथ पिउ संग विलास, हम किए अपार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -116
- या रूह नैन की पुतली, तिन नैनों बीच तारन । इत रहे सेज्या निस दिन, धरो उज्जल दोऊ चरन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -25
- या लीला की बातें इत, जुबां कही न जाए। सुख दोऊ इत लीजिए, मनोरथ पुराए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -131
- या लीला को जो बल, वचन सब केहेसी । वचन माएने देखके, सब सुख लेसी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -132
- या वस्तर या भूखन, जो दिल रूह चहे । सो उन अंगों सोभा लिए, जानों आगूं ही बन रहे || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -17
- या वस्तर या भूखन, सकल अंग हाथ पाए । सो असल ऐसे ही देखत, जैसा रूह चित्त चाहे || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -25
- या वानी को नाहीं पार, साथ केता करसी विचार । तिन कारन बोहोत कहयो न जाए, ए तो पूर बहे दरियाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -22
- या विध अनेक ब्रह्मांड में, देत देखाई दसो दिस । ए मोहजल लेहेरां लेवही, सागर सबे एक रस || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -19
- या विध उपजे नूर से, इन से सब विस्तार । थिर चर चौदे तबकों, हुआ खेल कुफार || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -12
- या विध करी जो साहेब ने, हम हुए दोऊ के दरम्यान । सुध अर्स नासूत की, दोऊ हम को देवें सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -54
- या विध काड़ों पोहोंचियां, या विध कड़ों बल । कई ऊपर रंग जंग करें, तामें गिने न जाए असल || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -206
- या विध कांबी सनंध, या नंग या धात । जैसा दिल में आवत, तैसा तित सोभात || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -127

- या विध कुण्ड से ले चली, अति खूबी दोऊ किनार । जल ऊपर लटकत चली, दोरी बंध दोऊ हार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -15, चौ -27
- या विध के सुख देत हैं, वस्तर या भूखन । सुख हक सरूप सिनगार के, किन विध कहूं मुख इन || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -48
- या विध ग्यान जो चरचही, सो मैं देख्या चित ल्याए । ज्यों मनुआ सुपने मिने, बेसुध गोते खाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -25
- या विध ग्यान जो चरचहीं, सो मैं देख्या चित ल्याए । ज्यों मनुआं सुपने मिने, बेसुध गोते खाए || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -24
- या विध तो भई नास्त, सो नास्त जानो जिन । सार सब्द मैं देख के, लिए सो दृढ़ कर मन || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -53
- या विध फल छाया मिने, बनमें झूमत अन्दर । कहूं हारे कहूं फिरते, कई रंग चन्द्रवा सुन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -9
- या विध मुक्त इनों की भई, कुमारका सखियां जो कही। ए जो अग्यारे बरस लो लीला करी, काल माया तितही परहरी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -32
- या विध लीला दोऊ करी, सिधारे वतन । ए ब्रह्मांड जो तीसरा, ले आए आपन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -123
- या विध साथ समझियो, सुख साथ को दियो । यों बिन जाने बृजमें, सुख सुपने लियो || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -110
- या वेद या कतेब, सब आए तम खातिर । सब साख तुमारी देवहीं, जो देखो नीके कर || ग्रं - किरन्तन, प्र -104, चौ -10
- या वैर लीला करके, हम घर आए सब मिल । या इंड कल्पांत करके, फेर अखंड किए मिने दिल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -25
- या समें दौड़त भूखन बाजे, पड़छंदे भोम सब गाजे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -117
- या समें प्रश्न कियो राजान, सुक को जोस दियो तिन भान । प्रश्न चुक्यो भयो अजान, रास लीला ना बरनवी प्रवान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -12
- या सुध कागद हम लई, समझे सब सार । औरन को ए कोहेड़ा, ना खुले द्वार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -74
- या सुध पार के पार की, किन मुख ना निकसे दम । बुजरकी महंमद की, करत जाहेर खसम || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -19
- या सुपन तें सुख उपज्यो, जो जाग के कीजे विचार । आतम भेली परआतमा, सुपन भेलो संसार || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -29
- या हौज या जोए के, कई विध देवें सुख । जब हक आराम देवहीं, तब सोई करें रूहें रूख" || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -141

- याकी गत भांत सब प्रेम, याके प्रेम कुसलखेम । याके प्रेम इंद्री अंग गुन, बुध प्रकृती नहीं प्रेम बिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -36
- याकी मुराद कही इसलाम, यों कह्या मांहें अल्ला कलाम । कोई कर ना सके भेव, जो महंमद को देवें फरेब || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -4
- याकी रंग सलूकी क्यों कहूं, बका धनी के चरन । लांक तली रंग सोभित, ग्रहूं रूह के अन्तस्करन || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -77
- याकी हँसत बेल फूल रंग, सो भी करत जवेरों सों जंग । किरना होत न पीछी अभंग, ए भी सोभित जवेरों के संग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -169
- याके एकैस लाख सात हजार दिन, आदम पीछे मजल इन । ए रसूल के आए की मजल, ए गिनती कर तुम देखो दिल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -42
- याके तीन तरफ जो दिवाल, कई जवेर भोर रंग लाल । गोख खिड़की जाली जवेर, कई जड़ाव दिवाल चौक चौफेर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -62
- याके पात्र होसी इन जोग, या लीला को सो लेसी भोग । केसरी दूध ना रहे रज मात्र, उत्तम कनक बिना जो पात्र || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -15
- याके प्रेम के भूखन, याके प्रेम के हैं तन । याके प्रेम के वस्तर, ए बसत प्रेम के घर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -33
- याके प्रेम श्रवन मुख बान, याको प्रेम सेवा प्रेम गान । याको ग्यान भी प्रेम को मूल, याको चलन न होए प्रेम भूल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -34
- याके प्रेम सेज्या सिनगार, वाको वार न पाइए पार । प्रेम अरस परस स्यामा स्याम, सैयां वतन धनी धाम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -39
- याको जाने खुदा एक, ऐसो बांध्यो बंध विवेक । कलाम अल्लाएँ ऐसी कही, आलम आरिफ की हुज्जत ना रही || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -12
- याको नंग निमूना न दीजिए, अर्स रूहें वाहेदत । इने मिसाल न कोई लागहीं, जाकी हक हादी जात निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -16
- याको नेक विचारे जो एक वचन, ताए घर पेहेचान होवे मिन खिन । जो वासना होसी इन घर, सो एह वचन छोड़े क्यों कर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -23
- याको प्रेम है रस रंग, याको प्रेम सबों में अभंग । याको प्रेम सनेह सुख साज, याको प्रेम खेलन संग राज || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -38
- याको प्रेमैं को विस्तार, याको प्रेम को आचार । याके प्रेम के तेज जोत, याके प्रेम अंग उहोत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -37
- याको प्रेमैं सेहेज सुभाव, ए प्रेम देखे दाव । बिना प्रेम न कछुए पाइए, याके सब अंग प्रेम सोहाइए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -35
- याको संघारसी एक सब्दसों, बेर ना होसी लगार । लोक चौदे पसरसी, इन बुध सब्दको मार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -29

- याको सास्त्र सुपनांतर कहे, कोई याको जीव याको ना लहें । ए सुपन मूल तो है समस्थ, याके मूल को देखो अर्थ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -35, चौ -9
- यातो जिमी के दूर लग, या नजीक आगू नजर । दूर नजीक सब याद में, ए दोऊ बराबर || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -11
- याथें देखो हक इस्क, हेत प्रीत मेहेरबान । ए हकें करी ऐसी हांसियां, खोल आंखें दिल आन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -26
- याद आए आंखां खुलें, तब तुमें रहे उमेद । ज्यों मकसूद सब होवहीं, अब कहूं तिन भेद || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -65
- याद आया सरूप बैठा जाहें, तब उड़ गई माया जानों हती नांहें । जाग देखे तो सोई ताल, बीच मायाएं किया ऐसा हाल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -15
- याद आवें सारे सुख, और जीव नैनों भी देखे । तारतम सब सुख देवहीं, विध विध अलेखे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -130
- याद करो इन इस्क को, जो ख्द किया सबों मिल । सो इस्क अपना कहां गया, टिक्या नहीं पाव पल || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -87
- याद करो इस्क को, कायम अर्स में लेते जो सुख । अलेखे अनगिनती, सो देत लज्जत माहें दुख || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -35
- याद करो खुदाए के ताई, तकबीर कहों दिन गिने हैं जाहीं । ए तीन दिन जो हैं बुजरक, पीछे ईद जुहा के हक || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -19, चौ -2
- याद करो जो कह्या मैं सब, नींद छोड़ो जो मांगी है तब । याद करो धनीको सरूप, श्री स्यामाजी रूप अनूप || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -192
- याद करो जो मांगिया, धनिएँ खेल देखाया कर हेत । महामत कहें मेहेबूब के, सुख में हो सावचेत || ग्रं - किरन्तन, प्र -93, चौ -20
- याद करो तुम साथ जी, हाथ आयो अवसर जी। आप डास्या ज्यों पेहेले फेरे, भी डारियो निसंक फेर जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -1
- याद करो बीच अर्स के, जो हक सों किया मजकूर । मांग्या खेल फरामोस का, बैठ के हक हजूर || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -82
- याद करों सुख हाँसीय के, के याद करों सुखपाल । के याद करों तले मोहोल के, हाए हाए अजूं ना बदलत हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -22, चौ -16
- याद करो सोई सनेह, साथ करत मिनों मिने जेह । सुख सैयां लेवें नित, अंग आतम जे उपजत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -193
- याद करो सोई साइत, जो हंसने मांग्या खेल । सो खेल खुसाली लेय के, उठो कीजे केलि || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -2
- याद करो हक मोमिनों, खेल में अपना खसम । हकें कौल किया उतरते, अलस्तो-बे-रब-कुंम || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -1

- याद कीजो मेरे अर्स को, और निसबत हक हादी । इलम देऊं मैं अपना, जासों सक रहे न जरे की || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -53
- याद दीजो अवाहों को, जो मैं करी खिलवत । सो ए लिखी फुरमान में, रमूजें इसारत || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -41
- याद देत हक ए सुख, हाए हाए तो भी न लगे घाए । ऐसी बेसकी ले क्यों रहे, जो होए अर्स अरवाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -22, चौ -14
- याद न जेता हक अर्स, एही मोमिनों बड़ा कुफर । हक वाहेदत इलम चीन्ह के, अजूं क्यों देखे दुनी नजर || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -143
- याफिस आया तुरकस्थान, तो न सक्या कोई पेहेचान । आजूज माजूज औलाद इन, तीन फौजां होए खासी सबन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -30
- यामें अजाजील रूह असलू, दूजी रूह कुफरान । तीसरा दम देखन का, ना कछुए हैवान || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -70
- यामें अंतर वासा ब्रह्म का, सो सतगुर दिया बताए । बिन समझे या ब्रह्म को, और न कोई उपाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -23
- यामें एक दोरी अव्वल तले, कांगरी दस रंग ता पर । तिन दोरी पर बनी बेलड़ी, और कहूं सुनो दिल धर || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -166
- यामें एक फरिस्ता, तिन से उपजे सब । सरत आखिर असराफील, नूर से आया अब || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -5
- यामें कई विध हाँसियां, पियाजी लिखी चित ल्याए । सो आप मिने बैठ के, हंससी साथ मिलाए || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -58
- यामें कोई ना बिराना अपना, ए देखे सब समान । यासें न्यारे जाने मोमिन, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -23
- यामें खेल कई होवहीं, सो केते कहं विचित्र । तिमर तेज रूत रंग फिरे, ससि सूर फिरे नखात्र || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -13
- यामें खेल कई होवहीं, सो केते कहं विचित्र । तिमिर तेज रूत रंग फिरे, ससि सूर फिरे नखत्र || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -13
- यामें गुनी ग्यानी मुनी महंत, अगम कर कर गावें । सुनें सीखें पढ़ें पंडित, पार कोई न पावें || ग्रं - किरन्तन, प्र -7, चौ -3
- यामें जीव दोए भाँत के, एक खेल दूजे देखनहार । पेहेचान न होवे काहू को, आड़ी पड़ी माया मोह अहंकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -30, चौ -12
- यामें जो बुजरक हुए, सो सीतल भए इन भांत । ना सुध छल ना पार की, यों गले सुन्य ले स्वांत || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -52
- यामें ज्यों ज्यों खोजिए, त्यों त्यों बंध पड़ते जाए । कई उदम जो करहीं, तो भी तिमर ना छोड़े ताए || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -36

SPJIN

- यामें ज्यों ज्यों खोजिए, त्यों त्यों बंध पड़ते जाएं । कई उदम जो कीजिए, तो भी तिमर न छोड़े ताए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -30
- यामें नव सै छेहतर जब हुए, तब हुआ नूह तोफान । जल ऊपर तले से उमड़या, हो गया एक जिमी आसमान || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -9
- यामें प्रेम लछन एक पारब्रह्म सों, एक गोपियों ए रस पाया । तब भवसागर भया गौपद बछ, विहंगम पैंडा बताया || ग्रं - किरन्तन, प्र -32, चौ -9
- यामें बड़भागी भए वल्लभाचारज, जाको सुकदेव का गुन भाया । उत्तम टीका कीन्ही दसम की, तो इन ए फल पाया || ग्रं - किरन्तन, प्र -32, चौ -4
- यामें बड़ी मत को लीजे सार, सतगुर याहीं देखावें पार । इतहीं बैकुंठ इतहीं सुन्य, इतहीं प्रगट पूरन पारब्रह्म || ग्रं - किरन्तन, प्र -3, चौ -8
- यामें बड़े रूह मोमिन, सो जुबां कह्यो न जाए। अबहीं इमाम के कदमों, देखोगे सब आए || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -13
- यामें बत्तीस द्वार बाहेर के, एक सौ बारे अंदर । तैंतीस से बारे जमे, यामें आओ साथ सुंदर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -98
- यामें बुजरक आलम आरफ, तिन करियां कई किताब । इन सिर हक एक मलकूत, चौदे तबकों लेत हिसाब || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -25
- यामें बेल पात नकस कई, कई करकरी फूल कांगरी । बानी सोभा सुख देत है, घाट अचरज ए झांझरी || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -41
- यामें रूह कई भांत के, लेत लज्जत खान पान । अंदर बैठा ताए देखहीं, तुम सब बिध करो पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -25
- यामें सतगुर मिले तो संसे भाने, पैंडा देखावे पार । तब सकल सबद को अर्थ उपजे, सब गम पड़े संसार || ग्रं - किरन्तन, प्र -22, चौ -7
- यासों तो मनड़ो माने नहीं, जो छोड़े ए अंत्रीयाल । उरझाए आप न्यारी रहे, जीव को बाँध देवे मुख काल || ग्रं - किरन्तन, प्र -33, चौ -13
- यासों रूह सुख पावत, अर्स रूहें पावें आराम । कहूं सिखाई रूहअल्ला की, ले साहेदी अल्ला कलाम || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -15
- यासों सुन्य निरगुन कहें, निराकार निरंजन । यों नाम खुदाए के, बोहोत धरे फिरकन || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -28
- याही अजमाइस वास्ते, खेल देखाया ए। जब इलम मेरे बेसक हुई, तब दौड़सी इस्क ले || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -48
- याही कदम के वास्ते, रूहें जल बल खाक होवत । तो दिल आए कदम क्यों छूटहीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -60
- याही को बाग दरखत कहे, नजीक मिलाप लपेटे गए । इनों के बीच चले हुकम, रोज कयामत को जाहेर खसम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -19

- याही को माया कहें, पैदास सब इन से । कोई कहे ए करम है, सब बंधे इन ने || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -26
- याही जिनस बाजू बंध, और कुंदन लटकत । ए सबे हैं एक रस, पर रंग कई विध जंग करत || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -59
- याही ठौर रूहें बसत, रात दिन रहें सनकल । हक अर्स मोमिन दिल, तिन निमख न पड़े भूल || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -145
- याही दोजख अगनी जलें, और जलें दुनी के दम । आप जलें अपनी मिने, कहें हाए हाए भूले हम || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -4
- याही नाम की किताबें, याही नामें ल्याए पैगंमर । ए जो कही बड़ाई इनों की, सो सब बीच आखिर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -17
- याही बन के चबूतरे, याही बन की मोहोलात । ए खूबी इन बन की, इन जुबां कही न जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -34
- याही बिध गिरोह की, नाम लिखे अनेक । जुदे जुदे नामों पर सिफत, पर गिरो एक की एक || ग्रं - किरन्तन, प्र -121, चौ -6
- याही भांत अछर की, बीच बन गलियां जानवर । खेल खेलें अति सोहने, क्यों बरनों सोभा दोऊ घर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -57
- याही भांत इजार की, भांत भूखन की सब । रूप करें कई दिल चाहें, जैसा रूह चाहे जब || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -29
- याही भांत ईसा के, फिरके बहत्तर कहे । एक नाजी तिन में हुआ, और नारी इकहत्तर भए || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -3
- याही भांत भौंह नेत्र संग, करत जंग दोऊ जोर । स्याह उज्जल सरभर दोऊ, चली चढ़ि टेढ़ी अनी मरोर || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -121
- याही भांत सब भूखन, याही भांत वस्तर । वस्तर भूखन सब एक रस, ज्यों कुन्दन में जड़तर || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -182
- याही रब्द इत आइयां, लेने पिउ का विरहा लज्जत । सो पाए कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -57
- याही रस के कारने, कैयों किए बल । कैयों कलप्या अपना, पर काहूं ना प्रेमल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -10
- याही लीला सब कोई, गावत गुझ अगम || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -60
- याही वास्ते इमाम रूह अल्ला, आए उतर चौथे आसमान । कौल किया लाहूत में इनों से, ए दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -6
- याही वास्ते कहे सागर, सोभा न आवे मांहें सुमार । सागर सोभा भी ना लगे, सब्द में न आवे सोभा अपार || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -71

- याही वास्ते खेल देखाइया, इस्क गया सबों भूल । फेर के सब सुध दई, भेज फुरमान रसूल || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -31
- याही वास्ते गुझ रख्या, ए बात दिल में आन । कसनी सेती परखिए, काजी कसौटी कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -26
- याही विध जामा पटुका, याही विध पाग वस्तर । करें चित्त चाहे अंग रोसनी, अनेक जोत अंग धर || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -40
- याही विध नख चरनों के, नख जोत एही सब्द । एही खूबी फेर फेर कहूं, क्या करों छूटे न जुबां हद || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -66
- याही विध नूर गिरदवाए, चौक हुए नूर गलियों के । नूर तवाफ दे देखिए, यों चौक गली सोभे नूर ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -53
- याही विध हैं पोहोंचियां, तिनमें कई रंग नंग कंचन । रंग गिनती केहेते सकुचों, जानों क्यों कहूं सुमार सुकन || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -61
- याही सब्द के सोर से, पेहेले उड़सी इंड अंधेर । कुदरत बुरका गफलत, उड़ाया फरिस्तों फेर || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -62
- याही साथ मिलावा मोमिनों, सबों खास बंदों सोहोबत । बंदगी जाहेर या बातून, सब बेवरा होसी इत || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -19
- याही सुरत की सखियां भई, प्रतिबिंब वेद रूचा जो कही। जाको कह्यो ऊधो ग्यान जोगारंभ, सो क्यों माने प्रेमलीला प्रतिबिंब || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -47
- यों अनेक विधे सुख नित, पियाजी को सदा उपजत । सब सैयां पोहोर पीछल, टोलें तीसरी भोम आवें चल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -127
- यों अर्स के जानवर, सो सारे ही पेहेलवान । बरसत नूर इनों पर, नजर हक मेहेरबान || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -70
- यों अर्स गिरो जाहेर करी, माहें कुरान पुरान । किन पाई न सुध रूहें असं की, आप अपनी आए करी पेहेचान || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -49
- यों अर्स जिमी अपार के, सोभित गिरदवाए द्वार । रूह के दिल से देख फेर, ज्यों तूं सुख पावे बेसुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -20
- यों अर्स सारा इस्क का, और इस्क रूहों निसबत । इस्क बिना जरा नहीं, सब हक इस्क न्यामत || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -138
- यों अर्स सारा इस्क में, एक जरा न जुदा होए। खावंद सबों पिलावहीं, क्यों कहिए इस्क बिना कोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -32
- यों असल खेल की है नहीं, ए तो दिल में देखाई देत । किया हुकमें महंमद रूहों देखने, तो भिस्त में इनों को लेत || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -26
- यों आए तीनों सरूप, धर धर जुदे नाम । सो कारन ब्रह्म उमत के, गुझ जाहेर किए अलाम || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -85

- यों आखिर आए सबन को, प्रगट भई पेहेचान । तब कहें ए सुध सुनी हती, पर आया नहीं ईमान || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -34
- यों इलम समझावते, जो कोई ना समझत । तिन मजाजी दिल पर, जिन करो नसीहत || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -88
- यों उनहत्तर पातियां, लिखियां धाम धनी पर । तब सैयां हम भी लिखी, पर नेक न दई खबर || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -22
- यों एक एक पे लेवें, हेत एक दूजी को देवें । सब मंदिर करें इनकार, स्वर उठत मधुर मनुहार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -113
- यों एक नाजी अव्वल से, पाया वाही ने फल आखिरत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -33
- यों कई गुनाह केते कहूं, सब ठौरों गई भूल । कई देखाए गुन अपने, ताको तौल न मोल || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -52
- यों कई छल मूल कहूं मैं केते, मेरे टोने ही को आकार । ए माया अमल उतारे महामत, ताको रंचक न रहे खुमार || ग्रं - किरन्तन, प्र -120, चौ -11
- यों कई जातें पसुअन की, कई खूबी बल कहूं केता । अपार बल खूबी अर्स की, नाहीं जुबां माफक है एता || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -40
- यों कई देखाई माया, और कई विध कराई पेहेचान । कई विध बदली मजलें, कई पुराए साख निसान || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -1
- यों कई नेहेरें बीच सेहेरन के, इन सेहेरों कई मोहोलात । हर मोहोलों कई बैठकें, ए सोभा कही न जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -23, चौ -5
- यों कई बातें हाँसीय को, मासूक करत हम पर । वास्ते रब्द इस्क के, ए हकें बनाई यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -26
- यों कई विध समझाई दुनियां, देने हम पर ईमान इस्क । धनी नाम खिताब दे अपनों, मुझे बैठाई कर हक || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -20
- यों कई सुख दिए इस्क के, कई सुख दिए जो मेहेर । कई सुख अपनी बड़ाई के, जासों और लगे सब जेहेर || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -10
- यों कजा करी सबन की, बांट दिए सब ठौर । ए सुध इन काजी बिना, कोई देवे जो होवे और || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -85
- यों करते ए दस जो भए, मींडा धरके एक सौ कहे । भी एक धरके गिनूं हजार, धनी गुन दया को नाहीं पार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -12
- यों करते ए होवें जेते, इन बिध चढ़ते जाए तेते । ए हिसाब मेरी आतमा करे, गुन धनी हिरदे अंतर धरे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -24
- यों किया वास्ते ईमान के, आवे आखिर रूहन । सो आए हुआ सबों रोसन, जाहेर बका अर्स दिन || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -49

- यों केतिक ग्वाही देऊ कुरान, इन्ना इन्जुलना में एह बयान । तीसरे तकरार की भई फजर, अग्यारे सदी में देखो नजर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -37
- यों केती कहूं निसानियां, हैं हिसाब बिन । पर ए मीठा लगसी मोमिनों, औरों लगसी सखत सुकन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -7
- यों केती कहूं बेसकी, इनका नहीं हिसाब । महामत देखावे हक इस्क, जो साकी पिलावे सराब || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -37
- यों क्योहरी सब चबूतरों, तिन सीढ़ियां सबको । हर योहरी हर चबूतरे, सीढ़ियां दोऊ तरफों || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -37
- यों गिनती न होए एक जात की, जो कहे फील रंग अपार । रंग रंग जाते कई कहीं, सो क्योए न होए सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -57
- यों गिरदवाए नूर सबन में, झनकत नूर झलकत । ए जो हिंडोले नूर के, कही जाए ना नूर सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -96
- यों गुन सागर केते कहूं, जो देखत सुख के रंग । कई सुख नेहेरें किरना चलें, कई सागर सुख तरंग || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -38
- यों गुनाह अनेक भांत का, हुआ हमारे सिर । हम कछू न कर सके, तो भी खबर लई हके फेर || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -49
- यों गोते खाए बीच फना के, ला सुन्य ना उलंधी किन । ढूंढ़ ढूंढ़ सबे थके, कोई पोहोंच्या न बका वतन || ग्रं - खुलासा, प्र -6, चौ -9
- यों चारों पैदा हुए, खड़े रहे जिन खातिर । सोई काम सोई जाएगा, ए भी दोऊ देऊ खबर || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -9
- यों चाहिए मोमिन को, रूह उड़े सुनते हक नाम । बेसक अर्स से होए के, क्यों खाए पिए करे आराम || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -139
- यों चाहिए रूहन को, सुनते बिछोहा पिउ । करते याद जो हक को, तबहीं निकस जाए जिउ || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -27
- यों जान के आए हम मांहें, आए बैठे प्रगटे तुम जांहें । ज्यों आपन पेहेले बृज में हते, नित प्रते पियासों प्रेम खेलते || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -9
- यों जान बीच बका मिने, दिल में ल्याए हक । नूर-जलाल रूहन को, देखें असल इस्क || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -53
- यों जान मांगें फना मिने, लज्जत दुनी में हक । यों हुकम हाँसी करावहीं, दे अपना इलम बेसक || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -15
- यों जुदी जुदी जातें चलते, दाएं बाएं मिसल । इंतमाम सबों में अति बड़ा, या आगूं या पीछल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -14
- यो झण्डा नूर बिलंद का, किया खड़ा हक हादी मोमिन । देखावे नामे वसीयत, नूर हिंद में बरस्या रोसन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -20

- यो तिनके पर्वत ढांपिया, यों गज चींटी पांऊ बांधिया । जो जीव करे उजास, तो मन को आगे ही होए नास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -21
- यों तिहत्तर मेरे होवहीं, नारी बहत्तर नाजी एक । ताको हिदायत हक की, जो हुआ नेकों में नेक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -30
- यों तैयारी कीजियो, आगू करनी है दौड़। सब अंग इस्क लेय के, निकसो ब्रह्मांड फोड़ || ग्रं - किरन्तन, प्र -86, चौ -19
- यो तो खड़ी रहे रूह खिलवतें, या तो देवे तवाफ । हौज जोए या अर्स में, तूं इन विध हो रहे साफ || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -64
- यों थंभ थंभ जोत में, देखो सबन का जहूर । ऊपर तले सब जोत में, जम्या नूर भरपूर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -90
- यों दिन बका जाहेर हुआ, तब देखसी सब निसान । नजरों आवसी कयामत, होसी रोसन सबों पेहेचान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -9
- यों दिल चाया वस्तर, और दिल चाया भूखन । जब जिन अंग दिल जो चाहे, आगू रोसन होए माहें खिन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -79
- यों दिल चाहे वस्तर, और दिल चाहे भृखन । जब जिन अंग दिल जो चाहे, सो आगूंहीं बन्यो रोसन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -139
- यों धोखा रह्या सब मांहें, समझ काहूं ना परी क्यांहें । अब समझाऊं देखो बानी, दूध विछोड़ा कर देऊं पानी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -16
- यों नूर नजर चारों पर, इन बिध हुई पैदास । फेर कहूं बेवरा इन का, ए जो खेलें खेल लिबास || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -11
- यों नूर फिरती चार मोहोलातें, ए नूर खूबी अतंत । ए हुकम कहावे नूर गंज के, ए नूर ना सुमार सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -54
- यों पढ़े राह बतावहीं, खेलें मिने ख्वाब । जाहेर जुलम होवहीं, कहें हमें होत सवाब || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -22
- यों फिरते नूर हिंडोले, नूरै के गिरदवाए । नूर सरूप रूहें बैठत, झूले नूर जुगल दिल ल्याए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -88
- यों बैठे तखत इमाम, सिर छत्र कई चंवर । रसूल अली आए मिले, हुई बधाइयां घर घर || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -6
- यों मिहीं बाते कई हुकम की, हुआ हुकम सबमें एक । अर्समें हम सिर ले उठे, सब सिर ले कहे विवेक || ग्रं - सिंधी, प्र -16, चौ -13
- यों लग्या आसिक एक अंग को, सो तहां ही हुआ गलतान । इनसें कबूं ना निकसे, तो कहे सागर अंग सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -31
- यों लड़ के लोक जुदे हुए, पर खसम न होवे दोए। रब आलम का ना टरे, जो सिर पटके कोए || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -83

- यों लिख लिख के में गिने गन, पर मेरे धनी के गन हैं अति घन । ए गुन मिलाए के एकठे किए, सो नीके कर मैं चित में लिए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -33
- यों लिख्या फरमान में, आखिर बीच हिंदुअन । मुलक होसी नबियन का, धनी दई बड़ाई इन || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -32
- यों लिख्या बीच हदीस के, जो मैं काम करता हों अब । सो मैं आखिर आए के, तमाम करोंगा सब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -80
- यों लिख्या है कई विध, पर समझे ना बेसहर । दुनी पढ़ पढ़ अपनी अकलें, कई करें मजकूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -15
- यों वस्तर भूखन अंग चेतन, सब लेत आसिक जवाब । केहे सब का लेऊ पड़-उत्तर, ए नहीं रूह मिने ख्वाब || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -55
- यों विध विध दृढ़ कर दिया, दे साख धनी फरमान । अपनी अकल माफक, केहे केहे मुख की बान || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -11
- यों वैराग जो साधना, कई जुदे जुदे उपचार । यों चलें सब पंथ पैंडे, खेले सब संसार || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -32
- यों वैराग जो साधना, करें जूदे जुदे उपचार । यों चले सब पंथ पैड़े, यों खेले सब संसार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -28
- यों सब जाहेर पुकारहीं, कोई माएने ना समझत । ए माएने मगज इमाम पे, दूजा कौन खोले मारफत || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -84
- यों सब ठौर जंग अर्स में, कहूं केती विध किन । अपार अखाड़े सब दिसों, होत सब में रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -71
- यो सब भोमें नूर गिरदवाए, थंभ गलियां नूर मन्दिर । मेहेराव झरोखे नूर के, देख नूर लगता इनों अन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -38
- यों सरूप दोऊ चित में लीजे, अंग वार डार के दीजे । गलित गात सब भीजे, जीव भान भून टूक कीजे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -178
- यों साख आतम देवहीं, वचन आगम के देख । देने ईमान सबन को, यों बिध बिध लिखे विसेख || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -40
- यों साथ पिछला आइया, इत इन दरवाजे । मूल साथ फेर आवसी, ए किया जिन काजे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -49
- यों सीधी उलटीय से, कौन करे बिना इलम । इत जगाए उमेदां पूरन कर, खेचत तरफ खसम || ग्रं - सागर, प्र -3, चौ -14
- यों सुख इस्क सागर को, धनी प्यारे देत रूहन । सो इत देखाए मेहेर कर, जो इस्कें किए रोसन || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -27
- यों सुख सुपने लिए, कछुए नहीं खबर । इन दोऊ लीला मिने, सुध नाहीं घर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -122

SPJIN

- यों सूई के नाके मांहें, कई लाखों ब्रह्मांड निकसे जाए। अब ए नीके लीजो अर्थ, गुन लिखने वालो समरथ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -35, चौ -12
- यों हक कहावत मोमिनों, नजीक हाल है तुम । हक बातें किया चाहें, रूह सों वाहेदत खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -82
- यों हकें छिपाइयां खेल में, दे इलम करी खबरदार । रब्द किया याही वास्ते, ल्याओ प्यार करो दीदार || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -3
- यों हकें लिख्या कुरान में, ए अरवाहें मेरे अहेल । ए झूठे वजूद जो खाक के, निपट गंदे सेहेल || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -36
- यों हकें लिख्या कुरान में, हक रूहों की करें जिकर । पीछे आपन करत है, रूहें क्यों न देखो दिल धर || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -39
- यों हम ना करे तो और कौन करे, धनी हमारे कारन दूजा देह धरे । आतम मेरी निज धाम की सत, सो क्यों ना करे उजाला अत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -23
- यों हम हम करते कई गए, अजूं योंहीं जाए रात दिन । यों करते आखिर आए गई, बांधी तोबा लगी अगिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -43
- यों हर अंग हक के, सब सो ए किए रोसन । आसमान जिमी के बीच में, कछू देख्या न इस्क बिन || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -10
- यों हादी लिखे कर जाहेर, दिन देखाए देवें कयामत । सो लिखे सखत सौ खाए के, सो भी वास्ते इन बखत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -2
- यों हाँसी हम पर करी, बनाए हमारे अक्स । इस्क लिया खैच के, होसी एही हाँसी बीच अर्स || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -12
- यों ही है बीच अर्स के, जिनों जो सोभा प्यारी लगत । हर रूह अर्स अजीम की, दिल माफक देखत || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -48
- यों हुकम नूरजमाल का, अर्स सुख देत रूहों इत । चुन चुन न्यामत हक की, रूहों हुकम पोहोंचावत || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -58
- योहरे मसीत अपासरे, सब लगे माहें रोजगार । बाहेर देखावें बंदगी, माहे माया मोह अहंकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -30, चौ -7
- योंही कह्या बड़ा माजूज, हुई रात आकास जिमी ले । दुनी आंख मूंदे बीच रात में, भई दिस मानिंद एक गज के || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -25

र

- रखे आसंका आणो एह, एह रखे राखो संदेह । लखमीजी तमे करो करार, मारा मुखथी वचन न आवे बहार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -27
- रखे कहेने धोखो रहे, आ जुआ कया अवतार । तो ए केहेनी बुधे विष्णुने, जगवी पोहोंचाड्यो पार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -40

- रखे जाणो वचन कया अचेत, केहेतां जीवे दुख दीठां अनेक । ज्यारे जीवसूं विचारी जोयूं मन, जे आ हूं केहा कहूं छू वचन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -6
- रखे वजूद को हुकम, जेते दिन रख्या चाहे । रूहों खेल देखावने, कई विध जुगत बनाए || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -16
- रखो खुदाए का डर, बंदे सिजदे पर नजर । किया कबूल एह जहूर, दरगाह साहेब के हजूर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -3
- रंग उजलाई अर्स की, झांई झलके कसूंब बका । देत सलूकी कई सुख, रूह नैन को नासिका || ग्रं - सिनगार, प्र -15, चौ -4
- रंग उज्जल नरमाई क्यों कहूं, और चरन की खुसबोए । ए जुबां अर्स चरन की, क्यों कर बरनन होए || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -120
- रंग कंचन कमर कस्या, पटुका जो पूरन । केते रंग इनमें कहूं, जानों एही सबे भूखन || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -22
- रंग करो विनोद हाँस, सांचा सुख ल्यो प्रेम विलास । घरों सुख सदा खसम, लेत मेरी परआतम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -179
- रंग केते कहूं चरन के, आवें न मांहें सुमार । याही वास्ते खेल देखाइया, रूह देखसी देखनहार || ग्रं - सिनगार, प्र -5, चौ -2
- रंग जिमी दिस सागर, एक एक दोए बीच जान । ले इस्क गिन अगिन से, ज्यों सब होए अर्स पेहेचान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -59
- रंग जोत खूबी खुसबोए की, क्यों कर कहूं ए बन । फल फूल पात तले जिमी, जानों सूर हुए रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -61
- रंग तरंग किरने कही, कही तेज जोत जुबां इन । प्रकास उद्दोत सब सब्द में, जो कया नूर रोसन || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -21
- रंग देखू के सलूकी, छबि देखू के नरम उज्जल । जो होए कछुए इस्क, तो इतथे न निकसे दिल || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -52
- रंग नंग नकस अन-गिनती, कयो न जाए सुमार । ज्यों बट बीज माहें खड़ा, कर देखो आतम विचार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -79
- रंग नंग नकस न जाए कहे, तो क्यों कहे जाएं थंभ दिवाले द्वार । तो समूह की जुबां क्या कहे, जाको वार न पार सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -78
- रंग नंग बूटी कछुए, लगत नहीं हाथ को । ए सुख बारीक अर्स के, इन अंग का नूर अर्स मों || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -15
- रंग नंग रेसम मिलाए के, हेम जवेर कुंदन । इन विध बनावे दुनियां, वस्तर और भूखन || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -37
- रंग नरमाई सलूकी, अर्स अंग चरन । बल बल जाऊं देख देख के, मेरे जीव के एही जीवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -4

- रंग नासिका की मैं क्यों कहूं, गुन सलूक अदभूत । सुन्य ब्रह्मांड को फोड़ के, अर्स बास लेत बीच नासूत || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -65
- रंग नीला कया इजार का, कई रंग नंग इन मों। तेज जोत जो झलकत, और कछू लगे ना हाथ कों || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -46
- रंग नीले जोत पाच में, रूह इतथे क्यों निकसाए । जो जोत देखू मानिक, तो वाही में डूब जाए || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -60
- रंग रस इंद्री नौतन, चढ़ता अंग नौतन । तेज जोत सोभा नौतन, नौतन चढ़ता जोवन || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -79
- रंग रस नूर रोसनी, सोभा सुन्दर खूबी खुसबोए। तेज जोत कोमल, देख नरम नाजुकी सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -78
- रंग रस यों केहेत हों, ए जो मेहेर करत मेहेरबान । ए भूल गैयां हम लाड़ सबे, ना तो क्यों रहे खिन बिन प्रान || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -50
- रंग रेल करी रस बस थया, सखी स्याम घणां अमृतमां रे । लथबथ थई कलोल थया, ए तो कूपी रह्या बेहू चितमां रे || ग्रं - रास, प्र -37, चौ -10
- रंग रेसम जवेर जो देखत, सो सब मसाला नंग । वस्तर भूखन सब नंगों के, मांहें अनेक देखावें रंग || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -20
- रंग रेसम हेम जवेर, ना तेज जोत सब्द लगत । एही अचरज अरवाहे अर्स की, ए सुनते क्यों ना उड़त || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -28
- रंग लाल कहूं के उज्जल, के देख खूबियाँ होत खुसाल । सो देखन वाले नाम धराए के, हाए हाए ओ जले न माहें क्यों झाल || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -22
- रंग लाल जरी माहें बेल कई, कई फूल पात नकस कटाव । कई रंग नंग जवेर झलकें, बलि जाऊं बांधी जिन भाव || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -30
- रंग वनमां, सोभित जमुना, पसु पंखीना, सब्द रंगे थंत री || ग्रं - रास, प्र -30, चौ -9
- रंग वस्तरों तो कहूं, जो दस बीस रंग होए । इन सुपन जिमी जो वस्तर, तामें कई रंग देखत सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -54
- रंग सलूकी भूखन, देख काड़े हाथों के। ए जोत ले जीव ना उड़या, हाए हाए बड़ा अचम्भा ए || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -111
- रंग सेंदुरिए पछेडी, अने माहें कसवनी भांत । छेडे तार ने कसवी कोरे, इंद्रावती जुए करी खांत || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -21
- रंगना करती रोल, झीलती मांहें झकोल । करी मुख चकचोल, जोरावर झलाबोल, लेवा न दे स्वांस || ग्रं - रास, प्र -38, चौ -8
- रंचक इसारत धनी की, जो पावे आसिक जिउ । सो जीव खिन एक लों, रहे ना सके बिना पिउ || ग्रं - किरन्तन, प्र -97, चौ -2

- रणवगडामा" साथ हूं एकली, विलखू रात ने दिन । जो कोई मानो तो कहे इंद्रावती, रखे कोई करो भारे करम || ग्रं - खटरुती, प्र -3, चौ -14
- रतन ते आने केम कहिए, पण आ भोम उपमा एह रे । कई कोट रतन जो मेलिए, आणे तोले न आवे तेह रे || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -51
- रतन हीराना बे हार दीसे, त्रीजो हेम तणो जडाव । चौथो हार मोती निरमलनो, करे जुजबी जुगत झलकार || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -19
- रतनबाई अदी मुंहजी, आऊं करियां आंसे गाल । सुहाग मूके डिनाऊं घणों, अदी थेईस आऊं निहाल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -28, चौ -11
- रद बदल आपुस में, कर बैठे मजकूर । कौल किया बीच खिलवत, हमें अपने हजूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -75
- रद बदल भूखन सों, और करे वस्तरों सों। और अंग लग जाए ना सके, फारगी न होए इनमों || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -56
- रब एक राह चलावसी, देकर अपना इलम । करसी कायम सबन को, अपना चलाए हुकम || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -38
- रब ना रखे किसी का गुमान, ओ तो गरीबों पर मेहेरबान । परदा लिख्या जो हजरत के रूए पर, तिन की क्या तुमको नहीं खबर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -22
- रब रसूल बतावे गैब का, हम पूजे जाहेर । हम बातून को पोहोंचे नहीं, देखें नजर बाहेर || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -23
- रब्द करे औरन को निंदे, आपको आप बढ़ावे । ग्यान कथे गुन गाए आपके, होहोकार मचावे || ग्रं - किरन्तन, प्र -6, चौ -8
- रब्द किया था अव्वल, सो क्यों गैयां तुम भूल । अजूं याद दिए न आवहीं, सुन एती पुकार रसूल || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -50
- रब्द रूहों ने हकसों, किया इस्क का जोए । तो अर्स में इस्क बिना, पैठ न सके कोए || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -33
- रब्द हुआ इस्क का, हक हादी की खिलवत मांहें । इत कम ज्यादा है नहीं, अर्स इस्क बेवरा नाहे || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -141
- रम, उनमदपणे, वालाजी सूं रंग घणे । कर कंठ धणी तणे, विलसूं संगे राज री || ग्रं - रास, प्र -12, चौ -6
- रमत रास करत हांस, कान्ह मोहन वेल री। कान्ह मोहन वेल, सखी कान्ह मोहन वेल री || ग्रं - रास, प्र -36, चौ -1
- रमतां दिए चुमन, एक रस जुवती जन । करी जुगत नौतन, चितडा लीधा हरी || ग्रं - रास, प्र -19, चौ -8
- रमतां भीडे कठण कुचसों, छबकेसू रंग लेत जी। अमृत पिए वालोजी रमतां, अधुर इंद्रावती देत जी || ग्रं - रास, प्र -43, चौ -3

- रमतां भूखण किरण, ब्रह्मांड लाग्यो फिरण । सखियो उलासी तन, कमल विकसेतरी || ग्रं - रास, प्र -22, चौ -6
- रमती इंद्रावती, घातो घणी ल्यावती । वालेया मन भावती, मुखमां मरजाद री || ग्रं - रास, प्र -12, चौ -8
- रमती रास कामनी, जामती चंद्र जामनी । मली वल्लभे माननी, भलंती रंगे भामनी || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -3
- रमवाने जीव तरसे मारो, रूडी रमवानी आ रूत । खंत खरी मलवानी तमसूं, लागी रही छे मारे चित || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -4
- रमे प्रेमें प्रीते भीनो, पुरा सघला माहें । रमे खिण जेसू तेहेने बीजो, सूझे नहीं कोई क्यांहें || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -28
- रमें मांहोंमाहे रब्दे, करे परसपर क्रोध । मछ गलागल माहें सघले, मूके नहीं कोई बोध || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -3, चौ -18
- रम्या रम्या मारा मारा वाला वाला, पाछी पाछी रामत कोय न रही । हवे ने हवे आधार, आयत पूरण थई || ग्रं - रास, प्र -43, चौ -5
- रल गए वाही खेल में, कछू रही न असल बुध । रूहअल्ला कहे सौ बेर, तो भी आवे न दिल सुध || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -71
- रस अनेक बातन लेवें सुख, सो मैं कहयो न जाए या मुख । सरुप सोभा जो सुन्दरता, बस्तर भूखन तेज जोत धरता || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -123
- रस घणो उपजावती, सखी मीठड़े स्वर गावती । नव नवा रंग ल्यावती, इंद्रावती अंग धरी धरी || ग्रं - रास, प्र -19, चौ -10
- रस जानत सब अर्स के, रस बोलत रसना बैन । रूहें एक सब्द सुनें रस का, तो पावें कायम सुख चैन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -143
- रस प्रेम सरूप है चित, कई विध रंग खेलत । बुध जाग्रत ले जगावती, सुख मूल वतन देखावती || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -194
- रस भर रंग वालाजीसुं रमवा, उछरंग अंग न माय । इंद्रावती बाई कहे धामना साथने, हूं नमी नमी लागू पाय || ग्रं - रास, प्र -7, चौ -12
- रस भरी अति रसना, अति मीठी वल्लभ बान । ए सुख कहयो न जावहीं, जो सुख देत जुबान || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -7
- रस मगन भई सो क्या गावे । बिचली बुध मन चित मनुआ, ताए सबद सीधा मुख क्यों आवे || ग्रं - किरन्तन, प्र -25, चौ -1
- रस लेत धाम के सरूप सों, एक दूजी को ठेल । विविध विहार अलेखे अंगों, क्यों कहूं खुसाली खेल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -48
- रसनाएं इस्क देखाइया, तिन भत्या जिमी आसमान । इस्क बिना न पाइए, बीच सकल जहान || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -8

- रसम करम कांड की, हुती एते दिन । अब इलम बुधजीयके, दई सबों प्रेम लछन || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -65
- रसमें सबों जुदी लई, माहों-माहें कई लरत । आप बड़े सब कहावहीं, पानी पत्थर आग पूजत || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -61
- रसूल अदल कछू चाहते, तब जबराईल ल्यावत खबर । तो कजा करता था उमर, जो रसूल थे सिर पर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -12
- रसूल आए किन ठौर से, किन वास्ते जिमी हैरान । ए सुध सारी लेवहीं, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -15
- रसूल आए किन वास्ते, किन पर ल्याए फरमान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -31
- रसूल आए जिन बखत, कंगूरा गिस्या बुतखाने का । तब लोगों कया रसूल का, जाहेर होने का माजजा || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -35
- रसूल आखिरी अल्लाह का, ल्याया आखिरी किताब । खोले रूहअल्ला आखिरी, दे मेंहेंदी को लिया सवाब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -53
- रसूल आया हुकमें, तब नाम धराया गैन । हुकम बजाए पीछा फिस्या, तब सोई ऐन का ऐन || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -62
- रसूल आवेगा तुम पर, ले मेरा फुरमान । आए मेरे अर्स की, देसी सब पेहेचान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -54
- रसूल कहे आखिर आवसी, कहया क्यों पेहेचानों तिन । कहे बड़ी सिफत है तिन की, वाकी पेसानी रोसन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -35
- रसूल कहे फुरमान में, मेरी तीनों एक सूरत । सो पोहोंची नजीक हक के, और कोई न पोहोंच्या तित || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -72
- रसूल कहे मैं आखिरी, मेरे पीछे न आवे कोए । कया रूह अल्ला की आवसी, और मेंहेंदी इमाम सोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -6
- रसूल खड़े टेकरी पर, कहया देखत यारों तुम । कहया हक जानें या रसूल, जानत नाहीं हम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -5
- रसूल ताना ए सुन के, फेर मेहेर कर बुलाए । वह तो भी टेढ़ाई न छोड़ें, रसूल मेहेर न छोड़ें ताए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -41
- रसूल बड़ा सबन में, जिन हक की दई खबर । कहया मासूक का सब हुआ, आई कजा आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -17
- रसूल बिना इन काल को, किने न उलंघ्यो जाए । ए सब्द काल के पार हैं, सो क्यों औरों समझाए || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -37
- रसूल रूह अल्ला और इमाम, ए तीनों एक कहे अल्लाकलाम । बसरी मलकी और हकी, तीनों तरफ साहेब के साकी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -37

SRJN

- रसूल रूहअल्ला और इमाम, इन तीनों मिल मोको दई ताम । मैं सिर पर ए लिए कलाम, आए कुंजी बका की करी इनाम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -3
- रसूल हक हुकम बिना, और न काढ़े बोल । करम दृढ़ाए निगमें दिए, हिंदुओं सिर डमडोल || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -36
- रसूलें इत आए के, पेहेलें किया पुकार । आवसी रब आलम का, तब हूजो खबरदार || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -15
- रसूलें ए जाहेर कया, दिन रोसन पिया वतन । और अंधेर सब दज्जाल, जो गोविंद भेड़ा फितन || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -46
- रसूलें एता इत जाहेर किया, और हरफ रखे छिपाए । हक मेला बड़ा होएसी, सो करसी जाहेर खिलवत आए || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -24
- रसूले कहया अबीजर को, कहां रेहेता मेरा गम । कहया मैं नहीं जानत, कहो रसूल अल्ला के तुम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -33
- रसूलें कहया जालूत को, तुम में पीछे मूसा के । कहो फिरके केते हुए, मोहे देओ खबर ए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -23
- रसूलें खुद को देख के, हकम लिया दृढ़ाए । जिन खुद को ना देखिया, तिन सिर करम चढ़ाए || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -34
- रसूलें बुजरकी अपनी, दई कई जहूदों को । पर ओ छोड़ बड़ाई अपनी, आए नहीं कदमों || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -80
- रसूलें राह बताई मेयराज में, अर्स लेसी सोई मोमिन । देखाई चढ़ उतर, जो हमें खिलवत कहे सुकन || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -28
- रसूलें सरा रात का, चलाया हक अदल । जब रसूल जबराईल ले चले, तब क्यों चले अदल अमल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -2
- रसूलें हम वास्ते, मुनारे मुल्लां चढ़ाए । जिन कोई मोमिन भूलहीं, ठौर ठौर पुकार कराए || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -43
- रस्सी रखी कुएं के मांहें, ऊपर पत्थर दिया तांहें । जबराईले कही खबर, भेज्या अली कूएं गया उतर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -17, चौ -3
- रहे ठाढ़ी इन जिमी पर, देख अपना खसम । देख मिलावा अर्स का, और देख अपनी रसम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -58
- रहें नूर सरूप पानी मिने, तो भीजें ना नूर तन । नूर तन रहे जो आग में, तो भी नूर न जलें अगिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -22
- रहे साल चौरासी लैल में, तिन उपर हुई फजर । अग्यारै सदी मिने, मेरी बातून खुली नजर || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -38
- रहो रहो रे वाला मारे वांसे थाओ, हूं तम आगल थाऊं रे । साची तो जो भूलq तमने, मारा साथ सहुने हसावू रे || ग्रं - रास, प्र -18, चौ -4

- रहो रहो रे सखियो तमे ठेक वखाण्यो, हवे जो जो अमारो ठेक रे । एवी तो फाल साथे केटलीक दीधी, तूं तो मोही उडाडतां रेत रे || ग्रं - रास, प्र -28, चौ -6
- रह्या अदल इस दिन लों, कहे हदीस महंमद । आगे अदल ना चल सके, याही लग थी हद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -22
- राई गौरी सावित्री जो कोई सती, सब धवल गावें नर नार । पुरुख दूजा कोई काहूं न कहावे, सबों भजिया कर भरतार || ग्रं - किरन्तन, प्र -54, चौ -11
- राखडली मां रतन नंग झलके, हीरा पाना बेहू भांत । माणक मोती फरतां दीसे, वेण चुए गूंथी अख्यात || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -62
- राग कहे मैं भली भांते, पिउजीसों करों रस रीत । जीव धनी बीच अंतर टालू, गुन देऊं सारे जीत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -72
- राग कहे हूं रूडी पेरे, हलमल करूं आधार । जीव धणी वचे अंतर टालूं, तो वखाणजो आवार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -72
- राग मारू ऊभा ने रहो रे वाला ऊभा ने रहो, हजी आयत छे अति घणी । रामत रमाडो अमने, उलट जे अमतणी || ग्रं - रास, प्र -41, चौ -1
- राज कुली रे रखन रजवट, जो न आया इन अवसर । धरम जाते जो न दौड़िया, ताए सुर कहिए क्यों कर || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -8
- राज रोज रूहन का, जब पोहोंच्या इत आए । तखत बैठे साह कहावते, देखो क्यों डारे उलटाए || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -94
- राज स्यामाजी बीच में, बैठक सिंघासन । रूहें बारे हजार को, हक देत सुख सबन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -51
- राज स्यामाजी बीच में, बैठे सिंघासन ऊपर । ए तखत हक अर्स का, ए सिफत करूं क्यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -154
- राज स्यामाजी बैठत, बनथें फिरती बखत । इन ठौर आरोग के, चौथी भोम निरत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -7
- राज स्यामाजी सखियां, जब इत आए हीचत । इन समें बन हिंडोले, सोभा क्यों कर कहूँ सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -34
- राज स्यामाजी साथ सों, खेलत हैं इन बन । ए जो ठौर कहे सब तुमको, तुम जिन भूलो एक खिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -18
- राजसिए कीधो विरह जोर, रूए पाडे बुब बकोर । स्वांतसियो बेसुध थाय, तामसियोने आंझो न जाय || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -27
- राजसिए रे काइक नैणे डीठो, पण विचार करे तो थाय वेड । तामसियो रे मोहोवड थैयो, राजसिए न मूक्यो तेहेनो केड || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -21
- राजा प्रजा बाला बूढ़ा, नर नारी ए सुमरन । गाए सुने ताए होवहीं, लीला तीनों का दरसन || ग्रं - किरन्तन, प्र -59, चौ -6

- राजाने मलोरे राणे राए तणों, धरम जाता रे कोई दौड़ो । जागो ने जोधा रे उठ खड़े रहो, नींद निगोड़ी रे छोड़ो || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -1
- रात अंधेरी मिट गई, हुआ उजाला दिन । रब आलम जाहेर भए, सुर असुरों ग्रहे चरन || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -101
- रात अमल तब मेट के, करसी इलम फजर । देखोगे दिन मारफत, खोल देसी रूह नजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -74
- रात अमल सरीयत का, चल्या लदुन्नी बिन । हक इलमें रात मेट के, किया जाहेर बका दिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -90
- रात कही कदर की, बोहोत बड़ी है सोए। फिरत चिरागें इनमें, चांद सूर ए दोए || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -45
- रात दिन अखण्ड कहे बृज में, दिन नाहीं वृन्दाबन रास । रात अखण्ड लीला खेलहीं, दोऊ कैसे अखण्ड विलास || ग्रं - किरन्तन, प्र -13, चौ -10
- रात दिन गूंजे अर्स में, हक की करें जिकर । क्यों कहूं इनों चित्रामन, सोभा अति सुन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -78
- रात दिन दुख लीजिए, खाते पीते दुख । उठते बैठते दुख चाहिए, यों पिउ सो होइए सनमुख || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -12
- रात दिन फुरमाए हक ने, आप अपने हिसाब । सो डाले बीच निजस, ए जो रात का ख्वाब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -29
- रात दिन बसें हक अर्स में, मेरा दिल किया अर्स सोए । क्यों न होए मोहे बुजरकियां, ऐसा हुआ न कोई होए || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -3
- रात निकोइयों को भाने, कूवत हैवानी की आने । बंदगी इनसे होवे दूर, सब ढांपे अंधेर मजकूर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -10
- रात पड़ी तब कोई न जागे, पीछे कोई ना करे पुकार जी । निसाएँ नींद जोर बाढ़ेगी, पीछे बढ़ेगा विख विस्तार जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -20
- रात पडी त्यारे कोई नव जागे, कोई न करे पुकार जी। निसाए निद्रा जोर थासे, पछे वाधसे ते विख विस्तार जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -19
- रात बड़ी है रास की, कही सुके और व्यास । ता बीच लीला अखंड, ब्रह्म ब्रह्मसृष्टी प्रकास || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -43
- रात में रोसनी सब जुदी भई, इब्राहीम साल्हे मिल फजर कही । भी फजर कही रोसनी बादल, बरस्या नूर रूहअल्ला सों मिल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -18, चौ -9
- रातों चलने वाले कहे सेखल इसलाम, करें परदा दुनियां सों चलें आराम । दिन के तांई कह्या बाजार, इत बे इन्साफी चलन हार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -12
- रांद डिखारिए उमेद के, जगाइए लाड पारण । विलखाइए सुणन वैण के, रूआं दीदार कारण || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -52

- रांद सभेई निद्रजी, जीरया मस्या वजन । सोणे अंगडा असांहिजा, तोके की न पुजन || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -8
- राधाबाई पिता वृखभानजी, प्रभावती बाई मात । नान्हों कृष्ण कल्यानजी, तेथी मोटो सिदामो भ्रात || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -18
- राधाबाई पिता वृखभानजी, प्रभावती बाई मात । सुदामा कल्यानजी, याथें छोटो कृष्णजी भ्रात || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -28
- राधाबाईनो विवाह कीबूं, पण परण्या नथी प्राणनाथ । मूल सनमंधे एक अंगे, विलसे वल्लभ साथ || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -21
- रामत अमें जे जोई, ते थिर थासे निरधारजी । सहु माहें सिरोमण, अखंड ए संसारजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -29
- रामत आंबानी कीजे मारा वालैया, आवी ऊभा रहो लगतां रे । सखियो ज्यारे बल करे, त्यारे रखे कांई तमे डगतां रे || ग्रं - रास, प्र -27, चौ -1
- रामत उडन खाटलीनी, मारा वालाजी आपण कीजे रे । रेत रुडी छे आणी भोमे, ठेक मृग जेम दीजे रे || ग्रं - रास, प्र -28, चौ -1
- रामत करता अंग सह वालिए, सकोमल जोड सोभंत । अंग वाली वचे रंग रस लीजे, भंग न कीजे रामत || ग्रं - रास, प्र -21, चौ -4
- रामत करतां आलिंघण लीजे, ए पण मोटो रंग रे । साथ देखतां अमृत पीजे, एम थाय उछरंग रे || ग्रं - रास, प्र -25, चौ -8
- रामत करतां रंग सहु कीजे, खिण खिण आलिंघण लीजे रे । अधुर तणो जो रस तमे पीओ, तो अमारा मन रीझे रे || ग्रं - रास, प्र -25, चौ -5
- रामत करतालीनी रे, एमा छे वलाका विसमा । बेसवू उठवू फरवू रमवू, ताली लेवा साम सामा || ग्रं - रास, प्र -21, चौ -1
- रामत करती रंगे, चुमन देवंती वंगे । उमंग आवियो संगे, भेली मुख भीडे अंगे, मूके नहीं बाथ || ग्रं - रास, प्र -38, चौ -7
- रामत करे कामनी, विलसतां वाधी जामनी । सखी सखी प्रते स्याम घन, दिए सुख दया करी || ग्रं - रास, प्र -19, चौ -7
- रामत गढ तणी रे, हाथ मांहें हाथ दीजे । बल करीने सहु ग्रहजो बांहोंडी, तो ए रामत रस लीजे || ग्रं - रास, प्र -20, चौ -1
- रामत घणूं रलियामणी, तमे मांगी मन करी खंत । विध सर्वे कहूं विगते, जोपे जुओ नेहेचित || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -11
- रामत जोइए जी, जोवा आव्या छो जेह । मांगी आपणे धणी कने, आ देखाडे छे तेह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -12
- रामत जोई काल मायानी, कालमाया ने आसरी । देखी सुख आ जागनी, जासे ते सर्वे विसरी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -12

SPJIN

- रामत जोवा वाला ते जुआ, ते आगल वाणी थासे विस्तार । माया देखाडी ने वार उघाडी, जावू अछर ने पार || ग्रं - किरन्तन, प्र -70, चौ -3
- रामत मांगी दुखनी, त्यारे कयूं अमें एम । दुखनी रामत तमने, देखाई अमें केम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -22
- रामत रंगे अमें वालाजी संगे, रमू जातां पाणी । आठो पोहोर अटकी अंगे, एह छब एहज वाणी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -29
- रामत साथने रूडी पेरे, देखाडी भली भांतजी । तारतम बुधे प्रकासीने, पूरी ते मननी खांतजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -28
- रामतमां मरजाद म करजो, रमजो मोकले मन । नासी सको तेम नासजो, तमे सुणजो सर्वे जन || ग्रं - रास, प्र -15, चौ -12
- रायण रोइण ने रामण रायसण, लिंबडा लिंबोई लवंग । तज तलसी ने आदूरे एलची, वाले अति सुगंध || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -7
- रास कह्या कछु सुनके, अब तो मूल अंकूर । कलस होत सबन को, नूर पर नूर सिर नूर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -2
- रास खेलते उमेदां रहियां तित, सो ब्रह्मसृष्ट सब आइयां इत । यामें सुरत आई स्यामाजी की सार, मतू मेहेता घर अवतार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -60
- रास तणा सुख सूं कहूं, जाणे मूलगां होय । ए सुख साथ धणी विना, नव जाणे कोय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -93
- रास तणी रे लीला कहूं, जे भरियां आपणे पाय । निमख न कीधी रे निसरता, कांई ततखिण तेणे रे ताय || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -5
- रास तणो सुख सागर, ते तो नव केहेवाणो । पाछल ताण थई घणी, अध वचे लेवाणो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -71
- रास नरसैए रे न वरणव्यो, मारे मन उत्कंठा एह । चरण पसाय रे वालातणे, तमे सांभलो कहूं हूं तेह || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -2
- रास प्रकास छोड़ो जिन खिन, जो बीतक अपनी परवान जी । ए छल तुमसे क्योंए न छूटे, पर मैं ना छोडूं तुमें निरवान जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -3, चौ -7
- रास बरनन भी ना हुआ, तो अछर बरनन क्यों होए। कही न जाए हद में, पर तो भी कहूं नेक सोए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -10
- रास भिस्त या जो कछू, ए सब पैदा असल नूर । तिन असल नूर की क्यों कहूं, जो द्वार आगू हजूर || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -36
- रास भिस्त लेहेरें कही, कही नूर मकान की बिध । आगे तो नूर तजल्ला, सो ए देऊं नेक सुध || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -45
- रास माहे रमाड्या जेणे, प्रगट लीला आ कीधी तेणे । श्री धाम तणा धणी छे जेह, तेड़वा आपण ने आव्या तेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -57

SRJN

- रास मिने खेलाए जिने, प्रगट लीला करी हैं तिने । धनी धाम के केहेलाए, ए जो साथको बुलावन आए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -62
- रास रच्यो रमसूं रूडी भांते, प्रगटिया परमाण । ए सुख सोभा आणी जिभ्याएँ, केम करी करूं वखाण || ग्रं - किरन्तन, प्र -124, चौ -7
- रास रमवाने वालेजी अमारे, आज कीधो उछरंग । नेणे जोई जोई नेह उपजावे, वारी जाऊं मुखारने विंद || ग्रं - रास, प्र -11, चौ -7
- रास रमी घेर आव्या एह, साथ सकल मन अधिक सनेह । कांईक उत्कंठा रही मन सार, तो आपण आव्या आणी वार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -26
- रास रमी घेर आव्या एह, साथ सकलमां अधिक सनेह । तामसी उत्कंठा रही मन सार, तो आपण आव्या बीजी वार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -11
- रास रात बरनन करी, देखो मन विचार । नारायनजी की रात को, कोईक पावे पार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -66
- रास रामत छे नित नवी, केमे नव थाय भंग । साथ रमे सुपनमां, जोगमाया ने रंग || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -25
- रास रामतडी रखे खिण मूको, जे आपण कीधी परमाण जी । तमे घणुए नव मूको माया, पण हूं नहीं मूकू निरवाण जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -3, चौ -7
- रास लीला जो तुम बनमें किध, सो अछर सरूपें ग्रही जाग्रत बुध । ता लीला को ए प्रतिबिंब, जो विष्णुए देखाई रमा को सनंध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -60
- रास लीला सुख अखंड, इत तो ना केहेलाना । पाछल तान हुई घनी, अध बीच लेवाना || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -86
- रास वाणी कया तणो, हतो हरख अपार । वाणी ब्रह्मांडनी सकलमां, रस रहयो ए सार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -52
- रासनी रातनो वरणव, कीधो जुओ रे विचार । नारायणजी नी रातनो, कोईक पामे पार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -53
- रासनी रामत अति घणी, अनेक छे अपार । सघली रामत संभारीने, अमने स्माडो आधार || ग्रं - रास, प्र -11, चौ -12
- रासनो प्रकास थयो, ते प्रकासनो प्रकास । ते ऊपर बली कलस धरूं, तेमां करूं ते अति अजवास || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -1
- रासमां विनोद हांस, हांसमा करूं विलास । पूरतो अमारी आस, करे रंग रेल री || ग्रं - रास, प्र -36, चौ -2
- रासलीला पेहेले करी, जो मिने वृन्दावन । आनंद-कारी जोगमाया, अविनासी उतपन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -10
- राह अंधेरी रात की, सब की चली सरीयत । बैठा दिल पर दुस्मन, लेने न दे हकीकत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -7

- राह चलाई बसरिएँ फुरमाने, दई कुंजी मलकी हकीकत । हकी हक सूरत, किया जाहेर दिन मारफत || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -7
- राह जुदी दोऊ पेड़ से, तो कहा सके कोई कर। उन आड़ो पट अंतर, इनों बाहेर पड़ी नजर || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -20
- राह तौहीद पाई इनों ने, जो राह मस्तकीम सिरात । ए मेहेर मोमिनों पर तो भई, जो तले कदम हक जात || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -132
- राह देखाई तौहिद की, महंमद चढ़ उतर । सो ए तुमारे वास्ते, क्यों न देखो सहूर कर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -34
- राह देखाऊं सबन को, ऐसो बल दियो खसम । सब को फना से बचाए के, लगाए तुमारे कदम || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -9
- राह देखें रूहअल्लाह की, और ढूंढ़ें आखिरी इमाम । हक हकीकत मारफत, चाहे फल कयामत तमाम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -53
- राह दोऊ जुदी पड़ी, दोऊ एक होवें क्योंकर । तरक करी जो मोमिनों, सो हुआ दुनी का घर || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -49
- राह न देखे उपले माएनों, बीच अंधेरी रात । सो ए रहे बीच नासूत के, घेरे पुल-सरात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -42
- राह निपट बारीक है, तिन बारीक पर बारीक । साथें लई लीक जाहेरी, सो उतरी लीक थे लीक || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -17
- राह पकड़े तौहीद की, धरे महंमद कदमों कदम । सो जानो दिल मोमिन, जिन दिल अर्स इलम || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -19
- राह बतावें दुनी को, कहें ए नबिएँ कहेल । लिख्या और फुरमान में, ए खेलें औरै खेल || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -6
- राह रसूल बतावहीं, मेरे अर्स चढ़ उतर । तब तुम महंमद के, कदम लीजो दिल धर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -73
- राह रात की चलाओ सरीयत, ले तरीकत पोहोंचे हकीकत । तब फजर दिल महंमदें, दिन होसी मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -64
- राह रूहानी बिने बातून, न पाइए बिना हकीकत । सो हादी देखाएँ देखिए, गुझ साहेदी बका मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -37
- राह सेहेरग से देखाई नजीक, दई हादिएँ हकीकत । पुल-सरात से फिराए के, पोहोंचाए अर्स वाहेदत || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -86
- रूचिया मेह, बढ़त सनेह, ए समया अति सार । एक केहे सखी सीढ़ियां, दौड़ के चढ़ियां, होत सकल भोम झनकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -42, चौ -13
- रूत ग्रीखम वालाजी विना रे, घणूं दोहेली जाय । पिउजी विना हूं एकली, खिण वरसां सो थाय || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -1

- रूत निस नवो सस, दीसे सहु एक रस । प्रकासियो दसो दिस, न केहेवाय संकेत री || ग्रं - रास, प्र -22, चौ -3
- रूत मांहें रूत वसंत घj रूडी, जेमा मोरे वनराय । विध विधना रंग लेरे वेलडियो, वनतणे कंठडे वलाय || ग्रं - खटरुती, प्र -5, चौ -5
- रूत रंग रस नए नए, अलेखे सदा सुख कहे । सत जमुना त्रट किनारें, दोऊ तरफ बराबर हारें || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -10
- रूत सघली रे हूं घणूं कलपी, पण वालैए न लीधी मारी सार । न जाणूं जीव मारो केम करी राख्यो, नहीं तो नव रहे निरधार || ग्रं - खटरुती, प्र -7, चौ -2
- रूतडी आवी रे मारा वाला, वसंत रूत रलियामणी । तम विना मारा धणी धामना, लागे अलखामणी || ग्रं - खटरुती, प्र -5, चौ -1
- रूतने आवी रे वालैया हेमनी, मेघलियो गयो पोताने घेर आप । रूतने सीतल रे लागे मूने दोहेली, हवे मूने कां न तेडो प्राणनाथ || ग्रं - खटरुती, प्र -3, चौ -1
- रूदे एहना सुत तणे, भागवत अभ्यास । बेहद वाटे आवियो, सुकजी पूरवा साख || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -16
- रूंधी रूदे त्रिगुन त्रैलोकी, बैठा था करके अंधार । अब प्रगटी जोत तलेलागी आकासों, उड़ाए दियो जो थो धुसार || ग्रं - किरन्तन, प्र -54, चौ -6
- रूप रंग अंग छबि सलूकी, कहे वस्तर भूखन । ए केहेते अरवा ना उड़ी, हाए हाए कैसी हुज्जत मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -88
- रूप रंग इत क्यों कहिए, ले मसाला इत का। ए सुकन सारे फना मिने, हक अंग अर्स बका || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -56
- रूप रंग गौर लालक, कहूं नूर जोत रोसन । ए सब्द सारे ब्रह्मांड के, अर्स जरा उड़ावे सबन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -57
- रूप रंग रस दिल चाहे, दिल चाही चित चितवन । दिल चाही अकल इंद्रियां, करें दिल चाही रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -78
- रूप रंग सब नूर के, गुन अंग इंद्री नूर । वस्तर भूखन नूर सबे, नूरै दिए अंकूर || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -72
- रूबरू होना अर्स तन से, इन फना वजूद नासूत । नजीक न होए बिना अर्स तन, नूर लाहूत परे हाहूत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -82
- रूह अंग ना दौड़े मिलन को, ऐसा अर्स खावंद मासूक । मेहेबूब जुदागी जान के, अंग होत नहीं टूक टूक || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -9
- रूह अपनी इन मेले से, जुदी करो जिन खिन । न्यारी निमख न होए सके, जो होए अरवा मोमिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -20
- रूह अल्ला अर्स अजीम से, मो सों आए कियो मिलाप । कहे तुम आए अर्स से, मोहे भेजी बुलावन आप || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -37

- रूह अल्ला ईसा रोसन, असराफील अकल । सूरत साफ जबराईल, आए मेहेंदी में मिले सकल || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -13
- रूह अल्ला उतरे अर्स से, होए काजी लेसी हिसाब । दे दीदार करसी कायम, यों कहे महंमद किताब || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -20
- रूह अल्ला किल्ली अल्लाह थे, ले उतरे चौथे आसमान । सो हम मांहें बैठ के, खोले कुलफ कुरान || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -5
- रूह अल्ला की आवहीं, जो ईश्वरों का ईस । सो इन जिमी में पातसाही, करसी साल चालीस || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -27
- रूह अल्ला की किल्ली से, खुले बका द्वार देहेलान । ए तीन सूरत कही महंमद की, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -42
- रूह अल्ला कुंजी ल्यावसी, मेंहेदी इमामत । दरगाही रूहें आवसी, करसी महंमद सिफायत || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -74
- रूह अल्ला चौथे आसमान से, आए खोली सब हकीकत । ल्याए इलम लदुन्नी, कही सब हक मारफत || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -30
- रूह अल्ला दो जामे पेहेरसी, दूसरे ऊपर मुद्दार । सोई इमाम मेंहेंदी, याकी बुजरकी बेसुमार || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -7
- रूह अल्ला पेहेरी अंदर, हई नहीं जाहेर । दुनियां हिरदे अंधली, सो देखे नजर बाहेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -110, चौ -7
- रूह अल्ला महंमद इमाम, मसरक आए जब । सूरज गुलबा आखिरी, मगरब ऊग्या तब || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -38
- रूह आसिक जिन अंग अटकी, छूटत नहीं क्यों ए सोए । ए किसी बातों आसिक सों, अंग मासूक जुदे न होए । || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -22
- रूह का एही लछन, बाहेर अन्दर नहीं दोए । तन दिल दोऊ एकै, रूह कहियत हैं सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -8
- रूह की नजरों पाइए, जो हक के नजीकी । सो बैठे अपने मरातबे, देवे हक कलाम साहेदी || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -42
- रूह के नैना खोल के, देखें दोऊ गाल । आसिक को मासूक का, कोई भेद गया रंग लाल || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -64
- रूह के नैनों से देखिए, अति मीठे लगें प्यारे । कई रंग रस छबि इनमें, निमख न होए न्यारे || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -41
- रूह केहेलाए छोड़े क्यों अपना, क्यों याद दिए जाय भूल । हकें याही वास्ते, भेज्या अपना नूरी रसूल || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -8
- रूह कौन मोमिन कौन मुस्लिम, कौन रूह कुफरान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -9

SPJIN

- रूह खड़ी करे हुकम, और बेसक लदुन्नी इलम । ना तो रूह कहे क्यों नींद में, हक हैड़ा बका खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -85
- रूह खसम की क्यों रहे, आप अपने अंग बिन । पर पकरी पिया ने अंतर, नातो रहे ना तन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -3
- रूह खसम की क्यों रहे, आप अपने अंग बिन । पर हमें पकड़ी अंतर, ना तो रहे ना तन || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -21
- रूह गई जब अंग थे, तब अंग हाथों जालें । सेवा जो करते सनेहसों, सो सनमंध ऐसा पालें || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -12
- रूह चाहे बका सरूप की, करके नेक बरनन । देखों सोभा सिनगार, पेहेनाए वस्तर भूखन || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -7
- रूह चाहे बका सरूप की, बरनन करूं जिमी इन । इलम लदुन्नी खुदाई से, जो कबहूं न सुनिया किन || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -12
- रूह चाहे बरनन करूं, अखंड सरूप की इत । सुपने में सत सरूप की, किन कही न हक सूरत || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -2
- रूह छाती इनसे कोमल, तिनसे पाँउं कोमल । इत सुख देऊँ मासूक को, सुख यों लेऊँ नेहेचल || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -22
- रूह ठौर है रूह के, ए जो लेती इत दम । सो गया असल जुलमतें, जिनों सुध परी ना हक कदम || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -83
- रूह तन की असल अर्स में, अर्स ख्वाब नहीं तफावत । तो कह्या सेहेरग से नजीक, हक अर्स दुनी बीच इत || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -13
- रूह तेती जागी जानियो, जेता दिल में चुभे हक अंग । जो अंग हिरदे न आइया, रूह के तेती फरामोसी संग || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -20
- रूह तो तेरी दिल बीच में, तो कह्या दिल अर्स । सेहेरग से नजीक तो कह्या, जो रूह दिल अरस-परस || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -83
- रूह देखे अपने इस्क सों, होसी कैसा हक इस्क । कैसा इलम तो को भेजिया, जामें सक नहीं रंचक || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -34
- रूह देखे हक नैन को, नेत्र में गन अनेक । सो गुन गिनती में न आवहीं, और केहेने को नैन एक || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -20
- रूह नैनों दीदार कर, रूह जुबां हक सों बोल । रूह कानों हक बातें सुन, एही पट रूह का खोल || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -68
- रूह बरनन करे क्या होए, जोलों स्वाद न ले निसबत । इस्क इलम जोस हुकम, ए सब मेहेरें पाइए न्यामत || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -35
- रूह बात करे एक हक सों, हक देत पड़उत्तर चार । कुरबान जाऊं हक हादी की, जासों हक करें यों प्यार || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -37

SPJIN

- रूह भूखन हाथ के, हक भेले होत तैयार । ए सोभा जुगल किसोर की, जुबां केहे न सके सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -66
- रूह मिने जुदी जिनसों, कहियत चारों खान । जड़ चलें पेट पांउ परे, लाख चौरासी निरमान || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -31
- रूह मेरी क्यों न आवे तोहे लज्जत, तो को हमें कही अर्स की । अर्स किया तेरे दिल को, तोहे ऐसी बड़ाई हकें दई || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -1
- रूह विरहा खिन एक ना सहें, सो अब चली जात मुद्दत । अर्स रूहें यों भूल के, क्यों छोड़ें हक मारफत || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -84
- रूह सबों में पसरी, थावर और जंगम । पेड़ याको जुलमत, मलकूत में खसम || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -27
- रूह सुख हर एक बात का, हकसों अर्स में लेवत । सो सुख सुन रूहें सबे, दिल अपने देवत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -107
- रूह सूरत नहीं तत्व की, जो वस्तर पेहेन उतारे । नूर को नूर जो नूर है, कौन तिनको सिनगारे || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -26
- रूह हकसों बात विचार कर, दिल परदा दे उड़ाए । रूह बातें वतन की, कर मासूक सों मिलाए || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -71
- रूह-अल्ला आए अर्स से, मुझ सों किया मिलाप । कहे मैं आया तुम वास्ते, मुझे भेज्या है आप || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -25
- रूह-अल्ला आया रूहन पर, उतर चौथे आसमान । सब सुध लाहूती ल्याइया, जो लिख्या बीच फुरमान || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -2
- रूह-अल्ला कहे अर्स से, तेरी रूह आई उतर । मैं दई बका तोहे न्यामत, अव्वल से आखिर || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -28
- रूह-अल्ला डिंन्यूं निसानियूं, जे लिख्यूं मय फरमान । से सभ मिडाए दाखला, करे डिंनाऊं पेहेचान || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -1
- रूह-अल्ला सब रूहन को, पाक कर देखें आकीन । कुफर दज्जाल को तोड़ के, बेसक करें एक दीन || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -17
- रूहअल्ला अर्स अजीम से, नूर आला ले आए। सो ए नूर कोई क्यों कर, सकेगा छिपाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -24
- रूहअल्ला आप उतर, इलम ल्याए हक । तिन समझाई सब उमतें, हक कौल बेसक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -118
- रूहअल्ला ईसा मसी, नूर नाम तारतम । मूल बुध असराफील, ए हमारी मिने हम || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -69
- रूहअल्ला ईसे का नूर, महंमद हुकम सदा हजूर । ए इमाम की सब कही सिफत, मोमिन मुतकी दोऊ साथें उमत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -15

- रूहअल्ला एता कहियो, तुम मांग्या सो फरामोस । जब इस्क ज्यादा आवसी, तब आवसी माहे होस || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -30
- रूहअल्ला करी बन्दगी, तिन में उनकी मैं। तो गुनाह कया इन पर, इन मैं मांग्या हक पे || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -10
- रूहअल्ला की मेहेर से, उपज्यो एह इलम । और महंमद की मेहेर थे, सुध कहूं माया ब्रहम || ग्रं - किरन्तन, प्र -65, चौ -9
- रूहअल्ला दज्जाल को मारसी, छोड़ावसी उमत । कर एक दीन चरन देखावहीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -48
- रूहअल्ला ने मेहेर कर, दिया खुदाई इलम । सब सुध भई अर्स की, रूहें बड़ी रूह खसम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -9
- रूहअल्ला पेहेनें जामें दोए, ए लिख्या कुरान में सोई होए । ए लिख्या छठे सिपारे माहें, धोखे वाला जाए देखे तांहें || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -8
- रूहअल्ला भेद तिलसम का, रूहों देवे बताए । तबहीं रूहों के दिल से, फरामोसी उड़ जाए || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -45
- रूहअल्ला मुरदे उठावत, हक का हुकम ले । आखिर अपने हुकम उठावहीं, मोमिन महंमद के || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -44
- रूहअल्ला रोसन ज्यादा कह्या, दूजा अपना नाम । एक बदले बंदगी हजार, ए करसी कबूल इमाम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -9, चौ -6
- रूहअल्ला सुभाने भेजिया, रूहें अर्स अपनी जान । पिउ प्यारे भेजी रूह अपनी, तुम क्यों ना करो पेहेचान || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -1
- रूहअल्ला सों बका मिने, हकें करी मजकूर । उतरी अरवाहें अर्स से, बुलाए ल्याओ हजूर || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -2
- रूहअल्लाएं ई चयो, पांण न्हारे कढ्यू तिन । पांण से न्हारे न कढयूं, आंऊं हुइस गाल में इन || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -13
- रूहसी पुजी न सगे, आयो न्हाएमें इलम । जा सहूर करियां इलम, त हित जरो न रे हुकम || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -30
- रूहें अंदर अर्स अजीम के, जो अरवा बारे हजार । हक ऊपर बैठ देखावत, ए जो खेल कुफार || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -62
- रूहें अर्स अजीम की, जाकी हक हादी सों निसबत । ए हमेसा बीच अर्स के, हक जात वाहेदत || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -51
- रूहें अर्स अजीम की, ताए लगे ना कोई नुकसान । ऐसा खेल देखाऊं तुमें, जो कछू ना रहे पेहेचान || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -37
- रूहें अर्स अजीम की, पांचमी भोम पौढ़त । सो सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -10

- रूहें अर्स अजीम की, फौज असराफील फरिस्तन । दोऊ गिरो उतरी दोऊ अौ से, खेल फरिस्तों का देखन || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -35
- रूहें अर्स अजीम की, भोम चौथी देखें निरत । सो हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -9
- रूहें अर्स अजीम की, भोम छठी कई जुगत । सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -11
- रूहें अर्स की कदम भूलियाँ, तिन पर रूह अपनी भेजत । अर्स बातें केहे समझावहीं, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -5
- रूहें अर्स की कहें वेद कतेब, बिन कुंजी क्योंए न पाइयत । सो रूहअल्ला बेसक करी, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -71
- रूहें अर्स बुधजी बिना, छल का पावे न कोई कित । ए सहूर भी दिल न आवहीं, बिना असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -47
- रूहें अर्स भूलीं नासूत में, ताए हक रमूजें लिखत । सो सब मोमिन समझहीं, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -3
- रूहें अर्स भोम सातमी, जो छपर-खटों हींचत । सो सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -12
- रूहें अर्स रब् इत आइयां, देखो कौन कदम ग्रहे जीतत । सो क्यों बिछुरें इन कदम सों, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -56
- रूहें अर्स से उतरी, बीच लैलत कदर । तिनमें रूहअल्लाह की, भेजी सिरदार कर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -4
- रूहें अर्स से लैलत कदर में, हक हकमें उतरे बेर तीन । सुध खास गिरो न महंमद, कहे हम महंमद दीन || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -23
- रूहें अव्वल आखिर इतहीं, मोमिन ना दूजा ठौर । कहे चौदे तबक जरा नहीं, बिना वाहेदत ना कछू और || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -12
- रूहें असल हक कदमों, है अर्स में सूरत । तो कहे हक हादी रूहे, अर्स की वाहेदत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -45
- रूहें असीं निद्रमें, न तां घणां लाड घुरन । अंई जाणोथा सभ की, जे हाल आए रूहन || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -26
- रूहें आइयां अर्स अजीम से, दई नुकते इलमें जगाए। और उमेदां सब छोड़ाए के, हमें आपमें लैयां लगाए || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -97
- रूहें आइयां खेल देखने, आए महंमद मेहेंदी देखावन । तीनों हादी खेल देखाए के, दोऊ गिरो ले आवे वतन || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -19
- रूहें आइयां जुदे ठौर से, और जुदा ही चलन । दुनियाँ राह क्यों ले सके, जिन राह मह होवें मोमिन || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -35

- रूहें आइयां बीच दुनी के, धरे नासूती वजूद । रूहें चाल न छोड़ें अपनी, जो कदी आइयां बीच नाबूद || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -64
- रूहें आसिक सोई लाहूती, जाके अर्स-अजीम में तन । कहया हके दोस्त रूहें कदीमी, जो उतरे अर्स से मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -28
- रूहें इन कदम के वास्ते, जीवते ही मरत । सो क्यों छोड़ें प्यारे पांउं को, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -59
- रूहें इस्क मांगें धनी पे, पकड़ धनी के कदम । जो छोड़े इन कदम को, सो क्यों कहिए आसिक खसम || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -22
- रूहें उतरी अपने तनसे, और कहया उतरे अर्स से । तन दिल अर्स एक किए, हमें कदम धरे दिल में || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -22
- रूहें उतरीं नूर बिलंद से, कदम नासूत में भूलत । तिन पर रसूल होए आइया, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -2
- रूहें उतरी नूर बिलंद से, खलक पैदा जुलमत । दुनी दिल अबलीस कया, दिल मोमिन हक वाहेदत || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -21
- रूहें उतरी लैलत कदर में, सो उमत रबानी जान । इनको हिदायत हक की, ए दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -3
- रूहें उन मुलक से, फिर ना सकें वतन । फरेब क्योंए ना छूटहीं, हक के इस्क बिन || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -77
- रूहें उन वाहेदत की, ताए फरेब न रहे नजर । सो क्यों पड़े फरेब में, देखो सहूर कर || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -27
- रूहें उमत कही लाहूती, और फरिस्ते जबरूती । और आम खलक तारीक से, सो सब कुंन से मलकूती || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -51
- रूहें कदम पकड़ें हक के दिल में, पैठ इस्क ठौर ढूंढ़त । दिल मोमिन अर्स तो कहया, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -17
- रूहें कदम भूली नासूत में, हक ताए भेजे इसारत । ताको हादी केहे समझावहीं, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -4
- रूहें कही बारे हजार, बुजरकी को नहीं सुमार । जिनकी इच्छासों फरिस्ता होए, बड़ा सबन का कहिए सोए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -17
- रूहें कहें एक दूजी को, जिन अंग जुदा करो कोए । इन विध रहो लपटाए के, सब एक वजूद ज्यों होए || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -29
- रूहें कहें सब मिल के, हक के आसिक हम । इस्क पूरा है हम में, ए नीके जानो तुम || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -8
- रूहें कहें हाँसी होसी अति बड़ी, तुम हूजो सबे हुसियार । क्यों ए न भूलें आपन, जो खेल जोर करे अपार || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -20

- रूहें खाना पीना रोजा सिजदा, इन कदमों हज-ज्यारत । और चौदे तबक उड़ावहीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -75
- रूहें खेल देखे वास्ते, भिस्त दई सबन । द्वार खोल मारफत के, करसी जाहेर हक बका दिन || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -20
- रूहें खेलें अर्स के बाग में, कई पस् पंखी खेलावत । सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -15
- रूहें खेलें टापू के गुरज में, जाए झरोखों बैठत । सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -31
- रूहें खेलें फूल बाग में, कई खुसबोए रस बेहेकत । सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -41
- रूहें खेलें मलार बन में, हक हादी की सोहोबत । ए क्यों छोड़ें चरन मोमिन, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -10
- रूहें खेलें लाल चबूतरे, कई रंगों हाथी झूमत । सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -46
- रूहें खेलें हक हादी सों बन में, नूर बिजलियां चमकत । सो क्यों रहे हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -13
- रूहें गिरो कही लाहूती, और फरिस्ते जबरूती । और गिरो जो तीसरी, जो कही मलकूती || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -25
- रूहें गिरो तब इत आईं नहीं, तो यों करी सरत । कया खुदा हम इत आवसी, फरदा रोज कयामत || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -28
- रूहें गिरो तिनमें मिल गई, हक बका न जाने तरफ । चौदे तबक फना बीच, कोई कहे न बका एक हरफ || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -57
- रूहें गिरो दरगाह बीच, अर्स अजीम जेताई । एही अर्स दिल हकीकी, महंमद के भाई || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -97
- रूहें चाहिए आसिक हक के, और आसिक बड़ी रूह के । और बड़ी रूह भी आसिक हक की, सीधा इस्क बेवरा ए || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -6
- रूहें चोण सभे मुंहके, हाणे आउं चुआं के केह । न पसां न सुणियां संडेहडो, डिंने पेरे हेठ परडेह || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -29
- रूहें जो दरगाह की, हक जात वाहेदत । ए जाने अर्स अरवाहें, जिन मोमिनों निसबत || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -58
- रूहें झूलें जब नूर में, तब अर्स नूर झलकार । बोलें नूर पड़छंदे नूर मन्दिरों, होत हाँसी नूर अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -95
- रूहें तन मांहें अर्स बका, और अर्स में बैठे बोलत । तो नजीक कहे सेहेरग से, देखो मोमिनों हक हिकमत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -88

- रूहें तन हादीय का, हादी तन हैं हक । नूर तन नूर-जमाल का, इत जरा नाहीं सक || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -37
- रूहें तीसरी भोम चढ़के, बड़े झरोखों आवत । सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -5
- रूहें दम बिछोहा न सहें, जो होए बका की असल । रूह हादी की चलते, अरवा आगू हीं जाए चल || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -47
- रूहें दिल सब एकै, नए नए इस्क तरंग । पिएं प्याले फेर फेर, मांहों मांहें करें प्रेम जंग || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -33
- रूहें दिल हकीकी, कहे अर्समें तन । अर्स जिनों के दिल कहे, सोई रूहें मोमिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -52
- रूहें देखें झूठ फरेब को, कई भांत तमासा । लाख विधों कई खोजहीं, कोई पावे ना खुलासा || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -44
- रूहें दौड़ें नूर हाल में, नूर देखें सब ठौर । फेर आइए नूर द्वार ने, नाहीं नूर बिना कछू और || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -56
- रूहें द्वार एक दौड़ के, चौथे जाए निकसत । प्रतिबिंब उठें कई तरफों, कोई काहूं ना पकरत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -18
- रूहें नींद से जगाए के, पिलावत प्याले फूल । मुंह पकड़ तालू रूह के, देत कायम सुख सनकूल || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -5
- रूहें नैन पुतलियों बीच में, हक कदम राखत । एक हुए दिल अर्स रूहें, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -21
- रूहें पसी मूं द्रियूं, रई न सगे रे रांद । कां न विचारे पांण के, मूं सिर केहो कांध || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -8
- रूहें पांण न विचारियूं, हिन इलम संदो हक । से कीं न करे पूरी उमेद, जे में न्हाए सक || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -43
- रूहें फरिस्ते अर्स के, सोई महंमद दीन । तिनमें सकसुभे नहीं, नूर पूर आकीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -101
- रूहें फरिस्ते दो गिरो, तिन दोऊ के दो मकान । एक इस्क दूजी बंदगी, राह लेसी अपनी पेहेचान || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -9
- रूहें फरिस्ते पैगंमर, सुध होवे नूर मकान । सो नूर छोड़ आगे चले, तब होवे पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -27
- रूहें फरिस्ते वास्ते, खेल किया चौदे तबक । दुनी सक लिए खेलत, किन तरफ न पाई बका हक || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -78
- रूहें बड़ी रूह नूर में, नूर हक के सदा खुसाल । हक नूर निसदिन बरसत, नूर अरस-परस नूरजमाल || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -50

- रूहें बड़ी रूह सों मिलके, बहस किया हकसों । हम तुमारे आसिक, इस्क है हम मों || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -2
- रूहें बसत इन कदमों तले, जासों पाइए पेहेचान । सब रूहें नूर इन अंग को, ए नूर अंग रेहेमान || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -143
- रूहें बात सुनते हक की, तुरत ही करें सहूर । जब सहूर रूहें पकड़े, तो इस्क क्यों न करे जहूर || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -95
- रूहें बारे हजार नूर बड़ी रूह के, बड़ी रूह नूर खसम । ए ठौर बेसक देखिया, बिना नहीं तले तेरे कदम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -67
- रूहें बारे हजार बैठाए के, हक हाँसी को खेलावत । सो रूहें कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -3
- रूहें बिहारे रांदमें, पाण बेठा परडेह । सुध न्हाए के रूह के, रांद न अचे छेह || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -2
- रूहें बेनियाज थी, बीच दरगाह बारे हजार । जाने ना आप अर्स की, साहेबी अपार || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -46
- रूहें बैठी हिल मिल के, याके जुदे जुदे वस्तर । केते रंग कहूं साड़ियों, निपट बैठियां मिल कर || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -21
- रूहें भूलियां खिलवत खेल में, ताए रूह अल्ला इलम ल्यावत । सो कायम करे त्रैलोक को, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -8
- रूहें मलार अर्स बाग में, ऊपर सेरड़ियां गरजत । रूहें सुपने पांउं न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -12
- रूहें मिलावा अर्स बाग में, देखो किन विध ए सोभित । रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -23
- रूहें मिलावा नूर में, बीच कठेड़ा नूर भर । थंभ तकिए सब नूर के, कछू और ना नूर बिगर || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -46
- रूहें मोमिन इत आई नहीं, तिन वास्ते नहीं गना । पर एता गुनाह लगत है, इनों में जेता हिस्सा अर्स का || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -159
- रूहें रब्द कर बैठियां, जानें सामी हाँसी करें हकसों । पर हकें हाँसी ऐसी करी, सुध जरा न रही किनमों || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -30
- रूहें रमें किनारे जोए के, हक हादी रूहें झीलत । सो सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -21
- रूहें रहें अर्स दरगाह में, जो दरगाह नूर-जमाल । ए किया बयान खिलवत का, हाए हाए रूह रही किन हाल || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -86
- रूहे रहें दरगाह बीच में, प्यारी परवरदिगार। खासलखास कही इनको, सिफत न आवे माहे सुमार || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -7

- रूहें राज स्यामाजी बिराजत, निपट सोभा है इत । ऊपर तले बीच सुन्दर, खूबी-खुसाली करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -23
- रूहें रेहेवें अर्समें, जो सुख झरोखों भोगवत । सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -15
- रूहें लगाइयां अपने सरूप में, और भी अपनी सिफत । दिल अर्स मोमिन लीजियो, कहे रूह मता हुकमें महामत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -31
- रूहें लग्यूं जडे रांदमें, विसर वेओ घर । आसमान जिमी जे विच में, अर्स बका न के खबर || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -6
- रूहें सराब हक सुराही का, पैदरपे पीवत । बेहोस हुए न छोड़ें कदम, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -19
- रूहें सिर पर कदम चढ़ाए के, अर्स मोहोलों में मालत । सब हक गुझ रूहें जानहीं, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -19
- रूहें सुध ना एक दूजी की, ना मिनों मिनें पेहेचान । याद बिना जात मुद्दत, काहूं सुपने न आवें सुभान || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -35
- रूहें सुनो एक मैं कहूं, जो हमें करी मुझसों । पड़ी थी जल अंधेर में, कोई थाह न थी इनमों || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -41
- रूहें सुनो तुम संदेसे, मैं ल्याया तुम पर । जो रब्द किया माहें बका, सो ल्याओ दिल भीतर || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -46
- रूहें सुन्दर सनकूल मुख, नहीं सोभा को पार । घट बढ़ कोई न इनमें, एक रस सब नार || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -16
- रूहें सुपने दुनी को न लागहीं, जा को मुरदार कही हजरत । ए हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -16
- रूहें हजूर लई पट खोल के, बीच अर्स बका वतन । याद हादी सोई देत हैं, जो कहे हके सुकन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -11
- रूहें हजूर लई पट खोल के, बीच अर्स बका वतन । याद हादी सोई देत हैं, जो कहे हके सुकन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -23
- रूहें हमेसा रेहेत हैं, अर्स बका दरगाह मिने । ए रदबदल हकसों, करी उतरते तिने || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -100
- रूहें हिन जिमीय में, द्रापे न के भत । ई जाणी लिके मूंह थी, हियडो केयां सखत || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -42
- रूहें हुकम ले दौड़ियो, मूल तन अर्समें उठत । हक हँससी तुम ऊपर, रूहें क्यों भूली ए निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -19
- रूहें होवें जिन किन खिलके, हक प्रगटे सुनत । आए पकड़ें कदम पल में, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -61

- रूहों अक्स कहे नई भिस्त में, ताए असल रूहों के तन । सो अरवा अर्स अजीम में, उठें अपने बका वतन || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -18
- रूहों ऐसा खेल देखाऊं मैं, जित झूठे झूठ पूजत । ढूंढें अव्वल आखिर लग, तो हक न कहूं पाइयत || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -16
- रूहों ऐसी आई दिल में, कोई खेल है खूबतर । खेल देख हक वतन, आप जासी बिसर || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -35
- रूहों कहया हक हादीय सों, हम तुमारे आसिक । तुम हमारे मासूक, इनमें नाहीं सक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -24
- रूहों के दिल कछू ना हुता, कछू कहें न मांगे हक से । ना कछू चित्त में चितवन, ना मुतलक रूहों मन में || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -8
- रूहों को अर्स देखावने, उलसत मेरे अंग। करने बात मासूक की, मावत नहीं उमंग || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -47
- रूहों को ऐसी न चाहिए, अर्स की कहावें हम । सहूर करके देखिया, तो हम किया बड़ा जुलम || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -21
- रूहों को खेल देखाइया, विध विध हुकम कर । आप बांध्या हुकम का, होए रसूल आया आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -48
- रूहों को हकें बेसक, भेज्या पैगाम बेसक । इस्क बेसक ले आइयो, भेजी बेसक रूह बुजरक || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -62
- रूहों तीन बेर खेल देखिया, बीच बैठे अपने वतन । बड़ी दरगाह अर्स अजीम की, जित असल रूहों के तन || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -52
- रूहों दिल चाहे बोलत, दिल चाही सोभा सुन्दर । दिल चाहे पेहेरे भूखन, दिल चाहे वस्तर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -75
- रूहों फरिस्तों वजूद धरे, जोस धनी का ले उतरे । रात नूर भरी कही ए, जित रूहअल्ला के तन जो कहे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -24
- रूहों मैं-रे तुमारा आसिक, मैं सुख सदा तुम चाहों । वास्ते तुमारे कई विध के, इस्क अंग उपजाओं || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -1
- रूहों लई हकीकत मारफत, गिरो फरिस्तों हकीकत । आम खलक जाहेरी, जो करम कांड सरीयत || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -8
- रूहों लज्जत मांगी हकपे, अर्स की दुनियां माहें । तो इलम दिया सबों अपना, बिना इलम लज्जत नाहें || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -23
- रूहों सबों इस्क का, किया बड़ा मजकूर । इस वास्ते बेवरा इस्क का, मुझे देखलावना जरूर || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -35
- रूहों हक अर्स नजरों, कम नजर खेल मांहें । अर्स नजीक रूहों को खेल से, इत धोखा जरा नाहे || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -11

SPJIN

- रूहों हक छाती चुभ रही, सो देवे लज्जत अरवाहों को । असल सुख सागर भयो, देखें अर्स आराम सबमों || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -83
- रूहों हक पे मांगी लज्जत, सो क्यों रहें देखे बिगर । कोट गुनी देखावें लज्जत, जो रूहों मांगी प्यार कर || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -26
- रूहोंका होसी मिलाप, जो बीच दरगाह के आप । होसी अल्ला का दीदार, मिलसी तीनों इत सिरदार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -10, चौ -9
- रे ऊधव तं भली रे वधामणी लाव्यो, अमारे काजे सूलीने सांणसियो लई आव्यो । ऊधव तें तो अक्रूर पर इंडू रे चाव्यो, उधव ते दुखडा धणूंज देखाड्यो । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -15, चौ -4
- रे ऊधव राख तूं कने तारूं डापण, पिउजी नहीं मूकू अमें एवी पापण । ताताने म दिए वली वली तापण, सखियो हवे समझ्या संदेसडे आपण || ग्रं - खटरुती, प्र -15, चौ -6
- रे ऊधवडा अमारा धणी अम पासे, तारी मत लई जा रे तूं साथे । अधखिण अलगो न थाए अमथी नाथ, विरह माहें विलसं वालैया संघात || ग्रं - खटरुती, प्र -15, चौ -10
- रे ऊधवडा अमारो धणी अममा गलियो, तमे आवतांते सांसो सर्वे टलियो । ऊधव तारी बातें चित अमारो न चलियो, विरह वधारी ऊधव पाछो वलियो । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -15, चौ -12
- रे ऊधवडा तूं एटलं जाण निरधार, ऊधव तूंने नथी रे बीक° करतार । एणी मते पामीस नहीं तूं पार, तूं पण तारा धणीसो विछडीस आवार । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -15, चौ -5
- रे ऊयवडा विरह मा नंदनो कुंअर, एणी अमकने खरी रे खबर । विरह मा जोयो लाधे ततपर, ते ऊधव अमे भूलूं केम अवसर । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -15, चौ -11
- रे कते जे उथिए, त तो पर केही । कां कंनी ही निद्रडी, भोरी घरे साथ नेई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -27, चौ -5
- रे जीव जी जिन करो यासों नेहड़ा । जाको सनमुख नाहीं सरम, तासों नाहीं मिलवे को धरम । ए तो भुलवनी कोई भरम, कोहेड़ा सों लाग्यो करम || ग्रं - किरन्तन, प्र -33, चौ -1
- रे जीव जी तुमें लागी दाझ मुझ बिछड़ते, पर मैं खाक हुई तुम बिन । तुम मोही सों न्यारे भए, मोहे राखी नहीं किन खिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -1
- रे जीव नीके जानिए ए भुलवनी, इत भूले सब कोए । या रंग रसें जे भूलहीं, तिन करड़ी कसौटी होए || ग्रं - किरन्तन, प्र -33, चौ -14
- रे जीव सरीर मंदिर सोहामनों, चौदे खुने रे अवास । इनके भरोसे जे रहे, ते निकस चले निरास || ग्रं - किरन्तन, प्र -33, चौ -3

- रे जीव सरीर रची सेजड़ी, इत आवे नींद अपार । ए सूतेही पटकावहीं, पुकार न पीछे बहार || ग्रं - किरन्तन, प्र -33, चौ -12
- रे पिरीयम, मंगां सो लाड करे । एहेडी किजकां मुदसे, खिलंदडी लगां गरे || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -1
- रे पिरीयम, मंगां सो लाड करे । हेडी किजकां मुदसे, खिलंदडी लगां गरे || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -1
- रे पिरीयम, हथ तोहिजडे हाल । आए डी वेरां उथणजी, हांणे पसां नूरजमाल || ग्रं - सिंधी, प्र -2, चौ -1
- रे मन त्रिखा न बूझे तेरी झांझुए, प्रतिबिंब पकस्यो न जाए। ज्यों जलचर जल बिना ना रहे, जो तूं करे अनेक उपाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -24, चौ -2
- रे मन भूल ना महामत, दुनियां देख तूं आप संभार । ए नाही दुनियां बावरी, ए रच्यो माया ख्याल || ग्रं - किरन्तन, प्र -24, चौ -1
- रे मन सुपन का घर नींद में, सो रहे न नींद बिगर । याको कोट बेर परबोधिए, तो भी गले नहीं पत्थर || ग्रं - किरन्तन, प्र -24, चौ -4
- रे मन सृष्ट सकल सुपन की, तूं करे तामें पुकार । असत सत को ना मिले, तूं छोड़ आप विकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -24, चौ -3
- रे मूढ़मती या फंद में उरझे, उपजत नहीं विचार । आप न चीन्हें घर ना सूझे, न लखें रचनहार || ग्रं - किरन्तन, प्र -22, चौ -5
- रे यामें केते आप कहावें स्याने, पर छूटत नहीं विकार । स्यानप लेके कंठ बंधाए, या छल रच्यो है नार || ग्रं - किरन्तन, प्र -22, चौ -4
- रे रूह करे ना कछू अपनी, के तूं उरझी उमत माहें । उमर गई गुन सिफत में, तोहे अजूं इस्क आया नाहे || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -1
- रे वाला भलुं थयु रे भ्रांतडी भागी, हारे तारे संदेसडे अमे जागी । हारे एणे वचने रूर्द आग लागी, हवे अमे जाण्यूं चोकस अमने त्यागी । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -15, चौ -3
- रे वाला मारा सियालो सुखणियो मागे, पिउजीना सुखडा मां सारी रात जागे । वालाजीने विलसे रे वड भागे, अमने तो मंदिरियो मसांण थई लागे || ग्रं - खटरुती, प्र -9.2, चौ -6
- रे वाला मारे मंदिरिए आवी ने आरोग, हारे अम विरहणियो ना टालो रे विजोग । हां रे सुंदर सेजडीनो आवी लेओ भोग, एता सकल तमारो संजोग || ग्रं - खटरुती, प्र -9.3, चौ -6
- रे वालाजी श्रावणियो सलसलियो, आभलियों आवीने भोमे लडसडियो । चहु दिस चमके गरजे गलियो, पिउडा तूं हजिए कां अमने न मलियो । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -9.6, चौ -5

- रे विरही तमे विरणियो ने कां न संभारो, नंद कुंअर नेहडो छे जो तमारो । वाला मारा दोष घणो रे अमारो, पिउजी तमे एणी विधे अमने का मारो । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -9.2, चौ -2
- रे हूँ नाहीं अंग इंद्री ग्यान ब्रह्मचारी, ब्रह्मांड न लगत वचन । रूप रंग रस धात में नाहीं, गुन पख दिवस ना रैन || ग्रं - किरन्तन, प्र -11, चौ -4
- रे हूँ नाहीं करामात मत अगम निगम, धरम न करम उनमान । सुपन सुषुप्त जाग्रत न तुरिया, तप न जप न ध्यान || ग्रं - किरन्तन, प्र -11, चौ -3
- रे हूँ नाहीं नवधा में मुक्त में भी नाहीं, न हूँ आवा गवन । वेद कतेब हिसाब में नाहीं, न मांहें बाहेर न सुंन || ग्रं - किरन्तन, प्र -11, चौ -6
- रे हूँ नाहीं न्यारा जहां हूँ तहां नजीक में, ना हूँ उनमनी आकार । ना हूँ दृष्टें किन सुनिया री सृष्टे, न हूँ निराकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -11, चौ -7
- रे हूँ नाहीं व्रत दया संझा अगिन कुंड, ना हूँ जीव जगन । तंत्र न मंत्र भेख न पंथ, ना हूँ तीरथ तरपन || ग्रं - किरन्तन, प्र -11, चौ -2
- रे हूँ नाहीं सब्द सोहं जो तत्व पांचमें, ना खट चक्र सिर पवन । त्रिकुटी त्रिवेनी तीनों ही काल में, ना अनहद अजपा आसन || ग्रं - किरन्तन, प्र -11, चौ -5
- रे हो तूं कर तेरी होत अबेरी, आप न देखे उरझाना । अब तूं छोड़ सकल बिध, जात अवसर तेरा जान्या || ग्रं - किरन्तन, प्र -23, चौ -4
- रे हो दुनियां को तूं कहा पुकारे, ए सब कोई है स्याना । ए मदमाती अपने रंग राती, करत मन का मान्या || ग्रं - किरन्तन, प्र -23, चौ -1
- रे हो दुनियां बावरी, खोवत जनम गमार । मदमाती माया की छाकी, सुनत नाहीं पुकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -22, चौ -1
- रे हो बोहोत दिन बिगूती यामें, कर कर ग्यान गुमाना । चुप कर चतुराई लिए जात है, तूं न कर निंदा न बखाना || ग्रं - किरन्तन, प्र -23, चौ -3
- रे हो याही फंद में साध संतरी, पुकार पुकार पछताना । कोई कहे दुनियां बुरी करत है, कोई भली कहे भुलाना || ग्रं - किरन्तन, प्र -23, चौ -2
- रेत किनारे जोए पर, और रेत जिमी पर जेती । ताल पाल कई मोहोलों पर, कहूं जल खूबी केती || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -78
- रेत झलके आंगने, दूध चरी चूल्हा आगल । आईजी इन ठौर बैठें, और बैठे सखियां मिल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -21
- रेत झलके मांडवे, आगल दूध चूलो चरी । आईजी एणे ठामे बेसे, बेसे सखियो सहु घेरी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -11
- रेत सेत जमुना जी तलाव, कई ठौर बन करें विलास । इस्क के सारे अंग भीगल, रेहेस रंग विनोद कई हाँस || ग्रं - किरन्तन, प्र -89, चौ -3

- रेत सेत सोभा धरे, वृंदावन मंझार । सकल कलानो चंद्रमा, तेज धरा धरे अपार || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -31
- रेहूँ नाही रे हूँ नाहीं सिध साध संत री भगत, नाहूं वैष्णव अपरस आचार । जात कुटम कुल नीच ना ऊंच, ना हूँ बरन अठार || ग्रं - किरन्तन, प्र -11, चौ -1
- रेहे ना सकों में रूहों बिना, रूहें रेहे ना सकें मझ बिन । जब पेहेचान होवे वाको, तब सहे ना बिछोहा खिन || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -5
- रेहेवे निरगुन होए के, और आहार भी निरगन । साफ दिल रूह मोमिन, कबहूं न दुखावे किन || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -24
- रेहेवे निरगुन होए के, और आहार भी निरगुन । साफ दिल सोहागनी, कबहूं ना दुखावे किन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -6
- रेहेवे निरगुन होए के, और निरगुन खान पान । नजीक न जाए बदफैल के, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -29
- रोई तो भी जाहेर, पुकारी जोस खुमार । जो देते रंचक बातूनी, तो होती खबरदार || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -36
- रोए पांच तत्व तीन गुन, निरंजन निराकार । रोई द्वैत पुरूख प्रकृती, पट उड़यो अंतर आकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -75, चौ -11
- रोए हँसे हारे जीते, ईमान या कुफर । जरा न हुकम सुध बिना, बंदगी या मुनकर || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -19
- रोम रोम कई कोट अवगन, ऐसी मैं गुन्हेगार । ए तो कही मैं गिनती, पर गुन्हे को नाहीं सुमार || ग्रं - किरन्तन, प्र -41, चौ -10
- रोम रोम बीच रमि रया, पिउ आसिक के अंग । इस्कें ले ऐसा किया, कोई हो गया एकै रंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -91, चौ -17
- रोम रोम सूली चढूं, सब अंग निकसे फूट । ऐसी करूं जो आप से, तो भी अवगुन एक ना छूट || ग्रं - किरन्तन, प्र -41, चौ -13
- रोम रोम सूली सुगम, खंड खंड खांडा धार । पूछ पिया दुख तिनको, जो तेरी विरहिन नार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -4
- रोम रोम सूली सुगम, खंड खंड खांडा धार । पूछ पिया दुख तिनको, जो तेरी विरहिन नार || ग्रं - सनंध, प्र -7, चौ -4
- रोवे लोहू आंखों आंझू चले, सो कहा भयो रोवनहारे । देखत ही पिउ चलना, निकस न पड़े तारे रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -8
- रोसन करसी आपे अपना, जो सैयां जमातदार । ए कौल अव्वल जोस का, जो किया है करार || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -5
- रोसन किल्ली दई हमको, यों कर किया हुकम । खोल दरवाजे पार के, इत बुलाए लीजो सृष्टब्रहम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -2, चौ -14

SRJN

- रोसन बिना सूरज कह्या, ऊग्या दिलों पर जे । सो आई पुकार मगरब से, देखो निसान जाहेर हुए ए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -10, चौ -3
- रोसनाई नूर बुध की, रही न किसी की हाम । बारहीं सदी संपूरन, ब्रह्मांड ने पायो इनाम || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -23
- रोसनी इन दरखत की, पेड़ डार या पात । नूर इन रोसन का, अवकास में न समात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -5
- रोसनी पटुके करी अवकास में, चरन भूखन जामें इजार झांई । कहें महामती मोमिन रूह दिल को, मासूक बँचे तोहे अर्स मांहीं || ग्रं - किरन्तन, प्र -112, चौ -5
- रोसनी पार के पार की, दई साहेब नाम धराए । भई दुनियां साफ मुसाफ से, मुझसे कजा कराए || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -24
- रोसी इनहीं हाल में, वास्ते हाँसी के । मुदा" सब हाँसीय का, फरामोसी का जे || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -29

ल

- लई ईसे महंमद की साहेदी, बका जाहेर किया इमाम । हक हादी रूहन की, करी खिलवत जाहेर तमाम || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -52
- लई चरण ने भेल्या नेणां, वाले जोयं विचारी चित रे । वटकी चरण ने लीधां वेगलां, जाणी इंद्रावती रामत रे || ग्रं - रास, प्र -37, चौ -8
- लई चारे वाछरू वन, मांहोंमाहें गोवाला जन । हाथ मांहें वांसली लाल, माहे रामत करे रसाल || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -22
- लई तारतम अजवायूँ सार, वली श्रीजी आव्या आवार । जाणे रखे केहेने उत्कंठा रहे, साथ ऊपर एटलूं नव सहे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -11, चौ -6
- लई लड़ाई सैयां तिनसों, जाए पड़ियां बंध । ना रस्सी ना बांधे जिने, पर छूट ना सके कोई फंद || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -53
- लईने वधावा सांचरी, भवन भवन थी नार । गाए ते गीत सोहामणां, साजे छे सकल सिणगार || ग्रं - किरन्तन, प्र -51, चौ -3
- लकब इद्रीस जान्या गया, सौ साल की मजल । जित तीस वरक खुदाए के, हुए थे नाजल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -9, चौ -11
- लख गुणा डिए सिर पर, सो वराके ई गाल । असीं फरामोस तो हथमें, कौल फैल जे हाल || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -16
- लखमी नारायन जुदे ना अंग, सो तो भेले विष्णु के संग । ए पांचो कहे मैं तिन कारन, चित ल्याए देखो याके वचन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -15
- लखमीजी उठो तत्काल, दया करी स्वामी दयाल । अब जिन तुम हठ करो, आनंद अंतस्करन में धरो || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -48

- लखमीजी उठो तत्काल, दया कीधी स्वामी दयाल । हवे रखे तमे हठ करो, आनंद मनमां अति घणो धरो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -48
- लखमीजी कहे सुनो अब राज, मेरे आतम अंग उपजत दाझ । नहीं दोष तुमारा धनी, अप्राप्त मेरी है घनी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -34
- लखमीजी को आसा थी घनी, जानों विछोहा ना देसी धनी । अब चरनों लाग लखमीजी चले, प्यादे पांउ रोवे कलकले || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -37
- लखमीजी तहां श्रोता भई, कई विध कसनी कर कर रही । तो भी न पाया एक वचन, तुम धाम धनी ले बैठे धन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -64
- लखमीजी तिहां श्रोता थया, केटलू खप करीने रया । तोहे न पाम्या एक वचन, अने तमे कीहू लई बेठा छो धन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -59
- लखमीजी परनाम कर आए, भगवानजी तब सनमुख बुलाय । लखमीजी चलो जाइए घरे, तब फेर रमा बानी उचरे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -45
- लखमीजी लगे चालो सही, तेडी आविए तिहां लगे जई । त्यारे आव्या चाली श्री भगवान, लखमीजी बेठा जेणे ठाम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -44
- लखमीजी सेवे दिन रात, एहेनी छे मोटी विख्यात । जे जीव वांछे पोते हेत घर, ते सेवे श्री परमेस्वर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -15
- लखमीजी सेवे दिन रात, सो ए कहूं तुमको विख्यात । जो चाहे आप हेत घर, सो सेवे श्री परमेस्वर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -15
- लखे भते न्हास्यम, खुदी वंजे न किये केई । हे मूर मंझा की निकरे, जा कांधे डेखारई बेई || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -1
- लखे भते लिखियां, कई इसारतें रमूनें । सभ हकीकत मूकियां, भाइए मान किए समझें || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -11
- लग कठेड़े तकिए, क्यों कहूं तकियों रंग । बारे हजार दाब बैठियां, एक दूजे के संग || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -97
- लग कठेड़े रूहें बैठत, कई रंग जवेरों जोत । बीच बैठे मासूक आसिक, जल बन आकास उद्दोत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -42
- लग रहे हक कदम को, सोई रूह अर्स की। ए रस अमृत अर्स का, कोई और न सके पी || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -10
- लग लग होए के बैठत, ऊपर छज्जों के आए। आगूं उठत ऊँचे फुहारे, जल झलकत मोती गिराए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -6
- लगता बट घाट के, चारों खूटों चार हार । सो चारों तरफों बराबर, दो जल पर दोए किनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -16, चौ -8
- लगाए सब रब्द, व्याकरण वाद अंधकार । या बुधे बेसुध हुए, विवेक खाली विचार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -3

- लगाए सब रब्द, व्याकरण वाद अन्धकार । या बुधे बेसुध हुए, विवेक खाली विचार || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -5
- लगाड्या सहु रब्दे, व्याकरण वाद अंधकार । एणी बुधे सहु बेसुध कीधां, विवेक टाल्या विचार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -3
- लगी वाली और कछू न देखे, पिंड ब्रह्मांड वाको है री नाहीं । ओ खेलत प्रेमे पार पियासों, देखन को तन सागर माहीं || ग्रं - किरन्तन, प्र -9, चौ -4
- लगी सो लगी आतम अंदर लगी, यों अंतर आतम जगी जुदी न होए । सरभर भई पर आतम यों कर, यो तेहे दिली मिली छोड़ सके न कोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -115, चौ -3
- लगोगे जो दुख को, तो दुख तुमको लागसी । याद करो जो निज सुख, तो दुख तुमथें भागसी || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -26
- लघु दीरघ पिंगल चतुराई, एह तो किवने छे बड़ाई । एनो अर्थ हूं जाणू सही, पण आ निधमां ते सोभे नहीं || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -3
- लज्या कहे हूं घणुए भूली, हवे वालाजीतूं मुख केम मेनू । दुस्तर ऊपर आगज उठो, जेणे भूलवी मूने पेहेलूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -99
- लटक रही केलां जोए पर, अति खूबी खूबतर । ए सुख कब लेसी इन घाट के, खेलें विध विध जानवर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -33
- लटके गाए ने लटके नाचे, लटके मोडे अंग । लटके रामत रेहेस लटके, लटके सांई लिए संग || ग्रं - रास, प्र -24, चौ -7
- लटके चटके छटके दोडजो, रखें पग पाछां देतां । हाँसी छे घणी ए रामतमां, दोड तणो रस लेतां || ग्रं - रास, प्र -20, चौ -7
- लटके बाजू बन्ध फुन्दन, झलकत झाबे अपार । कई नंग रंग एक झाबे में, सो एक एक बाजू चार चार || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -28
- लटी तिन से न होवहीं, जो कहे सिरदार । सबों सिरदार एक होवहीं, मिने बारे हजार || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -16
- लड़ फिरके जुदे हुए, हिंदू मुसलमान । और खलक केती कहूं, सब में लड़े गुमान || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -10
- लड़कपने सुध न हुती, तो भी मोमिन मूल अंकूर । कोई कोई बात की रोसनी, लिए खड़े थे जहूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -20
- लथ बथ, हथ सथ, अंग संग, रंग बंग चंग, चोली चूथी, भाजी भूसी, हांसी सांसी, जाणी पाणी, नैणी माणी, वदू वाणी, रहोजी होजी, माजी काजी, भाखू जाखू, रंगे राखू, समारूं सिणगार जी || ग्रं - रास, प्र -42, चौ -2
- लदुन्नी से पाइए, जो है इलम खुदाए । खोज खोज सबे हारे, आज लो इप्तदाए || ग्रं - खुलासा, प्र -6, चौ -10

- लपतो छपतो आवे छे, सखियो सावचेत थाइए। आणीगमां जो आवे वालो, तो इहां थकी उजाइए || ग्रं - रास, प्र -15, चौ -7
- लंबा चौड़ा चारों हांसों, बराबर दोरी बंध । अनेक रंग बन इतका, सोभित अनेक सनंध || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -84
- लम्बी डारें ऊंचा बन, कई भांत हिंडोले झूलन । तीन घाट कहे सो देखाऊं, सुनो तीनों बनों के नाऊं || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -23
- लर खीज रोए रोलावहीं, दुख देखे दोऊ जन । जागे पीछे जो देखिए, तो कमी न मांहें किन || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -17
- लरी सुन्दरबाई पिउसों, इन आगम के कारन । पर पाया नहीं पड़ उत्तर, एक आधा भी सुकन || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -20
- ललित लाल मुख सागर, कहूं अचरज के अदभूत । क्यों कर आवे बानीय में, ए बका सूरत लाहूत || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -8
- लवने केस कानों पर, तिन केसों का जो नूर । आसमान जिमी के बीच में, जोत भराए रही जहूर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -39
- लवा लवाना अर्थ जुजवा, द्वादसना प्रकार । मूल अर्थने मुझवी, बांध्या अटकले अपार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -6
- लसकर असुरों का चहुं दिस फैलया, बाढ़यो अति विस्तार । बन ने जंगल रे हिंदू रहे पर्वतों, और कर लिए सब धुन्धुकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -12
- ला फना सब ला करें, और इला बका ग्रहें हक । ए कलमा हकीकत मोमिनों, और हक मारफत बेसक || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -50
- ला मकान का सागर, लग तले तेहेतसरा । ऐसे अंधेर अथाह बीच पैठ के, मोहे काढ़ी होए मरजिया || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -46
- ला मकान सुन्य के परे, हुआ नूर अछर । कोट ब्रहमांड उपजे खपे, एक पाउ पल की नजर || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -53
- ला मकान सुन्य निरगुन, छोड़ फना निरंजन । छर अछर को छोड़ के, ए ताको मंगला चरन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -2, चौ -20
- ला याही को केहेवहीं, इला भी याही को। सब कोई गोते खात हैं, ला इला के मों || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -30
- ला हवा मलकूत पर, ला पर नूर मकान || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -9
- ला हवा से तेहेतसरा लग, ए सब खेल में पातसाह एक । कहे या बिन और कोई नहीं, एही है एक नेक || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -22
- लाइलो नंद जसोमती, रोहिनी बलभद्र बाल । पालक पुत्र कल्यानजी, वाको पुत्र गोपाल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -24

- लांक तो दीसे अति लेहेकतो, रेखा सोभित अति पायजी । टांकण चूंटीने कांडा कोमल, पीडी ते वरणवी न जायजी || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -6
- लांक सलूकी दोऊ कदम की, लाल एड़ी निपट नरम । गौर रंग रस भरे, जुबां क्या कहे सिफत कदम || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -6
- लाख ऊपर चौबीस हजार, कहे उठे बंदों के । पैगाम दिए इनों आखिर, जो बका पट महंमदे खोले || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -115
- लाख चोरासी हत्या बेससे, एवो आ जनम तमारो । बीजी हत्यानों पार नथी, जो ते तमें नहीं संभारो || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -67
- लाख चौरासी जीव जंत, ए बांधे सबे निरवान । थिर चर आद अनाद लों, ए भरी सो चारों खान || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -13
- लाख बेर देखो फेर, न पावे कड़ी कल । पाई नहीं त्रिगुन ने, कर कर गए बल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -76
- लाख ब्रह्मांड की दुनी का, है हिकमत बल बुद्ध जेता । दे दिल नजरों तौलिया, मैं लिया अंदर में एता || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -12
- लाख वार जुए फरी, एक कडी नव लाधे । ब्रह्मांडना धणियो महें, पग मूकतां बांधे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -63
- लागन हिंदू मुसलमान, गजनवी महमूद सुलतान । ढ़ाए हिंदुओं के खाने बुत, दिल में इमाम की ज्यारत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -2
- लागसो जो दुखने, तो दुख तमने लागसे । मूल सुख संभारसोरे, तो दुख पाछा भागसे || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -26
- लागी बरखा नूर की, चौदे तबक चौफेर । अंतर माहें बाहेर, कहूं पैठ न सके अंधेर || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -75
- लागी लड़ाई आप में, एक विरहा दूजी आस । ए भी विरहा पिउ का, आस भी पिउ विलास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -4
- लागी लड़ाई आप में, एक विरहा दूजी आस । ए भी विरहा पिउ का, आस भी पिया विलास || ग्रं - सनंध, प्र -10, चौ -5
- लांचे तो तिहां नव छुटिए, सगा न ओलखाण कोय । मार भंडा छे जमदूत ना, दया ते पिंडं ने न होय || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -37
- लाठी तेरे लोक पर, संजम पुरी सिरदार । जो जाने नहीं जगदीस को, तिन सिर जम की मार || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -34
- लाठी तेरे लोक पर, संजमपुरी सिरदार । जो जाने नहीं जगदीस को, तिन सिर जम की मार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -32
- लाड असांजा रांदमें, तो पूरा सभ केयां । जाहेर तो मुकाबिले, हितरे बंग रया || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -24

- लाड कोड आसा उमेदूं, आंऊं चुआं मूं माफक । पारण वारो मूं धणी, कायम अर्स जो हक || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -36
- लाड कोड आसां उमेदूं, रूहें सभ दिलमें आईन । पण तूं जे ताणिए पांण अडूं, त तोके ए भाईन || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -42
- लाड कोड तो हथमें, संग या सांजाए । जडे तडे तूंही डिए, बेओ कोए न कितई आए || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -17
- लाड़ कोड़ सभे त परे, जे से गडजे हित । वडो सुख थिए साथ के, मंगां जांणी निसबत || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -86
- लाड़ हमारे अर्स के, हम से न छूटें खिन । अक्स हमारे के अक्स, क्यों लगे दाग तिन || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -17
- लाड़बाई के जुत्थ की, इत बोहोत खेल करत । बाहेर अंदर चौक में, बन मोहोलों सुख लेवत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -5
- लाडलियां लाहूत की, जाकी असल चौथे आसमान । बड़ी बड़ाई इन की, जाकी सिफत करें सुभान || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -1
- लाडलो नंद जसोमती, रोहिणी बलभद्र बाल । पालक पुत्र कल्याणजी, तेहेनो ते पुत्र गोपाल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -14
- लानत उतरी अजाजील से, सब कायम हुए तले नूर । हुई हैयाती सबों हुकमें, उग्या रोसन अर्स बका सूर || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -57
- लानत जो अजाजील की, ले अबलीस बैठा दिल । सो राह न लेने देवे बातून, जो जोर करें सब मिल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -6
- लानत हुई तिन को, हुआ गले में तौक । यों सब जाहेर पुकारहीं, तो भी छोड़ें ना वे लोक || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -11
- लाल अधुर कहे मासूक के, सो दिलें भी देखी लालक । ए देख लोहू मेरा क्यों रह्या, सूक न गया मांहें पलक || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -101
- लाल अधुर हँसत मुख हरवटी, नासिका तिलक निलवट भौहें केस । श्रवन भूखन मुख दंत मीठी रसना, ए देख दरसन आवे जोस आवेस || ग्रं - किरन्तन, प्र -112, चौ -3
- लाल उज्जल दोऊ रंग लिए, बीड़ी लेत मुख अंगुरी नरम । नेक मुख मूंदे बोलत, अति सुन्दर मुख सरम || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -44
- लाल जिमी नूर लाल बन, सोभित पसु नूर लाल । लाल जानवर लाल पर, रंग फल फूल सब गुलाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -48
- लाल जुबां दंत अधुर, हरवटी गौर हँसत । जब बातून नजरों देखिए, तब रूह सुख पावत || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -29
- लाल तकिए ऊपर सोभित, धरे बराबर एक दोर । नरमों में अति नरम है, पसम भरे अति जोर || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -23

SPJIN

- लाल तिलक निलवट दिए, अति सुन्दर सुखदाए । असल बन्या ऐसा ही, कई नई नई जोत देखाए || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -74
- लाल नरम उज्जल अंगुरी, फना टांकन चूंटी काड़ों । आठों जाम रस बका, पोहोंचे रूह के तालू मों || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -16
- लाल नीले पीले रंग कई, सोभे छेड़ों बीच किनार । जामें चादर मिल रही, लेहेरी आवत किरने अपार || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -72
- लाल नीले सेत स्याम रंग, किनार बेल कटाव । सात रंग छेड़ों मिने, क्यों कहूं जुगत जड़ाव || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -87
- लाल पाग बांधी लटकती, कछु ए छबि कही न जाए । पेच दिए कई विध के, हिरदे सों चित्त ल्याए || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -53
- लाल बाला अर्स धात का, करड़े बने चार चार । इन मोती और लाल की, रूह देख देख होए करार || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -44
- लाल रंग मुख अधुर, तंबोल अति सोभाए । ए लालक हक के मुख की, मेरे मुख कही न जाए || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -15
- लाल लसणिया नीलवी गोमादिक, साढ सोलू कंचन । फूल पांखडियो मणि जवेरनी, मध्य जड्या छे रतन || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -40
- लाल लांके लाल एड़ियां, पांउं तली अति उज्जल । ए पाउं बसत जिन हैयड़े, सोई आसिक दिल || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -17
- लाल साड़ी कई नकस, माहें अनेक रंग के नंग । मिहीं नकस न होवे गिनती, करें जवेर माहें जंग || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -53
- लाल साड़ी कटाव कई, कई छापे बेली नकस । क्यों कहूं छेड़े किनार की, सोभित अति सरस || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -32
- लाल सेंथे जोत जवेर की, दोए पटली समारी सिर । बनी नंगन की कांगरी, बल बल जाऊं फेर फेर || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -44
- लालक इन अधुर की, हक कबूं दिलों देखावत । बंध बंध जुदे होए ना पड़े, मेरा हैड़ा निपट सखत || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -97
- लाहा तो ना लेवहीं, पर सामी हांसी होए । अब ए हांसी सोहागनी, जिन कराओ कोए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -29
- लाहा तो ना लेवही, पर सामी हांसी होए। ए हांसी अर्स के मोमिन, जिन कराओ कोए || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -58
- लाहा लीजे दोनों ठौर का, सुनो मोमिनों कहे महामत । क्यों सुपने ए चरन छोड़िए, अपनी असल निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -21
- लाहूत बका फना नासूत, ए तौल देखो दोए । चिरकीन जिमी से निकस के, क्यों न लीजे बका खुसबोए || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -102

- लिए माएने ऊपर के, एते दिन इन जहान । मूल माएने पाए बिना, सुध ना पड़ी बिरिध हान || ग्रं - सनंध, प्र -3, चौ -2
- लिए रंग लटके, घुटावे अधुर घटके, वली वली सटके । खांत घणी खटके, रमवा रंगे रास री || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -2
- लिख भेजी रमूजें इसारतें, दो गिरो तीन सूरत पर । दूसरा बका की न खोल सके, ए वाहेदत गुझ खबर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -9
- लिख भेज्या फरमान में, हक रमूजें इसारत । सो पाइए इलम हक के, जब खुले हकीकत मारफत || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -49
- लिखते गुन धनी हिरदे आए, पर डरूं जानों कागद में न समाए । कलमों को मेरा जीव ललचाए, गढ़ते गढ़ते जानों जिन उतर जाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -25
- लिखना बाकी जिलद का है, सो तले तरजुमें लिखना कहे । जुदियां कर मिलाइयां जंजीर, सो कौन पावे बिना महंमद फकीर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -21
- लिखियां ए बुजरकियां, ए जो कहियां बीच आखिरत । सो कहें हाथ हमारे, दुनी फल पावसी कयामत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -11
- लिखियां सब बड़ाइयां, तिन सब सिर हक हुकम । सो सब आमर दई हाथ रूहन, इनों दिल अर्स कर बैठे खसम || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -39
- लिखी अनेकों बुजरकियां, पैगंमरों के नाम । ए मुकरर सब महंमद पे, सो महंमद कया जो स्याम || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -37
- लिखी अन्दर की इसारतें, और रमूजें जे । कुन्जी भेजी हाथ रूह अल्ला, जाए दीजो अपनी अरवाहों को ए || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -50
- लिखी इनों की बुजरकी, मुसाफ मांहें सिफत । बीच महंमद की हदीसों, लिखी बड़ी इज्जत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -53
- लिखी इसारतें रमूजें, निसान हकीकत । सुध कछू तुमें न परे, भूलोगे मेरी न्यामत || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -16
- लिखी इसारतें रमूजें, हकें किन ऊपर । ए बातें मोमिनों मिनें, हाए हाए छिपी रही क्यों कर || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -34
- लिखी कुरानमें हकीकत, होसी खोले एक दीन । जब ऊग्या सूर मारफत का, आवसी देख सबों आकीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -2
- लिखी तीनोंकी अकलें, और तासों पाए जो फल । सो लिखी बीच आयतों मुसाफ, सो देखो मोमिन अर्स दिल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -101
- लिखी फकीरी ताले मिने, अपने हादी के। कदम पर कदम धरें, मोमिन कहिए ए || ग्रं - किरन्तन, प्र -118, चौ -16
- लिखी बड़ाई पैगंमरों, तिन की कहां गई नसीहत । अजूं ठाढ़ी उनों की उमतें, देखो पत्थर आग पूजत || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -41

- लिखी हकें इसारतें रमूजें, सो किन खोली न फिरस्ते इंसान । सो दुनी सब बेसक हुई, ए दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -41
- लिखे आयतों हदीसों, हक के सुकन । समझेगी सोई रूह, जाके असल अर्स में तन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -8
- लिखे निसान कौल कयामत के, ले माएने बातन । सो माएने मगज पाए बिना, समझ न परी किन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -15
- लिखे पहाड़ कर ईसा महंमद, ए निसान आखिर के । हक बका अर्स देखावहीं, दिन जाहेर करसी ए || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -17
- लिखे सब माएने बातन, सो हनोज लो ना खोले किन । सब खूबियां हैं बातन, खुले मगज सबों भई रोसन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -35
- लिखे सबों के मरातबे, ए जो बीच फुरकान । सो ए जाने रूहें मोमिन, या जाने हादी सुभान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -38
- लिखे हरफ सारे कहे, ए जो लिखे हरफ नांहें । अब सो ए करूं मैं जाहेर, जो रसूल के दिल मांहें || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -100
- लिखों हकीकत खिलवत की, आखिर होसी जो सब । कहां से लिख भेज्या कौन खसमें, कहोगे आए हम कब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -52
- लिख्या अठारमें सिपारे, ले ऊपर के माएने सो हारे । ऊपर माएने ले देवे सैतान, जाको कहिए बेफुरमान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -20
- लिख्या अपने हाथों तेहेकीक, गई चारों हक न्यामत । सिर देखें राह गजब की, क्यों न अजूं आवत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -9
- लिख्या अमेतसालून में, बड़ाई रूहन । देखो इत दिल देय के, निसा करो मोमिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -48
- लिख्या अव्वल फरमान में, जाहेर होसी कयामत । जो लों होए इलम मुकैयदरे, तोलों जाहेर न हक मारफत || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -54
- लिख्या आगम कदीम का, सो आए मिल्या दिन । याही सदी आखिर की, पुकार करे सब जन || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -16
- लिख्या आम सिपारे सूरत, आठई मांहें मजकूर कयामत । सौह करी साहेब आसमान, ए इसारत बारहीं सदी में निदान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -21, चौ -1
- लिख्या आयतों सूरतों, और हदीसों मांहें । हादी इन महंमद बिना, और कोई किन सिर नाहें || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -78
- लिख्या इन बिध जाहेर, तो भी पावें न खेल कबूतर । अकल न पोहोंचे इनों की, सो भी लिख्या लिखन हारे यों कर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -60
- लिख्या ऐसा कुरान में, कुँआरी रही फुरकान । ए दाग गिरो तब देखसी, हाए हाए होसी जब पेहेचान || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -38

- लिख्या कुरान का माजजा, और नबी की नबुवत । एक दीन जब होवहीं, दोऊ तब होवे साबित || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -75
- लिख्या चारों पैगंमर, सरत अपनी आए। तिनों भी सिर हुकम, ल्याए हैं बजाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -6
- लिख्या चौथे सिपारे, ए चौदे तबक कहे जे । ए जरे जेता नहीं, दो टूक होवें जिनके || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -89
- लिख्या चौथे सिपारे, सुख उमत को खुदा के सारे । कहे मक्के के काफर, आराम करते बीच घर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -1
- लिख्या जाहेर कुरान में, और माजजे सब रद । सांचा माजजा इमाम पे, जो ले उतस्या अहमद || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -3
- लिख्या जाहेर हदीस में, नूर झण्डा निसान । सो हदीस देखे सेंती, करसी दिल पेहेचान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -12
- लिख्या जो रसूल ने, तिन तो कह्या अगम । तबक चौदे ख्वाब के, न्यारा रह्या खसम || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -2
- लिख्या था जो अव्वल, सो आए पोहोंची कयामत । भिस्त दुनी को देय के, हादी ले उठसी उमत || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -64
- लिख्या दरिया नींद इसारतें, जो देखाई कर मेहेरबानगी । मोहे रूह अल्ला पट खोलिया, दई महंमदें मेयराज में साहेदी || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -62
- लिख्या दरिया मीठा मिश्री से पाक, तित कह्या मुरग चोंच में खाक । गिरो फरिस्तों करी इसारत, खाक वजूद नूर खिलकत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -11
- लिख्या दिन बका मुसाफ में, खोले बातून होसी फजर । लिए हकीकत हैयाती, बका सुख पावें आखिर || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -69
- लिख्या नामे मेयराज में, हरफ नब्बे हजार । तीस तीस तीनों सरूपों पर, दिए जुदे जुदे अखत्यार || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -4
- लिख्या नूर नामें मिने, रूह मुरग किया गुसल । पर झारे बूंदें गिरी, सो खड़े हुए पैगंमर मिल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -113
- लिख्या फलाने सिपारे, इबराहीम के अमलमें । और मुसलमान कोई ना हुता, तो लई वारसी जहूदोंने || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -101
- लिख्या फलाने सिपारे, ऐसी खुस न कबूं आवाज । ए फरिस्ता कबूं न आइया, ए जो आया आज || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -3
- लिख्या फलाने सिपारे, दिन हुए तोबा नफा नाहें । जो अव्वल आया नूर झंडे तले, सो आया गिरो नाजी मांहें || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -5
- लिख्या बीच कुरान के, हक करें आप जो चाहे । दई पातसाही बनी इस्माईल को, लई बनी असराईल से छिनाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -20

- लिख्या बीच कुरान के, हक करें आप जो चाहे । दई पातसाही बनी इस्माईल को, लई बनी असराईल से छिनाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -8
- लिख्या मांहें नामें नूर, जाए देखो महंमद का जहूर । आरिफ कहावें मुसलमान, पावें नहीं हिरदा कुरान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -1
- लिख्या यों फरमान में, सब आवेंगे पैगंमर । जासी जलती दुनियां सब पे, कोई सके न मदत कर || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -37
- लिख्या वेद कतेब में, ए चौदे तबक कहे जे । बंझापूत सींग खरगोस, बोहोत भाँतों कह्या ए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -109
- लिख्या वेद कतेब में, सोई खोलें जिन सिर खिताब । देसी मुक्त सबन को, करके अदल हिसाब || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -51
- लिख्या सखत सौं खाए के, गया हमसों ईमान मुसाफ । सो हादिएँ देखाया झंडा अपना, करसी हिंद में हक इन्साफ || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -43
- लिख्या सब कुरान में, माएने मगज सब्द । क्या समझें अव्वल कतार जो, दुनी बांधी जाए मांहें हद || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -43
- लिख्या सिपारे अठारमें, कुरान माजजा नबी नबुवत । एक दीन जब होएसी, तब होसी साबित || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -34
- लिख्या सिपारे आखिरे सात दसमी सूरत, रोसन करान लिखी हकीकत । मोमिनों का लिख्या मजकूर, सो ए कहूं सब देखो जहूर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -1
- लिख्या सिपारे आठमें, तो लों पढ़या नहीं करान । मगज मुसाफ पाए बिना, सुध ना नफा नुकसान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -59
- लिख्या सिपारे आठमें, मोमिनों की हकीकत । हुई ढील फजर वास्ते, करी जाहेर गैब खिलवत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -15
- लिख्या सिपारे चौदमें, गिरो भांत है तीन । महंमद समझाओ तिनों त्यों कर, जिनों जैसा आकीन || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -61
- लिख्या सिपारे तीसरे, इबराहीम पूछा हक से । ए जो मरत है दुनियां, क्यों कर मुरदे उठे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -106
- लिख्या सिपारे तीसरे, ले देखो हक अकल । सरा तोरा बनी असराईल का, हके दई बनी इस्माईल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -55
- लिख्या सिपारे तीसरे, होसी खोलें हकीकत । एक दीन होसी सबे, कही इन सरत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -64
- लिख्या सिपारे दूसरे, कहे असराफ मूसा एक हम । महंमद मेला और कर, देखें क्यों चलावे हुकम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -38
- लिख्या सिपारे दूसरे, बखत नूह पैदास । तब कही सब कुफरान, इसलाम न गिरो कोई खास || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -94

- लिख्या सिपारे सूरतों, और आयतें देखो जाए । कयामत कलाम अल्लाह में, ठौर ठौर दई बताए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -9, चौ -1
- लिख्या सूरज मारफत का, होसी जाहेर महंमद से । आई अर्स रूहें गिरो अहमदी, किए जाहेर जबराईलें || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -18
- लिख्या है कतेब में, पाया न किन ठौर । ना फरिस्तों ना नबियों, तो क्यों पावे कोई और || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -1
- लिख्या है कतेब में, सोई करूं मजकूर । एक फिरका पावेगा, जिन को तौहीद जहूर || ग्रं - खुलासा, प्र -6, चौ -11
- लिख्या है कुरान में, कुलफ किए दिल पर । परदा कानों आंखों पर, तो न सके अर्थ कर || ग्रं - खुलासा, प्र -14, चौ -14
- लिख्या है कुरान में, छिपी गिरो बातन । सो छिपी बातून जानहीं, ए धाम सैयां लछन || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -17
- लिख्या है फरमान में, खुदा एक महंमद बरहक । तिनको काफर जानियो, जो इनमें ल्यावे सक || ग्रं - खुलासा, प्र -6, चौ -12
- लिख्या है फरमान में, मेंहेंदी आवेगा आखिर । उड़ाए मारसी दज्जाल को, राह देसी सीधी कर || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -41
- लिख्या है फुरमान में, करसी कुरबानी मोमिन । अग्यारे सै साल का, सो आए पोहोंच्या दिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -2
- लिख्या है फुरमान में, खुदा काजी होसी आखिर । जरे जरे हिसाब लेय के, पोहोंचावे किसमत कर || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -35
- लिख्या है हदीसमें, मोमिन असल अर्स मांहें । ताको मोमिन जिन कहो, जाकी असल अर्समें नाहें || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -86
- लिख्यो आं फरमान में, रमूनें इसारत । भत्ती भत्ती ज्यूं गालियूं, सभ अर्सजी हकीकत || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -4
- लिबोई केल के घाट जो, ताके सिरे मिले आए इत । बुजरक बन मधुबन का, मिल्या जोए किनारे जित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -80
- लिया दुनी पे ईमान, और दुनियां की बरकत । बैंच लिया कुरान को, और फकीरों की सफकत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -28
- लिया लदुन्नी जिनने, सो क्यों सोवे कबर माहें । जिने मूल सरूप देख्या अपना, उठ जागे सोवे नाहें || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -84
- लिया हाथ हिसाब याही वास्ते, हक रूहों पर हाँसी करत । हक हादी रूहें रूह अल्ला, होसी हाँसी इन खिलवत || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -69
- लीकें सोभित हथेलियां, रंग उज्जल कहूं के गुलाल । रूह थें पलक न छूटहीं, अंग कोमल नूरजमाल || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -49

- लीकें हथेली उज्जल, सलूकी पोहोंचों ऊपर । ए बेवरा केहेते अकल, हाए हाए अरवा रेहेत क्यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -57
- लीजो मूल को भाओ रे भाओ, जिन छोड़े अपनो चाहो रे चाहो । प्रेमें पकड़ पिउ के पाए रे पाए, ज्यों सब कोई कहे तोको वाहे रे वाहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -35, चौ -18
- लीला इन अवतार की, करसी सब अखंड । धंन धंन इन अवतार की, वानी गासी सब ब्रह्मांड || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -17
- लीला कीधी जे वालए, आपणा लीजे तेहेना वेख । अग्यारे वरस लगे जे रम्या, कांई रामत एह वसेख || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -46
- लीला तीनों थिर होएसी, अखंड इन प्रकार । निमख एक ना विसरसी, रेहेसी दिल में सार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -101
- लीला दोऊ दोनों ठौर, भांत दोऊ पर नाहीं और । फिरते अछर के जो बन, लीला एकै देखियत भिंन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -58
- लीला दोऊ पेहेले करी, दूजे फेरे भी दोए। बिना तारतम ए माएने, न जाने कोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -126
- लीला सुकें बरनन करी, बृज रास बखाना । बेहद की बानी बिना, ठौर ठौर बंधाना || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -60
- लुगे लुगे के जुदे माएने, द्वादस के प्रकार । उरझाए मूल माएने, बांधे अटकलें अपार || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -7
- लुगे लुगे के जुदे माएने, द्वादस के प्रकार । उलटाए मूल माएने, बांधे अटकलें अपार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -5
- लुगे लुगे के माएने, जो कोई निकसे बोल । ए कजा तब होवहीं, जब दीजे माएने सब खोल || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -52
- लूचे कई मुंडे, कई बढ़ावें केस । कई काले कई उजले, कई धरें भगुए भेस || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -14, चौ -7
- ले गरब खड़े होवहीं, जाने हम ही मेर समान । ना सुध भारी हलके, कहें हम मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -38
- ले ग्वाही दोऊ हादियों की, किया हक बरनन । सब कौल किताबों के, हक हुकमें किए पूरन || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -35
- ले चरन दिल अर्स में, सब गलियों में फिरत । सब सुध होवे अर्स की, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -20
- ले चलसी सब साथ को, पार बेहद घर । पीछे अवतार बुध को, सब करसी जाहेर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -17
- ले जिमी से ऊपर मोहोल मानिक, कम ज्यादा कहूं नाहें । सरभर सोभा सब इमारतें, जल बन हिंडोले मोहोलों माहे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -3

SRJIN

- ले तरीकत पोहोंचे मलकूत, सो किन लई न जाए । करे बोहोत दौड़ आप वास्ते, ले निजस न ऊंचा चढ़ाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -56
- ले दौड़े रोसनी दासानुदास, ले जाए पवन ज्यों उत्तम बास । इस्क न खाने देवे स्वांस, ज्यों अगनी न छोड़े दाना घास || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -40
- ले नूर नुकते की रोसनी, मैं ढूंढ़े चौदे भवन । इनमें कहूं न पाइया, माहें त्रैलोकी त्रैगुन || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -42
- ले पंडिताई पड़ी प्रवाह में, कर कर ग्यान गोष्ट । न्यारा हुआ न नेहेकाम होए के, मैं लिया न निरगुन पुष्ट || ग्रं - किरन्तन, प्र -101, चौ -4
- ले फरमान जो हाथ में, केहेलाया मैं रसूल । ए देखो अरवाहें अर्स की, जिन कोई जावें भूल || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -9
- ले बड़ाई बैठे थे अपनी, सो छुड़ाए दिए हथियार । ठीक काहूं न लगने देऊं, जाको कछुक अंकूर सुध सार || ग्रं - किरन्तन, प्र -120, चौ -10
- ले बाजे रूहें खड़ी, मृदंग जंत्र ताल । रंग रबाब चंग तंबूरा, बोलत बेन रसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -53
- ले बैठा हुकमें साहेबी, जाकी असल कतरा नूर । सो सरमाए के पीछा हट्या, अपना देख अंकूर || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -16
- ले ले छुरी पेट डारही, आकीन न आया अंग । कही बात नबिऐं खुद की, हाए हाए लग्या न तासों रंग || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -12
- ले साख धनी फुरमान की, महामत कहें पुकार । समझ सको सो समझियो, या यार या सिरदार || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -23
- लें सुख चेहेबच्चे भोम दूसरी, मोहोल बारे सहस्त्र जित । सो क्यों छोड़ें रूहें कदम को, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -4
- ले हकी सूरत हक इलम, करसी जाहेर हक बिसात । खिलवत भी छिपी ना रहे, करे जाहेर वाहेदत हक जात || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -27
- ले हिसाब दई हैयाती, कह्या वास्ते महंमद नूर । भिस्त तो कही तले नूर के, रखे दिल बीच बका जहूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -91
- ले हिसाब सबन पे, करसी कजा अदल । भिस्त देसी सचराचर, कर साफ सबन के दिल || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -24
- लेकिन, नहीं समझेंगे, इनमें हिंद के मुस्लमान || ग्रं - सनंध, प्र -2, चौ -2
- लेखू देसे जम दूत ने, जे कीबूं छे आंहीं वेपार । साचूं झूठू तरत जोसे, ए धरमराज वेहेवार || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -35
- लेत तले से गुलाटियां, चढ़त जात आसमान । उतरें भी गुलाटियों, फेर फेर गुलाटों दे तान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -94

- लेत सोभा अर्स जिमिएँ, जब साहेब होत अस्वार । ए जिन देख्या सो जानहीं, औरों पोहोंचे नहीं विचार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -62
- लेनी हकीकत हक की, और देनी इन लोकन । आसिक को ए उलटी, जो करत हैं आपन || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -6
- लेने को बुजरकियां, जमात मारी समसेर । मारे मराए यार अस्हाबों, ऐसा फितने किया अंधेर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -20
- लेने को बुजरकियां, सेवें चातरी चैन । सेवा करत सब खैच की, ए यों लगे दुख देन || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -6
- लेने लज्जत इस्क वास्ते, दई फरामोसी खेल हुकम । जो रूह लेवे बीच दिल के, तो देखे इस्क खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -64
- लेवे इंद्रावती वारने गुन जेते, इत सुख दिए हमको एते । घर के सुख की इत कैसी बात, घर के सुख घरों होसी विख्यात || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -49
- लेवे खिताब इमाम का, बातून खुले ना इन बिगर । सो खोलके भिस्त दई सबों, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -42
- लेवे देवे सब हुकमें, नेकी बदी हुकम । मरे मारे सब हुकमें, या चीजें या दम || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -21
- लेवें सब साहेदियां, हदीसे महंमद । और आयतें कुरान की, सूरतें मगज सब्द || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -7
- लेवें सुख बाग मोहोलन में, मलार में बरखा रूत । रूहें क्यों छोड़ें चरन सुपने, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -9
- लेस छे कालमायानो, वासनाओ मांहें विकार । दया द्रष्टे गाली रस करूं, मेली तारतमनो खार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -18
- लेस है कालमाया को, बढ्यो साथ में विकार । सो गालूं सीतल नजरों, दे तारतम को खार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -18
- लेहेर लगे तुमें मोह की, सो आतम मेरी न सहे । अब खंडनी भी न करूं, जानों दुखाऊं क्यों मुख कहे || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -33
- लेहेर लागे तमने मोहनी, ते हवे हूं नव सकुँ सही । खंडनी पण नव करूं, जाणू दुखवू केम मुख कही || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -33
- लेहेरी इस्क सागर की, जो तूं लेवे रूह इत । तो तूं देखे सुख इस्क के, ए होए ना बिना निसबत || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -25
- लेहेरी उठे अंधेर की, पहाड़ जैसी बेर बेर । ऊपर तले लग भमरियां, जीव पड़े फेर माहे फेर || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -43
- लेहेरी सुख सागर की, लेसी रूहें अर्स । याके सरूप याको देखसी, जो हैं अरस परस || ग्रं - सागर, प्र -3, चौ -1

- लेहेरूं डूंगर जेडियूं, हियडे डिन धका । हांणे हथे नीहणण नाखवा, वंजे गाल हथां || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -12
- लैल गई पुकारते, आया बखत फजर । ए अग्यारै सदी पूरन, तब खुली रूहों नजर || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -78
- लैल बड़ी महीने हजार से, ए बताए दई सरत । सोई फजर सदी अग्यारहीं, ए देखो दिन कयामत || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -22
- लैलत कदर बीच मोमिनों, आए खोली रूह नजर । हक इलम ले रूहअल्ला, करी इमामें फजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -6
- लैलत कदर में रूहें फरिस्ते, जो अर्स से उतरे । कौल किया हकें जिन सों, सो नूर बानी से समझेंगे || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -28
- लैलत-कदर के तीन तकरार, तीसरे फजर में कार गुजार । रूहों फरिस्तों वजूद धरे, लैलत कदर के मांहें उतरे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -35
- लोक अलोक हिसाब में, हिसाब जो हद बेहद । न्यारा इस्क जो पिउ का, जिन किया आद लों रद || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -3
- लोक अलोक हिसाब में, हिसाब जो हद बेहद । न्यारा इस्क जो पिउ का, जिन किया आद लों रद || ग्रं - सनंध, प्र -9, चौ -3
- लोक चौद मायानों फंद, सहु छलतणा ए बंध । समझ्या विना सहुए अंध, तारतम केहेसे सहु सनंध || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -42
- लोक चौदे कहे वेद ने, सोई कतेब चौदे तबक । वेद कहे ब्रह्म एक है, कतेब कहे एक हक || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -39
- लोक चौदे जोया वेदे, निराकार लगे वचन । उनमान आगल कही करी, वली पडे ते मांहें सुंन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -22
- लोक चौदे दसो दिस, सब नाटक स्वांग संसार । आवे नैन श्रवन मन वचन, ए सब माया मोह अहंकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -30, चौ -3
- लोक जाने आए असुरों कारन, विष्णु कृष्ण देह धर पूरन । ए हुकमें असुर कई देवे उड़ाए, ऐसा बल हैं बैकुंठराए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -56
- लोक जाने ज्यों और है, ए भी फरमान तिन रीत । पर दिल के अंधे न समझहीं, ए फरमान सब्दातीत || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -60
- लोक जिमी आमसान के, तिनके सब्द अकल चित मन । सो आगू ना चल सके, रहे हवा बीच सुंन || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -12
- लोक जिमी आसमान के, ए सुपन की अकल । सो पांच तत्व को छोड़ के, आगे न सकें चल || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -27
- लोक जिमी आसमान के, साफ जो करसी सब । बुजरकी इन गिरोह की, ऐसी देखी न सुनी कब || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -8

- लोक जिमी आसमान के, सुरिया ना उलंघत । कह्या चौदे तबक का पलना, बीच हवा के झूलत || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -32
- लोक ढूंदें मांहें मुसलमान, सूझत नाहीं जो लिख्या कुरान । अव्वल सिपारे एह सुध दई, सो मैं जाहेर करहों सही || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -10
- लोक नासूती एह बल, कहे जो जानवर । राम कृष्ण इनके सिर, तो कहे ऐसे जोरावर || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -24
- लोक लाज मरजादा छोड़ी, तब ग्यान पदवी पाई । एक आग ज्यों छोटी बुझाई, त्यों दूजी मोटी लगाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -5, चौ -4
- लोक लानत जाने अबलीस को, सो तो सब दिलों पातसाह । लोक ढूंढ़े बाहेर दज्जाल को, इन किए ताबे अपनी राह || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -30
- लोक सकल दौड़त दुनियां को, सो मैं जान के खोई । मैं डारया घर जारया हँसते, सो लोक राखत घर रोई || ग्रं - किरन्तन, प्र -18, चौ -3
- लोखरी कूकरी जंबुक, लड़त हैं मेढ़े । खरगोस बिल्ली मूस्क, लरें छिकारे गैंड़े || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -16
- लोभ लालच कहे स्यो वांक अमारो, जां न वले जीवने सार । हवे जे तमे कयूं अमने, ते जोजो केम ग्रहूं छू आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -38
- ल्याए इलम लदुन्नी, खोली हक हकीकत । खोले पट सब अोंं के, हक दिन मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -5
- ल्याए खजाना वतनी, करसी आए इंसाफ । देसी सुख कायम, आवसी सो असराफ || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -28
- ल्याए फरमान इसारतें इत थे, सो नासूती क्यों समझाए । मारफत अर्स अजीम में, ए पुलसरातें अटकाए || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -56
- ल्याए फरमान केहेलाए रसूल, पर ताए खुले जाए खिताब मूल । ए इलम ले रूहअल्ला आया, खोल माएने इमाम केहेलाया || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -3
- ल्याए बंदगी केहेलाए कलमा, बरस्या खुदा का नूर । सो नूर फिस्या खाली भई, जैसी असल दाभा थी अंकूर || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -35
- ल्याए ल्याए रूहों पिलावहीं, इस्क प्याले मद । जिन कोई हिसबो खेल में, याको न लगे सब्द || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -92
- ल्याए वचन तारतम सार, खोले पार के पार द्वार । जानों जिन आसंका रहे, साथ ऊपर धनी एता ना सहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -6
- ल्याओ आकीन कहे छत्रसाल, असलू पाक हुए निहाल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -4, चौ -26
- ल्याओ बुलाए तुम रूहअल्ला, जो रूहें मेरी आसिक । रब्द किया प्यार वास्ते, कहियो केहेलाया हक || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -1

- ल्याया ईसा वास्ते मोमिनों, बेसक बका न्यामत । करें हक जात पर सिजदा, इमाम मोमिनों इमामत || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -18

व

- वचन एक केहेतां निरधार, अमे घेर जईने लेसू सार । अदृष्ट थईने कहे वचन, साथ सकल तमे ग्रहजो मन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -3
- वचन एक केहेते इन पर, हम घरों जाए के लेसी खबर । अद्रष्ट होए के कहे वचन, साथजी द्रढ करी लीजो मन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -3
- वचन करडा कोई कहे, केने खंडनी न खमाय । पछे कलपे बने कलकले, एने अमल एम लई जाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -11, चौ -12
- वचन करड़े कोई कहे, किनसों सहे न जाए । पीछे कलपे दोऊ कलकले, वाको अमल यों ले जाए || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -16
- वचन कहे बड़े मुखथे, पर तूं तो समया न भूल । तूं कात बारीक धनीय का, ए तातें पावेगी मूल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -27, चौ -2
- वचन कहे वसुदेव को, फिरे बैकुंठ अपनी ठौर । पीछे प्रगटे दोए भुजा, सो सख्प सनंध और || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -13
- वचन कह्या ते मनमां धरो, रखे अधखिण पाछा ओसरो । आ पोहोरो छे कठण अपार, रखे विलंब करो आ वार || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -18
- वचन केहेतां कोई दुख मां करसो, सांभलजो सह कोय । सत केहेतां कोई वांकू विचारसे, तो सरज्यूं हसे ते होय || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -33
- वचन गाए, हस्तक थाए, भाव संधाए, देखाडे वालो खंत करी || ग्रं - रास, प्र -30, चौ -5
- वचन तणों अहंमेव व्यासजीनों, नाख्यो ते सर्व उडाडी । दया करीने खंडनी कीधी, दीधी आंख उघाडी || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -106
- वचन थके सब इतलों, आगे चले न मनसा वाच । सुपन सृष्ट खोजे सास्त्रों, पर पाया न अखंड घर सांच || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -105
- वचन धणी तणां में सांभल्या, मारा गजा सारूं रे प्रमाण । एक स्यामाजीने वरणवू, बीजो साथ सकल एणी पेरे जाण || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -31
- वचन धनी के कहे परवान, प्रगट लीला होसी निरवान । चौदे भवन का कहिए सूर, रास प्रकास उदे हुआ नूर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -6
- वचन बेहद के पार के पार, सो क्यों माने हद को संसार । त्रैगुन महाविष्णु मोह अहंकार, ए हद सास्त्रों करी पुकार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -83
- वचन वालाजीना वालेरा रे लागे । मूने मीठरडा रे लागे, संभलाओ चरचा मीठडी वाण रे । वचन जे तारतम तणा रे, हवे नहीं मूकू निरवाण रे || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -1

- वचन वाले सामा तामसियो, राजसियो फडकला खाय । स्वांतसिए बोलाए नहीं, ते तां पडियो भोम मुरछाय || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -11
- वचन विचारो रे मीठड़ी, वल्लभाचारज बानी । अर्थ लिए बिना ए रे अंधेरी, करत सबों को फानी || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -1
- वचन संभारवा ने काजे मारे वाले, दुख दीधां अति घणां जी । आपण मनोरथ एहज कीधां, वाले राख्या मन आपणां जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -2, चौ -9
- वचन सर्वे गाइए प्रेमना, तेना अर्थ अंगमा समाय । ते ता अर्थ प्रगट पाधरा, हस्तक वाला संग थाय || ग्रं - रास, प्र -14, चौ -5
- वचन सांभलतां स्यामाजी केरा, खिण नव लागी वार । जे जेम आवी दोडती, ते ता पाछी पडियो तत्काल || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -8
- वचन सुण्यां ते ग्रहया मन महें, जीवने मोहजल परी लेहेर । तो दुख तमने देवंतां, जीवने न आव्यो वेहेर || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -15
- वचन हमारे धाम के, फैले हैं भरथ खंड । अब पसरसी त्रैलोक में, जित होसी मुक्त ब्रहमांड || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -21
- वचने कामस धोई काढिए, राखिए नहीं रज मात्र । जोगवाई सर्वे जीतिए, त्यारे थैए प्रेमना पात्र || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -8
- वचमा स्वांस न खाधो एक, वेल न कीधी कांई लखतां बसेक । एहेनो में सरवालो किध, श्री सुंदरबाईए सिखामण दिध || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -41
- वचे वचे वाए वेण, रंग रस खिण खिण । उपजावे अति घण, पूरवा पूरण काज री || ग्रं - रास, प्र -12, चौ -5
- वज तणा सुख आंहीं आवीने, अमने अति घणा दीधां जी । रास तणी रामतडी रमाडी, आप सरीखडा कीधां जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -36, चौ -2
- वजूद आदम का जैसा खाक, पांच पचीसों इनके पाक । आठमें सिपारे एह बयान, लिख्या जाहेर बीच कुरान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -30
- वजूद आवे जो ख्वाब में, सो सब ख्वाब के जान । ख्वाब देखे जो पार थैं, तुम तासों करो पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -9
- वजूद मोमिन जो ख्वाब के, सो किए रूबरू अंग असल । खोले बातून देखे रूह नजरों, किए दोऊ मुकाबिल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -26
- वड पीपल ने वांस वेकला, बोलसरी ने वरणा जी । केवडी केल कपूर कसूबों, केसर झाड अति घणा जी || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -4
- वडी रांद डिखारिए, असां वड्यूं करे । त पसूं बडाई अंखिएं, जे सभ दुनियां सई फिरे || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -13
- वडी रूह चोए आं कारण, मूं हेडो केयो पंध । लखे भतें समझाइयूं, पण हियो न अचे हंद || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -11

- वडी वडाई आंजी, पसो केहेडो पाहिजो घर । हे कूडा कूडी रांदमें, छडे कायम वर || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -13
- वडी-रूह रूहन के, चई समझाईन । पाण न्हायूं हिन रांदज्यूं, घर बकामें आईन || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -9
- वडे अर्सजे मोहोल में, मिडावा रूहन । आयासी मोहोल बाग जे, मथड़ा मीह झबन || ग्रं - सिंधी, प्र -2, चौ -4
- वणजे ते आवे सहु एकला, आणी भोमे आवी करे संग || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -24
- वतन आपनो, ब्रह्मसृष्ट को देऊं बताए । धाम की सुध मैं सब देऊ, ज्यों अंतस्करन में आए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -1
- वतन की बातें सबे, पाई हमारी हम । सो ए रोसन करत हों, कहियो साथ को तुम || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -4
- वतन के अंकूर बिना, इत दुनी करे कई बल । मुक्त सुख इत होएसी, पर पावे न धाम नेहेचल || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -27
- वतन खसम देखाए के, और अपनी असल पेहेचान । इमाम नूर रोसन करके, उड़ाए देऊं उनमान || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -25
- वतन थें पिउ प्यारियां, आइयां सबे मिल । इसी रात के बीच में, करने को सैल || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -42
- वतन देखते जाहेर, दूजी दोए लीला जो करी । ए सब याद आवहीं, इत दोए दूसरी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -129
- वतन देखाऊँ पिउ का, और अपनी मूल पेहेचान । एह उजाला करके, धोखा देऊ सब भान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -20
- वतन देखाया इत थे, सो केते कहूं प्रकार । नूर अखंड ऐसा हुआ, जाको वार न काहूं पार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -35
- वतन बातें केहेवे को, मैं देखती नहीं कोई काहूं । देखा तो जो होए दूसरा, नहीं गांउं नाउं न ठाऊं || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -44
- वतन बिसारिया रे, छलें किए हैरान । धनी आप बुध भूलियां, सुध न रही वृद्धि हान || ग्रं - किरन्तन, प्र -77, चौ -1
- वतन से आइयां सैयां, सबे बांध के होड़ । सो याद न रह्या कछुए, इन नींदे दैयां सब तोड़ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -3
- वन ऊपर वेलडियो चढियो, जो जो ते आ निकुंज । मंदिरना जेम जुगतें दीसे, मांहें अनेक विधना रंग || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -24
- वन गेहेवर अमें जोइयं, आगल तो दीसे अंधार । हवे ते किहां अमे जोइए, मूने सुध नहीं अंग सार || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -33

SPJIN

- वन ने छाा रे वाला द्रुम वेलडी, सीतल धराने सीतल वाए । सीतल जलने सीतल छाहेडी, पण मारे अंग लागे अति दाहे || ग्रं - खटरुती, प्र -3, चौ -8
- वन वन करीने खोलिए, वालो बेठा हसे जांहें । आपणने मूकी करी, जीवनजी ते जासे क्यांहें || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -25
- वन वेलडियो छाइयो, रलियामणां फल कई रंग । वाय सीतल रंग प्रेमल, कांई अंगडे वाध्यो उमंग || ग्रं - रास, प्र -41, चौ -5
- वन वेलडियो जोई सर्वे, घणे दखे घणं रोय । घणी जुगते जोयूं तमने, पण केणे न दीठो कोय || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -27
- वनस्पति पसु पंखी, आदमी जीव जंत । मच्छ कच्छ सबसागर, रच्यो एह प्रपंच || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -28
- वनस्पति पसु पंखी, आदमी जीव जंत । मछ कछ सब सागर, रच्यो एह प्रपंच || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -30
- वनस्पति पसु पंखी, मनख जीव ने जंत । मछ कछ जल सागर साते, रच्यो सहु परपंच || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -27
- वभिरकां पिरी तो कारण, आया माया मंझ । को न सुजाणे सिपरी, न तां थींदिए डूरण डंझ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -14, चौ -4
- वभिरकां पिरी तो कारण, हांणे आया माया मंझ । धाऊं पाइंदे पिरी बभिरकां, तोके थीअण आई संझ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -14, चौ -8
- वभेरे पिरी पाणजे काजे, सायर में विधाऊं आप । पाणजे काजे पांण विधाऊं, हाणे को न सुजाणो साथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -9
- वरखा रूते करमे काढी वदेस, अवगुण हता अपार रे । हवे एणे समे धणी विना, लेसे कोण सार रे || ग्रं - खटरुती, प्र -1, चौ -4
- वरजीने दऊं वीड, भीडतां न करूं जीड । अंग मांहें हुती पीड, काम केरी भाजूं भीड, जो जो मारी बात || ग्रं - रास, प्र -38, चौ -5
- वरन सारे पसरे, लगे लोभे करें उपाए । बिना अगनी पर जले, अंग काम क्रोध न माए || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -14
- वरन सारे पसरे, लोभे लिए करें उपाय । बिना अगनी पर जले, अंग काम क्रोध न माय || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -12
- वरना वरनो खोजिया, जेती बनिआदम । एता दृढ़ किने ना किया, कहां खसम कौन हम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -10
- वरना वरनो खोजिया, जेती बनिआदम । एता दृढ़ किने ना किया, कहां खसम कौन हम || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -10
- वलगे वालो विनोदे अमसू, देखतां सह जन । पण विचारे नहीं कोई वांकू, सहु कहे एह निसन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -46

- वलहा जे आंऊ तोके वलही, गिनी बिठे तरे कदम । हे मूं दिल डिंनी साहेदी, तूं मूं रे रहे न दम || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -1
- वली अवसर आव्यो छे घणो, अने वखत उघड्यो साथज तणो । आपणे नव मूकवा हीडूं संसार, धणी आपणो विछोडो नव सहे लगार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -11, चौ -4
- वली अवसर आव्यो छे हाथ, चरणे लागीने कहूं छू साथ । हवे चरणे लागू श्रीवालाजी, तमे वहार मारी भली कीधी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -14
- वली अवसर आव्यो छे हाथमां, हवे तिवरता तू संभारे । रात दिवस तूं जीवने दोडावे, एक पाव पल मा विसारे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -107
- वली आ ते ब्रहमांड उपनो, जेमां राख्यो छे सेर ।आंहीं पण कीधी वातडी, साथ सिधाव्यो घेर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -29
- वली आवतियो उमंगतूं, वालो वीट्यो ते चारे गंम । सूझे नहीं कांई जल आडे, आंखे आवी गयो छे तम || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -12
- वली इछा जुई धरे, कुंदडी फेरसूं फरे । जोर अति घणो करे, इंद्रावती काम सरे, रमे पिउ रास || ग्रं - रास, प्र -38, चौ -10
- वली एक कागल काढिया, सुकदेवजीनो सार । हदियो ना कोहेडा, वेहदी समाचार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -8
- वली एक वचन कहूं सुणजो साथ, दया करी कहे प्राणनाथ । आ किव करी रखे जाणो मन, भरम टालवा कयां वचन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -27
- वली एक वाट कही करी, ते ततखिण कीधी लोप । तिहांना हता ते चालया, पण रह्या ते मायामां गोप || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -24
- वली कांईक वृध पामतां, मचकासू म हालजो । हजी लगे आकला म थाजो, लडसडतीचाल चालजो || ग्रं - रास, प्र -20, चौ -5
- वली कीधा वीस ने सात, चढतो जाय लिए एणी भांत । एक्यासी पख केहेवाय, ते वैकुंठमां पोंहोंतो थाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -4
- वली केहेसो जे निरदोष थाय छे, पण नथी थाती निरदोष कांई हूं। धणी सामी बेसी आ मोहजलमां, लेखू केणी विधे करूं || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -16
- वली गत मत आवी सुधसार, छल छूटो ने थयो करार । दयानो नव लाधे पार, त्यारे अलगो थयो संसार || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -21
- वली गुण इंद्री जुओ रे जातां, जे अवला वहे संसार जी । ए वेरीडा विसेखे आपणां, ते तमे कांए न मारो जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -25
- वली गुण जो जो तमे नखतणां, हूं तेहनो ते कहूं विचार । सूरज दृष्टं तापज थाय, आणे अंग उपजे करार || ग्रं - रास, प्र -7, चौ -5
- वली जे साध पुरुख कोई कहावे, ते कामस टालवा जाय । सो मन साबू घसी पछाडे, निरमल तोहे नव थाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -55

- वली जो जो रे तमें सास्त्र संभारी, एणी पेरे बोले वाणी । कुंजर कथुआ मेरू माणस माहीं, सर्वे एकज प्राणी || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -15
- वली जोऊं ज्यारे घरनी दिस तमने, त्यारे वली एम थाय अमने । आ धामनां धणी ने में किहा कया वचन, त्यारे जीव विचारी दुख पामें मन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -10
- वली जोगमायानो ब्रह्मांड, कीधो रमवा रास । रामत रमे श्री राज सूं, साथ सकल उलास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -24
- वली जोत झाली नव रहे, बीजो वेधियो आकास । ततखिण लीधो त्रीजो ब्रह्मांड, जिहां अखंड रजनी रास || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -54
- वली जोत झाली नव रहे, वचमां विना ठाम । अखंड मांहें पसरी, देखाड्यो वृज विश्राम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -47
- वली तमने देखाडूं दुरजन, जेणे न मूक्यो कोय जी । ते तमने प्रकासूं रे प्रगट, तारा माहेला गुण तूं जोय जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -24
- वली ते ब्रह्मांड उपनो, जेमां आपण आव्या । धाख रही जोया तणी, आपण तेह ज लाव्या || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -27
- वली तेह चरचा ने तेहज वाण, वचन केहेतां जे प्रमाण । वृज रास ने वली श्री धाम, सुख साथने दिए निधान || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -9, चौ -7
- वली नितारी अजवालिया, रूमाल संघातें । प्रीसे छे सारी सूखडी, विध विध कई भाते || ग्रं - रास, प्र -46, चौ -8
- वली परीछितें पूछयूं एम, जे मोटी मत ते जाणिए केम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -4
- वली पैगंमर फरिस्ते, आए मिले सब संग । ज्यों गुन इंद्री जुदे जुदे, उठ खड़े सब अंग || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -65
- वली मांडी ते रामत जोर, गाए गीत करे अति सोर । त्यारे हरख वाध्यो अपार, आव्यो जुवतीनो आधार || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -30
- वली रस वनमा छे घणों, मीठी पंखीडानी वाण । ए वन मुकाय नहीं, रूडो अवसर ए प्रमाण || ग्रं - रास, प्र -41, चौ -6
- वली रामत मांडी एक जुगते, जाणिए सघली अभंग जी। रामत करतां आलिंघण लेतां, लटके दिए चुमन जी || ग्रं - रास, प्र -43, चौ -2
- वली लिए हाथ ताली, फरती देवंती वाली । बेठंती उठती वाली, रामत वचे रसाली, विविध विलास || ग्रं - रास, प्र -38, चौ -12
- वली वचन सोहामणां, वली वरणव नी विध विध । आव्या ते आनंद अति घणे, ल्याव्या ते नेहेचल निध || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -77

- वली वण पूछे कहूं विचार, कारण साथ तणे आधार । रखे केहेने उत्कंठा रहे, श्री सुन्दरबाई ते माटे कहे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -1
- वली वली आ वेला नहीं आवे, वली वली न सांभलो पुकार । बोध संघाते जागी परियाणी, तमे लेजो रे सघलानो सार || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -23
- वली वली नहीं आवे ए अवसर, रखे हाम लई जागो घर । थोडा माहें कर्तुं छे अति घणूं, अने जाण्यूं धन कां निगमो आपणूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -65
- वली वसेखे वरणव्यो रास, पेहेला फेरानो कीधो प्रकास । तोहे आपण हजी तेहना तेह, वली वरणव्या श्री धाम सनेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -54
- वली वसेखे, राखू रेखे, लेऊ लेखू, जोऊं जोखू, प्रेमे पेलूँ, घसी मसी, आवी रसी, हँसी खसी बसी, भीसी रीसी खीसी, जरडी मरडी, करडी खरडी || ग्रं - रास, प्र -42, चौ -3
- वली वारणा लऊं आंगणियां, अने आस पास सहु साज । जिहां बेसो उठो ऊभा रहो, वल्लभ मारा श्री राज || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -3
- वली वेहेरो वासना जीवनो, एना जुजवा छे ठाम । जीवतणो घर निद्रा महे, वासना घर श्री धाम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -62
- वली सामी थाय सखियो, जल छांटतियो छोले । वालोजी उछाले जल जोर , त्यारे नासंतियो टोले || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -11
- वलीने वसेके अपर महिनो, अधको ते आव्यो जेठ । हवे कसने पूरो कसोटिए, तमे पारखू लेओ छो मारू नेठ || ग्रं - खटरुती, प्र -7, चौ -10
- वलीने वसेके रे वज्रलेपणा, मारा जेम करजो मा कोय । एहज पुरी माहें अमें रेहेता, रणवगडा जुओ केम होय || ग्रं - खटरुती, प्र -3, चौ -17
- वल्लभ कंठ वलाय, लिए रंग धाय धाय । रामत करे सवाय, पाछी नव राखे काय, ऊभी रहे रे उकंध || ग्रं - रास, प्र -13, चौ -12
- वल्लभ तणो विरह में न खमाय, वलीने वसेके हमणां । प्रमोधपुरी मांहें प्रबोध दीधो, हवे मनोरथ छे अति घणां || ग्रं - खटरुती, प्र -7, चौ -12
- वल्लभे लीधी हाथसू, सुन्दरबाई बाथसू । रामत करे निघातसूं, जोरे मुकावे हाथ री || ग्रं - रास, प्र -16, चौ -6
- वसंत आवे वन विलम करे, मारो जीव मौरे तत्काल । मूने जेणी खिणे वालोजी मले, हूं तेणी खिण लऊं रंग लाल || ग्रं - खटरुती, प्र -4, चौ -17
- वसीयत नामें आए के, इत करी पुकार । राह बीच की छोड़ बहत्तर हुए, छूट गया करार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -103
- वसीयत नामे आए दरगाह से, जाहेर करी कयामत । ए हकीकत तुम पर लिखी, देखाए दिन सरत || ग्रं - किरन्तन, प्र -104, चौ -9
- वसीयत नामे आए दरगाह से, तिन साख दई बनाए । अग्यारै सदी जाहेर लिखी, सो कौल पोहोंच्या आए || ग्रं - किरन्तन, प्र -98, चौ -6

- वसीयत नामें में सखत, लिखे सौगन्द खाए। सो कौन देखे नाजी बिना, दिल सों अर्थ लगाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -105
- वसीयत नामे साहेदी, आए लिखे बड़ी दरगाह । सो मिलाए दिए कुरान से, महामत हुकम खुदाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -48
- वसुदेव गोकुल ले चले, ताए न कहिए अवतार । सो तो नहीं इन हद का, अखंड लीला है पार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -14
- वसुदेव देवकी के लोहे भांन, उतास्यो भेख किए अस्नान । जब राज बागे को कियो सिनगार, तब बल पराक्रम ना रह्यो लगार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -54
- वस्त खरीनो जे रंग लाग्यो, ते थाय नहीं केमे भंग । भलयो जे भगवानसों, तेनो दीसे एकज रंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -55
- वस्त थई अगोचर माहीं, जीव चाले आणे आचार । एणी चाले जो फल लाधे, तो पामसे सहु संसार || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -48
- वस्तर ऊपर वारी वारी जाऊं, भामणां लऊं भूखण । नेत्र निरमलने वारणे, जेहेनी दृष्टे फल पामिए ततखिण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -11
- वस्तर और भूखन कहे, हक अंग वाहेदत के । ए केहेते बारीकियां अर्स की, हाए हाए तन उड्या न ख्वाबी ए || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -145
- वस्तर और भूखन, ए हक अंग का नूर । सो निमख न जुदा होवहीं, ज्यों सूरज संग जहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -7
- वस्तर केणी पेरे वरणवू, ए तां सायर अति सरूप । मारा जीवनी खेवना भाजवा, हूं तो कहूं गजा सारूं कूप || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -13
- वस्तर धागा न सूझहीं, सरभर जरी नकस । वस्तर भस्यो न बुन्यो किने, असल सबे एक रस || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -41
- वस्तर नहीं जो पेहेर उतारिए, ए हक अंग नूर रोसन । दिल चाह्या रंग जोत पोत, अर्स अंग वस्तर भूखन || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -12
- वस्तर भूखण तणी रे, विगत कोण लेसे । ए धणी विना रे ए सुख, हवे बीजो कोण देसे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -75
- वस्तर भूखण स्यामाजीने, पेहेराव्या भली भांत । अधवीच आवीने वालए, वेण गूंथी करी खांत || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -17
- वस्तर भूखन अंग अर्स के, सो सबे हैं चेतन । सब सुख देवें रूह को, तो क्यों न देवें नैन श्रवन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -10
- वस्तर भूखन इन जिमी के, सो मुख कहे न जाए । तो सुख इन सख्प के, क्यों कर इत बोलाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -23
- वस्तर भूखन इन जिमी के, सो याही जिमी माफक । जिन जिमी जरे की रोसनी, कही न जाए रंचक || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -22

SPJN

- वस्तर भूखन किन ना किए, हैं नूर हक अंग के। ए क्यों आवें इन केहेनी में, अंग सांई के सोभावे जे || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -196
- वस्तर भूखन की विगत, पिउ बिना कौन लेवे रे । ए सुख अनुभव अपना, सनमंध करके कौन देवे रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -76
- वस्तर भूखन केते कहूं, हेम रेसम रंग नंग । ना पेहेन्या ना उतारिया, ए दिल चाया सोभित अंग || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -78
- वस्तर भूखन नूर के, नूर सख्प साज समार । नूर ले खेलें नूर में, नूर झलकारों झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -25
- वस्तर भूखन नूर के, सब नूरै का सिनगार । नूरै सागर होए रहया, नूर वार न पार सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -11
- वस्तर भूखन पेहेर के, मेरे दिल में बैठे आए। हकें सोई किया अर्स अपना, रूह टूक टूक होए बल जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -4
- वस्तर भूखन रूहन के, ताकी क्यों कहूँ खुसबोए । इन खूबी खुसबोए को, सब्द न पोहोंचे कोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -52
- वस्तर भूखन सब अंगों, कण्ठ श्रवन हाथ पाए । नख सिख सिनगार साज के, बैठे अर्स दिल में आए || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -71
- वस्तर भूखन सब अंगों, क्यों कहूं केते रंग । एक एक नंग के अनेक रंग, तिन रंग रंग कई तरंग || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -33
- वस्तर भूखन सब इस्क के, इस्क सेज्या सिनगार । इस्क हक खिलवत, रूहें हादी हक भरतार || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -98
- वस्तर भूखन सब पूरन, सुख बिन जामें और जिनस । देख देख देखे जो आसिक, जो देखे सोई सरस || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -9
- वस्तर भूखन हक के, आए हिरदे ज्यों कर । त्यों सोभा सहित आतमा, उठ खड़ी हुई बराबर || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -68
- वस्तर भूखन हक के, ए केहेनी में ना आवत । सिनगार करें दिल चाहया, जो सबों को भावत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -193
- वस्तर भूखन हक जात के, सो हक जाते का नूर । कोई चीज अर्स अंग को, कर ना सके जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -39
- वस्तर वरणव्यां सब्द मांहें सखियो, वली वरणवी भूखणनी भांत । रेसम हेम कहया में जवेरना, पण ए छे वसेक कोय धात || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -48
- वस्तर विख के भूखन विख के, सकल अंग विख साज जी । ए विख नख सिख जीव को भेदयो, सो क्यों छूटे बिना श्री राज जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -10
- वस्तर विखने भूखण विख रे, सर्वा अंगे विख साज जी । ए विख जीवने गेहेन घारण रे, ते केम टले विना श्रीराज जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -9

- वस्तर विना सखी जे नहाती, तेणे नव संभारियां रे अंग । वेण सांभलतां रे वाला तणी, एणे वेगमां न कीधो रे भंग || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -15
- वस्तरों के नंग क्यों कहं, कई जवेरों जोत । सवे भई एक रोसनी, जानों गंज अंबार उद्दोत || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -12
- वस्तरों में कई रंग हैं, सो हाथ को लगत नाहें । और भी हाथ लगे नहीं, जो जवेर वस्तरों माहे || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -19
- वस्ती बिना लिए चोर लूसी, आडा दोख घणां रे दुकाल । लोही मांस न रहे अंग माहीं, आडी खाइयो पर्वत पाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -10
- वस्तोगते दुख काई नथी, जो पाछी वालो द्रष्ट । जुओ जागी वचने, तो नथी कांईए कष्ट || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -25
- वस्तोगते दुख ना कछू, जो पीछे फेरो दृष्ट । जो देखो वचन जागके, तो नाहीं कछुए कष्ट || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -25
- वह झंडा जो जाहेरी, सो भी हक हादी बिना कौन उठाए । जिन जैसी नीयत, तिन तैसी दई पोहोंचाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -10
- वह देख्या अंग क्यों छूटहीं, हक परीछा एही मोमिन । ए होए अर्स अरवाहों सों, जिनके अर्स अजीम में तन || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -22
- वह सुख केहेवे अपना, जो किया है हक से । दिल दूजी के यो आवत, ए सब सुख लिया में || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -8
- वा लगी जा विचमें, सभ थेई उंधाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -7
- वाए तडको टाढक नव गणे, करे तपस्या जोर अति घणे । सनेह धरी बेठा एकांत, एटले सात थया कल्पांत || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -39
- वाए बादल गाजे विजली, जलधारा न समाय । फेर खाय पांचे पाधरा, माहेना मांहें समाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -24
- वाओ अचे बागनमें, डालरियूं उलरन । रूहें रांद करीदियूं, मथें चढ्यूं लुडन || ग्रं - सिंधी, प्र -2, चौ -12
- वाओ बादल बीज गाजहीं, जिमी जल न समाए । ए पांचों आप देखाए के, फेर न पैदा हो जाए || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -18
- वाओ बादल बीज गाजहीं, जिमी जल न समाए । पल में हुकम यों करे, पल में देवे उड़ाए || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -24
- वाओ बादल बीज गाजही, जिमी जल ना समाए। ए पांचो आप देखाए के, फेर ना पैदा हो जाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -18
- वाको आग खाग बाघ नाग न डरावें, गुन अंग इंद्री से होत रहित । डर सकल सामी इनसे डरपत, या विध पाइए प्रेम परतीत || ग्रं - किरन्तन, प्र -9, चौ -3

- वाको तो फजर हुई, हुआ बका सूरज दीदार । मिल्या कौल अव्वल का, जो किया था परवरदिगार || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -85
- वागा वधारीने कांठे मूकियां, कांई वस्तर पेहेत्या झीलण । सखी एक बीजीने आनन्दमां, जल मांहें लागी ठेलण || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -7
- वाचा मुख बोले तूं वानी, कीजो हांस विलास । श्रवना तूं संभार आपनी, सुन धनी को प्रकास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -3
- वाछरडा लई वन पधारे, आठमें दसमें दिन । कहियक गोवरधन फरतां, मांहें रमें ते वारे वन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -32
- वाट विना इहां चालवू, अने पग विना करवू पंथ । अंग विना आउध लेवा, जुध ते करवू निसंक || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -5
- वाटका फूल कचोलियां, ते तो जुगते जडिया । अजवालीने पखालिया, थाली माहे मलिया || ग्रं - रास, प्र -46, चौ -7
- वाटडी विसमी रे साथीडा वेहदतणी, ऊवट कोणे न अगमाय । खांडानी धारे रे एणी वाटे चालवू, भाला अणी केहेने न भराय || ग्रं - किरन्तन, प्र -67, चौ -1
- वाटडी विस्मी गाडी भार भरी, धोरीडा मा मूके तारी धूसरी || ग्रं - किरन्तन, प्र -130, चौ -1
- वाढ वसेके थई जोरावर, ते ऊपर दीधूं वली लोण । अवगुण मारा तमे आण्या चितसूं, हवे खबर ते लेसे मारी कोण || ग्रं - खटरुती, प्र -7, चौ -15
- वाणी तो बोले मधुर, करसूं ग्रही अधुर । पिए वालो भरपूर, राखी हैडा मांझ री || ग्रं - रास, प्र -12, चौ -7
- वाणी तो बोले विसाल, रमती रमतियाल । कंठ तो झांकझमाल, अंग तो अति रसाल, सोहंती रे सनंध || ग्रं - रास, प्र -13, चौ -10
- वाणी मांहें न आवे केमे, जोगमायानी विधजी । तोहे वचन कहूं तमने, लीला अमारी निधजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -2
- वाणीने कारणे, घणा देह ज दमिया । ए वाणीने कारणे, घणा कष्ट ज खमिया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -81
- वाणीने कारणे, घणा संधाण सारे । वाणीने कारणे, सिर अगनज बारे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -83
- वात एहेनी जाणूं अमें, कां वली जाणे अमारी एह । मांहेली बात न समझे बीजो, वालाजीनो सनेह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -47
- वात सुणो मारा वालैया, साथे दीठां ते दुख संसार । केम थाय साथ माहूं मारो, जिहां ऊभी इंद्रावती नार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -5
- वांदर मोर क्रीडे- वनमां, आनंद देखी वनराय । एणे समे वालाजी विना, विरहसू कालजर्छ रे कपाय || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -6

- वादे वाणी सीखे सूरा, सुध बुध जाए सान । स्वांत त्रास न आवे सुपने, एहवं व्याकरण गिनान || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -12
- वाधे भारे समझाविया, पण दूध पाणी नव जुजवा थया । तेहेनो तमसुं करूं जवाब, समझावाने काजे साथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -8
- वानी मेरे पिउ की, न्यारी जो संसार । निराकार के पार थे, तिन पार के भी पार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -37, चौ -3
- वार डारूं मैं नासिका पर, और वार डारूं श्रवन । वार डारूं मैं नख सिख पर, जो सनकूल हैं अति घन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -12
- वार डारूं मैं वानी पर, जो वचन केहेत रसाल । साथ को चरने राख के, सागर आड़ी बांधत हो पाल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -14
- वार फेर डारूं मेरी देह, इंद्रावती कहे अधिक सनेह । बोहोत अस्तुत में जाए ना कही, अपने घर की बात जो भई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -4
- वार वार हूं घोली घोली जाऊं, एक वचन तणां नव ओसीकल थाऊं ।ओसीकल वचन तो ते केहेवाए, जो अमे बेठा मोहजल माहे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -15
- वारतां वलगतां वाले, जोरे सांईड़ा लीधां । कहे महामती सुणो रे सखियो, वाले एणी पेरे गेहेलडा कीधां || ग्रं - किरन्तन, प्र -50, चौ -4
- वारने ऊपर लेऊं वारने, सुख दिए मोको अति घने । बेर बेर में लागू पाए, सेवा करूं हिरदे चित ल्याए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -3
- वारने जाऊं वनराए वल्लभ की, जाकी सुख सीतल छाया । देखो ए बन गुन भव औखदी, देखे दूर जाए माया || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -1
- वारी जाऊं पलंग पाटी ओसीसा, तलाई सिरख ओछाड । वली वारी जाऊं चंद्रवा, जिहां पोढो सुख सेज्याए || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -5
- वारी फरी नाखू मारी देह, इंद्रावती वली वली एम कहे । अति वखाण में थाय नहीं, पोताना घरनी वातज थई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -4
- वारी रे वारी मेरे प्यारे, वारी रे वारी । टूक टूक कर डारों या तन, ऊपर कुंज बिहारी || ग्रं - किरन्तन, प्र -119, चौ -1
- वारी वारी जाऊं मुखारने विंद, वरणवं सोभा सरूप सनंध । वारणा लऊ आंखडियो तणा, सीतल दृष्ट माहें नहीं मणा || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -2
- वालती छेक, अंग वसेक, रंग लेत, छबके चमन देत री || ग्रं - रास, प्र -30, चौ -12
- वालयो वन विलासी, गयो तो अमथी नासी । कठण करीने हांसी, दीधां दुख दोहेल री || ग्रं - रास, प्र -36, चौ -3
- वाला आपण रमिए आंख मिचामणी, ए सोभा जाय न कही रे । निकुन्जना मंदिर अति सुन्दर, आपण छपिए ते जुजवा थई रे || ग्रं - रास, प्र -15, चौ -1

- वाला आवयो ते मास असाढ, के रूत मलारनी रे। जाणूं करी रे वालाढूं विलास, लेसूं लाण आधारनी रे || ग्रं - खटरुती, प्र -1, चौ -2
- वाला तमे अमसूं एम का करो, अमे वचन सहया नव जाय । खिण एक सामूं नव जुओ, तो तरत अदृष्ट देह थाय || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -46
- वाला तमे आव्या छो माया देह धरी, साथ तणी मत माया ए गई फरी । हवे अनेक हांसी थासे जाग्या पछी घरे, ज्यारे साथे माया मांगी कहे अमने सूं करे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -49
- वाला तमे चालता ते चार दिनडा कहया, हारे अमे एणी रे आसाए जोईने रहया । वाला अमे वचन तमारा ग्रहया, हवे ते अवध ऊपर दिनडा गया । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -9.1, चौ -4
- वाला तमे निरत करो मारा नाहोजी रे, अमने जोयानी खांत । साथ जोई आनंदियो रे, काई वेख देखी एक भांत || ग्रं - रास, प्र -29, चौ -1
- वाला महिनो मागसरियो मदमातो, ते तो अमने मारसे रे जोनी जातो । तारा विरहनी रेहेसे रे वेराट मां वातो, अम ऊपर एम का नाखी निघातो || ग्रं - खटरुती, प्र -9.2, चौ -5
- वाला मारा आवी रे रूतडी ग्रीखम, अमृत रस लावी रे फल उत्तम । वन फल पाकीने थया रे नरम, वाला तमे एणे समे न आवो केम || ग्रं - खटरुती, प्र -9.5, चौ -1
- वाला मारा आवी रे रूतडी वसंत, चंद्र मुख अमृत रस रे झरंत । वाला वनडू मोरयूं रे कूपलियो करंत, एणे समे न आवो तो आवे मारो अंत || ग्रं - खटरुती, प्र -9.4, चौ -1
- वाला मारा आव्यो रे महिनो माह, जंगलियो वाले रे वनस्पति दाहे । दाहनां दाधां रूखडियो केवा चरमाय, स्याम विना सुंदरियो एम सोहाय || ग्रं - खटरुती, प्र -9.3, चौ -5
- वाला मारा एक बार जुओ वनडू आवी, हां रे चांदलिए जोत चढावी । वेलडिए वनस्पति रे सोहावी, एणे समे विरहणियो कां विलखावी || ग्रं - खटरुती, प्र -9.1, चौ -6
- वाला मारा कारत कियो अंगडा कापे, नाहोलिया तारो नेहडो वाले मूने तापे । वाला मूने गुण अंग इंद्रियो रे संतापे, पिउजी विना दुखडा ते सहु मूने आपे । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -9.2, चौ -3
- वाला मारा खटरूतना बारे मास, हां रे तेना अहनिस त्रण से ने साठ । वाला तारी रोई रोई जोई में वाट, अम ऊपर एवडो कोप कीधा स्या माट || ग्रं - खटरुती, प्र -15, चौ -1
- वाला मारा चैतरिए एणे मास, पिउजी सो करता विनोद घणा हांस । वन माहे विविध पेरे रे विलास, ते अमे अहनिस नाखू छु निस्वास || ग्रं - खटरुती, प्र -9.4, चौ -5
- वाला मारा टाढली ते सहुने वाय, हारे अम विरहणियोने अगिन न माय । ऊपर टाढो वावलियो धमण धमाय, ए रूत मूने सूतडा सूल" जगाय || ग्रं - खटरुती, प्र -9.2, चौ -4

- वाला मारा त्रट जमुनाना वृंदावन, हारे टाढी छांहेडी तले रे कदम । पिउजी इहां देता रे पावलिए पदम ते अमे विलखं छ वालाने वदन || ग्रं - खटरुती, प्र -9.5, चौ -2
- वाला मारा दिनडा आसोना आव्या, हारे घेर मेघलियो बारे रे सिधाव्या । हारे वन वेलडिए रंग सोहाव्या, पिउजी तमे एणे समे वृजडी कां न आव्या । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -9.1, चौ -5
- वाला मारा पोष महिनो रे आव्यो, हारे अम दुखणियो ने दुख पूरा लाव्यो । वेरीडो अम ऊपर आवीने झंपाव्यो, हारे मारूं चीरी अंग मीठडे भराव्यो । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -9.3, चौ -3
- वाला मारा भादवे ते नदी नाला भरिया, पिउजी निरमल जल रे उछलिया । वाला मारा गिर डूंगर खलखलिया, पिउजी तमे एणे समे हजिए न मलिया । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -9.1, चौ -3
- वाला मारा भोमलडी रे नीलाणी, मेघलियो वली वली सींचे पाणी । वीजलडी चमके आभण माणी, रे पिउजी तमे एणे समे वेदना न जाणी || ग्रं - खटरुती, प्र -9.6, चौ -4
- वाला मारा हुती रे मोटी तारी आस, जाण्यूं अमने मूकसे नहीं रे निरास । ते तो तमे माकल्यो तमारो खवास, तेणे आवी बछोडया सांणसिए मांस || ग्रं - खटरुती, प्र -15, चौ -2
- वाला मारा हेमाले थी हेमरूत हाली, ए तो वेरण आवी रे विरहणियो ऊपर चाली । वजडी वीटी रे लीधी वचे घाली, पिउजी तमे हजिए कां बेठा आप झाली || ग्रं - खटरुती, प्र -9.2, चौ -1
- वाला मूने ए दिन केम करी जाय, पिउ जी विना खिण वरसां सो थाए । वाला मूने विलखता रैणी विहाय, पिउ जी विना ए दुख केने न केहेवाय || ग्रं - खटरुती, प्र -9.4, चौ -6
- वाला यढी अगिननों वावलियो वाय, नीला टली सूकीने भाखरियो थाय । पान फूल फल सर्वे झरी जाय, वाला अमे ए रूत केमे न खमाय || ग्रं - खटरुती, प्र -9.3, चौ -4
- वाला रवि तपेरे अंबरियो निरमल, पिउजी कारण वास्या जल रे सीतल । वदन देखाडो रे वालैया सकोमल, पिउजी अमे पंथडो निहालूं पल पल || ग्रं - खटरुती, प्र -9.5, चौ -4
- वाला रूतडी आवी रे सीतलडी लूखी, वेलडियो वन जाय रे सर्वे सूकी । वसेके वली वाले रे उतरियो फूकी, पिउजी तमे हजिए कां बेठा अमने मूकी । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -9.3, चौ -1
- वाला वन फागणियो रे उछाले, पंखीडा करे रे कलोल बेठा माले । हारे अमविरहणियो ना चितडा चाले, आंगणडे ऊभियो पंथडो निहाले । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -9.4, चौ -3

- वाला वनडु कोल्यूं कामनी पामी करार, पस् पंखी हरख्या पाडे रे पुकार । वाला विरह भाजोरे विरहणियो ना आवार, एणे समे न आवो केम प्राणना आधार || ग्रं - खटरुती, प्र -9.4, चौ -4
- वाला वनमा मेवो रे महिनो जेठ सार, एणे समे आवो रे नंदना कुमार । पिउजी तमे सदा रे सुखना दातार, वृज वधु विलखती पाडे रे पुकार || ग्रं - खटरुती, प्र -9.5, चौ -5
- वाला वरसे ते मेघ मलार, वीजलडीना साटका रे । मूने वालाजी विना आ रूत, लागे अंग झाटका रे || ग्रं - खटरुती, प्र -1, चौ -5
- वाला वालमजी मारा, जीरे प्रीतम अमारा || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -1
- वाला हूं तो पिउ पिउ करी रे पुकारूं, पिउजी विना दोहेला घणां रे गुजारू । हूं तो दुखडा माहे ना माहेंज मारूं, हूं तो निस्वासा अंग मां उतारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -9.1, चौ -2
- वालाजी ए रैणी रे सिधाविया, वालो पोहोंता ते धाम मंझार । एणे समे मूने एकली, तमे काय राखी आधार || ग्रं - खटरुती, प्र -2, चौ -11
- वालाजी केहे होय ते केहेजो, कांई अमने निसंक । अमे तम आगल ऊभा छु, काई रखे आणो ओसंक || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -16
- वालाजी रे अवगुण मारा छे अति घणा, तमे रखे मन आणो धणी । विरहणी कहे मूने तम विना, अम ऊपर थई छे घणी || ग्रं - खटरुती, प्र -2, चौ -15
- वालाजी रे अष्टमी भादरवा तणी, कांई सुकल पखनी रात । ए रैणी रूडीय छे, मारा जनम संघाती साथ || ग्रं - खटरुती, प्र -2, चौ -8
- वालाजी रे एम तमे मोसू कां करो, मारा हो प्राणनाथ । आवी करूं तमसूं गुझडी, मारी वीतकनी जे वात || ग्रं - खटरुती, प्र -2, चौ -7
- वालाजी रे चतुरदसी आसो तणी, कांई ब्रह्मांड थयो प्रकास । ए रजनी मूने एकली, तमे काय मूकी निरास || ग्रं - खटरुती, प्र -2, चौ -13
- वालाजी रे जीव मारो मूने दहे, अंग ते उपजे दाझ । अवगुण मारा छे अति घणा, तमे रखे मन आणो राज || ग्रं - खटरुती, प्र -2, चौ -5
- वालाजी रे डोहलाते जल वही गया, हवे आव्या ते निरमल नीर । पिउजी विना हूं एकली, ते तां केम राखू मन धीर || ग्रं - खटरुती, प्र -2, चौ -2
- वालाजी रे तमे तो घणुए जणावियं, पण में नव जाण्यं हूं अधम । जो हूं जाणूं थासे एवडी", तो तमने मूकू केम || ग्रं - खटरुती, प्र -2, चौ -12
- वालाजी रे नीझर जल रे डूंगर झरे, नदी सर भरिया निवाण । पण एक जल वालाजी विना, मारा विलखंता सूके प्राण || ग्रं - खटरुती, प्र -2, चौ -4
- वालाजी रे पूनम रात नो चांदलो, कांई वन सोभे अपार । रासनी रातनो ओछव, मूने कां न तेडी आधार || ग्रं - खटरुती, प्र -2, चौ -14
- वालाजी रे भादरवा मासनी चतुरदसी, काई अति अजवाली थाय । एह समे नव साचव्यो , मारूं तरवारे अंग तछाय || ग्रं - खटरुती, प्र -2, चौ -10

- वालाजी रे में तां एम न जाण्यूं, जे मोसू थासे एम । जो हूं जाणूं करसो विरहणी, तो कंठ बांहोंडी टालू केम || ग्रं - खटरुती, प्र -2, चौ -9
- वालाजी रे वन छाह्य द्रुम वेलडी, हवे धणी तणी आवार । हूं रे वदेसण ना पिउजी, मूने चरणे तेडो आधार || ग्रं - खटरुती, प्र -2, चौ -3
- वालाजी रे विनता विरहणी केम कीजिए, एवडो न कीजे रोष । जो जीव देह मूकी चालयो, तमे त्यारे थासो निरदोष || ग्रं - खटरुती, प्र -2, चौ -16
- वालाजी रे श्रावण मासनी अष्टमी, कांई कृष्ण पखनी जेह । मूने ए रैणी वालाजी विना, घणूं दोहेली गई तेह || ग्रं - खटरुती, प्र -2, चौ -6
- वाले ओलखीने आप मोसूं, कीबूं ते सगपण सत । सनकूल द्रष्टे हूं समझी, आ जाण्यूं जोपे असत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -50
- वाले चितडूं दईने चित, ताणी लीधां आपणां रे । पछे वनमां कीधां विलास, न रही केहेने मणां रे || ग्रं - रास, प्र -35, चौ -11
- वाले वेख लीधो रलियामणो, कांई करसं रंग विलास । आयत छे कांई अति घणी, वालो पूरसे आपणी आस । सखीरे हम चडी || ग्रं - रास, प्र -11, चौ -1
- वाले वेगे लीधी कंठ बांहोंडी, बेठा अंग भीडीने हेतमां रे । नेह थयो घणो नेणांसु, दिए नेत्रने चुमन खांतमां रे || ग्रं - रास, प्र -37, चौ -9
- वाले सांभलियां रे वचन, भरी अंक लीधियो रे । वाले चितडूं दईने चित, सरीखी कीधियो रे || ग्रं - रास, प्र -35, चौ -8
- वालेजीए कीधो विचार, केम मलसे सघली नार । त्यारे देह धरया अनेक, सखी सखी प्रते एक || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -32
- वालेजीए तेणी ताल, संदरबाई मोकल्यां । सखी तमे लई चालो आवेस, म मूकू एकला || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -1, चौ -3
- वालैए विमासी अंग उलासी, देह धरया अनेक । सखियो सघली जुजवी मली, मारा वालाजीसुं रमे विसेक || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -10
- वालैया रमाडे रे, अमने नव नवे रंग । जेम जेम रमिए रे, तेम तेम वाधे रे उमंग || ग्रं - रास, प्र -13, चौ -1
- वालैया हजी तमारे केहे, छे, के तमे कहीने रह्या एह । ते सर्वे अमे सांभल्यूं जी, तमे कयुं जुगते जेह || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -21
- वालैयो वाणी एम उचरेजी, कहे सांभलजो सहु साथ । पतिव्रता स्त्री जे होय, ते तो नव मूके घर रात || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -1
- वालो बलाका देवाने, नीचा नमाव्या चरण । हो हो वालाजी हारिया, हँसी हँसी पडे सहु धरण || ग्रं - रास, प्र -41, चौ -13
- वालो वदेसी आवी मल्या, कांई आपणने आ वार । दुख मांहें सुख माणिए, जो तू भरमनी निद्रा निवार || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -15

- वालो विरह रस भीनों रंग विरहमा रमाड़तो, वासना रूदन करे जल धार । आप ओलखावी अलगो थयो अमथी, जे कोई हुती तामसियों सिरदार || ग्रं - किरन्तन, प्र -35, चौ -1
- वालो वृजमां रम्या जे जुगते, अमे सहु वेख लीधां ते विगते । पिउडो तोहे न दीसे क्यांहे, कालजर्दू कांपे माहे || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -26
- वालोजी अति उलास, मन मांहें रलियात । पूरवा सुन्दरीनी आस, मरकलडे करे हाँस, उलट उतपन || ग्रं - रास, प्र -13, चौ -5
- वालोजी कहे छे वातडी, तमे सांभलजो सह कोय । में जोयूं तमारूं पारखू, रखे लेस मायानो होय || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -51
- वालोजी वसेके हित, चालतो ऊपर चित । इछा मन जे इछत, खरी साथनी पूरे खंत, भलो भली भांत || ग्रं - रास, प्र -38, चौ -3
- वास वसती वसे घाटी, त्रण खूने ना गाम । कांठे पुरो टीवा ऊपर, उपनंदनो ए ठाम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -3
- वासना उतपन अंग थे, जीव नींद की उतपत । कोई ना छोड़े घर अपना, या बिध सत असत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -26
- वासना उतपन अंगथी, जीव निद्रा उतपत । एणी विधे घर कोई न मूके, वासना जीवनी विगत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -113
- वासना को तो जीव न कहिए, जीव कहिए तो दुख लागे जी । झूठकी संगते झूठा केहेत हों, पर क्या करों जानों क्योंए जागे जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -49
- वासना जाणीनें कहूं छू वचन रे, आ जल ना जीवने कोण कहे जी । वचन सुणी जे होय वासना, ते आणी भोमे केम रहे जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -27
- वासना जीव का बेवरा एता, ज्यों सूरज दृष्टं रात । जीव का अंग सुपनका, वासना अंग साख्यात || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -61
- वासना जीवनो वेहेरो एटलो, जेम सूरज द्रष्टे रात । जीव तणो अंग सुपननों, वासना अंग साख्यात || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -61
- वासना सकलने तमे परखो छो, जोई सर्वे ना चेहेन रे । अंग ओलखी श्री धाम मधे, त्यारे देखो आंही ऊभी ऐन रे || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -39
- वासना होएगी बेहद की, सो क्यों छोड़े अपनी पर । ओ सुपन में एक सब्द सुनते, उड़ जासी नींदर || ग्रं - किरन्तन, प्र -24, चौ -5
- वासनाओं की पेहेचान, बानी करसी तिन ताल । निसंकर निद्रा उड़ जासी, सुनते ही तत्काल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -58
- वासनाओं पांचे वल्या पछी, भेली बुध वसेक विचार । अछर आंख उघाडसे, उपजसे हरख अपार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -95
- वासनाओनी ओलखाण, वाणी करसे तेणे ताल । निसंक निद्रा उडी जासे, सांभलतां तत्काल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -58

- वासनाने तां जीव न केहेवाय, घणए दुख मने लागे जी । खोटानी संगते खोटू कहूं , पण सूं करूं मान केमे जागे जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -48
- वांसा ऊपर वेंण लेहेकती, सोभा ते वरणवी न जाए। खुसबोय मांहें रंग भीनो, बीडी तंबोल मुख मांहें || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -45
- वास्ते इन रूहन के, परहेज लिया हकें ए। आठों जाम फेर फेर देऊँ, सुख अर्स का जे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -59
- वास्ते खास उमत के, मैं ल्याया फुरमान । सो आखिर को आवसी, तब काजी होसी सुभान || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -9
- वास्ते निसबत बेर तीसरी, खेल देखाया हक । इलम बड़ाई इस्क, देख्या गुझ बका का बेसक || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -9
- वास्ते नूर-जलाल के, और हादी रूहन । बोहोत बेवरा है खेल में, किया महंमद रूहों देखन || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -45
- वास्ते रद करने को सेहर, खुली गांठें छूटे पैगंमर । इन से पनाह पकड़ी मैं, सो तिन की फजर करी हैं जिने || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -17, चौ -6
- वास्ते रब्द इस्क के, जो किया बीच खिलवत । सो हुकम आड़ा सब दिलों, तो इस्क न काहूं आवत || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -19
- वास्ते हाँसी के मने किए, किया हाँसी को दिल हुकम । तो हाँसी को दिल उपज्या, मांग्या हाँसी को खेल खसम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -2
- वास्ते हिंद के मुसलमानों के, प्यार कर इनों पर आये इमाम मेंहदी || ग्रं - सनंध, प्र -34, चौ -13
- वास्ना वहियो रे अति वेग मां, वार न लगी रे लगार । वस्त खरी ते केम रहे वाला विना, तेणे साथ समो कीधो सिणगार || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -25
- वाहिद तन मोमिन कहे, एही जमात-सुनत । एही फिरका नाजी कहया, इनों हक हिदायत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -9
- वाही जानोगे न्यामत, और वाही से करोगे प्यार । सुख दुख सारा झूठ का, वाही कुटम परिवार || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -54
- वाहेदत अर्स अखंड, असल नकल नहीं दोए । घट बढ़ अर्स में है नहीं, न नया पुराना होए || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -36
- वाहेदत कहिए इनको, एक इस्क तन मन । जुदागी जरा नहीं, वाहेदत में पाव खिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -35
- वाहेदत कहिए इनको, तन मन एक इस्क । जुदागी जरा नहीं, वाहेदत का बेसक || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -13
- वाहेदत का वाहेदत में, वस्तर भूखन पेहेनत । ए नूर है इन अंग का, ए सुन्य ज्यों ना नासत || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -67

- वाहेदत की ए पेहेचान, अर्स दिल कहया मोमिन । मासूक कहया महंमद को, जो अर्स में याके तन || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -40
- वाहेदत की रूहों वास्ते, खेल झठा देखाया और । सो रूहें वाहेदत भूल के, जाने झूठाई हमारा ठौर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -18
- वाहेदत निसबत अर्स की, जब जाहेर हुई खिलवत । ए सुकन सुन मोमिन, दिल लेसी अर्स लज्जत || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -48
- वाहेदत भी इनको कहे, जो हादी हक जात । त्यों नूर हादी का उमत, इन बीच और न समात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -7
- वाहेदत में सुध इस्क की, पाइए नहीं क्योंए कर । घट बढ़ इत है नहीं, अर्स में एकै नजर || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -30
- विआ लाड मुं विसस्या, पसी तोहिजो हाल । न की डिए दीदार, न की सुणाइए गाल || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -31
- विकल थई पूछे वेलडीने, सखी क्यांहे रे दीठा तमे स्याम । जीव अमारा लई गया, मननी न पोहोंती हाम || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -29
- विकार काढूं विधोगते, करी दयानो विस्तार । भली भाते भाजूं भरमना, जेम आल न आवे आकार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -19
- विकार काढू विधोगतें, बढ़ाए दया विस्तार । भानूं भरम तिन भांतसों, ज्यों आल न आवे आकार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -19
- विकार सारे अंग के, काम क्रोध दिमाक । सो बिना विरहा ना जलें, होए नहीं दिल पाक || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -13
- विख की तलाई ने विख के ओढ़ना, विख पलंग दिया बिछाए जी । विख का सिराने विख का ओछाड़, विख पंखा विख वाए जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -8
- विख के फेर अनेक उपजसी, करम केरा जे दुख जी । भी फिरसी फेर अनेक विधके, काहूं जीव को न होवे सुख जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -31
- विख चढे फेर अनेक उपजसे, करम केरा जे दुख जी । वली फरसे फेर अनेक काया, आखी रात चढसे फेर विख जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -30
- विखनी तलई ने विखना ओढना, विखनो ढोलियो ढलाए जी । विख नो ओसीसो ने विखनो ओछाड, वली विजणे ते विखनो वाए जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -7
- विखनी भोम अने विख पाथरियू, आहार करे विख वेल जी। सरीर विखनूं माहेली जोगवाई विखनी, एक माहे ते जीव नेहे केवल जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -6
- विखम बड़ा जल मांहें अंधेर, कई लगसी लेहेरें निघात जी । विसेखें जीव बेसुध होसी, नहीं सुनोगे निध साख्यात जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -37
- विखम वाट जल मांहें अंधेरी रे, तमने लागसे लेहेर निघात जी । वलीने वसेके जीव बेसुध थासे, नहीं सांभलो ते घरनी वात जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -36

- विखम विरह रे वालैया आ रूतनो, ते ता सुखम थाए मले जीवन । हवे ने कहो रे वालैया तेम करूं, जीव दुख पामे रे मन || ग्रं - खटरुती, प्र -3, चौ -11
- विखे स्वाद जिन लग्यो, सो लिए इंद्रियों घेर । जो एक साइत साथ आगे चल्या, पीछे पड़े मांहें करन अंधेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -88, चौ -13
- विचरत जल चेहेबच्चों, सो सिरे लगे पोहोचत । इसी भांत झरोखे बगीचे, माहें रूहें केलि करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -10
- विचार करें दिल मोमिन, जो अर्स मता दिल हम । तो हक दिल होसी कौन न्यामत, जो हक वाहेदत खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -15
- विचार किए इत पाइए, अर्स बुजरकी इत । धनी बुजरकी पाइए, और बुजरकी उमत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -70
- विचार किए इत पाइए, हुआ एही अर्स सहूर । वाको लिख्या कुरान में, ए जो कह्या नूर का नूर || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -40
- विचार किए पाइयत हैं, इनों बल हिकमत । ए किया निमूना पावने, इन कादर की कुदरत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -25
- विचार के छल छोड़िए, तो होवे दोऊ पर । सुपने भी सुख लीजिए, हरखें जागीए घर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -163
- विचार छे वली ए मधे, तमे सांभलो दई चित । आसंका सहु करूं अलगी, कहूं तेह विगत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -17
- विचार तो भी याही को, रूह नजर तो भी ए। जो रूह इन कदम की, रहे तले कदमै के || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -37
- विचार देखो इप्तदाए से, ले अपना तारतम । आपन सोवत हैं नीद में, खेल खेलावत खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -45
- विचार नींद में तो ना होए, जागे नींद रहे क्यों कर । विचार देखो तो अचरज, देखो फरामोसी हाँसी दिल धर || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -88
- विचार विचार विचारहीं, बेधे सकल संधान । रोम रोम ताए भेदहीं, सत सब्द के बान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -12
- विचारी सुपन मुकाविए", तो थाय बंने पेर । सुख ते सुपने जोइए, हरखे जागिए घेर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -141
- विचारो रूहें अर्स की, जो देखाई झूठ नकल । देखो तफावत दिल में, ले अपनी असल अकल || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -102
- विचित्र बानी माधुरी, बन में गंजें करें गान । चेतन चैन जो चातुरी, क्यों कर करूं बखान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -13
- विजिया अभिनंद बुधजी, और नेहेकलंक इत आए । मुक्त देसी सबन को, मेट सबे असुराए || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -37

- विजिया अभिनंदन बुधजी, और निहकलंक अवतार । वेदों कह्या आखिर जमाने, एही है सिरदार || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -46
- विजिया-अभिनंद-बुध जी, लिखी एही सरत । ब्रह्मसृष्ट जाहेर होए के, सब को देसी मुक्त || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -53
- विजिया-अभिनंद-बुधजी, और नेहेकलंक अवतार । कायम करसी सब दुनियां, त्रिगुन को पोहोचावें पार || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -59
- विंद में सिंध समाया रे साधो, बिंद में सिंध समाया । त्रिगुन सरूप खोजत भए विस्मय, पर अलख न जाए लखाया || ग्रं - किरन्तन, प्र -2, चौ -1
- विध दोऊ देखिए, एक नाभः दूजा मुख । गूंथी जालें दोऊ जुगतें, मान लिए दुख सुख || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -3
- विध न लहो विवाद करो, ना देखो वचन विचारी । वल्लभ बानी समझे बिना, खोवत निध तुमारी || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -11
- विध बने दीसे जुगते, नाभ ने वली मुख । गूंथी जालों बंने जुगते, माणी लीधां दुख सुख || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -6
- विध बिध की न्यामत पोहोंचाई, और कई तरबियत फरमाई । लड़के सेती पोहोंचे ज्वान, रख्या कदम हक बयान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -48
- विध भी देखावे बाहेर की, सुध नहीं वृध हान । ना पेहेचान जो रूह की, कहें हम मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -33
- विध विध के कुन्ज बन में, हक रूहें केलि करत । सो क्यों छोड़ें इन कदम को, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -25
- विध विध के भेख काठे, सारे जान प्रवीन । वरन चारों खेलें चित दे, नाही न कोई मत हीन || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -12
- विध विध के सुख और कई, देत दायम अनेक । पर लीला जो जागन की, कदी वचन न पाया एक || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -19
- विध विध के सुख बन में, सैयां खेले झरोखों माहें । वाउ ठंढा प्रेमल गरमीय में, सुख लेवें सीतल छांहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -69
- विध विध जीत करत माया में, सो ए देवाई सब डार । कई दृष्टांत दे दे काढ़े, कर न सके विचार || ग्रं - किरन्तन, प्र -120, चौ -7
- विध विध विलास हाँस, अंग थे उतपन । नए नए सुख सनेह, हुए हैं रोसन || ग्रं - किरन्तन, प्र -83, चौ -4
- विध विधकी बन छत्रियां, जड़ाव चंद्रवा ज्यों चलकत । ए कदम सुख सुपने लेवहीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -42
- विध विधना वचन सुणयाजी, श्रवणां कहे संभारी । जे मनोरथ हता मारा जीवने, ते पूरी वाले आस अमारी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -21

- विध विधना विलास, मगन सकल साथ । मरकलडे करे हाँस, रेहेस रामत विस्तरी || ग्रं - रास, प्र -19, चौ -2
- विध विधना वेख ल्यावे, जाणे रामत निवाण । ब्राह्मण खत्री वैस्य सुद्र, मली ते राणों राण || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -14
- विध विधनी रे चरचा, हवे किहां रे सांभलसं । एह रे वाणी विना, हवे आपण केम गलसूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -51
- विध सघली समझी वैराटनी, माया करसे सत । स्वामी सेवक थासे संजोग, त्यारे उडी जासे असत || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -120
- विध सारी कागद में, हम लिए विचार । तुम साथे मुनीजी संदेसड़ा, आए समाचार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -73
- विध सारी यामें लिखी, जाथें न रहे अग्यान । माएने ऊपर के लेय के, कर बैठे अपना कुरान || ग्रं - खुलासा, प्र -14, चौ -2
- विनता विनवे रे, पिउजी रसिया तमें केहेवाओ । तो एकलड़ा अमने मूकी, अलगा केम करी थाओ || ग्रं - किरन्तन, प्र -43, चौ -1
- विने सब की बताइए, ज्यों होए सब पेहेचान । दीजे साहेदी मुसाफ की, ज्यों होए ना सके मुनकर जहान || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -25
- विनोद हांस अतिघणो, वाले वधारियो सुखतणो । कामनी प्रते कंथ आपणो, एणे सुखे दुख नाख्यां दली || ग्रं - रास, प्र -34, चौ -6
- विप्र कुलीमां थया रे जोरावर, सत वचन उबेखे । पाखंडे खाय सर्वे पृथ्वी, लोभ विना नव देखे || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -35
- विप्र तणों वेपार भाजे छे, भाई भागवत हाट न चाले । तोज फरी फरी ने मूलगां, सब वचन जई झाले || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -34
- विप्र बेख बेहेर द्रष्टि, खट करम पाले वेद । स्याम खिण सुपने नहीं, जाणे नहीं ब्रह्म भेद || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -22
- विप्र भेख बाहेर दृष्टी, खट करम पाले वेद । स्याम खिन सुपने नहीं, जाने नहीं ब्रह्म भेद || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -21
- विप्र भेख बाहेर दृष्टी, खट कर्म पाले वेद । स्याम खिन सुपने नहीं, जाने नहीं ब्रह्म भेद || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -18
- विमासणनी नहीं ए वात, तारो निरमाण बांध्यो स्वांसो स्वांस । तेहेनो पण नथी विस्वास, जे केटला तूं लइस ए स्वांस || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -10
- वियूं रूहें हिन अर्सज्यूं, से तां आजिज पाणे । हे मंझ रूअन रातो-डीहां, मूंजी रूहडी थी जाणे || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -49
- विरह तमने दोहेलो लागे, मूने तेथी जोर । मुख करमाणां नव सहु, तो केम करावं बकोर || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -11

- विरह तमारो नव सहूं, गायूं तमारूं गाऊं। अंग मारूं अलगू न करूं, प्रेम तमने पाऊं || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -25
- विरह थी विछोडी दुख दीधां विसमां, अहनिस निस्वासा अंग उठे कटकार । दुख भंजन सहु विध पिउ जी समरथ, कहे महामती सुख देंण सिणगार || ग्रं - किरन्तन, प्र -39, चौ -4
- विरह सुनते पिउ का, आह ना उड़ गई जिन । ताए वतन सैयां यों कहें, नाहीं न ए विरहिन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -15
- विरह सैयों ने कियो अत, धनी दियो आवेस फेर आई सुरत । तब सैयों को उपज्यो आनंद, सब विरहा को कियो निकंद || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -39
- विरहनी विरहा बीच में, कियो सो अपनों घर । चौदे तबक की साहेबी, सो वारूं तेरे विरहा पर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -5
- विरहा गत रे जाने सोई, जो मिल के बिछुरो होए । ज्यों मीन बिछुरी जलथे, या गत जाने सोए || ग्रं - सनंध, प्र -8, चौ -1
- विरहा गत रे जाने सोई, जो मिलके बिछुरी होए, मेरे दुलहा । ज्यों मीन बिछुरी जलथे, या गत जाने सोए, मेरे दुलहा । विरहनी विलखे तलफे तारूनी, तारूनी तलफे कलपे कामनी || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -1
- विरहा जाने विरहनी, वाके आग ना अंदर समाए। सो झालां बाहेर पड़ी, तिन दियो वैराट लगाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -3
- विरहा जाने विरहनी, वाको आग न अंदर समाए। सो झाले बाहेर पड़ी, तिन दियो वैराट लगाए || ग्रं - सनंध, प्र -8, चौ -3
- विरहा न छूटे वल्लभा, जो पड़े विघन अनेक । पिंड न देखों ब्रह्मांड, देखों दुलहा अपनो एक || ग्रं - सनंध, प्र -8, चौ -4
- विरहा न छोड़े जीव को, जीव आस भी पिउ मिलन । पिया संग इन अंगे करूं, तो में सुहागिन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -3
- विरहा न छोड़े जीव को, जीव आस भी पिया मिलन । पिया संग इन अंगे करूं, तो मैं सोहागिन || ग्रं - सनंध, प्र -10, चौ -4
- विरहा न देवे बैठने, उठने भी ना दे । लोट पोट भी ना कर सके, हूक हूक स्वांस ले || ग्रं - सनंध, प्र -7, चौ -10
- विरहा नहीं ब्रह्मांड में, बिना सोहागिन नार । सोहागिन अंग इमाम को, वतन पार के पार || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -26
- विरहा नहीं ब्रह्मांड में, बिना सोहागिन नार । सोहागिन आतम पिउ की, वतन पार के पार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -23
- विरहा ना छूटे वल्लभा, जो पड़े विघन अनेक । पिंड ना देखों ब्रह्मांड, देखो दुलहा अपनो एक || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -4

- विरहा ना देवे बैठने, उठने भी ना दे । लोट पोट भी ना कर सके, हूक हूक स्वांस ले || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -10
- विरहा सागर होए रया, बीच मीन विरहनी नार । दौड़त हों निसवासर, कहूं बेट ना पाऊं पार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -7
- विरहा सागर होए रह्या, बीच मीन विरहनी नार । दौड़त हों निसवासर, कहूं बेट न पाइए पार || ग्रं - सनंध, प्र -8, चौ -7
- विरहा सुनत रूहें अर्स की, तबहीं जात उड़ तन । सो गवाए याद कर कर हकें, जो बीतक अर्स वचन || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -49
- विरहा सुनते मासूक का, आह ना उड़ गई जिन । ताए वतन रूहें यों कहे, नाहीं न ए विरहिन || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -18
- विरहिन विरहा बीच में, कियो सो अपनो घर । चौदे तबक की साहेबी, सो वारूं तेरे विरहा पर || ग्रं - सनंध, प्र -8, चौ -5
- विरहिन होवे पिउ की, वाको कोई ना उपाए । अंग अपने वैरी हुए, सब तन लियो है खाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -7
- विरहिन होवे पिया की, वाको कोई न उपाए । अंग अपने वैरी हुए, सब तन लियो है खाए || ग्रं - सनंध, प्र -7, चौ -7
- विरिख बेली कई जवेर की, सकल वनस्पति । नकस कटाव केते कहूं, बनी पसु पंखी जात जेती || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -61
- विलख विलख कहे वचन, रोए रोए किए बयान । प्रेम करे अति प्रीतसों, पर साथ को सुध न सान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -6
- विलायत दई हकें इनको, यासों चीज पाइए इसलाम । तो हिजाब न आड़े वजूद, हिजाब न आड़े काम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -47
- विलास करी विध विधना, त्यारे थासे हरख अपार । रामत करतूं आनंद मां, आवसे सकुंडल सकुमार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -14
- विलास तब विध विध के, होसी हरख अपार । करसी आनंद विनोद, आवसी सकुंडल सकुमार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -14
- विलास बृज में पियाजीसों, बरतत एह बात । वचन अटपटे वेधे सब को, अहनिस एही तात || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -38
- विलास विसेखें उपज्या, अंदर कियो विचार । अनुभव अंगे आइया, याद आए आधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -80, चौ -12
- विलास वृजमां वालाजीतूं, वरते छे एह वात । वचन अटपटा वेधे सहुने, अहनिस एहज तात || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -27
- विलास सरूप किन भांत, बिन देखे क्यों उपजे स्वांत । जल जिमी पसु पंखी थिर चर, सब ठौर और अछर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -6

- विवाह जनम नित प्रते, आखे गाम अनेक होय । थोडंक कारज कांइक थाय, तिहां तेडावे सहु कोय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -44
- विविध पेरे सिणगार जो करतां, मन उलासज थाय । मनना मनोरथ पूरण करतां, रंगभर रैणी विहाय || ग्रं - रास, प्र -4, चौ -4
- विविध विलास वालाजीसों करतां, पूरण मनोरथ थाय । ज्यारे वाछरडा लई वन पधारे, त्यारे रोवंतां दिन जाय || ग्रं - रास, प्र -4, चौ -8
- विवेक कर जब देखिए, तब पाइए फूल पांखड़ीं पात । कई जिनसें जुगतें कांगरी, नूर आगे देखी न जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -47
- विवेक विचार न पाइए, ऊपर टेढ़ी पाग लटकाए । आप देखे मांहें आरसी, सिर आसमान लों ले जाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -106, चौ -14
- विश्व मिली करने दीदार, पीछे कोई ना रहे मिने संसार । ब्रह्मसृष्ट को पिया संग सुख, सो कह्यो न जाए या मुख || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -102
- विष्णु अजाजील फरिस्ता, ब्रह्मा मैकाईल । जबराईल जोस धनीय का, रूद्र तामस अजराईल || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -45
- विष्णु को पोहोंचाए ठौर अछर हिरदे, बधजी देएंगे खोल के द्वार । अखंड ब्रह्मांड बरस पचास पीछे, रहेसी हिरदे में खुमार || ग्रं - किरन्तन, प्र -54, चौ -17
- विष्णु ब्रह्मा रूद्र की, साहेबियां बुजरक । ए चौदे तबक की दुनियाँ, जाने याही को हक || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -33
- विष्णु ब्रह्मा रूद्र जनमें, हुई तीनों की नार । निरलेप काहू न लेपहीं, नारी है पर नाहीं आकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -8
- विष्णु मन खेल ले खड़ा, पकड़ के दोऊ पार । भली भांत भेले विष्णु के, सनकादिक थंभ चार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -94
- विष्णु मन रामत लई, ऊभो ते बंने पार । भली भांत भगवान भेला, सनकादिक थंभ चार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -89
- विष्णू कहे सिवजी सुनो, तम पृछत हो जेह । आद करके अबलों, अगम कहियत हैं एह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -4
- विसमां वचन देखी व्यासजीना, पूरी ते दृष्ट चढावी । श्री कृष्ण जी विना बीजूं सर्वे मिथ्या, एम कयूं समझावी || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -105
- विसराई गिंन्यो वंजे, सुंजी संघारयो वंजे । रिणायर रेल्यो वंजे, मालम कर मोहाड, छाला पुजे बंदर पार || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -1
- विसराई वंजी ओतड ओलवे, चुआं पुकारे सच । कपर कंदिए कुटका, गच न मिडदे गच || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -15
- विसराईनी कपर ओडडी, तूं सम म सुखाणी || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -16

- विस्तार बड़ा एक पेड़ पर, कहां लग कहूं जुबान । देखो विध एक बिरिख की, ए मंदिर न होए बयान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -50
- विस्वने लागी जाणे ब्राध, माहें अगिन बले अगाध । ते ता पीडे दुष्ट ने साध, नहीं अधखिणनी समाध || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -2
- विस्वास करके दौड़े जे, तारतम को फल सोई ले । तिन कारन करों प्रकास, ब्रह्मसृष्टी पूरन करूं आस || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -20
- विस्वास करीने दोडे जेह, तारतमनूं फल लेसे तेह । ते माटे कहूं प्रकास, जोपे जागी लेजो साथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -20
- विहारे ते विचमें, जो बका वतन । करे निसबत हिन कांध से, असल कायम रूह तन || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -41
- विहारे वट ओडडी, मथें डिंनो परडेह । डिसां न सुणियां गालडी, की करियां चुआं के केह || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -18
- विहिला थयानी नहीं ए वार, तेडवा आपणने आव्या आधार । प्रगट पुकारी कहे छे सही, आ वचन कहाव्या अंतरगत रही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -8
- वीटी जडाव छे छ आंगलिए, सातमी अंगूठी अति सार जी। आभलियोने फरतां पाना, दरपण मां मुख झलकार || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -42
- वीस करीने दस करूं खोईण, एकवीस करूं जेम थाय गुण जोण । दस जोण करूं मूकीने दस बार, गुण गणतां घणूं जीती आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -21
- वृख ऊभो मूल विना, तेहेर्ने फल वांछे सह कोय । वली वली लेवा दोडहीं, ए हांसी एणी पेरे होय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -11, चौ -16
- वृज नरसैए प्रगट कीबूं, अति घणे वचन विवेक । ए वचन जोईने चालिए, तो आपण थैए विसेक || ग्रं - रास, प्र -4, चौ -10
- वृज रास आंहीं तेहज लीला, ते वालो ते दिन । तेह घड़ी ने तेहज पल, वैराट थासे धन धंन || ग्रं - किरन्तन, प्र -124, चौ -9
- वृज रास देखाडिया, रमया ते अनेक पेरजी । विलास विरह बने भोगवी, आव्या ते आपणे घेरजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -24
- वृज रास मांहें अमें रमू, आंही पण अमें आव्याजी । श्री धाम मधे बेठा अमे, जोऊ डूं आ मायाजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -23
- वृज रास मांहें अमें रमूं, बुध हुती रासमां रंग । हवे आवी प्रगटी, आंही उदर मारे संग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -85
- वृजतणी लीला कही, वली विसेखे रास । श्रीधाम तणा सुख वरणवे, दिए निध प्राणनाथ || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -49
- वृजमां कीधी आपण वातडी, ते तां सघली मांहें सनेह । काम करतां अति घणों, पण खिण नव छोड्यो नेह || ग्रं - रास, प्र -4, चौ -3

- वृजलीला अति मोटी छे, जो जो नरसैयां वचन प्रमाण । ए पगलां सर्वे आपणां, तमे जाणी सको ते जाण || ग्रं - रास, प्र -4, चौ -11
- वृजवधु मांहें रमवा, संग केटलीक जाय । वालोजी इहां दाण मिसे, मारग आडो थाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -36
- वृजवधू कुमारिकाओ नी, कही नहीं सुकजीए विगत । ते केम संसे राखू मारा साथने, तेनी करी दऊं जुजवी जुगत || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -26
- वृथा कां निगमो रे, पामी पदारथ चार । उत्तम मानखो खंड भरथनों, सृष्ट कुली सिरदार || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -1
- वृथा गए एते दिन, जो गए इस्क बिन । मैं हुती पिया के चरन, मैं रेहे ना सकी सरन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -8
- वृंदावन तो जुगते जोयूं, स्याम स्यामाजी साथ । रामत करतूं नव नवी, कांई रंग भर रमसूं रास || ग्रं - रास, प्र -11, चौ -2
- वृंदावन देखाडयूं, रास रमाइयां रंग । पूर्व जनमनी प्रीतडी, ते हमणां आणी अंग || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -45
- वृंदावन फूल्यूं बहु फूलडे, सोभा धरे अपार । वन फल उत्तम अति घणूं ऊंचा, कुसम तणा वेहेकार || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -30
- वृंदावनमां रामत करतां, जजवो थयो सर्व साथ । वली आवी ततखिण एक ठामे, नव दीसे ते प्राणनो नाथ । मारो जीव जीवनजी, लई गया हो स्याम || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -1
- वे इंतजार उसी कौल के, ढंढ़त फिरें रात दिन । आराम न होए बिना मिले, जेती रूह मोमिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -39
- वे फकीर अतीम है, मुझे उठाइयो उनों में । हक बरकत दुनियां मिने, होसी सब इनों से || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -32
- वे सेवा करें बहु विध, फेर फेर देवें बड़ाई । हेत करें जान के साहेब, मोहे एही होत अंतराई || ग्रं - किरन्तन, प्र -62, चौ -11
- वेख अंतज रूदे निरमल, रमे मांहें भगवान । देखाडे नहीं केहेने, मुख प्रकासे नहीं नाम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -20
- वेख उत्तम तमें धरो, पण माहेलो ते मैल नव धुओ । पंथ करो छो केही भोमनों, रिदे आंख उघाडी जुओ || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -13
- वेख नवानो वागो पेहेस्यो, तेड्या वृंदावन । मस्तक मुकट सोहामणो, वेख ल्याव्या अनूपम || ग्रं - रास, प्र -11, चौ -4
- वेख लीधां सखियो विचारी, दैत लीधां ते सहु संघारी । अंग आडो दीधो के वार, वृज लोक ते सकल करार || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -8
- वेख वसेख, राखी रेख, सुख लेत, वाहत मुखे वांसरी || ग्रं - रास, प्र -30, चौ -7

- वेढ देखीने वालोजी हँसिया, वलगे माहोमांहें नार । कोई केने नमी न दिए, आतां बंने जाणे झुंझार" || ग्रं - रास, प्र -39, चौ -11
- वेंण गूंथी एक नवल भांतनी, गोफणडे विविध जडाव । फरती फरती धुंधरडी, ने बोलती रसाल || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -43
- वेण चई चई वलहो मुंहजो, बरया घर मणे" रे । हलया मूंजे डिसंदे, अदी कास्यूं घणूं करे रे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -7, चौ -9
- वेण तणी विगत कहूं तमने, कोरे कांगरी जडाव । मोहोवड नीला मध्य लाल, छेडे आसमानी रंग सोहाय || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -47
- वेंण वडानी मोहे कढे, भोरी तुं ता तोहेनी जाग । कींझो नी कत तूं धणीजो, अंई तंद पेराईंदी आघ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -27, चौ -2
- वेण विगो आंके चुआं, सा वढियां मुंहजी जिभ । पण अंईं हिनमें पई रह्या, हिन मंझां कां न थिदियां सिध || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -18
- वेद अगम केहे उलटे पीछे, नेत नेत कर गाया । खबर न परी बिंद उपज्या कहां थे, ताथें नाम निगम धराया || ग्रं - किरन्तन, प्र -2, चौ -2
- वेद आया देवन पे, असुरन पे कुरान । मूल माएने उलटाए के, कई जाहेर किए तोफान || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -92
- वेद और कतेब में, कहूं सुध न हुती मुतलक । खोल हकीकत मारफत, किन काढ़ी न सुभे सक || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -7
- वेद कतेब के जो अर्थ, ढांपे हते सबों पास । विष्णु संग्राम मांगे जो असुर, ताको कियो कोट प्रकास || ग्रं - किरन्तन, प्र -59, चौ -3
- वेद कतेब के माएने, सब दृढ़ हुए दिल धर । किए मगज माएने जाहेर, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -11
- वेद कतेब पढ़ पढ़ गए, किन पाई न हक तरफ । खबर अर्स बका की, कोई बोल्या न एक हरफ || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -78
- वेद कतेब पढ़ पढ़ थके, केहे केहे थके इलम । कया तिनों मुख अपने, ठौर कायम न पाया हम || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -3
- वेद कतेब सबन पे, लेसी छीन बुधजी । खोल माएने देसी मुक्त, बीच बैठ ब्रह्मसृष्टी || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -34
- वेद कतेब सास्त्र सबे मुख, जुगें लिए सब जीत । मंत्र धात करामात माहीं, पाक उत्तम पलीत || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -13
- वेद कहे उत दुनी की, पोहोंचे न मन अकल । कहे कतेब छोड़ सुरिया को, आगे पोहोंचे न अर्स असल || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -35
- वेद कहे बुध इनपे, और बुध सुपन । एही सब को जगाए के, देसी मुक्त त्रैगुन । || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -79

- वेद कहे मारा मूल आकासें, साखा छे पाताल । तोहे न समझे मूढ़मती, अने फरी फरी पडे मांहें जाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -94
- वेद तणुं तां बिरिख नथी, भाई ए छे प्रगट वाणी । अवली के सबली विचारो, ए आंकड़ी न कलाणी || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -95
- वेद ने पुरान सास्त्र सब उपजे, पीछे भारथ पर्व अठार । दाझ न मिटी तिन व्यास की, पीछे उदयो भागवत सार || ग्रं - किरन्तन, प्र -13, चौ -2
- वेद ने व्याकरणी रे पंडित पढ़वैयो, गछ दीन इष्ट आचार । पीछे रे बल कब करोगे, होत है एकाकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -9
- वेद पुराण भारथ सहू बांध्या, त्यारे दाझ रूदे मा समाणी । ततखिण आव्या गुर जी पासे, बोल्या नारदजी वाणी || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -101
- वेद मोटो कोहेडो, जेहेनी गूंथी ते झीणी जाल । कांईक संखेपे कही करी, दऊं ते आंकडी टाल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -1
- वेद विचार करी करी वलया, पारब्रह्म नव लाध्या । वली वलिया उलटा त्यारे पाछा, बंध विश्वना बांध्या || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -99
- वेद वैराट बंने कोहेडा, फरे छे अवला फेर । प्रगट कहे मुख पाधरूं, पण तोहे न जाय अंधेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -13
- वेद सनमुख चढ़या ज्यारे ऊंचा, त्यारे मूल हता पाताल । फरीने वाणी पाछी वली, त्यारे थया मूल ऊंचा ने नीची डाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -21
- वेद सास्त्र पुरान पढ़ो, सब पैंडे देखो प्रापत । ए चरन न आवे ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्म सों निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -32
- वेदतणो सार भागवत थयो, तेहेनो सार दसमस्कन्ध कयो । दसमतणा अध्याय नेऊ, तेहेनो सार काढीने देऊ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -4
- वेदना विखम रस लीधां अमें विरहतणां, हवे दीन थई कहूं वारंवार । सुपनमा दुख सह्या घणां रासमा, जागतां दुख न सेहेवाए लगार || ग्रं - किरन्तन, प्र -36, चौ -2
- वेदांत गीता भागवत, दैयां इसारतां सब खोल । मगज माएने जाहेर किए, माहे गुझ हुते जो बोल || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -96
- वेदांती भी कहे थके, द्वैत खोजी पर पर । अद्वैत सब्द जो बोलिए, तो सिर पड़े उतर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -14
- वेदांती भी केहे थके, द्वैत खोजी पर पर । अद्वैत सब्द जो बोलिए, तो सिर पड़े उतर || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -14
- वेदांती माया को यों कहें, काल तीनों जरा भी नाहें । चेतन व्यापी जो देखिए, सो भी उड़ावें तिन मांहें || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -19
- वेदांती संतो महंतो, तुम पायो अनुभव सार । निज वतन जो आपनों, तुम सोई करो निरधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -27, चौ -2

- वेदें कया स्याम बृज में, आए नन्द के घर । पीछे आए रास में, इत हुई नहीं फजर || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -14
- वेदें नाम धरे खेल के, पूत बंझा सींग ससक । आकास फूल इनको कया, एक जरा न रखी रंचक || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -70
- वेदें नारद कयो मन विष्णु को, जाको सराप्यो प्रजापत । राह ब्रह्म की भान के, सबों विष्णु बतावत || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -47
- वेदे वलतां वाणी जे ओचरी, ते तां चढी वैराट ने मुख । कुलिए ते लई मुख विप्रोने, करी आपी व्रत भख || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -20
- वेदें वैराट जोयूं दसो दिसा, कही आ पांच चौदनी उतपन । चौद लोक जोया चारे गमा, चाल्या आघा जोवा मांहें सुंन || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -18
- वेदों कथ कथ यों कथ्या, सब मिथ्या चौदे लोक । बकते बकते यों बके, एक अनेक सब फोक || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -12
- वेदों कथ कथ यों कथ्या, सब मिथ्या चौदे लोक । बकते बकते यों बके, एक अनेक सब फोक || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -12
- वेदों कया आवसी, बुध ईश्वरों का ईस । मेट कलजुग असुराई, देसी मुक्त सबों जगदीस || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -31
- वेपार करतां जे बंध बांध्या, ते लेखं लेसे सह तंत । एक ना सहस्त्र गणां करतां, मारया अनेक जीव जंत || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -36
- वेर कहे स्यो वांक अमारो, जां धणी पोते घर नव राखे । अमें आफरवा केम करी ग्रहूं, जां जीव चींधी नव दाखे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -71
- वेर राग बने जोध जुजवा, साम सामा सिरदार । वेर कीबूं तमे वल्लभजीतूं, राग कीधो संसार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -67
- वेल थासे जो ए वातनी, ते ता दुख करसो निरधार । जो जीव काया मूकी चालसे, पछे करसो कायानी सार || ग्रं - खटरुती, प्र -4, चौ -13
- वेलडिए कुसम प्रेमल, कांई वन झलूवे वाए । फले रस चढ्या के भांतना, भोम सोभा वाधंती जाए || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -4
- वेहद वाटे रे कपट चाले नहीं, राखे नहीं रज मात्र । जेने आवो रे ते तो पेहेलू आगमी, पछे ने करूं प्रेमना पात्र || ग्रं - किरन्तन, प्र -67, चौ -8
- वैकुंठ वाट ना दुख जो सहिए, तो आगल सुख अखंड । वेद पुराण भागवत कहे छे, भाई जिहां लगे छे ब्रह्मांड || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -12
- वैकुंठथी जोत वली आवी, सिसुपाल होम्यो जेह । मुख समानी श्रीकृष्णने, पूरी साख सुकदेवे तेह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -21
- वैकुंठनी पण विस्मी वाट, ते जेम तेम सेहेवाय । संजमपुरी ना दुख घणूं दोहेला, ते जिभ्याएँ न केहेवाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -7

- वैकुण्ठ ऊंचूं सिखर पर, ऊवट चढतां उचांण । मोहजल लेहेरां मारे सामियो, इहां वाए ते वा उधाण || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -15
- वैर कहे देखियो बिध मेरी, संग ना आवे संसार । कोई गुन जीवसों करे लड़ाई, तो मोको दीजो धिकार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -73
- वैर राग कहे क्या गुनाह हमारा, जो जीव न राखे घर । जो न देखावे धनी विवेकें, तो हम पकड़ें क्यों कर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -71
- वैर राग तुम दोऊ जोधा, सूर साम सामे सिरदार । वैर किया तुम वल्लभजीसों, राग किया संसार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -67
- वैराट आकार ख्वाब का, ब्रह्मा सो तिनकी बुध । मन नारद फिरे दसो दिस, वेदें बांध किए बेसुध || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -4
- वैराट आकार ख्वाब का, ब्रह्मा सो तिनकी बुध । मन नारद फिरे दसों दिसा, वेदें बांध किए बेसुध || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -2
- वैराट आकार सुपननो, ब्रह्मा ते तेहेनी बुध । मन नारद फरे माहे, वेदे बांध्या बंध वेसुध || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -2
- वैराट आखोरे लोक चौदे, चाले आपोपणी मत । मन माने रमे सहुए, फरीने वल्यूं असत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -28
- वैराट कहे मारो फेर अवलो, मूल छे आकास । डालों पसरी पातालमां, एम कहे वेद प्रकास || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -3
- वैराट का फेर उलटा, मूल है आकास । डारें पसरी पाताल में, यों कहे वेद प्रकास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -1
- वैराट का फेर उलटा, याको मूल है आकास । डालें पसरी पाताल में, यों कहे वेद प्रकास || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -4
- वैराट की विध कही तुमको, जिन कछू राखों संदेह । अखंड गोकुल और प्रतिबिंब, ए भी समझाऊं दोए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -4
- वैराट चौदे तबक, करके नूर नजर । कायम दिए सुख मन बंछे, ब्रह्मांड सचराचर || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -74
- वैराट धणी ज्यारे नव लाध्यो, त्यारे कां ना रहयो तूं गोप । विश्व विगोई स्या माटे, ते उलटा वचन कही फोक || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -104
- वैराट बस किए बिना, क्यों कर होए अखंड । हम खेल देख्या इछाए कर, सो भंग ना होए ब्रह्मांड || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -84
- वैराट वस कीधां विना, अखंड थाय केम एह । अमें रामत जोई इछा करी, मांहें भंग थाय केम तेह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -79
- वैराट वेदें जोई करी, सेवा ते कीधी एह । देव तेहेवी पातरी, संसार चाले जेह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -20

- वैराट वेदों देख के, बूझ करी सेवा एह । देव जैसी पातरी, ए चलत दुनियां जेह || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -21
- वैराट वेदों देख के, बूझ करी सेवा एह । देव जैसी पातरी, ए चलत दुनियां जेह || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -23
- वैराट सब पुकारहीं, सो भी इनमें लिखे सब्द । कई विध लीला जागनी, पर भली गाई महमद || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -59
- वैराट सब हम देखिया, वैकुंठ विष्णु सेखसांई । सुन्यथें जैसे जल बतासा, सो सुन्य मांझ समाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -7, चौ -6
- वैराट सारा गाएसी, नर नारी चित ल्याए । पर गावना सुन महंमद का, रेहेसी सबे अचंभाए || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -61
- वैराट सारा लोक चौदे, चले आप अपनी मत । मन माने खेलें सब कोई, ग्रास लिए असत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -30
- वैराटनी विध कही तमने, रखे राखो मन संदेह । अखंड गोकुल ने प्रतिबिंब, वली कही प्रीछवं तेह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -43
- वैरी टली वोलावा थासे, जो ए करसो जतन । एणी पेरे ए पामसो, अमोलक ए रतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -47
- वैरी मार के कौन जिवावसी, उलटे भान के करे सनमख रे । या दुख में इन धनी बिना, कौन देवे सांचे सुख रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -57
- वैष्णव वाणी जो जो विचारी, ए भोम देखी पामो त्रास । चौद भवनथीं ए वाणी न्यारी, तेमां पेर पेरना प्रकास || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -3
- वैष्णव होए सो वचन मानसी, और जो वल्लभ बानी से टलिया । महामत कहे सो काहे को जनम्या, गर्भ मांहें क्यों न गलिया || ग्रं - किरन्तन, प्र -12, चौ -21
- वैष्णवो मोह थकी निध न्यारी दीधी, आपण ने अविनास । नाम तत्व कयूं श्री कृष्ण जी, जे रमे अखंड लीला रास || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -7
- वैष्णवो सत वस्त एक देखाडयूं, बीजो कयो सर्वे नास । महाप्रले मां तत्व लेवासे, आंहीं मुझ थकी अजवास || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -6
- वैसाख फूल्यो रे वेलडिए वेहेकार , भमरा मदया करे रे गुंजार । पंखीडा अनेक कला रे अपार, वाला वन विलस्या तणी आवार । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -9.5, चौ -3
- वोए वोए इस्क न था एते दिन, कैयों ढूंढ्या गुन निरगुन । धिक धिक पड़ो सो तन, जो तन इस्क बिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -4
- व्रत करो विध विधना, सती थाओ सीलवंत । वेख धरो साध संतना, गनानी गनान कथंत || ग्रं - किरन्तन, प्र -127, चौ -4

श/श्र

- श्रवणा ने अंग इंद्री, टालसे कोण अवला । ए धणी विना बीजो कोण, करी देसे सवला ॥ ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -55
- श्रवन अन्दर सुख क्यों कहूं, जो सुख सागर आराम । क्यों निकसे रूह इन से, ए अंग सुख स्यामा स्याम ॥ ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -125
- श्रवन कण्ठ हाथ पांउं के, भूखन सोभित अपार । एक भूखन नकस कई रंग, रूह कहा करे दिल विचार ॥ ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -120
- श्रवन की किन विध कहूं, लेत आसिक इत आराम । देख सुन सुख पावहीं, आसिक रूह इन ठाम ॥ ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -1
- श्रवन गुन गंज क्यों कहूं, जाके ताबे हुए कई गंज । इन गंजो गुन सुख सो जानहीं, जिन बका हक समझ ॥ ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -37
- श्रवना कहे सुने मैं नीके, विध विध के वचन । पूरी पिउ ने आस हमारी, उपज्यो आनंद घन ॥ ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -21
- श्रवनों सब्द सुनाए के, दिल दीदे दीदार। अनेक हक मेहेरबानगी, सो कहां लो कहूँ सुमार ॥ ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -34
- श्रवनों सोहे पानडी, मानिक के रंग सोए । और रंग माहें नीलवी, जोत करत रंग दोए ॥ ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -62
- श्री कृष्णजी सों प्रेम करे बड़ी मत, सो पोहोचावे अखंड घर जित । ताए आड़ो न आवे भवसागर, सो अखंड सुख पावे निज घर ॥ ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -8
- श्री कृष्णजीएँ बृज रास में, पूरे ब्रह्मसृष्टी मन काम । सोई सरूप ल्याया फरमान, तब रसूल केहेलाया स्याम ॥ ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -75
- श्री ठकुरानी जी रूहअल्ला, महंमद श्री कृष्ण जी स्याम । सखिर्या रूहें दरगाह की, सुरत अछर फरिस्ते नाम ॥ ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -53
- श्री देवचंदजी अम कारणे, रूदे तमारे आवया । वचन पालवा आपणा, साथ सकल पर कीधी दया ॥ ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -2
- श्री देवचंदजी ने लागूपाय, जेम आ दुस्तर जोपे ओलखाय । दई प्रदखिणा करूं परणाम, जेम पोहोंचे मारा मननी हाम ॥ ग्रं - रास, प्र -2, चौ -7
- श्री देवचंदजी पिता परवान, देख के आवेस दियो निरवान । वचन धनी के कहे निरधार, आवेस पिउजी को है अपार ॥ ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -3
- श्री देवचंदजी पिता प्रमाण, निरखी आवेस दीधों निरवांण । नहीं तो ए आवेस छे अपार, पण धणीतणां वचन निरधार ॥ ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -9, चौ -3
- श्री देवचंदजी सों जुध किया, क्ली दज्जाल जिन पर । ईसा दो जामें पेहेरसी, सो लिखी सारी खबर ॥ ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -27

- श्री देवचंदजी सों हम मिले, मुझ अंग हुआ रोसन । सो बातें सब इनमें लिखी, निसान नाम सोई दिन || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -28
- श्री देवचंदजी हम कारने, निध तुमारे हिरदे धरी । वचन पालने आपना, साथ सकल पर दया करी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -2
- श्री धणिए आवी मूने धामथी, जगवी ते जुगतें करी। ते विध सर्वे रूदे अंतर, चित माहें चोकस धरी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -3
- श्री धणिए जे रे वचन कह्यां, ते में सांभलयां रे अनेक । पण में रे मारा गजा सारूं, काई ग्रह्या छे लवलेस || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -3
- श्री धणीजी सिधावतां, केम रही वाचा रे अंग । उखडी न पड्या दंतडा, घण घाय मुख भंग || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -4
- श्री धणीतणा गुण केटला कहूं, हूं अबूझ कांई घणूं नव लहूं । पण पाधरा गुण दीसे अपार, धणिए जे कीधां आवार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -11, चौ -7
- श्री धणीतणा वचन प्रमाण, प्रगट लीला थासे निरवाण । चौद भवननो कहिए भाण, रास प्रकास उदे थया जाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -6
- श्री धनीजी की अग्या पाऊं, तो या समें रसोई ले आऊं। श्री धनीजीने अग्या करी, सैयां चौकी आन आगे धरी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -107
- श्री धनीजी के लागू पाए, मेरे पिउजी फेरा सफल हो जाए । ज्यों पिउ ओलखाए मेरे पिउजी, सुनियो हो प्यारे मेरी विनती || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -1
- श्री धनीजी को ऐसो जस, दुनियां आपे भई एक रस । तेज जोत प्रकास जो ऐसो, काहूं संसे ना रह्यो कैसो || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -105
- श्री धनीजी को दीदार सब कोई देख, होए गई दुनियां सब एक । किनहूं कछुए ना कह्यो, क्रोध ब्रोध काहूको ना रह्यो || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -104
- श्री धाम की आठ पोहोर की बीतक तीजी भोम की जो पड़साल, ठौर बड़े दरवाजे विसाल । धनी आवत हैं उठ प्रात, बन सींचत अमृत अघात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -80
- श्री धाम लीला बैकुंठ अखंड, बृज रास लीला दोऊ ब्रह्मांड । ए सब हिरदे में चढ़ आए, ज्यों आतम अनुभव होत सदाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -69
- श्री धामतणां साथ सांभलो, हं तो कहं लागीने पाय । जे रे मनोरथ कीधां आपणे, ते पूरण एणी पेरे थाय || ग्रं - रास, प्र -4, चौ -2
- श्री धामतणा सुख केणी पेरे कहूं, जे तारतमे करी तमे दीधां जी । नौतनपुरीमा मनोरथ कीधां, ते विध विधना मारा सिधा जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -36, चौ -4
- श्री धामना सुख जे दीसे आहे, ते जीव जाणे मनज मांहें । आ देहनी जिभ्या केणी पेरे कहे, वचन कहूं ते ओरूं रहे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -21
- श्री राज कहे स्यामाजी सुणो, कांई तमारा मनमां जेह । साथ सहुने मनोरथ, काई रह्यो छे एक एह || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -2

- श्री राज चाकले आए, श्री स्यामाजी संग सोहाए । श्री राज पखालेरे हाथ, श्री स्यामाजी भी साथ || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -109
- श्री राज पधाच्या पछी, वृजवधु मथुरा न गई । कुमारिका संग रामत मिसे, दाणलीला एम थई || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -34
- श्री राज बृज आए पीछे, बृज वधू मथुरा ना गई । कुमारका संग खेल करते, दान लीला यों भई || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -45
- श्री श्री जी ने चरण पसाए, जसिया हमची गाए । थोडा दिनमा चौदे लोकें, आ निध प्रगट थाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -124, चौ -11
- श्री संदरबाईने चरण ज थकी, वली मोसं गण कीधां बाई गणवंती । मारे माथे दया रतनबाईनी घणी, एणी कृपाए जोपे ओलखीस धणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -21
- श्री सुंदरबाई के चरन पसाए, मूल वचन हिरदे चढ़ आए। चरन फले निध आई एह, अब ना छोडूं चित चरन सनेह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -18
- श्री सुंदरबाई के चरन प्रताप, प्रगट कियो मैं अपनों आप । मोंसों गुनवंती बाईऐं किए गुन, साथें भी किए अति घन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -24
- श्री सुंदरबाई धनी धाम दुलहिन, इंद्रावती पर दया पूरन । हिरदे बैठ कहे वचन एह, कारन साथ किए सनेह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -2
- श्री सुंदरबाई लई आविया, इंद्रावती ऊपर पूरण दया । रूदे बेसी केहेवराव्यु एह, साथ माटे कीधा सनेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -2
- श्री सुंदरबाई स्यामाजी अवतार, पूरन आवेस दियो आधार । ब्रहमसृष्ट मिने सिरदार, श्री धाम धनीजी की अंगना नार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -1
- श्री स्यामाजी चल्लू करी, दोए बीड़ी दो मुख में धरी । श्री राज उठ बैठे सिंघासन, संग स्यामाजी उठे ततखिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -118
- श्री स्यामाजी मन्दिर और, रंग आसमानी है वा ठौर । चार चार सखियां सिनगार करावें, स्यामाजी श्री धनी जी के पासे आवे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -82
- श्री स्यामाजी वर सत्य हैं, सदा सत सुख के दातार । विनती एक जो वल्लभा, मो अंगना की अविधार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -37, चौ -2
- श्रीजीना वचन में विचारिया, निध लीधी वचनोनी सार । विविध पेरे में तूंने रे वाला, हूं जीती धाम धणी आधार || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -42
- श्रीठकराणीजी श्रीराजसों, भेला बेसे सदाय । आसवाई सुंदरबाई, बेठा एणी अदाय || ग्रं - रास, प्र -46, चौ -3
- श्रीधनीजी को जोस आतम दुलहिन, नूर हुकम बुध मूल वतन । ए पांचो मिल भई महामत, वेद कतेबों पोहोंची सरत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -95

- श्रीपात पंडित ब्रह्मचारी, भट वेदिया. वेदांत । पुराण जोई जोई सर्वे पडिया, परमहंस सिधांत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -3, चौ -11
- श्रोता जाय सांभलवा ने चाल्या, जाणे आंधला नो संग । बाहेरनी फूटी कांने बेहेरा, रदे तणां जे अंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -42

स

- सं रे थy तमने, तमे लोही नव रडिया । एवो विरह देखी ततखिण, निकली न पडिया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -8
- सं रे बल केसरी नूं तम आगल, तम समान नथी बलवंत । छल करी छेतरे छे तमने, रखे रे लेवाओ आंणे प्रपंच || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -21
- सई तूं मेरा धनी ले बैठी, कोई और न देखनहार । देख तूं पिउ लेऊं अपना, तो तूं कहियो सोहागिन नार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -28, चौ -9
- सई तूं मेरी बाई रतन, मोहे मिले छबीले लाल । करी मुझे सोहागनी, अब मैं भई निहाल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -28, चौ -11
- सई मेरी मुझ कारने, पिउजी दिए इत पाए । मैं वारूं तिन पर आतमा, धनी आए जिन राहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -28, चौ -8
- सई रे अनेक भांत मोसों कही, मोहे सालत हैं सो बैन रे । सो भी कह्या आंझू आन के, पर मैं पलक न खोले नैन रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -5
- सई रे अब मैं कहा करूं, मेरा हाल होसी बिध किन । वतन बैठ सैयन में, क्यों कर करूं रोसन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -7
- सई रे पिउ की बातें मैं कैसे कहूं, मोसों आए कियो मिलाप । मेरे वास्ते माया मिने, क्यों कर डारया आप || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -2
- सक छूटी अर्स हक की, सब बातों हुई बेसक । तब अर्स अरवाहों को, क्यों न आवे इस्क || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -100
- सक जरा किन ना रही, जब खोले ताले ए। हुआ सूर बका अर्स जाहेर, लिख्या मुसाफ में जे || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -80
- सक ना अरवाहें अर्स की, जो तीन बेर उतरे । लैल में आए जिन वास्ते, कछू सक ना रही ए || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -25
- सक ना आए खेल देखने, ए जो रूहें आइयां बिछड़ । कर मेला नासूत में बेसक, ले नसीहत आए अर्स चढ़ || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -26
- सक ना आजूज माजूज की, आड़ी अष्ट धात दिवाल । लिख्या टूटेगी आखिर, ए बेसक दुनी के काल || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -16
- सक ना आठों भिस्त में, सक ना काजी कजाए। बेसक किए आखिर लो, अव्वल से इप्तदाए || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -12

- सक ना कायम भिस्त में, बेसक ब्रह्मांड हुकम । बेसक तीनों उमत, बेसक घरों पोहोचावें हम || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -14
- सक ना किसी अर्स की, सक न नर-मकान । सक ना बेचून बेचगून, सक ना चार आसमान || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -19
- सक ना जबराईल में, और सक ना मेकाईल । सक ना सूर बजाए की, सक ना असराफील || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -24
- सक ना जुदी जुदी कयामत, सक नाहीं वाहेदत । बेसक जुदी जुदी पैदास, ए जो कादर की कुदरत || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -22
- सक ना तीन उमत में, सक ना खास उमत । सक ना उमत फरिस्ते, सक ना कुंन कुदरत || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -6
- सक ना दाभ-तूल-अर्ज की, सक ना सूर मगरब । बेसक हक कौल मोमिनों, रही ना सक कोई अब || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -15
- सक ना पेहेचान रसूल की, जो कही तीन सूरत । बसरी मलकी और हकी, जो जाहेर होसी आखिरत || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -23
- सक ना पैदा फना की, सक ना दोजख भिस्त । हिसाब ठौर की सक नहीं, सक ना ठौर कयामत || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -11
- सक ना रही कछू खेल में, सक ना आए देखन । सक ना मैं हक की, और सक ना गिरो मोमिन || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -12
- सक नाहीं कुदरत में, सक नाहीं कादर । सक नहीं कयामत में, सब अरवाहें उठें ज्यों कर || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -13
- सक नाहीं जल उजले, मीठा ज्यों मिश्री । सक ना गिरदवाए बाग की, कई मोहोल जवेर जरी || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -32
- सक नाहीं लदुन्नीय में, कहे अर्स की जाहेर बातन । करें हकसों बातें इन विध, ज्यों करें अर्स के तन || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -79
- सक नाहीं सरीयत में, न सक रही तरीकत || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -21
- सक नाहीं हौज ताल की, इत बोहोत मोहोल बुजरक । विरिख पानी ताल पाल के, सब पाट घाट बेसक || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -34
- सक परदा कोई न रया, सब विध दई समझाए । कहे खोल दे अर्स रूहों को, ए मिलसी तुझे आए || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -13
- सक मिटी जिनों हक की, और मिटी हादी की सक । बेसक हुइयां आप वतन, ताए क्यों न आवे इस्क || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -50
- सक सुभे सब सरीयतों, यों कहे हदीस फरमान । कोई जाने ना हक तरफ को, ए अर्स रूहें पेहेचान || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -14

- सकल काम भए पूरन, रही ना किसी की सक । महामत चाहे पिउ वतन, आए मिलूं ले इस्क || ग्रं - किरन्तन, प्र -62, चौ -19
- सकल बन छाया भली, सोभित जमुना किनार । अनेक रंगे बेलियां, फल सुगंध सीतल सार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -17
- सकल भोम सुख लेवहीं, रूहें हक कदम पकरत । सो क्यों रहें इन कदम बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -17
- सकल मलियो रे साथ, सोभे वालैया संघात । जाणिए उदयो प्रभात, तिमर भाजियो रात, सोहे वृन्दा रे वन || ग्रं - रास, प्र -13, चौ -2
- सकल माहें व्यापक, थावर ने जंगम । सहु थकी ए असंग अलगो, ए एम कहावे अगम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -6, चौ -24
- सकल वन सोहामणूं, सोभित जमुना किनार । अनेक रंगे वेलडी, फल सुगंध सीतल सार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -7
- सकल साथ, रखे कोई वचन विसारो जी । धणी मल्या आपणने मायामा, अवसर आज तमारो जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -3, चौ -1
- सकल सार नूं सार निपनूं, सहु को ते मुखथी भाखे । पण वचन भारी विचार न थाय, त्यारे विप्र वाणी पेहेला नी दाखें || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -113
- संकल्प विकल्प छे तूं माहीं, ते तूं कर सेवा नी । मन उमंग आणे तूं अति घणो, श्री धाम धणी मलवा नी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -85
- संकल्प विकल्प है तुझमें, सेवा कर धनी धाम । उमंग अंग आन निसवासर, कर पूरन मन काम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -85
- सकसुभे कछू ना रही, पट बका दिए सब खोल । दई साहेदी आयतों हदीसों, सो सब रूहअल्ला कहे बोल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -25
- सकसुभे क्योंए भाजे नहीं, हक इलम बिन । ना तो मिलो सब आदमी, या देव फरिस्ते जिंन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -34
- सखत बखत ऐसा हुआ, ईमान छोड़्या सबन । तब अरवाहें करें कुरबानियां, मह होवें मोमिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -118, चौ -13
- सखती न देवें चरन को, ना बोझ देवें पाए। गुन सुख एक भूखन, इन मुख गिने न जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -57
- सखिएं मनमां वचन विचारियां, कांई प्रेम वाध्यो अपार । जोगमाया अति जोर थई, कांई पाछी पडियो तत्काल || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -49
- सखियां केतिक बन में जावें, साक पान मेवा सब ल्यावें । घड़ी चार खेल तित करें, दिन पोहोर चढ़ते आवें घरे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -101
- सखियां चढ़ धाए छज्जे न माए, खेल रच्यो इन दाए । एक दिवालों घोड़े तित चढ़ दौड़े, नए नए खेल उपाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -40, चौ -4

- सखियो करती मान, तेणे विरह ना कीधां पान । विसरी सरीर सान, एवो कीधो खेल री || ग्रं - रास, प्र -36, चौ -4
- सखियो कहे अमे जीतियो, सुख उपनूं आसाधार । ताली दई दई हरखियो, लडथडे पडे सहु नार || ग्रं - रास, प्र -41, चौ -14
- सखियों के नाम ले ले बुलावें, धनीजी के आगे मुजरा करावें । पंखी पिउ पिउ तुहीं तुहीं करे, कई बिध धनी को हिरदे धरें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -50
- सखियो जाओ तमे छपवा, हूं दऊं दाव स्यामाजी ने साटे । हूं रमी सूं नथी जाणती, तमे स्याने देओ मूं माटे || ग्रं - रास, प्र -15, चौ -11
- सखियो तम माटे हूं एम कहूं, कांई तमारा जतन । रखे कोई तमने वांकू कहे, त्यारे दुख धरसो तमे मन || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -17
- सखियो तमे ऊभा रहो, जेवं होय तेवू केहेजो । बंने लऊं अमें बाथडी, तमे साख ते सांची देजो || ग्रं - रास, प्र -41, चौ -10
- सखियो तमे छाना थई छपजो, भूखण ऊँचा चढाओ । रखे सखियो कोई आप झलाओ, मारा वालाजीने खीदडी खुदावो || ग्रं - रास, प्र -15, चौ -5
- सखियो तमे जेम घर ऊभां मूकियां, तेम माणस न मूके कोय । एम व्याकुल थई कोई न निसरे, जो गिनान रूदेमां होय || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -18
- सखियो तमे तो काई न विमासियं जी, एवडी करे कोई वात । अणजाणे उठी आवियूं जी, कांई सकल मलीने साथ || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -7
- सखियो तमे पाछां वलो, अधखिण म लावो वार । मनडे तमारे दया नहीं, घेर टलवले छे बाल || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -19
- सखियो तमे मूको रे बीजी सहु वात, आपण ऊपर निसंक पड़ी रे निघात । दुखे केम मूकिए गोपीनो नाथ, हवे आपोपूं नाखो जेम रहे अख्यात || ग्रं - खटरुती, प्र -15, चौ -14
- सखियो तमे साचूं कयूं, ए वीती छे मूने वात । तमने विरह उपनूं मारो, हूं कहूं तेहेनी भांत || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -35
- सखियो तमे सावचेत थाजो, रखे कोई मूकतां हाथ रे । हमणा हरावू मारा वालाजीने, जो जो तमे सहु साथ रे || ग्रं - रास, प्र -18, चौ -5
- सखियो तारा सुखडा संभारीने रूए, हवे अम विजोगणियों ने कोण आवी जुए । पिउजी विना आंसूडा ते कोण आवी लए", वाला पछे आवसोसं अममुए || ग्रं - खटरुती, प्र -9.5, चौ -6
- सखियो पूरूं मनोरथ तमतणां, कांई करसं ते रंग विलास । करवा रामत अति घणी, में जोयूं मायानो पास || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -56
- सखियो भूलां छू घणवे आपण जी, अने वली कीजे सामा रूदन । कलहो करो भोमे पडो जी, कां विलखाओ वदन || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -13

- सखियो मनमां आनंदियो, ए रामतमां अति सुख रे । साथ सहु रब्दीने रमसुं, मारा वालाजी सनमुख रे || ग्रं - रास, प्र -28, चौ -2
- सखियो मनोरथ होय ते केहेजो, रखे आणो ओसंक । जेम कहो तेम कीजिए, आज करतूं रामत निसंक || ग्रं - रास, प्र -11, चौ -10
- सखियो मली संघात, सोभित चांदनी रात । तेज भूखण अख्यात, मीठे स्वरे बाज री || ग्रं - रास, प्र -12, चौ -2
- सखियो मलीने विचारज कीधो, पूछिए स्यामाजी किहां छे स्याम । रामतनों रंग हमणां वाध्यो, मन माहे हुती मोटी हाम || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -3
- सखियो मारी वात सुणो, कां करो ते एवडो दुख । पूरूं मनोरथ तमतणां, सघली वाते दऊं सुख || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -41
- सखियो मारो जीव जीवन माह भलियो, अमें माया ग्रही तोहे ते पल न टलियो । ए वालो अम विना कोणे न कलियो, इंद्रावती कहे अमारो अमने मलियो || ग्रं - खटरुती, प्र -15, चौ -17
- सखियो वात हूं केही कहूं, जीव मारो नरम । वल्लभ मारा जीवनी प्रीतम, अलगी करूं हूं केम || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -9
- सखियो वृंदावन आपण खोलिए, इहांज होसे आधार । जीवतणो जीवन छे, ते ता नहीं रे मूके निरधार || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -10
- सखियो वृंदावन देखाई तमने, चालो रंग भर रमिए रास । विविध पेरेनी रामतो, आपण करतूं मांहों-मांहें हांस || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -57
- सखियो सर्वे आवी जुजवी, एक बीजीने खोले । आ लीला केम छानी रेहेसे, सखियो मली सहू टोले || ग्रं - किरन्तन, प्र -124, चौ -6
- सखियो हजी मारे केहेबुं छे, तमे श्रवणा देजो चित । मरजादा केम मूकिए, आपण चालिए केम अनित || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -22
- सखियो हवे आपोपूं सह कोई झालो, कान्हजी होय तो दोडी जईए चालो । ए जदुराय नहीं रे गोपियोनों वहालो , सखियो हवे ऊधव ने गुझडी कां आलो । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -15, चौ -9
- सखियो हवे घरडा सहुए संभारो, रखे कोई वालाजीने दोष देवरावो । ए विरह माहेना मांहेज मारो, सखियो एतो नहीं घर वार उधारो || ग्रं - खटरुती, प्र -15, चौ -13
- सखियो हवे दुखडा के ऊपर कीजे, आपणो नंद कुंअर होय तो रीझे । आपणी वातें जदूनो राय न भीजे, सखियो हवे ऊधवने संदेसा स्या दीजे || ग्रं - खटरुती, प्र -15, चौ -8
- सखियो हवे विना घाय नाखो आप मारी, वालाजीना विरहनी वात संभारी । वसेके वली राखो घर लोकाचारी, हवे एवी कठण कसोटी खमो नारी || ग्रं - खटरुती, प्र -15, चौ -15

- सखियो हवे विरहनी भारी रे उपाडो, ए अंग मायाना माया माहे पछाडो । ए विरह बीजा कहेने मा देखाडो, सखियो विना रखे कोणे बार उघाडो । हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं || ग्रं - खटरुती, प्र -15, चौ -16
- सखी इंद्रावती एम कहे, चालो जैए वालाजी ने पास । कंठ बलाई मारा वालाजी संगे, कीजे रंग विलास || ग्रं - रास, प्र -11, चौ -8
- सखी ए रे आपणने मूकी गयो, एणे दया नहीं रे लगार । हवे आंहीं थकी केम उठिए, मारा जीवन विना आधार || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -11
- सखी एक दूजी को ढूंढहीं, आई जुदी जुदी इन बेर । प्रेम प्यासी पिया की, लई जो विरहा घेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -23
- सखी एक निकसें एक पैठे, एक आवें उठे एक बैठे । इन समें भगवान जी इत, दरसन को आवें नित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -97
- सखी एक भांत रे, मारो वालोजी करे छे वात रे । लई गले बाथ रे, आणी अंग पासरे, चुमन दिए चितसूं || ग्रं - रास, प्र -26, चौ -1
- सखी कछुक मन में चाहत, सो आगू खड़ी ले आए। यों चित चाहे सुख धाम के, कब लेसी हम जाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -15
- सखी केही रे सनंधे चालिए, मारा लई गयो ए प्राण । सखियो अमने सूं रे कहो छो, अमे नहीं रे अवाय निरवाण || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -12
- सखी गाल दऊं हूं दैवने, के दऊं विधाता पापिष्ट । एणे लेख अमारा एम केम लख्या, एणे दया नहीं ए दुष्ट || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -18
- सखी चूक्या हतूं घणूं आपण, हवे लागी कालजडे झाल । फिट फिट भूडा पापिया, तूं हजिए न आव्यो काल || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -21
- सखी जोइए आपण वनमां, एम रे भैयो तमे कांए । जेनूं नाम श्रीकृष्णजी, ते बेठा छे आपण मांहें || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -23
- सखी ताथें दुख प्यारो लग्यो, अंदर देखो विचार । सो दुख कैसे छोड़िए, जासों पाइए पिउ मनुहार || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -4
- सखी दियो रे मांहोंमाहें हाथ, वचे जोड लीजिए रे । स्याम स्यामाजी पाखलवाड, सखियो तणी कीजिए रे || ग्रं - रास, प्र -35, चौ -2
- सखी दैव विधाता सू करे, एम रे भैयो तमे कांए । दोष दीजे कांई आपणो, जे चूक्या सेवा मांहें || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -19

- सखी दोष हसे जो आपणो, तो वाले की• एम । चित ऊपर जो चालतां, आपण केहेता करतो तेम || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -14
- सखी नेहेचल नेहडा आपणां, बेटे नहीं केमे तेह । आणे अंगे मलसूं प्रीतम, सखी आस न छूटे एह || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -35

- सखी पगलां जुए प्रीतम तणां, साथ खोले वृंदावन । नेहेचे आपणने मूकी गयो, हजी पिंडडा न थाय पतन || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -34
- सखी प्रते स्याम, वालेजीए देह धरया । कांई वल्लभसू आ वार, आनन्द अति करया || ग्रं - रास, प्र -44, चौ -1
- सखी प्रेम ध्वजा केहेवाय, जेनें प्रगट नाम कुली मांहें । ए तो प्रेम तणां जे पात्र, आपणथी अलगो न थाय खिण मात्र || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -2
- सखी बेन सुन ना रही कोई पल, देखियो एह जीव को बल । इन आड़ा था मन संसार, पर जीव निकस्या वार के पार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -24
- सखी मांहों मां वात करे, आज अमे थया रलियात । वेख निरखीने नेत्र ठरे, आज करसूं रामत निघात || ग्रं - रास, प्र -11, चौ -3
- सखी री आतम रोग बुरो लग्यो, याको दारू ना मिले तबीब । चौदे भवन में न पाइए, सो हुआ हाथ हबीब || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -1
- सखी री जान बूझ क्यों खोइए, ऐसा अलेखे सुख अखण्ड । सो जाग देख क्यों भूलिए, बदले सुख ब्रह्मांड || ग्रं - किरन्तन, प्र -78, चौ -1
- सखी री तेज भस्यो आकास लों, नख जोत निकसी चीर । ज्यों सागर छेद के आवत, नेहेर निरमल का नीर || ग्रं - सिनगार, प्र -5, चौ -1
- सखी वृखभान नंदनी, कंठ कर कृष्ण नी । जोड एक अंगनी, रमती रंगे रास री || ग्रं - रास, प्र -16, चौ -1
- सखी वेख पूतना नार, भर जोवन आवी सिणगार । विख भस्यां तेना अस्थन, आवी धवरावे कपटे मन || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -6
- सखी सहुने मल्या एकांत, रम्या वनमां जुजवी भांत । वाले पूरण मनोरथ कीधां, अनेक विधे सुख दीधां || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -33
- सखी सागरनी सी वात, सुणो सुख स्यामनी । मारी जिभ्या आणे अंग, न केहेवाय भामनी || ग्रं - रास, प्र -35, चौ -10
- सखी सेवा चूक्या हतूं आपण, पण वालो करे एम केम । आपणने एम रोवंतां, वालो मूकी गया छे जेम || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -20
- सखी हम तो हमारे घर चले, तुम हूजो हुसियार । सुरता आगे चल गई, हम पीठ दई संसार || ग्रं - किरन्तन, प्र -93, चौ -2
- सखीरी मेहेर बड़ी मेहेबूब की, अखंड अलेखे । अंतर आंखां खोलसी, ए सुख सोई देखे || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -1
- संखेपे कहूं में समझवा, भाजवारे मननी भ्रांत । एहेनो छे विस्तार मोटो, आगल कहीस वृतांत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -15
- सख्प रसूल हुकम, आगे खड़ा खसम । हुकमें देखाया रूहन को, बैठे देखें तले कदम || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -30

- सख्प रूहों के मनके, जो कछुए मन चाहें । ऊपर तले माहे बाहेर, एक पल में काम कर आएं || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -65
- सख्प साते भली भांते, आरोगे अंन पाक । कल्यानबाई रसोई करे, विध विध वघारे साक || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -17
- सख्प साथकी पेहेचान, तारतममें उजास । जोत उद्दोत प्रगट पूरन, इंद्रावती के पास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -57
- सख्य सुन्दर सनकूल सकोमल, रूह देख नैना खोल नूर जमाल । फेर फेर मेहेबूब आवत हिरदे, किया किनने तेरा कौल फैल ए हाल || ग्रं - किरन्तन, प्र -112, चौ -1
- संग पिउ के न चली, क्यों रही पिउसों बिछर रे । अजहूं आह तेरी न उड़ी, याद कर अवसर रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -70
- संगडो डिठम बेसक, मंझ तोहिजे इलम । त चुआं थी हुजतूं, जे चाइए थो खसम || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -21
- संगत करसो साधनी, ए रूदे करसे प्रकास । त्यारे ते सर्वे सूझसे, थासे अंधकारनो नास || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -53
- सगाई कीधी प्रगट, आपण घणुए राखी गुपत । वचन एक ए छे निरधार, श्री सुंदरबाई केहेतां जे सार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -11
- संगी जो अपने सनमंधी, सो भी गए मांहें भूल । तो क्यों समझें जीव मोह के, जाको निद्रा मूल || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -12
- सगे मेल्यूं ज्यारे सगपण, त्यारे अंगसू उपनूं वेर । ततखिण तेणे झोकी बाली, वेहेंची लीबूं घेर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -16
- सघला कारज थया एम सिध, श्रीसंदरबाईए सिखामण दिध । रूदे बेसी केहेवराव्युं रास, पेहेलो फेरो कीधो प्रकास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -18
- सचा सचो मूंके रसूल, मथे सच अदल । मूं सचो दावो दोस से, सचडा थी मुकाबिल || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -68
- सची सांजाए तूं करिए, समरथ तूं सुजाण । संग जाणी करियां लाडडा, डिने छुटे मेहेरबान || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -87
- सचो सांई जडे आइयो, तडे व्यो पुजाए केर । सुज कायम उगी थ्यो जाहेर, तडे उडी वेई सभे अंधेर || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -14
- सचो सोणे जी थेयो, भाइयां सोणो थेयो सचो । लाड कोड के से करियां, अंखिएं जां न अचो || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -30
- सज थया सिणगार करीने, रास रमवायूँ मन मांहें । साथ सकल मारा पिउ पासे आव्यो, इंद्रावती लागे पाए || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -49
- सजण आया { गरे, मं न सुजातां सेंण । गाल्यूं केयाऊं हेतमें, घणी भती भती जा वेण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -6, चौ -2

- सजण आया मूं न सुजातम, मंके चेयाऊं घणा वेण । कंन अखियुं फूटियुं, व्या फूटया हिए जा नेण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -6, चौ -4
- सजण ए की छडजे, तूं तां न्हार केडा आईन । पिरिए तोसे पाण न रख्यो, से न संभारजे की || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -16, चौ -4
- सजण मुंहजी रूहजा, तांजे डिए रूह सांजाए । त हिकै आहि अरवाह के, पेरे तरे पुजाए || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -5
- सजण विया निकरी, हांणे आंऊं करियां की। अवसर व्यो मूंजे हथ मंझां, हांणे रूअण रातो डी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -6, चौ -5
- सजण विया मुंजा निकरी, मूं तां सुजातां न सारे रे । मूंके चेयाऊं घणवे पुकारे रे, न की न्हास्यों मूं दिल विचारे रे । से सजण होणे कित न्हारियां || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -7, चौ -1
- सजण सुजाणी करे, कडे समी सई न कीयम गाल रे । ए डुख आंऊं की झलींदी, मूंजा केहा हांणे हवाल रे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -8, चौ -8
- सजन मेरा चल गया, अब रहूंगी विध किन । वस्त गई जब हाथ थे, अब रोवना रात दिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -5
- संझा लगे धनी रेहेसी साथ कारन, तुम अजहूं ना नींद निवारो जी । पेहेचान पिउ सुख लीजिए, तुम अपना आप वार डारो जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -21
- संझा लगे रह्या धणी आपण माटे, ते तमे कांय न संभारो जी । ओलखी धणी ने सुखडा लीजिए, तमें आपापूं वारणे वारो जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -20
- संझाने समें रे वेण वाईयो, काई वृंदावन मुंझार । एणे ने समे सहु ऊर्भूं मूकियूं, तेहने आडो न आव्यो रे संसार || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -6
- सणगू उठ्यूं ते सतनो, असत भागी अंधेर । आपोपूं में ओलख्यूं, भाग्यो ते अवलो फेर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -49
- सत असत इन खेल में, रहे थे दोऊ मिल । सो दोऊ जाहेर किए, सांचा दीन झूठा छल || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -35
- सत असत पटतरो, जैसे दिन और रात । सत सूरज सब देखहीं, जब प्रगट भयो प्रभात || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -1
- सत कहे संतोख उपजे, कली तणे कांधे चढ़या । ते वैष्णव नहीं तेथी रहिए वेगला, जे ए निध मूकी पाछा पड़या || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -22
- सत को सत भेदत है, बीच झूठ के हक । ए सन्देसा तब पोहोंचही, जब रूह निपट होए बेसक || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -25
- सत चांद और सत सूर, हिसाब बिना सत नूर । सत सोभा सत मंदिर, सत सुख सेज्या अंदर || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -7

- सत चाहो सो सब्दा चीन्हो, सो आप न देवे देखाई । जिन पाया तिन मांहें समाया, राखत जोर छिपाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -5, चौ -8
- सत छाया जीव पर पड़े, सो तबहीं मुरछाए । ख्वाब न देखे सांच को, वह देखत ही मिट जाए || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -41
- सत जिमी सत बन, खुसबोए सत पवन । लेहेरी लेवे सत जल, सत आकास निरमल || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -8
- संत जी सुनियो रे, जो कोई हंस परम । मैं पूछत हों परआतमा, मेरा भानो एही भरम || ग्रं - किरन्तन, प्र -29, चौ -1
- सत जो ढाप्या ना रहे, उड़ाय दियो अंधेर । नूर पिया पसरे बिना, क्यों मिटे दुनियां फेर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -6
- सत जोऊं सन्तो तणो, अने साध तणी सिधाई । बाहेर चेन करे कई साधना, माहे ते भांड भवाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -13
- सत डारी झलूबे ऊपर जल, खुसबोए हिंडोले सीतल । सत सुख तलाब के त्रट, खोल देखो नैना पट || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -11
- सत ढांप्या पीठ देवाई पिया को, झूठ ल्याया नजर । नेहेचल राज सोहाग धनी को, सो भुलाए दियो घर || ग्रं - किरन्तन, प्र -60, चौ -3
- सत धनी सों करो हांस, पीछे करो प्रेम विलास । सत बरनन कीजो एह, उपजे सत प्रेम सनेह || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -4
- सत पर सत दोऊ पर्वत, तोरन बांधे हैं बंध । बिन थलिऐ विवाह हुआ, हाथों हाथ जोड़े मूल सनमंध || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -6
- सत पसु पंखी अलेखें, सत खेल राज साथ देखें । सत खेले बोलें बन माहीं, सत सुख हिसाब काहूं नाहीं || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -9
- सत बरत्यो त्रिगुन त्रैलोकी, असत न रही लगार । काटी करम फांसी दुनियां की, पीछे निरमल किए सिरदार || ग्रं - किरन्तन, प्र -54, चौ -10
- संत महंत अनेक मुनिवर, देखीतां दिगंबर । जाए सहुए प्रघल पूरे, कापडी कलंदर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -3, चौ -13
- सत रेहेस सत रंग, सत साथ को सुख अभंग । तुम संग करो सत बातें, सत दिन और सत रातें || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -6
- सत वस्त घणू स्या ने प्रकारां, अर्थी बिना नव कहिये । एहेना नेहेचल नेहड़ा गोप भला, आ उलटीमां प्रगट न थैये || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -11
- सत वस्त दऊं साथने, कोई रची रूडो रंग । मनना मनोरथ पूरा करी, सुख दऊं सर्वा अंग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -20
- सत वाणी छे वेद तणी, जो ते कोई जुए विचारी । ए कोहेडो रचियो रामतनो, सघला ते मांहे अंधारी || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -96

- सत वाणी वैष्णव ने समझावू, जेसू मूल डाल प्रकासी । श्री मुख आचारज जे ओचरया, तेणे जाए भरमना नासी || ग्रं - किरन्तन, प्र -64, चौ -2
- सत वैराट में पसरया, काढ्या कुली जालिम । चौदे तबक सचराचर, नूर इस्क हमारा हम || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -19
- सत वोहोरीने सत ग्रहजो, राखजो रूडी प्रकार । आणी भोमें रखे भूलतां, पछे सेठ तणो वेहेवार || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -3
- सत व्रत धारणसों पालिए, जिहां लगे ऊभी देह । अनेक विघन पड़े जो माथे, तोहे न मूकिए सनेह || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -29
- सत सब्द को कोई न चीन्हे, सूने हिरदे नहीं संभार । समझे साध जो आपको देखें, तामें बड़ी अंधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -22, चौ -3
- सत सब्द को सोई चीन्हे, जो होए वासना ब्रहम । ए तो असत उलटिए खेल रच्यो है, देत देखाई सब भ्रम || ग्रं - किरन्तन, प्र -24, चौ -6
- सत सरूप जो धाम के, तिनके अन्तस्करन । इस्क तिनके अंग का, सो कछुक करूं बरनन || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -34
- सत सांई सों करो विलास, तब टूट जाए झूठी आस । ज्यों ज्यों लेओगे सत सुख, त्यों त्यों छूटे असत दुख || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -14
- सत सागर सुतेज में, बतावत नेहेचल धन रे। सो पूर लेहेरां चल गई, आवत अमोल अखंड रतन रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -66
- सत साथ देत देखाई, सत आनन्द अंग न माई । सत साथ सों करो प्रीत, देखो सत घर की ए रीत || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -5
- सत सुख कई सरूप में, कई आनन्द आराम । कई खुसाली खूबियां, अंग छूटे न आठों जाम || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -12
- सत सुख में सुख देयसी, इन जिमी के दुख जेह । तुम हंसोगे हरख में, रस देसी दुखड़ा एह || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -19
- सत सुखमां सुख देसे, आ भोमना दुख जेह । तमे हंससो हरखमां, रस देसे दुखडा एह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -19
- सत सुपने में क्योंकर आवे, सत सांई है न्यारा । तुम पारब्रहम सों परच्या नाहीं, तो क्यों उतरोगे पारा || ग्रं - किरन्तन, प्र -32, चौ -2
- सतगुर क्यों पाइए कुली में, भेखें बिगारयो वैराग । डिंभकाइए दुनियां ले डबोई, बाहेर सीतल मांहें आग || ग्रं - किरन्तन, प्र -26, चौ -3
- सतगुर मेरा स्याम जी, मैं अहनिस चरणें रहूं । सनर्मध मेरा याही सों, मैं ताथें सदा सुख लहूं || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -1
- सतगुर संग करे आप ग्रही, वचने धमावे निसंक । रस थई कस पूरे कसोटी, त्यारे आडो न आवे प्रपंच || ग्रं - किरन्तन, प्र -70, चौ -9

- सतगुर संगे मैं ए घर पाया, दिया पारब्रह्म देखाई । महामत कहे मैं या विध बिगड्या, तुम जिन बिगड़ो भाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -18, चौ -7
- सतगुर साधो वाको कहिए, जो अगम की देवे गम । हद बेहद सबे समझावे, भाने मनको भरम || ग्रं - किरन्तन, प्र -4, चौ -12
- सतगुर सोई जो आप चिन्हावे, माया धनी और घर । सब चीन्ह परे आखिर की, ज्यों भूलिए नहीं अवसर || ग्रं - किरन्तन, प्र -14, चौ -11
- सतगुर सोई जो वतन बतावे, मोह माया और आप । पार पुरुख जो परखावे, महामत तासों कीजे मिलाप || ग्रं - किरन्तन, प्र -20, चौ -6
- सतगुर सोई मिले जब सांचा, तब सिंध बिंद परचावे । प्रगट प्रकास करे पार ब्रह्म सों, तब बिंद अनेक उड़ावे || ग्रं - किरन्तन, प्र -2, चौ -9
- सतने असत कहे, असत ने सत करी जाणे । ते विध कहीस हूं तमने, अवलो एह एधाणे || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -27
- सतलोक मृतलोक दो कहे, और स्वर्ग कह्या अमृत । जो नीके किताबें देखिए, तो ए सब उड़सी असत || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -8
- सतवादी नाम केते लेऊ, कई हुए तरन तारन । सत न छोड़या कई दुख सहे, सो या दिन के कारन || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -16
- सत्तर बरस और जो रहे, सो तो पुल-सरात के कहे । मोमिन चलें बिजली की न्यात, मुतकी भी घोड़े की भांत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -10
- सत्तर बरस पुलसरात के कहे, सो उठने कयामत बीच में रहे । पुलसरात दुख कहिए क्यों कर, काफर जलें जुलजुले आखिर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -47
- सत्तर बरस लों आग जलाए, तब फरिस्ते दिए चलाए । अजाजील विरहा आग जल, पीछे असराफीलें किए निरमल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -42
- संदरता सिणगार सोभा, वचने न केहेवायजी । तो सपना जे सुखनी वातों, लवो केम बोलायजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -19
- सदरतुल मुंतहा अर्स अजीम, नूर जमाल सूरत सुभान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -47
- संदरबाई आपण माटे, आव्या छे आणी वार जी। ए आपणने अलगां नव करे, काई मोकल्या छे प्राण आधार जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -2, चौ -2
- संदरबाई इंद्रावती, काई रत्नावती संग । लालबाई पेहेले निसरयां, सिणगार कीधां सर्वा अंग || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -16
- संदरसाथ मलीने रमिए, वालाजीसं रंग अपार । लोपी लाज रमूं हूं तमसू, इंद्रावतीना आधार || ग्रं - खटरुती, प्र -5, चौ -16
- सदस्-तुल-मुंतहा अर्स अजीम, जबरूत या लाहूत । इत जरा सक कहूं ना रही, ए बल कुंजी कूवत || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -50

- सदस्तुलमुंतहा थे, आवत नूर-जलाल । जित है अर्स अजीम, खावंद नूर-जमाल || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -79
- सदा लीला जे वृजनी, आ विध कही तेह तणी । हवे रासनो प्रकास कहूं, ए सोभा अति घणी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -53
- सदा लीला जो बृज की, मैं कही जो याकी बिध । अब कहूं वृन्दावन की, ए तो अति बड़ी है निध || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -64
- सदा सुख दाता धाम धनी, अंगना तेरी जोड़। जानो सनमंध कबूं ना हुतो, ऐसा किया बिछोड़ || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -6
- सदी बारै बी खलक, जिमी या आसमान । आखिर थेई सभनी, समझे जा सुजान || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -29
- संध संध टूटी नहीं, सुनते विरहा सुकन । रोम रोम इन तन के, क्यों न लगी अगिन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -151
- सनकादिक ब्रह्माने कहे, जे जीव मन बेहू भेला रहे । ते जुजवा करीने देयो, सनकादिके एम प्रश्न कयो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -4
- सनकादिके एम पूछयूं वचन, जीवने चांपी बेठो मन । त्यारे हँसजीए कीधो जवाब, समझया सनकादिक भाग्योवाद || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -7
- सनकूल करे तुमारा चित, संसे भान करे जीव के हित । पिउ चित पर चलेगा जोए, साथ में घरों सोभा लेसी सोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -7
- सनकूल मुख अति सुंदर, गौर हरवटी सलूक । लांक अधुर दंत देखत, जीव होत नहीं टूक टूक || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -70
- सनंध आरबीकी कलाम आरबी हक रसूल ना, फआल कसीदे कलम । बोली आरबी सच है रसूल मेरे की, करके सखियां कहत हो । लाकिन माय आरफो, मिन्हम हिंद मुस्लिम || ग्रं - सनंध, प्र -2, चौ -1
- सनंध सर्वे कही करी, ओलखाव्या एधाण । हवे प्रगट थई हूं पाधरी, मारी सगाई प्रमाण || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -51
- सनंधे सनंधे साखियां, तिन साखी साखी पाव । तिन पाव पाव के हरफ का, तुम लीजो दिल दे भाव || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -35
- सनंधे सर्वे कयां वचन, ग्रयां गांगजी भाइए जोपे मन । एटला लगे कोंणे नव लयां, ते गांगजी भाई घेर प्रगट थया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -34
- सनमंध करते आप में, उछरंग अंग न माए । केसर कसूबे पेहेर के, सेहेर में फेरे खाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -14
- सनमंध करते आप में, खसाल हाल मगन । केसर कसूबे पेहेर के, देखलावें लोकन || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -16

- सनमंध मूल को, मैं तो पाव पल छोड्यो न जाए। अब छल बल मोहे कहा करे, मोह आद थे दियो उड़ाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -1
- सनमंध मूल को, मैं तो पाव पल छोड्यो न जाए। अब छल बल मोहे क्या करे, मोह आद थें दियो है उड़ाए || ग्रं - सनंध, प्र -10, चौ -1
- सनमंध मेरा तासों किया, जाको निज नेहेचल नाम । अखंड सुख ऐसा दिया, सो मैं छोड़या विसराम || ग्रं - किरन्तन, प्र -99, चौ -3
- सनमंधी जब चल गया, अंग वैर उपज्या ताए । सो तबहीं जलाए के, लियो सो घर बटाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -12
- सनमंधी जब चल गया, अंग वैर उपज्या ताए । सो तबहीं जलाए के, लियो सो घर बटाए || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -15
- सनमंधी ज्यारे साचो मल्यो, त्यारे जीवने थयो करार । मेहेराज कहे धंन धंन ए घडी, धंन धंन कोहेडो अंधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -33
- सनमंधी साथ को कहे वचन, जीव को एता कौन कहे जी। ए वानी सुन ढील करे क्यों वासना, सो ए विखम भोम क्यों रहे जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -28
- सनमुख तमसूं विरह रस तम तणो, कां न कीधां जाली बाली अंगार । त्राहि त्राहि ए वातो थासे घेर साथमां, सेहेसू केम दाग जे लाग्या आकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -39, चौ -3
- सनमुख सब एक रस भए, भाग्यो सो विश्व को ब्रोध । घर घर आनंद उछव, कुली पोहोरो काढ्यो सबको क्रोध || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -21
- सनमुख होए सेवा करें, मुख बोलत मीठे बैन । तित भी खैच ऐसी भई, ए भी लगे दुख देन || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -9
- सनियो रूहें मोमिनों, जो इन मासक की विरहिन । जो चाहे मेहेंदी महंमद को, मैं ताए कहूं वचन || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -15
- सनेह आए झूठ ना रहे, जो पकड़ बैठे हैं हम । ए झूठ नजरों तब क्यों रहे, जब याद आवें सनेह खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -29
- सनेह वालाजीनो संभारतां, एक निस्वासे जीव जाए। पण ए न जाणूं तमे केही विध करीने, जीव राख्यो काया माहे || ग्रं - खटरुती, प्र -7, चौ -3
- सनेह सनमंधडो समझावीने, अंतराय आडी टाली । हवे अधखिण विरह सही न सकू, मारे न आवे अवसरियो वाली || ग्रं - किरन्तन, प्र -42, चौ -2
- सनेह सों सेवा करजो धणी, गलित चित थई अति घणी । तमे सेवाए पामसो पार, धणीतणा वचन निरधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -15
- सनेहसों सेवा कीजो धनी, घर की पेहेचान देखियो अपनी । तुम प्रेम सेवाएं पाओगे पार, ए वचन धनी के कहे निरधार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -34, चौ -19
- सपन तणां सुख कारणे, केम खोइए अखण्ड सुख । सुख सुपने देखी करी, केम लीजे साख्यात दुख || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -18

- सपनातरमा खिण नव मूके, तो साख्यात अलगां केम थाय जी । कृपा वालाजीनी केही कहूं, जो जुए जीव रूदया मांहे जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -2, चौ -3
- सपनातरमा मनोरथ कीधां, तो तिहां पण वालोजी साथ जी । सुंदरबाई लई आवेस धणीनो, नव मूके आपणो हाथ जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -2, चौ -5
- सप्तधात सुन्य मण्डल थाल, निरंजन जोत भई उजाल । झलहलिया इत नूरजमाल, भई नई रे नवों खंडों आरती || ग्रं - किरन्तन, प्र -56, चौ -5
- सफर बखत रसूल के, तीन हुए न खबरदार । बखत गए आए खड़े, लगे करने और विचार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -14
- सब अंग अगनी जलके, जात उड़े ज्यों गरद । क्यों इत स्वांत जो आवहीं, जित दुलहे का दरद || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -2
- सब अंग आसिक के इस्क सों रस बसे, बढ़त बढ़त बीच आए बका । यों आई उमत इस्क भरी अर्स में, पीवे साफ सुराई सांई हाथ सका || ग्रं - किरन्तन, प्र -116, चौ -2
- सब अंग इस्क के, गुन अंग इन्द्री इस्क । सब्द न पोहोंचे सिफत, इन बिध सूरत हक || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -82
- सब अंग उमंग करत हैं, करने बात रेहेमान । दिल मासूक का देख के, खेचत हैं प्रेम बान || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -61
- सब अंग करत इसारतें, हक अंग रूह सों लगन । ए बारीक बातें अर्स की, कोई जाने जाग्रत मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -28
- सब अंग कहे हैवान के, और मुंह कहे इनसान । होसी गए आकीन ए तबीयतें, ए देखो खुलासे निसान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -8, चौ -6
- सब अंग काट चीरा करूं, माहें भरों मिरच और लून । कई कोट बेर ऐसी करूं, तो भी न छूटे ए खून || ग्रं - किरन्तन, प्र -41, चौ -6
- सब अंग जिनके इस्क के, तिनकी कैसी होसी जुबान । अर्स रूहें जाने जाग्रत, जो रहे सदा कदमों सुभान । || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -29
- सब अंग दिल में आवते, बेसक आवत सूरत । हाए हाए रूह रेहेत इत क्यों कर, आए बेसक ए निसबत || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -65
- सब अंग देखत रस भरे, प्रेम के सुख पूरन । रूह सोई जाने जो देखहीं, ले हिरदे रस मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -33
- सब अंग देखे ऐसे हक के, ऐसा दिया इलम । हक इस्क सबों में पसख्या, इस्क न जरा मांहें हम || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -9
- सब अंग देखे रस भरे, प्रेम के सुख पूरन । रूह सोई जाने जो देखहीं, ए पीवत रस मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -20
- सब अंग देखों फेरके, और देखों सब सिनगार । काम हुआ अपनी रूह का, देख देख जाऊं बलिहार || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -6

- सब अंग पीछे कहूंगी, पेहेले कहूं पाग बांधी जे । सिफत न पोहोंचे अंग को, तो भी कया चाहे रूह ए || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -47
- सब अंग बांधी दुनियां, सारे हुए बेअकल । अबलों किन देख्या नहीं, कुफर करामात कल || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -18
- सब अंग मेरे टुकड़े करूं, भक करूं देह जिउ । सो वार डारूं तुम दिस पर, इत सेवा हुई कहां पिउ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -21
- सब अंग सारन होए के, सारे सकल संधान । अपनी इंद्री आप को, उलट लगी है खान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -4
- सब अंग सुफल यों हुए, करी हकसों सलाह सबन । देख बोल सुन खुसबोए सों, जिनका जैसा गुन || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -73
- सब अंग हक के इस्क भरे, क्यों कर जाने जाए । होए रूह जाग्रत अर्स की, ताए हुकम देवे बताए । || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -25
- सब अंग हमारे हक हाथ में, इस्क मांगें रोए रोए । सब अंग हमारे बांध के, हक आप करें हाँसी सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -57
- सब अंगों बैठा दुस्मन जोर, दिल के दीदे दिए फोर । दुस्मने ना छोड़या कोई ठौर, चौदे तबकों इनकी दौर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -2, चौ -6
- सब आए आए चरनों लगें, एक एक आगू दूजी के । ए बड़ा सुखकारी समया, सोभा लेत इत ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -76
- सब इंद्रियां इस्क की, इस्क तत्व रस धात । पिंड प्रकृत सब इस्क के, इस्क भीगे अंग गात || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -133
- सब उठे कबर थें अपनी, कायम किए कयामत के धनी । इमाम सालबी यों कहे बनी, रसूल पूछे उमत अपनी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -22
- सब ए बातें सूझसी, कहूं अटके नहीं निरधार । हुकम कारन कारज, पार के पार पार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -35
- सब एक बन छांहेड़ी, श्री धाम के गिरदवाए । गिरदवाए जमुना तलाव के, नूर अछर पोहोंचे आए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -11
- सब एक हीरे की पाल है, टापू मोहोल याही के । अनेक रंगों कई जुगते, किन विध कहूं मुख ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -22, चौ -10
- सब कहें किताबें हक के, खेल हुआ हुकमें । किस वास्ते हुकम किया, ए ना कया किन ने || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -22
- सब काम भए उमत के, देखें हक फरमान । सोई इलम दिया रूहअल्ला, मैं लई नसीहत तीनों पेहेचान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -10
- सब किताबन की, जब पाई हकीकत । तब तिन सब जाहेर हुई, महंमद हक मारफत || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -10

- सब किताबों दई साख, जुदे नाम जुदी लिखी भाख । सत असत दोऊ जुदे किए, माया ब्रहम चिन्हाए के दिए || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -31
- सब किताबों में लिख्या, एक थैं भए अनेक । सो सुकन कोई न केहेवहीं, जो इस तरफ है एक || ग्रं - खुलासा, प्र -6, चौ -4
- सब किया उजाला खेल में, साथ देखन आया । और जीव बंधाने या बिध, बिध बिध की माया || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -161
- सब की जुबां से महंमद, सब पर करसी हिदायत । ए सुकन लिखे सब किताबों, पर क्यों समझे दम गफलत || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -31
- सब के हक हमको किए, हक रसनाएं बीच बका । ए सुख इन मुख क्यों कहूं , जो दिया हादी रूहों को भिस्त का || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -49
- सब केहेती इस्क अपना, हमारा बेसुमार । सो रहया न जरा किन पे, हाए हाए दिया सबों ने हार || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -91
- सब कोई कहे खुदा एक है, दूजा कहे न कोए। कलाम अल्ला कहे एक खुदा, दूजा बरहक महंमद सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -20
- सब कोई कहे हुकमें हुआ, जिन हुकम किया सो कित । सो किनहूं ना पाइया, ताए खलक गई खोजत || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -48
- सब कोई जाली गूंथे अपनी, फेर अपनी गूंथी में उरझाए जी । उरझे पीछे कई दुख देखे, दुखै में जीव जाए जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -14
- सब कोई देखे सास्त्र को, सास्त्र तो गोरख धंध । मूल कड़ी पाए बिना, तोलो देखीता ही अंध || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -48
- सब कोई बात विचारियो, देख अपनी अपनी अकल । सृष्ट तीनों करम करत हैं, एक दूजे सों मिल || ग्रं - किरन्तन, प्र -105, चौ -2
- सब कोई बुजरक कहावते, आप अपने मजहब । तिन सबों समझावहीं, एक दीन होसी तब || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -15
- सब खुले झरोखे ढ़ांप के, बन झलूब आया जल पर । ए सोभा अति देत है, जो देखिए रूह की नजर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -98
- सब खोजें फिरके ले किताबें, कहें खड़े हम तले कदम । ले हकीकत पोहोंचे अर्स में, जिन सिर लिया महंमद हुकम || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -28
- सब गिरदवाए बन देखाए के, किए धाम मंदिर प्रकास । ब्रहमानंद ब्रहमसृष्ट में, प्रगट कियो विलास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -18
- सब गुझ तुमारे दिल का, जिन मेरा दिल किया रोसन । जेता मता बीच अर्स के, सब आया दिल मोमिन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -29
- सब गुन इनों में पूरन, नरम खूबी खुसबोए । मुख बानी जोत चित्रामन, ए हमें रिझावें सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -89

- सब चीजें इत इस्क की, इस्कै अर्स बिसात । रूहें हादी अंग इस्क के, इस्क सूरत हक जात || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -135
- सब चीजें इत नूर की, बिना नूर कछुए नाहें । नूर माहें अंदर बाहेर, सब नूर नूर के माहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -13
- सब चीजें रूह के हुकमें, करत चाह्या पूरन । रूह कछुए चित्त में चितवे, सो होत सब मांहें खिन || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -41
- सब जातें नाम जुदे धरे, और सबका खावंद एक । सबको बंदगी याही की, पीछे लड़े बिन पाए विवेक || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -22
- सब जातें मिली एक ठौर, कोई ना कहे धनी मेरा और । पिया के विरह सों निरमल किए, पीछे अखंड सुख सबों को दिए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -106
- सब जिमी पर सिजदा, किया फिरस्ते घस पेसान । पर होए न हकीकी दिल बिना, ए दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -44
- सब जिमी में बसत हैं, करत हैं कलोल । रात दिन जिकर हक की, करें मीठे मुख बोल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -2
- सब जिमी मोहोल हक के, और सब ठौरों दीदार । सब अलेखे अखंड, कहे महामत अर्स अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -55
- सब जोगवाई नूर की, नूरै का सब साज । कहां लग कहूं मैं नूर की, सब नूरै रहया बिराज || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -61
- सब ज्यादा केहेती अपना, करती अर्स में सोर । असल रूहों के इस्क का, कहां गया एता जोर || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -88
- सब ठौरों सुध तुमको, कछू छूट न तुम इलम । ए सक मेट बेसक तुम करी, कछू न बिना हुकम खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -4
- सब तन विरहे खाइया, गल गया लोहू मांस । न आवे अंदर बाहेर, या बिध सूकत स्वांस || ग्रं - सनंध, प्र -7, चौ -2
- सब तन विरहे खाइया, गल गया लोहू मांस । न आवे अंदर बाहेर, या विध सूकत स्वांस || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -2
- सब थें बड़ी मुझे करी, ऐसी और न दूजी कोए। जो मेहेर करी मुझ ऊपर, सो सिफत जुबां क्यों होए || ग्रं - किरन्तन, प्र -109, चौ -2
- सब दुखों में बुरा ए दुख, कुमत करे धनीसों बेमुख । केतो कहूं या दुख को विस्तार, जाके उलटे अंग इंद्री विकार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -10
- सब दुनियां का इलम, लिख्या कुरान में ए। सो कोई इलम पोहोंचे नहीं, बनी असराईल मूसा के || ग्रं - खुलासा, प्र -6, चौ -14
- सब दुनियां को एही दिया जवाब, महंमद इनको लेसी सवाब । सब दुनियां जलती महंमद पे आई, दोजख आग रसूलें छुड़ाई || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -36

SRJIN

- सब दुनियां हक इस्क हुआ, तो देखो अर्स में होसी कहा । ए आया इलम रूहन पर, हकें भेज्या ए तोफा || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -39
- सब देखे पिया दिल सामी, दिल देखे अंतरजामी । पिउ के दिल की पेहेले आवे, पिया मुख थे केहेने न पावें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -49
- सब नंग में गुन चेतन, मुख थे केहेना पड़े न किन । दिल में जैसा उपजे, सो आगू होत रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -44
- सब पर हुआ कलस, प्रेम आनंद भरपूर । महामत मोह अहं उड़यो, ऊग्यो अखंड वतनी सूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -29
- सब पर हुकम हक का, कहे पुकार रसूल । जल थल चौदे तबकों, कोई जरा ना हुकमें भूल || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -28
- सब पूजसी साहेब सरत, कलाम अल्ला यों केहेवत । ए लिख्या तीसरे सिपारे, खोले अर्स अजीम के द्वारे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -34
- सब पूजें खाहिस अपनी, याही फना की वस्त । मिट्टी आग पानी पत्थर, करें याही की सिफत || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -50
- सब पैगंमर आए इत, कह्या सब मुलक नबुवत । जो कोई आया पैगमर, सो सारे जहूदों के घर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -8
- सब पैगंमर आवसी, होसी मेला बुजरक । तब बदफैल की दुनियां, ताए लगसी आग दोजक || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -12
- सब पैगंमर जहूद खिलके, विचार देखो दीदे दिल के । ओ तो आए हिंदुओं दरम्यान, जिनको तुम केहेते कुफरान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -20
- सब पैगंमर सरमिंदे, होसी बीच आखिरत । इत छिपी न रहे कछुए, खुले पट हकीकत मारफत || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -39
- सब बखतों कहे रसूल, अव्वल बीच आखिर । कही कजा रसूल जुबांए, करे साँच सबों पैगंमर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -26
- सब बागों सोभित रस्ते, कहूं घट बढ़ नाहीं हार । कई चौक मोहोल मन्दिरन के, कई गली चली बांध किनार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -47
- सब बातें मेरे दिल की, और सब रूहों के दिल । सो भेजी मैं तुम पे, जो करियां आपन मिल || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -80
- सब बातें मेरे दिल की, और सब रूहों के दिल । सो सब भेजी तुम को, जो करियां आपन मिल || ग्रं - किरन्तन, प्र -111, चौ -7
- सब बातें हैं अर्स में, और अर्स में वाहेदत । हौज जोए बाग अर्स में, अर्स में हक खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -6
- सब बुजरकों ढूंढ्या, किन पाई न बका तरफ । दुनियां चौदे तबक में, किन कह्या न एक हरफ || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -15

- सब ब्रह्मसृष्टी आई धाम से, अछरातीत इन धनी । मोको सवे बिध समझाई, आप जान अपनी || ग्रं - किरन्तन, प्र -97, चौ -10
- सब मन में ना कछू मन में, खाली मन मनही में ब्रह्म । महामत मन को सोई देखे, जिन दृष्टे खुद खसम || ग्रं - किरन्तन, प्र -47, चौ -6
- सब मनोरथ हुए पूरन, जो ए बानी विचारो अंतस्करन । ए तो इंद्रावती कहे फेर फेर, जो धाम धनी कृपा करी तुम पर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -73
- सब मिल साख ऐसी दई, जो मेरी आतम को घर धाम । सनमंध मेरा सब साथ सों, मेरो धनी सुंदर वर स्याम || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -10
- सब मेयराज की इसारतें, कौन साहेदी कलमें देत । जो अर्स अरवाहें इत ना होती, तो मता खिलवत का कौन लेत || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -46
- सब मोमिनों को सौंपिया, कह्या मोमिन दिल अर्स । देख आप दिल विचार के, दिल मोमिन अरस-परस || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -21
- सब मोहोल अति सुन्दर, चौखंटे एक सौ चार । चार गिरद चार खूट के, एक सौ आठ यों सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -66
- सब मोहोल एक नंग नूर के, ज्यों नूर सागर माहें तरंग । यों कई बिध मोहोल नूर के, माहें कई नूर रस रंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -62
- सब रंग गुन एक चीज में, नरम जोत खुसबोए । सब गुन रखे हक वास्ते, सुख लेवें हक का सोए || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -35
- सब रोसनाई इनमें, सांची कहियत हैं जेह । उतरी है पिया पास थे, रात नूर भरी है एह || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -41
- सब रोसनाई तमामियत, पाई बजरकी कर कर कस्त । ल्याया मुंह सब किताब, नजर चारों पर खुली सिताब || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -18
- सब लगे हैं निसबत को, इस्क इलम हुकम । ना तो कैसे इत जाहेर होए, हम तुम इस्क इलम || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -30
- सब वस्तां आगे ले खड़ियां, ज्यों पातसाही लवाजम । आणू चेतन दिल से, खड़ियां सनमुख एक कदम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -77
- सब सकें दूर कीजिए, साफ कीजे समझाए । मासूक क्यों महंमद कह्या, क्यों होए आसिक अल्लाह || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -63
- सब समूह भूखन जब देखिए, अदभुत सोभा लेत । जुबां खूबी क्यों केहे सके, हक दिल चाही सोभा देत || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -62
- सब सय फना कही, क्यों बका कह्या ढिग तिन । जिमी बका अर्स ढ़िग फना, ए सक सुभे रही सबन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -63
- सब सय सिर महंमद की, आखिर कही हिदायत । और छोटा बड़ा जो कोई, कही महंमद इमामत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -29

- सब संसे को कियो निखार, कोई संसा ना रह्या वार के पार । रोसन करूं लेऊ हुकम बजाए, ब्रह्मसृष्ट और दुनियां देऊं जगाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -98
- सब सागर सुख मई, सब सुख पूरन परमान । अति सोभित मुख सुन्दर, ए जो वाहेदत का सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -77
- सब साथ करूं आपसा, तो मैं जागी प्रमान । जगाए सुख देऊं धाम के, मिलाए मूल निसान || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -45
- सब साफ किए दिल मोमिन, जब इत आए इमाम । जिन दिल पातसाह सैतान, किए पाक जलाए तमाम || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -36
- सब साहेदी दई जो हदीसों, और अल्ला कलाम । सो साहेदी ले पीछा रहे, तिन सिर रसूल न स्याम || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -77
- सब सिफतें एक गिरोह की, लिखी जुदी जुदी जंजीर । कोई पावे न दूजा माएना, बिना महंमद फकीर || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -21
- सब सुख एक एक चीज में, सबकी सिफत नहीं पार । अर्स पहाड़ या तिनका, सब देखेही पाइए बेसुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -14
- सब सुख पावे रूह तिनसों, हुए नेत्र भी कानों तालूक । सीतल दृष्टं देखत, ए जो मासूक मलूक || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -13
- सब सुध भई अर्स की, हुई हक सों निसबत । गिरो मिली मोहे वतनी, ताए देऊ अर्स न्यामत || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -44
- सब सैयों मिने सिरदार, अंग याही के हम सब नार । श्री धाम धनीजी की अरधंग, सब मिल एक सरूप एक अंग || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -68
- सब सोभा देखों निज नजर, अपना वतन निज घर । धनी केहे केहे चित चढ़ाई, पर नैनों अजूं न देखाई || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -7
- सबको प्यारी अपनी, जो है कुल की भाख । अब कहूं भाखा मैं किनकी, यामें भाखा तो कई लाख || ग्रं - सनंध, प्र -1, चौ -13
- सबज बन कई रंग के, जवेर कई झलकत । सैयां बरनन इसारतें, कई पंखी मिने घूमत || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -8
- सबद सारे वैराट के, बोलत अगम अगम । कोई न कहे रसूल बिना, जो खुद पे आए हम || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -63
- सबद हमारे सुन के, उठी ना अंग मरोर । आसिक मासूक सब देखहीं, तुम इस्क का जोर || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -54
- सबन को भेली करूं, दृढ़ कर देऊं मन । खेल देखाऊं खोल के, जिन विध ए उतपन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -8
- सबों इलम पढ़ाए आलम किए, जिनसों था मेरा प्यार । सो सुख हक रसनाएं दिया, करके बका विस्तार || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -58

- सबों एक हादी हिदायत, सबों गिरो में नाजी एक । ए कौन जाने बिना अर्स दिल, ए नबी नाजी दोऊ नेक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -21
- सबों को भेली करूं, दृढ़ कर देऊं मन । खेल देखाऊं खोल के, जिन बिध ए उतपन || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -8
- सबों को सुख महंमदे दिए, भिस्त में नूर नजर तले लिए । कहे छत्ता अपनायत कर, जिन कोई भूलो ए अवसर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -37
- सबों भिस्त दे घरों आवसी, रूहें कदम ग्रहें बड़ी मत । अर्स के तन जो मोमिन, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -87
- सबों सिपारों कयामत, एही लिख्या है मजकूर । पर क्यों पाइए हादी बिना, कलाम अल्ला का नूर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -9, चौ -3
- सबों सिफत करी जोस अकलें, इन अंग छूटे ना दृष्ट फना । कोई बल करो हक हुकमें, पर असें क्यों पोहोंचे सुपना || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -7
- सब्द की वस्त सो तो महाप्रले लीनी, और ठौर बताओ मोही । जाको सुध न आप और घर की, क्यों पार पावेगा सोई || ग्रं - किरन्तन, प्र -10, चौ -4
- सब्द केसरी जब काढ़हीं, अंबर जिमी रहे गाज । पड़धा उठे पृथ्वी पर्वतों, उठे उनथें अधिक आवाज || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -33
- सब्द कोई कोई सत उठे, तेणे केम करूं हूं लोप । गोप सर्वे सत थy, असत थयूं उद्दोत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -7
- सब्द कोई कोई सत उठे, सो भी गए असतमें भिल । सत असत काहू न सुध, दोऊ रहे हिल मिल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -7
- सब्द गुझ पुकारहीं, सब में सचराचर । सो सारे कदमों तले, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -4
- सब्द जो अगुओं सुन के, भूले मुस्लिम की राह । इन दीन कलमें आखिर, आवसी इत खुदाए || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -21
- सब्द जो सारे इन विध, कही आगे से आखिरत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -5
- सब्द जो सारे मोह लों, एक लवा न निकस्या पार । खोज खोज ताही सब्द को, फेर फेर पड़े अंधार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -35
- सब्द जो सारे मोह लों, एक लवा ना निकस्या पार । खोज खोज ताही सब्द को, फेर फेर पड़े अंधार || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -38
- सब्द जो सीधे प्रेम के, सास्त्र तो स्यानप छल । या विध कोई न समझे, बात पड़ी है बल || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -58
- सब्द जो सीधे प्रेम के, सास्त्र तो स्यानप छल । या विध कोई ना समझहीं, बात पड़ी है बल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -46

- सब्द जो सूकया अंग में, हले नहीं हाथ पाए। इस्क बेसुध न करे, रही अंदर बिलखाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -7, चौ -7
- सब्द जो सूक्या अंग में, हले नहीं हाथ पाए । इस्क बेसुध ना करे, रही अंदर विलखाए || ग्रं - सनंध, प्र -9, चौ -7
- सब्द न अब आगे चले, जित पर जले जबराईल । इत आवें रूहें अर्स की, जो होए अरवा असील || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -138
- सब्द न छोड़े ए महंमद, वास्ते फानी दुनियां रद । वास्ते नेकी आखिरत, कबूं न छोड़ें खास उमत || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -15
- सब्द न पोहोंचे सुभान को, तो क्यों रहों चुप कर । दिल कान जुबां ले चलत, हक तरफ बाएँ नजर || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -133
- सब्द न लगे काहू को, ऐसे हिरदे भए बजर। सो गलित गात हुए निरमल, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -19
- सब्द न लगे सोभा असले, पर रूह मेरी सेवा चाहे । तो बरनन करूं इनका, जानों रूहों भी दिल समाए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -21
- सब्द फना गए रात में, किया बका सब्दों फजर । कुफर अंधेरी उड़ गई, बोल पाइए न बका बिगर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -41
- सब्द फील जब उठहीं, गरजत गंज गंभीर । जिमी पहाड़ सब गाजत, और सैन्या सोहे सूर धीर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -39
- सब्द बान सतगुर के, रोम रोम निकसे फूट । बड़ा अचंभा होत है, देह जात न झूठी टूट || ग्रं - किरन्तन, प्र -85, चौ -11
- सब्द रसूल के पसरसी, तिन फिरसी वैराट । अकस सबों का भान के, सब चलसी एक बाट || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -23
- सब्द रसूल क्यों चीनहीं, ए जो चाम के दाम । ख्वाबी दम क्यों समझहीं, ए जो अल्ला के कलाम || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -6
- सब्द लिखे जो बुजरकों, सो सब आखिरी उमत का। रात सब्द सब फना के, सब्द आखिरी दिन बका || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -61
- सब्द सुनाए सुक व्यास के, मोहे खिन में कियो उजास । उपनिषद अर्थ वेद के, ए गुझ कियो प्रकास || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -10
- सब्द सुनें एक दूजे के, फेर फेर करें विचार । किव कर नाम धरें अपने, सब मगन माया मोह अहंकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -30, चौ -10
- सब्दा कहे प्रगट प्रवान, सब्दा सतगुरसों करावे पेहेचान । सतगुर सोई जो अलख लखावे, अलख लखे बिन आग न जावे || ग्रं - किरन्तन, प्र -3, चौ -3
- सब्दातीत के पार के पार, तिन पार जोत का था तेज रे । यासों था तेरा सनमंध, पर तें कछुए न राख्या हेज रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -36

- सब्दातीत निध ल्याए सब्द में, मेट्यो सबन को अंधकार । तीसें सृष्ट विष्णु सौ बरसें, प्रेमें पीवेगा सब्दों का सार || ग्रं - किरन्तन, प्र -54, चौ -16
- सब्दातीत हुते जो ब्रह्मांड, जाए तिनमें करी रोसन रे । अछर प्रकास करके, जाए पोहोंची धाम के बन रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -17
- सभ अंग डिंनाऊं कठण, त रह्यो वंजे आकार । न तां सुणी विचारी हे गालियूं, की रहे कांधा धार || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -39
- सभ जोर पाहिजो डेई करे, मूंके कमर बंधाइए । बाकी रे कम थोरडे, मूंके को अटकाइए || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -22
- सभ डिनो दिल मोमिन जे, जो मोमिन दिल अर्स । पस पाण पाहिजे दिलमें, दिल मोमिन अरस-परस || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -21
- सभा विच सरतिए, गाल्यं कंदियं बेही । पण जिंनी की न कतयो, तिनी पर केही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -16
- संभारो साथ, अवसर आव्यो छे हाथ जी । आप नाख्या जेम पेहेले फेरे, वली नाखजो एम निघात जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -2, चौ -1
- सम सम दऊं दऊं स्याम स्याम सुणो सुणो, मम मम भीडो एणी भांतजी । बोली बोली न न सकू बलिया रे बलिया, पूरी पूरी मारी मारी खांत जी || ग्रं - रास, प्र -43, चौ -6
- समझाईयां समझें नहीं, मानें नहीं फरमान । कहें कौन तुम कौन हम, अपने कैसी पेहेचान || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -20
- समझियो तुम या बिध, अवतार ना होवे अन । पुरूख तो पेहेले ना कह्यो, विचार देखो वचन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -40
- समझीने ओलखो धणी, चालो आपणे घर ज भणी । ए चारेनो अर्थ ज एह, रखे काई तमने रहे संदेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -9
- समझे बिना सुख पार को नाहीं, जो उदम करो कई लाख । तोलों प्रेम न उपजे पूरा, जो लों अंदर न देवे साख || ग्रं - किरन्तन, प्र -28, चौ -16
- समझे साध कहावें दुनी में, बाहेर देखावें आनंद । भीतर आग जले भरम की, कोई छूट न सके या फंद || ग्रं - किरन्तन, प्र -4, चौ -5
- समझो एक इसारतें, ऐसा कर दें हम । तब फेर इत का पूछना, रहे उमेदां तुम || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -63
- समया न रह्या किन वास्ते, होए पेहेचान न वास्ते किन । इस्क हक के दिल का, हाए हाए पाए नहीं लछन || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -25
- समरथ मन तूं बड़ा जोरावर, क्या कहूं तेरो विस्तार । तुझ में फैल बिध बिध के, अलेखे अपार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -83
- समारी किस्तीय को, तित मोमिन लिए चढ़ाए । सो स्याम चिराग महंमद की, जिन मोमिन पार पोहोंचाए || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -13

- सम्मेन कलिम कलामी, नास करब अना कसीर । नेक में कहुँ बोली मेरी, आदमी कबीले मेरे बहुत हैं । अना हाकी हकाइयां कलूब अना, लिसान इस्म कबीर || ग्रं - सनंध, प्र - 34, चौ -1
- सरखा सरखी सर्वे पृथ्वी, मांहें विध विध ना वहे नारायण । नहीं आकार फरे साध तणो, प्रगट नहीं एधाण || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -4
- सरत करी जो रसूले, सो पोहोंच्या आए बखत । तिन इमाम को न समझे, जिन पे कुंजी कयामत || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -75
- सरद निसा रे पूनम तणी, आव्यो ते आसो रे मास । सकल कलानो चंद्रमा, एणी रजनीए कीधो रे रास || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -4
- सरदनी रूत रे सोहामणी रलियामणी, मूने वाला जी विना केम जाए हो बालया । हूं रे बदेसण ना पिउजी, मूने खिण वरसां सो थाय, हो वालैया || ग्रं - खटरुती, प्र -2, चौ -1
- सरनाई भेरी नफेरी, और बाजे कई बजाए । तुरही रनसिंघा महुअर, और नगारे करनाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -93
- सरफा करूं मैं लिखते स्याही, जिन लिखते अधबीच घट जाई । यों धरते धरते मींडे रहे भराए, वार किनार सब रहे समाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -26
- सरभर एक मोमिन के, कई कोट मिलो खलक । जा को मेहेर करें मोमिन, ताए सुपने नहीं दोजक || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -43
- सरा चल्या हक हुकमें, किया कौल जिन सरत । सो आए पोहोंची सदी बारहीं, भई फरदा रोज कयामत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -19
- सरा सुकन कराए जाहेर, गझ रखे बका बातन । मूंक्या रख्या द्वार मारफत का, वास्ते पेहेचान अर्स रूहन || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -31
- सराब मेरी सुराही का, सो रूहों मस्ती देवे पूरन । दे इलम लदुन्नी लज्जत, हक बका अर्स तन || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -58
- सराब हक सुराही का, पिया अरवाहों जिन । आठों जाम चौसठ घड़ी, क्यों उतरे मस्ती तिन || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -8
- सरियत तरीकत हकीकत, मारफत हक पेहेचान । ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -43
- सरीयत करे फरज बंदगी, करे जाहेर मजाजी दिल । बका तरफ न पावे असे की, ए फानी बीच अंधेर असल || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -33
- सरीयत खूबी नासूत में, याको ए पांचों पाक करत । ए जाहेर पांच बिने से, ऊंचे चढ़ न सकत || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -38
- सरीयत तरीकत हकीकत, ए तीनों अहेल कुरान । जिन जो पाई अकल, तिन तैसी हुई पेहेचान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -102

- सरीयत बंदगी करे फरज ज्यों, सो करते एते दिन । महंमद मेंहेदी जाहेर होए के, इस्क दिया सबन || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -66
- सरीयत यों कहे इभराम, जिनों किए हैं बद फैल काम । जिनों अंगों लोप्या फरमान, सो सारे किए नुकसान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -9
- सरीयत सो माने नहीं, खुदा बेचून बेचगून । कहे खुदाए की सूरत नहीं, बेसबी बेनिमून || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -39
- सरूप ग्रहिए हक का, अपनी रूह के अन्दर । पूरन सख्प दिल आइया, तब दोऊ उठे बराबर || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -61
- सरूप दस इत आरोगें, पाक साक अनेक । भागवंती बाई भली पेरे, रसोई करे विवेक || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -23
- सरूप दस इहां आरोगे, पाक साक अनेक । भागवंतीबाई भली भांते, रसोई करे विवेक || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -13
- सरूप पुतलियों मोतियों, है ऊपर हर जंजीर । सोभित सनमुख चेतन, क्यों कहूं इन मुख नीर || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -59
- सरूप बैठे सब मिल के, घेर के गिरदवाए । सबों सुख पूरन हक का, रूहें लेवें दिल चाहे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -33
- सरूप मुख नख सिखलों, जोबन जिनस जुगत । ए आसिक अंग अर्सके, चढ़ती जोत देखत || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -35
- सरूप साते भली भांते, आरोगें अंन पाक । कल्यान बाई रसोई करे, विध विध के बहु साक || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -27
- सरूप साथनी ओलखाण, तारतममां अजवास । जोत उद्दोत प्रगट पूरण, इंद्रावतीने पास || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -57
- सरे सच न्हार जे, हे जो सरो सुभान । भोणे भजंदो मुंहथी, पांण चाइए रेहेमान || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -75
- सरो तोरो होए अदल, निया थिए तित || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -79
- सरो सच साहेबजो, हित सचो हल्लणो हक । हे कूडा काजी रांद में, भाइए करियां हिन माफक || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -70
- सर्वे गुण गणी जीवे कीधां मारे हाथ, हूं तां प्रगट कहूं छु मारा प्राणना नाथ । ए सर्वे तो कहूं जो गुण ऊभा थाय, गुण मननी पेरे वाधता जाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -45
- सर्वे जोवंता सुंदरी, रामत तो घणी करी । पिउ कंठे बांहो धरी, इंद्रावती वाले वरी, जोइए कोण मुकावे हाथ || ग्रं - रास, प्र -38, चौ -14
- सलूकी कदम तलीय की, ऊपर सलूकी और । छब हक कदम की क्यों कहूं, ए जो जुबां इन ठौर || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -7

SPJIN

- सलूकी नखन की, और छबि अंगुरियों । खूबी सिफत चरन की, कही न जाए जुबां सों || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -133
- सवला रोस भराणां रिखीजी, जोई व्यास वचन । सास्त्र सर्वे बांधीने, ते वोल्या बूडता जन || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -103
- सवों दावा किया अर्स का, हिंदू या मुसलमान । वेद कतेब दोऊ पढ़े, परी न काहूं पेहेचान || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -69
- ससरो सासु मात तातनी जी, कांई तमे लोपी छे लाज । तमे सरम न आणी केहेनी, तमे ए सूं की– आज || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -8
- संसा ते सहु संघारिया, असत भागी अंधेर । निज बुध उठी बेठी थई, भाग्यो ते अवलो फेर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -10
- संसा सारा भान के, उड़ाऊं असत अंधेर । निज बुध उठ बैठी हुई, गयो सो उलटो फेर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -10
- संसार तणा रे काम सर्वे करतां, पण चितमां न भेक्यो रे पास । विलंब न कीधी रे वछूटतां, ए तामसियोना प्रकास || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -18
- संसार रची सुपनना, देखाड्या मांहें सुपनजी । ते जोऊं अमे अलगा रही, नहीं जोवावालो कोई अनजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -27
- संसार सब के अंग में, मेरी बुध को करूं प्रवेस । असत सब होसी सत, मेरे नूर के आवेस || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -87
- संसार सहुना अंगमां, मारी बुघनों करूं प्रवेस । असत सर्वे सत करूं, मारी जागणी ने आवेस || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -82
- संसार सूतो घारण करी, ते तां केणी पेरे जागे रे । पण साध कहावो निद्रा करो, मूने दुख ते तेनुं लागे रे || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -42
- ससि बन याही जोत तेज, सब तत्व तेज रेजा रेज । करें खेल अति उछरंग, तामें कबूं कबूं पियाजी के संग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -137
- ससि सूर कई कोट कहूं, कहूं तेज जोत प्रकास । ए वचन सर्वे मोह लगे, अने मोहनों तो नास || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -126
- ससुई सो भी यों कहे, मैं हाथों अपना मार । पुनों की बधाई में, देऊ कोट सिर उतार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -15, चौ -7
- संसे काहूं ना रेहेवे कोए, ए उजाला त्रैलोकी में होए । प्रगट भई परआतमा, सो सबको साख देवे आतमा || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -29
- संसे भ्रांत के आकार, जो कदी होते तुमारे । टूक टूक करूं मैं तिल तिल, फेर फेर तीखी तरवारे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -91
- संसे मिटाया सतगुरें, साहेब दिया बताए । सो नेहेचल वतन सरूप, या मुख बरन्यो न जाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -65, चौ -15

- सह कोई जाली गूंथे पोतानी, अने मांना मांहें मुझाय जी । मुझाणा पछी दुख अनेक देखे, घणूं दुखे जीवड़ो जाय जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -13
- सह साथ मलीने साबत कीधं, इंद्रावती विविध विसेक । घणी थई रामत ने वली थासे, पिउ भूलवतां राखी रेख || ग्रं - रास, प्र -18, चौ -8
- सहर दिया साहेब ने, फुरमान भेज्या हाथ रसूल । पावे न हकीकत मुसाफ की, ए खोलिए किन सूल || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -71
- सही जाए न बोए जिनकी, सो क्यों सकिए मुख लगाए । सो पैदरपे क्यों पी सके, पर हुकम करत पनाह || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -88
- सहु साथ कहे वालो दाव देसे, पेहेलो ते पिउजीनो वारो। जो पेहेलो दाव आपण दऊं, तो ए झलाए नहीं धुतारो || ग्रं - रास, प्र -15, चौ -3
- सहुने सरूप रूदेमां समाणो, आवी आनंद अंग उभराणो । उलस्या मलवाने अंग, मांहेंथी प्रगट्या उछरंग || ग्रं - रास, प्र -33, चौ -29
- सहूर कीजे हक अंग रंग, कई तरंग लाल उज्जल । देत गौर सुख सलूकी, सोभा क्यों कहूं बिना मिसल || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -8
- सहूर डियण मूं हियो, कठण केयांऊं निपट । न तो विचार कंदे हिक हरफजो, फटी पोए न उफट || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -38
- सहूर तोको साहेब दिया, इलम दिया हक । बाहेर माहें अन्तर, एक जरा न रही सक || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -4
- सहूर न करें दिल से, कया नाजी फिरका एक । और बहत्तर नारी कहे, पर पावें नहीं विवेक || ग्रं - खुलासा, प्र -14, चौ -13
- सहूर बिना ए रेहेत है, तेहेकीक जानियो एह । ए भी हुकम हक बोलावत, हक सहूरें आवत सनेह || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -28
- सहूर बिना सब रेहे गया, और सहूर लदुन्नी मांहें । सो तो सूरत हकीय पे, और वाहेदत बिना कोई नाहें || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -78
- सहेस्त्र पांखडीनो दमणो दीसे, सोवरण फूली मकरंद । वन सिणगार कीधो वेलडिए, जुजवी जुगतनां रंग || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -22
- सा कुंजी कागर { डेई, उपटे बका दर । मूं गड्यूं से गिंनी आइस, रूहें छते घर || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -11
- सा गिनंदी सुहाग धणीजा, जेडिए विच बेही । सा उथींदी आतन मंझा, पेर पडतारो डेई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -9
- साक ते सूकवणी तणां, कई सेक्यां सुतलियां । विध विध मेवा वन फल, अति उत्तम गलियां || ग्रं - रास, प्र -46, चौ -11
- साक फल अंन अनेक विधना, कंदमूल मांहें सार । सारा स्वाद जुजवी जुगतना, वन फलियां रे अपार || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -23

SRJN

- साकी पिलावे सराब, रूहें प्याले लीजिए। हक इस्क का आब, भर भर प्याले पीजिए || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -1
- साख गन पख इंद्रियां, आतम परआतम साख । सास्त्र सब ब्रह्मांड के, देत भाख भाख कई लाख || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -31
- साख देवाई सब अंगों, दया और अंकूर । अनुभव वतनी होत है, देह होत न झूठी दूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -85, चौ -9
- साख देवे सब दुनियां, वैराट चौदे भवन । समझे सारे देखहीं, जिनका दिल हुआ रोसन || ग्रं - किरन्तन, प्र -104, चौ -11
- साख पुराई वेद ने, और पूरी साख कतेब । अनुभव करायो आतमा, जो न आवे मिने हिसेब || ग्रं - किरन्तन, प्र -65, चौ -16
- साखी - दौड़ करी सिकंदरे, ढूंढ्या हैयाती आव । बका अर्स पाया नहीं, उलंघ न सक्या ख्वाब || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -1
- साखी एणे मोहे माहूं कस्या, करी न सक्या विचार । सुनाई आवी सहुने, तो आडो आव्यो संसार || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -62
- साखी कहे इंद्रावती वल्लभा, ए माया छे अति छल । हवे जुध मांड्यूं छे अमसू, एहेनो कह्यो न जाय बल || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -8
- साखी कृपा कीधी अति घणी, वली आव्या तत्काल । तेहज वाणी ने तेहज चरचा, प्रेम तणी रसाल || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -76
- साखी बल नथी आंहीं अमतणूं, नहीं अमारे बस । ए निध आवी तम थकी, ते में चित की– चोकस || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -24
- साखी मायाना मुख माहें थी, जगते काढी जोर । दई तजारक अतिघणी, माया कीधी पाधरी दोर || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -18
- साखी विनती एक सुनो मेरे प्यारे, कहूं पिउजी बात । आए प्रगटे फेर कर, करी कृपा देखे अपन्यात || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -1
- साखी साथ मलीने सांभलो, जागी करो विचार । जेणे अजवायूँ आ करयूं, परखो पुरुख ए पार || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -46
- साखी सास्त्र पुराण वेदांत जो, भागवत पूरे साख । नहीं कथा ए दंतनी, सत वाणी ए वाक || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -39
- साखी- तीन दिन कहे जो बुजरक, सो तीनों सूरतों के दिन । रसूल से कयामत लगे, ए जो किए रोसन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -19, चौ -1
- साखी-दुनियां की उमर कही, अव्वल सिपारे मांहें । सात हजार साल चालीस, नीके देखियो ताहें || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -40
- साख्यात तणी सेवा कर रे, ओलखीने अंग । श्री धाम तणा धणी जाणजे, तू तां रखे करे तेमां भंग || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -24

- साख्यात सरूप इंद्रावती, तारतम को अवतार । वासना होसी सो बलगसी, इन वचन के विचार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -56
- साख्यात सरूप इंद्रावती, तारतमनो अवतार । वासना हसे ते वलगसे, ए वचन ने विचार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -56
- साग सीसम ने सेमला सरगू, सरस ने सोपारी । सूफ सूकड ने साजडिया, अगर ऊंचो अति भारी || ग्रं - रास, प्र -10, चौ -3
- सागर कहूं पाक साफ का, के कहूं आबदार । हक मुख सागर क्यों कहूं, सब विध पूरन अपार || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -14
- सागर कहे यों जान के, कहे दुनियां में बड़े ए। पइ्या सागर से ना निकसे, कही अंग सोभा इन वास्ते || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -30
- सागर किनारे जो बन, ए बन नेहेरें विवेक । मोहोल बन जो देखिए, जानों सोई नेक से नेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -25, चौ -3
- सागर किनारे मोहोल जो, सो जाए लगे आसमान । ए मोहोल जुदी जुदी जिनसों, इत सुख चाहिए सागर समान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -25, चौ -9
- सागर छठा है अति बड़ा, जो खुदाई इलम । जरा सक इनमें नहीं, जिनमें हक हुकम || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -1
- सागर जीव खोली करी, वासना कोण परखसे । खोलतां लाधे वासना, एम कोण रे हरखसे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -58
- सागर नीर खारे लेहेरां मार मारे फिरें, बेटो बीच बेसुध पछाड़ खावे । खेलें मछ मिले गलें ले उछाले, संधो संध बंधे अंधों यों जो भावे || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -3, चौ -3
- सागर नीर खारे लेहेरें मार मारे फिरे, बेटों बीच बेसुध पछाड़ खावे । खेले मच्छ मिले गले ले उछाले, संधो संध बंधे अन्धों योंज भावे || ग्रं - सनंध, प्र -6, चौ -3
- सागर पूर वयूं रे सनंधे, तें कां न लीळू ए जल । तें बुध पापनी हूं मेरों परहरी, तें थई मोसू निबल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -10
- सागर सुख में झीलते, तहां दुख नहीं प्रवेस । तो दुख तुम मांगिया, सो देखाया लवलेस || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -28
- सागर सुखमां झीलतां, जिहां दुख नहीं प्रवेस । ते माटे तमे दुख मांग्या, ते देखाड्या लवलेस || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -28
- सागर से नेहेरें आवत, पानी जुदा जुदा फैलात । कई विध मोहोलों होए के, फेर सागरों में समात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -23, चौ -11
- सागरना पंथ रे बीजा जोने पाधरा, चाले चाले उतरता उजाए। स्वांत लईने सेहेजल सुखमां, प्रघल जाय रे प्रवाहे || ग्रं - किरन्तन, प्र -67, चौ -5
- सांगाए थिंदम धाम संगजी, तडे धुरंदिस लाड करे । दम न छडियां तोहके, लगी रहां गरे || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -1

- साँच और झूठ को, दोऊ दे किए बताए । हक मोमिन बिन दुनियाँ, बैठी कुफर खेल बनाए || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -93
- साँच झूठ तफावत, जैसे दिन और रात । साँच सूर जब देखहीं, तब कुफर रात मिट जात || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -19
- सांच झूठ पटंतरो, कबहूं कह्यो न जाए। सांच हक झूठी दुनियां, ए क्यों तराजू तौलाए || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -61
- सांच झूठ पटतरो, कबहूं नाहीं कित । तो धनिएँ देखाई कुदरत, लेने अर्स लज्जत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -69
- सांच झूठ बड़ी तफावत, ज्यों नाहीं और है। सो हुकमे खेल बनाए के, सत गिरो को देखावें || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -8
- सांच झूठ में मिल गईयां, तुरत होसी तफावत । करसी पल में बेसक, ऐसा इलम मेरी न्यामत || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -51
- सांच भोम की कंकरी, उड़ावे जिमी आसमान । कैसी होसी अर्स खूबियां, जो खेलौने अर्स सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -73
- सांच होए जित एकै, पाइए ना जिद के छूट । सांच हक तब पाइए, जब होए निमूना झूठ || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -58
- साँचा री साहेब साँचसों पाइए, साँच को साँच है प्यारा । या वैष्णव की गत देखो रे वैष्णवो, महामत इनसे भी न्यारा || ग्रं - किरन्तन, प्र -8, चौ -7
- सांची साहेबी खसम की, जो कायम सुख कामिल । ऐसा आराम अपने हकसों, इत नाहीं चल विचल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -98
- सांची साहेबी हक की, कोई नाहीं दूजा और । झूठ नकल देखे बिना, पावे ना अर्स ठौर || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -51
- सांचु कहे दुख लागसे, सांचु ते केहेने न सुहाय । प्रगट कहिए मोहों ऊपर, त्यारे दोहेला ते सहुने थाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -5
- साचूं बोल्यूं गमे नहीं केहने, सहुने ते लागसे दुख । वेद तणां वचन विचारो, जे कहे छे पोते मुख || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -93
- सांचे को झूठा कहें, और झूठे को कहें सांच । सो भी देखाऊं जाहेर, सब रहे झूठे रांच || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -23
- सांचे को झूठा कहे, झूठे को कहे सांच । ए भी देखाऊं जाहेर, सब रहे झूठे रांच || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -26
- साँचे कौल महंमद के, फिरवले सब पर । जो कछू कह्या सो सब हुआ, पर समझे नहीं काफर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -99
- सांचे छिपे ना रहें, अपने समें पर। दोस्त कहे धनी के, सो छिपे रहें क्यों कर || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -13

- सांचे सांचा मिल चले, मिले झूठा झूठों मांहें । जो जैसा तैसी सोहोबत, इनमें धोखा नाहें || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -100
- सांचे साहेद इन उमतें, हक की कजा अदल । यों कजा महंमद जुबांए, करें सिफायत अर्स दिल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -43
- सांचे सुख मोमिन के, अजाजील और सुख । पर जो सुख मोमिन के, सो कहे न जाए या मुख || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -73
- साचो सनकूल करे जे तमारो चित, अने भ्रांत मेली करे जीवने हित । चित ऊपर खरो चालसे जेह, सोभा घेर साथमा लेसे तेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -7
- साठ गुरज फिरते कहे, गिरद चांदनी दिवाल । सो ए कमर के ऊपर, खूबी लेत कांगरी लाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -21
- साठों तरफों मन्दिर, नई नई जुदी जुगत । ए साठों फेर के देखिए, सोभा और पे और अतंत || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -72
- साड़ी कोर किनार पर, नंग कांगरी सोभित । फूल बेल कई खजूरे, कई छेड़ों मिने झलकत || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -55
- साड़ी चोली चरनी, जड़ाव रंग झलकार । कई जवेर केते कहूं, सोभा सागर सुखकार || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -20
- साणे सिपरियन से, अंई गाल्यू कंदियूं कीय । पाण संभारे न्हारयो, आंके ही वेर न रेहेंदीय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -15
- सात घाट आगू अर्स के, ए है बड़ो विस्तार । नेक कहूं हिंडोले चौकियां, फेर कहूं आगू अर्स द्वार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -31
- सात घाट कहे बीच में, माहें पसु पंखी खेलत । तले भोम या ऊपर, बन में केलि करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -18
- सात घाट को लेयके, आगूं आए अर्स द्वार । इत पसु पंखी कई खेलत, ए सिफत न आवे सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -6
- सात घाट बने बीच में, पल दूजा तिनके पार । दोऊ मोहोल झरोखे बराबर, इत हिंडोले ठंढ़ी बयार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -31
- सात घाट बीच में लिए, दोए मोहोल दोऊ किनार । पुल पूरे जल ऊपर, ले वार से लग पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -16, चौ -13
- सात चार दिन भेख लीला, खेले गोवालों संग । सात दिन गोकुल मिने, दिन चार मथुरा जंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -18
- सात तबक तले जिमी के, तिन पर है नासूत । तिन पर हैं कई फरिस्ते, तिन पर है मलकूत || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -8
- सात नंग मांहें दुगदुगी, सो सातों जुदे जुदे रंग । चढ़ती जोत आकास में, करत मांहों मांहें जंग || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -50

- सात निसान बड़े कहे, जासों पाइए कयामत । सोए दुनी तब देखसी, ऊगे सूरज मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -16
- सात बेर अस्नान करो, पेहेनो ऊंन उत्तम कामल । उपजो उत्तम जात में, पर जीवड़ा न छोड़े बल || ग्रं - किरन्तन, प्र -14, चौ -4
- सात रंग माहें झलकत, लेहेरें लेत दोऊ झाल । दोऊ फूल सोभित मुख झालके, जुबां क्या कहे इन मिसाल || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -72
- सात रात आठ दिन का, सुकें कया इन्द्र कोप । भेजी वाए जल अगनी, प्रले को मृतलोक || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -8
- सात रात आठ दिन का, हुआ तोफान हूद महत्तर । राखी रूहें कोहतूर तले, डूब मुए काफर || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -10
- सात लोक तले जिमी के, मृत लोक है तिन पर । इंद्र रूद्र ब्रहमा बीच में, ऊपर विष्णु बैकुण्ठ घर || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -21
- सात सागर बरनन किए, सागर आठमा बिना हिसाव || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -43
- सात हजार राह फरिस्ते, करी इसारत दुनी कयामते । अब खुदाए ने यों कर कहया, मैं आसमान जिमी से जुदा रहया || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -63
- सात हार के फुमक, जगमगे सातों रंग । मूल बंध बेनी तले, बन रहे ऊपर अंग || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -84
- सातों घाट ए कहे, आगे पुल कुंज बन । अपना खजाना एह है, महामत कहे मोमिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -51
- सातों घाट बीच में, पुल मोहोल तरफ दोए । दोऊ पांच भोम छठी चांदनी, क्यों कहूँ सोभा सोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -1
- सातों सरूप अखंड, मैं बरनन किए सिर ले । दो रास पांच अर्स अजीम, बोझ दिया न सिर सरूपों के || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -52
- साथ अंई की की न्हास्यो संभारे, गुण म छडो मोकरे मोय । इंद्रावती चोय पेरे लगी, फिरी फिरीने केतरो चोय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -22
- साथ अंग सिरदार को, सिरदार धनी को अंग । बीच सिरदार दोऊ अंग के, करे न रंग को भंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -9
- साथ अजान अबूझ को, कौन लेसी सुधार रे । वासना सगाई पेहेचान के, कौन खोल दे नेहेचल द्वार रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -65
- साथ आए मेला मिलसी, सो सब हाथ हुकम । ए सक इलमें ना रखी, अब कहा कहूं खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -48
- साथ आगल कहीस हूं तेह, पहेलां फेराना सनेह । धणिए जे कहयां अमने, सांभलो साथ कहूं तमने || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -5

- साथ इच्छाएं सुपन में, खेल मांहें आया । बेहद थे पिउ आएके, बेहद साथ खेलाया || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -14
- साथ ए पेर अमसू थई, निध हाथ आवी करी गई । दिन घणां अम मांहें रही, पण अमे दुष्टें जाणी नहीं || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -70
- साथ एणी पेरे आवसे, एणे रसे तणाणो । वचन सर्वे सांभली, आवसे बंधाणो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -78
- साथ करूं सहु सरखो, तो हूं जागी प्रमाण । जगाडी सुख दऊ धामना, पोहोचाई मूल एधाण || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -45
- साथ कहे छे अमने रे बेहेनी, इंद्रावती कहो छो सूं । आणे नेणे न देखू वालैयो, तिहां लगे केम करी उठू || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -42
- साथ कहे वाला रमो अमसू, ए रामत सह मन भावी । सहुना मनोरथ पूरण करवा, सखी सखी प्रते लेओ रंग आवी || ग्रं - रास, प्र -21, चौ -6
- साथ कारन आवसी धनी, घर घर वस्तां देसी घनी । साथ मांहें इत आरोगसी, विध विध के सुख उपजावसी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -86
- साथ कारन जीव सगाई जान, सेवियो धाम धनी पेहेचान । यों केहेके पकड़ न देवे कोए, यों देते न लेवे सो अभागी होए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -10
- साथ कारन मैं करूं पुकार, देखों वासना मोहजल वार पार । तेरह धरके गिनूं गुन नील, घने समावें गुन हिरदे असील || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -18
- साथ के सुख कारने, इंद्रावती को मैं कह्या । ता) मुख इंद्रावती के, कलस सबन का भया || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -47
- साथ को इन जिमी के, सुख देने को हरख अपार । रासमें रंग खेल के, भेले जागिए निरधार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -31
- साथ को घरों ले जाना सही, कोई माया में ना सके रही। बँचे सबों को ए वानी, फिरसी घरों धनी पेहेचानी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -6
- साथ चले जो ना चलिया, ताए लगसी आग दोजक । तलफ तलफ जीव जाएसी, जिन जानो यामें सक || ग्रं - किरन्तन, प्र -88, चौ -6
- साथ चल्या सब वतन, अपने पिउ साथ । और खेले रासमें अखंड, इत उठे प्रभात || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -43
- साथ जी एणे पगले चालजो रे, पगला ते एह प्रमाण जी । प्रगट तमने पेहेले कयूं, वली कहूं छू निरवाण जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -3, चौ -3
- साथ जी जागिए, सुनके सब्द आखिर । सकल आउध अंग साज के, दौड़ मिलिए धनी निज घर || ग्रं - किरन्तन, प्र -86, चौ -1
- साथ जी तुमको उपज्या, खेल देखन का ख्याल । जाको मूल नहीं बांधे तिन, ए हांसी का हवाल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -2

- साथ जी सुनो सिरदारो, मुझ जैसी ना कोई दुष्ट । धाम छोड़ झूठी जिमी लगी, चोर चंडाल चरमिष्ट || ग्रं - किरन्तन, प्र -101, चौ -1
- साथ जी सोभा देखिए, करे कुरबानी आतम । वार डारों नख सिख लों, ऊपर धाम धनी खसम || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -1
- साथ जुए मायातणी, रामत जुजवा थई । तेडी घरे सिधाविए, वाणी ते माटे कही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -125
- साथ देखने आइया, पिउ इछा कर । बेहद धनी साथ को, खेलावें चित धर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -16
- साथ देखो ए अवसर, वासना करो पेहेचान । आए पोहोंचे बृज में, याद करो निसान || ग्रं - किरन्तन, प्र -92, चौ -2
- साथ दोडे रे घणवे आकलो, मननी न पोहोंती हाम । जोगमाया आवी सामी जुगत सों, सिणगार कीधो एणे ठाम || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -29
- साथ धाम के सिरदार को, मोमिन मन नरम । मिलावे और धनीय की, दोऊ इनके बीच सरम || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -10
- साथ न मूकू अलगो, साथ मूने मूके केम । कयूं मारूं साथ न लोपे, साथ कहे करूं हूं तेम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -17
- साथ ने सुणो रे कहूं एक वातडी, धणी मुने देता केटलूं मान । ए सुख महेथी काढी करी, करमे दीधूं ततखिण राण" || ग्रं - खटरुती, प्र -3, चौ -13
- साथ बैठा पाट ऊपर, लग कठेड़े भराए । जोत करी आकास लों, जानों आकास में न समाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -23
- साथ मलीने भेलो थयो, आव्यो ते आनन्द मांहें । अमें सखियो त्रट ऊपर, वालाजीनी ग्रही बांहें || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -6
- साथ मल्योने थई जागणी, हरख्यो साथने रमियां धणी । ए चारे लीला कीधी सही, पण जागनी तो अति मोटी थई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -24
- साथ महंमद मेंहेंदी असराफील, ले मगज मुसाफी बल । तो आया बीच अर्स अजीम के, पोहोंच्या बीच बड़े नूर असल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -23
- साथ मां हांसी थासे, रस रामत एणी रंग । पूर विना तणाणियों, कोई आडी थाय अभंग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -11, चौ -14
- साथ माटे कहूं सगाई जाणी, धणी ओलखजो घर रूदे आणी । एम हाथ झालीने बीजो कोई नव दिए, अने एम देतां अभागी नव लिए || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -10
- साथ माटे हूं करूं रे पुकार, जोऊं वासना चौद लोक मंझार । मेली वासनाओने रास रमाई, धणीना गुण हूं गणीने देखाईं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -17
- साथ मांहें अजवालू थy, पण भरम तणू अंधारूं रहयं । ते टाल्यानो करूं उपाय, तो मनोरथ पूरण थाय || ग्रं - रास, प्र -2, चौ -20

- साथ मांहें आवी मारा वाला, अंतराय कीधी मोसूं एह । आकार तमारो अम समोजी, दुख सुख देखे देह || ग्रं - खटरुती, प्र -5, चौ -11
- साथ मांहें इंद्रावती, वालातणे मन भावती । रस रंगे उपजावती, कांई उपनी छे अति रली || ग्रं - रास, प्र -34, चौ -8
- साथ मांहें सैयां धाम की, ईमान वाली सिरदार । सो धन धाम को तौलसी, करसी दृढ़ निरधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -2
- साथ माहोमांहें खोलता", नव दीसे स्यामाजी त्यांहें । त्यारे जुजवी दोडी जोवा वनमां, ए बंने सिधाव्यां क्यांहें || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -4
- साथ मिल तुम आए धाम से, भूल गए सो मूल मिलाप । भूलियां धाम धनी के वचन, न कछू सुध रही जो आप || ग्रं - किरन्तन, प्र -89, चौ -6
- साथ मेरा ब्रहमसृष्ट का, तिन हिरदे साफ करन । सो निरमल क्यों होवहीं, धाम अखंड देखाए बिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -20
- साथ मोको सुख चाहें, जान धाम की प्रीत । मैं परबोधों जान वतनी, मोहे बंधन भयो इन रीत || ग्रं - किरन्तन, प्र -62, चौ -10
- साथ वचन सांभलिया एह, वासनाए कीधां मूल सनेह । ते मांहें एक इंद्रावती, केहेवाणी सहुमां महामती || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -21
- साथ वेगे बुलाओ कहे इंद्रावती, ए कठन माया दुख होए लागती । ए दुख देख्या मांहें दुस्तर, कोई न पेहेचाने आप न सूझे घर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -13
- साथ सकल तुम याद करो, जिन जाओ वचन विसर जी । धनी मिले आपन को माया में, जिन भूलो ए अवसर जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -3, चौ -1
- साथ सकल मारा वाला पासे आव्यो, मन आणी उलास । विविध पेरे वालाजीसुं रमवा, चितमां नथी मायानो पास || ग्रं - रास, प्र -7, चौ -11
- साथ सकल सिधावियो, श्रीकृष्ण जी संघाते || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -33
- साथ सकलना वचन विचारी, चित्त ओलखो छो सर्वे जाण । वचन पाधरा प्रगट कहे छे, जे पगला भरियां प्रमाण || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -41
- साथ सकलने तेडूं सही, माया मांहें मूकू नहीं । वली वाणी श्री देवचंदजी तणी, साथ सकलने ताणे घर भणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -9, चौ -6
- साथ समूह की क्यों कहूं, जाको इस्कै में आराम । अरस-परस सब एक रस, पिउ विलसत प्रेम काम || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -31
- साथ सुनो एक वचन, आवे बाई सकुंडल सकुमार । रास खेल घर चलसी, भेले इन भरतार || ग्रं - किरन्तन, प्र -55, चौ -26
- साथ सुपन एम दीठू सही, जे गोकुल रमयां भेला थई । बेहू सुरत रमियां कई भात, मन वांछित करी खरी खांत || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -9

SRJN

- साथ सुपने आवियो, इछा रामत जाणी । बेहद धणी पधारिया, बेहद वात वंचाणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -10
- साथ सों हेत कियो अपार, धंन धन धनबाई को अवतार । कछुक लेहेर लागी संसार, ना दई गिरने खड़ी राखी आधार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -11
- साथ स्यामाजीने देखी करी, मनडां थयां अति भंग । स्यामाजी तिहां बोली न सके, जेमां एवडो हुतो उछरंग || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -6
- साथ हतो जे इंद्रावती पासे, वाले पूरी तेनी आस रे । सकल मनोरथ पूरण थया रे, फलिया ते रास प्रकास रे || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -46
- साथ होवे जो धाम को, सो भूले नहीं अवसर । सनमंधी जब उठ चले, तब पीछे रहे क्यों कर || ग्रं - किरन्तन, प्र -88, चौ -15
- साथजी आ भोमना, सुख आपीस तमने अपार । हेते ते हंससो हरखमां, तमे नाचसो निरधार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -16
- साथजी इन जिमी के, सुख देऊं अति अपार । हँस हँस हेते हरख में, तुम नाचसी निरधार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -16
- साथजी ऐसी मैं तुमारी गुन्हेगार || ग्रं - किरन्तन, प्र -120, चौ -1
- साथजी तमने रामत, जोयानो छे ख्याल । जेनूं मूल नहीं तेणे बांधिया, ए हांसीनों छे हवाल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -11, चौ -2
- साथजी देखो मोहोल मानिक, जो कहे द्वार बारे हजार । सोभा सुन्दरता इनकी, ए न आवे बीच सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -44, चौ -1
- साथजी पेहेचानियो, ए बानी समया फजर । हुई तुमारे कारने, खोल देखो निज नजर || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -1
- साथजी साफ हुए बिना, अखंड में क्यों पोहोचत । चेत सको सो चेतियो, पुकार कहें महामत || ग्रं - किरन्तन, प्र -104, चौ -13
- साथतणी रे साडियो ज्यारे जोइए, तेमां रंग दीसे अपार । अनेक विधना जवेरज दीसे, करे ते अति झलकार || ग्रं - रास, प्र -7, चौ -6
- साथने आ भोमना, सुख देवानो हरख अपार । रंगे रास रमाडीने, भेलां जागिए निरधार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -31
- साथने मेली बेठो छो ज्यारे सामटा, त्यारे अम विना तमने केम सहाय । मूने रे मारा वालैया तम विना, पल ने प्रले काल जेम थाय || ग्रं - खटरुती, प्र -3, चौ -6
- साथने रखे उत्कंठा रहे, तारतम वचन पाधरा कहे । लई तारतम आव्या आ वार, मेहेता मतू घेर अवतार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -31
- साथसों हेत कियो अपार, सुफल कियो अपनो अवतार । मैं श्रीसुंदरबाई के चरने रहूं, एह दया मुख किन विध कहूं || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -91

- साथसों हेत कीधां अपार, धंन धंन धनबाईनो अवतार । कांइक लेहेर लागी संसार, त्यारे अडवडती ऊभी राखी आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -56
- साथी हता जे माहेला, तेणे दीठां आप अचेत । जेणी जे जतन करतां, तेणे बांध्या बंध विसेक || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -31
- साथे माया मांगी ते थई अति जोर, तमे साद कीधां घणा करी बकोर" । पण केमे न वली अमने सुध, त्यारे व्रह देवा सरूपजी अद्रष्ट किध || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -18
- साथै माया मांगी सो भई अति जोर, तुम सब्द कहे कई कर कर सोर । पर तिन समे नींद क्योंए न जाए, तब धनी सख्य भए अंतराए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -18
- साध आउध सर्वे साचवी, जुध ते करतां जाय । लोही मांस न रहे अंग ऊपर, वचमां स्वांस न खाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -14
- साध ओलखासे वचने, अने करसे समागम । साध वाणी साध एम ओचरे, संगत छे साध रतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -129
- साध कोहेडो एने तोहज कहे छे, जो सवले अवलं भासे । सत वस्त कोई देखे नहीं, असत ने सहु प्रकासे || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -14
- साध जो जो तमें सांभलो, वचन म करजो लोप । प्रगट कयूं आ पाधरूं, बीजी गुरगम थासे गोप || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -58
- साध तणी गत दीसे निरमल, रात दिवस ए रंग । मोहजल लेहेरां माहे मारे पछाडे, पण केमे न थाय भंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -17
- साध तणी सनंध प्रगट, लेहेरा लागे आकार । भेदे नहीं ते भीतर रंग ने, ए साध तणी प्रकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -18
- साध रह्या पंथ जोई जोई, पण केणे न लाध्यो सेर । अनेक उपाय करी करी थाक्या, पण न टले ते भोमनों फेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -49
- साध वाणी तमें सांभली रे, कां न विचारो मन । आणे अजवाले मानखे, तमें कां रे भूलो साधू जन || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -2
- साध संगते आ जेहेर उतरसे, रूदे ते करसे प्रकास । घेन निद्रा सर्व उडीने जासे, अंधकार नों नास || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -79
- साध संतो मली सांभलो, वली विलम न करो लगार । अधखिण मेलो संत तणो, जेथी जीतिए अखंड अपार || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -28
- साध सनंध केम जाणिए, जेणे जीती छे जोगवाई । प्रगट चेहेन करे नहीं पाधरा, ते मांहें रहे समाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -15
- साध सुने मैं देखे केते, अगम कर कर गावें । नेहेचे जाए करें निराकार, या ठौर चित ठेहेरावें || ग्रं - किरन्तन, प्र -4, चौ -7

- साध सूरधीर अनेक मलो, अनेक जाओ वैकुंठ पार । पण अखंड तणां दरवाजा कोणे, ते तो नव उघडे निरधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -11
- साध हसे ते विचारसे, सवला रूदे वचन । ए वाणी प्रकासूं ते माटे, म्हारे मलवा ते साधू जन || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -25
- साधू बोले इन जुबां, गावें सब्दातीत बेहद । पर कहा करे बुध मोह की, आगे ना चले सब्द || ग्रं - परिक्रमा, प्र -2, चौ -6
- साधू सास्त्र जो बोलहीं, सो तो सुनता है संसार । पर मूल माएने गुझ हैं, सोई गुझ सब्द हैं पार || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -47
- साधो केहेर कही करामात, ऐ दुनियां तित रांचे । झूठी दृष्ट जो बांधी झूठ सों, ताथे दिल ना लगत क्यों ए सांचे || ग्रं - किरन्तन, प्र -20, चौ -3
- साधो भाई चीन्हो सब्द कोई चीन्हो ऐसो उत्तम आकार तोकों दीन्हों, जिन प्रगट प्रकास जो कीन्हों || ग्रं - किरन्तन, प्र -3, चौ -1
- साधो या जुग की ए बुध । दुनियां मोह मद की छाकी, चली जात बेसुध || ग्रं - किरन्तन, प्र -20, चौ -1
- साधो सवे जोगारंभ, अनहद अजपा आसन । उड़ो गड़ो चढ़ो पांच में, आखिर सुन्य न छोड़ी किन || ग्रं - किरन्तन, प्र -14, चौ -9
- साधो हम देख्या बड़ा तमासा विश्व देख भया में विस्मय, देख देख आवत मोहे हासा || ग्रं - किरन्तन, प्र -4, चौ -1
- साने जणाववा माटे कया ए वचन, धणी तमारी दया हूं जाणू जीवने मन । साथ चरणे छे ते तां वचिखिण वीर, वली भले वचन विचारे दृढ धीर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -22
- साफ कौल इनोंके फैल, यामें नाहीं जरा मैल । ऐसी जो कोई धनी मिलक, तिनों जगात देनी हक || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -22
- साफ दिल ईमान सों, करे बावन मसले अरकान । ए बिने जाने इसलाम की, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -33
- साफ रखे सबों अंगों, ज्यों छींट ना लगे गुमान । बांधे दिल गरीबी सों, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -28
- साफ सेहेजे हो गए, करने पड़या न जोर । रात मिटी कुफर अंधेरी, भयो रोसन वतनी भोर || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -17
- सांभरे सर्वे वातडी, जीव द्रष्टे देखे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -108
- सांभल जीव कहुं वृतांत, तूने एक दऊं द्रष्टांत । ते तुं सांभल एके चित, तूंने कहूं छू करीने हित || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -1
- सांभल राजा द्रढ करी मन, अंतरगते केहेता वचन । ते केहेवावालो उठी गयो, हूं एकलो बेसी रहयो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -18

SPJIN

- सांभलो लखमीजी कहूं तमने, ए आगे सिवे पूछयूं अमने । पण ए लीलानी मूने खबरज नथी, तो केम कहूं तमने मुख थकी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -24
- सांभलो सखियो वात कहूं, में जोयूं मायानूं पास । केम रमाय रामत रैणी, मन उछरंगे रास || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -20
- सांभलो साथ कहूं विचार, फल वस्त जे आपणो सार । ते जोईने आवो घरे, रखे अमल तमने अति चढे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -1
- सांभलो साथ मारा सिरदार, वचन कहूं ते ग्रहो निरधार । एटला गुण आपणतूं करी, बेठा आपणमां माया देह धरी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -13, चौ -1
- साम सामी करें फौजें, लरावें लोह अंग । जिमी खावंद नाम धरावने, कई लर मरें अभंग || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -27
- साम सामी करे सैन्या, भारथरे होवे लोह अंग । लज्या बांधे होवें टुकड़े, कहावें सूर अभंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -25
- साम सामी झरोखे, झलकत अति मोहोलात । पुल दोऊ दूजी किनार लग, बीच जल ताल ज्यों सोभात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -2
- साम सामी थंभ झरोखे, और सामें बड़े देहेलान । क्यों कहूं सिफत इन जुबां, जोए ऊपर मोहोल सुभान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -16, चौ -10
- साम सामी थाय सेन्या, भारथ करे लोह अंग । अहंकारे आकार पछाडे, नमे नहीं अभंग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -30
- साम सामी दोऊ किनारे, तरफ दोऊ बराबर । दो बन की दो जवेर की, मोहोल चारों अति सुन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -73
- साम सामी दोऊ दरबार, उठत रोसनी नूर । क्यों कहूं इन जुबानसों, करें जंग दोऊ जहूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -58
- साम सामी पसु पंखी नंग के, जंग करें जवेरों दोए । एक ठौर निरत नाचत, ठौर ठौर सामी होए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -70
- साम सामी बैठी रूहें, हेत में सब हींचत । कड़े हिंडोले कई स्वर, बहु विध बोलत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -117
- साम सामें मन्दिरों के द्वार, नव भोम फिरती किनार । ता बीच थंभो की दोए हार, कई रंग नंग तेज अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -77
- सामग्री कई सनंधे, कई जिनसे सेज्या सिंघासन । कई सनंधे चौकी संदूकें, कई बिध भरे भूखन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -61
- सामी अर्स द्वार के, बीच अमृत बन पाट । तीन बाएं तीन दाहिने, ए बेवरा सातों घाट || ग्रं - परिक्रमा, प्र -16, चौ -7
- सामी और हार बनी, मन्दिर सामी मन्दिर । तिनमें साठ बाहेर, और साठ भए अन्दर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -17

SPJIN

- सामी दस थंभ दिवाल में, करे जोत जोत सो जंग । बीस थंभ रंग रंग मुकाबिल, तिन रंग रंग कई तरंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -115
- सामी सैन देत सुख चैन की, उतपन अंग अतंत । कोमल हिरदे अति विचार, क्यों कहूं नरमाई सिफत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -123
- सामे नीला मंदिर झलकत, साम सामी किरना लरत । रहया नूर नजरों बरस, जुबां क्या कहे धनीको रंग रस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -153
- सार काढे सुध करीने, वाणी वेहद गाए । धन अवतार ते बुध तणो, जे रहयो आवीने पाए || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -14
- सार तणो विचार करीने, बांध्या द्वादस स्कंध । त्यारे ठरयो रदे एणे वचने, मन पाम्यो आनंद || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -110
- सार पामे सुख उपनूं, धन धन ए अवतार । आज लगे ब्रह्मांड मांहे, कोई एम न पाम्यो पार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -16
- सारना सारसूं बंध बांधजो, करजो रे नित नवलो रंग । नाजो माया माहें कोरा रेहेजो, छूटता आयस जेम न आवे रे अंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -24
- सारनूं सार थयूं भागवत, वचन थया विवेक । वली अमृत सीच्यूं सुकदेवे, तेणे थयूं रे विसेक || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -112
- सारनों सार ते संगत, जो ते साध मेलो थाय । वेहद तणी निध लईने आपे, मूकिए ते केम पाय || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -32
- सारी फारी कंठसर टोरी, टोरयो नवसर हार । अब घर कैसे जाइए, उलटाए दियो सिनगार || ग्रं - किरन्तन, प्र -46, चौ -6
- सारे अर्थ तब होवें सत, जो प्रगट लीला दोऊ होवें इत । याही इंड में श्रीकृष्णजी भए, सो अग्यारे दिन बृज मथुरा रहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -51
- सारे जनमके क्यों कहूं गुन, पिया देह धर आए किए धंन धंन । गुन पांच जनम के क्यों कहूं सोय, धनी दया आई धनी की खुसबोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -44
- सारे सबद रसूल के, सिर लेवे हक जान । नूर नबी के मगन, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -17
- साल नव सै नब्बे मास नव, हुए रसूल को जब । रूह अल्ला मिसल गाजियों, मोमिन उतरे तब || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -9
- साल नव सै नब्बे मास नव, हुए रसूल को जब । रूहअल्ला मिसल गाजियों, मोमिन उतरे तब || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -5
- साल मास और दिन लिखे, कौल कयामत हकीकत । सिफत उमत मोमिनों, ए जो जाहेर होत आखिरत || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -58
- साल हजार दुनीय के, गिनती चांद और सूर । सो हक के एक दिन में, आवे नूर बिलंद से नूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -2

- साल हजार पीछे रसूल के, मांहें उतरे लैलत-कदर । हुआ अर्स बका दिन जाहेर, सदी अग्यारहीं के फजर || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -50
- सास्त्र पुरान भेख पंथ खोजो, इन पैडों में पाइए नाहीं । सतगुर न्यारा रहत सकल थे, कोई एक कुली में कांही || ग्रं - किरन्तन, प्र -5, चौ -7
- सास्त्र मारग बे कया, त्रीजो न कयो कोय । एक वाट वैकुण्ठ तणी, बीजी स्वर्ग जमपुरी जोय || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -23
- सास्त्र ले चले सतगुर सोई, बानी सकल को एक अर्थ होई । सब स्यानों की एक मत पाई, पर अजान देखे रे जुदाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -3, चौ -4
- सास्त्र संगी सब यों कहें, विचार देख महामत । जैसी होए हिरदे मिने, तैसी पाइए गत || ग्रं - किरन्तन, प्र -87, चौ -12
- सास्त्र सबे जो ग्रन्थ, ताके करते थे अनरथ । बिना इमाम न कोई समरथ, जो पट खोल के करे अर्थ || ग्रं - खुलासा, प्र -11, चौ -4
- सास्त्र सब्द को अर्थ न सूझे, मत लिए चलत अहंकार । आप न चीन्हें घर न सूझे, यों खेलत मांझ अंधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -6, चौ -11
- सास्त्र सब्द मात्र जो बानी, ताको कलस बानी सब्दातीत । ताको भी कलस हुओ अखंड को, तापर धजा धरूं तिनथैं रहित || ग्रं - परिक्रमा, प्र -2, चौ -2
- सास्त्र साधू जो साखियां, मैं देखी सबन की मत । जोलों साहेब ना पाइए, तोलों कीजे कासों हेत || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -3
- सास्त्र साधू जो साखियां, मैं देखी सबों की मत । पिया सुध काहू में नहीं, कोई न बतावे तित || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -3
- सास्त्र साधोनी वाणी सर्वे, आगम भाखी छे अनेक । ते सर्वे आंही आवी ने मलसे, तेहना वंचासे ववेक || ग्रं - किरन्तन, प्र -70, चौ -4
- सास्त्रे आवरदा कही कलजुग की, चार लाख बत्तीस हजार । काटे दिन पा लिख्या माहें सास्त्रों, सो पाइए अर्थ अंदर के विचार || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -17
- सास्त्रे संसार कयूं सुपना, तो ते करी बेठा सह सत । साध वाणी रे जोता नथी, तो लई जाय छे असत || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -22
- सास्त्रों जीव अमर कयो, और प्रले चौदे भवन । ओर प्रले पांचो तत्व, और प्रले कहे त्रिगुन || ग्रं - किरन्तन, प्र -65, चौ -5
- सास्त्रों तीनों सृष्ट कही, जीव ईश्वरी ब्रहम । तिनके ठौर जुदे जुदे, ए देखियो अनुकरम || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -22
- सास्त्रों में सबे सुध पाइए, पर सतगुर बिना क्यों लखाइए। सब सास्त्र सब्द सीधा कहे, पर ज्यों मेर तिनके आड़े रहे || ग्रं - किरन्तन, प्र -3, चौ -5
- साहे डींनी चाईन पाणके, बोलीन मोह मिठां । जीरे मुआं न छुटो मंझां, जे इनी डिठां || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -19

- साहेद किए हैं सब को, जेती अर्स अरवाहें । आप भी हुए साहेद, अपनी आप जुबांए || ग्रं - किरन्तन, प्र -111, चौ -5
- साहेदी खुदाए की, रूह अल्ला दई जब । खुले अन्दर पट अर्स के, पाई सूरत खुदाए की तब || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -46
- साहेदी देवे अल्ला कलाम, सब दुनियां कबूल करे इसलाम । खोले माएने बातून हकी, मोमिन जाहेर करों बुजरकी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -5, चौ -34
- साहेदी देवे जो खुदाए की, सोई खुदा जान || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -33
- साहेब आए इन जिमी, कारज करने तीन । सो सब का झगड़ा मेट के, या दुनियां या दीन || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -89
- साहेब के संसार में, आए तीन सरूप । सो कुरान यों केहेवहीं, सुंदर रूप अनूप || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -71
- साहेब के हुकमें ए बानी, गावत हैं महामत । निज बुध नूर जोस को दरसन, सबमें ए पसरत || ग्रं - किरन्तन, प्र -59, चौ -8
- साहेब चले वतन को, केहे केहे बोहोतक बोल । धिक धिक पड़ो मेरे जीव को, जिन देख्या न आंखां खोल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -4
- साहेब चाहे सो करे, निपट मांहें नजर में धरे । ए खुदाए पेहेले किया करार, जमाना होसी सिरदार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -20, चौ -5
- साहेब तेरी साहेबी भारी । कौन उठावे तुझ बिन तेरी, सो दई मेरे सिर सारी || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -1
- साहेब तो पूरा मिल्या, तब थी मैं लड़कपन । पेहेचान करावने अपनी, बोहोतक कहे वचन || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -9
- साहेब फतुआत का यों कहे, साहेब रातों के तले रात रहे । इनकी नजरों न छिपे दुस्मन, जो कोई हैं साहेब के तन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -11
- साहेब बंदे की सुध नहीं, छोटा बड़ा क्यों कर । ना सुध एक ना दोए की, ना सांच झूठ खबर || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -48
- साहेब बैठे तखत पर, खेलावत कर प्यार । ऐसी हाँसी फरामोसीय की, कबूं देखी ना बेसुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -4
- साहेब मांहें बैठ के, बतावत हैं ठौर । सो घर तुमको देखाइया, जहां नहीं कोई और || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -22
- साहेब मेरा चलते, मेरी सकल सैन्या अंग मांहें । सो काम न आए आतम के, अवसर ऐसो न क्यांहें || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -28
- साहेबी अर्स अजीम की, तमें नजर आवे तब । नूर-तजल्ला नूर थे, जुदे होए देखो जब || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -15

- सिकण सडण जीरे मरण, से सभ हथ धणी । तो चंगी पेरे डेखारियो, त मूं न्हास्यो नैण खणी || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -54
- सिकां सडां दीदार के, बी सुणन के गाल । मूं वजूद नासूत में, तूं धणी बका नूरजमाल || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -73
- सिकाइए त सिका, मूं में सिकण न की । रोहोंदिस तेही हाल में, अंई रखंदां जी || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -9
- सिकाए-सिकाए, मुंहके, को द्रजंदो-द्रजंदों डिए । लाड मगंदयूं रांदमें, तो अटके ई हिए || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -50
- सिखाओ चलाओ बोलाओ, सो सब हाथ हुकम । सो इलमें बेसक करी, और कहा कहूं खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -46
- सिखामण दिए रे वालोजी, कोई न नमे रे लगार । त्यारे रूप कीधां रंगे रमवा, संतोखी सर्वे नार || ग्रं - रास, प्र -39, चौ -12
- सिजदा कराया इमामें, ऊपर हक कदम । ए आसिक रूहों सिजदा, करें खासलखास दम दम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -17
- सिजदा कराया इमामें, ऊपर हक कदम । ए आसिक रूहों सिजदा, करें खासलखास दम दम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -29
- सिजदा जित सरीयत का, तित आए लिखाई पुकार । एते किन वास्ते लिखे, ए तुम अजहूं न किया विचार || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -101
- सिणगार सर्वे सजी करी, स्यामाजी घणूं सोहे । दरपण लईने हाथमां, मन वालाj मोहे || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -18
- सिणगार सर्वे सोहे, वालोजी खंत करी जए। जाणिए मूलगां रे होय, तारतम विना नव कोय, जाणे एह रे धन || ग्रं - रास, प्र -13, चौ -4
- सिद्ध करो साधन, विप्र मख वेद वदंत । सकल क्रियासू धरम पालतां, दया करो जीव जंत || ग्रं - किरन्तन, प्र -127, चौ -3
- सिध ने साधो रे संतो महतो, वैष्णव भेख दरसन । धरम उछेदे रे असुरें सबन के, पीछे परचा देओगे किस दिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -10
- सिंधडी थियूं वधाइयूं, मीर पीर फकीर । पुन्यूं उमेदूं सभनी, खिल्ली थेयां सभ खीर || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -5
- सिंधमें अदियूं पांहिंज्यूं, हे खबर डिजां तिन । असां गाल सुणी दम ना रहे, जा हुंदी रूह मोमिन || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -18
- सिनगार करके तुरी चढ़े, कोई करे छाया छत्र । कोई आगे नाटारंभ करे, कोई बजावे बाजंत्र || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -15
- सिनगार करके तुरी चढ़े, कोई करे छाया छत्र । कोई आगे नाटारंभ करे, कोई बजावे बाजंत्र || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -17

- सिनगार करें देहेलान में, आरोगें और मंदिर । इतहीं दीदार नूर को, दिन पौढ़े पलंग अंदर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -39
- सिनगार किया सब दुलहे, वस्तर या भूखन । अब बखत हुआ देखन का, देखों रूह के नैनन || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -5
- सिपारा आम आधा पूरन, फजर मक्कीए सूरत रोसन । खास उमत आगे करों बयान, ले रोसनी मारो सैतान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -18, चौ -1
- सिपारे आठमें मिने, जहूद नसारे जुदे पड़े। त्यों कौल तोड़ महंमद के, एक दीन पर रहे ना खड़े || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -28
- सिपारे इकईसमें, लिख्या जाहेर बंदगी बयान । पर हादी देखाएँ देखिए, मोमिन करें पेहेचान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -36
- सिपारे उनईस में, कह्या निकाह आदम हवा । सो पसरी बीच दुनी के, इत अबलीस जो पैदा || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -12
- सिपारे उनईस में, लिखे एक ठौर बयान तीन । ए जो देखो दिल देय के, तो दिल नकस होए आकीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -37
- सिपारे उनईस में, लिख्या रात हवा मजकूर । सूरज महंमद दिल मारफत, उड़े रात हवा देख नूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -65
- सिपारे उनईस में, लिख्या सूरज मारफत । सो दिल रोसन महमद का, होसी खोलें हकीकत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -115
- सिपारे ओगनतीस में, इन विध लिखे कलाम । अर्स बका पर सिजदा, करावसी इमाम || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -37
- सिपारे ओगनतीस में, हकें लिख्या है जेह । सो देखो नीके कर, अपना दिल देय || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -60
- सिपारे चौथे मिने, कही गैब हक खिलवत । सो जाहेर करसी मोमिन, उतर के आखिरत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -33
- सिपारे चौबीस में, बड़ी साहेबी दज्जाल । पोहोंचे दरियाव जंगलों, चले याके फिरके नेहेरें मिसाल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -23
- सिपारे चौबीसमें मिने, लिखी सूरत अबलीस । जल थल सबों में ए कह्या, या को पूर्जे कर जगदीस || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -2
- सिपारे तीसरे में कही, पांच वज्हे की पैदास भई । दुनियां हुई केहेते कलमें कुंन, एक एक हाथ एक दो हाथन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -23
- सिपारे सताईस में, लिखे दुनी के सुकन । ए क्योंए पाक न होवहीं, एक तौहीद आब बिन || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -71
- सिपारे सत्ताइस में, जाहेर कह्या रोसन । सो तुम देखो अर्स दिलमें, जाहेर हक हादी मोमिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -112

- सिपारे सत्ताईस में, लिख्या नीके कर । सो लीजो तुम मोमिनों, बीच अर्स दिल धर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -48
- सिपारे सत्ताईस में, लिख्या बीच फरमान । पाक बिना मत छुइयो, यों कहे हजरत कुरान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -47
- सिपारे सयकूल में, यों लिख्या जाहेर कर । देखाऊं माएने मुसाफ, चीन्हो दिल की खोल नजर || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -19
- सिफत अलेखे निसबत, ज्यों सिफत अलेखे हक । सब्दातीत न आवे सब्द में, मैं कही इन बुध माफक || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -34
- सिफत ऐसी कही मोमिनों, जाके अक्स का दिल अर्स । हक सुपने में भी संग कहें, रूहें इन विध अरस-परस || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -81
- सिफत करेंगे सब कोई, दुनी भिस्त की जे । हक हादी रूहें वाहेदत, भिस्त हुई इनों वास्ते || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -139
- सिफत करेंगे सब कोई, दुनी भिस्त की जे । हक हादी रूहें वाहेदत, भिस्त हुई इनों वास्ते || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -19
- सिफत तीनों की जुदी कही, सो सब बुजरकी एक पर दई । ज्यों बसरी मलकी हकी, त्यों रसूल रूहअल्ला इमाम पाकी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -45
- सिफत तो सारी सब्द में, चौदे तबक के मांहें । कलाम अल्ला न्यारा सबन से, सो क्यों कहूं सिफत जुबांए || ग्रं - किरन्तन, प्र -121, चौ -1
- सिफत न होए एक बाल की, तो क्यों होए सिफत वजूद । ए केहेनी में न आवत, तो क्यों कहे जुबां नाबूद || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -30
- सिफत न होवे रेत की, ना होवे बन सिफत । जो कछू कहूं सो उरे रहे, मेरी जुबां ना पोहोंचत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -34
- सिफत नख कहूं के अंगुरियों, के रंग पोहोंचे ऊपर टांकन । कहूं कोमलता किन जुबां, मेरे जीव के एही जीवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -3
- सिफत पाई हक नैन की, हक नैनों में गन अपार । सो गुन अखंड अर्स के, ए रंग हमेसा करार || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -4
- सिफत बड़ी रसूल की, निराकार के पार अखंड । ऐसा कोई न हुआ, ना तो हुए कई ब्रह्मांड || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -21
- सिफत रसूल अल्ला कलाम, रूहअल्ला ईसा पाक इमाम । कही खास उमत महंमद, जाकी सिफत को न पोहोंचे सब्द || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -2
- सिफत सब पैगंमरों की, माहें लिखी अल्ला कलाम । उमत सबे रानी गई, इनों किन को दिया पैगाम || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -40
- सिफत हक सूरत की, क्योंए न आवे जुबांए । कछू लज्जत तो पाइए, जो आवे फैल हाल माहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -55

- सिर खिताब जमाने खावंद, सो करसी मुसाफ जहूर । झूठ दूर होए रात अंधेरी, सब देखें हक अर्स ऊगे सूर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -30
- सिर पटली मोती सरें, माहें पांच नंग के रंग । मोती सर सेंथे लग, नीले पीले लाल सेत नंग || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -49
- सिर पर बनी जो राखड़ी, कहूं किन बिध सोभा ए। आसमान जिमी के बीच में, एकै जोत खड़ी ले || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -40
- सिर पर साड़ी सोभित, नीली पीली सेत किनार । तिन पर सोहे कांगरी, करें पांच नंग झलकार || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -54
- सिर पर सोहे राखड़ी, जोत साड़ी में करे अपार । फिरते मोती माहे मानिक, पाने पोखरे दोऊ किनार || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -44
- सिर पाग बांधी चतुराई सों, हमें पेच हाथ में ले । भाव दिल में लेय के, सुख क्यों कहूं विध ए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -27
- सिर बदले जो पाइए, महंमद दीन इसलाम । और क्या चाहिए रूहन को, जो मिले आखिर गिरोह स्याम || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -25
- सिर मुकट एक भांत का, क्यों कहूं जुबां रंग नंग। ना देख सकों नूर नजरों, कई किरने उठे तरंग || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -42
- सिर ले आप खड़ी रहो, कहे तूं सब सैयन । प्रकास होसी तुझ से, दृढ़ कर देख मन || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -36
- सिर ले आप खड़ी रहो, कहे तूं सब सैयन । प्रकास होसी तुझ से, दृढ़ कर देखो मन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -32
- सिर ले काम करे माया को, निसंक पछाड़े आप अंग । न करे भजन दोष देवें सांई को, कहे दया बिना न होवे साध संग || ग्रं - किरन्तन, प्र -4, चौ -3
- सिर से छूट गया करज, हुए मोमिन बेगरज । छूटा मूल जो हुकम, हुआ सिजदा हजूर कदम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -9
- सिरक इनों की मैं जानों सही, बिना खबर याकी जरा नहीं । ऊपर से उतस्या पानी, तिन से नेकी बंदों की जानी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -66
- सिरदार अस्वार इज्जत मैदान, आली सेर इन दरगाह का जान । इन पातसाह ऐसा जमाना, बकसीस चाहे बखत की पना || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -12, चौ -12
- सिरदार ते रूहन में, मूंके केइए कांध । वडी बडाई डिनिएं, अची मय हिन रांद || ग्रं - सिंधी, प्र -13, चौ -6
- सिरदार न होवे एकला, ज्यों हुकम हाकिम संग। त्यों महंमद मेहेंदी हक से, ए दोऊ एकै अंग || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -53
- सिरदार सब बन में, पस पंखी जात जेती । खूबी बल हिकमत की, जुबां क्या कहेगी केती || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -13

- सिरोपाव दे गज चढ़ावहीं, ओ जाने हुआ खराब । ए बजाए बाजे कूदहीं, कहें हमें होत सवाब || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -15
- सिसुपाल की जोत वैकुण्ठ गई, समाई श्रीकृष्ण में तित ना रही । आउध अपने मंगाए के लिए, कई बिध जुध असुरों सों किए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -57
- सीखो सबे संस्कृत, और पढ़ो सो वेद पुरान । अर्थ करो द्वादस के, पर आप न होए पेहेचान || ग्रं - किरन्तन, प्र -14, चौ -8
- सीढ़ियां अति झलकत, जब सखियां उतर चढ़त । प्रतिबिंब सखियों सोभित, पड़धारे मीठे स्वर उठत || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -75
- सीढ़ियां अति सोभित, माहें मंदिरों सबन । कहूं कहूं देहेलान में, जो जित सो तित रोसन || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -77
- सीढ़ियों ऊपर जो चबूतरा, बने चारों झरोखे जे । इत आणू सबन के कठेड़ा, अति बन्या ताल पर ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -65
- सीढ़ियों पर जो चबूतरे, तिन तले सब मेहेराब । मेहेराब आणू जो चबूतरा, सोभित है ढ़िग आब || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -39
- सीढ़ी मुकाबिल सीढ़ियां, आए मिलत हैं जित । दो दो बीच द्वार ने, सबों सोभित परकोटे इत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -22, चौ -4
- सीत कालें सुख धूप को, पहेले पोहोंचत झरोखों आए । इत आराम घड़ी दोए तीन का, प्रभात समें सुखदाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -72
- सीत धूप बरखा ना गिने, करे तपस्या जोर अति घने । सनेह धर बैठे एकांत, एते सात भए कल्पांत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -39
- सीत रूत पिउजी तम विना, मने अति अलखामणी थाय । वाए रे उतर केरो वायरो, ते तां मारे तरवारे घाय || ग्रं - खटरुती, प्र -4, चौ -1
- सीत रूते जल जोनी जामिया, तमे हजिए न ल्यो मारी सार । जीवने काया नहीं तो मूकसे, ते तमे जोसो निरधार || ग्रं - खटरुती, प्र -4, चौ -3
- सीत रूते पत्र जेम हारव्या , जेम वसंत विना वनराय । रंग ने रूप रूत हरी लिए, पछे सूकीने भाखरिया थाय || ग्रं - खटरुती, प्र -4, चौ -7
- सीतल दृष्ट मासूक की, जासों होइए सनकूल । होए आसिक इन सरूप की, पाव पल न सके भूल || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -18
- सीधी इन भाखा मिने, माएने पाइए जित । जो सब्द सब समझहीं, सो पकड़ें नहीं पंडित || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -16
- सीधी इन भाखा मिने, माएने पाइए जित । जो सब्द सब समझहीं, सो पकड़े नहीं पंडित || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -18
- सीधी राह वतन की, अब लों न पाई किन । पैगंमर ना फरिस्ते, ना अहंमद मेंहेदी बिन || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -52

- सीधे सब्द रसूल के, पर ए समझे कछू और । जोलों सब्द ना चीनहीं, तोलों न पाइए ठौर || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -46
- सील कहे संतोख सुनो, आपणने कीधां छे पाल । परवत ताणें पूर सागरना, माहे वेहेवट छे नताल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -110
- सील कहे संतोख सुनो, आपन हुए माया के पाल । कई बहावे पहाड़ पूर सागर के, मांहें लेहेरें बेहेवट नताल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -110
- सील संतोख आओ ढिग मेरे, बांधो सागर आड़ी पाल । गुन सारे हुए अग्या में, पीछे रह्या न कछू जंजाल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -109
- सील संतोख हवे आवजो टूकडा, बांधो सागर आडी पाल । गुण सघला केहेसो तेम करसे, नथी कांई बीजो जंजाल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -109
- सीलवंती सती कहावे, आरजा अरधांग । जती वरती पोसांगरी, ए अति सोभावे स्वांग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -3, चौ -14
- सुई के नाके मंझार, कुंजर कई निकसे हजार । ए अर्थ भी होसी इतहीं, तारतम आसंका राखे नहीं || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -35, चौ -5
- सुईने सुई सूता सुं करो रे, आ विखम ठिकाणा मांहें जी । जागीने जुओ उठी आप संभारी, एणी निद्राए लेवाणां कांय जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -1
- सुक जी ना वचन सुणावी काने, ततखिण कीधो अजवास । आटला दिवस कोणे नव जाण्यूं, हवे प्रगट थयो प्रकास || ग्रं - किरन्तन, प्र -124, चौ -2
- सुक व्यास कहें भागवत में, प्रेम ना त्रिगुन पास । प्रेम बसत ब्रह्मसृष्ट में, जो खेले सख्प बृज रास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -39, चौ -4
- सुक सनकादिक ने नव टली, लखमी नारायण ने फरीवली । विष्णु वैकुंठ लीधां माहे, सागर सिखर न मूक्या क्यांहें || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -5
- सुकजी आए इन वास्ते, ले किताब भागवत । ए चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्म सों निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -35
- सुकजी इत ले आइया, बेहद के बोल । फेर टालो अंदर का, देखो आंखां खोल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -78
- सुकजी और सनकादिक, कई और भी साध । तिन खोज खोज के यों कह्या, ए तो अगम अगाध || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -8
- सुकजी केरा वचन समझी, जो कोई रदे विचारो । सात दिवस मांहें परीछित वैकुंठ, वचनें पार उतारयो || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -114
- सुकजी ने सनकादिक बे, वली कबीर भेलो मांहे ते । लखमी नारायण भेला अंग माहें, एहनो विचार काई जुओं न थाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -10
- सुकजी सनकादिक ने कबीर, रया घणुए ताणी । कोणे न आवी एणी प्रेमल, रया रूदेमां आणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -5

- सुकजीए अवतार सहु कया, पण बुधमां रहयो संदेह । एहेनो चोख करी नव सक्यो, तो केम कहे लीला एह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -41
- सुकजीएँ भी यों कहया, प्रेम चौदे भवन में नाहें । ब्रहमसृष्ट ब्रहम निसबती, प्रेम जो है तिन मांहें || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -108
- सुकजीए लीला वरणवी, वृज रास वखाण्यो । बेहदनी वाणी विना, ठाम ठाम बंधाण्यो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -48
- सुकजीना कया प्रमाण, सात सागरनो काढ्यो निरमाण । भव सागरनो न आवे छेह, सुकजी एम पाधरूं कहे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -18
- सुकजीनी वाणी सोहामणी, जोत बेहद ल्यावी । फेर टालो तमे मांहेलो, जुओ आंख उघाडी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -65
- सुकन मेरा मानो नहीं, सबे भरी इस्क के जोस । सवे बोलें नाचें कूदहीं, हमें कहा करे फरामोस || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -38
- सुकमुनी बानी बोल्या वेदांत, सो इनों क्यों समझी जाए। होसी प्रगट प्रकास निज बुध का, सो महामत देसी बताए || ग्रं - किरन्तन, प्र -31, चौ -10
- सुकें अवतार सब कहे, पर बुध में रहया उरझाए । ए भी सीधा न कहे सक्या, तो क्यों इन कही जाए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -2
- सुकेमें डियां की डुबियूं, जे अचिम जरा इस्क || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -16
- सुख अखंड एणी पेरे, तमें लेजो संगत साध । अधखिण विलम न कीजिए, आ आकार खोटो साज || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -56
- सुख अखंड जो धाम को, सो तो अपनों अलेखें । निपट आयो निकट, जो आंखां खोल के देखे || ग्रं - किरन्तन, प्र -80, चौ -8
- सुख अखण्ड अछरातीत को, इन समें पाइयत हैं इत । कहा कहूं कुकरम तिनके, जो मांहें रेहे के खोबत || ग्रं - किरन्तन, प्र -78, चौ -6
- सुख अनेक दिए हक रसनाएँ, और सुख अलेखे अनेक । सो जागे रूहें सब पावहीं, ताथें रसना सुख विसेक || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -13
- सुख अन्तर अन्तस्करन के, आवें नहीं जुबांन । प्रेम प्रीत रीत अन्तर की, सो क्यों कर होए बयान || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -33
- सुख अलेखे देत हैं, चारों तरफों झरोखे । ए कायम सुख कैसे कहूं, देत दायम हक जे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -106
- सुख आगू अर्स द्वार के, कई बिध केलि करत । सो क्यों छोड़ें चरन हक के, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -6
- सुख आसिकों क्यों कहूं, जो लेवें मासूक अंदर । सुन मोमिन टूक होवहीं, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -33

- सुख इस्क हक जात के, तिनसे अंग सुखदाए । बाहेर सुख सब अंग में, ए सुख जुबां कहयो न जाए || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -61
- सुख उपजें कई विध के, आगू अर्स में बड़ा विस्तार । सो रूहें सब इत देखहीं, जो कर देखें नीके विचार || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -29
- सुख कहा कहूँ भोम सातमी, जो लेते खटों छपर । हक हादी रूहें झूलत, साम सामी बांध नजर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -19, चौ -14
- सुख कहां गए इन समें के, कई विध बन करें गुंजार । सेहेरां गाजत छाया बादली, होत बीजलियां चमकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -23
- सुख कहूं मीठी जुबान के, के सुख कहूं लाल अधुर । के सुख कहूं रस भरे वचन, जो बोलत मांहें मधुर || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -128
- सुख केते कहूं स्यामाजीय के, हक सुख बिना हिसाब । ए सुख सोई जानहीं, जो पिए इन साकी सराब || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -6
- सुख क्यों कहूं पहाड़ पुखराज के, और कहा कहं मोहोल तले । ऊपर चौड़े मोहोल चढ़ते, मोहोल तीसरे तिन उपले || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -1
- सुख खिलवत इन मुख क्यों कहूँ, कहया न जाए जुबांए । ए बातें आसिक मासूक की, रूहें जाने अर्स दिल माहे || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -27
- सुख चांदनी चढ़ाए के, पूनम की मध्य रात । ए कौन देवे मासूक बिना, इस्क भीगे अंग गात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -19, चौ -17
- सुख चेहेबच्चे भोम दूसरी, मिल मन्दिर बारे हजार । कौन देवे मासूक बिना, सुख भुलवनी अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -19, चौ -7
- सुख चौथी भोम निरत के, सुख पांचमी भोम पौढ़न रे । ए सुख अनुभव कौन केहेसी, कई विध विलास रैन रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -79
- सुख छठी भोम मोहोलन के, ए कौन देवे कर विचार । इन जुबां सुख क्यों कहूँ, इन हक के बेसुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -19, चौ -13
- सुख जानें न हक पातसाही, सुख जानें न हक इस्क । सुख जानें ना रूहें लाड़ के, तो इत इलम दिया बेसक || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -10
- सुख जो अर्स अजीम के, सो होए नहीं मजकूर । ए अर्स तन से बोलत, मांहें खिलवत हक हजूर || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -49
- सुख जो अर्स अवाहों के, जो लिए जिमी इन । सो तुम देखो सहूर कर, कहे न जाए मुख किन || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -23
- सुख तो अलेखे पाइया, पर इन सुख ऐसी बात । एक वल पइया आए बीच में, ताथें ए सुख रूहें न चाहत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -73
- सुख तो वालाजीने संग, अरधांग लिए रे अंग । जुवती करती जंग, रमे नव नवे रंग, घणूं जसन || ग्रं - रास, प्र -13, चौ -6

- सुख तोहिजा सिपरी, अचे न लेखे में । पार न अचे अपारजो, कडी न गणियां के || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -32
- सुख दऊं सुख लऊं, सुखमां ते जगवू साथ । इंद्रावतीने उपमा, में दीधी मारे हाथ || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -68
- सुख दिए अर्स जिमीय के, सुख दिए जल जोए । सुख दिए मोहोलात के, सब जरी किनारे सोए || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -13
- सुख दिए जल ताल के, सुख ताल कई विवेक । कोट जुबां ना केहे सके, तो कहा कहे रसना एक || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -14
- सुख दिए मोहोल नूर के, सुख बाग नूर गिरदवाए । ए समूह मोहोल सुख कैसे कहूं, इन जुबां कहे न जाए || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -15
- सुख दुख बने जोइया, तोहे कांईक रह्यो संदेहजी । ते माटे वली सत सख्पे, मंडल रचियो एहजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -25
- सुख देऊं मूल वतन के, कोई रच के भला रंग । मन वांछे मनोरथ, देऊं सुख सबों अंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -20
- सुख देऊं सुख लेऊ, सुख में जगाऊं साथ । इंद्रावती को उपमा, मैं दई मेरे हाथ || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -68
- सुख देओ दोऊ उमत को, बीच बैठ नासूत । चिन्हाए इस्क हक साहेबी, बुलाए ल्याओ लाहूत || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -53
- सुख देखाए वतन के, सो भी कायम सुख अलेखे । तो भी छल छूटे नहीं, जो आपे आंखें अपनी देखे || ग्रं - किरन्तन, प्र -77, चौ -9
- सुख देत सब अंग मिल, नैन नासिका श्रवन अधुर । हँसत हरवटी भौं भृकुटी, सब दें सुख बोल मधुर || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -46
- सुख देना लेना रूहों सों, और रूहों सों वेहेवार । ए अर्स बातें इन जिमिएँ, कोई बिना रूह न लेवनहार || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -52
- सुख देवें जब अंदर, तब ए बातें मीठी बयान । रंग रस करें रूहन सों, कोई ना सुख इन समान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -107
- सुख धाम के जो पाइए इत, सो काहूं मेरी आतम न देखे कित । इन अंग की जुबां किन बिध कहे, जो सुख कहूं सो उरे रहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -21
- सुख नेहेरों का अलेखे, सबों ऊपर मोहोलात । कई मिली कई जुदियां, तरफ चारों चली जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -23, चौ -1
- सुख पाइए देखें हरवटी, मुख लांक लाल अधुर । दन्त जुबां बीच तंबोल, मुख बोलत मीठा मधुर || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -6
- सुख बका अर्स हिन जिमी, हिए गिनणजी वेर । पोए आलम जडे उलट्यो, तडे लखे पूछे चोए केर || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -19

- सुख बड़े तारतम के, क्यों जाहेर कीजे । वानी माएने देखके, जीव जगाए लीजे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -144
- सुख बरसाती और बिध, बीज चमके घटा चौफेर । सेहेरां गरजत बूंदें बरसत, घटा टोप लिया बन घेर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -70
- सुख माया को मूल है, सो चाहे बढ़यो विस्तार । तिन साधो सुख तजिया, वास्ते अपने करतार || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -22
- सुख में तो सुख दायम, पर स्वाद न आवत ऊपर । दुख आए सुख आवत, सो मेहेर खोलत नजर || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -10
- सुख में भी सक नहीं, नाहीं अर्स में सक । ना कछू सक इलम में, सक ना खसम हक || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -11
- सुख लीजो मोमिन, पहाड़ मोहोल के आराम । अर्स अजीम के कायम, निस-दिन एही ताम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -1
- सुख लेत ताल मूल जोए के, कई विध केलि करत । रूहें क्यों छोड़े हक चरन को, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -62
- सुख लेने को आए हो, नहीं भेजे सोवन को । विचार देखो हादीय की, वानी ले दिल मों || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -79
- सुख सब पसु पंखियन के, कई खेल बोल दें सुख । ए आगू अर्स आराम के, क्यों कर कहूं इन मुख || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -18
- सुख सीतल सों अपने घर में, कई भांतों करते प्यार । सो सारे कर दिए दुस्मन, जासों निस दिन करते विहार || ग्रं - किरन्तन, प्र -120, चौ -5
- सुख हक इस्क के, जिनको नाहीं सुमार। सो देखन की ठौर इत है, जो रूह सों करो विचार || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -30
- सुख हक का महामत जानहीं, या जाने मोमिन । दूजा नहीं कोई अर्स में, बिना बुजरक रूहन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -82
- सुख हिंडोले भोम आठमी, हक हादी रूहें हींचत । ए चारों तरफों के झूलने, हक हमको देत लज्जत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -19, चौ -15
- सुखडा जे हिन अर्सजा, आईन सभे कमाल । रूहें बड़ी रूह विचमें, धणी सो नूरजमाल || ग्रं - सिंधी, प्र -2, चौ -15
- सुखने रखोपे दुख वीट्या छे, लेवाए नहीं केणे काचे जन । सूरधीर हसे खरो खोजी, ते लेसे दृढ़ करी मन || ग्रं - किरन्तन, प्र -131, चौ -3
- सुगंध बेलियां नौतन, जिमी रेत सेत प्रकास । नेहेकलंक चंद्रमा नौतन, सकल कला उजास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -114
- सुच्छम वय उनमद अंगे, सोभा लेत किसोर । बका वय कबूं न बदले, प्रेम सनेह भर जोर || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -114

SRJN

- सुच्छम सरूप ने सुंदरता, उनमद सारे अंग । बराबर एकै भांत के, और कई विध के रस रंग || ग्रं - किरन्तन, प्र -93, चौ -17
- सुण सुंदरी एक वात कहूं खरी, ए ते एम केम थाय रे । नेणां ऊपर केम करीस, ए तो नहीं धरवा दिए पाय रे || ग्रं - रास, प्र -37, चौ -4
- सुणजे वली धणीना वचन, वाणी कहे ते ग्रहजे मन । रखे पाणीवल विहिलो थाय, आवो नहीं लाभे रे दाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -14
- सुणिया जे सुंदर तणा रे, न मूकिए एह वचन रे । आटला दिवस में विचार न कीधो, नव ली– वचन नूं धन रे || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -2
- सुणो केसरबाई वात अमारी, इंद्रावती कहे आ वार । लाख वातो जो करो रे बेहेनी, पण हूं नहीं मूकू निरधार || ग्रं - रास, प्र -39, चौ -7
- सुणो रूहें अर्स जी, जा पांणमें वीती आए । जेहेडी लटी पांण केई, एहेडी करे न बी काए || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -1
- सुणो रे वालैया वात कहूं, तमारा भूखण बाजे भली भांत रे । लई चरणने निरखू नेत्रे, मूने लागी रही छे खांत रे || ग्रं - रास, प्र -37, चौ -6
- सुणो रे सखियो हूं वेण वजाडूं, वेण तणी सुणो वाणी । खिण एक पासेथी अलगा न करूं, राखू हैडामां आणी || ग्रं - रास, प्र -31, चौ -4
- सुणो सुन्दर वल्लभजी मारा, निरत केणी पेरे थाय । अमने देखाडो आयत करी, कांई उलट अंग न माय || ग्रं - रास, प्र -29, चौ -3
- सुणोजी साथ कहे इंद्रावती, जोगमाया नो जुओ विचार । ए केणी पेरे हूं वरण, मारा साथ तणो सिणगार || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -30
- सुणोने वालैया, कहूं मारी वीतक वात । आवडा ने दुख तमे कां, दीधां रे निघात || ग्रं - खटरुती, प्र -7, चौ -1
- सुतेज सत सागर माहेथी, धन आवतूं अविचल । वही गयूं ते पूर, लेहेर आवतियूं छोल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -64
- सुतेज ससि बन पसु पंखी, तत्व पांचे सुतेजजी । सुतेज सर्वे जोगवाई, सुतेज रेजा रेजजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -14
- सुतेज ससि बन पसु पंखी, तत्व सबै सुतेज । सुतेज थिर चर जो कछू, सुतेज रेजा रेज || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -21
- सुंदर ने सोभे एक जुगते, झण बाजे रसाल । चूड केरा छापा अति सोभे, उर पर लटके माल || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -50
- सुंदर बालक मधुरी बानी, घर ल्यावें गोद चढ़ाए। सेज्याऐं खिन में प्रेमें पूरा, सुख देवें चित चाहे || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -42
- सुंदर श्रीमुख वचन सांभरे, त्यारे जीवने कालजे लागे घाय । पण चूकी अवसर जो हूं पेहेली, तो न आवे हाथ ते दाय || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -16

- सुंदर सोभा स्यामाजी केरी, निरखी निरखी ने निरखू जी । अंतर टालीने एक थया, इंद्रावती कहे हूं हरखू जी || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -71
- सुंदरबाई अंतरगत कहावे, प्रकास वचन अति भारी जी । साथ सकल तमे मली सांभलो, जो जो तारतम विचारी जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -3, चौ -2
- सुंदरबाई अंतरगत कहे, प्रकास वचन अति भारी जी । साथ वचन ए चित दे सुनियो, देखियो तारतम विचारी जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -3, चौ -2
- सुंदरबाई इन फेरे, आए हैं साथ कारन जी । भेजे धनिएँ आवेस देय के, अब न्यारे न होऐं एक खिन जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -2
- सुंदरबाई कहे साथने, सखी एम रे भैयो तमे कांए । केड बांधो तमे कामिनी, आपण जोइए वृंदावन माहे || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -24
- सुंदरबाई जे बखतमें, मायाएं वडा डुख डिना । भती भती विलखई, हे डिसी डुखडा किंना || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -26
- सुंदरबाईएं जे चयो, मूं दिल पण डिंनी गुहाए । सभ गाल्यूं असां जे दिलज्यूं, धणी तो खबर सभ आए || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -22
- सुध आतम परआतमा, सक्या ना कोई कर । सो सारे धोखे मिटे, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -23
- सुध इनको तो परे, जो ए आप सांचे होए। तो कुरान के माएने, इत खोल ना सके कोए || ग्रं - सनंध, प्र -14, चौ -37
- सुध इष्ट ना दीन की, मोह माते उनमाद । ज्यों ज्यों वैर बढ़ावहीं, कहें हमें होत सवाब || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -20
- सुध एणे थाय नहीं, सामं रदे थाय अंधेर । अजवास ए पोहोंचे नहीं, दीठे चढे सामा फेर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -22
- सुध दई महंमद ने, अर्स पाइए मोमिन बीच दिल । जिनपे इलम हक का, दिल अर्स रहे हिल मिल || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -81
- सुध दुनी हद ना बेहद, कौन रसूल कौन हम । कागद ल्याया किनका, कहां सो अर्स खसम || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -2
- सुध न आसा उमेद, सुध न प्रेम प्रीत । सुध न अर्स अरवाहों के, धणी रखियूं केही रीत || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -30
- सुध न पाइए बिना लज्जत, नफा या नुकसान । निसबत रहे ना जुबान की, जहां हक मारफत नहीं पहेचान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -15
- सुध न सुख कांधजा, सुध न धणी इस्क । सुध न अस्सां लाडजी, केहडा पारे हक || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -29
- सुध न हुती हक साहेबी, ना सुध इलम वाहेदत । सुध ना हुज्जत निसबत, सो सुध दई जुबां खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -60

- सुध नहीं दिल साफ की, ना कछु सब्द पेहेचान । ना सुध छल ना वतन, कहें हम मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -28
- सुध ना उतरने पुल-सरात, ना सुध सरा तरीकत । ना पेहेचान हकीकत की, ना पेहेचान हक मारफत || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -39
- सुध ना रोजे रमजान की, ना चांद सुरज पेहेचान । करें सरीकी गिरो रबानी, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -47
- सुध नाहीं दुख सुख की, ना सुध विरह मिलाप । ना सुध बुजरक अर्स की, खबर न खावंद आप || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -47
- सुध नाहीं निराकार की, और सुध नाहीं सुन । सुध ना सरूप काल की, ना सुध भई निरंजन || ग्रं - किरन्तन, प्र -65, चौ -3
- सुध नाहीं फरिस्तन की, ना पेहेचान रूहन । ना पेहेचान मुतकी की, ना पेहेचान मोमिन || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -38
- सुध बुध आई साथ में, सुरता फिरी सबन । कोई आगे पीछे अव्वल, सबे हुए चेतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -92, चौ -14
- सुध महूरत ले कूच किया, साइत देखी अति सारी । अब दौड़ सको सो दौड़ियो, न रहे दौड़ पकड़ी हमारी || ग्रं - किरन्तन, प्र -88, चौ -2
- सुध सबे पाइए सब्दों से, जो होवे मूल सगाई । खिन एक बिलम न कीजे तब तो, लीजे जीव जगाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -5, चौ -9
- सुध सरीर विसरी गई, विसरी गया घर । कीडी कुंजर गली गई, अचरज या पर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -132
- सुध सीधी रसूलें दई, पर समझे नहीं चंडाल । तिन अंग आग जो धखहीं, हाए हाए झंपे न क्यों ए झाल || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -25
- सुध होए हक कुदरत, और आप चिन्हार । इलम लदुन्नी हक का, खोल देवे सब द्वार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -82
- सुन मेरे जीव कहूं वृतांत, तोको एक देऊं द्रष्टांत । सो तूं सुनियो एकै चित, तोसों कहत हो करके हित || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -1
- सुन सुख बातें अर्स की, क्यों ना होवें हुसियार । जो मोमिन होवे अर्स की, माहें रूहें बारे हजार || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -11
- सुनत कुरबानी मोमिन, होए गए आगे से निरमल । इत एक एक आगे दूसरा, जाने कब जासी हम चल || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -11
- सुंनत जमात इन को कही, गिरो एक तन जुदी न होए । ए हक इलमें बेसक हुए, याकी सरभर करें नारी सोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -8
- सुंनत जमात याको कहे, और कया दीन उमत । महंमद की गिरो मिने, सक न सुभे इत || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -13

- सुंनत जमात राह लेय के, करूं कजा अदल । कहे रसूल जो इत अटके, कहे करों अपनी अकल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -18
- सुनत-जमात जात हक की, ए मुख से कहें हम सोए । कह्या गुनाह बड़ा इन कौल का, तो कह्या जलना याको होए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -12
- सुनते नाम हक अर्स का, तबहीं अरवा उड़ जात । हाए हाए ए बल देख्या हुकम का, अजूं एही करावे बात || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -144
- सुनते पुकार धनीय की, काल गया दिन ले । पीछे मुख नीचा होएसी, क्यों न कात्या चित दे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -22
- सुनने कान ना दौड़त, मासूक मुख की बात । इस्क न जानों कहां गया, जो था मासूक सों दिन रात || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -8
- सुनहो राजा द्रढ़ कर मन, अंतरगत केहेता वचन । सो केहेने वाला उठके गया, मैं अकेला बैठा रह्या || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -18
- सुनियो अब मोमिनों, ए केहेती हों सब तुम । जब तोड़ी आइयां नहीं, इमाम के कदम || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -1
- सुनियो जो तुम हो ब्रह्मसृष्ट के, जिन आओ मांहें रात जी । इन रात के दुख घने दोहेले, पीछे उड़सी अंधेर प्रभात जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -32
- सुनियो दुनियां आखिरी, भाग बड़े हैं तुम । जो कबूं कानों ना सुनी, सो करो दीदार खसम || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -1
- सुनियो पुकार रे स्यांने संत जनों, जो न दौड़या जाते सत । गए ने अवसर पीछे कहा करोगे, कहां गई करामत || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -11
- सुनियो बानी मोमिनों, दीदार दिया हकें जब । परदा सारा उड़ गया, हुआ उजाला सब || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -2
- सुनियो बानी मोमिनो, हुती जो अगम अकथ । सो बीतक कहूं तुमको, उड़ जासी गफलत || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -1
- सुनियो बानी सुहागनी, दीदार दिया पिउ जब । अंदर परदा उड़ गया, हुआ उजाला सब || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -2
- सुनियो बानी सोहागनी, हुती जो अकथ अगम । सो बीतक कहूँ तुमको, उड़ जासी सब भरम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -1
- सुनियो भीम मकुंदजी, ऊद्धव केसो स्याम । हम पाती पढ़ी महंमद की, सब पाई हकीकत धाम || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -2
- सुनियो साथ कहूं विचार, फल वस्त जो अपनों सार । सो ए देखके आओ वतन, माया अमल से राखो जतन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -1
- सुनियो साथ तुम एह कारन, धनी ल्याए धाम से आनंद अति घन । ज्यों ना रहे माया को लेस, त्यों धनिएं कियो उपदेस || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -19

- सुनो पिया अब मैं कहूं, तुम पूछी सुध मंडल । ए कहूं मैं क्यों कर, छल बल वल अकल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -9
- सुनो पिया अब मैं कहूं, तुम पूछी सुध मंडल । ए कहूं मैं क्यों कर, छल बल वल अकल || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -9
- सुनो भाई संतो कहूं रे महंतो, तुम अखंड मंडल जान पाया । वैष्णव बानी पूछों गुर ग्यानी, ऐसा अंधेर धंधा क्यों ल्याया || ग्रं - किरन्तन, प्र -10, चौ -1
- सुनो महामत रसना रस, और सुनाइयो मोमिन । जो हुकम कहे तोहे हेत कर, हक रसना के गुन || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -67
- सुनो मोमिनों इस्क की, नेक और भी देऊं खबर । अर्स आसिक मासूक की, ज्यों औरों भी आवे नजर || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -140
- सुनो मोमिनों एक ए गुन, एक अंग ऊपर के कान । अंग अपार कहे कई बातून, अजूं जुदे भूखन सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -29
- सुनो मोमिनों बेवरा, ए जो आपन देख्या खेल । जो तीनों देखे आलम, उतर के माहें लेल || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -48
- सुनो रूहें अर्स की, जो अपनी बीतक । जो हमसे लटी भई, ऐसी करे न कोई मुतलक || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -1
- सुनो रे सतके बनजारे, एक बात कहूं समझाई । या फंद बाजी रची माया की, तामें सब कोई रह्या उरझाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -5, चौ -1
- सुनो लखमीजी एह वचन, एह बात प्रकासो जिन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -24
- सुनो लखमीजी कहूं तुमको, पेहेले सिवे पूछा हमको । इन लीला की खबर मुझे नांहें, सो क्यों कहूं मैं इन जुबांए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -25
- सुनो वचन ब्रह्मसृष्टी जाग, इंद्रावती कहे चरनों लाग । ए बानी मेरे धनिएँ कही, फेर फेर तुमको कृपा भई || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -10
- सुनो साथ मेरे सिरदार, वचन कहूं सो ग्रहो निरधार । एते गुन आपनसों कर, बैठे आपन में माया देह धर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -1
- सुनों साथजी सिरदारो, ए कीजो वचन विचार । देखो बाहेर माहे अन्तर, लीजो सार को सार जो सार || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -1
- सुनो सैयां कहे इंद्रावती, तुम आईयां उमेद कर । अब समझो क्यों न पुकारते, क्यों रहियां नींद पकर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -15
- सुन्दर दरवाजा नूर का, रोसन झरोखे गिरदवाए । नव भोम बिराजत, मोहोल रोसन रहे छिटकाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -17, चौ -6
- सुन्दर मुख मासूक का, और अंग सबे सुन्दर । सो क्यों छूटे आसिक से, जब चुभे हैड़े अन्दर || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -3

- सुन्दर ललित कोमल, देख देख सब अंग । तेज जोत नूर सब चढ़ते, सब देखत रस भरे रंग || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -77
- सुन्दर लांक सोहामणो, वांसो दीसे साडीमां अंग । वेंण तले कंचुकीनी कसो, जुगते सोहे बंध || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -25
- सुन्दर सख्प छबि देख के, फेर फेर जाऊं बल बल । जो रूह होवे अर्स की, सो याही में जाए रल गल || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -80
- सुन्दर सख्प सोभा लिए, सिनगार वस्तर भूखन । रस रंग छबि सलूकी, चाहे रूह के अन्तस्करन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -9
- सुन्दर सख्प स्याम स्यामा जी को, फेर फेर जाऊं बलिहारी । इन दोऊ सरूपों दया करी, मुझ पर नजर तुमारी || ग्रं - किरन्तन, प्र -119, चौ -2
- सुन्दर सख्प स्यामाजीय को, अर्स अखंड सिनगार । रूह मुख निरख्यो चाहत, उर पर लटकत हार || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -76
- सुन्दर सरूप सुभग अति उत्तम, मुझ पर कृपा तुमारी । कोट बेर ललिता कुरबानी, मेरे धनी जी कायम सुखकारी || ग्रं - किरन्तन, प्र -119, चौ -5
- सुन्दर सलूकी छब सोभित, रंग रस प्यार भरे । सोई मोमिन अर्स दिल, जित इन हके कदम धरे || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -20
- सुन्दर साथ बैठा अचरज सों, जानों एकै अंग हिल मिल । अंग अंग सब के मिल रहे, सब सोभित हैं एक दिल || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -1
- सुन्दर साथ भराए के, बैठियां सरूप एक होए । यों सबे हिल मिल रहीं, सरूप कहे न जावें दोए || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -5
- सुन्दर साथजी ए गुन देखो रे, जो मेरे धनिएँ किए अलेखे ।टेका। क्यों ए न छोड़े माया हम को, हम भी छोड़ी न जाए। अरस-परस यों भई बज्र में, सो मेरे धनिएँ दई छुटकाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -81, चौ -1
- सुन्दरता इन कदम की, सो चुभ रही रूह के दिल । अरस-परस ऐसी हुई, एक निमख न सके निकल || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -50
- सुन्दरता इन मुख की, सब्द न पोहोंचे कोए । नूर को नूर जो नूर है, किन मुख कहूं रंग सोए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -36
- सुन्दरबाइऐं याको कह्या, गोविंद भेड़ा मंडल । सोई कलजुग दज्जाल, व्याप रह्या सकल || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -50
- सुन्दरबाई कहे धाम से, मैं साथ बुलावन आई । धाम से ल्याई तारतम, करी ब्रह्मांड में रोसनाई || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -2
- सुन्दरबाईऐं देखिया, दिल के दीदों मांहें । बृज रास और धाम की, पर जागनी की सुध नांहें || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -16

- सुन्दरी वल्लभ बंने, करे इछा मन गमे । रीस तो कोए न खमे, नीच तो भाखे न नमे, बोले बल तन || ग्रं - रास, प्र -13, चौ -7
- सुन्य की विध केती कहूं, ए इंड जाके आधार । नेत नेत केहेके फिरे, निगम को अगम अपार || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -41
- सुन्य चाही तिन सुन्य दई, भिस्त चाही तिन भिस्त । नूर चाह्या तिन नूर दिया, यों पाई अपनी किस्त || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -77
- सुन्य जोयूं घणूं श्रम करी, त्यारे नाम धराव्या निगम । सनंध न लाधी सुन्य तणी, त्यारे कहीनें वल्या अगम || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -19
- सुन्य निरगुन निरंजन, देखे वैकुंठ निराकार । अछर पार अछरातीत, प्रेम प्रकास्यो पार के पार || ग्रं - किरन्तन, प्र -53, चौ -9
- सुन्य निराकार निरंजन, तिनके पार के पार । बानी गाऊं तित पोहोंच के, इन चरनों बुध बलिहार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -14
- सुन्य निराकार पार को, खोज खोज रहे कई हार । बोहोतों बहुबिध ढूंढ्या, पर किया न किने निरधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -4
- सुन्य मण्डल सुध जो जो मारा संमंधी, आ इंडू जेहेने आधार । नेत नेत कही ने निगम वलिया, निगम ने अगम अपार || ग्रं - किरन्तन, प्र -69, चौ -1
- सुपन उड़े जब मोमिनों, उठ बैठे अर्स वजूद । कहे खासे बंदे दरगाही रूहें, कदमों हमेसा मौजूद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -85
- सुपन उड़े जब मोमिनों, उठ बैठे अर्स वजूद । खासलखास बंदे नजीकी, ए कदमों हमेसा मौजूद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -30
- सुपन की सृष्ट वैराट सुपन का, झूठे साँच वैंपाया । असत आपे सो क्यों सत को पेखे, इन पर पेड़ न पाया || ग्रं - किरन्तन, प्र -2, चौ -4
- सुपन त्यों का त्यों खड़ा, लिए नींद वजूद । अर्स मता सब देख्या बका, देह झूठी इन नाबूद || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -18
- सुपन बुध अटकल सों, वेद कतेब खोजे जिन । मगज न पाया माहें का, बांधे माएने बारे तिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -2, चौ -5
- सुपन बुध बैकुंठ लो, या निरंजन निराकार । सो क्यों सुन्य को उलंघ के, सखी मेरी क्यों कर लेवे पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -2, चौ -4
- सुपन भागे सुख केम थाय, माया केम जोवाय । घर तणो सुख जोईए, निद्रा उडीने जाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -90
- सुपन भागे सुख क्यों होए, खेल क्यों देखाए । जब सुख वतन लीजिए, नींद उड़के जाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -108
- सुपन मांहें सुख साख्यात लेवू, ते निद्रामा केम लेवाए। जागी अखंड सुख ओलखिए, आ सुपन लगाडिए बली तांहें || ग्रं - किरन्तन, प्र -68, चौ -6

- सुपन मूल तो नींद जो भई, जब जाग उठे तब कछुए नहीं । याको पेड़ कछू ना रह्यो लगार, कथुए के पांउ का तो मैं कह्या आकार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -35, चौ -10
- सुपन मूलतां निद्रा थई, जुए जागीतां कांइए नहीं । एनूं मूलता न रह्यो लगार, अने कथुवाना पगनो तो कयो आकार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -35, चौ -10
- सुपन सत सरूप को, तुम कहोगे क्यों कर होए । ए बिध सब जाहेर करूं, ज्यों रहे न धोखा कोए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -28
- सुपन सरूप जिन बिध के, पेहेनत हैं भूखन । सो तो अर्स में है नहीं, जो सिनगार करें बिध इन || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -32
- सुपन होत दिल भीतर, रूह कहूं ना निकसत । ए चौदे तबक जरा नहीं, ए तो दिल में बड़ा देखत || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -80
- सुपन होय निद्रातणो, बहू ब्रह्मांड अलेखे । जेणी खिणे आंख उघाडिए, त्यारे कांई न देखे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -119
- सुपन होवे नींद थे, कई इंड अलेखे । जिन खिन आंखां खोलिए, तब कछुए ना देखे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -141
- सुपनना जे जीव पोते, ते निद्रा ओलाडे केम । वासना निद्रा उलंघी, अछर पामे एम || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -110
- सुपने कदम पकड़ के, तापर अपना आप वारत । हक करें सुरखरू इनको, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -8
- सुपने नगरी देखिए, तिन सब में एक रस । आप होवे सब में, पांचों तत्व दसो दिस || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -23
- सुपने में भी खिन ना छोड़ें, तो क्यों छोड़ें साख्यात जी। दया देखो पिउजी की हिरदे मांहें, विध विध की विख्यात जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -3
- सुपने में मनोरथ किए, तो तित भी पिउजी साथ जी । सुंदरबाई ले आवेस धनी को, न छोड़े अपना हाथ जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -5
- सुपने सूरत पूरन, रूह हिरदे आई सुभान । तब निज सूरत रूह की, उठ बैठी परवान || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -69
- सुपेत जिमी नूर झलके, नूर आकास लग भरपूर । नूर सामी आकास का, क्यों कहूं जोर जंग नूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -7
- सुपेत हुए स्याही गई, स्याही अंदर बढ़ती जान । काट गला लोहू पीवहीं, कहें हम मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -40
- सुबह सेती अरफे का दिन, आखिर तांई असर इन । बांधी उमेद बड़ी आगू आवन, भई तीनों दिन निमाज पूरन || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -19, चौ -4

- सुबुध निकट न आवहीं, चले बेहेर दृष्ट । आतम दृष्ट न लेवहीं, तो कही सुपन की सृष्ट || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -8
- सुमार कहे भी ना बने, दिल में न आवे बिना सुमार । ता) मुस्किल दोऊ पड़ी, पड्या दिल मांहें विचार || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -69
- सुर असुर अदयाप के, करत लड़ाई दोए । ए द्वेष साहेब बिना, मेट ना सके कोए || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -86
- सुर असुर ब्रह्मांड में, मिल कर गावसी ए सुख । इन लीला को जो आनंद, वरन्यो न जाए या मुख || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -28
- सुर असुर मांहें फरे, पसु पंखी मनख । मछ कछ वनराय फरे, फरे जीव ने जंत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -29
- सुर असुर सबों को ए पति, सब पर एकै दया । देत दीदार सबन को सांई, जिनहूं जैसा चाया || ग्रं - किरन्तन, प्र -59, चौ -7
- सुर ने केहेलाए रे सेवा करे असुर की, जो दारूवाए उड़ावे क्योहर । हिंदू नाम रे सैन्या तिनकी होए खड़ी, ऐसा कुलिऐं किया रे केहेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -14
- सुरत उनों की हम में, ए जुदे जुदे हुए जो हम । ए जो बातें करें हम सुपन में, सो करावत हक हुकम || ग्रं - सागर, प्र -3, चौ -4
- सुरत एकै राखिए, मूल मिलावे माहें । स्याम स्यामाजी साथजी, तले भोम बैठे हैं जाहें || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -3
- सुरत दाएँ बाएँ भान, सिर आणू धरिया आन । खड़ा रहे दोऊ हाथ पकर, सो सके हजूर बातां कर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -12
- सुरत न वाकी छल में, वाही तरफ उजास । प्रेम में मगन भए, और होए गयो सब नास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -44
- सुरत न वाकी छल में, वाही तरफ उजास । प्रेम में मगन भए, ताए होए गयो सब नास || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -56
- सुरत विष्णु की चत्रभुज जोए, दियो दरसन वसुदेव को सोए । पीछे फिरे केहेके हकीकत, अब दोए भुजा की कहूं विगत || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -22
- सुरता तीनों ठौर की, इत आई देह धर । ए तीनों रोसन नासूत में, किया बेवरा इमामें आखिर || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -3
- सुरिता करूं धरके उनईस, पत गुन ग्रहूं धरके बीस । अंत करूं धरके इकैस, मध करूं गुन दोए धर बीस || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -21
- सुरिया पर ला मकान है, तिन पर नूर अर्स । अर्स पर अर्स अजीम, पोहोंचे मोमिन इत सरस || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -18
- सुवर सूरत हरामखोर कहे, जो कबूं हलाल के ढिग ना गए । गधे सूरत कहे हरामकार, जिन के बुरे फैल रोजगार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -24

SRJN

- सुस्त हक के जात की, सिफत करूं मुख किन । जुबां न पोहोंचे जरे लग, तो कैसा सब्द कहूं इन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -54
- सूं कहूं वननी जोत, पत्र फूल झलहलोत । वृंदावन उदयोत, सामग्री समेत री || ग्रं - रास, प्र -22, चौ -4
- सू जाणे हदना जीवडा, बेहदनी वाते । मांहें रमे ते रामत रातडी, आंहीं उठियां प्रभाते || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -38
- सूच्छम सरूप ने उनमद अंगे, केणी पेरे ए वरणवाय । मारी बुध सारूं हूं वरणवू, इंद्रावती लागे पाय || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -68
- सूतरवारियूं सुहागण्यूं, हारीन कर खणी । हिक डिंनी स्याबासी जेडिए, व्यो मान लधाऊं धणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -13
- सूतवाली सोहागनी, तिन सोभा पाई घनी । सैयां भी कहे धंन धंन, और दियो मान धनी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -15
- सूता होए सो जागियो, जाग्या सो बैठा होए। बैठा ठाढ़ा होइयो, ठाढ़ा पांउ भरे आगे सोए || ग्रं - किरन्तन, प्र -86, चौ -18
- सूथी वाट जाणी संजमपुरी, कां सहुए उजाणां जाओ। वेद पुराण तमें सांभली, एम रूदे फूटा कां थाओ || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -29
- सूद खाने वाले हुए अंधे, उसी बैंच से दोजख फंदे । न किया सिजदा न सुनी पुकार, सो हुए बेहेरे पड़े दोजख मार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -22, चौ -25
- सूने रिदे दीसे सह कोई, सुध बुध नहीं विचार । देखी कही रे दोख जमदूत ना, ए कोहेडा तणां अंधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -9
- सूर ऊग्या तब जानिए, ए रोसन हुआ अर्स हक । दुनियां सब के अंग में, काहूं जरा न रही सक || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -61
- सूर ऊग्या मारफत का, महंमद मेंहेंदी दिल । नूर अंधेर जुदे हुए, जो रहे थे रात के मिल || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -59
- सूर जैसे पतित कहावे, और की सोभा आप देवे । ओ अंधा राँक गरीब साध जो, सो क्या रे पतीती लेवे || ग्रं - किरन्तन, प्र -15, चौ -5
- सूर तोहेजा घणूज सुहामणां, जे तो डिंना रे डंझ । सुरेनी घणूं सुखाईस, पेई पचारे हाणें मंझ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -8, चौ -9
- सूर तोहेजा हेडा सुखाला, त तो सुखें हूंदो केहेडो सुख । पण मूं न सुजातां मूजा सिपरी, आऊं झूरां तेहेजे डुख || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -8, चौ -10
- सूर बड़े इन जहान में, जिन किए सामें बल । ताबे अपने कर लिए, बाए गले सांकल || ग्रं - सनंध, प्र -31, चौ -13
- सूर बाजत असराफील, क्यों सुने दिल कान बिगर । ओतो ले ले माएने बातून, निसान धरे कौल पर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -23

- सूर ससि कई कोट कहूं, नूर तेज जोत प्रकास । ए सब्द सारे मोहलों, और मोह को तो है नास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -38
- सूरज ऊग्या मगरख दिलों, कह्या रोसन नाही तित । तो अक्स सूरज की अंधेरी, सो गया ईमान रही जुलमत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -10, चौ -2
- सूरज ऊग्या मगरख दिलों, होसी जाहेर दाभा जिमी से । अजूं देखें नहीं दज्जाल को, जो जाहेर हुआ सबमें || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -21
- सूरत आतेना-कलकौसर, लिखी आम सिपारे । सो आए देखो तुम महंमदी, खोले नूर पार द्वारे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -17
- सूरत केहेते हक की, आगू रूह मोमिन । हाए हाए रूह मुरग ना उड़या, बरनन करते अर्स तन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -84
- सूरत सकल साथ की, मुख कोमल सुन्दर गौर । ए छबि हिरदे तो फबे, जो होवे अर्स सहूर || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -15
- सूरातन सखियन का, मुख थे कयो न जाए । महामत कहें सो समया, निपट निकट पोहोंच्या आए || ग्रं - किरन्तन, प्र -90, चौ -27
- सृष्ट ईश्वरी कही अंकूरी, औरों अंकूर दिए कई। तिन जुदा जुदा ठौर नेहेचल, कृपा अंकूर से भई || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -17
- से इख सह्या असां रांदमें, तांजे सेई डिए आखिर । से पण चाडियां सिर मथे, त सेहेंदो हियो निखर || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -29
- से कायम सभे थेयां, कूडा मोहोरा जे । बडी वडाइयूं डिनिए, असां हथ कराए || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -21
- से की विचार न कस्यो, वडो आंजो इस्क । मासूक केयां रूहन के, को न भजो असांजी सक || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -24
- से बस न्हाए महजे, जे की करिए से तूं । जे की जाणो से कस्यो, मूं में रही न मूं || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -44
- से वेण तूं को विसारिए भंडा, जे पिरी चेया तोके पाण । जे वेण विचारिए हिकडो, त हंद न छडिए निरवांण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -15, चौ -10
- सेई सजण सेई गालड्यू, सेई कास्यूं करीन । पांण जो काजे पिरी पाहिंजा, पाणी अखियें भरीन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -2
- सेई सिखामण डियन सिपरी, ताणीन घर मणे । पांण पाहियूं की ओसरूं, वलहो आव्यो वरी करे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -3
- सेज्या आए श्री जुगल किसोर, तब दिन हुआ दो पोहोर । सैयां बैठी जुदे जुदे टोले, करें रेहेस बातें दिल खोलें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -120
- सेज्या सबन के सिनगार, हिरदे लीजो कर निरधार । सब जोगवाई है पूरन, कमी नाहीं काहू में किन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -71

- सेज्या सिनगार के जो भवन, दोए दोए नव खण्ड सबन । दूजी भोम किनारे बाएं हाथ, कबूं कबूं सिनगार करें इत साथ || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -75
- सेठे तमने सारी सनंधे, सोंप्यूं छे धन सार । अनेक जवेर जतन करी, तमें लाव्या छो आणी वार || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -2
- सेत जामा अंग लग रया, मिहीं चूड़ी बनी दोऊ बांहें । दावन क्यों बरनन करूँ, इन अंग की जुबांए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -54
- सेत जिमी सेत पसु पंखी, नूर आकास उज्जल । उज्जल नंग नूर सबे, बिरिख बेल सेत फूल फल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -51
- सेत स्याम ने सणिए सेंदुरिए, कखूवर बंने कोर । नीलो पीलो जांबू गुलालियो, ए सोभा अति जोर || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -12
- सेंथे भी सिर कांगरी, और सिर कांगरी पांन । इन सिर सोभा क्यों कहूं, अलेखे अमान || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -42
- सेर छाती पीठ गीदड़, मुरग गरदन हाथी कान । सिर सींग तीखे आंखें सुअर, ए कह्या मुंह आदमी बिना ईमान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -8, चौ -5
- सेर सरे मके मुलक, आई तेहां पुकार । रह्या ईमान से सतजणां, व्या काफरे मार केयां कुफार || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -17
- सेवक कई समझावहीं, साखी सबे मख केहेन । इन भी खैच छुटी नहीं, ए भी लगे दुख देन || ग्रं - किरन्तन, प्र -63, चौ -12
- सेवता न पामे पार, ए लीला एहनी छे अपार । आगे सेवा कीधी छे घणे, ते जो जो वचन सुकजी तणें || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -17
- सेवा कंठमाला घालू तेह सनंधनी, पोपट करूं नीलडे पांख । प्रेमतणा पांजरा मांहें घाली, हूं थाऊं साख ने द्राख || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -31
- सेवा करत बाई हीरबाई, उछव रसोई जित । अंतरगत तुम नित आरोगो, मैं बल बल जाऊं तित || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -13
- सेवा करे छे बाई हीरबाई, ओछव रसोई जांहें । अंतरगते तमे नित आरोगो, हूं लऊ भामणा घणा घणा तांहे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -13
- सेवा कीजे पेहेचान चित धर, कारन अपने आए फेर । भी अवसर आयो है हाथ, चेतन कर दिए प्राणनाथ || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -3
- सेहेज अन्दर के पाइए, मुख देखे हक सूरत । रस बस एक हो रहीं, जो रूहें मांहें खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -33
- सेहेज सुभाव बंने अमे बलिया, जो करे कोई कोट उपाय । जे अमे वात ग्रहूं जोपे करी, ते केणे नव पाछी थाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -59
- सेहेज सुभाव बने सरखी जोड, मारा जोध सबल तमे ज्वान । जेहेनी गमा तमे थाओ, ते जीते निरवाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -57

- सेहेज सुभाव सब इस्क के, इस्कै की वाहेदत || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -136
- सेहेजल सुख तुमें है सदा, अलप नहीं असुख । तुम सुख को स्वाद लेने, खेल मांग्या ए दुख || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -21
- सेहेजल सुख में झीलते, काहूं दुख न सुनिया नाम जी । सो माया में इत आए के, सुख अखंड देखाया धाम जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -36, चौ -5
- सेहेजल सुखमां झीलतां, दुख न जाणिए कांई जी । दुस्तर जल सुपनमां देखी, हूं जांणी ते घरनी बडाई जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -36, चौ -5
- सेहेजल सुखमां रेहे सदा, अलप नथी असुख । तमें सुखनों स्वाद लेवा ने, मांगी रामत दुख || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -21
- सेहेजे सुभाव दोऊ हम बलिए, कोई करे जो कोट उपाए । पकड़ें बात जो हम सांची, सो लोपी किनहूं न जाए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -59
- सेहेजे सुभाव फिट फिट तुमको, ऐसे सूर सुभट । सांचे तुम हुए मायासों, मोसों मिले कपट || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -55
- सेहेरग से ओडडो, आडो पट न द्वार । उघाड़िए अंख समझजी, डिसंदी न डिसे भरतार || ग्रं - सिंधी, प्र -12, चौ -2
- सेहेरग से नजीक कहे इनको, जाकी असल हक कदम । जो हुआ असल पर हुकम, सोई नकल देत इत दम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -27
- सेहेरग से नजीक हक अर्स, बीच हक इलम देवे बैठाए । ऐसा इलम लदुन्नी, रूहअल्ला ले आए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -117
- सेहेरग से नजीक, आड़ा पट न द्वार । खोली आँखे समझ की, देखती न देखे भरतार || ग्रं - सिंधी, प्र -16, चौ -2
- सेहेरग से हक नजीक, ए खोली ना किन नजर । सो पट उड़ाए जाहेर किए, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -38
- सेहेरग से हक नजीक, कह्या खासलखास मकान । इत हिसाब इत कयामत, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -50
- सेहेरयूं कपरियूं नूर ज्यूं, मिठडा नूर गजन । वसेथ्यू नूर वडरियूं, वीजडियूं नूर खेवन || ग्रं - सिंधी, प्र -2, चौ -16
- सैन्या सहित आए त्रिपुरार, आए ब्रह्मा पढ़त मुख वेद चार । विष्णु बोलत बानी जय जय कार, भई नई रे नवों खंडों आरती || ग्रं - किरन्तन, प्र -56, चौ -7
- सैयां आवत करें झनकार, पाए भूखन भोम ठमकार । झलकतियां रे मलपतियां, रंग रस में चैन करतियां || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -86
- सैयां आवत झीलन को, निकस मन्दिरों द्वार । ए समया कह्यो न जावहीं, सोभा सिफत अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -5

- सैयां दोए चाकले ल्याई, सो तो दोनों दिए बिछाई । श्री राज उतारे वस्तर, पेहेनी पिछोरी कमर पर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -108
- सैयां दौड़ दौड़ के जावें, आरोगने की वस्तां ल्यावें । मेवा अंन ने साक मिठाई, कई विध सामग्री ले आई || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -110
- सैयां दौड़त हैं साम सामी, सब्द रहयो सबों ठौर जामी । कई स्वर उठत भूखन, पड़छंदे परें स्वर तिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -114
- सैयां परसपर करें हाँस, लेवें धनीजी को विविध विलास । घड़ी दो एक तापर भई, लाड़बाई आए यों कही || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -106
- सैयां मिलकर पिउ पासे आवें, झीलने की बात चलावें । श्री राज स्यामाजी उठकर, उतारे हैं वस्तर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -132
- सैयां मेरी सुध लीजियो, जो कोई अहेल किताब । तुम ताले लिख्या नूरतजल्ला, सुनके जागो सिताब || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -1
- सैयां लटकतियां करें चाल, ज्यों धनी मन होत रसाल । सैयां आवत बोलें बानी, संग एक दूजी पे स्यानी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -85
- सैयां सब सिनगार साजती, मिने सूरत पिया की विराजती । ए सोभा इतहीं छाजती, भई नई रे नवों खंडों आरती || ग्रं - किरन्तन, प्र -56, चौ -3
- सैयां सुख निज वतनी, ईश्वरी को सुख और । दुनी भी सुख होसी सदा, आगे कहूंगी तीनों ठौर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -4
- सैयां सुन दौड़ियो, सई मेरी नाहीं बिलम कछु अब । ऐसी खबर दई महंमदें, सैयां सुन दौड़ियो सब || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -2
- सैयां हम धाम चले || ग्रं - किरन्तन, प्र -88, चौ -1
- सैयों को वतन देखावने, उलसत मेरे अंग । करने बात खसम की, मावत नहीं उमंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -16
- सो अग्यारै सदी मिने, होसी जाहेर हकीकत । हादी मोमिन जानसी, हक की इसारत || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -75
- सो अछर अछरातीत के, आवे दरसन नित । तले झरोखे आए के, कर मुजरा घरों फिरत || ग्रं - किरन्तन, प्र -97, चौ -6
- सो अछर मेरे धनी के, नित आवें दरसन । ए लीला इन भांत की, इत होत सदा बरतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -28
- सो अफताली महंमद का भया, जो आदम ऐसा बुजरक कह्या । ए पैदा हुआ कारन महंमद, एह रसूल की कही हद || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -58
- सो अर्स कह्या दिल मोमिन, सो काहे न करे बरनन । जिन दिल में ए न्यामत, सो मुतलक अर्स रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -7

- सो आए अब रूह मोमिन, जाको अर्स वतन । ए फुरमान आया इनका, क्यों खुले माएने या बिन || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -54
- सो आए जब इत दिन में, भया नूर रोसन । सिफायत महंमद की, फजर पोहोंची तिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -79
- सो आएके करसी एक रस, मसरक मगरब होसी बस । कोई केहेसी क्या दोऊ होसी एक बेर, तिनका भी कर देऊं निबेर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -26
- सो आठों भिस्त कायम कर, दिए अर्स पट खोल मारफत । तिनमें पुजाए सुख दिए, कर जाहेर हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -62
- सो इत भी होए चले धंन धंन, धाम धनी कहें धंन धंन । साथ में भी धंन धंन हुइयां, याके धंन धंन हुए रात दिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -78, चौ -10
- सो इमाम इत आइया, इन जिमी हिंदुस्तान । सब तलबें याही दिसा, चौदे तबक की जहान || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -27
- सो इमाम जाहेर हुए, ले माएने कुरान । नूर सबों में पसरया, एक दीन हुई सब जहान || ग्रं - सनंध, प्र -20, चौ -55
- सो इमामें इत किए, सब जन के मन बस । होए ना किन इमाम को, इन जुबां ए जस || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -26
- सो इलम खुदाई लदुन्नी, पोहोंच्या चौदे तबक । सो इतथें मेहेर पसरी, सबे हुए बेसक || ग्रं - सागर, प्र -13, चौ -16
- सो इलम रूहअल्ला, ले आया हक का । सेहेरग से नजीक देखाए के, माहें बैठावत बका || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -19
- सो इस्क इलम सुख सागर, वास्ते आए निसबत । इन निसबत के तौल कोई, ल्याऊं कहां से हक न्यामत || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -17
- सो ईमान तोलो चल्या, एहिया आया बखत जिन । तब मजाजी दुनी का, ईमान न रह्या किन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -107
- सो ईसा कह्या आखिरी, ए जो करत आखिर के काम । करनी माफक सब को, देसी फल मुसाफ तमाम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -65
- सो उतरी अर्स अजीम से, रूहें बारे हजार । साथ सेवक मलायक, पावे दुनियां सब दीदार || ग्रं - किरन्तन, प्र -71, चौ -2
- सो ए इलम जब हक का, देत अर्स की याद । तुमें बेसक गुजरे हाल की, क्यों न आवे कायम स्वाद || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -66
- सो ए करता हों मैं तफसीर, जुदे कर देऊं खीर और नीर । पेहेले था बेहेरूल्हैवान, तब तो तिन में था फुरमान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -10
- सो ए करी जाहेर, रसूलें इत आए । सोई रूहअल्ला सुकन, ल्याए मोमिनों बताए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -33

- सो ए करें तुमारी बंदगी, एही इनों जिकर । इनों सिर हक एक तुम हीं, और कोई ना वाहेदत बिगर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -91
- सो ए कौल माने नहीं, हिंदू मुसलमान । महंमद कहे जाहेर, पर ए ल्यावें ना ईमान || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -16
- सो ए खिताब रूहअल्ला का, या महंमद सिर खिताब । या तो सिर इमाम के, जो आखिर खोलसी किताब || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -25
- सो ए धनी अछरातीत, इत आए मुझ कारन । अंग दियो मोहे जान अंगना, दिल सनमंध आन वतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -97, चौ -7
- सो ए धस्या इत तखत, जानों नजर ना छोडूं खिन । पल न चाहे बीच आवने, ऐसी सोभा तखत बीच इन || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -115
- सो ए ना जननेवाली कही, तलब बेटे की राखे सही । बूढ़ा ईसा आवाज करे, आस्ती आवाज कोई ना दिल धरे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -15, चौ -3
- सो ए निसान क्यों देखिए, ऊपर जाहेरी नजर । जाए ना इलम हक का, सो देखें क्यों कर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -10
- सो ए पट सब खोल के, दे साहेदी किताब । कया तीसरा तकरार, ए जो खेल दुख का अजाब || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -43
- सो ए फूलबाग की, सोभा इन मुख कही न जाए । नूर जोत फूल पातन की, जानो अंबर में न समाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -43
- सो ए बड़ाई सब उमत की, जो कही महंमद की आखिर । वह खावंद कहे खेल के, ए खेल के कबूतर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -62
- सो ए भई इत भुलवनी, भए द्वार चौबीस हजार । एक दूजे में गिनात है, खेलें हँसें रूहें अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -17
- सो ए रोसन जहूर निसान, खूबी नूर बिलंद गलतान । एह बात जिनोंने पाई, बीच तेहेकीक के फुरमाई || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -14
- सो ए लिख्या कुरान में, बाईसमें सिपारे । लिखियां आयतां जंजीरां, बयान न्यारे न्यारे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -35
- सो ए लेके आए धनी, दया आपन ऊपर है घनी । जाने देखसी माया न्यारे भए, तारतम के उजियारे रहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -17
- सो ए वचन मोहे सालहीं, कठिन तुमको जो कहे । सोहागनियों को निद्रा मिने, मूल घर विसर गए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -6
- सो ए वतन रूह मोमिनों, जित पोहोंच्या न जबराईल । एक महंमद संग आखिरी, बीच पोहोंच्या असराफील || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -19
- सो ए सुकन दिए लदुन्नी, फुरमान याही से खुले । और न कोई खोल सके, जो चौदे तबक मिले || ग्रं - किरन्तन, प्र -97, चौ -15

- सो एक तरंग ना केहे सकों, एक तरंगे कई किरन । जो देखू एक किरन को, तो पार न पाऊं गुन गिन || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -34
- सो एहिया ईसे पर, पेहेले ल्याया ईमान । कायम किया तिन दीन को, ए देखो दिल से बयान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -108
- सो कई पातसाही जिमी पर, करें पातसाही बीच नासूत । कई तिन पर इंद्र ब्रहमा फरिस्ते, तापर पातसाह मांहे मलकूत || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -136
- सो कयामत पर बांधे निसान, एही सरत जब खुल्या कुरान । अमेत सालून में एह बात, बिध बिध कर लिखी विख्यात || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -16
- सो कराई मासूकें हम पे, सब अर्स बातें सुपने । सब गुजरी जो हक हादी रूहों, सो सब करत हम आप में || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -15
- सो करें जाहेर हक की, कई भांतो सिफत । फानी छल झूठा नजरों, हुकमें देखत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -52
- सो कहां है हमारा खसम, कैसा खेल कौन हम । रसूल देसी तुमें साहेदियां, पर मानोगे न तुम || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -21
- सो काफर उड़ाए दिया, जिन मारी थी सबकी राह । सो जानिए हता नहीं, जब आया हक पातसाह || ग्रं - सनंध, प्र -33, चौ -11
- सो काफर पड़े मांहें दोजख, आखिर को जो ल्यावे सक । जो मोमिन हैं खबरदार, डरते रहें परवरदिगार || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -3, चौ -6
- सो किरने लगे जाए ऊपर, और द्वार दिवालों थंभन । आवें उतथें किरने सामियां, माहों माहें जंग करें रोसन || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -29
- सो कुंजी भेजी हाथ रूहअल्ला, दई महंमद हकी सूरत । कया आखिर आवसी अर्स रूहें, खोलो तिन बीच मारफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -5
- सो कुंजी साहेब ने, मेरे हाथ दई । जिन बिध ताला खोलिए, सो सब हकीकत कही || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -12
- सो कुंजी स्यामाजी दई, हकीकत वतन । माएने खुले सब तिन से, जो छिपे हुते बातन || ग्रं - किरन्तन, प्र -104, चौ -7
- सो कुन्जी दई मुझ को, और खोलने की कल । तिनसे ताले सब खुले, पाई आखिर अब्बल असल || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -51
- सो कुन्जी दई हाथ मेरे, कोई खोले न मुझ बिन । सक्त नहीं त्रैलोक को, न कछू सक्त त्रैगुन || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -55
- सो कुरान मैं देखिया, सब पाइयां इसारत । हाथ मुद्दा सब आइया, हक पेड़ जानी निसबत || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -67
- सो कुलफ कया फरामोस का, कया गुनाह रूहों का दिल । खेल मांग्या फरामोस का, कर एक दिल सब मिल || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -71

- सो केहेती हूं प्रगट कर, पट टालूं आड़ा अंतर । तेज तारतम जोत प्रकास, करूं अंधेरी सबको नास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -5
- सो कैसा मोमिन, अर्स की अरवाहें । हम कदमों बीच अर्स के, क्यों जासी भुलाए || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -46
- सो क्यों भूलें ए सैयां, जो आगू होवें खबरदार । खेल देखावें चेतन कर, सो भूलें नहीं निरधार || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -46
- सो खसमें खोलाए मुझपे, यों कर किया हुकम । कहे तूं आगे रूहें फरिस्ते, जिन प्यारे हक कदम || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -32
- सो खासी गिरो महंमद की, तामें ए बात होत निस दिन । मुख छोटे बड़े एही सुकन, और बोले न बका बिन || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -39
- सो खिताब खोलन का, हुकम हादी पर । जो औलाद आदम हवा की, सो खोले क्यों कर || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -7
- सो खुदी काढी जड़ मूल से, हुए जाहेर हक इलम । सक सुभे कछू ना रही, हुई सब में एक रसम || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -72
- सो खुसबोए सब लेत है, रस प्रेमल सुगन्ध सार । सब भोग विवेकें लेत है, हक नासिका भोगतार || ग्रं - सिनगार, प्र -15, चौ -8
- सो खूब खेलौने देखिए, इनों निमूना कोई नाहें । सिफत इनों ना केहे सकों, मेरी इन जुबाएँ || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -74
- सो खूबियां भी अर्स की, जाके कायम सुख अखंड । सो कायम सुख इत क्यों कहूं, ए जो जुबां इन पिंड || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -32
- सो खेल मांगत हो, वास्ते इस्क देखन । ए खेल है इन भांत का, उत इस्क न जरा किन || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -18
- सो खोले आपे अपनी, हकीकत फरमान । खोले परदे नूर पार के, हुई अर्स पेहेचान || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -79
- सो गाए गाए हुआ दिल सखत, मूल इस्क गया भुलाए । मन चित्त बुध अहंकारे, गुझ अर्स कह्या बनाए || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -52
- सो गाए विरहा न आइया, प्रेम पड़्या बीच चतुराए । हाँसी कराई हुकमें, वचनों प्यार लगाए || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -51
- सो गुझ हक हादीय का, दिया खेल में बीच मोमिन । तो दिल अर्स किया हकें, जो अर्स अजीम में इनों तन || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -42
- सो गून देखे में नजरों, जिनको नहीं समार । तो भी पेहेचान न हुई, ना छूटी नींद विकार || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -53
- सो घर कह्या दुनी का, जो फरमाने कह्या मुरदार । तो आदम काढ़्या भिस्त से, ए दादा आदमियों सिरदार || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -13

SPJIN

- सो चारों जुदी जुदी, उपरा ऊपर भी चार । सोभा लेत और गरजत, सो सोले भई सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -11
- सो चींटी सहूर दे समझाई, धनिएँ आप जैसे कर लिए। कर सनमंध अछरातीत सों, ले धनी धाम के किए || ग्रं - किरन्तन, प्र -81, चौ -9
- सो जबराईल जबरूत से, आगे लाहूत में न जवाए । नूरतजल्ला की तजल्ली , पर जलावत ताए || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -54
- सो जबराईल जबरूत से, लाहूत न पोहोंच्या क्यों ए कर । हिमायत लई महंमद की, तो भी कहे जलें मेरे पर || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -53
- सो जरे जरे जाग्रत की, सब बातें होत बेसक । नींद रेहेत अचरज सों, आए दिल में अर्स मुतलक || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -14
- सो जवेर आगू रूहन के, कैसा देखावें नूर । ज्यों सितारे रोसनी, बल क्या करे आ सूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -36
- सो जाने सुध पार की, हक मिलिया जिन । किरना सूरज ना अंतर, यों मासूक आसिक तन || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -45
- सो जाहेरी सब जानत, जो ले खड़े सरीयत । और मुदा बिलंदी गुझ रख्या, सो खोलसी बीच आखिरत || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -17
- सो झांई जल लेहेरां लेवहीं, तिनसे लेहेरां लेवे आसमान । कई रंग लेहेरें तिनकी, एक दूजी न सके भान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -25
- सो ढूंढ़ों प्यारी उमत, मेरे हक जात निसबत । जो रूहें भूली वतन, ताए देऊँ हक बका न्यामत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -13
- सो तारतम केहे करी रोसन, और देवाई साख सास्त्रों वचन । हम मांग लई जो माया, सो पेहेचान के खेल देखाया || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -4
- सो ताला इन मुसाफ का, क्यों खुले ईमान बिन । खोले ताला फरेब क्यों रहे, जब उग्या बका अर्स दिन || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -65
- सो तिनका मिटे सतगुर के संग, तब पारब्रहम प्रकासे अखंड । सतगुरजी के चरन पसाए, सब्दों बड़ी मत समझाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -3, चौ -6
- सो तीनों अब जुदे होएसी, है हाल तुमारा क्यों कर । दिन एते जान्या त्यों किया, अब आए पोहोंची आखिर || ग्रं - किरन्तन, प्र -105, चौ -3
- सो तीनों लेवें नसीहत, पर छूटे नहीं मजल । जैसा होवे दरखत, तिन तैसा होवे फल || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -108
- सो तुम अजूं न समझे, मैं कर लिख्या मासूक । ए सुकन सुन तुम मोमिनों, हाए हाए हुए नहीं टूक टूक || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -15
- सो तुमें याद आवसी, ओ में करसी याद । तुमें पूजें जिमी बका मिने, अजूं इनका केता ल्योगे स्वाद || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -130

- सो तेता ही बोलिया, जो गया जहां लों चल । अपने अपने मुख से, जाहेर करें मजल || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -12
- सो तेहेकीक तुम कर दिया, जो खेल नूर से उपजत । इलम खुदाई हुकम बिना, कहूं खाली न पाइए कित || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -7
- सो तो आया हक का, लदुन्नी इलम । लिख्या दिल अर्स पर, मोमिनों बिना कलम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -34
- सो तो जिद कर जुदे हुए, फिरके जो बहत्तर । ताको नारी आयतों हदीसों, लिख्या है यों कर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -96
- सो तो तबहीं सुन के, होसी खबरदार । मोमिन इत क्यों भूलहीं, सुन संदेसे परवरदिगार || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -12
- सो तो दिया मैं तुम को, सो खुले ना बिना तुम । जो मेरी सुध दयो औरों को, तित चले तुमारा हुकम || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -29
- सो तो प्रेमी छिप रहे, वाको होए गयो सब तुच्छ । ओ खेले पिया के प्रेम में, और भूल गए सब कुछ || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -2, चौ -43
- सो तो प्रेमी छिप रहे, वाको होए गयो सब तुच्छ । खेले पिया के प्रेम में, और भूल गए सब कुछ || ग्रं - सनंध, प्र -5, चौ -55
- सो तो सब मैं देख्या द्रष्ट, पर बैठा जीव होए कोई दुष्ट । न तो क्यों सहिए धनी को बिछोह, जो जीव कछू जाग्रत होए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -21
- सो दन्त अधुर लांक छोड़ के, जाए न सकों लग गाल । सो गाल लाल मुख छोड़ के, आगूं नजर न सके चाल || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -113
- सो दिया लदुन्नी तुम को, तुम खोलो मुकता हरफ । मैं अर्स किया दिल मोमिन, जाकी पाई न किन तरफ || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -65
- सो दुनी को है नहीं, जासों उड़ पोहोंचे पार । ईमान इस्क जो होवहीं, तो क्यों रहे बीच मुरदार || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -75
- सो दूर राह आसमान लग, बीच ऐसे सात आसमान । सो भी राह फरिस्तन की, ऊपर जुलमत ला मकान || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -82
- सो देख के ना हुई चेतन, मूढ़मती अभागी । अब लई सिखापन साथ की, महामत कहे पाउं लागी || ग्रं - किरन्तन, प्र -101, चौ -11
- सो देवाई हादिएँ साहेदी, पुकारे सिरदार । फैल कहे तिनों मुख अपने, दुनी सब हुई ख्वार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -97
- सो धाम वतन मोहे कर दियो, मेरो अछरातीत धनी । ब्रहम सृष्ट मिनें सिरोमन, मैं भई सोहागिनी || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -30
- सो धारें पड़त बीच कुण्ड के, कण्ड पर मोहोल गिरदवाए । दोऊ बाजू छातें दरखत, पीछे मोहोल मिले आए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -16

- सो निध जाहेर इत हई, धंन धंन संसार । धंन धंन खंड भरथ का, धंन धंन नर नार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -28
- सो नूर झण्डा खड़ा कर, इत दिया देखाए । सो ईमान बिना देखे नहीं, पीछे रोसी पछताए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -106
- सो नूर झण्डा खड़ा हुआ, बीच हिंदुस्तान । जित जबराईल ले आइया, न्यामत चारों कुरान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -107
- सो नूर झण्डा बीच हिंद के, किया खड़ा नूर इसलाम । इत आई सब न्यामतें, और आया अल्ला कलाम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -14, चौ -6
- सो नूर नूरजमाल के, दायम आवें दीदार । ए जुबां अर्स अजीम की, क्यों कहे सिफत सुमार || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -11
- सो नूर नूरजमाल के, नित आवें दीदार । तिन हक के वस्तर भूखन, ए मोमिन जाने विचार || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -189
- सो नूर नूरतजल्लाई के, दायम आवे दीदार । इन दरगाह में उमत, रूहें बारे हजार || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -80
- सो नूर सब इत आइया, इन जिमी मसरक । तब वह जिमी दाभा भई, जैसी पेहेले थी बिना हक || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -36
- सो नूर सरूप आवें नित, नूर तजल्ला के दीदार । आस पुराई इन की, मेरे ऐसे इन आकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -26
- सो पट बका खोलिया, और बोले न बका बिन । इनों पीठ दई चौदे तबकों, करें जाहेर अर्स रोसन || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -41
- सो पढ़े कहें नाम आदमें, जाहेर किए सब पर । तब फरिस्तों किए सिजदे, एक अबलीस बिगर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -29
- सो पढ़े पंडित जुध करे, एक कांने को टुकड़े होए । आपस में जो लड़ मरे, एक मात्र ना छोड़े कोए || ग्रं - सनंध, प्र -17, चौ -14
- सो पढ़े पंडित जुध करें, एक काने को टुकड़े होए। आपसमें जो लड़ मरें, एक मात्र ना छोड़ें कोए || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -12
- सो परत बीचले कुंड में, इत चारों तरफ देहेलान । ए सुख कब हम लेयसी, इन मेले साथ मेहेरबान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -26, चौ -10
- सो परे बन पर झलकार, जोत बन की न देवे हार । इन मंदिरों को जो उजास, सो तो मावत नहीं आकास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -15
- सो पल पल ए रस पीवत, फेर फेर प्याले लेत । ए अमल क्यों उतरे, जा को हक बका सुख देत || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -53
- सो पाइए बातून माएने, उपले आखिर नुकसान । हक इलमें दिन होवे सब सुध, बिन इलम रात हैवान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -51

- सो पाक कहे रूह मोमिन, जिनको तौहीद मदत । सो पीठ देवें दुनीय को, जिनपे मुसाफ मारफत || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -73
- सो पाक मोमिन कहे, जिन लिया हकीकी दीन । सो हक बिना कछू ना रखें, ऐसा इनका आकीन || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -30
- सो पांचों माहें मोहोलात हैं, रंग नंग जुदी जिनस । देख देख पांचों देखिए, एक पे और सरस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -43
- सो पेहेचान अब होएसी, करसी साफ दुनी दिल । किताब याही रसूल की, सुख लेसी सब मिल || ग्रं - सनंध, प्र -27, चौ -22
- सो पेहेचान क्यों कर सके, जो पकड़े पुलसरात । छोड़े न वजूद नासूती, जान बूझ के कटात || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -51
- सो पेहेचान सबों पसराए के, देसी सुख वैराट । लौकिक नाम दोऊ मेट के, करसी नयो ठाट || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -26
- सो पोहोंची सरत सबन की, हुए वेद कतेब रोसन । ए सदी अग्यारहीं बीच में, होसी दोजख भिस्त सबन || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -25
- सो फरमान आप खोल के, करी जाहेर हकीकत । खोले वेद कतेब के गुझ, आई सबों की सरत || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -6
- सो फरमान केहेत है जाहेर, जो उतरे अर्स से । उतरते अरवाहों सों, कौल किया हक ने || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -94
- सो फरमान मेहेरें खोलिया, करी जाहेर मेहेरें आखिरत । मेहेरें समझे मोमिन, करी मेहेरें जाहेर खिलवत || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -34
- सो फरामोसी मोमिन को, हकें दई बनाए । और हक जगावें ऊपर से, बिना इस्क न उठ्यो जाए || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -80
- सो फल सार सुकजीऐं लियो, सींच के अमृत पकव कियो । ए फल सार जो भागवत भयो, ताको सार दसम स्कंध कह्यो || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -5
- सो फेर कह्यो गौपद बछ, यों भवसागर होए गयो तुछ । एता भी ना दृष्टं आया, पर लिखने को नाम धराया || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -26
- सो बकसीस करे सब ए, बदले एक के हजार दे । इनके बराबर ऐसे कर, कोसिस करे खुदाकी राह पर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -11, चौ -6
- सो बड़ा पहाड़ एक नंग का, तिनमें कई मोहोलात । चौड़ा ऊंचा तेज में, क्यों कहूं अर्स की बात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -4
- सो बरनन हुई हक सूरत, जासों महंमदें करी मजकूर । नब्बे हजार हरफ सुने, नूर पार पोहोच हजूर || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -18
- सो बात करे मेहेबूब की, वाको अंग न कोई उरझाए । ज्यों किरने सूरज देखहीं, त्यों त्यों जोत चढ़ाए || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -44

- सो बातें मैं केती कहूं, मैं पाई बेसुमार । पर एक बात न सुनाई मुख की, अजूं न कछू देत दीदार || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -28
- सो बिगर कहे सुख देत हैं, ए तो रूहों मांग्या मिल कर । इन जिमी बैठाए सुख अर्स के, हक देत हैं उपरा ऊपर || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -30
- सो बिना हिसाबें हदीसें, भी अनुभव इत बोलत । साथजी दिल दे देखियो, जो हम तुममें बीतत || ग्रं - किरन्तन, प्र -98, चौ -5
- सो बुजरकी तो पाइए, जो फिकर कीजे दिल दे। अर्स लज्जत पाइयत हैं, तेहेकीक किए ए || ग्रं - खुलासा, प्र -16, चौ -78
- सो बुध इमाम जाहेर भए, तब खुले सब कागद । सुख तो सांचों को दिए, और झूठे हुए सब रद || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -95
- सो बुध जी सुर असुरन पे, लेसी वेद कतेव छीन । कहे असुराई मेट के, देसी सबों आकीन || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -32
- सो बुध दोऊ अर्थी की, दोऊ सरूप थे जो गुझ || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -57
- सो बुधजीऐं सास्त्र ले, सबहीं को काढ्यो सार । जो कोई सब्द संसार में, ताको भलो कियो निरवार || ग्रं - किरन्तन, प्र -52, चौ -5
- सो बेसक इलम ल्याइया, रूहअल्ला रूहन पर । जो अरवाहें असं की, ताए इस्क न आवे क्यों कर || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -105
- सो बेसक मैं जानिया, ए बात तेहेकीक बेसक । मोमिन बेसक समझियो, बेसक बोले मैं हक || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -19
- सो भाई न माने किताब को, रोसनाई ढांपे फेर फेर । तब आया दूजे पर महंमद, सब किताबें ले कर || ग्रं - किरन्तन, प्र -121, चौ -10
- सो भिस्त दई हम सबन को, कर जाहेर बका अर्स इत । करें त्रैलोकी त्रिगुन कायम, ब्रहमसृष्ट की बरकत || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -63
- सो भी इत जाहेर कह्या, पैगंमर पुकार । रूहें अर्स से उतरी, रस इस्क लिए सिरदार || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -49
- सो भी कबीले स्वारथी, दुख आए न कोई अपना । जात वजूद भी रंग बदले, ज्यों फना होत सुपना || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -34
- सो भी करत है इस्क, जुदी जुदी जिनस । काहू सुध थोड़ी काहू घनी, काहू इस्क न देत हरगिस || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -54
- सो भी कहे भिस्त के बाग, जिनसे खेती पायो सोहाग । इनकी मैं करों तफसीर, जुदे कर देऊ खीर और नीर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -77
- सो भी खेल बोल स्वर उठत, रंग रस होत रमन । सोभा सुन्दरता इनकी, केहे न सकों मुख इन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -37

- सो भी गिरो कही महंमद की, लिखी हदीसों महंमद । आखिर कह्या नूह गिरो की, महंमद देसी साहेद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -99
- सो भी ना सुन्या चित देयके, न तो जोर गया पूर चल । पर जो रे गुन आड़े माया के, ताथें ले न सकी बूंद जल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -9
- सो भी पिउ अछरातीत, इत कायर न होवे कोए। सुनत कुरबानी के आगे ही, तन रोम रोम जुदे होए || ग्रं - किरन्तन, प्र -91, चौ -6
- सो भी पिउ जीउ इन जिमी के, ए जो फना ब्रह्मांड । मेरो तो जीउ पिउ धाम को, ए जो अछरातीत अखण्ड || ग्रं - किरन्तन, प्र -97, चौ -3
- सो भी पूजें तुमारे अक्स को, तुम आए असल वतन । तिन सबकी लज्जत तुमें आवसी, सब तले तुमारे इजन || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -127
- सो भी बानी नहीं फना मिने, अर्स बका खोल्या द्वार । जो अब लग किने न खोलिया, कई हुए पैगंमर अवतार || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -39
- सो भी रूह मन अर्स के, ए तं नीके जान । बल देख झूठे मन को, अर्स मन बल पेहेचान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -35
- सो भी रूह साहेदी देत है, जो नूर-जलाल पास नाहें । सो रोसनी नूरजमाल की, लज्जत आवत मोमिनों माहें || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -53
- सो भी लिख्या दिन कयामत, यों वारसी दई पोहोंचाए। सो देखो सिपारे बाईसमें, जो उमी रोसन किए आए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -44
- सो भी वास्ते इस्क के, जो पहेचान आवत नाहें। सो भी वास्ते इस्क के, जो पेहेचानत दिल माहें || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -51
- सो भी वास्ते इस्क के, जो लगत न कलाम सुभान । सो भी वास्ते इस्क के, जो होत नहीं पेहेचान || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -50
- सो भी वास्ते इस्क के, जो लगत नाहीं घाए। सो भी वास्ते इस्क के, जो उड़त नहीं अरवाहे || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -48
- सो भी सेहे कर रहे आपन, नींद ना गई मांहें जागे सुपन । तो भी धनी की बोहोतक दया, अखंड बृज का सुख सब कह्या || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -7
- सो भूखन जो अर्स के, सब पेहेरे मन चाहे । सिनगार किया सब लसकरें, ए देखो मन ल्याए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -22
- सो भूलेंगे क्यों कर, इस्क जिनको होए । एक पाव पल जुदागीय का, क्यों कर सेहेवें सोए || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -47
- सो मगज माएने हुकमें, खोले हम सैयन । सो कलाम जो हक के, सुख होसी उमत सबन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -2, चौ -13
- सो मदत तौहीद की, पाइए ना मोमिनों बिन । ए दुनियाँ को चाहें नहीं, जाको हक बका रोसन || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -29

- सो मलकूत पैदा फना पल में, कई करत खावंद जबरुत । सो रोसनी निमूना देख के, पीछे देखो अर्स लाहूत || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -24
- सो महंमद आगू भेजिया, केहेने वचन आगम । सो खास उमत आई इत, ए जो लेने आए हम || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -34
- सो महंमद कहे मैं उमत से, मझसे है उमत । मैं उमत बिना न पी सकों, हक हजूर सरबत || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -21
- सो महंमद कासिद होए के, ले आया फरमान । वास्ते हमारे हम में, पोहोचाय हैं निसान || ग्रं - किरन्तन, प्र -61, चौ -4
- सो मिली जमात रूहन की, जिन वास्ते किया खेल । सो हक भी आए इन बीच में, सो कहे वचन माहें लैल || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -77
- सो मुख होसी उजला, मोहोर करसी जिन । आसा चुभावे जिन मुख, स्याह मुख होसी तिन || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -31
- सो मुरग रूह महंमद की, तहां से बरसी बूंदें नूर । सो नूर से हुए पैगंमर, इनों दे पैगाम किया जहूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -114
- सो में भेज्या तुमें मोमिनों, देखो पोहोंच्या इस्क चौदे तबक । ऐसा इस्क मेरा तुमसों, इनमें पाइए न जरा सक || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -48
- सो मेट किया सुधा रस, सुख अखंड धनी को परस । प्रेमें गम अगम की करी, सो सुध वैराट में विस्तरी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -1, चौ -58
- सो मैं कछू ना दिल धरे, भूल गई अवसर । कई विध करी जगावने, पर मैं जागी नहीं क्योंए कर || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -10
- सो मैं कह्यो न जावहीं, जो इस्क इनों के अंग । रोम रोम इनों के कायम, क्यों कहूं इस्क तरंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -28, चौ -9
- सो मैं गाया याद कर कर, कबूं पाया न विरहा रस । नाम सहे ना हुकम सहे, ना कछू सहे अक्स || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -26
- सो मैं मैं झूठी दिल पर, जब लग करे कुफर । सत सन्देसा तौहीद को, तोलों पोहोंचे क्यों कर || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -27
- सो मैं समझाऊं साथ को, ले फरमान वचन । फैले हैं भरथ खण्ड में, अब पोहोंचे चौदे भवन || ग्रं - किरन्तन, प्र -97, चौ -16
- सो मोमिन क्यों कर कहिए, जिन लई ना हकीकत । छोड़ दुनी को ले ना सक्या, हक बका मारफत || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -26
- सो याही छात को लग रहे, ज्यों एक मोहोल चार पाए । पेड़ पांचमा बीच में, मोहोल पांचों जुदे सोभाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -42
- सो रख्या तुमारे वास्ते, ए खोलो तुम मिल । दुनी पावे ना इन तरफ को, सो बीच अर्स तुमारे दिल || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -67

- सो रख्या तुमारे वास्ते, सो तुमहीं ल्यों दिल धर । लिखे फूल प्याले तुम ताले, अछूत पियो भर भर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -57
- सो रंग सारे जवेरन के, कई रंग छेड़े किनार । हर धागे रंग कई विध, नहीं रंग जोत सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -23
- सो रस बृज की सुंदरी, पायो सुगम । सो सेहेजे घर आइया, जो कहे वेद अगम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -11
- सो रस सागर इत हुआ, लेहेरें उछले । साथ सबे हम बिलसहीं, बाहेर पूर भी चले || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -103
- सो रसूल तुम खातिर, होए आया कासद । ए सब मासूक के हुकमें, हुआ जाहेर महंमद || ग्रं - सनंध, प्र -28, चौ -30
- सो रूहें अर्स दरगाह की, कही महंमद बारे हजार। दे साहेदी गिरो महंमदी, जाको वतन नूर के पार || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -4
- सो रूहें दरगाह के मांहें, ऐसा नजीकी और कोई नाहें । सो ए रूहें आदमी सकल, ए आदमी इनकी नकल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -18
- सो रे वरसनी जटा बंधांणी, ते केम छोडी जाए । अंतकाल सुरझावा बेठा, लेई कांकसी हाथ मांहें || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -56
- सो लई रूहअल्ला साहेदी, दूजी साहेदी आप दई । त्यों करी इमामें जाहेर, ज्यों सब में रोसन भई || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -51
- सो ले न सके भिस्त कदमों, तिन अरवाहों देत दोजख । और हिसाब सुख दुख हैं कई, ए खेल कह्यो चौदे तबक || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -29
- सो वचन लिखे हैं इसारतों, पाइए खुले हकीकत । उपले माएने न पाइए, जो अनेक दौड़ाओ मत || ग्रं - किरन्तन, प्र -121, चौ -3
- सो वैराट चौदे तबकों, थावर और जंगम । सब तारे सचराचर, प्रकास रसूल नूर हुकम || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -43
- सो सक भानी सब दुनी की, महंमद मेंहेंदी ईसा आए। अर्स कायम सूर हुआ रोसन, दिया काफरों कुफर उड़ाए || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -79
- सो संग कैसे छोड़िए, जो सांचे हैं सतगुर । उड़ाए सबे अंतर, बताए दियो निज घर || ग्रं - किरन्तन, प्र -34, चौ -18
- सो सब्द लिखे हैं कागदों, आपे अपनी साख । जो किन पाई दमड़ी, या किन लाखों लाख || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -13
- सो समया सरतें सब लिखीं, बीच अथर्वन । कहावें पढ़े महंमद के, पर पावें ना आकीन बिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -37
- सो सरीयत को है नहीं, ए तो खड़े जाहेर ऊपर । एक हादी के लड़ जुदे हुए, ए जो नारी फिरके बहत्तर || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -74

SRJN

- सो संसे मेरा मिट गया, हक इलमें किए बेसक । दिल में संसे क्यों रहे, जित हकें अपनी करी बैठक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -89
- सो साख मोमिन एही देवहीं, यो बूझ में भी आवत । अनुभव भी कछू केहेत है, और हुकम भी कहावत || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -18
- सो साबित तब होवहीं, जब सब होवे दीन एक । पेहेले कह्या रसूल ने, एही उमत नाजी नेक || ग्रं - सनंध, प्र -19, चौ -14
- सो सारे फना आखिर, जेती वस्त कही जाहेर । जिन माएने लिए ऊपर, सो ए वजूद को रहे पकर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -61
- सो साहेदी देवाई महंमद की, सेहेरग से नजीक हक । नूर के पार नूर-तजल्लारे, इलम माहें बैठावे बेसक || ग्रं - खिलवत, प्र -7, चौ -4
- सो साहेदी सिपारे चौबीस में, लिखियां ठौर ठौर । हक हादी मोमिन बिना, जाने कौन और || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -13
- सो साहेब आखिर आवसी, किया महंमद सों कौल । भिस्त दरवाजे कायम, सब को देसी खोल || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -29
- सो साहेब हाँसी करे, अपने मोमिन रूहो सों मिल । सो सुन के घाव न लागहीं, हाए हाए ऐसे बजर दिल || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -7
- सो सितारा सरीयत का, करता था रात की रोसन । सो नाबूद हुआ देख सूरज, ऊगे मारफत दिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -67
- सो सिफत सब महंमद की, सो महंमद कया जो स्याम । अव्वल आखिर दोऊ दीन में, एही बजरक महंमद नाम || ग्रं - किरन्तन, प्र -121, चौ -5
- सो सुध आपन को नहीं, जो विध करत मेहेरबान । ना तो कई मेहेर आपन पर, करत हैं रेहेमान || ग्रं - सागर, प्र -3, चौ -16
- सो सुध पाइए लदुन्नी से, देखे ना उपली नजर । जो सिफली के दिल मजाजी, बिन इलम देखे क्योंकर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -4
- सो सुध बातून नूरजमाल की, अर्स अजीम के अन्दर । दोऊ हादियों मेहेर कर, पट खोल दिए अंतर || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -60
- सो सुध सारी ल्याइया, लीला आगू से निसान । जागनी की सुध सब लिखी, तुम लीजो साथ चित आन || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -23
- सो सुन्दरबाई धाम चलते, जाहेर कहे वचन । आडी खड़ी इंद्रावती, कहे मैं रेहे ना सकों तुम बिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -3
- सो सोहागिन जेतियां, इमाम की विरहिन । सो अन्तर हकें पकड़ी, ना तो रहे ना तन || ग्रं - सनंध, प्र -11, चौ -28
- सो हक किनों न पाइया, जो कया एक हजरत । ढूंढ़ ढूंढ़ फिरके फिरे, पर किनहूं न पाया कित || ग्रं - खुलासा, प्र -6, चौ -5

- सो हकीकत सब कुरान में, कई ठौरों लिखी साख । जो ग्वाही लिखी आप साहेबें, कहूं केती हजारों लाख || ग्रं - किरन्तन, प्र -122, चौ -5
- सो हबीब क्यों पाइए, कई कर कर थके उपाए । सास्त्र देखे सब सब्द, तिन दुख दिया बताए || ग्रं - किरन्तन, प्र -17, चौ -3
- सो हादी देखावत जाहेर, अर्स खदा का जे । चौदे तबक चारों तरफों, सेहेरग से नजीक ए || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -34
- सो हिरदे साफ हुए बिना, क्यों कर पोहोंचे धाम । हम भेजे आए धनी के, एही हमारा काम || ग्रं - किरन्तन, प्र -73, चौ -21
- सो हिसाब दिए पीछे, देह धरें चौरासी लाख । मन वाचा करम बांध के, कहें हम होत हलाक || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -21
- सो हुकम हादी का छोड़ के, छोड़ साहेब के पाए। बीच अंधेरी सुन्य के, जाए जल बिन गोते खाए । || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -21
- सो हेम नंग अति उत्तम, इन रूहों के माफक । वस्तर भूखन साज के, जाए देखें नजर भर हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -41
- सोई अखंड अछरातीत घर, नित्य बैकुंठ मिने अछर । अब ए गुझ करूं प्रकास, ब्रहमानंद ब्रहमसृष्ट विलास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -3
- सोई अबलीस सबन के, दिल पर हुआ पातसाह । एही दुस्मन दुनी का, जिन मारी सबों की राह || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -50
- सोई अर्स हक का, हादी रूहों वतन । इत हक हादी रूहों सूरत, अर्स के तन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -43
- सोई कटाछे स्याम की, सींचत सुरत चलाए । बंके नैन मरोर के, दृष्टं दृष्ट मिलाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -93, चौ -15
- सोई कलंगी सोई दुगद्गी, सोभे पाग ऊपर । केहे केहे मुख एता कहे, जोत भरी जिमी अंबर || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -9
- सोई कहावत आसिक, जिन अंग जोस फुरत । अहनिस पिउ के अंग में, रेहेत आसिक की सुरत || ग्रं - किरन्तन, प्र -91, चौ -14
- सोई कहिए अर्स वाहेदत, जो हैं हक की जात । हक हादी रूहों बीच में, कोई और न समात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -50
- सोई कहिए मोमिन, जिन दिल हक अर्स । सो ना मोमिन जिन ना पिया, हक सुराही का रस || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -20
- सोई कहूं हकीकत मारफत, जो रखी थी गुझ रसूल । वास्ते अर्स रूहन के, जिन जावें आखिर भूल || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -1
- सोई कहूंगी जो लिख्या कुरान, सब्द न काढू बिना फरमान । या तो कहूं महंमद हदीस, भला मानो या करो रीस || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -3

- सोई कूकां करे पेहेले की, सो क्यों न समझो बात । न तो दिन उजाले खरे दो पोहोरे, अब हो जासी रात || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -4
- सोई कौल सरीयत ने, पकड़ लिया इनों से । कौल तोड़त रसूल के, दुस्मन बैठा दिल में || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -18
- सोई खेलना सोई हँसना, सोई रस रंग के मिलाप । जो होवे इन साथ का, सो याद करो अपना आप || ग्रं - किरन्तन, प्र -93, चौ -10
- सोई खोले अपनी इसारते, जो अर्स की अरवाहें । एही परीछा जाहेर, और काहूं न खोल्या जाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -2
- सोई खोले ए माएने, जिन लई मजल इन ठौर । ए बानी वाहेदत की, दूजा केहेते जल मरे और || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -26
- सोई गिरो इसलाम की, खेल लैल देख्या दो बेर । तीसरी बेर फजर की, जाके इलमें टाली अंधेर || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -24
- सोई गुन पख इंद्रियां, धाम वतन की देह । सोई मिलना परआतम का, सब सुखै के सनेह || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -18
- सोई गोकुल जमुना त्रट, जानों सोई बृजवासी । रास लीला जाने खेल के, इत आए उलासी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -44
- सोई घड़ी ने सोई पल, मायाएं बीच डास्यो बल । साथ को खिन न्यारे ना करे, बिना साथ कहूं पांउ ना धरे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -10
- सोई घेनने सोई घारन रे, सोई घूटन अधकी आवे जी । याही जिमी और याही नींद से, धनी बिना कौन जगावे जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -4
- सोई चाल गत अपनी, जो करते मांहें धाम । हँसना खेलना बोलना, संग स्यामाजी स्याम || ग्रं - किरन्तन, प्र -93, चौ -11
- सोई चौक गलियां मंदिर, सोई थंभ दिवाले द्वार । सोई कमाड़ सोई सीढ़ियां, झलकारों झलकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -93, चौ -7
- सोई जिमी उज्जल अति सोभित, ए जो पहाड़ नजीक या दूर । आकास भरयो रोसनी, कहां लग कहूं ए नूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -46
- सोई झरोखे धाम के, जित झांकत हम तुम । सो क्यों ना देखो नजरों, बुलाइयां खसम || ग्रं - किरन्तन, प्र -93, चौ -9
- सोई दरद अब आइया, लग्या कलेजे घाए । अब ए अचरज होत है, जो मुरदे रहत अरवाहे || ग्रं - किरन्तन, प्र -75, चौ -2
- सोई दाभा या गधा दज्जाल, अबलीस दिलों पातसाह । सो दुनी आंख फोड़ी दुस्मने, लेने देवे न बातून राह || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -7
- सोई देख के आए ज्यों, फेर अब प्रगट हुए हैं त्यों । धनी जब करें अपन्यात, मनचाह्या सुख देवें साख्यात || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -10, चौ -12

- सोई देखी जो कछू देखाई, अब देखसी जो देखाओगे। हंसो खेलो जानों त्यों करो, बीच अर्स खिलवत के || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -156
- सोई धनी सोई वतन, सोई मेरो सुंदरसाथ । सोई विलास अब देखिए, दोरी खैची उनके हाथ || ग्रं - किरन्तन, प्र -93, चौ -6
- सोई नसीहत देत सजन, बँचत तरफ वतन । पिउ पुकारें बेर दूसरी, अब क्यों होंए पीछे आपन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -3
- सोई ने सोई सूते क्या करो जी, या अगिन जेहेर जिमी मांहीं जी । जाग देखो आप याद करो, ए नींद निगल गई जीव के तांई जी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -30, चौ -1
- सोई पांच रंग एक नंग में, तिनकी बनी जो कड़ी। देत देखाई रंग नंग जुदे, जानों किन घड़ के जड़ी || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -95
- सोई पिउ सोई बातड़ी, फेर सोई करे पुकार । कारन अपने पिउ को, आंखों आवे जलधार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -17, चौ -2
- सोई फना कही दुनियां, जाकी असल अर्स में नाहें । सोई हैयात हमेसगी, जो अर्स बका मांहें || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -38
- सोई बस्तर सोई भूखन, सोई सेज्या सिनगार । सोई मेवा मिठाइयां, अलेखें अपार || ग्रं - किरन्तन, प्र -93, चौ -5
- सोई बात करें हक अर्स की, सहूर या बेसहूर । हुए सब विध पूरन पकव, हक अर्स दिन जहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -10
- सोई बातें अब मिली, भूल गैयां घर तुम । भूली आप और हक को, भूलियां अकल इलम || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -78
- सोई बातें प्रेम की, सोई सुख सनेह । सुख अखंड को भूल के, क्यों रहे झूठी देह || ग्रं - किरन्तन, प्र -93, चौ -12
- सोई मन बुध चितवन, सोई मिलाप सैयन । सोई हाँस विलास सोई, करते रात दिन || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -21
- सोई मोमिन अर्स के, उतरे नूर बिलंद । ताको टाली हक इलमें, झूठ फरेबी फंद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -44
- सोई मोमिन जा को सक नहीं, और दिल अर्स हक हुकम । पट खोले नूर पार के, आए दिल में हक कदम || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -45
- सोई मोमिन जानियो, जो उड़ावे चौदे तबक । एक अर्स के साहेब बिना, और सब करे तरक || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -30
- सोई मोहोल सोई मालिए, सोई छज्जे रोसन । सोई मिलावे साथ के, सोई बोलें मीठे वचन || ग्रं - किरन्तन, प्र -93, चौ -8
- सोई रब्द जो हकसों किया, वास्ते इस्क के। सो इस्क तब आइया, जब हकें दिया ए || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -87

- सोई रसीले रंग भरे, निरखें नेत्र चढ़ाए। सुन्दर मुख सनकूल की, भर भर अमृत पिलाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -93, चौ -14
- सोई लोभ सोई लालच, सोई अपनों अहंकार । सोई काम प्रेम करतब, सोई अपना वेहेवार || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -20
- सोई वचन मेरे धनीय के, हाथ कंजी आई दिल को । उरझन सारे ब्रह्मांड के, मैं सुरझाऊं इन सों || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -23
- सोई सरूप है नूर का, सोई सूरत हादी जान । रूहें सूरत वाहेदत में, ए पूरन इस्क परवान || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -49
- सोई सहूर अर्स का, जो कह्या हक इलम । सोई मोमिन पे बेसकी, यों अर्स रूहें जुदे ना खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -29
- सोई साहेब आखिर आवसी, किया महंमद सों कौल । भिस्त दरवाजे कायम, सबको देसी खोल || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -18
- सोई सुध दई फुरमानें, सोई ईसे दई खबर । मेरे मुख सोई आइया, तीनों एक भए यों कर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -8
- सोई सुहागिन आइयां, खसम की विरहिन । अंतरगत पिया पकरी, ना तो रहे ना तन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -25
- सोई सूरत धुआं दज्जाल, दनी तिन दई उरझाए । मुसाफ बरकत ईमान बिन, छूटी आखिर हक हिदायत ताए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -9, चौ -18
- सोई सेज्या सोई मंदिर, सोई पिउजी को विलास । सोई मुख के मरकलड़े, छूटी अंग की आस || ग्रं - किरन्तन, प्र -93, चौ -13
- सोई सेहेज सोई सुभाव, सोई अपना वतन । सोई आसा लज्या सोई, सोई करना न कछू अन || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -19
- सोई सोहागिन धाम में, जो करसी इत रोसन । तौल मोल दिल माफक, देसी सुख सबन || ग्रं - किरन्तन, प्र -95, चौ -1
- सोई हुकम आए पोहोचिया, जो करी थी सरत । सब्द भी सिर पर लिए, आया वतन बल जाग्रत || ग्रं - किरन्तन, प्र -86, चौ -12
- सोए देखोगे जाहेर, मेरे पीछे बीच करन । सोई पातसाही यारों की, होसी फितना बीच खलीफन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -7, चौ -4
- सोना रूपा दुनी का, अरथ चाहें भरे भंडार । इनका एही किबला, कई विध करें विस्तार || ग्रं - किरन्तन, प्र -108, चौ -27
- सोने जवेर के बन कहूं, तो ए सब झूठी वस्त । सोभा जो नूर बन की, सो कही न जाए मुख हस्त || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -19
- सोभा अंग अर्स के, या वस्तर या भूखन । होवे दिल चाया कई विध का, सोभा सिनगार माहें खिन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -40

SPJIN

- सोभा अतंत है भूखनों, स्वर बाजत हाथ चरन । मीठी बानी अति नरमाई, खुसबोए और रोसन || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -32
- सोभा इन मंडल की, क्यों कर कहूं वचन । सो बुध नूर जाहेर करी, जो कबूं सुनी न कही किन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -9
- सोभा कदम तलीय की, और सोभा सलूकी नखन । सोभा अंगुरी अंगूठे, क्यों छोड़ें आसिक तन || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -34
- सोभा कही न जाए दरखतों, और कही ना जाए इन भोम । जो देखो सोभा पसुअन की, करे रोसन अति एक रोम || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -87
- सोभा कहूं अंग माफक, इन सुपन जुबां अकल । सो क्यों पोहोंचे इन सरूप लों, जो बीच कायम बका असल || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -70
- सोभा क्यों कर कहूं या मुख, चित में लिए होत है सुख । चित्त दे दे समारत सेंथी, हेत कर कर बेनी गूंथी || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -83
- सोभा क्यों कहूं या मुख बन, सो तो होए नहीं बरनन । इत सब तत्वों की खुसबोए, सो इन जुबां बरनन क्यों होए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -17
- सोभा क्यों कहूं हक सूरत की, जा को नामै नूरजमाल । ए दिल आए इस्क आवत, याको सहूरै बदलें हाल || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -91
- सोभा क्यों होए रंग सुरंग की, नैन श्रवन चोंच बान । सुख देवें कई भांत सों, कई बोलें मीठी जुबान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -34
- सोभा चली आई लवने लग, पीछे आई कान पर होए । आए मिली दोऊ तरफ की, सोभा केहेवे न समर्थ कोए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -120
- सोभा चारों घाट की, जित जोए हौज मिलत । रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -28
- सोभा जल जो लेत है, भस्यो नूर रोसन आकास । बीच लेहेरें लगें मोहोलन को, ए क्यों कहूं खूबी खास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -8, चौ -66
- सोभा जल फूलन की, गिरद चारों किनार । ए सोभा अतंत देखिए, जो कछू रूह करे विचार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -151
- सोभा जाए न कही रूहन की, जो बड़ी रूह के अंग नूर । कहा कहे खूबी इन जुबां, जो असल जात अंकूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -47
- सोभा जाए ना कही बन पंखियों, और जिकर करत हैं जे । तो हक हादी रूहें मिलावा, कहूं किन बिध सोभा ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -16
- सोभा जाए ना कही बिरिख पात की, तो क्यों कहूं फल फूल बास । क्यों होए बरनन सारे विरिख को, ए तो सुख साथ को उलास || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -49
- सोभा जानवर अर्स के, ताके एक बाल की रोसन । मावत नहीं आकास में, जुबां क्या करे सिफत इन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -29

- सोभा जुगल किसोर की, दोऊ होत बराबर । जो हिरदे सो बाहेर, दोऊ खड़े होत सरभर || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -62
- सोभा जुगल किसोर की, सुख सागर चौथा ए। आवें लेहेरें नेहेरें अति बड़ी, झीलें अरवाहें जो इन के || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -24
- सोभा तले रेतीय की, कहा कहूं छाया ऊपर । कही न जाए लिबोई घाट की, सोभा अचरज तले भीतर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -6, चौ -10
- सोभा तो घणुए सोहामणी, जो द्रढ करी जोइए मन । झीणा वस्तर ने अति उत्तम, कानिए दोरी त्रण || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -23
- सोभा देत देखाई आसमान में, ऊँची सीढ़ियों नहीं सुमार । चार चार आणू द्वार चबूतरे, दो दो बन के रंग नहीं पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -44
- सोभा धरत अति श्रवनों, मोती उज्जल बीच लाल । ए मुख रूह जब देखहीं, बल बल जाऊं तिन हाल || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -35
- सोभा पाल तलाब की, कही न जाए जुबां इन । बन क्योहरी जल मोहोल की, रोसन रोसन में रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -54
- सोभा पिउ की सब्दातीत, सो आवत नहीं जुबाए। जोगवाई जेती इन अंग की, सो सब मूल प्रकृती माहे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -3
- सोभा बट घाट क्यों कहूं, तरफ चारों चार दिवाल । जरी किनारे दोऊ सोभित, क्यों देऊं इन मिसाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -21, चौ -7
- सोभा बड़ी सब रूहों की, सब के वस्तर भूखन । जोत न माए आकास में, यों घेर चली रोसन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -128
- सोभा बन संझा समें, फल फूल खुसबोए । साथ बैठा पाट ऊपर, बीच सुंदर सख्प दोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -21
- सोभा भिस्त जिमीय की, और सोभा भिस्त दरखत । पुरों पुरों नूरी बसें, ए क्यों होए खूबी सिफत || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -33
- सोभा भिस्त मोहोल मंदिरों, और सोभा नूरियों अंग । नूर असल अंग भेदिया, ए नाहीं नूर तरंग || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -34
- सोभा माहें सलूकियां, और खुसबोई सुखदाए । सुख प्रेम कई खुसालियां, इन जुबां कही न जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -5, चौ -13
- सोभा मुखारबिन्द की, क्यों कर कहूं तेज जोत । रस भस्यो रसीलो दुलहा, जामें नित नई कला उद्दोत || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -47
- सोभा रे मारा स्याम तणी, सखी केणी पेरे वरणवं एह । सब्दातीत मारा वालाजीनी सोभा, मारी जिभ्या आंणी देह || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -2
- सोभा लेत अति कठेड़ा, ऊपर ढांप चली किनार । सोभा जल में झलकत, जल नंग तरंग करे मार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -135

- सोभा लेत अति कठेड़ा, तमाम चबूतर । तले लगते दरखत, सब पेड़ बराबर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -11, चौ -2
- सोभा लेत जिमी जंगल, माहें टोले कई खेलत । ए खूब खेलौने हक के, ए बुजरक इन निसबत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -36
- सोभा लेत बन में रूहें, अस्वार होत मिल कर । पसु पंखी दौड़ें मन ज्यों, जित जिमी बन बिगर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -7
- सोभा लेत हैं टेढ़ाई, नैना रंग रस भरे । ए सोई रूहें जानहीं, जाकी छाती छेद परे || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -67
- सोभा लेत हैड़े खभे, कर हेत सुनत श्रवन । विचार किए जीवरा उड़े, या उड़े देख भूखन || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -61
- सोभा सलूकी मुख की, और सलूकी भूखन । और सलूकी वस्तर की, ए जाने अरवा अर्स के तन || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -53
- सोभा सागर साथ तणी, सखी केणी पेरे ए वरणवाय । हूं रे अबूझ कांई घणूं नव लहूं, एनो निरमाण केम करी थाय || ग्रं - रास, प्र -7, चौ -2
- सोभा सिनगार अंग सुखकारी, मेरी रूह के कण्ठ भूखन । सब खूबियां मेरे इन सें, मेरे जीव के एही जीवन || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -13
- सोभा सुन्दरता अति बड़ी, हक बड़ी रूह अरवाहें । ए सोभा सागर दूसरा, मुख कयो न जाए जुबाए || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -16
- सोभा सुन्दरता जात की, एक हक जात सूरत । अंतर आंखें खोल तूं, अपनी रूह की इत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -57
- सोभा स्यामाजीय की, निपट अति सुन्दर । अन्तर पट खोल देखिए, दोऊ आवत एक नजर || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -31
- सोभा हक के अंग की, सो अंग ही की सोभा अंग । ऐसी चीज कोई है नहीं, जो सोभे इन अंग संग || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -51
- सोभा हक नूर सिंघासन, नूर इन भोम बिराजत । ए बात केहेते हक नूर की, हाए हाए नूर जीवरा न उड़त || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -111
- सोभा हक सूरत की, सागर भी कहे न जाए। ए सोभा अति बड़ी है, पर सो आवे नहीं जुबाएँ || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -29
- सोभावंत कई सुख लिए, तेजवंत तारे । बंके नैन मरोरत मासूक, सब अंग भेदत अनियारे || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -6
- सोभित द्वार सनमुख का, नूर थंभ पाच के दोए । थंभ नीलवी दो इनों लगते, सोभा लेत अति सोए || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -8
- सोभित हँसत हरवटी, बड़ी अचरज सलूकी मुख । रूह देखे अन्तर आंखां खोलके, तो उपजे अर्स सुख || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -59

- सोभित हैं सबन के, कानन झलकत झाल । माहें मोती नंग निरमल, झांई उठत माहे गाल || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -5
- सोभी किया सुख वास्ते, पर अब सुध किनको नाहें । खेल देसी सुख बड़े, जब जागें अर्स के माहे || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -31
- सोयतणां नाका मंझार, कंजरी कई निकले हजार । एनो अर्थ पण आवसे सही, तारतम आसंका राखे नहीं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -35, चौ -5
- सोले थंभों कठेड़ा, यों थंभ कठेड़ा किनार । कठेड़ा थंभों लगता, सोले सोले तरफ चार || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -88
- सोले धरके करूं पदम दस, गुन नजरों आवते हुए धनी बस । सत्रे धरके करूं गुन अंक, अठारे धरूं ज्यों होए गुन संक || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -20
- सोले से लगे रे साका सालवाहन का, संवत सत्रह से पैतीस । बैठाने साका विजिया अभिनन्द का, यों कहे सास्त्र और जोतीस || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -18
- सोहत छैल छबीले, कहा कहूं सलूक । एह नैन निरखे पीछे, हाए हाए जीव न होत भूक भूक || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -14
- सोहाग दिया साहेब ने, कामरी सोहागिन । आगू बोले बुजरक, सराही साधू जन || ग्रं - किरन्तन, प्र -110, चौ -9
- सोहागिन तोलों खोज ही, जोलों पाइए पिउ वतन । पिउ वतन पाए बिना, विरहा न जाए निसदिन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -10
- सोहागिन विरहा ना सहे, जब जाहेर हुए पिउ । सोहागिन अंग जो पिउ की, पिउ सोहागिन अंग जिउ || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -11, चौ -16
- सोहेलं देखी कां उतरो रे, आगल दोख अनेक । चढतां घणुए दोहेलूं, पण वैकुण्ठ सुख वसेक || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -17
- सौ माला वाओ गले में, द्वादस करो दस बेर । जोलों प्रेम न उपजे पिउ सों, तोलों मन न छोड़े फेर || ग्रं - किरन्तन, प्र -14, चौ -5
- सौ वराके हिकडी, गाल ई आइए । मूंजो हल्ले न तिर जेतरो, हे पण चुआं थीं तोहिजे चाइए || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -52
- सौ साल रात अग्यारहीं लग, एक दिन के साल हजार । अग्यारै सदी अंत फजर, एही गिरो है सिरदार || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -27
- सौगंद खाई बीच होने फजर, द्वा दोस्तों बखत नजर । फजर बंदगी होसी आराम, जीव दिल पावे इसलाम || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -18, चौ -2
- स्कंध बीजो मुनिए कयो, चत्रस्लोकी जांहें । ब्रह्मांडनी जिहां उतपन, अर्थ जुओ ताहे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -66
- स्या रे एवा करम करया हता कामनी, धाम माहें धणी आगल आधार । हवे काढ्ने मोह जल थी बूडती कर ग्रही, कहे महामती मारा भरतार || ग्रं - किरन्तन, प्र -35, चौ -4

- स्यानी जोरू क्यों करे, जान के गुनाह ए। खावंद जाने त्यों करे, हुआ बस हुकम के || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -26
- स्याबास तुमारी अरवाहों को, स्याबास हैड़े सखत । स्याबास तुमारी बेसकी, स्याबास तुमारी निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -120
- स्याम चोली अंग गौर पर, सोभा लेत अतंत । सोहे बेली कटाव, जुबां कहा कहे सिफत || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -83
- स्याम बंके भौंह नैनों पर, रंग गौर जुड़े दोऊ आए । निपट तीखी अनियां नेत्र की, मारे आसिकों बान फिराए || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -38
- स्याम मंदिर रसोई होत जित, जोड़े सेत मंदिर है तित । बन थे फिरें संझा जब, इन मंदिरों अरोगें तब || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -65
- स्याम रास से बरारब, ल्याया साहेब का फरमान । हकीकत अखण्ड धाम की, तिन बांधी सब जहान || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -31
- स्याम ल्याए चीजें दोए, चौदे तबकों न पाइए सोए । एक देवे अल्ला की ग्वाही, दूजी करे बयान हुकम चलाई || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -32
- स्याम संग गोवाल ले, खेलत जमुना घाट । विनोद में हम आवे जाएँ, जल भरने इन बाट || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -37
- स्याम सेत के बीच में, सीढ़ियां सुन्दर सोभित । बोहोत साथ इत आए के, चढ़ उतर करत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -12
- स्याम सेत नीली पीली, जांबू आसमानी लाल । हाए हाए करते पोहोंची बरनन, अजूं होस लिए खड़ा हाल || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -32
- स्याम सेत भौंह लवने, नेत्र गौर गिरदवाए । स्याह पुतली बीच सुपेत में, जंग जोर करत सदाए || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -34
- स्याम सेत लाल नीलवी, बाजू-बंध और फुमक । तिन फुन्दन जरी झलकत, लेत लेहेरी जोत लटकत || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -97
- स्याम स्यामा जी सुन्दर, देखो करके उलास । मनके मनोरथ पूरने, तुम रंग भर कीजो विलास || ग्रं - किरन्तन, प्र -80, चौ -5
- स्याम स्यामाजी आए देख्यो खेल बनाए, सब उठियां हँसकर । खेलें महामति देखलावें इंद्रावती, खोले पट अन्तर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -40, चौ -10
- स्याम स्यामाजी जोड सुचंगी, जुओ सकल सुंदरी । सोभा मुखारविंदनी, करे मांहों मांहें हांस री || ग्रं - रास, प्र -16, चौ -2
- स्याम स्यामाजी साथ सोभित, क्यों न देखो अंतरगत । पीछला चार घड़ी दिन जब, ए सोई घड़ी है अब || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -191
- स्यामनां उलासी अंग, उलट अमारे संग || ग्रं - रास, प्र -19, चौ -6

- स्यामा स्याम जोड, करतां कलोल । रमे रंग रोल, थाय झकझोल, बंने एक मतसूं || ग्रं - रास, प्र -26, चौ -5
- स्यामाजी आंखडली मीचीने ऊभा, सखियो वनमां पसरी । सहु कडछीने रमे जुजवा, भूखण लीधां ऊंचा धरी || ग्रं - रास, प्र -15, चौ -13
- स्यामाजी को धनिऐं, आवेस अपनो दियो । सब केहे के हकीकत, हुकम ऐसो कियो || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -1, चौ -4
- स्यामाजी संगे स्यामनी, बांहोंडी कंठे कामनी । ताणती अंगे आमनी, मुख बीडी सोहे पाननी । एम रमत सकल साथ री || ग्रं - रास, प्र -40, चौ -4
- स्यामाजी स्याम के संग, जुवती अति जोर जंग । करती पूरन रंग, परआतम परे || ग्रं - किरन्तन, प्र -123, चौ -1
- स्यामाजीएँ मोहे सुध दई, तब मैं जानी न सगाई सनमंध । सुध धनी धाम न आपकी, ऐसी थी हिरदे की अंध || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -20
- स्यामाजीने नवराविया, पेरे पेरे ते घणी प्रीत । साथ सहु एणी विधे, कांई नाह्यो छे रूडी रीत || ग्रं - रास, प्र -45, चौ -15
- स्याह मुंह होसी तिन का, आसा चुभावे जिन । उज्जल स्याह मुंह अपने, केहेसी रात और दिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -8, चौ -13
- स्याही करूं अति जुगते करी, रखे कांई माथी जाय परी । ए लेखणो स्याही आ कागल करी, माहें झीणां आंक लखू चित धरी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -7
- स्वर भूखन के बाजत, मीठे अति रसाल । इनकी सोभा क्यों कहूं, जाको खावंद नूरजमाल || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -76
- स्वर भूखन मधुरे सोहे, ए तरह चलत जो हक । ए जो देखे रूह नजर भर, तो चाल मार डारत मुतलक || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -60
- स्वांग काछे जुदे जुदे, और जुदे जुदे रूप रंग । चले आप चित चाहते, और रहे भेले संग || ग्रं - सनंध, प्र -13, चौ -9
- स्वांग काछे जुदे जुदे, जुदे जुदे रूप रंग । चलें आप चित चाहते, और रहे जो भेले संग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -13, चौ -7
- स्वांग सर्वे सोभावीने, करे हो हो कार । कोई मांहें आहार खाधां, कोई खाधा अहंकार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -18
- स्वांत कहे मैं तबलो थी, जोलो नींद हती आतम । अब मैं बैठी तरफ माया के, विलसो अपना खसम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -35
- स्वांत कहे हूं तिहां लगे हुती, जां जीवने निद्रा हती जोर । हवे जाऊं छू संसार माहे, तमे करो धनीसों कलोल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -35
- स्वांतसिए रे विचार करियो, तेने आडा देवराणा रे बार । कुटम सगा रे सहु टोले मली, फरीने वल्या रे भरतार || ग्रं - रास, प्र -5, चौ -22

- स्वाथी मारग चाले संजमपुरी, भार भरी रे अलेखे । कुटम परिवार लादा सहु लादे, आगली अजाडी कोई न देखे || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -2
- स्वाद कहे जब ए सुख आया, तब अभख हुआ मोहजल । झूठा रंग सब उड़ गया, रस रंग भया नेहेचल || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -76
- स्वाद कहे ज्यारे ए सुख लाध्यो, त्यारे अभख थयो मोहजल । उवल हतो ते टली गयो, हवे सवलो आव्यो बल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -76
- स्वादे लाग्या सुख भोगवो, पण पछे थासे पछताप । व्यास वचन जोता नथी, पछे घससो घणूं बने हाथ || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -37
- स्वामीजी ए ढील करो जिन, लखमीजी बुलाओ ततखिन । चरन ग्रहे तब खीरसागरें, और फेर फेर ब्रहमा विनती करे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -43
- स्वाल किए इत जाहेरी, मोहोर आसा होसी दिल रूए । बाहेर स्याह मुंह उज्जल, क्यों कर देखे कोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -8, चौ -14
- स्वांस तो खिन में कई आवें जाए, गए अवसर पीछे कछू न बसाए । तिन कारन सुन रे जीव सही, बड़ी मत मैं तोको कही || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -14

ह

- हए हाए देख्या न हक हादी सामी, ना हदीसें कुरान । तो आए लिखे नामें वसीयत, इत ना रह्या किन का ईमान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -88
- हक अंग कैसे बरनवू, इन झूठी जुबां के बल । बका अंग क्यों कर कहूं, यों फेर फेर कहे अकल || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -55
- हक अंग चलत मुख बोलते, तब जान्या जात गुझ प्यार । ए अरवा अर्स की जानहीं, जा को निसदिन एह विचार || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -55
- हक अंग जोत की क्यों कहूं, जो नूर नूर का नूर । अंग मीठे प्यारे सुख सलूकी, दे हक हुकम सहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -29
- हक अंग तो मुतलक मारत, पर भूखन लगें ज्यों भाल । चितवन जुगल किसोर की, देत कदम नूरजमाल || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -54
- हक अंग नूर हादी कह्या, मोमिन हादी अंग नूर । ए सब हक वाहेदत, ज्यों हक नूर जहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -62
- हक अंग सब नाचत, जोस आवत है जब । करें बातें रूह सों उमंगें, मुख छबि देखी चाहिए तब || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -33
- हक अरस परस सरस सब एक रस, वाहेदत खिलवत निसबत न्यामत । महामत अलमस्त होए आवें उमत लिए, पीवत आवत हक हाथ सरबत || ग्रं - किरन्तन, प्र -117, चौ -4

- हक अर्स दिल मोमिन, और अर्स हक खिलवत । वाहेदत बीच अर्स के, है अर्स में अपार न्यामत || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -2
- हक अर्स नजीक सेहेरग से, दोऊ हादी खोले द्वार । बैठाए अर्स अजीम में, जो कया मेयराजे नूर पार || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -51
- हक अर्स बका तब पाइए, जो खुले हक हकीकत । दिन हुए सब देखिए, सूरज ऊगे मारफत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -20
- हक अर्स याद आवते, रूह उड़ न पोहोंचे खिलवत । बेसक होए पीछे रहे, हाए हाए कैसी ए निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -140
- हक आगू कहे महंमद, मोहे अर्स में बिना उमत । हमें दिया प्याला मेहेर का, कहे मोहे मीठा न लगे सरबत || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -23
- हक आप काजी होए बैठसी, सो क्या सहूर न किए सुकन । ला सरीक न बैठे किन में, ना कोई वाहेदत बिन || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -77
- हक आप सांचे होने को, सब विध कही सुभान । त्यों त्यों दिल ज्यादा चाहे, वास्ते करने ऊपर एहेसान || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -38
- हक आसिक बड़ी रूह का, और रूहों का आसिक । ए क्यों कहिए सीधा इस्क, बन्दों का आसिक हक || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -5
- हक आसिक रूहन का, इन इस्क का आब जे । इन आब में जो स्वाद है, ए रस जानें पीवन वाले || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -2
- हक आसिक हादीय का, और आसिक रूहन । ऐसा हक का सुकन, क्यों सहें बन्दे मोमिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -33
- हक आसिक हुआ याही वास्ते, सो रूहें क्यों न सुनें हक बात । ए कौन जाने अर्स रूहों बिना, कान गुन अंग अख्यात || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -10
- हक इनों में न पाइए, ना कछू सुनिया कान । सांच न पाइए इनों में, ए झूठे फना निदान || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -57
- हक इलम एही पेहेचान, कछू छिपा रहेना ताए । अर्स बका रूहें फरिस्ते, सब हहां देवें बताए || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -2
- हक इलम के जो आरिफ, मुख नूरजमाल खूबी चाहें । चाहें चाहें फेर फेर चाहें, देख देख उड़ावें अरवाहें || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -1
- हक इलम जो लदुन्नी, बका अर्स असल । एही दानाई हक की, कही जो कुल्ल अकल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -12
- हक इलम मारफत की, जाहेर किया नबी दिल नूर । कुफर काढ़ ईमान दिया, ऊग्या दिल मोमिन अर्सों सूर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -62
- हक इलम लदुन्नी जिन पे, सोई समझे हक रमूज । जो तन खिलवत अर्स के, सोई जाने हक दिल गुझ || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -71

- हक इलम सिर लेय के, वरनन करूँ हक जात । रूह मेरी सुख पावहीं, हिरदे बसो दिन रात || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -16
- हक इलम से होत हैं, अर्स बका दीदार । पट खोलत सब वार के, और नूर के पार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -81
- हक इलमें ए पिंड देखिए, ए पिंड बीच अर्स तन । एक जरा जुदागी ना रही, अर्स वाहेदत बीच वतन || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -37
- हक इलमें चुप कर न सकों, और सब्द में न आवे सिफत । ताथें हुकम केहेत है, सुनो जामें की जुगत || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -9
- हक इलमें पट खोल के, सब को चिन्हाए करे दिन । असों भिस्तों हद अपनी, करे कयामत उठाए बका तन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -19
- हक इलमें पट खोल के, सब को चिन्हाए करे दिन । असों भिस्तों हद अपनी, करे कयामत उठाए बका तन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -7
- हक इस्क आग जोरावर, इनमें मोमिन बसत । आग असल जिनों वतनी, यामें आठों जाम अलमस्त || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -4
- हक इस्क जाहेर हुआ, खेल मांहें दम दम । और न चौदे तबकों, बिना इस्क खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -34
- हक इस्क जो करत है, सो सब कानों की बरकत । अनेक सुख हैं इनमें, सो जानें हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -16
- हक उपजावत देवे को, सो हकै देवनहार । मैं दोष हक का देख के, क्यों होत गुन्हेगार || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -18
- हक ए सुख देवें हादी को, और देवें रूहन । ए सुख अर्स अजीम के, क्यों कहूं जुबां इन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -16, चौ -17
- हक कदम अर्स दिल में, सो दिल मोमिन हुआ जल । अरवा मोमिन जीव जल के, सो रूह जल बिन रहे न पल || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -45
- हक कदम दिल मोमिन, देख देख रूह भीजत । एक पाउ पल ना छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -72
- हक कदम मोमिन दिल में, और कदम रूह हिरदे । ए कदम नैन पुतली मिने, और रूह फिरत सिर पर ले || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -15
- हक कदम हक अर्स में, सो अर्स मोमिन का दिल । छूटे ना अर्स कदम, जो याही की होए मिसल || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -146
- हक कहे तुम भूलोगे, आप बैठे बका में जित । मुझे भी तुम भूलोगे, ऐसा खेल देखोगे बैठे इत || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -41
- हक कहे मुख अपने, महंमद मेरा मासूक । ए हक गुझ मोमिन जानहीं, जो दिल आसिक हैं टूक टूक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -121

- हक कहे मुख अपने, मैं रूहें राखी कबाए तले । कोई और न बूझे इनको, मेरी वाहेदत के हैं ए || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -62
- हक कहे मेरा नाम आसिक, सो भी सनके गझ मोमिन । ए जाने अरवा अर्स की, कहूं केते कानों गुन || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -8
- हक कहे मेरी साहेबी, और मेरा इस्क । हादी रूहों को अर्स में, ए सुध नहीं मुतलक || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -25
- हक का इस्क बढ़या, इस्क अपना जरा नाहें । जब दई इत बेसकी, तो इस्क क्यों न आवे दिल माहें || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -91
- हक का इस्क हम पें, पूरा पाया मैं । ए खेल देखाया नींद का, फरामोसी के से || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -9
- हक की खबर जो ल्यावहीं, सो तेहेकीक न रहे आकार । जो कदी रहे तो बेहोस, पर कर ना सके पुकार || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -39
- हक की बातें अनेक हैं, कही न जाए या मुख । इन झूठे खेल में बैठाए के, कई दिए कायम सुख || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -2
- हक के अंग का नूर जो, ए रूहों अर्स में सुध होत । इत सब्द न कोई पोहोंचहीं, जो कोट रोसन कहूं जोत || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -54
- हक के अंग का नूर है, ए जो अर्स बका खावंद । ए छबि इन सरूप की, क्यों केहेसी मत मंद || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -74
- हक के अंग के सुख जो, सो जड़ भी छोड़े नाहें । तो क्यों छोड़े अरवा अर्स की, हक अंग आया हिरदे माहें || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -33
- हक के दिल का इस्क, निपट बड़ी है बात । अजूं जाहेर रूहों ना हुई, अर्स सूरत हक जात || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -36
- हक के दिल का इस्क, रूह पैठ देखे दिल मांहें । तो हक इस्क सागर से, रूह निकस न सके क्यांहें || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -73
- हक के भूखन की क्यों कहूं, रंग नंग जोत सलूक । आतम उठ खड़ी तब होवहीं, पेहेले जीव होए भूक भूक || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -65
- हक के मुख का नूर जो, सो नरै सागर जान । तेज जोत या सलूकियां, सोभा सागर भस्या आसमान || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -28
- हक केहेवे नेकों को, दोस्त रखता हों में । या खुदी या हुकम, टेढ़ी होए नहीं इनों से || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -6
- हक को कबूं ना याद करें, हुए नहीं गलतान । खुद कबूं ना सुपने, कहें हम मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -30
- हक को काम और कछू नहीं, देवें रूहों लाड़ लज्जत । ए तो बिगर चाहे सुख देत हैं, तो मांग्या क्यों न पावत || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -28

- हक को जेता रूह देखहीं, सुध तेती ना बुध मन । तो सुपन जुबां क्या केहेसी, अंग हक बका बरनन || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -17
- हक खासलखासों को, खेल देखावें लैल का । नूर-तजल्ला बीच में, खेल देखें बैठे बीच बका || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -94
- हक खिलवत गाए से, जान्या हम को देसी जगाए । इस्क पूरा आवसी, पर हमें हाँसी करी उलटाए || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -55
- हक खिलवत जाहेर करी, इत सिजदा हैयात । इतहीं इमाम इमामत, इतहीं महंमद सिफात || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -91
- हक खिलवत सुख मोमिनों, लिखी फरमान में मारफत । कहां गए हमारे ए सुख, हम कब पावें ए बरकत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -30
- हक खेलोंने कई खेलावहीं, कई मोर कला पूरत । सो क्यों छोड़ें पांउं हक के, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -14
- हक चतुराई ना चौदे तबकों, हक बका कही न किन तरफ । ला मकान सुन्य छोड़ के, किन सीधा कह्या न एक हरफ || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -51
- हक चतुराई हक इलम, और हकै का हुकम । ए तीनों मिल केहेत हैं, है बात बड़ी खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -52
- हक चलाए चल ही, हक बैठाए रहे बैठ । सोवे उठावे सब हक, नहीं हुकम आड़े कोई ऐंठ || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -18
- हक चाही बानी बोलत, हक चाही जोत धरत । खुसबोए नरमाई हक चाही, हक चाह्या सब करत || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -60
- हक छाती नरम कोमल, रूह सदा रहे सूर धीर । पाए बिछुरे पिउ परदेस में, हाए हुए सो रही ना कछू तासीर || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -54
- हक छाती निपट नजीक है, सेहेरग से नजीक कही । हक सहूर किए बिना, आड़ी अंतर तो रही || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -68
- हक छाती में लाड़ लज्जत, और छाती में असल आराम । ए सब सुख को रस पूरन, जो रूह लग रही आठों जाम || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -82
- हक छाती रूहथें न छूटहीं, नजर न सके फेर । जो कोई रूह अर्स की, ताए हक बिना सब अन्धेर || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -81
- हक छाती सलूकी सुनके, रूह छाती न लगे घाए । धिक धिक पड़ो तिन अकलें, हाए हाए ओ नहीं अर्स अरवाए || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -53
- हक जात अंग अर्स का, क्यों कर बरनन होए। इन सरूप को सुपन भोम का, सब्द न पोहोंचे कोए || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -2
- हक जात अर्स उन तन से, बीच रेहेत मोमिन के दिल । अर्स मोमिन दिल तो कह्या, यों हिल मिल रहे असल || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -23

- हक जात जाहेर करूं, और जाहेर हादी उमत । नूर मकान जाहेर करूं, ए एकै जात सिफत || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -3
- हक जात वाहेदत जो, छोड़े ना एक दम । प्यार करें मांहों-मांहें, वास्ते प्यार खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -54
- हक जानें सो करें, अनहोनी सो भी होए। हिसाब किए सुपन में, मुतलक न देखे कोए || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -10
- हक जाहेर बीच दुनीके, रूहें समझके समझावत । हुआ फुरमाया रसूल का, तो जाहेर हुई हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -85
- हक जाहेर हुए बिना, मेरी बड़ाई जाहेर क्यों होए । कायम सूर ऊगे बिना, क्यों चीन्हे रात में कोए || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -85
- हक जुबान की बुजरकी, किया खेल में बड़ा विस्तार । सो सुख लेसी हम अर्स में, जिन को नहीं सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -17
- हक जो नूर के पार है, तिन खुद खोले द्वार । बका द्वार तब पाइया, जब खोल देखाया पार || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -67
- हक तरफ जाने नूर अछर, और दूजा न जाने कोए। पर बातून सुध तिन को नहीं, हक इलम देखावे सोए || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -46
- हक ताला ने किया फरमान, डांटत हैं कीने कुफरान । अंजील तौरेत से जो फिरे, सोई काफर हुए खरे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -10, चौ -3
- हक दिया चाहे लज्जत, ताए इलम देवें बेसक । रूह बातें करें हकसों, देखे हौज जोए हक || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -80
- हक देखे जो खड़ा रहे, तो दूजा कहया जाए। दम ख्वाबी दूजे क्यों कहिए, जो नींद उड़े उड़ जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -115
- हक देखें पुतली अपनी, मैं देखू अपनी पुतलियां । मैं हक देखू हक देखें मुझे, यों दोऊ अरस-परस भैयां || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -35
- हक देखें मेरे नैन में, पतली जो अपनी । मैं अपनी देखू हक नैन में, यों दोऊ जुगले जुगल बनी || ग्रं - सिनगार, प्र -14, चौ -36
- हक देखे वजूद ना रहे, ज्यों दारू आग से उड़त । यों वाहेदत देखें दूसरा, पाव पल अंग न टिकत || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -3
- हक धरत पाउं उठावत, तब जानी जात चतुराए । सो समझें हक इसारतें, जो होए अर्स अरवाए || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -57
- हक नजर या पर पड़े, तो उड़े जिमी आसमान । नूर आगे अंधेरी ना रहे, तुम दिल दे करो पेहेचान || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -12
- हक नजीक सेहेरग से, पर तरफ न पावे कोए। ढूंढ़या अव्वल से अब लग, पर किन बका न रोसन होए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -62

SPJIN

- हक नरम पाउं उठाए के, और धरत जिमी पर । ए अर्स बीच मोमिन जानहीं, जिन को खुसबोए आई फजर || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -56
- हक नाहीं मिने सृष्ट सुपन, ढूंढ्या ला के लोकन । जो जुलमत से उतपन, दई साख आप मुख तिन || ग्रं - खुलासा, प्र -11, चौ -5
- हक नूर बिना जरा नहीं, नूर सब में रह्या भराए । नूर बिना खाली कहूं नहीं, रया नूरै नूर जमाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -54
- हक नूर रूह महंमद, रूहें महंमद अंग नूर । ए हमेसा वाहेदत में, तो सब मुख ए मजकूर || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -70
- हक नेक नैन मरोरत, होत रूहों सुख अपार । तो बात कहें सुख हक के, सो क्यों कहूं सुख सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -11
- हक न्यामत मैं देत हों, जो होसी अर्स अरवाए । ए सुनते निसानियां अर्स की, लगसी कलेजे घाए || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -67
- हक पाग जो निरखते, होए अचरज मांहें सहूर । ए याद किए क्यों जीव ना उड़े, देख नूरजमाल मुख नूर || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -36
- हक पाग बनावें हाथ अपने, अर्स खावंद दिल दे । ए देखें रूह सुख पावत, जब हाथ गौर पेच ले || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -38
- हक पेहेचान किनको हुई, इत दूसरा कौन केहेलाए । ऐसी काढ़ी बारीकी खुदियां, हक भी पेहेचान कराए || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -3
- हक पेहेचान के के थेई, हित बिओ न कोई आए । जे कढे बारीकियूं खुदियूं, डे थो हक सांजाए || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -3
- हक पैगाम भेजत है, सो देत साहेदी करान । दे साहेदी खुदा खुदाए की, सो खुदाई करे बयान || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -52
- हक प्रेम वचन मुख बोलते, जोर आवत है जोस । ए बानी रूह को विचारते, हाए हाए अजूं उड़े ना फरामोस || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -31
- हक फुरमान मासूक ल्याइया, कुंजी रूहअल्ला साथ । सो इमाम खोलें बीच अर्स रूहों, जो एक तन सुनंत-जमात || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -72
- हक फेर फेर ऊपर जगावहीं, बिना हुकम न जागे अंदर । फेर फेर बड़ाई मांगें इत, हक हाँसी करें इनों पर || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -13
- हक बका का किबला, कया जाहेर होसी आखिरत । पावें न माएना जाहेरी, मुसाफ माएने इसारत || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -20
- हक बका का बातून, जो किया रूहों सों गुझ । केहेलाइयां बातें छिपियां, खिलवत करके मुझ || ग्रं - खिलवत, प्र -13, चौ -3
- हक बका मता जाहेर किया, पर ए समझया नाहीं कोए । कह्या हरफै के बयान में, बिना ताले न पेहेचान होए || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -68

- हक बका में जेता मता, सो छिपे ना मोमिनों से । खेल में आए तो भी अर्स दिल, ए लिख्या फुरमान में || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -3
- हक बका सुख कई विध, अर्स में नहीं सुमार । बिन बूझे सुख हम लेते, हुते न खबरदार || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -61
- हक बड़ी रूह बैठें तखत पर, फिरती रूहें बैठत । दो दो सै बीच गुरज के, बारे हजार रूहें इत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -9, चौ -27
- हक बड़ी रूह हींचे नूर में, और रूहें नूर बारे हजार । जोत नूर आकास में, नूर भस्यो करे झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -9
- हक बतावत जाहेर, मेरे खूबों में महंमद खूब । सो मोमिन छोड़ें क्यों कदम, जाको हकें कया मेहेबूब || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -81
- हक बरनन करत हों, कहूं नया किया सिनगार । ए सब्द पोहोंचे नहीं, आवत न मांहे सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -6
- हक बरनन जिमी सुपने, हकमें कह्या नेक सोए। हक इस्क एक तरंग से, रूह निकस न सके कोए || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -2
- हक बरनन फेर फेर करें, फेर फेर एही बात । एही अर्स रूहों खाना पीवना, एही वतन बिसात || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -4
- हक बातें खेलें हंसें, और गीत पिया के गाए । रोवें उरझे पिउ की, और बातन सों मुरछाए || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -33
- हक बातें तो इत सुनसी, पर हम जो करत गुजरान । पेहेले कहूं आगे नूर-तजल्ला, जो ले खड़ा हक फुरमान || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -9
- हक बातें रूह हुकमें सुने, हकमें होए दीदार । हुकमें इलम आखिरी, खोले हुकमें पार द्वार || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -63
- हक बानी कानों सुनती, कानों सुन के करती में बात । सो अवसर हिरदे याद कर, हाए हाए नूर कानों का उड़ न जात || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -25
- हक बिना जो कछु कहे, सो होवे मुसरक । और जरा नहीं कहूं कितहूं, यों कहे इलम हक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -58
- हक बैठे अपने अर्स में, सो अर्स मोमिन का दिल । तो अनेक खूबी खुसालियां, हम क्यों न लेवें मिल || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -7
- हक बैठे आए अंदर, पट अर्स दिए सब खोल । जो कही मारफत महंमदें, सो रूहअल्ला कहे सब बोल || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -13
- हक बैठे खेल देखावने, जिन फरामोसी हाँसी होए । इस्क हक का आवे दिल में, ए फरामोसी हांसी जाने सोए || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -52
- हक बैठे दिल अर्स में, कह्या हकें अर्स दिल मोमिन । रूहें पोहोंचाई हकें अर्स में, हक बैठे अर्स दिल रूहन || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -67

- हक बैठे पौढें भोम तीसरी, आग झरोखों आरोगत । रूहें क्यों छोड़ें इन कदम को, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -8
- हक बैठे रूहों मिलाए के, खेल देखावन काज । बड़ी भई रदबदल, रूहें बड़ी रूहसों राज || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -1
- हक बोलावें रूह एक को, सो सुख पावे अतंत । सो बात सुन रूह हक की, सब रूहें सुख पावत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -106
- हक बोलावें सरत पर, आपन रेहेने चाहें इत । लेवें गुझ मासूक का, कहें दुनियां को हकीकत || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -12
- हक भी कहे दिल में, अर्स भी कह्या दिल । परदा भी कह्या दिलको, आया सहूरें बेवरा निकल || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -69
- हक महंमद के बीच में, को आड़े परदे दोए । सत्तर साल बीच राह कही, जाहेरी माएने निसां क्यों होए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -19
- हक महंमद मोमिन मुसाफ, ए पेहेचान होसी जब । झूठ सांच दोऊ मिल रहे, पाउ पलमें जुदे होसी तब || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -28
- हक मारफत दिन होएसी, दिल महंमद सूर नूर । हक अर्स बका जाहेर किए, मिटी हवा तारीक देख जहूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -72
- हक मुख छब हिरदे मिने, जो आवे अंतस्करन । तिन भेली लज्जत लाड़ की, आवे अर्स के अंग वतन || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -26
- हक मुख सब विध सागर, सुख अलेखे अपार । ए सुख जाने निसबती, जिन निस दिन एही विचार || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -76
- हक मुख सलूकी क्यों कहूं, छबि सोभित गौर गाल । बरनन करते ए सूरत, हाए हाए लगी न हैड़े भाल || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -98
- हक मुख हुकमें देख ही, हकम देखावे खेल । हुकम देवे सुख लदुन्नी, हुकम करावे इस्क केलि || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -77
- हक मुखथैं बोलें वचन, स्वर मीठा निकसत । सो सुनत अर्स रूहों को, दिल उपजे हक लज्जत || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -9
- हक मेहेर बड़ी न्यामत, रूह जिन छोड़े एह उमेद । ए फल सब बंदगीय का, जो कहे मुतलक अर्स भेद || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -40
- हक रस रंग जोस जोबन, चढ़ता सदा देखत । अर्स अरवा रूहन को, हक प्रेमें देत लज्जत || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -39
- हक रसना के सुख जो, आवे ना गिनती मांहें । कई सुख अलेखे अपार, क्यों कहे जाएँ जुबाएँ || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -41
- हक रसना गुन खेल में, पाव हरफ को होए न सुमार । तो जो गुन रसना अर्स में, ताको क्यों कर पाइए पार || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -35

- हक रसना गुन जानें रूहें, जा को निस दिन एही ध्यान । ए खेल कबूतर क्या जानहीं, हक रसना के बयान || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -37
- हक रसना बोले जो अर्स में, जिन किन को वचन । सो सब कारन जानियो, वास्ते सुख रूहन || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -31
- हक रसना सुख दिए देत हैं, और सुख देंगे आगू जे । सो इतथे सब हम देखत, सुख केते कहूं रसना के || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -63
- हक रसनाएं ऐसी सुध दई, हुआ है होसी बका मांहें । यों खोली अंतर रूह नजर, ऐसी हुई ना रूहों सों क्यांहें || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -64
- हक रूहें बीच अर्स के, नहीं जदागी एक खिन । हुकमें नैन कान दीजिए, अब देखो नैनों सुनो वचन || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -68
- हक रूहों को बुलाए के, नजीक बैठाई ले । ए जाहेर करत है रसना, ए जो अन्तर का सनेह । || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -24
- हक ल्याए हिसाब में, जो कहावे अर्स अपार । सो अर्स दिल मोमिन का, ए किन बिध कहूं सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -43, चौ -18
- हक वजूद महंमद कहे, नूर पार तजल्ला नूर । रद-बदल वास्ते उमत, पोहोंच के करी हजूर || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -26
- हक संदेसे लेत हो, कौन तरफ तमसों हक । आया इलम खुदाई तुम पे, तिनमें जरा न सक || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -72
- हक साथ मैं आऊंगा, असराफील ईसा इमाम । लिखे फैल सबन के, जासों पेहेचानिए तमाम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -6
- हक सिनगार कीजे तो बरनन, जो घड़ी पल ठेहेराए। एक पाव पलमें, कई रूप रंग देखाए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -20
- हक सिर पर इन विध खड़े, देखत ना हक तरफ । जो स्वाद लगे मेहेबूब का, तो मुख ना निकसे एक हरफ || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -2
- हक सुख खुसबोए के, कई नए नए भोग लेत । ले ले हक विवेक सों, नए नए रूहों सुख देत || ग्रं - सिनगार, प्र -15, चौ -11
- हक सुराही ले हाथ में, दें मोमिनों भर भर । सुख मस्ती देवें अपनी, और बात न इन बिगर || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -24
- हक सूरत अति सोहनी, अति सुन्दर सोभा कमाल । बैठे हक इस्क छाया मिने, दूजे इस्क लगे दिल झाल || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -92
- हक सूरत अति सोहनी, दोऊ जुगल किसोर । गौर मुख अति सुन्दर, ललित कोमल अति जोर || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -50
- हक सूरत किन देखी नहीं, है कैसी सुनी न किन । तरफ न जानी चौदे तबक में, महंमद पोहोंचे ठौर तिन || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -59

- हक सूरत किन पाई नहीं, ना अर्स पाया किन । तरफ भी किन पाई नहीं, मांहें त्रैलोकी त्रैगुन || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -60
- हक सूरत की बारीकियां, ए जाने अर्स अरवाए । हक सूरत तो जान हीं, जो कोई और होए इप्तदाए || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -128
- हक सूरत के दिल का, मोमिनों से सनेह । हेत प्रीत इस्क की, हाए हाए आई नहीं काहूं एह || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -42
- हक सूरत को नूर हैं, जिन जानो अंग और । इनको नूर रूहें वाहेदत, कोई और न पाइए इन ठौर || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -30
- हक सूरत ठौर कायम, कबहूं न पाया किन । रूह अल्ला के इलम से, मेरी नजर खुली बातन || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -48
- हक सूरत नूर के पार है, तहां सब्द न पोहोंचे बुध । चौदे तबक छाया मिने, इने नहीं सूर की सुध || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -34
- हक सूरत रूह मोमिन, निसबत एह असल । मोमिन रूहें कही अर्स की, तो अर्स कहया मोमिन दिल || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -3
- हक सूरत वस्तर भूखन, बीच बका अर्स के । तिन को निरने इन जुबां, क्यों कर केहेवे ए || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -2
- हक सूरत सलूकी क्यों कहूं, महंमदें कही अमरद । किसोर कही मसीय ने, सोभा कही न जाए मांहें हद || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -50
- हक सूरत हादी साहेद, मसहूद है उमत । सो हक खिलवत सब जानहीं, और ए जाने खेल रोज कयामत || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -2
- हक स्वर कैसा होएसी, और कैसी होसी मुख बान । सुख बातें क्यों कहूं रसना, चाहे दिल सुनने सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -10
- हक हकमें कछु जाहेर किए, और छिपे रखे हकम । सो हुकमें अव्वल आखिर को, अब जाहेर किए खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -19
- हक हकीकत मारफत, रूहें इस्के राह लई जाए । सो बिन चले पाँउं हक बका, दई सेहेरग से नजीक बताए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -93
- हक हजूर रूहों ने, लई सिजदे बड़ी लज्जत । किया रूहों हैयाती सिजदा, ए आखिरी इमामत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -14
- हक हजूर रूहों ने, लई सिजदे बड़ी लज्जत । किया रूहों हैयाती सिजदा, ए आखिरी इमामत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -26
- हक हमारे इत बैठके, कई विध करें मनुहार । कई पसु पंखी अर्सके, इत सुख देते अपार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -17
- हक हाथ दिन तो कहे, जो हमें आप छिपाए । सो निसान पाए दिन पाइए, सो जाहेर दुनी क्यों देख्या जाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -20

- हक हाथों की बरनन करी, मच्छे कोनी कलाई काड़े। ए सुन जीव क्यों रेहेत है, ले ख्वाब झूठे भांडे || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -109
- हक हादी अर्स मोमिन, सो तो पेहेले हक दिल मांहें । जो चीज प्यारी रूह को, तो हक पल छोड़ें नाहे || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -17
- हक हादी इतहीं, इतहीं असलू तन । खोल आंखें इत रूह की, एह तेरा बका वतन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -22
- हक हादी की मेहेर से, भिस्त आठ होसी आखिरत । पर ए चरन ना आवें दिल में, बिना असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -43
- हक हादी ना चीन्ह सके, ना कछु चीन्हे मोमिन । भूले मोमिन का सिजदा, तो हुई दस बिध दोजख तिन || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -31
- हक हादी बिना झंडा हकीकी, और किने न खड़ा किया जाए। सो इन बखत सदी आखिरी, जिन झंडे रात के दिए उठाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -9
- हक हादी रूहन सों, इत खेलें माहें मोहोलन । ए रहे हमेसा अर्स में, हौज जोए बागन || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -45
- हक हादी रूहन सों, जो किया कौल अव्वल । ए खुलासा मेयराज का, जो रूहों हुई रदबदल || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -1
- हक हादी रूहनसों, जो हुई मुकाबिल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -102
- हक हादी रूहें अर्स में, इस्क इलम बेसक । जोस हुकम मेहरबानगी, हकीकत मारफत मुतलक || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -4
- हक हादी रूहें इन चौगान में, कई पसु पंखी दौड़ावत । मोमिन लेवें सुख कदमों, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -39
- हक हादी रूहें खेलें, उठे बैठे दौड़ें करें चाल । ए जाने अरवाहें अर्स की, जो रेहेत हमेसा नाल || ग्रं - सिनगार, प्र -19, चौ -64
- हक हादी रूहें चांदनी बैठत, ऊपर होत बखत मलार । मोर बांदर दादुर कोकिला, सुख देत कर टहुंकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -22
- हक हादी रूहें निसबत, ए अर्स की वाहेदत । जो रूह होवे अर्स की, सो क्यों छोड़ें ए न्यामत || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -8
- हक हादी रूहें नूर ठौर, हक जात नूर वाहेदत । कहे महामत नूर बिलन्द में, ए अपनी नूर कयामत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -135
- हक हादी रूहें नूर भरे, खेलें नूर में कर सिनगार । नूर बिना कछू न पाइए, नूर झलकारों झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -24
- हक हादी रूहें नूर में, झूलत नूर खुसाल । इन समें नूर बिलंद का, किन विध कहूं नूर हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -97

- हक हादी रूहें पाट पर, मन चाह्या सिनगार साजत । रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -22
- हक हादी रूहें बड़े मोहोल में, इन गुरजो सुख को गिनत । ए कदम सुख मोमिन जानहीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -61
- हक हादी रूहें मोमिन, ए अर्स में वाहेदत । पर ए जाने अरवाहे अर्स की, जो रूहें हक खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -117
- हक हादी रूहें रूहअल्ला, ए बीच अर्स वाहेदत । करे इलम लदुन्नी बेवरा, इत और न कोई पोहोंचत || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -47
- हक हादी रूहें लाहूत में, ए महंमद रूहों वतन । इस्क हकीकत मारफत, तो हक अर्स दिल मोमिन || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -55
- हक हादी रूहें सुख अर्स चांदनी, अर्स अंबर जोत होवत । सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -9, चौ -16
- हक हादी वाहेदत बीचमें, कहे जो मोमिन । इलम कहे इनों सिफतें, और नाहीं सुकन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -49
- हक हाँसी बातें जानें हक, या जाने हक इलम । इन इलमें सिखाई रूहों, सो बातें अर्स में करसी हम || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -29
- हक हिंमत देसी तेहेकीक, हाँसी होए न हिंमत बिन । ए गुझ बातें तब जानिए, हक सहूर आवे हादी रूहन || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -32
- हक हुकम ऐसा करत है, ना तो तेहेकीक ना रहे तन । अब हक इत रूहों राखत, कोई अचरज हाँसी कारन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -22, चौ -15
- हक हुकम जाहेर हुआ, दोऊ हादी हुए मेहेरबान । खुली हकीकत मारफत, तो जाहेर करूं फुरमान || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -23
- हक हुकम तो है सब में, बिना हकम कोई नाहें । पर यामें हुकम नजर लिए, और रूह का बड़ा मता या मांहें || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -17
- हक हुकम राखत जोरावरी, बात आई ऊपर हुकम । ना तो रहे ना सुन वचन, पर ज्यों जाने त्यों करें खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -60
- हक हुकम हादी चलावते, क्यों न लीजे अर्स राह । मूल सरूप ले दिल में, उड़ाए दीजे अरवाह || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -106
- हक हुकमें सब बेवरा किया, वास्ते हादी रूहन । जो सहूर कीजे मिल महामती, तो लज्जत लीजे अर्स तन || ग्रं - सिनगार, प्र -26, चौ -27
- हक हुकमें सब मिलाइया, अर्स मसाला पूरन । हादी रूहों जगावने, करावने हक बरनन || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -13
- हक हैड़ा देख कर, मेरे हैड़े रेहेत क्यों दम । मांग्या सुख इत देवे को, सो राखत मासूक हुकम || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -41

- हक हैड़े के अंदर, मता अनेक अलेखे । उपली नजरों न आवहीं, जो लों रूह अंदर ना देखे || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -31
- हक हैडे में इस्क, सब अंगों सनेह । रूह देखसी हक मेहेर से, निसबती होसी जेह || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -38
- हक हैड़े में एही बसे, मैं लाड़ पालों रूहों के । ए हक हुज्जत आवे तिनों, तन असल अर्स में जे || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -39
- हक हैड़े में जो हेत है, रूहों सों प्रेम प्रीत । जिन मेहेर होसी निसबत, सोई ल्यावसी परतीत || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -37
- हक हैड़े में निस दिन, सुख देऊं रूहों अपार । जिन रूह लगी होए अन्दर, सो जानेगी जाननहार || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -40
- हक हैड्रा हिरदे ग्रहिए, दिल में रहे दायम । सो हैड़ा अंग रूह का, उठ खड़ा हुआ कायम || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -31
- हकम से अब केहेत हों, सुनियो मोमिन दिल दे । हक सहूरें विचारियो, हकें सोभा दई तुमें ए || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -5
- हकमें इस्क आवहीं, कदमों जगावे हुकम । करनी हुकम करावहीं, कछू ना बिना हुकम खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -43
- हकमें ए कुंजी ल्याया इलम, हकमें ले आया फरमान । दई बड़ाई रूहों हुकमें, हुकमें दई भिस्त जहान || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -3
- हकमें कई मता पोहोंचाईया, बीच ऐसी जुदागी में । हकें न्यामत दे अघाए, कई हांसी करियां हम सें || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -37
- हकमें दिल में रोसनी, सुध हुकमें अर्स नूर । मुकैयद मुतलक हुकमें, हुकमें अर्स सहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -61
- हकमें पूरी सब उमेद, और बाकी हाथ हुकम । ए इलमें बेसक करी, अब कहा कहूं खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -50
- हकमें मोमिनों वास्ते, कई चीजें करी पैदाए । अर्स अरवाहें पेहेचान, कई विध हुकम कराए || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -44
- हकी हक अर्स करे जाहेर, ऊग्या कायम सूर फजर । होसी सब हैयाती, देख कायम खिलवत नजर || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -26
- हकीकत कुरान की, सो पोहोंची ठौर नूर । आगे हक के दिल की, सो मारफत में मजकूर || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -2
- हकीकत कुरान में, ए लिखी नीके कर । सबको करसी कायम, जाहेर हुए कायम खबर || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -63
- हकीकत तले पहाड़ की, ए जो नेक कही जुगत । ए विस्तार इत बोहोत है, जुबां कर न सके सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -53

- हकीकत फुरमानकी, कहूं सुनो सब मिल । नूर अकल आगे ल्याएके, साफ करूं तुम दिल || ग्रं - सनंध, प्र -1, चौ -11
- हकीकत मारफत की, हक बातें बारीक । जित नहीं सिफायत महंमद की, सो लरे लीक ले लीक || ग्रं - खुलासा, प्र -5, चौ -30
- हकीकत मारफत के, इनको खुले द्वार । उतरे नूर बिलंद से, याको वतन नूर के पार || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -31
- हकीकत सों समझावना, समझे इसारत सों मोमिन । हक सूरत दृढ़ कर दई, तब दिल अर्स हुआ वतन || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -63
- हकीकत हिंदुअन की, सो देखो चित ल्याए । और जो मुस्लिम की, सो भी देऊं बताए || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -16
- हकुल्यकीन और सुंनी जोए, पेहेले ईमान ल्यावेगा सोए। पीछे जाहेर होसी साहेब, तब तो ईमान ल्यावेंगे सब || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -1, चौ -40
- हकें अब लिए फेर अंधेर से इन बेर, रूहें मोमिन पोहोंचियां अर्स माहें तन । बृज रास जागनी तीनों सुख देय के, मोमिन तन किए धंन धंन || ग्रं - किरन्तन, प्र -116, चौ -3
- हकें अर्स कहया अपना, जो अर्स दिल मोमिन । सो मोमिन उतरे अर्स से, है असल निसबत तिन || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -12
- हकें अर्स कहया दिल मोमिन, अर्स में मता हक सब । अजूं हक आड़े पट रहे, ए देख्या बड़ा तअजुब || ग्रं - सिनगार, प्र -11, चौ -62
- हके अर्स कहया दिल मोमिन, ऐसी दई बुजरकी रूहन । ढूंढ़ ढूंढ़ थके चौदे तबकों, पर बका तरफ न पाई किन || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -38
- हकें अर्स कहया दिल मोमिन, और भेज दिया इलम । क्यों आवें अर्स दिल झूठ में, इत है हक का हुकम || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -110
- हकें अर्स किया दिल मोमिन, ए मता आया हक दिल से । हके दिल दिया किया लिख्या, हाए हाए मोमिन डूब न मुए इनमें || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -104
- हके अर्स किया दिल मोमिन, सो मता आया हक दिल सें। तुमें ऐसी बड़ाई हकें लिखी, हाए हाए मोमिन गल ना गए इन में || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -6
- हकें अर्स की सुध सब दई, पाई हकीकत मारफत । हक हादी रूहें खिलवत, ए बीच असल वाहेदत || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -43
- हकें अर्स लिख्या मेरे दिल को, क्यों रहे रूह सुन सुकन । एक दम ना रहे बिना कदम, पर रूहों ठौर बैठा हक इजन || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -72
- हकें आए किया अर्स दिल को, बीच ल्याए कदम न्यामत । सिर हुकमें हुज्जत तो लई, जो असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -7, चौ -12
- हके आदम कहया रसूल को, वह तो अबलीसें किया ख्वार । गेहूं खिलाए काढ़या भिस्त से, करके गुन्हेगार || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -42

- हकें आप पढ़ाइया, अंगुली से आदम को । दे इलम नाम पढ़ाए, सक न सुभे इनमों || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -27
- हकें आसिक नाम धराइया, वाको भी अर्थ ए। मासूक उलट आसिक हुआ, सो भी बल कानन के || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -7
- हके इलम ऐसा दिया, जो चौदे तबकों नाहें । और नाहीं नूर मकान में, सो दिया मोहे सुपने माहें || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -33
- हके इलम दिया अपना, सो आया इस्क बखत । सो इस्क न देवे बढ़ने, ऐसे किए हिरदे सखत || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -40
- हके इलम भेज्या याही वास्ते, देने हक अर्स लज्जत । सो मांगी लज्जत सब देय के, आखिर उठावसी दे हिंमत || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -30
- हकें ऐसा साथ इमाम के, दिया फरिस्ता मरद । उड़ावे जिमी पहाड़ जड़ मूल से, सो होसी फरिस्ता कैसे कद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -86
- हकें कया अलस्तो-बे-ख-कुंम, कालू बले कया रूहन । खेल देख मुंह फेरोगे, न मानोगे रसूल सुकन || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -4
- हके कया रूहन को, जिन तुम जाओ भूल । इस्क ईमान ल्याइयो, मैं भेजोंगा रसूल || ग्रं - किरन्तन, प्र -111, चौ -3
- हकें करी अर्समें रूहोंसों, पेहेलें रदबदल । सो इलमें जगाए दिल अर्स कर, हमें दई कुल्ल अकल || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -50
- हकें करी रूहें साहेद, और फरिस्ते साहेद । आप भी बीच साहेद, कौल किया वाहिद || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -76
- हके कलाम लिखे अपने, कहे मैं भेजे मोमिनों पर । सो फिरका खोले इसारतें रमूजें , बिन मोमिन न कोई कादर || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -37
- हकें कहया अरवाहों उतरते, हम बैठे बीच लाहूत । तुम अर्स भूलो आप हमको, देखो नहीं बीच नासूत || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -26
- हकें कहया उतरते, तुम जात बीच नासूत । आप वतन जिन भूलो मोहे, मैं बैठा बीच लाहूत || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -23
- हकें कहया गुनाह किया उमतें, कहया कुलफ ऊपर दिल । ए जो दई फरामोसी खेल में, जो उतरते मांग्या रूहों मिल || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -7
- हकें कहया छबीसमें सिपारे, मैं मेरे बंदोंसे अकरब । वे मोमिन एक तन अर्समें, ताए सेहेरग से नजीक रब || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -81
- हकें कहया रब्द मैं ना करूं, कर देखाऊं तुमको । इस्क मेरा तब देखो, नेक न्यारे हो मुझ सों || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -21
- हकें कहया हादी रूहन से, तुम नहीं मेरे माफक । तुम तेहेकीक मेरे मासूक, मैं तुमारा आसिक || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -58

- हकें काम लिया जो दिल में, सो जब हुआ पूरन । मकसूद सबों हो रह्या, तब वाही फजर कह्या दिन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -33
- हकें किया सब हाँसीय को, जो जरे जरा मांहें खेल । इस्क रब्द के कारने, तीन बेर आए मांहें लैल || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -28
- हके कौल किया जिन रूहन सों, सोई वारस हैं फुरकान । जिन वास्ते आए हक मासूक, ए दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -5
- हकें कौल किया भेजों मासूक, तिन के साथ फरमान । भेज इलम लेऊं जगाए, देसी रूह अल्ला सब पेहेचान || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -5
- हकें खेल देखाए के, इलम दिया बेसक । हक हाँसी करे रूहन पर, देसी सबों इस्क || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -114
- हकें खेल देखाया याही वास्ते, सुख देखावने अपने अंग । सुख लेसी बड़ा इस्क का, रूहें ले विरहा मिलसी संग || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -14
- हके चाह्या करों बेवरा, देखाऊं रूहों को। इस्क न पाइए बिना जुदागी, सो क्यों होवे वाहेदत मों || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -143
- हकें जगाए मोमिन, अपनी जान निसबत । अर्स किया दिल मोमिन, बैठाए बीच खिलवत || ग्रं - किरन्तन, प्र -118, चौ -7
- हकें डिंना सुख आलम में, भेरका पांणके । से सुख गिडा रात निद्रमें, के भत चुआं सुख ए || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -22
- हकें तो कह्या अर्स दिल को, जो इनों असल अर्स मैं तन । हक कदम छूटे दिल से, ताए क्यों कहिए मोमिन || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -14
- हकें तोहे खेल देखाइया, बेवरा वास्ते इस्क । क्यों न देखो पट खोल के, नजर खोली है हक || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -16
- हकें दई किताबें मेहेर कर, जो जिस बखत दिल चाहे । सोई आयत आवत गई, जो रूह देत गुहाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -4
- हकें दई जुदागी हमको, इस्क बेवरे को । बिना जुदागी बेवरा, पाइए ना अर्स मों || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -48
- हकें दिया इलम अपना, तिनका तो हक से काम । और हम को क्या हक बिना, रात दिन लेना क्यों आराम || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -70
- हकें दिया लदुन्नी जिनको, सो बैठे अर्स में बेसक । जब कौल पोहोंच्या सरत का, तब होसी दुनी इत दोजक || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -123
- हके दिल किया अर्स अपना, इन पर बड़ाई न कोए । ए सुख लें मोमिन दुनी में, जो अर्स अजीम की होए || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -56
- हके दिल को अर्स तो कह्या, करने मोमिन पेहेचान । कहे मोमिन उतरे अर्स से, तन अर्स एही निसान || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -21

- हकें देखाई इन वास्ते, अपनी जो कुदरत । अर्स बड़ाई पाइए, ए देखें तफावत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -26
- हकें देखाया किबला, बीच पाइए मोमिन के दिल । ऊपर तले न दाएँ बाएँ, सूरत हमेसा असल || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -56
- हकें देखाया दरिया मेहेर का, सो अंधेरा क्यों ए ना होए । करसी कायम चौदे तबक, बरकत हादी रूहों सोए || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -66
- हके दोस्त कहे औलिए, भए ऐसे बुजरक । इनों को देखे से सवाब, जैसे याद किए होए हक || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -24
- हकें द्वार दिया हाथ अपने, और दई इलम पूरी पेहेचान । तो क्यों सहें आड़ा पट, क्यों न खोले द्वार सुभान || ग्रं - सिंधी, प्र -15, चौ -12
- हकें न छोड़े अव्वल से, अपना इस्क दिल ल्याए । आप इस्क न छोड़ी निसबत, पर मैं गई भुलाए || ग्रं - खिलवत, प्र -6, चौ -31
- हके निसबत वास्ते, कई बंध बांधे माहें खेल । सब सुख देने निसबत को, तीन बेर आए माहें लैल || ग्रं - सागर, प्र -14, चौ -7
- हके नेक करी महंमद सों, सब-मेयराज में मजकूर । सो वास्ते रूहों के साहेदी, सो रूहअल्ला करी जहूर || ग्रं - खिलवत, प्र -9, चौ -43
- हकें पोहोंचाई इन मजलें, और दोष हक को देवत । एही मैं मारी चाहिए, जो बीच करे हरकत || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -20
- हके फरमाया चौदे तबक, है चरकीन का चरकीन । सो छोड़ें एक मोमिन, जिनमें इस्क आकीन || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -74
- हके महंमद मोमिनों वास्ते, कई मेहेर कर खेल देखाए । एक दूर किए इनों वास्ते, एक नजीक लिए बोलाए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -58
- हके मेहेर बिध बिध करी, पर किन किन खोली न नजर । सो भी वास्ते इस्क के, करसी बातें हाँसी कर || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -39
- हकें रूहों को दई, अपनी जो न्यामत । इन नासूतें भुलाए दई, हक की हकीकत || ग्रं - किरन्तन, प्र -111, चौ -14
- हकें लिख भेजी साथ हादी के, रूहों ऊपर इसारत । और कोई समझे नहीं, बिना हक वाहेदत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -103
- हकें लिखे समझ इसारतें, या ल्याया समझे सोए । या समझें आई जिन पर, और बूझे जो दूसरा होए || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -89
- हकें लिख्या कुरान में, पेहेले मेरा प्यार । जो तुम पीछे दोस्ती करो, तो भी मेरे सच्चे यार || ग्रं - खिलवत, प्र -8, चौ -40
- हकें लिख्या फरमान में, मेरा अर्स मोमिन कलूब । क्यों न जागो देख ए सुकन, दिल में अपना मेहेबूब || ग्रं - सनंध, प्र -29, चौ -3

- हकें लिख्या मैं करूँ हिदायत, एक नाजी फिरके को । हुआ हजूर ले हक इलम, जले बहत्तर दोजख मों || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -38
- हकें सिफत लिखी नामें पैगंमरों, बीच हदीसों कुरान । सो कही सिफत सब महंमद की, ए जाने दिल अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -10
- हकें सुख अर्स देखाइया, इलम दे करी बेसक । हम क्यों रहें इन मासूक बिना, जो कछुए होए इस्क || ग्रं - परिक्रमा, प्र -22, चौ -12
- हकें हम रूहों वास्ते, अनेक वचन कहे मुख । सो रूहें जागे हक इस्क का, आपन लेसी अर्स में सुख || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -12
- हके हाथ हिसाब लिया मोमिनों, तोड़या गुमान दे नुकसान । तित बैठे अपना अर्स कर, ए दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -31
- हके हुकम किया दिल पर, तब खेल मांग्या हम एह । तब हमको खेल देखाइया, खेल हुआ नूर का जेह || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -61
- हके हुकम यों किया, कहे हरफ नब्बे हजार । तीस जाहेर कीजियो, तीस तुम पर अखत्यार || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -27
- हको नी तोहिजे हथ में, तूं नीचा उनूडे निहार । चुके म चमक ध्रुय जी, से तूं पांण संभार || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -2
- हजरत आए आया सब कोई, और ले चलेगें सब । ए लिखियां जो इसारतें, फुरमाया फिरे न कब || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -10
- हजरत ईसे मांगया, हक अपनायत कर। तिन पर ए गुनाह लिख्या, ए देख लगत मोहे डर || ग्रं - खिलवत, प्र -4, चौ -5
- हजार गुरज नूर चांदनी, चांदनी नूर आसमान । तापर मोहोल नूर आकासी, ए नूर आकास मोहोल सुभान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -13
- हजार मास जो लैल के, हुए सदी अग्यारहीं भर । लिखी जो इसारतें, भई पूरी मिल बेहेतर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -7
- हजार साल कहे दुनी के, सो खुदाए का दिन एक । लैलत कदर का टूक तीसरा, कया हजार महीने से विसेक || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -26
- हजार साल दुनीजा, सो हिकडो डीह रख जो । से डीह रात बए गुजस्या, कियां जाहेर रोज-फरदो || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -10
- हजार हांसें जित गिरदवाए, बीच मोहोल बड़े बिराजत । इत रूहें सुख लेवें चरन का, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -53
- हजार हांसों सोभित, तापर गुरज बिराजत । मोहोल माहें विध विध के, बैठक झरोखे जुगत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -34
- हजार हांसों हजार रंग, हर हांस हांस नया रंग । थंभ रोसन जिमी लग चांदनी, करत मिनो मिने जंग || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -35

SPJIN

- हजिए न टालो तमे भरम, अने जीव काय नव करो नरम । आ नौतनपुरी कहिए नगरी, जिहां श्री देवचंदजीए लीला करी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -60
- हजूर खिन एक ना हुई, इत चली जात मुद्दत । ए क्या हक को खबर है नहीं, वह कहां गई निसबत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -12
- हडेनी करियां अंगीठडी, मूजो माहनी होमियां मंझ । नारियर हंदे ल्हाय रखां मथां, मूंके तोहे न भंजे रे डंझ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -8, चौ -12
- हड्डियां जारूं आग में, मांहें मांस डारूं सिर । ए भूली दुख क्योंए न मिटे, ए समया न आवे फिर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -8, चौ -22
- हड्डी मांस रगां भेली क्यों रही, ए पकड़ के अंग अंधेर रे । धनी का बिछोहा क्यों सह्या, लोहू ना सूक्या तिन बेर रे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -21
- हतासनी नो ओछव अति रूडो, आवी रमूं अबीर गुलाल । चोवा चंदन अनेक अरगजा, हूं छांटी करूं वालाजीने लाल || ग्रं - खटरुती, प्र -5, चौ -15
- हथेली लीकें क्यों कहूं, नरम हाथ उज्जल । रंग पोहोंचे का क्यों कहूं, इत जुबां न सके चल || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -91
- हद की बांधी सब दुनियां, हक तरफ न करे नजर । पीठ दे हद बेहद को, यों हादी हक देवें खबर || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -4
- हद के पार बेहद है, बेहद पार अछर । अछर पार वतन है, जागिए इन घर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -165
- हंद न रख्यो कितई, जे से करियां गाल । तो डेखारी डिस तोहिजी, से लखे तोहिजा भाल || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -14
- हद बेहद के पार की, सब देख थके फेर फेर । सो सारों ने देखिया, जब आए इमाम आखिर || ग्रं - सनंध, प्र -32, चौ -24
- हद बेहद दोऊ जुदे, मेंहेंदी महंमद बिना न होए। अब देखो जाहेर हुए, रह्या सब्द न हद का कोए || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -11
- हद बेहदनी विगत, कागल मांहें विचार । मुनीजी हाथ संदेसड़ो, आव्यो समाचार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -60
- हद सबोंकी करी जुबान, क्या कोई कहे ए सिफत जहान । अब कहूं मैं इनकी बात, जो कह्या आदम पाक जात || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -57
- हद सब्द दुनी में रहया, पोहोंच्या नहीं नूर रास । तो क्यों पोहोंचे असल नूर को, जिनकी ए पैदास || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -30
- हदीसों भी यों कहया, आखिर ईसा बुजरक । इमाम ज्यादा तिनसे, जिन सबों पोहोंचाए हक || ग्रं - किरन्तन, प्र -94, चौ -6
- हब मेहेबूब की आसिक प्यास ले, चाहे साफ सराब सुराई सका । पीवते पीवते पिउ के प्याले सों, हुई हाल में लाल पी मस्त बका || ग्रं - किरन्तन, प्र -115, चौ -1

- हबीब बताया हादिएँ, मेरा ही मुझ पास । कर कुरबांनी अपनी, जाहेर करूं विलास || ग्रं - किरन्तन, प्र -65, चौ -17
- हम अरवाहें जो अर्स की, तिन सब अंगों इस्क । सो क्यों जावे हम से, जो आड़ा होए न हुकम हक || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -9
- हम अरस-परस हैं हक के, ए देखो मोमिनों हिसाब । हम हकमें हक हममें, और हक बिना सब ख्वाब || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -12
- हम अर्स भोम तीसरी, चढ़ देखें नूर मकान । दोऊ द्वारों नूर झलके, ए सुख कब देसी मेहेरबान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -19, चौ -8
- हम अर्स रूहें आसिक, हक मासूक भूलें क्यों कर । क्या चले खेल फरेब का, तुम आगू देत हो खबर || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -27
- हम आए हैं इतने काम, ब्रह्मसृष्ट लेने घर धाम । तब गांगजी भाई पायो अचरज मन, कौन मानसी पार के वचन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -38, चौ -77
- हम आगे ना समझे भए ढीठ, तो दई श्री देवचंदजीऐं पीठ । ना तो क्यों छोड़े साथ को एह, जो कछू किया होए सनेह || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -29, चौ -71
- हम उठ बैठे अर्स में, हमको हकमें दिया सब याद । हुकमें हुकम खेल देखाया, सो हुकमें हुकम आया स्वाद || ग्रं - सिंधी, प्र -16, चौ -12
- हम उतरें चढ़ें तो खेल में, जो जरा दूसरा होए। ए देखो हक इलम से, अर्स अरवा न उरझे कोए || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -69
- हम उतरे लैलत-कदर में, माहें उरझे खेल कुफार । दसों दिस हम ढूंढ़िया, पर काहूं न पाइए पार || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -42
- हम उपाया सुख कारने, ए जो मांग्या खेल तुम । दुख दे वतन बोलावहीं, ए इन घर नहीं रसम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -20
- हम कदम छोड़ के, कहूं जाए न सकें दूर । बैठे इत देखें सबे, बीच तजल्ला नूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -71
- हम कबूं न भूलें तुमको, बैठेंगे पकड़ कदम । हम तुमारे ऐसे आसिक, तुमें छोड़े नहीं एक दम || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -57
- हम कहें झूठी दुनियाँ, तिनमें ऐसी करे न कोए । जो उलटी हम सांचों से भई, ऐसी झूठों से न होए || ग्रं - सिंधी, प्र -14, चौ -22
- हम कारन तुम आए देह धर, तुम कई विध दया करी हम पर । तुम धनी आए कारन हम, देखाई बाट ल्याए तारतम || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -24, चौ -17
- हम खेल देखें बैठे अर्स में, ए जो चौदे तबक । रूह हमारी इत है नहीं, लई परदे में हक || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -50
- हम खेल देख्या लग मुद्दत, जेते रूहअल्ला के तन । खेल देख पीछे फिरें, जानें बेर न लगी अधखिन || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -71

- हम चडी सखी संग रे, रूड़ा राज सों राखो रंग, सखी रे हमचडी || ग्रं - किरन्तन, प्र - 124, चौ -1
- हम छोड़े सुख सुपन के, आए नजरों सुख अखंड । विरहा उपज्या धाम का, पीछे हो गई आग ब्रह्मांड || ग्रं - किरन्तन, प्र -88, चौ -9
- हम जानें इस्क ना हम पे, हम पर हँससी नूरजमाल । हमारे इस्के ब्रह्मांड का, किया जो ऐसा हाल || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -151
- हम जानें इस्क बड़ा हमपे, बड़ी रूह और हक से । बड़ी रूह जाने सब से, बड़ा इस्क है हम में || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -57
- हम जाहेर होए के चलसी, सब भेले निज घर । वैराट होसी सनमुख, एक रस सचराचर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -78
- हम जुदे न हुए अर्स से, और जुदे हुए बेसक । हम रूहें खेल देख्या नहीं, और खेल की बातें करी मुतलक || ग्रं - सिंधी, प्र -16, चौ -14
- हम झूठी जिमी बीच बैठ के, करें जाहेर हक सूरत । एही ख्वाब के बीच में, बताए दई वाहेदत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -13
- हम झूठी जिमी में आए नहीं, झूठ रहे न हमारी नजर । ब्रह्मांड उड़ावे अर्स कंकरी, तो रूहों आगे रहे क्यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -60
- हम ढूंढ़ ढूंढ़ कुफार में, गए जो तिनमें भूल । ऐसे मिने खसम के, पाए दसखत हाथ रसूल || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -45
- हम ढूंढें हक वतन, और रसूल ढूंढ़ें हम । यों करते सब आए मिले, मोमिन रसूल खसम || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -47
- हम तेहेकीक रूहें अर्स की, इन इलमें किए बेसक । ए देख्या खेल झूठा जान के, क्यों छोड़ें बरनन हक || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -16
- हम तो इत आए नहीं, अर्स एक दम छोड़्या न जाए। जागे पीछे दुलहा, हम देख्या खेल बनाए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -23
- हम तो एही हक किया, जाहेर रसूल बोल । ए छोड़ और ना देखहीं, हम एही लिया सिर कौल || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -14
- हम तो सब धाम आए, अछर आपने घर । अखंड रजनी रास लीला, खेल होत या पर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -26
- हम तो हुए इत हुकम तले, मैं न हमारी हम में । ए में बोले हक का हुकम, यों बारीक अर्स माएने || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -63
- हम देखें राह निसान की, जो कहे बड़े कयामत । देखें पैदा बैत अल्लाह से, जो हम सों करी सरत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -14
- हम देखे वृन्दावन इतथे, तहां भी खेलें पिया साथ । करें विनोद नित नए, बनही मिने विलास || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -7

- हम देखेंगे हक इस्क, और पातसाही हक । सो ए आपन मिल देखसी, ऐसा सुख हक का मुतलक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -69
- हम दोऊ बंदे रूहअल्लाह के, दोऊ गिरो जुदी भई । तीसरी सृष्ट जो जाहेरी, सब मजकूर इनकी कही || ग्रं - किरन्तन, प्र -122, चौ -6
- हम पर अर्स में हँसने, माया देखाई तीन बखत । इस्क हमारा देखने, वह कहां गई निसबत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -15
- हम बंदे रूहें इन दरगाह, कहया अर्स दिल मोमिन । यारों बुलावें महंमद, करो सिजदा हजूर अर्स तन || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -74
- हम बंधे बंधाए मिट गए, कछू रया न हमपना हम । यों पोहोंचाई बका मिने, इन विध मैं को खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -21
- हम बुध नूर प्रकास के, जासी हमारे घर । बैकुंठ विष्णु जगावसी, बुध देसी सारी खबर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -97
- हम बैठे देख्या वतन में, हमें ऐसी करी हिकमत । आए न गए हादी हम, ऐसा देख्या मांहें खिलवत || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -66
- हम बैठे लैलत-कदर में, संदेसा पोहोंचावें तुम । इलम सूरत हमारी रूह की, पोहोंची चाहिए खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -12
- हम बैठे वतन कदम तले, तहां बैठे खेल देखत । तित ख्वाब से संदेसा, तुमें क्यों ना पोहोंचत || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -10
- हम ब्रह्मसृष्टि आई धाम से, अछर खेल देखन । खेल देख के जागिए, घर असलू अपने तन || ग्रं - किरन्तन, प्र -96, चौ -8
- हम भी आए इन खेल में, बुध ना कछुए सुध । धनी आए अछरातीत, मोहे जगाई कई बिध || ग्रं - किरन्तन, प्र -74, चौ -11
- हम भी देखें खेल को, हकमें मोमिन मिल । ढूंढें अपने खसम को, पेड़ हुकमें फिराई कल || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -8
- हम मांगें इस्क वतनी, आई हम पे हक न्यामत । हमें ऐसा खेल देखाइया, इत बैठे देखें खिलवत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -11
- हम में जो कछू रख्या होता, तो इत केहेते तुमको हम । सो तो कछुए ना रया, अब कहा कहूं खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -50
- हम याही फरमान के, लिए माएने जाहेर । रूह बांधी रसूल सों, जिन हक की कही खबर || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -10
- हम रूहें खेल जानें नहीं, जो नूर से उपजत । ओ खेले अरवा गफलत में, ऊपर भी गफलत || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -56
- हम रूहें न आइयां खेल में, हक अर्स सुख लिए इत । हक हुकमें इलम या विध, सुख दिए कर हिकमत || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -62

SPJIN

- हम रूहें भी आइयाँ इन खेल में, सो गैयां माहें भूल । सुध ना बिरानी आपनी, भया ऐसा हमारा सूल || ग्रं - खुलासा, प्र -8, चौ -8
- हम रूहें हमेसा बका मिने, रूह अल्ला के तन । असल तन हमारे अर्स में, और कछू न जाने हक बिन || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -51
- हम रूहों को चेतन किए, खोली रूह-अल्ला हकीकत । ए खिलवत के सुख कहां गए, हम कब पावसी ए न्यामत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -29
- हम रूहों को देखाइए, बड़ा इस्क हक । और पातसाही हक की, ए जो बड़ी बुजरक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -70
- हम लिए कौल खुदाए के, हक के जो परवान । लई कई किताबें साहेदियां, कई हदीसें फुरमान || ग्रं - खिलवत, प्र -2, चौ -1
- हम वास्ते रसूल भेजिया, और भेज्या अपना फरमान । सो इत काहूं न खोलिया, मिली चौदे तबक की जहान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -4
- हम संग खेलें कई रंगे, जाते जमुना पानी । आठों पोहोर अटकी अंगे, एह छब एह बानी || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -19, चौ -40
- हम संग चलो सो ढील जिन करो, छोड़ो आस संसार । सुरत हमारी कछू ना रही, हम छोड़ी आस आकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -88, चौ -4
- हम सदा संग पिया के, जो रूहें सोहागिन । सो अग्याऐं उठ बैठसी, सब अपने वतन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -23, चौ -80
- हम सब मिल मोमिन बैठेंगे, पकड़ तुमारे चरन । तब कहा करसी फरामोसी, जब बैठे होए एक तन || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -42
- हम सब में इस्क हक का, ऊपर बरसे हक का नूर । हम हमेसा हक खिलवतें, हम सब हक हजूर || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -52
- हम सिर हुकम आइया, अर्स हुआ दिल हम । एही काम हक इलम का, तो सुख काहे न लेवें खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -2, चौ -8
- हम हमेसा एक दिल, जदियां होवें क्यों कर । हक खेल देखावहीं, कर आगे से खबर || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -27
- हम हुकम के हाथ में, हक के हाथ हुकम । इत हमारा क्या चले, ज्यों जाने त्यों करे खसम || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -58
- हमको खेल देखन की लागी रढरे, सो इत आए देखाई कर मन द्रढ । तुम हमको खेल देखावन काज, हमसों आगे आए श्री राज || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -18, चौ -6
- हमको सक ना हद में, ना कछू बेहद सक । सक रही न पार बेहद की, दिया बेसक इलम हक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -20
- हमचडी सखी संग रे। आपण रमसुं नवले रंग, सखी रे हमचडी || ग्रं - रास, प्र -31, चौ -1

- हमचडीनो अवसर आव्यो, आगे का नहीं अमे तमने रे । एवो समयो अमने क्यांहे न लाधो, हामडी रहीती अमने रे || ग्रं - रास, प्र -14, चौ -3
- हममें पीछे कोई ना रहे, और रहो सो रहो । गुन अवगुन सबके माफ किए, जिन जो भावे सो कहो || ग्रं - किरन्तन, प्र -93, चौ -3
- हमही खेले बृज रास में, हमही आए इत । घरों बैठे हम देखहीं, एही तमासा तित || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -27
- हमारे ताले मिने, लिखे अल्ला कलाम । महामत कहे सब दुनी को, प्यारी होसी तमाम || ग्रं - किरन्तन, प्र -110, चौ -10
- हमारे फुरमान में, हमें केते लिखे कलाम । मासूक मेरा महमद, आसिक मेरा नाम || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -117
- हमें कहया रूहन को, मैं देखाऊँ इस्क । ए बेवरा इस्क का, तुम पाओगे बेसक || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -17
- हमें किया हक करत हैं, और हक करेंगे । ए रूह को तेहेकीक भई, और नजरों भी देखे || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -31
- हमें किया हुकम वतन में, सो उपजत अंग असल । जैसा देखत सुपन में, ए जो बरतत इत नकल || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -37
- हमें गिरी बुलाई मोमिन, हकें कराई सोहबत । नूर पार वचन विध विध के, हकें दई नसीहत || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -29
- हमें देखाई अर्स साहेबी, हादी रूहों को यों कर । दुई देखाई झूठ ख्वाब में, पावने पटंतर || ग्रं - खुलासा, प्र -17, चौ -66
- हमें बचाए कोहतूर तले, तोफान ह्रद महत्तर । दूसरे तोफान नूह के, बचाए किस्ती पर || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -49
- हमें बुजरकी वास्ते, लिखी इसारतें पहाड़ कर । सो दुनी पूजे पहाड़ जाहेरी, इनों नाहीं रूह की नजर || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -21
- हमें बैठक कही अपनी, दिल मोमिन का जे । जिन दिल हक आए नहीं, सो दिल मोमिन कहिए क्यों ए || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -16
- हमेसां दोजखी बदकार, रोज कयामत के हुए खुआर । ए दिन किने न किया मुकरर, ताए पेहेचानो जिन दई खबर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -23, चौ -4
- हर अंग सुख दें हक के, ऊपर जाहेर सुख जुबान । बड़ा सुख रूहों होत है, जब हक मुख करें बयान || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -7
- हर एक अंगुरी मुंदरी, हर मुंदरिएँ कई रंग । सो जोत भरत आकास को, कहूं किन विध कई तरंग || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -64
- हर एक के एक सौ पंद्रा, ए जो त्रिपुड़े अठाईस । थंभ जमे बत्तीस सै, और ऊपर भए जो बीस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -88

- हर एक के तीन तीन, तिन तीनों के सत्ताईस । यों चढ़ते तराजू चढ़े, नफा नसल न नाते रीस || ग्रं - किरन्तन, प्र -79, चौ -22
- हर एक के सिनगार, तिन सिनगार सिनगार कई नंग । नंग नंग में कई रंग हैं, तिन रंग रंग कई तरंग || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -18
- हर एक में अनेक रंग, हर एक में सब सलूक । कई जुगतें हर एक में, सुख उपजत ख्प अनूप || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -43
- हर कड़ी कई करकरी, सो देखत ज्यों जड़ाव । नंग जोत नजरों आवहीं, कई नकस कई कटाव || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -56
- हर खांचे जाते जुदी जुदी, आप अपनी विद्या खेलत । गाए नाचें जिकर करें, हर भातें रूहों रिझावत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -100
- हर खांचों साठ गुमटियां, सोभित फिरती हार । ए झरोखे कंगूरे, बैठक बारे हजार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -95
- हर घाटों सोभा कई विध, कई ज्दे जुदे सुख सनंध । बन नीके अपना देखिए, रस सीतल वाए सुगंध || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -31
- हर जातें कई बिरिख हैं, रंग रस निरमल नेक । स्वाद अलेखे अपार हैं, पर असल बन रस एक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -22
- हर जातों मोहोल जुदे जुदे, जुदी जुगतें पानी चलत । जुदी जुदी जुगतें कारंजे, क्यों कर कहूं एह सिफत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -23, चौ -9
- हर जिनसें कई खेलत, एक एक में खेल अपार । खेलें कूदें नाचें उड़ें, गावें कई विध जुबां न सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -85
- हर दोऊ द्वार आगू नूर चौक, नूर चौकों चार चबूतर । हर चौकों नूर पौरी चौबीस, यों चौक बने नूर भर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -36, चौ -49
- हर नंग में सब रंग हैं, हर नंग में सब गन । सो नंग ले कछू न बनावत, सब दिल चाया होत रोसन || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -77
- हर फौजों बाजे बजे, हर फौजों निसान । भांत भांत रंग राखत हैं, आप अपनी पेहेचान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -29, चौ -11
- हर बंगले विस्तार बड़ा, आगू बड़े दरबार । कई मोहोलों कई मंदिरों, कहो कहां लग कहूं न सुमार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -36
- हर मंदिर एक झरोखा, याकी सोभा किन मुख होए । आए लग्या बन दिवालें, देत मीठी खुसबोए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -9
- हर मन्दिर माहें आए के, चढ़िए हर झरोखे । जब आइए हर झरोखे, तब खूबी देखो बाग ए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -78
- हर रूहों आगू दौड़हीं, कई खूबी लेत खुसाल । रात दिन कबूं न काहिली, रहें हमेसा बीच हाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -61

SRJN

- हर हार चढ़ती नव नव, छे हजार फिरती हर हार । जमा भए नव भोम के, अर्ध लाख चार हजार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -90
- हर हांस तीस मंदिर, हर मंदिर झरोखा एक । दोऊ तरफ दो मेहेराव, मन्दिरों खूबी विसेक || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -36
- हर हांस साठ मेहेराव, इनों बीच बीच झरोखा । भोम तले अति रोसनी, खूबी क्यों कहूं सोभा बका || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -37
- हर हांसों हक नूर बैठक, हर हांसों नूर तखत । हक हादी रूहें नूर मिलावा, हर हांसों नूर न्यामत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -108
- हरख कहे मैं क्या करों, जो जीव को नहीं खबर । सोक कहे न पेहेचान पिउ की, तो बिछुरे जाने क्योंकर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -49
- हरख कहे हूं तूं करूं, जां धणी न लिए खबर । सोक कहे जां धणी नव कहे, तो अमे करूं केही पर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -49
- हरख थयो जे एणे समे, साथे सह कोइए दीठो । हसियां रमियां साथसो, घणो लाग्यो छे मीठो || ग्रं - रास, प्र -46, चौ -14
- हरख सोक कहे हम निठुर, भए सो अंध अभागी । धनी बिगर करे कहा हम, जोलों जीव न कहे जागी || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -47
- हरख सोक कहे हम बलिए, दोऊ जोधा बड़े जोरावर । अब पेहेचान करी तुम पिउ की, अब क्योंऐ न भूलों अवसर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -50
- हरख सोक तमे थयारे मायाना, फिट फिट अभागी अजाण । धणी मले तूं हरख न आव्यो, चाले सोक न आव्यो निरवाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -46
- हरख सोक तुम भए माया के, धिक धिक तुमको अजान । आए धनी हरख न आया, चले सोक न आया निदान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -46
- हरखे हांसी हेत में, करसी साथ कलोल । मांगी माया सो देखी नीके, कोई ना हांसी या तोल || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -15
- हरखे हांसी हेतमां, करसे साथ कलोल । माया मांगी ते जोई जोपे, रामत झलाबोल || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -11, चौ -15
- हरन साम्हर पस्वाड़े पाड़े, खेलें सब कोई अपने अखाड़े । मुजरे को दोऊ समें आवें, खेल सब कोई अपना देखावें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -54
- हरफ अलफ लाम और मीम, ए तीनों एक कहे अजीम । जिन न जान्या एह जहूर, सो काट कुरान से किए दूर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -11
- हरफ केतेक कराए जाहेर, केतेक हुकमें रखे छिपाए । सो वास्ते रूहों दाखले, अब हादी देत मिलाए || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -66
- हरफ गुझ जो हुकमें, मैं रखे छिपाए । सो अर्स मता हक खिलवत, जाहेर करसी आए || ग्रं - खुलासा, प्र -2, चौ -81

- हरफ मुकता इनों वास्ते, रखे बातून मांहें फुरमान । सो खासे करसी जाहेर, जो दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -9
- हरफ हरफ के माएने, तामें गझ मता अनेक । खोल तूं आगे अर्स रूहें, जो प्यारी मुझे विसेक || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -33
- हरवटी अधुर बीच लांक जो, मुख अधुर दोऊ लाल । ए लाली मुख देखे पीछे, हाए हाए लगत न हैड़े भाल || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -58
- हरवटी गौर मुख मुतलक, खुसरंग बिन्दा ऊपर । बीच लांक तले अधुर, चार पांखड़ी हुई बराबर || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -138
- हरवटी सोहे हंसत मुख दीसे, वली जोइए अधुरनो रंग । दंत जाणे दाडिमनी कलियो, अधुर परवालीनो भंग || ग्रं - रास, प्र -8, चौ -30
- हराम छोड़ हक लेवही, ए जो करी बयान । आपा रखे आप वस, या दीन मुसलमान || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -32
- हराम न छूट्या दिल से, छल दृष्ट हुई बाहेर । राह भूले मुस्लिम की, हाए हाए बुरी हुई जाहेर || ग्रं - सनंध, प्र -26, चौ -19
- हरिद्वार ढहाए रे उठाए तपसी तीर्थ, गौवध कैयों विघन । ऐसा जुलम हुआ जग में जाहेर, पर कमर न बांधी रे किन || ग्रं - किरन्तन, प्र -58, चौ -13
- हरी इजार मांहें कई रंग, ऊपर जामा दावन सुपेत । कई रंग झांई देख के, अर्स रूहें सुख लेत || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -217
- हरी दिवाल जो मंदिर, सो सामी है नेक दूर । चारों तरफों अर्स जवेर, करें जंग नूर सों नूर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -49
- हरे पीले लाल उज्जल, संग सोब्रन नूर अमान । एक जवेर इन भोम का, भरया रोसन नूर आसमान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -7
- हलधर आतम नारायन, जो आया हिंदुस्तान । साहेब कया हिंदुअन का, संग गीता भागवत ग्यान || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -29
- हलाल हराम दोऊ छिपे हुते, सो बयान किए हुकम । ले अकल असराफील, नबी कदमों धरे कदम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -5
- हलाल हलाल सब कोई कहे, पूछो हादी सिरदार । जिन दिल हुआ अर्स हक का, तिन दुनी करी मुरदार || ग्रं - सनंध, प्र -21, चौ -42
- हवा अंधेरी बीच रात के, ऊग्या मारफत सूर । भरे जिमी और आसमान, दुनियां पूर नूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -25
- हवा पार महंमद नूर कया, नूर पार तजल्ला नूर । अर्ज करी वास्ते उमत, पोहोंच के हक हजूर || ग्रं - किरन्तन, प्र -66, चौ -15
- हवे अधखिण अलगां, साथ विना में न रेहेवाय । आ लेहेर जे मायातणी, साथ ऊपर में न सेहेवाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -15

- हवे अधखिण एक न मूकू अलगा, प्रीत पेहेलानी ओलखाणी । साची सगाई कीधी प्रगट, सचराचर संभलाणी || ग्रं - किरन्तन, प्र -44, चौ -3
- हवे अधखिण हूं अलगां न करूं ,आतमाए लीधी आतम सूं बाथ । जीत्यो में तूने जोर करी, देखतां सर्व साथ || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -36
- हवे अम माहे अमपणं, जो कांई होसे लगार । तो निद्रा उडाडी तमे निध दीधी, हवे नहीं मूकू निरधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -4
- हवे असतने अलगो करूं, केम थावा दऊं सत लोप । सत असत भेला थया, तेमां प्रकासूं सत जोत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -8
- हवे अस्तुत ऊपर एक विनती कहूं, चरण तमारा जीवने नेत्रे ग्रहूं । एणे चरणे मूने थई छे सिध, पेहेली निध मूने सुंदरबाईए दिध || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -24, चौ -1
- हवे आणी जिभ्याए केम कहूं, मारा घर तणो विस्तार । वचन एक पोहोंचे नहीं, मोह मांहे थयो आकार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -127
- हवे आपणमां बेठा आधार, रामत देखाडी उघाडी बार । हवे माया कोटान कोट करे प्रकार, पण आपणने नव मूके निरधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -11, चौ -1
- हवे आवतां दुख वासनाओने, तिहां आडो दऊं मारो अंग । सारी पेरे सुख दऊं तमने, मांहें न करूं वचे भंग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -39
- हवे आव्यूं धन अविनासी, दुख दावानल गयूं नासी । रूदे ग्रहूं लीला विलासी, हवे ते हूं करूं प्रकासी || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -22
- हवे आस धणीनी घणूं मोटी, थाईस हूं विचारी । मणा नहीं राखं कोई आसडी, हवे लेजो सुफल संभारी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -102
- हवे आहीं उपमा केही दऊंमारा वालैया, ए सब्द न पोहोंचे तमने । वचन कहूं ते ओळं रहे, तेणे दुख लागे घणूं अमने || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -19
- हवे ए गुण गण मारा जीव तूं रही, जेम जाणजे तेम राखजे ग्रही । ए गुणर्ता में घणुं ए गणाय, पर मारा धणी तणां गुण एहमा न समाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -33
- हवे ए दुख केणे कहिए, अंग मांहें आतम सहिए। कीबूं पोतानुं लहिए, हवे दोष कोणे दैए || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -72
- हवे ए दोष केम छूटीस हो नाथ, सांचं कहूं मारा धामना साथ । तमे साथ मांहें देओ छो उपमा, पण हूं केम छूटीस ए वज्रलेपणा || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -17
- हवे ए धन में जोपे जाण्यूं, जिभ्याए न जाय वखाण्यूं । मारा हैडामां आण्यूं, अम विना कोणे न मायूं || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -23
- हवे ए पाल अमे बांधसूं जीवजी, पण तमे थाओ तत्पर । आ अवसर बीजी वार नहीं आवे, सोभा साथ मांहें ल्यो घर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -113

- हवे ए लीला कहूं केटली, अलेखे अति सुख । वरस अग्यारे वासनाओंसों, प्रेमें रम्या सनमुख || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -8, चौ -50
- हवे ए वचन केम प्रगट पाडूं, पण मारे करवो सह एक रस । वस्त देखाड्या विना, वैराट न आवे बस || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -78
- हवे ए वचन विचारजे रही, सुकजी पाय साख पुरावी सही। हवे एक वचन कहूं सुणजे जीव सही, वालाजीना चरण तूं रेहे जे ग्रही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -21, चौ -13
- हवे एक मनोरथ एह छे, आपण रमिए एणी रीते । बाथ लीजे बंने बल करी, जोइए कोण हारे कोण जीते || ग्रं - रास, प्र -41, चौ -8
- हवे एक लवो जो सांभरे सही, तो जीव रहे केम काया ग्रही । सांभलो साथ कहूं विचार, चूक्या अवसर आपण आणी वार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -9, चौ -1
- हवे एणे चरणें तमें पांमसो, अखंड सुख कहिए जेह । सर्वा अंगे चित सुध करी, तमें सेवा ते करजो एह || ग्रं - किरन्तन, प्र -70, चौ -14
- हवे एवा जोध सबल तमे बलिया, मल्या मोसू खोटे भाव । जोगवाई गई मारे हाथ थी, पण तमे न गया सेहेज सुभाव || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -55
- हवे एह धणी केम मुकिए, वली वली करो विचार । मूल बुध चेतन करी, धणी ओलखो आ वार || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -50
- हवे एह लीला हदतणी, तेतां सह कोई केहेसे । पण बेहद वाणी अम विना, बीजो कोण देसे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -31, चौ -42
- हवे एह वचन कहूं केटला, एनो आगल थासे विस्तार । मारे संग आवी निध पामी, ते निराकार ने पार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -33
- हवे एह विचारी तमे जो जो साथ, न वली जिभ्या वैकुंठ नाथ । ग्रही वस्त भारे करी जाण, नेठ वचन नव कह्या निरवाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -50
- हवे करमण था तूं आव कलपना, सेवा मांहें कर विचार । वालैयो वालाजी मुझने मल्या, लाभ लऊं आवी मांहें संसार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -65
- हवे करूं ते अस्तुत आधार, वल्लभ सुणो विनती । आटला दिवस में नव ओलख्या मारा वालैया, मायानी लेहेर मूने जोर हती || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -1
- हवे कलकलीने कहूं छू रे वाला, मूने तेडजो चरणे । तेहेने छेह केम दीजिए रे वाला, जे आवी ऊभी सरणे || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -17
- हवे कसोटी केम दऊं तमने, करमाणां मुख ते नव सहूं । ते माटे वचन कठण, मारा वालाओने केम कहूं || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -34
- हवे कहो केने छवे छेडे, अंग लागे छोत । अधमतम विप्र अंगे, चंडाल अंग उद्दोत || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -24
- हवे कहोने वालाजी केम करूं, केणी पेरे रेहेवाय । एम करता इन्द्रावती ने मंदिर पधारया, मारे आनंद अंग न माय || ग्रं - किरन्तन, प्र -42, चौ -4

- हवे कां नव ओलखो रे साथ सुजाण, घणूं तेहेने कहिए जे होय अजाण । वचिखिण छो तमे प्रवीण, गलजो जेम अगिन तूं मीण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -14
- हवे काईक पग भरजो प्रगट, सावचेत सहु थाजो । साथ सकल तमे आप संभाली, मुखडे पुकारी ने गाजो || ग्रं - रास, प्र -20, चौ -6
- हवे काईक हूं मारी करूं, नहीं तो तमने घणुए ओचरूं । वली एक कहूं वचन, रखे आसंका आवे मन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -35, चौ -1
- हवे किहांने सुणीस रे, ए वचन वल्लभ । श्रीमुख वाणी रे मूने, थई छे दुर्लभ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -38
- हवे कृपाने सागर तमे कृपा करो, जेम आवीने भीडूं अंग । मूं विरहिणीना रे वालैया, मूने तेडीने रामत करो रंग || ग्रं - खटरुती, प्र -4, चौ -15
- हवे केटलूं कहूं रे दुष्ट, तें नव ग्रहयो वांसो । अवसर भूल्यो रे घणों, पडियो रे वरासों || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -34
- हवे केटलो तमने कहूं विस्तार, एक एह वचन ग्रहजो निरधार । हेत करीने कहूं छू साथ, ओलखजो प्राणनो नाथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -35, चौ -13
- हवे केही विध करूं रे वाला, तमे कां थया मोसूं एम । मूने मेली एकलडी, तमे बेससो करारे केम || ग्रं - खटरुती, प्र -5, चौ -8
- हवे कोणने वरणवसे, वृज रास ने श्री धाम । ए सुख दई भाजसे, कोण मारा जीवनी हाम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -59
- हवे क्रोध कमल फेरी नाख तूं ऊधो, ऊधो फेरजे कमल संसारे । एहवो अकरमी कां थई बेठो, तेम कर जेम सहु को संभारे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -79
- हवे गुण केटला कहूं मारा वालैया, जे अमसूं कीधां आवार । आणी जोगवाई ए न केहेवाय, पण लखवा तोहे निरधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -18
- हवे गुण गणूं मारा धणीतणां, पण कागल स्याही लेखणो माहे मणां । मणां तो कहूं छू जो बेठी माया माहें, नहीं तो मणां मूने नथी कोई क्यांहें || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -16
- हवे गुण सघलाने करो हाथ, अने ओलखो प्राणनो नाथ । हवे एटलो जीवसूं करो विचार, जे केहा वचन आ कहया आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -63
- हवे गुणने लखूजी तमतणां, जे तमे कीधां अमसू अति घणां । जोजन पचास कोट पृथ्वी केहेवाए, आडी ऊभी सर्वे ते माहें || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -1
- हवे गोप वचन केहेवासे गुरगम, ते केम प्रगट होय । विष्णु-संग्राम करीने लेसे, साध हसे जे कोय || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -127
- हवे घर ओलखी ग्रहजो मन, घणूं तमने कयूं तारतम । ए जाणजो मन जीवतणे, पेरे पेरे तमने कहयूं विध घणे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -9

- हवे घर माहें ऊंचूं केम जोसू, हंसी कही वात न करी वरतूं । ए धणी विना केने अनुसरतूं, हवे अमे रोई रोईने मरतूं || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -57
- हवे घोली घोली जाऊ झीलाने चाकला, घोली जाऊं मंदिरना थंभ । जेणे थंभे करे धणी पोताने, जगते वाल्या बंध || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -6
- हवे चरण कमलना लऊं भामणियां, अने भामणा लऊं सर्वा अंग । हस्त कमलने वारणे, वारी जाऊं मुखार ने विंद || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -10
- हवे चरणे लागी अंग भीडी इंद्रावती, मने मारे धणिए कीधी सनाथ । मनना मनोरथ पूरण करी, वाले लीधी पोताने साथ || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -45
- हवे चित आणी चरणे तेडजो, विरहणी टालो आधार । एणे वचने इंद्रावतीने, वालो तेडी लेसे तत्काल || ग्रं - खटरुती, प्र -2, चौ -17
- हवे चौद लोक चारे गमां, में मथ्या जोई वचन । मोहजल सागर माहेथी, काढ्या ते पांच रतन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -4
- हवे चौदे लोक चारे गमां, प्रकास करूं साथ जोग । जीव सहु जगवी करी, टालूं ते निद्रा रोग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -76
- हवे छवीस करीने करूं दस संख, वली लखतां लखतां चीफं निसंख । सुरिता करूं मींडा मूकीने सतावीस, ए गुण धणी जोई हूं पगला भरीस || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -23
- हवे जगवू जुगते करी, भाजूं भरमना बार । रंगे रास रमाडी तमारा, सुफल करूं अवतार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -3
- हवे जगावी सुख दऊं संभारगूं, करों आप आपणी वात । साथ सहु अम पासे बेसी, करों सहु विख्यात || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -11
- हवे जाग जीव तूं जोपे बलिया , तूने केही दऊं गाल । में तूने घणुए फिटकास्यो, पण चुक्यो अवसर निनाल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -114
- हवे जाग जीव सावचेत थई, वालो ओलख आंख उघाड़ी। कर अस्तुत विनती वल्लभसूं, नाख अंतर पट टाली || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -22, चौ -5
- हवे जागी जुओ मारा साथजी, ए छे आपण जोग । त्रण लीला चौथी घरतणी, चारेनों एहेमां भोग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -1
- हवे जागी जुओ मारा साथजी, रामत छे ब्रह्मांड । जोपे जुओ नेहेचितसूं, मध्य भरथजीने खंड || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -2, चौ -7
- हवे जिहां थकी जोत उपनी, जुओ तेह तणो प्रकार । अछरातीत मारा घर थया, इहां तेजना अंबार || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -121
- हवे जे हेत वांछे आपणुं, ते सुणजो सत दृढ़ मन । वाट लेजो वैकुंठ तणी, रखे जाता पुरी जम || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -42

- हवे जेणे आपणने ए निध आपी, तेहना चरण ग्रहिए चित माहें । निद्रा उडाडीने सुपन समावे, त्यारे जागी बेठा छैए जांहें || ग्रं - किरन्तन, प्र -70, चौ -13
- हवे जेणे ए निध प्रगट कीधी, भली ते बुध प्रकासी । दीसंतो आकार ज दीसे, पण वेहद पुरनों वासी || ग्रं - किरन्तन, प्र -124, चौ -4
- हवे जेम नचवू तेम नाचो रे वाला, आव्या इंद्रावती ने हाथ । ते वसीकरण नी दोरिए बांधू, जेम देखे सघलो साथ || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -27
- हवे जो जाणो घर पाम पोता, तो राखजो वैरागनी सेर जी । सर्वा अंगे सुध सेवा करजो, एम जागसो पोताने घेर जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -30, चौ -41
- हवे जो जो साथ लेखू एम लख्यूं जोर, तोहे मारा जीवनी हामनी न चंपाणी कोर । जीव छे मारो मोटो पात्र, हजी जीव जाणे ए लख्यूं तुछ मात्र || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -42
- हवे जो धणी करो मारी सार, तो ए वचन केहे, निरधार । तमे घणवे मूने वारया सही, अनेक पेरे सिखामण कही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -31
- हवे जोजो तमे जोर अमारो, वालोजी ग्रहं करी खांत । पूरो पास दई रंग चोलनो, पाडूं पटोले भात || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -60
- हवे जोपे थईने जाओ संसार मांहें, ए छे तेवा थाओ तमे । जेम अजवाले श्री वालोजीने ओलखी, एमां मूल जोत देखू जेम अमे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -92
- हवे ततखिण तेडजो मारा वाला, आ रूत एकला न जाय । धणी विना कामनी घणूं कलपे, रोता ते वाणू वाय || ग्रं - खटरुती, प्र -5, चौ -3
- हवे ततखिण तेडवा धणी आवसे, वाले सांभलिया समाचार । ए वचन सुणीने इंद्रावतीने, वालो रूदयासों भीडसे आधार || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -24
- हवे तमने कहूं मूल ज थकी, अने मोह अहंकार काई उपनूं नथी । न कांई ईश्वर न मूल प्रकृती, तेणें समे आपणमा वीती || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -4
- हवे तमने हूं खीजी कहूं छु, मारा सबल थाजो सुजाण । सेहेज सुभाव करजो वालाजीसू वालपण, मा माणजो केहेनी आण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -58
- हवे तूं माहे काम म्हारे छे अति घणो, जोसू तारो जोर मेवार । पचवीस पख माहें तूं फरजे, रखे अधखिण रहे लगार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -84
- हवे तूंने केम काढूं रे तृष्णा, तोसूं मारे घणू काम । तृष्णा आव मारा वालाजीमां, जेम वस करूंधणी श्री धाम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -40
- हवे तूंने सी दऊं रे गाल, तें नव लाध्यो अवसर आणी वार । हवे फिट फिट रे भुंडा तूं मन, तें कां कीधो एवडो अधरम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -71
- हवे तूंने हूं कहूं रे कलपना, फिट फिट भंडी अकरमण । फोकटियाणी फजीत तें कीधां, कांई अमने अति घण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -64

- हवे तूने हूं कहूं रे निद्रा, तूं नीच निबल निरधार । गुण सघला आडी तूं फरी वली, नव लेवा दीधी निध आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -23
- हवे तूंने हूं केटलूं कहूं, अवसर आवयो तें काई नव लयं । तारी दोरी कां न टूटी तत्काल, फिट फिट मूंडा किहां हतो काल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -79
- हवे ते गुणने केही दीजे उपमा, फिट फिट भंडी बध । प्रथम तूं मोहोवड मंडाणी, तें कां न लीधी ए निध || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -9
- हवे ते भोमना वस्तर भूखण, वचने केम कहं मुखजी । मारा घरनी हसे ते जाणसे, अम घरतणां ए सुखजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -18
- हवे तो गली हूं दया माहें, सागर सख्पी खीर । दया सागर सकल पूरण, एक टीपू नहीं मांहें नीर || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -2
- हवे तो सर्वे में सोंप्यूं तुझने, मूल सनमंध सुध जोई। कहे इंद्रावती मुझ विना, तूंने एम वस न करे बीजो कोई || ग्रं - किरन्तन, प्र -43, चौ -4
- हवे दया गुण हूं तो कहूं, जो अंतर काई होय । अंतर टाली एक कीधी, ते देखे साथ सहु कोय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -4
- हवे दस मध करूं करीने चोंत्रीस, गुण मारा वालाना चितमां ग्रहीस । हवे एकडा ऊपर पांत्रीस मींडा धरूं, परार्ध करीने लेखो मारो करूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -27
- हवे दुख न दऊं फूल पांखडी, सीतल द्रष्टे जोऊं । सुख सागर मां झीलावी, विकार सघला धोऊं || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -4
- हवे दृष्ट उघाडी जो पोतानी, निरख धणी श्री धाम । प्रेमल करी पोते आप संभारी, बांध गोली प्रेम काम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -22, चौ -1
- हवे न थाय मेलो श्री देवचंदजी सों, जो कीजे अनेक उपाय । घरे मेलो अभंग छे, पण नौतनपुरी ए न थाय || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -15
- हवे न मूकू अधखिण, धुतारों छे अतिघण । पल न वालूं पांपण, भूलियो पेहेल री || ग्रं - रास, प्र -36, चौ -7
- हवे न मूकू अलगो वाला, पल मात्र तमने । तमारा मनमां नहीं, पण दुख लाग्यु अमने || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -6
- हवे ने कहूं ते सांभलो वाला, हूं विनता वालाजी तमारी । अवगुण जो अनेक होय मारा, तोहे तमे लेओ ने सुधारी || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -17
- हवे पख ब्यासिमो जे कयो, वल्लभाचारजे ते ग्रहयो । स्यामा वल्लभी एथी जोर, पण बंने रहया इंडानी कोर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -5
- हवे पगला जे भरिया प्रमाण, जो जो जीव तणूं बल जाण । पेहेले फेरे आपण नीसस्यां , भवसागर ते केम करी तस्यां || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -19
- हवे पहेलां मोहजलनी कहूं वात, ते ता दुखरूपी दिन रात । दावानल बले कई भात, तेणी केटली कहूं विख्यात || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -1

- हवे पूछीस मूने तूं सूं, तुझ सरीखो बेठो हूं। त्यारे परीछित चरण झालीने कहे, स्वामी रखे उत्कंठा मारा मनमा रहे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -19
- हवे पूरे रे पधारो आपणे जी, कांई रजनी ते रूप अंधार । निसाचारी जीव बोलसे जी, त्यारे थासे भयंकार || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -5
- हवे पेर जो जो तमे म्हारी, करूं म्हारा बलनो विस्तार । निध लईने दऊं ततखिण, तो केहेजो गुण सिरदार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -88
- हवे प्रथम एकडो काढू एक चित, अडतूं मींडूं धरूं भिलत । मारे हाथे अखर पोहोलो नव थाय, अने बीहं जाणूं रखे घेलाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -10
- हवे प्रीछजो ए द्रष्टांत, एणे पण मांगी करी खांत । जुओ मायानो वृतांत, रिखि केमे न पाम्यो स्वांत || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -13
- हवे फिट फिट रे भुंडी तूं बुध, तें नव दीधी जीवने सुध । महादुष्ट अभागणी तूं, जांण जीवने कां नव करयूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -69
- हवे फेर सहु सवलो फरे, सहने सत आव्यूं द्रष्ट । एणे प्रकासे सहु प्रगट कीबूं, जाणी सुपन केरी सृष्ट || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -11
- हवे बांधिए पाल खरो करी पाइयो, जेम खसे नहीं लगार । पछे जल पोते ज्यारे ठाम ग्रहसे, त्यारे सामूं सोभा थाय अपार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -112
- हवे म थासो तमे माया ठुकडा, मारा लोभ लालच बंने जोड । लोभ आवो मारा वालाजीमां, जेम करूं रात दिन दोड || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -37
- हवे मनसा वाचा करमणां करी, हूं नहीं मूकू निध परहरी । नैणे निरखू निरमल चित करी, हूं रूदे राखीस वालो प्रेम धरी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -24
- हवे ममता आव मारा वालाजीमां, बीजो मूक सर्व संसार । सबल संघातण थाय मुझ पासे, मूने मल्या छे मारो आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -62
- हवे मींडूं मूकू अडतूं एक, जेम गुण गणूं दस हजार वसेक । वली एक मूकता लाख गणाय, हवे मूकू जेम दस लाख थाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -12
- हवे में तमने दीठा जुगते, ओलखिया आधार । ते माटे तमे तेडजो ततखिण, मलो तो थाय करार || ग्रं - खटरुती, प्र -5, चौ -14
- हवे में सुख अखंड लीधां, मनना मनोरथ सीधां । वाले आप सरीखडा कीधां, फल वांछाथी अधिक दीधां || ग्रं - रास, प्र -1, चौ -75
- हवे रखे माया मन धरो, तमे जोई ते अनेक जुगत जी । कई कई पेरे कयूं में तमने, तमे हजी न पाम्या तृपित जी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -3, चौ -4
- हवे रखे वचन विसारो एक, साथ माटे कया विसेक । वचन कया छे करजो तेम, आपण पेहेला पगला भरियां जेम || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -13
- हवे रामत रमिए एम, खरो ग्रहीजिए रे । आपण एणी पेरे बंधेज, सह रहीजिए रे || ग्रं - रास, प्र -35, चौ -3

- हवे रासतणो सार तमने कहूं, तेतां आपणू तारतम थ! । तारतम सार आ छे निरधार, जिहां वसे छे आपणा आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -22
- हवे रे आव तूं वालाजीमां, मायासू करजे विछोह । फरी जोगवाई आवी मारा हाथमां, हवे केवो जोध जोइए मारो मोह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -43
- हवे रे आवो तमे खरी निधमां, आगे चूक्या अवसर । एक लीजे लाहो श्रीवालाजीनो, बीजो हरखे जाणू म्हारे घर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -48
- हवे रे कहूं तूंन गुणना उतार, तें वल्लभसूं कीधो ब्रोध । मैं तूंने जाण्यो हतो सुहागी, फिट फिट कमल फेरण क्रोध || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -77
- हवे रे तमे म्हारे पासे थाओ, मूने वली मल्या म्हारो आधार । वले जुध करजो बुधे करी, जेम छांटो न लागे संसार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -53
- हवे रे तूंने कहूं लोभ लालची, फिट फिट भंडा अजाण । नव कीधो लोभ खरी निधनो, जेथी अरथ सरे निरखाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -36
- हवे रे तूने हूं जे कहूं, ते तू सांभल द्रढ करी मन । पचवीस पख छे आपणा, तेमां झीलजे रात ने दिन || ग्रं - रास, प्र -3, चौ -22
- हवे रे बुधडी हूं कहूं तूंने, तूं थाय बुधनो अवतार । श्री बालाजीने वल्लभ कर रे, एक खिण म मूके लगार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -11
- हवे रे श्रवणा कहूं हूं तूंने, तूंने धणिए कया वचन । कां न लीधां तें वचन बचिखिण, फिट फिट भंडा करन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -18
- हवे रे सरमडी कहूं हूं तूने, तूं जो जे मूल सगाई । आगे अवसर मोटो चूकी, हवे फरी आवी जोगवाई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -98
- हवे रे स्वाद तूं थाय सुहागी, जोजो वल्लभनो मिठास । ज्यारे तूं आव्यो ए मांहे, त्यारे केहिए न कर बीजी आस || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -75
- हवे रेहेवाय नहीं खिण अलगां, जागणी एम जाणो । अहंमेव जाग्यो धामनो, अम मांहें एह भराणो || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -13
- हवे लखमीजी कहे सांभलो राज, मारा जीवने उपनी अति दाझ । स्यो वांक* तमारो धणी, कांई अप्राप्त दीसे अम तणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -34
- हवे लखू छु तमे जोजो साथ, हूं गजा सारूं करूं प्रकास । घणूं चीफूं आंक लखतां एह, रखे जाणूं कांई मींडा मोटा थाय तेह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -9
- हवे ल्यो रे मारा साथजी, आ भोमना जे सुख । सही न सकू तमतणा, जे दीठां तमे दुख || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -32
- हवे वरण वेख थया जुजवा, एक उत्तम मधम । वस्त खरी थी विमुख थया, पछे चलवे ते अधमा अधम || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -18
- हवे वली आव्या बीजी देह धरी, आपण ऊपर दया अति करी । चेतन करी दीधो अवसर, लई लाभ ने जागिए घर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -67

- हवे वली करूं बीजो लखवानो ठाम, लखवा गुण मारा धणी श्री धाम । जेटला गुण ए माहे थया, एटली दाण एहवा कागल भरया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -34
- हवे वली कहूं ते सांभलो, कांई मो, एक दृष्टांत । वेद पुराणे जे कयूं, कांई तेहेनूं ते कहूं वृतांत || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -23
- हवे वली कहूं ते सुणो, अठोतर सो पख ज तणो । ए विचार जो जो प्रमाण, ऐहेनो सार काढूं निरवाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -34, चौ -1
- हवे वाचा मुख बोले तूं वाणी, करजे हांस विलास । श्रवणा तुं संभार तिहारी, सुण धणीनों प्रकास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -22, चौ -3
- हवे वादल मलियारे मलार, सोभा लिए वनराय रे । रूचियो ते वरसे मेह, तेडी भीडो अंगनाय रे || ग्रं - खटरुती, प्र -1, चौ -12
- हवे वारणां लऊं आंगणियो वेलूं, जिहां बेसो छो संझा समे साथ । परियाण करो धाम चालवा, घर वाटडी देखाडो प्राणनाथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -2
- हवे वारी जाऊं वनराय वल्लभनी, जेहेनी सकोमल छाया । गुण जो जो तमे ए वन ओखदी, दीठडे दूर जाय माया || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -1
- हवे वाला हूं एटलू मांगू, खिण एक अलगां न थैए । जिहां अमने विरह नहीं, चालो ते घर जैए || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -43
- हवे वासना हसे जे वेहदनी, ते जागीने जोसे निरधार । सत असत बने जुआ करसे, एहनो तेहज उघाडसे बार || ग्रं - किरन्तन, प्र -70, चौ -1
- हवे विनताए गालूं तमने, करूं ते रस कंचन । कसनो रंग एवो चढावं, बेहू पेरे करूं धंन धंन || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -7
- हवे विनती एक कहूं मारा वाला, सुणो पिउजी वात । प्रगट तमे पधारिया, आकार फेरो छो नाथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -1
- हवे विरह वीटी विनता कहे, रखे खिण लावो वार । अमने आवी तेडी जाओ, जेम लऊ लाभ मांहें संसार || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -18
- हवे विलखू छू वाला विना, हूँ तो प्रेम नी बांधी पिड़ाऊं || ग्रं - किरन्तन, प्र -42, चौ -3
- हवे वेर कहे मारी विध जोजो, केवी कठणाई करूं संसार । कोई गुण जो जीवसूं जोर करे, तो उतरी वढू तरवार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -73
- हवे वेहेली ते तेडो मारा वाला, रमवा हरख न माय । सुंदर धणी मारा रे तमने, हूं आवीने जीतूं तेणे ताय || ग्रं - खटरुती, प्र -5, चौ -17
- हवे श्रवणा तूं संभार आपोपूं, थाय वचिखिण वीर । वाणी जे वल्लभतणी, तूं ग्रहजे दृढ करी धीर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -20
- हवे सब्दातीत निध, कोण देसे रे बाण । वर्तमाण तणी रे, कोण केहेसे रे जाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -73

- हवे संभारजो जीवसुं वात, जीव तणो मोटो प्रकास । चौद भवन अजवायूँ करे, जो जीव जीवनने रूदे धरे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -13
- हवे समझायूँ जो जो वाणी, दूध विछोडा करी दऊं पाणी । जो जीव साख पूरे आपणो, अर्थ खरो तो तारतम तणो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -32, चौ -12
- हवे सरीर मारो केम रहे, जीव मारो मूने घणूं दहे। हवे अग्यां मागू मारा धणी, करूं आरंभ तपस्या तणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -35
- हवे सह भेला तो चालिए, जो अंग माहेथी देवाय । जोगमाया तो थाय तमने, जो सांचवटी वटाय || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -38
- हवे साथ कहे अमे सांभल्या, काई तमारा वचन । हवे अमे कहूं ते सांभलो, काई द्रढ करीने मन || ग्रं - रास, प्र -9, चौ -31
- हवे साथ खोली काढू आवार, ते तां तमने में कयो प्रकार । श्री सुंदरबाई तणो अवतार, पूरण आवेस दीधो आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -47
- हवे साथ मारो खोली काढूं, जे भली गयो रामत मांहें । प्रकास पूरण अमकने, हवे छपी न सके क्यांहें || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -1, चौ -52
- हवे सांभलो आ पाधरू द्रष्टांत, जीव जगवी जो जो एकांत । चौद भवननो कहिए धणी, लीला करे वैकुंठ विखे घणी || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -14
- हवे सुकजीना वचन हूं केटला कहूं, हूं सार काढवा भागवत ग्रहूं । सघलानो सार आ ते रास, जे इंद्रावती मुख थयो प्रकास || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -33, चौ -21
- हवे सुणजो सहुए साथ, चरणे तमने लागे मेहेराज । ए वाणी श्री धणिए कही, वली वली तमने कृपा थई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -19, चौ -10
- हवे सुणीस हूं जोपे करी, नव मकं एक वचन । ऐ वाणी घणू हूं वल्लभ करीस, जेम सहु को कहे धन धन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -22
- हवे सुधर सो संगत थकी, जो मलसे एहवो साध । सास्त्र अर्थ समझावसे, त्यारे टलसे सघली ब्राधः || ग्रं - किरन्तन, प्र -128, चौ -52
- हवे सेवा करीस हूं सर्वा अंगे, दऊं प्रदखिणा रात ने दिन । पल न वायूँ निरखू नेत्रे, वालपण करूं जीव ने मन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -23, चौ -15
- हवे सेवा कीजे अनेक विध करी, अने आपण काजे आव्या फरी । वली अवसर आव्यो छे हाथ, चेतन करी दीधो प्राणनाथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -13, चौ -3
- हवे सैयरने हूं प्रगट कहूं, आपणों वास श्री धाममा रहूं । अछरातीत ते आपणा घर, मूल वैकुंठ मांहें अछर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -37, चौ -1
- हवे हारया हारया हूं कहूं वार केटली, राखो रोतियो करो निरमल नार । कहे महामती मेहेबूब मारा धणी, आरे अर्ज रखे हाँसीमां उतार || ग्रं - किरन्तन, प्र -36, चौ -4
- हवे हूं आविस तम पासे, तूं जाइस नाठो क्याहें । तें छेतरी घणां दिन मूने आगे, ते वार बूठी त्याहे || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -21

- हवे हूं कहीस तेम तूं करीस, मने विरह दीधो अति जोर । तोहे ते मारी खबर न लीधी, में कीधा घणा बकोर || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -32
- हवे हूं केम करूं रे, वचन वाणी धणी किहां । वालयो बोलावी करी, हूं पाछी रही इहां || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -37
- हवे हूं जीतूं तूंने जोपे करी, में ओलखियो आधार । में अनेक वार जीत्यो रे आगे, वलीने वसेके रे आवार || ग्रं - खटरुती, प्र -8, चौ -24
- हवे हूं बलिहारी जाऊं मारा धणी, मारा मनमा एक हाम छे घणी । अछता मंडल माहे लाभ छे घणो, अने आंझो छे मारा धणीजी तम तणो || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -10, चौ -19
- हवेने करसं जाग्या पछी वात, काई अमल चढ्यूं छे साथने निघात । तारतम केहेता हजी वले न सार, नहीं तो अनेक विधे कयूं प्राणने आधार || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -51
- हवेने कहूं तूने चाक चकरडा, तूं चढी बेठो जीवने माथे । आपोचूं नव ओलखया अभागी, फोकट फेरव्यो जीव निघाते || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -81
- हंस चकोर मैना कोइली, करें बन में टहँकार । बोलें बपैया बांबी दादुर, करें तिमरा भमरा गुंजार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -38
- हँसत नेत्र मुख नासिका, श्रवन हँसत चरन । भों भृकुटी गाल अधुर, हँसत सिनगार भूखन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -5, चौ -40
- हँसत सोभित मुख हरवटी, अति सुन्दर सुखदाए । हाए हाए रूह नजर यासों बांधके, क्यों टूक टूक होए न जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -56
- हँसत सोभित हरवटी, अंग भखन कई विवेक । मुख बीड़ी सोभित पान की, क्यों बरनों रसना एक || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -14
- हँसत सोभित हरवटी, दंत अधुर मुख लाल । आसिक से क्यों छूटहीं, सब अंग रंग रसाल || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -124
- हँसते हँसते उठसी, ऐसी हुई न होसी कब । हक हँससी आपन पर, ऐसी हुई जो हाँसी अब || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -17
- हँसी रमी कतोल करीने, श्रोता किवता उठे । मनमां जाणे अमे ग्यान कयूं छू, पण बंध मांहेंना नव छूटे || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -44
- हँसें खेलें बिध तीनमें, छोड़े देह सुपन । महामत कहें सुख चैन में, धनी साथ मिलन || ग्रं - किरन्तन, प्र -85, चौ -18
- हस्त कमल अति कोमल, उज्जल हथेली लाल । केहेते लीके सलूकियां, हाए हाए लगत न हैड़े भाल || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -207
- हस्त कमल काड़ों कड़े, मांहें कई रंग कई बल । सो रूह लेवे विचार के, आणू चले न जुबां अकल || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -60

SPJIN

- हस्त कमल की क्यों कहूं, पोहोंचे हथेली कई रंग । लाल उज्जल रंग केहेत हो, इन रंग में कई तरंग || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -63
- हस्त कमल को देखिए, तो अति खूबी कोमल । ए छोड़ आगे जाए ना सके, जो कोई आसिक दिल || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -105
- हस्त करी देखाडिए, अने ठमके दीजे पाय । वचन गाइए प्रेमनां, कांई तेना अरथज थाय || ग्रं - रास, प्र -29, चौ -5
- हांऊ हांऊ रे सखियो तमे ठेक वखाण्यो, ए तो दीधो लडसडतां रे || ग्रं - रास, प्र -28, चौ -5
- हाए हाए इस्क हक का, समझे नहीं मोमिन । ना तो अरवाहें थी अर्स की, पर हुआ न दिल रोसन || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -47
- हाए हाए ए देख्या बल जुलमत का, दिल ऐसा किया सखत । ना तो एक साख मिलावते, अर्स अरखा तबहीं उड़त || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -119
- हाए हाए ए समया क्यों न रया, ए कैसा भोम का बल । तो कया सिखरा सींग पर, रेहे न सके एक पल || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -10
- हाए हाए ऐसी हमसे क्यों होए, कैसे हम मोमिन । सुन संदेसे क्यों भूलहीं, हक आप वतन || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -15
- हाए हाए किनें ना पेहेचानिया, ए जो रसूल रेहेमान । कहे किताबें जाहेर, सब पर ए मेहेरबान || ग्रं - सनंध, प्र -30, चौ -5
- हाए हाए क्यों न सुनो रूहें असं की, हक बका वतन । रूहअल्ला ने जाहेर किया, काहू सुन्या न एते दिन || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -1
- हाए हाए गिरो महंमदी कहावहीं, कहे हक को निराकार । जो जहूदों ने पकड्या, इनों सोई किया करार || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -23
- हाए हाए दिल में न आवहीं, किस वास्ते हाँसी भई । ए कारन कौन फरामोस को, ए दिल खोल किने न कही || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -24
- हाए हाए देखो मुस्लिम जाहेरी, जिन पाई नहीं हकीकत । हक सूरत अर्स माने नहीं, जो दई महंमद बका न्यामत || ग्रं - खुलासा, प्र -7, चौ -1
- हाकली गुरगम दीधी नारदजीएं, ते लई व्यास घर आव्या । सार वचन लई ग्रन्थ सघलाना, रदे ते मांहें समाव्या || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -109
- हाजानी करिए हेठडा, सिड पुराणी पांध । हिन आंधिए घणां उधा विधां, तूं मालम भाए म रांद || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -9
- हाट पीठ रलियामणा, चौटा चोरासी बाजार । मन चितवी वस्त आंही मले, पण खरा जोइए खरीदार || ग्रं - किरन्तन, प्र -125, चौ -5
- हाड मांस रे तमे, केम रया रे भेला । काय न सूकयुं रे मारूं, लोही तेणी वेला || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -20

- हाड़ मांस लोहू रगां, ऊपर चाम मढ़ाए। नव द्वार रचे नरक के, निस दिन बहे बलाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -106, चौ -7
- हाड़ हुए सब लकड़ी, सिर श्रीफल विरह अगिन । मांस मीज लोहू रगा, या विध होत हवन || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -3
- हाड़ हुए सब लकड़ी, सिर श्रीफल विरह अगिन । मांस मीज लोहू रगां, या विध होत हवन || ग्रं - सनंध, प्र -7, चौ -3
- हाड़े हाड़ पिसात हैं, चकी बीच जिन भांत । आराम ना जीवरा होवहीं, तो क्यों कर उपजे स्वांत || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -4, चौ -3
- हांण चाह डिए थो दिलके, त दिल करे थो चाह । अपार मिठाइयूं तोहिज्यूं, जे डिंने पाण हथाए || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -22
- हाणे की करियां केडा वंजा, केहेडो मंजो हांणे हंद । पिरी न पसां अंखिए, जे मूं कारण आया माया मंझ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -6, चौ -12
- हाणे केहडो हाल मुंहजो, रूहें केहडो हाल । न डेखारे न डिठम, बेओ तो रे नूरजमाल || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -22
- हाणे केही पर करियां आंसे , को न सुजाणों सेंण । सजण सेई पुकार करीन, आंके निद्र अचे की नेण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -11
- हाणे गाल्यूं मुंजे हालज्यूं, कंदिस आंसे आंऊं। बेओ केर सुणीदो तो रे, जे करियां वडियूं धांऊं || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -55
- हांणे चुआं सचो सांईजी, जे अची बिठो हिंद । ईसे मांधा अची करे, भगो दज्जाल जो कंध || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -11
- हांणे जिन थिए बिसरी, कत तूं कोड मंझां । सुहाग संदो सुत्रडो, संनो थींदो तो हथां || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -27, चौ -10
- हांणे जी जाणे ती मूं कर, पण बदल मुंहजो हाल । ती कर जी पसां तोहके, जी सुणियां मिठडी गाल || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -40
- हांणे जे करिए हेतरी, जी जेडियूं सभे पसन । कर सचा अची मुकाबिलो, सुख थिए असां रूहन || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -33
- हांणे जे लाड असां जा, ब्या सचा जे पारीने । मूं तेहेकीक आंझो तोहिजो, मूंके निरास न कंने || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -35
- हांणे डिसूनी डोहे निहारियां, तां जर भत्या अतांग । महें लेहेस्यूं मेर जेडियु, व्या मछे पेरां न्हाय मांग || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -6, चौ -8
- हांणे तूं म किज निद्रडी, निद्रडी डेरे दुहाग । तूं तां जागी जोर करे रे, गिन तूं वंजी रे सुहाग || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -27, चौ -11
- हाणे तूं म भूलज रे, भोरडी सुजाणें तूं सेण । साणे तो डिठां सिपरी, भोरी तोहेनी तोहजडे नेण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -27, चौ -1

- हाणे दाई मुदई बे जणां, जां मुकाबिल न हुन । तूं बेठो मथे तोरो गिंनी, हे बेठ्यूं हिकल्यूं रून || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -72
- हांणे निपट आए थोरडी, सुण कांध मूंहजी गाल । डेई दीदार गाल्यूं कर, मूं वर नूरजमाल || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -34
- हाणे बड्यूं उमेदूं अगियां, की पूरयूं कंने कांध । हाणे पेरे लगी मंगां एतरो, पाए गिची में पांध || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -10
- हांणे मोह थीं मंगां मुं धणी, मुंजा सुणज सभ स्वाल । महामत चोए मूं लाडडा, धणी पार तूं नूरजमाल || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -54
- हांणे हितस्यूं गाल्यूं को कस्यो, को झोडो बधारयो । हे झोडो सभे त चुके, जे असांजा लाड पारयो || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -94
- हाणेंनी आऊं की करियां, मुंजानी केहा हवाल । केहे मोह गिनीने रे अदियूं, आंऊं करियां आंसे गाल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -7, चौ -7
- हाथ कंकन नंग नवघरी, स्वर एकै रस पूरत । और भूखन सबों अंगों, सोभित सब सूरत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -55
- हाथ कों कड़ी पोहोचियां, जानों ए जोत इनथें अतन्त । जोत सागर आकास में, कोई सके ना इत अटकत || ग्रं - सागर, प्र -10, चौ -48
- हाथ घससी हाथसो, जो लई इंद्रियों घेर । सो पछतासी आंखां खुले, पर ए समया न आवे फेर || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -26, चौ -10
- हाथ चूड़ी नंग नवघरी, अंगूठिएं झलकत नंग। उज्जल हाथ हथेलियां, पोहोंचों पोहोंची नंग कई रंग || ग्रं - सागर, प्र -11, चौ -9
- हाथ ताली रमे छे वालो, सघलीसू सनेह । रंगे रमाडे रास मां, वालो धरी ते जुजवा देह || ग्रं - रास, प्र -21, चौ -7
- हाथ दीजे भूखन पर, सो हाथों लगत नाहें । पेहेने हमेसा देखिए, ऐसे कई गुन हैं इन माहे || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -63
- हाथ धरत मृदंग पर, जब अव्वल स्वर करत । निरत करें कई विधसों, कई गुन कला ठेकत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -60
- हाथ न लगे भूखन को, जो दीजे हाथ ऊपर । चित्त चाहया अंगों सब लग रया, जुदा होए न अग्या बिगर || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -18
- हाथ पकड़ देखावहीं, आप आए दरम्यान । ए छोड़ और जो ढूंढ़हीं, तिन दिल आंख न कान || ग्रं - सनंध, प्र -22, चौ -11
- हाथ पखाल्या पात्रमा, जुजवी जुगते । पासे साथ बेठो मली, सहु कोय एणी विगते || ग्रं - रास, प्र -46, चौ -4
- हाथ पग मुख नेत्र नासिका, सह अंग तेहना तेह । तेणे घर सहु अभडावियूं, सेवा ते करतां जेह || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -5, चौ -14

- हाथ पग सहु अंग ना, सर्वे रे संधाण । जुजवा कां नव थया रे, आथमते ए भाण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -15
- हाथ पांउं पेट हैयड़ा, कण्ठ हार भूखन वस्तर । ए सब अंग हक के मुसकत, और नाचत हैं मिलकर || ग्रं - सिनगार, प्र -12, चौ -24
- हाथ पाउं बाहेर अन्दर, सब अंगों हक नूर । कहे इन विध मोमिन अर्स में, जिन का हक आप करें जहूर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -15, चौ -40
- हाथ पाउं मुख हैयड़ा, वस्तर भूखन हक सूरत । ए ले ले अर्स बारीकियां, हाए हाए रूह क्यों न जागत || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -120
- हाथ पांउं मेरे क्यों रहे, देख हक हाथ पांउं । हाए हाए ए जुलम क्यों सहया, क्यों भूले अवसर दाउ || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -42
- हाथ पांऊ मुख नेत्र नासिका, सब सोई अंग के अंग । तिन छूत लगाई घर को, प्यार था जिन संग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -10
- हाथ पांव मुख नेत्र नासिका, सोई अंग के अंग । तिन छूत लगाई घर को, प्यार था जिन संग || ग्रं - सनंध, प्र -16, चौ -13
- हाथ पांव सब अंग के, सब उजड़ न पड़े संधान । अंग रोम रोम जुदे न हुए, अस्त होते तेज भान || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -14
- हाथ रसूल के फरमान, रूह अल्ला साथ इलम । हादी करावें हजूर बंदगी, खोले पट हक के हुकम || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -1, चौ -6
- हाथ रसूल के भेजिया, तुम ऊपर फरमान । हकीकत मारफत की, तुम क्यों न करो पेहेचान || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -49
- हाथी इत कई रंग के, अस्वारी के सिरदार। कबूं कबूं राजस्यामाजी रूहें, बड़े बन करत विहार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -45
- हाथी ऊंचे पहाड़ से, मुख सुन्दर दंत सुढाल । मन वेगी कबूं न काहिली, तेज तीखी चलें चाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -58
- हाथी घोड़े बैल बकर, साम्हर चीतल हरन । मेढ़े पाड़े पस्वड़े, कई खेलें ऊँट अरन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -101
- हाथी बाघ चीते दीपे केसरी, कोई जातें गिन ना सकत । हक कदम रूहें क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -8, चौ -57
- हाथी बाघ चीते सियाहगोस, खेलें मिलें आतम नहीं रोस । हंस गरूड़ पंखी कई जात, नाम लेऊ केते के भांत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -52
- हाथों कदम न छोड़हीं, रूह हिरदे मांहें लेत । हक कदम बँचें रूह को, सब अंगों समेत || ग्रं - सिनगार, प्र -6, चौ -38
- हाथों पाग बांधी तो कहिए, जो हकमें न होवे ए। कई कोट पाग बनें पल में, जिन समें दिल चाहे जे || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -48

- हाथों-हाथ न छोड़िए, लग रहिए अंगो अंग । इन विध एक दिल राखिए, कोई छोड़े ना काहू को संग || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -26
- हादिएँ इनको ऐसा किया, फरजंद मेरे मुद्दा लिया । हे परवरदिगार मेरे, कबूल हुआ रजामंदी तेरे || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -6
- हादी किया चाहे एक दीन, ए कौल तोड़ जुदे जात । सो क्यों बचे दोजख से, जाए छोड़े ना पुलसरात || ग्रं - खुलासा, प्र -4, चौ -33
- हादी देखाए भी तो देखे, जो दिल होए आकीन । सो सखत बखत ऐसा हुआ, जो छोड़ फिरे सब दीन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -62
- हादी नूर है हक का, और रूहें हादी अंग नूर । इन विध अर्स में वाहेदत, ए सब हक का जहूर || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -32
- हादी मिल्या बोहोतों को, कोई ले न सक्या हादी चाल । चलना हादी का सोई चले, जो होवे इन मिसाल || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -61
- हादी मीठे सुकन हक के, कहेगा तुम रोए-रोए । तुम भी सुन - सुन रोएसी, पर होस में न आवे कोए || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -59
- हादी मीठे सुकन हक के, कहेगा तुमें रोए रोए । तुम भी सुन सुन रोएसी, पर होस में न आवे कोए || ग्रं - खिलवत, प्र -11, चौ -27
- हादी मोमिनों बीचमें, पाइए हक इस्क ईमान । ए पाकी है मोमिनों, होए खाली सोर जहान || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -54
- हादी रूहों को खेल देखाइया, देख्या बैठे तले कदम । और न कोई केहे सके, बिना निसबत खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -10, चौ -65
- हादीएँ पूछा हक से, क्यों खाक धरी चोंच में । खेल उमतें मांगिया, गुनाह वजूद हुआ तिनसे || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -61
- हाय हाय करूं रे बेहेनी, वाले दीधो मूने छह । भसम न थयो रे, मारा जीवसुं देह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -5, चौ -70
- हाय हाय रे दैव तूंने सूं कहूं, ते वारी नहीं विधाता । एणी पापनिए एम केम लख्यू, वालो मूकसे कलकलतां || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -17
- हाय हाय रे दैव तें सुं करयूं, केम रहे रे कायामां प्राण । जीवनजी मूकी गया, नव कीबूं ते अमने जाण || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -15
- हाय हाय रे बेहेनी हूं तूं करूं, मूने भोम न दिए विहार । संधान सर्वे जुआ थया, ए रेहेसे केम आकार || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -36
- हाय हाय रे विधाता पापनी, तें कां रे लख्यां एवां करम । दैवतणी तूंने बीक नहीं, जे तें एवडो कीधो अधरम || ग्रं - रास, प्र -32, चौ -16
- हार कई जवेरन के, कहूं केते तिनके रंग । कई लेहेरें मांहें उठत, ए तो अर्स अजीम के नंग || ग्रं - सिनगार, प्र -4, चौ -57

- हार कण्ठ गिरवान जो, अति सुन्दर सुखदाए । लाल लटकत मोती पर, ए सोभा छोड़ी न जाए || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -109
- हार कहे हैड़े पर, जोत भरी जिमी आसमान । हाए हाए ए मुरदा जल ना गया, नूर एता होते सुभान || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -105
- हार किनार पार नूर में, नूर सागर हुआ द्वार द्वार । नूर वार पार या बीच में, नूर झलकारों झलकार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -31
- हार दिया तब मैं इनों को, रब्द न किया हम । जाए फंदियां झूठ में, नेक देखाया तिलसम || ग्रं - खिलवत, प्र -15, चौ -39
- हार दूजा मानिक का, जानों उन थें अति सोभाए । जब लालक इनकी देखिए, जानों और सबे ढंपाए || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -17
- हार लसनियां पांचमा, कछु ए सुख सोभा और । जानों जोत जिमी आकास में, भराए रही सब ठौर || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -20
- हार सोभित हिरदे पर, बाजू बन्ध पोहोंची कड़े। सुन्दर सख्प सिर मुकट, दिल आसिकों देखत खड़े || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -220
- हारे ए सुख सैयां लेवहीं, मेरे पिउजी की विरहिन । पीछे तो जाहेर होएसी, देसी अखंड सुख सबन || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -6, चौ -19
- हारे ढूंढ़ ऊपर तले, खुदा न पाया किन । तब हक का नाम निराकार, कया निरंजन सुंन || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -2
- हारे मारा साध कुली ना जो जो || ग्रं - किरन्तन, प्र -129, चौ -1
- हारे वाला अगिन उठे अंग ए रे अमारड़े, विमुख विप्रीत कमर कसी हथियार । स्वाद चढ्या स्वाम द्रोही संग्रामें, विकट बंका कीधा अमें आसाधार || ग्रं - किरन्तन, प्र -40, चौ -1
- हारे वाला कारे आप्या दुख अमने अनघटतां, ब्राधलगाडी विध विध ना विकार । विमुख कीधां रस दई विरह अवला, साथ सनमुख मांहें थया रे धिकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -39, चौ -1
- हारे वाला बंध पड्या बल हरया तारे फंदड़े, बंध विना जाए बांधियो हार । हंसिए रोइए पड़िए पछताइए, पण छूटे नहीं जे लागी लार कतार || ग्रं - किरन्तन, प्र -37, चौ -1
- हारे वाला रल झलावियो रामतें रोवरावियो, जजवे पर्वतों पाया रे पुकार । रणवगडा माहें रोई कहे कामनी, धणी विना धिक धिक आ रे आकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -36, चौ -1
- हारों बीच जो दुगदुगी, माहे नव रतन । नव जोत नव रंग की, जानों सब ऊपर ए भूखन || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -22
- हाल चाल सब इस्क की, खान पान सब साज । सोभा सिनगार सब इस्क के, अर्स इस्क को राज || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -90

- हावसं भाव करे वालो हेते, गुण ने घणां वालातणां रे । रामत करतां रंग रेल करे, झकझोल मांहें नहीं मणां रे || ग्रं - रास, प्र -37, चौ -2
- हांस चालीस चबूतरा, धरत कठेड़ा जोत । केहे केहे मुख केता कहे, आसमान भयो उद्दोत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -31
- हांस पचास अगली दिवालें, दोऊ तरफों पचीस पचीस । दो मेहेराव बीच झरोखे, हर हांसें मंदिर तीस || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -8
- हाँस विनोद ऐसा करें, सुख प्रेम अधिक अंग धरें। यों सुख मिनों मिने लेवें, सखी एक दूजीको देवें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -125
- हाँस विलास सनेह प्रेम प्रीत, सख पिया जी को सब्दातीत । डब्बे तबके सीसे सीकियां, कई देत देखाई लटकतियां || ग्रं - परिक्रमा, प्र -3, चौ -72
- हाँस विलास सुख एक है, एक भांत एक चाल । तो इन वाहेदत की क्यों कहूं, कौल फैल जो हाल || ग्रं - सागर, प्र -4, चौ -5
- हांस विलास, सकल साथ, लेत बाथ, मध्य रामत हेत करी || ग्रं - रास, प्र -30, चौ -6
- हाँसी इसही बात की, फेर फेर होसी ए। उठ उठ गिर गिर पड़सी, बखत जागने के || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -14
- हांसी इसही बात की, मेरा इलम तुमको जगाए । तुम बका करोगे दम खेल के, पर सकोगे न आप उठाए || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -55
- हाँसी करी अति बड़ी, हक आए तेहेकीक । चौदे तबकों में नहीं, सो देखाए दिया नजीक || ग्रं - खुलासा, प्र -9, चौ -35
- हाँसी करी किन भांत की, फरामोसी दई किन । पर हाए हाए दिल न विचारहीं, कोई ऐसा दिल हुआ कठिन || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -8
- हाँसी करी किन वास्ते, फरामोसी की दे। हाए हाए मोमिन ना समझे, बात इस्क की ए || ग्रं - खिलवत, प्र -12, चौ -37
- हांसी करी रूहन पर, दे इलम बेसक । मासूक हंस के तब मिले, जब हके दिया इस्क || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -88
- हाँसी न होसी हुकम पर, है हाँसी रूहों पर । जा को गुनाह पोहोंच्या खिलवतें, कहे कलाम अल्ला यों कर || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -15
- हांसी ना रहे पकरी, धनिऐं जो साथ पर करी । हंसते ताली देकर उठे, धनी महामत साथ एकठे || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -33, चौ -34
- हाँसी याही बात की, किए सब खेल में खबरदार । तो भी इस्क न आवत, हुई हाँसी बे-सुमार || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -33
- हाँसी हुई अति बड़ी, झूठों बड़ी जलन । मेला अति बड़ा हुआ, आखिर सुख सबन || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -102

- हाँसी होत है इन समें, सुन सुन स्वर खुसाल । हँस हँस के हँसत, सब संग हींचे नूरजमाल || ग्रं - परिक्रमा, प्र -31, चौ -119
- हाँसी होसी अति बड़ी, ए खेल किया वास्ते इन । औलिया लिल्ला दोस्त कहावहीं, पर बल न चल्या इत किन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -33, चौ -13
- हांसी होसी अति बड़ी, जिन मोहे देओ दोस । कमी कहे मैं ना करूं, पर तुम छल हुआ सिरपोस || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -13
- हांसी होसी अति बड़ी, जिन मोहे देओ दोस । कमी कहे मैं ना करूं, पर तुम छल हुआ सिरपोस || ग्रं - सनंध, प्र -12, चौ -13
- हांसी होसी मोमिनों, इन खेल के रस रंग । पूर बिना बहे जात हैं, कोई बैंच निकाले अभंग || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -18
- हांसी होसी साथ में, इन खेल के रस रंग । पूर बिना बहे जात हैं, कोई आड़ी होत अभंग || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -22, चौ -14
- हास्या हास्या अमने कां कहो, आवो लीजे बीजी बाथ । जे हारसे ते हमणां जोसू, तमे सांची केहेजो सहु साथ || ग्रं - रास, प्र -41, चौ -16
- हिक अधगुण संभारजे, अदी रे त पण लभे साह । गुण संभारीदे सजणे, अजां को न उडे अरवाह || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -7, चौ -3
- हिक कतंण महे माठ थेई, सेहन भिंने रे वेंण । तंदू चाडीन तकड्यू, नीचा ढारे नेण || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -8
- हिक खोटी करीन पाण वियनके, त्रके पाईन वर । जडे उथींदियूं आतण मंझा, तडे गाल्यूं थिंक्यूं घर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -4
- हिक गिनंदयूं सुहाग सुलतानजा, सुहागणियूं सेई । से कर खणी गालियूं, कंदयूं विच बेही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -22
- हिक गुझ केयोसी पधरो, ब्यो कोठींदे न वेयूं । हेडी हिकडी कोए न करे, से पांण हथां बए थेयूं || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -20
- हिक घोर अंधारो व्यो अंखे न सुझे, त्रेओ हियडो न्हायम हंद । पिरी आया मूंके पार उतारण, एहेडी धारा मंझ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -6, चौ -10
- हिक तंदू नारीदे वियनज्यूं", जमारो सभे वेई । हिक फेरा डीदे फुटस्यूं, पण हथ न छुताऊं पई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -8
- हिक त्रक झोरीन ताव में, फोकट फेरा डीन । हिक झोडा लगाईन पाणमें, अदी रे उनी न जातो कींन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -2
- हिक त्रकू झोन वियनज्यूं, ते पर थींदी कीय । कतंण उनी पूरो थेई, पण मिहीणां लेहेंदियूं नीय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -5
- हिक पाण त्रकू सारीन वियन ज्यूं, हकले कताईन । हिक जेडियूं जाणे जोर करे, पाण आयतुं कराईन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -3

- हिक फेरीन अरट उतावरो, तनके ता डेई । राती कन उजागरा, सुत्र कतींदियूं पण सेई || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -25, चौ -14
- हिक बेर म थीजा विसस्या, हित न्हाय बेठे जो लाग । अंख उघाडे ढकजे, कोडमी पातीमें थिए अभाग || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -16
- हिक मंगां दीदार तोहिजो, बी मिठडी गाल सुणाए। कांध मूंहजा दिल डेई, मूसे हित गालाए || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -9
- हिक लधिम गाल पिरनजी, चुआं सभे जेडिन । जा लगाइल हिन हक जी, सा न छुटे पर किन || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -17
- हिक लेखे मूं न्हारियो, म न्हाए गुन्हे जो पार । त रूसी रहे मूंसे वलहो, मूंके करे गुन्हेगार || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -14
- हिक वडो मूंके अचरज, मुंजा लाड पारीने की। मूंके जगाए मंगाइए डियणके, मथां पुजाइए डीह || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -51
- हिक सिकां तोहिजे सुखके, जे से संभरे सुख । से सुख हिन विसारियाँ, हे जे डिठम डुख || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -10
- हिक हिनजे दिल में, द्रढाव वडो डिठम । हाणे माधा हथ तोहिजे, पण हितरो पेरो केयो पिरम || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -24
- हिकडी आर चुके माहडू, तेके वी आर अचे बुध । हेतरा भठ वरंदे मथे, आंके अजां न वरे सुध || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -15
- हिकडी गाल थेई हिन न्हाए में, असां न्हाए भारी थेयो । त सुख मंगू हित अर्सजा, जे न्हाए के पसूं था बेओ || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -27
- हिकमत बल इनों के, क्यों कर कहे जबान । दीदार पावें अर्स हक का, सो देखो दिल आन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -23
- हिजाब न रह्या बीच फकीरी, ऐसा हक इलम बेसक । यों नजीक खुदाए के, अदल कजा करे हक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -6, चौ -48
- हिंडोले इन बन के, ए बन बड़ा विस्तार । इन आणू घाट केल का, और बड़ा बन तिन पार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -30, चौ -63
- हिंडोले हजार बारे, स्याम स्यामाजी हींचत । अखंड सुख धनी धाम बिना, कौन देवे इन समें इत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -7, चौ -39
- हित अंख उघाडींदी जोरसे, नसू चढाए निलाड । जा हित थींदी निद्र खरी, सा घर उथींदी ओलाड || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -11
- हित अचे अरवा अर्स जी, त उडे चौडे तबक । हुकमें नाम धरायो रूहन जो, हे हुकम केयो सभ हक || ग्रं - सिंधी, प्र -12, चौ -7
- हित के के बुजरक आइया, जे नजीकी हक जा । ए वडा दीन दुनी में, रूहें चाईन पातसा || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -16

- हित खुदी न गुणो के सिर, दर उपट या ढक । पस पिरी या रांद के, आखिर ई चोए इलम हक || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -20
- हित डोह न कोए इलमजो, न की डोह विचार । हे धुंडी तोहिजे हुकम जी, सा छुटे न कांधा धार" || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -47
- हित न्हाए विच बेही करे, आंऊ की चुआं मूके पांण । केई थेई सभ तोहिजी, से सभ तोके आए जाण || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -60
- हित बिओ कोए न कितई, सभ डिसे हुकम इलम । जे उडे नाबूद हुकमें, त पसो बेठ्यूं तरे कदम || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -11
- हित साहेद तूंहीं तोहिजो, खिलवत में न बेओ । जे बंग होए मुंह जो, से मूंजे सिर डेओ || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -80
- हित हुकम हिकडो हकजो, उनहीं हकजो इलम । हुकम इलम या रांद के, पसो बेठ्यूं तरे कदम || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -8
- हितरो त आइम तेहेकीक, पोए म गाल सची सभ चोंदा । असां हल्ले पोरयां, हथडा घणूं गोहोंदा || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -39
- हिंदुओं ए दृढ़ कर लिया, इत जो करसी करम । सो जाए आपे अपना, दें हिसाब आगे राए धरम || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -20
- हिंदू और मुस्लिम के, बीच पड्यो है भरम । रसूल कहे सब हुकमें, और निगमें दृढ़ाए करम || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -35
- हिंदू कहें धनी आवसी, वेदों लिख्या आगम । कहया हमारा होएसी, साहेब आगे हम || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -80
- हिंदू जोडू जब करें, ले देवें मन के बंध । जिन कोई छोड़े किनको, यों पड़ें गफलत फंद || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -17
- हिंदू न माने कौल महंमद, न सरीयत मुसलमान । यों जान चौथे आसमान से, आया ईसा देने ईमान || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -27
- हिंदू मसीताँ ढ़हावहीं, मुसलमान सों वाद । दें सोभा इष्ट दीन को, कहें हमें होत सवाब || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -19
- हिंदू मुए जलावहीं, और ए आए तिन गाड़। मिल तिन की जारत करें, कहें हमें होत सवाब || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -10
- हिंदू मुए जलावहीं, खाक भी देवें उड़ाए । जो डंड जम का छूटहीं, तो भी दिल सुन्य को चाहे || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -22
- हिन अर्सजे बाग में, आयूं मुदयूं मीह । हिन वेरां असां के, जुदयूं रख्यूं कीह || ग्रं - सिंधी, प्र -2, चौ -3
- हिन जिमीमें पातसाही, कंदोई चारीस साल । चई खुटे पुंना कागर, जाहेर केयाऊं गाल || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -8

- हिन डुखे मंझा को न निकस्यो, केहो डिसोथा भाल । जडे हली वेंदा हथ मंझां, तडे केहा थींदा हाल || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -13
- हिन न्हाए के केइए सच, जे हित आया सचा पांण । मूंसे सच को न करिए, मूंजा सचडा सेण सुजाण || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -65
- हिन मुंक्यूं मीह संदिञ्या, रूहें रांद करीन । दोडे कूडे मीहमें, पाहिजे साथ पिरीन || ग्रं - सिंधी, प्र -2, चौ -14
- हिन सुखे संदियूं गालियूं , आईन अलेखे । हियडो मूं सुंजो थियो, हिए न अचे ते || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -11
- हिन सोझरे जे न सुजाता, वभेरकां ही ई। पोए सांणेनी सिपरियन अग्यां, मोह खणदियूं की || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -19
- हिनी में जे बे चयूं, सुन्दरबाई सिरदार । से पण थेयूं निद्र में, तिनी सुध न सार || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -21
- हिन्दू मुसलमान रे फिरंगी कई जातें, होदी बोदी जैन अपार । वादे सो ब्रोध बधारिया, करी अगनी उदेकार || ग्रं - किरन्तन, प्र -53, चौ -2
- हिंमत तो भी हुकम, रूह हुज्जत सो भी हुकम । तन हुकम सो भी हुकम, सब हुकम तले कदम || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -34
- हिये चढाइए तूं, त सभ सुख हियो झल्ले । जे सुख डिए मेहेर करे, त बेयो केर पल्ले || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -15
- हिरदे आद नारायन के, वेद जिनको स्वांस । ग्रन्थ सबों की उतपन, वानी वेद व्यास || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -23
- हिरदे कमल अति कोमल, देख इन सरूप के अंग । जो आसिक कहावे आपको, क्यों छोड़े इनको संग || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -108
- हिरदे फूटे ऐसे बेसुध, एता भी न रहे याद । खुद काजी आखिर होएसी, तब देसी कहा जवाब || ग्रं - सनंध, प्र -40, चौ -47
- हिरस हवा मोर सांप जिद, साथ निकस्या अबलीस ले । क्यों हमें इन आदम पर, नूरी पे कराए सिजदे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -43
- हिलोडे नीर लेखू कियां, अने कुओ पछाडू खाए । पोए तूं कडे उथीने पापी, पाणी फिरदे मथाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -14
- हिसाब करूं साथ देखियो विचार, गुन जाहेर हुए प्राणके आधार । प्रारध गुने एक मींडेसों बढ़े, दूजे सों हर एक यों चढ़े || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -12, चौ -23
- हिसाब कह्या होसी हिंदमें, पुरसिस करसी हक । हक इलम ले रूहअल्ला, करसी सबों बेसक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -31
- हिसाब किया देखे नहीं, हादिएँ करी फजर । किए फैल पुकारे बुजरक, बिन ईमान न देखे नजर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -36

- हिसाब जिनों हाथ हक के, अर्स-अजीम के मांहें । अर्स तन बीच खिलवत, ताको डर जरा कहूं नाहे || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -21
- हिसाब नहीं उजास को, आगे ले खड़ा लदुन्नी नूर । जाए ना बरन्यो इन जुबां, खड़ी अर्स अरवा हजूर || ग्रं - सनंध, प्र -36, चौ -4
- हिसाब नहीं नूर दिवालों, हिसाब नहीं नूर गलियां । हिसाब नहीं बीच नूर थंभ, नूर आवे नूर बीच से चलियां || ग्रं - परिक्रमा, प्र -37, चौ -82
- हिसाब नहीं पसुअन को, हिसाब नहीं पंखियन । नाहीं हिसाब बन जिमी को, जो बीच कायम वतन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -27, चौ -29
- हिसाब नहीं फूलन को, हिसाब ना चित्रामन । हिसाब नहीं खुसबोए को, हिसाब ना रंग रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -10, चौ -19
- हिसाब बीच ल्याए बिना, हक आवें नहीं दिल माहें । हक देत लदुन्नी मेहेर कर, हक अर्स आवे बीच जुबांए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -34, चौ -5
- हिसाब मुस्लिम कहावहीं, ए किया दृढ़ दिल । खुद काजी हस्तक नबी, हम देसी सब मिल || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -23
- हिस्सा देऊं आवेस का, सैंयन को सब पर । होसी मनोरथ पूरन, मिल हरखे जागसी घर || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -21, चौ -16
- ही आतण थींदो अलखामणो, जडे हलंदा सजण साणे । निद्र लहाए न्हारयो, हिन वलहे जे वेंणे || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -26, चौ -18
- ही तागा पाणी पसे तरे, तं मडदम हथां छड । हित घणो खेडा जागी जफा से, तांही कोईक निग्यो मंड || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -22
- ही पिरी तोके कडे मिडंदा, गिन तूं सुजाणी सुहाग। एहेडी एकांत तूं कडे लेहेनी, आए तोहेजडो लाग || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -28, चौ -2
- ही वेर घणूं सुहामणी, जा पिरिए डिंनी तोके पांण । जगायाऊं जोर करे, सुहागणियन के सुलतांन || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -28, चौ -3
- ही सुत्र घणो सुहामणो, मोघो थींदो जोर । सुजाणी तूं सिपरी, जीव मथाई घोर || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -27, चौ -12
- हीय हंद एहेडो आय, हिक वेरमें थिए वेणां । साथ तां आईन सभे समझू, न्हाय केहे में मणां || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -17, चौ -21
- हीरा ते पण तेहज भोमना, आ जिभ्या तिहां न पोहोचाय । आणी जिभ्याए जो न कहूं साथने, तो रूदे प्रकास केम थाय || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -4
- हीरा मानिक पोखरे, पाच नीलवी जे । नूर थंभ तरफ दाहिनी, तरफ बाईं यही नूर के || ग्रं - परिक्रमा, प्र -20, चौ -6
- हीरा लसनियां गोमादिक, मोती पाने परवाल । हेम चांदी थंभ नूर के, थंभ कंचन अति लाल || ग्रं - सागर, प्र -7, चौ -16

- हीरे लसनिएं हेम में, कड़ी जोत झलकत । नीलवी कुन्दन कांबिए, जानों जोत एही अतंत || ग्रं - सागर, प्र -6, चौ -105
- हुआ खासलखास जो, रूह मोमिनों मेला । बहत्तर से जुदा कहया, नाजी फिरका अकेला || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -42
- हुआ खुदाए के हजूर, बात याही की हुई मंजूर || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -81
- हुआ जाती सुमरन जिन को, अर्स अजीम जैसा सुख । निसबत बका नूरजमाल, अजूं क्यों पकड़ रहे देह दुख || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -16
- हुआ दीदार सब मेयराज में, जो हरफ कहे हकें मुझ । जो छिपे रखे मैं हुकमें, सो कौन जाहेर करे मेरा गुझ || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -75
- हुआ बिछोड़ा बीच ब्रहमांड के, एते पड़े थे हम दूर । सो हके इलम ऐसा किया, बैठे कदमों तले हजूर || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -36
- हुआ मेयराज महंमद पर, तिन में बका सब बात । महंमद पोहोंच्या हजूर, तहां देखी हक जात || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -3
- हुआ रब्द वास्ते इस्क, सबों बड़ा कहया अपना । हके हाँसी करी हादी रूहोंसों, कहे देखो खेल फना || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -33
- हुआ साहेब का करम, पाया भेद बीच हरम । हुई कबूल निमाज इन हाल, हुए साहेब सों खुसहाल || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -8
- हुआ साहेब सों परस, दिल से छूटी हवा हिरस । भेद पाया सिरर हक, मासूकी दरिया बीच हुआ गरक || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -8, चौ -13
- हुआ सोई सरत पर, पैगंमरों मिलाप । सो पढ़े किताबें फुरमाए से, अपनी ले आप || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -9
- हुआ हिंदुओं में जाहेर, हिंद से पाक मरद । इस्क राह चलावसी, चालीस बरस लों हद || ग्रं - सनंध, प्र -42, चौ -14
- हुआ है सब हुकमें, होत है हुकम । होसी सब कछू हुकमें, कछू ना बिना हुकम खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -45
- हुइयां सोभा तेरी सोहागनियां, इन जुबां न जाए बरनियां । ए जो मिलावा माननियां, ताए बड़ाइयां दैयां धनियां || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -1
- हुइयूं आसा उमेदूं वडियूं, से थक्यूं विच हित । मूं अडां पसो न सुणो गालडी, हांणे आंऊं चुआं के भत || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -7
- हुई ढील होते फजर, वास्ते आवने हक न्यामत । सो आया अर्स बका मता, हुआ बीच बारहीं सदी बखत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -13, चौ -34
- हुई पेहेचान पिउसों, तब कहयो महामती नाम । अब मैं हुई जाहेर, देख्या वतन श्री धाम || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -9, चौ -5

- हुई फजर मिट गई वाद, भूले बड़ो करसी पछताप || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -38
- हुई मजकूर अर्समें, सो सब वास्ते इस्क । अर्स हक हादी रूहें, ए साहेबी बुजरक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -22
- हुई मोमिनों को पूरन, तौहीद की मदत । सो लेवें दुनियां मिने, हक अर्स लज्जत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -2, चौ -45
- हुई रात अंधेरी फरेब की, फिरत चिरागें दोए। आप अर्स हक की, इन से खबर न होए || ग्रं - खिलवत, प्र -14, चौ -57
- हुई रात सबन को, तिन फेरे खेल में मन । सोई रात सोई साइत, पर भूल गैयाँ वह दिन || ग्रं - सनंध, प्र -41, चौ -11
- हुई लानत अजाजील को, सो उलट लगी सब जहान । अबलीस लिख्या दुनी नसलें, कही ए विध मांहें कुरान || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -133
- हुई हिदायत हक की, एक नाजी को बातन । खोल नजर रूह की, देखाए अर्स तन || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -3, चौ -37
- हुए इन खेल के खावंद, प्रतिबिंब मोमिनों नाम । सो क्यों न लें इस्क अपना, जिन अरवा हुज्जत स्यामा स्याम || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -88
- हुए जो ग्यानी अगुए, जिन लिए माएने वेद । सो ग्यान हिंदुओं आड़ा पड़्या, हुआ बड़ा छल भेद || ग्रं - सनंध, प्र -25, चौ -37
- हुए वजूद नींद के अर्स में, सो नींद दई उड़ाए । दे जाग्रत बातें दिल में, दिल अरसे किया बनाए || ग्रं - सिनगार, प्र -25, चौ -24
- हुए सामिल रसूल महंमद, रूहअल्ला इस्म हुआ अहमद । संग रोसन तौरेत कुरान, सो रान्या जाए न हुई पेहेचान || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -7, चौ -18
- हुए हिजाब आदम अकलें, हक गुझ पाइए हक इलम । ले माएने दुनी उपले, तासों जाहेर होत जुलम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -13
- हुकम आया तन मोमिनों, लई अर्स रूह हुज्जत । ले इत लज्जत अर्स हक की, क्यों हुकम रेहे सकत || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -22
- हुकम इलम खेल एकै, और कोई न कहूं दम । इत रूह न कोई रूहन की, जो कछू होए सो हुकम || ग्रं - सिंधी, प्र -16, चौ -3
- हुकम इलम खेल हिकडो, ब्यो कोए न कितई दम । हित रूह न कांए रूहनजी, जे की थेयो से सभ हुकम || ग्रं - सिंधी, प्र -12, चौ -3
- हुकम इलम ताबे कान के, मेहेर दिल ताबे इस्क के । क्यों कहूं इनसे आगे वचन, कानों ताबे भए सागर ए || ग्रं - सिनगार, प्र -13, चौ -25
- हुकम उठावे हँसते, रोते उठावे हुकम । हार जीत दुख सुख हुकमें, कछू ना बिना हुकम खसम || ग्रं - खिलवत, प्र -1, चौ -44

- हुकम कस्यो था जेतरो, ती फिरे असल अकल । अकल फिराए सोणे के, ती फिरे असांजा दिल || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -14
- हुकम कहावे मेरी रूह पे, जो हुई मुझमें बीतक । सो कहूं अर्स रूहों को, जो दिए सुख रसना हक || ग्रं - सिनगार, प्र -16, चौ -40
- हुकम कहे सो हुकमें, अर्स बानी बोले हुकम । रूहों दिल हुकम क्यों रेहे सके, ए तो बैठी तले कदम || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -73
- हुकम किया चाहे बरनन, ले हक हुकम मुतलक । करना जाहेर बीच झूठी जिमी, जित छूटी न कबूं किन सक || ग्रं - सिनगार, प्र -1, चौ -64
- हुकम किया था रसूल ने, जिन पड़ो जुदे तुम । सो कौल तोड़ बहत्तर हुए, रात के मुस्लिम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -16, चौ -86
- हुकम जो प्याला देवहीं, सो संजमें संजमें पिलाए । पूरी मस्ती न हुकम देवहीं, जानें जिन कांच सीसा फूट जाए || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -83
- हुकम जोस नूर खसम, मैं ले खड़ी इलम ए। ए पांचों काम कर हक के, पोहोंचे गिरो दोऊ ले || ग्रं - खिलवत, प्र -3, चौ -24
- हुकम तन बीच नासूत, हम फरामोस अर्स तन । नासूत देखें हम नजरों, अर्से पोहोंचे ना दृष्ट मन || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -55
- हुकम तो तन में सही, और लिए रूह की हुज्जत । हिस्सा चाहिए तिन का, सो भी मांहे बोलत || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -10
- हुकम तो है हक का, और खुदी भी ना हुकम बिन । खुदी हुकम दोऊ हक के, इत क्या लगे रूहन || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -5
- हुकम दिया दिल अर्स किया, हकें कया महंमद मासूक । ए कौल सुन रूह मोमिन, हाए हाए हुए नहीं टूक-टूक || ग्रं - खुलासा, प्र -3, चौ -15
- हुकम देवे लज्जत, प्याला जेता पिआ जाए । हर रूहों जतन करें कई बिध, जानें जिन प्याला देवे गिराए || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -86
- हुकम धनी के बिध बिध, अनेक किए पुकार । जिन सुनी न तिनकी वतन में, बातें हुई बिकार || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -25, चौ -21
- हुकम न आवे सब्द में, तो भी कहया नेक सोए । अब केहेनी जुबां बदले, सो मेंहेदी बिना न होए || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -60
- हुकम पर ले डारोगे, तेहेकीक कराओगे दिल । दाग अक्सों क्यों मिटे, जो हमारे नामों किए सब मिल || ग्रं - सिनगार, प्र -23, चौ -23
- हुकम बेहोस ना करे, हुकम जरा जरा दे लज्जत । हुकम पनाह करे सब रूहन, हुकमें जानी जात निसबत || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -79
- हुकम मांगे देवे हुकम, सो सब वास्ते हाँसी के । ए बातें होसी सब खिलवतें, इस्क रब्द किया जे || ग्रं - सिनगार, प्र -28, चौ -26

- हुकम मुरदों बोलावत, और ऐसी देत अकल । करत नजीकी हक के, मुरदे कहावें अर्स दिल || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -93
- हुकम मेहेर के हाथ में, जोस मेहेर के अंग । इस्क आवे मेहेर से, बेसक इलम तिन संग || ग्रं - सागर, प्र -15, चौ -2
- हुकम मेहेर बारीकियां, ए मैं कहूं बिध किन । नजर हमारी एक बिध की, सब बिध सुध ना रूहन || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -85
- हुकम लाख विधों जतन करे, हर रूहों ऊपर सबन । हुकम जतन तो जानिए, जो याद आवे अर्स वतन || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -94
- हुकम ल्याया जो हकीकत, सो क्यों कर ना देख्या सहूर । ल्याया तुमारे अर्स में, हुकम जबराईल जहूर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -100
- हुकम सरत इत आए मिली, जो फुरमाई थी फुरमान । महामत साथ को ले चले, कर लीला निदान || ग्रं - किरन्तन, प्र -82, चौ -24
- हुकम साहेब का इन विध, सो लेत सबे मिलाए । खावंदे बंध ऐसा बांध्या, कोई काढ़ ना सके पाए || ग्रं - खुलासा, प्र -10, चौ -78
- हुकम हादी का साहेब फरमान, करे सिफायत खुदा मोमिनों पेहेचान । मोमिन आकीनदारों को चाहें, हकमें भी उनहीं को मिलाएँ || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -23, चौ -8
- हुकम हुआ आदम को, कहे फरिस्तों आगे नाम । करें तुझ पर सिजदा हैयाती, मिल कर सब तमाम || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -28
- हुकम हुआ इमाम का, उदया मूल अंकूर । कलस होत सबन का, नूर पर नूर सिर नूर || ग्रं - सनंध, प्र -4, चौ -2
- हुकम हुआ इमाम को, खोल दे द्वार रूहन । आवें सब मेयराज में, दिल देखें अर्स मोमिन || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -3
- हुकम हुआ तिन को, कर सिजदा आदम पर । माएने मगज न ले सके, लिया ऊपर का जाहेर || ग्रं - खुलासा, प्र -15, चौ -10
- हुकम हुआ तीनों गिरो को, कर महंमद हिदायत । हकीकत और तरीकत, तीसरी जो सरीयत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -4, चौ -97
- हुकमें आवे लदुन्नी, हुकमें आवे किताब । सोई खोले हक हुकमें, जिन सिर दिया खिताब || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -42
- हुकमें करहीं बंदगी, हुकमें इस्क ले । हुकमें चोरी कर ल्यावहीं, हुकमें जाए सिर दे || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -16
- हुकमें कहूं ता दिन की, जो हक हादी रूहों खिलवत । अबलों जाहेर न काहूं, ए बका मता वाहेदत || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -1, चौ -5
- हुकमें खेल देखाइया, जुदे डारे फरामोसी दे । खेल में जगाए इलमें, अब हुकम मिलावे ले || ग्रं - सागर, प्र -3, चौ -8

- हुकमें चले हुकम, हुकमें जाहेर निसबत । हुकमें खिलवत जाहेर, हुकमें जाहेर वाहेदत || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -60
- हुकमें चिन्हाया रसूल, तब आया सबों आकीन । किया सबों ने सिजदा, जब हुकमें हुआ एक दीन || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -56
- हुकमें जड़ चेतन करे, करे चेतन को जड़ । हुकमें सेती हारिए, हुकमें मारे पकड़ || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -11
- हुकमें जोग जो लेवहीं, हकमें देवे भोग । हुकमें रोग जो आवहीं, हुकमें देवे सोग || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -20
- हुकमें जोस गलबा करे, हकमें जोर बढ़े इस्क । हुकमें इलम रखे सुख को, हुकम प्याले पिलावे माफक || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -78
- हुकमें झूठे सांच कर, ताए सुख दिए नेहेचल । अब हुकम कजा में न आवहीं, पर तो भी कहूं नेक बल || ग्रं - सनंध, प्र -37, चौ -105
- हुकमें डिखास्यो हुकम के, ते हकमें डिठो हुकम । भिस्त दोजख थेई हुकमें, आखिर सुख थेयो सभ दम || ग्रं - सिंधी, प्र -12, चौ -10
- हुकमें देखाया हुकम को, तिन हुकमें देख्या हुकम । भिस्त दोजख उन हुकमें, आखिर सुख सब दम || ग्रं - सिंधी, प्र -16, चौ -10
- हुकमें देत देखाई, कुदरत पसारा । ए देखत सब पैदा फना, हक न्यारे से न्यारा || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -17, चौ -59
- हुकमें परदा उड़ाइया, कर देऊं सब पेहेचान । तुमसों गोसे बैठ के, देऊंगी सब निसान || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -1
- हुकमें पाव पल में, पाग कई कोट होत । रंग नंग फूल कई नकस, दिल चाही धरे जोत || ग्रं - सिनगार, प्र -17, चौ -37
- हुकमें बात वतन की, जो है गुझ खसम । गोसे तुमको कहूंगी, जो हुआ मुझे हुकम || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -2
- हुकमें बेसक इलम, और हकमें जोस इस्क । मेहेर निसबत मिलाए के, बरनन करे अर्स हक || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -56
- हुकमें मांग्या हुकम पे, सो हुकमै देवनहार । सो हुकम फैल्या सबमें हक का, सो हकै खबरदार || ग्रं - परिक्रमा, प्र -18, चौ -25
- हुकमें मुसाफ इसारतें, करें मोमिनों पेहेचान । खोले बातून मोमिन हुकमें, याद आवे अर्स निसान || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -45
- हुकमें लिया भेख रूह का, सो भी हाँसी खुसाली रूहन । क्यों सिर लेना खुदी हुकम, पाक होए पकड़े चरन || ग्रं - सिनगार, प्र -27, चौ -7
- हुकमें वेद कतेब में, लिखे लाखों निसान । सो मिले कौल देखे तुम, हाए हाए अजूं न आवे ईमान || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -98

- हुकमें सब जुदे जुदे, खेल किए विवेक । मोमिनों को देखाए के, आखिर किया दीन एक || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -50
- हुकमें हम आए इत, लें हकमें हक इलम । मैं खासा मोहोल खसम का, कर हुकम केहेलाया तुम || ग्रं - सनंध, प्र -38, चौ -58
- हुकमें हाथ पकड़ के, दिया फैल हाल बेसक । तब जोस इस्क देखाया, जासों पाया हक || ग्रं - खिलवत, प्र -5, चौ -11
- हुकमें हादी आइया, और हकमें आए मोमिन । और फुरमान भेज्या इन पे, हकें कुंजी भेजी बैठ वतन || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -4
- हुकमें होवे सब बंदगी, आगू इन रूहन । हसें खेलें नाचें गाएँ, कई विध करें रोसन || ग्रं - परिक्रमा, प्र -14, चौ -58
- हूं अंग राखं वालाजीतूं मलवा, नहीं तो ततखिण देऊं निवेड । वली मेलो न आवे नौतनपुरी ए, ते माटे करूं छू जेड || ग्रं - खटरुती, प्र -7, चौ -11
- हूं अंगे रंगे अंगना संगे, करूं पोते पोतानी वात । बोलतां घणूं सरमाऊं, तेणे न कहूं निध साख्यात || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -131
- हूं अलगो न थाऊं रे सखियो, आपणी आतमा एक । रामत करतां जुजवी, काई दीसे छे अनेक || ग्रं - रास, प्र -47, चौ -8
- हूं कंठ बांहोंडी वालीने ऊभी, मारो प्राणतणो ए नाथ । नेहेचे सखी हूं नहीं रे मूकू, तमे कां करो वलगती वात || ग्रं - रास, प्र -39, चौ -4
- हूं जाणूं निध एकली लऊं, धणी तणां सुख सघला सहूं । ए सुख वीजा कोणे नव दऊं, वली वली तमने स्या ने कहूं || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -29, चौ -1
- हूं जोर करीने ज्यारे आविस इहां, त्यारे तमे करसो केम । एणे वचने इंद्रावतीए, वालोजी कीधां छे नरम || ग्रं - खटरुती, प्र -6, चौ -23
- हूं तां पिउजीने लागू छू पाय, मारा वाला जेम आ फेरो सुफल मारो थाय । जेम पिउजी ओलखाय मारा पिउजी, सुणोने अमारी वालाजी विनती || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -18, चौ -1
- हूं तेणे समे थई बेठी अजाण, मूने फजीत गिनाने कीधी निरवाण । घरथी तेडी मूने दीधी निध, तोहे न मूकी जीवे मोहजल बुध || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -61
- हूं तो नहीं रे मूकू मारो नाहोजी, तमे जोर करो जथाबल । आवी वलगो वालाजीने हाथ, आतां देखे छे सैयर साथ || ग्रं - रास, प्र -39, चौ -2
- हूं तो साचूं कहूं रे सखियो, तमने तो कांईक मरजाद । साचू कहे अने प्रगट रमे, इंद्रावती न राखे लाज || ग्रं - रास, प्र -17, चौ -8
- हूं तो स्याहीनी पण करू छू जो वाण, जाणू रखे लखतां न पोहोंचे निरवाण । एम मूकतां मूकतां मींडा रह्या भराय, कागल स्याही लेखणो खपी जाय || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -31

SPJIN

- हूं नव काढूं तो बीजो काढे कोण, निरमाण काही ग्रहूं धणीतणा गुण । पाछला भंडारनूं लेखू दऊं वल्लभ, ए लेखू करतां मूने नथी रे दुर्लभ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -12, चौ -44
- हूं मन मांहें एम जाणुं घj, जे किव नहीं ए काम आपणुं । पण आतां नथी काई किवनी वात, रूदे बेसी केहेवराव्युं प्राणनाथ || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -4, चौ -15
- हूं मां हुती चतुराई त्यारे पांचमां पुछाती, ते चितडा अमारा चलया । मान मोहोत लज्या गई रे लोपाई, अमें माणस मांहें थी टलया || ग्रं - किरन्तन, प्र -49, चौ -2
- हूं मारूं तो जो होय काइए, न खमे लवानी डोट । मारी बुधने एक लवे एवा, मरे ते कोटान कोट || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -7, चौ -30
- हूं रे गेहेलो एवा वचन तोज कहूं छु, पण न थाय बीजा कोई गेहेला । विस्मी वाटे चाली न सके, तेने लागसे वचन घणां दोहेला || ग्रं - किरन्तन, प्र -126, चौ -19
- हूं वचन कहूं विध विधना, पण क्यांहें न पाएं लाग । मारा घर लगे पोहोंचे नहीं, एक लवानो कोटमो भाग || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -12, चौ -130
- हूं संघातण छऊ जो तमारी, तमे लेओ ए निध । ए निध अलगी थावा न दऊं, करो कारज तमे सिध || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -20, चौ -63
- हूं संमंधी माटे बार उघाडूं, आपवाने सुख सत । खीजी वढीने हँसी तमारा, फरी फरी वायूँ छू चित || ग्रं - किरन्तन, प्र -70, चौ -7
- हूद कया नंदजीय को, टापू बृज अखंड । कोहतूर गोवरधन कया, न्यारा जो ब्रह्मांड || ग्रं - खुलासा, प्र -13, चौ -11
- हे अंगडा सभ सोणेजा, असल कूडा जे । जोर करियां घणी परे, त की न पुजे तो के || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -3
- हे इलम एहेडो आइयो, जेहेडो आइए तूं । इलम सोणे में को करे, मूं में रही न मूं || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -7
- हे इलम एहेडो आइयो, सभ दिल जी पूरण करे । डेई इस्क मेडे कांध से, घर पुजाए नूर परे || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -42
- हे कडी कंधी उचक सिंधी, तं हेडा हंड म न्हार । रात डीह जागी जफा से, तूं पाहिजो पाण संभार || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -21
- हे गाल आए थोरडी, की हेडी वडी केइए । आंऊ कडी न रहां दम तोरे, से विसरी की बेइए || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -11
- हे गाल न मूंजे हथमें, जे की करिए से तूं । तांजे तूं न खेचिए, त हे रंज सभे मूं || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -43
- हे गाल्यूं आई डिसी करे, की मांठ करे रहो । अर्स संग सारे करे, आई विछोहा की सहो || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -23

- हे चियम तिर जेतरी, आईन अलेखे अपार । अस्सां सिकण रहे के गालजी, सभ तूंही करणहार || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -5
- हे जा पेयम फांई जोर जी, से जा लाहिया जोर करे । झल्ले पेर पिरनजा, पण मूंजी टारी की न टरे || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -47
- हे जा हित रांदडी, केइयां असां कारण । त असां की पसाइए डुखडा, असीं आयासी न्हारण || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -4
- हे जीव निमख के नाटक में, तूं रहयो क्यों बिलमाए । देखतहीं चली जात बाजी, भूलत क्यों प्रभू पाए || ग्रं - किरन्तन, प्र -48, चौ -2
- हे जे कराईयूं गालियू, एही कौल फैल जे हाल । हिन मजलके ओडडी, मूंके केइए नूरजमाल || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -40
- हे जे डीह वंजाइयां, भोरी विसरी विच बेही । हाणे हलंण संदा डीहडा, भोरी आया से पेही || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -27, चौ -4
- हे जे वड्यूं केइए हिन आलममें, हिनज्यूं सिफतूं तिनी न पुजन । से वडा वड्यूं सिफतूं करीन, पुजे न खाक मोमिन || ग्रं - सिंधी, प्र -13, चौ -7
- हे जे हितरूं गालियूं, केयूं इस्क जे कारण । लाड कोड आसा उमेदूं, रूहन ज्यूं पारण || ग्रं - सिंधी, प्र -6, चौ -31
- हे डात्यूं सभ तोहिज्यूं, इस्क जोस अकल । मूरा बुझाइए मूंहके, आखिर लग असल || ग्रं - सिंधी, प्र -1, चौ -49
- हे तां पाणे पधरी, जे आंऊ हेकली थियां । तडे की न अचे तो दिलमें, जे आंऊं हिन के सुख डियां || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -8
- हे तो डिंन्यू पाणई, गाल्यूं मुंके करण । पण जासी डिए न इस्क, दर खुले न रे वरण || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -35
- हे दिल आइम तेहेकीक, जे हेकली थियां आंऊं || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -7
- हे दिलजी गाल के से करियां, रूहजी तुं जांणे । कुछण भेणी लाथिए, कांध चओ से चुआं हांणे || ग्रं - सिंधी, प्र -13, चौ -2
- हे निपट निवरयूं गालियूं, थिएथ्यूं पांण हथां । जेडी थेई रांदमें पांण से, हेडी थेई न के मथां || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -17
- हे पट डिसी मूं न्हारिम, उमेद न आसा काए । जगाइए ते वखत, मथां डिंने डीह पुजाए || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -43
- हे पण कंदे गाल्यूं लाडज्यू, तांजे विसरां थी। संग जांणी मूरजो, थिए थी गुस्तांगी || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -32
- हे पण गाल्यूं लाडज्यूं, करिए थो सभ तूं । तो रे तोहिजी गालिनजी, दम न निकरे मूं || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -61

SRJN

- हे पण भूल असांहिजी, जे हिनमें मंगू सुख । विओ डिसण बडो कुफर, गिनी इलम बेसक || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -24
- हे पसां सभ सोणे में, आंऊं विच जिमी आसमान । से न्हाए चौडे तबके, मूंजो संगडो तूं सुभान || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -5
- हे बए जण्यूं मिडी करे, मुंके थ्यू न्हारीन । हुन असिधे ई न विचारियो, हो मूं लाए डुख घारीन || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -26
- हे बारीक गाल्यूं हुकम ज्यूं, हुकम थेयो सभमें हक । असीं अर्समें सिर गिनी करे, केयूं गाल्यूं बेसक || ग्रं - सिंधी, प्र -12, चौ -13
- हे भत सभ हुकमें केई, रांद डेखारी खिलवत में घर । गाल्यूं खिलवत ज्यूं केयूं रांदमें, जो हक दिल गुझांदर || ग्रं - सिंधी, प्र -12, चौ -15
- हे भत्यूं सभ हुकमें, परी परी कारे । कारण वाद इस्क जे, डिंनाऊं बए हंद डिखारे || ग्रं - सिंधी, प्र -12, चौ -18
- हे रांद हुकम इलमजी, पांण के सुतडे डिखारे । खिल्लण बिच अर्स जे, पांण के रांदयूं थो कारे" || ग्रं - सिंधी, प्र -11, चौ -10
- हे रोसन सभे पसी करे, असा दावो थेओ तोसे । तांजे मुकाबिल न थिए, त आंऊ पल्लो पुजां के || ग्रं - सिंधी, प्र -8, चौ -15
- हे सफर जे सई थेई, से बेडी न चढ्या बी आर । हिन जोखे में लाभ अलेखे, तूं अंखडी मंझ उघार || ग्रं - किरन्तन, प्र -133, चौ -3
- हे सभ तो सिखाइयूं, आंऊं मुराई अजाण । जे कंने जे केइए, से सभ तू ही पाण || ग्रं - सिंधी, प्र -3, चौ -10
- हे सभ मेहेर धणीयजी, डिए थो रूह अंदर । हे पण आइम भरोसो कांधजो, जी जाणे ती कर || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -54
- हे सभ सांजायूं तो हथ, लाड सांगाए या संग । कौल फैल या हाल जो, तो हथमें नों अंग || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -3
- हे सुख मोमिन हमेसगी, अर्समें सभे गिनन । पण जे सुख अर्सजा हिन जिमी, से व्या रे न्हाए रूहन || ग्रं - सनंध, प्र -35, चौ -21
- हे सोंणो तोहिजे हथ में, तो हथ निद्र इलम । तोहिजा सुख सोणे या जागंदे, सभ हथ तोहिजे हुकम || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -9
- हेडी गाल अची लगी, जाणे थो सभ तूं । तो पांणे पांण डेखास्यो हिकडो, आंऊ त पसां तो अडूं || ग्रं - सिंधी, प्र -4, चौ -10
- हेडी घुडी दिलमें, की पाए बेठो पांण । आंऊ कडी न रहां दम तो रे, हेडी को करे मूं से हांण || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -36
- हेडी पांण के न घटे, पांण चायं अर्सज्यू । जे सहूर करे डिठम, ते हेडो जुलम करिएथ्यूं || ग्रं - सिंधी, प्र -10, चौ -21

- हेडी रांद डिखारई, मय वर कोडी लख हजार । की करियां की चुआं, मूंजा धणी कायम भरतार || ग्रं - सिंधी, प्र -9, चौ -48
- हेडो जाणी दिल में, पेरोई ढंके द्वार । न की सुणाइए गालडी, न की डिए दीदार || ग्रं - सिंधी, प्र -7, चौ -40
- हेत कर इन रूहन की, प्यार सों बात सुनत । सो वचन अन्दर लेय के, मुख सामी बान बोलत || ग्रं - सागर, प्र -12, चौ -4
- हेम जवेर के बन कहूं, तो ए सब झूठी वस्त । सोभा जो अविनास की, कही न जाए मुख हस्त || ग्रं - कलश हिंदुस्तानी, प्र -20, चौ -19
- हेम जवेर या जो कछु, सो सब जिमी पैदास । इत नाम पैदास के क्यों कहिए, जित पैदा न नास || ग्रं - सागर, प्र -1, चौ -21
- हेम जवेर रंग रेसम, केहे केहे कहूं मुख जेता । नूर तेज जोत झलकत, अकल आवे जुबां में एता || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -82
- हेम जवेरना वन कहूं, तो ए पण खोटी वस्तजी । सत वस्त ने समान नहीं, न केहेवाय मुख न हस्तजी || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -9, चौ -15
- हेम तणो हार जुई रे जुगत नो, नवसर नव पाटली । जडाव हीरा पाच रतन मोती, माहे माणक ने नीलवी || ग्रं - रास, प्र -6, चौ -33
- हेम नंग नाम लेत हों, जानों के पेहेने बनाए । ए बिध अर्स में है नहीं, जुबां सके न सिफत पोहोचाए || ग्रं - सागर, प्र -9, चौ -74
- हेम नंग सब चेतन, अर्स जिमी जड़ ना कोए । दिल चाया होत सब चीज का, चीज एकै से सब होए || ग्रं - सागर, प्र -8, चौ -34
- हेम वस्तर नंग नूर में, नरमाई अतंत । जो कोई चीज अर्स की, खुसबोए अति बेहेकत || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -61
- हेम हीरा मोती मानिक, कई रंगों के हार । पाच पाने नीलवी लसनिए, कई जवेरों अंबार || ग्रं - सागर, प्र -2, चौ -31
- है एक हमेसा वाहेदत, दूजा जरा न काहूं कित । ए देखत सो भी कछुए नहीं, और कछू नजरों भी न आवत || ग्रं - सिनगार, प्र -18, चौ -66
- हैं कैसे धनी देख तूं, तोसों करी है ज्यों || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -16, चौ -4
- हैं को नाहीं कीजिए, सो तो कळू न होए । नाहीं को है कीजिए, सो कर न सके कोए || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -76
- है खसम एक हमारा, बिना मुस्लिम नहीं कोई दूसरा || ग्रं - सनंध, प्र -34, चौ -18
- है तीन वज्हे की उमत, इस्क बंदगी कुफर । सो तीनों आपे अपनी, खड़ियां मजल पर || ग्रं - खिलवत, प्र -16, चौ -107
- है नूर सब नूरजमाल को, फरिस्ते नूर सिफात । रूहें नूर बड़ीरूह को, ए सब मिल एक हक जात || ग्रं - परिक्रमा, प्र -32, चौ -83

SPJIN

- है बड़ी लड़ाई इन बात में, जब सहूर करत अर्स दिल । रूह तो मेरी इत है नहीं, हुकम केहेवत ऊपर मजल || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -56
- है हमेसा एक वाहेदत, एक बिना जरा न और । अंधेर निमूना न लगत, अंधेर राखत है ठौर || ग्रं - सिनगार, प्र -21, चौ -98
- हैड़ा हक का देख कर, मेरा जीव रह्या अंग मांहें । हाए हाए मुरदा दिल मेरा क्यों हुआ, ए देख चलया नाहें || ग्रं - सिनगार, प्र -22, चौ -40
- हैड़े में ऐसी उठत, सब अंग करूं टूक टूक । हड्डियां सब जुदी करूं, भान करूं भूक भूक || ग्रं - किरन्तन, प्र -41, चौ -7
- हैयात किए सब इन ने, ए जो कहे बुजरक । और बका सब को किए, जिमी आसमान खलक || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -12, चौ -88
- हैयात हुए के होसी आखिर, जो हुए नाम जाहेर सब पर । तो बूझ हैयाती दुनियां, ए सरे से छिपी रही क्यों कर || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -5, चौ -31
- हैवान अकल दाभा जिमी, होसी लोक जाहेर सिफली के । सो दाभा ताबे दज्जाल के, देखो निसान खुलासे || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -8, चौ -10
- हैवान ना कछू तो कहे, जो उनको ना कछु बुध । जो जाने ना वेद कतेब को, सो उसी दाखिल बेसुध || ग्रं - सनंध, प्र -24, चौ -71
- हो टाढी ने रूत रे वालाजी सीतनी, टाढी ने भीनी थाय रात । एणी रूते केम विसारिए, अरधांग तमारी प्राणनाथ || ग्रं - खटरुती, प्र -4, चौ -2
- हो दरसण ने दीजे रे वालैया दया करी, आ रूत में न खमाय । जुओने विचारी रे वालैया जीवसू, कालजडूं मारूं मांहें कपाय" || ग्रं - खटरुती, प्र -3, चौ -3
- हो दाझ ने भाजो रे वाला मारा अंगनी, जेम मूने थाय करार । सुंदर धणी रे सोहामणां, विरह न खमाए जीवना आधार || ग्रं - खटरुती, प्र -3, चौ -9
- हो भाई मेरे वैष्णव कहिए वाको, निरमल जाकी आतम । नीच करम के निकट न जावे, जाए पेहेचान भई पारब्रह्म || ग्रं - किरन्तन, प्र -8, चौ -1
- हो मेरी वासना, तुम चलो अगम के पार । अगम पार अपार पार, तहां है तेरा करार । तूं देख निज दरबार अपनों, सुरत एही संभार || ग्रं - किरन्तन, प्र -7, चौ -1
- हो मेरी सत आतमा, तुम आओ घर सत खसम । नजर छोड़ो री झूठ सुपन, आए देखो सत वतन || ग्रं - किरन्तन, प्र -76, चौ -2
- हो वतनी बांधो कमर तुम बांधो, सुरत पिआसों साधो । तीनों कांडों बड़ा सुकदेव, ताकी बानी को कहूं भेव || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -32, चौ -1
- हो वालैया हवे ने हवे, दसो दिस तारी दया । ए गुण तारा केम विसरे, मुझथी अखंड ब्रह्मांड थया || ग्रं - कलश गुजराती, प्र -10, चौ -1
- हो ससुई सा पण ई चोए , आऊं डियां कोड मथां । पुनूं संदी बधाई को आणे, ते के डियां ल्हाए हथां || ग्रं - प्रकाश गुजराती, प्र -15, चौ -7

- हो साथ जी वेगे ने वेगे, वेगे ने मिलो रे सैयों समें रास को ठेक || ग्रं - किरन्तन, प्र - 54, चौ -1
- हो साहेब मेरे जिकरिया यों केहेवे, मेरे फरजंद क्यों ऐसा होवे । मेरी औरत है इन हाली, सो तो नहीं जनने वाली || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -14, चौ -17
- हो सैयां फुरमान ल्याए हम, आए वतन से वास्ते तुम । इन में खबर है तुमारी, हकीकत देखो हमारी || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -6, चौ -1
- हो हल्लण के उतावस्यू, अर्स उपटे दर । हे की रेहेंदयूं रंज में, हुन बिसरी न्हाए खबर || ग्रं - सिंधी, प्र -5, चौ -27
- होए आवाज लड़ाई बखत, तिस पर मोमिन करें कस्त । कस्त करें सब आरब, ए आयत उतरी हैं तब || ग्रं - बड़ा कयामतनामा, प्र -11, चौ -8
- होए आवेस सरूप पेहेचान, पेहेचान पीछे न सहिए हान । तिन कारन जो यों न होए, तो प्रगट लीला क्यों करे कोए || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -5, चौ -27
- होए काजी हिसाब लेयसी, दुनी को होसी दीदार । भिस्त देसी कायम, रूहें लेसी नूर के पार || ग्रं - खुलासा, प्र -12, चौ -14
- होए न जुदागी अर्स में, तो क्यों पाइए बेवरा इस्क । ताथें दई नेक फरामोसी, बीच अर्स के हक || ग्रं - सिनगार, प्र -24, चौ -49
- होए बरनन चतुराई से, आसिक धरे ताको नाम । एक अंग छोड़ जाए और लगे, सो नाहीं आसिक को काम || ग्रं - सागर, प्र -5, चौ -131
- होए भोम बका की कंकरी, ताए पूजे चौदे तबक । कुरान बतावे बका मोमिन, पर दुनियाँ अपनी मत माफक || ग्रं - खुलासा, प्र -1, चौ -42
- होत कछू पड़ताल पांउं से, बोलें सब स्वर अपनी बान । पसु पंखी देखे बोलते, सब आप अपनी तान || ग्रं - परिक्रमा, प्र -38, चौ -28
- होत जवेर पैदा जिमी से, नंग अर्स में इन विध नाहें । जोत पूरन अंग ले खड़ी, रूह जैसी चाहे दिल माहें || ग्रं - सिनगार, प्र -20, चौ -46
- होत जुलम मायनों जाहेरी, तो भी छोड़ें ना ए सनंध । क्या करें हक इलम बिना, कह्या देखीता ही अंध || ग्रं - मार्फ़त सागर, प्र -11, चौ -17
- होत नूर थे दूजा बोलते, दूजा नूर बिना कछू नाहें । एक वाहेदत नूर है, सब हक नूर के माहें || ग्रं - परिक्रमा, प्र -35, चौ -30
- होत हांसी हमेसा, सब बड़ा जाने अपना प्यार । ए बेवरा वाहेदत में होए नहीं, जित नाहीं जुदागी लगार || ग्रं - सनंध, प्र -39, चौ -59
- होवे अस्कंध द्वादस थे, इत कोट गुने । पर क्या करे आग्या इतनी, बस नांहीं अपने || ग्रं - प्रकाश हिंदुस्तानी, प्र -31, चौ -62
- होवे इन बिध हाँसी अंग उलासी, सूल आवत पेट भर । एक सूल भर पेटे इन विध लेटें, ए देखो खेल खबर || ग्रं - परिक्रमा, प्र -40, चौ -7

- होवे फारग दुनी के सोर से, ए दिल हकीकी निसान । करें हजूर बातून बंदगी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान || ग्रं - सनंध, प्र -23, चौ -4
- होसी खुसाली मोमिनों, करसी मिल कलोल । ए हांसी या बिध की, कोई नाहीं खेल या तोल || ग्रं - सनंध, प्र -18, चौ -20
- होसी दिल सैतान का, और वजूद आदमी का । लोहू सैतान ज्यों बीच वजूद, ए बीच हदीस लिख्या || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -78
- हौज जोए अर्स जिमिएं, जो फुरमान में फुरमाए । पहाड़ मोहोल पेड़ इनका, सो हक हुकमें देऊं बताए || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -2
- हौज जोए आई नजरों, और नूरजलाली हद । इलम ईसे के देखाया, और मुसाफ हदीस महंमद || ग्रं - छोटा कयामतनामा, प्र -2, चौ -17
- हौज जोए इन पहाड़ से, सो पीछे कहूं सिफत । बड़े मोहोल पर मोहोल जो, ए खूबी आकास में अतंत || ग्रं - परिक्रमा, प्र -13, चौ -57
- हौज जोए की साहेदी, और जिमी बाग जानवर । दई जुदी जुदी दोऊ साहेदी, तो भी दिल गल्या नहीं पत्थर || ग्रं - सिनगार, प्र -29, चौ -114
- हौज जोए बाग अर्स के, जो कछु अर्स बिसात । कहूं केती अर्स साहेदियाँ, इन जुबां कही न जात || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -33
- हौज जोए बाग जानवर, जल जिमी अर्स मोहोलात । और अनेक देखी न्यामतें, गुझ जाहेर करी कई बात || ग्रं - सिनगार, प्र -3, चौ -17

SPJIN